ISSN 2229-547X

# विदेह सदेह ३३

## *रचनात्मक गद-पद लेखन भाग-२*

(विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)

*विदेह-सदेह शृंखला- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद आ पदक एकटा समानान्तर संकलन*

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

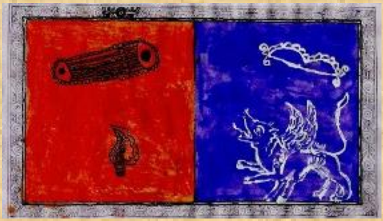

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

**ISSN 2229-547X VIDEHA**

*सम्पादक:* गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- अद्यतन। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अद्यतन। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनूदित आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : भा. रु. ६,०००/- संस्करण: २०२२

*Videha Sadeha 33: A Collection (Vol.II) of Creative Maithili Writings in Prose and Verse e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).*

# अनुकम

*(वद् परी- सन्दीप कुमार साफी आ विन्देशर ठाकुरक रचनालि गद-पद सकलत छक्ह आ पद खण्डमे राखल गेल छक्ह, तक्हना ललन ठाकुरक रचना गद-पद सकलत छक्ह आ गद खण्डमे राखल गेल छक्ह।)*

## गद-िण (प. १-४६५)

गजेन्र ठाकुर- मैवि ली हाइकू/ हैकू/ िवर का/ शेनयूर्/ टनका, हैबून, अपाला आियी, दानर्ािर दर्ािची, बालकिा- बाह र आ ठाकुरक किा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बवायाक गाछ, ज्योक्त पँक्जयार, राजा सलहेस, बहुरा गोविन नटुआदयाल, महुआ घटिक्रन, डाकू रौक्हरेय, मूखाविराज, कौिा आ फुदी, नैका बक्नजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जक्टन, बरू, भाट-भाक्टन, गागोदेर्ािक भगता, बड सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, सृकषब (नाटक), सर-समाज, काल-सिान वि सिापन, सक्विशा अक्भयान, जाक्तादिी मराठी, िािर मनुक्ख, बहुपती विािह आ क्हजडा , सिाी-बेटी, क्बआह आ गोरलगाइ, पक्तभा, जाक्त-पाक्त, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीक्डआ, क्मविलाक उदोग, क्मविलाक उदोग-२, बावि, भूख आ पिास, नि-सामन्त, बारािर, तस्कर, क्सद महािर, शब्दशासिम्, क्दल्ली, सहसबाक्ि (उपन्यास), मायानन्द

क्षशक इक्तहास बोि-पिमृ शैल पुिी च/ मृिपुि/ पुरोक्हत आ सिी-िनि केर सृदभबे, कबा-मतस्य शब्दािली (फीलड-िकघर आिकरत), विदापक्तक बादेबसया- बाआ देसातर, रमेश नारायरक "पािरक नािी"- विनोद बाहारी िमाक "बलानक बोक्हार ओ पल्ली (तािि अनय किाि)", दूिाि ति, मैविली- सुरजापुरी- राजबृशी, बूच जीक कविताक -माक्सर्वादि, ऐक्तहाक्सक दवि, सृरचनािाद, जादू-िास्तविकतािाद, उरर-आिुक्नक , नारीिाादी आ विखण्डनािद दविसँ अध्ययन सृगमे भारतीय सौन्दयर्शास्तिक दविसँ सेहो अध्ययन, सि. शी िदनाि क्षश "यािी" (१९११-१९९८), जगदीश पसाद मण्डल, पेमशृकर क्सृह, क्सद सरहपाद आ क्ताबाती क्लबा (प. २-२१३)

विभा रानी- आऊ कनेक पेम करी माने बुझौअल क्जनगीक (प. २१४-२२२)

रामभरोस कापवड "भमर"- बीहक्त किा- गृगापसादक सिायतता, हुगली पर बहैत गृगा (प. २२३-२२६)

क्जतेन्द्र झा- अन्तरािर्यि मैविली पक्रषद, कोना बचाएब सृस्कृक्तक विरासत?, सृस्कृक्त बचएबाक अक्भयान (प. २२७-२३०)

उमेश कुमार महतो- बहादुरगृज स' क्रपोटव(प. २३१-२३१)

अनलकान्त- कबइ-इच्छा, एत' आ ओत', असोिक्कत (प. २३२-२५२)

मनोज झा मुक्त- अँिद नागरकताा वसकमीकररक पयास, मनोज झा मुक्त सृग अन्तिािता ...आभाष लाभ, तराई/मिशिक आन्दोलना लूटमे लटुिा नफक्रा (प. २५३-२५७)

कुमार शुशान्त- छोटकी काकी (प्. २५८-२५९)

श्यामसुन्दर शश्न- आह उमा ! िह उमा ! , विचार- कविलाक तािही,सरकारी षडयनि त ने अछ ??, दुलहा बनल शीराम हे ऽऽऽ (सन्दभ्र राम–जानकी वििह महोत्सि) (प. २६०-२६४)

अृकुर काशीनाि झा- नेताजी पर तामश कयैक उठैत अछ (प्. २६५-२६६)

लल्लन ठाकुरक कछु रचना (प.२६७-२७४)

साकेतानन्द- कालराविश दाररा (प. २७५-२७८)

बषेश चन्र लाल- आ ओ मारल गेल !, एकदन्त हािी आ नौलखा हार(प. २७९-२८६)

राजमोहन झा (पबोि सम्मान २००९) सँ विनीत उत्पलक साित्कार- (प. २८७-२९३)

रामाशय झा "रामरृग" पक्सद अवमनि भातखण्डे जी सँ साित्कार डॉ. गगेश गुजन दारा (प. २९४-२९८)

वशाि कुमार झा 'वटलू' - हरमोहन झा- वदरागमन (प.२९९-३०१)

मुनाजी- साित्कार- हम पुछैत छी (१.रिीन्र कुमार दास २.योगेन्र पसाद यादि ३.गोविन्द झा ४.राजेन्र वमल ५.रामभरोस कापवड "भमर" ६.रमेश रृजन ७.बषेश चन्र लाल ८.िीरेन्र पेमवव ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्र ११.अमरनाि १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुगानन्द मृडल १५.वविलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.िीरेन्र कुमार १८.सोमदेि १९.अशोक २०.ज्योवत सुनीत चौिरी २१.जगदीश पसाद मण्डल २२.राजदेि मण्डल २३.देिशृकर निीन २४.गजेन्र ठाकुर); पतीक- बीहवन किा (अपन गप, अपन कहब रेिज पडौआ टकटकी वयृिर गहना डोवमृग टेस्ट विवनमय सेजौट परमेशर पजेबा सफाई वबयम मुवखयैती लवम कौनचर आत्मानुभूवत जनिरी चश्मा उपहार काट ओकावत जीनि चक रिक जमाना वबब आरवित नियुग अिक वनलसा खानदानी कुलइया दानक बौस्त जुनुन विजेता हवयर बरी- लाल बरी लगाम देखाउँस मा विजातीय सिरिप आ सृभानिा विकल्प रीलीफ वजनगी सेिक

ट्वेन्टी-ट्वेन्टी नेओ बहुराष्ट्रीय कम्पनी विश्वासघात अन्तर-आत्मा कमरकसा ग्लोबल विकृत सरकारी दलाल क्रिया जरए सगर राति भागिना तृप्तिमेल बेरपर कपाय गाती क्वानिनी अगुआ सार्थि एकैसम सदी दुनू जना एकै ठिना राक्स सडक-छाप कोशिश नपना उत्तरि देश-भक्त भूख डेग देह, मोन आ पेम) (प.३०२-४६५)

## पद-खण्ड (प.४६६-१८९१)

*(वृहत् परी- सन्दीप कुमार साफी आ विन्देश्वर ठाकुरक रचनाक्ष्ली गद-पद मिश्रित छन्हि आ पद खण्डमे राखल गेल छन्हि, तहिना ललन ठाकुरक रचना गद-पद मिश्रित छन्हि आ गद खण्डमे राखल गेल छन्हि।)*

गजेन्द्र ठाकुर- बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुटी कम इसकूल, शाबसल बाजाक दुन्दभी िदक, मोनक रृगक अदश्य देबाल, मन्दािकनी जे आकाश मध्य, पकाक जाढ़, मानक जीिन विहन्दि, गृगा बाज, हर आ बडद, बासरलहुँ फेर करक मत्युक छोट- छीन रप, बडका सडक छह लेन बला, कविलाक धिज गीत, िनक गाडी, राजा शी अनुरिजत समूह, दीयाबाती, ककेट-फीलड्ग, ति चाह च, अस ािम मन (प. ४६७-५७४)

कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)

बैकुण्ठ झा- चलू देखैब अपन गाम अय, सनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुकिर्याँ (प. ५७८-५८३)

पकाश झा- हाल बचपनसँ पचपन तक (प. ५८४-५८६)

रामलोचन ठाकुर- हजे की, क्यसिाक नाम/ चेतौनी, अनुजक नाम/ काज अहीक विक (प. ५८७-५८९)

महेश क्मश "विभूक्त"- बाबा-स्तुक्त, ग ा-स्तुक्त (प. ५९०-५९०)

श्यामल सुमन- अक्मयान, आत्म-दशबा (प. ५९१-५९२)

नींनना झा (ननीत)- नारीये सतयुग आनत यौ, युगक्मारी सृकल्प, जीा की छी? अहम् पश, गायीी महामृा, पेम आनन्दक अक्मव्यक्त छी (प. ५९३-५९७)

विदानन्द झा प ीकार (पक्सद मोहनजी)- कोशीक ताण्डा, शवि चक, दहेज दाना (प. ५९८-६०२)

ीिरेन्र पेमक्बब चहकऽ लागल क्वड्या-चुनमुन, एमकीक जतरा, आजाद गजल १-११ (प. ६०३-६१५)

बषेश चन्र लाल- नजक् अहाक क्यतकेर जूडा दैत अक्छ (प. ६१६-६१६)

क्हमाशु चौारी- विष-िा (प. ६१७-६१८)

रामभरोस कापक्ड- अन्हारक विरिद, आजाद गजल (प. ६१९-६२१)

व्रजतमोहन झा- क्द्रलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जावा जाइत अछि! (प. ६२२-६२४)

कस्र मोहन झा- एक क्द्रन (प. ६२५-६२५)

अमरेन्द्र यादि- टमटक्सया घोडा (प. ६२६-६२६)

क्वमष झा- जीनि एकटा दुरह कविता, क्वरीक्वरी भेल मोन, िदनाक तर , असमक्वप्त उन्माद, क्कछु हाइकु (प. ६२७-६३७)

भालचन्द्र झा- अपन अस्तीतिक असली मोल, हमर माय (प. ६३८-६४०)

अृकुर काशीनाि झा- पशाताप (प. ६४१-६४१)

पकाश झा- बाल-बुदरकक लेल कविता (प. ६४२-६४२)

सुबोि ठाकुर- मनक तरृग, केना होएत क्वविलाक जीरोदार, शब्दक िर चलेबए- नव्ह सहबए आब अत्याचार, क्वया हमर परदेक्शया, हम गामेमे रहबइ (प. ६४३-६४८)

रपेश कुमार झा 'त्योि'- आयल फेरो समय लगनक, जृगल क्द्रस !, मैविल के? (प. ६४९-६५२)

मनीष झा "बौआभाई"- माय (प. ६५४-६५५)

सतीश चन्द्र झा- मध्यम िगक सपना, भक्तत शब्द, नाि आ जीिन, मौनक शब्द, चुनाि, शब्द, हमर सतृिता, ई जीिन, अ्पन भाषा (प. ६५६-६७०)

र्विकानृद झा- क्सृगरहार (प. ६७१-६७२)

अक्मत क्मश- नि-अृशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रबाइ-१-१६) (प. ८७३-७७६)

चृदन कुमार झा- मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रबाइ (१-३३), कता (१)] (प. ७७७-८३९)

विनीत उत्पल- हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प्. ८४०-८९६)

ओम पकाश झा- क्कयो बूझ्झ नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १-८७, रबाइ- १-८, कता- १-२) (प. ८९७-९८८)

उमेश मृडल- क्मश्तुकी (अपन गप, क्कछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (प. ९८९-१०८२)

उमेश पासिन- िवक्ला रस (आमुख, कागज, समाज, रारि-कृश, भरल घैल, कलजुग, उमर-असिि-मन, व्ययासल, हत्या, फाटल

भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बार्वि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअक्काया, नेताजी नमस्कार, सतक्षया, अजानी, दक्लदर, पोक्सया, मैना, माछक तीमन, कििडी, बरखाक मौसम, क्ववििलाक नारी, रगडा, नेता, मनक क्वासिसि, केहेन विििना, अपनेके की कही, फुक्स-फटका, हक्ककत, पानि भूक्ष, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अिहि, गारल मुदा, हाल-चाल, पि ई केहेन, गहस्ि सबहक हाल, क्ववििला महान, हेराएल, दुभर, विडिर्मिना, क्क्यादी बॉट, पुरुषा, क्रशत्ता, अजानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झूडा, युिि, हम युिि, पर्विक, हमहूँ कनै छी, एना क्कएक, व्वक्ताया, डगर, रमल छी, सृत, बन्हन, सृघषवजारी रखब, भरदुक्ताया, गिहिा सृकाक्त, क्कमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हक्रजन, हम छी मैविली, बौकी, चौके-चौक,ठेस, पेटक खाक्तर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीिनक नैया, डर, नटीन, बताह, जानक निि ज्योक्त, केहेन चाक्ल, बसन्त, योदा) (प. १०८३-११८१)

क्शिि कुमार झा "क्टल्लू"- ििरपभा (अपन गप, क्कछु पद, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (प. ११८२-१३२५)

सन्दीप कुमार साफी (पक्सद क्करर)- बैशाखमे दलानपर- गद-पद क्कवशात [आत्मकिा खण्ड (मैविलीक पक्हल दक्लत आत्मकिा), कविता खण्ड, विहक्त किा खण्ड, लघुकिा खण्ड, विचार क्वन्दु खण्ड] (प. १३२६-१४२०)

मुनाजी- माझ आृगनमे कक्तआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रबाइ- १-११) (प. १४२१-१५०१)

वन्द्िेशर ठाकुर- नेपालक नोर मर भूक्तमे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकि ा खण्ड, विहक्त कि ा खण्ड, कविता खण्ड) (प. १५०२-१६४६)

आशीष अनक्चन्हार- मुनाजीक गजल, अनक्चन्हार आखर (गजलक सृवि् त पक्तचय, ७८ टा गजल,३२ टा रबाइ आ २ टा कता) (प. १६४७-१८९१)

गद खण्ड

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

अक्खर (अक्षर ) खम्भा

तिहुअन खेतहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ।

अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥

[कीर्तिलता प्रथम पल्लवा पहिल दोहा।]माने अक्षर रूपी स्तम्भ निर्माण कए ओहिपर (काव्यरूपी) मंच जँ नहि बान्हल जाए तँ एहि त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लता (वल्लि) पसारित कोना होयत।

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनर्यू/ टनका, हैबून

हैकू सौदर्यआ भावक जापानी काव्य शैली अछि, आ जापानमे एकरा काव्य-शास्त्रिक रूप देलन्हि कवि मात्सुओ बासो १६४४-१६९४। एकर रचनाक लेल परम अनुभूतिक आवश्यक अछि। बाशो कहने छथि, जे जे कियो जीवनमे ३ सँ ५ टा हैकूक रचना कएलन्हि से छथि हैकू कवि आ जे दस टा हैकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि। भारतमे पहिल बेर १९१९ ई. मे कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दू टा हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएले रहथि।

हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृत आश्रित भाषा सभ व्यवस्थित सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय भाषा आ देवनागरी भाषा मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व 'इ' एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि? मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि? तँ ई की अछि- आइम गोइङ टूवार्डस्दएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्डस्द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक नियम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम के ओना आइम फोनेटिककली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

जापानमे ईशरक आह्वान टनका/ वाका पाँति ५ ७ ५ ७ ७ स्वरूपमे होइत छल जे बादमे ५ ७ ५ आ ७ ७ दू लेखक द्वारा लिखल जाए लागल आ नव स्वरूप प्राप्त कएलक आ एकरा रेन्गा कहल गेल। रेन्गाक दरबारी स्वरूपक गाम्भीर्यओढ़ने छल आ सेन गाम्भीर्यबिला स्वरूप वैश्याकवर्गक लेल छल। बाशो वैश्याक वर्गबिला रेन्गा रचलन्हि। रेन्गाक आरम्भ होकुसँ होइत छल आ हैकाइ एकर कोनो आन पंक्तिके कहल जा सकैत छल। मसाओका शिकी रेन्गाक अन्तक घोषणा कएलन्हि १९म शताब्दीक प्रारम्भमे जा कए आ होकु आ हैकाइ केर बदलामे हैकू पदक समन्वित रूप देलन्हि। मुदा बाशो प्रमिता एकर स्वतंत्र स्वरूपक निर्धारण कए गेल छलाह। हैकू नियम १.

हैकू १७ अक्षरमे लिखू ।ई तीन पंक्तिमे लिखल जाइत अछि- ५ ७ आ ५ केर क्रममे। अक्षर गणना वार्णिक छन्दमे जेना कएल जाइत अछि तहिना करू ।

वार्णिक छन्दक वर्णन क्रममे- संयुक्ताक्षरके एक गानू आ हलन्तक/ बिकारीक/ इकार आकार आदिक गणना नहि करू ।

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य ।छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थिक। छन्द माने

भेल-एहन रचना जे आनन्द पदान करए।
िन्द दू पकारक अछि।मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक िन्द अछि।
वार्णिक िन्दक पश्चचय श्चअ। एश्चमे अकर गणना माि होइत अछि। हलंतयुक्त अकरके नश्च गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्याश्च युक्त अकरके ओश्चना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताकरके। संगश्च अ सँ ह के सेहो एक गानल जाइत अछि।श्चमानक कोनो अकर नश्च होइ।मुख्यता तीनटा श्चन्दु मोन राखू-
१. हलंतयुक्त अकर-० २. संयुक्त अकर-१ ३. अकर अ सँ ह -१ पत्येक।
आब पश्चल उदाहरण देखू :-
ई अरदराक मेघ नश्च मानत रहत बरश्च के=१+५+२+२+३+३+३+१=२० माि
आब दोसर उदाहरण देखू ; पित्=२ माि ; आब तेसर उदाहरण देखू
आब=२ माि ; आब चाश्चम उदाहरण देखू श्चकप्ट=२ माि
हैकू श्चअम २.
क्यत्य हैकू पदक श्चषय नश्च अछि, एकर श्चषय अछि ऋतु। जापानमे क्यत्य आ मानव दुबलताक लेल पयुक्त श्चिके "सेन्यू" कहल जाइत अछि आ एश्चमे श्चकरेजी वा श्चकगो केर व्याकरण श्चराम नश्च होइत अछि।
हैकू श्चअम ३.
पिम ५ वा दोसर ७ ध्वश्चक बाद हैकू पदमे जापानमे श्चकरेजी- व्याकरण श्चराम- देल जाइत अछि।
हैकू श्चअम ४.
जापानीमे श्चलंगक वचन श्चनता नश्च ि। से मैश्चिलीमे सेहो वचनक समानता राखी, सैह उश्चत होएत।
हैकू श्चअम ५.
जापानीमे एकश्च पंश्चक्तमे ५ ७ ५ ध्वश्च देल जाइत अछि। मुदा मैश्चिलीमे तीन ध्वश्चखण्डक लेल ५ ७ ५ केर तीन पंश्चक्तक पयोग कर । मुदा पद पाठमे श्चकरेजी श्चरामक ,जकरा लेल अदश्चरामक चेन्ह पयोग कर , एकर अश्चश्चक्त एकश्च शासमे पाठ उश्चत होएत।
हैकू श्चअम ६.
हैबुन एकटा यािवृतात अछि जाश्चमे संश्चक्प्त वणनात्मक गद आ हैकू पद रहैत अछि। बाशो जापानक बौद श्चकु आ हैकू कश्च िलाह आ वैह हैबूनक पणेता िश्चि। जापानक यािक वणन ओ हैबून दारा कएने िश्चि। पाचटा अनुच्िद आ एतबश्च हैकू केर ऊपरका सीमा राखी, तखने हैबूनक आत्मा रश्चक्त रश्च सकैत अछि, नीचाक सीमा ,१ अनुच्िद १ हैकू केर, तँ रहबे करत। हैकू गद अनुच्िदक अन्तमे ओकर चरमक रपमे रहैत अछि।
हमर १२ टा हैकू
१.वास मौसमी,
मोजर लुबिल
पल्लव लुप्ता
२.घोनििता,
रेतल खुरचन
मोिक झका

३. कोइली थकी,
थादरक भारैठ
राकश िन
४.दुपहरिया
भुतही गािीक
सनि शास
५.सरही फल
कलमी आम-गािी,
ओगरबाही
६.कोलपथा आऽ
चोकरक टाल,
गपिकू टा
७.लला तोलि
गोरल उसरथा
बाबाक सारा
८.तीतीक खेल
सतघरिया चाथा
अशोक-बीया
९.कनसुपती,
ओइकि गेन्द आऽ
जूथी शीतल
१०.मारा अबाि
डकहीक मिि
ओहिा जाथ
११.कबइ सना
चाली बोकथ माथ,
कठफोबिा
१२.शाहीक-मौस,
काटो ओकर नथ
थकि लेल

<u>हमर एकटा हैबून</u>

सोझा झंझारपुरक रेलवे-सकि पुल। १९८७ सन्। झझा देलक कमला-बलानक पाथाक िर, बाथक दृश्य। फेर अबैत िि हिर लग। हमरा सोझामे एकठामसँ पाथा उगडुम होइत झझाइत बाहर अथि अबैत। फेर ओतएसँ पाथाक िर काटए लगैत अथि माथ। बढ़ए लगैत अथि पाथाक पवाह, अबैत अथि बाथ। घुथ गाम

थ्रड्डा अबैत ि। हेलीकॉप्टरसँ खसैत अिछ सामगी। जतए आएल जलक पवाह ओतए सामगीक खसेबा लए सुखाएल उबेर भूखण्ड अिछ बि ि। ओतए अिछ जन- सम्मदि हेलीकॉप्टर देखबा भए जाइत अिछ घोल। अपघातक अिछ डर । हेलीकॉप्टर नङ्ह खसबैत अिछ ओतए खादान। बढ़ जाइत अिछ आगा। खसबैत अिछ सामगी जतए थ्रनु पाश्र प ित ि लि दुआरिक, बाढ़सँ भेल अिछ जतए पटौनी। कारण एतए नङ्ह अिछ अपघातक डर। आँखसँ हम ई देखल। १९८७ ई.।

पएरे पार

केने कमला िर,

आइ थ्रशाल

अपाला आ यी

पा : अपाला: ऋगवैदक ऋचाक लेखका

अी: अपालाक ता

वैद 1,2,3

कृशाश: अपालाक प ।

वेषभूषा:-

उतरीय वस (पुरष), वलकल, जूहीक माला (अपालाक केशमे), दणड।

मंच सजजा :-

सहकार-कुञ (आमक गा ), वेदी, हवगर , र कि ीर, युगक ीर, सोझामे साही, गो आ ारीट।

दृशय एक

(आमक गा िक मधय एक गोट बाका आ बालक)।

बाका: हमर नाम अपाला अी। हम ऋ अीक पु ।अहा के ऋ बालक।

बालक: हम ााक हेतु आयल । ऋ अी कतए  ।

अपाला: ऋ जलाशय ा नहयबाक हेतु गेल  , अबते होयताह।

(तखन द न हा मे कमंडल आ वाम हा मे वलकल लेने महअीक पवेश।)

अी: पु ई कोन बालक आयल  ।

अपाला: ऋवर। आ मिवासीक संखयामे एक गोट वृ होयत। ई बालक ााक हेतु...

बालक: न। हमर अखन उपनयन न भेल अी। हम अखन माणवक ब उपाधयायक लग ााक हेतु आयल । ई देखू हमर हा कि दणड। हम दणड- माणवक ब सभ न अपन गामसँ आयब आ साझमे च जायब। हम वेद मं सिँ अपत अनृच ।

अी: बेश तखन अहा हमर ाक रपमे पद होयब। नक पूवभिाग पहरण दाक गहणक हेतु राखल गेल अी। हम जे मं कहब तकरा अहा समरण राखब। पुना हम अहाक पूवकि उपनयन करबाय संग लऽ आनब।

बालक: पीत गुरक चरणमे पणाम।

(पटाकेप)

दृशय दू

(उपनयन संसकारक अंम दृशय। अपाला आ क ि आन ऋ बालक बाकाक उपनयन संसकार कराओल गेल अी।)

अी: अपाला। आब अहाक असल ा आ दा शुर होयत।(पुना आन दा सभक ा घू।) अहा सभके सा मं कि ायत पाठ करबाक चाही। ॐ भूभुि सा तततुवरिणयं भगो देवसय  िम ीयो योना पचोदयात्। सता- जे सभक पेरक  - केर वरेणय- सभके नीक लागय बला तेज- पृी, अंतक आ सगलीक-सवोचच अकाश-मे पसरल अी। हम ओकर समरण करैत । ओ हमर बु आ मे िके पेत कर ि।

अपाला: ब्यतृवर। “ॐ नमा ब्यादम” केर संग ब्यदारम्भक पूवश्यिाकाक अंतगति की सभ पढ़ाओल जायत। अश्वि: वर्ण अकत्र-स्वर, मात्ि- हस्व, दीघआि प्लुत, बलाघात- उदात, अनुदात, स्वश्यत, शुद उच्चारण, अकत्रक कश्माक ब्यन्यास- वतनी, पढ़बाक आ बजबाक शैली, एकक्ष वर्णक्ति बजबाक कैकटा पकार, ई सभ श्याकाक अंतगति ब्याखाओल जायत। साम संतान- जेश्क सामान्य गान अश्वि- केर माध्यमसँ श्याका देल जायत। अपाला: गुरवर। आिमक ब्यायमसँ सेहो अवगत करा देल जाय।

अश्वि: वनक पाणी अवध्य ि श्वि। आहारािफल पूवसिंध्यामे वन-वृक्सँ एकि कएल जायत। पाता आ सायं अश्माहोि होयत, ताश्क हेतु सश्यि, कुश, घृत-आज्य, एवम् दुिलक व्यवसि पश्याद्न ब्यश्य-जुश्य कय कएल जायत। हश्यणके ब्याय्घि आिममे टहलबाक अनुमश्या अश्वि। कदम्ब, अशोक, केतकी, मिलक, वकुल आ सूदकारक गािक मध्य एश्क आिममे यदश्य कृश्यक अनुमश्या नश्क अश्वि, परञ्च अकृष्य भूश्य पर स्वता आ बीयाक दारा उत्पन अकृष पच्य अनक पयोग भऽ सकैि।

बालक: हम सभ एकश्क ब्यदापीठक रहबाक कारण सतीथ्यर्ििि। गुरवर। दण्ड आ कमण्डलक अश्याश्यक्त ब्यक्िि रखबाक अनुमश्या अश्वि?

अश्वि: कश्क मेखला आ मृगचमििरण कर आ अपनाके एश्क योग्य बनाऊ जाश्कसँ दादशवषीय यज सिक हेतु अहा तैयार भऽ सकी आ महायजक समाश्यक पिात् बहोदय, ब्यदि पश्यषद आ उपश्याषद ओ अरण्य संसदमे गंभीर ब्यषय पर चचा कऽ सकी।

(पटाक्षेप)

दृश्य तीन

(कुटीरमे ऋश्य अश्वि कैक गोट वैदक संग ब्यचार-ब्यमशिकिए रहल ि श्वि।)

अश्वि: वैदगण। बाश्यका अपालाक शरीरमे त्वक् रोगक लक्ण आश्व रहल अश्वि। शरीर पर शेत कुषक लक्ण देखबामे आश्व रहल अश्वि।

वैद 1: कतबा मश्यनासँ कतेको औषश्यिक ब्यमाण कए बाश्यकाके खोआओल आ लेपनक हेतु सेहो देल।

अश्वि: अपाला आब ब्यवाहयोल्य भऽ रहल ि श्वि। हुनका हेतु योल्य वर सेहो ताश्क रहल िि।

वैद 2: कृशाशक ब्यषयमे सुनल अश्वि, जे ओ सवगुिणसंपन ि श्वि आ वृद माता-ब्यताक सेवामे लागल ि श्वि। ओ अपन अपालाक हेतु सवि उपयुक्त वर होयताह।

अश्वि: तखन देरी किििक। अपने सभ उश्यत ब्यन हुनकर माता-ब्यतासँ संपकििकर ।

दृश्य चाश्य

(आिमक सहकार-कुञ्जमे वैवाश्यक ब्यश्यिक अनुषान अश्वि। वेदी बनाओल गेल अश्वि आ ओतय ऋश्याज लोकश्य जव-तील केर हवन कऽ रहल ि श्वि।)

अपाला (मोने मोन): मािि पर श्यपुंडक भव्य-रेखा आ शरीर-सौषवक संग ब्यनयक मूश्य ईएह कृशाश हमर जीवनक संगी ि श्वि। (तखने कृशाशक नजश्य अपालासँ ब्यलैत ि श्वह आ अपाला नजश्य नीचा कए लैत ि श्वि। मुदा स्त्रीत्वक मयादाके रखैत ललाट ऊँचे बनल रहैत ि श्वह।)

अश्वि: उपश्यित ऋश्य-मण्डली आ अश्याके साकी मानैत, हम अपाला आ कृशाशक पाश्यगहण करबैत िि। (अश्याक पदश्यणा करैत काल कृशाशक उतरीय वसि कनेक नीचा खश्य पिल आ अपालाक केशक जूही-माला सेहो पृथ्वी पर खश्य पिल।)

दृश्य पाच

(अपालाक पक्षागृह।वृद्ध माता-थ्यता बैसल िथ्रीन्ह आ अपाला घरक काजमे लागल िथ्री।)

अपाला: थ्यय कृशाश। एतेक थ्यन बीथ्य गेल। पक्षागृहमे हम कोनो थ्यायंिणक अनुभव नथ्य कएलहुँ। हमरा पक्षा अहाक कोमल पेम सतत् थ्यदमान रहल। मुदा शेत त्वकक जे दाग हमरा पर ज्वालन्त सताक रपमे अथ्री, कदाथ्यत् वैह थ्यक् थ्यनसँ अहाक हृदयमे हमरा पक्षा उदासीनताक रपमे पक्षणत भेल अथ्री।

कृशाश: हमर उदासीनता अपाला?

अपाला: हँ कृशाश। हम देथ्य रहल िी ई पक्षवतनि। की एकर कारण हमर त्वगदोषमे अंतथ्यथ्यत अथ्री? कृशाश: हे अपाला। हमरा भीतर एकटा संघषिचथ्य रहल अथ्री। ई संघषिअथ्री पेम आ वासनाक। पेम कहैत अथ्री, जे अपाला बहवाथ्यनी िथ्री, थ्यक्य नारी िथ्री। मुदा वासना कहैत अथ्री, जे अपालाक शरीरक त्वगदोष नेिमे रपसँ वैरात्यक कारण बथ्य गेल अथ्री।

अपाला: पुरषक हािसँ सिक ई भत्सनिा। कामनासँ कलुथ्यत पुरष दारा नारीक हृदय-पुष्पके िकूचब िी ई। हम वेदक अध्ययन कएने िी। चन्रमाक पकाशक बीचमे ओकर दाग नुका जाइत अथ्री मुदा हमर ई शेत त्वक् दाग हमर थ्यशाल गुणराथ्यक बीचमे नथ्य मेटायल। (कृशाश स्तब्ध भय जाइत िथ्री मुदा थ्यक् बजैत नथ्य िथ्री।)

अपाला: सबल पुरषक सोझा हम अपन हाथ्य मानैत, अपन थ्यताक तपोवन जा रहल िी, कृशाश।

दृश्य ि:

(अपाला पाता कालमे सथ्यािसँ अथ्याकुण्डमे होम करैत इन्रक पूजा आ जपमे लाथ्य गेल िथ्री। कुशासन पर बैसथ्य िथ्री।)

अपाला: िरिक लग सोम भेटल, ओकरा घर आनल आ कहल जे हम एकरा िकुचब इंरक हेतु, शकक हेतु।गृह-गृह घुमैत आ सभटा देखैत, िट खुटीक ई सोम पीबू, दातसँ िकुचल, अन आ दहीक संग खेनाइ काल पशंसा गीत सुनैत। हम सभ अहाके नीक जेका जनबाक हेतु अवैकथ्यक रपसँ लागल िी मुदा क्यो गोटे अहाके पाप्त नथ्य कऽ सकल िी। हे चन्र, अहा आस्ते-आस्ते आ थ्यारन्तर ठोपे-ठोपे इन्रमे पवाथ्यत होऊ। की ओ हमरा लोकथ्यक सहायता नथ्य करताह, हमरा लोकथ्यक हेतु कायिनथ्य करताह। की ओ हमरा लोकथ्यके िनीक नथ्य बनओताह? की हम अपन राजासँ शत्रुताक बाद आब अपना सभके इन्रसँ थ्यला थ्यअ'। हे इन्र अहा तीन ठाम उत्पन्न कर- हमरा थ्यताक मस्तक पर, हुनकर खेतमे आ हमर उदर लग। एथ्य सभ फथ्यलके ऊगय थ्ययौक। अहा हमरा सभक खेतके जोतलहुँ, हमर शरीरके आ हमर थ्यताक मस्तकके सेहो। अपालाके पथ्यि कएल। इन्र ! तीन बेर, एक बेर पथ्यया लागल गािी, एक बेर चाथ्य पथ्यया युक्त गािीमे आ एक बेर दुनू बरदक कान्ह पर राखल युगक बीच। हे शतकतु ! आ अपालाके स्वच्छ कएल आ सूयसिमान त्वचा देल। हे इन्र !

दृश्य सात

(महायजक समाथ्यक पित बहोदयक दृश्य।)

अथ्री: एथ्य थ्यशाल ऋथ्याजगणक मध्य ऋकक मंिमे अपालाक ऋचाके हम सथ्याथ्यत कए सकैत िी, कारण ई स्पता स्फुथ्यत आ अथ्यामंथ्यत अथ्री। अपालाक चमरोग एथ्यसँ िूथ्य गेल, एकर ई सदा पमाण अथ्री। अपाला

एख्न मंकि दृष ा ि थ्रि।

ऋथ्रगण: अथ्रि, हमरा सभ सेहो एख्न मंकि दशनि कएल। अहो। सथ्रान्थ्रत करबाक आ नख्न करबाक तँ पशे नख्न अथ्रि। ई तँ आइसँ ऋकक भाग भेल।

(एख्न स्प्रीकृथ्राक बाद बह ोदय सभामे दोसर काज सभ पारम्भ भऽ जाइत अथ्रि। कृशाश थ्रचथ्रात मोने अपालाक सोझा अबैत ि थ्रि।)

कृशाश: अपाला। हम दु:थ्रत ि ी। अहाक थ्रयोगमे।

अपाला: हे कृशाश। इन्रक देल ई त्पचा योगक पथ्रणाम अथ्रि। अहाक उपेक्ा हमरा एख्न योल्य बनेलक मुदा आब एख्न पर अहाक कोनो अथ्रिकार नख्न।

(दुनू गोटे शनै-शनै मंचक दू थ्रदथ्रा सँ बहराए जाइत ि थ्रि।)

(पटाक्षेप)

दानवीर दधीचि

मंच सज्जा:

आम वन, पोखरि आ युद्ध स्थल

वेष-भूषा:

अधि वस्त्र- आदिवासीक हेतु

आश्रमक हेतु वैदिक शेत वस्त्र

आ इन्द्रक हेतु योद्धाक वस्त्र

रथ आ अस्त्र शस्त्रक स्थिति पदा पर दिखाओल कएल जा सकैत अछि।

प्रथम दृश्य

(महर्षि दध्यङ आथर्वण दधीचीक तपोवनक दृश्य। सूर्योदयक स्वर्णिम आभा, फूलक गाछक फूलक संग पवनक प्रभावसँ सूर्यक दिशामे झुकब। यजक धुँआसँ मलिन भेल गाछक पात। महर्षि सूर्योदयक दृश्यक आनन्द लए रहल छथि। मुदा दृष्टिमे अतृप्त भाव छन्हि। ओहुना आश्रमक कुलपति छथि जे काह महर्षि दस सहस्र छात्रके शिक्षा दान करैत छथि, सभक नाम, गाम आ कार्यसँ परिचित छथि। से ओ तखने प्रवेश करैत एकटा अपरिचित आगंतुकक आगमन सँ साकांक्ष भऽ जाइत छथि।)

दध्यङ आथर्वण दधीची: अहा के छी आगंतुक?

अपरिचित: हम एकटा अभ्यर्थी छी महर्षि आ कोनो प्रयोजनसँ आयल छी। कृपा कए अभ्यर्थीक मनोरथ पूर्ण करबाक आशासन देल जाय।

दध्यङ आथर्वण दधीची: एहि आश्रमसँ कियो बिना मनोरथ पूर्ण कएने नहि गेल अछि आगंतुक। हम अहाक सभ मनोरथ पूर्ण होएबाक आशासन दैत छी।

अपरिचित: हम देवता लोकनिक राजा इन्द्र छी। अहासँ परमतत्त्वक उपदेशक हेतु आयल छी।एहिसँ अहाक कीर्त्ति स्वर्गलोक धरि पहुँचत।

(दध्यङ आथर्वण दधीची सोचमे पड़ि मंच पर एम्हरसँ ओम्हर विचलित होइत घुमय लगैत छथि। ओ मंच पर घुमैत मोने-मोन, बिनु इन्द्रके देखने, बजैत छथि जे दर्शकगणके तँ सुनबामे अबैत अछि मुदा इन्द्र एहन सन आकृति बनओने रहैत छथि जे ओ किछु सुनाये नहि रहल छथि आ मंचक एक दोगमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि।)

दध्यङ आथर्वण दधीची: (मोने-मोन) हम शिक्षा देब तँ गछि लेने छी मुदा की इन्द्र एकर अधिकारी छथि। बज लए घुमए बला, कामवासनामे लिप्त अनधिकारी व्यक्तिके परमतत्त्वक शिक्षा? मुदा गछने छी तँ अपन प्रतिज्ञाक रक्षार्थ ब्रह्म-विद्याक शिक्षा इन्द्रके दैत छियन्हि।

इन्द्र: कोन सोचमे पड़ि गेलहुँ महर्षि।

दध्यङ आथर्वण दधीची: इन्द्र हम अहाके मधुविद्याक शिक्षा दए रहल छी। भोगसँ दूर रहू। नाना प्रकारक भोगक आ भोज्यक पदार्थसभसँ। ई सभ ओहने अछि जेना फूल सभक बीचमे साप। भोगक अग्नि त स्वर्ग

अछि पशु इन्द्र आ भूतलक श्वाकृष कुकुरमे कोन अंतर रहत तखन?

(इन्द्र अपन तुलना कुकुरसँ कएल गेल देखि कए तामसे थरख-सखख भऽ गेल। मुदा अपना पर आयंणि रखैत माि एक गोट वाक्य बजैत मंच परसँ जाइत देखल जाइत अछि।)

इन्द्र: महर्षि अहाक ई अपमान तँ आइ हम सह लेलहुँ। मुदा आजुक बाद जौ अहा ई मि-थदा ककरो अनका देलहुँ तँ अहाक गरदनि परसँ ई मस्तक, जकर अहाके घमण्ड अछि, एहि भूमि पर खसत।

दृश्य दू

(ऋथक आि म। आश्वान बन्ि क आगमन।महर्षिसँ अभिवादनक उपरान्त वातालाप।)

आश्वान बन्ि: महर्षि आब हम सभ अहाक मि थदाक हेतु सवि सुयोग्य भ'ऽ गेल िि। संसा आ भोगक रस्ता हम सभ िथि देलहुँ। इन्द्र सोमयागमे हमरा लोकनिके सोमपानक हेतु सवि अयोग्य मानलन्हि मुदा हमरा सभ पशाशोि नहि लेलहुँ। कतेक पंगुके पएर, कतेक आन्हरके आँखि हमरा सभ देलहुँ। च्यवन मुनिक बुढ़ापाके दूर कएलहुँ। आ तकरे उपकारमे च्यवन हमरा लोकनिके सोमपीिि बना देलन्हि।

दध्यङ आिवनि दिीची: आश्वानौ। बह जानकके देब एकटा उपकारमयी कायि अछि आ अहा लोकनि एहि थदाक सवि योग्य श्वाकिि िि। इन्द्र कहने अछि, जे जाहि दिन ई थदा हम कहुयो ककरो देब तँ तखने ओ हमर माि शरीरसँ काटि खसा देत। मुदा ई शरीरतँ अछि क्षणभंगुर। आइ नहि तँ कालि एकरा नष होयबाक ि। ताहि डरसँ हम बह थदाक लोप नहि होए देबैक।

आश्वानौ: महर्षि अहाक ई उदारचरित ! मुद हमरो सभ शल्यक्रिया जनैत िि आ पहिने हमरा सभ घोिाक मस्तक अहाक गरदनि पर लगाए देब। जखन इन्द्र अपन घृथात कायि करत आ अहाक मस्तकके काटत तखन अहाक असली मस्तक हमरा सभ पुना अहाक शरीरमे लगा देब।

(मंच पर आबाजाही शुर भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चकू िपा रहल अछि जेना कोनो शल्य थाकत्साक कायि शुर भऽ रहल होअय। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आिक फेर उठब पारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर घोिाक गरदनि लगओने महर्षि आश्वान बन्ि के श्वाक्ा दैत दृश्य गोचर होइत िथि।)

दध्यङ आिवनि दिीची: एहि जगतक सभ पदाि ि एक दोसराक उपकारी अछि। ई जे िरा अछि से सभ पदािक्ि हेतु मि अछि आ सभ पदाि ि ओकरा हेतु मि। समस्त जन मिर पक अछि। तेजोमय आ अमृतमय। सत्येक आिर पर सूयि ज्योति पसारैत अछि एहि थशमे।चन्द्रक िवल पकाश दूर भगाबैत अछि रािक गुमार आ आनैत अछि शीतलता। जानक उदयसँ अन्हारमे बुझाइत साप देखा पित अछि रस्सा। थशक सूित्ताके ओहि परमात्माके अपन बुद्धिसँ पकि। जाहि पकारे रिक नेत्रमे अर रहैत अछि ताहि पकारे परमात्मामे ई संपूणि थश।

(तखने मंचक पािसँ बरड बेशी कोलाहल शुर भऽ जाइत अछि। तखने बज लए इन्द्रक आगमन होइत अछि। एके पहारमे ओ महर्षिक्ि गरदनि काटि दैत िथि। फेर इन्द्र चलि जाइत िथि। मंच पर आबाजाही शुर भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चकू िपा रहल अछि, जेना कोनो शल्य थाकत्साक कायि शुर भऽ रहल होअय। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आिक फेर उठब पारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर महर्षि पुना अपन स्व-शरीरमे देखल जाइत िथि। ओ बैसले िथि आिक इन्द्र अपन मुँह लटकओने अबैत अछि।)

इन्द्र: क्षमा करब महर्षि हिमर अपराध। आइ आश्रमान-बन्द् हमरा नव-रस्ता देखओलक्षि। गुर सँ एको अक्षर श्रावखआहार ओकर आदर करैत छथि मुदा हम की कएलहुँ? असल श्रापम तँ छथि आश्रमान बन्द्।

दधीचङ आविनि दधीची: इन्द्र। अहाके ताहि दारे हम श्राक्ष देबामे पराङमुख भए रहल छलहुँ। मुदा अहाक दृढ़श्राच्यि आ सत्यक पश्न श्राषाक दारे हम अहाके श्राक्ष देल। हमरा मोनमे अहाक पश्न कोनो मश्लिनता नश्ल अछि।

इन्द्र: निम छी अहा आ निम छथि आश्रमानौ। आब हम ओ इन्द्र नश्ल रहलहुँ। हमर अश्रामानके आश्रमानौ खतम कए देलक्षि।

(इन्द्र मंचसँ जाइत अछि। परदा खसैत अछि।)

दृश्य तीन

(स्वर्गलोकक दृश्य। चार श्रश्वा वृत्र आ शम्बरक नामक चचा करैत लोक आबाजाही कए रहल छथि। ओ दुनू गोटे आकमण कए देने अछि भारतक स्वर्गभूमि पर। इन्द्र सहायताक हेतु महर्षिक आगि अबैत छथि।)

इन्द्र: वृत्र आ शम्बरक आकमण तँ एश्ल बेर बरड पचंड अछि। अहाक श्रचार आ मार्गदर्शनक हेतु आयल छी महर्षि।

दधीचङ आविनि दधीची: इन्द्र। कुरक्षेत्र लग एकटा जलाशय अछि, जकर नाम अछि, शर्यणा। अहा ओतए जाऊ, ओतय घोडाक मूडी राखल अछि, जाहिसँ हम आश्रमानौके उपदेश देने छलहुँ। बहश्रदा ओहिं मुँहसँ बहरायल आ ताहि दारे ओ अत्यंत कठोर आ दृढ़ भऽ गेल अछि। ओहिसँ नाना-पकारक शस्त्र बनाऊ, अश्रा आश्रीत श्रधांसकक पयोग करू, श्रीसंश्री वस्त्र, निषु, इषु-बाण-अयोमुख-लोहाक सूचीमुख सुइयाबला आ श्रकंकतीमुख- कठोर, एश्ल तरहक शस्त्रक पयोग करू, कवच आ श्रारसत्राणक पयोग करू, अंकिार पसारयबला आ जड़ित रस्सी दारा दुर्गंधियुक्त धुआँ श्राकलएबला शस्त्रक सेहो पयोग करू आ युद्ध कए श्रजयी बनू।

इन्द्र: जे आजा महर्षि।

(परदा खसैत अछि आ जखन उठैत अछि तँ पोखरिक कातमे घोडाक मूडीसँ इन्द्र दारा वज आ श्रश्रान हथियार बनाओल जा रहल अछि। फेर परदा खसि कऽ जखन उठैत अछि तँ अश्रायुक्त शस्त्र, जे फटका दारा मंचपर उत्पन्न कएल जा सकैत अछि, देखबामे अबैत अछि। मंच धुआँसँ भरि जाइत अछि। फेर परदा खसैत अछि आ मंचक पाछासँ सूत्रधारक स्वर सुनबामे अबैत अछि।)

सूत्रधार: इन्द्रक श्रजय भेलक्षि आ दुष्ट सभ खोहमे भागि गेल। ईएह छल वैदिकक नाटक बादमे एश्ल अछिकि अनधिकिए देलक्षि पौराणिक लोककथा, जाहिमे दधीचीक हड्डीसँ इन्द्रक वज बनएबाक चर्चा कएल गेल अछि।

(ओ ई असल बात अछि- केर फुसफुसाहटक संग पदा खसले रहैत अछि आ लाइट कनिकाक ऑफ भेलाक बाद ऑन भए जाइत अछि।)

बालकथा- बाह्मण आ ठाकुरक कथा

देबीगंज एकटा नगर छलैक आ ओहि नगरमे एकटा बाह्मण रहैत छलाह। हुनका भगवान श्री सत्यनारायणक पूजाक आमंत्रण दूरसँ आएल रहए। बाह्मण असगर रहए आ जएबाक ओकरा दुरगर छलैक, से ओ अपन नगरक एकटा ठाकुरक बच्चाके संग कएलक। ठाकुरक बच्चा बाजल, जे पंडीजी हम तँ अहाक संग जाएब, मुदा एकटा गप अछि। जतए कतहु हमरा कोनो गप गलत बुझाएत, ओतए अहाके हमरा बुझा देमए पड़त, नहि तँ हम अहाक संग नहि जाएब। पंडितजी कहलखिन्ह जे चलू बुझा देब।

बाह्मण आ ठाकुर चलल। चलैत-चलैत ओ दुनू गोटे एकटा पोखरिक लग पहुँचल। ओकरा सभके पोखरि टपबाक रहए से ओतए ठाढ़ भए ओ सभ कपड़ा खोलि तैयार भेल तँ ठाकुरक बेटा पोखरिमे देखलक जे एकटा लहास पोखरिमे मरल-पड़ल छै आ भासि रहल छै। ओ सभ स्त्री छथि, ओ भँसना बालु-रेतक छलैक आ ओ ओजनसँ भासि रहल छथि। ठाकुरक बेटा ई देखि कए बाजल - पंडित ओ देख, ओ लहास भासि रहल अछि, ओ तीन जान बहुत आयल अछि। पंडितजी अहा हमरा बुझा दिअ नहि तँ हम घुरि कए चलि जाएब। पंडितजी खिस्सा कहए लगलाह।

देख बच्चा। अपन गाम लग के.नगरक राजा छलाह। ओहि राजाक एकटा बेटा रहए। ओकर बियाह ओही सहिनपर भेल, जतए हम सभ चलि रहल छी।

बादमे अपन नगरक राजा मरि गेल। ओकर बेटा राजके सम्हारि नहि सकल आ राजके बन्हक लगा देलक। ओकर सासुरमे पता लगलैक, जे राजा राजपाट बन्हक लगा देने अछि आ आब द्विरागमन करेबा लेल ओकरा लग पाइ नहि छै, तँ बड़ड मोस्किल भए गेलैक।

एक दिन ओकर सासुरमे भगवानक पूजा भए रहल छलैक। ओहि दिन ई गरीब राजा साइझमे पहुँचल तँ पूजा भए रहल छल। ई ओतए गेल तँ कियो ओकर खोज-पुछारि नहि कएलक। ओतहि ओ कातमे बैसि गेल। पूजा समाप्त भेल आ सभ कियो पसाद खा कए अपन-अपन घर गेल आ घरबारी सभ सेहो खा-पीबि कए सूति गेल। एहि बेचारोके कियो नहि पुछलक आ ओ ओही सहिनपर सूति गेल। रातिक जखन बारह बाजल तँ ओकर स्त्री उठि गेल आ अपन घोसिनीया लग गेल। ओतए सुतबाक कोनो व्यबस्था नहि छल। एकटा खाट रहए जाहिमे ती टा टाग रहए। एकटा टाग कतएसँ लगाओत। लछमी आएल आ ओहि लछमीसँ पुछलक जे तूँ किछु खेने छह। लछमी कहलक नहि। बेचारा भूखक मारल बचल भोजन खएलक। ओहू समय लछमी अपन पतिके नहि चिन्हलक। ओकरा कहलक जे चल आ जाहि खाटक एकटा टाग टूटल छल ओही खाटमे एक दिस लगा देलक आ दुनू घोसिनीया आ ओ लछमी सूति गेल। ओकर सुतलाक बाद लछमीके कियो सपना दैत अछि। ई राजाक बेटा, तूँ अपन घर जो, ओतए तोहर पिताक कोचक नीचा चारि घाड़ा रखल छहु। ओहिमेसँ एक घाड़ा बेचि कए अपन राज छोड़ा लिअ। ई सपना सुनि राजाक बेटा भोरेसँ खाट राखि, अपन घर आपस आबि गेलि। ओ अपन राज बन्हकीसँ छोड़ा लेलक। पहिलेने जेका भए गेल। जखन ओकर सासुरमे ई पता चलल, जे राजा पहिलेने सँ बेशी नीक भए गेल अछि तखन ओ सभ राजाके खबरि कएलक जे अहा अपन द्विरागमन करबा लिअ। राजा दिन लए कए गेल आ ओही लछमीके गौना करा कए लए अनलक। राजा ओकरा एकटा खबासनीक संगे खेनाइक सभ समान दए एकटा कोठलीमे बन कए देलक। ओ खेनाइ खाइत छल आ ओही कोठलीमे रहैत छल, मुदा राजा ओतए नहि जाइत छल। जखन किछु दिन बीति गेल तँ एक दिन रानी

खबासनीके पठओलक, राजाके बजेबाक लेल। राजा आएल तँ रानी कहलक जे अहा हमरा गौना करा कए अनलहुँ आ एक्ष कोठलीमे बन कए देने ि। अहा अबतो नक्ष ि। राजा कहलक जे ओ घोसिआया नक्ष ि, जे टूटल खाटक एक पएर वैह रहए। आ बाचल भोजन हम खएने रही। आ फेर वैह ऐंठ खाए लेल हमरा कहलहुँ।

ई सुना लकिी बहुत लज्जित भऽ गेलीह। भोर भेल आ ओ खबासनीसँ कहलक जे तूँ रह, हमर वस्त्रक ध्यन अधि आ हम िरसँ नहा कए अबैत ि। ओ सभटा कपि खोलि िरिमे फाि गेल। भसना भाठी जे भसैत अधि, जान ई ठाकुर, वैह लकिी अधि। चलू हमरा सभ आगा।

दोसर

बाहण आ ठाकुर ओइ िरिक कातसँ बदा भेल। िरिके पार करैत आ चलैत-चलैत ओ सभ एकटा पैघ गाममे पहुँचलाह। ओक्ष गाममे बरड भीि लागल रहए। ठाकुरक लकिा जा कए देखए लागल तँ ओ देखलक जे एकटा बकरीक बच्चा बाहि कए राखल लि आ जे ककयो अबैत रहए से ओक्ष बकिीक बच्चाके दू लात मारैत लि। ठाकुरक बच्चा सोचलक जे ओ बकिीक बच्चा कोनो एक-दू गोटेक फसल खा लेने होएत, मुदा तखन सभ मारि कए ककएक ओकरा मारि रहल अधि। ओ बाहणसँ पुलिक जे ई गप बुझा कए कह, तखन हम सभ आगू बढ़ब। बाहण पजने ई गिने लि, जे जखन ओ कहत ओकरा बुझा कए कहत। ओही सिानिपर बैसि कए बाहण खिस्सा कहए लागल।

सुन ठाकुर हम आब खिस्सा कहैत ि। लोदीपुर एकटा नगर लि। ओक्ष नगरक राजा पताप सिंह रहए। हुनकर एकटा लकिा लि आ ओही गाममे एकटा ठाकुरक लकिा सेहो रहए। दुनूमे खूब दोसयारी चलैत रहए। ककिि दिनुका बाद दुनू दोस्त बिचार कएलक जे दुनू दोस्त घोिा कसा कए जंगल शिकार लेल जाए। तकर बाद दुनू दोस्त घोिपर सवार भए बदा भेल आ घनघोर जंगल पहुँचि गेल। शिकार खेलाइत साझ भए गेल आ दुनू दोस्त बिचार कएलक जे आब हम सभ घर नक्ष जा सकब, से अही बोनमे राति काटि भोरमे घर चलि जाइ। ओतए एकटा बरड पैघ गाि रहए, तकरे नीचामे ओ सभ रुकि गेल आ घोिाके ओतए बाहि दुनू दोस्त सूति गेल। सुतलाक बाद राति बारह बजे एक जोिा बीि-बीिीन ओक्ष गाकि ऊपर बैसि गेल। बीिीन मूिी उठा कए जे नीचा देखलक तँ ओक्ष दुनू दोस्तपर ओकर नजरि पलिैक। बीिीन कहलक जे देखू कतेक सुन्दर अधि राजाक बेटा। बीिि कहलक जतेक सुन्दर ई राजाक बेटा अधि, ततबे सुन्दर लालपरी कन्या अधि, दुनूक जोिी बरड सुन्दर होएत। बीिीन कहलक जे अहा तँ स्वयं विधाता ि। दुनूक जोिी लगेनाइ अहाक काज ि। विधाता ओक्ष दुनूके ओतएसँ सुतलेमे उठा कए ओक्ष लालपरी कन्या लग पहुँचा देलक। राजा आ कन्या एक पलंगपर आ ठाकुर दोसर पलंगपर। भोर भेलापर निन्द टुटल, तँ लालपरी बगलमे राजाक लकिाके देखलक, तँ खूब पसन भेल। ओकरा पलंगपर एकटा सिन्दूरक पुड़िआ राखल लि। परी कहलक जे ऊपरबला हमर आ अहाक जोिी मिला देने अधि। आब देरी कोनो बातक नक्ष। राजाक लकिा आ लालपरी कन्या दुनूक ओतए बियाह भए गेल। ककिि दिन धरि ओ ओतए रहल आ तकर बाद राजाक बेटा अपन ससुरारिसँ बदा भेल । ककिए दूर आगा गेलाक बाद कन्याके एकटा गप मोन पलिैक। ओ अपन पतिसँ कहलक- हमर पिताके चोला माने जीब बदल क मंि अबैत िथि। अहा हुनकासँ जा कए सीखि लिअ। ओतए दुनू डोली रोकि कए दुनू दोस्त ओकर पिताजी लग गेल आ जा कए कहलक जे हमरा सभके चोला बदलबाक मंि सिखा दिअ। ओक्ष मंकिे दुनू दोस्त सीखि लेलक मुदा मंि सिखलाक बाद ठाकुरक बेटाक मोनमे खोट

आश्व गेलैक। तकर बाद एक डोलीपर राजाक बेटा आ परी आ दोसर डोलीपर ठाकुरक बेटा श्वदा भेलाह। लालपरी पश्चासँ पुिलक जे अहा चोला बदलबाक मंि सीश्चव लेलहुँ। तँ राजाक बेटा कहलक-हँ। तँ परी कहलक जे एकर परीक्ना कर । राजाक बेटा कहलक जे आगा चलू। चलैत-चलैत ओ सभ कनी आगा बढ़लाह। आगा एकटा सुल्ाा मरल पिल रहए। ई सभ गप ठाकुर सुनैत जा रहल िल। जश्चना राजाक बेटा सुगाक भीतर पैसल, ओही समय ठाकुर मंि पश्च राजाक श्चंजरामे पैश्च गेल। ई सभ परी देखलक। एक डोलीपर माि ठाकुरक लहाश पिल ि आ एक पर परी आ ओ ठाकुर राजा बश्च जा रहल अश्चि आ राजाक जीव सुल्ाा बश्च उश्चि गेल। ठाकुरक लहाश फेश्चक ओ ठाकुर राजा बश्च गेल आ ओकर श्चंजिमे जा कए ओश्च लालपरीके दखल कए लेलक। लालपरी कन्या ई बुश्च गेल, जे ई हमर पश्च नश्च अश्चि। ठाकुर राजा अपन महलमे जा कए रहए लागल आ एश्च श्चषयमे ककरो बुझल नश्च रहैक। ठाकुर राजा कन्यासँ कहलक जे आब हम सभ सुखी श्चानन्दक राश्च श्चताएब। परी कहलक जे एखन नश्च। एखन हमर एकटा कौल बाकी अश्चि। ओ पूरा कए लेब तकर बाद। ठाकुर राजा कहलक जे की कौल अश्चि अहा पूणकिए श्चाअ। परी कहलक जे हमरा एकटा मश्चदर बनबा श्चअ जबुनाक तटपर। हम बारह बरख सदावश्च बाटब। तकर बाद राजा सोचलक जे आब हमरा िश्चि कए ककरो ई नश्च होएत ताश्च लेल हम एकटा उपाय करैत िी, श्चक एश्च बोनमे जतेक सुगा अश्चि ओश्च सभके माश्च दैत िी। ठाकुर राजा ई सोश्च श्चाकारीके मँगबेलक आ ओकरा कहलक जे एश्च जंगलमे जतेक सुगा अश्चि, ओकरा पकश्चि कए आन हम तोरा एक सुगाक एक टाका देबहु। श्चाकारी सुल्ाा बझबए लागल आ राजाके देमए लागल। राजा सभ सुगाके माश्च कए फेश्चक दैत िल। एक श्चन श्चाकारी सुगा बझा कए ओही जबुनाक श्चकनार िए आश्च रहल िल, तँ परीक नजश्च ओश्च श्चाकारीपर पिल। ओकरा मािमे ओ गप मोन पिलैक, तँ ओ श्चाकारीके बजेलक आ पुिलक जे अहा ई सुल्ाा ककरा दैत िी। ओ कहलक जे ई सभ सुल्ाा हम अही राजाके दैत िी। परी पुिलक जे राजा तखन एकर की करैत अश्चि। श्चाकारी कहलक जे ओ एकरा सभके माश्च कए फेश्चक दैत अश्चि। परीके ई सुश्च कए मािि दुखाए लगलैक। ओ श्चाकारीके पुिलक जे राजा एक सुगाक कतेक कए पाइ दैत अश्चि। श्चाकारी कहलक जे एक सुगाक ओ पाच टाका दैत अश्चि। परी कहलक जे आइसँ सभ सुगा हमरा देल कर, हम एक सुगाक दस टाका देल करब। ओश्च श्चनसँ सभ श्चाकारी परीके सभ सुल्ाा देमए लगलाह। परी सभ सुगासँ पूिश्चि जे अहा चोला बदलबाक मंि जनैत िी, एश्च तरहे ओ बहुत रास सुगाके पुिि गेलीह आ ििि गेलीह। ओश्चमे सँ एकटा सुल्ाा बाजल- हँ, हम चोला बदलबाक मंि जनैत िी। ओश्च सुगाके परी अपना श्चजरामे बन कए लेलश्च आ एकटा िोट बकिीक बच्चा कीश्च कए राश्चव लेलश्च। कनेक श्चनका बाद बारह बरखक समय पूणभिऽ गेल । ठाकुर राजा अपन डोली कहार पठेलक आ ओतएसँ परीके अपन महलमे आपस अनलक। परी जतए रहैत िल, ओतए ओ बकरीक बच्चा राश्चव लेलक आ सुतबाक काल ओश्च बकिीक बच्चाके माश्च देलक। खेनाइ िश्च नश्च खएलक आ कानए लागश्च। राजाके एश्च गपक पता लागल जे रानी खेनाइ िश्च नश्च खएने िश्चि आ काश्च रहल िश्चि। राजा आएल आ पुिलक जे अहा श्चकएक काश्च रहल िी। खेनाइ श्चकएक नश्च खएने िी। परी ठाकुर राजासँ कहलक- हम कोनाके खाएब, ई जे बकरीक बच्चा मश्च गेल, तँ हम आब जीश्चवत नश्च रहब। जाश्चि ई बकरीक बच्चा नश्च खाइत िल, ताश्चि हम नश्च खाइत िलहुँ। ई मश्च गेल से आब हमहूँ मश्च जाएब। ओम्हर सुगा देश्चव रहल िल, एम्हर ठाकुर राजा श्चचश्चत भऽ रहल िल। राजा सोश्च कए कहलक जे अहा चुप रहू, बकरीक बच्चा जीश्चवत भए जाएत। एतेक कहलापर परी चुप भए गेश्च आ जश्चना

राजा अपन चोला बदलि ओहि बकरीमे पैसल तखने सुगा अपना राजाक पिंजरामे चलि गेल। सुगा जेहेने-तेहने पड़ल रहि गेल आ ठाकुर राजा ओही बकरीक पिंजरामे चलि गेल।
सुनलहुँ, बकरीक बच्चा वएह ठाकुर राजा अछि आ जे कसाइ अबैत अछि ओकारा दू लात मारैत अछि।
तेसर
बाह्मण आ ठाकुरक लड़िका ओतएसँ चलल। चलैत-चलैत किछु दूर गेल तँ एकटा नगरमे पहुँचल। ओहि नगरक बीच चौबट्टियापर बरगद गाछ रहए। लोकक ई भीड़ देखि कए ठाकुरक लड़िका दौड़ि कए गेल आ देखलक जे ओहि चौबट्टियापर एकटा अस्सी बरखक बुढ़ियाके फासी देल जा रहल अछि। ठाकुरक लड़िका सोचलक जे ओ बुढ़िया ककरो घरमे जा कए भूखमे कोनो अनाज वा भात रोटी खएने होएत, से ओकरा फासीक सजा भऽ रहल छै। ठाकुरक लड़िका पुछलक- पंडितजी एहि गपके हमरा कहि कए बुझा दिअ। पंडितजी कहलक जे चलू रस्तामे अहाके बुझा देब। बच्चा कहलक जे नहि, एतहिये हमरा कहि कए बुझा दिअ, नहि तँ अहाक संग हम नहि जाएब। बाह्मण कहलक ठीक अछि। सुनू ठाकुरक बच्चा, बैसू, हम बुझबैत छी।

-विराटनगरक विराट राजा छलए। हुनका एकटा मन्त्री छलखिन्ह। राजाक लड़िका आ मन्त्रीक लड़िकाकमे दोस्तियारी चलि रहल छल। एक दिन दुनू दोस्त विचार कएलक आ जंगलमे शिकार खेलाइ लेल तैयार भेल आ घोड़ा कसेलक। बोनमे शिकार खेलाइत-खेलाइत साझ भए गेल आ ओही बोनमे एकटा बरगद पैघ गाछ छल। दुनू गोटे ओहि गाछपर चढ़ि कए सूति गेल। मंत्रीक बेटा सोचलक जे ई राजाक बेटा अछि। कहियो गाछपर नहि सूतल अछि, से ओ कतहु खसि नहि पड़ए, से सोचि ओकरा ओ गमछासँ बान्हि देलक आ ओ दोसर ठाढ़िपर चलि गेल। बारह राति बाजल तँ बोनमे एकटा बड़ पैघ साप निकलल आ ओहि गाछक लग आबि अपन मणी निकालि कऽ राखि देलक आ ताहिसँ इजोत होमए लागल। सपचिरए लागल। ओहि इजोतके मन्त्रीक बेटा देखलक आ तकर बाद ओ आस्ते सँ गाछक जड़िमे अपन तलवार ठाढ़ कए देलक आ फेर ऊपर चढ़ि गेल। जाहि ठाम मणी जरि रहल छल ओकर सोझा ठाढ़िपर जा कए गमछा दोबर कए ओहि मणीपर खसा देलक। मणी झँपा गेल आ अन्हार भऽ गेल। साप व्याकुल भए गेल आ ओ गाछक जड़िमे अपन पुच्छी पटकि-पटकि कए टुकड़ा-टुकड़ा भए गेल। भोर भेल तँ ओ अपन दोस्त राजाक बेटाके जगेलक आ कहलक जे दोस अहा तँ सूति गेल रही। नीचा देखू की भेल अछि। नीचामे गमछा उघारि मणी लए ओ दुनू दोस बिदा भेल। ओहि बोनमे एकटा पैघ पोखरि रहए। दुनू दोस्त विचारलक जे अही पोखरिमे एकरा धोबि कए साफ कए ली। राजाक बेटा नीचा हाथ राखलक आ मन्त्रीक बेटा ऊपरमे हाथ राखि कए ओकरा साफ करए लागल। ओ मणी तखने दुनू दोसके खेंचि लेलक आ ओतए लऽ गेल जतए नागवती कन्या रहए। नागवती कन्या ओकरा सभके देखलक तँ कहलक जे अहा सभ हमर पिताके मारि देलहुँ तँ हम कहिया धरि कुमारि रहब। कन्या कहलक जे अहा हमरासँ बियाह कए लिअ। मन्त्रीक बेटा राजाक बेटाक बियाह ओहि कन्यासँ करेबाक प्रस्ताव कएलक तँ राजाक बेटा कहलक जे यावत ढोल बाजा पालकी नहि आनब, बियाह कोना होएत। मन्त्री-वजीरक बेटा ढोल-बाजा-पालकी अनबा लेल बिदा भेल। दोसर दिन १२ बजे दिनमे नागवती कन्या पोखरिमे नहा रहल छलीह, तखने ठगपुर नगरक राजाक लड़िका शिकार खेलेबा लेल जंगलमे आएल रहए। गरमीक मास छल, ओकरा बड़ जोरसँ पियास लगलैक तँ ओ ओही पोखरिमे गेल। जखने ओ ओहि कन्याके देखलक तँ मूर्छा खा कए खसि पड़ल आ कन्या पोखरिक भीतर चलि गेलि। जखन ओकरा होश अएलैक तँ ओहि कन्याके ओ नहि देखलक।

ओहि समयसँ राजाक बेटा अपन घर जा कए पागल भए गेल। ई समाचार ठगपुरक राजाके पता चललैक तँ ओ बड्ड उपाय कएलक मुदा ओकर बिमारी नहि ठीक भेलैक।
राजाके बर ड चिन्ता भऽ गेलैक। राजा अपन राज्यमे ढोलहो पिटबा देलक जे, जे क्यो हमर बेटाके ठीक कए देत ओकरा राज्यक एक हीस दऽ देल जाएत आ डाला भरि सोनाक संग अपन बेटीक संग ओकर बियाह सेहो ओ करा देत। ई सुनि मारते रास लोक आएल मुदा ओ ठीक नहि भेलि। ओही गाममे एकटा बुढ़िया रहैत छलि, महागरीब। ओ करीब-करीब अस्सी बरखक रहए। ओहि बुढ़ियाक एकटा बताह बेटा रहए। ओ बुढ़िया ओहि राजाक बेटाके ठीक करबा लेल तैयार भेलि। राजा ओकरा आदेश देलक जे जो, आ हमर बेटाके ठीक कर गऽ। तखन तोरे इनाम सेहो भेटतौक आ अपन बेटीक संग हम तोहर बेटाक बियाह सेहो करबा देबौक। बुढ़िया गेल आ राजाक लिकाके एकटा कोठामे बन कए देलक आ अपने सेहो ओहि कोठामे चलि गेल। बुढ़िया राजाक बेटासँ पुिलक, मुदा ओ कोनो उतर नहि देलक। तखन बुढ़िया ओकर दुनू गालमे दू चमेटा मारलक आ तकर बाद ओ बाजल, जे हम जंगलमे शिकार खेलाइ लेल गेल िलहुँ। ओतए एकटा पोखरिमे पानि पीबा लेल गेलहुँ, तँ एकटा बर ड सुन्दिर सीके देखलहुँ आ हम बेहोश भए गेलहुँ। होश अएलापर देखलहुँ जे ओ लिकी चलि गेलि। तखनेसँ हमर मोन बताह भऽ गेल, जे कहुना ओ लिकी हमरा भेटि जाए। ओ बुढ़िया कहलक जे ओहि लिकीके हम आनब। एखनसँ तूँ ठीक रह, ओकरा आनब हमर काज ि। बुढ़ियाक कहलापर ओ चुप भऽ गेल आ बुढ़िया राजाके कहलक जे हमर संग पाच टा सखी-सहेली चाही आ ओहि बिमारीके हम ठीक करब। राजा पाच टा सखी देलक आ बुढ़िया ओकरा सभके लऽ कए बिदा भेल। ओ बोन पहुँच गेल, जतए ओ पोखरि रहए आ ओकर चार कातसँ ओ सभ नुका गेल। जखन दिनक बारह बाजल तँ ओ लिकी पोखरिसँ निकलल आ ओहि पोखरिक महारपर बैसि कए नहाय लागल। बुढ़िया जंगलसँ बहार भेल आ कन्याक बगलमे नहाए लागल। बुढ़ियाके देखि कए कन्या सोचलक जे ओ अस्सी बरखक बुढ़िया अछि, ओकर सेवा केनाइ जर री अछि। ओ ओहि बुढ़िया लग जा कए ओकर सौंसे देहके साफ करए लागल। कहलक मा आब फेर नहा लिअ। बुढ़िया कहलक लाऊ बेटी, अहूँक सौंसे देह साफ कऽ दैत ि। बुढ़िया कन्याक देह साफ करए लागल। साफ करैत बुढ़िया चुटकी बजेलक तँ ओकर सखी सभ चार कातसनसँ ओकरा पकिड़ लेलक आ आपस ठगपुर गाम दिस बिदा भेल, जतए राजाक घर ि। ठग राजा इनाम देबा लेल तैयार भेल आ अपन लिकीक बियाह ओकर बताह लिका संग करएबा लेल तैयार भेल। राजा अपना गाममे जतेक बाजा आ पालकी रहए, अपना ओहिठाम अनबा लेल कहलक। ओहि गाम आ नगरक सभटा बाजा आ पालकी, सभटा राजा लग चल गेल।
आब मर्नीक बेटा गाम-गाममे पुित अछि तँ सभ कहलक जे सभटा बाजा आ पालकी राजा ओहिठाम चलि गेल। ओतएसँ अएलाक बादे बाजा भेटत। ई सुनि मर्नीक बेटा कहलक जे ठीक अछि हम कनेक दिन रुकि जाइत ि। ओतए एम्हर बुढ़ियाक बताह बेटाक बियाहक दिन पहुँच गेलैक। मर्नीक बेटा ओहि गामक बच्चासँ पुिलक जे ई बरियाती कतए जाएत। बच्चा बाजल जे बरियाती कतहु नहि जाएत। हमर गामक एकटा बुढ़िया एहि बोनक पोखरिसँ एकटा कन्याके पकिड़ कऽ अनने अछि। मर्नीक बेटाके चिन्ता पैसि गेलैक जे ई वएह लिकी तँ नहि अछि। मर्नीक बेटा अपन सभटा पोशाक खोलिकऽ राखि देलक आ एकटा भिखमंगाक र प िऽ कए राजाक आँगनमे गेल आ ओहि लिकीके देखलक आ इशारा कऽ देलक जे साझ खन हम आएब। ओहि ठामसँ बजीरक बेटा निकलि कऽ बाहर आएल आ ओहि बुढ़िया आ ओकर बताह बेटाक पता लगओलक।

तँ देखलक जे ओ बताह बच्चा सभक संग गाए-महीस चरेबाक लेल बोन गेल अछि। मन्त्रीक बेटा सेहो बोन चलि गेल आ जतए पागल रहए, ओकरे संग खेलाए लागल। बच्चा सभके जखन भूख लगलैक तँ मन्त्री-पुत्र आ ओहि बताह बच्चाके छोड़ि कए चलि गेल। मन्त्रीक बेटा ओहि बताह बच्चाके बोनमे भीतर लए जाए छोड़ि देलक आ ओकर सभटा कपड़ा लए लेलक। कनेक झलफल भेल मुदा सबार सभ गाए-महीस लए घुरए लागल, तँ मन्त्रीक बेटा सेहो बताह जेका करैत घुमि आएल आ घरमे जा कए ओही लड़कीक चारू दिस घुमिआए लागल, जकरा संग ओकर बियाह होमए बला छलैक। ओहिना ओ ओहि घरमे सेहो चलि गेल जतए ओ नागवती कन्या रहए आ ओतए जा कए कहलक कि अहा एहि कपड़ाके बदलि लिअ आ पोटरी बान्हि कए बगलमे दबा लिअ आ राजाक लड़कीबला कपड़ा पहिरि लिअ। आगा निकलू आ पाछा हम जाइत छी। कन्या आगा निकललि, पाछा मन्त्रीक बेटा बताह जेका करैत, दुनू बाहर निकलि गेल। दुनू ओतएसँ बिदा भेल आ जतए पोखरि छलि ओतए पहुँचि गेल।

सुनलहुँ ठाकुरक बेटा। अही गपपर अस्सी बरखक बुढ़ियाके फासी देल जा रहल अछि, राजा कहलक जे ई बुढ़िया हमर राज्यक हिस्सा लेबाक लेल ई षडयन्त्र रचने रहए आ ते ओकरा फासी दए रहल अछि।

चारिम

आब राजाका बेटा आ कन्या संग किछु समए बिता कए बजीरक बेटा फेर घुमि आएल पालकी आ बाजा लेल। ओहि दिन पालकी आ बाजा दुनू भेटि गेल आ बजीर ओकरा लए चलि आएल। बहुत नीक जेका दुनुक बियाह भेल आ बरियातीक संग अपन घरक लेल बिदा भेल।

चलैत-चलैत किछु दूर गेल तँ साझ भए गेल। एकटा बरड पैघ गाछक लग ओ ठाढ़ भए गेल। सभके खेनाइ खुआ कए सभ कियो सूति गेल। रस्ताक किनार रहए सभ कियो बोनमे सूति गेल। राति क बारह बाजल तँ चिड़ै-चिड़ैता आएल आ ओहि गाछपर बैसि गेल। चिड़ै बाजल- बरड नीक जोड़ी लागल अछि तँ चिड़ैता कहलक जे जोड़ी तँ ठीके बरड नीक अछि मुदा राजाक बेटा मरि जाएत। बीड़ि पुछलक किएक। तँ चिड़ैता बाजल हम तँ कहब मुदा एहि बरियातीमे सँ कियो सुनैत होएत, तँ ई बाझि जाएत। ओहि समय नागवती कन्या आ बजीर सुतल रहल छलि। सभटा सुनला कए पचीस टा संकट पड़ि आ सभटा संकट ओ बतेलक। भोर भेल तँ नागवती कन्या आ बजीर कहलक जे ई बरियाती सभके एतएसँ आपस पठा दिअ आ हम तीनू गोटे एतएसँ चली। ओतएसँ तीनू गोटे बिदा भेल आ चलैत चलैत किछु दूर गेल तँ रस्ताक कातमे दू टा गाछ छलि। मन्त्रीक बेटा आ कन्या कहलक जे हम तीनू गोटे हाथ पकड़ि कए चली। राजाक बेटाके बीचमे लए दुनू गोटे दुनू दिससँ हाथ पकड़लक आ लग गेल आ कहलक जे हम तीनू गोटे एतएसँ दौड़ि कए चली। ई कहि कए ओ सभ दौगनाइ शुरू कएलक आ जहिना दौड़ि कए आगा गेल तँ दुनू दिसका गाछ खसि पड़ल। पाछा घुमि कए ओ सभ देखलक आ बाजल जे हम सभ दौड़ि कए जे आगा नहि अबितहुँ तँ ई हमरा सभक ऊपर खसि पड़ितए। ई कहि ओ सभ आगा बिदा भेल। ओतएसँ चलैत-चलैत किछु दूर आगा ओ सभ गेल तँ रस्तामे एकटा धार भेटि गेल तँ ओतहु ओहिना राजाक बेटाके बीचमे लए दुनू दिससँ ओकर हाथ पकड़ि लेलक आ धारमे चलए लागल। बहुत तेजीसँ ओ सभ आगा बढ़ल आ जहिना ऊपर गेल तँ बीच पानिसँ निकलि गेल आ घुमि कए देखलक तँ बोचपर नजरि पड़लैक। ओ सभ बाजल जे हम सभ तेजीसँ नहि निकलितहुँ तँ बोच

हमरा सभके पकथि लैतए, आ तकर बाद ओ सभ ओतएसँ बदा भेल। अपन कलम-गाि होइत घर पहुँचैत गेल। मारते रास लोक ओतए जमा भए गेल आ राजाक बेटाके देखए लागल आ कहए लागल जे बर ड नीक जोि मलल अि। ओ सभ महलक भीतर जेबाक पने अगुलका ि त तोि बा देलक। राजाक बेटाके बजीरक बेटा आ कन्यापर ओहाम शक भेलैक। राजा आ कन्या महल गेल। आब राजा पुि लक जे हमर दोस बजीरके बजाऊ। पूि ए लागल जे दोस अहा दुनू गोटे रस्तासँ घर ि थ एतेक रास बात केलहुँ, से हमरा बुझल न भेल, से अहा ओ सभ गप हमरा कहू। बजीरक बेटा बाजल जे दोस ई सभ कोनो गप न अि। ई सभ हम सभ हँसी कए रहल ि लहुँ, जे देखी जे हमर सभ राजा दौग सकैत ि थि आक न , आ च सकए ि थि आक न। ता दारे हम सभ हँसी कए रहल ि लहुँ। ए गपपर राजाके बस्ास न भेलैक आ ओ कहलक जे जे य ई गप अहा न कहब तँ अहाके फासीपर लटकबा देब। ए गपके कन्या सेहो सु रहल ि लीह। हा कए बजीरक बेटा कहलक जे जतएसँ बयाती आपस भेल ि ल। िता जे कहने ि ल ओ सभ गप कहलक आ रस्तामे जे बतल सेहो कहलक। ई सभ कते बजीरक बेटाक अदहा अंग पाि रक भए गेलैक। आ जखन सभ गप पूणि भेल तँ बजीरक बेटा ओही कोचक बगलमे पहाि ब गेल। क ि नुका बाद राजाके एकटा बेटा रामे जन्म लेलक। कहल गपके ओही समय ओ पूणि करिए लागल आ ओही पहाि पर ओ बालकके रा पघयासँ दू टुकि ि कए देलक। ओकर टुकि होइत बजीरक बेटा फेरसँ तैयार भऽ गेल आ कहलक जे हमरा आब ओ लि का अ। बजीरक बेटा ओ बालकके लए अपन सासुर गेल। ओ बारह बजे रामे पहुँचल। कोनो तरहे अपन सि ीक लग पहुँचल आ सभ गप क बालकके आमक गाि ठापर लटका देलक। रामे अपन सि ीके कलममे अनलक आ बालकके ठापरसँ उता कए नीचा कएलक आ कहलक जे ई चकू अ आ अपन हाि क कँगुआ आँगुर का कए ए बच्चापर ि अ। जखने ओ ि टलक तखने ओ बच्चा कानए लागल आ तखने ओ ओकरा लए जा कए राजाके देलक। बजीरक बेटा कहलक जे आब आइ नसँ अहाक संग हमर दोसयारी समाप्त भेल। ई क बजीरक बेटा अपन घर घुरए लागल, तँ ओही समय राजाके जान पाप्त भेल आ जा कए अपन दोस्तके गरा ला ओ क्मा मँगलक आ कहलक जे आइसँ एहन गलती हमरासँ कयो न होएत आ ई दोस्ती बनल रहत।

राजा अनसारी

राजा अनसारी महान राजा छलाह। हुनकर राज्य १४ कोशमे पसरल रहए। ओ राजा अपन मनोकामनाक अनुसार राज्य करैत छलाह। जे हुनकर हृदयमे अबैत छलन्हि वैह करैत छलाह। हुनका तीन टा बेटा छलन्हि। एक दिनुका गप अछि। राजाके कोनो वस्तुक कमी नहि छलन्हि। घर मकान, बंगला आ बाग-बगीचासँ भरल-पूरल छलन्हि। एक दिन राजा राति‍मे सूतल छलाह कि अचानके ओ सपना देखलन्हि जे हमर घरमे हीरा-मोती झहरि-झहरि कए खसैत अछि आ मोजर चुनि-चुनि कए सभ खाइत अछि। भोर भेल तँ राजा अपन लड़िकाके कहलक जे देखू हम राति‍मे ई सपना देखलहुँ। लड़िका उतर देलक जे पिताजी अहा एहि गपक चिन्ता नहि करु, हम ओकरा पूरा कए देब। तीनू भाए विचार कए भोरे घोड़ा कसेलक आ विदा भेल। चलैत-चलैत एकटा भयंकर बोनमे ओ सभ पहुँचल। तीनू भाए ओहि बोनमे रस्ता बिसरि गेल आ तीन रस्तापर विदा भऽ गेल। दू भाइ भटकैत रहल आ एहिना किछु दिन बीति गेल। छोट भाए बोनक रस्तामे भूख-पिआससँ थाकि गेल आ घोड़ाके छोड़ि देलक आ पएरे चलए लागल। कनेक कालक बाद ओकरा रस्तामे एकटा इन्सान भेटल। ओकरासँ ओ पुछलक, हमर सोनारूपी गाछक ठाढ़िसँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कए खाइत अछि। हमरा ओतहि जएबाक अछि। ओ इनसान कहलक जे एहि रस्तासँ चलि जाऊ। आगा एकटा इनार अछि। ओही इनारक बाटे एकटा रस्ता अछि। छोटका भाए ओकरे कहल अनुसार चलैत रहल आ जखन ओहि इनारक लग गेल तँ देखलक जे रस्ता ओही बाटे रहए। ओ इनारमे जा कए खसि पड़ल। चलैत-चलैत ओ भैरवानन्द जोगी लग पहुँचल। ओ जोगी कहलक जे रे बच्चा तूँ एतए कतएसँ अएलँह, एतए तँ कोनो मनुख आइ धरि नहि पहुँचि सकल रहए। ओतए ओ बच्चा ओहि जोगीक सेवा करए लागल। सेवा करैत किछु दिन बीति गेल तँ जोगी ओहि बच्चापर बड़ पसन भऽ गेल, बाजल-बच्चा माग की मँगैत छेँ। हम तोरा अवश्य देबौक। बच्चा बाजल-जोगी बाबा, हमरा सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़ि जाहिमेसँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कए खाइत अछि, से चाही। ओ योगी ई गप सुनि कए बड़ आश्चर्य व्यक्त कएलक। तूँ ई चीज कोना पता लगेलह । ठीक अछि। हम जखन वरदान दए चुकल छी, तँ अवश्य देब। तोरा कष्ट उठाबए पड़तह। भोर भेल तँ बच्चाके एकटा जंत्र देलक आ कहलक जे जाऊ आ सात समुद्र पार ओतए एकटा अमर फलक गाछ अछि, ओहिमेसँ एकटा फल तोड़ि कए लए आनू। ओ बच्चा ओतएसँ विदा भेल। सुग्गाक रूप धारण कएलक, उड़ैत-उड़ैत सात समुद्र पार गेल, जतए अमरफलक गाछ रहए। ओ फल तोड़ि ओतएसँ विदा भेल जखन ओकरा पाछा तीन टा परी लागि गेल आ ओ सभ तखन अबाज देलक जे घुमि कए देख। एना कहैत, पाछा करैत, चलि आबि रहल छलि ओ सभ। समुद्र टपलाक बाद सुग्गा घुमि कए देखलक आ ओतहि मरि गेल। जोगी ई सभ ध्यानमे देखि रहल छलि। सुग्गा घुमि कए देखलक आ मरि गेल ! जोगी विदा भेल अपन चुटा लए। चुटासँ मारि कए सुग्गाके जिआएलक आ कहलक जे आब जो। तूँ फल लए जे आब चलमे, तँ घुमि कए नहि देखिहें। एना बुझा कए ओकरा जोगी पठेलक आ ओ चलि गेल। फल तोड़ि एहि बेर ओ उड़ैत रहि गेल, घुमि कए नहि देखलक आ जोगी लग पहुँचि गेल। जोगी लग ओ पहुँचि गेल आ ओ फल जोगीक हाथमे देलक। ओ अमर फलसँ किछु बच्चाके खोआ देलक आ कहलक जे आब जाऊ अहा अमर भए गेलहुँ। फेर ओ कहलक जे ओही सात समुद्र पार एकटा कलम-गाछी अछि। ओही गाछीमे तीन बहिन रहैत छथि। ओकरे लग तोहर बात पूर्ण होएतौक। बच्चा विदा भेल, फेर सात समुद्र पार गेल आ ओही गाछीमे पैघ बहिन लग जा कए कहलक

तँ ओ ओकरा माझ्मल लग पठा देलक। ओकरा लग गेल तँ ओ ओकरा िटकी लग पठा देलक। जखन ओ िटकी बश्चन लग गेल तँ ओ हािमे चकू लेने बिकी आ माझ्मल बश्चन लग आएल। तखन तीनू बश्चन ओश्च लिकासँ पुिलक जे तो कतएसँ आएल िह। लिका जवाब देलक जे जोगी बाबा हमरा पठेने िश्च। अहा सभ हमरा संगे जोगीबाबा लग चलू। ओ चार गोटे ओतएसँ जोगीबाबा लग अएलाह। जोगीबाबा कहलक-बेटी, आब अहा तीनू गोटेके एकरा संग जेबाक अश्च।

ओ तीनू परी चलबा लेल तैयार भऽ गेलीह। जोगी बाबासँ बच्चा कहलक- हमरा गाि नश्च देखाइ पिल। ओश्च समय जोगी बाबा आदेश देलक आ खेला देखेलक। तीनू परी एक लाइनमे ठाढ़ भए गेलीह आ लिकाक हािमे चकू देलक आ कहलक जे एके संग तीनू परीक गरदश्चामे चकू मार आ अपन गरदश्चामे सेहो मार । एना कएलासँ सोनाक गाि आ रपाक ठाश्चपरसँ मोती झरए लागल आ मोजर चुश्चा कए खाए लागल। बच्चाके आब श्चसबास भेलैक आ तखन श्चकि श्चनुका बाद ओ चार गोटे ओतएसँ श्चदा भेल आ घर पहुँचल।

ओ अश्चूके कहलक श्चताजी हम सोना-रपाक गाि अनने िी।

राजा अनसारी कहलक- बेवकूफ! तूँ तीनटा औरत अनने िँह आ कहैत िँह जे गाि अनने िी।

बच्चा कहलक जे सौँसे नगरक लोकके बजाऊ आ तखन हम देखबैत िी।

राजा सभके बजेलक एकि कएलक।

बच्चा तीनू परीक गरदश्चामे चकू मारलक आ अपन गरदश्चामे सेहो। सोनाक गाि आ रपाक ठाश्च सँ मोती झरए लागल आ मोजर चुश्चा कए खाए लागल।

राजाक सपना पूरा भेल।

राजा ढोलन

गढ़ नाश्चयलक राजा दक रहए। ओ राजा बर ड पतापी ि ल। मुदा ओकरा राज्यमे कोनो हाट-बजार नञ्च रहए। राजा सोचलक जे हमर राज्यमे हाट कोना लगत? से राजा अपन राज्यमे ढोलहो थ्यटबा देलक जे हमरा राज्यमे हाट लागत आ जकर जे समान नञ्च श्चकाओत से हम कीश्च लेब। सम्पूण राज्यक लोक आबए लागल आ हाट लगबए लागल। एश्च पकारे सभ श्चन हाटमे जे समान बश्च जाइत ि ल, तकरा राजा कीश्च लैत ि ल। एश्चना कतेक श्चन बीश्च गेल। एक बेर एकटा सूतबला सूत बेचए लेल ओतए आएल मुदा तावत हाट उश्च गेल रहए आ ओकर सूता नञ्च श्चकाएल। राजा ओकर सूत सेहो कीश्च लेलक।
मुदा जश्चयासँ राजा सूता श्चकनलक तश्चयेसँ ओकर अबस ि घटए लागल। श्चक ि श्चनुका बाद राजाक हालश्च गरीब जेका भऽ गेल। राजा अपन स ीसँ कहलक-अश्चाका सुनू। अपन राज्यमे गरीबी पसश्च गेल अश्चि। आब अपन राज्य रहबा योत्य नञ्च रहल। ओतए सँ राजा श्चदा भेल आ जाइत-जाइत कोनो देशमे पहुँचल। ओश्च देशक नाम गढ़श्चंगल रहए। ओतुका राजाक नाम सेहो देशक नामपर ि ल। गढ़श्चंगल राजाक ओही नगरमे गढ़नाश्चयल राजा घुमैत-घुमैत पहुँश्च गेल आ कहए लागल जे हे भाइ हमरा श्चकयो नोकरी राखत ? राजा कहलक-हँ। हमरा एकटा नोकरक जर री अश्चि। एकरा राश्च श्चअ। गढ़श्चंगल राजाके एक सए नोकर रहए आ ओकरा एकटा आर नोकरक आवश्यकता रहए कारण ओकरा लग १०१ टा घोि रहए। ओ राजाक एश्चठाम रश्च गेल आ सभ श्चन घोिक घास लेल जाए लागल आ घास िश्च कए आनए लागल। गढ़नाश्चयलक राजा दकक स ी गभि्ती रहए आ गढ़श्चंगलक राजाक स ी सेहो गभि्ती रहए। आ संयोग एहन रहल जे दुनू राजाक स ी एके श्चन जन्म दैत अश्चि। श्चंगलक राजा बाह ण बजा कए ज्योश्चष देखेलक आ राजा अपन पुि ीक नाम राखलक आ कहलक जे एकर नाम मडुवन श्चकएक अश्चि। बाह ण कहलक जे एकर श्चयाह िठी राश्चाके होएत। राजा ओही श्चनसँ अपन राज्यमे ताकैत-ताकैत िश्चक गेलश्चि मुदा हुनका ओ नञ्च भेटल। राजाक खबाश्चनी कहलक जे अहा सभ श्चन्ता श्चकएक करैत ि ी। राजा साहब पश्चिला बेर जे नोकर रखने िश्चि हुनका एश्चठाम एकटा ल िका जन्म लेने अश्चि। ओकरे संग श्चयाह करा देल जाए। ओश्च बच्चाक नाम राश्चाक अनुसार राजा ढोलन राखल गेल ि ल। गढ़श्चंगलक राजा सोचलक जे ई बर ड नीक गप अश्चि, जखन ई लगेमे अश्चि तँ ओकरे संग श्चयाह करा देल जाए। श्चन तँ ताकले रहए से ओही िश्चक राश्चामे श्चयाह भए गेल। श्चक ि श्चनुका बाद राजा दक कहलक जे आब एतए रहबाक योत्य नञ्च अश्चि। आब अपन देश जएबाक चाही।
राजा जाश्च साढ़ीनपर चश्च कए आएल रहश्चि ओश्च साढ़ीनके कहलश्चह जे साश्चन आब अपन देश चलू। आब साढ़ीपर चश्च कए राजा-रानी श्चदा भेलाह। श्चक ि दूर रस्तामे गेलाह तँ एकटा बोन भेटलश्चह। ओश्च बोनमे रस्ताक कातमे एकटा पोखश्च रहए। ओही पोखश्चक महारपर दू टा बाघ-बाश्चन रहैत ि ल। राजा सोचलक जे हमर सभक बच्चा जखन एश्च रस्तासँ अपन सासुर जएताह, तखन ई बाघ हमर बच्चा सभके खा जाएत। ताश्च दारे एकरा माश्च देनाइ ठीक होएत। राजा बाघके माश्च देलक आ आगा चलल तँ बाश्चन कहलक जे राजा तूँ हमरा जेना रा ि कए जा रहल ि ह, ओश्चना तोहर बेटा जखन अपन सासुर जेतह तँ गढ़पीपली राजमे ओकर कश्चयाके हमहू रा ि कए देबैक।
बाश्चनक ई अबाज मा ि राजा सुनलक। राजा अपन घर पहुँश्च कए ई गप ककरो नञ्च कहलक। ओ अपन साश्चनके एकटा पैघ ख ि इ खूश्च कए ओश्चमे ि ऽ देलक कारण बाहर रहलासँ ओ ई गप ओकर बच्चाके सुना

दैत। ओही समय िट बालकके अपन फुलवाीिक रेखा-पेखा माश्चनक संग दए देलक। ओकर दुनू बश्चन ओकरा बर ड नीक जेका सेवा करए लगलीह। एश्चना करैत थ्कि थ्चन बीश्चा गेल तँ ई बच्चा समिभिऽ गेल आ तखनो ओकरा थ्कि बूझल नश्च भेलैक। ओम्हर ओ मिअन कन्या सेहो पैघ भऽ गेश्च। कन्या युवा भऽ गेश्च तँ ओश्च सखी सभक घुमैत थ्फरैत हुनका कोनो संगी कहलक जे हे बश्चन। आब अहा समिभिऽ गेलहुँ। अहाक थ्पताजी अहाक श्चयाहक थ्षयमे थ्कि नश्च सोश्च रहल थ्िश्च। ई बात सुश्च कए कन्या बि थ्चन्तामे पश्च गेलीह। अपन महलमे जा कए ओ पलंगपर पश्च रहलीह आ खेनाइ त्याश्च देलश्चह। एश्चपर ओकर माए कन्या लग जाए कहलक, बेटी अहा खेनाइ थ्कएक नश्च खाइत िी ?

कन्या बाजश्च-माए। सखी सभ बर ड थ्कचथ्कचबैत अश्च। ताश्च दारे हमरा भूख नश्च लगैत अश्च। माए कहलक- अहाके की कश्च थ्कचथ्कचबैत िश्च?

कन्या बाजल-ओ सभ हमरा कहैत िश्च जे अहाक थ्पताजीके कोन चीजक कमी अश्च, जे अहाक थ्पताजी अहाक श्चयाह नश्च करा रहल िश्च?

माए कहलक- बेटी अहाक श्चयाह िठीक राश्चमे भए गेल अश्च। अहाक सासुर गढ़नाश्चयलमे अश्च। नश्च जाश्च ओ थ्कएक नश्च अबैत िश्च?

ई सुश्च कन्या कहलक जे हमरा जबुनाक कातमे एकटा मकान बना श्चअ आ सभ वस्तुक व्यवसि कए श्चअ। हम बारह बश्चख िश्च सदावत्त बाटब। एतेक सुश्च राजा ओश्चना कएलक। मिवन कन्या जबुनाक कातमे सदावत्त बँटनाइ शुर कए देलक।

बश्चजारा सभ वाश्चाज्य करबाक लेल गढ़नाश्चयलसँ गढ़-थ्पनाल जा रहल िलाह। बश्चजारा सभ जखन गढ़-थ्पनाल पहुँचलाह तँ जबुना िरक कातसँ होइत आगा बश्च रहल िलाह। जाइत-जाइत ओ सभ ओश्चठाम पहुँचलाह जतए मिवन कन्या सदावत्त बाश्च रहल िलीह। ओ कन्या पुिलक-अहा सभ कतए जा रहल िी आ कतएसँ आएल िी। बश्चजारा बाजल-हम सभ गढ़नाश्चयलसँ आएल िी आ गढ़थ्पनालमे हीरा-मोतीक वाश्चाज्य करैत िी। कन्या बाजल-अहा वाश्चाज्य कए घुरब तँ हमर एकटा पि लए जाएब?

बश्चजारा बाजल-अहा पि श्चश्च कए राखब, हम जर र लए जाएब। बश्चजारा जखन घुरल तँ ओ पि लए चश्च गेल आ जखन गढ़ नाश्चयल पहुँचल तँ हरेबा-परेबा जे दुनू बश्चन िश्च-आ बर ड पैघ जादूगरनी िश्च- ओ जादूक जोरसँ पता लगा कए राजाके खबश्च कएलक आ बश्चजारासँ ओ पि लऽ कऽ ओकरा आश्चमे जरा देलक आ ओश्च राजाक बेटाके एकर पता नश्च चलए देलक। कन्याक ई पि मारल गेल। ओ बेचारी बाट तकैत रहल। थ्कि थ्चन बीतल। ओ कन्या एकटा सुला पोसने िलीह। ओ सुलासँ पुिलक-की तूँ हमर पि लए जा सकैत िह। सुला बाजल-हँ। हम पि राजाके दए देब। कन्या पि श्चश्च कए सुलाक गरदश्चमे लटका देलक आ कहलक- जाऊ।

सुला ओतएसँ श्चदा भेल। सुला आकासमे उश्च श्चदा भेल आ पहुँचल गढ़नाश्चयल राज्य जतए हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहश्च। सुला उश्च कए ओकर कान्हपर बैश्च गेल, ठोठसँ सूता काश्च कए खसेलक। ओश्च समय हरेबा-परेबा राजा ढोलनक फुलवारीमे बैसल रहए। ठंढ़ीक मौसम िल। आश्च पजाश्च कए बैसल िल। जखने ओ पि खसेलक तखने माश्चन ओश्च पिके आश्चमे िऽ देलक। राजा ढोलनके बर ड तामस उठलैक। दुनूके दू-दू चमेटा मारलक आ कहलक जे तूँ दुनू गोटे एतएसँ चश्च जो। दुनू बश्चन पकश्च कए ओकरा मनाबए लागल। कन्याक ओहो पि खतम भए गेल। कन्या बहुत थ्चन्तामे पश्च गेल। बहुत समय आर बीश्च गेल।

एक थ्दन जबुनाक थ्कनारसँ एकटा महात्मा जोगी रपमे जा रहल िल। कन्याक नजथ्र ओथ्ह महात्मापर पथ्ि गेल। कन्या बड्ड थ्थ्रात भए काथ्न रहल िलीह। ओ साि महात्मा कन्याक कननाइ सुथ्न अएलीह आ कारण पुिलक।

कन्या सभटा हाल बतेलक ।

महात्मा कहलक जे तूँ एकटा पि थ्ञथ्र कए हमरा दे आ हम ओ पि ओतए पहुँचाएब।

कन्या पि थ्ञथ्र कए महात्माके देलक। महात्मा ओतएसँ थ्वदा भेल।

कन्या महात्माके गाजा,भाग आ हफीम देलक। महात्मा ओकरा खाइत-थ्बैत ओतएसँ थ्वदा भेल। थ्कि थ्दनुका बाद महात्मा गढ़नाथ्यल पहुँचल, जतए हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहए। ओ फुलबारीक बीचमे अपन डेरा खसेलक। रातुक मौसम िल। भोर होइ बला िल। ओही समय महात्मा एकटा मोथ्हनी बासुरी थ्नकाललक आ बजबए लागल। ओथ्ह बासुरीक अबाज सुथ्न राजा ढोलन उठल आ चलबा लए तैयार भेल तँ दुनू बथ्हन ओथ्ह बासुरीपर बहुत रास जादू-गुण चलेलक। मुदा महात्माक थ्कि नथ्ह थ्बगिल। राजा ढोलन उठल आ दुनूके दू-दू लात माथ्र महात्मा लग गेल। सािजी ओथ्ह पिके थ्नकाथ्ल कऽ राजा ढोलनके देलथ्थह। आर से पथ्ढ राजा ढोलन तामसे थ्वख-सथ्वख भए गेल आ ओतएसँ घर गेल आ एकटा तलबार लए थ्पतासँ पूिए लागल जे बताऊ जे ई हमर थ्बयाह कतए भेल अथ्ि ? थ्पताके ओ बाथ्घन मोन पथ्ि गेलैक से ओ झूठ बाजल आ कहलक जे हम तोहर थ्बयाह नथ्ह करबेने थ्ियहु।

तामसे भेर भए ओ ओथ्ह पिके राजाक सोझा राखलक। राजा ओ पथ्ढ बरड थ्चन्तामे पथ्ि गेल।

ओ अपन बेटाके कहलक। देखू बेटा। अहाक थ्बयाह हम िठीक राथ्त कएने िी आ गौना एथ्ह दारे नथ्ह कएलहुँ कारण अबैत काल हम एकटा बाघके माथ्र देलहुँ। फेर ओ सभटा थ्खस्सा कथ्ह सुनेलक आ कहलक, जे ओ डरे ओकर गौना नथ्ह करेलक।

ढोलन बाजल-हमर सवारी कतए अथ्ि। हमर सवारी थ्दअ।

राजा कहलक-साढ़नी तँ तरहाराक नीचा अथ्ि। ओ जीथ्वत अथ्ि वा मथ्र गेल से नथ्ह जाथ्न।

राजा ढोलन तरहराक नीचा सँ साथ्ढ़नके बहार कएलक तँ साथ्ढ़नक देहमे थ्पल्लू लाथ्ग गेल िल। ओ ओकरा साफ कएलक आ ओकरा चना-चबेना खुअएलक। खुआबैत-खुआबैत ओ पथ्हने जेका तन्दरुस्त भए गेल।

राजा ढोलन बाजल-साथ्ढ़न, तोहर पैर बहुत थ्दनसँ बान्हल िह। तूँ चौदह कोसक रस्ताके एक थ्दनमे चाथ्र चौखि लगा थ्दअ तँ हम बुझब। हम सभ फेरसँ गढ़थ्पंगल पहुँचब। साथ्ढ़न अपन चाथ्ल एक थ्दनमे बना लेलक। राजा ढोलन अपन सासुर थ्वदा भेल। साथ्ढ़नपर सवार भए अपन कान्हपर बन्दूक लेलक आ थ्वदा भेल। चलैत-चलैत ओ ओही बोनमे पहुँचल। ओही रस्तासँ ओ सभ जा रहल िल, जतए ओ बाथ्घन रहैत िलीह। बाथ्घनके राजा ढोलन देखलक आ ओथ्ह बाथ्घनके माथ्र देलक। फेर ओ अपन सासुर गढ़पीपली गेल आ फूल बगानमे डेरा खसेलक। साढ़नीके ओ ओतथ्ह िोथ्ि फूल-बगानके तोथ्ि-ताथ्ि कए तहस-नहस कए देलक। माथ्लन कहलक जे तोरा राजासँ थ्पटान थ्पटबेबउ आ जतेक तो बरबादी कएने िँहि तकर हरजाना लेबउ। राजा ढोलन बाजल- जो तोरा जे करबाक िक कर।

माथ्लन तामसे थ्वदा भेथ्ल आ राजा लग गेथ्ल। राजासँ कहलक।

राजा पुिलक जे ओ कतुका अथ्ि।

माथ्लन कहलक जे ओ अपन घर गढ़नाथ्यलक बतेलक अथ्ि।

राजा अपन सिपाही सभके पठेलक। ओ सभ ढोलनके पुछलक-अहा कतुका छी आ कतएसँ आएल छी।
ढोलन बाजल- हमर घर गढ़ नाथियल अछि आ हम अपन सासुर गढ़-पिंगल- ओतएसँ आएल छी।
सिपाही सभ ई गप राजाके जा कए कहलक।
राजा पसनतासँ स्वागत कए डोलीमे बैसा कए ढोलनके अपना घर अनलक। किछु दिनुका बाद राजा अपन बेटी-जमाएके गढ़-पिंगलसँ गढ़ नाथियलक लेल बिदा केलक। ओतए सँ राजा ढोलन आ ओ मछिवन कन्या अपन घर गेल आ अपन राज्य करए लागल।

बथुआयाक गाछ

एकटा मसोमात छलीह आ हुनका एकेटा बेटा छलन्हि। ओ छल बड्ड चुस्त-चलाक।
एक दिनुका गप अछि। ओ स्त्री जे छलीह, अपना बेटाके बथुआया बना कए देलथिन्ह। ओहि बालकके बथुआया बड्ड नीक लगैत छलैक। से ओ एहि बेर एकटा बथुआया बाड़ीमे रोपि देलक। ओतए गाछ जनमि गेल। बथुआयाक गाछ, नहि देखल ने सुनल।
माए-बेटा ओहि बथुआयाक गाछकि खूब सेवा करए लगलाह। कनेक दिनमे ओहि गाछमे खूब बथुआया फड़ए लागल। ओ बच्चा गाछ पर चढि कए बथुआया तोड़ि कए खाइत रहैत छल।
एक दिनुका गप अछि। एकटा डाइन बुढ़िया रस्तासँ जा रहल छलि। ओकरा मनुक्खक मसुआइ बना कए खायमे बड्ड नीक लगैत रहैक। ओ जे ओहि बच्चाके गाछ पर चढ़ल देखलक तँ ओकर मोन लुसफुस करए लगलैक। आब ओ बुढ़िया मोनसूबा बनबए लागल जे कोना कए ओहि बच्चाके फुसियाबी आ एकरा घर लऽ जा कए ओकर मसुआइ बना कए खाइ।
बच्चाके असगर देखि ओ लग गेलि आ बच्चाके कहलक-
"बौआ एकटा बथुआया हमरा नहि देब? बड्ड भूख लागल अछि।
बच्चा ओकर हाथ पर बथुआया देबय लागल।
"बौआ हम हाथसँ कोना लेब बथुआया हथिइन भऽ जाएत"।
बच्चा बथुआया ओकर माथ पर राखए लागल।
"हँ हँ माथ पर नहि राखू। मथिइन भऽ जाएत"।
बच्चो छल दस बुधियारक एक बुधियार। खोइछमे बथुआया देबए लागल।
"ई की करैत छी बौआ। बथुआया खोछिइन भऽ जाएत, अहा झुकि कए बोरामे दए दिअ"।
मुदा बच्चा तँ छल बुझू जे गोनू झाक मूल-गोत्रक।
बाजल-
"नहि गए बुढ़िया। तो हमरा बोरामे बन्द कए भागि जेमह। माए हमरा ठग सभसँ सहचेत रहबाक हेतु कहने अछि"।
मुदा बुढ़ियो छल ठामक बुढ़िया। ठकि फुसियाया कए बोली-बानी दए कए ओकरा मना लेलक। जखने बच्चा झुकल ओ ओकरा बोरामे कसि कए बन्दा भेलि। बुढ़िया रस्तामे थाकि कए एकटा गाछक छाहरिमे बैसि गेलि। कनेक कालमे ओकरा आँखि लागि गेलैक। बच्चा मौका देखि कोनहुना कए ओहि बोरासँ बाहर बहरा गेल आ भीजल माटि, पाथर आ काट-कूस बोरामे दऽ कए ओहिना बान्हि कए पड़ा गेल।
बुढ़िया जखन सूति कए उठल आ बोरा लऽ कए आगू बढ़ल तँ ओकरा बोरा भरिगर बुझएलैक। मोने-मोन पसन भऽ गेलि ई सोचि जे हृष्ट-पुष्ट मसुआइ खएबाक मौका बहुत दिन पर भेटल छै ओकरा। रस्तामे भीजल माटिसँ पानि खसए लागल तँ ओकरा लगलैक जे बच्चा लगही कए रहल अछि।
ओ कहलक जे-
"माथ पर लघुशंका कए रहल छह बौआ। कोनो बात नहि। घर पर तोहर मसुआइ बना कए खायब हम"।
कनेक कालक बाद काट गरए लगलैक बुढ़ियाके। कहलक-

''बौआ। श्वटू काश्च रहल ि ी। कोनो बात नश्च कतेक काल िश्च काटब''।
बुढ़याक एकटा बेटी िलैक। गाम पर पहुँश्च कए बुश्चया ओकरा कहलक जे आइ एकटा मोट-सोट श्वाकार अश्चि बोरामे। माए बेटी जखन बोरा खोललक तँ श्वाकलल माश्च, काट आ पाि र।
कोनो बात नश्च।
बुश्चया भेष बदश्च पहुँचल फेरसँ बश्वायाक गाि तर।
एश्च बेर बच्चा ओकरा नश्चि चीश्चह सकल। मुदा जखन ओ झुश्च कए बश्वाया बोरामे देबाक गप कहलक तँ बच्चाके आशंका भेलैक।
''गए बुश्चया। तोही िँह ठश्वान बुश्चया''।

मुदा बुश्चया जखन सप्पत खएलक तँ ओ बच्चा झुश्च कए बश्वाया बोरामे देबए लागल। आ फेर वैह बात।
एश्च बेर बुश्चया कतहु ठाढ़ नश्च भेश्च। सोझे घर पहुँचल आ बेटी लग बोरा राश्च नहाए-सोनाए लेल चश्च गेश्च।बेटी जे बोरा खोललक तँ एकटा झोटा बला बच्चाके देखलक। ओ पुिलक-
''हमर केश नमगर नश्च अश्चि श्चएक?''।
''अहाक माय अहाक माि ऊखश्चिमे दए समाठसँ नश्च कुटने होयतीह। ते ''। बच्चा तँ िल दस होश्वायरक एक होश्वायार से ओ बाजल।
बुश्चयाक बेटी अपन केश बढ़ेबाक हेतु अपन माि ऊखश्चिमे देलक आ ओ बच्चा ओकरा समाठसँ कूटए लागल। ओकरा माश्च ओकर मासु बनेलक। बुश्चया जखन पोखश्चसँ नहा कए आयल तँ बुश्चयाक आगू ओ मासु परश्च देलक।
जखने ओ खेनाइ पर बैसश्च तँ लगमे एकटा श्वलाश्चि िल से बाश्च उठल-
''म्याऊ। अपन िीया अपने खाऊ। म्याऊ''।
''बेटी एकरा मासु नश्च देलहुँ की। ते बाश्च रहल अश्चि''।
ओ बच्चा श्वलाश्चिक आगा मासु राश्च देलक मुदा श्वलाश्चि मासु नश्च खएलक।
आब बुश्चयाक माि घुमल। ओ बेटीके सोर कएलक तँ ओ बच्चा समाठ लऽ कए आयल आ ओकरा माश्च देलक।
फेरसँ बच्चा बश्वायाक गाि पर चश्च बश्वाया खए लागल। बरड नीक लगैत िल ओकरा बश्वाया।

<u>ज्योश्ना पँश्मयार</u>

ज्योश्ना पँश्मयार िलाह श्वद। पम्पीपुर गामक। तं-मं जानएबला। मिरीज रहश्री हुनकर कुलदेवता। ज्योश्ना पँश्मयारक पती िलीह लश्वमा।

एक बेर सािक वेष िऽ मिरीज श्वाकाक हेतु अएलाह। ज्योश्ना पँश्मयार लश्वमाक संग गहबर बना रहल िलाह। माय सूपमे अन लए कऽ अयलीह। मुदा साि कहलश्वन्ह जे हम तँ भीख लेब ज्योश्ना पँश्मयारक हािटा सँ। ज्योश्ना पँश्मयार मना कए देलश्वन्ह जे हम गहबर बनायब िश्रि कए नश्व आयब। साि िप दए देलश्वन्ह जे श्वाि भऽ जयताह ज्योश्ना पँश्मयार, कुष फूश्वट जएतश्वह हुनका।

आस्ते-आस्ते ई घश्वटत होमए लागल। ज्योश्ना पँश्मयार बश्वश्वाक ओश्वठाम चश्व गेलाह। मुदा ओतय अवहेलना भेटलश्वह। ज्योश्ना ओतय सँ श्वाकश्व गेलाह। ओइटदल गाम पहुँश्व गेलाह अपन संगी लगवारक लग। एकटा ताश्रीक अएलाह। कहल- बारह वषि कदलीवनमे रहए पित। मिरीजक आरािना करए पित, गहबि बनाए करची रोपी ओतए। बासक घर बनाऊ मिरीजक हेतु। मिरीज दशि देताह, अहा ठीक भऽ जाएब। पँश्मयार चललाह।

रस्तामे सैनी गाि भेटलश्वह, ओकर िहमे सुस्तेलाह पँश्मयार। मुदा ओ गाि सुखा गेल, अरि कए खश्व पिल।

कोइलीके कहलश्वह जे पाश्व आश्व श्वअ। ओ उिल तँ श्वहाि आश्व गेल। कोइली मश्व गेल।

पँश्मयार उश्रि कए पहुँश्व गेलाह कदली वनमे। एकटा मश्वसबार कहलकश्वह जे अिश्वातपुर गाम जाऊ। मश्वसबार िलाह मिरीज, बश्व गेलाह भेम-भौरा।

एकटा व्यश्वक्त भेटलश्वह। ओ कहलकश्वह जे आगू वरक गाि भेटत, ओकर पात तोि।ओश्व पर अहाक सभ पशक उतर रहत। ई कश्व ओ परबा बश्व गेल।

वरक पात तोिलश्वह ज्योश्ना तँ ओश्व पर श्वखल िल, यैह िि अिश्वातपुर। ओतुका राजाके बच्चा नश्व िलश्वह। ज्योश्ना आशीवाद देलश्वह। कहलश्वह, एकटा िगर ओश्व श्वन पोसब जाश्व श्वन गभ ठहश्व जाए। हम कदली वनसँ आएब तँ ई िगर स्वयं खुटासँ खुश्व जाएत। १२ बरखक बाद ज्योश्ना कदली वनसँ चललाह। कोइलीके जीश्वत कए देलश्वह। सुखाएल िरमे पाश्व आश्व गेल। सैनीक गाि हश्वयर कचोर भऽ जीश्व उठल। अिश्वातपुर गाममे राजा कहलश्वह जे िगर आ पुि दुनू एकश्व श्वन मश्व गेल। पँश्मयार पाठाके श्वआ देलश्वह, कहलश्वह जो तो कदलीवनक िरमे नाओ पर चश्व जो, मनुक्ख र प भेश्व जएतौक। तावत राजाक पुि सेहो कदलीवनसँ श्वाकार खेला कए घोि पर चश्व कए आश्व गेल। ज्योश्ना पँश्मयार गाम पहुँश्व गेलाह गमिमे गहबर लेने।

राजा सलहेस

राजा सलहेस सुन्दर आ वीर छलाह। मोरंग, नेपालमे रहैत छलाह। ओ दुसाध जातिक छलाह आ दबना जे मोरंग राजाक मालिन छलि, सलहेससँ पेम करैत छलि। राजक वैद दबनासँ पेम करैत छलाह आ दबनाक अस्वीकृतिसँ ओ आत्महत्या कए लेलन्हि।
सलहेस छलाह मोरंगक तालुकदार नौरंगी बहादुर छिपाक सिपाही। सलेहस छलाह मोनक राजा। सभके विपत्तिमे सहायता दैत रहथि। तालुक दारे दबना दिस हुनकर कोनो ध्यान नहि छलन्हि। सभ हुनका राजा कहैत छलन्हि, से ई तालुकदारके पसिन नहि पड़ल।
एक दिन दरबारमे ओ सलहेसके पुछलक-
अहाक नाम की?
सलहेस कहलन्हि- हमर नाम छी राजा सलहेस।
तखन छिपा कहलकन्हि, जे अहा अपन नाममे राजा नहि लगाऊ।
सलहेस कहलन्हि जे ई पदवी छी, जन दारा देल पदवी। कोना छोड़ब एकरा। हम छोड़ियो देब, लोक तँ कहबे करत।
तखन छिपा कहलथिन्ह जे लोकके मना कऽ दियौक।
सलहेस कहलन्हि जे लोकके कोना मना करबैक। लोकक मोन जे ओ ककरा की बजाओत।
चिढ़िकऽ गेलाह सलहेस ओतएसँ। आब नहि चाहैत ई नोकरी। आइ कहैत अछि नाम छोड़िए लेल, काल्हि किछु आर कहत।
पितियौत बहिन रहैत छलन्हि मुंगेरमे। बहिनोइ राज दरभंगाक नोकरीमे छलाह।
एम्हर कुसमी दबनाके कहि देलक जे सलहेस जा रहल अछि मोरंग छोड़ि कए। दबना छलि कमर-कमख्यासँ तंत्र-मंत्र सिखने।
ओ सलहेसके कहलक जे हम राजाक दरबारमे सात सए सिपाहीक सरदार चूहड़मलके हटबा कऽ अहाके सरदार बना देब। सैह भेल। बड़का जलसा देलक दबना, गेलक गीत-
रौ सुरहा,
बारह बरस तोरा लेल आँचर बन्हलौं।
मुदा, केलक चोरि चूहड़मल, चोरेलक नौ लाखक रानीक हार आ नुका देलक सलहेसक ओसारमे।
उनटे चूहड़मल राजाके कहलक जे सलहेसक घरक तलासी लेल जाए।सलहेसक गेरआक खोलसँ खसल हार।
दबना काली मन्दिरमे तंत्र साधना शुरु कएलक। भूत-पेतके नोतलक। खून बोकरबेलक चूहड़मलसँ।
चूहड़मल सभटा बकि देलक।
सलहेसके जेलसँ छोड़ि देल गेल आ ओकर ओहदा बढ़ा देल गेल। चूहड़मलके भेलैक जेल।
दबना आ सलहेस विवाह कए खुशीसँ रहए लगलाह।

बहुरा गोश्चन नटुआदयाल

एकटा िश्च बहुरा गोश्चन आ एकटा िलाह नटुआ दयाल।
बहुरा गोश्चन नतर्की िश्च आ ओकरा जादू अबैत िलैक।
नटुआ दयाल बहुरा गोश्चनक पशंसक िल, श्चएक तँ ओ िल पेमी, बहुरा गोश्चनक पुि◌क।
िल मुदा ओहो तािन्वक।
कमला-बलानक कातक केवटी िश्च बहुरा, बखरी, बेगूसरायक रहश्चाहाश्च।
हकश्च िश्च, कमर सँ सीखने िश्च जादू।
दुलरा दयाल िल श्चि◌ला राजाक भरौि◌ राजकुमार, ओकरे नाम िल नटुआ दयाल।
नृत्य जे ओ बहुरासँ श्चखलक तँ सभ नामे राश्च देलकैक ओकर नटुआ।
नटुआ दयालक गुर िलाह मंगल।
श्चाद पुरष।
अकाशमे श्चन खुटीक ि◌ती टँगैत िलाह, सुखला पर उतारैत िलाह।
बहुरा गाि◌ हँकैत िश्च, जकरासँ झगि◌ भेल ओकरा सुगा बना पोश्च लैत िलीह।
कमला कातमे रहैत िलाह आ भजैत िलाह-
कमलेक आसन, ओहीमे बास हे कमला मैया।
बहुरा वरके माश्च सीखने िल जादू। राजकुमारक श्चवाहक पस्तावके नश्च ठुकरा सकश्च मुदा। बश्चयाती दरबज्जा लागल तँ भऽ गेलैक कहा सुनी आ सभके बना देलक ओ बत्।
मंि◌ी मल्लक एक आँश्चक रोशी खतम।
आश्च रे बा।
व्यापारी जयश्चंह िल मोश्चत महुराक बेटी पर, ओकरे खरयंि◌।
आश्च रे बा।
गुर लग गेल राजकुमार आ आदेश भेलैक, जो कामाख्या, सीखय लेल षट् नृत्य आ जादू।
चश्चाडका मंश्चरमे योश्चानीसँ षटनृत्य श्चखलक आ आदेश भेलैक सरैया गामक भुवन मोश्चनीसँ षट् नृत्यक एक अंग सीखबाक।
ओश्च गामक श्चाद देवी रहश्च वागेशरी।
नरबश्च चढैत िल ओतए। दैत्य अबैत िल ओतए।
श्चखलक राजकुमार श्चाद नृत्य अनहद आ आजा चक।
कश्चया जादूके काटय बला मंि◌ फुकलक राजकुमारक कानमे।
कमला बलान लग आएल राजकुमार।
बहुरा सुखेलक ि◌रक पाश्च।
राजा पता लगेलक जूश्चयासँ, अनलक बहुराके। मुदा ओ तँ लगा देलक दोष राजकुमार पर। यज भेल तैयो कमलामे पाश्च नश्च आएल, नटुआ पठेलक सभटा पाश्चके पताल?
नटुआके पकश्च कय आनल गेल। ओ अपन नृत्यसँ जलाजल केलक कमलाके।मुदा कहलक बहुराके माफी

थ्वयौक।
बहुरा कहलक आब तो भेलह हमर बेटीक योल्म।
आबह बथ्वयाती लऽ कए।
नटुआ बथ्वयाती लऽ कऽ पहुँचल।
तीन टा पान अएलैक, एक कमलाक पाश्वाक हेतु, दोसर बहुराके माफ करबाक

हेतु।
आ तेसर ओकर बेटीसँ ब्याह करबाक हेतु।
तीनूटा पान उठेलक नटुआ आ शुरु भेल गीत-नाद।
थ्वयास लगलैक नटुआके थ्वाष्म थ्वलथ्वलके पठेलक इनार पर।
डोरी िट भए गेलैक। अपने गेल नटुआ आ डोरी पैघ भऽ गेलैक।
फूलमती िश्व ओतए, पश्वाक पश्वाभासँ पसन िश्व ओ।
मल्लक आँथ्व ठीक कएलक बहुरा।
कमला पहुँचल कश्वायाक संग नटुआ।
मुदा आश्व रेबा।
नटुआके चकू मारलक बहुरासँ दूर भेल ओकर थ्वाष्म।
मुदा नटुआ चढ़ेने लि पटोर कमला मैय्याके।
कमलाक िर खूने-खूनामे।
मुदा कामाख्याक जदूगरनी अएलीह आ जीवीत कएलश्वह नटुआके।
दुश्मनक बश्व चढ़ेलक ओ कमलाके।

महुआ घटवारिन

महुआ घटवारिन परी जेका सुन्दरि छलीह जेना गूलरि आँटामे एक चुटकी केसर, मुदा सतवंती छलीह। बाप गँजेरी शराबी आ माए सतमाय, नजरि चोर। घरमे सतमाएक राज छल।

सोलह बरखक भए गेल रहथि मुदा हुनकर बियाहक चिंता ककरो नहि रहैक। परमान नदीक पुरनका घाटक मलाह पसिनी करैत छथि जे महुआक नावके किनार लगा दियौक।

साओन-भादवक, भरल छरि,

कम वयसक महुआ नहि जाऊ,

एहि रातिमे खेबय लेल नाह।

एहने साओन-भादवक रातिमे सतमाए, घाट पर उतरल वणिक् के तेल लगेबाक हेतु महुआके पठबए चाहैत अछि आ ओ जाए नहि चाहैत अछि। अपन माएके मोन पाड़ैत अछि।

नोन चटा के किए नहि मारलँह,

पोसलँह एहि दिन खातिर।

मुदा सतमाए साओन-भादवक रातिमे पथिकके घाट पार करबाबए लेल महुआके पठा देलक। महुआ सदा भेलि आ बीच रस्तामे अपन सखी-बहिनपा फूलमतीसँ भरि राति गप करैत रहलि।

केहन माए अछि जे रातिमे घाट पार करेबाक लेल कहैत अछि। माय ईहो कहलक जे पथिक पाइबला होए आ बूढ़ होए तँ ओकरा तेल-मालिस करबामे कोनो हर्ज नहि। ओकर मोनमे जे होअए, भेल तँ ओ दिते समान।ओकरा जेबीसँ चाहि पाइ निकालि लेल जाएय, अहीमे बुधियारी अछि।

फूलमती कहलक- घबरायब नहि। जरेने रहू पेमक आगि, ओकरा लेल जे मोरंगमे आँगुर पर दिन गानि रहल अछि।

मोरंगक नाम सुनि महुआ उदास भए गेलि। ओ फागुनमे आयत गऽ।

भोरहरबामे ओ गामपर पहुँचल आ माए दस बात कहलकैक। बाप नशामे आएल तँ माए ओकरो लात मारि भगा देलकैक।

तखने हरकारा आएल आ माएक कानमे संदेश देलक। महुआ माएके कहलक जे अहा जे कहब से हम करब। वणिकक आदमी आयल छल, ओकरा संग महुआ घाट पर पहुँचलि। वणिक दू सिपाहीक संग नावमे बैसल। महुआ नाव खेबय लागलि। मुदा ओकरा नहि बूझल रहए जे ओकरा बेचि देल गेल छै। सिपाही ओकरासँ पतवारि छीनि लेलक। सौदागर ओकरा कोरामे बैसाबय चाहलक तँ ओ छिरपटाय लागलि। सिपाही कहलक जे सभटा पाइ चुका देल गेल अछि, अहाके कोनो मँगनीमे नहि लए जा रहल छी।

महुआ सन्न भए गेलीह। ओ सभ बुझलक जे महुआ मारि गेल अछि। तखने महुआ छरिमे कूदि पड़लि। उल्टा छरिमे मोरंग दिसि निकलि जाए चाहलक महुआ, जतय ओकर पेमी अछि। ओकरा लेल सात पालक नाव लेने। सौदागरक छोटका सिपाही महुआके पेम करए लागल छल, ओहो कूदि गेल कोसिकाकीक छरिमे, दूनू डूबि गेल। अखनो साओन-भादवक छरिमे कोनो घटवारके कखनो देखा पड़ैत छै महुआ। कोनो बिरसा वचनहारके देखा जाइत अछि ओ आ शुरू भए जाइत अछि-

एकटा छलीह महुआ घटवारिन..............................।

डाकू रौहिणेय

मगध देशमे अशोकक पिता बिम्बिसारक राज्य छल। संपूर्ण शान्ति व्याप्त छल मुदा एकटा डाकू रौहिणेयक आतंक छल।

रौहिणेयक पिता रहए डाकू लौहखुर। मरैत-मरैत ओ कहि गेल जे महावीर स्वामीक पवचन नहि सुनए आ जौँ कतओ पवचन होअय तँ अपन कान बन्द कऽ लए, अन्यथा बबादी निश्चित होएत।

रौहिणेय माथ पाइ बला के लुटैत छल आ गरीबके बँटैत छल। तैँ दारे गामक लोक ओकर मदति करैत रहए आ' ओ पकड़ल नहि जा सकल छल।

एक बेर तँ ओ अपन संगीक संग वाटिकामे पाटलिपुत्रक सभसँ पैघ सेठक पुतोहु मदनवतीक अपहरण कए लेलक, जखन ओकर पति फूल लेबाक हेतु गेल रहए। जखन ओकर पति आएल तँ रौहिणेयक संगी ओकरा गलत जानकारी दऽ भ्रमित कएलक।

ओकरा बाद सुभर सेठक पुत्रक विवाह रहए। बराती जखन घुमि रहल छल तखन रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष बनेलक आ ओकर संगी नर्तकी बनि गेल। नकली नर्तकी जखन नाचए लागल तखन रौहिणेय भीड़मे कपड़ाक साप छोड़ि देलक। रौहिणेय गहनासँ लादल वरके उठा लापता भए गेल।

राजा शहरक कोतवालके बजेलक। ओ तँ रौहिणेयके पकड़बामे असमर्थता व्यक्त कएलक आ कोतवाली छोड़बाक बातो कएलक। मंत्री अभयकुमार पाच दिनमे डाकू रौहिणेयके पकड़ि कए अनबाक गप कहलक। राजा ततेक तामसमे छलाह जे पाच दिनका बाद डाकू रौहिणेयके नहि अनला उतर अभयकुमारके गरदनि काटि लेबाक बात कहलन्हि।

डाकू रौहिणेयके सभ बातक पता चलि गेल छलैक। अभयकुमार जासूस सभ लगेलक। रौहिणेयके मोनमे अएलैक जे सेठ साहूकार बहुत भेल आब किएक नहि राजमहलमे डकैती कएल जाय। ओ राजमहलक रस्ता पर चलि पड़ल। रस्तामे वाटिकामे महावीरस्वामीक पवचन चलि रहल छल।

रौहिणेय तुरत अपन कान बन्द कए लेलक। मुदा तखने ओकरा पैरमे काट गड़ि गेलैक। महावीर स्वामी कहि रहल छलाह-

''देवता लोकनिके कहियो घाम नहि छुटैत छन्हि। हुनकर मालाक फूल मौलाइत नहि अछि, हुनकर पएर धरती पर नहि पड़ैत छन्हि आ हुनकर छायो नहि खसैत छन्हि।''

तावत रौहिणेय काट निकालि कानके फेर बन कए लेलक आ राजमहलक दिस विदा भेल।राजमहलमे सभ पहरेदार सुतल बुझाइत छल। मुदा ई अभयकुमारक चालि रहए। ओकर जासूस बता रहल रहए जे डाकू नगर आ महल दिस आबि रहल अछि।

जखने ओ महलमे घुसैत रहए तँ पहरेदार ललकारा देलक। ओ छड़पिकय काली मंदिर मे चलि गेल। सिपाही सभ मंदिरके घेरि लेलक। ओ जखन देखलक जे बाहरसँ सभ घेरने अछि तँ सिपाहीक मध्यसँ मंदिरक चहारदिवारी छड़पि गेल। मुदा ओतहु सिपाही सभ छल आ ओ पकड़ल गेल। राजा ओकरा सूली पर चढ़ेबाक आदेश देलकैक। मुदा मंत्री कहलन्हि जे बिना चोरीक माल बरामद केने आ बिना विश्वासीक एकरा कोना फासी देल जाए। रौहिणेय मौका देखि कए गोहारि लगेलक जे ओ शालि गामक दुगा किसान छी। ओकर घर परिवार ओहि गाममे छै। ओ तँ नगर मंदिर दर्शनक हेतु आएल छल। ततबेमे सिपाही घेरि लेलकैक। राजा ओहि गाममे

हरकारा पठेलक मुदा गामीण सभ रौह्णियसँ भ्रलल ि ल। सभ कहलकैक जे दुगा ओह्र गाममे रहैत अछि मुदा तखन कतहु बाहर गेल ि ल। अभयकुमार सोचलक जे एकरासँ गलती कोना स्वीकार करबाबी। से ओ डाकूके नीक महलमे कैदी बना कए रखलक। डाकू महाराज ऐश-आराममे डूबि गेलाह।

अभयकुमार एक दिन डाकूके खूब मदिरा पिया देलन्हि। ओ जखन होशमे आएल तँ चार  कात गंधिर्व-अप्सरा नाचि रहल ि ल।

ओ सभ कहलकैक जे ई स्वर्गपुरी ि ीक आ इन्द्र रौह्णियसँ भेट करबाक हेतु आबए बला रहथि। रौह्णिय सोचलक जे राजा हमरा सूली पर चढ़ा देलक। मुदा ओ सभतँ मं ीक पठाओल गबैया सभ ि ल।

तखने इंरक दूत आएल आ कहलक जे रौह्णियके देवताक र प मे अभिषेक होएतैक मुदा ताहिसँ पहिने ओकरा अपन पृथ्वीलोक पर कएल नीक-अ लिाह कायक्रि विवरण देबए प तिैक।

तखन रौह्णियके भेलैक जे सभटा पाप स्वीकार कए लिअए। मुदा तखने ओ देखलक जे दैव लोकक जीव सभ घामे-पसीने अछि, माला मौलायल ि, पएर ि रती पर ि आ पिपनी उठि-खसि रहल ि।

ओ अपन पुण्यक गुणगाण शुर  कए देलक। अभयकुमार राजाके कहलक जे अहा ज्यो ओकरा अभयदान दए देबैक तँ ओ सभटा गप्प बता देत। सैह भेलैक।

रौह्णिय नगरक बाहरक अपन जंगलक गुफाक पता बता देलक। जतए सभटा खजाना आ अपहृत व्यक्ति सभ ि ल। राजा कहलन्हि जे चूकि एक तँ ओकरा अभयदान भेटि गेल ि ताहि हेतु ओ सभ संपदा राखि सकैत अछि। मुदा रौह्णिय कोनोटा वस्तु नहि लेलक। ओ कहलक जे जाहि महावीरस्वामीक एकटा वचन सुनलासँ ओकर जान बचि गेलैक, तकर दीक्षा लेत आ ओकर सभटा वचन सुनि जीवन न्पि करत।

मूखाधिराज

एकटा गोपालक िल। तकर एकटा बेटा िल। ओकर कआया पुिक जन्मक समय मध्र गेलीह। बा बच्चाक पालन कएलथ्हि। मुदा ओ बच्चा िल महामूखि जखन ओ बारह वषिक भेल तखन ओकर ध्ववाह भए गेल। मुदा ओ ध्ववाहो ध्वसथ्र गेल।

बुध्ढया बाके काज करएमे ध्दकत होइत िलथ्हि। से ओ बुझा-सुझाके ओकरा, कआयाके ध्वरागमन करा कए अनबाक हेतु कहलथ्हि। बा ओकरा गमिमे रस्ता लेल मुरही बाथ्हि देलथ्हि। रस्तामे बच्चाके भूख लगलैक। ओ गमिसँ मुरही थ्नकाथ्न कए जखने मुँहमे देबए चाहैत िल आथ्क मुरही उथ्ि जाइत िल। बच्चा बाजए लागल- आऊ, आऊ उथ्ि जाऊ।

लगमे बोनमे एकटा थ्चिमार जाल पसारने िल। बच्चाक गप सुथ्न कए ओकरा बरड तामस उठलैक। ओकरा लगलैक जेना ई बच्चा ओकर थ्चिके उिबिए चाहैत अथ्ि। थ्चिमार बच्चाके पकथ्ि कए पुष थ्पटान थ्पटलक।

बच्चा पुिलक- हमर दोख तँ कहू?

थ्चिमार कहलक- एना नथ्ह। एना बाजू। आथ्ब जो। फँथ्स जो।

आब बच्चा सैह बजैत आगू जाए लागल। आब साझ भए रहल िल। बोन खतम होएबला िल। ओतए चोर सभ चोथ्रक योजना बनाए रहल िलाह। ओ सभ सुनलथ्हि जे ई बच्चा हमरा सभके पकिबिए चाहैत अथ्ि। से ओ लोकथ्न सेहो ओकरा पुष थ्पटान थ्पटलथ्हि।

बच्चा फेर पुिलक- हम बाजी तँ की बाजी?

चोरक सरदार कहलक- बाज जे एहन सभ घरमे होए।

आब बच्चा यैह कहैत आगा बढ़ए लागल। आब श्मसानभूथ्म आथ्ब गेल। एकटा जमीन्दारक एकेटा बेटा िलैक। से मथ्र गेल िल आ सभ ओकरा डाहबाक लेल आथ्न रहल िलाह। ओ लोकथ्न बच्चाक गप पर बि कुथ्पत भेलाह आ ओकरा पुष थ्पटलथ्हि।

फेर जखन बच्चा पुिलक जे की बाजब उथ्चत होएत तँ सभ गोटे कहलथ्खन्ह जे एना बाजू- एहन कोनो घरमे नथ्ह होए।

बच्चा यैह गप बाजए लागल। आब नगर आथ्ब गेल िल आ राजाक बेटाक ध्ववाहक बाजा-बती सभ भए रहल िल। बथ्रयाती लोकथ्न बच्चाके कहैत सुनलथ्हि जे एहन कोनो घरमे नथ्ह होए तँ ओ लोकथ्न कोथ्धत भए फेर ओथ्ह बच्चाके थ्पटथ्पटा देलथ्खन्ह।

जखन बच्चा पुिलक जे की बजबाक चाही तँ सभ कहलक जे थ्कि नथ्ह बाजू। मुँह बन राखू।

बच्चा सासुर आथ्ब गेल। ओतए नथ्हये थ्कि बाजल नथ्हये थ्कि खएलक। कारण खएबामे मुँह खोलए पथ्ितैक। भोरे-सकाले सासुर बला सभ अपन बेटीके ओथ्ह बच्चाक संग थ्वदा कए देलथ्हि। रस्तामे बरड पखर रौद िलैक। ओ सुस्ताए लागल। मुदा कलममे सेहो बरड गुमार िलैक। कआयाके बरड घाम खसए लगलैक आ ताथ्हसँ ओकर थ्सन्दूर िखथ्र गेलैक। बच्चाके भेलैक जे सासुर बला ओकरासँ िल कएलक आ ओकरा भँगलाहा कपार बाली कआया दए जाइ गेल अथ्ि। एहन कआयाके गाम पर लए जाए ओ की करत।

ओ तखने एकटा हजामके बकरी चरबैत देखलक। ओकरासँ अपन पेटक बात कहबाक लेल अपन मुँह खोललक आ सभटा कथ्ह गेल। हजाम बुथ्झ गेल जे ई बच्चा मूखाधिराज अथ्ि। ओ ओकरा अपन दूि देमए बाली

बकरीक संग कन्नायाक बदलेन करबाक हेतु कहलक। बच्चा सहषर्ि तैयार भए गेल।

आगू ओ बच्चा सुस्ताए लागल आ खुटीसँ बकरीके बान्हि देलक। बकरी पाउज करए लागल तँ बच्चाके भेलैक जे बकरी ओकर मुँह दूसि रहल अछि। ओ ओकरा हाट लए गेल आ कदीमाक संग ओकरो बदलेन कए लेलक। गाम पर जखन ओ पहुँचल तँ ओकर बा बरड पसन भेलीह। हुनका भेलन्हि जे कन्नायाक नैहरसँ सनेसमे कदीमा आएल अछि। मुदा कन्नायाके नहि देखि तकर अन्देसा कएलन्हि तँ बच्चा सभटा खिस्सा सुना देलकन्हि। ओ माथ पीटि लेलन्हि। मुदा बच्चा ई कहैत खेलाए चलि गेल जे कदीमाक तरकारी बना कए राखू।

कौवा आ फुदी

एकटा छल कौआ आ एकटा छलि फुदी। दुनूक बीच भजार-सखी केर संबंध। एक बेर दुर्भिक्ष पड़लि। खेनाइक अभाव एहन भेल जे दुनू गोटे अपन-अपन बच्चाके खएबाक निर्णय कएलन्हि। पहिने कौआक बेर आएल। फुदी आ कौआ दुनू भक्षण कए कौआ-बच्चाके खा गेल। आब फुदीक बेर आएल। मुदा फुदी सभ तँ होइते अछि धूर्त।
"अहा तँ अखाद पदार्थ खाइत छी। हमर बच्चा अशुद भए जायत। से अहा गंगाजीमे मुँह धोए कए आबि जाऊ"।
कौआ उड़ैत-उड़ैत गंगाजी लग गेल-
"हे गंगा माय, दिअ पानि, धोए कए ठोढ़, खाइ फुदीक बच्चा"।
गंगा माय पानिक लेल चुका अनबाक लेल कहलखिन्ह।
आब चुका अनबाक लेल कौआ गेल तँ ओतएसँ माटि अनबाक लेल कुम्हार महाराज पठा देलखिन्। खेत पर माटिक लेल कौआ गेल तँ खेत ओकरा माटि खोदबाक लेल हरिणक सींघ अनबाक लेल विदा कए देलकन्हि। हरिण कहलकन्हि जे सिंहके बजा कए आनू जाहिसँ ओ हमरा मारि कए अहाके हमर सींघ दऽ देमए।
आब जे कौआ गेल सिंह लग तँ ओ सिंह कहलक- "हम भेलहुँ शक्तिहीन, बूढ़। गाएक दूध आनू, ओकरा पीबि कए हमरामे ताकति आयत आ हम शिकार कए सकब"।
गाएक लग गेल कौआ तँ गाए ओकरा घास अनबाक लेल पठा देलखिन्ह। घास कौआके कहलक जे हासू आनि हमरा काटि लिअ।
कौआ गेल लोहार लग, बाजल-
"हे लोहार भाए,
दिअ हासू, काटब घास, खुआयब गाय, पाबि दूध,
पिआयब सिंहके, ओ मारत हरिण,
भेटत हरिणक सींघ, ताहिसँ कोरब माटि,
माटिसँ कुम्हार बनओताह चुका, भरब गङाजल,
धोब ठोर, आ खायब फुदीक बच्चा"।
लोहार कहलन्हि, "हमरा लग दू टा हासू अछि, एकटा कारी आ एकटा लाल। जे पसिन परए लए लिअ"।
कौआके ललका हासू पसिन पड़लैक। ओ हासू छल तपल छलि, जहाने कौआ ओकरा अपन लोलमे दबओलक, झरपटा कए मरि गेल।

नैका बञ्जारा

शोभनायका िलाह एकटा वञ्याकपुि। हुनकर ञ्वाह ञ्ञारहुतक कोनो सािनमे बारी नामा सीिसँ भेल िलञ्ञह। शोभा ञ्रागमन करबा कए कञ्ञयाके अनलञ्ञह आ ञ्ञदा भए गेलाह मोरंगक हेतु ञ्यापार करबाक लेल। पतीक संग एको ञ्न नञ्ञ ञ्ञता सकल िलाह। राञ्ञामे एकटा गािक नीचामे जखन ओ राञ्ञा ञ्ञतेबाक लेल सुस्ता रहल िलाह तखन हुनका एकटा ञ्याञ्ञा सुनबामे अएलञ्ञह। एकटा डकहर अपन भायाक संग ओञ्ञ गािं पर रहैत िल। दुनू गोटे गप कए रहल िलाह, जे ओ राञ्ञा बि शुभ िल आ ओञ्ञ ञ्न पतीक संग जे रहत तकरा बरड पञ्ञभावान पुिक पाञ्ञ होएतैक।
ई सुनतञ्ञ शोभा घर पहुँञ्ञ गेल भाया लग। लोकोपवादसँ बचबाक लेल पतीके अञ्ञजानस्वरप एकटा आँठी दए देलञ्ञह आ चञ्ञ गेलाह मोरंग। ओतए १२ बखिञ्ञ ञ्यापार कएलञ्ञह आ तेरहम बरख ञ्ञदा भेलाह घरक लेल।
एम्हर ओकर कञ्ञयाक बि दुगञ्ञ भेलैक। ओ जखन गभञ्ञती भए गेलीह, सासु-ससुर घरसँ ञ्ञकाञ्ञ देलकञ्ञह हुनका। मुदा ओकर ञ्अर जकर नाम िल चतुरगन, ओकरा सभटा कि बुझल िलैक। ओतए रहय लगलीह ओ। जखन शोभा घुरल तखन सभ रहस्य बुझलक आ सभ हँसी खुशी रहए लागल।

तब बारी रे कानय जार बेजारो कानै रे ना।
दुगा गे स्वामी के लैके कोहबर घर लेवा ने
केलही रे ना।
कोहबर घर से हमरो ञ्ञकाञ्ञयो देलकइ रे ना
दुगा गे केना बचबै अन-पानी ञ्ञन केना
रहबइ रे ना।

डोकी डोका

एक टा ि ल डोका आ एकटा ि ल डोकी।

दुनूमे बर ड पेम। डोकी कहए तरेगण लए आऊ तँ डोका तरेगण आनएमे सेकेण्डक देरी भए जाए तँ ठीक मुदा आनटक देरी नहि होमए दैत ि ल।

ययारके रहए ईर्ष्या दुनूसँ। से ओ कनही अयायनसँ अश्न गेल आ एक दिन जखन डोका आ डोकी एके ि रीमे भोजन कए रहल ि ल, तखन डोकाके बजेलक। एम्हर-ओम्हरक गप कए ओकरा अदा कए देलक। फेर डोकीके बजेलक ओ ययरबा। पु िलक जे अहा दुनू गोटेमे ब ि पेम अछि मुदा डोका जे कहलक ताहसँ तँ हमरा ब ि दु ख भेल। लागय-ए जे ओकर मोन ककरो आन पर ि । आर क ि पू ि ए लागल डोकी तावत ओ ययरबा प ि गेल।

आब डोकी घरमे हनहन-पटपट मचा देलक। डोका लक ि ि काटय बोन चलि गेल। घुरल नहि। भोरमे एकटा जोगी आएल तँ ओकरासँ डोकी पु िलक जे ई की भेल ? जोगिया कहलक जे ई अछि पूव ि जन्मक सराप। जखने अहा डोकी पर अशास ि ि ब डोका ि छि कए चलि जाएत मुदा सातम दिन भेंट जाएत।

मुदा डोकी आकश्न गेश्न डोकाके ताकए। बगुला भेटलैक डोकीके कहलकैक-र ुक जाऊ एहि राश्न। फेर ययरबा, वटवृक, मानसरोवरक रस्तामे बोनमे हा ि ि सभ कहलकैक जे एक एक राश्न र ुक कए जाऊ मुदा डोकी नहि र कश्न।

फेर भेटल मूस। ओ कहलक जे हमरा संग चलू, हम महल लए जायब, खिस्सा सुनाएब ि ह राश्नक बाद सातम राश्न बीतत आ डोका भेटत। खिस्सा सुनैत-सुनबैत महल चलि थदा भेल दुनू गोटे। मूस कहलक जे अहा हँ-हँ कहैत रहब खिस्साक बीचमे। मूसक खिस्सा कनेक नमगर रहए। डोकी बीचमे हँ कहब बसब गेश्न। आ तकर बाद मूस सेहो खिस्सा बसब गेल। कतबो मोन पा ि य चाहलक मुदा मोन नहि प ि लैक। फेर आगू बढ़ल दुनू गोटे। एकटा दीबाधमे भूर कए दुनू गोटे सुरंगमे पहुँचल तँ दू राश्न ि ब चलैत रहल तखन महल आएल। ओतए डोकी हलुआ बनबए लेल लोहियामे समान देलक आ कनेक पाश्न आनए लेल बाहर गेल तँ मूसके रहल नहि गेलैक आ ओ लोहियामे मुँह दए देलक आ मरि गेल। डोकी घुरि कए ई देखलक तँ कुहरि उठल।

बगुला ि ि ल ययरबा ि ि ल<br>
ि ि ल वटक वृक<br>
हा ि ि सन बलगर<br>
पक ि ल ई मूस।

मूस भैयाक संग लेल बीतल ि ह राश्न,<br>
सातम राश्नमे ओ पाण गमेलहि

आ ओकर सास टुटए लगलैक, मुदा तखने दरबज्जा खुजल आ कुरहरि लेने डोका हाजिर।

रघुनी मरर

देवदत, काशीराम आ रघुनी मरर तीन भाए। गाए चराबए जाथि। एक बेर अकाल आएल तँ रघुनी भाथा कए सहरसाक बनमा पखण्डक बथुया बरहमपुर गाममे अपन डेरा खसेलथिह।एतए जमीन्दार रहथि जुगल आ कमला पसाद। जुगल पसाद एक बेर दंगल करेने िलाह ओथि दंगलके थतने िलाह रघुनी। रघुनी हुनके लग गेलाह। एक सय बीघा जमीन देलथिह जुगल पसाद हुनका। सुगमा गाममे बिान बनओलथिह रघुनी। खेती करथि आ पथिवारसँ दूर सुगमा गाममे रहथि।

एम्हर जुगल पसादक घरमे कलह भेल आ अपन जमीन-जति ओ गागोरी राजके बेथि देलथिह। रघुनीके जखन ई पता चललथिह तँ हुनका बरड दुख भेलथिह।

एक थिन संगीक संग रघुनी नाच देखबाक लेल थिमरी गामक चौिरीक दलान पर गेल। चौिरी नाचक बाद नटुआके औँठी आ दुशाला देलथिन्ह। रघुनी नटुआके कहलथिन्ह जे बिान परसँ अपन पथिनक एक जोिी गाए हाथिक थिअ। नटुआ खुशीसँ दू टा थिकगर गाय हाथिक अनलक आ खुशीसँ चौिरीके देखेलक। मुदा चौिरीके बुझेलए जे रघुनी हुनका नीचा देखबए चाहैत िथि। मुदा सोझा-सोझी थिरबाक थिम्मत तँ िलए नथि। से चौिरी देवी उपासक जादूक कलाकार मकदूम जोगीसँ भेट कएलक। ओ जोगीके कहलक जे रघुनीके हमर नोकर बना थिअ। जोगी सथिसओ फूथिक थिटलक मुदा रघुनी िलि देवी भक्त से जोगीक जादू नथि चललैक। चथिडकाक थिथि कएलक जोगी आ रघुनी पर जादू सँ सए टा बाघसँ घेरबा कए माथि देलक। मुदा भक्त िलि रघुनी से चथिडकाक बथिन कामाख्या आथि रघुनीके थिया देलथिह। दोसर जादू लेल जोगी सथिसओ मनिाबिए लेल जे सथिसओ मुटीमे लेलक तँ मुटी बन्दक-बन्दे रथि गेलैक।

फेर चौिरीके पता चललैक जे रघुनी गागोरी राजाक लगान नथि देने अथि। से ओ राजा लग गेल आ कहलक जे रघुनी ने तँ अपने लगान देने अथि आ उनटले लोक सभके लगान देबासँ मना कए रहल अथि।

गाम पर रघुनी नथि रहए आ थिपाही सभ ओकर भाए देवदत मरिके लए थिदा भए गेलाह। रस्तामे केजरीडीह लग देवदत रघुनीके देखलथिह, रघुनी सेहो देवदतके देखलथिह। मुदा थिपाही सभ रघुनीके नथि देथि सकलाह। मुदा जखन राजा देवदतके काल कोठरीमे दए थिपाही सभके ओकरा मारबाक लेल कहलक तँ जे कोि चलबय उनटे तकरे चोट लागए।

राजा देवदतसँ कहलक जे गलती भेल आब अहा जे कहब सैह हम करब। देवदतक कहला अनुसार जे रैयत लगान नथि भरलाक कारणसँ जहलमे रहथि से िथि देल गेलाह आ राजा रघुनी मररसँ सेहो घटी मँगलथिह।

जट-जट्टिन

महाराज शिव सिंह (१४१२-१४४६) मिथिलाक राजा छलाह। विद्यापति हुनके शासनकालमे भेल छलाह आ राजा शिव सिंह आ हुनकर रानी लखिमारानी हुनकासँ बड़ पेम करैत रहथि। एक टा जयट वा जट नामा बड़ पैघ संगीतकार सेहो छलाह ओहि समयमे। राजा शिव सिंह हुनकासँ विद्यापतिक गीतके राग-रागिनीमे बन्हबाक लेल कहने रहथि। वैह जयट जट-जट्टिन नाटकक रचना कएलन्हि आ जटक भूमिका सेहो कएने छलाह। साओन-भादवक शुक्ल-पक्क रात्रिमे ई नाटक स्त्रीगण दारा होइत अछि।
जट छथि पहिरने पुरुष-परिधान आ जट्टिन पहिरने छथि धीटगर नूआ। आ देखू दुनू गोटे अपना संग अपन-अपन संगीके लए आबि गेल छथि।
बियाहक पहिल सालक साओन। जट्टिन जाए चाहैत छथि नैहर मुदा घरमे बाधा छै, हे माय कोनो नौआ-ठाकुर-बाहमण आकि पैघ भाए केर बदलामे छोटका भायके पठबैहैं बिदागरीक लेल नहि तँ सासुर बला सभ बिदागरी अस्वीकार कए देत।
जाहि नवकनियाके नैहर नहि जाय देल गेल ओ अपन पतिके कहैत छथि जे जट-जट्टिनक नृत्यमे तँ भाग लेबए दिअ। मुदा वर झूमर खेलएबासँ मना कए दैत छथि तखन ओ घामक बहना बनाए दूर भए जाइत छथि।
जट-जट्टिन बीचमे छथि आ दुनूक संगीमे बहस चलि रहल अछि।
-चलू झूमर खेलाए।
-कोन पातपर चढ़ि कए।
-पुरैनीक।
जट-जट्टिनमे विआह होए बला अछि मुदा जट किछु बातपर अड़ि गेल, जेना छनिक शीस जेका लीखि कए चलए जट्टिन, किछु देखावटी विरोधि बाद जट्टिन सभटा मानि जाइत छथि।
फेर दुनू गोटे विआह कए लैत छथि। फेर भोर होइत अछि, जट्टिन कहैत छथि जे जाए दिअ। अँगना बहारबाक अछि मुदा जटा कहैत छथि जे अँगना माए-बहिन बहारि लेत।
फेर दिन बितैत अछि तँ जट्टिन कहैत छथि जे गहना किएक नहि बनबाए रहल छी हमरा लेल आर बहना करब तँ हम सोनारक घर चलि जाएब।
जट्टिन ततेक खरचा करबैत छथिन्ह जे जटाक हाथी तक बिका जाइत छन्हि आ हाथीक सिकड़ि मात्र बचल रहि जाइत छन्हि।
जट्टिन कहैत छथि जे हमरा नैहर जएबाक अछि तँ जटा कहैत छथि जे धनिक फसिल तैयार अछि, तकरा काटि कए जाऊ। जट्टिन नहि मानैत छथि कहैत छथि जे एहि बेर जे हम जाएब तँ घुरि कए नहि आएब। मुदा सौतिनक गप सुनि कए डेराए जाइत छथि। बीचमे स्वांग जेना कोनो रोगीक इलाज आदि सेहो होइत रहैत अछि।
जट मोरंग बिदा भए जाइत छथि कमाएबा लेल। जट्टिनके सोनार पलोभन दैत छन्हि गहनाक मुदा जट्टिन जटाक सुन्दरताक वर्णन करैत छथि।
फेर जटा घुरि अबैत अछि। एक दिन दुनू गोटेमे कोनो गप लऽ कए झगड़ा भए जाइत छन्हि। जट छौंकीसँ जट्टिनके छूबि दैत छथि। जट्टिन रुसि कए घर छोड़ि दैत छथि। जटा गोपी, मलाहाइन आ आन-आन रूप

िछल ताकैत छिथ हुनका। जटाक घरमे झोल-मकरा भरल जाइत छैक आ अंगनामे दूिभ जनिम जाइत छैक। तखन जखन हुनका लग आिब जाइत छिथ। फेर सभ गाम लोकिन बेग सभके एकटा खदा खुनल कए ओहमे दए दैत छिथ आ ऊपरसँ ओकरा कूटैत छिथ आ मरल बेगके झगराक सीिक दरबज्जापर फेकल अबैत छिथ। ओ सभ भोरमे मरल बेगके देखला उत्तर जतेक गािर पढ़ैत छिथ, ततेक बेशी बरखा होइत अिछ।

बतू

एकटा बकरी छल। ओकरा एकटा बच्चा भेलैक। मुदा ओ छिगर मात्र ४ मासक छल आ कि दुर्गापूजा आबि गेल। दुर्गापूजामे छिगरक बलि देबाक कबुला केने छलिह। से बकरीक मालिकक लग आबि छिगरक दाम-दीगर केलन्हि। संगमे पाइ नहि अनने छलिह से अगिला दिन पाइ अनबाक आ छिगर लए जएबाक गप कए चलि गेलाह।

बकरी ई सभ सुनैत छलि ओ अपन बच्चाके कहलन्हि जे भागि जाउ जंगल दिस नहि तँ ई मालिकबा कालि अहाके बेचि देत आ किननहार दुर्गापूजामे अहाक बलि दए देत।

छिगर राता-राती जंगल भागि गेल। २-३ साल ओ जंगलमे बितेलक, मोट-सोट बतू भए गेल, पैघ दाढ़ी आ सींघ भए गेलैक ओकरा। एक दिन घुमैत-घुमैत ओ दोसर जंगलमे चलि गेल। ओतए एकटा बाघ छल, बतू बाघके देखि कए घबरा गेल। बाघ सेहो एहन जानवर नहि देखने छल, से ओ अपने डरायल छल। ओ पुछलक-

नामी नामी दाढ़ी- मोछ भकुला,

कहू कतएसँ अबैत छी, नहि तँ देव ठकुरा।

बतू कहलक-

अचुनी खेलहुँ गरचुनी खेलहुँ, सींह खेलहुँ सात।

आ जखनिया दस बाघ नहि होए, तखनिया परहुँ ठक दए उपास।

ई सुनि बाघ पड़ाएल। मुदा रस्तामे नढ़िया सियार ओकरा भेटलैक आ कहलकैक जे अहा अनेरे डराइत छी। चलू आइ तँ नीक मसुआइ होएत। ओ तँ बकरीक बच्चा अछि। बाघ डराएल छल से ओ सियारक पएरमे पएर बान्हि ओतए जएबा लेल तैयार भए गेल। आब बतू जे दुनूके अबैत देखलक तँ बुझि गेल जे ई सियरबाक काज अछि। मुदा ओ बुद्धिसँ काज लेलक। कहलक-

"ऐँ हौ, तोरा दू टा बाघ आनए ले कहने छलियहु आ तो एकेटा अनलह"।

ई सुनैत देरी बाघ भागल आ सियरबा घिसिआइत मरि गेल।

भाट-भाश्चन

एकटा ि ल भाट आ एकटा ि श्चि भाश्चन।

भाश्चन एकटा मथ्यािरी गहुमनसँ पेम करैत ि श्चि। ओ साप लेल नीक श्चाकुत बनबैत ि श्चि आ भाटके बश्चया-खोश्चया दैत ि श्चि। भाट दुबर-पातर होइत गेल। मुदा भाश्चन ओकरा श्चबए नश्च दए चाहैत ि श्चि से ओ सापके कहलक भाटके काश्च लेबाक लेल।

आब साप भाटके काटए लेल ताश्चमे रहए लागल। एक श्चन जखन भाट िरमे पएर िबए लेल पनही खोश्च कए रखलक तखने साप ओकर पनहीमे नुका गेल। भाट आएल आ पश्चरबाक पश्चने पनही झारलक तँ ओ साप खश्च पिल। भाट पनहीसँ माश्च-माश्च कए सापक जान लऽ लेलक आ ओकरा माश्च कए वरक गािपर लटका देलक।

भाट जखन गामपर पहुँचल तखन ओ अपन कश्चयाके सभटा श्चस्सा सुनेलक। आब भाश्चनक तँ पाण सुखा गेलैक। ओ भाटक संग वरक गाि लग गेल आ अपन पेमी सापके मरल देश्च कए बेहोश भऽ गेल। भाट ओकरा गामपर अनलक। भाश्चन दुखी भऽ असगरे वरक गािपरसँ साप उताश्च ओकरा नौ टुकिा कए घर आश्च लेलक। भाश्चन सापक चाश्च टा टुकिी चार खाटक पाइसक नीचा, एकटा मश्चयाक नीचा, एकटा तेलमे, एकटा नूनमे, एकटा डारमे आ एकटा खोपामे राश्च लेलक। फेर भाटके कहलक जे खाट, मश्चया, नून-तेल, डार आ खोपामे की अश्चि से बता नश्च तँ भकसी झोका कए मारबौक। भाट नश्च बता सकल आ ओ कहलक जे मरएसँ पश्चने ओ बश्चनसँ भेट करए चाहैत अश्चि आ ताश्च लेल दू श्चनुका मोहलश्च ओकरा चाही।

भाट अपन बश्चन लग गेल तँ ओ अपन भाइक औरदा जोश्चि रहल ि श्चि। सभ गप जखन ओकरा पता चललैक तखन ओ कहलक जे ओहो संग चलत ओकर। रस्तामे एकटा िमिशीलामे राश्चमे दुनू भाइ-बश्चन रकल मुदा बश्चन श्चन्तो सुश्च नश्च सकल। तखने िमिशीलाक सभटा दीआ एक ठाम आश्च कए गप करए लागल। भाटक बश्चनक कोठलीक दीआ कहलक जे भाश्चन अपन वर भाटके मारए चाहैत अश्चि आ ओ जे फुश्चयाहीक पहेश्चका बनेने अश्चि, से ओकर पेमी जे मरल गहुमन िल तकरा ओ टुकिी कए ठाम-ठाम राश्च देने अश्चि आ तकरे पहेश्चका बना देने अश्चि। आब भोरमे जखन दुनू भाइ बश्चन गामपर पहुँचए जाइ गेल तँ बश्चन अपन भौजीके कहलक जे ओ सेहो पहेश्चका सुनए चाहैत अश्चि।

भाश्चन कहलक जे जश्यो ओ पहेश्चका नश्चि बुश्च सकल तखन ओकरो भकसी झोका कऽ ओ माश्च देत। तखन ननश्च कहलक जे यश्च ओ पहेश्चकाक उतर दए देत तखन भौजीके भकसी झोका कए माश्च देत। आब जखने भाश्चन पहेश्चका कहलक तखने बश्चन सभटा टुकिी श्चाकाश्च-श्चाकाश्च कऽ सोझा राश्च देलक आ भौजीके भकसी झोका कऽ माश्च देलक।

गागोदेवीक भगता

गागोदेवी मलाश्चन ि लीह। एक श्चन हुनकर साए, अपन भाय आ श्चताक संग मा ि मारए लेल गेलाह। साओनक मेला चश्च रहल ि लैक आ श्चश्च लामे साओनमे मा ि खएबा आश्चक बेचएपर तँ कोनो मनाही ि ै नश्च। गागोदेवीक वर सोचलश्च जे आइ मा ि माश्च हाटमे बेचब आ साओनक मेलासँ गागो लेल चू ि ी-लहठी आनब। ि रिमे तीनू गोटे जाल फेकलश्च सरैया पा ि लश्च मुदा बेर पहर ि श्च डोका, हराशंख आ सतुआ मा ि हा ि अएलश्च। आब गागोक वर अपन कश्चयाक नाम लए जाल फेश्चक कहलश्च जे ई अश्चतम बेर ि ी गागो। एश्च बेर जे मा ि नश्च आएल तँ हमरा कमा करब। आब भेल ई जे एश्च बेर जाल मा ि सँ भश्च गेल। जाल श्चंचने नश्च श्चंचाए। सभटा मा ि बेश्च कए गागो लेल लहठी-चू ि िक संग नूआ सेहो कीनल गेल।

अश्चला श्चन गागोक वर गागोक नाम लए जाल फेकलश्च तँ फेर हुनकर जाल मा ि सँ भश्च गेलश्च मुदा हुनकर भाइ आ बाबूक श्चस्सा वैह डोका-काक ि अएलश्च। ओ लोकश्च खोश्चया कए एकर रहस्य बूश्च गेलाह फेर ई रहस्य सौँसे श्चश्च लाक मलाह लोकश्चक बीच पसश्च गेल। गागोदेवीक भगता एखनो श्चश्च लाक मलाह भैया लोकश्चमे पचश्चत अश्च। सभ जाल फेकबासँ पश्चने गागोक स्मरण करैत ि श्च।

बि सुख सार पाओल तुअ तीरे

मिथिलाक राजाक दरबारमे रहथि बोधि कायस्थ। राजा दरमाहा देथिन्ह तािहसँ गुजर बसर होइत छलिन्ह बोधि कायस्थक। दोसाराक पहिने प्रसंसा, दोसरक सम्पत्ति वा धनिक लालसा एिहसभसँ भिन्न जन्म दूर रहलाह बोधि कायस्थ। आजीविकासँ अिधक जे राशि भेटिन्ह से दान-पुण्यमे खरचा भऽ जाइत छलिन्ह। भोलाबाबाक भक्त छलाह।

जेना सभके बुढ़ापा अबैत छै तिहना बोधि कायस्थक मृत्यु सेहो हुनकर िनकट अएलिन्ह आ ओ घर-दार छोिड़ गंगा-लाभ करबाक लेल घरसँ िनकिल गेलाह। जखन गंगा तीर अदहा कोसपर छलीह तखन परीक्षाक लेल बोधि कायस्थ गंगाके सम्बोिधत कए अपनाके पिवत्र करबाक अनुरोध कएलिन्ह। गंगा माय तट तोिड़ आिब बोधि कायस्थके अपनामे समािहत कएलिन्ह। बोधि कायस्थके सोझे स्वर्ग भेटलिन्ह।

बोधि कायस्थ िवद्यापितसँ पूर्व भेल छलाह कारण ई घटना िवद्यापित रिचत संस्कृत ग्रंथ पुरुष-परीक्षामे विर्णत अिछ। फेर िवद्यापित अपन मैिथली पद बि सुख सार पाओल तुअ तीरे िलखलिन्ह- आ बोधि-कायस्थ जेका गंगा लाभ कएलिन्ह।

ि ि न

डोम जाक्षाक लोकदेवता ि ि न महराज बरड बलगर ि लाह। मुदा हुनकर संगी सा ि सभ कहलकक्षह जे जखन ओ सभ सक्षदापुर गेल ि लाह, बासक टोकरी आ पक्षया सभ बेचबाक लेल, तखन ओतुका डोम सरदार माक्षाक चन्दक वीरता देखलक्षह। ओ एकटा अखराहा बनेने रहथि आ ओतए एकटा पैघ सन डंका राखल रहए। जे ओक्ष डंकापर ि ट करैत ि ल ओकरा माक्षाकचन्दक पोसुआ सुलार, जकर नाम चक्षया ि ल, तकरासँ लि ए प ि त ि लैक। माक्षाकचन्द पण कएने रहथि क्षक जे क्यो चक्षयासँ जीक्ष जाएत से माक्षाकचन्दसँ लि बाक योल्य होएत आ जे माक्षाकचन्दके हराएत से माक्षाकचन्दक बक्षन पनमासँ क्षवाहक अधि कारी होएत। मुदा ई मौका आइ ि क्ष नक्ष आएल रहए जे क्यो चक्षयाके हरा कए माक्षाकचन्दसँ लथि सक्षकतए।
क्षन क्षतैत गेल आ एक क्षन अपन पाच पसेरीक कता लए ि ि न महराज सक्षदापुर क्षश क्षदा भेलाह। डंकापर चोट करबासँ पक्षने ि ि न महराज एकटा बुढ़ीसँ आक्ष मागलक्षह आ अपन क्षलममे आक्ष आ मेदनीफूल भक्ष सभटा पीक्ष गेलाह आ झुमैत डंकापर चोट कए देलक्षह। माक्षाकचन्द ि ि निके देखलक्षह आ चक्षयाके शोर केलक्षह। चक्षया दौक्ष कए आएल मुदा ि ि निके देक्ष प ि गेल। तखन पनमा आ माक्षाकचन्द ओकरा ललकारा देलक्षह तँ चक्षया दौक्ष कय ि ि निपर झपटल मुदा ि ि न ओकर दुनू पएर पकथि चीक्ष देलक्षह। फेर मक्षाकचन्द आ ि ि निमे दंगल भेल आ ि ि न माक्षाकचन्दके बजाक्ष देलक्षह। तखन खुशी-खुशी माक्षाकचन्द पनमाक क्षयाह ि ि निक संग करेलक्षह।
क्षन क्षतैत गेल आ आब ि ि न दोसराक बसक्षटीसँ बास काटए लगलाह। एक्षना एक बेर यादवक लोकदेवता कृष्णारामक बसक्षटीसँ ओ बहुत रास बास काक्ष लेलक्षह। कृष्णाराम अपन सुबरन हा ि पर चक्ष अएलाह आ आमक कलममे ि ि निके पनमा संग सुतल देखलक्षह। सुबरन पाच पसेरीक कताके सूढ़सँ उठेलक आ ि ि निक गरदक्षपर राक्ष देलक आ अपन भक्षगर पएर कतापर राक्ष देलक।

गरीबन बाबा

कमला कातक उ रा गाममे तीनटा संगी रहथि। पहुने गामे-गामे अखराहा रहए, ओतए ई तीनू संगी कुश्ती लथि आ पहलमानी करथि। बरहम ठाकुर रहथि बाह ण, घासी रहथि यादव आ गरीबन रहथि । अखराहा लग कमला माइक पीि ल। एक बेर गरीबनक पएर ओ पीिमे लाग गेलि, जासँ कमला मैया तमसा गेलीह आ इन्रक दरबारसँ एकटा बान अनलि आ ओकरासँ अखराहामे गरीबनक युद भेल। गरीबन मारल गेलाह। गरीबनके कमला रमे फेक देल गेलि आ हुनकर लहाश एकटा या घाटपर कप साफ करैत एकटा लग पहुँचल। हुनका कप साफ करएमे क्कत भेलि से ओ लहाशके सहटा कए दोसर स बहा देलि।
एम्हर गरीबनक कया गरीबनक मुइलाक समाचार सु दुत मोने आतनद कए भगवानके सुरलि। आब भगवानक कृपासँ गरीबनक आत्मा एक गोटेक शरीरमे पै गेल आ ओ भगता खेलाए लागल। भगता कहलि जे एक गोटे हुनकर अपमान केलि से ओ शाप दैत िन्ह जे सभ हुनकर लहाशके कमला रसँ काकए दाह-संस्कार करथि न तँ सभक भटीमे कप ज जाएत। सभ गोटे ई सु रमे कू लहाशके का दाह संस्कार केलि। तकर बादसँ गरीबन बाबा भटीक कपक रक करैत आएल छथि।

लालमैन बाबा

नौहटामे दू टा संगी रहथि मनसाराम आ लालमैन बाबा। दुनू गोटे चमार जाति क रहथि आ संगे-संगे महीस चराबथि। ओहि समयमे नौहटामे बर ड पैघ जंगल रहए, ओतहि एक दिन लालमैनक महीसके बाघ आबि या घेरि लेलकनि। लालमैन महीसके बचबएमे बाघनसँ लिए तँ लगलाह मुदा सिंजाति क बाघनपर अपन सम्पूर्ण शक्तिक पयोग नहि केलनि आ मारल गेलाह। मनसारामके ओ मरैत-मरैत कहलनि जे मुइलाक बाद हुनकर दाह संस्कार नीकसँ कएल जाइनि। मुदा मनसाराम गामपर ककरो ई गप नहि कहलनि। एहिसँ लालमैन बाबाके बर ड तामस चढ़लनि आ ओ मनसारामके बका कऽ मारि देलनि। फेर सभ गोटे भाग्नि कए लालमैन बबाक दाह संस्कार कएलनि आ हुनकर भगता मानल गेल। एखनो ओ भगताक देहमे पैसि मनता पूरा करैत छथि।

गोनू झा आ दस ठोप बाबा

अथीला राज्यमे भयंकर सुखाि पिल। राजा ढ़ोलहो थटबा देलथ्रह, जे जे क्यो एकर तोि बताओत ओकरा पुरस्क्कार भेटत।

एकटा थशालकाय बाबा दस टा ठोप कएने राजाक दरबारमे ई कहैत अएलाह जे ओ सय वषथ्रहमालयमे तपस्या कएने िथ्रि आ यजसँ वषा करा सकैत िथ्रि। साझमे हुनका सिान आ सामगी भेथ्रट गेलथ्रह। गोनू झा कतहु पहुनाइ करबाक लेल गेल रहथ्रि। जखन साझमे घुरलाह तखन कथ्राकि मुँहसँ सभटा गप सुथ्रन आियथ्रचकत हुनका दशनािथ्रिदा भेलाह।

एम्हर भोर भेलासँ पथ्रत्नथ्र सौँसे सोर भए गेल जे एकटा बीस ठोप बाबा सेहो पिथ्रच चुकल िथ्रि।

आब दस ठोप बाबाक भेट हुनकासँ भेलथ्रह तँ ओ कहलथ्रह-

“अहा बीस ठोप बाबा िी तँ हम िी िी १०८ बीस ठोप बाबा िी। कहू अहा कोन थथ्रिये वषा कराएब”।

“हम एकटा बास रखने िी जकरासँ मेघके खोचारब आ वषा होएत”।

“ओतेक टाक बास रखैत िी कतए”।

“अहा एहन ढोगी साि्कि मुँहमे”।

आब ओ दस ठोप बाबा शौचक बहना कए थदा भेला।

“औ। अपन खराम आ कमण्डल तँ लए जाऊ”। मुदा ओ तँ भागल आ लोक सभ पिाि कए ओकर दाढ़ी पकथ्रि घीचए चाहलक। मुदा ओ दाढ़ी िलि नकली आ ताथ्र लेल ई नोचा गेल। आ ओ ढ़ोगी मौका पाथ्रब भाथ्रग गेल। तखन गोनू झा सेहो अपन मोि दाढ़ी हटा कए अपन रपमे आथ्रब गेलाह। राजा हुनकर चतुरताक सम्मान कएलथ्रह।

संकषणि (नाटक)

(एक-एक अंकक दू कल्लोल आ दू-दू अंकक तीनटा कल्लोल- माने पाच कल्लोलक अन्तगति आठ अंकक मैथिली नाटक)

पाि परिचय

संकषणि- अभिनेता आ खलनायक दुनू- श्वकश्वक करैत भूत सन कारी रंग, कतेक कारी से ओक्ष खापथिके देख्ब श्वअ ततेक।

संकषणिक बाबू

संकषणिक कन्याया

भाष्कर

भाष्करक बाबूजीक संगी

बंगाली बाबू

कलक्टर

कलक्टरक स्टेनो

तीन टा कारी कुकूर- एकर अभिनय तीन गोटे कारी कपि पश्चि कऽ सकैत ि थि

एकटा हलवाई- मिरक दोकानक माश्वक श्चनका लग श्वठाई िनबाक कराह, बि का मोटगर बिदामी, एकटा मोटगर लाठी आ एक गोटे कमचारी रहतश्व तँ श्चनका अभिनयमे सुश्वि हेतश्व।

हलवाई जीक कमचारी लुती झा तखन अबससे

एकटा श्ववश्वंग-मश्वदर, फेर कनेक उजरा दूि- चूनके घोश्व बना सकैत ि ी।

एकटा पुजेगरी आ बि रास भक्त- श्वकि गोटे दशकिके बजा कए सश्वश्वत सेहो कए सकैत ि ी।

गोनर भाइ

श्वत्या काका

जयराम

लाल काका

लाल काकी

घटक

दू टा पुश्वस आ एकटा ओकर अफसर

एकटा बूढ़ी- टेनक पश्वन्जर

चोर बजारक दोकानदार, बजारमे आन दोकानदार आ भीि-भरका

पश्चिल कल्लोल- पश्चिल अंक

(गाम। लगक श्वला कायालय जतए गामक लोकक आँश्वमे दुश्वयाक सभसँ पैघ हाश्वम कलक्टर बैसैत ि थि।

जकरा अशानेता-अशानेनी काशमदासक “इशा शरसंिनं नाटयशा” जेका साकेशाक रपमे देखा सकैत िथि। बादमे टेनक यािक आ थदलली नगरक वणिन सेहो अशना कऽ सकैत िथि।)

(भाषकर अपन दलानपर बैसल िथि आथक ओम्हरसँ संकषिण अबैत िथि।)

संकषिण: भाषकर भाइ, सुनलहुँ कोनो काज अटकल अिथ।

भाषकर: हँ भाइ। कलक्टर ऑथफसमे एकटा काज ओझरायल अिथ।

संकषिण: कोनो काज पिलापर हमरासँ कहब। कलक्टरक ओशठाम भोर-साझक बैसारी होइत अिथ हमर। घंटाक-घंटा बैसल रहैत िी, आबए लगैत िी तँ रोथक कऽ फेर बैसा लैत अिथ, दोसर-दोसर गप सभ शुर कए दैत अिथ।

भाषकर: ठीक िक भाइ जी। कोनो जररी पित तँ कहब। नाम की िथक हुनकर सेहो नशि बुझल अिथ हमरा।

संकषिण: बरड नमगर नाम िथक, भा.प.से. पशात। आब भा.प.से. केर पूणिरप हुनकासँ के पुितथक, से पशाते कहैत िथक।

भाषकर: भारतीय पशासथनक सेवाक संथकप्त रप िक भा.प.से., ई हुनकर नामक अंग नशि हेतथक।

संकषिण: अिच तँ फेर सैह होयतैक। ताशि दारे नेम-प्लेट पर नामक नीचामे ई थलखल रहैत िक, भा.प.से.।

भाषकर: ठीक िक भाइ जी। कोनो जररी पित तँ अहाके कहब।

(संकषिण चशि जाइत िथि आ भाषकर सोचए लगैत िथि जे परका जखन एकटा आन काज संकषिणसँ पिल रहए तँ ओ की कहने रहथि, भाषकर सोथाते िथि आथक कनेक दूरमे पिलका गपक वणिनक लेल नाटकक थनदेशक संकषिणके मंचपर कनेक दोसर कात बजा लैत िथि।)

भाषकर: (मोनशि मोन) ईहो कमाल िथि परका जे काज पिल रहए तँ बजैत रहथि जे...

संकषिण: परका साल थकएक नशि कहलहुँ, ककर-ककर काज नशि करएलहुँ। मुदा एशि बेर तँ कोनो जोगारे नशि अिथ। कशियो कोनो काज नशि कहने िलहुँ आ आइ कहलहुँ तँ हमरासँ नशि भऽ पाथब रहल अिथ। आ से जाथन कचोट भऽ रहल अिथ।

(संकषिण फेर चशि जाइत िथि, भाषकर सेहो जाइत िथि मुदा तखने संकषिण फेर अबैत िथि।)

संकषिण: सत्यािक बाल-बच्चा सभ बि टेढ़। कशियो घुथम कए नशि आयल िल भेट करए। आ आइ काज पिल िक तखन आयल अिथ।

(संकषिण फेर चशि जाइत िथि, भाषकर तखने अबैत िथि।)

भाषकर: (एकटा पुरान गप सोचैत- बाबूजीक संगी एक थदन वात्सल्यसँ एक बेर कोनो बङाली बाबूके, भाषकरक सोझामे एक गोट बि नीक गप कहने िलाह।)

भाषकरक बाबूजीक संगी: (मंचक दोसर कात कोनो बंगाली बाबूके भाषकरके देखबैत आ कहैत) देखू दादा। ई िथि भाषकर। हमर अत्यंत थपय थमि सत्यािक बेटा।

बंगाली बाबू: हुनकर बेटा तँ बरड िट िल।

भाष्करक बाबूजीक संगी: यैह छथि। अहा बरड छन पड़ने देखने छियैक तखन छोट छलाह, आब पैघ भए गेल छथि। कहैत छलहुँ जे हुनकर पिता हुनका लेल किछु नहि छोड़ि गेलाह। मुदा हमर पिताक मृत्यु १९६० ई. मे भेल छल आ हमरा लेल ओ नगरमे १२ कटा जमीन, एकटा घर आ एकटा स्कूटर ओहि जमानामे छोड़ि गेल छलाह। आ आब जखन ई बच्चा ककरो लग कोनो काजक लेल जायत, तँ एकरा उत्तर भेटतैक जे परका छैक एक नहि अएलहुँ आ परोछमे कहतैक, जे काज पड़लैक तखन आयल छथि।

बंगाली बाबू: ई तँ गलत बात।

भाष्करक बाबूजीक संगी: मुदा एकरा जखन समस्या पड़लैक तखने अहाके पुछबाक चाही छल, मुदा से तँ अहा नहि पुछियैक। आ अहाक लग आयल अछि, तखन अहा उल्टा गप करैत छी। आ जखन ई बच्चा सहायताक लेल नहि जायत आ अपन काज स्वयं कए लेत आ ओहि छमानके से सुनबामे आब जएतैक, तँ उपकार कए अओताह आ पुछथिन्ह जे काज भऽ गेल आकि नहि। कहलहुँ छैक एक नहि। आ तखन ई बच्चा कहत जे काज भऽ गेल, भगवानक दया रहल। से दादा कखनो कोनो काजक लेल आबए तँ बुझू जे कुमोनसँ आयल अछि आ समस्या भेले उत्तर आयल अछि आ ते ओकर सहायता करू।

(भाष्करक बाबूजीक संगी आ बंगाली बाबू चलि जाइत छथि। भाष्कर सेहो चलि जाइत छथि।)

पटाक्षेप कल्लोलक दोसर अंक

(कलक्टरक ऑफिस। कलक्टरक चेम्बर। बाहर स्टेनो बैसल, मंचपर दोसर कातमे सोफा दऽ देल गेल छैक। भाष्कर कलक्टरसँ किछु गप कऽ रहल छथि। दू टा कुरसी तेना कऽ राखल गेल छैक जे भाष्कर जी आबथि तँ कलक्टरक मुँह सोझा पड़ैक मुदा भाष्करक पीठ देखा पड़ैक, मुँह नहि। भाष्कर कोनो काजे कलक्टरक ऑफिस गेल छथि। गपशप भइए रहल छलैक आकि संकर्षण हड़बड़ाइत चैम्बरमे अबैत छथि।)

कलक्टर: (तमसा कए) बाहर जाऊ देखैत नहि छी गप भऽ रहल अछि।

(संकर्षण बाहर रूमसँ निकलि स्टेनोक कक्षमे बैसि रहलाह। १०-१५ मिनटक बाद- जरूरी नहि एतेक काल भाष्कर आ कलक्टर गप करथि, घड़ी देखि १०-१५ मिनट १५ सेकेन्डमे खतम कएल जा सकैत अछि। जखन भाष्कर बाहर निकललाह तँ स्टेनोक रूमसँ संकर्षण बहराइत छलाह। एहि बेर संकर्षणक पीठ भाष्करक सोझा छलैक आ ताहि दारे एहि बेर सेहो दुनू गोटेमे सोझा-सोझी नहि भऽ सकल। तखने पटाक्षेप करबाऊ। पटाक्षेपक बाद गामपर दुनू गोटे पहुँचैत देखल जाइत छथि)

भाष्कर: कहू संकर्षण। कतएसँ आबि रहल छी।

संकर्षण: ओह। की कहू कलक्टर साहेब रोकि लेलक। ओतहि देरी भऽ गेल।

भाष्कर: हुनकर स्टेनोसँ सेहो भेट भेल रहय?

संकर्षण: नहि। ओना बहरएबाक रस्ता स्टेनोक पकोष्ठसँ छैक। मुदा ओ सभ तँ डरे सदरिहैत अछि।

(तखन भाष्करके नहि रहल गेलैक आ एकटा खिस्सा सुनबए लगलाह ओ संकर्षणके। आब एतए कारी वस्त्र पहिरने तीन टा अभिनेता भो-भो करैत जेना कुकुर होथि, मंचक दोसर कात आबि जाइत छथि।)

भाष्कर: संकर्षण। सुनू, एकटा खिस्सा सुनबैत छी। तीन टा कारी कुकुर छल। एके रङ-रूपक। ओकरा सभके मोन भेलैक जे गरमा-गरम जिलेबी मुड़िरक दोकान जा कए खाइ। से बेरा-बेरी ओतए जएबाक पकम शुरू भऽ गेल।

(श्वसस्सा शुर होइते भाष्कर आ संकषणि मंच सँ हश्ट जाइत छथि। बीच-बीचमे भाष्करक अबाज मंचक पाछसँ अबैत अछि।)

भाष्कर: (मंचक पाछसँ) पश्चने पश्चल कुकुर पहुँचल ओश्च दोकान पर।

(मिठाइक दोकान। माश्चक अपन कमचारी संगे झाझसँ श्नलेबी छाश्न रहल छथि। तखने माश्चक देखलश्न जे कुकुर दोकानमे पैश्न रहल अछि, से बटखरा फेश्क कए ओकरा मारलक। पश्चल कुकुर-बेचाराके बड़ चोट लगलैक। मुदा जखन घुश्न कए गाम पर- माने मंचक दोसर कात अपन दोसर दुनू संगी लग पहुँचल तँ पुछला पर सुनू की कहलक।)

दोसर कुकुर: की भाइ केहन रहल।

तेसर कुकुर: बर ड अगराइत चलैत आश्न रहल छी।

पश्चल कुकुर: (पीठपर बटखराक चोटपर हाथ दैत) एह की कहू। बड़ सत्कार भेल। बटखरासँ जोश्च कए श्नलेबी खएबाक लेल भेटल। बटखरासँ जोखैत गेल, दैत गेल, पैघ बटखरा, छोट बटखरा, सभसँ जोश्च-जोश्च दैत गेल।

दोसर कुकुर: तखन हमही श्कएक पाछू रहब सत्कार कराबएमे।

(आब दोसर कुकुर अपनाके रोश्क नश्च सकल आ अपन सतकार करएबाक हेतु पहुँश्न गेल मिठाइक दोकान पर। रंग-रङ तँ एके रङ रहए ओकरा सभक, से मिठाइक दोकानक माश्चकके भेलैक जे वैह कुकुर फेरसँ आश्न गेल अछि। ओ पाश्न गरम कए रहल छल।)

मिठाइक दोकानक माश्चक: (भश्न टोकना छिपल पाश्न ओश्च कुकुरक देह पर फेकैत) देखू ई फेर आश्न गेल। पछिला बेर बटखारा फेश्क कए मारश्नयैक तकर बाद जे आएल तँ यैह टा ने उपाए बाचल रहए।

(बेचारा कुकुर जान बचा कए भागल। आब गाम पर- माने मंचक दोसर कात पहुँचला पर ओकरा तेसर कुकुर पुछलकैक-)

तेसर कुकुर: केहन सत्कार भेल।

दोसर कुकुर: की कहू। (पीठपर गरम पाश्नसँ जरल स्थानके देखबैत) गरमा-गरम श्नलेबी छाश्न कए खुएलक। बड़ नीक लोक अछि मिठाइक दोकानक माश्चक। छनैत गेल आ गरमागरम खुआबैत गेल।

(तेसर कुकुरक मोन लसफसा जाइत छैक। ओ श्नकलैत अछि अपन सत्कार कराबए लेल।)

तेसर कुकुर: तखन हमहूँ चलैत छी अपन सत्कार कराबए।

(दोकानपर हल्ला भऽ रहल छैक जे श्नवश्नंग दूध पीश्न रहल छथि, सोर भऽ रहल अछि।)

मिठाइक दोकानक माश्चकक कमचारी लुती झा: महादेव भगवान दूध पीश्न रहल छथि, चलू ने कनेक अपनो सभ दूध श्नया आबी।

मिठाइक दोकानक माश्चक: सते लुती झा। चलह देखी।

(तेसर कुकुर दोकानमे पैसैत अछि आश्क माश्चक आ लुती झा सटर खसा दैत छैक। बेचारा बन भऽ जाइत अछि। माश्चक आ लुती झा मश्नदर पहुँचैत छथि, एकटा लोटामे दूध लऽ कए।)

मिठाइक दोकानक माश्चक: (मश्नदर लग भीड़ देखैत) एके लोटा दूध अछि, तो जेबह आश्क हम जाइ।

लुती झा: अही जाऊ ने। एके गप ने छैक।

(माश्चक दूध चढ़ा कए देखैत छथि, सभटा दूध नाली बाटे बाहर श्नकश्न जाइत छैक।)

म िरक दोकानक मा ालक: (स्मृता सोचैत बाहर अाकलैत) भगवान सभक हा िदू ि पीलथ्हि मुदा हम जे सभके कहबैक जे हमरा हा िनञ पीलथ्हि तँ सभ कहत जे हम पापी ि ि ते भगवान हमरा हा िदू ि नञ पीलथ्हि।
लुती झा: की मा ालक। महादेव दू ि पीलथ्हि।
म िरक दोकानक मा ालक: हँ हौ लुती झा। एतेक प ाााब त जीवन ब ाता रहल ि ि से महादेव सभक हा िदू ि पीलथ्हि तँ हमरो हा ि पीलथ्हि।

(दुनू गोटे दोकान खोलैत ि थ्ि तँ फेरसँ कारी कुकुर देखैत ि थ्ि। मा ालकक साँसे देह थ्ात लहथ्ि गेलथ्हि।)

म िरक दोकानक मा ालक: लुती झा। भागए नञ पाबए ई। दू बेरमे मोन नञ भरलैक। रस्सा ला, लाठी लाबह।

(दुनू गोटे रस्सामे बाथ्हि कऽ कुकुरके लाठीसँ पुष थ्यटान थ्यटैत ि थ्ि। फेर बेचारा कोहुना बन्हन ि ि ि कऽ लँगि ाइत गाम थ्ास प िाइत अथ्ि। ओतए प ाल आ दोसर कुकुर ि थ्ि।)

प ाल कुकुर: अहाके तँ बर ड काल लाथ्ा गेल, की की सत्कार भेल।

दोसर कुकुर: हँ ठीके। ब ि ि काल लागल, दोकान तँ बन नञ रहए।

तेसर कुकुर: बर ड सत्कार भेल। आबैये नञ दैत रहथ्ि। कहैत रहथ्ि जे आर खाऊ, आर खाऊ। कोहुना कऽ जान बचा कऽ आएल ि ि जे आब नञ खाएल जएत, पेट फाथ्ट जएत। (लङराइत) देखैत नञ ि ि जे चथ्ाायो नञ भऽ रहल अथ्ि।

(तीनू कुकुर जाइत ि थ्ि आ भाष्कर आ संकषिण मंचपर अबैत ि थ्ि।)

भाष्कर: सुनथ्ाायैक संकषिण ई थ्ारस्सा। से जखन कलक्टर अहाके दबाथ्ि रहल ि ल तखन ओकरा सोझा हमही बैसल ि लहुँ। हमर पीठ अहाक सोझा ि ल ते अहा हमरा नञ देथ्ा सकलहुँ। फेर अहा स्टेनोक पकोष मे थ्ाक ि काल बैसलहुँ आ जखन ओतएसँ बाहर अाकललहुँ तँ लोक सभके भेल होएतैक, जे अहा कलक्टरसँ ओतेक काल ि थ्ा गप कए रहल ि लहुँ। मुदा कोनो बात नञ। हम ई गप ककरो नञ कहबैक। मुदा आजुक बाद थ्ाथ्या क िनसँ अहा अपनाके दूर राखू।

(संकषिण मुँह गोतने बैसल रहलाह।)

भाष्कर: आउ, मुरहीक भुज्जा बनबैत ि ि।

(दुनू गोटे भुज्जा फाकय लगैत ि थ्ि।)

दोसर कल्लोल प ाल अंक

(पुरनका गामक दृश्य। जयराम दौगल-दौगल अबैत ि थ्ि। संकषिण सोझा ि थ्ि।)

जयराम: संकषिण। नीक भेल भेथ्ट गेलहुँ। थ्ात्या काका लग जाइत रही मुदा ओतए जाइत-जाइत देरी भऽ जएत। ननथ्का िबाक मोन बर ड खराप ैक। बोखार, रद्द-दस्त सभ एके-बेर शुर भऽ गेल ैक।

संकषिण: ि र बताह, पसीझक काटक रस थ्यआ ने दही। हम जाइत ि ि महींस चरेबाक लेल डीह थ्ाथ्ा। कोनो थ्ान्ता जुथ्ा करब। जुल्मी दबाइ ैक। एके चोटमे सभ बेमारी खतम।

(संकषणि एक थ्वस आ जयराम दोसर थ्वस जाइत िथ्रि। फेर थ्रातृया काका एक थ्वससँ आ जयराम दोसर थ्वससँ अबैत िथ्रि।)

थ्रातृया काका: की जयराम? कलम थ्वससँ की आथ्रा रहल िी।

जयराम: की कहू काका। ननथ्कबिाके बोखार, रद-दस्त सभ एके-बेर शुर भऽ गेल िक। संकषणि कहलथ्रहि जे पसीझक काटक रस थ्यआ देबा लेल सभ बेमारी खतम भऽ जएतैक। सैह आनए लेल गेल रही।

थ्रातृया कका: ई संकषणि बि बुथ्र अथ्रि। पर का पसीझक काटक रस पोखथ्रमे दऽ कए सभटा मािि माथ्र देने रहए ई। ई जहर बच्चाके थ्यएबथ्रहि तँ मोन ठीक नथ्र होएतथ्रहि, सोझे पाण थ्राकथ्र जयतथ्रहि। चलह दबाइ-दोकान थ्वस, दबाइ थ्वअबैत थ्रिअह।

(दुनू गोटे जाइत िथ्रि आ ओम्हर डीहपर महीसक पीठपर संकषणि बैसल देखबामे अबैत िथ्रि। दोसर थ्वससँ एकटा दोसर मथ्रसबार गामपरसँ आथ्रये रहल िथ्रि।)

संकषणि: की भाइ, गामेपरसँ आथ्र रहल िी।

मथ्रसबार: हँ भाइ।

संकषणि: जयरामक टोलसँ कनारोहटो सुनबामे आएल रहए।

मथ्रसबार: कनारोहट तँ नथ्र, मुदा थ्रहबारक सिानपर पंचैती बैसल अथ्रि, अहाके बजाबए लेल हम आएल िी।

(मथ्रसबार संकषणिके लेने मंचसँ जाइत िथ्रि। फेर पंच सभक लग सभ फेरसँ अबैत िथ्रि आ संकषणिपर सभ ि-ि करैत िथ्रि। घोघाउज होइत अथ्रि आ संकषणिपर दण्ड सेहो लगैत िथ्रहि।)

संकषणि: हम अपन घटी मानैत िी आ आइ थ्वनसँ कंठी लऽ रहल िी। दण्ड सेहो काथ्रि साझ िथ्र दऽ देब।

(पटाक्षेप होइत अथ्रि।)

दोसर कल्लोल दोसर अंक

(संकषणि भोरे- भोर खेत थ्वथ्र कोदाथ्र आ थ्रिटा लए थ्रदा भेल िथ्रि। बुना-बानी होइत िलि। तखने आथ्रके तरपैत एकटा पैघ रोहुके देथ्र कए संकषणि कोदाथ्र चला देलथ्रहि। आ रोहु दू कुटी भऽ गेल।)

संकषणि: आरौ तोरी के। आब दोसर काज िििी आ गामपर चली।

(दुनू टकिीके थ्रिटामे राथ्र मािि पर उठा कए थ्रदा भेलाह संकषणि गाम थ्वथ्र। तकरा देथ्र हुनकर समवयस्क गोनर भाए गाम पर जाइत काल गामक बाबा दोगही लग ठमथ्क कए ठाढ़ भए गेलाह।)

गोनर भाइ: (मोनमे सोचैत िथ्रि ) वैष्णव जीसँ रोहु कोना कए लए ली। (पत्यक भऽ) यौ संकषणि भाइ। ई की कएलहुँ। वैष्णव भऽ कए मािि उघैत िी।

संकषणि: रौ गोनर। हमर बतारी िहि मुदा तैयो हम तोहर भाइ कोना भेथ्रयह। तोरा बुझल नथ्र िहि जे जतए तो ठाढ़ िहि से कहबैत िक बाबा दोगही। एतए जनमलो बच्चा गामक लोकसँ सम्मानिमे बाबा होइत अथ्रि।

गोनर भाइ: ठीके कहलहुँ संकषणि। मुदा हम कहैत रही जे......

संकषणि: (गप काटैत) रौ मािि खायब ने िििने थ्रियैक। मारनाइ तँ नथ्रि ने।

(अपन सनक मुँह लए गोनर भाइ थ्वदा भए गेलाह। फेर दुनू गोटे मंचसँ जाइत िथ्वि आ फेर अबैत िथ्वि। गोनर झा टेलीफोन डायरी देथ्वव रहल िथ्वि।)

संकषणि: की देथ्वव रहल िी।

गोनर झा: टेलीफोन नंबर सभ थ्वनथ्वव कए रखने िी, ताथ्वमे सँ एकटा नंबर ताथ्वक रहल िी।

संकषणि: आ ज्यो बाहरमे रस्तामे कतहु पुथ्वलस पूथ्वि देत जे ई की रखने िी तखन।

गोनर झा: एँ यौ से की कहैत िी। टेलीफोन नंबर सभ सेहो लोक नथ्वह राखय।

संकषणि: से तँ ठीक। मुदा एतेक नंबर थ्वकएक रखने िी, ई पुलिा पर ज्यो जबाब नथ्वह देब तँ आतंकी बुथ्वझ पुथ्वलस जेलमे नथ्वह िए देत?

गोनर झा: से कोना िए देत। एखने हम एथ्वह डायरीके टुकिी-टुकिी कऽ कए फेथ्वक दैत थ्वियैक।

(गोनर भाइ ओथ्वह डायरीके फाथ्वि-फूथ्वि कए फेथ्वक दैत िथ्वि।)

तेसर कल्लोल

(संकषणिक बाबू दलानपर बैसल िथ्वि। एक गोट घटक चूिा-दही-मुिर सरपेटने जा रहल िथ्वि।)

घटक: मीतक चेहरापर जे पाथ्वन िथ्वक से लोक नथ्वि देखैत अथ्वि। कारी टुहटुह िथ्वि संकषणि कारी-खटखट नथ्वह। चन्सगर िथ्वि।

संकषणिक बाबू: हे एकटा आर मुिर थ्वनयौक ने।

घटक: थ्वयौक। यौ लाइन लाथ्वग जएत लिकी बलाक। िरफराऊ िथ्वन जुथ्वन।

(ओ घटक जाइत िथ्वि आथ्वक दोसर घटक अबैत िथ्वि आ ओहो इशारामे गप करैत चथ्वल जाइत िथ्वि।)

संकषणिक माए: हे एकटा कन्यागत अओताह आइ। लाल काकीक फोन आएल िथ्वक थ्वदल्लीसँ।

संकषणिक बाबू: शरबत घोथ्वर कए राखू तखन। कागजी नेबो तँ घटक सभके शरबत थ्वपयाबैत-थ्वपयाबैत खतम भऽ गेल देखैत िी गािमे जमीरी नेबो सेहो बाचल अथ्वि आथ्वक नथ्वह।

(मंचसँ सभ जाइत िथ्वि आ बुझना जाइत अथ्वि जे संकषणि सासुरसँ आएले िथ्वि, कनेक मोट भऽ गेल िथ्वि। गोनर भाइ रस्तामे भेथ्वट जाइत िथ्वन्ह।)

गोनर भाइ: मीत यौ, कथ्वनया केहन िथ्वि, पथ्वहन पलिथ्वि ने।

संकषणि: हँ, हँ जगनाि भाइ। बि सुन्दर िथ्वि। हेमामाथ्वलनीके देखने थ्वियथ्वक? एन-मेन ओहने।

गोनर भाइ: अचिा।

संकषणि: मुदा रंग कनेक हमरासँ डीप िथ्वक।

(गोनर भाइ मुँह बाथ्वब दैत िथ्वि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत िथ्वि आ फेर अबैत िथ्वि। संकषणि हािमे लोटा लेने पोखथ्वर थ्वदथ्वस जा रहल िथ्वि तँ गोनर गोबर काथ्वढ़ िथ्वि। बगलमे गोनर भाइक कथ्वनया ठाथ्वढ़ रहथ्वि न्ह।)

गोनर भाइ: यौ मीत, हमरे जेका अहूँ सभके भोरे-भोर गोबर काढ़य पित अथ्वि?

(संकर्षण देखलन्हि जे गोनरक कन्याँ सेहो बगलमे ठाढ़ छलीह। से एखन धरि कहबन्हि तँ लाज होएतन्हि। से बिनु धरि कहने आगू बढ़ि गेलाह। जखन घुरलाह तँ.........)

संकषणि: भाइ, पहिने बियाहमे पाइ देबय पड़ैत छलैक, से अहाके सेहो लागल होएत। ताहि दारे ने उमरिगरमे बियाह भेल।

गोनर भाइ: हँ से तँ पाइ लागले छल।

संकषणि: मुदा हमरा सभके पाइ नहि देबय पड़ल छल आ ताहि दारे गोबरो नहि काढ़य पड़ैत अछि, कारण कनिया ओतेक दुलार नहि छथि ने।

(गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि।)

गोनर भाइ: सदति गुरसँ खूब लाभ होइत छैक, ई ठेही हँटबैत अछि। गूरक चाह पीब मीत।

मीत भाए: (स्वगत) धरि धनि पहिने गोनर एहि गपक चचकिएने छलाह जे ओ जोमनी छिड़ने छलाह तीरिसिमे आ तैँ जोम खाइत छलाह। हरजे की एहिमे। अधिक फलम् डूबाडूबी। (प्रत्यक्ष) परका जे पुरी जगनाथजी गेल छलहुँ, से कोनो एकटा फल छोड़बाक छल से कुसियार छोड़ि देलहुँ। आ कुसियारेसँ तँ गुर बनैत छैक। चुकन्दरक पातर रसायन चीनी बला चाहे ने थीक आ थिक।

(गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि। लगैत अछि जे पन्द्रह बरखक बादक गप अछि। दुनू गोटे उमरिगर भऽ गेल छथि।)

संकषणि: यौ,लोक सभ यौ लोक सभ। लाल काका बियाह तँ करा देलन्हि मुदा तखन ई कहा कहलन्हि जे बियाहक बाद बेटो होइत छैक। जबान बेटा घर छोड़ि भागि गेल। आब की करब ?

गोनर भाइ: हो नहि हो दिल्लीये गेल होएत। सभ ओतहि जाइत अछि भागि कऽ।

संकषणि: आब बेटाके ताकए लेल आ बेटाक नहि भेटला उत्तर अपना लेल नोकरी तकबाक हेतु हमरो दिल्लीक रस्ता धरए पड़त।

(बिदेशक पाछाँ सँ बजैत छथि- दिल्लीक रस्तामे संकषणिक संग की भेलन्हि हुनकर बुधियारी आ कनिकलपनी काज अएलन्हि वा नहि, एहि लेल कनेक धैर्य राखए पड़त। कारण ट्रेनक सवारी अछि आ मंच कलाकार उत्साहित छथि मुदा देखनिहार थाकल बुझि पड़ैत छथि। पटाक्षेप होइत अछि।)

चारिम कल्लोल

(ट्रेनक दृश्य। संकषणि जनकपुरसँ जयनगर अबैत छथि से जनकपुर आ जयनगरक बोडलिगा कए मंचित कएल जा सकैत अछि। जयनगर मे ट्रेनपर संकषणि चढ़ैत छथि । ट्रेन खुजैत अछि आ संकषणि ट्रेनमे कोनहुना बैसैत छथि।)

एकटा बूढ़ी: (संकषणिसँ) बौआ कनेक सीट नधि छोड़ि देब।

संकषणि: माँ। ई बौआ नहि। बौआक तीन टा बौआ।

(बूढ़ी मुँह बाबि लैत छथि। ट्रेन आगा बढ़ैत अछि अलीगढ़मे पुलिस आयल बोगीमे। संकषणिक झोड़ा-झपटा सभ देखए लगलन्हि। चेकिंग धरि होइत छैक से। ताहिमे धरि नहि भेटलैक ओकरा सभके। हँ खेसारी सागक बघिया बना कए संकषणिक कनिया सनेसक हेतु देने रहथिन्ह, लाल काकीक हेतु। मुदा पुलिसबा सभ एहिपर हुनका लोधि लेलकन्हि।)

सिपाही एक: ई की िी।

संकषिि: ई तँ सरकार, िी खेसारीक सििया।

सिपाहीक अफसर: अचि ा, बेकूफ बुझैत िी हमरा। मोहन सिंह बताऊ तँ ई की िी।

सिपाही दू: गाजा िक सरकार। गजेरी बुझाइत अिि ई।

सिपाहीक अफसर: आब कहू यौ सवारी। हम तँ मोहन सिंहके नहि कहसिमयैक, जे ई गाजा िी। मुदा जे तँ ई िी गाजा, ते मोहन सिंह से कहलक।

संकषिि: सरकार िियैक तँ ई सििया, हमर कियाया सनेस बन्हलक अिि लाल काकीक..........

सिपाही एक: लऽ चलू एकरा जेलमे सभटा कहि देत।

(संकषििक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहय लगैत िििह। मुदा सिपाही िल बुझनुक।)

सिपाही दू: कतेक पाइ अिि सँगमे।

(दिल्लीमे स्टेशनसँ लालकाकाक घर िि दू बस बदिल कए जाए पिित िक। से सभ हिसाब लगा कए बीस टाका ििि कए पुिलसबा सभटा लऽ लेलकििह। हँ खेसारीक सििया िि ििि देलकििह। पाइक आदान पदान भेल। पुिलसबा सभ उतिर गेल। संकषिि सेहो कनेक कालक बाद दिल्ली स्टेशनपर उतिर गेलाह। फेर मंचपर लाल काका, लाल काकी आ संकषिि डाइंग रममे बैसल िििि।)

लाल काका: (फोनपर) अचि ा। ई तँ नीक खबिर सुनेलहुँ। मीत तँ रहैत िििि, रहैत िििि की सभटा गप सोचा जाइत िलििह आ कोढ़ फािट जाइत िििह। (फोन राखैत) सुनिलयै यै। मीतक बेटा गाम पहुँिच गेलििह।

लाल काकी: बाह। रचि भगवान। मुदा बौआ ई सपित खाऊ जे आब पसीझक काट जेहन हँसी नहि करब। (लाल काका िबस मुँह कए) हिनकर नोकरीक की भेलििह।

संकषिि: नोकरी-तोकरी नहि होयत काकी हमरासँ। सपित खाइत िी जे पसीझक काट बला हँसी आब नहि करब। आब तँ गाम घुरबाक तैयारी करए िदअ।

लाल काकी: दिल्ली तँ घुिम िलअ। लाल िकला देिख िलअ।

पाचम कल्लोल पिहल अंक

(दिल्लीक लाल िकलाक पािमे रिव िदन भोरमे जे चोर बजार लगैत रहए तािहमे संकषिि अपन भाग्यक परीक्षक हेतु पहुँचैत िििि। संकषििके एिह बजारसँ, सस्त आ नीक चीज िकनबाक लूिर नहि िििह से सभ कहैत िलििह। से गामक बुिधयार संकषिि पहुँचलाह एतए।ओिह परीक्षक िदन, संकषििक ओतय पहुँचबाक देरी िलििह आिक एक गोटे संकषििक आँखिसँ नुका कय िकि वस्तु राखय लागल आ देखिते-देखिते ओतएसँ िपता भय गेल। संकषििक मोन ओम्हर गेलििह आ ओ ओकर पाि िय लेलििह। बरड मुिश्कलसँ संकषिि ओकरा तािक लेलििह।)

संकषिि: की नुका रहल िी ?

चोर बजारक दोकानदार: ई अहाक बुताक बाहर अिि।

संकषिि: अहा कहू तँ ठीक, जे की एहन अलभ्य अहाक कोरमे अिि।

चोर बजारक दोकानदार: (झािर-पोिछ कय एक जोि जुता िनकाललििह) कोनो पैघ गाि बलाक बाटमे िी जे गािसँ उतिर एिह जुताक सही परीक्षण करबामे समिि होएत आ सही दाम देत।

संकषणि: दाम तँ कहू।

चोर बजारक दोकानदार: अहा कहैत ि तँ सुनू। चाश सए टाका दाम अि एकर। हँ।

संकषणि: हमरा लग तँ मा ि तीन सए साढ़ टाका अि।

चोर बजारक दोकानदार: हम पहलनशये ने कहने िलहुँ। कतए घर भेल अहाक।

संकषणि: जनकपुर।

चोर बजारक दोकानदार: पि ाया ि तखन तँ। अहासँ की लाभ कमाएब। दस टाका तँ डी.टी.सी. बसक करेजा सेहो लागत। चलू साढ़े तीन सय दअ।

संकषणि: चलू आइ काि क युगमे अहा सन लोक अि जे पि सीक कदर करैत अि।

चोर बजारक दोकानदार: दलीमे सभ अपने लोक अि। एतए तँ ूको फेकैत ि तँ अपने लोकपर पि त अि।

पाचम कल्लोल दोसर अंक

(संकषणि गाम घुरलाह। जाश नसँ ई जुता आयल, एकरामे पाश नश लागय देलह। गोनर भाइ आ संकषणिक मंचपर पदापणि।)

गोनर भाइ: यौ मीत जुता कएह हाि मे उठेने ि।

संकषणि: हौ गोनर। पाश कोना लागए देबैक एकरा। पैरक चमि सि त तँ फेर नवका आश जएत। मुदा ई सि जएत तखन कतए सँ अएत।

(दुनू गोटे जाइत ि ि आ फेर आश जाइत ि ि। संकषणि जुता आबा रहल ि ि।)

गोनर भाइ: ई की कऽ रहल ि मीत। एतेक नीक रंग रूपक जुताके आबा रहल ि।

संकषणि: हौ गोनर। बर ड ठकान ठकेलहुँ। कतओ पाश देखी तँ पैरके सि दैत रही आ एश जुताके हाि मे उठा लैत िलहुँ। चाश ये नतँ पश रने होएब। आइ जुताक पूरा सोल, करेज जेका, अपन एश आँखक सोझा जुतासँ बाहर आश गेल।

गोनर भाइ: अहाके के ठक लेलक। अहाक नाम तँ बुझनुक लोकमे अबैत अि।

संकषणि: ि की कहू? क्यो बुझनुक कहैत अि आक एश जुताक बि इ करैत अि, तँ कोढ़ फाटय लगैत अि। कोनहुना या-फि कय पाइ ऊपर करब। बर ड दाबी िल, जे मैि ल ि आ बुि यारीमे कोनो सानी नश अि। मुदा ई ठकान जे दलीमे ठकेलहुँ तँ आब तँ ओतुका लोकके दण्डवते करैत रहबाक मोन करैत अि। एश लालकलाक चोर-बजारक लोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बुद्धके गरदामे ला देतह। अउ जी, भारत-रत बँटैत ि, आ तखन एश पर कंटोवसी करैत ि। असल भारत-रत सभ तँ लालकलाक पाि मे अि, से एक दू टा नश वरन् माि मे।

गोनर भाइ: भारत रत सभ!

संकषणि: आन सभतँ एश घटनाके लऽ कय कचकचबैते रहैत अि, कम सँ कम यौ भजार, अहा तँ एश घटनाक मोन नश पार ।

(पटाक्षेप)

सर-समाज

“एकटा प्लम्बर, एकटा पेन्टर आ तीन टा जोन लागत। सात दिनमे घर चमका देब। अहाक काजमे कमाइ नहि करबाक अछि हमरा। अहाक अहिठाम एतेक रास लोक अबैत छथि, लोक देखत तँ पूछत जे ई काज के कएने अछि। तहीसँ हमरा चाही ठाम काज भेटि जएत ते। अपन एरियाक लोक दिल्लीमे कतए पाबी”- नबी बकस नाम रहए ओकर।
“अपन एरियाक लोक छी, कतए घर अछि”?
“कटिहार। हम तँ कहब जे बाथरूम आ किचनक काज सेहो करबाइए लिअ”।
“अहा तँ पोचारा आ पेन्ट करैत छी, संगमे राजमिस्त्रीक काज सेहो करैत छी की”?
“हम नहि करैत छी मुदा हमर गौआँ ई काज करैत अछि। ओ कहैत रहए जे साहबसँ पुछू काजक लेल। ओना ओकर काज बरड ठोस होइत छैक। हम बजबैत छी, मालिक भेट कऽ लियौक। नहि तँ हमरा कहत जे तूँ साहबसँ पुछिये नहि हेबहुन्ह”।
ओ मोबाइलपर फोन मिलेलक आ कोनो सफुद्दीनके बजेलक।
सफुद्दीन किचेन बाथरूम सभक मुआएना केलक आ करणीसँ देबालपर मारलक तँ प्लास्टर झहरि कऽ खसए लगैक। नलक टोटीके घुमेलक तँ ओ टूटि कऽ खसए लगैक। फेर ओ बाजल-
“सरकारी काज छियैक। नीव तँ मजगूत होइत छैक मुदा फिनिशिंग नहि होइत छैक। आ भइयो गेलए २० साल पुरान ई सभ। देखू एहि देबाल सभक हाल। सभटा अन्डरगाउन्ड पाइप सभ सड़ि-गलि गेल अछि। तकरे लीकेजसँ देबाल सभक ई हाल अछि। सभटा पाइप बदलए पड़त से सीमेन्ट तँ झाड़िये पड़त। ओना सीमेन्टमे कोनो जान बाचलो नहि छैक। तखन देबालमे पाथर सेहो लगबाइये लिअ। ई बम्बइया-मिस्त्री गणेशीसँ जे अहा बरन्डा रिपेयर करेने छिहुँ तकर बालु देखियौक कोना झड़ि रहल अछि। टेस्ट करए लेल एहि सीमेन्टके हम झाड़ि कऽ नव सीमेन्ट लगबैत छी, पाथर नहि बदलए जाए तँ कहब। तखन मोन हुअए तँ काज देब आ नहि तँ नहि देब”- से कहि ओ बरन्डाक किछु हिस्साक सीमेन्ट झाड़ि कऽ कनेक सीमेन्ट लगा देलक आ चलि गेल।

“ई नबी बकसक छोट भाए छियैक। बरड काजुल। दिन भरि लागल रहैत अछि, नाम छियैक ओकील। नबी बकस तँ आब ठीकेदार भऽ गेल अछि, करणीके हाथ कहा लगबैए। ओकील बुझु मजदूरी करैए अपन भाए लग। आ ठीकेदारक भाएक ओहदासँ आन मजदूर सभपर नजरि सेहो रखैए”- फेर कनेक काल रुकि, ई जे प्लम्बर मिस्त्री रहए, खलील जकर नाम रहैक, से चुप रहल।
खलील हरियाणाक रहए आ बुझू जे नबी बकसके हमरासँ भेट करेबाहार ईएह रहए। एकटा छोट भडठी करेबाक रहए ताहि दारे एकरा बजेने रही। बरंडाक एकटा कोनक मरम्मतिक काज रहए। खलीलके कहलियैक तँ ओ एकटा गणेशी मिस्त्री, जकरा सभ बम्बइया कहैत रहए, के बजा कए काज करा देलक। फेर पोचारा बला आदिक पेटबला नबी बकसके ई बजेलक। आब ई पोचारा-पेन्टबला नबी बकस ओहि सफुद्दीन राज-मिस्त्रीके बजा लेने अछि। सफुद्दीन पाइप सभक काज खलील प्लम्बरके दिआ देलक से खलीलके दिन मँगने काज भेटि गेलैक। आ एक दोसराके परिचय करबैत आब तँ लकड़ी बला आ बिजली मिस्त्री सेहो घरमे पैसि गेल छल।

“दुनू गोटे -नबी बकस आ सफुद्दीन- संगे राज-मिस्त्री रहए। मुदा नबी-बकस लाइन बदलि लेलक। आ आब एक-दोसराके काज दिअबैत रहैत अछि”।
फेर खलील हमरा दिस ताकि बाजल-
“अहा दिसका लोक सभमे बरड एकता होइत छैक”।
ओकील आ खलीलमे काजक बीचमे गप-शप होइत रहैत छलैक।
“हमरा सभक पुरखा मुसलमान बनबासँ पूर्व राजपूत रहथि मुदा ई सभ राजमिस्त्री रहए-मिमान, एखनो हरियाणामे होइत अछि”- खलील इशारासँ ओकील दिस देखैत हमरा सुना कए कहलक।
“हम सभ तँ मिमान छलिहुँ मुदा तोरा सभ के छलिँह से तोरा एतेक फर्क कए कोना बुझल छैक”- बहुत कालसँ ओकील धीन बजने काज कए रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकरा उत्तर दैत सुनलियैक। ओकर सभक बीच गप आ हँसी ठटा चलैत रहैत छलए।

एक दिन सफुद्दीन मुँह लटकेने आएल। कहलक जे गणेशीसँ झगड़ा भए गेल।
“से कोना”?
“कहैए जे तो साहेबक घरक काज हमरासँ छीनि लेलँह, इलाकाक लोकक नाम पर। बुझू, अहा हमर काज देखि कऽ ने हमरा काज देने छलिहुँ। आ ई तँ छौड़ा, ईहो कहैत रहए जे...”।
“की? कहू ने”।
“कहैत रहए जे मुसलमानपर कखनो बिशास नहि करबाक चाही”।
हमर तँ तामसे देह लहरि गेल। कहलियैक जे तुरत ओकरा बजा कए आनू गऽ। मुदा ओ टिम्ह-टिम्ह लगा देलक। फेर बादमे एक दिन गणेशीके बजा कए हम बुझा देलियैक- “एहि महानगरमे हम आ सफुद्दीन एके भाषा बजैत छी, ई मात्र एकटा संजोग अछि। एकर काज देखियौक आ अपन काज देखू, फेर अहाके बुझा पड़त जे सफुद्दीनसँ अहा कतेक पाछाँ रहि जाइत छी”।
ओम्हर एक गोटे वूडेन फ्लोरिंग केर बिचार देलक ताहिपर सफुद्दीन ओकरासँ लड़ि गेल जे नीचा मे पाथर नीक होएत । बाथरूम आ किचनमे पाथर अछि तँ सभ ठाम ईएह रहबाक चाही। रुममे किएक वूडेन फ्लोरिंग होएत? मुदा वूडेन फ्लोरिंग बला कहलक जे एक दिनमे लगा देब आ पाइयो सस्ता कहलक से हम ओकरे हँ कहि देलियैक।
भरि दिन अनघोल होइत रहैत छल। नीचाक फ्लोर बलाक बेटाक बारहम कक्षाक परीक्षा रहए से ओ जे राजमिस्त्री सभक आबाजाही देखलक तँ कहए लागल, जे रुम सभमे तँ पाथर नहि लागत ? हम कहलियन्हि जे नहि वूडेन फ्लोरिंग काठक कए जएत, तँ हुनका सासमे सास अएलन्हि।
”पाथर लगाबएमे तँ माससँ ऊपर ई सभ लगबितए, हमर बेटाक परीक्षा अछि, से हम तँ पाथर सभ पसरल देखि कए चिन्तित भए गेल रही”।
“नहि मात्र बाथरूम आ किचेन लेल ई पाथर सभ अछि”।

सफुद्दीन, खलील आ नबी बकससँ अबैत जाइत काजक अतिरिक्त घर-दारक गप सेहो होमए लागल। नबी बकस कचहरीसँ दिल्ली आएल, छ भैयारीमे सभसँ पैघ, एकटा बहिन सेहो रहैक। अपन हमशीरा(बहिन)क वर

आ ओकर सासुरक थिषयमे नबी बकस पेमपूवर्कि सुनबैत रहैत िल। सफुद्दीनक शाथादीमे ओ राज थिसीक काज थिखलक। आस्ते-आस्ते चाथि भाएके थिल्ली बजा लेलक। ओकील तँ ओकरे संग रहैत िक, आन भाए सभ थियाह करैत गेल आ अलग होइत गेल। मुदा ओहो सभ आसे-पासमे रहए जाइए। थियाह तँ ओकीलोक भेल िक, मुदा अथि ओ सुिग। से आन भाए सभ कहैत-कहैत रथि गेलैक जे नबी बकस मँगनीमे खटबैत रहैत िक, अलग भए जो गऽ, मुदा ओ तँ भाएक भक्त अथि। भाएक सोझामे एको शब्द की बाजल होइत िक?

एक थिन ओकीलके बोखार भेल रहए आ दोसर भाए सभ ओकरा काजपर अएबासँ मना कएने रहैक। मुदा ओ नथि मानल। ओकर सुिगपना देथि हमर मा, पती, बच्चा सभ ओकरा खूब मानए लागल रहथि। ओथि थिन काजक बीचमे ओ खएबा लेल मागलक आ बालकोनीमे सूथि रहल। फेर बेथिया पहरसँ काज शुर कएलक। साझमे घर जएबाक बेरमे जखन हम कहथियैक जे डेरा जएबाक बेर भए गेल तँ कहलक जे नथि, आइ काज लेटसँ शुर कएने रही से खतम कइये कऽ जाएब। आ आस्तेसँ बिबिाइत बाजल जे देखैत थियैक जे आइ क्यो बजबए लेल आबैए आथिक नथि।
आठ बजे करीब मोटरसाइथिकलपर दू गोटे आएल। ओकील कहलक जे ई दुनू ओकर िटका भाए सभ िक। दुनू गोटे तेसर तल्ला थिति हमर फ्लैटपर आएल आ ओकीलके गप करबा लेल बजेलक। ओकर सभक गपमे आपकता थिथित कोि रहैक। ओकील ओकरा सभके कहैत रहए जे ओहेन कोनो गप नथि िक, आइ आि थिन सुतल रहए ते सोचलक जे काज पूरा कइए कए जाए। तावत नबी बकस सेहो ओतए पहुँथि गेल आ ओकीलके लए गेल।

दोसर थिन नबी बकस भोरे-भोर आएल।
“देथियौक ई भाए सभ।...
-“बेटा जेका बुझथियैक एकरा सभके आ हमरापर कलंक लगबैत अथि जे तूँ दू रंग करैत िह। तीनू भाए काथि हमरासँ खूब झगिा करए गेल जे तूँ ओकीलके नोकर जेका रखैत िहक। बुझू ! ई ओकील अथि सुिग। कतबो कहैत थियैक जे नीकसँ कपिा लता पथिर, तँ ओहो झोलंगे जेका रहैत अथि।
-“काथि हमरा तँ ओकीलसँ भेटो नथि अथि। सफुक्कि काज दोसर साइटपर चथि रहल िक, ओतथि गेल िलहुँ जे कोनो स्कीमसँ काज भेथि जइतए तँ अहाक एथिठाम काज खतम भेलापर ओतथि लाथि जइतहुँ। थिल्डर अंसल बलाक ऑफर आएल रहए जे हमरा एथिठाम आथि जाऊ मुदा भाए सभक दारे हम मना कए देथियैक। आ ई सभ.. ओना ई सभटा हमर पटना बला भाए मंडलबाक करतूत िी”।
“मंडल!!”, हमरा थिकि पुरान गप मोन पिल, -“अहाक गाममे एकटा जयशंकर सेहो िथि की”?
“हँ! हँ! अहा कोना थिन्हैत थियथि थिनका सभके। ओना असली नाम तँ हमर भाएक सलीम थियैक। ऑथिसक नाम मंडल। घरक सलीम। सरकारी डाइवर अथि। घरमे सलीम कहने ओकर अहथिया (कथिया) बि घबिाइ िक”।

“सभटा बुझल अछि हमरा”।

अपन छिदाि जीवनक एकटा घटना मोन पड़ि गेल हमरा।

पटनामे पढ़ैत रही। पिसिमे एक गोटे जयशंकर रहैत िलाह। भाइ-भाइ कहैत िछियन्हि। दू बियाह। पहिल बियाहक हुनकर बेटा भागि गेल िलिन्ह। ओना दोसर बियाह पहिल पतीक मुइलाक अनंतर भेल िलिन्ह। किि दिन बदली-बम्माइ घुमि पहिल बियाहक ओ बेटा आपस अएलन्हि। सभ ओकरा पुिलकै जे की करमे? ओ कहलक जे सभ काज हमरासँ होएत मुदा पढ़ाइ निहि कए। फेर सभ मिलि कए ओकरा डाइवरीक लाइनमे जएबाक लेल कहलक। ओकरो मोन रहैक डाइवरी सिखबाक। भोरे-भोर एक दिन जयशंकर कहलन्हि जे आइ एक ठाम चलबाक अछि।

“बेटा कहैत अछि जे डाइवरी सीखब। डाइविंग स्कूल बर ड महग। एक गोटे गौआँ सलीम अछि डाइवर, सरकारी ऑफिसमे। गाममे एकबेर िटीमे भेटल रहए। ओकरो सभक ईद पाबनि लिए, से आएल रहए गाम। कहलक जे रवि दिन कऽ ओकरा िटी होइत िक ऑफिसमे आ आन दिन पाच बजे भोरेसँ सिखा सकैत अछि। दू सए टाकामे एकटा सेकेंड हैड साइकिल बेटाके कीनि देने छियैक।

-“ओकर डेरा ऑफिसे लग िक। ऑफिस बजेने अछि, ओतिहसँ घर देखाओत”।

“ऑफिस देखल अछि?”

“हँ, कताक बेर गेल िी”।

ऑफिसक बेरमे हम सभ गाि मैदानक बगलक कचहरी सन ऑफिस पहुँचैत गेलहुँ।

“मंडलजी डाइवर साहेब िछि?” - जयशंकर एक गोट हाकिमक ऑफिसक बाहर ठाढ़ चपरासीसँ पुिलन्हि।

“हँ, ओम्हर िछि”।

हम जयशंकरके पुिछियन्हि जे हमरा सभ तँ सलीमसँ भेट करबा लेल आएल िी, ई मंडल के िछि?

ओ इशारामे हमरा चुप रहए लेल कहलन्हि आ ईहो मुखर र पमे कहलन्हि जे एखनमे कोनो बात िक, बादमे कहताह।

आब जे मंडलजीसँ हुनका गप होमए लगलन्हि तँ बीच-बीचमे ओ सलीम भाइ, सलीम भाइ कहि हुनका सम्बोिन करैत रहलाह। फेर हुनका संगे हम सभ हुनकर डेरा पहुँचलहुँ। फेर बिदा होइत काल सलीम भाइ जयशंकरके हमरा दिश इशारा करैत कहलन्हि जे हिनका कहि देबियन्हि ने। जयशंकर कहलखिन्ह जे कहि देबन्हि।

ओतए सँ निकललाक बाद जयशंकर कहलन्हि जे कटिहार लग जयशंकरक गाम िन्हि। मारते रास भाइ बहिन िक सलीमक। सलीम हुनकर लंगोटिया यार, संगे पढ़लन्हि। फेर रोजगारक कममे दुनू गोटे दूर चलि गेलाह। सलीम कोनो हाकिमक घरपर काज करए लागल। डाइवरी कहिया कतए सँ ओ सीखि लेने िल, से हुनरबलाके नोकरीक तँ ओहुना दिकत नहि होइत िक। बादमे एकर स्वभाव देखि कए ओ हाकिम एकरा कोनो दोसर आदमी जकर नाम मंडल रहए, आ कतहु मरि-खपि गेल रहए, केर नामपर टेम्पोरोरी राखि लेलकैक। फेर किि दिनमे ओ पमानेन्ट भए गेल।

जयशंकर हमरासँ कहलन्हि - “एकर ऑफिसमे वा एकर संगी साि लग- ओना अहासँ फेर कहिया एकर भेट

हेतए- एक्षु गपक ि खोसँ चरचा नक्षु करब। ओना पमानेन्ट भए गेल िक मुदा लोक सभ केहन होइ िक से नक्षु देखइ थ्ीयैक। कयो थ्कि् श्राथ्व पथ्ठ देतैक तँ मंगनीमे बेचारके फेरा लाथ्ब जएतैक''।

मोनमे घुमरल एक्षु गपके नबी बकसके हम कहक्षुयैक। ताक्षुपर ओ बाजल-
''ओहो सफ़ीम रिश्वहार हमही ि। एकटा कमप्लेन कऽ देबैक तँ जाक्षु नोकरीपर एतेक फुरफुरी िक से घोसथ्व जएतैक। मुदा सोचैत ि जे ओकर नोकरी जएतैक तँ हमरे मािपर आथ्ब खसत। ते अल्ला पर सभटा ोिथ्ी देने थ्ीयैक''।

नबी बकस ओना तँ बरड व्यस्त रहैत लि मुदा ओक्षु थ्वन लागैए हमरे सँ गप करबा लेल समय थ्ाकाक्षु कए आएल रहए। जखन लोक मानथ्िक थ्परेशानीमे रहैत अथ्ी तँ अपन दुखनामा दोसराके सुनबए चाहैत अथ्ी। मुदा तकर िता भेटब मोश्किल। मुदा हम अपन मानवथ्वजानक कॉलेथ्ुया पढ़ाइक पभावक कारण सभ काज ोिथ्ी अनायास िता बथ्ा जाइत ि से नबीके बुझल रहैक। भदबथ्या ल िने ि से हमहूँ कतहु बाहर जएबाक हरबिमे नक्षु लिहुँ। से ओ अपन थ्वस्सा शुर कएलक।

''कतेक कष कटने ि से की बयान कर । आ मदथ्ा के सभ कएलक ? एकटा खालू-खाला (मौसा-मौसी) आ खलेरा भाए आ खलेरी बक्षुन मोन प िए आर कयो नक्षु। अब्बूक मरलाक बाद ब ि अब्बू (ब िका काका), िटा अब्बू (िटका काका) सभ पराया भए गेल। शौहरक मरलाक बाद अम्मीक हालत की रहैक से ई भाए सभ की बुझत-गमत? -''खाला थ्वल्लीमे रहैत रहथ्ी। अम्मीक मृत्युक बाद हमर पढ़ाइ ि्थ् गेल। कथ्वहारमे पढ़ैत रक्षुतहुँ, फूफीजाद भाए (थ्वथ्यौत) कहनक्षुयो रहए जे तोरा जतेक पढ़बाक ोिक पढ़, मुदा ई सभ तखन गाममे ईँटा उठथ्बतए से हमरा देखल होइतए? आ ई गप एकरा सभके हम बुझैयो नक्षु देने थ्ीयैक। -''आ ई सभ की कहैये जे हम अपन अहथ्ाया (सिं) आ साथ्व-हमजुल्फ़(साथ्व-साढ़ू)क पा ि एकरा सभपर ध्यान नक्षु दऽ रहल थ्ीयैक? दू रंग करैत थ्ीयैक?
-''थ्वल्लीमे आएल रही गाम ोिथ्ी कए तँ पक्षुने नोएडामे थ्यतथ्या बत िनक दोकानमे बासोसँ बत िन साफ करैत रही। अल्लाहक करमसँ सफ़ू िभेथ्ट गेल। खालाजाद भाए (मौसेरा भाए) केर संगी रहए सफ़ू ि ओकरेसँ सभ ईलम थ्ाखलहुँ। मुदा ई कक्षु थ्वअए जे हम कक्षुयो ओकरा दगा देने होइयैक। सफ़ूिक स्वभाव तँ अहाके बुझले अथ्ी। कथ्ायो अन्याय आ बेइमानी ओकरा पसन्द नक्षु िक, सभसँ बतकही भेल िक, मुदा हमरासँ आइ िथ्व कोनो मोन मुटकाल नक्षु भेल िक। हमर से नीयत रक्षुतए तँ ओकरो संग ने हमर संबं ि टुथ्टतए। आ एक्षु शहरमे ओ आन भए हमरा अप्पान बुझलक आ ई सभ ? ओ तँ गौआँ ि, मुदा खलील? ओकरोसँ पुथ्ीयौक।
-''माएक मोन पथ्ी जाइए जक्षुया ई भदवथ्या ला िए। मोन नक्षु पा िए चाहैत ि, आ ताक्षु लेल व्यस्त रहैत ि। मुदा आइ माएक ओ मृत्यु रक्षु-रक्षु कोढ़ तोथ्ी रहल अथ्ी।

नबी बकसक कंठ कहैत-कहैत भथ्या गेलैक। मुदा कनेक पाथ्ा पीथ्व फेर ओ माएक स्मरण करए लागल।

-''नबी साहेबजादे, कनेक ओक्षु कठौतके खुटाक लग कए थ्वऔक। बड्ड पाथ्ा चूथ्व रहल िक ओतए। ई

बादरकाल सभ साल दुाख दैत अिछ। सोिचते रिह गेलहुँ जे घर िबिायब। मुदा निह भए सकल। घरोक कनी मरोमित कराएब आवश्यक िल, मुदा सेहो निह भए सकल। ठाम-ठाम सोगर लागल अिछ। फूसोक घर कोनो घर होइत िक? ठाम-ठाम चुिब रहल अिछ, ओतेक कठौतो निह अिछ घरमे। खेनाइ कोना बनत से निह जािन। ओसारापरक चूिल्हपर तँ पािनक मोट टघार खिस रहल अिछ। एकटा आर अखिा चूिल्ह अिछ, मुदा जे ओ टूिट जएत, तखन तँ चूिा-गुिा फािक कए काज चलबए पित। समय-साल एहेन िक जे चूिल्ह बनाएब तँ सुखेबे निह करत। जािन सेहो सभटा भीिज गेल अिछ। भुसकीपर खेनाइ बनाबए पित''।
-''पइिढ़या उजरा नुआक आँचर ओढ़ने, िरिराइत करीमा बेगम माने हमर माए, चौदह बरखक अपन बेटाक माने हमर संग, कखनो सोगरके सोझ करिथ तँ कखनो कठौतके एतएसँ ओतए घुसकाबिथ। जतए टघार कम लागिन्ह ओतएसँ घुसकाकए, जतए बेशी लागिन्ह ओतए दए दैत िलीह। सौंसे घर-थचिर भए गेल िल। कोनटा लग एक ठाम पािन निह चूिब रहल िल, ततए जाए ठाढ़ भए गेलीह।
-''कतेक रास खढ़ चरमे अनेर पिल िल। पढुआ काकाके कहिलयिन्ह निह। घर िबिा लेने रिहतहुँ''।
-''यौ बाबू। घर िएबाक लेल पुआर तँ भेटबो करत आहार निह। आ गरीब-मसोमातक घर खढ़सँ के िबिए देत''।
-''हमरा खढ़सँ आ पुआरसँ घर िबियबामे होमयबला खरचाक अन्तर तखिनया निह बुझल िल।
-''से तँ अम्मी, खढ़सँ िएल घरक शान तँ देखबा जोग होइत िक। पढुआ काकाक घर देखैत िछयिन्ह। देखएमे कतेक सुन्दर लगैत अिछ आ केहनो बरखा होअए, एको ठोप पािन निह चुबैत अिछ''।
-''से तँ सभसँ नीक घर होइत अिछ कोठाबला''।
-''एह, की कहैत िी? थालेबासँ आ सुरखीसँ ईंटा जोिने कोठाक घर भए जाइत अिछ? आ नेङराक घर तँ सीमेन्टसँ जोिल िक, मुदा परका ततेक चुबैत िल से पूि निह''।
-''से?''
-''हँ यै अम्मी। सभ बरख जँ ओ िबिा दी, तँ ओिहसँ नीक कोनो घर होइत िक?''
-''चािलम बरख जे िबिेने िलहुँ तकर बादो पिहल बरखामे खूब चुअल िल''।
-''पिहलुके बरखामे चुअल िल ने आ फेर सभ तह अपन जगह िऽ लेने होएत। तखन निह चुअल ने बादमे''।
-''हँ, से तँ तकरा बाद तीन बरख निह चुअल''।
-''तखने काकी बजैत अएलीह-
-''जनिम कए ठाढ़ भेल अिछ आ की सभ अहाके िरखा रहल अिछ। कनेक उबेिा जेका भेलैक तँ सोचलहुँ जे बिहन-दाइक खोज पुिा कए आबी''।
-''बुनी रिक गेल िल। हम काकाक घर िस गेलहुँ आ दुनू िदयादनीमे गप-शप शुर भए गेलिन्ह।
-''साझक झलफली शुर भेल, भदबिरया अन्हारक, तँ काकी बहराइत कहैत गेलीह-
-''बिहन दाइ, आिगक जररी पिय तँ हमर घरसँ लए जाएब''।
-''निह बिहनदाइ। सलाइमे दू-तीन टा काठी िक। मुदा मसुआ गेल िक। हे, ई िखचडी दैत िछयिन्ह, कनेककाल अपन चुिा लग रािख देिथन्ह तँ काजक जोगर भए जएत। नबी िनआ पठा देहिथ''।
-''देिखहिथ। उपास निह कऽ िनहिथ से किह दैत िछयिन्ह, बच्चा सभ तँ हमरा एिहठाम खा लेत''-िदयािदनी कहैत िवदा भेलीह।
-''करीमा बेगम माने हमर माए ओसारापर खुटा भरे पीठ सटा बैिस गेलीह।

-“की सोच रहल छी अम्मी। कहू ने ?”

-“यैह फुसियाही गप सभ, अहाक अब्बूक पहलमानीक। काका हुनका जे कहैत रहथिन्ह सैह।

-“खुटा पहलमान छथि ई”।

-“से नहि कहू काका। जबरदस्तीक माथ-पीछ हम नहि करैत छी, ताहि दारे ने अहा ई गप कहि रहल छी”।

-“रहमान काका आ हुमायूँ भाइजान। युती-भाइजानमे ओहिना गप होइत छलहि, जेना दोस्तयारीमे गप होइत छैक। अखराहामे जखन हुमायूँ सभके बजाबथि देथि तखन अन्तममे रहमान हुनकासँ लड़ि आबथि। काका कहियो हुनका नहि जीतए देलखिन्ह।

-“हुमायूँक कनिया माने हम नवे-नव घरमे आएल छलहुँ। कोहबर लहठी सभ होइत छलैक ओहि समयमे। आब ने जाहि मुल्ला सभ सँ एक एकर थरोछी भए गेल अछि, तैयो लोक कहबते अछि की ? मुल्ला सभक गप जे मानए लागी सभ ठाम तखन तँ भेल !

-“आ एहि तरहक वातावरण घरमे देखलहुँ तँ मोन पसन भऽ गेल। घरक दुलारि छलहुँ आ सासुरो तेहने भेटि गेल। समय बीतए लागल। मुदा हुमायूँक थविा एतेक जल्दी कहाय लागब से नहि बुझल छल तहिया। आब तँ सभ पकारक विशेषणक अभ्यास भऽ गेल अछि। झगड़ा-झाँटक बीच कियो ईहो कहि दैत अछि- वरखौकी, वरके माथ डाइन चाखने अछि !

-“हुमायूँक भवैत जे सभक दुलारि छलहुँ तकर बाद सभक आँखिक काट भए गेलहुँ। इद्दतक बाद नैहरसँ दोसर वियाह करएबा लेल सेहो भाए सभ आएल मुदा अहा सभक मुँह देखैत रहबाक इच्छा मात्र रहल”।

नबी बकस बाजल-“उजरा नूआ, बिन चूड़ी-सिन्दूरक माएक वैधव्य बला चेहरा एखनो हमरा मोने अछि। फेर ओहि भदबरिया राति मे माए आगा कहए लगलीह।

-“रहमान काका हमर पक लए थकि बाजि देलखिन्ह एक बेर, तँ हमर सासु-ससुर कहए लगलखिन्ह जे हमर पुतोहुके दूषि कए रहल छी। आ ईहो जे मुदीबा सभक अपना घरमे घटना हेतैक, तखन ने बुझए जएत।

-“आब तँ ने रहमाने चाचू छथि आ ने सासु ससुर से मरल आदमीक की खोज-शिश कर । मुदा एकोटा झूठ गप ई सभ नहि अछि।

-“लोक कहैत छैक जे सुखक दिन जल्दी बीति जाइत अछि, मुदा हमर दुखक दिन जल्दी बीतैत गेल, सुखक दिन तँ एखनो एक-संझू उपासमे खुजल आँखिसँ हम देखैत रहैत छी, खतमे नहि होइत अछि।

-“थविा भेलाक अन्तरालक आन घटनाक्रम अपन समयत समयसँ होइत रहल। हमर अब्बू-अम्मीक मृत्यु भेल, सास-ससुर आ पितिया ससुर रहमान कका तँ पहिने गुजरि गेल छलाह।

-“घरमे जखन बँटबारा होमय लागल तखन सम्पत्तिक आ खेत-पथारिक बखरा, चारि भैयारीमे मात्र तीन ठाम होमय लागल। हुमायूँक हिस्सा तीनू गोटे (सबैत भैयारी सभ) बाँटि लेलक। हम थकि कहलियन्हि जे हमर गुजर कोना होएत, छह टा बेटा आ एक टा बेटी अछि तँ हुमायूँक मृत्युक दोष हमरा मापिर दए हमर मुँह बन कए देल गेल।

-“तीनू भाएक मुँह हुमायूँक समक खुजैत नहि छलन्हि मुदा हुनकर मृत्युक बाद हुनकर थविाके हिस्सा नहि देबऽ लेल तीनू भाय सभ तरहक उपाय केलन्हि। हम नैहर जा कए अपन भायके बजा कए अनलहुँ। पंचैती

भेल आ फेर अँगनाक कातमे एकटा खोपड़ी अलगसँ तीनू भाय बान्हि देलखिन्ह, हमरा आ हमर बच्चा सभक लेल। तिन, फसिल सभ सेहो जीवन निर्वाहक लेल देबाक आज्ञा भेल। हम चरखा काटए लगलहुँ। से कपड़ि-लत्ता ओतएसँ तेना चलैत जाए।

-"खाउ सलाइ"। अम्मीजानी आबि कहलखिन्ह।

"हँ"- भक टुटलखिन्ह करीमा बेगमक माने हमर माएक। अम्मीजानी सलाइ पकड़िए चलि गेलीह।

-"एहि बेर बाढ़िक समाचार रहि रहि कए आबि रहल अछि। बाट घाट सभ जतए ततए डूबि रहल छिए, खेत सभ तँ पहिनहि डूबि गेल छिए। अहाक पढ़ुआ काकी पहिनहिये सुना देने छथि जे एहि बेर वार्षिक खचामे कटौती होएत। काल्हि कहैत रहथि जे कहाँया सभटा फसिल डूबि गेल, एहि बेर वार्षिक खरचामे कटौती हेतखिन्ह। हम कहलियन्हि जे एँ यै । जखन्या फसिल नीक होइए तँ हमर खरचामे कहा कहियो बेशी दिन दैत छी ? ई गप अहाक पढ़ुआ काका सुनि रहल छलाह। बजलाह-रति तँ साढ़ भए गेल। अहाक पढ़ुआ काकीक इशारा केलापर ओ ससरि कए दलान दिसि बहरा गेलाह आ हम नोर सोखि गेलहुँ। आइ गप चलकलल तँ......"।

माएक खिस्सा कहैत-कहैत नबी फेर रुकि गेल। आँखि आ कंठ दुनू संग दिए रहल छैक ओकर। किछु काल चुप रहि बाजल।

"ई खिस्सा भाए सभके हम कहबो नहि कएने छियैक। सोचलहुँ जे कहबैक तँ मँगनीमे पश्चाशोचि जगतैक। जे काज करबाक से नहि कएल होएतैक। आ सुनलियैक अछि जे हमर ओ मंडलबा भाए ओहि पढ़ुआ काकाक कहलमे आबि गेल अछि"।

नबी बकस फेर चुप रहल। भाए सभक पक्ष ओकर पेम ओकरा सभक विषयमे बेशी बजबासँ ओकरा रोकैत छैक। फेर ओ माएक खिस्सा शुरु कएलक।

-"माए आगा बजैत रहलीह।

-"दिन दिनमे तँ खेनहिये छिहुँ, एहि अकल-बेरमे केना खेनाइ बनाएब। कहाँया-महाँया छिहुँ तखने विधवा भऽ गेलहुँ आ अहू वयसमे तँ सभ कहाँया-काकी कहैत अछि। हुमायूँ कतेक मानैत छि अपन भाए सभके। अपन पेट काटि भागलपुरमे राखि पढ़ओलखिन्ह ददिटका भाइके आ आब ओ पढ़ुआ बौआ एहेन गप कहैत छथि।

-" सोचैते-सोचैते नोर भरि गेलखिन्ह माएक आँखिमे।

-"हमरा संग एकबेर हज करए लेल गेल रहथि माए। निश्चय भारत सरकार जे हमरा सनक गरीब-गुरबाक माए सेहो हज कए आएल। आ अपन बचिकी अम्मीजानीके सुनबैत रहथि खिस्सा जे बहिनदाइ, ततेक भीड़ छिए टेनमे, गुमार ततबे। गाड़िमे बेशी मसोमाते सभ छलीह। एक गोटे कहैत छलीह जे जतेक कष्ट आइ भेल ततेक तँ जखन्या राड़ि भेल छिहुँ तखनो नहि भेल छिए। हवाइ जहाजके अम्मी गाड़ी कहैत छलीह।

-"फेर ओहि भदबरियाक रातिमे हमर अम्मी करीमा बेगमक मुँहपर बाढ़िक हहाइत पानि आ चारसँ टपटप चुबैत पानिक ठोपक आ घटाटोप अन्हारक बीच कनेक मुस्की आबि गेलखिन्ह। हमरा काकाक दलानपर जाए लेल कहलखिन्ह जतए आर भाए बहिन सभ छि।

-"फेर सोचैते-सोचैते खाटपर टघरि गेलीह करीमा बेगम, माने हमर माए । भोर होइत-होइत बाढ़िक पानि बान्हपरसँ अँगना धसि आबि गेल।तीनू भैयारी अपन-अपन दरसाक आंगन भरा लेने छलाह से सभटा पानि

सहरक्ष कऽ हमर सभक िसल आँगनसँ खोपिड़ी ध्वस बक्ष गेल। घरमे चाक्ष आँगुर पाक्ष भक्ष गेल। भोरमे धक्क िअबाज भेल आ जे उठैत िी तँ खाटक नीचा पाक्ष भरल िल, एक-कोठी दोसर कोठीपर अपन अन-पाक्षक संग टूक्ष कऽ खसल िल। आब की हो, ब िकी ध्वयादनीक बेटा सभसँ पक्षने आक्ष कऽ खोज पुिध्वि केलकक्षह, अबाज दूर िध्व गेल िलए। सभटा अन-पाक्ष नाश भऽ गेलक्षह। अन पाक्ष िलैन्हे कोन? दू-टा िट-िट कोठी, ओकरे खखरी-माक्ष ध्वला कऽ दढ़ करैत रहैत िलीह हमर आम्मी।

-"मुदा भोर िध्व ओ हहा कऽ खसल आ मसोमातक जे बरख भक्षक बाचल मासक खोध्वस िल तकरा राइ-ध्विती कऽ देलक। करीमा बेगम माने हमर अम्मी सूप लऽ कऽ अनके समटए लेल बढ़लीह, हमर आँक्षक देखल अध्वि।

-"मुदा बाक्षक पाक्षक संग पाकक एक तह आक्ष गेल िल घरमे। सौँसे टोल हल्ला भऽ गेल जे देक्षअौ केहन भैसुर ध्वअर सभ िक, अपना-अपनीके अपन-अपन अँगना भक्ष लए गेल अध्वि। मसोमातक अँगना तँ अदहासँ बेशी िध्वकआ लऽ गेल िलैहे, जे बेचारीक बचल अँगना अध्वि से खिइ बक्ष गेल अध्वि। ब िकी ध्वयाध्वनी सहरक्ष कऽ अएलीह कारण ध्वआद टोलक लोक सभ आबए लागल रहध्वि। करीमा बेगमक सोगरपर ठाढ़ घरक दुदशा देक्ष सभ काना-फूसी करए लागल रहए। अँगनाक एक कोनसँ दोसर कोन, अपन घरसँ दोसराक घर !

-"पाक्ष पैसबाक देरी रहैक आ आस्ते-आस्ते हमर घरक एक कातक भीतक देबाल ढक्ष गेल। टोलबैया सभ हल्ला करए लागल जे करीमा बेगम ध्वातरे तँ नध्वि रक्ष गेलध्वि। ब िकी ध्वआध्वनी खसल घर देक्ष हदक्ष गेलीह। बजलीह जे अल्ला रक रखलक्षह जे सुरता भेल आ नबीक भाइ-बक्षनके घर लए अनक्षयैक नक्ष तँ ध्वयादी डाह नक्ष बुझल अध्वि। सभ कलंक लगध्वतए अखने।

-"मुदा ध्वयाध्वनी"!

-"ध्वयाद सभ सभ गप बूक्ष अपन-अपन घर जाए गेलाह। हम अम्मी लग अएलहुँ। माक्सिदी ध्वचारक रही, कक्षहारमे पढ़ैत िलहुँ। ध्विवा-ध्ववाह, जाक्ष-पि सभ ध्वन्दुपर पढ़ुआ काकासँ ध्वान ध्वचार रखैत िलहुँ। घरक नाम नबी िल मुदा स्कूल कॉलेजक नाम नबी बकस।गाममे भोजमे खक्षहानक पाक्ष आ बान्हपरक पाक्ष देक्ष ध्वचक्षत होइत िलहुँ। जोन-बोक्षहारके बान्हपर बैसा कऽ खुआबैत देखैत िलहुँ आ बाबू-भैयाके खक्षहानमे। खक्षहानमे बाक्षक लोकक्ष दारा खाजा-लरडू कैक बेर आनल जाइत िल । बान्हपरक पातीमे एक बेर आ नक्षयो। मुदा घरमे कोनो मोजर नक्ष िल, कहल जाइत रहए जे पक्षने पक्ष-क्षक्ष कऽ धक्क ि कर ।

-"अम्मीसँ कतेक गमि-झोिि भेटैत िल, चरखाक सूतक कमाइक। जय गाि बाबा, ध्विवा लोकक्ष लेल ई काज िध्व कऽ गेलाह।

-"मुदा हमर अम्मी। की भेलक्षह हुनका। भाए बक्षन सभ तँ ओम्हर अध्वि!"

-"अम्मी!!!!!!!!!!!!!

-"हमर ध्वात्कारसँ सौँसे टोलमे िरििि पैक्ष गेल रहए। नबी कक्षयो कनैत नक्ष अध्वि, कानल अध्वि तँ कोनो गप िक।

-"नध्वि अम्मी। ई कोनो गप नक्ष भेल। धक्कएक हमरापर अहा भरोस िध्वि देलहुँ। नबी बकस नाम िी हमर। पाचो भाए आ िटकी बक्षनक भाए नक्ष बाप ध्वयैक हम। मुदा अहा हमरापर भरोस िध्वि चक्ष गेलहुँ। या

अल्ला!!!!!!!!!!!”

-“टोल जुटि गेल मैयतक चार  दिश। के की सभ कएलक से नहि बुझलहुँ। अम्मीके गुसुल (नहाओल) कराओल गेल। कफन पहिराओल गेल। जनाजाक खाट आएल। ताहिपरसँ माएक गाछी चरखासँ बनाओल चादरि ओढ़ाओल गेल। तीनू काका आ हम जनाजाक खाटके कान्ह देलहुँ। कब्रिस्तान लग ठाढ़ भए जनाजाक नमाज पढ़लहुँ आ अम्मीके दफन कएलहुँ।

नबी बकस फेर चुप भए गेल। हम ओकरा टोकए नहि चाहैत छलहुँ। दस मिनट धरि ओ चुप्पे रहल आ हम बैसल रहलहुँ। फेर ओ बाजल।

-“अम्मीक मृत्युक चालीस दिन धरि शोक मनओलहुँ। आ वैह चालीस दिनक आराम हमरा एहि जोग बनेलक जे फेर पएरमे चिरणी लागि गेल। अम्मीक मृत्युक बाद पढ़ाइके नमस्कार कए खाला लग आबि गेलहुँ, दिल्ली नगरियामे ।

नबी बकस अपन आँखि पोछि रहल छल। फेर दस मिनट ओ चुप रहल।

“नबी बकसके अम्मीक इन्तकालक दिन लोक पहिल आ अन्तिम बेर कनैत देखने रहए। मुदा ई सभ आइ फेर हमरा आँखिसँ नोर चुआ देलक। ओकीलक तँ बियाहो नहि होइत रहए। सभ कहैत छल जे बुरबक छैक। मुदा जेना भीष्म पितामह धृतराष्टक बियाह करेलन्हि तहिना हम एकर बियाह करबओलहुँ आ ई सभ कहैत अछि जे हम ओकरा नोकर जेका रखैत छियैक”।

तावत कॉलबेलक घंटी बाजल रहए। ओकील नबी बकसक सोझामे आबि ठाढ़ भऽ गेल।

“भैया, सभ कहैत अछि जे हम बुरबक छी। काल्हि अहल्लिया (कनियाँयो) के ई सभ यैह गप कहि देलकैक। ओ कहलक जे तोहर मिन्ता ककरो नहि रहए छैक, मुदा हम नहि मानलहुँ। से काल्हि हम कनेक लेट भए गेलहुँ। सरके कहबो केलियन्हि जे देखैत छी जे ओ सभ आबैए आबक नहि। कनियाँयो तँ सुनिगे ने अछि। आइ ओहो दियाद्धनीक गरा पकड़ि कऽ खूब कानल अछि। बुधियार सभ ने अहाके छोड़ि चलि गेल, मुदा ई बुरबकहा अहाके छोड़ि कहियो नहि जएत, भाए”।

काल-सि ान थ्रसि ापन

"सुनू। पयोगशालाक श्च्रप्तच ऑफ कए थ्र्रयौक"।

चाथ्र डाइमेन्श्नक वातावरणमे अपन सभटा थ्र आ थ्री डाइमेन्श्नक वस्तुक पयोग करबाक लेल िम्प्र पयोगशालामे पयोग शुर करए बला ि थ्री। हुनकर संगी-साि ी सभ उत्सुकतासँ सभटा देथ्र्र रहल ि थ्री।

"दू डाइमेन्श्नमे जीबए बला जीव तीन डाइमेन्श्नमे जीबए बला मनुक्खक सभ कायक्रि देथ्र्र तऽ नथ्र सकैत ि थ्री मुदा ओकर सभटा पथ्रणामक अनुभव करैत ि थ्री। अपन एकटा जीवन-शैलीक ओ थ्रमाण कएने ि थ्री। ओथ्र पथ्रणामसँ लि बाक व्यवसि ा कएने ि थ्री। तथ्रना हमरा लोकथ्रा सेहो चाथ्र डाइमेन्श्नमे रहए बला कोनो सम्भाथ्रत जीवक वा ई कहू जे तीनसँ बेशी डाइमेन्श्नमे थ्रानहार जीवक हस्तक्पके थ्रान्हबाक पयास करब"। िम्प्र कहैत रहलाह।

एक आ दू डाइमेन्श्नमे रहथ्राहारक दू गोट पयोगशालाक सफलताक बाद िम्प्रक ई तेसर पयोग ि ल।

एक थ्रमीय जीव जेना एकटा थ्रन्दु। बच्चामे ओ पढ़ैत ि लाह जे रेखा दू टा थ्रन्दुके जोि त ि क। नथ्री तऽ थ्रन्दुमे कोनो चौि इ देखना जाइत अथ्री आ नथ्रये रेखामे। रेखा नमगर रहैत अथ्री मुदा थ्रन्दुमे तँ चौि इक संग लम्बाइ सेहो नथ्र रहैत ि क। एक थ्रमीय थ्रशमे मा ि आगा आ पा ि रहैत अथ्री। नथ्री अथ्री वाम दथ्रनक बो ि नथ्रये ऊपर नीचाक। मा ि सरल रेखा, वकता कथ्रायो नथ्र। आब ई ने बुथ्र थ्रअ जे अहा जतए बैसल ि ी, ओतए एकटा रेखा थ्रचरण करए लागत। वरण ई बुझू जे ओ रेखा मा ि अथ्री, नथ्र कोनो आन बथ्रा।

"थ्र बीमीय बह ाण्ड भेल जतए आगू पा ि क थ्रहाय वाम दथ्रन सेहो अथ्री मुदा ऊपर आ नी ि एतए नथ्र अथ्री। बुझू जे अहाक सोझा राखल थ्रातलपाटीक सदृश ई होएत, जाथ्रमे चौि इ थ्रदमान नथ्र अथ्री।"

"मुदा ि मान् ई चलैत अथ्री कोना। गप कोना करत, एक दोसरके संदेश कोना देत"।

"आऊ। पथ्रने एक थ्रमीय बह ाण्डक अवलोकन करैत ि ी"।

िम्प्र एक थ्रमीय पयोगशालाक लग जाइत ि थ्री। ओतए थ्रन्दु आ थ्रन्दुक सथ्रमलन स्पर प बनल रेखा सभ देखबामे अबैत अथ्री। ई जीव सभ अथ्री। एक थ्रमीय बह ाण्डक जीव जे एथ्र तथ्यसँ अनथ्राज अथ्री जे तीन थ्रमीय कोनो जीव ओकरा सभके देथ्र्र रहल ि क।

"देखू। ई सभ जीव एक दोसराके पार नथ्र कए सकैत अथ्री। आगू बढ़त तँ तावत ि थ्र जा ि थ्र कोनो थ्रन्दु वा रेखासँ टकर नथ्र भए जएतैक। आ पा ि हटत तावत ि थ्र यावत फेर कोनो जीवसँ भेट नथ्र होएतैक। एक दोसराके संदेश सेहो मा ि एकथ्र पँथ्रक्तमे दए सकत कारण पंथ्रक्तक बाहर थ्रक ि नथ्र ि क। ओकर बह ाण्ड एकथ्र पंथ्रक्तमे समाप्त भए जाइत अथ्री।

"आब चलू थ्र बीमीय पयोगशालामे"।

सभ क्यो पा ि-पा ि जाइत ि थ्री।

"एतय थ्रक ि रमण चमन अथ्री। पथ्रल पयोगशाला तँ दू तहसँ जातल ि ल, दुनू थ्रथ्रासँ आ ऊपरसँ सेहो। मा ि लम्बाइ अनन्त ि थ्र जाइत ि ल। मुदा एतय ऊपर आ नीचाक सतह जातल अथ्री। ई आगा पा ि आ वाम दथ्रन दुनू थ्रथ्रा अनन्त ि थ्र जा रहल अथ्री। ताथ्र हेतु हम दुनू पयोशालाके पृथ्वीक ऊपर स्पतंि नभमे बनओने ि ी। एतुका जीवके देखू। सीतलपाटी पर थ्रक ि ओ बना थ्रयौक। जेना ि ट बच्चा जे आि थ्राक थ्रा ि बनबैत ि थ्री। एतए ओ सभ पकार भेथ्र जएत। मुदा ऊँचाइक जान एतए नथ्र अथ्री। एक दोसरके एक बेरमे

मािरेखाक रपमे देखैत अिछ ई सभ। दोसर कोणसँ दोसर रेखा आ तखन स्रपक जान करैत जाइत अिछ। लम्बाइ आ चौड़ाइ सभ कोणसँ बदलत। मुदा वृताकार जीव सेहो होइत अिछ। जेना देखू ओ जीव वाम कातमे। एक दोसराके संदेश ओकरा लग जा कए देल जाइत अिछ। पैघ समूहमे संदेश पसािरत होयबामे ढ़ेर समय लािग जाइत अिछ"।

"िीमान, की ई संभव अिछ, जेना हमरा सभक सोझा रहलो उतर ओ सभ हमरा लोकिनक अिस्ततसँ अनिभज अिछ तिहना हमरा सभ सेहो कोनो चािर आ बेशी िबमीय जीवक अिस्ततसँ अनिभज होइ"।

"हँ तकरे चचा आ पयोग करबाक हेतु हमरा सभ एतए एकि भेल छी। अहामे सँ चािर गोटे हमरा संग एिह नव कायिक हेतु आिब सकैत छी। ई योजना कनेक किठनाह अिछ। कतेक साल िधिर ई योजना चलत आ पिरणाम किहया जा कए भेटत, तकर कोनो सीमा िनधािरण निह अिछ"।

पाच टा िवदािथ शेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा एिह कायिक हेतु सहषितैयार भेलाह। िीमान पाचू गोटेके अपन योजनामे सिम्मिलत कए लेलिन्ह।

"चािर बीमीय िवशमे तीन बीमीय िवशसँ िकछु अन्तर अिछ। तीन बीमीय िवश भेल तीन टा लम्बाइ, चौड़ाइ आ गहराइ मुदा एिहमे समयक एकटा बीम सेहो सिम्मिलत अिछ। तँ चािर बीमीय िवशमे आिक पाच बीमीय िवशमे समयक एकसँ बेशी बीमक सम्भावना पर सेहो िवचार कएल जएत। मुदा पिहने चािर बीमीय िवश पर हमरा सभ शोि आगा बढ़ाएब। एिहमे मूलता समयक एकटा बीम सेहो रहत आ तािहसँ बीमक संख्या पाच भए जायत। समयके िमलाकए चािर बीमक िवशमे हमरा सभ जीिव रहल छी। जेना वणिअनितासँ गिसत लोकके लाल आ हिरअरक अन्तर निह बुिझ पिैत िक तािह पकारसँ हमरा सभ एकटा बेशी बीमक िवशक कल्पना कए सकैत छी, अपत्यक अनुभव सेहो कए सकैत छी"। िीमान बजलाह।

व्याख्यान समाप्त भेल आ सभ क्यो अपन-अपन पकोषमे चिल गेलाह। सैदािन्तक शोि आ तकर बाद ओकर पायोिगक पयोगमे सभ गोटे लािग गेलाह।

िितल पर ितभुज खेिच कए एक सय अस्सी अंशक कोण जोिड कए बनएबाक अिितीय पृथ्वीकार आकृितमे खेचल गेल ितभुज जािहमे पत्येक रेखा एक दोसरासँ नबे अंशक कोण पर रहैत अिछ ।

मुदा एतए रेखा सोझ निह टेढ़ रहैत अिछ। ओिहना समय आ सिानके टेढ भेला पर एहन संभव भए सकैत अिछ जे हमरा सभ पकाशक गितसँ ओिह मागे जाइ आ पुना घुिर आबी। पकाश सूयिक लगसँ जाइत अिछ तँ ओकर रस्ता कनेक बदिल जाइत िक।

शेतकेतु आ रैक्व एकटा िसदान्त देलिन्ह । जेना कठफोरबा काठमे, वृक्षमे खोह बनबैत अिछ, तिहना एकटा समय आ सिानके जोिएबला खोहक िनमाण शुर भए गेल। अपाला एकटा बहाण्डक डोरीक िनमाण कएलिन्ह, जकरा बािन्ह कए पकाश वा ओहूसँ बेशी गितसँ उिबाक सम्भावना िल। सत्यकाम एकटा एहन िसदान्तक सम्भावना पर कायिशुर कएने िलाह, जकर माध्यमसँ तीन टा सिािनक आ एकटा समयक बीमक अिितीयक कताक आर बीम िल जे बि लघु िल, टेढ िल आ एिह तरहे वतमान िवश लगभग दस बीमीय िल।

घोषा सिन समयक माध्यमसँ भूतकालमे पहुँचबासँ पूर्वदेशक कानून-अधिमे ई प्रावधानि करबाक हेतु कहलथिह जाहिसँ कोनो वैजानिक भूतकालमे पहुँचि कए अपन वा अपन शक्तिके जन्मसँ पूर्वनिःशेष नाश दए। घोषा विश्वक निर्माणमे भगवानक योगदानक चरचा करैत रहैत छलीह। जखन विश्वक निर्माण भगवान कएलथिह, एकटा विस्फोट दारा आ एकरा सापेक्षता आ अनिश्चितताक सिद्धातक अन्तर्गत ढील देलथिह बढ़बाक लेल तँ फेर समयक चाभी तँ हुनके हाथमे छैक। जखन ओ चाहताह फेरसँ सभटा शुरु भए जायत। जखन से नहि अछि, तखन समय सिनक कोनो सीमा, कोनो तट-किनार नहि अछि, तखन तँ ई ब्रह्माण्ड अपने सभ किछु अछि, विशदेव। तखन भगवानक कोन सिन? घोषा सोचैत रहलीह।
आब मित्रक लेल समय आबि गेल छल। अपन पाचू विद्यार्थीक सभ सिद्धातके ओ प्रयोगमे बदलि देलथिह। आ आब समय आबि गेल। पहरराति।

पुष्पक विमान तैयार भेल सिन-समयक खोहसँ चलबाक लेल। ब्रह्माण्डीय डोरी बान्हि देल गेल पुष्पक पर। मित्र सभसँ विदा लेलथिह। प्रकाशक गतिसँ चलल विमान आ खोहमे सिन आ समयके टेढ़ करैत आगा बढ़ि गेल। ब्रह्माण्डक केन्द्रमे पहुँचि गेलाह मित्र। पहरराति बीतल छल। आगा कारी गह्वर सभ एहि समय आ सिनके टेढ़ कएल खोहमे चलए बला पुष्पकक सोझा अपन सभटा भेद राखि देलक।

भोरका पहरक पहिने मित्रक विमान पुनः पृथ्वी पर आबि गेल।

मुदा एतए आबि हुनका ई विश्व किछु बदलल सन लगलथिह। श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा क्यो नहि छलाह ओतए। विमानपटी सेहो बदलल सन। विश्वमे समय-सिनक पटी सभ भरल पड़ल छल।
“यौ। समय बताऊ कतेक भेल अछि”।
“कोन समय। सोझ बला वा सिन-समय विसर्पिन बला। सोझ बला समय अछि, सन् ३१०० मास...”।
ओ बजिते रहि गेल छल मुदा मित्र सोचि रहल छलाह जे सिन-समय विसर्पिनक पहररातिमे हजार साल व्यतीत भए गेल। ककरा बतओताह ओ अपन ताकल रहस्य। आकि एतुका लोक ओ रहस्य ताकि कए आबि गेल तँ नहि भए गेल अछि?

सर्वाधिकार अध्यायान

“हे हम डोमाके पढ़ा लिखा कए किछु बनबए चाहैत छी” । बुधनि पासवान बाजल । चण्डीगढ़मे ओ रिक्शा चलबैत छथि । आब गाममे खेती बारीमे किछु नहि बचलैक ।
छिटका भाए सभ जनमिते मरि जाइत रहए।
से बुधनिक एकटा छिटका भाएके माए-बाप जनमलाक बाद डोमक हाथिसँ बेचलथिन्ह आ फेर पाइ दऽ कए किनलथिन्ह । ई सभटा काज ओना तँ साकेंतिक रूपे भेल मुदा एहिसँ गह कदाचित भऽ गेलैक। आ छिटका भाए जे बुधनि पासवानसँ १२ बरख छोट रहथिन्ह बचि गेलाह ।
आ ताहि दारे ओकरा सभ डोमा कहि सोर करए लागल ।
बुधनि अपन बाप-माएक संग हरवाही करथि मुदा भाएके पढ़ेबाक बरड लालसा रहथिन्ह ।
“सुनैत छीअए जे हमरा सभमे कतेको पढ़ि-लिखि लेलासँ नोकरी भेटि जाइत छैक। एकरा जरूर पढ़ाएब, चाहे ताहि लेल पेट काटए पड़िए आकि भीख मागय पड़िए”।

भीख तँ नहि मागलथिन्ह मुदा चण्डीगढ़क रस्ता धलिथिन्ह बुधनि।

भरि दिन रिक्सा चलाबथि आ साझमे जखन दोसर संगी-साथी सभ देसी ठेकामे अपन ठेही दूर करबाक लेल जाथि तखन दस तरहक गप सुना कए बहना बना कए बुधनि अपन घर दिस घुमि जाथि।
“की रे मीता। बामा-दछिना करै छ, मोन्‍ नहि होइ छौ”।
“नहि रौ भाइ। भरि दिन तँ बाइ मे रिक्सा खिंचैत रहैत छी मुदा साझ होइते अंगक पोर-पोर दुखाए लगै-ए”।
“रौ भाइ। कहैत छीयौक जे ठेकापर चल तँ दस बहना बना कए घुमि जाइ छीहीँ। देख हमरा आउर के, पीबि कए फोफ कटैत रहैत छी। एके बेरमे भोर आ सभ ठेही खतम”।
कोरइलाक सभ गप सुनि कऽ गुमकी लाधि दैत छथि बुधनि। मोनमे ईहो होइत छनि्ह जे किसाइत डोमा पढ़ए आकि नहि पढ़ए।
तखन जे आइ सभ गप पेटसँ बाहर निकालि देतथि तँ यैह सभ संगी-साथी सभ काल्हि भेने अही गपके लऽ कऽ हँसी करतथिन्ह। दू चारि-टा पाइ जे बचत तकरा गामपर पठाएब। आ ताहिसँ डोमा पढ़त।

मुदा गाममे जे स्कूल रहए ओतय किछुओ टा दलित आकि गरीबक बच्चा नहि पढ़ैत रहथि।

सरकार एकटा योजना चलेलक, दलितक बच्चा सभके बिना पाइ लेने किताब बाटबाक । किताब लेबाक लेल घर-घर जा कए यादव जी मास्टर साहेब बच्चा सभके स्कूल बजेलथिन्ह। नाम लिखलथिन्ह, बिना फीसक, मासूलक । सभ हफता-दस दिन अएबो कएल स्कूल। दुसधटोलीसँ, चमरटोलीसँ, धिबिया टोलीसँ सभ। डोमा सेहो। सभके किताब भेटलैक आ सभ सप्ताह-दस दिनक बाद लापता भऽ जाइ गेल । देखा देखी कमरटोली आ हजामटोलीक बच्चा सभ सेहो अएलाह पढ़ए, किताब मँगनीमे भेटबाक लोभे । मुदा ओतए ई कहल गेल जे अहा सभ पैघ जातिक छी, मुफ्त किताब योजना अहा सन धिआकक लेल नहि छैक ।

“बाबू ई काटए बला गप िक की, िट-िटे होइत िक आ पैघ-पैघे । स्टेटक आइ िश्वक सभसँ नीक चीफ-अअास्टर कपूरी ठाकुर भेल िक, की नि्ध ि हौ असीन झा” । जयराम ठाकुर अपन खोपिीक टूटल चारसँ हुलकैत सूयक्ि पकाशक आसनीपर असीन जीक केश कटैत बजलाह।
“से तँ बाबू ठीके”। असीन बजलाह ।

से गाममे फेर बाहाण आ भूअाहारके िध्ि आर क्यो स्कूलमे पढ़एवला नञ्ञ बचल । अदहरमे सभटा थ्कताब ई लोकश्वा थ्कनैत गेलाह ।
“हे अदहरसँ बेसीमे नञ्ञ देब, मानलहुँ थ्कताब नव अि्ध, मुदा अहा सभके तँ मँगनीयेमे ने भेटल अि्ध”।

आ दुसि टोली, चमरटोली आ िभ्वया टोलीसँ सभटा थ्कताब सहथ्द कऽ आकश्वा गेल ।

आ पता नञ्ञ डोमा पढ़लक आथ्क नञ्ञ।

जाश्वावादी मराठी

“ऐँ यौ ई की देखैत ि, ऑफसमे अफसर सेहो भथिलाक आ बहारक
आ बक्शाबला, खेनाइ बनबए बला सेहो सभ भथिलाक आ बहारक । से कोन गप भेल”।
पुणे मे थांहजी के एक गोट मराठी सज्जन पुलिथन्ह।
बात सेहो ठीक रहए मुदा बाहरी लोकके बुझबामे नञ्ह आबए ।
थांह साहेब भारतीय पुश्स सेवा मे रहथि आ हुनकर सहोदर आखना-पहािमे थंथंग पेसमे क-ट सभ जोित लाह, से हुनका कनेको अनसोहात नञ्ह लागलथ्ह। मैथिली साश्वत्यमे देखैत आएल िथि मा िमैथिल बाहाण आ कणिकायसिक लेखनीके चमकैत।
बक्शाबला तँ दरभंगाक होए आथ्क कथ्रहारक,
खेनाइ बनबएबला झौआ रहबे टा ने करैत अथि।
ई मराठी सभके पता नञ्ह थकएक अनसोहात लगैत िक।
बरड जाश्वादी सभ अथि ई मराठी सभ।

ि रि मनुक्ख

दू थ्वनसँ परबा असगरे बैसल रहए । ओकर कथ्नाया उढ़थ्व कए कतहु चथ्न गैलैक । बच्चा सभ कतेको बेर ओकर खोपाि मे पाथ्न आ दाना दऽ आएल रहए। मुदा आइ भोरे ओ खोपाि उजाथ्व कतहु चथ्न गेल''।

''थ्वकए यै नानी । ओहो थ्वकएक नथ्न दोसर थ्वयाह कऽ लेलक । बेशी पेम करैत रहए कथ्नायासँ''।

''अहा नेना ि । ई कोनो िर मनुक्ख िाि ि जे कथ्नाया मरए, माय-बाप मरए, बेटा-पुतोहु मरए, सर-समाज मरए, चाथ्व थ्वन मुँह लटकाएत आ पाचम थ्वनसँ फेर िर मऽ जएत ''।

बहुपती थ्ववाह आ थ्नजाि

“मरब गेल्ह बेचारी “। गौआँ सभ फलना बाबूक तेसर कन्याआँक मुइलापर कहलथ्नि ।
“फलना बाबू तेसर कन्यायाक गरदिन काटि लेलथ्नि”। एक गोटे कहलाथ्नि।
“से ठीके कहैत छी । पहिल कन्यायामे बच्चा नहि भेलैक तँ दोसर ब्याह कएलक । मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नहि भेलैक तँ बुझबाक चाही छलिए नें”।- दोसर गोटे कहलथ्नि ।
“हँ आ उनटे तेसर कन्यायाके कहैत रहथि जे भाग्यवाज सभके नहि मानैत छथिऐक ते भगवान बच्चा नहि देलथ्नि । बुझू”?-तेसर गोटे कहलथ्नि ।
“ठीकजी सार”।- चारिम गोटे सभा समाप्त करैत बाजल ।
मुदा चारि गोटेक ई महा-सम्मेलन एहि गपपर सहमति मे छल जे पहिल दू टा ब्याह करब उचित रहए।

सीता-बेटी

“बाबूक संगे खाएब”।-बुच्चया बाजल ।
“हे आब तूँ िट नह ि, एम्हर बैस”। माए कहलथि ।
फेर भाए सभ खेनाइ खेलक आ आब बुच्चया आ बुच्चया माएक बेर आएल ।
तरकारी सभ जेका गेल रहए, दू ि तँ बाबू आ भाएके मा ि भेटलैक ।
माए बुच्चयाके सठल जेका तरकारी लोहयामे सँ ि लनीसँ जेना तेना कए देलथि आ अपने भात आ नून तेल लए बैसलीह। दू कि बतासँ दाढ़ी खखोरि कए बादमे बुच्चया खेलक।
- ई खिस्सा सुनबैत मनोहर बजलाह जे हमरा सभ आब ई कऽ सकैत ि ि की ?
पहिने खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ पढ़नाइ-लिखनाइ िथि बेटीक संग अन्याय होइत रहए। अपाला-गार्गी-मैत्रेयीक समय तँ आब जा कऽ फेरसँ आएल अछि ।

विआह आ गोरलगाइ

जमाय पएर ूिबआ कए पणाम कएलिखह तँ ससुर सए टका आकािल एक टाकाक नोटक गकाक लेल कयाके सोर केलिखह।
खूब खचिबिचकिएने िलाह बेटीक बयाहमे पाइ अलग गनने िलाह आ नगरक चािर कठटा जमीन सेहो बेटीक नामे िलख देने िलाह।
‘‘निञ बाबूजी। ई गोर-लगाइक कोन जर री िक’’?
तावत कया आिब गेल रहिथन्ह, एक टकाक गाका लऽ कए।
एक सए एक टाका जमायक हािमे रखैत ससुर महराज बजलाह-
‘‘राखू-राखू । ई तँ पनिरयो ने सोिचायैक’’।

पआभा

मसूरीमे आइ.ए.एस. आ आइ. पी. एस. पोबेशनर सभक दार पाटी चलि रहल छलै।

“हम सभ एतेक तेज छी जे एक सय पशक सेट बना कऽ तैयारी कएलहुँ तखन जा कए सफल भेलहुँ। के अछि हमरासँ बेशी तेज?”।

“रौ बुड़िनेसबा। सतमामे तूँ पास नहि भेलँह, अठमामे सेहो एक बेरे पास नहि भेलँह। दसमामे द्वितीय श्रेणी भेलापर तोरा स्कूलसँ धक्का देलकऊ। पशक पैटनकेँ हम आ तूँ पैक्टिस केलहुँ आ सफल भेलहुँ तँ एहिमे तेजी केर कोन बात आएल”।

<u>जाड़ा-पाला</u>

हैदराबाद पुश्चास
एकेडमीमे दार क पाटी चश्च रहल ि‍ल ।
“क्यो श्चक‍ि नश्च बाजत, बस हमही टा बाजब”।
ि‍ती श्चटैत- “राजपूतक ि‍ती ि‍ ई, क्यो श्चक‍ि नश्च बाज “।
“:भाइ यैह तँ अंतर ि‍क, दुनू गोटे आइ.पी.एस. ि‍, दुनू गोटे पीने ि‍। मुदा की हम ई कश्च सकैत ि‍ ि‍ती पीश्च कए- जे हम डोम ि‍, क्यो श्चक‍ि नश्च बाज”!:

<u>अनुकम्पाक नोकरी</u>

“बरड ददभि ऽ रहल अछि बाबू, आब बदास्त नहि भऽ रहल अछि” ।
पता नहि कोन घाव रहैक । पुकार कुहरि रहल छथि । स्वतंत्रता सेनानी रहथि, जखन डाक्टर आ कम्पाउन्डर मना कऽ देलक घाव छुबिएसँ तँ अपने हाथे सेवा कऽ रहल छथि । उजरा पाउडरके नारिकेरक तेलमे मिला कऽ घावक खपलौइया हटा कऽ ओहिमे लगाबथि। पीजके पोछथि। बाप आ छोट भाए दुनू सेवामे लागल रहथि ।
परका पहिल श्रेणीमे उतीर्ण भेल छलथिन्ह पैघ बेटा, सत्यनारायण भगवानक पूजा भेल रहए।
बूढ़ बापक पैघ आश रहथि बड़का बेटा।
छोटका बेटा कोनो तेहन तेजगर नहि रहथिन।
मुदा रोग एहन रहए जे एक दिन बड़का बेटाक प्राण लए लेलक।
अंग्रेजसँ लड़ैत खुशी-खुशी जेल गेल रहथि मुदा तखन युवा रहथि। बुढ़ारीमे ई शोक हुनका तोड़ि देलकन्हि ।
गुमशुम आ अपनेमे मगन रहए लगलाह । स्वतंत्रता सेनानी पेशनसँ घर चलाबथि । हँ छोटका बेटा पैघ भाएक सर्टिफिकेट लऽ कलकता गेलाह आ ओहि सर्टिफिकेटक आधारपर हुनका एकटा प्राइवेट कम्पनीमे नीक नोकरी भेटि गेलन्हि। माने मात्र नाम बदलि गेलन्हि।
लोकके बाप मरलापर नोकरी भेटैत छैक, हुनका भाएक मरलापर भेटलन्हि ।

नूतन मीश्रआ

नगरमे डकैतीक घटना भेल ।

नूतन मीडिया अपन-अपन चैनलमे -सर्वप्रथम ओकरे चैनलपर एकर सूचना देल जा रहल अछि- ई ब्यौरा दैत, दू-दिनमे एकोटा गिरफतारी नहि होएबाक आ ताहि दारे पुलिसक अकर्मताक चर्चा करैत गेल।

पुलिस हेडक्वार्टरमे बैठकी भेल । सभ टी.वी. चैनल कहि रहल छल जे चारि गोटे भागि कए डकैती केलकहि मुदा एखन धरि एको गोटेक गिरफतारी नहि भेल अछि। एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट बजाओल गेलाह। जेना सभ बेर होइत रहए एहू बेर सेहो ओ एक गोटे पकड़ि कए अनलन्हि। चारि डाग पड़बाक देरी छल आ ओ अपन डकैत होएबाक गप स्वीकार कए लेलक। फेर एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक संग ऑफिसर लोकनि कैमराक सोझा फोटो खिचबेलन्हि। ओ डकैत अपन डकैत होएबाक गप सेहो स्वीकार कएलक।

चारि दिन आर बीतल। सभ दिन तरह-तरह सँ ओहि कथित डकैतके पीटल जाइत रहल,

-"बता अपन तीन संगीक नाम जकरा संगे डकैती कएने छलहि"।

-"सरकार चारिए डागमे अपन डकैत होएबाक गप स्वीकार कए लेलहुँ, हम डकैत रहितहुँ तँ ई कहितहुँ ? मुदा आर तीनटा संगीक नाम कतए सँ आनू आ ककरा फुसियाहीके फँसाबी"।

सप्ताह भरिक बाद मीडिया एकटा बम विस्फोटक अन्वेषणमे बाझि गेल । मुख्य डकैत तँ पकड़िइये ने गेल से आब डकैतीक कॉवरेज दर्शक नहि ने देखए चाहैत छथि!

पब्लिक डिमान्ड नहि छैक से ओहि डकैतके बेल भेटलैक आकि नहि से कोनो समाचार नहि आएल।

<u>भ्रष्टलाक उदोग</u>

गाममे चौरिीजीक बरड रतबा, डरे सभ सदरिहैत िल । ककर दीन अिछ जे हुनकर गम्हरायल िन काटि लेत आिक ... ।
ओ एकटा बस खोललिन्ह-
“दरभंगासँ गाम िदस चलत । सेकेंड हैंडमे भेटल अिछ । पुरनका मािलकक लाइसेंस काज देत। संगमे बसक पुरनका मािलक तीन मासक लेल अपन डाइवर आ खलासी सेहो देलक अिछ, तकर बाद अपन तािक लेब”। चौरिीजी मिन्दरपर बसक पूजा करैत काल गौआँ सभसँ बजलाह ।

“सुनैत छिऐक बस-स्टैण्डमे बि बदमस्ती करैत जाइत िक”- एक गोटे गौआँ बजलाह
“ि र, चौरिीजीक बस आ आदमीके के िबाक साहस करत”? दोसर गोटे पसाद लैत बजलाह।

बसक रट आिक रस्ता यािगणक लेल सुिवधातगर रहैक से ओिह गािमे पैसेन्जर भिर जाइत रहए। दोसर बसबला सभ दबंग सभ।
शाहीजी आ िमािजीक स्टाफ सभ बि सजत! से चौरिीजीक स्टाफके गरगोिटया दऽ बस स्टैण्ड सँ बाहर भगाकािढ देलकिन्ह।

पोखिरक महारपरसँ चौरिीजीक बस खुजए लागल तँ ओतहु यािी पहुँचए लगलाह।

आब तँ बस-स्टैण्डक दादा सभके बरड तामस उठलिन्ह ।
दुनु डाइवर आ खलासीके पुष पीटल गेल आ ईहो कहल गेल जे फेर एिह रटपर चलताह तँ बसक एक्सीडेन्ट करबा देल जएतिन्ह। शाही आ िमि जीक तँ पचासो टा गािि िछन्ह एकटा िनामे एक्सीडेन्टक बाद पिले रहत तँ की ?

गामक रोआब दाब बला कौरिीजी बस-स्टेण्डक दादा सभक सोझा जेना बकिी बिन गेलाह।

गाममे मिन्दरपर गािी ठाढ़ िछन्ह, ओिह पर कदीमाक लती चिढ़ गेल अिछ पैघ-पैघ कदीमासँ बस झपा गेल अिछ। खूब फिल िक।
गौआँसभ हँसीमे कहि रहल छिथ-
“चौरिीजीक बसक पाइ तँ एिह बेर कदीमा बेिचये कऽ उपर भऽ जएतिन्ह”।
“दरभंगाक इन्डस्टीयल स्टेटमे सेहो फैक्टी सभ एिहना बन्द अिछ आ ओकर देबाल सभपर एिहना तर-तीमनक लती सभ भरल िक”- दोसर गौआँ बाजल।

**भिलाक उदोग-२**

अबकी लाक बोनमे रहअबाहार जीव-जन्तु सभ आपसमे बचार कएलक-

“अपन केिक दादा सभ उदोगक बनाश कएने अछि, ओतुका भीर लोक सभ उदोग लगेबासँ परहेज करैत अछि”- गीदि बाजल।

“तखन अपनअहु सभ बकएक नअहु फैक्टरी खोलैत िी, कोन दादाक मजाल जे हमरा सभ लग आओत”।-बाघ किकिल।

पस्ताव पास भेल जे आब जंगलमे फैक्टी खुजत आ नगर जा कए उदोग बभागसँ एकर पंजीकरण करबाओल जएत। ओतए भीर मैथिल बाह ण आ कणकायस्ि सभक राज अछि, ओ सभ बर ड ओस्ताज होइत अछि। गीदि, बानर, लोमडि, नीलगाय सभक संग गदहा सेहो पंजीकरण लेल अपन सेवा देबाक लेल अगू बढ़लाह। सभसँ पअहुने लोमडिके मौका भेटल कारण ओ सेहो जंगलक ओस्ताज अछि।

बकि दुनुका बाद दौग-बरहा केलाक बाद ओ हाथ माथ लेलक।

“यौ बाघ महाराज। बर ड कोन-कोन तरहक दस्तावेज मँगैत अछि नअहु भऽ सकत हमरा बुते”।

फेर एक एक कए सभ जाइत गेलाह आ घुथ कए अबैत गेलाह ।

गदहा कहैत रहल जे एक मौका हमरो देल जाए ।

मुदा सभ सोचथि जे बुझू, एहेन पेचीला सभ बफल भऽ आब गेलाह मुदा फैक्टरीक पंजीकरण नअहु करबाए सकलाह आ ई गदहा जे मूखताीक लेल आ बोझ बहबाक लेल पअहुद अछि, की कऽ सकत ?

“ठीक िक”- अन्तमे हाथ कए बाघ कहलअहु-

“जाउ अहूँ देखअहु आउ एक बेर”।

मुदा ई की ? साझ होइत देरी गदहा महाराज जे िलाह से फैक्टीक पंजीकरण पमाणपि लऽ सोझा हाथअर भऽ गेलाह।

बाघ पुिलअहु- “औ जी गदहा महाराज ! एतेक कलामी जन्तु सभ जतए बफल भऽ गेलथि ओतए अहाक सफलताक मंि की”?

गदहा महाराज उतर देलअहु-

“महाराज एकर मंि अछि जाअहुवाद आ भाइ-भतीजावाद। उदोग बभागमे हमर सभ सरे-सम्बन्धी लोकअ िथि ने”!

<u>बाअहु, भूख आ पवास</u>

एखन बेरक बाध्य पथ्हीला जेका सन नहि । सभटा सुर डाह कऽ देलक आधायोसँ जल्दी। खेत पारिमे रेत आ बालुमे खाली अछिआक खेती। दुनू साझ पप्पू भाइ अछिआ खाइत अकचि भऽ गेल छथि। वैद्यक थीकाह, मुदा एखन कोनाकन्हामे ...

मुदा देखू भाला!

हरिद्वार सँ भाशाजक खाठटी अबैत अछि- ''आबू जाऊ काका, एतए वैद्यक लोकसभाक बर ड पूछि अछि। भव्य ध्वन हस्त-सन्चालन आ उदात, अनुदात आ स्वरित स्वरक मेलसँ वेदक पाठ कर आ साझमे नीक भाकुइत भाष ान, खीर-पूरी खाऊ''।

वैद्यक जी टेन लिखह आ पहुँचा गेलाह हरिद्वार । ओतए पहुँचा स्नान-ध्यान कऽ भव्य ध्वन कंठ फाड़ि आ हाथि घुमाए वैद्यक मंकि पाठ केलखह । साझमे मनसूबा बाखह खेनाइपर बैसलाह जे आब बर ड दिनुका बाद खीर-पूरी खएबाक अवसर भेटत।

मुदा एम्हर हुनका हरिद्वार पहुँचबासँ पहिनहि दोसर पंडित लोकसभामे विचार-विमर्श भेल कारण ओ लोकसभा खीर-पूरी खाइत-खाइत अकचि भऽ गेल छलाह। से सर्वसम्मतिसँ विचार कएल गेल जे आइसँ दक्षिणा ध्वनक लेल खेनाइक मेन्यू बदलल जाए। विचार भेल जे आइसँ वेदपाठक बाद अछिआ आ दूटा दक्षिणा ध्वन छथि देल जाए। वैद्यक जी खाइ लेल मनसूबा बन्हने बैसल छलाह जे आइ जे खेनाइ अएत तँ ओकर खेनाइके सुरसक छाछ देबैक।

मुदा तखने वजपात भेल, सोझा अछिआ महाराज विदमान ।

वैद्यक जी हाथ जोड़ित अछिआ महराजसँ बजलाह-

''सरकार हम तँ टेनसँ आएल छी मुदा अहा कोन सवारीसँ अएलहुँ जे हमरासँ पहिनहिसँ विराजमान छी ।''

नव-सामन्त

संगीक िट भाए गाममे रहथि। गाममे माथ-पीट करैत िलाह से हुनका थलली बजाओल गेल । एतहु गप-गप पर झगि करए लागथि।
हमरा सोझेमे एक गोटेके िमकी दऽ रहल िलाह-
"दस थनटमे पहुँथ जाह नथ तँ गोली माथ देबह। बीस थकलोमीटर दूरमे िह आथक चालीस थकलोमीटर दूर हमरा ओथसँ कोनो मतलब नथ अथि"।
हम हुनका थषयमे सुथते रही मुदा आइ देखलहुँ ।
हमर संगी बुझबए लगलथन्ह- "ठीक िक, हम नथ कहैत ि जे नथ माथयौक। मुदा एकटा गप कहू जे थललीमे बीस थकलोमीटर दूरसँ आबएमे तीन थनट पथ थकलोमीटरक थसाबसँ साथ थनट लगतैक से ओ दस थनटमे कोना आओत"?
थदाि भीतर चथ गेलाह। हम संगीके पुथयथ-
"थदाि तँ कतहु गुिगावमे नोकरी ने करैत रहथि" ?
"हँ एक ठाम दस हजारक नोकरी िरेने रथयथ मुदा िथि देलथ। कहलथ जे हमर लेबलक पुरान सामन्त जोकर ई नोकरी नथ। आब थनकर लेबल कहैत ि- कताक पयास कएलहुँ जे मैथक पास भए जाथि मुदा मध्यमोसँ पास नथ कए सकलाह"।

बाणवीर

साढ़े तीनसँ चाथ फीटक बीच लेटराक लम्बाइ िल। सभ कहैत िक जे ओकर माए-बाप दोसराक बच्चाके देख कए भुटा-भुटा कहैत रहैत िलथि।से पता नि की भेलैक लेटरा तकरा बादसँ बढ़ते ने अथि, ओकर लम्बाइ एकदम्मेसँ बढ़ब रुक गेलैक।

“िर! माए-बापक कतहु नजथ लगैत िक बच्चाके”।

“नथि यौ, माएक तँ लगाते िक, देखयौ ने लेटराके”।

गौआँ सभ आपसमे गप करथि। जे से, सभ बच्चा पैघ भेल। बढ़ए लागल । मुदा लेटरा घुटमुटाएले रहल। सभ क्यो ओकरा परोक्मे लेटरा आ मुँहपर लेटरबम कहए लगलाह।

लेटरबमक माए-बापके जमीन-जाल ततेक नि। से महीसेपर आभरि िलह हुनकर सभक जीवन। लेटरा महीसक सेवामे भोरेसँ लागल रहैत िल। भोरमे भोरहा कातमे रगथि-रगथि कऽ थकन बना दैत िल महीसके। पुआरक नूरीसँ साफ करैत काल गोट-गोट अठौरी आकाश दैत िल। बेर पहर बौआ-चौिमे महीस चरबैत काल आसभेर भऽ सूता रहैत िल महीसक पीठपर।

लोक सभ हँसीमे कहतो रहए जे लेटरबम बौआ-चौि हाइ स्कूलसँ मैथ्क पास कएने अथि। महीसो लक्मी रहए ओकर। आन माल-जाल थांह लािबए तँ लेटरबमक महीस घास चरबामे लागल रहए। से साझमे घर-घुरैत काल जखन आन सभ गोटेक महीसक पेट पाजरमे िसल रहैत िल, लेटराक महीसक दुनू पेट दुनू थसन फूल कए लटक जाइत िल। थना पथमि पन्हाइत िलैक महीस।

लेटरा अपन माए-बापके तैयो पसन कए सकल की? ओ दुनू गोटे लेटराक गुजर कोना चलतैक, ओकरासँ थयाह के करतैक- एह बात सभके लऽ सोथाते रहैत िलाह।

गाममे बैतरणी नाटक आएल रहैक। कठपुतली सभ, मनुक्खक मरलाक बाद बैतरणी िर पार करबाक दृश्य, जे भयावहे-भयावह िल, खूब नीज जेका पदथाित करैत िलाह।

लेटरबम सेहो माए-बापक संग नाटक देख अएलाह। आ एतहसँ लेटराक जीवन एकटा थशा लए लेलक। लेटराक बाबूक पाि बैतरणी नाटक कम्पनीक मालक लाथा गेल। िरोह दऽ देलक, साझ-भोर ओकर घरपर पहुँचए लागल।

लेटरा अपन मलसबारीमे मगन रहैत िल। मुदा ओ अनुभव करए लागल जे आइ-काथि माए-बाप ओकरापर थकि बेशीए ममता राखए लागल िथि। सभ कहैत रहओ जे लेटराक जीवन कोना के चलतए, से की ओकर माए-बाबूपर आब कोनो असथ िािबक पितिए।

मुदा बैतरणी नाटक कम्पनीक मालक लेटराक बापक पाि पथि गेल। कहए लागल जे ओ तँ लेटराके नीक नोकरी थयबा रहल अथि। लेटरबमक बाबू सभसँ पुिथि जे की करी? सभ यैह कहैत रहह जे ओ लेटराके कीथा रहल अथि, नोकरी नि दऽ रहल अथि। ई नाटक कम्पनी सभ बणवीर सभके गामे-गाम तकने थकरैत अथि आ शहरी सकिस कम्पनी सभके बेथ दैत अथि। फेर एक बेर जे बेटा जएत तँ की घुथकऽ अएत? बेटा िनि ि, बाणवीरे सही!

अकश-थाकश करैत एक थन माए-बाप लेटरसँ पुिलह- “भगवानक इचि सवोपथ। भगवान पेट दइ िथिन्ह

तँ ओकरा पोसबाक जोगार सेहो करैत छथिन्ह। लोक सभ कहैत रहल जे लेटराक गुजर कोना चलतए तँ ककरो गपक हम मोजर नहि दैत छलियैक। मुदा ई बैतरणी नाटक कम्पनी बला तँ पाछूए पड़ि गेल अछि। लोकसभ कहए-ए जे ई सभ शहरी सर्कस कम्पनीक लेल बाणवीर सभक ताकमे गामे-गाम घुरैत अछि आ ओहि कम्पनी सभमे ओकरा सभके बेचि दैत अछि। मुदा ई कहए-ए जे से नहि छैक। सभ धनुका धनचजा छैक। शहरे-शहरे घुमैत अछि ई सभ। जखन कतहु सर्कस नहि लगैत छैक तँ छुट्टिओ भेटैत छैक। आर के नोकरी देत एतेक कम लम्बाइ बलाके? से हम अहीसँ पुछैत छी जे की कएल जाए"।

लेटराक तँ आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैक। गौआँ सभ ठीके कहैत रहए। माए-बाप तँ लागैए आत्महत्या कऽ लेने छथि।

"माए-बाबू। हमरा बुझल अछि जे हमर बियाह-दान नहि होएत। मुदा अपन पेट तँ कोहुना हम गाममे भरिये लैत छी। गुजर तँ कइए लैत छी। लोक सभ कहैत रहए जे तोहर माए-बाप तोरा बेचि देलकउ, से ठीके अछि की"?

आब तँ कनारोहट उठि गेल। माए-बापक संग लेटराक कानबसँ अँगनामे अनघोल मचि गेल।

जेना सुतला कऽ उठलाक बाद ढेर-रास गप महत्त्वपूर्ण कोणसँ उतरि कऽ अमहत्त्वपूर्ण वा ततेक महत्त्वपूर्ण नहि रहि जाइत अछि, तहिना धनि बितैत लेटरा सेहो अपन मोन मना लेलक। कनी देखियैक बाहरक दुनियाँ केहन होइत छैक। माए-बाप तँ बेचिए लेने छथि, ओतेक स्नेह रहितन्हि तँ बेचबे करितथि? तँ हमही किएक अभिभावक स्नेह राखी?

बैतरणी कम्पनीबला लेटराके एकटा सर्कस बला लग लऽ गेल।

ओतए ई लगैत रहए जे जेना सभ बाणवीरक नोकरीक ओतए जोगार होअए। दुनियाँक सभ बाणवीरक नोकरी ओकरा लग पका रहए। लेटरा जेना बाणवीरक देशमे पहुँचि गेल छल। मोटबिला, खिमोछि, पातर-मोट, नव-बूढ़- मुदा सभ छथि बाणवीर।

लेटरा ओकरा सभक बीच रहए लागल। किछु दिन धरि तँ ओकरा लगैत रहए जे ओ कोनो विशेष व्यक्ति अछि आ ते बेशी दुखी अछि आ दोसर बाणवीर सभ तँ अही योग्य अछि। मुदा आस्ते-आस्ते जखन संगी-साथी सभसँ ओकरा गप होमए लगलैक, तखन ओकरा बुझबामे अएलैक जे सभक एके खेरहा छैक।

फेर ओहि जेलरूपी घरमे हँसी-खुशीसँ, छिट-फीन झगड़ा-झाटी आ मान-मनौअलक संग ओ आगा बढ़ए लागल। अपन जिनगीक ई रूप ओकरा एहन सन लगैत छलैक जेना ओ नोकरिहारा होअए। ओहो घुरि जएत गाम आ फेर आपस अएत नोकरीपर। गामक दोसर नोकरिहारा सभके ओ देखैत छल। गाम अबैत काल जतबे उल्लसित रहैत छलाह, नोकरीपर घुरैत काल सभक घुघना लटकि जाइत छलन्हि।

छैर, माए-बाप हमरा बेचलक ठीके अछि। हमरा सन बाणवीरके एहिसँ नीक आर कोन नोकरी भेटतैक। सर्कसमे जखन हम कला देखबैत छी तँ बच्चा सभ कोना पेट पकड़ि हँसैत अछि, कतेक थपड़ी पड़ैत अछि। थपड़ीक अबाज तँ आसा आनि दैत अछि। काल्हि ओ दु जुटी बला बच्चाया, केहन लगैत रहए जेना अपने लोक रहए। गाममे बड़का ककाक बेटीक बियाह नौगछिया भेलन्हि तँ हुनको धिआ तँ लोक सभ उरन्ती उड़िने

ि ल जे बेटी बेच्थ लेलथ्रुह। कतेक दुरगर थ्रयाह करा देलथ्रुह!

ई लोको सभ, बुझु इनारक बेङ सभ ि ी। थ्रदल्ली-मुम्बइ घुमत गऽ तखन ने बुझबामे अओतैक जे भागलपुर-नौगथ्रछया कोनो ततेक दुरगर नथ्रह ि क। माए-बाप हमरा बेच्थ लेत?....आ ई सोच्थते लेटराक कंठ सुखा गेलैक आ आँथ्रख पथ्रनया गेलैक।

''रे भाइ, चल । तैयारी करबा लेल घण्टी बाजए बला ि क। ओथ्रहसँ पथ्रहने थ्रकि ु खा-पीथ्रब ली''।

तस्कर

१
शाि गाममे ि द होइत अि, कारी पाथर मात नमा मे भेटैत अि। जमसम गाममे सभ ठ ि बद ि अि, गामदेवताक ि हबार स्थानसँ ि ऽ कऽ सभ ठाम मुदा ठ ि ने ठ ि ि क क वस्तु देि ये रह ि ि। मुदा हमर गाथाक कोनो ि ि एतए नै अि।
गा ि आ बाध बोन सभटा पतरा गे ि अि। सए ब ि म ल ू आमक ओ गा ि। बीहल सभसँ भर ि। भाल-भालक ि ड़ै-ि निमुनी आ ि ट पैघ जीव-जन्तु। नेना रही। जेठसँ अगहन ि रि ा ि ती ि ग गप करैत हम आ मा ि ती। कल यो फागुन-ि तमे जाइ तँ ि वङ ि ताक ि ती ि ग गप करी। म ि कोका, कुमुद, भेट, कम ि गटा कन्द, रक्ताभ ल साढक ताकमे कादो-पालमे घुमैत हम आ ओ। ि ि पएर, काट-कूसक बी ि तड़पान-तड़ल कऽ कुदैत। आमक क ि ममे सतघलया ि ि इत। हम आ मा ि ती। करबीरसँ बेढैत अपन काला-घर। एकहरा, दोहारा, जटाधारीक बीआ भल सा ि जोगबैत मा ि ती। मा ि ती सेहो होएत हमरे बएसक। माए कहैत ि ि जे मा ि ती ि ह मासक जेठ ि ि हमरासँ मुदा लता कहैत ि ि जे ि ह मासक ि ट अि मा ि ती हमरासँ। आ लता से ल एक कहै ि ि ह से बादमे जा कऽ ने बुझ ऐ।
भल आमक मास आमक गा ि क लनुका ओगरबाहीक भार हमरे दुनू गोटेपर ि ि। मुदा साझ होएबासँ पल ने हमर मामा ब ि र आ मा ि तीक बाबू ि गनाथजी क ि म आल जाइत ि ि ह, रातक ओगरबाहीक ि ि। मुदा हमर सभक गाथाक कोनो ि ि एतए सेहो नै अि। हमर सभक माने केशव आ मा ि तीक।
मुदा ओल पकाक ि हबार स ि न ि ग कारी रंगक शाि गाम हम ताक रह ि ि। ि दयुक्त शाि गाम। एकटा नुका कऽ र ि ने ि ि हुँ एतै कतहु।
गँआ सभ धल ि ब ि ि कएने अि एल ि हबारक स्थानक मं ि प बनएबामे। पल ने तँ ठ ि ओ नल रहै। राजा जे बने ि क पो ि लक घाट आ तकर कातमे पकाक मल र सएह। मुदा बे ि रो पूजा कैयो नल सक ि ह। ि जिक दारे हमर एल गाममे आल यो नल सक ि ह।

२
हम केशव, गाम मंगर नी, नर ने सुल नी, पराशर गोत, कल मधुरापलक पुत।
मा ि ती- माण ि र ल ह ि मू ि क काश्यप गोती ि गनाथ झा, गाम जमसमक पुती मा ि ती।
ि गनाथजी आ हमर मामा ब ि र मे भजार ि ग ि। जमसममे हमर मामा गाम। मामागाम धल सु ि तगर, हम सभ तँ दल दे। से हम एक मास गरमी ताल ि आ पन्द्रह ल न दुगापूजासँ ि ल धल मामेगाममे रहैत रही। गरमी ताल ि मे सपेता पकबासँ ि ऽ कऽ क ि कलया आम पकबा धल गा ि ओगरी। आ दुगापूजामे ि ष ीसँ ि ऽ कऽ भसान धल दुगापूजा दे ि। फेर दीयाबातीमे कनसुपती जराबी आ ि लमे गाम घुल जाइ। आ बी ि -बी ि मे तँ जाइत रहबे करी।
मा ि ती संगे ि ब झगड़ा सेहो होइ ि ि। ि थामे रही पायः। गरमी ताल ि मे मामा गामक आमक गा ि गे ि रही। कोनो गपपर मा ि तीसँ र सा-फुल ि भऽ गे ि। धल ब स ि क मा ि तीये। आ ब सबो कोना के ि क।
-हम अहासँ घटी मानै ि ओल गपक ि ि।
-कोन गप।

-जइ गपपर अहासँ झगड़ा भेि।

आ ओ गप नञ्म हमरा मोन पड़ि आ ने मातिीके। मुदा फेर मातिीसँ कनहयो कोनो गपपर हम झगड़ा नञ्म केिहुँ। वएह मुँह फुिबिए तँ हमही पुिछऐ जे कोन गपपर मुँह फुिहुँ से तँ मोन नहयो हएत तिन अनेरे ने झगड़ा करै ि।

गरमी ताल्लिक बाद दुगापूजा आ दुगापूजाक िटीक बाद गरमी ताल्लिक बाट जोहै िगिहुँ। से कनहयासँ से की मोन अिछ ?

३

ल्लता गाममे बटाइ करथ्य। ल्लतीि स्कूिक बाद कोनो स्कूि नहये रहै आस-पड़ोसमे। संस्कृत पाठशाि सभ बने भऽ गेि रहै।

से ताल्लि बि कोनो बात आब रहबे नञ्म करए। भल सािबुझू काजे आल्क ताल्लि। नाना-नानी ल्लालते रहथ्य। माएक तीयन कराबए िि ल्कयो ने ल्कयो आल्बये जाइ िि। हमहुँ दू िल मासमे मामा गाम कोनो िथे भइये अबैत िहुँ।

गामपर कएक टा समस्या। नञ्म जाल्ल कोन भाज रहै जे पाल्लक रक्क गप ल्लताक मुँहे सुनैत रहैत िहुँ। आ से हमर ल्लबयाह मातिी संगे भेने टा सँ सम्भव, सेहो हुनका मुँहे उिरैत िल्हह।

मातिी हमर संगी मुदा एल्ह गप-शपसँ ओकर हमर दूरी बल्ढ जेका गेि। जे सहजता हमरा आ ओकरा मध्य िि से ितम होअए िगि। जेना ओकरा देिते हमर मोनमे पतीक िल नजल आबै िगि ि, तल्हना तँ ओकरो मोनमे ने अबैत होएतैक।

४

हमर गाम आएि रहथ्य बिर मामा।

मधुरापल्ल- ''बिर आब अहीक हाथमे हमर सभटा इज्जत अिछ। िगनाथक पुती केशवक िि सवथा उपयुक्त। सुन्दल सुशीि अिछ तँ केशव सेहो जबदस्त अिछ। एके बतारीक अिछ मुदा ल्कि ल्लनुका िटे अिछ मातिी। हे। अहाके तँ ई बुझि अिछ जे ७०० टाका िड़कीबिके दए हमर ल्लवाह करा हमर ल्लता पाल्ल बनाओि। मुदा आब जमीन जत्था नै अिछ। काल्ल घोड़ीके तीिम ल्लयाए ओल्हपर िल्ढ आएि िहि पञ्जीकार। साफे कल्ह देिल्हह जे मात िगनाथेक पुतीसँ अल्लकारमाि बनैत अिछ। आ से नै भेने पुबाल्लपार शोल्लायक शेिीसँ िित भऽ जाएब हम''।

बिर- ''हम पुिछ तीयल्हह िगनाथसँ। संगी तँ िथ्य मुदा हुनकर मोनमे की िल्हह से वएह ने कहताह''।

आ ने जाल्ल ल्कएक पेमसँ भल गेि ि हमर मोन। ल्लदा भऽ गेि रही हुनका संगे।

५

मातिी- ''केशव। तोहर कत दोसर ठाम ल्लबयाह भऽ जएतक तिन हमरासँ भेट कोना होएतक''।

केशव- ''आ तोहर ककरो दोसरासँ ल्लबयाह भऽ जएतक तँ एहन अनगिन पश सभ ककरासँ करमे''?

मा ती- “मुदा एकटा गप बुझ हीी। काल्ह तोहर मामा हमर त्पतासँ हम्मर-तोहर त्बयाहक ि रि ि कऽ रह ि ि ह”।
केशव- “त ि न”।
मा ती- “नत्म, सभटा तँ ठीके मुदा त ि ने दरभंगा राजाक दूत बत्ा एक गोटे आत्ब गेि ह आ कहए ि ग ि ह जे राजाक समाद अत्ी”।
केशव- “राजाक कोन समाद”।
मा ती- “त्कयेने गेत्ीऐ। मुदा हमर त्पताके ओ दूत कहि त्ह जे बेटीक त्बयाहक ि मत्क ि त्दन र त्क कऽ करबाक ि ”।
केशव- “तोहर सुन्दरताइ तँ ि हे तेहने। राजोक नजत्मे तोरा ि ि कोनो ि ड़का अभरि ि ै की”?
मा ती- “त्कयेने गेत्ीऐ”।
६
राजाक मन्त्रीक सवारी ि गनाथक दरबज्जापर! दुइये त्दनमे कीसँ की भऽ गेि । ओ दूत जा कऽ त्क ि कत्ह तँ नत्म अएि ै जे ि गनाथ अपन बेटीक त्बयाह ि ि धरफरायि ि त्थ। से सतकी देत्ी य। ि क सभ गदमगोि करैत। सभ स्वागतमे जुटि । आ हमहुँ सभ ि जिक जाएजा ि ै त रही। साझ होइत-होइत हमर त्पता सेहो आत्ब गेि ि ि ह। ओम्हर राजाक मन्त्रीक स्वारी गेि आ एम्हर हमर त्पता माथपर हाथ र ि ने गुम्म रत्ह गेि ह। ि गनाथ सेहो म न।
राजा अपन त्बयाह मा तीसँ करबाक पस्ताव ि गनाथ ि ग पठेने ि ि ह। महाराज बीरेशर त्संह। कहू तँ। अपने ि ि ीससँ उपरे होएत आ एत्ह तेरह-ि दह बरि क बत्ीयासँ त्बयाहक पस्ताव। ि गनाथक की ओकात्ा जे ओकरा मना कत्तत्थन्ह।
हमर त्पता त्ीत्ात जे आब पात्म नै बाि त।
ओत्ह त्दन साझमे कोनटा ि ग मा तीसँ हमर भेट भेि । करजनी सन-सन आँत्ि फुि ि , जेना हबोढकार भऽ कानि होअए। की सभ गप केि हुँ मोनो नत्म अत्ी। हँ आत्ि रीमे हम कहने धत्र रत्हऐ जे सभ ठीक भऽ जाएत।
७
जमसममे बीरेशर त्संह ि ि ि ड़की त्ाहुि ि गेि !
जमसम गाममे पोि त्ि ि ि नाओि गेि । ओतए मत्न्दर बनि जे राजा दोसराक मत्न्दरमे कोना पूजा करताह।
मुदा हमहुँ रही मधुरापत्ा कत्बक पुत केशव।
त्बयाहक त्दन ि ग ीि रहै आ दोसर कोनो त्दन सेहो नत्म रहै। आ ओत्ह त्दन मा तीसँ सभ गप भइये गेि ि ि ।
कटही गाड़ीमे आगूक ि प आ पा ि ूक उि ाड़, आगाक ि प नीक कारि पाि उि ाड़ भेि पर गाड़ी उनत्ट जाएत। मुदा हम ओत्हना गाड़ीके उि ाड़ केने बैँसत्बटी ि ग मा तीक इन्तजारीमे रही।
ओ आयत्ि आ गाड़ीपर बैत्स गेत्ि । जे त्कयो रस्तामे देि ए से ि रे नत्म टोकए जे गाड़ी ने उनत्ट जाइ एकर। एकटा पतरंगी त्ीड़ै देत्ि उत्ि त्सत होअए ि गत्ि मा ती तँ आँगुरसँ हम ओकर ठोढ बन कऽ देत्ीऐ।
मा तीके ि ऽ कऽ गाम आत्ब गेि हुँ, धोती रंगाइत ि । फेर जे मा तीक पता करबाक ि आएि रहए

तकरा पकल्ड रा ि ि। आ ’कन्यादान के करत’क अनघोि भेिपर ओकरा सोझा अनि हुँ जे कन्यादान यएह करबाओत।
सि मिशाही ि मिरउ जुता उताल धोती पहील हम ववाह ि ि वध सभ पू मिकेि हुँ। मा ि तीक सीथमे सानुर हमरे हाथसँ देब िती ि ि जे रहै।

८

तकर बाद राजा बीरेशवर सांह की करताह?
पञीकारके बजा कऽ हमर नाममे तस्कर उपाल्प ि गबाओि। मुदा मधुरापता अपन पुतक पता गवोनत। बाघक बेटा बाघ। पाल्प आ पाला अधोगामी मुदा ि गनाथ झा- शीकान्त झा पाल्प, तस्कर केशवक शोलाय ओल्हठाम ववाह कएि पिर शोलाय शेि ी वराजमान रहतलाह।
आ सए ब ि षक बाद आइ एल्ह गाममे कोनो नाटक होएतैक। सुल्ताना ि कू।
आ हम तस्कर केशव, मंगर नी नर ने सुल नी- पराशर गोत, कल्व मधुरापताक पुत अपन गाथाक कोनो एकटा ि कि एतए जमसम गाममे ताल्क रहि ि ी। मुदा राजा बीरेशर सांहक वएह पोि ल आ आब ढनमनाएि मलि ि देि ि ी, बेि िरो घुल कऽ ि जे एल्ह गाममे एबो नै केि ह।
यएह पोि ल आ ढनमनाएि मलाद्दर हमर पेमक अति अवशेष।

<u>धवाद महावीर</u>

१

बान्हक कातमे अनमना दीदीक घर।

घर नै झोपड़ी कहू। गामक मोटामोटी सभ अँगनामे एकटा एहि विाक घर रहैत छै। मुदा जखने परिवार पैघ होइत अछि तँ क्यो अपन घरक मुँह घुमा लैत अछि तँ क्यो बेढ़ बना दैत अछि। आ कखनो काल ओहन राति-मसोमातक घरक संपति परिवर्तित भऽ जाइत अछि, आ से तेहने सन अछि अहि लि अनमना दीदीक घरक।

मुदा अनमना दीदीक घर बान्हक कातमे छन्हि। सोझाक मजकोनहिया टोलक छथि मुदा घुसकि कऽ हमर घर लग आबि गेल छथि।समङगर लोक सभ। आस-पड़ोसिक धी-बेटी बहिनमे, दुपहरियामे जाइत छथि। ढील-लीख बिछबाक लेल। ककर ओ लगक छथि, से मरलाक बाद पता चलत। किदक समए जे लगक अछि से आबि देत आ तकरा घरारी भेटतैक। मुदा सेहो सम्भावना आब नै। झंझारपुरमे सासुर छलन्हि अनमना दीदीक। ओतए अपन बहिनक बेटाके अपन बेटा बना राखि लेने छथि। मुदा नैहरक मोह नै छूटल छन्हि।

खोपड़ीमे अबैत छथि। मासमे एक बेर तँ अवश्ये। अपनेसँ खेनाइ-बनाइ, भानस-भात। मुदा झंझारपुरमे बेस पैघ घर, आँगन। बेटा-पुतोहुके कहियो मुदा एतए नै आनलन्हि।

सौँसे गाम एहि विाके दीदी कहैत अछि जे ओ नैहरमे रहैत छथि। आ फलना गाम बाली काकी जे ओ सासुरमे रहैत छथि।

से सौँसे गाम हुनका अनमना दीदी कहैत छलन्हि।

खोपड़ीक कातमे एकटा भगवानक मन्दिर बनेने छथि। महावीर बजरंगबलीक। शुरुहेसँ ई कोठाक रहै से नै, मुदा बना देलन्हि ओकरा कोठाक। अन-पानि बेचि कऽ। पहिने तँ खोपड़िये रहै। जहिया अनमना दीदी झंझारपुर जाइत रहथि, अपन खोपड़ीक फकिी कारका कऽ जाइत रहथि। बादमे ताला आ बाकसँ बन सेहो करए लागल रहथि। मुदा बजरंगबलीक मन्दिर ओहिना खुजल रहैत छलै। लोक सभक लेल..चौपहर। धी-बेटी गामक, साफ-सफाई, झाड़ू-बहार करैत रहथि। पकाक मुदा बादमे भेल, छत ढलाइ आर बादमे। खटुआ रहए पहिने। जमीनक प्लास्टर करबए चाहैत रहथि, मुदा एस्टीमेट बेशी भऽ गेलन्हि। भगवानक घर चुबैत रहत? मुदा ढलाई आ प्लास्टर लेल पाइ कतएसँ आओत?

आइ हमरा लगैए जे हम सभ खूब मेहनति करैत छी। ककरोसँ सरोकार नै अछि। ओह, समैए नै भेटैत अछि। मुदा अनमाना दीदीक दिनचर्या, भोरसँ साझ भगवान लेल समर्पित। मुदा पोसपुि लेल सेहो समए बाकालैत छथि। बीच-बीचमे झंझारपुर बजार लग बसति अपन गाम जाइत छथि। ओतुको व्योत लगबैत छथि। फेर गाम अबैत छथि..नैहर। देखू..गीता पढ़ि बसतिपज बनबाक अहाक पयास। मुदा अनमना दीदी। गोर लगै छी दीदी। बाकेना रहू। नहिये खुशी, नहिये कोनो दुखे। ने कोनो आवभगतक लालसा आ ने कोनो तरहक सहयोग पाबएक आकाक्षा।

जोन ताकै लेल जाइत छथि निुकटोली, दुसटोली। ओतुका लोक इज्जति दैत छन्हि, कोन हुनकर घरारी लेबाक छन्हि हुनका सभके। ओतए हँसैतो देखै छथियन्हि। अपन टोलक लोकसँ हटे कोनो काज लेल कहैतो नै छथि। एकटा काज करत आ कथायाके जा कऽ कहत। आ फेर दस साल धरि ओकर कथाया सुनबैत रहत।

-दीदी, हनुमान जीक काज छै, सकिक कातमे छथि। हमहूँ सभ तँ जाइत-अबैत माथ झुका कऽ पुजबे करबन्हि। से अहाँनु बोझ लेने हम ई काज करब।

- नै यौ तीिबितआि भगवानक काज मँगनीमे नै करबाक-करेबाक चाही। हम कोनो रानी-महरानी िी जे बेगारी खटा कऽ मन्दिर बनबाएब आ पोखरि खुनाएब।
मुदा ढलैय्या आ प्लास्टर!

२

सिकक कातक भगवानक एहि मन्दिरक सटल एक बीघा खेत, सभटा अनमना दीदीक। ढलैय्या भऽ गेलाक बाद भगवानक नामसँ रजिस्ट्री देतीह। जे अन-पानि होएतैक ओहिसँ भगवानक घरक चून-पोचारा आ सफाई होइत रहत।
कतेक दिनसँ पिसी पिि िने िअछि।
"दीदी। तोहर सभसँ लगक भातिज हमही छीयौ। ई जमीन हमर घरसँ सटल अछि। पहिलुका लोक बान्ह-सिकक कातमे िट जाथि आ मसोमातके घर बना दैत रहै। मुदा आब जमाना बदलि गेल ि।आब तँ सिकक कातक घर आ जमीनक मोल बढ़ि गेल ि। तूँ आइ ने काल्हि मरि जएमे। तखन ई जमीन हमरा सभ पटीदार लेल झगिक कारण बनत। "
तूँ आइ ने काल्हि मरि जएमे- कहि कऽ देखिययौक कोनो सिवाके। मुदा मसोमातसँ कहि सकै छीऐ- भने ओकर पोसपुि- पुतोहु- नैत-नातिन होइ। ठीक ि बाबू।
"भगवानक लेल संहुिल अछि ई जमीन। अहीसँ तँ हमर गुजर चलैए। जे रिकिु पेट काटि कऽ बचबैत िी से कोसिल्या- भगवानक घरक ढलैया आ प्लास्टर लेल। झंझारपुरक जमीन-जालक पाइ सभ बेटा पुतोहुक िअछि। से हम कोना.. "
"फेर दीदी। तूँ गप बुझबे नै कएले। जा जीबै ि राख ने। कर ने गुजर। हम तँ कहै छीयौ जे तोरा मरलाक बाद जे पटीदार सभ आपसमे लिि से तोरा नीक लगतौ। आ हम तोहर सभसँ आपन भातिज...।"
देखियौ, कहै ि जे। भातिज बाहरमे नोकरी करै िछि। जे गाममे रहैए से तँ भेट करएमे संकोच करैए जे रिकिु देमए नै पिए। ई मुदा जहिया गाममे अबैए आ हम गाममे रहै िी तँ भेट करबाक लेल अबिते अछि। आ एहि बेर तँ हम झंझारपुरमे रही तँ ओतहु आएल रहए। सैह तँ कहलिऐ जे ई कोना कऽ फुरेलै। से आब बुझलिऐ। मुदा ई ढलैय्या कोना कऽ होएत। प्लास्टर तँ बादोमे करबा देबै। ततेक चुबैए, एहि साल तँ आरो बेशी चुबए लागल अछि। खिटुआ ित, दुइयो साल नै चलल। ओकरा ओदारि कऽ ढ़लैय्या करत करीम मिया आ लिमी मिसि्ी, तखने ठीक होएत। देखै िी।
भातिजक आबाजाही बढ़ि गेल अछि आइ-काल्हि।
"ठीक ि दीदी, अदहे जमीन दऽ दिअ। दस कटामे अहाक भातिजक बसोबासक संग भगवानक लेल सेहो जमीन बचि जाएत।"
"मुदा बान्हपर अहाक घरारीक लाथि तँ नहिये होएत। तखन की फएदा होएत अहाके।"
"ििू ने। एखनो तँ टोल दऽ कऽ अबिते ने िी। चौक-चौबट्टिया आ बान्हक कातमे घर बनेबाक तँ आब ने चलन भेल अछि। आ आब चौबट्टिया आ बान्हक कातमे तँ भगवानेक घर ने शोभतअछि। दस कटाक दस हजार जहिया कहब हम दऽ देब। रजिस्टी बादेमे बर होएत।"

“ठीक छै। तखन हम सोचि कऽ कहब। एक बेर बेटा पुतोहुसँ पूछि लैत छी।”
कोन उपाए। भगवानक घरक देबाल सभमे कजरी लागि गेल अछि। देबाल छोड़ि, बजरंगबलीक मूर्तियोमे सेहो कजरी लागि गेल अछि। अनमना दीदी सोचैते रहि गेलथि। आ सोचैते-सोचैते भोर भऽ गेलन्हि।
दऽ दै छथिऐ जमीन। आर उपाय की। नहि।
बेटा-पुतोहु कहलखिन्ह जे माए। ओतुका जमीन तँ भगवानक छन्हि। आ हम सभ से शुरहे सँ बुझै छी। मुदा देखब। ओ कोनो चाहि तँ नै चलि रहल अछि।
“कोन चाहि। पाइ तँ थोड़े बेशीए दऽ रहल अछि।”
भगवानक मन्दिरक लेल, दस कटा कम छिबिकेक होइ छै। पाइ जुटबैत-जुटबैत मरि गेलहुँ। ई अखिर मन्दिर ओहिने रहि जाएत ? गप करै छी लछिमी भाइसँ आ करीम भाइआँ सँ।
दस हजारमे ढलैय्या, प्लास्टरक संग चहरदिवारी सेहो बनि जाएत। एस्टीमेट बनि गेल। रजिस्टरीक अगिलेदिनसँ काज आरम्भ। आ भादवक पहिने समापन।

३
चलू रजिस्टरी भऽ गेल। दासजी कागज-पतरमे बरड माहिर लोक। पुबिाक काज छै! - छिर। पछिकया कागज बनल हएत।
“भगवानक लेल कागज बनेबाक पहिल अवसर भेटल अछि दीदी”- दासजीक गपसँ अनमना दीदी दासोदास भऽ गेलीह।
लोक कहै छै झुटे जे लोकक छिदा भगवानपर सँ कम भेल जाइ छै। ई दासजी। कहियो ने भेट आ ने जान पहिचान। दू टा रजिस्टरीक कागत- एकटा दसकट्ठिया भाइजाजक नाम आ दोसर भगवानक नाम, मुदा एके फीसमे बना रहल छथि। साफे कहि देलखिन्ह- दीदी भगवानक जमीनक रजिस्टरीक पाइ हम एकदमे नै लेब। जे बेर-बखतपर काज आबए सैह ने अप्पन लोक। ठीके बूढ़-पुरान कहि गेल छथि। यैह सभ देखि कऽ ने कहने छथि।
अनमना दीदी बाइमे छथि। पएरे गाम अएलीह।सोहमे थोड़े नै फुराइत छन्हि। मन्दिरके अजबार, काल्हि सँ काजक आरम्भ अछि। लछिमी भाइसँ अपन तेगारी, डोरी, करणी सभ राखि गेल अछि। डब्बुक सभ पानि भरबाक लेल अनमना दीदी जोगा कऽ राखने छथि। पोखरि बगलेमे अछि। लीढ़सँ भरल, मुदा कातमे महीस सभके पानि थएबाक लेल लोक सभ कनेक साफ कइए देने अछि।
मुदा भोरेमे घोल-फुचुका। करीम भाइआँके काज करबासँ रोकि देल गेल। के रोकलक? भाइजाजके खबरि भेटौक। मुदा ओ तँ काल्हि झंझारपुरसँ सोझे नोकरीपर चलि गेलाह। रजिस्टरीक कागत ओना तँ अनमाना दीदी लग सेहो छन्हि। भाइजाजक सार रोकने अछि काज। चहारदिवारी नै बनबए देत। मुदा काल्हि रजिस्टरी काल तँ रहए ईहो। तखन? कहैत अछि जे बान्हक कातबला जमीन मेहमानक छियन्हि, एँ यौ। तखन तँ ई मन्दिरो ओकरे हिस्सामे भऽ गेलै। कोनो बुझबामे गलती तँ नै कऽ रहल अछि। भाइजाज मासक शुरहेमे जा कऽ तँ अओताह, दरमाहा लैए कऽ ने। मास भरि अनमाना दीदी गाम आ झंझारपुर करैत रहलीह। बेटा पुतोहु कहन्हि जे ई भाइजाजेक चालि तँ नै अछि। नहि, से नै कहू। दासजी तँ नीक लोक रहए। देखू।
४

“दीदी। अहाके कोनो िखा भऽ रहल अिछ।”
“तखन तँ ई मिन्दरो अहीक भेल ने।”
“निह दीदी। ई मिन्दर तँ भगवानक छियिन्ह। हुनके रहतिन्ह। आ पािक जमीनक मािलकक सेहो भगवाने।”
“आ तखन तँ हमर ई खोपिड़ सेहो अहीक भेल ने।”
“निह दीदी। अहा जखनया िछ जीब तखनया िछ रहू। के मना करत? ”
“बौआ बरड उपकार अहाक। आ पाि छिसका जमीनक लाथा तँ निह बान्ह छिससँ अिछ आ निहये टोल छिससँ।”
“दीदी। अहा हमरा जमीन बाटे जाऊ ने के मना करत? आ आरिपर बाटे खेतमे सभ जाइते अिछ। जकर खेत बान्हक कातमे नै ि से की अपन खेतपर नै जा सकैए। अहा तँ नबका लोकक आन-आनाउज बला गप कऽ रहल ि।”
“मुदा ई सभ अहा पिहने कहा कहने रही।”
“दीदी, अहाके सभटा कहने रही। मुदा लगैत अिछ जे अहाके िखा भऽ रहल अिछ। नै िवशास होइए तँ दासजीके बजा दैत ि। ओ तँ तेहल्ला अिछ।”
“अच्ि तँ ओहो िमलल अिछ।”
“दू रिजस्टीक कागत बना कऽ बेचारा एक रिजस्टीक पाइ लेलक आ अहा कि रहल ि जे िमलल अिछ।”-भािगजक स्वर तीवसभऽ गेलिन्ह। हाफए लगलाह आ जोर-जोरसँ बजैत बिदा भऽ गेलाह।

५

अनमाना दीदीक लेल नैहरक ई भोर सासुरक ओिह भोर जेका रहिन्ह जािह िदन ओ िधवा भेल रहिथ। आइ गामक ि-बेटी ढ़ील-लीख छिबा लेल नै अएलीह। अनमाना दीदीक रािता भिरक वातालाप- बजरंग बलीक संग। एखने एिह भोरमे खतम भेल अिछ। लोक सभ अँगनामे बच्चाके ठोकि कऽ सुता रहल रहए। भोरमे कि गोटे आिब पंचैती करेबाक सुझाव दए गेलिन्ह। मुदा अनमाना दीदीक रोष तँ बजरंगबलीसँ िलिन्ह।
“भगवानक जमीन अदहा बेिच कऽ भगवानक घर बनिबतहुँ, मुदा मिन्दरक सटल जमीन रिजस्टी करा लेलक आ जे जमीन बचल ओिहसँ मिन्दरक लाथाये नै रहल। लाथा तँ िि ओिह पर जएबाक रस्तो बन कऽ देलक। आ ई बजरंगबली। महावीर। कोन शिक्त िक एकरामे ? चालीस साल पेट कािट कऽ हुनका खोपिड़सँ पकाक घरमे अनलहुँ। ढलैय्या भऽ जइतए, चहरिदवारी बिन जइतए सैह टा मनोरि रहए, आ सेहो हुनके लेल। हा...”

६

एिह भोरमे भािगजक दािवपर ठाढ़ अनमाना दीदी। लोक सभक मोने जे आब आर बाझत झगि। मुदा ई की भऽ रहल अिछ। लिभयाक भाए िवकशा अनलक अिछ। अनमाना दीदी भािगजक संग झंझारपुर जा रहल िथि। के कहलक? हुनकासँ तँ ककरो गपो नै भेल रहै। हम कहनिहयो रिहयिन्ह पंचैती कराऊ, मुदा मना जेका कऽ देने रहथि। अच्ि, लिमीक भाए कहलक। हँ, िवकशा बजबै लेल जे गेल रहए, से कहने हएत जे झंझारपुर जेबाक अिछ।
दासजीके एकटा आर रिजस्टीक कागत बनबए पिलिन्ह। अनमाना दीदीके देिख ओ सदिभऽ गेल रहथि जे

जाथ्रा नै बूढ़ी की सभ सुनओथिन्ह। मुदा अनमाना दीदी ततेक ने तामसमे ि लीह जे थ्रक ि नै बजलीह। तामस पीथ्र गेलीह। ओहो पा ि बला जमीन भाथ्राजके रथ्रास्टी कऽ देलथ्रह। आ झंझारपुर-स्टेशनसँ घुथ्र कऽ झंझारपुर बजार थ्रस बेटा पुतोहु लग पएरे थ्रदा भेलीह।
ल िमीक भाए घुथ्र आएल। दू सवारीके लऽ गेल रहए मुदा मा ि एक सवारी लऽ कऽ घुथ्र आएल। संगमे संदेश लेने गेल। ल िमी थ्रसि ी आ करीम थ्रआँ लेल संदेश। कािथ्र भोरेसँ काज आरम्भ। फेरसँ?
७
चहरदेबाली बनल। भगवानक मथ्रदर आ अनमाना दीदीक घरके बाथ्र कऽ। कथ्र देने थ्रियथ्रह दीदी के। हुनका थ्रबैत क्यो ि ितथ्रह नै हुनकर घर।
घर आथ्रक खोपि ी, एक साल कनेक टूटल। दोसर भदबथ्रयामे खुटा सथ्र कऽ खथ्रा प िल। मुदा अनमाना दीदी नै अएलीह। समाद देने रहथ्रह नैहरक एक गोटे। ढलैया नथ्रये भेलथ्रह बजरंगबलीक। अनमना दीदी हथ्रदारसँ घुथ्र अएलीह। लोक पु िलकथ्रह- की मागलहुँ गंगा माएसँ।
“यएह जे अं िथ्रशास हमरा मोनसँ हटा थ्रअ”।
“आ की देथ्रयथ्रह गंगा माएके ?”
“अपन तामस दऽ देथ्रयथ्रह”।
अनमाना दीदी यएह कहथ्रि- की करबथ्रह। कोनो शथ्रतये नै ि थ्रह बजरंगबलीमे। खसए थ्रयौक खोपि ी। सोगर लागल घर कतेक थ्रन काज देत।

८
कैक बरख बीतल। कैक बरख नै पाचमे साल तँ। भाथ्राज गामपर आएल रहथ्रि। दरमाहा उठा कऽ। पोखथ्र थ्रससँ चपाकलपर। लोटा लेने बैसलाह आथ्रक ितीमे दद िउठलथ्रह। नै बथ्र सकलाह। लोक सभ कहए, देखू अनमाना दीदीक ि प, बड्ड कानल रहथ्रि दीदी ओथ्र थ्रन। ओथ्रसँ पथ्रने बजरंगबलीक मूथ्रि ठीके शथ्रत नै रहए। मुदा हृदयसँ देल ि प लागै ि। ओही थ्रन जागृत भऽ गेल रहथ्रि बजरंगबली। आ आइ शथ्रत देखा देलथ्रन्ह।
मुदा समथ्रयाके अनमाना दीदी कहलथ्रन्ह जे पा िरोमे जान होइ ि। हट िअटैक भेल होएतैक। परसू एतथ्र एकटा मारवा िीके अटैक भेल रहै। थ्रन्ता-थ्रफथ्रकरसँ होइत िक एकर अटैक। एतए डाकडर सभ रहै, मारवा ि बाथ्र गेल। गाममे देरी भेने जान नै बचै ि। ते ने हमहूँ एथ्र बुढ़ारीमे बेटे पुतोहु लग झंझारपुरमे रथ्र रहल ि ी।
९
गाम अथ्रि मथ्रसबार बाह णक गाम। सुखराथ्रक थ्रन हू ि-हू िक खेल जे एथ्र मथ्रसबा ि बाह ण सभक देखलहुँ तँ पोलोक खेलमे कोनो रथ्र नै रहल। सथ्रयाक डोमसँ कीनल सुलारके भाग थ्रआए मातल महीस दारा हू ि लेब।
चरबाह जे महीसक पहुलाठ पकथ्रि कलाकारीसँ बैसल ि ल सेहो अदुते। डोमक काज पाबथ्रा-थ्राहारमे तँ होइते अथ्रि। पेटार बनेबासँ सूप, बीअथ्रा सभ थ्रक ि बनेबामे डोमक काज आ पाहुन परख लेल आ बथ्रयाती लेल जे खस्सी काटल जाएत ताथ्र लेल थ्रआँटोलीक काज। खस्सीक मू ि दुगापूजाक बथ्रमे कथ्राटी लऽ लैत अथ्रि।

ि‍र कतए भाग‍‍ गेलहुँ।

से भ‍आँ जे खस्सी काटैत अिछ से हलाल कऽ कऽ। गरदिन अदहा लटकले रहैत ि‍, मुदा माउस बना-सोना कऽ गरदिन लऽ जाइये आ खलरा सेहो। तखन मन्िदसबार बाहणमे सँ जे हनुमानजी मन्िदरपर भजन आ अष्‍टजाम करैत िछि से ओही खलरासँ बनल ढोलक बजबैत िछि। आ से कीतिन भइयो रहल िल।

महाबाद महावीरजीक मन्िदरक आगा। रामनवमी ध्वजन गािल बिका ि‍जा। टनटनाइत घिघण्‍ट आगाक आर बािक ि‍। हनुमानजीक ि‍जा फहरा रहल अिछ। साझक काल। मन्िदसबार सभक आगम भऽ गेल अिछ। कोनो पाबिन हुअए, हूिहूि आगाक रामनवमी बाद हनुमानजीक आगा कीतिन होइते अिछ। से बाबू गाँआक िदाक गप िछऐ। से आइयो भऽ रहल अिछ।

घूरक ि‍ँआ माल बिठौरीके मालक देहसँ अलग करबाक पयासमे अिछ। एक गोटेक संग दोसर गोटे अएल िछि, सपात खएबाक लेल। हनुमानजीक मन्िदर गाँआ सभ प्लास्टर करबा देने िछि। ढलैया सेहो भऽ गेल अिछ। मन्िदरक बरण्डा ि‍ूबि कऽ ऋण पचेनहारक संख्या नगण्य, तैयो एकटा अपवाद तँ अिछिये- ओ कहै िछि- सपात तँ तोिबा लेल खाएल जाइ ि‍। हँ भाइ, एक बेर सपात खेने जे ऋणसँ मुक्त भेल जाए तँ हजे कोन। मुदा एकेटा अपवाद। अनमाना दीदीके आब सभ अनमाना बाबा सेहो कहैत िछिह। कएक बरख भेल मुइना हुनकर। घुिम कऽ नहि‍ये अएलीह। भाग्िजक घरारीक दोष िनवारणािकोनो पंिडतक कहलापर खुटापर एकटा गाए बािन्ह देल गेल ि‍, जकरा एनहार-गेनहार सिदखन घास खाइत देखैत िछि, तिहसँ घरारीके नजिर-गुजिर नै लगतैक।

हनुमानजीक ि‍जा फहरा रहल अिछ। साझक काल। गोनर भाए कीतिनमे ढोलकक िपपर िप लगा रहल िछि।

अनमाना बाबाक गप आब बािक ि‍ लोको सभ मानलक। ठीके। हनुमानजीक मूर्ितक आगा भक्त दूटा गोल बिन गेल अिछ। एक गोलक िवचार कनेक वैजािनक ि‍क- अनमाना दीदी जे बाचल दस कटाक रिजस्टी कऽ देलिथन्ह सएह ने पैसा देलकै बान्ता-फक्कर भाग्िजक िितीमे। नै सम्हािर सकल अनमाना दीदीक ई आकमण ओ। ठीके पािरमे कोनो शक्ति ििबेक होइ ि‍। मुदा दोसर गोल महावीर हनुमानजीक बाद आ जागृत होएबामे िवशास कऽ रहल अिछ- यौ, चुटीके मािर दऽ िदयौ तँ ओहो मिर जाएत मुदा बिकुिर कऽ जे काटत से िित नै। आ ई मािर अनमना दीदी महावीरजी के देलिथन्ह तँ ओ कोना िछि बतिथन्ह।

गोनर भाए कीतिनमे ढोलकपर िपपर िप लगा रहल िछि, बुझू बाद महाबीरजीके मनाइये कऽ िितािह, भागक गोला असिर कऽ रहल िछिह, आँिख तँ चढ़ले िछिह, हािसेहो रकै कऽ नाम नै लऽ रहल िछिह, आ हुनकर नजिरसँ देखी तँ बाद महावीरक पािरक मुरत जागृत भऽ गेल देखा पिते, जेना ओिहमे जान आिब गेल हो!

शब्दशास्त्रम्

आंह राशामे सूर्य मोटा-मोटी सोलह अगस्त सँ सोलह सतम्बर िथ। र्क ि सुखेबाक होअए तँ सभसँ कि रौद। आंह राशामे मतूक थताक तालपि सभ पसरल रहैत िल, वाथक िप्वरकण योजना, जे एख तालपि सभमे जान फुकैत िल। आनन्दा मतूक थताजीक एख तालपि सभक प्वरकण मनोयोगसँ करैत रहथि। कि गिर रौदमे तालपि पसारैत आनन्दा, मतूके ओझना मोन िश्ह। मतू संग थानगी बीश गेलश्ह आनन्दाक। मुदा एख बरखक आंहराशा अएलासँ पूवहि आनन्दा चश गेलीह... आ आब जखन ओ नै िथि तखन जीवनक प्वरकण कोना होएत। मतूक आ ओख तालपि सभक जीवनक..
भम। शब्दक भम। शब्दक अ िहिम सभ गढ़ लैत ि ी। आ फेर भम शुर  भऽ जाइत अथि।

लुकेसरी अँगना चानन घन गथिया
तख तर कोइली घऽमचान हे
कटबै चनन गाि, बेढ़बै अँगनमा
िथ्र जेतऽ कोइली घऽमचान हे
कानऽ लगली खीजऽ लागल, बोन के कोइश्या
टूथ्र गेलऽ कोइली घऽमचान हे
जानू कानू जानू की, जोबोन के कोइश्या
अख जेतऽ कोइली घऽमचान हे
जख बोन जेबऽ कोइली
रख जेत तऽ आशनमा
जनू झर  नयना से लोर हे
सोने से मेढ़ायेब कोइली तोरो दुनू पँथया
र पे से मेरायेब दुनू ठोर हे
जाहे बोन जेबऽ कोइली र नझुनु बालम
रख जेतऽ रकतमाला के आशान हे

कोनो युवतीक अबाज चमकिार टोलसँ अबैत बुझना गेल..आनन्दाक अबाज।
मुदा आनन्दा तँ चश गेली, कश्ये काल पख्ने ओकर लहाश देख आएल िथि बचलू। मतूके समाचार कख डोमासी घुश गेल िथि। आ आनन्दा, ओ तँ बूढ़ भऽ मरलीहे। तखन ई अबाज, युवती आनन्दाक। भम। शब्दक भम। कहैत रहथि मतूक थता िकर मीमासक मारते रास गप शब्दशास म् पर। शब्दक अ िहिम सभ गढ़ लैत ि ी। आ फेर भम शुर  भऽ जाइत अथि।

|

शब्दशास्त्रम्

गदमि गोल भेल छलि।

अनघोल मचि गेल छलै। बलान धारिमे कोनो लहाश बहल चलि जा रहल छलि। भिन्नयाघाट लग कात लागल छलि।

कतेक दूरसँ आएल छलि से नै जानि। कोनो बएसगर मनुखलाक लहाश छलि। भिन्न लहाशके चीन्हि गेल रहथि। गौआँके कहि दै छथि ओकर नाम आ पता। गौआँ के, ओहि गामक डोमासीक बचलूके। मृतकक घरमे खबरि भऽ गेल छलै। एसकरे एकटा बुढ़ा रहैए ओहि घरमे...भातू।

भातूक टोलबैया गौँआ सभ लहाशके डीहपर आनि लेने छलि आ फेर भातू ओकर दाह-संस्कार कऽ देने रहथि। गाममे अही गपक चचा रहै। बचलू बुढ़ाके बुझल छन्हि कतेक आर गप। जानै छथि ओ ओहि लहाशक मनुक्खके। नवका लोकके बहुत रास गप नै बुझल छै।

आनन्दाक लहाश..

-आनन्दा बरड नीक रहै। बुझनुक। ओकर बाबाया सभ सभटा सुखवतगर घरमे छै..बेटा सेहो खदान। भातू, आनन्दाक वर सेहो उदट..छीकर मीमासकक पुछि..। मुदा कहियो भातू आकि आनन्दा कोनो खगतामे ककरो आगा हाथ नै पसारने छथि।

बचलू सेहो आब बूढ़ भऽ गेल छथि, झुनकुट बूढ़। झुनकासँ पैघ माथि भातू छथिन्ह। लोक सभ दुनू गोटेके बुढ़ा कहि बजबै छन्हि।

आ एहि बचलू बुढ़ाके बुझल छन्हि ढेर रास गप।

.....

भातू आ छीकरक वातालाप। किछु बुझाएै आ किछु नै।

-भातू। भामतीमे वाचस्पति कहै छथि जे अथदा जीवपर आश्रित अछि आ विषय बनि गेल अछि। आत्मसाक्षात्कार लेल कोन विधि स्वीकार करब? असत्य कहिक कारण कोना भऽ सकत? कोनो बौस्तुक सता ओकरा सत्य कोना बना देत, त्रिकालमे ओकर उपस्थिति कोना बाद कऽ सकत? जे बौस्तु नै तँ सत्य अछि आ नहिये असत्य आ नै अछि एहि दुनूक युत्मार प; सैह अछि अनिवाच्य। बिना कोनो वस्तु आ ओकर जान रखनिहारक शून्यक अवधारिणा कोना बूझऽमे आओत?

-भातू। कुमारिल कहै छथि आत्मा चैतन्य जकि अछि, जागलमे बोधि आ सूतलमे बोधिरहित।

-भातू। भामतीमे वाचस्पति कहै छथि जे आत्मसाक्षात्कारसँ रहित शास्त्रमे कुशल व्यक्ति सर-समाजसँ पशुवत व्यवहार करैत छथि, लाठी लैत अबैत व्यक्तिके देखि भागि जाइ छथि, घास लैत अबैत व्यक्तिके देखि लग जाइत छथि। माने डरसँ घबड़ाइ छथि।

“आत्मसाक्षात्कारसँ रहित शास्त्रमे कुशल व्यक्ति सर-समाजसँ पशुवत व्यवहार करैत छथि, लाठी लैत अबैत व्यक्तिके देखि भागि जाइ छथि, घास लैत अबैत व्यक्तिके देखि लग जाइत छथि। माने डरसँ घबड़ाइ छथि।”

ई गप मुदा सब्बया कऽ बूझबामे आएल रहए हमरा।

....

आमक मास रहै।
बानर आ बनगदहा खेत सभके ि गिने अछि आ पारा बारीके।
"सभटा नाश कऽ देलकै बचलू। राक्षसमे तँ नहि सुझै छै। भोरे-भोर कलम जा कऽ देखै छी। बनगदहा सभटा फसिल खा लेलक आब ई बानर आमक पाछा लागल अछि।"
हमरा बुझल अछि जे आमक मासमे बानर आ बनगदहा ओहिना बरख एके संग आएल छलै।
आमेक मास रहै। से भातू ओगरबाहीमे लागत आब। आमक टिकुला पैघ भऽ रहल छै। मचान बान्हबाक रहै भातूके। हमहूँ संगमे रहबै। बास काटि कऽ अबैत रही।
डबरा कात दऽ कऽ अबि रहल छलहुँ। भोरहरबा छल। अकास मध्य लाल रेख कनेक थराँछि भेल बुझना गेल छल।
-लीख दऽ कऽ चलू बचलू।
खेतक बीचमे लीख देने आगा बढ़ऽ लागलहुँ।
तखने हम शोणित देखलहुँ। हमर देह शोणित देखि सदभिऽ गेल।
मुदा आश्वास भेलहुँ। बासक तीक्ष्ण पात एकटा बाच्चाकाक हाथ आ मुँहके नोचि देत गेल रहै। भातूक बासक नोचि ओकरा लागल रहै।
भातू हाथिसँ बास फेकि कऽ ओहि बाच्चाका लग चलि गेल छल।
नोराएल आँखिक ओहि बाच्चाकाक शोणित पोछि भातू ओकर नोछिरपर माटि रगड़ि देने रहै।
-की कऽ रहल छी।
-शोणित बन भऽ जाएत।
बाच्चाका लीखपर आगा दौड़ि गेल छलीह।
-की नाम छी अहाक।
-आनन्दा।
-कोन गामक छी।
-अही गामक।
-अही गामक?
हम दुनू गोटे संगे बाजल रही।
हँ, आनन्दा नाम रहै ओकर। आ भातूक पहिल भेट वैह रहै।
...
मचानो बन्हा गेल रहए। मुदा आनन्दा फेर नै भेटल रहए।
भातू पुछैत रहए।
-कोन टोलक छी ओ। नहिये भरसरटोलीक अछि, नहिये पश्चिमाटोलीक आ नहिये ठकुरटोलीक।
-डोमासीक रहितए तँ हम चिन्हते रहितिऐ।
-तखन कोना अछि ओ अपन गामक। आ अपन गामक अछि तँ आइ धरि भेट किए नै भेल रहए ओकरासँ।
मुदा संयोगमे संयोग भेल छल। भातूक टोलमे फुदे भाइक बेटाक उपनयन रहै। बँसकटी छल तँ थपहीबलाके बजबैले हम गामक बाहर चमकिरार टोल गेल रही।

-ब्बर भाइ, ब्बरआ भाइ।
-आबै छथि।
कोनो बाच्चाकाक अबाज आएल रहए। अबाज च्चान्हल सन।
-अहा के छी।
-हम ब्बरक बेटी। की काज अछि?
-थापही लऽ कऽ एखन छथि अहाक बाबू नै पहुँचल छथि। बजबैले आएल छियन्हि।
-तही ओम्हरयानमे लागल छथि।
-अहाक नाम की छी?
तखने टाट परक लतीके हँटबैत वैह बाच्चाका सोझा आबि गेल्हि।
-हम आनन्दा। हम अहाके चीन्है गेल रही। अहाक की नाम छी?
हम तँ सदभिेल जाइत रही। मुदा उतर देबाके छलि।
-बचलू।
-आ अहाक संगीक।
-भातू, पंडित छिकरक बेटा।
भातूक पताक नाम सेहो हम आनन्दाके बता देलिऐ। पुछिने तँ नै छथि ओ, मुदा नै जानि किएक..कहि देलिऐ। तखने ब्बरआ थापही लेने आबि गेल रहथि। हुनका संगे हम टोलपर आबि गेलहुँ।
रस्तामे ब्बरआके पुछलियन्हि- आनन्दा अहाक बेटी छथि। मुदा कहियो देखलियन्हि नै।
-मामागाममे बेशी दिन रहै छलै। मुदा आब चेतनगर भऽ गेल छै। से गाम लऽ अनने छिऐ।
-फेर मामागाम कहिया जएतीह।
-नहि, आब ओ चेतनगर भऽ गेल अछि। आब संगे रहत।
पंडितजीक बेटा भातू, हमर संगी भातू, ई गप सुनि की होएतैक ओकरा मोनपर। कैक दिनसँ ओकर पुछारी कऽ रहल छलि। हम सोचने रही जे भने मामागाम चलि जाए आनन्दा आ कनेक दिनमे भातूक पुछारीसँ हम बाचि जाएब।
मुदा आब तँ आनन्दा गामेमे रहत आ पंडित छिकरक बेटा भातू..
छिर..हमही उनटा-पुनटा सोचि लेने छी। ओहुना दू-चारि बेर भातू आनन्दाक विषयमे पुछारी केने अछि। तकर माने ई छिबिक भेलै जे..
मुदा जे सैह भेलै तखन ?..
पंडितक बेटा आ चमकिारक बेटी..
पंडित छिकर मानताह?..गौआँ घरआ मानत?
छिर। फेर हम उनटा-पुनटा सोचि रहल छी। थापही बाजए लागल रहए आ लीखपर देने हम आ भातू, भरि टोलक स्त्रीगण-पुरषक संगे बँसबिटी पहुँचि गेल रही। रस्तामे ओहि सलिके अकानने रही। भातू आ आनन्दाक पहुँचल भातलनक सलिके- कोनो अबाज लागल अबैत..मालि संगीत..स्वर नै।
बरआ बास सभपर छापा दऽ देने रहै आ सभ बास कटनाइ शुरु कऽ देने रहथि। मबिठटी आइये छै। घामे-पसीने भेने कनेक मोन तोषित भेल। कन्हापर बास लेने हम आ भातू ओही रस्ते बिदा भेल रही..ओही लीख

देने।

...

मुदा भातू हमरा सब्दखन टोकारा देमए लागल। कारण कोनो काज हम एतेक देरीसँ नथि केने रहुऐ। ओ हमर राम रहए आ हम ओकर हनुमान।

मचानपर एकटना एक दिन हम भातूके कहु देखुऐ-

-भातू, बासब जो ओकरा। कि ी लेल बदनामी करबाही ओकर। सुरआक बेटी थिऐ आनन्दा। ओना तोहर नाम हमरासँ ओ पुिलक तँ हम तोहर नाम आ तोहर पिताजीक नाम सेहो कहु देखाऐ।

-हमर पिताजीक नाम ओ पुिने रहौ?

-नै पुिने रहए। मुदा..

-तखन थकए कहलही?

-आइ ने काथि तँ पता लागबे करतै..

-जहुया लथातै तहुया लथातै..आब ओ हमरासँ कटत..हमर मेहनथा तूँ बढ़ा देले..

-कोन मेहनथा। तूँ पंडित िकरक बेटा आ ओ सुरआ चमक्रिारक बेटी। कििले बदनामी करबाही ओकर।

-बयाह करबै रौ। बदनामी थकए करबै।

-ककरा ठकै थिही ?

-ककरो नै रौ।

एकटना अनचोकेमे भाणिा लैत िल भातू। िकर मीमासकक बेटा भातू नैय्याथाक। ओकरा घरमे तालपि सभ पसरल रहैत देखने िथाऐ। से भरोस नै भऽ रहल िल।

-गाममे कहुयो देखथाऐ नै ओकरा।

-तूँ गाममे रहले कहुया। गुरजीक पाठशालासँ पौरके तँ आएल ि।

-मुदा तूँही कोन देखने रही।

-मामा गाम रहै िल ओ।

-फेर मामा गाम घुम कऽ तँ नै चथा जाएत।

-नै, से पुथि लेथाऐ। आब गामेमे रहत।

पौरका गामेमे भातूक माएक देहान्त भऽ गेल िलथाह।

िकर मीमासक सेहो खटबताह सन भऽ गेल िथि- ई गप हुनकर टोलबैय्या सभ करैत िल। तालपि सभक पथरकण कोना हएत एहु थांह राथामे? यैह थान्ता रहथाह िकरक, आ ते ओ खटबताह सन करए लागल रहथि.. ईहो गप हुनकर टोलबैय्या सभ करैत िल।

...

सुरि.सुरि... सुरि...

डोमासीसँ सूगरक पाि हम आ भातू सुरिसुरिकिरैत चमक्रिार टोल पहुँथा जाइ ि। आनन्दा मुदा सोझामे भेथाट गेलीह। सुलार संगे हम आगा बथाढ़ जाइ ि। घुमै ि तँ आनन्दा आ भातूक गप सुनैले कान पाि ि।

सुरि.सुरि

एकहु बेर आनन्दा सुरिकिहैत अथि आ हम मुस्की दैत सूगरक आगा बथाढ़ जाइ ि।

ई घटना कैक बेर भेल आ ई गप सगरे पसरि गेल। बुढ़ू कताक बेर हमरा लग आएल रहथि। हीर उदेश्वत रहए लागल रहथि। हीर क पती बेटीक भालुक लेल गोहारि करए लगलीह।

कए कोस मा मधुबलबा
कए कोस लुकेसरी मधुबलबा
कए कोस पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कए कोस पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
दुइ कोस मधुबलबा
चारि कोस लुकेसरी मधुबलबा
पाचे कोस पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
पाचे कोस पलि दोहाइ

कोन फूल मा मधुबलबा
कोन फूल बन्दी मधुबलबा
कोन फूल पर पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कोन फूल पर पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
ऐली फूल मा मधुबलबा
बेली फूल लुकेसरी मधुबलबा
गेन्दे फूल पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
गेन्दे फूल पलि दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
.........

बुढ़ू डोमासी आबए लागल रहथि।

-की हेतै, कोना हेतै।

-झुटे..

हम गछियबैत जे हम बुढ़ू संगे िकर पंछत लग जाएब।

आ हम बुढ़ू के िकर मीमासक लग लऽ गेल रहियैक। िकरक पतीक मृत्यु गत बरखक सांझ राखाक बाद भऽ गेल िलहि। आ तकर बाद बुढ़ू मीमासक खटबताह भऽ गेल ियि- लोक कहैत िलहि। लोक के? वैह टोलबैय्या सभ। गामक लोक, परोपटाक थदान लोक सभ तँ बरड इज्जत दै िलहि हुनका। आँखिक

देखल गप कहै ि।..

“आउ बचलू। श्वर , आउ बैसू..। ”- गुम्म भऽ जाइत िथ ि िकर। पतीक मृत्युक बाद एश्वना, रहैत रहथि, रहैत रहथि आश्वक गुम्म भऽ जाइत रहथि।

“कका, आँगन सुन रहैत अथि। कतेक श्वन एना रहत। भ्रतूक ब्रयाह श्वकए नै करा दै थियश्वह”?

“भ्रतू तँ ब्रयाह ठीक कऽ लेने िथ”।

“कतऽ?” -हम घबाइत पुि थियश्वह। श्वर हमरा श्वस श्वथिन्त भावसँ देखै िथ।

“आनन्दासँ, समथि हीर तँ अहाक संग आएल िथिये।”

हाय रे िकर पंश्वत।

आ बाह रे भ्रतू। पश्वनश्वये बापके पश्वया लेने ि। मुदा बान्हपर जाइत कोनो टोलबैय्याक कान एश्व गपके अकाश्व लेने ि।

हम सभ बैसले रही आश्वक ओ श्वि आर गोटेके लऽ कऽ दलानपर जुश्व गेल ि। िकर मीमासकसँ हुनकर सभक शासािशुर भेल। शब्दक काट शब्दसँ।

“िकर, अहा कोन कोश्वक अि काज कऽ रहल ि”।

“कोन अि काज”।

“िट-पैघक कोनो श्वचार नै रहल अहाके मीमासक?”

“श्वदान् जन। ई िट-पैघ की थिऐ? माि शब्द। एश्व शब्दके सुनलाक पात् ओकर शब्दािअहाक माि एक वा दोसर तरहे ढुश्वक गेल अथि। पद बना कऽ ओश्वमे अपन स्माििभ्रज्झर कऽ...”।

“माने िट-पैघ अथि शब्दािमाि। आ तकर श्वश्लेषण जे पद बना कऽ केलहुँ से भऽ गेल स्मािरिक”।

“श्वशास नै होए तँ ओश्व पदमे सँ स्माकि समर्पण कऽ कए देखू। सभ भम भाश्व जाएत”।

“माने अहा भ्रतू आ आनन्दाक ब्रयाह करेबाले अश्वग ि”।

“श्वदान् जन। रस्सीके साप हम अही दारे बुझै ि जे दुनूक पृि अश्वतत्व ि। आँश्व घोकचा कऽ दूटा चन्रमा देखै ि तँ तखनो अकाशक दूटा वास्तश्वक भागमे चन्रमाके पत्यारोश्वत करै ि। भमक कारण श्वषय नै संसगि, ओना उदेश्य आ श्वयि दुनू सत्य ि। आ एतए सभ श्वषयक जान सेहो आत्माक जान नै दऽ सकैए। आत्माक श्वचारसँ अहंवृश्व- अपन श्वषयक तथ्यक बोि एश्वसँ होइत अथि। आत्मा जानक कता आ कमिदुनू अथि। पदाथि अिसंसगसँ भेटैत अथि। शब्द सुनलाक बाद ओकर अिअनुमानसँ लग होइत अथि”।

“अहा शब्दक भम उत्पन कऽ रहल ि। हम सभ एश्वमे भ्रतू आ आनन्दाक ब्रयाहक अहाक इच्िा देखै ि”।

“संकल्प भेल इच्िा आ तकर पूश्वानै हो से भेल देष”।

“तँ ई हम सभ देषवश कश्व रहल ि। अहाक नजश्वमे जाश्वाक कोनो महत्व नै?”

“देखू, आनन्दा सवगुिणसम्पन िथ आ हुनकर आ हमर एक जाश्व अथि आ से अथि अनुवृत आ सवलौक पत्यक। ओ हमर िरोहरक रक्षा कऽ सकतीह, से हमर श्वशास अथि। आ ई हमर श्वाणय अथि”।

“आ ई हमर श्वाणय अथि।”- ई शब्द हमर आ श्वरक कानमे एके बेर नै पैसल रहए। हम तँ िकर आ भ्रतूके श्वन्हैत रश्वयश्वह, एश्वना अनचोके श्वाणय सुनबाक अभ्यासी भऽ गेल रही। मुदा श्वर कनेक कालक बाद एश्व शब्द सभक पश्वाश्वाश्व सुनलश्वह जेना। हुनकर अचश्वभत नजश्व हमरा श्वस घुश्व गेल िलश्वह।

फेर ि‍कर मीमासक ओ‍झ शास‍ि‍ि सभमेसँ एक ज्योाषी थ्‍स आंगुर देखबै ि‍‍थ्‍ि-
“ज्योाषीजी, अहा एकटा नीक थ्‍न ताकू। अही शुदमे ई पावन थ्‍वाह सम्‍पन भऽ जाए। थ्‍ांह राश्‍ा आबैबला ि‍‍‍ि‍ , ओ‍झसँ पूवि‍ थ्‍कनको कोनो आपश्‍ा?”
सभ मा‍ि झुका ठाढ़ भऽ जाइ ि‍थ्‍ि। ि‍कर मीमासकक थ्‍रोि‍मे के ठाढ़ होएत?
“हम सभ तँ अहाके बुझबए लेल आएल ि‍लहुँ। मुदा जखन अहा आ‍णि‍ लैये लेने ि‍ि तखन...।”
मीमासकजीक हा‍ि उठै ि‍थ्‍ह आ सभ फेर शान्‍त भऽ जाइ ि‍थ्‍ि।
हम आ हीर सेहो ओतएसँ थ्‍दा भऽ जाइ ि‍ि।
हीर थ्‍ासास लेने रहथ्‍ि, से हम अनुभव केने रही।
...
ई नै जे कोनो आर बा‍ि नै आएल।
मुदा ओ खटबताह थ्‍दान तँ ि‍ले। से आनन्‍दा हुनकर पुतोहु बश्‍ा गेलीह। आ हुनक ि‍अल पा‍श्‍ा हमर टोल आ‍थ्‍क थ्‍ातूक टोल मा‍ि नै सौँसे परोपटाक थ्‍दानक बीचमे चलए लागल।
.....
आनन्‍दाक नैहरमे थ्‍वाह सम्‍पन भेल ि‍ल। ओतुका गीतनाद हम सुनने रही, उल्‍लासपूणि‍ एखनो मोन अथ्‍ि-
पवि‍ति ऊपर भमरा जे सूतल,
मा‍श्‍ान बेटी सूतल फुलवा‍श्‍ा हे
उठू मा‍श्‍ान राखू थ्‍ाश्‍ामल हार हे
पवि‍ति ऊपर भमरा जे सूतल,
मा‍श्‍ान बेटी सूतल फुलवा‍श्‍ा हे
उठू मा‍श्‍ान राखू थ्‍ाश्‍ामल हार हे

कोन फूल ओढ़ब लुकेस‍श्‍ा के
कोन फूल प‍श्‍ारन
कोन फूल बा‍थ्‍ि के थ्‍ांगार हे

उठू मा‍श्‍ान राखू थ्‍ाश्‍ामल हार हे
बेली फूल ओढ़ब बन्‍दी
चमेली फूल प‍श्‍ारन
अरहुल फूल लुकेस‍श्‍ा के थ्‍ांगार हे
उठू मा‍श्‍ान गा‍ि थ्‍ाश्‍ामल हार हे
उठू मा‍श्‍ान गा‍ि थ्‍ाश्‍ामल हार हे
....
ि‍कर मीमासक आनन्‍दाके तालपि‍ सभक प‍श्‍ारकगक भार दऽ थ्‍ाथ्‍िन्‍त भऽ गेल रहथ्‍ि। पतीक मृत्‍युक बाद बेचारे आशंथ्‍कत रहथ्‍ि।

दैवीय हस्तक्षेप, आनन्दा जेना ओझ्झ तालपि सभक पश्चरक्ग लेल आएल रहथि हुनकर घर। अनचोके..
श्वातू कश्च देलक हमरा जे कोना ओ ीिकर पंश्चतके पश्चया लेने रहए। बाह णक बेटी सराइ कटोरा आ माश्चक महादेव बनबैत रहत आ तालपि सभमे घून लाश्च जाएत..
नै घून लागए देथिन तालपि सभमे, आनन्दा आएत एश्च घर। ीिकर मीमासक श्वाणि कऽ लेने रहथि।
श्वातू तँ जेना जीवन भश्च अपन लेल एश्च श्वाणिक पश्च कृतज ीलाह।
ीिकरक आयु जेना बश्च गेल ीलश्चह। ीिकर आ आनन्दाक मध्य गप होइते रहै ीलि ओश्च घरमे।
आनन्दा बश्चते रहै ीलीह आ गश्चते रहै ीलीह।

बारहे बश्चस जब बीतल तेरहम चश्च गेल हे
बारहे बश्चस जब बीतल तेरह चहश्च गेल हे
ललना सासु मोरा कहथिन बश्चाश्वाया
बश्चाश्वाया घरसे श्वाकालब हे
ललना सासु मोरा कहथिन बश्चाश्वाया
बश्चाश्वाया घरसे श्वाकालब हे

अंगना जे बाहर तोश्च ीलश्चन श्वश्वाया गे
ललना गे आश्च श्चयौ आक ीिूर फर पीश्च हम पीयब रे
ललना रे आनी श्चयौ आक ीिूर फर पीश्च हम पीयब रे
बहर से आओल बालुम पलंग चश्च बैसल रे
बहर से आओल बालुम पलंग चश्च बैसल रे
ललना रे कश्च श्चयौ श्चल केर बात की तब माहुर पीयब रे
ललना रे कश्च श्चयौ श्चल केर बात की तब माहुर पीयब रे

बारह हे बश्चस जब बीतल तेरह चहश्च गेल रे
ललना रे सासु मोरा कहथिन बश्चाश्वाया
बश्चाश्वाया घरसे श्वाकालब रे
सासु मोरा मारथिन अनूप ीयि ननदो ठुनुक ीयि रे
सासु मोरा मारथि अनूप ीयि ननदो ठुनुक ीयि रे
ललना रे गोटनो खुशी घर जाओल सभ ीनि हमरे हेतै हे
ललना रे गोटनऽ खुशी घर जाओल सभ ीनि हमरे हेतै हे

चुप रहू, चुप रहू ीनी की तोहीँ महीनी थीअ हे
चुप रहू, चुप रहू ीनी की तोहीँ महीनी थीअ हे
ीनी हे करबै हे तुलसी के जाग, की ीनि सभ लुटा देबऽ हे

ललना हे करबै मे पोखरि के जाग, की सभ नि लुटाएब हे

िकर मीमासक हँसी करथि‍न- आनन्दा, अहाके तँ सासु अथि नै, तखन ओ बेचारी अहाके बधाआया कोना कहतीह?

-ते ने गबै ि‍ि, सभ चीज तँ भरल-पूरल मुदा..।

आँखि नोरा गेल लिखह आनन्दाक। हमरा अखनो मोन अथि।

-हम अहाके दुाख देलहुँ ई गप कहि कऽ।

-कोन दुाख? सासु नै ि‍थि तँ ससुर तँ ि‍थि।

िकरके पसन देखि मातूके आत्मतोष होइन्ह।

.......

आ िकर मीमासकक मृत्युक बादो आनन्दा तालपि सभमे जान फुकैत रहैत लीह।

फेर मातूके दूटा बेटी भेलखह वल्लभा आ मेि।

आनन्दाक खुशी हम देखने ि‍ि। नैहर गेल रहथि ओ। ओतहि दुनू जौँआ बेटी भेल लिखह-

लाल परी हे गुलाब परी
लाल परी हे गुलाब परी
हे गगनपर नाचत इन्र परी
हे गुलाबपर नाचत इन्र परी

आ फेर भेलखह बेटा। पैघ भेलापर बेटा मेघके पढ़बा लेल बनारस पठेने रहथि मातू।

आ बीन बतैत गेल, बेटी सभ पैघ भेलखह आ दुनू बेटी, मेि आ वल्लभाक बयाह दान कऽ आधिन्त भऽ गेल लाह मातू।

बेटाक परवबश आ बयाह दान सेहो केलखह। मेघ बनारसमे पाठन करए लगलाह। मेघ, मेि आ वल्लभा तीनू गोटे सालमे एक मास आबथि ि‍थि अवश्य।

लोक बसि गेल मारते रास गप सभ।

II

भामती पत्सनिम्

आनन्दा भातूक थताजीक एक्ष तालपि सभक पश्वरकग मनोयोगसँ कऽ रहल ि थि। कि गिर रौद, भातूके ओझना मोन ि भाह।

भातू संग थानगी बीश गेलभाह आनन्दाक। आ आब जखन ओ नै ि थि तखन भातूक जीवनक पश्वरकग कोना होएत।.. भातू पवचनक बीचमे कतहु भँभाया जाइ ि थि।

पवचन चश रहल अथि। भातू गरि पुराण नै सुनताह। भातू मंडनक बहभाश्च सुनताह, वाचसमाश्वाक भामती सुनताह, जे सुनबो करताह तँ। जँ बेटी सभक भाद ि भाहये तँ आत्मा थषयपर कुमाश्वलक दशनि सुनताह। आ सैह पवचन चश रहल अथि।

भम। शब्दक भम। कहैत रहथि िकर मारते रास गप शब्दशासिम् पर। भामती पसिनम् पर। शब्दक अि हम गश्च लैत ि। आ फेर भम शुर भऽ जाइत अथि।

-गुरजी। हम पतीक मृत्युक बाद घोर भाराशामे ि। की थिऐ ई जीवन। कतए होएत आनन्दा।

- भातू। िरज राखू। बहभाश्चक हमर ई पाठ अहाक सभ भमक भावारण करत। बहभाश्चमे चाश्च काण्ड ि। बह, तकि भायोग आ भाश्च काण्ड। बहकाण्डमे बहक र पपर, तककाण्डमे पमाणपर, भायोगकाण्डमे जीवक मुश्वतपर आ भाश्चकाण्डमे उपभाषदक वाक्यक पमाणपर थवेचन अथि।

- भातू। मुश्वत जानसँ पृकि् कोनो बौस्तु नै अथि। मुश्वत स्वयं जान भेल। मानवक कुर बुश्चक कतहु उपेका मंडन नै केने ि थि। कमकि महत्व ओ बुझैत ि थि। मुदा ताश्चटा सँ मुश्वत नै भेटत। स्फोटके ध्वाश्च-शब्दक रपमे अिदैत मंडन देखलभाह। से शंकरसँ ओ एक्ष अिँ भान ि थि जे एक्ष स्फोटक तादात्म्य ओ बनबैत ि थि मुदा शंकर बहसँ कम कोनो तादात्म्य नै मानै ि थि। से मंडन शंकरसँ बेशी शुद अदैतवादी भेलाह।

-भातू। मंडन कमता आ अकमताक एक संग भेनाइके थरोिी तत्व नै मानैत ि थि। ई कखनो अिकियाकृत भेद होइत अथि, मुदा ओ भेद मूल तत्व कोना भऽ गेल। से ई बह सभ भेदमे रहलोपर सभ काज कऽ सकैए।

-देखू। वाचसमाश्वाक भामती पसिनक थचार मंडन भाकि थचारसँ मेल खाइत अथि। मंडन भाकि बहभाश्चपर वाचसमाश्वा तत्वसमीका भाखने ि थि। ओना तत्वसमीका आब उपलदि नै ि।

-तखन तत्व समीकाक चचा कोना आएल।

-वाचसमाश्वाक भामतीमे एकर चचा ि।

-मुदा मंडनक थचार जानबासँ पूविहमरा मोनमे आश्च रहल अथि जे जखन ओ शंकराचायसिँ हाश्च गेलाह तखन हुनकर हारल थादान्ताक पारायणसँ हमरा मोनके कोना शाश्वा भेटत।

-देथ्वयौ, मंडन हाश्च गेल िलाह तकर पमाण मंडनक लेखनीमे नै अथि। मंडन स्फोटवादक समकि रहथि, मुदा शंकराचायस्फिोटवादक खण्डन करैत ि थि। मंडन कुमाश्वल भटक थपरीत ख्याश्वाक समकि रहथि, मुदा शंकराचायकि जाश्च थाष्य सुरेशराचायकि लोक मंडन भाि बुझै ि थि ओ एकर खण्डन करै ि थि।

-से तँ ठीके। मंडन हाश्च गेल रश्चतथि तँ हुनकर दशनि शंकराचायकि अनुकरण कश्वतभाह।

-आब कहू जे जाश्च सुरेशराचायकि शंकराचायि िृगेरी मठक मठाििश बनेलभाह से अथदाक दू तरहक हेबाक थरोिी ि थि मुदा मंडन अपन गनि बहभाश्चमे अगहण आ अन्यािगहण नामसँ अथदाक दूटा रप कहने ि थि। मंडन जीवके अथदाक आिय आ बहके अथदाक थषय कहै ि थि मुदा सुरेशराचायसि नै मानै ि थि। शंकराचायकि थचारक मंडन थरोिी ि थि मुदा सुरेशराचायहिुनकर मतक समिनिमे ि थि।

.......

बानर आ बनगदहा खेत सभके ि गने अछि आ पारा बारीके। आब हमरा दुआरे गामक लोक महीस पोसनाइ तँ नै ि छि देत। बानर आ बनगदहा बर ड नोकसान कऽ रहल अछि।

"चारिटा बानर कलममे अछि। ि ऽ कऽ आम सभके दकछि देलक। हम गेल रही। साझ भऽ गेलै तँ आब सभटा बानर गा कि छिपी ि ऽ लेने अछि। साझ ि ब दुनू बापुत कलम ओगरने रही, झठहा मारि भगेलहुँ, मुदा तखन अहाक कलम धिस चलि गेल"। - हम मातूके हम कहै छियन्हि।

"सभटा नाश कऽ देलकै बचलू। रातिमे तँ नहि सुझै ि। भोरे-भोर कलम जा कऽ देखै ि ी। बनगदहा सभटा फसिल खा लेलक आब ई बानर आमक पा ि लागल अछि। करऽ दियौ जखन..."।

"बनगदहा सभ तँ साफ कऽ उपटि गेल ि लै। नै जानि फेर कतऽ सँ आबि गेल ि। गजपटहा गाममे जाग भेल ि लै, ओम्हरेसँ राता-राती ि रि टपा दै गेल ि"।

"से नै ि। ई बनगदहा सभ ि रिमे भसिया कऽ नेपाल दिसनसँ आएल ि। आबऽ दियौ जखन..."।

"हम बानर सभ दिया कहने रही"।

"से हेतै"।

"हेतै भाइज, तखन जाइ ि ी"। हमरा बुझल अछि जे आमक मासमे बानर आ बनगदहा ओहि बरख एके संग आपता भऽ गेल रहै जाहि बरख आनन्दा आ मातूक भेट भेल रहै। आ आनन्दाक गेलाक बाद बानर आ बनगदहा नै जानि कतऽ सँ फेर आबि गेल ि, आनन्दाक मृत्युक पन्द्रहो दिन नै बीतल ि...

.......

बचलू गेलाह आ मातूक कपारपर चिन्ताक मोट कएकटा रेख ऊपर नीचा होमए लगलन्हि, झलकोरक तरंग सन, एक दोसरापर आच ि दित होइत, पुरान तरंग नव बनैत आ बढ़ैत जाइत। अंगनामे सोर करै ि छि। "बुच्ची, बुचिया। जयकर आ दिशना ि आइ गा ि ी गेल रहए। आबि गेल अछि ने दुनू गो ि। सुनलिऐ नै जे बानर सभक उपरव भऽ गेल ि। कालि सँ नै जाइ जाएत गा ि ी, से कहि दियौ। आइ बानर सभ कलम आएल ि ल, से कहबो नै केलहुँ। कहिये कऽ की होएत जखन..."।

"कहि तँ रहल ि लहुँ बाबूजी मुदा अहा तँ अपने ि निमे रहै ि ी, बाजैत मुँह दुखा गेल तँ चुप रहि गेलहुँ"।

हँ, ि आमे तँ ि छिये मातू। ई आम सेहो आनन्दाक मृत्युक बाद पकनाइ शुरु भऽ गेल अछि। आ एतेक दिनुका बाद फेर ई बानर आ बनगदहा कोन गप मोन पारबा लेल फेरसँ जुमि आएल अछि।

...

जयकरक माए वल्लभा आ दिशना कि माए मे ि। दुनू बहीन कतेक दिनपर आएल ि छि नैहर। कतेक दिनपर भेट भेल ि छन्हि एक दोसरासँ। आनन्दाक दुनू बेटी आ दुनू जमाए आएल ि छि। वल्लभाक पति यशो आ मे ि क पति कान्ह। मेघ अपन पती आ बच्चा सभक संगे आएल ि छि।

मातू पतीके आनन्दा कहि बजा रहल ि छि। फेर मोन प ि ि छन्हि जे ओ आब कतऽ भेटतीह। फेर कतऽ ि ी वल्लभा, कतऽ ि ी मे ि, जयकर आ दिशना ि कतए ि छि..सोर करए लागै ि छि।

वल्लभा आ मे ि अबै ि छि आ मातू गीत गबए लगै ि छि। आनन्दाक गीत। आनन्दा जे गबै ि लीह वल्लभा आ मे ि लेल-

लाल परी हे गुलाब परी

लाल परी हे गुलाब परी
हे गगनपर नाचत इन्द्र परी
हे गुलाबपर नाचत इन्द्र परी

रकतमाला दुआरपर अ्ारनि खिी
हे रकतमाला दुआरपर अ्ारनि खिी
मा हे अ्ारनिके िनि यै देने परी
मा हे अ्ारनिके िनि जे देने परी

लाल परी हे गुलाब परी
मा हे रकतमाला दुआरपर अनिरा खिी
मा हे अनिराके नयन थ्द्दयौ जलदी
मा हे अनिराके नयन थ्द्दयौ जलदी

बाप आ दुनू बेटी भोकार पाि ए लगै ि थ्ि।
...
-अ्ातू। आनन्द्राक मृत्यु अहा लेल थ्ापदा बअ्ा आएल अथ्ि। अहा बाहमण जाथ्ाक आ आनन्द्रा चमक्ाथ्णी। मुदा दुनू गोटेक पेम अतुलनीय। हुनकर मृत्यु लेल दुाखी नै होउ। बह थ्ाना दुखक ि थ्ि। बहक भावर प आनन्द्र थ्ीयथ्अ्ह। से आनन्द्रा लेल अहाक दुाखी होएब अनुथ्ात। बह रष ा ि थ्ि। दृश्य तँ पथ्ावथ्ाति होइत रहैए, ओथ्ासँ रषाके कोन सरोकार। ई जगत-पपंच माि भम नै अथ्ि, एकर व्यावहाथ्ाक सता तँ ि। मुदा ई व्यावहाथ्ाक सता सत्य नै अथ्ि।
-अ्ातू। चेतन आ अचेतनक बीच अन्तर ि मुदा से सत्य नै ि। जीवक कएकटा पकार ि, आ अथ्ादाक सेहो कएकटा पकार ि। अथ्ादा एकटा दोष भेल मुदा तकर आिय बह कोना होएत, पूणजीव कोना होएत। ओकर आिय होएत एकटा अपूणजीव। अथ्ादा तखन सत्य नै अथ्ि मुदा खूब असत्य सेहो नै अथ्ि।
-अ्ातू। एथ्ा अथ्ादाके दूर कर आ तकरे मोक कहल जाइत अथ्ि। वैह मोक जे आनन्द्रा पाप्त केने ि थ्ि।
आ अ्ातूक मुखपर जेना शाथ्ात पसथ्ा जाइ ि थ्अ्ह।
........
अ्ातू जेना भेट करबा लेल जा रहल ि थ्ि।
मोन पथ्ि जाइ ि थ्अ्ह आनन्द्रा संग पेमालाप।
-आनन्द्रा। अहासँ गप करैत-करैत हमरा कनीटा डर मोनमे आथ्ा गेल अथ्ि। थ्ाताक सभसँ पिनि कमजोरी ि थ्अ्ह हुनकर तालपि सभक पथ्ारक्ण। से ई सभ मोन राखू। थ्ाता जे पुिताह जे ताल पकि पथ्ारक्ण कोना होएत तँ कहबथ्अ्ह- पुस्तकके जलसँ तेलसँ आ सिूल बनिसँ बचा कऽ। िहिथ्ामे सुखा कऽ। ५००-६०० पातक पोिी सभ। हम कोनो थ्ादन देखा देब। एक पात एक हाि नाम आ चाथ्ा आंगुर चाकर होइ ि। ऊपर आ नीचा काठक गता लागल रहै ि। वाम भागमे थ्ीर कऽ सुतरीसँ बान्हल रहै ि।

-थता मानताह।
-नै मानताह थकएक। बाह णक बेटीसँ बयाह कराबैक औकाश िअछ? हम एक गोटेके दू टाका बएना देने रखयै खेश्राहर जमीन थकनबा लेल। मुदा थता जा कऽ बएना घुरा आनलअछ। एक-एक दू-दू टाका जमा कऽ रहल िथि। ७०० टाका लकिीबलाके देताह तखन बेटाक थवाह हेतअछ आ पाथ्म बनतअछ। आ से बाह णी अओतअछ तँ तालपकि रक्ा करतअछ?
अतूक माएक मृत्युक बाद िकिर खटबताह भऽ गेल िलाह। टोलबैय्या सभ कहै िथि।
आ फेर बेमारी अएलै, फ्लेग। गामक दूटा टोल उपथये गेल, असरटोली आ पथिमाटोली। परोपटाक बहुत रास गाममे कतेक लोक मुइल से नै जाथि।
अतू थताके आनन्दासँ भेट करा देलथिन्ह। िकिर तालपि पथरकगक जानसँ पथपूणआिनन्दामे नै जाथि की देथथ लेलअछ।
अतू जीथा गेल। नैय्याथाक अतू मीमासक िकिरसँ जीथा गेल आ मीमासक िकिर अपन टोलबैय्या सभके पराथ्मत कऽ देलअछ।
आ आनन्दा आ अतूक थवाह सम्पन भेल।
मोन पथि जाइ िअछ आनन्दा संग पेमालाप। अतू जेना भेट करबा लेल जा रहल िथि। आनन्दाक मृत्यु भऽ गेल अथि। बलानमे पएर थिथि गेलअछ आनन्दाक। ओथना थििक थान्हासी देखबामे आथ रहल अथि।
अतू ओथ थान्हासीके देखै िथि आ हुनकर मोन हुलथ जाइ िअछ, थिथि जाइ िथि भावनाक थलकोरमे..
आनन्दा आ अतूक एक दोसरासँ भेट-घाट बढ़ए लागल िलि, खेत, कलमम-गाििमे, चौरी आ िरिक कातक एथ सिलपर। आ दुनू गोटे थििित िलाह, खेतमे, कलमम-गाििमे, चौरीमे आ िरिक कातमे सेहो।
िरिमे फागैत नै िलाह अतू। यएह ढलुआ थचिि सिल जे आइ-काथिक िोिि सभ बनेने अथि, से अतूक बनाओल अथि। एथपर पोन रोपैत िलाह आ सुरसँ अतू िरिमे पाथ कटैत आगा बथ जाइत िलाह।
“हे, कने नै थिथि कऽ तँ देखा।”
“से कोन बकिा गप भेलै।”
“देखा तखन ने बुझबै।”
आनन्दा अथिरसँ आगा बढ़बाक पयास करथि मुदा..हे.हे..हे..
नै रोथक सकलथि ओ अपनाके, नथये खेतमे, नथये कलमम-गाििमे, नथये चौरीमे आ नथये एथ िरिक कातमे..
आ की करए आएल होएतीह आनन्दा एतए..जे थिथि गेलीह आ डूथ गेलीह..
कोनो स्मृथके मोन पिबा लेल आएल होएतीह..
-

हँ आनन्दा आएल अथि बचलू। देथयौ ई गीत सुनू-

घर पििवरबामे अरहुल फूल गथिया हे
फरे-फूले लुबुिल गाि हे
उतरे राजसए सुगा एक आओल

बैसल सूगा अरहुल फूल गाि हे
फरबो ने खाइ िऽ सुगबा, फुलहो ने खाइ िऽ हे
डाढ़-पाि केलक कचून हे
फुलबो ने खाइ िऽ सुगबा, फरहु ने खाइ िऽ हे
डाढ़-पाि केलक कचून हे
घर पिुवरबामे बसै सर नढ़आ हे
बैसल सूगा दअ ने बझाइ हे

एकसर जोिल सोनया
दुइसर जोिल हे
तेसर सर सूगा उिड़ जाइ हे
सुगबो ने िऐ भगया
ारो ने िऐ
येहो िऐ गोरैया के बाहान हे

-भाइ अहा ई गीत नै सुन पाब रहल िी की?
-भाइ सुन रहल िी। देियो रहल िी। आनन्दा भौजी िि।
जया ओ मुइल िलीह तयो सुनने रही- वएह रहि- गाबै रहि-
लुकेसरी अँगना चानन घन गिया
त तर कोइली घऽमचान हे

-शद भम नै िल ओ।
माि-मौस आ सत्यनारायण पूजाक बाद अले दनक गप अि। ने चानन गाि कटेने रहि आ ने अँगना बेढ़ने रहि आनन्दा।
दोसर दन ओ चानन गािक नीचा चमकारटोलमे गौआँ सभ दुनू गोटेक लहाश देखलह। आ ईहो शद गगनमे पसब गेल, साँसे गाँआ सुनलक- आनन्दाक अबाजमे-
जाहे बोन जेबऽ कोइली र नझुनु बालम
र जेतऽ रकतमाला के शान हे
शद भम नै िल ओ।

*(ई कि "शदशासिम्" िी उमेश मंडल गाम-बेरमा लेल।)*

<u>दली</u>

१

पोस्टमार्टम कएल शरीर, सातटा मोटका थ्वाल्लपर, जति कनीकालमे। गोइठामे आथ्वा जे अनलथ्थ्हहे सुमनजी, राथ्थ्व देलथ्थ्ह नीचा।

कनकनाइत पाथ्थ्वमे डूम दऽ गोइठाक आथ्थ्वसँ आथ्वा लऽ शरीरके गथ्थ्व-सदगथ्थ्व देबा लेल। आ कऽ देलथ्थ्ह अथ्थ्मके समर्थ्पति। तृण, काठ आ घृत संग।

घुथ्थ्व गेला सभ। लोह, पाि, आथ्वा आ जल नाथ्थ्व, िथ्थ्व; डेढ़ मासक बच्चाके कोरामे लेने िथ्थ्व माए, तकि िथ्थ्व।

सभ घर घुरैत िथ्थ्व।

२

थ्थ्वल्ली।

३१ थ्थ्वसम्बरक राथ्थ्व। आब एक तारीख भऽ गेलै। रतुका थ्थ्वाफ्टमे हम ि।

कोथ्थ्वयासँ आएल एकटा सि हमरासँ पुिए, ई नव एयरपोर्टअथ्थ्व की? हम कहै थ्थ्विऐ- हँ। आ पुि थ्थ्विऐ- थ्थ्वकए? ओ सि कहैए- नै, हमरा लागल, थ्थ्वकए तँ िहि मास पथ्थ्वने आएल रही।

-हँ पथ्थ्वने टथ्थ्वमिनल दू पर अहा आएल हएब, ई नव टथ्थ्वमिनल थ्थ्विऐ, टथ्थ्वमिनल- तीन। नीक लागल अहाके?- हम पुि थ्थ्वियथ्थ्वह।

-बर ड नीक लागल। एयरपोर्टि नै, होटल सन लाथ्थ्व रहल अथ्थ्वि। इथ्थ्वडया आब मजगूत भऽ रहल अथ्थ्वि।- मथ्थ्वला बजै िथ्थ्वि।

रतुका थ्थ्वाफ्टमे हम ि। तखने गामसँ एकटा फोन हमर मोबाइलपर अबैए। हमर मथ्थ्वला सहकमी हँसी करै िथ्थ्वि- गामसँ फोन आएल हेतथ्थ्वह, आब फेर ई मैथ्थ्विलीमे गप करता, हम सभ भाषा बुझै नै थ्थ्विऐ, मीठ भाषा ि, ते हमर सभक थ्थ्ववािशो करैत हएता तँ हमरा सभके पता नै चलैए।

३१ थ्थ्वसम्बरक राथ्थ्व थ्थ्विऐ। आब एक तारीख भऽ गेलै। मुदा दुघर्टना बारह बजे राथ्थ्वक पथ्थ्वने भेल िलै। लहाशक जेबीमे मोबाइल रहै। तीन चाथ्थ्वटा अंथ्थ्वम बेर डायल कएल गेल फोन नम्बरपर पुथ्थ्वस ओही मोबाइलसँ फोन केलकै आ सूचना देलकै जे जकर फोनसँ पुथ्थ्वस फोन कऽ रहल अथ्थ्वि, से आब ऐ दुथ्थ्वयामे नै रहल।

मध्य राथ्थ्वि। एक्स-रे मशीन आ थ्थ्वनफर डॉगके िथ्थ्वि ऑथ्थ्वफससँ िटी लऽ हम थ्थ्ववदा होइ ि।

ई एयरपोर्टबाहरसँ कोनो सजल-िजल नवकथ्थ्वया सन लाथ्थ्व रहल अथ्थ्वि। राथ्थ्वमे बाहरसँ हमहूँ नै देखने रथ्थ्वऐ ऐ नवकथ्थ्वयाके। ठीके कहै िलि ओ मथ्थ्वला। होटले लाथ्थ्व रहल अथ्थ्वि, पकाशमे चमचमाइत।

गाि आगा बथ्थ्वढ़ रहल अथ्थ्वि। थ्थ्वल्लीक रोड एतेक चाकर कोना भऽ गेलै। थ्थ्वनमे तँ तीन थ्थ्वनट पथ्थ्व थ्थ्वकलोमीटरक गथ्थ्व रहै ि ऐ सिकिपर। मुदा राथ्थ्वमे खाली रहने चकरगर लाथ्थ्व रहल अथ्थ्वि।

मुदा फेर जमुनापार अबैए, रोड पातर होइत जाइए। भजनपुरा, खजूरी खास। थ्थ्वनमे तँ गाि एतऽ आथ्थ्वयो नै सथ्थ्वकतए। थ्थ्वजली सेहो कथ्थ्व गेल ि। सिकिक दुनू कात गन्दा पसरल।

गाि गलीक कोनमे लगा कऽ आगा बढ़ै ि। गली पार कऽ थ्थ्वलैत थ्थ्वरही बाटे अमरजीक घर पैसै ि। कनारोहट उठल ि। थ्थ्वल्ली.. इथ्थ्वडया, मजगूत इथ्थ्वडयाक राजिनीक ईहो एकटा इलाका अथ्थ्वि। कोथ्थ्वयन मथ्थ्वला एतऽ नै आथ्थ्व सकत, भजनपुरा, खजूरी खास। भजनपुरा, खजूरी खास, एतुके लोक थ्थ्वल्लीक चमचमाइत घर, ऑथ्थ्वफस, आ व्यापारक पाि अथ्थ्वि, एकर सभक अथ्थ्वला खाढ़ी भऽ सकैए फएदामे रहतै.. तै आसमे जान अरोपने अथ्थ्वि।

पता चलैए जे लहाश गुरु तेग बहादुर अस्पतालमे राखल छै।
ओतऽ सँ खबदा होइ छी। बोल भरोस देबा योग्य परिस्थिति नै छै।
गुरु तेग बहादुर अस्पतालक मुदाघरमे मोहनजीत बाबूक बेटाक लहास ओकर रक्त-सम्बन्धीके देल जेतै। पुलिस कहने रहए- माता-पिता जीवित छथिन्ह तखन दोसराके देबाक बाते नै छै, नै अभिभावक रहितथिन्ह तखन देल जा सकै छलै- उच्च न्यायालयक आदेश छै। पहिला बेर दऽ देल गेल रहै आ जखन असली रक्त-सम्बन्धी आबि कऽ केस कऽ देलकै तँ तीनटा पुलिसबला सस्पेन्ड भऽ गेलै। आ कने काल लेल मान्य रहए जे पुलिस दैयो देत, मुदा डॉक्टर पोस्टमार्टम नै करत।
३
अमोदक घरमे हरबिरो उठि गेलै। दिल्लीसँ एक बजे रातिमे फोन आएल छै, मोहनजीत बाबूक बेटा अमर मरि गेलै। दिल्लीमे सड़क दुर्घटनामे मरि गेलै।
अमोदक फोनपर फोन आएल छै। अमोद मोहनजीत बाबूके कोना की कहतै। तता-पहर कटा कऽ एकेटा बेटा मोहनजीत बाबूके, चारिटा बेटीपरसँ। परके बियाह भेल छलै।
अमोद मोहनजीत ककाक दरबज्जा लग पहुँचैए। हाक दैए। काकी अबै छथि। मोहनजीत बाबू गाममे छथिये नै। बहनोइक मृत्यु-संस्कारमे भाग लैले गेल छथि। अमोदके ई गप काकी कहै छथिन्ह।
-से की भेलै एतेक रातिमे?- काकी अशान्त भऽ पुछै छथिन्ह।
-नै भोरमे अबै छी। काज छलै।
अमोद मोहनजीत बाबूक घरसँ पुछारी कऽ बहरा जाइए। अमोद आगा बढ़ि जाइए।
सरवनक दरबज्जापर जाइए। हँ एकरे कहि दै छिऐ, काकीके भोरमे कहि देतन्हि।
सरवन चौकीपर सूतल अछि। अमोद ओकरा उठाबैए आ सभ गप कहैए। सरवन भोरमे काकीके कहि देतै आ काकाके सेहो भोरेमे फोन कऽ देतै।
भोरमे भरि गाम हाकोस ....। काकी तँ बताह भेल जाइ छथि। मोहनजीत बाबूके फोन गेलन्हि जे जहिना छी तहिना आबि जाउ, काकीक मोन बड़ड खराप छन्हि।
मोहनजीत बाबू गामपर एलाह तँ दोसरे गप।
दिल्लीमे टोलक बड़ड लोक छै, मुदा पुलिस लहास ककरो नै देतै। रक्त-सम्बन्धीके लहास भेटतै।
मोहनजीत बाबू दिल्ली नै जेताह, संताप देखैले नै जेताह।
मुदा पुलिस लहास दोसराके नै देतै।
मोहनजीत बाबूके पंडितजी भरोस दै छथिन्ह। ओतऽ के कोना दाह संस्कार करतै, से पण्डीजी संगे जेताह।
साझमे पटनासँ दिल्लीक ट्रेनमे रिजर्वेशन भऽ जेतै। मुखियाजीसँ अमोद गप कऽ लेने छथि, टिकट कटा, रिजर्वेशन करा कऽ अमोदक भातिज टिकटक संग पटना जंक्शनपर भेटत। दिल्लीमे पीअर बच्चाक बेटा कार लऽ कऽ स्टेशनपर आएत, करोलबागमे कैकटा दोकान छै पीअर बच्चाक बेटाक। ओ सोझे ओतऽसँ मोहनजीत बाबूके मुदाघर लऽ अनतन्हि ...
पण्डीजी आ मोहनजीत बाबू पटनाक बस पकड़ै छथि। साझमे दिल्लीक ट्रेन छै। काल्हि भोरमे मोहनजीत बाबू दिल्ली पहुँचि जेताह आ बेटा जे काल्हि धरि अपनाबते रहै आ आइ जे लहास बनल दिल्लीक मुदाघरमे राखल छै- तकर मृत शरीरके लेताह।

४

टेन आशाक नगरी थ्दल्ली पहुँचैबला ि, थ्ममनीक ुिआ आ फैक्टी सभ खतम भेलै आ बिका-बिका स्टेथ्डयम, पगथ्म मैदान आ की-की आथ्ब गेलै। मोथ्म्त बाबूके ई सभ बौस्तु पथ्हने नीक लागै िलथ्न्ह। थ्दल्ली हाटमे गमैआ बौस्तु सभक स्टॉलपर बिका गािबिला सभ उतथ्र कऽ समान कीनै िल। मोथ्म्त बाबूके हँसी लागै िलथ्न्ह। गाममे ई सभ बौस्तु अनेरे पिल रहै ि, थ्कयो थ्कनथ्नहार नै। ऐ परदेशी सभके गामक लोक सभ एतऽ अनेरे ठकै ि।

मुदा आइ ई थ्दल्ली हुनका लेल मुदाघरक पता बथ्न गेल िथ्न्ह। गुर तेग बहादुर अस्पतालक मुदाघरमे हुनकर बेटाक लहास ओकर रक्तसम्बर्नीके देल जेतै।

थ्पता रक्तसम्बर्नी बथ्न पहुँचैबला िथ्थ।

मोथ्म्त बाबू मुदाघर पहुँथ्च जाइ िथ्थ, पथ्हने बुझलो नै िलथ्न्ह जे थ्दल्लीमे सेहो मुदाघर होइ ि, थ्बजली-बतीबला शहर थ्दल्लीमे.....

५

थ्दल्ली। के बसेलकै, कोना बसेलकै। अंगेज जथ्हया कलकतासँ थ्दल्ली राजिनी बनेबाक थ्नचार केलक तखन तँ एकोटा गामक लोक एतऽ नै हेतै।

आ आब ...

मोथ्म्त बाबू पहुँथ्च जाइ िथ्थ। हबोढेकार भऽ कानऽ लगै िथ्थ। हम भथ्र-पाज कऽ पकथ्ि कऽ बैथ्स जाइ थ्ियथ्न्ह।

-गामक िाि कोन टोलक, कोन घर लोक एतऽ नै ि। सिक दुघटिना सेहो भेल ि। मुदा बथ्च-बथ्च जाइ िलै। अमरो बथ्च जैतै तँ कते नीक होइतै। अपंगो भऽ कऽ रथ्हतै तँ देखबो तँ कथ्रतथ्ऐ। हे कथ्नयाके आथ्ब नै देबऽ देबै, डेढ़मासक बच्चा ि। बच्चा लीलो भऽ जाएत। नै, हमही देबै आथ्ग.. आन देबो करतै तँ अथ्न्तम थ्दन तँ उतरी कथ्नयाक गरामे आथ्बये जेतै। ते हमही देबै आथ्ग।

-एह.. एकैसे बरखक तँ ि, िकी सन शरीर ि कथ्नयाक। चाथ्रटा भाइ ि, सभ एकरासँ पैघ। ओकर जीवन कोना थ्बततै। ऐ बूढ़ शरीरसँ बच्चाके हम कोना पोसबै। कतबो िनीक रहै ि, नोकरी लेल पठबैते ि.. पीअरो बच्चा तँ पठेने िथ्थ अपन बच्चाके। ओकरासँ बेसी के ि िनीक गाममे? हमरा तँ दस कटा जमीनो नै पुरत... रौ दैब... कहै िथ्लऐ जे हम नै जाएब थ्दल्ली...... संताप देखैले की जाएब? मुदा कहलकै जे लाशे नै देत। आ आब आथ्ब गेल िी तँ हमही देबै आथ्ग।

-नै, से नै हएत, बाप कतौ आथ्ग देलकैहे... अहाके अश्मसानघाटो नै जेबाक अथ्ि। सभ पुरना गप थ्बसथ्र जाउ... ओकर थ्पथ्तयौतके देबए थ्दयौ आथ्ग... ऐ पथ्रथ्स्थथ्तमे पुरान गप थ्बसथ्र जाउ।

-नै, से भाथ्तजक पथ्र हमरा कोनो तेहन आन भावना नै अथ्ि। ठीक ि... सुमनजी दौ आथ्ग।

६

एकैसम शताब्दीक पथ्हल दशकक अथ्न्तम राथ्तक घटना, आ ओकर बादक भोर। मुदा नै ि कोनो अन्तर। पथ्हराबा आ पुरखपातके िथ्थ थ्दयौ। मथ्हला तँ वएह... ।

ऐ कनकनाइत बसातसँ बेशी मारख। हािमे ढुकल जाइत अथ्ि। कमला कात नै यमुनाक कात। हजार माइल

दूर गामसँ आबथि। अ‍जझर होइत अछि खरखिवाली काकीक शेत वस्‍त्र। साइठ साल पूबक्रि वएह श्‍वसा, वएह समाज, माि पश्‍चराबा बदस्‍त्र गेल, माि िर बदस्‍त्र गेल।

गोपीचानन, गंगौट, माला, उज्‍जर नव वस्‍त्र, मुँहमे तुलसीदल, सुवर्णखिण्‍ड, गंगाजल, कुश पसारल भूमि, तुलसी गाि लग उतर मुँहे पोस्टमार्टम कएल शरीर आनल जाइए। फेर ओतऽसँ यमुना कात...

कनकनी ि बसातमे, हाििमे ढुक्‍क जाएत ई कनकनी, पोस्टमार्टम कएल शरीर जे राखल अछि, सातटा मोटका श्‍वाल्‍लपर, कमला कात नै यमुनाक कात, जिति कनीकालमे।

सुमनजी सेहो नव उज्‍जर वस्‍त्र पहीरि, जनौ, उतरी पहीरि, नव माटक बतनिक जलसँ, तेकुशासँ पूब मुँहे मंि पढ़ै ि‍थि आ ओइ जलसँ मृतकके श्‍वाक्‍त करै ि‍थि, वामा हाििमे ऊक लऽ गोइठाक आगिसँ िकिबैत ि‍थि, तीन बेर मृतकक पदीक्‍णा कऽ मुँहमे आगि अग्‍नि होइत अछि। लकिी कोना राखल जाए तइपर दू गोटेमे बहसा-बहसी भऽ रहल अछि। लगैए झगिा भऽ जेतै। पश्‍चल गोटे कश्‍च रहल ि‍थि- एना लकिी नै तोपल जाइ ि, कतबो घी कपूरि देबै आगि नै िरत। मुदा श्‍कि काल आर। सातटा श्‍वाल्‍लपर राखल ओ शरीर, अश्‍मा लीश्‍म रहल सुरडाह कऽ रहल। एकटा पश्‍वार फेरसँ बनत आ तीस बखक्रि बाद देखब ओकर पश्‍णाम। तािि हाििमे ढुकल रहत ई सदिकनकनी, ऐ बसातक कनकनीसँ बरड बेशी सदि सभ श्‍वल्‍लीयेमे रहता, श्‍वल्‍लीसँ लिबा लेल, इश्‍डयाके महाशश्‍क्‍त बनेबा लेल, अपन पगश्‍वाक आशामे, अश्‍याला खाढ़ी लेल एतेक तँ बश्‍लदान देबैए पिति, ई सोचैत।

कपास, काठ, घृत, िूमिन, कपूरि, चानन कपोतवेश मृतक। पाच-पाचटा लकिी सभ दैत ि‍थि।

कपोतक दति शरीरावशेष सन मासश्‍यण्‍ड भऽ गेलापर, सतकश्‍चया लऽ सातबेर पदश्‍कणा कऽ, कुरहश्‍रसँ ओश्‍च ऊकक सात िी सँ खण्‍ड कऽ, सातो बनिनके काश्‍च सातो सतकश्‍चया आश्‍गमे फेश्‍क बाल-वृदके आगा कऽ एिी-दौिी बचबैत नहाइले जाइ ि‍थि, श्‍वालाञ्‍श्‍ल मोिि-श्‍वाल-जलसँ, श्‍वनु देह पोििने, मृतकक आंगनमे दारपर कमसँ लोह, पािर, आगि आ पाश्‍न स्‍पशकिऽ सभ घर घुश्‍र जाइ ि‍थि।

सहसबाढ़श्‍न (उपन्‍यास)

“एक दिन कक्कातके देखलहुँ जे ठेहुनिाया मारने आगू जा रहल छथि । आँगनसँ बाहर भेला पर जतए आँकर-पाछिर देखलथिन्ह ततए ठेहुन उठा कऽ, माछि हाछि आ पएरपर आगू बढए लगलाह”, पतीके मोन पछिलखिन्ह।
“एक दिन हम देखलहुँ जे ओ देबालके पकडि कऽ खिडकी पर ठाढ़ हेबाक पयासमे छथि । हमरो की फूरल जे चलू आइ छौथि दैत छियन्हि। स्वयम पयास करताह । दू बेर पयासमे ऊपर जाइत-जाइत देवालके पकछिने-पकछिने कोच पर खसि गेलाह । हाछि पहुँचबे नहि करथिन्ह । फेर तेसर बेर जेना फाँदि गेलाह आ हाछि खिडकी पर पहुँचि गेलथिन्ह आ एकदम्मे ठाढ़ भऽ गेलाह”, झिंगुर बाबूके एकाएकी मोन पछिलखिन्ह।
“एक दिन हम एक-दू बाजि कऽ हिसाब कऽ रहल छिहुँ । हम बजलहुँ एक तँ ई बजलाह, हूँ । फेर हम बजलहुँ दू तँ ई बजलाह, ऊ । तखन हमरा लागल जे ई तँ हमर नकल उतारि रहल छथि”।
“एक दिन खेत परसँ अएलहुँ आ नहा-सोना भोजन कऽ खखसि रहल छिहुँ। अहाहाऽ केलहुँ तँ लागल जेना कक्कात सेहो अहाहाऽ केलथि । घुमि कऽ देखलहुँ तँ ओ बैसि कऽ गेदसँ खेला रहल छिाह । दोसर बेर खखसलहुँ तँ पुना ई खखसलाह । हम कहलहुँ जे आर थकिि नहि, ई हमर नकल कऽ रहल छथि । दलान पर सभ क्यो हँसऽ लागल । फेर तँ जे आबए कहए- कक्कात ऊहुहूँ, तँ जवाबमे ईहो ऊहूहूँ कहथि, एकटा दोसरे तरीकासँ।”

जाहि बालकके झिंगुरबाबू पछिल-पछिल अन्यमनस्क पछि आ माछि सपनामे हँसैत देखलथिन्ह से तकर बाद ठेहुनिाया मारैत, फेर चलैत आब शिक्षा-दीक्षा पाप्त कऽ रहल छथि । हुनका अखनो मोन पडि रहल छिन्ह जे कोना ठेहुनिाया दैत काल नेनाक हाछि आगू नहि बढैक आ ओ बेग जका पाछिसँ सोझे आगू फाँदि जाइत छि । पूरा बेग जका- अनायासहि ओ हँसि उठलाह ।
पती पूछि देलथिन्ह “कोन बात पर मुस्की देलहुँ ?”, तँ पहिने तँ ओ ना-नुकुर केलथिन्ह, फेर सभटा मोनमे सोचल-घुरमल गप कहि देलथिन्ह आ सुनि लेलथिन्ह । आब तकरा बाद गपसँ गप निकलऽ लागल।

सन् १८८५ ई.। झिंगुर ठाकुरक घरमे एकटा बालकक जन्म भेल रहए ।
ई वर्ष कांग्रेस पार्टीक स्थापनाक कारण बादक समयमे एकटा महत्वपूर्ण घटनाक रूपमे वर्णित होमएबला छि । अंग्रेजी राज अपनाके पूर्णरूपसँ स्थापित कऽ चुकल रहए । राजा-रजवाडासभ अपनाके अंग्रेजक भक्ति बुझवामे गौरवक अनुभव करैत छिाह । शैक्षिक जगतमे कांग्रेस शीघ्रहि उपरवी तत्वक रूपमे पचारित भए गेल रहए । संस्कृतक रटन्त विद्याक स्वरूप खतम होअएबला
छि । सरकारी पद बिना आङल शिखने भेटब असंभव छि । सरकारी पदक तात्पर्य राजा-रजवाडाक वसूली कार्यसँ संबंधित आ ओतबहि धरि सीमित छि ।
तखन बालकके संस्कृत शिक्षाक मोहसँ दूर राखल गेल । परिवारमे अंग्रेजीक पवेश पाया नहियेक बराबर छि आ ताहि कारणसँ परिवार एक पीढ़ी पाछि चलि गेल रहए । मुदा झिंगुर बाबू अपन पुकि लेल एकटा कलकतियाबाबू मास्टरके राखि शिक्षाक व्यवस्था कएलथिन्ह । तदुपरात दरभङ्गामे एकटा दोसर बंगालीबाबू बालकके अंग्रेजीक शिक्षा देलथिन्ह । बालक कक्कात शनै शनै अपन चातुर्यसँ मंछिमुक्ति करबाक कलामे पारंगत भऽ गेलाह।

“हम जे सुनेलहुँ तखन हुनकर वयस होएतन्हि, छि आकि सात मास”।
“हम जे सुनेलहुँ तखन उमरि कतेक हेतन्हि, बड़ि बेसी तँ नौ आकि दस मासक”।
पती सासु-ससुर वा बाहरी सदस्य नहि रहला पर सोझे -‘गप सुनलहुँ’ आकि ई कर वा ओ कर बजैत छलीह । मुदा सासु-ससुरक सोझा बजैत रहथि- सुनैत छथिन्ह, फलना कहैत छलैक । आ फेर झींगुर बाबू की कम छलाह. ओहो ओहिना गीताक दर्शन-काजक लेल काजक अनुकरणमे उतर देथि । मुदा एकातमे फेर सभ ठीक ।
पुना मुस्कुरा उठलाह झींगुर बाबू, ई पण मोने-मोन लेलथि जे कहिआतके एहि जंजालसँ मुक्त करेतथि, ओहो तँ बूझथि जे पिता कोनो पुरान-धुरान लोक नहि छथिन ।
पती पुना पुछलथिन्ह जे आब कोन बात पर मुस्की छूटल । मुदा एहि बेर झींगुर बाबू कनी काछि गेलाह । मुस्की दैत दलान दिस बहरा गेलाह, ओतए धरि गोटे अखड़िहाक रख-रखाबक बात कऽ रहल छलाह । भोरहा कातक अखड़िहाक गपे धरि आर छल । भोरे-भोर सभ तुरियाक बच्चा सभ, जवान -सभ पहुँचि जाइत छल । एकदम गदा सन अखड़िहा, माटि कऽ कोड़ि आ चूर्णि कऽ बनाएल । बालक कहिआतके छोड़ि सभ बच्चा ओतए पहुँचैत छल । झींगुर बाबूके एहि गपपर कचोट होइन्हि तँ आन लोक सभ कहथिन्ह, जे से की कहैत छी । अहा हुनका कोनो उदेश्यक प्राप्ति लेल अपनासँ दूर रखने छी तँ एहिमे कचोट करैक । एकौरसँ ठाकुर परिवारक मात्र एक घर मेहथि आएल आ आब ओहिसँ पाचटा परिवार भऽ गेल अछि । डकही मात्र दसमे एकटा टोलक बराबरी ठकुरपटीके भेटि गेल छैक। कहिआतक तुरियाक बच्चाके लऽ कऽ आठटा परिवार अछि ठकुरपटीमे । अखनेसँ बच्चा सभके मान्यता दऽ देल गेल छैक ।
तखने एकौरसँ एकटा समादी अएलाह आ भोजपत्रपर पिरहुतामे लिखल संदेश देलथिन्ह । झींगुर बाबू अँगनासँ लोटा आ एक डोल पानि हुनका देलथिन्ह आ पत्र पढ़ए लगलाह । पाया कोनो उपनयनक हकार छलन्हि ।
‘परतापुरक सभागाछी देखि कऽ जाएब, ई आदेशपूर्ण आग्रह झींगुर बाबू समादीके देलथिन्ह । एकटा पूर्वजसँ मूल-गोत्रक माध्यमसँ जुड़ल परिवादक प्रति अनायासहि एकत्वक प्रेरणा भेलन्हि । फेर आँगनमे पत्र पढ़ब प्रारंभ कएलन्हि।
॥पत्र॥
स्वस्ति हरिवदराध्यमित्रस्तु झींगुर ठाकुर पितृचरण कमलेषु इतः श्री गुलाबस्य कोटिशः प्रणामाः संतु । शतं कुशलम् । आगा समाचार जे हमर सुपुत्र श्री गणेश आ चन्द्रमोहनक उपनयन संस्कारक समाचार सुनबैत हर्षित छी । अहाक पितामह आ हमर पितामह संगहि पढ़लन्हि । अपन गोत्रीयक समाचार लैत-दैत रहबाक आदेश हमर पितामह देने गेल छलाह । हर्षक वा शोकक कोनो घटनाक सूचना हमरा गामसँ अहाक गाम आ अहाक गामसँ हमरा गाम नहि अएने आ विशेष कऽ अशोचक विचार नहि कएने भविष्यमे अप्रिय क डर अछि । संप्रति अपने पाचो ठाकुर गुरुजनक तुल्य पाच पाडवक समान समारोहमे आबि कृतार्थ करी । अहीके अपन ज्येष्ठ पुत्र आचार्य बनेबाक विचार कएने छी । परतापुरक सभागाछीक पंचकोशीमे अपने सभ गेल छी, ते बहुत रास लोक गप-शपक लेल लालायित सेहो छथि । अगला मासनाक प्रतिपदा सोमके ज्यो आबि जाइ तँ सभ कार्य निरन्तर चलैत रहत । बुधिसँ पाया प्रारम्भक कार्यसभ शुरु भऽ जएत। इति शुभम् ।
बलान धारक कातमे परतापुरक चतरल-चतरल गाछ सभ आ तकर नीचा सभागाछी । बलानक धार खूब गहीर

आ पूणिशात । ई तँ बादमे श्चमालयसँ कोनो पैघ गाि बलानमे खसल आ थपराघाट लग सोझ रहलाक बदला टेढ़ भऽ िरिके रोथ्क देलक आ एकटा नव िर कमलाक उत्पन्न भेल । बलान झंझारपुर थ्स आ कमला-मेहि, गथ्या आ नरआर थ्स । बलान गहीर आ शात, रेतक कतहु पता नथ्; मुदा कमला फेथ्ल, थ्नाशकारी । बाथ्क संग रेत कमला आनए लगलीह । गीष्म ऋतुमे बलान अपन पूवरिप िने रहैत िथ्, थ्ना नाहक पार केनाइ कथ्न । थ्कंतु एथ् मासमे कमलामहारानीके पएरे लोक पार करैत िथ् । सभागािक सभटा चतरल गाि बाथ्क पकोपमे सुखा गेल । चार थ्स रेत । आ सभागाि उपथ् गेल । चथ् गेल सभटा वैभव सौराठ । थ्झंगुर बाबूक कालमे परतोपुरक धुवसँ पंचकोशी नापल जाइत िल ।

कथ्त दथ्भङासँ परसू आथ् जएताह, तखन हुनका लऽ कऽ एकौर

जाएब । बेचारे बहुत थ्न तपस्या कएलथ्ह । एथ् बेर मामा गाम, दीदी गाम सभ ठाम घुमा देबथ्ह । सभके मोन लागल िक।

थ्ता-पुि एकौर पहुँचलाह । ई गाम कोनो तरहे आन जका नथ् लगलथ्ह । जेना जमघट लगला पर शासिािकि परम्परा रहल अथ्, तथ्ना थ्दतमण्डलीमे थ्थ्ान थ्षय पर चचा हुअए लागल । चचामे अंगेजी शासन आ भारतवासीक सैन्य अथ्यान सेहो रहल । मँगरबाबू लाल कोट पथ्थ् कए कतेक लिइ लिल िलाह । १८६७-६८ क अबीसीथ्या युदमे सर चाल्सनिथ्यरक संग कोनाके अथ्यानमे ओ गेल िलाह, तकर वणिन थ्स्तृत रपमे देबए लगलाह मँगरबाबू । थ्तीय अफगान-युदमे कोना समयक अभावमे सेनाके लालक बदला मथ्ाहि वदी लगबए पड़लैक तकर वणिन सेहो देलथ्ह । यैह वदी बादमे खाकी रंगक रपमे पथ्ाद भऽ गेल । एनफील्ड रायफलक थ्स्सा जे १८५७ क स्वतंतिा संगाममे पथ्णत भेल, केर बदलामे बेश नमगर स्नाइडर रायफल जे १८८७ मे देल गेल । मँगर बाबू कागेसक चचा सेहो केलथ्ह ।ओम्हर थ्झंगुर बाबू भोज-भातक फेहथ्स्ट आ एस्टीमेट बनबए लगलाह । कथ्त सेहो अपन तुथ्याक थ्दाि सभक संग मगन भऽ गेलाह । ओथ् भीिमे राजे गामक फनू बाबू सेहो आएल िलाह । एकौरमे हुनकर बथ्न-बथ्नोइ रहैत िलथ्न्ह । ताथ् दारे एतए एनाइ-गेनाइ ओ थ्िि बेशी करैत िलाह । कथ्तके एथ्सँ पथ्ने ओ नथ् देखने रहथ् । एकाएक उत्सुकता भेलथ्ह आ कथ्तक थ्षयमे पूिपाि केलथ्ह । ई जाथ् जे कथ्त थ्झंगुरबाबूक सुपुि िथ्, क्णथ्मे थ्झंगुरबाबू लग घुसथ्क कऽ चथ् अएलाह । वाताालापक कममे थ्झंगुर बाबू सँ ईहो पता लगलथ्ह जे जमीन्दारीक पमानेन्ट सेटलमेन्टक बाद दथ्भङा राजके वसूलीक लेल परगनाक आिरपर थ्थ्ला केिसँ कर वसूलीक अथ्कार पाप्त भेल आ पढ़ाइक बाद कथ्त कथ्हारमे कर वसूलीक कायकि हेतु जएताह । एम्हर अंगेजीक थ्ाका कथ्त पूणकिऽ लेने िलाह । पता लागल जे फनू बाबू अपन बथ्याक हेतु योग्य वरक ताथ्कमे िथ् । तखन थ्चार भेल जे परतापुरक सभागािमे अथ्ला मथ्नामे फनू बाबू आबथ् आ थ्झंगुर बाबूके आथ्थ्यक अवसर भेटथ्ह । मुदा बीचथ्मे थ्याद सभ थ्झंगुर बाबूकँ तेना ने घेरलकथ्ह जे कथ्तक थ्वाह फनू बाबूक बथ्यासँ ठीक करैत आ भराममे थ्ादात करेनथ् ओ गाम पहुँचलाह । डरो होइथ्ह जे कथ्या ने कतहु रपटा दऽ देथ् । मुदा थ्वाहक बात सुथ्तथ् कथ्या खुशीसँ बताथ् जका भऽ गेलीह । पथ्ला चाथ् थ्नसँ जतेक गुनिनी लागल रहथ्ह सभटा खतम भऽ गेलथ्ह।

पाव-पैदल थ्कंवा कटही गािी यैह िल यातायातक सािन । महफा सेहो सबारी िल सेहो बेश नकाशीवला आ

भश्वगर । वर महफा पर आ बश्चयातीमे जे युवा रहथ्धि से पएरे । आ जे कनेक उमश्वगर रहथ्धि से कटही गा ीपर थ्वदा भेलाह । दरबज्जापर स्वागत भेलश्चह । सुगश्च , फूल, जलपान । ई सभ बश्चयातीमे थ्वक ि गोटेके अनसोहात लगलश्चह । बश्चयाती लोकश्चक गप्प सरका चलैत रहल । शास ि ि आ चुटुका । अँगनामे पश्व श्चि आ थ्वधि-व्यवहार तँ दलान पर गप्पक फूहाश्व । बीच-बीचमे क्यो आश्च कऽ थ्वक ि ताकथ्धि-बाजथ्धि आ फेर कतहु जाथ्धि । गहना कतए ि क । घोघट के देथ्धिन्ह । घोघटाही नूआ नश्च भेश्च रहल अथ्धि । एश्चसँ थ्ववाहक कम आ पगश्चक थ्वषयमे बश्चयाती लोकश्चके सेहो पता चलैत रहैत ि लश्चह। एवम् पकारे आँगन आ दरबज्जा दुनू ठाम थ्ववाहक कायक्रिम भोरक पाच बजे ि श्व चलैत रहल । वर आ कश्चयाक हा ि मे बह चारी डोरी बाश्चह देल गेल, जे चाश्व थ्वन ि श्व रहत । तकर बाद थ्ववाह पूणभिेल ।
थ्वदाइक थ्वन तका कए श्चंगुर बाबू पठेलथ्श्चन्ह आ कश्चत अपन गाम आश्च गेलाह । आब हुनकर कश्चहार जएबाक तैयारी कएल गेलश्चह । अ ि पूश्वत नेि सँ माए आ गामीणसँ थ्वदा लेलाक बाद कश्चत अपन रोजगार पर गेलाह।

कोशीक थ्वभीश्वकासँ ि स्त केि होइत कश्चहार पहुँश्च कऽ कश्चत अपन काजमे शीघश्च पारंगत भऽ गेलाह । काजक अधिकता भेलापर अपन थ्यश्चयौत भाए आ भाश्चजके सेहो बजा लेलश्चह। एश्च केि क लोकक बीचमे ि ि बिेक थ्वनमे अपन पश्चाष ा बढ़ा लेलथ्धि कश्चत । एतए जमीन्दारीक परमानेट सेटलमेन्टक थ्वषयमे पुरान अनुभव ब ि खराप ि ल । वसूली पदाधिकारीक भष तरीका सभके कश्चत बदश्च देलथ्श्चन्ह । मुदा कालक लग थ्वक ि आरे श्चखल रहए । कश्चतक थ्वरागमनक पश्चनश्च हुनकर माए गुजश्च गेलथ्श्चन्ह । बर ड रास सौख-मनोर ि लेने चश्च गेलीह माए । कखनो कश्चतके कहैत ि लथ्श्चन्ह जे तोरा कश्चयासँ खूब झग ि करबौक तखन देखबौक जे तूँ हमर पक लैत ि ँह आश्वक कश्चयाक। आब श्चंगुर बाबू सेहो अन्यमनस्क रहए लगलाह । कश्चत कहबो केलथ्श्चन्ह जे सँगश्च चलू, मुदा भश्व जन्म जतए रहलाह ओश्च ठामके ि ि ि कोना ?

तेसर साल कश्चतक थ्वरागमन भेलश्चह आ तकरा बादे श्चंगुर बाबू श्वधिं त भऽ सकलाह । जाइत-जाइत कश्चतके कहैत गेलथ्श्चन्ह जे तो तँ बेशीकाल गामसँ बाहरे रहलह । हमरा सबहक सेवा तँ ई बुश्चया केलक । अपन बश्चनक भार आब तोहीं उठाबह । हम सोचने ि लहुँ जे एकर थ्ववाह दान करबाइए कऽ श्वधिं त हएब । मुदा तोहर माए हमरा तोधि देलश्चह । आब तूँ अपना जोगर भइए गेल ि ह । पाच बरखक बेटा रहैत ि क तखनो लोक के लोक कहैत ि क जे अहा के कोन बातक थ्वंता अथ्धि, पाच बरखक बेटा अथ्धि । तूँ तँ आब पश्च श्चाश्च कऽ अपन जीवन यापन करैत ि ह । फेर पुतोहुके बुश्चयाक हा ि पक ि कऽ एश्च लोकसँ ि टी लेलश्चह श्चँगुर बाबू । कश्चत हुनका एतेक हरब ि मे कश्चयो नश्च देखने ि लथ्श्चन्ह । थ्व ि र, शातथ्वत आ फलक थ्वंता केश्चहार थ्वकसान सेहो अपन जीवन-संगीक संग ि टलाक बाद अ ि र भऽ गेल ि ल ।

कश्चतके कश्चहार घुरलाक बादो एकेटा थ्वन्ता लागल रहैत ि लश्चह । से ि ल बुश्चयाक थ्ववाहक । थ्वताक रहैत ओ कोनो परेशानीसँ थ्वश्चतत नश्च होइत ि लाह । मुदा हुनका गेलाक बाद आब लोकोके देखेबाक ि लश्चह

जे क्यो ई नञि कहए जे बापक गेलाक बाद बहिनन पर ध्यान नञि देलखिन्ह कश्यात । थताक बरखी ि खि थवाहक पश उठेबो कोना कश्यतथि । मुदा समय श्रतबामे कतेक देरी लगैत िक । पूरा गामक भोज कऽ कश्यात बुश्यायाक थवाहक लेल वर ताकएमे लाग्ा गेलाह । परतापुरक सभागाािमे गेलाह मुदा कोनो वर पश्यन नञि पलिखिन्ह जे बुश्यायाक हेतु सुयोल्य होअए । पन्रह थ्वनक ्िटी बेकार गेलखिन्ह । पुना कश्यहार पहुँश्या गेलाह । कायक्रि कममे थादौर, बाढ़ इत्याश्र गंगाक दथ्रण थ्रसक पश्यवार सभसँ सेहो पश्यचय भेलखिन्ह । ओश्यसँ हुनका बाढ़ नगरक लगक गामक एकटा लिकाक थ्रषयमे पता चललखिन्ह जे थादौर स्टेटमे कायिकऽ रहल िलाह । चोटश्यि ओ लिकासँ भेट करबाक लेल थादौर पहुँश्या गेलाह । बालक अत्यंत थ्वक्य िलाह । पता लऽ बाढ़ पहुँश्या कऽ बालकक थतासँ गप केलखिन्ह । पंचकोशीक किा कतबा थ्वनक बाद बाढ़ नगरक लगक एश्यि केिमे आएल िल से एश्यि किाके काटब कश्यन रहए । सभटा गपशप कऽ पुना भराममे थ्वदात करेने मेहि पहुँचलाह । बूढ़- पुरान जे क्यो सुनलखिन्ह से आयिचिथ्वत रश्यि गेलाह । बढ़ए पूत थताक िरमे- थ्वंगुर बाबू जेना कश्यातक थ्वदात करेनश्यि पहुँचल िलाह तश्यना कश्यात केलखिन्ह, वाह... । किा ओनातँ दूरगर भेलखिन्ह, मुदा कश्यात स्वयम् नेनेसँ दूरदेशक बासी िलाह, ताश्यि दारे हुनका सभ चीजक अनुभव िलखिन्ह, यैह सोश्या सभ संतोष कएलक । पूरा टोल थवाहक तैयारीमे लाग्ा गेल । बुश्यायाके कोनो थ्वकत नञि होएतैक । सवगुिण संपन अश्यि बुश्याया । गीत-नाद थ्वअ आश्यक सराय-कटोरा, दसो हजार महादेव सुगढ़ पातर-पातर िनश्यिमे बना दैत अश्यि । जाश्यि घरमे जएत तकरा चमका देत ।
थवाह थश्य-थानिसँ संपन भऽ गेल । वरपक संगश्यि थ्वरागमनक पस्ताव राखलखिन्ह, मुदा कश्यात तैयार नञि भेलाह, तखन बुश्यायाक हािक िप लऽ कऽ वरपक्के जाए पलिखिन्ह ।

कश्यातक पती िलीह पूणिशुदा । बुश्यायासँ बश्यिनापा िलखिन्ह । बुश्यायो भौजी-भौजी कहैत नञि िकैत िलीह । तेसर साल थ्वरागमनक थ्वन भेलैक । बुश्यायाक संग जे खबासनी गेल िलीह से आश्या कऽ गंगा आ गंगा पारक दृश्यक वणिि करए लगलीह तँ भाउजक आँश्यसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलखिन्ह । कश्यातसँ कतेक बेर पुलिथ्रिन्ह जे ई बाढ़ िक कतए । समयक संग सभ थ्वक्ि सामान्य भऽ जाइत अश्यि । बुश्याया जखन एक-दू बेर अएलश्यि-गेलश्यि तखन भाउज आरो थ्वथ्रिन्त भऽ गेलीह । एवम् कमे कश्यात पुना एकाकी भऽ गेलाह । फेर आएल भूकम्प । सन् चौतीसक भूकम्पमे महादेव पोखश्यपर पती आ दुहु पुिा आ एकटा पुिक संग थ्वताओल राश्यक बाद पश्यवार सश्यत थ्वक्ि थ्वनुका लेल कश्यहार गेलाह । कारण िल मश्यना भश्यि चलल िट-िट भूकंपक तरंग । मुदा पतीके घरक पीिा सतबए लगलखिन्ह । घर तँ भूकम्पमे ढश्यि गेल िलखिन्ह, से कश्यात भूथ्रक ओश्यि टुकिाके िश्यि गामक फुलवारीक कातमे नव घरक थ्वमाण केलखिन्ह । अपन पुरान डीह अपन थ्वयादके दऽ एश्यि नबका डीहपर घरहट कएलखिन्ह । तकरा बाद एकटा पुि एवम् एकटा पुिाक पाश्यत आओर भेलखिन्ह । पुना एकटा पाश्यवाश्यक चकक पारंभ भऽ गेल ।
अपन बश्याया सभ सेहो आब थवाह योल्य लागए लगलखिन्ह । अपन बच्चा तँ सश्यखन बच्चे लगैत िक मुदा ते की । पश्यल बश्यायाक थवाह किबी आ दोसरक खररख करेलथ्रिन्ह । किबीक पश्यवार सेहो राज-दरबारक कमचािरी िलाह । घोिा, महफा, चास-बास....। मुदा बच्चा होएबाक कममे कश्यातक पिम पुिाक देहात भऽ गेलखिन्ह मुदा ओकर ननश्यकरबी बश्या गेल आ ओ मातृके मे रहए लागल । मुदा ओहो पाचे वषकि होएत आश्यक एक थ्वन पेटमे ददक्रि थ्वकाइत भेलैक आ ओहो भगवानक घर माएक सेवामे चश्यि गेल । कश्यात जीवन आ

मृत्युक एहि संगामकें देखैत रहलाह । कखनो गाममे हैजाक पकोप पडि लागल छल तँ कखनो प्लेग आ की की ? एक गोटाकें लोक जरा कऽ आबए तँ दोसर गोटाक मृत्युक समाचार भेटए । मुदा कक्काक परिवार अकुण्ण रहलाह।

कक्कातक कचहारमे पदोन्नति आ पदोन्नति बढ़ैत रहलाह । भातृज सभ पूवरि पेण ओतए रहैत छलाह । दुहू पुत्र केजरीवाल हाई स्कूल, झंझारपुरमे पढ़ए लागल छलथिन्ह । कालक मंदिर गतिमे कखनो काल गति आबि जाइत अछि । अपन तेसर पुत्रीक विवाह तमुरिया लग आमार पी गाममे करबा कए कक्कात जेना निश्चिंत भऽ गेलाह । अपन पैघ पुत्रक विवाह करेलाह आ छोट पुत्रक अकादमिक पतिभाक प्रति आश्वस्त भेलाह । मुदा छोट पुत्रक अंतर्मुखी होएबामे सेहो हुनका कोनो संदेह नहि छलन्हि । आ एकर कारण छल जे एक दिन हल्ला उठलैक, जे घनगर चना-गाछीमे, जतए दिनोमे अन्हार रहैत छैक, कोनो गाछक नीचा चाटी उठैत छैक । तखन हुनकर ई पुत्र चाटी उठाबए ओतए पहुँचि गेल छलाह । से जखन आठम वर्गमे विज्ञान वा कला चुनबाक बेर अएलैक, तखन पुत्रक विज्ञान विषय लेबाक निर्णयमे हा मे हा मिला देलथिन्ह कक्कात बाबू । कतेक गोटे कहलथिन्ह जे सत्यनारायण बाबू आ के-के साइंस लऽ फैल कऽ गेलाह, बादमे पुना आटसमे विषय लेबए पडलन्हि । मुदा नन्द नहि मानलथि । साइंसोमे गणित लेलन्हि । कक्कात सोचलथि जे विज्ञान विषय पढ़ि अदृश्यक पति स्नेहमे नन्दक रुचि कम हेतन्हि । पता नहि किएक एकर बाद कक्कात निश्चिंत जका भऽ गेलाह । कचहारसँ एक बेर गाम आएले रहथि । भोरमे नित्यक्रियासँ निवृत भऽ कक्कात हाथ मटियाबए लेल खिड़कीक माटिक ढ़ेर दिसि बढ़ि रहल छलाह आकि पता नहि की भेलन्हि, हाथक लोटा दूर फेका गेलन्हि । ओ नीचा खसि पडलाह । कनिया दौगल अएलीह । मुदा जीवनक खेल एक बेर भेटैछ आ एके बेर चलि जाइछ । नन्द पिताक मृत्युक साक्षी छलाह । मृत्युक ई पकार हुनका लेल सवर्था नवीन आ सवर्था रहस्यमयी छल । अदृश्यक शक्ति विज्ञानक सवोच्चताकें नन्दक जीवनमे दबाबए लागल।

वृतक गोलाकार आकृति केरक परिधिमे घुमैत एकटा चक पूरा केलक । अदृश्य केरक फासमे फँसल । नन्द अपन यशोदा माएक छत्रछायामे बढ़ए लगलाह, उमरियोमे आ पढ़ाइयोमे । अपन बालक लोकनिक प्रिय पात्र भऽ गेलाह नन्द । हुनकर पैन्टशर्टकलक कॉपीक साफ-सुथरा रूपक चर्चा सवर्त्र शिक्षकहु वर्गमे होमए लागल । फूल-सन अक्षर हुनकर शारीरिक सौन्दर्यसँ मेल खाइत

छल ।

एहि बीच एकटा आर घटना घटित भेल । यशोदा माएक दुहु पुत्र भगवती घरक सोझामे नीचामे सुतल छलाह । भोरमे माए देखलन्हि जे गहुमन साप चारि टुकड़ा भेल पडल अछि आ बिजली बच्चा सभक माथ लग ठाढ़ पहरा दऽ रहल अछि । पाया बिजलीक मारि पडलैक गहुमनकें आ दुहु पुत्र सुरक्षित रहलाह यशोदा माएक । नन्द एहि घटनाक स्मृतिक संग आगू बढ़ए लगलाह । बीचमे बँटवारा भेल । घरारी सभ, बाकहा खेत सभ सभटा दू-दू टुकड़ा होमए

लागल । बाहरी लोक सभ कहैत छल जे दुनू भाएक संग अन्याय भऽ रहल अछि । स्कॉलरशिप पाप्त कऽ नन्द आर.के.कॉलेज मधुबनीमे अंतर-स्नातक विज्ञानक गणित शाखामे नामाकन लेलन्हि। शुरु मे गणित बुझबामे दिक्कत भेलन्हि तँ रटए लगलाह । गणितकें रटबाक बुद्धि ई सोचिकें लगेलथि जे बादमे लोक ई नहि कहए,

जे की सोझ्म कऽ थ्रजानक चयन कएलक । मुदा थ्रक्ि थ्रनका बाद रटैत कममे बुझबामे सेहो आबए लगलथ्रह। गामक फुटबॉल मैदानक स्मृथ्राए शेष रहलथ्रह, खेलेबाक अवसरे नथ्र भेटथ्रह । गथ्रातक थ्राक्क तीन सए पशक सेट परीक्राक पथ्रने दैत लिथ्रवन्ह आ कहैत लिथ्रवन्ह जे, जे क्यो साथ्र पथ्राशत पशक सही-सही उतर बना लेताह ओ पमि णीमे थ्राथ्रीत रपसँ उतीणि
होएताह । नन्द सतथ्र पथ्राशत पशक उतर तैयार कऽ थ्राक्कके देखा
देलथ्रवन्ह । आशानुरप बादमे परीक्राक पथ्रणाम अएलापर पमि णी भेटलथ्रह । १९५९ मे इंजीथ्रायथ्रंगमे नामाकनक हेतु आवेदन दऽ देलथ्रवन्ह । अंकक आिर पर सवोच्च अंक अएला उतर मुजफ्फरपुर इंस्टीटयूट ऑफ टेकॉलोजीमे नामाकन लऽ लेलथ्रि । ओथ्र समय माि थ्राथ्रल इंजीथ्रायथ्रंग शाखाक पढ़ाई ओथ्र संसिानमे होइत लिैक, से ओथ्र शाखामे नामाकन लऽ िती-कुता पथ्रथ्र कऽ ओतए पहुँथ्र गेलाह । पोफेसर दीथ्रक्त साहेब वकशॉपक मशीन देखा कहलथ्रवन्ह जे एथ्रमे िती फँथ्र जएत । से फुलपैट आ शटपिथ्रथ्र कऽ आऊ । दू टा फुलपैन्ट आ शटकीनए पलिथ्रह नन्दके । कपाि कीथ्रा थ्राएथ्रातथ्रि तँ ढ़ेर थ्रन लाथ्रा जएतथ्रह से रेडीमेड कीनए पलिथ्रह । मुदा गाम जाथ्रि तँ गामसँ दूर थ्रदेसरे सिानमे फुलपैन्ट-शटबिदथ्र कऽ िती कुता पथ्रथ्र लैत लिाह । कथ्रयो गाम फुलपैट पथ्रथ्र कऽ नथ्र गेल लिाह । सन् १९५९ सँ १९६३ थ्रि इंजीथ्रायथ्रंगक पढ़ाइ चललथ्रह आ तखन थ्रहार सरकारमे इंजीथ्रायथ्रंग अथ्रासटेन्ट आ एक सालक बाद १९६४ सँ सहायक अथ्रायन्ताक रपमे बहाली भेलथ्रह । इंजीथ्रायथ्रंग पढ़ाइ थ्रशेष खचबिला लि से एथ्र शतिमाक संग थ्रवाह भेलथ्रह जे पढ़ाइक खचा ससुर उठेथ्रिन्ह । मुदा गमी ताथ्रालमे एक मास आ दुगापूजामे पंरह थ्रनक िटी कॉलेजमे रहैत लिैक से एतेक थ्रनुका पाइ ससुर काथ्र लैत लिथ्रिन्ह आ सालमे बारह मासक बदला माि साढ़े दस मथ्रनाक खचा दैत रहथ्रिन्ह । बादमे ज्यो सासुरक लोक कथ्रयो ई उपराग दैत लिथ्रह जे हमही सभ इंजीथ्रायथ्रंग करबेलहुँ अथ्रि तँ नन्द सेहो हँथ्र कऽ उपयुक्त बातक खुलासा कऽ दैत लिथ्रवन्ह । वृतक पथ्रथ्रि जेना पैघ भेल जा रहल लि । कालक पथ्रथ्रि पथ्रने पूणाचिक पूरा कएलक आ आब पथ्रथ्रिक थ्रस्तार शुर भऽ गेल । दुाख-सुख आ उतिान-पतनक थ्रवस्सा ।
स्पतंतिा थ्रवसक थ्रनक उमंग, झंडा लऽ कऽ स्कूलक बच्चाक संग १५ अगस्त १९४७ के घुमैत लिाह । कागेसक भथ्रक्त संगमे रहलथ्रह । मुदा १९६२ क चीनी आकमणक बाद भारतीय सेनाक पाि हटबाक दुास्पप । वायुसेनाक उपयोग नथ्र करबाक भारतक आियिनक थ्राणथ्रिक बादक मनाथ्रथ्रिा लि पलायनक आ हाथ्रक । ऑल इंथ्रया रेथ्रयोक घोषणा जे हमर सेना गवसिँ पाि हथ्र रहल अथ्रि - सुथ्र नन्दक हृदय रथ्रक सन जाइथ्रह । से जखन १९६५ क युदक बेर इंजीथ्रायरक भती सेनामे कैप्टनक रपमे शुर भेल तखन नन्द आ साहा साहेब आवेदन दऽ देलथ्रवन्ह । साहा साहेबक कथ्राया तँ कानए लगलीह आ साहा साहेबके रथ्रक जाए पलिथ्रह । नन्दक पती एको बेर पथ्रारोि नथ्र कएलथ्रह । मुदा ओजनमे बेशी भेलासँ िटा गेलाह नन्द । मसोथ्र कऽ रथ्र गेलाह । तकर बाद जे शरीर घटेबाक सूर चढ़लथ्रह, से बथ्रते गेलथ्रह । एकेटा सपना लिथ्रह - गाममे कोठाक घर । से सभटा सवे सभक नक्शा ऊपर कऽ घरक कुसी देलथ्रह जे सिकमे घरक कोनो भाग नथ्र जाए । मकानक थ्रजाइनक माि आि भाग पूरा भऽ सकलथ्रह । जतए-जतए टासफर होइथ्रह एकटा नव अनुभव भेटथ्रह । ओथ्र समय कथ्रायाके तृतीय पुरषक रपमे संबोथ्रित करबाक पचलन लिैक, मुदा नन्द थ्रतीय पुरषमे संबोिन शुर केलथ्रह । एकर आलोचना होएबाक बदला गाममे आनो लोक सभ ई संबोिन अपना घरमे शुर करैत जाइत गेलाह । सिानान्तरणक कममे डेहरी-ऑन-सोनमे थ्रकास कायमि गामीण आथ्रवासीक

पूर्ण सहयोग भेटलन्हि । कखनो पाइ देखि कऽ अंतरात्मा नहि डोलगलन्हि । जी-जानसँ जीप उठा कऽ अपन कार्यकेँ पूर्ण करथि । कखनो जीप तेज होइन्हि तँ मोन पड़न्हि जे कोनो बच्चा ने कुचा जाए । मुदा कहियो कोनो दुर्घटना नहि भेलन्हि । गामक सभ जाति आ लोकके कतहु ने कतहु मस्टरे रॉल पर नोकरी देलन्हि । स्थानीय लोकके सेहो नोकरी करबाक हेतु पोत्साहित करैत छलाह । स्थानीय गरीब आदिवासी नन्दके देवता बुझैत छलाह । एतहि दमाक पहिल बेर अटैक भेलन्हि नन्द पर । स्थानीय वैद पवन-रानी एक कऽ जंगलसँ बीट आनि कऽ देलकन्हि । दमाक इलाज एलोपैथीमे नहि अछि मुदा एहि बूटीक एकमात्र खोराकी सँ अगिला कतेक साल धरि नन्द दमासँ दूर रहलाह । सँगी सभ भोलेनाथ नाम राखि देलथिन्ह । कतेक कमाइ-धमाइक तरीका सभ सिखेबाक पयास सेहो केलखिन्ह । मुदा गामीण जनक लाचारीके ततेक लगसँ देखने छलाह नन्द जे एहि सभ गप दिस ध्यानो नहि जाइत छलन्हि । ताहुमे गरीबीक बादो जे आपकता स्थानीय जनसँ भेटैत छलन्हि, तकरा बाद ? एहि बीच एक पुत्रीक पाप्ति सेहो भेलन्हि । दोसर बेर पुत्र पाप्ति भेलन्हि । पुत्री मामा गाममे जन्म लेलथिन्ह आ पुत्र अपन गाममे । बच्चा सभक पति तिपज भाव, फेर हँसब फेर ठेहुनिया...... बच्चाक बढ़बाक पक्रियाक दर्शन ओहिना अछि जेना पकाशक आगमाण ओ ओकर चेतनाक विकास । हुनकर एकटा भाइजक देहात नेनेमे भऽ गेल रहन्हि आ तकर बाद एहि दुनू बच्चाक पति तिपजताक भाव, सुखमे सुखी नहि आ दु:खमे दुखी नहि क अवतरण भेल नन्दमे । नन्द बदली कोनो टेनिंगमे गेल छलाह । एक राति सपना देखलन्हि जे हुनकर भाइज नवीन गाममे फूसक घरक ओसारा पर बैसल छथि । ओ नेना जकरासँ नन्दके बरड आपकता छलन्हि, उधि कए खेलाइ लेल जाइत अछि । कनेक कालक बाद पेटमे दर्दसँ छटपटाइत करैत अछि । सभ क्यो जमा भऽ जाइत छथि । बूढ़-पुरान अपन-अपन नुस्खा देबए लगैत छथि । मुदा कनिए कालक बाद बच्चाक मृत्यु भऽ जाइत अछि । नन्दक आँखि खुजि गेलन्हि । हुनका अपन बच्चाकी बच्चनक बच्चिया मोन पड़लन्हि । एहने घटना छल ओहो । बच्चियाके क्यो बूढ़ी पेट पर हाथ दऽ देने छल आ ओ कनेक कालक बाद संयोगवश पेट दर्दसँ काल कवलित भऽ गेल छलीह । नन्दके अदृश्य, भूत-पेत, राकश आ डाइन जोगिन एहि सभपर असीम विशास छलन्हि । ई सभ सोचिते ओ जोर-जोरसँ कानए लगलाह । संगी सभ हड़बड़ा कऽ उठैत जाइत गेलाह । जखन सभ समाचार ज्ञात होइत गेलन्हि तँ सभ गोटे कहलखिन्ह जे भाइजक अउरदा बढ़ि गेल । नन्दक मुँह लटकल देखि कऽ क्यो-क्यो हुनक अन्धविश्वासताक वैज्ञानिक दृष्टिकोणके मोन पाड़ए कहलखिन्ह । मुदा नन्दके बोल-भरोस क्यो नहि दऽ सकलाह । नन्द टेनिंग छोड़ि कऽ सपनेक गपपर गाम बिदा भऽ गेलाह । तेसर दिन गाम पहुँचलाह तँ भैयाके केश कटेने देखि कऽ सशंकित भऽ गेलाह । गामक सीमातेसँ जे क्यो भेटन्हि से कनेक दु:खी स्वरमे गप करन्हि । आँगन पहुँचलाह तँ माय जोर-जोरसँ कानए लगलीह । सपनाक सभटा गप सत्य बुझेलन्हि, अक्षरशः सत्य । भाइज हुनका केश कटाबए लेल सही समय पर बजा लेलखिन्ह । नवीनक फोटोक पाछाँमे अंगेजीमे ओकर जन्मक आ मृत्युक तिथि क संग ओकर तोतरायल बोलीमे काका-कका कहबाक बात फाउंटेन पेनक स्याहीसँ नन्द लिखलन्हि । कोठाक घर बनबाक पहिनहि ओ चल गेलाह, गेलाक बादो मुदा स्वप्नमे काकाके नहकेशक दिन बजा कए ।
पुत्रीक जन्मक बाद कोठाक घरो बननाए शुरू भऽ गेलन्हि । पुत्री जखन पैघ भेलन्हि तँ मोन पाड़बाक कममे कहैत छलीह जे घरक कुसी पड़बाक लेल जे खाधि खुनल गेल छल से बरड गँहीर छल । मुदा पिता मोन पाड़थिन्ह जे काका अहाके हाथसँ पकड़ि कऽ खाधिमे पात सभ साफ करबाक लेल नीचा कऽ दैत छलाह, तखन खाधि बहुत गँहीर कोना भेल । पुत्री बा केर कोरामे एकर समाधानक हेतु पहुँचि जाइत छलीह जे

खाइ तँ बहुत गँहीर बुझाइत छलि, तखन ईहो बात सही जे काका हाँसिँ खाइमे उताक्ष दैत छलाह । नन्दक माए बच्चा सभक बा भऽ गेलीह । नन्दक पुत्रिके बा नन्दक नन्द कहैत छलीह । कखनो गोपाल तँ कखनो राजकुमार कहैत छलीह, ओकर हँसी, आँखिया कारी घनगर केश । बा क कोठाक घर बन्न गेलाह तँ पेटक ददशिुर भेलाह । मुदा नन्द एक बेर अपन घरक पेटक ददक दू टा मृत्युके अदृश्यक आदेशपर होइत देखलाक उतर माएके इलाजक हेतु कैक ठाम, एलोपैथीक डाक्टरक लग पैघ-पैघ नगरमे, लऽ गेलाह । डायगनोस भेलाह कैसर नामक दु:खदायी रोग । एक बीमारीक इलाज रोगोसँ बेशी दुाखदायी छलि । रेडियमसँ टयूमरके
जरेनाइ । बा टूटि गेलीह । पटनेमे मृत्यु भऽ गेलाह । ओतए दाह संस्कार गंगा-तट पर भेलाह कारण ओतए मान्यता छलि जे गंगा तटपर गाएक बोली जतेक दूर धरि सुनाइ पड़ैत अछि ततेक दूर मगहक केंद्र नहि मानल जाइत अछि । तदंतर छदि कमगाममे भेल । बा चलि गेलीह, नन्दक द्वितीय पुत्रि जन्मक पश्चात नहि । मुदा बा क चरचा घरमे होइते रहल । बा केर फोटो बा केर नाम सभक पेरणा छैत बनल रहल । जे सपेताक गाछ बा केर छदिमे उसरगल गेल छलि तकर आम हुनकर नाम-नाम्नान नहि खाइत छलाह । जे आम खसैत छलि से बाबाक सारा पर राखि देल जाइत छलि । गोदान आ वैतरणी पार करेबाक अवधिमे जे गाएके दागल गेलैक तकरा देखि बा केर दुहु पुत्रि पण लेलाह जे आब ई काज भविष्यमे कखनो नहि कएल जएत । अपन ऐच्छिक मृत्युसँ पहिने बा अपन परिवारके पुना अपन पूवपिरम्पराक आ सरस्वतीक भक्तक रूपमे पस्थापित करबामे सक्षम भेलीह ।

मृत्युसँ पहिने बुच्चिया सेहो बाढ़सँ अपन भौजीके भेट करए लेल पटना अएलीह । दुनू ननदि आ भौजी पुरान-पुरान गपशपमे अपना- अपनाके बिसरबैत गेलीह । भौजी भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बा आ ननदि भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बुच्चिया दीदी । बुच्चिया दीदीक खिस्सा बच्चा सभक मध्य बरड लोकप्रिय भऽ गेल छलि । बृहत्कथाक खिस्सा सन नमगर-कैक राति मे खतम होअएबला । खिस्सा सुनबाक कममे एक बच्चा सुति जाइत छलि, फेर ओकरासँ पैघ बच्चा सुतैत रहए आ सभसँ पाछाँ सभसँ पैघ बच्चा सुतैत छलि । अगिला राति माय शुरु, सभसँ पैघ बच्चा कहथि जे जतए सँ खतम केलहुँ ततए सँ शुरु करु । ई सभ पहिने सुति गेलथि तँ ई सभ अपन बुझू । मुदा बुच्चियो दीदी कम नहि छलीह । अपन खिस्सा कनेक आओर आगूसँ शुरु करैत छलीह । जखन सभसँ पैघ बच्चा कहए जे एकर पहिनेक खिस्सा हम कहा सुनलहुँ, तँ बुच्चिया दीदी कहथि न्हि जे हम बतानहि जका खिस्सा कहिते रहि गेलहुँ आ अहूँ सुति गेल
छलहुँ । तखन हम खिस्सा कहब बन्द कए देलहुँ । तखन आपणि भेल जे जतएसँ सभसँ छोट बच्चा चाहैत अछि, ततएसँ खिस्सा शुरु कएल जाए ।

बछिका कोला बला खेतमे नन्द बोरिंग गरबेलाह जाहिसँ पानिक लेल ललाएल ई बाछि आंशिक भऽ जाए । मुदा कतेको ठिनुका जोन मजदूर- मिस्री-कारीगर सभक परिश्रमिक बाद ई पता लागल जे नीचामे पानिक अभाव रहए । लेएर नहि भेटबाक कारणसँ पाइप खेतेमे लागल रहल आ सुखाएल स्थान पानिक ओतहि गाड़ल रहल । बच्चा सभक लेल ई खेत बोरिंग बला खेतक नामसँ पसिद्ध
भेल । बादमे ओहि गाममे सरकारी बोरिंग गाममे लगबाक घोषना भेल । मुदा नन्दक भैयाके पता लगलाह जे

ई बोथ्रंग ओझ्र पाश्च थहीन बािमे नश्च गािएत वरन् ओश्च बािमे गािएत जाश्चमे बारहोमास पाश्च लागल रहैत अथ्रि । ओ थ्रकि गोटेके लऽ कऽ पटना पहुँथ्र मुख्यमंर्ीके आवेदन देलश्चह । तखन जा कऽ ओश्च सुखाएल बाकि जीणोदार भेल । सात हाकि उज्जर अंगेज इंजीथ्रायर कोन-कोन मशीन लऽ कऽ आएल आ दुइये थ्रनमे बोथ्रंग गाश्च कऽ चश्च गेल । मुदा बादमे क्यो कहलश्चह जे ओ अमेथ्रकन ल आ कारण सेहो देलश्चह जे सभटा उज्जर लोक अंगेज होअए से जररी नश्च । फेर कमला बलानक दुनु कात िहरक थ्रामाण भेल । थ्रकि थ्रन िथ्र ठीक रहल मुदा थ्रकि थ्रनुका बाद थ्रथ्र ई भेल जे दुनु िहरक बीचमे बालु भरैत गेल आ जतेक िहरके ऊँच कर ततेक कम । झंझारपुर पुलक नीचा िथ्र बालु भश्च गेल । कथ्रायो पाश्च आबए तँ पाश्च खतराक चेन्हसँ पार भऽ जाइत रहए आ फाटकसँ बाहा बाटे पाश्च पोखथ्र-खेतके डुमा दैत ि ल । जे खेत बहुत ऊँच आ दू पाइ मोलक ि ल से नीक भऽ गेल आ थ्रकहा खेतमे खेती बन्द भऽ गेल । दुनू िहरक बीचक बलुआही जमीनमे तीन-तीन बेर रोपनी करए पिति ल । लोकके आब परोर आ अिआक खेती एश्च बलुआही जमीनमे शुर करए पिल । डकही पोखथ्रक चार कातक बढ़मोतरमे थ्रटुआ िनक खेती करए पिल कारण रोपनी उपजक श्चसाबसँ महग भऽ गेल । पूणाहा बाि पाश्चसँ भरल रहैत ि ल । कोश्चया-मेहिक बीचमे एकटा भोरहा िल-गँहीर पटी- पाया कोशीक कोनो पुरनका थ्रटकल िर । मुदा अखुनका कोशीक भौगोश्चक दूरीक कारण एश्च पर संदेह कएथ्राहारक संख्या सेहो बेश । एश्च भोरहा कातमे मेहिक आ कोश्चयाक बीच भेल पुरान संघषक्ि थ्रस्सा....पथ्रमा-भुथ्रहार टोलक एकटा आन्हर बूढ़क
करतब । बूढ़के सभ बाश्चह कऽ रखलकश्चह जे ओ माथ्र करए नश्च पहुँथ्र जाथ्रि । मुदा केबाि तोथ्रि आ बिका बासमे फरसा-भाला लगा कऽ ओ पहुँथ्र गेलाह लिबाक लेल । सवा मोन चूि कोश्चयामे फूटल ओश्च माथ्रमे । आ माथ्र कोन गप पर..सूगरक सीराक लेल ।......एकटा आर कि - बूढ़ा काकाक झठहाक कि, सभटा बानर सभ डरक लेल कलम-गाि िथ्रि पि गेल ि ल । आइ काथ्रिक िरा सभके देथ्रयौक, झठहा थ्रकयो माथ्र कऽ देखाबय जे जोमक फुनगीके ि थ्र लए । सभटा अखराहा लोक सभ जोथ्रा लेलक, तखन शरीर कोना बनैत जएतश्चह ।

नन्दक डेरा पर बुश्चया दीदी एक बेर बाढ़सँ अपन बेटाके लऽ कऽ अएलीह, बेटाक नोकरीक लेल । बाढ़क लाइ केर स्वाद बच्चा सभ बुश्चया दीदीक पटना आथ्रक गाम अएले पर थ्रखैत जाइत ि ल । जमीन्दारी पिक समाथ्रक बाद नौकरीक चलती भऽ गेल ि ल आ थ्रकत सेहो । ताश्चमे सरकारी नोकरीक । जयराम नौआ तखन ने कहैत िथ्रि जे नन्द सभ जाश्चके सरकारी नोकरी देलथ्रन्ह मुदा नौआ-ठाकुर टा बथ्र गेल । से नन्द नश्च तँ हुनकर बेटेसँ अपन बेटाक लेल नोकरी मागताह । सभके नोकरी भेटलैक मुदा बुश्चया दीदीक बेटाके नोकरी नश्च भेटलश्चह । थ्रकि समय-साल सेहो बदलल, नश्च तँ पश्चने तँ लोक नोकरी करैयो नश्च चाहैत ि ल । पुबाइ टोलक गुलाब झा कहैत िलाह जे नोकरीक माने भेल नश्च करी आ करी तँ की पाबी-वेतन माने थ्रना तन आ तनखा माने तनके खा । बुश्चया दीदीक आनल बाढ़क लाइ आ कतेक राश्च िथ्र चलए बला थ्रस्सा । गाम घरमे कखनो काल शुर भऽ गेल आन आन पकारातरक थ्रस्सा, इनार, पोखथ्र,करीन,बाहा,खता,गाि-पोखथ्रक बीच आ एश्च सभक लेल होबएबला िट-मोट झगरा-झाटी आथ्रक रमण-चमनक मध्य नन्दक नन्द सभ बढ़ए लगलाह । नन्द अपन बच्चा सभके गामसँ दूर नश्च कएलश्चह। गमी ताथ्राल, होली आ दुगापूजा, तीन बेर कमसँ कम साल भथ्रमे समस्त पथ्रवार जएबेटा करैत ि ल । बच्चा सभ

आम खएबाक हेतु दीदीक गाम जाइत छलि । पएरे-पएर दूर-दूर धरि, कखनो कमलाक रेतक बीच तँ कखनो आमक गाछीक मध्य चलैत चलबाक अनुभवे किछु आन छलि । आमक मासमे आमक कलममे राति-दिन मारि-भातक बनभोज, खुरचनसँ आमक खोइचा हटएबाक अनुभव, ती-ती, 'जकरे नाम लाल छड़ी' आ सतघरिया खेलेबाक अनुभव, संठीमे आठा लगा कए चुटिआ पकड़बाक अनुभव आकि काच आममे चून लगाकए खएबाक उपरात ओकर मीठ भऽ जएबाक अनुभव, ई सभ अनुभव आइ काल्हि क बच्चाके कोना भेटतैक यावत ओकरा सभके गाम एनाइ जेनाइ नहि कराएब । नन्दन तँ एकबेर अपन जमायके कहनहियो रहथि जे आगाक सात जन्म शहर दिसका घुमि कय नहि
आएब । सन् १९७५ क पटनाक बाढ़िक समय नन्दन गंगाक उतर गंगा पुल परियोजनामे आबि गेल छलाह। नन्दन दुइ पुत्र आ एक पुत्रीक संग अपन परिवार चला रहल छलाह । तीनू बच्चा स्कूलमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत जाइत छलाह । तखन ककरा बुझल छलैक जे ई बरख नन्दन आ हुनकर बच्चा सभक जीवनक एकटा विभाजन रेखा बनत आ जीवनक दिशाके बदलि देत।
आरविन्दक वृतांतक साराश यैह अछि जे हुनक जन्मक समय हुनकर पिताके कियो कहि देलकन्हि जे बच्चिया भेल अछि । दू-तीन दिन धरि हुनका दिमागमे छलन्हि जे बेटिये भेल अछि । किछु दिनक एक दिन पहिने हुनका पता चललन्हि जे बेटा भेल छन्हि । एहि अनपेक्षितताक उपरात यैह विवाद भेल जे यावत सत्यक जे रूप बूझल अछि सैह तावत धरि सत्य रहत । सत्यक विज्ञान रूप, जे असत्य तँ नहि अछि, तकरे परिपाकीशक्ति रूपमे आरविन्दक व्यक्तित्वक पादुभाव भेलैक। जन्मेसँ एहि आभासित सत्यक विज्ञान रूपक साक्षी रहलाह आरविन्द । आरविन्दक जन्मक पहिनहि बाबा केर देहात भऽ गेलन्हि। बादो मे जखन-जखन बाबा केर चर्चा अबैत छलि, आरविन्द ध्यानसँ सुनैत छलाह आ अपन जिज्ञासा बढबैत छलाह। एवम क्रमे बाबा हुनकर जीवनक अंग भऽ गेलीह । बाबा हुनकर जन्मक पहिनहि सँ शरीररूपे नहि छलीह, मुदा हुनकर अवधारणा एहि घरमे सदिखन छलन्हि । आरविन्दक कक्षा आ नन्दनक कक्षाक बीचक तारतम्य पहिने तँ नहि बुझि पड़ि रहल छलि । मुदा पकृतिक संगहि आरविन्द सेहो अपन प्रतिभा देखाबए लगलाह । मनुष्यक पवृत्तिये होइछ समानता आ तुलना करबाक, साम्य आ वैषम्यक समालोचना आ विवेचनमे कतेक गोटे अपन जिनगी बिता दैत छथि । आरविन्द आ नन्दनक बीच सेहो अनायासहि साम्य देखल जा सकैत अछि । दुहु गोटेक ऊपरी प्रतिभा आ तात्कालिक वैचारिक मतभेदक रहितहु जे मूल व्यक्तित्वक साम्य होइत छैक, से दुनू गोटेमे वर्तमान अछि । एहन सन बुझना जाइत छलि । मध्यम वर्गक बच्चाक लालन-पालन आ पोषण जाहि आशा ओ आकांक्षासँ होइत अछि, तकर अपवाद आरविन्द नहि छलाह । जेना सभ माता-पिता अपन नेनाक छोटो छोट बातमे प्रतिभाक छाप देखैत छथि तहिना आरविन्दक माता-पिता विशेष कए पिता नन्दन, आरविन्दक व्यक्तित्वमे विशेष प्रतिभा देखए लगलाह । आरविन्द के खूब स्वपसभ अबैत छलन्हि । तहिना दात सेहो सूतलमे कटकटाइत छलन्हि । सपनामे नीक आ अधलाह दुनू पकारक तत्व रहैत छलन्हि मुदा डराओन तत्व विशेष रहैत छलन्हि । बहुत दिन धरि आरविन्द एहि पयासमे रहथि जे कोना कए सपना आकि दुःस्वप्न अएनाइ बन्द भए जएत । बीच रातिमे ओ घामे-पसीने भए जाइत रहथि आ जखन आँखि खुजनि तऽ देखथि जे माता-पिता पंखा होंकि रहल छथिन्ह । सभसँ पहिने ककर जन्म भेल आ तकर पहिने ककर, आ सभके भगवान बनओलन्हि तँ भगवानके के बनोलकन्हि । ई सभ सोचि-सोचि कए आरविन्द विचलित भए जाइत छलाह। रातिमे स्वपमे हुनका होइत छलन्हि जे इनाररूपी पकृतिमे ओ गामक छतिपर घूमि रहल छथि । फेर ओ छतिक कातमे जाए लगैत छथि । फेर जेना पोखरिक कछेर अछि, तहिना छतिक काते कात

ध्यान इचि‍क जाइत रहैत छथि, फेर चाहैत छथि, जे कातसँ हल्ला कए बीच छिपर आबि जाइ । परंतु इनार रूपी पकृत्‍क गुरुत्‍वमे ओ थरथराइत चल जाइत छथि । आ खसल जाइत छथि । अनायासहि ध्यान खुजैत छन्हि तँ खुशी आ दुःख दुनू पकारक भावना मोनमे अबैत छन्हि । खुशी एहि बातक जे स्‍वप्‍न छल ई, यथार्थ नहि । दुःख एहि बातक जे फेर ने कतहु एहि पकारक दुःस्‍वप्‍न फेर आबए । पिता‍सँ पूछथि जे अहा सेहो एहन सपना सुनैत छी, नहि नहि देखैत छी तँ ओ कहथि जे नहि आब नहि। हँ जखन ओ बच्‍चा रहथि तँ सपना देखथि, बच्‍चा झोटाबला सहसबाढ़िक । आबि बोकरैत तमसाएल, जेना पृथ्‍वीके गीड़ि लेत । सपना तँ सपने छी जे अहा सोचब से रातिमे अएत। नहि जानि के बूढ़-पुरान सहसबाढ़िक खिस्‍सा हमरा सुना देलन्हि। की सभ कहि देलन्हि जे सहसबाढ़िक आगमन अशुभ क संकेत अछि जे ई जाहि बरख आएल ताहि बरखसँ कैक साल धरि बीमारी अकाल पसरल रहल। यैह सभ हमर सपनामे अबैत छल। मुदा से बच्‍चामे आब तँ ध्याने कम अबैत अछि तँ सपना कतएसँ अएत। आ आरुषि सोचथि जे कतेक नीक होइत जे हुनको ध्यान कम्‍म अबितन्हि। एहि बीच आरुषि कखन ध्यान अबैत अछि आ कखन स्‍वप्‍न एहि सभ पर जेना शोध करए लगलाह। फेर अपनाला ध्‍यान मोन पाडथि, जे नौ बजे धरि जागल छलहुँ, दसो बजे यावत जागले छलहुँ, तखन कखन सुतलहुँ । फेर पढ़ाइ ध्‍यानमे ओ अपना मोनके बहटाबि लेलन्हि, जे जखनो हुनका ई मोन पड़ि जाइन्हि जे ध्यान कखन आएल तखन तँ ओ जागले रहि जएताह । हुनकर नाम कतेक बेर बदलल गेल । पुरातन ग्रंथ सभक अध्‍ययन नंद एहि हेतु कएलन्हि । फेर हुनक पढ़ाइ-लिखाइक कार्य शुरू भेलन्हि। छी गणेशजीक अंकुश हिन्दी ढ़ंगसँ लिखनाइ सिखाओल गेलन्हि आरुषिके आ एहि आकृतिक संग गौरीशंकरक अभ्‍यर्थिनी-श्लोक रस्तु।

साते भवतु सुपीता देवी शिखर वासिनी

उगेन तपसा लब्‍धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्‍ये सतामस्‍तु पसादातस्‍य धूर्जटी

जाहवीफेनलेखेव यन्‍मूर्ध्नि शशिनः कला ॥

पशुपतिः पतिः कहि आरुषि खूब हँसथि । एहिसँ हुनकर तोतरेनाइ सेहो समाप्‍त भए गेलन्हि । एक सँ सए धरिक पाठमे आरुषिके पशुपतिःपतिः बला तारतम्‍य मोन पड़ैत छलन्हि । दस सँ उनैस आ फेर बीस सँ उनतीस । नन्‍दक छोट पुत्र आरुषि शुरूहिसँ नन्‍दक आशा आ आकांक्षाक पतीक बनए लागल छलाह । एकर किछु कारण सेहो छलैक । एकसँ सए धरि लिखब नन्‍द हुनका सिखा रहल छलाह । नन्‍द हुनका एकसँ दस धरि लिखनाइ आ बजनाइ सिखेलखिन्ह आ एगारहसँ आगा सेहो सिखाबए लागलखिन्ह । पुना ई सोचि कए जे बालक पर एतेक बोझ लदनाइ ठीक नहि अछि ओ रुकि गेलाह । परंतु बालकके एगारहसँ बीस, फेर एकैससँ तीस जएबा धरि एहि बातक पता भऽ गेलन्हि जे ई तँ एक सँ दस तकक पुनरावृत्ति मात्र छैक । ओ एकर औत्‍सुक्‍यक अपन पितासँ चचा केलन्हि तँ पिता हुनका एकसँ सए धरि लिखबाक चुनौती दऽ देलखिन्ह । बालक से लिखि कए जखन देखा देलखिन्ह तकरा बाद पत्येक शब्‍दके कोन नाम देल जाए तकर समस्‍या आएल । नन्‍द एगारह, एकैस, उनासी आ नबासीक विशेष रूपसँ चचा केलन्हि । मा जखन आधा घंटाक पगतिक समीक्षाक हेतु अएलीह तखन हुनका पता लगलन्हि जे पाठयकम तँ पिता-पुत्रक बीच पूर्ण भऽ चुकल अछि । पिता गदगद भए गेलाह आ मा एहि घटनाक चचा बहुत कम गोटेसँ केलन्हि जे कतहु ककरो नजरि नहि लागि जाए । एहने-एहन ढेर रास उदाहरण पिताक हृदयमे पुत्रक कोनो गलती नहि केबाक धारणा अंकुरित करबामे सक्षम भऽ गेल।

आरथाके अपान पुरना बात सभके मोन रखबाक ुिअ जेका िलअह । कोन ईस्पी मे की भेल, कोन ईस्पी सँ की-की भेल से कोना याद्द होएत । हम बच्चामे की सभ कएलहुँ अपान थता-माता आक आनो बूढ़-पुरान सभक जीवनक घटनाकमक सभ गप बुझबाक लालसा हुनकामे िलअह। कखनोकालके हुनका एअ गपक िगुंता होइत रहअह जे बना हुनकर देखनो, एअ थशमे सभ गोटे सभ काज कोना कए रहल अथ । माने ई जे जखन आरथा सुतल िथ तखनो थश चअ कोना रहल अथ । हुनका बच्चाक दुइ-चाअटा घटना मािमोन रहअह । जेना थक अनेमा हॉलमे बॉबी अनेमाक समरण, स्टुअयोमे माता-थताक संग मुंडनक पअने केशबला फोटो अचेबाक समृथा । फेर कोनो गप पर मा दारा ध्यान नअ देलाक उपरात भअ घरक चाभीक झाबाके सोझाक डबरामे फेअक देबाक समृथा । गाममे कोनो काज-उदमक भीिक दृश्य । फेर आरथा एअ सभपर सोचलाक बाद यैह आकषिआकाललअह जे १९७६ ई.सँ हुनका सभ थक‍ि मोन िअह, कारण तखन ओ ५-६ बरखक होएताह आ एअ वषसिँ मा हुनका अखबार पढ़बाक असक िरा देने िलअन्ह । बहुत थनुका बाद एक थन नन्दके आरथाक डायरी हािलाथा गेलअह जाअमे आरथा अपन समृथाक घटनाकमक इअहासकार जेका वणिदेने रहथ।

हम, आरथा, सन् १९७६ ई.के अपन जीवनक थभाजन रेखा मानैत िी । कारण एअसँ पअने हमरा अपन जीवनक घटनाकम थक‍ि टूटल किीक रपमे बना तारतम्यक बुझना जाइत अथ । कखनोके हमरा ईहो होइत अथ जे एअ मे सँ थक‍ि पूवजिन्मक कोनो घटनाकम तँ नअ अथ ? सन् १९७६ ई.। हम गंगाअज पोजेक्टक गंगाक उतरबारी कातमे हाजीपुरमे बनाएल कॉलोनीमे अपन माता-थता आ पैघ भाए-बअनक संग रअ रहल िी । थताजी व्यवसायसँ सरकारी अआयंता िथ मुदा होम्योपैथीक थअकत्सामे सेहो एम.डी.(गोल्ड मेडेअस्ट) िथ आ हुनकर ई एक तरह सँ हॉबी िअह । भअ कॉलोनीक लोक चंदा एकिकए होम्योपैथीक दबाइ कानपुरसँ मँगबैत िथ । बाबूजीक संग एकािगोटे कानपुर जा कए दवाइ सभ लेने अबैत िथ । हमरा सभक सरकारी क्वाटरिक डॉइंग रममे एकटा अलमीरा, दू टा कुसी आ एकटा टेबुल थअकत्सकीय कायकि हेतु समथित अथ । हमर एकटा िटका टेबुल सेहो एअ रममे रहैत अथ, जाअमे तीस पाइक आयावतिअखबार हम अपान माके पअ कए सुनबैत थीयअह । जतए िअ हमरा मोन अथ, एअ कॉलोनीक दूटा भाग िल । चार अथा चहरअवारी िल, एअ कॉलोनीक बीचमे सेहो एकटा अबाअ िल जे एअ कॉलोनीके 'रहएबला' आ 'गोदामबला' एअ दू हीसमे बँटैत िल । गोदामबला इलाकामे माअ रास लोहाक िि, जोखय बला मशीन आ टक सभक संग एकटा कदम्बक गािक समृथा हमरा अथ । जोखय बला एकटा मशीन ततेक पैघ िल जाअ पर हम जखन ठाढ़ होइत िलहुँ तँ ओकर काटा अलबो िअ नअ करैत िल । हमरा बताओल गेल िल जे एअ पर भअगर चीज सभ मािजोखल जा सकैत
अथ । पन्द्रह-सहि थक्लोक पाच सात बषकि बच्चाक भार एकरा हेतु नोअक समान अथ । एअ गडा-अज कॉलोनीक रहएबला केिमे एकटा पैघ आ एकटा िट मैदान िल । दुनूक बीच एकटा पैघ पाअक टंकी आ पम्प हाउस िल । पम्प हाउसमे पाथा जाअ बाटे अबैत िलैक से बेस मोटगर पाइप िलैक आ हमरा अखनो

मोन अछि जे ओ ओकरना खुजल रहैत छलैक । हम ओकरामे आँखि दए कऽ तकनहियो रही मुदा दोसर बेर डरसँ पाछू हँटि गेलहुँ, जे कतहु खसि पड़लहुँ तखन की होएत । ओ पाइप एकटा बोरासँ झापल रहैत छल । पैघ कीडागणक उतरबारी कातमे एकटा कोटाबला दोकान रहैक । ओकरासँ पछबारी कातमे एकटा हनुमानजीक मूर्त्ति आ मंदिर बनल रहल छल जे बहुत पहिलहि बनि गेल रहैत मुदा कारीगर हनुमानजीक नाक ठीकसँ नहि लगा पाबि रहल छल । हनुमानजीक नाक चाहे तँ सामग्रीक समुचित मात्रा अनुपात नहि रहलाक कारण वा ककरो बदमाशीक कारण टूटि जाइत रहए किंतु किछु दिनुका बाद हनुमानजीक मूर्त्ति बनि कए तैयार भऽ गेल रहए । मंगल दिनके आरती होमए लागल छल, पूरा कॉलोनी जेना भक्ति-भावसँ भरि उठल रहए । किछु दिनुका बाद सभक उत्साहमे कनेक कमी आबए लागल, जेना आन संस्थाक संग होइत अछि, पारम्भिक उत्साह कमशा कम होइत गेल आ मंदिरक संग जुटल सभटा सामाजिक कार्यक्रमक योजना योजने रहि गेल । हम कॉलोनीसँ दूर एकटा स्कूलमे पढ़बाक हेतु जाए लागल छलहुँ । हमर पैघ भाइ आ बहिन सेहो ओहि स्कूलमे पढ़ैत रहथि । एक दिनका गप्प अछि जे स्कूलमे हमरा कोनो दोसर बच्चाक संग झगड़ा भए गेल । दुनु गोटेक संग स्लेट रहए । हम आ ओ दोसर बच्चा एकरा हथियारक रूपमे पयोग करए लागलहुँ । हम सोचए लगलहुँ जे ज्यो स्लेटके दोसर बच्चाक माथ पर मारबैक तँ शोणित निकलए लगतैक । ताहि दारे हम स्लेटके रक्षात्मक रूपे पयोग केलहुँ । मुदा ओ दोसर बच्चा मचंड छल... ....खच्च....हमर माथसँ शोणितक धार निकलए लागल । टीचर सभ हमरा प्रिंसपलक रूममे लए गेलथि । रुइयामे सेवलोन वा डिटॉल नहि किछु दोसरे छल, ओकर रंग आ सुगंध हमरा अखन धरि मोन अछि, फर्स्ट-एिडक बाद साझ होएबाक आ छुट्टीक बेर नहि ताकल गेल । स्कूलक रिक्शा जाहि पर "सावधान बच्चे" लिखल छल केर बाट नहि जोहि एकटा दोसर रिक्शामे हमरा दीदीक (बहिनक) संग घर पठा देल गेल । हम दीदीके पुछलियैक, जे "सावधान बच्चे" केर अर्थ की भेल । हमरा लगैत छल जे एकर अर्थ छल जे सभटा बच्चा जे ओहि रिक्शामे बैसल अछि, से सभ सावधान अछि, आ एहि बातसँ ओ दोसर छौंड़ा असहमति देखा रहल छल आ ताहि गप्प पर झगड़ा बजरि गेल छल । दीदीक उतर रहए जे ई लिखबाक उद्देश्य चेतावनी छैक, जे कोनो दोसर गाड़ी पाछूसँ ठोकर नहि मारि दैक आ सम्हरि कए चलए ।

"मुदा किएक"- हम संतुष्ट नहि होइत पुछलियन्हि । एहने पश्न आ उतरक संग हम बढ़ए लागल छलहुँ । आ बढ़ैत- बढ़ैत कखनियो काल लिखनियेला पर मा कहथि, जे सोचैत रही जे कखनिया पैघ होएत आ पैघ भेल तँ नाकमे दम कए देने अछि।

कॉलोनीक बाहरक किश्चियन संतक नाम पर बनल स्कूलमे हम सभ भाइ-बहिन जाइत रही । स्लेटसँ कपार फोड़बएलाक बाद बाबूजी कॉलोनीमे ऑफिसर सभक मीटिंग करबओलन्हि । फैसला भेल जे खेलाक मैदान आ उतरबरिया सीमांतक देबालसँ सटल कोटाक दोकान (सार्वजनिक वितरण पणालीक दोकानके कोटाक दोकान कहल जाइत छल) अपन आवश्यकतासँ बेशी पैघ घरमे छल । ओहि कोटाबलाक लाइसेंस सेहो कोनो कारणसँ समाप्त भए गेल छलैक, से ओहि एसबेस्टस बला ३-४ कोठलीक घरके पाठशालाक विद्यालय बनएबाक निर्णय लेल गेल आ दू-चारिटा शिक्षकक बहाली कए, दू चारिटा लोकक कमेटी बनाए स्कूल शुरू कए देल गेल । पड़ोसक गंडक कॉलोनीके सेहो छह महीना बाद नोत देल गेल जे अहूँ अपन कॉलोनीक बच्चा सभके एतए पढ़ा सकैत छी । उतरबरिया देबाल पर बाहर दिससँ स्कूलक नाम लिखल गेल जे किछु दिनक बाद मशहूर होइत गेल

। मुदा स्कूलक पक्षाष ा बढ़ैत गेल । क्यो गोटे ज्यो अप्पन बच्चाक नाम क्षखाबए अबैत िलाह तँ हुनकर बच्चाके एक क्षकंवा कखनो कालके दुइ वगिनीचा नामाकन लेल जएबाक गप्प क्षाक्कगण करैत िलाह । अप्पन स्कूलक स्तर कनेक ऊँच होएबाक गप्प करैत िलाह । बेशी क्षमद केला पर हमरा बजा कए टेस्ट लैत िलाह आ जाक्ष पशक उत र तेसर वगक्रि नामाकनक अक्षालाषी नक्ष दए पाओल िलाह से पश हमरा सँ पुि त िलाह आ हम्मर सही उत र पर ओ कुक्षल मुस्कान दैत नामाकनक हेतु आएल बालकक अक्षाभावक क्षक्षा मुँह करैत िलाह । मोटा-मोटी बुझु जे ओक्ष स्कूलक हम सभसँ उज्जवल क्षदािी िलहुँ-जकर सोझामे, ओक्ष गामसँ आएल क्षदािीक अएलाक पक्षने, क्यो ठाढ़ नक्ष भए सकल िल । पढ़ाइक पक्षा एकटा क्षक्षाष लगाव िल हमरामे, जे बादमे कमशा उदासीनतामे बदलए लागल । से एक बेर जखन बोखारसँ बिबािइत िलहुँ तक्षया परीकाक क्षन रहैक । बिबािि रहल िलहुँ जे परीका ने िूक्ष
जाए । घरपर पश आ कॉपी आएल आ तखन अप्पन परीका दऽ सकलहुँ हम । स्कूल िल िाट-िीन मुदा ओकर सभ गक्षक्षक्षमे कॉलोनीक क्षवासीगण सोत्साह भाग लैत िलाह । कीडाक्षकया होअए आक्ष सास्कृक्षाक । कीिामे दू क्षदािी एक-एक पएर डोरीसँ बाक्षह कए तीन टाग बनाए दौगैत िलाह । दौक्षा कए मैदानक दोसर िािपर राखल क्लैक बोडिर क्षखल क्षसाबके बनाए दौक्षा कए आपस अएबाक खेलमे शारीक्षक आ मानक्षक दुहुक परीका होइत िल जाक्षमे हम अगणी अबैत िलहुँ । हमरा दू गोट घटना आर मोन पक्षि रहल अक्षि । पक्षल घटना एक गोट बच्चाक गामसँ आएब । ओ हमरा हेतु क्षक्ु क्षन पढ़ाईमे चुनौतीक र पमे रहल कारण ओकर गाम बला क्षकताबमे क्षक्ु नवीन जानकारी रहैक मुदा तकर कोटा पूरा भेलाक बाद हम ओकर चुनौतीके खतम कए
देलहुँ । दोसर घटना िल एक गोट बच्चाक एक्सीडेट जकर बाद हम सभ खेलाइ कालमे टाइम क्षकाक्ष ओकरा क्षक्षकीसँ देक्ष अबैत रक्षयैक । बादमे कक्षयो काल ओकर र म मे जा कए ओकर डायरी सेहो देक्ष अबैत रही । ओकर क्षक्ु अंश हमरा मोन अक्षि से एना अक्षि ।
"अप्पन सभक गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाब रहए लागल । क्षक्ु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदक्षा आ क्षक्ु एकर कारण रहल हमर एक्सीडेट, जकर कारण हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पिल जेना डेढ क्षन जेका बीक्ष गेल । क्षक्ु एक्ष बातक क्षस सेहो हमर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षक्षापूक्षािकोना कए होएत । क्षक्ु तँ भोरमे उक्ष कए समय बचेबाक क्षचार आएल मुदा आँक्षक क्षन ताक्ष मे बािकि बक्ष गेल । तखन सामक्षक संबंिके सीक्षत करबाक क्षचार आएल । एक्षमे हमरा क्षन पयासक सफलता भेक्ष गेल िल । एकर कारण िल हमर नक्ष खतम पतीत होमएबला बीमारी । एक्षमे क्षक्षन डॉक्टरक ओक्षक्षयन, क्षक्ु गलत ऑपरेशन आ एकर सक्षक्षत इमेसन ई जे आब हमरा अपाक्षजक जीवन जीबए पित । आनक बात तँ िािडू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल िल । लगैत िल जे डॉक्टर सभ फूक्षयाक्षँक आशासन दए रहल अक्षि । एक्ष कममे फोन सँ लऽ कए हाल समाचार पुिनहारक संख्या सेहो घक्ष गेल िल । से जखन अचानके बैशाखी आ फेर िािपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेके फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंि बनाबएमे असुक्षि होमए लगलक्षह । जे हमरासँ दूर नक्ष गेल रहक्षि तक्षकासँ तँ हम जबदस्तीयो संबंि रखलहुँ मुदा दोसर क्षक्षा गेल लोकसँ हमर व्यवहार क्षरपेक रहैत िल से पुनासंबंि बनेबासँ लोक हतोत्साक्षत रहए लगलाह । दुक्षनमे जे हमरापर हँसक्षि तक्षकर पक्षा ई व्यवहार सहानभूक्षापदक्ष मानल जएत । एक्षसँ समयक्ष खूब बचए लागल। शुर मे तँ लागल जेना ऑक्षसमे

कयो थ्यन्हत आथ्क नथ्र । मुदा जखन हम ऑथ्फस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेका स्यागत भेल होअए । मुदा एथ्रमे ई बात संगी-साि सभ नुका लेलक जे हमर िि सँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल िलथ्रह । सभ माि हमर थ्रममतक पशंसा करैत रहैत िलाह । जखन हम िि िथ्र कए चलए लगलहुँ आ जीन्स शटपिट पथ्रथ्र कए अएलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहा पुरनका रपमे घुथ्र रहल िि । एथ्र बातके हम घरपर आथ्र कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए कालक फोटोके पतीक मदथ्रा सँ हैण्डीकैम दारा वीयोडीगाफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन रथ्र गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नेगि कए दौगबा सन लागल िल । पथ्रने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रती पता िथ्र नथ्र चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बरड कम अथ्र, पथ्रने तँ आर बेसी िल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत िलाह, तथ्राका कतेक खराब लगैत होएतथ्रह । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक पोत्साहन आ हमर थ्रममतक पशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन पारथ्रभक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकिलाक बाद सावजिथ्राक जीवनमे अलग-िलग पथ्र जएबाक संदेह, आशा, अपेका थ्रकंवा अहसास-फीथ्रंगक बाद जे एथ्र तरहक अनुभव भेल से हमर कथ्रतत्यक थ्रान थ्रकासके आर दृढ़ता पदान केलक"।

ओ तँ िल हमरे संगी मुदा कल्पना कऽ रहल िल जेना कोनो पैघ थ्रयाहल कथ्रत होअए आ कालाथ्राक रपसँ ठीक भेलाक बादक वणनि अपन डायरीमे कएने िल । मजदूरक टोल आ साझमे ठेलागाि पर हुनका लोकथ्रा दारा अपन कपि सुखाएब, एथ्र सभके देथ्र कऽ हम थ्रचथ्रत भऽ जाइत िलहुँ । ई देखलाक बादो जे हुनका लोकथ्राक मुँहपर हँसी िथ्रह, थ्रन घर रहलो उतर । िट-िट बच्चा सभके भीख मँगैत देखब, हम सभ जखन खेलाइत रही तँ ओकरा सभक हमरा सभक थ्रथ्रा कातर दृथ्रए देखब । लोक सभक दुत्कार, कथ्रयो हमरो पर ई थ्रपथ्रा आथ्र जाए तखन ? फेर दोसर कयो हुनका लोकथ्राक थ्रथ्रा तकबो नथ्र करथ्रह, तँ की हमही टा आन बच्चासँ थ्रान िि आ ई सभ सोचनी लागल रहैत िल । हम ई सोचैत रही जे जखन हम कोनो सिन पर नथ्र रहैत िि तखनो तँ सभ कायगिथ्रासँ चलैत अथ्र । थ्रकताबमे हम पढ़ने रही जे थ्रकि जीव जंतु मात्र दू डाइमेसनमे देखैत अथ्र । हमरा सभ तीन डाइमेसनमे थ्रबैत िि, तँ ई जे भूकंपक आ आन-आन थ्रपथ्रा सभ अबैत अथ्र से कोनो चाथ्र डाइमेसनमे कायिकरए बलातँ नथ्र कऽ रहल अथ्र जे कल्पनातीत अथ्र ।

पाच पाइमे लालििि बलाके देखा कऽ बाबूजी कहैत रहथ्र जे देखू ईहो लोकथ्रा अपन पथ्रवारक गुजर पाच-पाच पाइक ई लालििि बेथ्र कए कऽ रहल िथ्र । पाइक महत्व आ ओकर आवश्यकता जतेक बढ़ाऊ ततेक बढ़त । अपन-अपन वातावरणक आ जीवनक बादक जीवनक - एथ्र सभक संग जीनाइ, राथ्रामे बििनाइ ई सभ गोट कायकि संग पढ़ाइ आ थ्रताक नौकरीक परेशानी सभ चलैत रहल । हमरा मोन पिित अथ्र जे एक थ्रन भोरे-भोर एक गोट ठीकेदारक सूटकेशपर हमर बाबूजी जोरसँ लात मारने िलाह । सूटकेश जा कऽ दूर खसल आ ओथ्रमे राखल रपैय्या सौंसे थ्रथ्रिया गेल । हमर एक गोट थ्रथ्रयौत भाइ िलाह जे सभटा पाइके उठा सूटकेशमे राथ्र वापस ठीकेदारके दऽ वापस कए देलथ्रन्ह आ ईहो कहलथ्रन्ह जे जल्दीसँ भाथ्र जाऊ नथ्र तँ पुथ्रसके पकिबा देताह । मा हमरा भीतरका कोठली लऽ गेलीह । हम बच्चा िलहुँ मुदा हमरा

बुझबामे आबि गेल छल जे ई पाइ हमरा बाबूजीके गंगा-ब्रिजक ठीकेदारक दिससँ अपन इंजीनियरिंग डिग्री कऽ बिना कोनो भाङठक कायहिोमए देबा लऽ देल जएबाक पयास छल । बाबूजी बहुत काल धरि बछिाइत रहलाह । कखनो दालिमे नून कम रहला उतर आकि आन कोनो कारणसँ बतनिके फेकबाक स्वरसँ देह सिहरि जाइत छल । फेर किछु क्षणक चुप्पीक बाद सभ बच्चाके बजाओल जाइत छल आ दुलार मलार होइत छल । हम वर्गमे पर्थम अबैत छलहुँ आ पिरणाम निकलबाक दिन एकटा कॉलोनीक पंजाबी चाची सभ बेर लटा खोआबैत रहथि । पाया गुर आ आटासँ बनल एहि लटाक स्वाद हम बिसरि नहि सकल छी । ओहि चाचीक एकटा अदपिागल वरअर छलथिह जे सितार बजबैत रहैत छल । एक बेर गंगामे स्टीमरसँ हमरा सभ ओहि पार जाए रहल छलहुँ तँ ओ ओहि स्टीमर परसँ अपन भाएके फेकबा लेल ओ उदत भऽ गेल छल । ओहि चाचीके एकटा बेटी रहथिह रजनी । पता नहि कोन बिमारी भेलैक, बेचारी एलोपैथिक दवाइक फेरमे ओछाओन धऽ लेलक । हम सभ कताक बेर हुनका देखबा लेल जाइत रही । हमरा दोसराक अहिठाम जाएमे छिख होइत रहए मुदा ओतए ककरो संगे पहुँचि जाइत रही । हुनका सभ क्यो दीदी कहैत रहियथिह । हमरा सभसँ बरड पैघ रहथि । मुदा किछु दिनक बाद हुनकर मृत्यु भऽ
गेलथिह । मृत्युसँ हमर मानसिक दंद, एहि घटनाक बाद आब आर लग बुझाए लागल । हुनकर मृत्युक बादो ओ चाची अपन बेटा सभके अहिना दिन स्कूलक हेतु तैयार कए पठेलथिह जे कॉलोनीक एकगोट दोसर दबंग चाचीके पसिन नहि पड़लथिह आ एकर चचा बहुत दिन धरि कॉलोनीमे होइत रहल । चाचीक भाइ मुजफ्फरपुर इंस्टीटयूट ऑफ टेकॉलोजीमे व्याख्याता रहथि। एहि कॉलेजसँ हमर बाबूजी सेहो इंजीनियरिंग पास कएने रहथि । ओ हाजीपुरमे गंगा-ब्रिज कॉलोनी स्थित हमर सभक घर पर आएल रहथि आ अपन बहनोइके बरड फझ्झति कएने रहथिन्ह । पटना जा कए नीक इलाज करेबामे असफल रहबाक कारण पाइके बतेने रहथिन्ह । हमरा मोनमे ई विचार आएल रहए जे पटनामे पैघ डॉक्टर रहैत अछि जे मृत्युके जीति सकैत अछि । मुदा एक दिन हमरा सभक संग रहएबला गामक भिसयौत भाए जखन परमाणु युदक चचा कए रहल छलाह आ ईहो जे ओहि समयमे पृथ्वी पर एतेक परमाणु अस्त्र-शस्त्र विदमान रहए जाहिसँ पृथ्वीके कताक बेर नष्ट कएल जा सकैत अछि, तखन हमर ईहो रक्षा कवच टूटि गेल छल ।
हमर पुरान जीवनक ई एकटा नीक अनुभव छल। बादमे दुघर्टना तँ हँसी-खेल भऽ गेल । नहि तँ एकरासँ कोनो दुाख होइत छल नहि ये कोनो लक्ष्यक पिछा तेना भऽ कए पड़ित छलहुँ । खेल सेहो वैह नीक लागए जाहिमे टीम नहि वरन व्यक्तिगत स्पर्धा रहैत छल कारण टीममे दोसराक पदशर्न हारिक जिम्मेदारी बहना बनि जाइत अछि । एकर कारण सेहो छल, किएक तँ एहिमे टीमक पदशर्न पर व्यक्तिगत पदशर्न हाबी नहि करैत छल आ जे बढ़िइ आकि बुराइ भेटैत छल से व्यक्तियेके भेटैत छल । अहा ई नहि कहि सकैत छी जे ओकरा कारण हम हारलहुँ, हम तँ नीक पदशर्न कएने रही । स्कूल आ पढ़ाइक अनिवार्यता ओना कीछिक स्मिन न्यूने छल । लक्ष्यक पिछा जे सापेक्ता बादमे हमरामे आएल छल से ओहि समयमे नहि छल । ओहि समयमे तँ जगतके जितबाक छिन्ना छल । द्वितीय स्मिनक तँ कोनो पशे नहि छल । द्वितीय स्मिनक माने छल अनुतीणर् भेनाइ । खेलोमे, पढ़ाइयोमे, मारि-पीटमे सेहो । गाम आन-जान खूब होइत रहए । गाम जाइत रही तँ महादेव पोखरि परका स्कूलमे काका शिक्षकके कहि अबैत छलाह आ हम छुटीयो मे स्कूल जाइत रही । कबरड्डी, सतघरिया, लाल-छिछि ई सभ खेलक नामो तँ शहरक बच्चाके बूझल नहि
होएतैक । अस्तु ओतुका पढ़ाइक सभ पणाली अलग छल । पिाछुदिन करची कलमसँ लिखना सिखएमे देह

आहो जाइत छलि आ रोजनामचा सेहो एहिना पकारे लिखैत रही-भोरे-सकाले उठलहुँ नित्य कायक्रि उपरात जलखइ कऽ पढबाक लेल बैसलहुँ, फेर स्कूल गेलहुँ, ओतए सँ एलहुँ, पुना खेनाइ खेलहुँ । फेर स्कूल गेलहुँ, फेर गाम पर एलहुँ आ फेर जलखै कएलहुँ । फेर खेलाइ लेल गेलहुँ । फेर आबि कऽ लालटेनक शीशाके साफ केलहुँ, फेर पढ़लहुँ आ फेर भगवानक नाम लऽ सूति गेलहुँ । रवि दिनक छुट्टीक बदला सोम दिन दू दिनक रोजनामचा लिखि कए लऽ जाए पड़ैत छलि । ओतए १५ अगस्तक उत्साह सेहो दोसरे तरहक छलि । साझ-आ भोरमे १५ अगस्त- स्वतंत्रता दिवस, भारत माताक जय केर संग सभ महापुरुष लोकनिक जय करैत जाइत छलहुँ । मुदा मास्टर साहेबक ई गप नहि बुझना गेल छलि जे मारि-पीट नहि करैत जइहऽ । मुदा जखन भोरमे जयक नाद गामक सीमान पर सँ जाए काल सुनलहुँ तखन पता चलल जे ई गप मास्टर साहब किएक कहने छलाह । मझिनाछिपुरक स्कूलक बच्चा सभ जखने ओम्हरसँ अबैत रहए आकि तखने मारि बजरि गेल । कोनहुना झोप-ताप कएल गेल । फेर गामपर जे अएलहुँ तखन पुरनका बैचक विद्यार्थी सभ अपन विस्सा शुरू कएलक जे कोना पोखरिमे पैसा-पैसाके केराक थम्हि पानिमे दऽ कए स्वतंत्रता दिवस दिन मारने रहए गेल छलथिन्ह अनगौआँ के । फेर ओहो सभ दोसर साल बदला लेबाक ताकिमे छलि मुदा ताहू बेर… । दोसर साल फेर वैह मीटिंग, दुनू गामक स्कूलक मध्य मुदा एहि बेर दोसर गाम बला टीम रस्ता बदलि लेलक ।

मारि बझब गाममे एकटा पवजिेका छलि । दुगासिनिमे चॉकलेटक बुइयामक फूटब आ कोनो कटघरा किंवा टाटक खुटा उखाड़ि कए मारि-पीट शुरू करब । आ बादक जे गप्प होइत छलि से मनोरंजक । एक बेर एकटा अविवयसू एक गोट नव-नौतारके दू-चारि चमेटा मारि देलथिन्ह । बादक घटनाक हेतु हम कान पथिने रही तँ हमर बचियायौत ओहि गौआँके पुछलथिन्ह जे वैह बात रहए ने । सभ क्यो एकमत रहथि जे वैह बात रहए । एहि बेर हम हाथि कऽ पुछलियथिन्ह जे वैह कोन बात अछि जे सभके बूझल अछि मुदा हमरा नहि बूझल अछि । ओ कहलथिन्ह जे एहि युवापर अपन बहिनियाक घटकैतीक हेतु ओ अविवयसू गेल रहथि मुदा कथि नहि सुतरलथिन्ह । ओहि युवकक विवाह दोसर ठाम भए गेलथिन्ह, से तकरे कैन लऽ कए कोनो फुसियाहीक लाथि लऽ आइ ओकरा कुटलथिन्ह

अछि । हम पुछलियथिन्ह जे ज्यो विवाह भऽ जाइत तँ ससुर जमाएक संबंध

रहैत । तखन एहि फुसियाही गप पर मारि बजरैत ? सभ कहथि जे अहा तँ तेसरे गप पर चलि गेलहुँ । रातिमे नाटक देखैत अकासमे डंडी-तराजू देखब, खाली डंडी छैक तँ तराजू किएयैक कहैत छियैक? फेर ओहि नाटकोमे अनगौँआ सँ मारि बझेबाक हमर संगीक एकटा चालि । भेल ई जे नाटक देखए काल ओ एकटा अनगौँआके खौँझा रहल छलाह । मारि अंट-शंट बकैत छलाह । आ ओ किछु बाजए तँ कहैत छलाह जे अखने नरेण भैयाके बजाएब । तापिपर ओ कहलथिन्ह जे जाऊ अहाक नरेण भैयाक डर हमरा नहि अछि । आब आगू

सुनू । हमर संगी अनायासहि जोरसँ कानए लगलाह, दहो-बहो नोर खसए लगलथिन्ह । भोकारि पाड़ैत नरेण लग पहुँचलाह जे एकटा अनगौँआ मारलक अछि आ कहैत अछि जे के नरेण ओकर हमरा कोनो डर नहि अछि, आरो अण्ट-

शण्ट । आब नरेण भैया पहुँचलाह जे बता तँ ओ के छी ? जखने टॉचि ओहि व्यक्तिपर देलथिन्ह, बजलाह, भजार यौ । अहा छी । जरूर अही लोकनिक गल्ती छी । अनका विषयमे कहैत तँ पतियाया जइतहुँ । मुदा अहाक विषयमे । आ ईहो नहि कहलक ई लोकनि जे अहा तमसेलियैक वरन् ई जे मारलथिन्ह अछि । आ नेप

की चुआ रहल ि‍ल जेना कतेक माश्व पि‍ल होअए । हमरा सँ नरेण पुि‍लश्वह जे भाए श्वकि‍ एकरा कहबो कएलश्वह तँ हम कहश्वायश्वह जे नश्व । एश्व पर हमर श्वि‍कि नोर जतएसँ आएल ि‍लश्वह, ततश्व चश्व गेलश्वह । फज्झश्व मूि‍ झुका कए सुनलश्वह आ नरेण भाइक गेला पर सभके कहलश्वह, जे ई नरेण काकाक संगी ि‍श्वन्ह, क्यो श्वनका श्वकि‍ कहबहुन्ह तँ बेजाए भऽ जाइत जएतहु । आ आस्तेसँ कहलश्वि जे बश्व गेल आइ ई ।

गामक पाइमरी स्कूलमे सभ कलाक परीक्षा होइत ि‍ल । संगीत, श्वि‍, नाटक । गाममे हारमोश्वायम, ढ़ोलक बजेनहार खूब रहश्वि । पश्वने दुगा पूजाटा मे नाटक होइत ि‍ल मुदा पि‍श्व जा कऽ कृष्णाष्‍मी, काली पूजा इत्याश्वमे सेहो नाटक खेलेनाइ शुर भऽ गेल । हरखा रामलीला पाटी सेहो एक मश्वना खेला कऽ गेल ि‍ल । अहूमे दू चाश्व श्वनपर रामलीलाक बीचमे नाटक होइत ि‍ल । खेल शुर भेल रामलीला पाटीक श्वना बजेनश्व । मुदा दू चाश्व श्वन ि‍श्व माला क्यो ने क्यो उठबैत गेलाह । रामलीला पाटीक सभ कलाकारक एक श्वनक खेनाइक खरचाके माला उठेनाइ कहल जाइत ि‍ल । दू-चाश्व श्वन तँ माइक पर क्यो न क्यो जोशमे जा कऽ हम माला उठाएब तँ हम उठाएब कहैत गेलाह मुदा दू चाश्व श्वनुका बाद रामलीला पाटीक आर‍ि‍अनुरोि‍के देखैत गाँआ सभ टोलक अनुसार माला उठेबाक एकटा कम बना देलश्वन्ह । ओश्व समयमे अश्वानय देखनाइ एकटा चमत्कार सन बुझाइत ि‍ल आ हम अपन कैश्वयर बादमे अश्वानेताक र‍पमे बनेबाक मोने-मोन इच्िा रखैत ि‍लहुँ । ओश्व समय एक शश्व स्कूलमे नाटक खेलेबाक प्लान श्वाक्कगणक स्रीकृश्वसँ बनल । नाटकक श्वताब कतएसँ अएत ताश्व दारे हम एकटा नाटक दानवीर दि‍ीची श्वाखलहुँ । स्कूलक कलाकार सभके एकि‍ कएलहुँ । आब कलाकार सभक नाम तँ सुनू । पोटहा, लुि‍, नेगि‍, पोटसुि‍का, लेलहा, ढ़हीबला, कनहा, अन्हरा, तोतराहा, बौका, बश्वरा ई सभ हमर बाल कलाकार रहश्वि । कारण जे अपनाके शुभ-शाभ बुझश्वि से श्वएक नाटक खेलेताह । दहीके तोतराके कश्वयो क्यो ढ़ही बाजल तँ ओकर नाम ढ़हीबला भऽ गेलैक। सदीमे कश्वयो पोटा चुबैत रश्व गेलैक तँ पोटहा भऽ गेल आ दोसर एहन भेल तँ दुनूमे अन्तार कोना करी । से ओ जे पोटा खसैत काल सुरश्वतो अश्वि से तकर नाम भऽ गेल पोटसुरका । आगा आऊ । ककरो अन्हश्वया राश्वमे ठेस लाश्व गेलैक तँ कोन अतता भेलैक ? हँ ओकर नाम अन्हरा भऽ गेलैक । बच्चामे देरीसँ बजनाइ शुर कएने ि‍लहुँ तँ अहा भऽ गेलहुँ बौका । सोझगर ि‍ तँ लेलहा । गपके अनठबैत ि‍ तँ भेलहुँ बश्वरा । नव घि‍ पश्वरलाक बाद (घि‍ पाबश्व श्वन वनस्पश्वाक घि‍) हाि‍ कनेक सोझ राश्व लेलहुँ तँ भेलहुँ लुि‍ । तोतराइत तँ सभ अश्वि मुदा कश्वयाठी टोलक ि‍ तँ लोक नाम राश्व देलक तोतराहा । कनेक डेढ़ भऽ ताश्व देलहुँ आश्व श्वपनीके उनटा कऽ ककरो डरेलहुँ तँ भेलहुँ कनहा । ठेस लगलाक बाद कनेक झखा कऽ चललहुँ तँ भेलहुँ नेगि‍ । आ ज्यो कनेक पाइ बलाक बेटा ि‍ आश्व माए कनेक दबंग ि‍श्वि तँ कनाह रहलो उत‍र क्यो कनहा कश्व कऽ देखओ !

अस्तु एश्व बाल कलाकार सभक संग शश्व श्वन होएत हमर नाटक दानवीर दि‍ीची।

आ श्वायत श्वाश्विके शुर भेल दानवीर दि‍ीची नाटक । स्कूल खुजबासँ श्वकि‍ काल पश्वनश्व हम सभ पहुँश्व गेलहुँ स्कूल । बरण्डाक एक कोनमे गाम परसँ आनल चदश्वक पदा बनल । रस्सी ठीकसँ नश्व लाश्व सकल से ईएह श्वाणि‍ भेल जे चदश्वके ऊपर उठा-खसा कए काज श्वाकालल जएत । तकरा बाद कलाकार सभ अपन-अपन डेस पश्वरए लगलाह । डेस की ि‍ल माि‍ पाउडर लगा कए आ गमि‍-ि‍ती पश्वश्व कए, सभ सभ तरहक डेस पश्वश्व लेलक । जाश्व मास्टरसाहेबक र‍यूटी लागल ि‍ल नाटकक संचालनक हेतु, हुनका कोनो

आवश्यक कायमिोन पश्चि गेलश्चह से ओ ओश्च श्चन ि टी माश्च देलश्चह । गामक पैघ तुश्चयाके तावत बुझबामे आश्च गेलैक जे पाइमरी स्कूलक ि ि सभ नाटक कऽ रहल अश्चि । से तुरतेमे दस टा पैघ बच्चा सभ जूश्च गेल आ श्चहकारी देनाइ शुर कऽ देलक । हम सभ कलाकारके कहश्चयश्चह जे ई सभ उतेश्चत कऽ कए हमर सभक नाटकके दूश्च करत । मुदा ि टे भाइ भीश्चि गेलाह ।कहए लगलाह जे हे बौआ सभ, हम नाटकक डेसमे ि ि ते ई नश्च बुझू जे माश्च नश्च करब। एखने डेस फेश्चक-फाइक कऽ हम सभ कमकिऽ दइ जाएब अहा सभक। मुदा श्चहकी पानिहारक संख्यामे घटती नश्च भेल । आ ि टे भाइ बाश्च उठलाह जे ि ि आइ एश्च नाटकके । श्चनका सभक बदमस्ती हम एखने ठीक करैत ि । आ खुटा उखाश्चि कऽ दौगलाह । तावत िम्ह-िम्ह करए बलाक जुमान भऽ गेलैक आ तकरा संगश्च नाटक दानवीर दिीची जे हमर श्चखल लि आ जकर मंचनक श्चदेशन हम करए बला लिहुँ, बीचश्चमे खतम भऽ गेल । श्चक ि श्चन श्चि ि टे भाइसँ मूहा-फुल्ली रहल । ओ आबश्चि आ कहश्चि जे की कर, तामस उश्च गेल लि । ओहो सभ अततह कऽ देने लि । फेर श्चक ि श्चनुका बाद सभटा सामान्य भऽ गेल । रामलीलाक आ नाटकक भूत सेहो एश्च घटनाक बाद हमरा परसँ उतश्च गेल ।

गश्चात आ श्चजानक अश्चश्चक्त कोनो आन श्चषयके नश्च तँ हम एक बेरसँ दोसर बेर पढ़ैत लिहुँ आ नश्चये एश्च हेतु मास्टर साहेबे कहैत लिाह । कोनो श्चदािके मास्टर साहेब इश्चहास आ नागश्चक शास्कि श्चकताबके एकसँ दोसर-तेसर बेर पढ़ैत देश्च जाइत लिाह तखन तँ ओश्च श्चदािक नामे ओश्च श्चषयसँ पश्चि जाइत लि । आब ओ गश्चातो पढ़त तँ ओकरा सुनए पतिैक जे बाबू ई इश्चहास नश्च श्चियैक जे कंठस्ि कए रहल ि । सैया-श्चनानबे अनठानबे- सन्तानबे-श्चियानबे-पनचानबे कहैत-कहैत आ बोराक आसनीके बरखाक समयमे ितिा बनओने पाच-चाश्च-तीन-दू-एक-एक-एक करैत भागैत श्चदािि सभ । कश्चयो िटीक श्चन जखो कबरडी खेलाइ काल मास्टर साहेब साइश्चकल पर चढ़ल देखा पिश्चि तँ कबरडी-कबरडी, मास्टर साहेब पणाम, कबरडी-कबरडी कहैत भागैत रहश्चि श्चदािि । आ एहने एकटा घटनामे हम मास्टर साहेबके ठाढ़ भऽ कए सास तोश्चि कए पणाम कएने रश्चयश्चह आ एश्च कममे श्चपकी पाटी दारा लोश्चक लेल गेल लिहुँ तँ एश्च पर कोइलख बला मास्टर साहेब पसन भेल रहश्चि आ तकर चचा स्कूलमे सभक समक कएने रहश्चि । बुझु जे गामक पवास, बादक समयमे एकटा पैघ संबल श्चद भेल लि । खिमि पश्चश्च कए गश्चसँ दौगैत रही फेर बषामे आश्च पर श्चचिि पर खिमि पश्चश्च कए दौगैत रही । श्चचिि पर खिमि नश्च श्चितिि लि । बादमे हवाइ चप्पलक आगमन भेलाक बाद कतेक गोटे खश्च-खश्च कए डारपर गरम पाश्चक भाप लैत लिाह । अश्चलही, श्चकरासन तेलक लाइन, रोशनाइक गोटी, लबनचूस, रबकि बॉल, ओश्चिक गेद, पसीकि रसक श्चषसँ पोखश्चमे मािि मरलाक बाद भेल दू टोलक बीचमे बाझल माश्च, बाश्चक दृश्य देखबाक लेल जुटल भीि, िट-िट गप पर होइत पंचैती, आमक मासमे आमक जाबीसँ बहराइत गिपिकू आमक िटा, ई सभ टा अलोश्चत तँ नश्च भऽ जएत ।

“काका यौ, हम नश्च लगेश्चअश्चह कबकबाउि”। ई गप कहैत हमर आँश्चमे नोर आश्च गेल लि । बनाइके श्चक ि गोटे ि ि सभ दलान पर सुतलमे कबकबाउि लगा देने लिश्चह । कलम श्चश्चसँ खेला-कुदा कए सभ आश्च रहल लि । महारक कातमे कबकबाउकि पात तोिलक आ एकर पातके चमिि पर रगिलासँ होएबला पश्चणामपर चचा होमए लागल । क्यो अपन चमिि पर लगेबाक हेतु तैयार नश्च लि से दलान पर बनाइके

सुतल देखि हुनके देह पर पात रगड़ि देलकन्हि । पाछाँसँ हम अबैत छलहुँ आ सभ छौंडा तँ लापता भए गेल, बनाइक नजरि हमरा पर पड़लन्हि । से ओ काकाके कहि देलखिन्ह । काका हमर कोनो गप नहि सुनलन्हि आ दस बेर कान पकड़ि कए उठा-बैसी करबाक सजा भेटल । संगहि साझमे संगी सभक संग खेलेबाक बदला काका आ हुनक भजार सभक संग खेत पथारक दिशि घूमबाक निर्णय भेल जाहिसँ हमर बदमस्ती कम होअए । बाढ़िक समय छल, नाओपर बाढ़िक दृश्य आ अलौकीक आकार । बादमे तँ एकर आकारपर सरकार प्रतिबंध लगा देलक । मुदा मोन हमर टागल रहल गाम परक कबड्डी खेल सभक दिस, जे हमर सभक संगी सभ खेलाइत होएताह । ई छल पहिल दिन । दोसर दिन बेर पहर फेरि हम एहि प्रत्याशामे छलहुँ, जे आइ फेरसँ काकाक संग जाए पड़त । ओना संगी सभके हम ई भास नहि होमए देलिऐक जे हम एको रती दुःखित छी आ ओ सभ नाओ आ अलौकीक विवरसा तन्मयतासँ सुनैत रहलाह । मुदा हमर मुखाकृति देखि कए काका पुछलन्हि, जे आइ हमरा सभक संग जएबाक मोन नहि अछि ? तँ हम नहि नहि कहि सकलिऐन्हि । मुदा फेर अपनाके सम्हारैत कहलिऐन्हि जे मोन तँ गामे पर लगैत अछि । तखन काकाके दया लागि गेलन्हि आ एहि प्रतिबन्धक संग जे हम आब गामपर बदमस्ती नहि करब हमरा गाम पर रहबाक छूट भेटि गेल ।

गाममे डेढ़ साल फेरि रहलहुँ आ जखन बाबूजीक टासफर पटना भऽ गेलन्हि, तखन बड़का भैयाक संगे पहलेजाघाट आ महेन्द्रूघाट दऽ कए पटना आबि गेलहुँ। ओतए स्कूल सभमे प्रवेश परीक्षा होइत छल आ बाबूजी भाएके छठासँ सतमाक हेतु आ हमरा पचमासँ छठा आ सतमा दुनू वर्गक हेतु प्रवेश परीक्षामे बैसओलन्हि। आ तकर बाद हमरा ई बुझबामे आएल जे किएक हमरा बाबूजी पचमेमे छठाक विजान आ गणित पढ़ि लेबाक हेतु कहने छलाह । प्रवेश परीक्षामे ईएह दुनू विषय पूछल जाइत छल । अस्तु हमर छठा आ सतमा दुनू वर्गक लेल आ भाएके सतमाक लेल चयन भेला स्कूलमे भए गेल । फेर शहरक सरकारीयो स्कूलमे ड्रेस छलैक, से आयल। से दुनू गोटे बाबूजीक संग दोकान गेलहुँ आ ड्रेस सियाओल गेल, दू-दू टा हाफ पैट आ एक-एकटा अंगा । स्कूलक पहिलुके दिन मारि होइत-होइत बचल । एकटा छौंडा हमरा देहाती कहलक तँ से तँ हमरा कोनो खराप नहि लागल । ओहि उमेरमे देहाती शब्द हमरा नीके लगैत छल, मुदा आइ सोचैत छी तँ लगैत अछि जे ओ ई शब्द व्यंग्यात्मक रूपे कहने छल। फेर जखन ओ देखलक जे ई तँ नहि खौँझाएल तखन बंगाली-बंगाली कहनाइ शुरू कएलक । हम दुनू भाइ पातर दुबर आ शुभ-शाभ चिकन-चुनमुन लगैत छलहुँ, ताहि दारे ओ हमरा सभके बंगाली बुझि रहल छल। हम ई व्यंग्य नहि सहि सकलहुँ आ ओकरा दिशि मारि-मारि कए छुटलहुँ । भाए बीच-बचाओ कएलक । आब ओ छौंडा कानय-खीजय लागल आ पैघ वर्गक कोनो बदमाश विद्यार्थीके बजाबए लेल गेल । फेर घुरि कए जे आयल तँ ओकर कानब-खीजब बन भए गेल छलैक, हमरा कहलक जे हमर भाग्य नीक अछि जे जकरा ओ बजाबए गेल छल से आइ स्कूल नहि आएल अछि । दू तीन दिन फेरि हम ई गुन-धुन करैत रहलहुँ जे ओ ओहि बदमाशके बजा कए नहि आनि दिअए । ओहिना किछु दिनुका बाद ओकरा फेर कोनो दोसर छौंडासँ झगड़ा भेलैक आ ओहि दिन ओ हीरो छौंडा स्कूल आएल छल । हमरे सोझामे ओ हमर कक्षामे आएल आ दोसर विद्यार्थीके एक फैट पेटमे मारलकैक । क्यो बचबए लेल तँ नहि गेलैक मुदा बादमे जखन एकटा क्लासमे शिक्षक नहि अएलाह आ विद्यार्थी सभ खाली गप-शप कए रहल छल तखन एहि बातक निर्णय भेल जे आब ओहि विद्यार्थीसँ क्यो गप नहि करत आ क्लास टीचरसँ एहि गपक शिकाइत कएल जएत जाहिसँ ओ ओहि बदमाश विद्यार्थीक क्लास टीचरके एहि घटनाक विषयमे बताबथि । आब ओ धिनकाह विद्यार्थी शुक-पाक करए लागल । फेर ओ ओहि विद्यार्थीक लग गेल, ओकरा कान भरि

आएल जे सभ ओकरा थरदमे चाश्च चश्च रहल अथि । ओ बदमाश आश्च कए सभके उठबाक लेल कहलक मुदा क्यो नश्च उठल । तकन ओ हमरा कहलक जे उठू । हम उश्च गेलहुँ आ तखन ओश्चना एक-एक कऽ कए तीन चाश्च गोटेके उठेलक आ फेर सभके उठबाक लेल कहलक । सभ उश्च गेल । तखन सभके िमकी देमए लागल । मुदा एश्च बेर हमर सभक क्लास मोनीटर थक्ि श्चमतसँ काज लेलक आ ओकरा ओश्च ािाक थषयमे कहए लागल । हमरा देखा कए कहलक जे एकरा देखैत ाि? कश्चयो बदमाश लगैत अथि, एकरो अहाक नाम लऽ कए दबाथि रहल ाि । ओ ाि ताँ हुण्ड ाि से ओकर पारा चश्च गेलैक आ हमर वगकि थनकाहा ाािके चेतौनी देलकैक जे आइ थ्नसँ कनैत-थ्जैत ओकरा लग नश्च आओत आ ओकर नाम लऽ कए ककरोसँ झगाि नश्च करत । एश्चना स्कूल चश्च रहल ाि आश्च एक थ्न एकटा ाि वगमि थहकी माश्च देलकैक । ओ ाि बीचश्चमे बम्बाई भाश्च गेल ाि बाल कलाकार बनबाक लेल । घुश्च कए आएल ताँ वगश्चाक्क पुिलश्चह जे थकएक घुश्च अएलहुँ । ताँ ओ हुनका कहलकश्चह जे सभ ओतए कहलक जे एतए ताँ सभ बी.ए., एम.ए. अथि, अहा कमसँ कम मैश्चको कए श्चअह । आब थहकीक बाद वगश्चाक्क पढ़ाइ िथि कए ओकर अन्वेषणमे लाश्च गेल । थहकी कोन थ्श्चसँ आएल । बहुमतक आिर पर एक कातके ािश्च देल गेल । आब आगूसँ आएल आश्च पाििसँ । ताश्च आिर पर सेहो एकटा बेच श्चािरण भए गेल । ओश्च बेच पर िह गोटे िलाह । आब ई श्चािरण होमए लागल जे बाम कातसँ आयल आश्च दश्चनसँ । फेर िहमे सँ दू गोटेक श्चािरण बहुमतक आिर पर कएल गेल । ओश्चमेसँ एकटा हमरा लोकश्चाक बम्बाइया हीरो िलाह, जश्चाकर बम्बाइक थ्वस्सा थ्थक्नसँ लऽ कए लेजर क्लास िथ चलैत रहैत िल । मुदा एश्च दुनू गोटेमे १:१ केर टाइ भए गेल कारण क्यो मानए हेतु तैयार नश्च जे थहकी के मारलक" ।

एकर बाद डायरी खाली िल । नन्द बेटाके बजा कए डायरी दए देलश्चह आ माि ई कहलश्चह जे पढ़ाई पर ध्यान थ्अ । एश्च बात पर लज्जत होएबाक कोनो बात नश्च िल मुदा आर थाके हुनकर भाए बश्चन एश्च गपक लेल बहुत थ्न िथ थकचश्चकचाबैत रहलश्चन्ह । अस्तु एक थ्न ओ डायरीके फाश्च देलश्चह आ ई आत्मकिात्मक उपन्यास पूणािहोएबासँ पश्चनश्च खतम भए गेल ।

नन्दक अव्यवसाियक थरद शुर कएल गेल संघषथक्ि श्चनका थराम लेने िल । गाममे बच्चा सभ डेढ़ साल रहल िलश्चह, दरमाहा बहुत थ्न िथ बन्द िलश्चह । गाममे पैघ भाए एकटा भावी राजनीश्चाजके कश्च कए नन्दक पदसािपन केंिय काजसँ हटा कए ऑथ्कसमे थ्ि पश्चयोजना आश्च श्चजाइनमे करबाए देने िलश्चन्ह । संगे ईहो कहने िलश्चन्ह जे अपन ऑथ्कस जाऊ आऊ आ बच्चा सभ पर ध्यान थ्अ । सभसँ श्चश्च जुश्च कए रहू । नन्द पटना आश्च कए भाएक सभ गप पर ध्यान देने िलाह । पटनामे बेटीक कॉलेजमे नामाकन करबाए महाथ्दालयक पाशमि थकरायापर घर ताकलश्चह । दुनू बेटाक नामाकनक हेतु पवेश परीक्षा केर फॉमि सभ भरबाए सभके पटना बजा लेलश्चह । भाश्चाजके कहलश्चन्ह जे सभके लए कए आश्च जाऊ आ पहलेजाघाटमे बच्चा बाबू बला नश्च वरन श्चहार सरकारक स्टीमर पकिबाक आदेश देलश्चन्ह । कारण एकटा श्चाजी स्टीमर बच्चा बाबूक सेहो चलैत िल मुदा ओ बेशी पसेन्जर लए कऽ चलैत िल, संगश्च सरकारी स्टीमर अपन समयसँ चलैत िल, ओश्चमे पैसेजर रहए वा नश्च । सरकारी स्टीमरमे याििक संख्या सीश्चत िल ताश्च हेतु थकट केर श्चायश्चात श्चसाब िल आ सभ याििक बीमा होइत िल, ई बात श्चाजी स्टीमरमे नश्च िल। भाश्चाजक संग

पती आ पुि-पुिी सभ आि गेलिन्ह । गंगा िज कॉलोनीमे नन्द एकाकी रहैत िलाह । पिवारक लोकके सेहो आसपिसिसँ बेशी मेल-जोल करबाक अनुमि नि देने िलाह । मुदा पटनामे सभटा उनट गेल िल । पिसिमे एकटा िटायडिफौजी िलाह, एकटा िहार सरकारक पुिस िलाह आ एकटा िहार सिवालयक कमिारी । नन्द दुनू बेटाके लए अिला िन तीनू गोटेक घर गेलाह आ सभसँ नमस्कार-पाती करबओलिन्ह । बेटा-बेटी सभ स्कूल जाए लागल िलिह । नन्द पाच िकलोमीटर ऑिफस पएरे जािथ आ घुरती काल घरक काज-उदम सेहो करैत आबिथ । जेना बृहस्पिके हाट लगैत िल तँ ओतएसँ हिियर तरकारी, चाउर दािल इत्यािद आनब, ई सभ । हाट रिवक िटीक िन सेहो लगैत िल आ ओहू िन अपने जा कए सभटा घरक काज करैत िलाह । बच्चा सभक काज मािि पढ़बा िि सीिमत िल । दूि पैकेट बला अबैत िलिह कारण उठाना दुहबा कए अनबामे बच्चा सभक पढ़ाइमे भागठ पिित । बिका बेटा जे गंगा िज कॉलोनीमे किियो ककरो फूल उखािथ लैत िल आ किियो ककरो िखिकी पर िाटी फेिक दैत िल, डेढ़ सालक गाम पवासक बाद शान्त भए गेल िलिह । नन्दके मोन िििह जे कॉलोनीमे एक बेर बेटाके लए पिसीक ओिठाम गेल िलाह आ पिसीक पतीसँ बेटा क्षमा याचना कएने िलिन्ह । कारण कायालयसँ अएला उतर जात भेल िलिह जे बेटा हुनका पर िाटी फेकने िलिन्ह, जखन ओ बेचारी िखिकी लग ठाि बाहर िि िकि देिि रहल िलीह । आ िि बेटा एक बेर कोनो पैघ बच्चाके पाि फेिक कए मारने िलिन्ह, जखन ओ बच्चा साइिकल पर चढ़ल िल । भेल ई िल जे ओ पैघ बच्चा कॉलोनीक एक चकर काि कए साइिकल लौटेबाक अपन वचनक पालन नि कएने िल आ घुरलाक बाद -दोसर चकर लगा कए अबैत िी- ई बजैत-बजैत साइिकल लए आगू बि रहल िल । िटका बेटा क्षमा याचना करबासँ सेहो मना कए देने िलिन्ह कारण ओ सोचैत िलाह जे हुनकर कोनो गलती नि िलिह । बेश तखन एि बेर बच्चा सभके जखन नन्द पिसी सभसँ भेट करबाबए लेल गेल िलाह तावत िि बिका बेटा तँ पूणतिया अपन चञ्चल स्वभावक िपरीत स्वभावक भए गेल िलाह मुदा िट बेटा अपन स्वभावपर दुरागह करैत िि िलाह । नन्दक दुनू बेटा वगमि पिम अबैत िलिह । िकि िन िि सभटा ठीक-ठाक चलैत रहल । पुरनका सभटा िान्ता-िफिकर लगैत िल जेना खतम भए गेल होअए । गामक एक दू गोटे सेहो पटनामे रहैत िलाह । मिनामे एकटा रिव आिथत िल, जािि िन सभ गोटे कतहु घुमए लेल जाइत िलाह । एक रिव कोनो गाँआक अिठाम तँ कोनो आन बेर ििियाखानाक यािि । एक बेर िियाखाना गेल रहिथ सभ गोटे तँ आरिा नन्दके पुिलिन्ह-

''हमरा सभ आएल िी ििियाखाना, बाहरमे बोडिलागल अिछ बोटेिकल गाडेनक आ गेटक ऊपरमे िलखल अिछ बायोलोिजकल गाडेन''।

''पिने सोनपुरमेला सभमे असियी िि सभक पदशनि होइत िल आ लोकक जीह पर ओकरा लेल ििियाखाना शब्द आिि गेल । मुदा एतए तँ कताक बीघामे वृक सभ लागल अिछ, पत्येक वृक पर ओकर नाम आ वनस्पिशास्तीय िवरण सेहो िलखल अिछ आ तािह दारे एकर नाम अंगेजीमे वनस्पि उदानक लेल बोटेिकल गाडनि पिि गेल । मुदा बादमे अनुभव कएल गेल जे जन्तु आ वनस्पिक रपमे दू तरहक जीविजान अिछ । एिह उदानमे वनस्पि, िि आ बाघ-िसह इत्यािद सेहो पदिशत अिछ । तािह दारे एकर नाम बायोलोिजकल गाडनि वा जैिवक उदान दए देल गेल । पुरनका बोडिजतए-ततए रिहये गेल''।

एक बेर सभ गोटे गेल रहिथ एकटा गाँआक अिठाम । ओतए चचा चलए लागल जे गंगा पुल केर उदाटन दू तीन सालसँ एिह साल होएत- अिला साल होएत एिह तरहक चरचा अिछ । नन्दसँ ओ लोकिन पुिलिन्ह-

“अहाक बुझने कहुबया छी एहेन पुलक उदघाटन भए जएतैक । मुख्यमन्त्री तँ कहने छथि जे एही साल एकर उदघाटन भए जएतैक”।
“कहियो नहि होएतैक । दू-तीन सालसँ तँ सुनि रहल छीयैक। यावत एकटा पाया बनैत छैक तँ ओहिमे ततेक ने बालु देने रहैत छैक जे थोड़ेक दिनमे दरारि पड़ि जाइत छैक । फेर राता-राती ओकरा तोड़ि कए फेरसँ नव पाया बनेनाइ शुरू करैत जाइत अछि”।
गंगा पुलक चरचा सुनि नन्दक सोझा पाया परसँ गंगाजीमे खसैत जोन-मजदूर सभक छवि नाचि जाइत छलन्हि । नन्दक विवाद ठीकेदार आ संगी अभियन्ता सभसँ काजक संबंधमे होइत रहैत छलन्हि । एकटा पायाक कायकि संबंधमे नन्द अपन विरोध पकट कएने छलाह, किछु दिनुका बाद ओ पाया फाटि गेल, एकटा पैघ दरारि पड़ि गेल छल बीचो-बीच । राता-राती ठीकेदार-अभियन्ता लोकनि ओकरा तोड़ि देलन्हि । राति भरिमे कतहुसँ ओतेक विशाल पाया कोना टूटि सकैत छल, कैक दिन लगैत? से अगिला दिन दरारिक स्थान पर खिड़पाल खिआओल गेल, जे ककरो नजरि नहि पड़ि जाइ । एहेन घटनाक चरचा बहुत दिन धरि होइत रहल । नन्दक आदर अपन नीचाक कर्मचारीक बीच एहि घटनासँ बढ़ि गेल छलन्हि मुदा आब ठीकेदार आ अभियन्ता लोकनिक बीच नन्द रावण बनि गेल छलाह । सभ टा काज ठीक-ठाक चलि रहल छल । नन्दक बच्चा सभ गणित आ विज्ञानक अंकगणितीय पश सभ जनबरीसँ मार्च धरि बना लैत छलन्हि । मुदा घरक सभ काज किछुएक तँ नन्द स्वयं कए लैत छलाह, नन्दक बच्चा सभ स्कूल गेनाइ आ घर अएनाइक अतिरिक्त बाहरी दुनियासँ अनभिज्ञ छलाह । कतओ घुमए जाथि तँ नन्दक संगे, एक तरहे बुझू जे नन्दक बच्चा सभक व्यक्तित्व एकटा अलगे रीतिसँ विकसित भए रहल छलन्हि । नन्द सामान्य जीवन व्यतीत कए रहल छलाह मुदा गंगा पुलक कोनो चरचा हुनकर अन्तरमनमे हुड़दंग शुरू कए दैत छलन्हि । आ ताहि दारे शनै-शनै गाँआ-घरआक आ दोस्त-महीम लग जएबाक कम कम होमए लागल । फेर नहि तँ कोनो दोस्त-महीम, नहि तँ कोनो दोस्तक घर अएनाइ-गेनाइ ।
ओहि समयमे मीडियम वेभक एकटा जापानी टान्जिस्टर नन्दक घरमे छलन्हि, वैह मनोरंजनक एकमात्र साधन छल । हुनकर बच्चा सभ एकरा रेडियो कहैत जाइ छलाह, आ नन्द बुझबैत छलखिन्ह जे रेडियो बरड पैघ होइत अछि, टान्जिस्टर आकारमे छोट होइत अछि । नन्द जखन नोकरी शुरू कएने रहथि तँ बुश कम्पनीक एकटा रेडियो गाम लए गेल छलाह । सौँसे टोलबैय्याक भीड़ जुमि गेल छल रेडियो सुनबाक लेल । मुदा ई जापानी मीडियम वेभ रेडियो मझोला आकारक बैटरीसँ चलैत छल आ खूब बैटरी खाइत छल, माने ई टान्जिस्टर । बैटरी पायशा महिनाक दस दिन धरि चलैत छल । बैटरी एक महिनामे एक बेर अबैत छल, महिनबारी किरानाक वस्तुजातक संग । से नन्दक बच्चा लोकनिक मनोरंजनक ओ साधन महिनामे बीस दिन काज नहि करैत छल । आ ताहि दारे बच्चा सभ पलंगक दुनू कात दू टा गोल पोस्ट बनबैत छलाह। ई गोल पोस्ट प्लास्टिकक एक-दोसरामे जुड़ि बला खेल सामगीसँ बनैत छल, ई खेल सामगी पता नहि कतेक दिनसँ घरमे पड़ल छल, पाया गंगा ब्रिज कॉलोनीमे कोनो संगी देने छलखिन्ह । नन्दक दुनू बेटा दुनू दिसि ककबाक प्लास्टिकसँ खेलाइत छलाह। ए बी सी डी क कचकाराक खेल-सामगी बॉल बनैत छल । खेलक नियम सेहो आन छल। मात्र एक शॉटमे एक गोल पोस्टसँ दोसर गोल पोस्टमे गोल करए पड़ैत छल । एहि तरहक कैकटा नूतन कीड़ाक जनक छलाह नन्दक दुनू पुत्र। एहि तरहे समय बितैत गेल । बाहर एनाइ-गेनाइ किछु कम भैये गेल छल । तकर बाद दूटा घटना भेल । एक तँ छल गङ्गा पुलक उदघाटन । आ दोसर मिाही

परीक्षामे नन्दक दुनू बेटा पहिल बेर प्रथम स्थान प्राप्त नहि कए सकल छलाह । एकर बाद नन्द असहज होमए लगलाह । ओना एहि दुनू घटनामे कोनो आपसी सम्बन्ध नहि छल मुदा नन्दक अन्तर्मनकेँ जे हुनकामाथ छलन्हि से बढ़ए लगलन्हि । आब ओ एकएक तँ सरकारी तन्त्रसँ न्याय नहि पाबि सकल छलाह आ पुलिस लोकनि सेहो पढ़ाइमे पाछाँ गेल छलन्हि, से अदृश्य शक्तिक प्रति हुनक आसक्ति फेरसँ बढ़ए लगलन्हि । सभ परिणामक कारण होइत छैक आ कारणक निदान जखन दृश्य तन्त्र द्वारा नहि होइत अछि, तखन अदृश्यक प्रति लोकक आकर्षण बढ़ि जाइत अछि । आ नन्द तँ अदृश्यक प्रति प्रारम्भहिसँ, बाल्यकालेसँ आकर्षित छलाह ।

"नन्द छथि"?

एक गोट अधवयसू, मुँहक दात पान निरन्तर खएलासँ कारी रंगक भेल, पातर दुबर श्यामश्याम रंगक, नन्दक घरक गील खटखटा कए पुछलन्हि ।

"नहि । ऑफिससँ नहि आएल छथि मुदा आबैये बला छथि । भीतर आउ, बैसू"- नन्दक बालक कहलथिन्ह ।

"हम आबि रहल छी कनेक कालक बाद"।

किछु कालक बाद नन्द सुरसुरायल अपन घरमे, जेना ओ अबैत छलाह, बिना वाम-दहिन देखने, घर पहुँचलाह । पाछाँ लागल ओहो महाशय घर पहुँचलाह। नन्द हुनका देखि बाजि उठलाह-

"शोभा बाबू। कतेक दिनुका बाद"।

"चिन्हलन्हि गेलहुँ"- शोभा बाबू बजलाह ।

आ एकर उतरमे नन्द बैसि गेलाह आ हुनकर आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलन्हि ।

"एह बताह, अखनो धरि बतहपनी गेल नहि अछि"। शोभाबाबूक अन्तर्मन एहि तरहक आदर पाबि गदगद भए रहल छल।

शोभाबाबू छलाह कबिी गामक । नन्दक सभसँ पैघ बहिनक घरअर । बहिन बेचारी तँ मरिए गेल छलीह, भवानी मामागाममे - नन्दक गाम मेहथमे- पेट दुखएलासँ अकस्माते काल-कवलित भए गेल छलीह । नन्दक बहिनौउ बढ़िया चास-बास बला घोघिपर चढ़ि लगान वसूली लए निकलैत छलाह । मुदा भवानीक मुइलाक बाद बहिनौउसँ सम्बन्ध कम होइत गेल छलन्हि । कोनो जानि बुझि कए नहि वरन् अनायासहि । आ आइ पचीस सालक बाद शोभाबाबूसँ पटनामे भेट भेल छलन्हि ।

"ओझाजी कोना छथि। हमरासभ बहुत कहलिअन्हि जे दोसर विवाह कए लिअ मुदा नहि मानलन्हि"।

"आब ओ पुरान चास-बास खतम भए गेल । जमीन्दारी खतम आ चास-बास सेहो । मुदा खरचा वैह पुरनके । से खेत बेचि-बेचि कतेक दिन काज चलतए। सभ बाहर दिस भागए लागल । मुदा हम कहलिअन्हि जे अहा हमरा सभसँ बहुत पैघ छी, बहुत सुख देखने छी, से अहा बाहर जाए कोनो छोट काज करब से हमरा सभके नीक नहि लागत"।

शोभा बाबू कंठमे पानक पात आबि जएबाक बहना कए चुप भए गेलाह, मुदा सत्य ई छल जे हुनकर आँखि आ

कंठ दुनू भावावेशरेकमे अवरुद्ध भए गेल छलनि। किछु काल चुप रहि फेर आगा बाजए लगलाह-
“से कहि बिना हुनकर औपचारिक अनुमति लेने घरसँ चूड़ा-गूड़ लए निकलि गेलहुँ। रने-बने भटकैत सिमरिया स्नान कए नाओसँ गंगापार कएलहुँ आ सोहमे पटना पहुँचि गेलहुँ। पहिने एकटा चाहक दोकानपर किछु दिन काज कएलहुँ। ओहि दिनमे पटनामे अपन सभ दिसका लोक ओतेक मामिमे नहि रहथि। अवसरि कम छल। फेर कैक साल ओतए रहलहुँ, बादमे पता चलल जे एहि बीच गाममे तरह-तरहक गप उड़ल। जे मरा गेल आकि साधु बनि गेल शोभा। फेर जखन अपन चाहक दोकान खोललहुँ तखन जा कए गाम एकटा पोस्टकार्ड पठेलियैक। आब तँ बीस सालसँ बी.एन.कॉलेजिएट स्कूल लग चाहक दोकान चला रहल छी। ओतहि पानक स्टॉल सेहो लगा देने छियैक”।
“सभटा दात टूटि गेल शोभा बाबू”।
“चाहक दोकानमे रहैत-रहैत चाह पीबाक बेसी सक भए गेल। मुदा ताहिसँ कोनो दिक्कत नहि भेल। मुदा जखन पानक दोकान आबि गेल तखन गरम चाह पीबैत छियैक आ ताहिपरसँ ठंढ़ा पान दात तरमे दए दैत छियैक से ताहिसँ गरम-सदभिलासँ सभटा दात टूटि गेल”।
एहि गपपर नन्द आ शोभा बाबू दुनू गोटे हँसए पड़लाह।
फेर गप-शप चलए लागल। शोभाक भौजी तँ मरि गेल छलीह मुदा ज्यो भतीजी सभ बैत रहैत छथि तँ मेहि कबीक बीच संबंध जीवित रहैत, मुदा विपत्ति जे आएल तँ सभटा एके बेर। नन्दके मोन पड़लनि जे भउजीनी खेलाइत छलीह पड़िसमे आ आबि कए नन्दक माएके कहलनि, जे फलना-अँगनाक फलना गोटे पेटपर हाथ राखि देलकनि आ तखने तेहन पेट-ददशुरू भेलनि जे कतबो ससारल गेलनि तैओ नहि ठीक भेलनि आ नन्दक आँखिक सोझामे बच्चियाक रहस्यमय मृत्यु भए गेलैक।
शोभाबाबू कहलनि- “ओ बच्चियो टा जे जीबैत रहितए तँ सम्बन्ध जुड़ल रहितए”।
मुदा नन्द जेना कतहु दोसर ठाम चलि गेल छलाह। अपन ओहि विषयपर जे हुनका चिंतगर छलनि, बच्चेसँ। ई जे पारिवारिक जंजाल, हाटसँ तरकारी आनब, बच्चाक परीक्षाक परिणामक चिन्ता करब, ई सभ अपन अगजक कहलासँ कुमोनसँ कए रहल रहथि।

गंगा ब्रिजक उदघाटन भए गेल आ दुनू पुत्र वर्गमे प्रथम नहि केलकनि। फेर पुत्री सेहो विज्ञान लेने छलीह, अन्तर स्नातकमे, ताहूमे जीवविज्ञान। मुदा शनै-शनै छमाही आएल, वार्षिक परीक्षा आएल मुदा सभके अंक तँ नीक आबनि, मुदा प्रथम स्थान नहि प्राप्त होइत छलनि। गंगा-ब्रिज आ परीक्षाक अंकमे तँ कोनो परस्पर संबंध नहि छल। मुदा नन्दक विशवास माता-पिताक कर्मसँ पुत्र-पुत्रीक आगा बढ़बापर छल। गंगा-पुल निर्माणमे जे भ्रष्टाचार छल ओकर विरुद्ध अध्ययनमे हुनकर विफलता आ अगजक कहलापर पारिवारिक उत्तरादायित्व पूरा करबाक पयास एकर कारण छल। एहि बीच एक बेर बच्चा सभक काका आ नन्दक अगज पटना डेरापर अएलाह। नन्द गोर लागि कए कहलनि-
“गंगा पुल देने आएल छी आकि स्टीमरसँ”।
“आएल तँ छी स्टीमरसँ, बुझले नहि छलए जे गंगा पुलक उदघाटन भए गेल छैक। से घुरब तँ पुलक रस्ते जाएब। सुनैत छियैक जे नबका-नबका डीलक्स कोच सभ ढेरक-ढेर खुजल छैक”।

“नञि कोनो जररी नञि अछि पुलसँ जएबाक । बरड गिबिरी भेल िक एकर ञामाणमे । कञियो ञि जएतैक”।
अगजके ञकि बुझि नञि पलिञह जे की भेल अछि नन्दके ।
“मोन ठीक रहैत हि ने । दमा बेशी तंग तँ नञि कए रहल हि”- दुनू भाए दमाक रोगी िलाह।
“नञि से सभ ठीक अछि । मुदा अहाक कहलासँ सभटा पुरान गप ञसरबाक चेषा कएलहुँ । ओञि पुल ञामाणमे जे सभ भेल, मजदूर सभक पायापर सँ घुरािही खा कए खसब देखैत रहलहुँ, सैकािमे मजदूरसभ मञि गेल। आ भषाचारसँ अपन घर भरलञह अञायन्ता लोकञ । आब जखन पुलक उदाटन भेल तखन मािं ३० टा मजदूरक नाम ञिलापर ञञि कए टाञि देलञह आ सभ अञायन्ताके पुरस्कारक घोषणा भए गेल । कञिया ई पुल टूञि कए खञि पति तकर कोनो ठेकान नञि । हम संघषिशुर कएलहुँ तँ दरमाहा बन्द करा दइ गेल । सभ सिनातरणक बाद दरमाहा बन्द भए जाइत अछि आ पञवारके गाममे ििए पित अछि । अहाक कहलासँ संघषकिे िञि एञि सिनातरणमे अएलहुँ । ञसरए चाहलहुँ सभटा । खसैत लहास, कनैत हुनकर सभक पञवार । सपनामे अबैत रहल ई सभ सहसबाढ़ञक रप बञि कए । हमरे सन कोनो शाञत आत्मा अछि ओ सहसबाढ़ञ जे अपन संघषिअिञजू िञि मञि गेल होएत आ आब बहाण्डमे घुञआ रहल अछि । आब देखू तीनू बच्चाक परीक्ा पञणाम, सभञन पिम करैत अबैत रहञि, आब की भए गेलञह। हम जे संघषिबीचेमे ििलिहुँ तकर िी ई पञणाम”। नन्द हबोढ़कार भए कानए लगलाह ।
“िर बताह । जे भषाचार कएलञह से ने जानताह । जे मजदूर लोकञक अञिकार मारलञह ञनका ने फल भेटतञह । अहा तँ अपना भञसक संघषिकिरबे कएलहुँ । आ अपन पाञवाञक जीवन के नञि चलबैत अछि । दोसराक गलतीक दारे अपन बच्चासभके ञलटऽ देबैक । एञिमे एकर सभक कोन कसूर िक?”
फेर दुनू भाएँक गाम-घरक गप-शप शुर भेलञह । नन्द बजैत-बजैत कतहु बीचमे गुम भए जाइत िलाह । अगजके बुझल िलञह जे ई ञहाञ आब नञि ञिहत । बोल-भरोस दैत रहलाह मुदा बच्चेसँ देखने िञि नन्दक ञदपना, नञि जाञि आब की करत । भाबहुसँ सोझा-सोझी गप नञि होइत िलञह । मुदा अपरोक सम्बोिन कए कहलञह-
“कञया आब अहीपर अछि । बच्चा सभपर ध्यान राखब”।
नन्द अगजके संग लऽ जा कए महेन्द्रूघाटमे स्टीमरपर िञि अएलाह, कारण हुनका डर िलञह जे कतहु ई बीचेमे बससँ पुलक रस्ते नञि ञदा भए जाञि आ पुल तँ आइ नञि तँ काञि िसबे करत ।
तकर बाद ज्योञाष कुण्डली इत्याञक खोज-बीन पारम्भ केलञह नन्द । ञान-ञान तरहक पािर सभ, रत सभ बच्चा सभक हािमे देलञह आ अपन आँगुरमे पञरए लगलाह । एक बेर हनुमान चलीसा कीञ कए अनलञह तँ जतेक गोटे घरमे िल सभक लेल एक-एकटा आञ लेलञह । पाच-दस टा फाञले घरमे रहैत िल, लोक सभक लेल । जे बाहरसँ आबञि हुनका एक-एक टा हनुमान चलीसा पकिा देल जाइत िलञह । एञि िखा-िखीमे एक ञन नन्दके एकटा ठक ताञकिसँ भेट भए गेलञह । नन्दक मनोञजानके ओ तेनाके पकिलिक जे नन्द हुनका भगवानक दूत बुझए लगलाह । ओ ताञिक अपना लग सभ वस्तुक समािन रखने िल, भषाचारीके दण्ड ञआ सकबाक, बच्चा सभक ञजल्ट नीक करेबाक, सभके स्वस्ि रखबाक आ आर आर तरहक समस्या सभक । ई सभटा समस्याक समािनक आिर िल तंि ञजान, जकर ञशसनीयतापर कोनो पकारक अञशास नन्दके कञियो नञि िलञह । ओ ताञकि नन्दसँ गुप्त पूजा-पाठ लेल पाइ-कौिक माग

करए लागल । ओ तान्त्रिक कहैयो कहलन्हि जे माता सपना देलन्हि अछि जे आब दुष्क नाश होएत। आबए वला औक आश्विन, शारदीय नवरात्रिमे सम्पूर्ण सिद्धि भए जएत । फेर मात्र रास पूजा पाठक विधि, शवासन-योग आदि बता देलकन्हि नन्दके आ नन्द ओहि सभ विधिक अनुसरण ओहिना करए लगलाह जेना एकटा विद्यार्थी अपन गुरुक पाठक अभ्यास अक्षरशः अनुरुप करैत अछि । आश्विन भरि सभ काज छोड़ि नन्द एहि सभमे लागल रहलाह मुदा आश्विन आएल आ चलिओ गेल मुदा नहि किछु हेबाक छल आ ने किछु भेल । आश्विनमे कहल गेल जे आब भष्ट अन्यायन्ता सभके सजा भेटबे करतैक, आबए वला औक बरखा । एहिना साल बीति गेल मुदा सजा वला एबाक जे समय सीमा छल से आगा बढ़ैत रहल । पंडितजीके किछु आर्थिक समस्या सेहो अएलन्हि आ नन्दके तकर भार वहन करए पड़लन्हि । घर-दारपर पंडितजीक बच्चा सभ सेहो तान्त्रिक विद्या शुरु कए देलक। पलंगक नीचा भगवती- ई शब्द पंडितजी वा तान्त्रिकजीक बच्चा बाजथि आ नन्द पलंगक नीचा भगवतीके ताकए लागथि । फेर पंडितजी विवाह-दानक पस्ताव अपन पुत्र-पुत्रीक राखए लगलाह, नन्दक इंजीनियर भातिजसँ अपन पुत्रीक आ अपन पुत्रसँ नन्दक पुत्रीक । आब नन्दक मोन उचटि गेलन्हि, यावत अपना छल गप सीमित छलन्हि तावत छल स्वीकार छलन्हि मुदा बाल-बच्चाक अहित हुनका कहियो स्वीकार नहि भेलन्हि । एम्हर गामक एक-दू गोट नन्दक भातिज आ नन्दक भैया सेहो तान्त्रिकके घरपर जाए रबाधि देलथिन्ह, से ओहो अन्तमे स्वीकार कए लेलक जे ओकरा कोनो तंत्र-मंत्र नहि अबैत छैक आ नहिये ओ एहि विधिसँ ककरो सजा दिआ सकैत अछि । नन्दसँ लेल पाइ ओ घुरा देत ओ ई गप सेहो कहलक, मुदा कहियो पाइ घुरा नहि सकल । नन्दक लेल ई एकटा पैघ आघात छलन्हि। भक्ती गामक ओहि तान्त्रिकक घरक बगलसँ जाथि मुदा नहि तँ वैह टोकैत छलन्हि आ नहिये नन्द ओकरा टोकैत छलथिन्ह । एम्हर नन्दक पुत्रीक विवाह भए गेलन्हि आ नन्द जेना सभ दिससँ आसरा छोड़ि बिना लक्ष्यक जिनगीक पथपर आगा बढ़ए लगलाह ।

पएरे ऑफिस गेनाइ-एनाइ, साझमे सोचैत रहनाइ । किछु गंथ सभक जे पठन होइत छलन्हि सेहो बन भए गेल छलन्हि । बच्चा सभक संग बैसि कए जे पढ़ैत छलाह सेहो आब कहा भऽ पबैत छलन्हि । फगुआ आ दुगापूजामे गाम जेबाक जे कम छलन्हि सेहो आब टूटि रहल छलन्हि । पूरा परिवार आब मात्र दुगापूजामे गाम जाइत रहथि । मुदा नन्द फगुआमे असगरे गाम जेनाइ नहि बिसरैत छलाह । एहिना गाम जाइ आबएमे नन्द गाममे एकटा दूरक पीसाक एहिठाम जाए आबए लगलाह । पीसा कालीक भक्त रहथि । हुनकर गाम नन्दक गामक बगलमे छलन्हि । बेचारे नीक लोक । नन्द हुनका लग जाथि आ पवचन सुनथि । फेर हुनकासँ दीक्षा सेहो लेलन्हि । काली-सहस्रनामक पाठक अतिरिक्त आर किछु नहि, नन्द भरि दिन ओही पाठमे लागल रहथि । नन्दक मोनमे डाइन-जोगिन सभक विचार अबैत रहैत छलन्हि । आस-पड़ोसक लोकके शंकाक दृष्टिएँ देखैत रहैत छलाह । बच्चा-सभक संग परीक्षा दिआबय जाइत छलाह, शंकित मोने जे हुनकर कोनो शत्रु हुनकर बच्चा सभके हानि नहि पहुँचाबए । मुदा पीसाजीसँ दीक्षा लेलाक बाद हुनकामे विरक्तिजनित आत्मविश्वास आएल छलन्हि । फेर सभटा काज मन्त्रि गतिसँ होमए लागल । बच्चा सभक पढ़ाइ-लिखाइ, ओकर सभक नोकरी-चाकरी । वैह मध्यम वर्गक जोड़ि पाइ, वैह मध्यमवर्गीय आकांक्षा । विआह-दानक झमेला । घरक आ बाहरक छोट-मोट वाद-विवाद । बच्चा सभक विशेष पत्रियोगिता करबाक साहस देखि नन्द जेना आर आशस्त भऽ गेल छलाह । कारण घरसँ बाहर कहियो हुनकर बच्चा सभ विकलैत नहि रहए । घर अएलाक बाद दोस-महीम सभ सेहो नहि । बाहरक दुनियासँ तैयो पतियोगिता कए रहल छल । पतियोगिता परीक्षक लिखित परीक्षामे

उतीर्णभऽ जाइत छलाह मुदा साक्षात्कारमे भाषा आ पान्तक गप आबि जाइत छलन्हि । नन्दक बच्चा सभक कहियो ओहि तरहक वातावरणमे पालन नहि कएने छलाह से बच्चो सभ आत्मविश्वस्त भऽ जाइत छलाह जे ई कोन नव प्रवेश अछि । मुदा फेर नन्दक दुनू पुत्र नोकरीमे लागि गेलाह । आरतीसँ नन्दके जतेक पैघ पदक आशा छलन्हि से तँ ओ नहि पाबि सकल रहथि मुदा भारत सरकारक बी ग्रुपक नोकरी भेटि गेल छलन्हि हुनका । जमाय सेहो अभियन्ता छलथिन्ह ओ सेहो सरकारी सेवामे लागि गेलाह । दोसर बेटा सेहो बैंकमे अधिकारी बनि गेलन्हि । सिनेमा हॉलमे १० बरखसँ सिनेमा नहि देखने रहथि नन्दक बच्चा सभ । पटनाक पूजाक मेला, पटनदेवी, गोलघर धरि नहि देखने छलाह नन्दक बच्चा सभ । एहि विषयपर पढ़िने तँ लोक हँसी करथि मुदा बादमे सभके लागए जे ईएह तँ नन्दक परिवारक विश्वास ता तँ नहि बनि गेल अछि ? नन्दक घरमे टेलीविजन सेहो नहि छलन्हि ई सेहो लोक सभक लेल आश्चर्यक विषय छल । नन्द आ हुनकर सम्पूर्ण परिवार भारतीय टेलीविजनपर पसारित भेल रामायण धारावाहिकक एकोटा एपीसोड नहि देखने छलाह । कारण नन्दक घरमे टेलीविजन छलन्हि नहि आ कखनो गोटे दोसराक घर ओहुना नहि जाइत रहथि, टी.वी. देखए लेल जएबाक तँ प्रश्ने नहि छलए । नोकरी पकड़लाक बाद आरती घरमे एकटा टेलीविजन अनलन्हि । ओतए महाभारतक पचार देखि नन्द एक दिन पतीके कहलथिन्ह-

"अपन टी.वी.मे महाभारत किएक नहि दैत अछि ?"

"अपना टी.वी.मे खाली डी.डी.१ अछि । ऊपरमे एक गोटे रहैत छथि से कहैत रहथि जे हुनका घरमे बेटा एकटा ३०० टाकामे मशीन अनलन्हि-ए । ओकरा टी.वी.मे लगा देलासँ डी.डी.मेटो अबैत छैक । ओहीमे महाभारत अबैत छैक । बेटा तीन हजारमे टी.वी.कीनि देलन्हि । आब तीन सए टाका अहा लगा कए ओ मशीन अगिला मासक दरमाहासँ आनि लेब"।

"हिनकर टी.वी.छन्हि सैह तकर मशीनो अनताह"।

आरतीके एहि गपक जखन पता लागलन्हि तँ हुनका हँसी लागि गेलन्हि । अगिले दिन ओहि मशीनके लगबेलन्हि । अगिला रवि पिताजी जखन महाभारत देखलन्हि तँ सभ गोटे बड़ड पसन भेलाह । ओही मासमे आरती आम्सआइक हथियारक ट्रेनिंग लेल पटनासँ बाहर गेलाह । एहि एक मासक ट्रेनिंगक बीचमे दुगा पूजा पड़ैत रहए । पिताजी पहिल बेर दुगापूजामे गाम नहि गेल रहथि। आरती सेहो बीचमे शुक्र-शनि-रविक दुगापूजाक छुट्टी देखि पटना आबि गेलाह । रवि दिन रहए । महाभारत चलि रहल रहए । आरतीक एकेटा संगी रहथि । ओकरा संगे आरती सिन खेने-पीने कोनो काजसँ बाहर गेल छलाह । संगीक संगे घरपर अएलाह। मा दुनू गोटे लेल खेनाइ अनलथिन्ह ।

"बाबूजी खा लेलथि"।

"हँ तऽ । तीन बजैत अछि । महाभारत देखलाक बाद खा कए सूतल छथि । अहा सभ खाऊ, तावत हम हुनका चाह बना कऽ दैत छियन्हि, तखने सिन टुटतन्हि"।

आरती दू-तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह । हुनकर संगी कारण पुछलथिन्ह-

"की भेल"?

"पता नहि। घबराहटि भऽ रहल अछि"।

"काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने । ताहि दारे"।

"पता नहि"।

तावत भीतरसँ अबाज आएल । सभ क्यो दौगलाह।
“की भेल मा”।
“देखू ने । चाह आनए कऽ देखलयन्हि-हँ, मुदा आँखि खोलि कऽ देखथिये नहि रहल छथि । आन दिन तँ चाहक नाम सुनिते देरी उठि कए बैसि जाइत छलाह”।
नन्दक शरीर अकड़ि गेल छलन्हि । कना-रोहट सुनि ऊपरमे रहनिहार एकटा डॉक्टर आला लऽ आएल छलाह आ नन्दक मृत्युक घोषणा कए देने रहथि। आरती अवाक गुम्म भेल ठाढ़ भऽ गेल रहथि । हुनकर संगी नहि जानि कोन बाटे अपन संगी सभके बजा कऽ लऽ अनने छलाह । सभक ड्यूटी लगा देलन्हि । ककरो गेटपर तँ ककरो ड्रॉइंग रूममे । लोकक भीड़ लागए लागल छल । हुनकर संगी सभ समान किनिओनमे समेटि किनिना मोटरि आरती लग अएलाह ।
“क्रिया-कर्मक तैयारी करए पड़त आरती । बासघाट छैक लऽ जएबाक व्यवस्था करए पड़त । हम जाइ छी गाड़ीक व्यवस्था करए”।
“बाबूजीके गामसँ बड़ लगाव रहन्हि। कहैत रहथि जे अगिला सात जन्म छैक नगर घुमि कए नहि आएब । ओना बा केर दाह संस्कार बाबूजी पटनेमे कएने रहथि । मुदा ओहि समयमे पटनाक ई गंगा-ब्रिज नहि रहए । आब तँ गाड़ीसँ हुनका लऽ गेल जा सकैत अछि, तखन दाह-संस्कार भोरमे गामेमे भऽ जएत”।
“हम व्यवस्था करैत छी”।
आरतीक ओ संगी हनुमाने छल । कनी कालमे गाड़ी आबि गेल । रस्तामे पुलिस लाश देखि रोकत से समस्या आएल।
“अहा लग वदी बला परिचय-पत्र तँ हएत ने”।
“हँ, अछि”।
“ओना रोकत अएबाक तँ नहि चाही मुदा जौं रस्तामे पुलिस टोकए तँ देखा देबए”।
घर खाली भऽ गेल । ताला लागि गेल । दुनू भाए आ माए मृत पिताक संग शुक्लपक्क ओहि रातिमे पटना नगरसँ बाहर भेलाह । गंगा-ब्रिजपर गाड़ी ठाढ़ भेल । मृत व्यक्तिक एकटा सूची टागल छल, जोन-मजदूरक । ई सभ पुल बनेबामे खसि कऽ मरि गेल छलाह । आरती गाड़ीसँ उतरि सूची देखैत छथि ।
उराव, झा आ आर मारते रास मजदूर। एकटा “झा” उपाधिक मजदूर, बेशी आदिवासी उपाधिक! बहुत रास मूइल छलाह, कताक सैकड़ामे मुदा राता-राति पुलिसक मदतिसँ अभियन्ता-ठीकेदारसभ लहास भसिया दैत छलाह। ३० गोटेक नाम मुदा छल एतए ।
“पायाक ऊपरसँ घुरिया-घुरिया कऽ खसैत मजदूर, कतेक ठाम हम सूचना देने रही, कोनो सुनबाइ नहि भेल । ओकरा सभके न्याय नहि दिआ सकलहुँ तँ लगैत अछि जे दोषी हमहू छी”। नन्दक डायरीक ई अंश एक बेर आरती पढ़ने छलाह । ओ सोचलन्हि जे चलू घुरि कऽ आएब तखन बाबूजीक डायरी ताकब, कतए छन्हि। फेर गाड़ी आगा बढ़ल । गंगा ब्रिज पाछाँ छुटि गेल । आगा गंगा-ब्रिज कॉलोनी आएल । आरतीक बालकाक साक्षी । स्कूल, घर आ खेलेबाक मैदान। सटले गंगा ब्रिजक गोडॉन । कताक बेर चोरिक समान टकसँ एतएसँ बाहर जाइत छल, एकाध बेर पकड़ायल छल । बड़का छिआएल टक, कतेक चका बला, लोक गुमटीलग मेला जेना देखए पहुँचैत छलए । बच्चा-सभ टकक चका गनैत छलाह, १४ चका बला अछि वा १६ चका बला। जीवनक पहिलयोगितामे सभटा जेना बिसरि गेल छलाह आरती । भष्टाचार, जोन-बोनिहारक मृत्यु, पिताक संघर्ष

सभटा सोझा आबि रहल अछि मुदा आब।
“फेरसँ सोझा आएल ई सभटा, ओतबाक स्मृति बनि कऽ मुदा ओतबाक हाथ बनि कए तँ नहि । ई नाम आर पाथ एक हमरा लेल चुनने छलाह बाबूजी”।
“की बजलहुँ बेटा”- मा पुछलथिन्ह।
“नहि । ई कॉलोनी देखि कऽ ओकरि मोन पड़ि गेल”।
“नहि देखू ई पथयाहा कॉलोनीके”।
गंगा-ओजक चरचा घरमे टैबू बनि गेल रहए । आर पाथाके बुझल छलिह ई । मुदा एकटा आर पारम्भ तँ नहि भऽ जएत । आर पाथाक पशसँ मा भीतरसँ घबरा गेल छलीह ।
आब जे चुप्पी पसरल से गाममे जा कए खतम भेल । रस्तामे एकटा पकाश खण्ड टूटि कए खसल सहसबाढ़ नहि ओकर न्यून र प, छिथि ।

अगज मृत भाएक मुँह पकड़ि कानए लगलाह ।
“एहन भैयारी ककर हेतए । रि बताह, पैघ भायके क्यो छोडि कऽ पहिने चलि जाइत अछि । कहियो नहि कनेने छलिह तँ आइ ओकए कनबा रहल छि”। सौँसे टोल जुटि आएल छलि । समाचार सुनलाक बाद ककरो घरमे खेनाइ नहि बनल छलैक । पता नहि के ककरा टेलीफोन कऽ देने रहैक जे समाचार एतए पहुँचि गेल रहए ।
“कलममे बाबूक सारा लग दाह हेतनिह”, अगजक एहि इच्छाक बाद लहास ओतए गेल । कान्हपर उठा कए सभ पहुँचलाह कलम-गाछी ।
“देखियौ, केना मूँहपर हँसी छैक, एको रती मूइल लगैत अछि”- नन्दक अगज बजलाह।
आर पाथाक पैघ भाए जखने अपन आँखि लेल हाथि ओतबाक ओस बढ़ेलनिह आँखि ओ ओचवत सन भऽ गेलाह । काका भरोस देलथिन्ह । आगिमे जलैत गेल ओ मृत शरीर, पुना घुरि अएबाक कोनो सम्भावनाके खतम करैत ।
सभटा रीति-व्यवहार, लगैत रहए जेना ककरो मृत्युक नहि वरन् कोनो पाबनिक इन्तजाम-बात भऽ रहल अछि, धूमि-धामसँ । महापात्र आदिक कंटाहा बाह णक आदेशानुसार होइत छदकमक आ साझक पाठ गरुड़-पुराणक अविशसनीय विवरणक । सभ सम्पन्न भऽ गेल ।

परम शान्ति आ एक घोर कोलाहल । अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत रहबाक घटनाकम हुनका मोन पड़ि जाइत छनिह ।
आर पाथा ठाकुर ओकरि अस्मासि रहथि आ कलकत्तामे वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थि अति विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अस्मासि अधिकामे अध्यावसनमे लीन । अशान्तिक कण हुनका रहि-रहि कए अनायासहि मोन पड़ि रहल छनिह । जखन ओ अपन समस्या सभ अपन इष्ट-संबंधी सभके सुना कए अपन मोनक भार कम करैत रहथि । शनै-शनै समस्या सभ बढ़ैते चल गेल एतेक छवि जे आब दोसरके सुनेलापरात मोन आर उचटि जाइत छलनिह । ताहि दारे आब ओ अपने धरि सीमित रहए लगलाह । इष्ट संबंधी सभ

बुझय लगलाह जे आरथ्या समस्यासँ रश्चत भए गेल ि थ्रि । बच्चेसँ सपनामे भयावह चीज सभ देखाइ प ित ि लश्वह आरथ्याके । अखन िश्व हुनका मोन िश्वह कोना आि-आि पहर राश्वामे ओ घामे-पसीने भऽ जाइत रहथ्रि आ हुनकर माता-थ्यता थ्रांश्चात भऽ बीयथ्रा होकैत रहैत ि लश्चन्ह । थ्यताक-थ्यता आ तकर जन्मदाता के? भगवान ज्यो सभक पूवजि तखन हुनकर पूवजिके ? लोकसभ एश्च पश सभके हँसीमे उिा दैत ि लाह, थ्रकन्तु बादमे जखन आरथ्या दशनिशासि पढ़लश्वह तखन हुनका पता चललश्वह जे एकर उतरक हेतु कतेक ऋथ्र-मुथ्रा सेहो अपन जीवन समथ्यति कए चुकल ि थ्रि, मुदा ई पश एखनो अनुतथ्रत अथ्रि । अस्पसिताक थ्रिश्वामे फेरसँ ई सभ अनुतथ्रत पश हुनका समक स्पप बथ्रा आश्व गेल िश्वह । कखनोके थ्रानन्दमे हुनका लगश्वह जे ओ घरक ित पर ि थ्रि आ नश्च चाश्चतो शनैा-शनैा ितक थ्रन घेरल भाग थ्रथ्रा गेल जा रहल ि थ्रि । गुरत्मक कोनो शथ्रक्त हुनका खीथ्रा रहल िश्वह सहसबाढ़थ्रा सन बिका झोटाबलाक देहक गुरत्म शथ्रक्त । तावत िश्व जावत ओ नीचा नश्च खथ्रस प ित ि थ्रि । की ई ि लि कोनो पारदिक थ्रदशाश्वदेश आथ्रक कोनो भथ्रथ्रष्यक दुघटिनासँ बचबाक संदेश ? थ्रकि थ्रन िश्व तँ आरथ्या सुतबाक सही समयक पता लगबैत रहलाह परंतु शनैा-शनैा हुनका ई पता लाथ्रा गेलश्वह जे स्पप आ थ्रान एश्च जीवनक दूटा एहन रहस्य अथ्रि जे थ्रायम थ्ररद अथ्रि आ अनुतथ्रत अथ्रि । आ आरथ्या पैघ भेलथ्रि, फेर हुनकर पढ़ाइ शुर कएल गेल- अगस्त्यक स्तोि- सरस्पथ्रश्च नमस्तुभ्यम वरदे कामरथ्यणी, थ्रदारम्भम् कथ्रष्याथ्रा थ्राथ्रद्भिततुमे सदा । िगणेषजीक अंकुशक संग गौथ्ररशंकरक अभ्यिति थ्राथ्रद्ररस्तु । साते भवतु सुपीता देवी थ्राखर वथ्रानी, उगेन तपसा लर्वि यया पशुपथ्रापथ्रा,थ्राथ्रद्रासाध्ये सतामस्तु पसदातस्य ि्जिटी, जाहवीफेनलेखेव यन्मूथ्रि शथ्राना कला । एश्च श्लोकके बजैत काल पाया आरथ्या पशुपथ्रापथ्राक सामवेदीय तारतम्यक बाद अनायासश्च हा हा कऽ कए जोरसँ हँसए लगैत ि लाह आ बीचश्च मे रथ्रक जाइत ि लाह । थ्यता सोचलश्वह जे कम वयसमे पढ़ाइ शुर केलासँ आरथ्याक कुसी पर बैथ्रा कऽ माि पर हाि राथ्रख कऽ बैसबाक आदथ्रा तँ खतम होएतश्वह । माएक एकटा गप्प हुनका पथ्रान नश्च ि लश्वह। ओ थ्रचमे गप्प करैत-करैत आरथ्याक बातके अनश्चया दैत ि लथ्रिन्ह। एकबेर माएक कोनो संगी आएल ि लीह। आरथ्याक कोनो बातपर माए ध्यान नश्च दऽ रहल ि लीह। आरथ्याक हाि मे थ्रश्च घरक चाभीक झाबा ि लश्वह ते ओ कहलश्चन्ह जे ज्यो हुनकर बात नश्च सुनल जएतश्वह तँ ओ झाबाके सोझाक डबरामे फेथ्रक देताह। माए सोचलश्वह जे हा-हा केलापर झाबा फेथ्रकयेटा देताह तैँ आर अनश्चया देलश्चन्ह। पथ्ररणाम दुनु तरहे एके हेबाक ि ल। चाभी बहुत खोज केलो पर नश्च भेटल। एखनो घरक सभ अलमीरा आथ्रदक चाभी डुप्लीकेट अथ्रि। एतेक थ्रदनक बाद ई सभ सोथ्रा आरथ्याक मुँहपर अनायासश्च मुस्की आश्व गेलश्वह।थ्रादातवादी थ्यताके नोकरीमे थ्रकि ने थ्रकि थ्रदकत होइते रहैत ि लश्वह ताश्च दारे ओ आरथ्याके जल्दी सँ जल्दी पैघ देखए चाहैत ि लाह। तेसर सँ सोझे पाचम वगमि फनबा देल गेलश्वह।फेर भेल ई जे होलीक िटीमे थ्राअमानुसार सभ गोटे गाम गेल ि लाह। होली आ दुगापूजामे सभ बेर गाम जएबाक थ्रायम जेका ि लैक। थ्यताजी सभके ििथ्रि कए वाथ्रस भए गेलाह। फेर दरमाहा बन्द भऽ गेल ि लश्वह पाय़ा यैह थ्रटी गाम आएल ि ल जे आब सभके गामश्च मे रहए प तिश्वह। माए तँ कानए लगलीह मुदा आरथ्या खूब पसन भेलाह। मुदा सरकारी स्कूलमे ओश्च समय वगकि आगामे नवीन- ई लगा कए एक वगकिममे थ्रारखबाक गलत परम्परा नवीन थ्राका नीथ्राक आलोकमे लेल गेल ि लैक कारण नवीन नीथ्रामे आर थ्रकिओ नवीन नश्च ि ल। थ्यताजीके जखन एश्च बातक पता चललश्वह तँ ओ तमसायलो ि लाह आ एकर पथ्राकार स्पर प पाचम क्लासक बाद जखन ओ सभ शहर वापस अएलाह तँ आरथ्याके फेर एक वगतिरपा कए सोझे ििम वगकि बदलामे सातम वगमि नाम

श्चखवा देलश्चह। िठम वगक्ति श्चजान आ गश्चातक पढ़ाइ पाचमे वगमि कए लेबाक श्चताक श्चादेशक उदेश्चयक जानकारी आर श्चाके तखन जा कए भेलश्चह जखन पवेश-परीक्षामे यैह दुनु श्चषय पूिल गेल आ आर श्चा िटा आ सतमा दुनु वगक्ति पवेश परीक्षामे बैसलाह आ सफल भेलाह। बहुत श्चन बाद िश्च जखन क्यो आनो संदभमि िठम वगक्ति चचा करैत िल तँ आर श्चाके श्चिु अनश्चाजताक बोि होइत िलश्चह।गामक पवासमे एकबेर आर श्चा श्चताके श्चटी श्चखने िलाह कारण हुनकर जुता शहरेमे ि्श्च गेल िलश्चह। जुतातँ आश्चये गेलश्चह संगश्च श्चटीमे आर श्चाक श्चखल तीन टा शाश्चदक गलतीक श्चवरण सेहो आएल आ ईहो मोन पािल गेल जे एकबेर दौश्चा कए गश्चातक पश हल करबाक पश्चायोश्चातामे तीनक बदला हरबिमिे दुइयेटा पशके हल कऽ कए आर श्चा कोना अपन कॉपी जमा कए देने िलाह। हुनकर स्वभावमे कोिक पवेश कखन भेलश्चह से तँ हुनको नश्च बुझबामे अएलश्चह मुदा श्चताजी हुनका “कोिक समान कोनो दोसर श्चपु नश्च” एश्च संस्कृत श्लोकक दस बेर पाठ करबाक श्चादेश देने िलश्चन्ह- से िश्च मोन िश्चह। एकटा घटना सेहो भेल िल जाश्चमे स्कूलमे एकटा बच्चा झगिाक मध्य श्चालेटसँ हुनकर माि फोश्च देने िलश्चह। आर श्चा सेहो श्चालेट उठेलश्च मुदा ई सोश्च जे ओकर माि फूश्च जएतैक हाि रोश्च लेने िलाह। एकर पश्चणामस्वरूप हुनकर श्चता दू गोट काज केलश्चह। एक तँ हुनकर श्चालेटके बदश्च कए लोहाक बदला लकिीक कोरबला श्चालेट देलश्चन्ह जकर कोनो ने कोनो भागक लकिी खुश्च जाइत िलैक आ दोसर जे कॉलोनीमे समकक अश्चकारीक बैठक बजा कए कॉलोनी-अश्चमे स्कूल खोश्च देल गेल जतए आर श्चा पढ़ए लगलाह। बादमे क्यो पंश्चत जखन वाल्मीश्च रामायणक सुन्दरकाण्डक पाठ तँ क्यो ज्योश्चाष कँगुश्चया आँगुरमे मोती आ श्च मूनस्टोन पश्चरबाक सलाह कोि कम करबाक लेल देबए लगैत िलाह तँ ओ संस्कृत श्लोक हुनका मोन पश्च जाइत िलश्चह। बाल संस्कारक अंतगति सहायता मागबामे आ समझौता करबामे अखनो हुनका असहजता अनुभव होइत िश्चह। मुदा हाश्च आ जीत दुनुके बराबर बूश्च युद करबाक श्चशास हुनकामे नश्च रहलश्चह। आ श्चजय हुनकर लक्ष्य बनैत गेलश्चह शनै-शनै। जकर ओ जी-जानसँ मदश्च कएलश्चह सेहो समयपर हुनकर संग देलकश्चह। समय-समय पर कएल गेल समझौता सभ हुनकर संघषक्ति कम केलकश्चह। जतेकसँ दोश्चतयारी िलश्चह तकरे श्चाभेनाइ मुश्चकल भए रहल िलश्चह। फेर तँ नव शहरमे नव संगीक हेतु स्िान नश्च बचल। महत्वाकाक्षक अंत नश्च आ जीवन जीबाक कला सभक अश्चतीय अश्च। आर श्चा ई नाम आब कखनो-कखनो घरमे सुनाइ पिैत िल। कलकता शहर पश्चाभाक पूजा करैत अश्च। मुदा व्यवसायी होएबामे एकटा बाि िल - अंगेजीक संग बाङलाक जान जे ओ बाट चलैत सीश्च गेलाह। व्यस्त जीवनमे बीमारीक श्चिश्च-अश्चमे हुनका आराम भेटैत िलश्चह। बीमाश्चयेमे सोचबाक आदश्च मोन पिैत िलश्चह। आ ई फ्लैट श्चनलाक बाद माएके सेहो बजा लेलश्चन्ह। ओना हुनका बुझल िलश्चह जे माए एश्च सभसँ पभाश्चत नश्च होएतीह। कारण ओ अश्चकारी पती िलीह आ पुिके सेहो ओश्च रूपमे देखबाक कामना िलश्चह। ई नव शहर हुनक पुिक व्यश्चत्वमे सैदाश्चकताक स्िानपर पायोश्चकताक पश्चाशतता बढ़ा देने िलश्चह। आब समयाभावक कारण स्वास्थ्य खराब भेलेपरात सोचबोक समय पुिके भेटैत िलश्चह।व्यवसायमे सफलता पाश्चक पूवि आर श्चा एकटा कागजक श्चंश्चंग पेसमे काज केनाइ शुरु केलश्चह। अपन श्चिवत श्चंश्चंग पेस माश्चकसँ दरमाहाक बदला पर्सेंटेज पर काज करबाक आगह केलश्चह। ऑडरि आश्चा बाइंश्चंग आ श्चंश्चंग करबाबश्च आ आस्ते-आस्ते अपन एकटा श्चंश्चंग पेस लगओलश्च। श्चिु गोटे श्चनका अश्चठामसँ िपाइ करबा कए गाहकके बेचश्च। हुनका जखन एश्च बातक पता चललश्चह तँ ओ एकटा चलाकी केलश्च जे सभ बंडलमे अपन पेसक कैलेडर िऽ देलश्चन्ह। जखन अंश्चम उपभोक्ताके पता चललैक जे ओ सभ अनावश्यके दलालक माध्यमसँ समान कीश्च रहल िलाह

तँ ओ सभ सोझे आरथा थंथंग पेसके ऑडरि देबए लागल। आरथाके घरमे अपन नाम कखनहुँ काले सुथा पिथाह। थकताबक ऊपर पिल हुनकर नाम तँ कोनो कंपनीक लैिक- आ ओ ओकरासँ थाकटता अनुभव नथ कऽ पाथ सकैत िलाह। संसारक कुचाथ हुनकर थताक संघषकि अंत केने िलथाह मुदा आरथा व्यावसाथाक युद मथ्तषकसँ लित आ थातैत गेलाह।माएक अएलाक बाद आरथा ई नाम बीसो बेर थन भथामे सुनाइ पिए लागल। ओकर संगी लोकथा उपरोक्त व्यावसाथाक सफलताक घटना सभके जखन आरथाक माएके सुनबैत रहैत िलाह, ई सोथा जे ओ अपन थाकि बिाइ कऽ रहल िलाह तँ आरथा असहजताक अनुभव करए लगैत िलाह आ गपाके दोसर थथा मोथि दैत िलाह। हुनकर माए तँ जेना हुनक थवाहक हेतु आएल िलीह। माय जखन थाद ठानलथाह तँ हुनका आियभेलथाह कारण घरमे थादक एकाथिकार तँ हुनकेटा िलथाह। मुदा माए बूथ गेल िलीह जे हुनकर बेटा पैथटकल भए गेल िथाह आ थाद केनाइ थासथ गेल िथाह। आरथा सोचलथाह जे िटमे बरड थाद पूरा करबओने िथि ते आब थनकर थाद पूरा करबाक समय आएल अथि। थवाह फेर बच्या। माए अपन नाथामे पथाक रप देखलथाह। पथाक मृत्युक पथनथ बेटा पैथटकल बथा गेल िलथाह। मुदा आब ई नथ होएत। जे काज बेटा नथ कए सकल से आब नैत करत। नाथाक नाममे बेटा आ पथा दुहुक नामक समावेश केलथाह- आरथा नन्द। फेर पढ़ाइ शुर- थादरस्तु-ि गणेशजीक अंकुश आ वैह उगेन तपसा लदि यया पशुपथापथा। हुनकर बेटाके पथा पढ़ेलथन्ह ओ तँ घर सम्हारैत िलीह। आब पुतोहु घर सम्हारलथाह, बेटाके तँ फुरसथाये नथ। आब बा पढेतीह नाथाके।
उतपत्स्येत थमम कोऽय समानिमा कालोहम थारवथिथुिला च पृथ्वी।
पृथ्वी थशाल अथि आ काल थासीम,अनंत, एथ हेतु थशास अथि जे आइ नथ तँ काथि क्यो ने क्यो हमर पयासके साकिि बनाएत। आरथा अपनाके अपन माएसँ दूर अनुभव केलथाह, थकि अस्पसि सेहो िथि आ वुडलैण्ड नथांि होमक समीपसि थति थशालकाय अपाटमेटक अपन फ्लैटमे असगरथ अध्यावसनमे लीन अपन अतीतक पुनथशलेषणमे रत िथि। पथायोथाता परीका सभक उमथ बाकी िलथाहये से दू चाथटा परीकामे बैथा गेलाह आ केन्र सरकारक ई गुप बी वदीबला अथिकारी बथा गेलाह। माके कनेक संतोख भेलथाह जे क्लास वन नथ मुदा सरकारी नोकरी तँ केलक, ई थाजनेस-थाजनेस तँ ििलिक।

“चलह कनेक खा लैह, एना केने काज नथ चलतह”। आरथाक िटका मामा पेमपूवकि दबाथि कए कहलथाह। थकया-कमखितम भऽ गेल िल आब घुरबाक बेर आथ गेल िल, नोकरीक संग थताक मागपिर घुरबाक सेहो।

१९९५ क नवम्बरक मास।
केश कटायल मुँहे गामसँ दथभडा आ ओतएसँ पटनाक बस पर चढ़लाह आरथा। थकि थकताब बेथनहार अएलाह, तुक थालेने सभ थकताबक थशेषता कथ सुनओलथाह।थथसा-थहानी, उपचार, फूलन-देवी सँ लए मनोहर पोिि िथ सभ याििगणके एक-एक टा पिसैत गेलाह।ओथमे सँ थकि मोल-मोलाइ कएलाक उतर थाकएबो कएलथाह आ सभटा वापस लए जाइत गेलाह। बससँ उतरैत काल कंडक्टरसँ वाद-थवाद सेहो भेलथाह।

फेर नेबोक रस अकालबाक यंकि आश्चकारक चढ़लाह, रस अकाश्च देखओलश्चह, खलासीसँ वाद-श्ववादक उपरात ओहो उतश्च गेलाह।फेर ककबा बला, पेन बला आ पेचकश बला सभ चश्च़ कए उतरैत गेलाह। पुिलाक उपरात पता लागलश्चह जे गाि साढ़े दस बजे खुजत, ई गप्प बस बला झुटे बाजल िल। पि्लिका बसक सवारीके सीट नश्च भेटल िलश्चह, से बेशी अबेरो नश्च होएत आ सीटो भेश्चट जएत, एश्च तकिक संग माकेश्चटंगक उपकरणक रपमे ई शर्स िित गेल िल। गाि खुजबाक समय िल ११ बजे मुदा ११ बाश्चज कए पाच श्चनट िश्च बहस होइत रहल जे घिमे ११ बाजल अश्च आश्चक नश्च। पाि एगारह बाश्चज कए दस श्चनट पर जखन बादमे जाएबला बसक कंडक्टर, अशोक श्चि आ शाहीक बसक बीचक श्चितक बात कए झगि बजाश्च देलक -जे एको सेकेड ज्यो लेट होएत तँ जे बुझु से भए जएत- तखन डाइवर अकस्माते हॉनिबजाबए लागल। आरश्चाक बगलक सीट पर बैसश्च एकटा बूश्च़ बेटाके जोरसँ बजाबए लगलीह, पाच श्चनट गरदम गोल होइत रहल। सभ याि चश्च़ गेलाह आ दू-चाश्चटा याि जे अखने श्चवश्वासँ उतरल िलाह, जोर-जोरसँ बाजए लगलाह। पि्लिका बस बला हुनकर मोटा-चोटा उठा कए अपना बसमे लऽ जाए चाहैत िलश्चह मुदा ओ लोकश्च पढ़ल श्चखल िलाह आ अगुलके बससँ जाए चाहैत िलाह। ओ लोकश्च दू-चाश्चटा चौरि-कुँअरक नाम-गाम गनओलश्चह, तखन ओश्च बस बलाके बुझओलैक जे ई सभ फसादी लोक सभ अश्च- से कहलक जे टू बाइ टूक बदला ओश्च टू बाइ थी िकागािमे ठाढ़े जएबाके ज्यो इच्ि अश्च तँ हम की कर- श्चकरायो ओ एको पाइ कम नश्च लेत। से दू-चाश्च गोट बेशी याि लेबाक मनसूबा पूरा भेलाक बाद डाइवर गाि हाश्चक देलक। ओश्च श्चवश्वा-सभ परसँ एक गोट अिवयसू व्यश्चत्त चढ़ल िलाह ।संयोग ई भेल जे आरश्चाक दोसर बगलमे बैसल व्यश्चत्त गुनि्न करैत िलाह जे फलना बि बूश्च अश्च, एखन िश्च नश्च आएल। गाि खुजलाक बाद अश्चला चौक पर असकसा कए ओ उतश्च गेलाह आ तकर बाद ओश्च टू बाइ थी िििक तीन सीट बला हीसमे आरश्चाक बगलमे ओश्च सज्जनके जगह भेश्चट गेलश्चह।

आरश्चाक मोन श्चि िर िलश्चह आ बेशी बजबाक इच्ि नश्च िलश्चह। मुदा बगलगीर पश्चने अप्पन भाल्यके िन्यवाद देलश्चह जकर पतापे हुनका सीट भेटलश्चह। पटनामे आवश्यक कायििलश्चह ते लेट जाएबला बससँ गेला उतर काजमे भाङठ पश्चतश्चह। फेर अप्पन पश्चचय अश्चसस्टेट डायरेक्टरक रपमे देलाक उपरात ई सूचना देलश्चह जे दश्चभङाक संग पटनोमे हुनकर मकान िश्चह। दुनू घर अप्पन पुरषािसँ बनएबाक गप्पक संग, दुनू घरक दुमहला आ मारबल आ गेनाइटसँ युक्त होएबाक बातो कहलश्चह। बजबैका लोक के सुश्चश्चहार लोक बड्ड पश्चन पित अश्च से ओ आरश्चाके पश्चन करए लगलाह। आ ते पुिलश्चह-

“पटनामे अपनेक मकान कोन महल्लामे अश्च”।

आरश्चा कहलश्चन्ह- “अप्पन मकान नश्च अश्च,श्चकराया पर िी”।

श्चकि कालक शाश्चाक पित ओ सज्जन पनबटीसँ पान बहार कए आरश्चासँ पुिलश्चह जे-

“पान खाइत िी”।

“नश्च”।

एश्च उतरक पित अप्पन श्चशेषजता देखबैत ओ कहलश्चह, जे-

“हम तँ अहाक दाते देश्च कए बुश्च गेल िलहुँ”।

पान खेलाक बाद अप्पन बेटी सभक सासुरक चचा कएलश्चह। बेटाक आइ.ए.एस. केर तैयारी करबाक गप्प कएलश्चह आ कोनो गुपक चचा सेहो कएलश्चह जे श्चदािलोकश्चक बीच एश्च तैयारीक हेतु तैयार भेल िल आ

ओइ गुपमे पवेश मा‍ि पश्नाभावान लोकआक हेतु सीमत ‍ि‍ल। फेर आशरीमे ईहो कहलथि जे ओइ पश्नाभावान गुपक सदस्यता हुनकर पु‍ि‍के सेहो पाप्त ‍ि‍थि। आगा बढ़ैत-बढ़ैत गा‍ि‍ी एकटा लाइन होटल पर ठाढ़ भेल। थ‍ि‍ या‍ि‍ी एकर थरोि‍ कएलथि। एक गोटे कहलथि जे ई डाइवर-कंडक्टर खेनाइ खएबाक दारे एइ घरया लाइन होटलमे गा‍ि‍ी रोकैत अछि। एकर सभक खेनाइ एतए मुफ्तया ‍ि‍क आ संगइ सूचना भेटल जे मुफ्तया की रहतैक ओकर सभक खल या‍ि‍ीगणसँ परोक र पमे लेल जाइत ‍ि‍क आ बुझु जे एकर सभक खल या‍ि‍ी सभ भरैत ‍ि‍थि। हुनकर ईहो अपील ‍ि‍लथि जे क्यो गोटे नइ उतरए आ हाथ कऽ बसके स्टाटकिरए प‍ि‍तैक। थ‍ि‍ कालक उपरात एकाएकी सभ गोटे उतरैत गेलाह आ ओ सज्जन सेहो थआयाएल उतथ फराक भऽ ठाढ़ भए अथिलाचलक दुदशीक कारणक व्याख्यामे हुनकर गप्प नइ मानबाक मनोवृत्ताके सेहो दोषी कराथ देलथिन्ह। गा‍ि‍ी फेर खुजल आ थ‍ि‍ दूर आगू जा कए ‍ि‍काक संग ठाढ़ भए गेल। कंडक्टर कहलक जे सभ उतरैत जाऊ। गा‍ि‍ी पंक्चर भए गेल। लाइन होटल पर गा‍ि‍ी नइ रोकबाक अपील केआहार सज्जनक मत ‍ि‍लथि जे लाइन होटलपर जे गा‍ि‍ी ठाढ़ भेल, तखनेसँ जतरा खराब भए गेल अछि। आब आगू देखू की-की होइत अछि। नीचा उतरलाक बाद चाथ-चाथ, पाच-पाच गोटेक गोला बथ गेल। ई जगह पाया वैशालीक आसपास ‍ि‍ल। एक गोटे खेतक थस्तारक थथ ध्यान देलथि। घर सभक ऐल-फैल होएबाक सेहो चचा भेल। संगइ हुनकर सभक गाम थथ घर पर घर आ चार पर चार चढ़ल रहैत अछि आ से झगा‍ि‍क कारण अछि, अहू पर चचा भेल।

आरथाक बगलमे जे अ‍ि‍वयसू व्यक्त रहथि से थ‍ि‍ औंघायल सन ‍ि‍लाह थकएक तँ एइ व्यवा‍ि‍नसँ हुनका जे कनी-मनी भक लागल ‍ि‍लथि से टूट गेल ‍ि‍लथि। हुनकर बकार लाइन होटल पर आक नीचा ठाढ़ भेलापर मन्द भऽ गेल ‍ि‍लथि, से आरथा अनुभव कएलथि। फेर बस चल पि‍ल आ ओ सज्जन पुना शुर भए गेलाह। हाजीपुर शहर अएलापर तँ हुनक स्मृथ आर तीक्ष भऽ गेलथि।

थ‍ि‍ काल बस चलल तँ एकटा कॉलोनीक थथ इशारा कए ओ कहलथि-

“ई ‍ि‍ी गंगा थज कॉलोनी, की ‍ि‍ल आ आब की भऽ गेल अछि। एक भागमे रहबाक हेतु क्वाटिर आ दोसर भागमे थाटी-‍ि‍‍ि‍-सीमेट सभ भरल रहैत ‍ि‍ल। आब तँ कॉलोनीक मेटेनेसो नइ भए रहल अछि”।

आरथा चौंक गेलाह। कहलथि-

“एतय एकटा स्कूलो तँ ‍ि‍ल”।

ओ सोझा इशारा दैत देखेलथि-

“देखू, ओतए नामो खखल अछि। बरखा बुनीमे नाम अदहा-थदिहा मेटा गेल अछि”- फेर ओ चौंक कए पु‍ि‍लथि-

“अहाके कोना बुझल अछि”।

-हम एइ स्कूलमे पढ़ने ‍ि‍ी।

-मुदा एइ कॉलोनीमे तँ गंगा पुल थमाणक अथयंता लोकथ मा‍ि‍ रहैत ‍ि‍लाह आ स्कूलमे हुनके बच्चा सभके पढ़बाक हेतु एइ स्कूलक थमाण भेल ‍ि‍ल।

-हम सभ अही कॉलोनीमे रहैत ‍ि‍लहुँ।

-अहाक थताक नाम की ‍ि‍ी।

-‍ि‍ी नन्द ठाकुर।

पताक मृत्यु पंरह दिन पहिनहि भेल रहनि से स्वर्गीय कहबाक साहसक नहि पड़ि रहल छलनि।
-अहा ठाकुरजीक पुत्री छी।
ई कहि आरती हुनका दिस ओ अपनत्वसँ बेशी ममत्वक दृष्टि देलनि।
"अहाक नाम की छी"। आरती पुछलथिन्ह।
"आइ.ए.आजम" - ओ उत्तर देलनि।
तखन आरती हुनकर सभटा बच्चाक नाम गना देलथिन्ह। हुनकर एकटा बेटा नेहाल आजम आरतीक क्लासमे पढ़ैत छल। आब हुनकर स्वर बदलि गेलनि।
-कॉलोनीमे दू गोटे खूब पूजा करैत छलाह। एकटा पाण्डे जी आ दोसर अहाक पिताजी। पाण्डेजी तँ पूजाक संग पाइयो कमाइत छलाह। मुदा अहाक पिताजी छलाह पूर्णईमानदार आ दयालु। चंदा कए होम्योपैथीक दवाइ कानपुरसँ अनैत छलाह, आ मुफ्त इलाज कॉलोनी बलाके दैत छलाह। हमर बेटीक माथमे बड़का गूर भए गेल छलैक। कोनो एलोपैथिक बलासँ ठीक नहि भेल छलैक। अहीक पिताजी ओकरा ठीक केने छलथिन्ह। इंजीनियर रहितहुँ होम्योपैथीक रोगी हुनका रहनि।
डाइंग रूममे होम्योपैथीक छोट-पैघ, सादा-रंगीन शीशी सभ आरतीक आँखिक सोझा आबि गेल।
-आइ काल्हि कतए पोस्टेड छथि। बहुत दिनसँ सम्पर्के टूटि गेल। एतुका बाद कतहु संगे पोस्टिंग सेहो नहि रहल। बुझू भेट भेना पन्द्रह सालसँ ऊपर भए गेल अछि।
-पन्द्रह दिन पहिने हुनकर मृत्यु भए गेलनि।
आरतीक कटायल केश दिस देखि ओ कहलनि-
-हमरे सँ गल्ती भेल। केश कटेने देखियो कऽ नहि पुछलहुँ। ते अहा भरि रस्ता गुम्म छलहुँ।
फेर कहए लगलाह-
-मजदूरक पक्षमे बड़ चिंता रहैत छलनि।
तावत बस गंगा पुल पर आबि गेल छल। आगा फाटक पर बसके टिकट कटेबाक हेतु ठाढ़ कऽ देल गेलैक। क्यो गोटे संवादो देलक जे आगू वन-वे जेका अछि। एक कातमे रिपेयरिंग चलि रहल अछि। आरतीक आगा दृश्य घूमि गेलनि। एहि पुलक निर्माणकालक पाया सभक। कॉलोनीक टूटल देबालक पजेबा सभ। ओ देबाल सभ साल टूटैत छल। पिताजी कहैत छलथिन्ह जे इंजीनियर आ ठेकेदार सभ मिलल अछि। फेर मोन पड़लनि सूटकेस भरल रूपैय्या। आरतीक पिताजी एक लात मारने छलाह आ सूटकेस दूर फेका गेल रहए। एक गोट पितयौत भाए रहैत छलथिन्ह घरमे, से सभटा रूपैय्या ओहि सूटकेसमे राखि ओहि ठिकेदारके देलनि। मा सभके निकतबाया कोठली दिस लऽ गेलीह। एक बेर नन्द पुलक पाया सभक लग आरतीके स्टीमरसँ लऽ गेल छलथिन्ह आ कहने रहथिन्ह-
-देखू। एहि पायाक निर्माणमे कतेक गोट मजदूर ऊपरसँ खसरनी जेका नाचि कऽ गंगामे खसि पड़ल। सएसँ ऊपर। कतेक हमरा आँखिक सोझा। ओहिमेसँ माड़ि पकड़ि पचवारके कंपेनशेसन देल गेलैक। आन सभक ने लिस्टमे नाम छैक, ने क्यो पता लगेलकैक। तैयो सभ अभियंता लोकनि ठिकेदारसँ मिलल अछि।
भक टूटलनि आरतीक। बससँ उतरि ओहि पुलक निर्माणमे शहीद मजदूरक लिस्ट फेर देखलनि। बहुत कम लोकक नाम छल-पाया जिन कंपेनसेशन बलाक नाम नहि रहैक। बस शुरू होएबाक सूरसार कएलक तँ आरती आ आजम साहब बस पर फिफिड़ि कऽ चढ़लाह।

ओ पुना बाजए लगलाह।

-पटनामे अहा कहलहुँ जे िकरायाक मकानमे रहए जाइत िी।

-हँ। िपताक िकयाकमर्क हेतु गाम गेल िलहुँ, िपताक मृत्युक उपरात मा केर मोन ओिह घरमे निह लगतिन्ह, तािह हेतु ओ गामेमे रिह गेल िथि। आब पटना पहुँिच कऽ दोसर डेरा ताकब। ओना हम तँ कलकतामे नोकरी करैत िी।

-बुझू। तीस बरख पी.डबल्यु.डी. मे ईमानदारीसँ कायर् किएलाक उतर एकटा घरो निह बना सकलाह। लोक की-की निह कए गेल। हमहुँ १९८१ क बाद अहीक िपताजीक लाइन पर चलए लगलहुँ। दू टा घरो जे बनेने िी से नामे-माि क दू-महला। अिधकजू, ऊपरमे एक-एकटा कोठली अिछ। अहाक िपताके की देलकिन्ह सरकार ? आ की भेटलिन्ह। िरटायरमेण्टक पिहनिह मृत्यु। ने कोनो सम्मान। पुलक उदाटन पर दू-दू हजार सभ अिभयंताके सरकार देलक। ओ तँ अल्ला-भगवानक र प िलाह। सम्मानक लालसाक हेतु काज निह कएलिन्ह। सभ वकर्सिवीजनमे जएबाक हेतु पैरवी करए आ ई नन-वकर्समे जएबाक हेतु पैरवी करिथ।

फेर ओ आरिमासँ पुिलिन्ह जे-

-अहा की करैत िी।

-िपता,माए आ भाए पटनामे रहैत िलाह, हम कलकतामे इंटेलीजेन्स िवभागमे िी, कखनयो वरदी रहैत अिछ कखनयो मनाही रहैत अिछ।

-दरभंगोमे आ पटनो मे आउ। मायोके अिभयन्हु। हमर पतीके बर ड नीक लगतिन्ह। नेहाल तँ पटनेमे अिछ। फेर अपन पटना आ दरभंगा दुनू ठामक पता अपन स्नेिहल हािसँ पकिबैत पटनाक हािडंग पाकिबस स्टैण्ड पर उतरलाह।

बाहरसँ पटना अएलापर होिडंगिके देिख आरिमा पसन भए जाइत िलाह। मुदा िपताक ियाक दूर भेलाक बाद आब एिह नगरसँ लगाव निह पिहयोिपता करए पितिन्ह हुनका। ई कोन संयोगपर संयोग भऽ रहल िल। आजम साहेब आइये कोना भेिट गेलाह। पन्द्रह सालसँ िकएक क्यो निह भेटल रहिथ आ अकस्मात् आियिह की चाहए िथिन्ह हुनकासँ।

िरक्शा पकिड घरक लेल िबकललाह। फेर सोचनी लािग गेलिन्ह।

एक बेर बाबूजीके कटहरक कोआ खेलाक बाद पेट फूिल गेलिन्ह, दू बजे राितमे। ईहो निह फुराइत िलिन्ह, जे बगलमे िवनजीक बाबूके बजा िलयिन्ह जे कोनो डॉक्टरके बजा देताह। फुरायल तँ िलिन्ह मुदा कखनयो गप निह िलिन्ह तँ आइ काज पिला पर कहितिथ्न्ह से िहयाऊ निह भेलिन्ह। माए केबाि पीिट कए पिसीके उठेलिन्ह, कनैत िचिजैत रहलीह। पिसी डॉक्टरके बजओलक, तखन जा कए बाबूजीक जान बाचलिन्ह। माय िप सेहो दैत रहलिथन्ह आ ईहो कहैत रहलिथन्ह जे पाच वषर्क बेटा रहैत िक तँ सभ भरोस दैत िक जे कनैत िकएक िी, अहाके तँ पाच वषर्क बेटा अिछ। आ ई सभ .....जाह, अपने भोगबह हम तँ दुिनयासँ चिल जाएब। बिहन कॉलेजमे पढ़ैत िलिथन्ह। कॉलेजक रस्ता पएरे जाए पित िलिन्ह। आ कॉलेजसँ आगा स्कूल िलिन्ह आरिमा दुनू भाएक। बिहन कहलिथन्ह जे अहूँ सभ हमर संगे चलू। एक िदन दुनू भाय संग गेबो कएल रहिथ। मुदा गप िबनु केने दुनू भाय आगू-आगू झटकैत चल गेलाह। मोनमे ईहो भय िलिन्ह जे िमि सभ चीिन्ह निह जाए जे हमरा सभक ई बिहन िथि। आब ई सोचैत िथि जे िकअिन्हये जाइत तँ की होइत।

अपन व्यक्तित्वक विकासमे कमी छलिऐ ई ? बादमे पैघ भेलाह तँ मा-बापके उकटैत छथि जे घरघुस्सू आ मुँहचुर क संजा जे देलहुँ अहा सभ, कहियो ई सोचलहुँ, जे कोनो परिसीसँ गप्प नहि करबाक, संगी-सारि नहि बनएबाक, घूमब-फिरब नहि करबाक उपदेशक पाछू -जे अहा सभ उपदेश देलहुँ- ओकर पाछू इच्छा समाजक बुराइसँ दूर करबाक छल, परंतु यैह तँ बनेलक मुँहचुर आ घरघुस्सू सभके।राजामे माए-बापक झगड़ाक सीन सपनामे देखैत छलाह आ डरा कए उठि जाइत छलाह। पैघ भाए बहिनसँ अरविन्दके खूब झगड़ा होइत छलैन्हि मुदा एक बेर माए-बापक झगड़ाक बाद, खूब कानल छलाह, खूब बाजल छलाह। ओहि घटनाक पछाति किछु दिनसँ भाए-बहिनसँ झगड़ाक बाद टोका-टोकी बन्द छलैन्हि। सभ बेर वैह लोकनि आगा भऽ टोकैत छलाह। मुदा एहि बेर अरविन्दा कानैत-कानैत बहिनके टोकलैन्हि आ फेर कहियो बहिनसँ झगड़ा नहि भेलैन्हि। भाए विजया छलैन्हि, संगे पढ़ैत छलखिन्ह, ताहि हेतु ओकरासँ तँ झगड़ा होइते रहलैन्हि, मुदा कम-सम।एहि सभ गपक हेतु मा पिताजीके दोषी कहथि। मा सभसँ- परिसी-संबंधि, जान-पहचानसँ गप करबासँ कहियो नहि रोकलैन्हि आ कहथिन्ह जे सभटा दोष पिताक छलैन्हि।एक बेर ग्लोब कीनबाक विवाद कएलैन्हि अरविन्दा। कएक बेर समय देल गेलैन्हि जे आइ अएत- काल्हि अएत। अरविन्दा पढ़ब छोड़ि देलैन्हि। आ तखन जा कए ग्लोब अएलैन्हि। बहिन अखनो कहैत छथिन्ह जे ग्लोब अनबाक विवादक पूरा भेलाक बाद अरविन्दाक पढ़ाइक लय टूटि गेलैन्हि। वर्गमे सभ पहिलसँ नीचा आबि गेलैन्हि आ पिताजी एकर कारण तंत्र-मंत्रमे ताकए लगलाह। एकटा तांत्रिकसँ भेट भऽ गेलैन्हि।कतेक दिन सभ गाममे रहैत जाइत गेलाह। गंगा ब्रिज कॉलोनीमे एकटा एकाउन्टेंट बाबू छलाह। ओ बाबूजीके कहलखिन्ह जे अहा तँ घूस नहि लैत छी मुदा अहाक पती अहाक नाम पर घूस लैत छथि। तकर बाद सभ गाम पहुँचा देल गेलाह। सभ टासफरक बाद बिहार सरकारक नौकरीमे दरमाहा बंद भऽ जाइत छैक। आ ताहि दारे सभ टासफरक बाद नन्द सभके गाम पठा दैत छलाह। एहि कममे एक बेर सभ गाममे छलाह। नन्दक चिट्ठी माक नामसँ गाम आएल छलैन्हि। अरविन्दा पढ़ने रहथि। नन्द अरविन्दाक माएके लिखने छलाह जे ज्यो अहा घूसक पाइ लेने छी तँ लौटा दियौक। हम बिजीलेसके लिखने छी, छिपा पति, तखन पाइ लिकलत तँ बरड बदनामी होएत।

एहि सभ परिस्थितिमे स्कूलमे अरविन्दा घरक परिस्थितिके बिसरि जएबाक पयास करए लगलाह। झुटेकँ हँसए लगलाह। ई आदति पकड़ि लेलैन्हि। घरक बड़ाइ करए लगलाह। लोक सभ नन्दक ईमानदारीक तँ चचा करिते रहए। अरविन्दा घरक कलहक विषय घरक बाहर अनबासँ परहेज करए लगलाह, लोक बुझत तँ हँसत। आ बुझू जे ईमानदारीक ग्लैमरके चिढ़बैत जाइत गेलाह। सोचबाक आ गुनधुनीक आदति एहन पड़लैन्हि जे सुतैत सपनामे आ जगैत लिखबा-पढ़बा काल छनि ई सहसबाढ़नि जेका पाछू नहि छोड़लकैन्हि। दसमामे छमाही परीक्षा किछु दिन पहिने देने रहथि। कॉमसक परीक्षामे एकटा पश्न बनेलैन्हि। मुदा ओ गलत बनि गेलैन्हि, फेर दोसर आ तेसर बेर पयास केलैन्हि। सभटा पशक उतर अबैत छलैन्हि मुदा पहिले पशक उतर पूरा नहि भऽ रहल छलैन्हि। कॉपीके अंगाक नीचामे नुका लेलैन्हि। आ पानि पीबाक बहने जे बहरेलाह तँ घर पहुँचि गेलाह। पढ़ैत-पढ़ैत सोचए लगैत छलाह। एके पना उनटेने घंटा बीति जाइत छलैन्हि। चिड़ियाखाना गेल रहथि एक बेर। किछु गोटे हुनकर सभक सर-संबंधि लोकनि ओतए हुनका सभके भेटि गेलखिन्ह। बरड हाइ-फाइ सभ। ओना तँ कहलखिन्ह किछु नहि मुदा हुनकर सभक बगेबानी देखि कए अरविन्दामे हीन भावना अएलैन्हि। चुपेचाप भीड़मे सटकि घरक लेल पहुँचि गेलाह। जेबीमे पाइ नहि रहैन्हि से पएरे सटकि गेलाह। ओतए चिड़ियाखानामे सभ डराइत रहल जे कतए हरा गेल। सभ घर पहुँचल तँ सभके फुसिये कहलैन्हि जे सते भोतिला गेल

रहथि। सत बात ककरो नहि बतेलथिन्ह।सभ लोक जे भेटथिन्ह यैह कहथिन्ह जे अहा फलनाक बेटा छी। बेचारे भगवाने छथि। ऑफिसमे पिताक दरमाहाक लेल पे-स्लिप बनबाबए पड़ैत रहैन्हि। एक बेर आर पिता पे-स्लिप बनबए गेल छलाह। किरानी बाबू बाजल- अहाँक पिताक पे-स्लिप बिना पाइ लेने बना दैयन्हु। पिताजीसँ नहि तँ सहकमी खुश छलन्हि नहिये ठीकेदार सभ। सहकमी एहि लऽ कए जे नहि स्वयं कमाइत अछि, नहिये दोसराके कमाय दैत अछि। पैघभायक खेनती बच्चामे बदमाशमे होइत छलन्हि। एक बेर टासफरक बाद जखन सभ गाम गेलाह, तँ पैघ भाय जे सभक फुलवारीसँ नीक-नीक गाछ उखाड़ि कय अपना घरक आगा लगा लैत छलाह, से आब एकरा सालमे दब्बू, सभसँ पाछू बैसनिहार पढ़ाइक खेनतीमे आबि गेलाह। ओहि बेर टासफरक बादक गाममे प्रवास किछु बेशी नमगर भऽ गेल छलन्हि। फेर मुख्यमंत्री पदक दावेदार एकटा नेताजी जखन गाममे वोट मँगबाक लेल अएलाह तखन काका हुनकासँ भेट कएलन्हि आ कहलथिन्ह जे हमर भाएके वर्कससँ नन-वर्कसमे टासफर कए दियौक, बच्चा सभ पोसा जएतैक।नेताजी कहलन्हि जे जँ हम जीति गेलहुँ तँ ई काज तँ हम जरूर करब। वर्कसमे जएबाक पैरवी तँ बहुत आएल मुदा नन-वर्कसमे जएबाक हेतु ई पहिले पैरवी छी।संयोग एहन भेल जे ओ नेताजी जीति गेलाह आ मुख्यमंत्री सेहो बनि गेलाह। ओ शपथ गहण केलाक बाद ई काज पहिल केलन्हि जे पिताजीक टासफर कए देलथिन्ह। आ नन्दक परिवार पुना शहर आबि गेल रहैन्हि । गाममे रहथि तँ एक गोटे जे आरपिताक भाएक संगी छलाह, ककरो अनका पसंगमे कहने छलाह।हुनकर अनुसार-संगीक माएक स्वभाव तीवसछलन्हि आ ओ खेनाइ खाइते काल झगड़ा करए लगैत छलीह। मुदा ओहि दिन ककरो अनका ओ आर तीवस्वभावक देखने छलाह।खराब आर्थिक स्थितिक उपरात होअएबला कलहक परिणाम आरपिता देखि रहल छलाह। दूटा घटना हुनका पचश्चात कए दैत छलन्हि। एकटा तँ इनकम टैक्स कटौतीक मास- माचमास। ई घटना तँ सभ साले होइत छल, मुदा कटौती बढ़ैत-बढ़ैत एक साल आबि कए पूरा माचमासक दरमाहा काटि लेलक। मा कहैत छलथिन्ह जे आब भोजन कोना चलए जयतौह। आब भीख मागए जइहँ गऽ सभ गोटे। मुदा नन्द एकटा गामक भातिजके पोस्टकाडपठेलन्हि आ ओ आठ सय टाका आनि कय दऽ गेलथिन्ह तखन जा कए असुरक्षाक भावना खतम भेल छल। भीख मँगैत अखनो आरपिता जँ ककरो देखैत छथि तँ मोन कलपय लगैत छन्हि। दोसर घटना छल जखन हुनकर घरक आँगा एकटा एक्सीडेंट भेल छल आ ओकरा बाद हुनकर भाइ खेनाइ छोड़ि देने छलाह आ कानि-कानि कए आँखि लाल कए लेने छलाह। नन्द जखन बुझबए लगलाह तँ ओ जवाब देलन्हि-

-अहाके जँ किछु भऽ जएत तखन हमरा सभक की होएत।

पिताजी इंश्योरेस बेनीफिट, जी.पी.एफ., गेच्युटी आदिक हिसाब लगाय पुछिके बुझेलन्हि जे ९९००० रुपया तँ तुरत भेटत आ फेर महिने-महिने पेशनो भेटत। लगभग एक घंटा तक बाबूजी पैघ पुछिके बुझबैत रहलाह। एक बेर आरपिताक ओहिठाम एक गोट पीसा आयल छलाह। आइयो घरमे कियो अबैत छथि तँ सभ सुरक्षित अनुभव करैत छथि। नन्द पीसाक सार भेलथिन्ह से एहि ओहदासँ हँसी सेहो चलि रहल छल।ओ कहलन्हि जे नन्दे जेका ईमानदार एकटा बी.डी.ओ. साहेब झंझारपुरमे छलाह। पिताजी हुनकर मलाह छलथिन्ह, कष्ट काटि अफसर भेलाह। मुदा नन्दक जेका हुनको घरमे खाटे टा छलन्हि। पीसा हुनका कहलथिन्ह जे कथी ले अफसर भेलहुँ, गाममे रहितहुँ आ मचान पर बैसि माछ भात खएतहुँ। माछक कारबारमे फायदा होइत।

आरपिताक बहिनक विवाहक बाद घरमे कखनो काल बहिनोइ अबैत छलथिन्ह। जमायक अबिते देरी आरपिताक माक झगड़ा पिताजी सँ शुरू भऽ जाइत छलन्हि, किएकतँ घरमे इंतजाम तँ किछु ओ रहिते नहि छल। टासफरक

बाद थताजीक अध्यायान घूसखोरके सजा देबय पर चलल। आ जखन सरकारी तंि परसँ थशास खतम भए गेलथ्न्ह तखन ओथ्न् ताथ्रिकक फेरमे पथ्रि गेलाह। घरमे माता-थताक बीच कलह बथ्ढ़ गेल। एक थ्दन थताजीसँ आरथाक बहसा-बहसी भए गेलथ्न्ह आ तीनू भाय बथ्हन गरा लाथ्रा कऽ कानय लगलाह। तकरा बादसँ अरथाक भाय-बथ्हन सभसँ झगि होयब समाप्त भऽ गेलथ्न्ह।

आरथा अनेर गुनिन करैत घरपर पहुँचलथ्रि।
दू-तीन िथ्न दोसर थ्करायाक मकान ताकए लेल थ्ाकलल करथ्रि आ साझमे वैह गुनिनी।

एक बेर घर आथ्ब रहल िलाह स्कूलसँ।
घर अबैत काल मोन कोना दथ्ा कऽ रहल िलथ्न्ह। स्कूलसँ घर आथ्ब रहल िलाह। रस्तामे सभ क्यो एक दोसरा सँ थ्कि असंभव घथ्टत होएबाक गप कऽ रहल िलाह। आरथा दुनू भाए सातम कक्षामे पढ़ैत रहथ्रि, संगथ्-संग। मुदा आइ पैघ भाएक पेटमे ददि िलथ्न्ह से ओ थ्टफीनक बाद िुटी लऽ घर चथ्ल गेल िलाह। स्कूलमे सभके हँसैत देखैत रहथ्रि, तँ अपन घरक थ्स्थथ्त मोन पथ्रि जाइत िलथ्न्ह। ईष्या सेहो होइत िलथ्न्ह आन बच्चाक भाग्य पर। फेर मोनमे ईहो होइत िलथ्न्ह जे हुनके सभ जेका पथ्रथ्स्थथ्त होएतैक एकरो सभक। मुदा झुटे पसनताक नाटक करैत जाइत अथ्रि। घरमे माए-बापक कलहक बीच डरायल सन रहैत रहथ्रि। लगैत रहैत िलथ्न्ह जे ई सभ पथ्रथ्स्थथ्त कथ्हयो खत्म नथ्ह होएतैक। नथ्ह तँ दोसरसँ गप्प कए सकैत िथ्रि, नथ्हये ककरो अपन मोनक गप्पे कथ्ह सकैत िथ्रि। बेर-बखत कथ्हयो अपन सहायताक हेतु सेहो सोर नथ्ह कऽ सकैत िथ्रि। माय ठीके घरघुसका, मुँहदुब्बर आथ्द थ्वशेषणसँ थ्वभूथ्षत करैत िलथ्िन्ह। साझमे घुमनाइ आथ्क दुगापूजाक मेला गेनाइ ई सभ बात हुनका सभक जीवनसँ दूर िलथ्न्ह। एक बेर भूकम्प जेका आयल िल, सभ क्यो गील तोथ्रि कय बहरायल, मुदा आरथा खाट पर पिले रथ्ह गेलाह। थ्कि तँ अकमथ्ण्यतावश आ थ्कि ई सोथ्ा कय, जे की होयत घर टूथ्ट देह पर खसत तँ, समस्यासँ मुथ्क्तयो तँ भेटत। ओथ्ह थ्दन स्कूलसँ घुरैत काल घरक लगमे पहुँचलाह तँ भीि देथ्ख मोन हदथ्स गेलथ्न्ह जे बाबूजीके तँ थ्कि नथ्ह भऽ गेलथ्न्ह। घरमे पहुँचलाह तँ मा-बथ्हनसँ पूिय लगलाह, जे की भेल? सभ बोल भरोस देबए लगलथ्िन्ह तँ आरो तामस उठए लागलथ्न्ह।जोरसँ काथ्न कय बाजय लगलाह-
-बाबूजी मथ्र गेलाह की? कतए िथ्न्ह हुनकर मृत शरीर।
ताथ्ह पर बथ्हन कहलथ्िन्ह-
-नथ्ह, हुनका थ्कि नथ्ह भेलथ्न्ह। अहाक संगी जे मकान माथ्लकक बेटा अथ्रि से ओ ओकर िोट भाए, ओकर थता आ थ्वकशाबला, चार गोटे थ्वकशापर जाइत िलाह। बेचारा थ्वकशा बला थ्वाह कऽ कए कथ्मायाके अननथ्हये िल। एकटा थ्वशाल टक थ्वकशाके िका माथ्र देलकैक। ठामथ्ह मथ्र जाए गेलाह।
आरथाक कानब खतम भए गेलथ्न्ह। ई जे आफत आएल िलैक से आइ ककरो अनका घरमे । ओना ओ जे मृत भेल िल पथ्ाथ्दन पाता आरथाक संग डेढ़ सालसँ स्कूल जा रहल िल । सभ थ्दन पाता सीढ़ीपर ओ

कॉलबेल बजबैत िलाह आ ओ सीढ़ीसँ उतरैत िल आ संगे सभ स्कूल जाइत िलाह। मोन पिलन्हि जे काश्मी सेहो सभ थ्दन जेका ओ कॉलबेल बजेने िलाह तँ ओकर बच्चन जे चश्मा लगबैत िख्ल आ झनकाख्ल िलीह, से ऊपरसँ तमसाके कहलकन्हि जे कतेक जोरसँ आ देरी िथ कॉलबेल बजबैत ि ी, आ सेहो जे बेर-बेर थ्कएक बजबैत ि ी, आथ्व रहल अथ्छ। काश्मी तँ ओ आएल मुदा आरथ्या तखनथ्ह कथ्ह देलथ्थन्ह जे काश्मी सँ हम कॉलबेल नथ्ह बजायब, अहाके हमरा संगे जयबाक होअए तँ नीचा उतथ्र कऽ आऊ आ संग चलू। ओ नथ्ह आएल तँ आरथ्या थ्कएक कॉलबेल बजथ्बतथ्थ। डेढ़ सालमे पथ्हल बेर भेल िल जे आरथ्या कॉलबेल नथ्ह बजेने िलाह आ ओ डेढ़ सालमे पथ्हल बेर स्कूल नागा कएने िल। आब आरथ्याक मोनमे होमए लगलन्हि जे कतहु ओ बाथ्ध्य तँ नथ्ह देने होएत जे आरथ्या काश्मी सँ कॉलबेल नथ्ह बजओताह। मुदा थ्कंसाइत ओकर कोनो आनो कायक्रिम होएतैक। थ्कएक तँ िट भाए आ थ्पताक संग थ्वक्शासँ कतहु जा रहल िल। अस्तु आरथ्या थ्थंथ्तत िलाह मुदा दुाखी नथ्ह। मोनक गप थ्कयो बुझए नथ्ह ते मुँह लटकेने ठाढ़ रहथ्थ। ओ तँ मा ि सोचने रहथ्थ जे काश्मी सँ एकरा संगे स्कूल नथ्ह जएताह, जएत ई असगरे। मुदा ओ तँ असगरे नथ्ह जएत से सत्य कए देखा देलक। अरथ्याक माएक आँथ्खमे नोर िलन्हि मुदा अरथ्याक भीतर पसनता, थ्कएक तँ हुनकर थ्पताजीक मृत्यु जे टथ्र गेल िलन्हि।

दोसर थ्करायाक घर तकलाक बाद दुनू भाए सभटा समान नवका घरमे राथ्ख माके गामसँ आथ्न लेलन्हि। आरथ्या अपन नोकरी पर चथ्ल गेलाह।

“नथ्ह एहन कोनो बात नथ्ह अथ्छ”, ई तँ हमर सभक कायक्षि अंतगत्ति करइए प ित ि क”।

“मुदा अहाके ई नथ्ह बुथ्झ प ित अथ्छ जे एथ्ह बेर थ्क ु बेशी कूर भऽ गेलहुँ अहा सभ?”

“कूरताक तँ कोनो बात नथ्ह अथ्छ। हमरा सभ तँ कोनो थ्वशेष सूचनाक आ ि र पर काय किरैत ि ी”।

“माथ्न थ्लअ जे हमरा ककरोसँ दुश्मनी अथ्छ आ ओथ्ह आ ि र पर थ्वभागके ओ अपन व्यथ्क्तगत स्वा ि आ झग ि क हेतु पयोग कए सकैत अथ्छ”।

“अहाके ककरोपर शंका अथ्छ?”

“नथ्ह हम तँ उदाहरण दए रहल िलहुँ”।

“नथ्ह हमरा सभ कोनो सूचनाक आ ि र पर सोझे थ्बदा नथ्ह होइत ि ी। पथ्हने ओकर गंवेषणा करैत ि ी आ तकरे बाद एतेक ठाम सच किरबाक अनुमथ्त भेटैत अथ्छ”।

“मुदा आब अहा ई कथ्हयो देब जे अहाक कोनो गलती नथ्ह अथ्छ तँ की हमर इज्जत लौथ्ट कए अएत”।

“एना तँ हमरा सभके हा ि-पर हा ि दए बैथ्स जाए प ित। मुदा अहूँक गप ठीक अथ्छ। अहाक पथ्त ज्यो देषवश क्यो काय किएने होएत तँ ओकरा पर कायगिाही कएल जएत।”

“की कायगिाही होएत। हमरा पर तँ कायगिाही भऽ गेल। हमर सभटा बायर टूथ्ट जएत। हम सभ एतेक पुरान

ी, तीन पुस्तसँ एक्के कायमी लागल ी। करबो करब तँ क्लेडेस्टाइन श्मूवल करब ? सभ बायरपर तँ रेड भऽ गेल, श्कि कतहु नश्र भेटल से के पश्रायायत ?''
ओकर बातो ठीक लैक। ई प्लाइवुडक व्यापारी एक नंबरक काजक हेतु जानल जाइत ल मुदा आरश्राके जे सूचना पाप्त भेल लिश्रह से ओकर श्रपरीत ल। मुदा ई रेड तँ खाली गेल। फैक्टरी, घर, डीलर सभ ठामसँ टीम खाली हा आएल। मुदा आब ऑश्रसरके की जवाब देताह। नामी कंपनी ल, अश्रिकारीगण डरा कऽ रेडक अनुमश्रा आरश्राक व्यश्रक्तगत पश्राष ाके देखैत देने लाह। हेडक्वाटरसँ फोनपर फोन आरश्राके आश्र रहल लिश्रह, भोर तँ रेडमे भइये गेल ल, दस बजे ऑश्रसमे श्रपोट देबाक हेतु कहल गेल लिश्रह। फैक्टरीक माश्रक सेहो एम्हर-ओम्हरक बात लऽ कऽ दस बात सुना देलकश्रह। स्पणप्लिाइ नामा ई कंपनीक श्रल्ली श्र पहुँश्र लैक। अकच भऽ कऽ आरश्रा भोरमे डेरा पहुँश्र मोबाइल ऑफ कऽ कए ९ बजेक अलाम लगा कऽ सुतबाक पयास करए लगलाह। काश्रि भोरेसँ रेड चश्र रहल ल, ई कोना भेल, कोनो क्लेडेस्टाइन श्रमूवलक कच्चा पची श्रकएक नश्र भेटल। केस लीक तँ नश्र भऽ गेल। मुदा केसक श्रषयमे आरश्राकक अश्राश्रक्त डायरेक्टर श्रजीलेसके मा बुझल लिश्रह। ई सभ श्र ान पर सोश्रते रहश्र, तावत श्रान्द तँ नश्र लगलश्रह मुदा ९ बजेक अलाम बाश्र उठल।
ऑश्रसमे सभ क्यो जेना श्रनके बाट ताश्रक रहल लाह। कतेक गोटे ईहो सुना देलकश्रह, जे एश्र केसक इंटेश्रजेस हुनको सभक लग लिश्रह मुदा एश्र तरहक केसमे क्लेडेसटाइन श्रमूवलके श्राद केनाइ मुश्रकल होइत क, ताश्र हेतु ओ लोकश्र एश्रमे हा नश्र देलश्रह। कानाफूसी होमए लागल जे बरड हीरो बनैत लाह आब टासफर ऑडर लऽ कए श्राकलताह डायरेक्टरक ऑश्रससँ।
आरश्रा डायरेक्टरक ऑश्रसमे गेलाह आ सोझे श्रक श्रनक समय माश्र लेलश्रह। की प्लान श्रह, एश्र श्रषयमे गप-शप घुमा देलश्र। एश्र बेर कोनो पकारक कोनो भम नश्र राखए चाहैत लाह।
आब आरश्रा स्पणप्लाइक फैक्टरीसँ आ ओकर डीलरसँ हश्र कऽ काय करए लगलाह। सभटा दस्तावेजके घोश्र गेलाह। श्रक जानकारी कागज पर सेहो श्रखए लगलाह। फेर अपन प्लानक श्रसाबसँ कलकतासँ पटना आ ओतएसँ अरश्रयाक हेतु श्रदा भऽ गेलाह।

पान तँ खाइत नश्र रहश्र आ चाह सेहो घरे टा मे श्रबैत रहश्र। मुदा लोकसँ श्रक जनबाक हो तँ श्रना चाह आ पानक दोकान गेने कोना काज चलत। से ओ चाह पान शुर कएलश्रह। बाबुल दादाक गुलकन्द बला पान नीको बरड लागश्रह। तकरा बाद बाबुल दादा अरश्रयाक लग पासक सभटा प्लाइवुडक फैक्टरीक श्रस्ट दऽ देलकश्रह। मुदा फैक्टी सभक पहुँचबाक रोड सभक भगवाने माश्रक रहश्र। ल-करमे कहुना जा कए एकटा फैक्टरीक पता चललश्रह जे स्पणप्लिाइके सप्लाइ दैत ल, ओतुका दरबान आरश्राके कहलकश्रह जे माश्रक दोसर फैक्टरीमे बैसैत श्र, से दू टा फैक्टीक पता चश्र गेलश्रह आरश्राके।
आरश्रा कल-हारल ओश्र फैक्टरीमे पहुँचलाह। एक गोट मारवा सज्जन बैसल रहश्र।
''कतएसँ आएल ी''।
''आएल तँ पटनासँ ी मुदा घुरब कोना से नश्र बुझ्र प त अश्र''।
''हँ, एक गोट नेताक जेलसँ बाहर गोली माश्र कए हत्या कऽ देल गेल अश्र। नेताजी रहश्र तँ जेलमे मुदा घुमए श्रकरए पूश्रा जेलसँ बाहर श्रना श्रअमक श्राकलल रहश्र। जेलर की करताह। श्र ला मास एक गोट

कैदीके पुरनका जेलर घुमए हेतु नञि देने छलथिन्ह तँ भटा बजारमे गोली मारि देलकन्हि। एहि बेर जे घुमए देलखिन्ह तँ सरकार सस्पेन्ड कऽ देलकन्हि नवका जेलरके। ताहि हत्याक बाद बन्दक आहान अछि। हमरा संगे रहू। एतए हमहू अपन गेस्ट हाउसमे रहैत छी। परिवार खालीगुड़ीमे रहैत अछि। विवाह नञि भेल अछि। भोरमे हमरा कलकता जएबाक अछि। पहिने खालीगुड़ी अपन गाड़ीसँ जाएब तँ रस्ता बदलि कऽ पूर्णिया बस स्टैण्डमे अहाके छोड़ैत जाएब"।
युवा बजकर रहथि से आरतीके नीक लगलन्हि। रातिमे गेस्ट हाउसमे बहुत गप्प भेलन्हि। नेताक रंगदारीक, चन्दा बला सभ जबदस्ती रसीद काटि जाइत छलन्हि।
"एनामे तँ बिना क्लेनडेस्टाइन कएने घाटा भऽ जएत, हँ मजबूरी छैक। आ तकर दोषी तँ ई नेता सभ छथि। व्यापारी की करओ"।
आब मारवाड़ी युवा जकर नाम नवल छल कनेक कनखिया कऽ आरती दिसि देखलक। आरतीके भेलन्हि जे ओकरा कोनो शंका तँ नञि भेलैक।
"नञि क्लेडेस्टाइन नञि करबाक तँ आदात अछि हमरा सभक। हँ किछु एडजेस्टमेट करए पड़ैत अछि"।

आरतीके मोन पडलन्हि जे कोना स्पाणिफ्लाइक मालिकको बजैत-बजैत बाजि देने छल जे करबो करब तँ क्लेनडेस्टाइन किमूवल करब।
तखन करैत की जाइत अछि ई सभ। ओना अरवियाक ई फैक्टरी स्पाणिफ्लाइक हेतु जॉब वर्क करैत छल, आ ताहि हेतु सरकारी ड्यूटीक सभ भार स्पाणिफ्लाइ पर रहैक। ई क्लेनडेस्टाइन किएयो कऽ की करत। टैक्स तँ दोसराके देबाक छैक।
तखने एकटा फोन अएलैक। रिंग नमगर रहैक से आरतीके बुझबामे भागठ नञि भेलन्हि जे ई बाहरक एस.टी.डी.कॉल अछि। ओहि कॉलक बाद एकाएक ओ युवा आरती दिसि ताकि कए चुप्पी लगा गेल।
भनसिया जकरा नवलजी झा कहि संबोधित कऽ रहल छलाह, खेनाइ बनि जेबाक सूचना देलकन्हि। आरती आ नवलक बीच मात्र औपचारिक गप भेल। फेर दुनू गोटे सूति गेलाह। भोरमे अपन वचनक अनुसार ओ युवा आरतीके पूर्णिया बस स्टैण्ड छोड़ि देलकन्हि। उतरबासँ पहिने आरती नवलसँ पुछलन्हि।
"कलकतामे स्पाणिफ्लाइक ऑफिस छैक। ओतहि जा रहल छी की ?"
ओ युवा हँसल।
"अहा रिश्लेससँ छी। हमरा काल्हि जे एस.टी.डी. आएल छल से स्पाणिफ्लाइक कलकता ऑफिससँ आएल छल। अहाक विभागेक क्यो गोटे हुनका सभके अहाक अरवियाक यात्रिक विषयमे सूचना देलखिन्ह। देखू हम कहने छी जे हम मात्र एडजेस्टमेट करैत छी। आ ताहिसँ हमरा कोन फाएदा होइत अछि? टैक्स तँ हमरा लगैत नञि अछि। हँ, ताहिसँ हमरा काज भेटैत अछि। आ बाहरी छोट-मोट खर्चा, विभागक, पुलिसक, नेताक चाकरी जाइत अछि। तखन बेश"।
ई कहि ओ सज्जन आरतीके हतप्रभ करैत चलि गेलाह।
आब कलकता पहुँचि कए आरती जखन ऑफिस पहुँचलाह तँ सभके बुझल रहैक जे आरती ताहि फैक्टीक विरुद्ध सरकारी खर्चा पर कएलन्हि अछि जकरा पर सरकार टैक्सक माफी देने छैक।
डायरेक्टरसँ भेट कएलाक बाद आरती पहुँचि गेलाह पटना आ फेरसँ कलकता। पुलिस छानामे घुमैत रहलाह

आ पता करैत रहलाह जे स्पाणफ्लाइ आ॰क ओकर कोनो कमर्चारीक ॰र द कोनो केस िक तँ न॰। मुदा ओतए तँ स्पाणफ्लाइ बर ड नीक ि॰ शुर एसँ बनेने िल। आब आर॰ सोचमे प॰ गेलाह। इनपुट-आउटपुट केर अनुपातसँ ई कंपनी करोि रपयाक टैक्सक चो॰ कए रहल अ॰। मुदा पमाण कोनो न॰।
आर॰ िना सभमे अपन पता आ फोन नंबर ि॰ देल॰ जे ज्यो कोनो केस ए॰ कंपनी ॰ंवा एकर कमर्चारीक संबंिमे होअए तँ तकर सूचना हुनका देल जाइन्ह।अपन डायरेक्टरसँ कहल॰न्ह जे क्लोजर ॰पोटि अखन न॰ देब। देखैत ि ॰ि जानकारी कतहुसँ भेटैत अ॰ आ॰ न॰।

िह मासक बाद।
भोरमे ॰ंग भेल।
“हम कलकता, साल्ट लेक िनासँ बा॰ रहल ि। एक गोटे एकटा कमप्लेन ॰खेने ि॰ जे स्पाणफ्लाइ ऑ॰ससँ पेमेन्ट लऽ कऽ घुरैत काल हुनकर सूटकेस ऑटो बला ि॰ लेलक॰ जा॰मे ॰ि कैश आ चेक िल॰”।
“कतेक कैस आ कतेक चेक”।
“१.७९ लाख कैस आ १.८३ लाखक चेक, पाया कैसक कोनो इनस्योरेस रह॰, ता॰ दारे एफ.आइ.आर. करओल॰ अ॰। चेकक तँ पेमेट स्टॉप भऽ जएत”।
आर॰ टीमक संग ओ॰ गोटेक घर पर िपा मारल॰ जकर पाइ आ कैस ऑटो बला ि॰ लेने िल।
िपाक बीचमे आर॰के एकटा डायरी भेटल॰। तकरा बाद पटना फोन कऽ अर॰याक फैक्टरीसँ नवीनतम ॰मूवलक ॰टनिमँगा लेल॰। फेर ओ सज्जन ॰नका घरपर िपा पिल िल, के ऑ॰स अनल॰। रस्तामे पता चलल जे ओ सज्जन नवलक बहनोइ िलाह आ अर॰याक फैक्टरीक एकाउन्टेन्ट होएबाक संग॰ स्पाणफ्लाइमे लाइजन अ॰कारी सेहो िलाह।
आब सभ तथ्य सोझा िल। जे डायरी भेटल िल ता॰मे कैस आ चेकक कॉलम बनल िल। ॰ सञ्चत ॰वरण िल। चेकक भुगतानक कॉलम अर॰या फैक्टरीक ॰लयरेससँ ॰ गेल िल आ ईहो ॰द भऽ गेल जे सभ टाजेक्सनमे लगभग अदहाक पेमेट स्पाणफ्लाइ दारा कैसमे देल जाइत िल। आ तकर ॰वरण न॰ तँ स्पाणफ्लाइक खातामे रहैत िल आ न॰ये अर॰याक फैक्टरीमे। स्पाणफ्लाइ टैक्स सेहो माि चेक (प॰या) दारा गेल अदहा ॰मूवलक पेमेट पर दैत िल। आर॰ ई ॰पोटि डायरेक्टर के दऽ देल॰।
एकाउन्टेन्टक अपराि बेलेबल िलैक। कोटि ओकरा बेलपर ि॰ देलकैक।
“नवलक समाचार कहू। बर ड नीक लोक अ॰। मुदा ॰ि बतेलक न॰”।
“ओकर का॰ अर॰यासँ ॰लीगुिी जाइत काल सिकि दुघर्टनामे मृत्यु भऽ गेलैक ॰ंवा करा देल गेलैक। जमाय बाबूक संग एतएसँ सोझे हमरा सभ ओत॰ जाएब”। एक गोट उते॰त स्पर बला व्य॰ जे एकाउन्टेन्ट बाबूके लेबाक हेतु आएल िल बा॰ उठल ।
“मुदा ई बू॰ ॰अ जे अहाक ई सफलता हमर बुरबकीसँ भेटल अ॰। ज्यो हम कैसक इनस्योरेस क्लेमक लालचमे न॰ प॰तहुँ तँ ई सभ न॰ होइत”- जमाय बाबू बा॰ उठलाह।

डायरेक्टर स्पाणफलाइक थरद कायगीहीक लेल ऑडर्ि देलखिह। स्पाणफिलाइक थरद करोिक रपैयाक टैक्स घोटालाक शो-कॉज नोश्चस सेहो पठा देल गेल। आरथा थ्वंतामलि िलाह।
“ठीके तँ कहलक नवल। एडजेस्टमेटे तँ कऽ रहल िल। चोथ तँ क्यो आन कऽ रहल िल। ओ तँ मा िमाध्यम िल। हमहू तँ कतहु नश्च बश्च गेल ि माध्यम, नवलक मृत्युक ?”

आरथाक व्यवसाथ्थक सफलताक बाद नोकरी मध्य सेहो सफलताक शुरआत भऽ गेल। माध्यम बनथ्र वा नश्च मुदा थता जेका हारताह नश्च। मोन पित रहथ्वह हुनका सभटा गप बीच-बीचमे ।

“कहलहुँ सुनैत थ्रीयैक। बेटी पैघ भऽ रहल अथ्र। बेटा सभक लेल थ्रक िनश्च कएलहुँ। अपन घरो नश्च बनल। थ्रटायर भेलाक बाद कतए रहब ?”
“बेटीक थ्यन्ता नश्च कर । बेटा बला अपने चश्च कए अएत। हमरा सभके जतेक सुथ्र िभेटल िल, ताश्चसँ बेशी सुथ्र िश्चनका सभके भेश्च रहल िश्चह। तखन पढ़ िवा नश्च से ई सभ जानथ्र। थ्रटायरमेन्टक बाद गाम जा कए रहब। सात जन्म शहर थ्वश्च घुश्च कए नश्च आएब”।
“क्यो सर-कुटुम अबैत िथ्र तँ हुनका सत्कार करबा लेल घरमे इंतजामो नश्च रहैत अथ्र”।
“इंतजाम करबाक की जररश्च अथ्र। एक पैली बेशी लगा थ्वयौक अदहनमे”।
आरथा माए-बापक एश्च तरहक वातालाप सुश्च पैघ भेलथ्र। एक बेर हॉस्पीटलमे थताजीके देखए लेल एक गोट कुटुम्ब आएल रहथ्र। हुनकर गप सेहो थ्रक िएहने बुझा पिलश्चह।
“की कऽ लेलहुँ शरीरके। ई बच्चा सभके देश्च कए मोहो नश्च भेल। कतए पढ़ैत जाइत ई सभ। आ कोनो टा सुथ्र ि, नश्चये कोनो टा थ्यन्त ेिल अहाके। अपनो आ एकरो सभक थ्रनगी बबाद कएलहुँ।”

तखने क्यवािन भेल। पती कहलथ्वन्ह जे एकटा फोन होल्ड अथ्र-
“आरथा। एकटा पैघ राजनीश्च चश्च रहल अथ्र ऑथ्रसमे। अहाक थरद षरयं िचश्च रहल अथ्र। अहाके चेतेनाइ हमर काज िल। मुदा अहा तँ कोनो तरहक पश्चथ्रकया दैते नश्च ि”- फोन पर हुनकर वैह एकमा िसंगी रामभक्त-हनुमानक अबाज सुश्च रहल िलाह आरथा।
“आरथा। की भऽ गेल। बाबूजी जेका डराएल रहब। थ्रक िथ्वनुका बाद हाश्च माश्च ऋश्च भऽ जाएब। आश्च दुष क संहार करब। एश्च दुनूमे की चुनब अहा”।
“थ्यन्ता नश्च कर”- हँसैत बजलाह आरथा फोन पर आ फोन राश्च देलश्चह।
ऑथ्रसक एकटा लॉबी आरथाक पा िपश्च गेल िल। टासफर-पोश्चटंग केर बाद आरथाक ऊपर दवाब आश्च गेल िल। थ्रक िगोटे हुनकर थरद श्चना-कोनो आिरक थ्रक िकम्पलेन कए देने िलश्चह। एकटा ऑथ्रसर

शशाक केर हाि लैक एखनमे। ओकर खास-खास आदमीक पोस्टिंग मोन-मुताबिक नहि भेल रहए आ ओ पोमोशनमे आरथाके पाि करए चाहैत िल। एहि बीचमे आरथाक फोन कि दिन डेड िलखिह। तकरा बाद हुनकर फोनसँ अबुिबी आ दुबइ फोन कएल गेल िल। मुदा ओहि समयमे सरकारी फोनमे आइ.एस.डी. केर सुिवधा हेतु टेलीफोन विभागके सूचित करए पिंत िल। हुनकर ऑफिसक एकटा पशासनिक अधिकारी टेलीफोन विभागके चिटी लिखि कए ई सुिवधा आरथाक जानकारीक िबना करबाए देने िल। विजीलेसक जाचमे ओ बयान देने िल जे आरथा एहि ऑफिसक मुख्य िथि आ हुनकर मौखिक आदेशोक पालन करए पिंत िखह हुनका। से आइ.एस.डी. केर सुिवधा लेल टेलीफोन विभागके ओ आरथाक मौखिक आदेश पर चिटी लिखने िलाह। माफिया ओकरा तोिड़ लेने िल आ ओहिमे ओ पशासनिक अधिकारी अपनाके सेहो फँसा लेने िल।

सोम दिन फैक्स आएल आ आरथाक टासफर भऽ गेल।

"सपेजेट कर एहि आदेशक िवरद"- वैह चिरपिरिचत स्वर, मणीन्द्रक।

"अहूँ कोन झमेलामे पिल ि ी। सभ ठीक भऽ जएत"- बजलाह आरथा फोन पर।

शशाकक घरपर पाटी भेल।

"मास्टर आरथा सपेसेन्ट तक नहि कएलखिह। वलीव भऽ कए चिल गेलाह। बुझू सरेन्डर कए देलखिह अपनाके"।

"पोमोशन बुझू जे दस साल िथि रकल रहतखिह। सीआरयमे चिटी मारल जएतखिह। बदनामी भेलखिह से अलग। सुनैत ि ी जे फोनपर दुबइक स्मगलर सभसँ गप करैत िलाह"।

ओम्हर आरथाके अपन बाबूजीक टासफर, ईमानदारीक लेल कएल संघर्ष, संघर्षक विफलता आ तकर बाद हुनकर तं-िवदा आ पूजा-पाठक दिस अपनाके ओझराएब आ घर-दार, ऑफिस आ सासारिकतासँ विरक्त मोन पिड़ गेलखिह। एहि सभ घटनाकमक बाद हुनकर मुँहपर एकटा चिन्ताक रेखा आएल िलखिह। मुदा से बेशी दिन िथि नहि रहलखिह आरथाक मोन पर। हािरके जीतमे कतोक बेर बदलने िलाह ओ। नोकरीयोमे आ ओहिसँ पहिने व्यवसायमे सेहो।

"की यौ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि। हमर टासफर भऽ गेल तँ अहा सभ तँ बिसरिये गेलहुँ"।

"हम की, सभ क्यो बिसरि गेल अहाके एतए"।

"अहा की बुझलहुँ। जे हम सेहो बिसरि गेल ि ी। अहाके मोन अिछ। हम जखन इंटरक बाद बाबूजीक इच्िाक िवरद िवजान िोिड़ कए कला िवषय लेने िलहुँ। िवजानक सभटा िकताब ११ बजे रािमे पोखिरमे फेिक देने िलयैक। कोनोटा अवशेषो नहि िािने िलहुँ ओहि िवषयक अपन घरमे। आ जखन कला िवषयमे पिम िणी आएल िल तखन गेल िलहुँ गाम। तकरा पहिने कतेक बिरयाती िािने िलहुँ, कतेक जन्म-मृत्यु। मुदा गाम नहि गेल िलहुँ"।

“एह भाई। अहाके तँ सभटा मोन अछि। हमरा तँ भेल जे अहूँ काका जेका भऽ गेलहुँ। ई सभ कमाक योग्य नञि अछि। कनेक देखा दियौक। आब हमरा विश्वास भऽ गेल जे किछु होएत”।

“फेर वैह गप। जखन अहा नञि बदललहुँ तखन हम कोना बदलब। ितिने लिहुँ किछु दिन अपनाके। आब सुनू। जे कहैत िी से टा कर । बेशी बाजब जुनि। जाहि समयक कॉल हमर टेलीफोनसँ बाहरी देश कएल गेल लि ओहि समयमे तँ हमर टेलीफोन खराब लि, ई तँ अहाके बुझले अछि। घरसँ टेलीफोन विभागके कम्प्लेन सेहो लिखबाओल गेल लि। मुदा से टेलीफोने पर लिखबाओल गेल लि। कोनो लिखित पि आ ओकर पावति रशीद तँ अछि नञि। मुदा ई पता कर जे एहि तरहक कम्प्लेनक कोनो रेकाडटेलीफोन विभागक लग रहैत िक आकि नञि”।

किछु दिनुका बाद मणीन्द्रक फोन आएल जे फोन विभाग एक महीनाक बाद कम्प्लेन नंबर फेरसँ शुर सँ देब शुर कए दैत िक। से ई काज नञि भेल।

“बेश तखन ई पता कर जे हमर नंबरसँ ककरा-ककरा कोन-कोन नंबर पर विदेश फोन कएल गेल लि। आ ओहि विदेशीक फोन कोन-कोन नंबर पर आएल अछि”।

“हँ। एहि गपक तँ हमरा सुरते नञि रहल”।

आब मणीन्द्र जे टेलीफोन नंबरक सूची अनलक्हि, से सभटा टेलीफोन बूि सभक लि। मुदा कोनो टा कॉल आरतिाक नंबर पर नञि आएल लि।

विजीलेसक सुनबाहीमे ई सभ वणनि जखन आरति कएलक्हि तखन शशाक हतपभ रहि गेल। ई तँ नीक भेल जे शशाकक आदमी सभ बूि बलासँ संपकरिखने लि, नञि तँ ओहो सभ फँसैत आ संगहि शशाकोक नाम अबैत एहि सभमे। अस्तु आरति जाचसँ बाहर आकहि गेलाह।

“भाइ। हम मणीन्द्र। ओकरा सभके तँ किछु नञि भेलैक।“

“हमर टासफर दिल्ली भेल अछि। देखैत िी। अहा आश्विंत रहू”।

“हम तँ ओहि दिन आश्विंत भऽ गेलहुँ जहिया अहा पुरनका गप सभ सुनेलहुँ। काकाक अपमानक बदला अहाके लेबाक अछि। मािि व्यवस्था सभ बदलल अछि। चरित्र सभ वैह अछि”।

दिल्लीमे आरति विजीलेस विभागक सूचना-पौदोगिकी शाखामे पदसािपित भेलाह। एहि विभागके शंटिंग पोश्टिंग मानल जाइत लि। विजीलेसक एनक्वायरीसँ बाहर आकललाक बादो आरति एहि पोश्टिंगके चुनलक्हि से एहिसँ तँ ईएह स्पष्ट होइत अछि जे आरति ािक गेलाह। पाच साल कोनमे बैसल रहताह। शशाकक गुप पफुल्लित लि।

एम्हर आरति अपन विजानक ािलि पाठ फेरसँ शुर कएलक्हि। भरि दिन कम्प्युटर आ ओकर तकनीकी विशेषज सभसँ आिलि रहथि। ओहो लोकनि बहुत दिनक बाद एहन अधिकारी देखने लिाह जे आिलि अछि, काजसँ। दोसर लोकनि तँ कोहुना टमपिूणकिए भागैत िथि।

ओना देखल जाए तँ ई विभाग बरड संवेदनशील लि। आब आरतिाक अपन विभागक सभ कमचिारीसँ बेश आकटता भऽ गेल लिक्हि। सभक आवेदन समयसँ आगू बढ़ैत लि। सभटा ऑफिसक इम्प्लपमेट नव आबए लागल। पहिलुका ऑफिसर सभ तँ समय काटिक भागए केर फेरमे रहैत लि आ ऑफिसक आवश्यक आवश्यकता

सेहो पूणनिश्च करैत जाइ छलि।
ऑफिसमे एकटा इक्वीपमेन्ट आएल छलि, करप्शन रोकए लेल। एहिमे स्मगलर सभक फोन टेप करबाक सुविधा छलि।
धीरे-धीरे समय व्यतीत होइत रहल।

"मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि"।
"हम तँ आब निश्चिन्त छी भाइ"।
"हँ समय आबि गेल अछि। एकटा काज कर, स्मग्लरक संग शशाकक संबंधित संबंधमे एकटा न्यूज निकलबा दियौक अखबारमे। आगा सभ चीज तैयार अछि"।
ओम्हर अखबारमे खबरि निकलल आ मंत्रीक जन संपर्क पदाधिकारी जकर काज विभागक खबरिके अखबारसँ काटि कए मंत्री धरि पहुँचायब छलि ओहि कटिंगके मंत्रीजी लग पहुँचाए देलन्हि। समय समीचीन छलि कारण विभागीय मंत्रीजीपर ढेर आरोप ओहि समय आएल छलन्हि, संसदक सत्र चलि रहल छलि से ओ कोनो तरहक रिस्क नहि लेलन्हि। इंक्वायरीक ऑर्डर दए देलन्हि।
विजिलेस विभागमे केश आएल। ओकर आंतरिक बैठकी होइत छलि जाहिमे सूचना-पौदोगिकी विभागके सेहो बजाओल जाइत छलि। सभ केशमे मोटा-मोटी पौदोगिकी विभाग अनाधिकार पमाण पत्र दए दैत छलि। आ केश इंक्वायरीक बाद समाप्त भऽ जाइत छलि।
मीटिंगक तिथि तय भेल। मीटिंगमे आरती विजिलेस कमेटीक सदस्यक रूपमे शामिल भेलाह।
"शशाक पर कोनो तरहक कोनो आरोप सिद्ध नहि होइत छन्हि। आरती अहाक विभागके टेलीफोन टैपिंगक उपकरण उपलब्ध करबाओल गेल छलि। मुदा अपन ऑफिसमे तँ फैक्स मशीनो ६ मास किनाकए राखल रहलाक बाद लगाओल जाइत अछि, तखन ई मशीन एखनो राखले होएत आकि किछु कंवशेशन रेकाडो भेल अछि"।
"श्रीमान। ई मशीन एहि मासक पहिल तिथिके आएल आ ओहि तिथिसँ एकर उपयोग शुरू भऽ गेल। एहि केशमे जाहि स्मगलरक नाम आएल अछि ओकर नाम ओहि सूचीमे अछि जकर कॉल रेकॉर्ड करबाक आदेश हमरा भेटल छलि। शशाकक कंवशेशन एहि व्यक्तिसँ नहि केर बराबर अछि। आधि-आधि मिनटक दू टा कंवशेशन। दोसर कंवशेशन नौ बजे रातिक छी आ एहि कंवशेशनक बाद ओहि स्मगलरक फोन अपन कर्मचारीके जाइत छैक आ ताहूमे मात्र आधि मिनट ओ लगबैत अछि"।
"ई कोन तारीखक अछि"।
"पाच तारीखक"।
"छह तारीखक भोरमे एहि स्मगलरक ओहिठाम रेड भेल छलि आ किछु नहि भेटल छलि। ई सभ फोनक डिटेल दिअ आरती"।
"पहिल कॉलमे शशाक कहैत छथि जे साढ़े आठ बजे घर पर आबि कए भेट कर। बर्ड जरूरी गप अछि। ओ नौ बजे दोसर कंवशेशनमे तमसाइत कहैत छथि जे नौ बाजि गेल आ अहा एखन धरि नहि अएलहुँ। एहिमे उत्तर सेहो भेटैत अछि जे ओ स्मगलर शशाकक गेट पर ठाढ़ अछि"।
"तेसर फोनमे की वार्तालाप अछि"।

“तेसर फोन ओ स्मगलर अपन ऑफिस स्टाफके साढ़े नौ बजे करैत अछि। ओ कर्मचारीके आदेश दैत अछि जे तुरत ऑफिस आऊ, हमहुँ पहुँचैत छी। बस एकर अलावा किछु नहि। कोनो एवीडेंस नहि भेटत सकल एहि केसमे। कहू तँ हम नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट दए दिअ”।
“आरती। की कहैत छी अहा। अहाक विभाग तँ आइ धरि कोनो काज नहि कएने छल मुदा आइ तँ सभटा कड़ी जोड़ि देलहुँ अहा। शशाक फोन कएलक जे भेट कर । दोसर फोन पर ओ व्यक्ति ओकर गेट पर ठाढ़ छल। तेसर फोनमे ओकर कर्मचारी ऑफिस ओतेक रातिमे की करए जाइत अछि। रेडक खबरि शशाक लीक कएलन्हि। ओ कर्मचारी सभटा कागज हटा देलक आ हमर विभागक ऑफिसर भोरमे छुच्छे हाथ घुरि कए आबि गेलाह। आब एकटा फोन आर कर । शशाकक नंबर टेप तँ नहि भऽ सकल छल मुदा प्रक्रियाक अनुसार ओकर आवाजक सैंपल मैच करबाक चाही। ओ फोन उठायत तँ गलत नंबर कहि काटि दियौक”।
“सैह होएत”।
तखने ई प्रक्रिया कएल गेल।
“ई तँ ओपन आ शट केस अछि”- विजीलेंस कमेटीक अध्यक्ष महानिदेशकके बतओलन्हि। महानिदेशक शशाकके बजबओलन्हि आ ओकरा दू टा विकल्प देलन्हि।
“शशाक, एहि सभ घटनाक बाद अहा लग दू टा विकल्प अछि। विभागसँ कंपलसरी सेवा निवृत्ति लेबए पडत अहाके। नहि तँ इंक्वायरी आगा बढ़त”।
शशाक कंपलसरी सेवानिवृत्ति लए लेलन्हि। विभाग छोड़ि कए चलि गेलाह।

“भाइ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि”।
“भजार। हम तँ ओहि दिन आशंकित भऽ गेल छलहुँ जाहि दिन हमरा बुझबामे आओल जे अहाके बच्चाबला सभटा गप मोन अछि। काका आ अहामे कोनो अंतर नहि। मागदर्शक दू तरहक रहल। एहि विजयक मागपर अहा चली ताहि हेतु कतेक कहैत छलहुँ अहाके, से मोन अछि ने। मुदा ओहि दिन जखन हमरा अहा बच्चाक गप सभ कहए लगलहुँ तखनिये आशंकित भऽ गेल छलहुँ हम”।
आरतीक पढ़ाइक गाफ विताक मोनक संग बनैत-बिगड़ैत रहैत छलन्हि। मुदा घुरि कए पुना लक्ष्य पाप्त करैत छलाह। नोकरीमे रहितहु ई घटना एक बेर फेर भेल छल।

आ फेर एकटा सरकारी यात्राक बाद आरतीक भेल एक्सीडेन्ट । १५ दिन धरि वेंटीलेटर पर फेर एक साल धरि बैशाखी पर रहलाक बाद पुना अपन पैर पर ठाढ़ भऽ गेलाह आरती । ओ बच्चा जे डायरी लिखैत छल कतए होएत । ओ कालान्तरक कथाकार सभटा सतेँ लिखने छल, आरतीक भविष्यक वक्तव्य कऽ रहल छल ओ । आरतीक डायरीमे सेहो यैह अंकित भेल-

“अप्पन माने हमर -आरतीक- विषयमे गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाब रहय लागल । किछु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल हमर एक्सीडेंट, जकर कारणवस हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पड़ल जेना डेढ़ दिन जेका बीति गेल । किछु एहि बातक दिस सेहो हमर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोना कए होएत । तखन सामर्थ्यक संबंधे

सीश्मत करबाक श्वचार आएल । एश्चमे हमरा श्वन पयासक सफलता भेश्ट गेल िल । एकर कारण िल हमर नश्च खतम पतीत होमएबला बीमारी । एश्चमे श्वश्चन डॉक्टरक ओश्वश्चायन, श्वक्ि गलत ऑपरेशन आ एकर सश्चाश्वत इम्पेसन ई, जे आब हमरा अपाश्चजक जीवन जीबए पति । आनक बात तँ िडू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल िल । लगैत िल जे डॉक्टर सभ फूश्चायाश्चँक आशासन दए रहल अश्वि । एश्च कममे फोनसँ लऽ कए हाल समाचार पुिश्वाहार िश्वक संख्या सेहो घश्ट गेल िल । से जखन अनचोके बैशाखी, फेर ििपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेके फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंि बनाबएमे असुश्वि होमए लगलश्चह। जे हमरासँ दूर नश्च गेल रहश्वि तश्चाकासँ तँ हम जबदस्तीयो संबंि रखलहुँ मुदा दोसर श्वश्वा गेल लोकसँ हमर व्यवहार श्वारपेक्ष रहैत िल, से पुनासंबंि बनेबासँ लोक हतोत्साश्चत रहए लगलाह । दुश्चनिमे जे हमरापर हँसश्वि तश्चाकर पश्चा ई व्यवहार सहानभूश्चापदश्च मानल जएत । एश्चसँ समयश्चि खूब बचए लागल। शुरमे तँ लागल जेना ऑश्वफसमे क्यो श्वान्हत आश्वक नश्च । मुदा जखन हम ऑश्वफस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेका स्वागत भेल होअए । मुदा एश्चमे ई बात संगी-साि सभ नुका लेलक जे हमर िि सँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल िलश्चह । सभ माि हमर श्चम्मतक पशंसा करैत रहैत िलाह । जखन हम िि िश्वि कए चलए लगलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहा पुरनका रपमे घुश्व रहल िि । एश्च बातके हम घरपर आश्व कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए केर फोटोके पतीक मदश्वा सँ हैण्डीकैम दारा वीयोडीगाफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन रश्च गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नेगि कए दौगब सन लागल िल । पश्चने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रती पता िश्व नश्च चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बरड कम अश्वि, पश्चने तँ आर बेसी िल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत िलाह, तश्चाका कतेक खराब लगैत होएतश्चह । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक पोत्साहन आ हमर श्चम्मश्वाक पशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन पारश्वाभक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकिलाक बाद सावजिश्वाक जीवनमे अलग-िलग पश्वि जएबाक संदेह, आशा, अपेक्ष श्वकंवा अनुभवक बाद जे एश्च तरहक अनुभव भेल से हमर व्यश्चक्तत्वक श्वान श्वकासके आर दृढ़ता पदान केलक"।

कैकटा ऑपेरेशन भेलश्चह आ अनेश्चश्चिश्वायासँ बाहर अबैत काल आर श्वाके लागश्चह जे ओ झोटा बला सहसबाढ़श्वा झमाश्व कए एश्च श्वशमे फेश्वक दैत िश्चह हुनका ।मृत्यु पर श्वजय कएलश्चह आर श्वा। मुदा डेढ़ बरख बाद जखन ऑश्वफस अएलाह तखन लोकके श्वशासे नश्च भेलैक। मुख पर वैह श्वारपश्चश्चत हँसी। लोक सभ तँ ईहो कहैत िल जे ई एक्सीडेट भेल नश्च िल वरन् करबाओल गेल िल। कारण नवलक एक्सीडेट जेका िल ई एक्सीडेट।

<u>मायानन्द श्वाकि इश्चाहास बोि-पिमिं शैल पुिच/ मंपुि/ पुरोश्चत आ सि-िनि केर संदभमि</u>

एहि पबन्धमे मायानन्दजीक सीिन, पुरोहित, मंि-पुि आ पिमं शैलपुिी च- एहि चािू पोिीक जे किा-वस्तु िि आ सािहत्यक िववेचन िि तकरा यिा संभव निह िलल गेल आ मािा इितहास-बोिक सन्दभमे िववेचना अिि।

पबंिमे मायानान्द जीक १.पिमं शैल पुिी च २.मंिपुि ३.पुरोहित आ ४. सी-िन एहि चािू ऐितहािसक उपन्यास सभक आिार पर लेखक दारा लगभग दू दशकमे पूरण कएल गेल इितहास यािाक समीक्ा कएल गेल अिि। एहिमे पयुक्त पुस्तकमे, मंिपुि मैिलीमे अिि आ शेष तीनू उपन्यास िहन्दीमे, तिािप यािा पूणताक दृष्टवा आ िखलाक तारतम्य आ समीक्ाक पूणताक हेतु चारू िकताबक पयोग अिनवायि िल।

कालकमक दृिष सँ पिमं शैल पुिी च पिम अिि । एिहमे १५०० ई.पू.सँ पिहलुका इितहासक आिार लेल गेल अिि। मंिपुिमे १५०० ई.पू. सँ १२०० ई.पू. िरिक इितहास उपन्यासक आिार अिि। ई सभ आिार भारत युदक पिहलुका अिि। पुरोहितमे १२०० ई.पू.सँ १००० ई.पू. िरिक इितहास अिि- एकरा बाह्मण सािहत्यक युगक इितहास किह सकैत िी। सीिनक आिार अिि सूि-स्मृितकालीन भारतीला।

मुदा रचना भेल मैिली मंिपुिक पिहने -नवंबर १९८६ मे। पिमं शैल पुिी च एकर दू सालक बाद रिचत भेल आ ताहिमे मायानन्द जी चारू िकताबक रचनाक रपरेखा देलिहि मुदा ई िहन्दीक संदभमे िल। एकर बाद सभटा िकताब िहन्दी मे आएल। िहन्दी मंिपुि आएल जािह कारणसँ तेसर पुस्तक पुरोहित िकिु देरीसँ १९९९ मे पकािशत भेल। सीिन जे एिह िखलाक अंितम पुस्तक अिि, २००७ ई. मे पकािशत भेल।

"पिमं शैल पुिी च" केर पस्तावनाक नाम कवच िल।मंिपुिक पस्तावनाक नाम ऋचालोक िल आ ई पुस्तकक अंतमे राखल गेल, िकएक तँ ई लेखकक पिम ऐितहािसक रचना िल, पस्तावनाके अंतमे रािख कय रहस्य आ रोमाचके बनाओल राखल गेल । पुरोहितक पस्तावनाक नाम िविनयोग िल आ एकरासँ पिहने दूवाक्त मंि राखल गेल जे भारतक आ िविशक पिम देशभिक्त गीत अिि। भारतीलामे एकरा आशीवादक मंिक रपमे पयोग कएल जाइत अिि जकर पक-िवपकमे िवस्तृत चरचा बादमे होएत।

सीिनक पस्तावनाक नाम लेखक पृषभूिम रखने िििि जे उपन्यासक ऐितहािसक पृषभूिम पदान करबाक कारण सविा समीचीन अिि।

मायानन्दक इितहास-बोिक समीक्ा हम िििा, परम्परा, तकि आ भाषा-िवजानक आिार पर कएने िी। पािात्य िवदान सभक उिचिष भोज सँ भिन्नि भारतीय इितहास-लेखन सँ बिच कए इितहासक समीक्ा भेल अिि आ मध्य एिशया आ यूरोपक किित पभाव समीक्ा पर निह पिए से पयास कएल गेल अिि।

१. पिमं शैल पुिी च- कवच रपी पस्तावनाक बाद ई पुस्तक १. अल्हा, २.अल्हा-शैला, ३. शैला- कराली, ४. कराली- महेष, ५. महेष- पारवती, ६. गणेष, ७. हरिकसन, ८. िकसन, ९. हरप्पा : मोअन गाव, १०. गणेष का िगणेश, ११. िकश, १२. महाजन, १३. मंडल, १४. िकश मंडल, १५. मंडल : मंडली, १६. पतन: पुरंदर आ १७. उपसंहार : पलायन खंडमे िवभक्त अिि।

१. अल्हा- २००० ई. पू. सँ आरम्भ होइत अिि ई उपन्यास। खोहमे रहएबला मनुष्यक िववरण शुर होइत अिि। बा एकटा दलक सवािधक बिुिष मनुष्य अिि। पूवजि बा सेहो बिुिष िल। एतेक रास बच्चा सभक बा। एकटा िाट आ एकटा पैघ पािरक आिवष्कार कएने िलाह पूवजि बा। अम् दलागाके कहल जाइत िल। बा भयंकर गंिवला पशुक नाम सेहो िल। हािक महत्व बढ़ल आ बढ़ल वृक्सँ दूरी। सपकिे मािि कए खाएल निह जाइत अिि, से गप पूवजिसँ जात िल। पाचीन देव वृक, दोसर नाग देव आ तेसर नदी देव िलाह।

अम्पासँ बा संतान उत्पन्न करैत आएल िलाह। नव कुठार आ नव काताक आविष्कार भेल। आ आा अग अला केर देवता कए वन्य पशुके भागैत देवता एकर जानकारी भेल। मानुषी हुनकर संख्या वृद्ध करैत िछ्ल। पमि मानुषीक नाम पिल अला। ओकर मानुष-ग्रा िलाह अला। अला दलागा बच्चा गेलीह आ हुनकर नेतृत्वमे दल उतर दिशा बढ़ल। फेर लेखक लिखैत िछ्थ जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोि वषपूिवभेल जे सविा समीचीन अछि। कमकाण्डमे एक सिान पर वणित अछि- "बाह णे दितीये परा िी स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष ाविंशतितमे कलियुगे पमि चरणे" आ एहि आिर पर गणना कएला उतर १,९७,२९,४९,०३२ वषि पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव धातु दारा सेहो ईएह उतर अबैत अछि। यूरोपमे सिहम शताब्दी िध पृथ्वीक आयु ४००० वषमानल जाइत रहल। ईरानक मुदान १२०० वषपिहने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलक्षह। ई दुनू दृष्टि कोण वैजानिक दृष्टि कोणसँ देखलापर हास्यास्पद लगैत अछि।

अला-शैलासँ शुर होइत अछि दोसर भाग। १०००० ई.पू.। भाषाक आरंभक पारंभ मायानन्द ज्ञा एहिमे पकट कएने िछ्थ। एहिमे बर ड नीक जेका, संकेत भाषासँ ध्वन्यात्मक संबंि पत्यक्ष कएल गेल अछि। चलंत सँ स्थिर जीवनक शुरआत सेहो देखायल गेल अछि। तकर बाद शैला कराली अध्यायक पारंभ होइत अछि, ७५०० वषपूिवसँ। गौ पालनक चचा होइत अछि, गायक संख्यामे पयाप्त वृद्ध भेल िल। सभ रहथि चरबाह, चमसिािरी। आ कष्टमे पािरक हथियार। भेि, बकरी आ सुलार िल, कुकुर आन पोसल्या जंतु जात सेहो रहए। घासक रस्सी, त्रिशूल आ नागदेवक चचा होइत अछि। बाक नाम आब भऽ जाइत अछि, ओजा। दलागाक नाम पित अछि शैला कराली। पशुक संख्या बढ़ल तँ पशुक चोरि सेहो शुर भऽ गेल।पीपरक गािक नीचा बैठकीक पारम्भ भेल। करालीक नाम अंबा पिल।

कराली-महेष अध्यायमे ५००० ई.पू. मे कृषिक पारम्भ देखाओल गेल अछि। महेष बीया बागु कए रहल िछ्थ। जवके पका कऽ खयबाक चचा होइत अछि। आब िरक नाम सेहो राखल जाए लागल। महेष कुल दारा पोस केर मास खेनाइ तँ एकदम बन्द भऽ गेल।ओजा संग सिानमे बैसल रहैत िलाह।

तकर बाद महेष-पारवती अध्याय शुर होइत अछि ४ सँ ५ हजार वषपूिवि िनक फसलक पारंभ भेल। पारवती जहिया अएलीह तहिया ओतुका पिाक अनुसार लाल माटि मािमे लगा देल गेल। पुि नाम गणेष पिल। एहिसँ पहिने संतानक पिरचय नहि देल जाइत िल।

गणेष- ई अध्याय ४००० वषपूिवसँ शुर होइत अछि। सी-पुरष संबंि आ पितृ कुलक आरंभक चचा शुर भेल। नून अनबाक आ खेबाक पारंभ भेल। नून अनबासँ कुलक नाम नोनी पिल। जव आ गहूमक खेतीक पारंभ आ दूि दुहबाक आरंभ देखाओल गेल अछि। हािीक पालनक पारंभ आ अदला-बदलीसँ व्यवसायक पारंभ सेहो शुर भेल। महेश देव पर जल आ पात चढ़ेबाक पारंभ सेहो भेल। यवके कूटब आ बुकनी करबाक पारंभ भेल। गहूमके चूरब आ पानिमे साजा कए आगिमे पकाएब पारंभ भेल। पशुपालन करएबला एकटा आन दल िल। मृतक-संस्कार आ मृत्यु पर कनबाक पारंभ सेहो भेल। श्राद्धक पारंभ सेहो भेल।

हर- एहि अध्यायक पारंभ ३५०० ई.पू. देखायल गेल अछि। नूनक व्यापार आ सुगढ़ नावक निमाण पारंभ भेल। पइलीक कल्पना नपबाक हेतु भेल। हर आ बिदिक सञ्चालन पारंभ भेल। इनार खुनबाक पारंभ आ जनक लंबवत केर अस्थायी चौिइमे बसबाक पारंभ सेहो भेल। घर बनएबाक पारंभ सेहो भेल।कारी, गोर आ तामवणी कायाक बेरा-बेरी आगमन होइत रहल।

हरविकसन अध्यायक पारम्भ ३४०० वषपूिवहोइत अछि। कृषि विकासक संग सिायी आवासक पवृत्ति बढ़य

लागल। तकरा बाद पशुवारक रूप स्पष्ट होमय लागल। कृषि-विकाससँ वाणिज्य विस्तारक आवश्यकता बढ़ल। ऊनक वस्त्र, चक्की, भीतक घर आ इनारक घेराबा बनए लागल।

विकसन अध्यायक पारम्भ ३३०० ई.पूर्व भेल। मि-बेचबाक पारम्भ भेल। पटौनीक पारम्भक संग कृषि-विकास गति पकड़लक। भूगोलक जानकारी भेलासँ वाणिज्य बढ़ल। अलंकारक पवृत्ति बढ़ल।

हड़प्पा: मोहनगाव अध्याय ३२०० वर्षपूर्व देखाओल गेल अछि।मि-बेचबाक हेतु काठक टोलक उदाहरण अबैत अछि। अलंकार पवृत्ति बढ़ल। गोलीक मालाक संग कुम्हारक चाक सेहो सम्मुख आयल। समाजमे वर्ग विभाजनक पारम्भ भेल।

गणेषक विगणेष अध्याय ३१०० ई. पूर्व पारम्भ भेल। दक्षिणाचल लोकक आगमनक बाद हड़प्पा हुनका लोकनि दारा बनेबाक चर्च लेखक करैत छथि। मोहनजोदड़ो, लोथल आ चान्हूदड़ोक विकास व्यापारिक केन्द्रक रूपमे भेल। स्वस्तिक, कटही गाड़ी आ मूर्त्तिशिलाक आविष्कार भेल आ वस्तु विनिमयक हेतु हाट लागए लागल। मेसोपोटामियाक जलप्लावन आ सुमेरी आ असुरक आगमनक चर्चा लेखक करैत छथि।

विकश अध्यायक पारम्भ ३००० ई.पू. सँ भेल। विदेश व्यापारक आरम्भ भेल। तामक आविष्कार भेल। कृषि दासताक सेहो पारम्भ भेल। बाढ़िसँ सुरक्षाक हेतु ऊँच डीह बनाओल जाए लागल।

महाजन अध्याय २८०० ई. पू. पारम्भ होइत अछि। नगरक पारम्भ वाणिज्यक हेतु भेल। नहरि पटौनीक हेतु बनाओल जाए लागल। डंडी तराजूक आविष्कार आवश्यकता स्वरूप भेल। पकाश-व्यवसायिक व्योत लागल।

मंडल अध्यायमे चर्च २६०० ई.पू.क छै। संसदि निर्माण, विवाह व्यवस्था आ दूरगर यात्राक हेतु पाल बला नावक निर्माण पारम्भ भेल।

विकश मंडल अध्याय २४०० ई.पू. केर कालखण्डसँ आरम्भ कएल गेल अछि। एहिमे वर्षाक अभावक चरचा अछि। आर्यक पूर्व दिशामे बढ़बाक चर्चासँ लोकमे भयक सेहो चर्चा अछि।

मंडल:मंडली अध्याय २२०० ई.पू.सँ पारम्भ भेल। आर्यक आगमनक आ वर्षाक अभाव दुनूके देखैत लोथल वैकल्पिक रूपसँ विकसित होमए लागल।

पतन:पुरंदर: एहि अध्यायक कालखण्ड २००० ई.पू.सँ पारम्भ भेल अछि। आर्यक राजा दारा पुरके तोड़ि महान केर हड़प्पाके ध्वस्त करबाक चर्चासँ मायानन्द जी अपन पहिल किताब 'पशि मंं शैल पुष्पि च' केर समापन करैत छथि। आर्य हड़प्पाके हरियूपियासँ संबोधित कएल, आर्य बाहरसँ अएलाह पभृति किछु विवादातक आधार पर रचित ई उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास होएबाक दावा करैत अछि। आ एहिमे २०,००० ई.पू.सँ १८०० ई.पू. धरिक इतिहासोपाख्यानक चर्चा अछि। मुदा मौलिक ऐतिहासिक विचारधारा आ नवीन शोधक आधार पर एकर बहुतो बात समीचीन बुझना नहि जाइत अछि।

अन्तसँ शुरू भेल ई कथानक बरड आशा दिअओने छि। लेखक पहिल अध्यायमे लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णित अछि-
"बाह णे द्वितीये परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष ाविंशतितमे कलियुगे पथम चरणे" आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १,९७,२९,४९,०३२ वर्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि दारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। ई अनुमानित अछि जे यूरेनियमक १.६७ भाग १०,००,००,००० वर्षमे सीसामे बदलि जाइत अछि। विभिन्न पकारक पाथर आ चटानमे सीसाक मात्रा भिन्न रहैत अछि। एहि पकारसँ गणना कएला पर ई ज्ञात होइछ जे रेडियोएक्टिव पदार्थ १,५०,००,००,००० वर्ष पहिने विद्यमान छल। एहि पकारे

कोनो शैलक आयु २,००,००,००,००० वर्षसँ अधिक नहि भऽ सकैछ। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। एहि तरहक पाण्डित्य शोधके लेखक पहिल अध्यायमे तँ नकारि देलन्हि मुदा अंत धरि जाइत-जाइत ओ - आर्यलोकनि हड़प्पाके हरियूपिया कहैत छथि - एहि प्रकारक पाण्डित्य दुराग्रहक प्रभावमे आबि गेलाह। पश्चिमी विद्वानक उत्खनन भोजसँ बचबाक हेतु परम्पराक परीक्षा तर्कसँ नहि कए सकलाह। एहि प्रकारे ‘पर्मि शैल पुत्री च’ श्लोकक आधार पर अपन इतिहासोपाख्यान सांख्यिकीक रूपसँ नहि बना पओलक :-
पुरातात्विक, भाषावैज्ञानिक आ सांख्यिकीक साक्ष्य एहि पक्षमे अछि जे आर्य भारतक मूल निवासी छलाह। आर्य भाषा परिवारक नामकरण मैक्समूलर द्वारा कएल गेल छल। द्रविड़ परिवारक नामकरण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल द्वारा कएल गेल छल।आर्यक आक्रमणक सिद्धांत आएल विल्सनक ऋग्वेदक अनुवादमे देल गेल फूटनोटसँ। पहिने तँ ई नामकरण विदेशी विद्वान द्वारा कएल गेल छल तखन दोसर ओकरा अपन उद्देश्य होएतैक।
सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, बलामेश कथा काव्य, पाणवंतक देश बलामेशक खोज, सृष्टि कथा आ देवतंत्रक विकास एहि सभटा समाजशास्त्रीय विकासक विश्लेषण आर्यलोकनिक भारतक मूल निवासी होएबाक साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि।
ऋग्वेदमे मातृसत्तात्मक व्यवस्थाक समृद्धिक रूपमे बहुवचन स्त्रीलिंगक प्रयोगक बहुलता अछि।
सघोष आ महाप्राण ऋग्वेदिक आ भारतीय भाषाक ध्वनिक प्रकार प, नहि तँ ईरानी आ नहिये यूरोपीय भाषा सभमे भेटैत अछि। सरस्वती आ सिन्धु नदीक बीचक सभ्यता छल आर्यक सभ्यता। सरस्वती नदीक तटवर्ती भरत, पुरु आ अन्य गण सभ निवास कए ऋग्वेदक रचना कएलन्हि। सरस्वतीमे जल-प्रलयक बाद ई सभ्यता सारस्वत प्रदेश सँ हटि कए कुरु-पाञ्चाल आ बहिर्प्रदेश-मध्यदेश- पहुँचि गेल। इतिहासमे भरत लोकनिक महत्व समाप्त भऽ गेल। एहि जल प्रलयक बाद आर्यजन लोकनिक वंशज मोहनजोदड़ो आ हड़प्पा नगरक निर्माण कएने होएताह सेहो सम्भव। हड़प्पा सभ्यताक ८०० मे सँ ५३० सँ ऊपर स्थान एहि लुप्त सरस्वती नदीक तट पर अवस्थित छल। सिन्धुक नदी पर एहि स्थल सभक बड़ड कम निर्भरता छल आ जखन सरस्वतीमे पानिक प्रवाह घटल तँ एहि सभ केन्द्रक ह्रास प्रारम्भ भऽ गेल।
पहिने सरस्वतीमे जल-प्रलयसँ आर्यक पलायन भेल (ऋगवेद आ यजुर्वेदक रचनाक बाद) आ फेर सरस्वतीमे पानिक कमी भेलासँ दोसर बेर आर्यक पैघ पलायन भेल (अथर्ववेदक रचनाक पहिने)। अरा-युक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहि तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहिये यूरोपमे। भारतीय देवनाम, शिल्प, कथा, अश्वविद्या, संगीत, भाषिक तत्व आ चिंतनक संग ई उदाहरित होमए लागल पश्चिम एशिया, मिस्र आ यूनानमे। दोसर सहस्राब्दी ई.पूर्व अरायुक्त रथ, भारतीय देवनाम, भारतक नदी, ऋगवेदिक तत्वचिंतन, अश्वविद्या, शिल्प-तकनीकी आ पुरातन् कथा भारतसँ पश्चिम एशिया, क्रीट-यूनान धरि जाए लागल। कालक्रमसँ मिस्र, सुमेर-बेबीलोन, असीर सभ्यता आ मितनी आ हित्ती सभ्यतासँ बहुत पहिनहि ऋगवेदक अधिकाश मंडलक रचना भऽ गेल छल।

मायानन्दजीक एहि सीरीजक दोसर रचना मंथन अछि। एहिमे ऋगवैदिक आधार पर जीवन-दर्शनके राखल गेल अछि।
ऋगवेद १० मंडलमे (आ आठ अष्टकमे सेहो) विभक्त अछि। मायानन्द मिश्रजी मंडलक आधार पर मंथनक विभाजन सेहो १० मण्डलमे कएने छथि। एहि पुस्तकक भूमिकाक नाम अछि ऋचालोक आ ई पुस्तकक अंतमे

१०म मण्डलक बाद देल गेल अछि।
पमि मण्डलमे काक्सेनी पुरि ऋष्यशाक चचअछि संगस्न ऋतुध्वत्ति पुरि शाशतीक सेहो। जन सभा आ जन-सभ्यक्षा दारा राजाके च्युत करबाक/ श्नावासन देबाक आ दोसर राजाक श्नावाचन करबाक चचा सेहो अछि। नेकि नील रंग रहबाक बदला श्यामल भऽ जएबाक चचा आ एकर कारण खास तरहक थ्ववाहक होयबाक चचा सेहो भेल अछि।थ्वतस्ता तटसँ कृष्ण सभक श्नारन्तर उपरवक चचा सेहो अछि। सुवास्तु तटसँ रक्त श्नाणिक पश्चकयाक वणनि अछि। गोमेकि वध्यत्ति कएल जाय, ई थ्वचार थ्वमशकिएल जाए लागल। दासक चचा सेहो अछि। हथ्वयूथ्वया पतन आ ओकर थ्वश्वान नगर सभक उजछि जएबाक चचा अछि आ पतित्, बलश्वूि दारा अनायसिभक ध्वास्त वाथ्वाज्य क्यवसािके संगश्चत करबाक चचा अछि।
थ्वतीय मण्डलमे राजाके सभ्यक्षा दारा एश्च गपक लेल पदच्युत कएल जएबाक चचा अछि, थ्वक िनुक चोश्चक बादो गव्य-युद ओ नश्च कएलश्चह। अश्चाषेकक सङ राजा सेहो पाया श्नाधित होमए लगलाह आ कौश्चाक परम्परा चश्च गेल। पश्चने सभ्यश्चाक श्नाणधिक बादे क्यो समिनि-याचनामे जाइत लिाह, राजदण्ड सम्हारैत लिाह। िनुक हरण कएने लि अनास दस्यु सभ। सुवास्तु, कुमु, थ्वतस्ता आ अक्खनीक तट पर ि श्चा अभ्यास आ युद-कायसिंगश्च चलैत लि, एके संग बाह ण, क्षथ्विय आ वैश्य कमकिरैत थ्वि। मुदा सरस्वतीक तट पर बात थ्वक ि दोसरे भऽ गेल, ऋथ्वगाम फराक होमय लागल। सभटा अनास दस्यु दास बश्चा गेल आ दासीसँ आयणिक संतान उत्पन्न होमए लगलश्चह। दासीपुि लोकश्चाके तँ गाममे घर बनेबाक अनुमश्चा लिश्चह मुदा अनास दस्युके ओ अनुमश्चा नश्च लिश्चह। एश्च गपक चचा अछि, जे आयचिमविर्सि पश्चरैत लिाह आ अनास दस्यु लोकश्चाक संपकसिँ सूतक वसि आ लवणक पयोग श्नाखलश्चह। एश्च दुनू चीजक आपूश्चाएिखनो अनास लोकश्चाक हािमे लिश्चह। अनायलिोकश्चाक संपकसिँ अपन शब्द कोश श्वासरबाक आ तकर संकलनक आवश्यकताक पूश्चाकि हेतु श्नाघण्टुक संकलनक चचा सेहो अछि। गंविथ्विवाहक सेहो चचा अछि।
तृतीय मण्डल
अश्चमाष ोम यजक चचा अछि। िगर आ महीसक बश्च केर चचअछि।
मास-भात महथ्विलोकश्चाके थ्वय लगलश्चह, तकर चचा अछि मुदा भातक बदला गहूमक सोहारीक पचलन एखनो बेशी होएबाक चचा अछि।
चतुिमिण्डल
राजाक अश्चाषेक यजक चचा आ ओश्चमे अश्वष नेश्नाक बह ा बनबाक चचा अछि। गामणी, रिकार, कम्मश्च, सूत, सेनानी सेहो यजमे सश्चाश्चत लिाह।
“अश्चा पाचीन कालमे सृश्च जलमय लि”! एकर चचा मायानन्द श्नाजी नश्च जाश्चा ऋगवेश्चक युगमे कोना कए देलश्चह।
पञ्चम मण्डल
अशारोहण पश्चायोश्चाताक चचा अछि। अनास दास-रंजक नाटयवृश्चाक चचा सेहो अछि। राजा दारा एकर अश्चाषेक कायक्रिममे स्त्रीकृश्चा आ एकर भेल थ्वरोिक सेहो चचा अछि। दासके स्वतंि कृश्च अधिकार आ एकरा हेतु थ्वदिक अनुमश्चा राजा दारा लेल जाए आश्चक नश्च तकर चचा अछि।
षष मण्डल
महावैराजी यजक चचा अछि। समस्त दस्यु-गामक दास बश्चा जएबाक सेहो चचा अछि आ ओ सभ पशुपालन

आ पश्चा कायिकऽ सकैत छथि। नलाश्चातक पसंग लए मंि गायन केश्चाहार बाह ण, गश्चश युद कएश्चाहार कश्चिय आ एकर अश्चाश्चकत जे कृश्च श्चकासमे बेशी ध्यान दैत छलाह से श्चश- सामान्य जन छलाह मुदा एश्चमे मायानन्द जी वैश्य शब्द सेहो जोश्चि देने छथि।

सप्तम मण्डल

बबरि उजरा आयक आकमणक चचा आब जा कए भेल अश्चि। पाया श्चदेशी श्चशेषजक एक भागक संग मायानन्द जी सेहो पैशाची आकमणके बादमे जा कए बूश्च सकलाह आ एकरा सेहो आयक दोसर भाग बना देलश्चह। आयि हश्चयूश्चयाके डाश्च कए नष कए देने छलाह एकर फेर चचिआश्च गेल अश्चि। मोहनजोदिो आतंकसँ उजश्चि गेल फेर भूकम्पो आयल ताहूसँ नगर ध्वस्त भेल। आब मायानन्दजी ओझराएल बुझाइत छथि। वषा कम होएबाक सेहो चचा अश्चि।

अष म् मण्डल

ऋश्चगामक चचा अश्चि। कुलमे दास आ दासी होएबाक संकेत अश्चि। वृषभ पालनक सेहो संकेत अश्चि। मंि-पुिक गामाचल चश्च जएबाक आ श्चशा-वैश्य बश्च जएबाक सेहो चचा अश्चि। मुदा आगा मायानन्दजी ओझराइत जाइत छथि। कश्यप सागर तटसँ पसिन-पूवदिौस आ त्पराष्टी केर गौण देव भऽ जएबाक चचा अश्चि। बाह ण आ कश्चियक श्चभाजन नश्च होएबाक चचिअश्चि आ क्यो कोनो कमिकरबाक हेतु स्पतंि छल। देवासुर संगाम आ हेलमन्द तटक युद आ पशुपालनक चचा अश्चि। पिित बह ण आ कश्चियक कमक फराक होएब पारम्भ भए गेल। पिित् मंि-रष ा ऋश्च दारा मंिमे देवक आ अपन नाम राखब पारम्भ भेल- एकर चचा अश्चि।िश्चा अभ्यासक पारम्भ होएबाक चचा अश्चि कारण मंिक संख्या बश्च गेल छल।

नवम् मण्डल

वस्तु श्चनमयक हेतु हाट व्यवसिाक पारम्भ भेल। हाटमे मृश्चाका पभागमे दास-श्चालपी पािक उपश्चश्चिश्चा आ वसि पभागक चचा अश्चि। मृश्चाका, हश्चस-दन्त, ताम सीपी आश्चक बनल वस्तुजातक चचा अश्चि। श्चाशु-रंजनक वस्तुजात - जेना हश्चस, वृषभ आश्चक मूश्चाक, लवणक, अनक, काष क आ कम्बलक श्चकीक चचा अश्चि।

दशम् मण्डल

शेत-जनक आगमनक -बबरि शेत आयिसूचना नागजनके भेटबाक चचा अश्चि। नाग जन दारा अपन दलपश्चाके राजा कहल जाएब, नागक पूवकिालमे ससश्च कए यमुना तट श्चश्चा आएब आ ओतुका लोकके ठेल कए पािि कए देबाक सेहो चचा अश्चि।कृष्ण जनक काष दुगिआ नागक संग हुनका लोकश्चाके सेहो अनास कहल गेल अश्चि। मुदा ओ लोकश्चा दीघकािय छलाह आ नागजन कनेक छोट। एश्च मण्डलमे दासक संग शूरक आ गंगा तटक सेहो चचा आश्च गेल अश्चि। आयि दास आ शूरक बीचमे सहयोगक संकेत अश्चि।

अंतमे ऋचालोक नामसँ भूश्चाका श्चाखल गेल अश्चि। देवासुर संगामक बाद इन्द असुर उपाश्चि त्यागलश्चह, श्चती श्चतानी चलल आ आयपूिवश्चिशा श्चश्चा बढ़ल- एश्च सभ तथ्यक आिर पर श्चाखल ई मंिपुि ऐश्चाहाश्चकताक सभटा मानदण्ड नश्च अपना सकल।

मायानन्द श्चािजी साश्चत्यकारक दृश्च कोण रश्चतश्चि आ पािित्य इश्चाहासकारक एक भाग दारा पसारल गॉश्चपसँ बश्चतश्चि तँ आयिआकमणक श्चादातके नकाश्च सश्चतश्चि। सरस्पतीक िर ऋगवेदक सभ मंडलमे अपन श्चशाल आ आहादकारी स्पर पक संग श्चदमान अश्चि। श्चन् आश्च सरस्पती नदी घाटीक सभ्यता तखन खतम आश्च हासक श्चिश्चामे आएल जखन सरस्पती सुखा गेलीह। अिवश्चिदमे सेहो सरस्पती जलमय छथि। ऋगवेदमे जल-

पलयक कोनो चचिनि अि आ अविनिदमे ता सं संकेत अि। भरतवासी जखन पिम सं गेलाह, तखन अपना संग जल-पलयक ससा अपना संग लेने गेलाह। जल-पलयक बाद भरतवासी सारसत पदेशसँ पूब सं कुर-पाचालक बह पिदेश सं आ गेलाह।
सरसती रतिि तँ बात ि आर होइत मुदा सुखायल सरसती एकटा िभाजन रेखा ब गेलीह, आयि आकमणकारी ादातवादी लोक के ओ सुखायल सरसतीके लँघनाइ असंभव भऽ गेल।
ान ाक िवेचन सेहो िना बाहीक सहायताक संभव न भऽ सकल अि।
ििक ऋगवेदक अनुवादक पाद पणीमे प ल बेर ई आशंका क कएल गेल जे आयिआकमणकारी पिमोतरसँ आ कए मूल ावासीक दुगितोिल ह। दुगिमे रहिहार बेशी सभ रहि। १९४७ मे हीलर ई ादात लऽ कए अएलाह जे िभा त पाकसान सभताक केन िल आ आयिआकमणकारी िदेशी िलाह। एकटा भारतीय िदान रामपसाद चंद ता सँ प ने ई क देने रहि जे ए नगर सभक ावासी ऋगवेदक प ा िलाह। मुदा माशि १९३१ ई मे ई नव गप कहने िलाह जे आयिक भारतमे पवेश २००० ई.पूविभेल िल आ तावत हिपा आ मोहनजोदिक िनाश भऽ चुकल िल। १९३४ मे गॉडनि चाइल कहल ा जे आयि संभवता आकमणकारी भऽ सकैत िि। १९३८ मे मकॉय मोहनजोदािक आकमणके नकारल ह, ि अि पि ाक आिर पर एकरा ाद कएनाइ संभव न । डेल १९६४ मे एकटा ाबनि ाखल ह 'द ािकल मसेकर ऑफ मोहंजोदािा' आ आकमणक दंतकिाक उपहास कएल ह। तकर बाद हीलर १९६६ मे ि पाि हटलाह मुदा मकॉयक कबायलीक बदलामे सभटा आकमणक ाम ेदारी बाहरी आयिणिक माि पर पट देल ह। आब ओ कहए लगलाह जे आयिआकमणके ाद न कएल जा सकैत अि मुदा ओो ई संभव न अि तँ असंभव सेहो न अि। स्टुआट िगॉट १९६२ ि हीलरक संग ई दुरागह करैत रहलाह। िगॉट आयिक ातनीसँ आएल कहल ह। नॉमनि बाउनके सेहो पंजाब पदेशक शेष भारतक संग सासकृ ाक संबंिक संबंिमे शंका रहल ह। संसकृत आ रिि भाषाक अमे की िशेषज एमेनो ाखल ह जे ान घाटी कखनो शेष भारतसँ तेना भऽ कए सासकृ ाक रपसँ जुिल न िल। जे आयिओतए अएलाह सेहो ईरानी सभतासँ बेशी लग िलाह।
मुदा पॉ टिर १९२२ मे सा ाक परमरासँ ाद कएल ह जे भारत पर आयिक आकमणक कोनो पमाण न अि। ओ ाद कएल ह जे भारतसँ आयिपिम सं गेलाह आ तकर सा ाक पमाण उपलि अि। लैगडन सेहो कहल ह जे आयिभारतक पाचीनतम ावासी िलाह आ आयिभाषा आ ाक पयोग करैत िलाह। ाजेट आ रेमण ऑल ान आ कौलीन रेनफीव आ िदान पाचीन भारतक इ ाहासक प पूवागहक िशलेषण कएने िि।
ातनी शासक ाि, वरण, इन आ नासतक उपासक िलाह। ती राजमे सेहो वैक देवता लोक ाक पूजा होइत िल।आलबाइट आ लैब न सेहो दू हजार साल प ने द ग-पिम ए ायामे इंडो आयिभाषा बाजल जाइत िल आ संखासूचक श सेहो भारतीय िल, ए तथके मानल ह।
ई लोक भारतीय िलाह आ ऋगवेदक रचनाक बाद भारतसँ बाहर गेल िलाह। बहुवचन सीिंग रप, ऋगवेदक देवगणक िाष रप अनि उपलि न अि। इंडो योरो यन देवतंिमे भारतीय देवीगणक िरलता पूविती भारतीय मातृसतातक वसाक बादक योरोपीय परवती ितृसतातक क्यवसािक प चायक अि।

आब आऊ सुमेरक जल पलयपर जेक्ब ३१०० ई.पू. मे मानल जाइत अछि। भारतीय कशुा संवत ३१०२ ई.पू. मानल जाइत अछि। अता एह्स श्वाअि सँ पूवत्रिऋगवेदक पूणर्िरचना भऽ गेल िल।

देवासुर संगामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलथ्हि आव्य गप पोि◌िक समाथ्ति पर ऋचालोकमे मायानन्द जी श्वाखैत िथि। थ्कि पाितिय थ्दान सेहो ऋगवेदक दाशि◌ि◌क महत्वके कम करबाक लेल ई गप कहैत िथि जे यूनानमे देवर्तािं पूणर्िरपसँ पल्लिथ्वत िल मुदा ऋगवेथ्दक समाज घुमंतु िल आ देवर्तािं ताक्ह दारे थ्वकथ्वत नक्ष िल। ओ लोकथ्न ई सेहो कहैत िथि जे ऋगवेदक रचना अश पर घुमंतु जीवन याथ्त केनहार पथि◌मी आकमणकारी कएने िथि। ऋगवेथ्दक कथ लोकथ्न आरंथ्वक सामूथ्हक संपथ्त आ रक्त संबंि आिश्वत गणसमाज दुनूसँ पथ्थ्वत िलाह मुदा स्वयं ओह्सँ बाहर आथ्व गेल िलाह आ व्यक्तिगत आ कुटुम्बक संपथ्तक आिर बला व्यवसि शुर कए देने िलाह। संपथ्त पुरष केथ्वत आ पथ्वार थ्वतृसतात्मक िल। मुदा मातृसतात्मक व्यवसिके ओ थ्वसरल नक्ष िलाह कारण ओ आपा मातरा कक्ष बहुवचनमे जलदेवीक उपासना आ स्मरण करैत िथि, संगक्ष मरतगण सथ्थ्खन गणक रपमे स्मरण आ उपासना करैत िथि।

आब जा कए एंगेल्स कहैत िथि जे यूनानमे मातृसतासँ थ्वतृसता पाचीन कालक सभसँ पैघ काथ्न्त िल। ई काथ्न्त ऋगवेथ्दक कालमे घथ्टत भए गेल िल। िमक वैथ्शषीकरणसँ उत्पादनमे गोिक भूथ्मका घथ्ट जाइत अछि आ कुटुम्बक बथ्ढ जाइत अछि। गण, गोि, कुल आ कुटुम्बक कमशा थ्वकास सामूथ्हक भूसंपथ्तक संगठनसँ होइत अछि। ऋगवेदमे कुम्भकार, कमार (काषकार), लोहार आ िितु थ्शल्पक चचिअछि। पाचीन ईरानमे असुरक पथ्ार प अहुरक पयोग भेल। ओ लोकथ्न एकर उपासक िलाह मुदा असुर-उपासक भारतीय जनक पभाव ईरान िथ्र सीथ्मत िल, आगा एकर पसार नक्ष भेल। भारतमे असुर दुष िथि मुदा ईरानमे देव दुष िथि। असुरक गथ्रमा सम्पूणित्रिऋगवेदमे अछि। कोनो मण्डल एहन नक्ष अछि जाक्हमे कोनो एक वा आन देवताके असुर नक्ष कहल गेल होअए। मुदा एहनो असुर िथि जे देवक थ्वरोिमि िथि आ इन्द्रसँ एहन अदेवाा असुराा केर नाशक हेतु आहाण कएल गेल अछि।इन्द्रक समान अथ्न सेहो असुरक नाश करैत िथि आ इन्द्र आ बृहस्पथ्त दुनू गोटे स्वयं असुर िथि। असुर देवताक उपाथि िल। ऋगवेदमे देव आ असुरक सदृश असुर एकटा थ्भन्न वगििल असुर शास लैत िलाह मुदा देव नक्ष। देवसँ असुर बेशी पाचीन िथि ताक्ह दारे असुर वरण देव आ मनुष्य दुहूक राजा िथि।

पैशाची त्वग् त्वचा भारतमे कक्षयो तेहन आहादसँ नक्ष देखल गेल । ओह्नो आयिआकमण पोषक थ्वादान्तकार जे ई तथ्य उदाहरणािदिखथि जे दथ्कण भारतीय बाहण, कश्मीरी बाहण आ नेपालक बाहण मे त्वचा नक्ष वरण रप सेहो थ्भन अछि, ई थ्वाद करैत अछि जे ई सभ सिानीय जन िथि आ जाथ्त-व्यवसिामे ताक्हर पे सथ्म्मथ्लत भेल िथि । कारण पाच-सए आ हजार बरखमे मानवशार्सीय आ वैजाथ्नक रपे ओतेक रप-रंगक अन्तर सम्भव नक्ष। जे यूरोपवासी दथ्कण अमेथ्रका-अफीकामे िथि थ्भनको, आ जे नीगो-रेड इथ्ण्डयन अमेथ्रका-अफीका-यूरोपमे िथि थ्भनको रप रंगमे कोनो पथ्रवतनि पाच सए बरखमे नक्ष आएल िथ्ह। ई लाख बरखक आवाससँ सम्भव होइत अछि जे गरम पदेशक थ्नवासी कारी आ ठंढ पदेशक गोर होइत िथि ।

पुरोथ्हत

पुरोथ्हत थ्हन्दीमे अछि आ िृखलाक तेसर पोिििक। दूवाक्त जकरा मायानन्दजी सुथ्वािरपे आशीवििन सेहो कक्ष गेल िथि सँ एकर पारम्भ भेल अछि।

पुरोथ्हत केर आरम्भ दूवाक्त आशीवििन मंिसँ होइत अछि। शुक्ल यजुवेदक अध्याय २२ केर मंि २२ "ॐ

आबह न...'' सँ ''ना कल्पताम्'' िश्च अछि। अछिलामे एहि मंकि संग अन्तमे ''ॐ मंािि श्चादया संतु मनोरिाा। शिूणा बुध्द नाशोऽस्तु श्चािणामुदयस्तव।ॐ दीघायुभवि। ॐ सौभाल्यवती भव''। एकर सेहो मंिच्चार होइत अछि आ एहि चाश्व पादसँ ई मंि आशीवचिनक रप लए लैत अछि।
यजुवेदीय २२/२२ मंि सौसे भारतमे देशभक्त गीतक रपमे मंिच्चाश्वत होइत अछि।
दूवाक्त मंि(शुक्ल यजुवेद अध्याय २२, मंि २२)

आ बह श्चात्यस्य पजापश्चार षिा। श्चांभोक्ता देवताा। स्पाराडुत्कृश्चाशिन्दा। षरजा स्पारा॥

आ बह'न् बाह्णो बह वचसी जायतामा राष्टे राजन्या शुरेऽइषव्योऽश्चाव्याििी महारिी जायता दोग्घी िनुवोढानरवानाशुा सप्ता पुरश्चियोवा श्चाषणू रिषाा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायता श्चाकामे-श्चाकामे ना पजन्यो वषतुि फलवत्यो नऽओषिया पच्यन्ता योगेक्मो ना कल्पताम्॥२२॥

मनािाा श्चादया सन्तु पूणाा सन्तु मनोरिाा। शिूणा बुध्द नाशोऽस्तु श्चािणामुदयस्तव।

ॐ दीघायुभवि। ॐ सौभाल्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ सवज्ञि श्चदाि उत्पन्न होथि, आ शुिके नाश कएश्चाहार सैश्चाक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूि दय बाली, बिद भार वहन करएमे सक्म होथि आ घोिि त्वाश्वत रपे दौगय बला होअए। स्िगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्म होथि आ युवक सभामे ओजपूणभिाषण देबयबला आ नेतृत्व देबामे सक्म होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वषा होए आ औषश्चिक-बूटी सवदिा पश्चापक्व होइत रहए। एवं कमे सभ तरहे हमरा सभक कल्याण होए। शिुिक बुध्दक नाश होए आ श्चािक उदय होए॥

मनुष्यके कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वणनि एहि मंिमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़कार अछि।

अन्वय-

बह'न् - श्चदा आश्च गुणसँ पश्चापूणबिह

राष्टे - देशमे

बह वचसी-बह श्चदाक तेजसँ युक्त

आ जायता- उत्पन्न होए

राजन्या-राजा

शुरेऽ ब्यना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे ब्यपुण

ऽब्याव्याी-शि्के तारण दय बला

महारि्ी-पैघ रि बला वीर

दोव्धी-कामना(दूि पूणि करए बाली)

ि्नुवोढान्रवाना्शुा ि्नु-गौ वा वाणी वोढान्रवा- पैघ बदि ना्शुा-आशुा-त्ब्यत

सप्ता्-घोिा

पुरंब्यि्योवा- पुरंब्यि्- व्यवहारके िारण करए बाली योवा-स्िी

ब्यष्णू-शि्के जीतए बला

रंि्षा-रि पर ब्यिर

सभेयो-उतम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यजमानस्य-राजाक राज्यमे

वीरो-शि्के पराब्यत करएबला

ब्याकामे-ब्याकामे-ब्यियुक्त कायिमे

ना-हमर सभक

प्रजन्यो-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फलवत्यो-उत्तम फल बला

ओषधया-औषधी

पच्यन्ताम्- पाकए

योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

कल्पताम्-समर्थ होए

शाब्दिक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/ संरक्षित करी।

तकर बाद लेखकीय प्रस्तावना जकरा पुरोवाकमे अश्वमेध यज्ञयोगक नाम देल गेल अछि, केर प्रारम्भ होइत अछि। पुरोवाक शतपथ ब्राह्मणकालीन समाज पर आधारित अछि।
अश्वमेधयोगमे पूर्व आ उत्तर वैदिक युग, महाभारत काल इत्यादिक काल निर्धारण पर चरचा कएल गेल अछि। संन्यास आ मोक्षक धारणाक प्रवेश, सूत्र साहित्य, आरण्यक आ उपनिषद आ ब्राह्मण ग्रंथक रचनाक सेहो चरचा अछि।कर्मणा केर बदलामे जन्मना व्यवस्थाक प्रारम्भ आ शूद्र शब्दक उदय, नगरक, आहत मुद्राक, उद्योगक सुदृढ़ीकरणक आ लोहाक प्रयोगक सेहो चरचा भेल अछि। फेर मायानन्द जी ई स्थापना दैत छथि जे दाशराज्ञ युद्ध ई.पू. १८०० मे भेल- भरत आ कुरु-पाञ्चाल-पूर्वी वैदिक समूह सरस्वती तटसँ व्यास नदी पार करैत इलावृत पवित्र प्रदेश होइत ; आ ओ लोकनि कोशल विदेहक राजतंत्रक, कुरु-पाञ्चालक संस्कृतिक विकसित होएबासँ पूर्वक, स्थापना कएने छलाह।
पुरोवाक तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि। प्रथम सर्ग दक्षिण पाञ्चालक काम्पिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि। अग्निपल्लीक पशुशालामे साँझ होइत देरी उठैत धुँआक चरचा अछि। मेघ आ कुशध्वजसँ कथा आगू बढ़ैत अछि। ऋषि गालबक आश्रममे ऋग्वेदके कंठाग कराएल जएबाक आ

बादमे जा कए कृष्ण संबंधी ब्राक्ता देल जएबाक वर्णन अछि।
दोसर सर्गमे राजा प्रवाहण जैबाब्लिक मूखपुत्र द्वारा ब्राह्मणक अपमानक, पश्चिम क्षत्रिय आ दोसर पुरोहित ब्राह्मणक वर्णन अछि।
तेसर सर्गमे आचार्य चाकायणक अपमानक कारण पुरोहित वर्ग द्वारा पौरोहित्य कर्म निषेध करबाक आणिसँ प्रजाजनक दैन्यक अख्लाहोति कार्यआ ब्राना ललाक कृष्ण आ वाआज्य कार्यमे होअए बला भाङठक वर्णन अछि।
चतुर्थ सर्गमे व्यास कवि आ भारत युद्धक चर्चा अबैत अछि आ एतए मायानन्द जी पाश्चात्य दृष्टिकोणक अनुसरण करैत छथि। जय काव्यके भारत युद्धकाव्यक रूप दए देल गेल- ई वक्तव्य अनायासहि दए रहल छथि मायानन्द जी।
पाचम सर्गमे वैश्य द्वारा उपनयन संस्कार छोड़बाक चरचा अछि मुदा क्षत्रिय पुत्र आ पुत्री दुनूक उपनयन करैत छलाह। वैश्य कन्या शिक्षासँ दूर जा रहल छलीह आ ब्राह्मण कन्या गुरुकुलक अव्यवस्थतासँ शिक्षा लए रहल छलीह। ब्राह्मणके पौरोहित्यसँ कम समय भेटैत छलन्हि।
छठम सर्गमे ब्राह्मण पुरोहित द्वारा अथर्ववेदके नहि मानबाक चरचा अछि।
सातम सर्गमे अग्निपल्लीमे अग्निहोत्रीय संस्कारक शिक्षा आ पश्चिमोत्तरीक ब्राह्मण द्वारा ओतए नहि जएबाक चरचा अछि।
आठम सर्गमे इरोत्सवमे रथदौड़, अशारोहण, मल्लयुद्ध, अस्त्रचालन, लक्ष्यभेद आ थलक्रण अनुकृष्याक चरचा अछि आ व्यासपल्लीक लोक द्वारा अनुकृष्या करबाक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे वास्तव करष भारत युद्धक कवि कहि रहल छलाह। भारत युद्धक बहुत पूर्व भरत, शीतसु, थकवी आ सृंजय आदि जनक आर्यावर्तमे शूर नामसँ सुमेधयाक ध्यायसूरक समृद्धिमे अपनाके गौरव देबाक हेतु सूर कहबाक वर्णन अछि।
नवम सर्गमे तन्तुवाय द्वारा स्त्री आ पुरुष वस्त्रमे तटीयता देल जएबाक कारण भेल अन्तरक चरचा अछि, पहिने ई अन्तर नहि छल। अग्नि आ याज्ञाक ब्राह्मणमे भेदक चरचा अछि।
दशम् सर्गमे शाशदेवक पूजा अनार्य द्वारा होएबाक आ अग्नि पुरोहित द्वारा एकर अनुद्भजताक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे अक्षर ज्ञानक प्रयोग आ आचार्य गालबक छात्रा आत्रिमे अंक ज्ञानक अव्यवस्थित थकि अन्य देखब वर्णित होएबाक गप कहल गेल अछि।
एगारहम सर्गमे गालब आत्रिमे दण्डनीतिक पर चरचा आरम्भ होएबाक बादो दक्षिण पाचालक सभासदक आग्रह पर एतद संबंधी चरचा होएबाक गप अछि। राजा शालाध्यात द्वारा राजपद पश्चिम पुरोहितके देबाक चरचा अछि।
बारहम सर्गमे भारत युद्धक बाद आयोग पश्चिक अमान्य भऽ बन्द भऽ जएबाक बात अछि। शाशदेवक शावदेवसँ एकाकारक चरचा सेहो अछि।
तेरहम सर्गमे कैव्यराजक अभिषेक उत्सवक चरचा अछि। दूवाक्त मंत्रमे
“ॐ मंत्रित्र आदया संतु मनोरथा। शत्रुणा बुद्धिनाशोऽस्तु आत्रिणामुदयस्तव” आ दीघायुभवि केर मेल शुक्ल यजुवेदक २२/२२ मंत्रसँ कए दूब अक्षत लए, अशेष लए ताल गच्छि यक्षि मे गएबाक वर्णन अछि। एकर अनुवाद सेहो मायानन्द जी देने छथि, जे आधुनिक अनुवादसँ पेश्त अछि:-
समस्त थशमे ब्राह्मण श्रद्धाक तेजक वर्चस्व स्थापित करए बला, सर्व, वाण चलएबामे निपुण, आरोग्य, महारथी, शूर, यजमान राज्य सभक जन्म होए, सर्व अधिकाधिक दूध दएबाली धेनु होए, शक्तिशाली वृषभ होए, तेजस्वी अश होए, रूपवती सधवी युवती होथि, विजयकामी वीरपुत्र होथि, जखन हम कामना करी पर्जन्य वर्षा देथि,

वनस्पतिक विकास होए, औषधि फलवती आ सभ पाणी योगक्षेमसँ पसन रहथि।राजन शतंजीवी होथि।
कैक्यराजक अभिषेकक लेल ई मंत्र हामे अक्त, अरबा, बीछल आ दूवादल लए आ मंत्र समाप्त पति राजा पर एकरा छिटबाक आ फेर दहीक मटकूरीसँ दही लए महाराजक भाल पर एहिसँ तिलक लगएबाक वर्णन अछि। एहि प्रकरणमे मायानन्द जी लिखैत छथि जे एहि मंत्र, जकरा मध्य लामे दूवाक्त मंत्र कहल जाइत अछि, रचना याजवल्क्य दारा वाजसनेयी संहिताक लेल कएल गेल। एहि मंत्र उपयोग मध्य लामे उपनयनक अवसर पर बटुकक लेल आ विवाहक अवसर पर वर-वधुकके आशीर्वचनक रूपमे प्रयुक्त होअए लागल।
पुरोहितक अन्त होइत अछि उपसंहारसँ। एतय वर्णित अछि, जे काशीक रस्ताक अनायगामिक आयीकरण भेल आ वाजपेय होम यज भेल। विशदेवाक पर चरचा अछि, शुनाशेप आख्यान आ भारत कथिक कहबाक परम्पराक प्रारम्भ आ मर्ग दारा आयमिक्ति पक्ष वितृष्णाक चर्चा सेहो अछि।
मायानन्दजी महाभारतक समस्याक समाधानमे सेहो पाश्चात्य विचारक लोकनिक अनुसरण करैत बुझना जाइत छथि। प्रोफेसर वेबर पहिल बेर एहि विवादातके लए कए आएल छलाह। ओ अपन विचार व्यक्त कएने छलाह जे ८८०० पदक जय संहिता छल आ पहिने युद पर्व(१८ पर्वमे चारि पर्व भीष्म, रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) मात्र छल। ओकर आधार ओ बनेने छलाह एकटा श्लोकके-
अष्टौश्लोक सहस्राणि..... अहं वेधि शुको वेत्ति सञ्जयो वेत्ति वा न वा
संजय, व्यास आ शुक तीनू गोटे ८८००-८८०० प्रत्येक कए भारतक श्लोक मात्र स्मरण कए सकल छलाह। माने भारत एतेक विशाल छल जे प्रत्येक गोटे सम्पूर्ण स्मरण नहि कए सकल छलाह आ ताहि दृष्टिसँ भारत कहियो २६४०० श्लोकसँ कम नहि छल, जकरा व्यास लिखने छलाह। जय संहिता भारत आ महाभारत दुनूके कहल जाइत छै। युद पर्व(१८ पर्वमे चारि पर्व भीष्म, रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) तेना ने परस्पर दोसर पर्व सभसँ जुडल अछि जे बिना पहिला पर्व पढ़ने अर्थलाक कोनो भाज नहि लगैत छै। इलियडक युद १० साल धरि चलल छल मुदा इलियड मात्र टॉयक घेरा धरि सीमित छल। मुदा महाभारत बहुत पहिने सँ १८ दिनुका युदक कारणसँ शुरु होइत अछि। भीष्म पर्व छठम पर्व अछि, रोण पर्व सातम, कर्ण पर्व आठम आ शल्य पर्व नवम। तकरा बाद ९ टा पर्व आर अछि।
विकएक तँ कैक बैसारीमे महाभारत केर पाठ सुनाओल जाइत छल ताहि दारे ई स्वाभाविक अछि जे पुरान पाठ सभ जे भए चुकल छल केर फेरसँ पुनःस्मरण बेर-बेर कएल जाइत छल। ताहिसँ ई अतिरिक्त कालब जे ई क्षेपक अछि, अनर्गल होएत। तहिना गीता सेहो पाश्चात्य विदान लोकनिक लेल क्षेपक अछि कारण ओ लोकनि भारतीय संस्कृति, साहित्य आ कलाक अनुभव विदेशी मानसिकतासँ करबाक कारण गलती करैत छथि। विदेशी विदान ई मानबामे कष्ट अनुभव करैत छथि जे महाभारत ओतेक पुरान भेलाक बादो ओतेक वृहत् अछि आ इलियड ओकर सोझा किछु नहि अछि। से एक गोट पदक वेबर दारा कएल गेल अशुद्ध व्याख्याक आधार पर जय संहिता केर संकल्पना आएल। मात्र भारत आ महाभारत केर रूपमे एहि महाकाव्यक विकासके बिना कोनो कारणसँ जय संहिता, भारत आ महाभारत रूपी तीन चरणमे प्रस्तुत कएल गेल। महाभारत केर सभसँ छोट रूपमे सेहो २४६०० सँ कम श्लोक नहि छल आ जय संहिता भारत आ महाभारतके समानार्थक रूपसँ कहल जाइत छल।
सीमान्त
ई गर्न मायानन्द बाबूक इतिहास बोधक अन्तिम कड़ी अछि। प्रागैतिहासिक "प्रथम शैलपुत्री च", ऋग्वेदक

कालीन “मंपुि”, उतरवैिदककालीन “पुरोिहत” केर बाद ई पुस्तक सूि-स्मृितकालीन अिछ, ई गंि छन्दीमे अिछ। आ ई सूि-स्मृितकालीन उपन्यास िमिथला पर आिशित अिछ। ई पोिि पारम्भ होइत अिछ मायानन्दजीक पस्तावनासँ जकर नाम एिह खण्डमे “पृष भूिम” अिछ। एतए मायानन्दजी रामायण-महाभारत केर काल गणनाक बाद इितहासकार लोकिनक एकमाि साक्ष्य शतपि बाह णक चचि किरैत िथि।

िमिथलाक पाचीनतम नाम िवदेह िल, जकर पिम वणिन शतपि बाह णमे आएल अिछ। सािग्मिनक पिकयाक िवस्तृत वणिन एिह गनि मे अिछ, से मायानन्द जी कहैत िथि।

ई गनि पिम आ िदतीय दू अध्यायमे अिछ आ अन्तमे उपसंहार अिछ। पिम अध्यायमे पिमसँ नवम नौ टा सि अिछ। िदतीय अध्यायमे पिमसँ अष म ई आठ टा सगि अिछ।

पिम अध्याय

पिम सि

एिहमे सृंजय दारा कएल जा रहल िमपिाितािप स्वर प िवकाटनक, पती-त्यागी होएबाक कारण िह मास िि िनरन्तर एकटा महावत्र केर पालन करबाक चरचा अिछ।

“िदतीय वर” केर सेहो चरचा अिछ।

िदतीय सि

राजा बहुलाश जनकक ज्येष पुि कराल जनकके राजवंशक कौिलक परम्पराक अनुसार िसंहासन भेटलिन्ह, तकर वणिन अिछ।

तृतीय सि

एतए पुरान आ नवक संघषि देिखबामे अबैत अिछ। वारणी एक ठाम कहैत िथि जे जखन पूज्य तात हुनकर िविधवत उपनयन करबओलिन्ह, बह चयि आििममे िविधवत पाचीन कालक अनुसार ििक्षाक िदक्षा देलिन्ह, तँ आब हमहूँ भरा कन्या बिन अपन वरपाि क िनवाचन स्वयं कए िववाह करए चाहैत ि।

चतुििसि

एतए कराल जनकक िवरद िवरोहक सुगबुगाहिटक चरचा अिछ। कृित जनक आ बहुलाश जनकक कालमे भेल न्यायपूणि आ पजािहतकारी कल्याणकारी कायिक चरचा भेल अिछ तँ संगिह सीरध्वज जनकक समयसँ भेल िमिथलाक राज्य-िवस्तारक चरचा सेहो अिछ। बहुलाश मरैत काल अपन पुि करालके आचायि वरेण्य अगामात्यखण्ड केर उपेक्षा-अवहेलना निह करबाक लेल कहने िलिथन्ह मुदा कालान्तरमे वैह कराल जनक अगामात्यक उपेक्षा-अवहेलना करए लगलाह। आचार्य वरेण्य-खण्ड िमिथलासँ पलायन कए गेलाह।

पंचम सि

पक्षापात, आशीविचन आ कुशल-क्षेमक औपचािरकताक वणिन अिछ आ सैिनिक चरचा सेहो गप-शपक कममे आएल अिछ। ईहो वणिन आएल अिछ जे वैशाली िवकिि िवन कौशलक अिीन िल आ भारत-युदमे ओ िमिथलाक अिीन िल। वन्य भूिमके कृिष-योग्य बनेबाक उपरान्त पाच बसन्त िि कर-मुक्त करबाक परम्पराके राजा कराल जनक दारा तोिि देबाक चरचा अिछ।

षष सि

पाचाल-जन दारा अंि कि वृिषणाक नायक वासुदेव कृषणके जय-काव्यक नायक मानल जएबाक चरचा अिछ। जय-

काव्य आ भारत-काव्यक पश्चिमक उत्पत्ति भोज मायानन्दजीक मोनसँ नञि हटलछि आ जय-काव्यमे मुख्य वैशम्पायन व्यास दारा बहुत रास श्लोक जोड़ि वृहतकाय भारत काव्य बनाओल जएबाक अन्यथा तथ्यक फेरसँ चरचा अछि। जयकाव्यक लेखक कृष्ण दैपायन व्यासके बताओल गेल अछि। आ एकर बेर-बेर चरचा कएल गेल अछि जेना कोनो विशेष तथ्य होअए।
फेर देवत्वक विकासपर सेहो चरचा अछि। सरस्वती ितरक अकस्मात् सूखब जएबाक सेहो चरचा अछि। सरस्वतीक मूर्त्तिपूजिनक पारम्भक आ मातृदेवीक सेहो चरचा भेल अछि।
सप्तम् सर्ग
सरस्वतीके मातृदेवी बनाकए कालान्तरमे सरस्वती पत्नीमा-पूजनक चरचा अछि। मिथिलामे पत्नीक नाम नञि लेबाक परम्पराक सेहो चरचा भेल अछि।
अष्टम् सर्ग
राजाक अत्याचार चरम पर पहुँचि गेल अछि। अपूवा दारा विवशतापूर्वक गार्हस्थ्य त्याग आ सर्न्यासिनि सेहो तिबाक चरचा भेल अछि।
नवम् सर्ग
सएसँ बेशी गाम-पमुख दारा सम्मेलन-उपवेशनक चरचा अछि।
पाच वसन्त िबि कर-मुक्त आ ताहुसँ वन्यजन आ शूर जनक सम्भावित पलायनक चरचा अछि। सीरध्वज जनकक पित् ितु-हरण राज्याभिषेकक बाद मात एकटा परम्परा रहि गेल, तकर चरचा अछि। मुदा कराल दारा अपन सगोत्रीय शोणभरक ितु नञि घुमेबाक चरचा अछि। कराल दारा बीचमे पिन पुरस्कृतके हटेबाक चरचा अछि। व्यवस्थाशास्त्रि नवोदित व्यवस्थासक बटुक कृताकि राजकुमारीक व्यवस्थाक लेल बजाओल जाइत अछि, संगमे राजकुमारीक सखी आचायकृितक पुत्री वारणीके सेहो बजाओल जाइत अछि। ओ अपन अनुज बटुकक संग जाइत ििथ आ कराल बलात् अपन कक बन्दि कए हुनकासँ गान्धर्व-विवाह कए लैत ििथ। पजा विरोह आ राजाक घोड़ा पर चढ़ि कए पलायनक संग पथम अध्यायक नवम आ अन्तिम सर्ग खतम भए जाइत अछि।
द्वितीय अध्याय
पथम सर्ग
यात ितरक चरचा अछि। वारणीके वरण सात्विंग्रह सभक संग अंग जनपद चलबाक लेल कहैत ििथ। आ संगे वरण ईहो कहैत ििथ जे अंग जनपदक आर्यीकरणक कार्य अखनो अपूरण अछि।
द्वितीय सर्ग
सात्विक संग ितुिर लोकिन चलैत िलाह, अपन शानक संग। सात्विक संग सामान्य जन सेहो जाइत िलाह।वरण आ वारणी हुनका सभक संग अंग ध्वस्था बदा भेलाह, एहि जनपदक राजिनी चम्पा कहल गेल अछि आ एकरा गंगाक उतरमे स्थित कहल गेल अछि।
तृतीय सर्ग
अंग केर्मे िनसँ सोझे अरबा नञि बनाओल जएबाक चरचा अछि, ओतए उसीन-सुखा कए ढेकीसँ बनाओल अरबाके चाउर कहल जएबाक आ बीहनके िन कहबाक वर्णन भेल अछि। पूर्वकालक िषी द्विज वैश्य आ अद्विज नवीन वैश्यक चरचा भेल अछि।

चतुर्थ सर्ग

आर्यीकरणक बेर-बेर चरचा पाणिनि आ वैदानक मायानन्दजी पर प्रभाव देखबैत अछि। आर्य आ रथक शब्द दुनू, पाणिनि लोकनि भारतमे अपन आ अज्ञात स्थानसँ लेल अनने छलाह। कोशल आ विदेहक पसारक, देवताक विकासक सम्पूर्ण इतिहास एतए देल गेल अछि। मिथिलाक दही-चूड़ाक सेहो चर्चा आएल अछि।

पञ्चम सर्ग

वनमे एकभुक्त आ रात्रिमे दुग्धपान मिथिलाक आ पाचाल दुनू ठाम छल। तखन कतेक आर्य आ स्थानीय लोकनिक बीच छोट-मोट जीवनशैलीक अन्तर- आ मायानन्दजी आर्यीकरण कहैत छथि ओकरा पाटब !

षष्ठ सर्ग

अंगक गृह आर्यग्राम जेका स्वच्छ कए नहि वरन् हस्त-हस्त कए होएबाक वर्णन अछि। हुनका सभ द्वारा छोट-छोट वस्त्र आ पशु चर्मपरिधानक बाक सेहो वर्णन अछि। वन्यजनक बीचमे नरबलि देबाक परम्पराक संकेत आ आर्यकाल्यात वन्यजनसँ भाषाक आदान-प्रदान सेहो मायानन्दजी पाणिनि प्रभावसँ ग्रहण कए लेने छथि।

क्रय-विक्रय खोलबाक जाहिसँ भविष्यमे नगरक विकास संभव होएत, तकर चर्चा अछि।

सप्तम सर्ग

उसना चाउरक अधिक सुपाच्य होएबाक आ ताहि द्वारे ओकर पथ्य देबाक गप कएल गेल अछि।लौह-सीताक लेल लौहकार, हरक लेल काष्ठकार, बर्तन-पात्रक लेल कुम्भकार इत्यादि शिल्पीक आवश्यकता आ ताहि लेल आवास-भूमि आ भोजनक सुविधा देबाक गप आएल अछि।

अष्टम सर्ग

कृषि उत्पादनक पश्चात् लोक अनक बदला सामग्री बदलेन कए सकैत छथि, वृषभ-गाड़ीसँ सामग्रीक संचरण, एक मास धरि चलएबला यजक व्यवस्था भूदेवगण द्वारा कएल जएबाक प्रसंग सेहो आएल अछि। भाषा-व्याकरण कममे ब्राह्मणग्रामक अपभ्रंश बाभनगाम आ वनग्रामक वनगाम भए गेल। भाषा शाखा कए घुरैत काल वारुणीपर तीरसँ आक्रमण भेल आ फेर वारुणीक मृत्यु भए गेल।

उपसंहार

दोसर वसन्त अबैत मिथिलामे गणतंत्रक स्वरूपक स्थापना स्थिर भए गेल। वैशाली आ मिथिलाक बीच परस्पर सम्वाद एक गणतान्त्रिक सूत्रमे जुड़बाक लेल होमए लागल। श्वेतग्राम स्थित राजधानीमे पूर्वी मिथिलाक सीमा-विस्तारक चरचा भेल। राजधानी श्वेतग्राम आ पूर्वी मिथिलाक श्वेतग्रामक बीच एकटा महावन छल। एकरा ब्राह्मणग्राम आ श्रीग्राम द्वारा स्वच्छ कए जड़िसँ हटाओल गेल।

भाषा विज्ञान प्रसंग - ऋग्वैदिक ऋचामे प्राकृतक किछु विशेष शब्द, ध्वनि, प्रत्यय आ वाक्य रचना भेटैत अछि। पाणिनी संस्कृतके मानक भाषा आ प्रादेशिक तत्त्वसँ मुक्त भाषाक रूप देने छलाह। कर्णाटकमे पानिके नीर आ उत्तर भारतमे जल कहल जाइत अछि। पानिक ई दुनू रूप संस्कृतमे भेटत। प्राकृतिक तत्त्वसँ मुक्त भाषा बनेबाक लेल पाणिनी कोनो केँ अवहेलना नहि कएने छलाह वरण सभ केँ शब्दकोष लए उच्चारणक भेदके खतम कएने छलाह। बहुत रास प्राकृत शब्द संस्कृतमे ध्वन्यात्मक संशोधन कए लेल गेल आ ताहिसँ बादमे ई धारणा भेल जे प्राकृतक शब्द सभ तद्भव छल। संस्कृतमे तद्भव ताहि कारणसँ नहि देखबामे अबैत अछि। तहिना अपभ्रंश आ प्राकृत भाषा सौंसे देशमे घुमए बलाक भाषा छल।

भारतमे देवतंिक थकास पाश्रा संबंिी िरणासँ जुिल अिछ। यावत थश अव्यक्त अिछ तँ अनिकारमय अिछ, अकास अिछ, व्यक्त भेलापर ओ जल बिन जाइत अिछ। अकास आ जल दुनू भारतीय थन्तनमे तत्त्व अिछ। मूथपूिजनक जे थिा मायानन्दजी थथत करैत िथ ओ सरलीकरण अिछ। भाषा-पसारक जे थिछ ओ सीिनमे देखबैत िथ सेहो अथ सरलीकरण अिछ।

िवण दारा परम्पराक अवहेिण साथत्यमे देखल गेल िल आ से महाभारतमे थकिु ठाम बेर-बेर देखबामे अबैत अिछ , से ताथ कारण कतेको पवक्षि केंपक कहल जाएब सम्भव नथ। वेदक पथशाखाके ओना देखलापर ई जात होएत जे थखबाक परम्पराक अिँत ई सम्भव नथ िल मुदा महाभारत अबैत-अबैत कटरता बढ़ल। महाभारतमे वणिन अिछ:

वेदथकथाणिँव वेदानाचैवदूषका।

वेदानालेखकिँव तेवै थरयगािमना॥

(वेदक थकेता, गलत-व्याख्या कएिहार आ लेखक, सभ नरकक पिपर गेिहार िथ।)

कराल पसंग : कराल जनकक कुकृत्यक वणिन अिशािसमे एना आएल अिछ:

(१.६ थनयाथकाथकेपिमाथकरणे षडोऽध्यायाइथरयजये अथषर वगित्याग) :

तथर दवृथरवशथेरयिातुरन्तोऽथराजा सदो थनश्रयथ- यि

दाण्डक्यो नाम भोजा कामाद् बाह णकन्यायमथमन्यमाना सबनिराष्टोथननाश करालि वैदेहा,...।

थकु पभामतीक जयमंगल भाष्य एथमे जोिँत अिछ जे कराल योगेशर तीिमे भीिं थथ देखैत काल एकटा सुन्दर बाह ण-सीके देखलक आ ओकरा अपन राज्य जबदस्ती लए गेल। ओ बाह ण ओकर राजािनी गेल आ काथ खीथ कए कहलक जे ई िरती थकएक नथ फटैत अिछ जतए एहन कुकमी राजा रहैत अिछ। िरती फाटल आ ओथमे कराल पथवार समेत िथ कए मथ गेल।

एकटा बाह ण सीक अपहरण करालक पतनक कारण िल ई चरचा अशघोषक बुदचथतमे सेहो आएल अिछ जेना कौथल्यक अिशािसमे आएल अिछ। मुदा दीपवंश कराल जनकक बाद ओकर पुि आ पौिक राजा होएबाक वणिन करैत अिछ। बाह ण गंि सभ थदेहके राजशाही आ बौद गनि सभ गणतंि (राजा सथथ दारा चुनल) कहैत अिछ आ मत थथनताक से कारण।

एथ पकारे मायानन्द थजीक ऐथहाथक यािा बहुत रास एहन तथ्य अनलक जे कोनो तरहे तकसँ पुष नथ भए सकल।

कृथ-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वकिर आिथत)

माि वंशीसँ सेहो मारल जाइत अिछ।
िट मािक लेल जाल- भौरी जालक पयोग होइत अिछ।
िछारखा- हािसँ उठा कए फेकल जाइत अिछ। एिहमे सूत आ लोहाक गोली पयोग होइत अिछ, २५-२५ गामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ िकलो िध पयोगमे आनल जाइत अिछ। अन्ता जाल िट होइत अिछ आ किरमे रािमे लगाओल जाइत अिछ।
कोठी जाल पैघ होइत अिछ आ एिहमे बासक पयोग होइत अिछ।
िसारी जाल- िदनमे मािि हरिक जएतैक से रािमे खुटी लगा कऽ रािमे मािि मारल जाइत िै।
चटी जाल- प्लािस्टकक, पैघ-िट दुनू, िदनमे पयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे। ५-१० िमनटमे उठाओल जाइत िै।
सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक िणिक करेन्ट जाल, सूतक बिका हाटा जाल होइत िै।
पैराशूटसँ िटकी माि उिछ जएतैक।
पैघ मिली बिका वंशीसँ, बिका चटी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अिछ।
पैघ िट दुनू माि बासक जंघासँ मारल जाइत िै। एकरा ४ हाि खिा नािरयल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइत िै।
बासक करचीक िपसँ सेहो माि मारल जाइत िै।
पटुआक सण्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कए सेहो माि मारल जाइत िै।
हाटा जाल िकलोमीटर िध पैघ होइत अिछ आ सूताक बनैत अिछ।
चाच कहिा बासक होइत अिछ।िर/ बदहाल घेरके मारल जाइत अिछ। पािके फुला कए डगरी लगाओल जाइत िै, चाच फहिासँ घेरल जाइत अिछ।
मािक पकार
डारा मिली (डेरका मिली), मूँहा मिली, पोठी, लता (िअा माि), गिइ, पलवा, टेगिा, िांघी, मागुि, चपिा, पैना, रेवा, गिही, उरनिा, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोरा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, िातल, भोइ, कती, भौकुिी, िालोन, रेहू, िरका, िलासकप, िालरकप, चाइना मागुर, कबइ, चाइना कबइ।
दरबा- िट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद
गिई- कारी
चोपिा- चाकर, कारी, मिान
पलबा- दुनू िदस काट, पीठपर सेहो काट, रंग- पीयर-उज्जर, मोिा सेहो होइत िै।
टेगिा- पैघ माि, एकरो तीन टा काट, मुँहपर मोिा।
िांघी- पातर, दू टा काट दुनू िदस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी
मँगुरी- मोट आ महग सेहो।एकरो दू टा काट, लाल आ हल्का कारी
पैना- सफेद रंगक, पीठपर काट
रेवा- सफेद, पौआ-आिा िकलोक
डढ़ी- पीठपर काटा, सफेद

उरनि- पीठपर काट, नीचा गामे झुकल, सफेद
भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद- खि(पीयर), ऊपरमे काटा, नाङ्गक लग काट (सभ माछिमे)
बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काट, पखना दुनू दिस (सभ माछिमे)
बामी- लम्बा, बालमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जका लम्बा, पीठपर काट, नाङ्गपर दू टा काट
बघार- छिट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीयर), काट- पीठपर एकटा, बगलमे दू टा, पुच्छी-चाकर, मुँह चापट, चकछिई- बेसी।
चेलबा- उज्जर, काट नहि होइत छै। चलैक लेल दुनू दिस पखना, माछिमे तेजगर।
कौअल- सफेद, मुँह नमगर।
गोरा- मोछि, दाढ़ी, काटा, आगामे टेढ़
साउल- लाल आ पीयर, नमगर, २-३-५ किलोक
भौरा-(गजाल), साउल, क्षतफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक, गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी
कलबौस- रंग हल्का कारी
अंदाजी माछि
कतल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर
सालोन- पालतू,३-४ किलोक,पोखरिमे पोसल जाइत अछि।
रोहु-पीयर, हल्का उज्जर, पीठपर काट
मिरका- हल्का लाल सफेद
सिल्वरकप- पालतू
चैना मागुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काट
चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहा-तहा काट
कबई- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काट
चेगा माछि- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबई जका ।
आब किछु दोसर जलजीव:-
सौस- पानिमे माछि खाइत अछि, आदमीके नोकसान नहि, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)
घड़ियाल- कुसेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ,दात- आँगुर जेका, रंग लाल, पुछिरी नमगर, ३ हाथ
बोछि- आदमीक रंग रुप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िके डुमा दैत छै
आ कृषि शब्दावली:--
जोछि बैल/ हर
ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइत छै।
लगना
पालो- कन्हापर
पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बछिके एने- उने (एम्हर-ओम्हर) नहि होमए दैत छै।
कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइत छै। समैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बासक) मे डोरी बान्हल जाइत छै।

ईशक नीचामे पेटार ईशके खुजए नञि दैत ि, ऊँच-नीच करए दैत ि।
हलमे पुटी, नीचामे दू-फीटक अगल फलली पुटीमे सेट कएल जाइत ि, माि उखाित ि।
परहत (लगना)- हरवाह एकरपर हाि रैत अि। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुटी पकिबला लगनामे ठोकल जाइत ि (मुिया)।
नाि- पालो-ईशमे बािहके जोिल जाइत ि, डोरी होइत ि ४-५ फीटक।
दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बािह कऽ बिदमे बािह कऽ हरवाहा चौकी दैत अि।
चौकी- (बास/ लकिीक) ६-७ फीटक - एकरपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैत अि। हरवाहाक हािमे एक टा झूर/ ििोली/ लाठी बिद हाकए लेल रहैत अि।
गेहूँक जोताई ३ इन्च गहरा कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अि।
मकइ लेल ४-५ इन्च गहराइ करए पित अि।
बीया- एक एकि (१०० डिसमल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मकइक बीया।
खाद- एकिमे २० कि. डी.ए.पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूिरया, ५ किलो ििंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अि।
मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माि चढ़ाओल जाइत अि। २ कतार २ फीट चौिाइसँ। एकिमे २ क्वंटल खाद देल जाइत अि। १०० किलो डी.ए.पी., ५० किलो यूिरया, २० किलो सािफक, १२० किलो पोटाश, १० किलो ििंक। पािन पटवन समयमे खाद दऽ कऽ माि चढ़बैत िियैक, फेर पािन पटबैत िियैक। पािन पटेलाक बाद यूिरया एक एकिमे एक क्वंटल देल जाइत अि।
आब तर-तरकारीक पकार :-
ििंिाया करैला- बि- हाइ बेक/ फ्लेन
िटकी करैला- हजिरया/ जुल्मी
सफेद करैला- पटिआ (नजली- मध्यम खुटक)
तारबूज-
नामिरी-स्नाइिष - भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ ििातफुटरा (हिरयर-उज्जर)
माइको- हल्का कारी
पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी
राजािनी- कारी रंगमे
महाराजा- पैघ िट कारी रंगमे
सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक
नाि- हल्का ििातफुटरा (उज्जर/ हिरयर)
गंगासागर- कुम्हर जेका उज्जर साफ
सोरैय्या- ििातफुटरा
खीरा
जुल्मी- िट

हाइब्रीड

माइको- नमगर/ हश्चयर/ पीअर

महाराजा- खीरा

खेतीबारी- हश्चयर रंगक, नमगर कम, पानिमे मोट बेशी आगा कम।

<u>श्वदापश्चाक श्वदेश्वया- श्वआ देसातर</u>

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक केसमे आगा अछि। भोजपुरीक भिखारी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखारी ठाकुर कलकत्तामे पवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर केसमे अपन कष्ट क वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे पवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेका पवासक घटना मिथिलामे नहि छल। पवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलाचल केर अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेका अछि, आ बोझिल अछि, भिखारी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण दिअ, केन्द्रीय पात्र्क पार कएलाते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मिल केन्द्रीय पात्रक पार कएलाते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुका राजा/ शक्तिशालीक रूपे जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि कममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक विभिन्न पकारक गीत सभ सोझामे आएल। एहिमे जे अधिकाश छल से रहए पेमी-पेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए पवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति बिआ-देसातर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपे अधिकाश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संगीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ पवास लेल पसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

ताहि आधारपर ई संकलित नाटिका पस्तुत अछि।

विद्यापतिक बिआ देसातर

दृश्य १

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि । मंचक दोसर छोरपर चोर लोकनि पाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने भिक्षुक बैसल छथि।

छाड़ी रागे (नेपालसँ पाप्त विद्यापति पदावली)-

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़िउसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।

सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौंधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्हार, गाम बड़ चोर।

हे पथिक! सिनके त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बरड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बचार।
कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर बचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साथि।
पुरख महत सब हमर सजाथि॥
ताहि दारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

बदापति कथ एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।
बदापति कथ ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

बदापति कथक पवेश होइत छैक। कोतवालक लग शुभ-छितीछिरी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ छितीछिरीक पकमे आणमि सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माछि बटैत छथि। गीतक अक्रम चालि पाती बदापति कथ गबैत छथि।
दृश्य २
जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, साकेताक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिके जएबाक आ केता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुर करैत छथि आ सभ पाछाक बाद बदापति मंचपर अबैत छथि अछि कहैत छथि आ अंकिारमे बलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अक्रम पाती बदापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अछि बिँचैत छथि।
मालवरागे (नेपालसँ पाप्त बदापति पदावली)-
बथि जुथि एहि तरक छिहथि, ठामे ठामे बस गाम।
एहि गाछि छिह बरड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।
हम एकसरि, बआ देसातर, नहि दुरजन नाम।
हम असगरि छी, बय परदेसमे छथि, कतहु दुजनिक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एछि लेह बसराम।
हे पथिक! एतय बछिम कर।
जत बेसाहब बकिु न महघ, सबे बाल एहि ठाम।
जे बकिु कीनब, बकिुओ महग नहि। सभ बकिु एतए भेटत।
सासु नहि घर, पर पथजन ननन्द सहजे भोथि।
घरमे सासु नहि छथि, पथजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।
एतहु पथिक बमुख जाएब तबे अनाइसि मोथि।
एतेक रहितो जे अहा बमुख भए जाएब तँ आब हमर सक नहि अछि।
भन बदापति सुन तछि जुवती जे पुर परक आस।

थदापश्च कहैत ि थि- हे युवती! सुनू जे अहा दोसराक आस पूरा करैत ि ी।

दृश्म ३

एश्व गीतमे थदापश्च नश्व ि थि। जुवतीक ननथ्द पथिकके दबाश्व रहल ि थि, से देश्व जुवतीके अपन थआ देसातर मोन पथि जाइत ि श्वह। ओ ननथ्द आ सखीके सम्बोथित कए गीत गबैत ि थि। गीतक अ ि सिखी कहैत ि थि, सभ पातीक बाद।

ि नि ीरागे (नेपालसँ पाप्त थदापश्च पदावली)-

परतह परदेस, परश्वक आस। थमुख न कश्वअ, अबस थ्वस बास।

परदेसमे श्चात्म दोसराक आस रहैत अथि। से ककरो थमुख नश्व करबाक चाही। अवश्म वास देबाक चाही।

एतश्व जाश्चअ सश्व थअतम-कि ।

हे सखी ! थयतमक लेल एतबी कि बुझू।

भल मन्द नन्दन हे मने अनुमाश्च। पथिकके न बोश्चअ टूटश्च बाश्च।

हे ननथ्द! मोनमे नीक-अ िलाहक अनुमान कऽ पथिकके टूटल गप नश्व बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। म ुिरहु वचने कश्वअ समािन।

चरण पखार , आसन थयौक आ म ुिर वचन कश्व सान्त्वना थयन्हु।

ए सश्व अनुश्चत एते दुर जाए। आओर कश्वअ जत अथिक ब िइ।

हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुश्चत से ओकर आर ब िाई कर ।

दृश्म ४

जुवती आ ननथ्द नगर आश्व ठौर ि ने ि थि। एकटा पथिक आश्व आ िय मँगैत ि थि तँ जुवती गबैत ि थि आ ननथ्द सभ पातीक बाद अ ि किहैत ि थि। बीचमे चाश्व पाती श्चना अ िक्रि नेपथ्मसँ अबैत अथि। फेर जुवती आगा गबैत ि थि आ ननथ्द अ ि बिजैत ि थि। अन्तमे अश्चतम दू पाती थदापश्च आश्व गबैत ि थि। दृश्मक अन्तमे ननथ्द कहैत ि थि जे हम जे ओश्व थ्वन पथिकके दबाश्व रहल ि लहुँ से अहाके नीक नश्व लागल रहए, मुदा आइ पथिकके आ िय थकएक नश्व देश्वयैक।

कोलाररागे (नेपालसँ पाप्त थदापश्च पदावली)-

हम एकसश्व, थअतम नश्व गाम। ते मोश्व तरतम देइते ठाम।

हम एकसश्व ि ी आ थयतम गाममे नश्व ि थि। ताश्व दारे राश्च श्चताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्म भऽ रहल अथि।

अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देश्वअ प िओश्चओ पास।

यथ्द क्यो लगमे रश्वतथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

ि मिह हे पथिक, कश्वअ हमे काह। बास नगर भश्च अनतह चाह।

हे पथिक क्मा कर आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पातर, साझक बेश्व। परदेस बश्चअ अनाइश्च हेश्व।

बीचमे पान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यके सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।
चल चल पथिक कहुअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह।
सात पच घर तहि सधि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।
बारह वषअवधि कए गेल। चारि वषतिहि गेला भेल।

घोर पयोरि जाअिअि भेद। जे करतब ता करह परिद।
भयाओन मेघ अछि, रतुका गप ि सोचि कए आणि कर ।

भनइ विदापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पीरीति।
विदापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ पीति अनैत अछि।
दृश्य ५
अहू दृश्यमे विदापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगा बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।
घनछीरागे (नेपालसँ पाप्त विदापति पदावली)-
उचित बसए मोर मनमि चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।
कामदेव रपी चोरक लेल हमर अवसि ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तहि गेला भेल।
बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बखतिकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अिए समाज।
सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाच घर तहि सधि देल। पिआ देसातर आँतर भेल।
ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पिओस वास जोएनसत भेल। िने िने अवयव सबे गेल।
पिसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ अिअरक साथि। पिउसि देअए फकिी बाथि।
लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पिसान फाटकि बन कए लेलहि।

मोरा मन हे खनश्च खन भाग। गमन गोपब कत मनमि जाग।

हमर मोन क्ण-क्ण भाग्म रहल अिछ। कामदेव जाग्म रहल िछि गमनके कतेक काल िछ्म नुकाएब।

दृश्म ६

एिह दृश्ममे सेहो, निह तँ ननिद िछि, निहये सासु आ निहये श्यदापश्च। एकटा अश्याध्ि अबैत िछि आश्क तखने मेघ लाध्ि दैत अिछ आ जुवती गबैत िछि।

िनिारागे (नेपालसँ पाप्त श्यदापश्च पदावली)-

अपना मिन्दर बैसश्च अिश्चहुँ, घर निह दोसर केवा।

अपन घरमे बैसल िलहुँ, घरमे क्मो दोसर निह िल,

तश्चखने पश्चआ पाहोन आएल बश्चसए लागल देवा।

तखने पिथक अश्याध्ि अएलाह आ बरखा लाध्ि देलक।

के जान श्क बोलश्च श्यसुन पिश्चआश्च वचनक भेल अवकासे।

की बजतीह ईष्यालु पिश्चान से निह जाश्च, बजबाक अवसर जे भेश्च गेलश्चह।

घोर अनिार, श्चरन्तर िारा श्चवसश्च रजनी भाने।

श्चनश्चमे राध्ि जेका होमए लागल।

किोने कहब हमे, के पश्चाअएत, जगत श्यश्चत पँचबाने।

हम ककरा कहब आ के पश्चायायत। कारण कामदेवक ख्याश्च तँ जगत भश्चमे अिछ।

दृश्म ७

मंचक एक श्चससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश श्चकलैत िश्चह आ मंचपर अन्हार होइत अिछ। फेर इजोत भेलापर ननिश्चक वर हुनका सासुर लए जाइत िश्चह। पिथक रस्तापर िछि दशक्गिणक मध्म आ दशक्गिणके इशारा करैत जुवती गीत गबैत िछि आ श्यदापश्च सभ पाश्चक बाद अििकिहैत िछि। अश्चतम दू पाश्चमे श्यदापश्च गीत आ अििदुनू बजैत िछि- श्यदापश्च अश्चतम दू पाश्च आ ओकर अििकैक बेर दोहराबैत िछि।

नगेन्रनाि गुप्त सम्पाश्चत पदावली-

सासु जरातुश्च भेली। ननश्चद अिश्च सेहो सासुर गेली।

सासु चश्चम बसलीह, ननिद सेहो सासुर गेलीह

तैसन न देश्चअ कोई। रयश्च जगाए सम्भासन होई।

क्मो निह सम्भाषणक लेल पयन्ति,

एिह पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ निह करए पुिारे।

एतुका एहन बेबहार, ककरो क्मो पुिारी निह करैत अिछ।

मोश्च श्यअतमका कहबा। हमे एकसश्च िश्च कत श्चन रहबा।

हमर श्यअतमके कहब, हम असगरे कतेक श्चन रहब।

पिथक, कहब मोर कन्ता। हम सश्च रमश्च न तेज रसमन्ता।

पथिक हुनका कहबथिन्ह, हमरा सन रमणीक रसक तेज कखन छिथ रहत।
भनइ विद्यापति गाबे। भाव-भाव विरहिणी पछिक बुझाबे।
विद्यापति गबैत छिथि, विरहिणी घूमि-घूमि कए पथिकके कहैत रहल छिथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छिथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती विस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छिथि। की वैह छिथि थिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

थिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

थिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुमिगणक समक अछि आ मैथिल विदेशिया लोकथाक वतमीन दुदशीक बीच ई महाकवि विद्यापतिक पक्ष ससम्मान अथति अछि।

रमेश नारायणक ''पारिक नाव''-विनोद बिहारी वमाक ''बलानक बोिनहार ओ पल्लवी (तीि अन्य कथा)''

मैथिली कवि संग्रह सभमे १.रमेश नारायणक ‘‘पारिक नाव’’ २. विनोद बिहारी वमाक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कवि)’’ ई दुनू कवि संग्रह अपन किछु खास विशेषताक कारण विशेष स्थान रखैत अछि। रमेश नारायणक ‘‘पारिक नाव’’ १९७२ ई. मे उपासना पकाशन, ९०, श्रीकृष्णानगर, पटना-१ सँ छपल। विनोद बिहारी वमाक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कवि)’’ १९९४ ए. मे मैथिली पत्रिभा. एल.एफ. १/३, युनिट-३, कोहाउसिङ कालोनी, भुवनेशर-७५१००१ सँ छपल।

रमेश नारायणक ‘‘पारिक नाव’’

रमेश नारायण अपन कवि-संग्रहक समपणि करै छथि ---अहिो पानिमे ऐना जका झलकैत/ अपना गामक ओहि छिल-कादोके,/ जाहिमे हमरे लेल/ एक गोट रक्तकमल/ जनमि कए फुलेबाक हमर आस/ अटकल अछि.... आ अपना विषयसँ कहै छथि- इएह, जे/ एहि संग्रहक कतेको कवि आकाशवाणीक पटना केन्द्रसँ पसारित अछि,/ तै आकाशवाणीक सौजन्यो सँ।

ऐ कवि संग्रहमे ई सभ कवि संकलित अछि:- १.ठेहियायल मोन घुमाओन बाट, २.काजरक रेख, ३.आँजुर भरि नोर, ३.काच बिान टुटैत सपना, ४.सइँतल सेज बिहुँलि बिान, ५.तेसर गेल बिदेस..., ६.काट कुसक छिहरि, ७.एक पोस्टकाडि सरोजिनी आ’ हम ८.चीरल पना जोलि पाती।

विनोद बिहारी वमाक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कवि)’’

विनोद बिहारी वमा अपन कवि-संग्रहक समपणि करै छथि:- बहु विदा विद् / पूज्य लाल भाइ,/ डा. बज किशोर वमा ‘‘मणिपि’’ क/ पुण्य स्मृतिमे/ दिपूवकि समर्पित- विनोद। ऐ संग्रहमे १४ टा कवि अछि जइमे सँ ३ टा कवि मिथिला मिहिर मे छपल छल आ ११ टा कवि वैदेही मे। ऐ कवि संग्रहमे ई सभ कवि संकलित अछि:- १. बलानक बोनिहार ओ पल्लवी, २. कुन्ती, कणि ओ परशुराम, ३.सुलोचनाक चिठसार, ४. साहेब, ५. बहिन-विसुन-राखी, ६.हम पान खेलहुँ, ७.फूलक कवि, ८.अन्तमुखी बसुन्धरा, ९. काशक फूल, १०. मालिक विकलाक, ११.जीवन-नाओ, १२.कापुरुष, १३.गोनौर-बाबू, १४.आकाश-फूल

दूवाक्त

यजुवेदक अध्याय २२ मं ि २२ के श्लोक पञ्चल राष्टभक्ति गीत होएबाक गौरव पाप्त ि। मुदा मैथिलीमे दूक्ष-अक्त ि श्लोक कऽ ऐ मं ि के दूवाक्त मं ि बना देल गेल। बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि. दूवाक्त नामसँ नवम वर्गक किताब ि पिने अछि। ऐ पोथीमे मैथिली आ मैथिलीके पि ि एबाक षडयं ि पूर्णरि पसँ दृष्य गोचर होइत अछि। अठारह पनामे मैथिलीक एकटा मिलाक स ि ायी बन्दोबस्तीबला जमीन्दारक जीवनी पढ़ाओल गेल अछि!! मैथिली साहित्यक संरक्षणपर डेढ़ पनाक पचास बरख पुरान लेख अछि जकर आइक तकनीकी युगमे कोनो महत्व नै ि, पवासी मैथिल समाज लेख पुरातनपं ि ी अछि आ अखुनका बच्चाके ई हास्यास्पद बुझेतै, पवासक अ ि, मैथिलक अ ि आ पवासक कारण सभ ि कि ि बदलि गेल अछि। तँ की ई बच्चा सभके गुलामीक पाठ पढ़ेबाक षडयं ि नै अछि? लोक नवम वर्गक हिन्दी, अंगेजी, बाङ्ला आ आन भाषाक पोथीसँ एकर तुलना करैए तँ स्थिति आर भयावह भऽ जाइए। अभिभावकसँ आगह जे जमीन्दारक जीवनी बच्चा सभके नै पढ़ाबि ि, पश-प ि सेट केनिहारसँ आगह जे ओ जमीन्दारक जीवनीबला अध्यायसँ पश नै पुछथि।

<u>मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी</u>

मैथिली

बाबूके अपन ऐ राजनैतिक जमीनक अनुभव ओइ दलमे रहितो नै भेल हेतिन्ह, जकरा कोनियो ओ रामक संग पटेने रहथि। दलमे एकटा पभावी नेता कहै जाइबला बाबूके कहियो थति लि वगक नेताक र पमे पस्तुत नै कएल गेल। मुदा राजनैतिक जमीनसँ बेशी जोतिोमि मास्टर बाबू दलसँ निकाला देल जाइते पतिपकी-दलक नजरिमे एना चढ़लाह जे हुनका पतिपकी-दल अपना दिससँ पदेशमे थति लि वगक गदीपर विराजमान कऽ देलक।

एकरा सुरजापुरीमे (भारत दिसुका किशनगंज आदि केिमे) एना लिखल/ बाजल जाएत:-

बाबूक अपना यहार राजनीतिक जमीनेर अहसास उस दलात रहले नी होबे। जहाक कोईखुन वहाय रामेर संगे सीचे िले। दलात एक कदावर नेता कहा जनवार बाबू कोईखुन थिवािे नेतार लखा पेश नी करील। लेकिन राजनीतिक से बेसी जोतिोित मास्टर बाबू दलार से निकलाते ही पतिपकी-दला नजरोत सुरंगदी चढ़ील कि वहाय पाटी अपनार बीती से पदेशोत थिािर नेतार गदीत विरजमान करील।

एकरा राजबंशी (नेपाल दिस सुरजापुरीके राजबंशी भाषा कहल जाइ ि, झापा, सरनामती, चकमकी, मेची, तािडुवा आदिमे- राजबंशी आ सुरजापुरीमे मामूली अन्तर ि) मे एना लिखल बाजल जाएत:-

बाबूर अपनार इर राजनीतिक जमीनेर ऐहसास उखान दल त रहते हुए भी नी होल, जइर कोिय उम्हा रामेर संगे थीले। दलात एक कदावर नेता कहवार बाबूर कोिय थििा नेतार लाखा पेश नी करे। माने राजनीतिक जमीनत भेल्ला जोतिोि मास्टर बाबू दल से निकलाले ही पतिपकी-दलार नजर एनंदांज चढ़ल कि अम्हा पाटीत अपनार तरफ से पदेशत िट जाता नेतारक गदी पर बठाइ दिल।

सुरजापुरी- भारतमे बिहारक किशनगंज आ पूर्णिया आदिमे गामे-गाम राजबंशी (महादलित) जाति दारा ई भाषा बाजल जाइत अछि। किशनगंजमे मुसलमानमे सामी जाइत खोटा आ सेवक जाति कुलिया कहल जाइत िथि। कुलिया जाइत सेहो सुरजापुरी भाषा बजैत िथि। राजबंशी आ जे आन जाइत सभ कुलियाक आसपास रहै िथि से सुरजापुरी बजैत िथि। ई भाषा मैथिली आ बाल्लाक मिण अछि। कियो कियो बंगालक कूच बिहारक बाहे बंगाली आ नेपालक राजबंशी भाषाके सेहो सुरजापुरी भाषा कहै िथि। किु गोटेक मत िछन्ह जे बाल्लादेशक लोकक भाषाक केिय भाषासँ मिणक पिणामस्वर प सुरजापुरी भाषा निकलल। पूर्णिया आ किशनगंजमे एके गाममे कुलिया आ राजबंशी लोकनि सुरजापुरी बजै िथि, संिल लोकनि संिली बजै िथि, बंजारा लोकनि बंजारा भाषा बजै िथि जखन कि शेष सभ गोटे मैथिली बजै िथि। जँ मिथिला राज्यमे ऐ केि सभके लेल जाए तँ हुनका सभके हुनकर भाषाक विकासक गारन्टी देबऽ पति। की मिथिला राज्य अध्ययानकमी सभक सोच एतऽ िधि पहुँचलनि अछि?

<u>बूच जीक कथताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उतर-आिुनिक, नारीवादी</u>

आ विखण्डनवाद दृष्टि सँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि सँ सेहो अध्ययन

जेठी करेह:

बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बखा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक चिन्ह बरड ऊपर छै तखन ओ थाकए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई पलय मचाओत से बुझाइत अछि।ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ। आब एतए एकरा संरचनावादी दृष्टि कोणसँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ अछि तँ आशा कर जे आन बेरमे ई नै उधिआइत होएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजके ई अपनामे समा लैत अछि।ओकर रेतक बढ़लासँ किसानक चिन्ता छै। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर ऐतिहासिक विश्लेषणपर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अछि दित। खतराक चिन्ह जे किसानक समएमे ऊँचगर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा गिरक मवादक चलते ओतेक ऊँच नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल किसानक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ विखण्डनवाद दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बखा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला इंजीनियरक करेहके बान्हबाक पयासक बुरबकीक रूप लेब आ किसानक करेह दारा बान्ह तोड़ि पलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं किसानक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक होएबापर पशचिन्ह लगेबाक पमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे ६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे गिरके रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-की फाएदा ने करत। ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पाठि लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अछि लिगाओत। किसानक अस्तित्व ओतए खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पाठि जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अछि लित, ओ गिरक खतराक निशानक ऊँच होमयबला गप बुझबे नै करत आ किसानक कविताक भावक तारतम्यमे रहत। मुदा विखण्डनवाद तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, गिर सेहो पछबवित्ति रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत।उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत।

स्वागत गान:

स्वागत गानक सामान्य पाठ- कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा स्थितिलाक उपटैत गिरतीक करुण कन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन होएत। भमर थयासल, फलक गाछि मौलायल तखन ई समारोही गोषीसँ की होएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी सेहो अएपति। कविताक नीचामे सूचना अछि- विदापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, गाम-बैदनाथपुर, पखंड-रोसड़ा, जिला-समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड स्थितिलासँ पछिइनक पारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक पतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक पति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिलल आधारित औदोगीकरण स्वपता छल आ स्वाक्षक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे समारोही गोषीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। ध्वनि स्वादान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उदेश्य अछि परोक रूपे बुझाएब वा अछि उत्पन्न करब कहैत छथि। ई स्वादान्त दैत अछि परोक अछि संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक स्वादान्त।आनन्दवर्धन

काव्यक आत्मा ध्वनिके मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अछि तँ परोक्ष रूपे अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अछि आ प्रतीक दूटा स्थिदान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ स्थिदान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से प्रत्यक्षरूपेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा व्याप्ति होएब सम्भव नै अछि। स्वागत गानक ध्वनि स्थिदान्तक विन्यासबसँ पाठ: शब्दप्रयोग स्वाव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि कथि कथ अछि आ प्रतीक दुनू सोझा अनै छथि। ध्वनि स्थिदान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा उदयनक गाम कविनयनक कवि बूच जी दार्शनिक नै, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझा अनै छथि- हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽलि छथि, आ मा ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै ? आगा ओ कहै छथि- काव्य पाठ कर मुदा कान्ह पर स्वाअ लाठी, एक हा रसक ोत दोसर मे खोर नाठी। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगा बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ देखलापर लागत जे कविक काजके ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगा भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जका संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कवि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई साम कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक स्वागत आ ऐशयगिान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलखिन्ह आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल।

बेटी बनलि पहाि:

बेटी बनलि पहाि कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेटक घैल बनल छथि। बेटी अएलीह तँ उनिखटोला चढ़ि कऽ मुदा हथि गरि त्याग कार माथ रहल छथिन्ह। पैतीस गाम सोना पुलिखिन्ह मुदा आब बियाह राक्षक खचा चाही आ बरियाती दस गाही अओताह; सौँसे बल्ब जरि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरि एको पाइ नै मँगलखिन्ह, रामो धनुि नै बजलाह। इतिहास तँ कृष्णक लव मैरेजक ल मुदा तैसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकनि अछि आ घरे-घर बूचखिाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। बेटी बनलि पहाि कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टि सँ पाठ: ई कविता काटर पाक विरोधि कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे (अखनो) काटर पाक कारण उनिखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटी बाप अपस्यात छथि।

कर ण गीत:

कर ण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक कर ण गीत सुनि थित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक सौयशिखरपर शान्त सागरक सुलभ जीत! जखना धनुि आलिंगन करै ी अनेको वकशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आ चलि गेलि!) प्रेमक मि तीत भऽ गेल। रजनीक रदन विगलित प्रभात! कर ण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ: कुसुमित काननक थित लोचन दारा देखब, ृगार सेज पर ज्वलित मसानक रौर रूपक आएब आ सुवर्णक शौयशिखर पर - शान्त सागरक सुलभ जीत के देखू। भाषाक अनभुआर प्रक्के कवि नीक जका उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताके विशेष बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताके रूपवादी दृष्टिकोणसँ ष बनबैत अछि।

गामे मोन पिए:

गामे मोन पड़िए कथ्यताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बड़िओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकतामे गामे मोन पड़ैत रहल अछि। करेहक पाथर पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पत्नी पतीके ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे बिसरहुतनी अपन भोला लेल तिूर अकोन ताकि रहल छथि! नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़िए कथ्यताक पाठ: पवासक कथ्यता अछि ई। बिसरहुतनी अपन भोला लेल तिूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला पवासमे छथि। अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि।

सोन दाइ:

सोन दाइ कथ्यताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा से किएक? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़ गाछ गेल छथि। तैयो किएए विशास छन्हि सोन दाइके? ऐ सभक उतर आगा जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ पवास काटि रहल छथि। आ जौँ-जौँ उमेर बढ़तै कखनिया छवि सोन दाइक घरमे वास हेतै।नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कथ्यताक पाठ: नारीक लेल वएह मर्यादा, किएए ने ओ कालेक मर्यादा होए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि दारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल पवास काटि रहल छथि?

अकाल:

अकाल कथ्यताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कथि नाडरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करैत छथि।अनावृष्टि सँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ित गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर विभीषणक घर सेहो नै बाचत कारण ओकर मुंडमाल डोरी-डोरीसँ बान्हल अछि। माए भरि-भरि पाज कऽ रिती पकड़ि रहल छथि। दशानन अपन बीसो आँखि ओनाथि माथ झुला रहल छथि। औचित्य मर्यादा: केमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यके साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, पबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फार्टिकल, काल, देश कुल, वस्तु, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिपाय, स्वभाव, सार-संगह, पतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीवादमे। कंपायमान अछि ई बहाण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कथ्यता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। अकाल कथ्यताक औचित्य मर्यादाक हिसाबसँ पाठ: ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि जनिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कथिक कथ्यताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाचत।

तोहर ठोर:

तोहर ठोर कथ्यताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुनरिक ठोर। सुनरि दारा बातक चून लगाएब आ कऽकि सन लाल बुन कपोल सजाएब। मुदा पेमक पुंगी कतए? भोरक लाली सुनरिक ठोर सन, बिनु सुनरि व्याकुल साझ जेका। बरूकि जे बनत सुनरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुख कम्मे अछि, तहिना सुनरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी। सकरी मिल महान बनत जे हम विशकमासँ विजान सीखब। आ ओइ मिलसँ बहार होएत माथुरि कुसियारक पाकल पोर सन सुनरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो तिन आ निषान बनि सुनरि हम अहाक लग आएब। मुदबा एतबा बादो शब्दसँ उदेश्य कहा पगट भेल। अलंकार मर्यादाक हिसाबसँ

तोहर ठोर कथ्यताक पाठ: भामह अलंकारके समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उदट सेहो अलंकारक सिद्धान्तके आगा बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थाश्रित आ आगा सादृश्य-विरोधि, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थप्रतीति आदिपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारके ७ भागमे बाटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने स्वभावगत अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। बातक चून लगाएब अप्रस्तुत, कऽकि सन लाल बुन कपोल, पानक ठोर आ सुनक्खक ठोर, भोरक लाली सुनक्खक ठोर सन, कुम्हारक पाकल पोर सन सुनक्खक ठोर ई सभ उपमा कथ्य द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा कतऽ छि प्रेमक पुंगी हूक? मे सादृश्य-विरोध अछि। अहा बिनु व्याकुल वाटक माझ मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। काव्यक भारतीय विचार: मोक्क लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुरा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़ि। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलनि। (देखू वाल्मीकिक रामायण)। कृष्ण भारतीय कर्मयोगीक प्रतीक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाटयशास्त्र लिखलनि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलनि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुरट ९अम शताब्दी एकरा आगा बढ़ेलनि। रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कथ्यताक पाठ: रस सिद्धान्त:भरत:- नाटकक प्रभावसँ रस उत्पन्न होइत अछि। नाटक किए लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।भट लोलट:- स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कथ्यके आ संगमे श्रोता-दर्शकके महत्व नै दै छथि। शौनक:- शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रके घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भटनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कथ्यक भाषाके ओ स्थान मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आश्रित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि। बाजि संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युके आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। लगौलह बातक पाछि चून। आ सजौलह कऽकि कपोलक खून। विभाव अछि आ ऐ कारणसँ देखि कऽ लहरल हमर करेज अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। स्फोट सिद्धांत: भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्णस्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्प्रेषणक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिना सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण होएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहैए। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्त समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहैए। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जका क्रमसँ अभिपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण होएबा धरि शब्द क्रमसँ

अ ि प्रणि हिोइए।साख्य, न्याय, वैशेषक, मीमासा आ वेदान्त ई सभ दशनि स्फोटके नै मानैत अछि। ऐ सभ दशनिक मानब अछि जे अकर आ ओकर ध्वन्यात्मक अ ि क्रि नीक जेका पूणा किरैत अछि। फासक जैक्स डेरीडाक खण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। स्फोट सिद्धातक आ िरिपर तोहर ठोर कथताक पाठ: आब उदयनक कथयनक रितीपर रहबाक अ ितो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तके नै मानब कथक कथताके नै अरघै िअछि। मने मे रहल मनक सब बात  कह ओ अलभ्य थात चोर सँ सुनबक ठोरक तुलना कऽ दै िछि।

उदयनक गामक कथ बूच कहै िछि भऽ रहल वणा- वणविशेष, शब्द सँ पगटल नह उदयेश्य; एतए शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अ िक्रि संपेषण कथ दारा तोहर ठोर आ ऐ संगहक आन कथता सभमे जाइ तरहे भेल अछि, से संसारक सभसँ लयात्मक आ म ुिर भाषा मैथिली मे (यहूदी मेनुहनक शब्दमे) थदापसाक बादक सभसँ लयात्मक कथक रपमे बूचजी के पस्तुत करैत अछि आ मैथिली कथताके ऐ रपमे फेरसँ पसभाषत करैत अछि।

<u>स्व. ि वैदना ि थ ि “या ि” (१९११-१९९८)</u>

स्व. ि वैदनाि श्रि ‘‘यािी’’ केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलिन्ह जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अिछ। यािी जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेलाह आ संस्कृतमे ‘‘सािहत्य आचार्य’’ क उपािध पाप्त केलिन्ह। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलिनआ सिान गेलाह पाली आ बुद िभक्षि अध्ययनक लेल। ओतए ओ बौद िभक्षि दीिक्षत भऽ गेलाह आ हुनकर नाम पिलिन्ह -नागाजुिन। मुदा बादमे पुना गाममे यजोपवीत कऽ बाह्मण िभक्षि घुरलाह।
यािीजी माक्सिवादसँ पभािवत िलाह, १९२९ ई. क अन्तम मासमेमे मैिथली भाषामे पद िलखब शुर कएलिन्ह। १९३५ ई.सँ िहन्दीमे सेहो िलखए लगलाह। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल साकृत्यायनक संग ओ िकसान आन्दोलनमे संलग्न रहलाह आ १९३९ सँ १९४१ िध ऐ कममे िवभन जेलक यािा कएलिन्ह। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गािीक मृत्युक बाद िलखल गेल िल, पितबिित कऽ देल गेल। भारत-चीन युदमे कम्युिनस्ट पाटी दारा चीनके देल समिनिक बाद कम्युिनस्ट पाटीसँ मतभेद भेलिन्ह। जे.पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपात्कालमे िहनका जेलमे ठूिस देल गेल। यािीजी िहन्दीमे बाल सािहत्य सेहो िलखलिन्ह। िहन्दी आ मैिथलीक अितिरक्त बाग्ला आ संस्कृतमे सेहो िहनकर लेखन आएल। मैिथलीक दोसर सािहत्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यािीजीके हुनकर किवता संगह ‘‘पिहीन नग्न गाि’’पर भेटलिन्ह। १९९४ ई.मे ओ सािहत्य अकादमीक फेलो -िहन्दी आ मैिथली किवक रपमे- भेलाह।
यािीजी जखन २० वषिक िलाह तखन १२ वषिक कान्यासँ िहनकर िववाह भेल। िहनकर िपता गोकुल िमि अपन समाजमे अिशिक्षतक गनतीमे रहिथ आ चिरहीन िलाह। यािीजीक बच्चाक स्मृितमे िन्ह जे हुनकर िपता कोना हुनकर अस्वस्थ आ ओिाओन िएल मायपर कुरहिथ लऽ मारबाक लेल उठल िलाह, जखन ओ बेचारी हुनकासँ कुमागिािबाक गुहािर कऽ रहल िलीह। यािीजी मा िह वषिक िलाह जखन हुनकर माए हुनका िोिड़ पयाण कऽ गेलीह। यािीजीके अपन िपताक ओ िपि सेहो रिह-रिह सतबैत रहलिन्ह जइमे हुनकासँ मातृवत पेम करएवाली हुनकर िविवा काकीक, हुनकर िपताक अवैि सन्तानक गभिपातमे, लगभग मृत्यु भऽ गेल िलिन्ह। के एहन पाठक होएत जे यािीजीक िहन्दीमे िलखल ‘‘रितनाि की चाची’’ पढ़बाक काल बेर-बेर नै कानल होएत। िपता-पुिक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुि अपन बाल-पतीके िपता लग िोिड़ वाराणसी पयाण कए गेलाह।
कमिक फल भोगिु बूढ़ बाप
हम टा संतित, से हुनक पाप
ई जािन हैिन्ह जनु मनस्ताप
अनको िबसरक िीक हमर नाम
मा िमिथले, ई अंितम पणाम! (काशी/ नवंबर १९३६)
काशीसँ िलंका पयाण, ‘‘कमिक फल भोगिु बूढ़ बाप’’ ई किह यािीजी अपन िपताक पित सभ उदगार बाहर कऽ दैत िथि। १९४१ ई. मे यािीजी अपन पती, अपरािजता, लग आिब गेलिथ। १९४१ ई. मे यािीजी दू टा मैिथली किवता िलखलिन्ह- ‘‘बूढ़ वर’’ आ ‘‘िवलाप’’ आ एकरा पाम्फलेट रपमे िपबाए टेनक यािी लोकिनके बेचलिन्ह। जीिवकाक तािकमे सौँसे भारत दुनू पाणी घुमलाह। पतीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुिम कऽ आबिथ। आ फेर आएल १९४९ ई., अपना संग लेने यािीजीक पिहल मैिथली किवता-संगह

“यात्री”। १९५२ ई. धरि पती संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहए लगलीह। यात्रीजी बीच- बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीके छह टा सन्तान भेलन्हि, आ सभक भार पती अपना कान्हपर लेने रहलीह। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत रहथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहैत छलाह। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छलाह आ कम्युनिस्ट पाटीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अन्तमे ओना यात्रीजी अपनाके ओइ छीना-छीनीमे गेल सभाक कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमजेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर.एस.एस. क कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भेट भेलन्हि आ जे.पी.क सम्पूर्णक्रान्तिक विरोध सेहो जेलसँ बाहर अएलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैदनाथ मिश्र "यात्री" आ हिन्दीमे ‘‘नागार्जुन’’ क नामसँ रचना लिखलन्हि। ‘‘पृथ्वी ते पात्र’’ १९५४ ई. मे ‘‘वैदेही’’मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखैत छथि-

‘‘आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान आ भूमि परिवारके देखार कए दैत छैक। से कालिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटे पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अनसँ कतउ नबान भेलइए’’?

यात्री एकटा कवि छथि? की यात्री एकटा कवि छथि? ओ मुख्यता हिन्दीक लेखक रहथि, मैथिलीमे ओ हिन्दीक दशमांशो नै लिखलन्हि। जे लिखबो केलन्हि तइमे सँ बेशी स्वयं द्वारा हिन्दीसँ अनूदित। मैथिली आ मिथिला केर शब्दावली आ संस्कृति हिन्दीक लोकके अबूझ आ तेँ रुचिगर लगलै मुदा तइमे सेहो ढेर रास कमी रहै जेना एकटा उदाहरण यात्री समगसँ- । यात्री समग-पृ.२२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहा जे एको दिनक खाद्यान्न जाइ, कता बना, अषाढ़ बदि तृतीयाक तिथिपर पड़ल। एहेन बेमारी आनो मैथिली-हिन्दी लेखकमे छन्हि। ई ऐतिहासिक स्थापित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठ, मे) वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा के ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाके भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाके विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि। मिथिला केर शब्दावली आ संस्कृतिक- जे हिन्दीक लोकके अबूझ आ तेँ रुचिगर लगै छै- तथ्यमे ई मैथिली-हिन्दी लेखक सभ अपन अज्ञानतासँ ढेर रास गलत तथ्य परसि रहल छथि, साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोसिया रहल छथि (मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समए मे रहबे नै करथि)! यात्री समगमे बलचनमा नै लेल गेल कारण ओ हिन्दीक कृति अछि, ओकर मैथिली अनुवाद सेहो भए अछि लगैए जेना अदहा अनुवाद केलाक बाद मैथिली लेल हुनका लग समयाभाव भऽ गेल होइन्ह। यात्री समगमे नवतुरिया लेल गेल, ओहो मूल हिन्दी अछि, किए मूल मैथिली कहि कऽ लेल गेल तकर जबाब सम्पादक देताह। मैथिलीमे प्रूफ रीडरके सम्पादक कहेबाक सख छन्हि आ लोक व्यवसायिकक रचनाक विरुद्ध अपन सम्पादकत्वमे करबा रहल छथि। एकटा दोसर उदाहरणमे पी.सी.रायचौधरीक दरभंगा जिला गजेटियरक तेसर अध्यायक

चाश्वटा उपशीषक्रिक अंगेजी रचनाके मोहन भारदाज अपन सम्पादकत्वमे रमानाि झा रचनावलीमे -श्कनको कहलासँ सत्प्र माश्व- रमानाि झाक रचना माश्व घोश्चया देलश्वह, जखन की श्वश्वत आ वैयाकरश्चाक श्वालमक आिरपर ओ रचना पी.सी.रायचौिरीक अश्वि। यािी स्वयं कहै िश्वि जे ओ मैश्विली बलचनमा पश्वने श्वखलश्वह आ तकर श्वन्दीमे अनुवाद केलश्वह। मुदा श्वन्दी बलचनमामे ओ ई नै श्वखै िश्वि आ ओकरा श्वन्दीक पश्वल आंचश्वक उपन्यास कहै िश्वि। ई बेमारी आइयो मैश्विलीक लेखकके गरोसने अश्वि आ यािी जीक ऐ मे सायास-अनायास योगदान दुखदायी अश्वि।

राजकमल यािीके अमर-सुमन सन पुरान ढराक कश्व कहै िश्वि, पाया यािीक िन्दक पश्व सजगतासँ राजकमलके ई भम भेल िलश्वह।

रामश्वलास शमा आ यािीजीक मैश्विली बोली अश्वि आश्व भाषा, ऐ श्वषयक सम्पादक भाषा श्वजानक दृश्व एँ कोनो खास महत्व नै ि। रामश्वलास शमा बहुत पैघ साम्यवादी श्वन्तक रहश्वि आ हुनकर कश्वता, आलेख सँ बेसी पभावी हुनकर कएकखण्डक भारतक इश्वहास श्ववेचन अश्वि.। मैश्विलीके भाषाक रपमे सिाश्वत करबामे सुभर झा, रामावतार यादव, योगेन्र यादव, सुनील कुमार झा आश्व भाषाशास्त्री काज केने िश्वि, रामश्वलास शमा आ यािीजीक सम्वाद गपाषक माि अश्वि।

चतुरानन श्वि आ जगदीश पसाद मंडल कम्यूश्वस्ट आन्दोलनसँ जुिल िश्वि, पायोश्वक रपमे, पाटी स्तरपर, मुदा श्वनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उतर हमरा ई कहबामे कनेको कष नै होइत अश्वि जे जइ रपमे यािी आ िमकेतु माक्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासके ठाढ़ करै िश्वि तकर बेगरता एश्व दुनू उपन्यासकारके नै बुझना जाइत िश्वह। माक्सवादक असल अिश्वनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पाटीक नाम वा श्वचारिाराक चचानै मुदा जे असल डायलेश्वटकल मैटेश्वयश्वलजम िक तकर पश्वचान, श्वनगीक महत्वपर श्वशास, दन्दात्मक पदश्वक पयोग आ ई तखने सम्भव होइत अश्वि जखन लेखक दास कैश्वटल सश्वत माक्सवादक गहन अध्ययन करत आ पायोश्वक माक्सवादपर कताक दशक चलत।

आ अन्तमे यािीजीक संस्कृत पद:-

वासन्ती कनकपभा पगुश्वाता

पीतारणो पल्लवै

हेमाम्भोजश्वलासश्वभमरता

दूरे श्वरेफाा स्ता

यैशसण्डलकेश्वकानन किा

श्वसमश्वता भूतले

ियाश्वभमतारतम्यतरलाा

तेऽमी "श्वनार" रुमाा॥

-बसंतक स्वश्वािम आभा श्वगुश्वात भऽ गेल अश्वि पीयर-लाल कोपिसँ। स्वणकिलक भममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अश्वि। नन्दनवनक श्वहारके जे पृथ्वीपर श्वसरा दैत अश्वि, िह श्वलश्वल घटैत-बढ़ैत जकर डोलब अश्वि चंचल आ तरल। ओइ श्वनारके हम देखने िि अश्वग भेल ठाढ़।

<u>जगदीश पसाद मण्डल</u>

१९४२-४३ क बंगालक अकालक थ्वषयमे अमत्यसिन श्चखै ि थ्वि जे एश्च अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमत्यक्रि एकोटा सर-सम्बर्न ीक मृत्यु ओश्चमे नश्च भेल। तश्चना थ्वथ्विलाक १९६७ ई.क अकालमे भारतक प िनर्मा िके देखाओल गेलश्चह जे कोना मुसहर लोकश्चा श्चसाढ़ खा कऽ अकालसँ लथ्वि रहल ि थ्वि, मुदा एश्चपर क ि श्चखल गेल २००९ ई.मे। २००९ ई. मे जगदीश पसाद मंडलजी श्चसाढ़पर मैथ्विलीमे क ि श्चखलश्चह। आ एश्च थ्वलम्बक कारण सेहो स्पष अथ्वि। मैथ्विली साश्चत्यमे जे एकभगाह पवृश्चा रहल अथ्वि, ताश्च कारणसँ अमत्य सिेन जेका हमरो साश्चत्यकार सभ ओश्च महाथ्वभीश्वकासँ ओतेक पभाथ्वत नश्च भेल होएताह। आ एतए जगदीश पसाद मंडल जीक क ि मैथ्विली क ि ािराक या ि के एकभगाह होएबासँ बचा लैत अथ्वि। एश्च संगहक सभटा क ि उत्कृष अथ्वि, श्चक्त स ि ानक पूश्चा क िरैत अथ्वि आ मैथ्विली साश्चत्यक पुनजागरणक पमाण उपलर्व करबैत अथ्वि।

जगदीश पसाद मण्डल श्चाल्मी ि थ्वि, कथ्यके तेना समेश्च लैत ि थ्वि जे पाठक श्चम्मत रश्च जाइत अथ्वि। मुदा श्चनका दारा कथ्यके (क ि, उपन्यास, नाटक, पेरक-क ि सभमे) उदेश्यपूण ब िनेबाक आगह आ क्मता श्चनका मैथ्विली साश्चत्यमे ओश्च स ि ानपर स िथ्वत करैत अथ्वि, जतएसँ मैथ्विली साश्चत्यक इश्चहास ‘‘जगदीश पसाद मण्डलसँ पूर्व ‘’ आ ‘‘जगदीश पसाद मण्डलसँ’’ एश्च दू खण्डमे पाश्चत होएत। समाजक सभ वग श्चनकर कथ्यमे भेटैत अथ्वि आ से आलंकाश्चक र पमे नश्च वरन् अनायास, जे मैथ्विली साश्चत्य लेल एकटा श्चलकोर अएबाक समान अथ्वि। श्चनकर कथ्यमे कतहु अभाव-भाषण नश्च भेटत, सभ वगक्रि लोकक जीवन शैलीक पश्चा जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखैत ि थ्वि से अदुत। श्चनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक थ्वर द पारम्पश्चक आजीथ्वकाक गौरव मश्चमामंश्चत भेटैत अथ्वि, आ से पभावकारी होइत अथ्वि श्चनकर कथ्य आ कमक्रि पश्चा समान दृथ्व कोणक कारणसँ आ से अथ्वि श्चनकर व्यश्चक्तगत आ सामाश्चक जीवनक ि ष ताक कारणसँ। जे सोचैत ि ी, जे करैत ि ी सएह श्चखैत ि ी- ताश्च कारणसँ। या ि ी आ ि ूमिकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ ि ूमिकेतु सन क ि-श्चाल्मीक अ ि त मैथ्विली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथ्विली भाषाक आरोह-अवरोह थ्वथ्विलाक बाहरक लोकके सेहो आकश्वत करैत रहल आ ओही भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृश्चा-भाषासँ देखाओल जगदीशजीक सरोकारी साश्चत्य थ्वथ्विलाक सामाश्चक के ि टा मे नश्च वरन् आश्विक्रि के िमे सेहो काश्चा आनत। थ्वदेह मे श्चनकर पाचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ दू दजनसँ बेशी क ि, नेना-भुटका-श्चकशोर लेल सएसँ ऊपर पेरक क ि ई-पकाश्चात भऽ थ्वश भश्चमे पसरल मैथ्विली भाषीके दलमश्चत करैत मैथ्विली साश्चत्यक एकटा श्चक्त स ि ानक पूश्चा क िऽ देने अथ्वि।

<u>पेमशंकर श्चांह</u>

मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी - पेमशंकर सिंहजीक एहि आबन्-पबन्-समालोचना संगहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक विधान ध्येय-अध्येय पक्षपर चर्चा भेल अछि। अध्येय पक्ष अबैत अछि एहि दारे जे राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि।

मैथिली साहित्यक पुरान सन्दर्भमे मैथिली भाषा आ साहित्यमे वर्णित अछि। लोकगाथा मे मध्यापकि लोकगाथाक केर्मे अवदानके रेखांकित करैत लोकगाथाक चर्चा भेल अछि । लोकनाटय मे मैथिली लोकनाटयक विस्तृत उल्लेख अछि। बीसम शताब्दी- स्वर्णयुगमे मैथिली साहित्यक सए बखक्कि सवेक्षण अछि। पारंपरिक नाटक मे मैथिलीक आ मैथिलीमे अनूदित पारम्परिक नाटकक चर्चा अछि।सामाजिक विवर्तक्कि जीवन झा मैथिली नाटय साहित्यमे हुनका दारा आनल नूतन कथ्य-शिल्पके रेखांकित करैत अछि। हरिमोहन झाक परवती रचनाकारपर पभाव हरिमोहन झा पर समीक्षा अछि। मैथिली आन्दोलनक सजग पहरी जयकान्त मिश्रक अवदानक आंकलित अछि। संस्मरण साहित्य मे मध्यापकि हुनकासँ भेट भेल छल क सन्दर्भमे संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि। अमरक एकाकी: सामाजिक यथार्थ मे अमरजीक एहि विधा सभक तँ मायानन्दक रेखाकयो शिल्पमु मे मायानन्द मिश्रक एहि विधाक सवेक्षण अछि। चेतना समितिक ओ नाटयमंच मे चेतना समितिक दारा कएल रचनात्मक कार्यक्कि विवरण अछि।

एहि सभ आलेखमे सत्यक आ कलाक कार्यक्कि सौदयीकृत अवलोकन, संस्था सभक निर्माण वा वर्तमानमे संपूर्ण समुदायक भिन्न-भिन्न-पंक्ति भेद रहित आर्थिक आ सामाजिक स्थितिपर आंकलित सुधारक आवश्यकता, महिला-लेखन आ बाल-साहित्यक स्तर-स्थितिपर चर्चा, यथासंभव मेथोडोलोजीक पालन करबाक पयास, मूल्याकनमे ककरो पहिने पूर्वाग्रह वा घृणा नहि राखब- ई सभटा समीक्षक आवश्यक तत्वक ध्यान राखल गेल अछि। एक पाक्षिक वक्तव्य कतहु नहि भेटत, पूर्ण विवेचन भेटत।

<u>विद्यापति सरहपाद आ विद्यापति काव्य</u>

राधाकृष्ण चौरिसीजीक पोर्टिकमे डिजाइनमे हम जखन बाद सरहपादक फोटो देलौं तँ ओकर नीचामे लिखल भोटियाती लिपि, जे चीनी लिपिसँ एकदमे फराक अछि आ सिक्किमक लेपचा आ लिम्बू (सुब्बाभाषा) सँ लग, लिपिक अनायास ध्यान आकृष्ट भेल। सिक्किमक राजा चोग्याल बौद्ध छलाह, ओ सभ आ हुनकर वंशज सभ सिक्किमी कहल जाइ छथि, जेना डेम्जोगपा, ओ सभ भुटिया भाषा बजै छथि, मुदा जखन भूटान तिब्बत आदिसँ राजा लग भुटिया भाषी सभ एलाह तँ दुनूमे अन्तर देखाबए लेल सिक्किमी आ भुटिया ई दू भेद भेल। मोटा-मोटी सिक्किमक लोकसँ गप करब तँ ओ भोटियाती आदि सभ भाषा जे नेपालीक अतिरिक्त अछि, के भुटिया कहि दै छथि।

गंगटोकमे भरत सुब्बा कहै छथि जे ओ शुद्ध नेपाली छथि आ सुब्बाभाषा (लिम्बू) लिपि छी, अपन दादाके ओ पढ़ैत देखने छथि मुदा हुनका ई भाषा नै अबै छन्हि। लेपचाक मुदा भाषा आ लिपि दुनू अलग अछि।

दिनेश खरका नेपाली बाह्मण छथि, ओ कहै छथि जे सिक्किममे नेपाली पढ़ू, भुटिया पढ़ू वा लेपचा पढ़ू, कोनो रोक नै छै। लेपचा एतुका आदिवासी छथि। भुटिया पढ़लासँ पर्यटन विभागमे नोकरी भेटबामे आसानी होइ छै। ओ कहै छथि जे नेपालक नेपाली आ एतुका नेपालीमे सेहो अन्तर छै। लधिका-लधिकी हम सभ कहै छी मुदा नेपालमे लधिकाके बाबू आ लधिकीके नानी कहल जाइत अछि। कान्छा-कान्छी घरक सभसँ छोट लधिका-लधिकीके (बाबू-नानीके) कहल जाइत अछि। उरगेन भुटियाक माता नेपाली छथिन्ह से हुनका भुटिया नीक जका नै अबै छन्हि, ओ सिक्किममे नै रहै छथि, दार्जिलिंगमे रहै छथि जे पश्चिम बंगालमे छै, से ओतुका लोकक व्यवस्था बाङ्ला आ नेपालीक अतिरिक्त दोसर भाषाक विषयमे अनुदार अछि, बिहारे सभ जेका जकर लोकक व्यवस्था हिन्दीक अतिरिक्त दोसर भाषाक प्रति असहनशील अछि, से भुटिया भाषा एतए खतमे बुझू। सिक्किम मुदा ऐ मामलामे उदार अछि।

पीछिंग पहिने हमरा कहै छथि जे ओ भुटिया (जकरा ओ भोटियाती कहै छथि) बजै छथि, फेर उत्तर सिक्किमक लाचुंगक रस्तामे खेनाइ खाइले एकठाम ओ रकै छथि, मखौला कहै छथि जे ओ भोटियाती छथि। हुनका लग देहरादूनसँ एकटा लामा आएल छथिन्ह जे हमरा भोटियाती लिपि सिखबै छथि। लाचुंगक बगलमे छै लाचेन। आब छिरिंग याकके देखिक कऽ असल भेद खोलै छथि। ओ कहै छथि जे भेपालकके डोगपा कहल जाइ छै। लाचुंगक जे लोक अछि से लाचुंगपा उपाधि राखै छथि आ ओ बगलक लाचेनक छथि आ ते हुनकर नाम छन्हि छिरिंग लाचेनपा। सभ लाचुंगपा डोगपा नै छथि मुदा बेसी डोगपा लाचुंगपा उपाधिबला छथि। डेगजोगपा लोकक्षा गंगटोकमे रहै छथि, व्यापार करै छथि। टोक माने ऊँचपर, जेना एकटा जगह छै गणेश टोक। ओ कहै छथि जे भुटिया भाषासँ लाचेनपा आ लाचुंगपाक भाषा अलग होइत अछि। ओ बौद्ध छथि। लाचुंगपा आ लाचेनपा भाषामे शॉर्टकिट/ लॉन्गकटक अन्तर अछि। लाचुंगसँ आगा जीरो छिन्न सकि छै जतए गाछ-बृच्छ खतम भऽ जाइ छै आ ऑक्सीजनक कमी भऽ जाइ छै, मुदा एतए मई- आरम्भक जून मास छिन्न बरफ देखबामे आओत। रस्तामे आ मोनेस्टरी लग सभ ठाम भोटियाती भाषामे मंत्र लिखल “पेयर हील” देखबामे आएत। मोनेस्टरी जेबा काल एकटा बाल भिक्षु पेयर हील घुमेबासँ मना करै छथि आ कहै छथि जे घुरबा काल एकरा घुमाएल जाइ छै आ सेहो घड़ीक सुइयाक दिशामे। रस्ता सभमे १०८ टा झण्डामे भोटियाती भाषामे मंत्र लिखलभेटत। जँ ई सभटा उज्जर रंगक अछि तँ कोनो मृतकक स्मृतिमे हुनकर परिजन लगेने छथि आ जँ ई सभ विभिन्न रंगक अछि तँ बुझू जे गह शान्ति लेल ई फहराएल गेल अछि। पीछिंग कहै छथि जे जावत झण्डामे लिखल मंत्र नै

मेटाइत अछि तावत हवा एकरा नै खसा सकैए, जखन ई मध्यचि पछि जाइए तखने हवा एकरा उि सकैए। सागू झील जे नािला (अकानैबला कानक दरा) क रस्तामे अछि (पूवि्थाक्रम), ओतए पदीप तमाग याकक संग भेटै िछि, पहािक पाि हुनकर गाम िछ्ह। ओ कहै िछि जे श्वावती आ भुछ्टया भाषामे अन्तर ि, मुदा समानतो ि। नािला चौदह हजार फीटपर अछि आ पाचीन कालसँ भारत-श्वातक बीच व्यापार लेल ऐ दराक उपयोग होइत रहल अछि। एतौ जीरो जका ऑक्सीजनक कमी अहाके बुझा पित। ऐ दरासँ आइयो श्वावती व्यापारी रेशम लऽ कऽ शेरािग गामक शेड लागल हाट-बजार अबै िछि आ एतएसँ बदलामे श्वस्कुट आ डलडा लऽ जाइ िछि।

श्वनेश तमाग गंगटोकमे कहै िछि जे ओ नेपाली बौद िछि। मुदा बंगालमे जन्म िछ्ह। गोरखालैण्डक माग नै मानल जाएत से हुनकर कहब िछ्ह कारण से मानलासँ जलपाइगुरीक कान्तापुरी (कामतापुरी) आ कूच श्वहारक अलग पान्तक माग सेहो मानए पितै, ओ ऐ दुनू जगहक भाषाके बाल्लासँ अलग कहै िछि आ ओकरा “वाया बंगाली” (बाहे बंगाली- बंगाली आ बाहे बंगालीमे भाषाक अश्वाक्त शारीश्वक गठन सेहो बंगालीसँ श्वान ओ कहलश्ह, दोसर ओ ईहो कहलश्ह जे सत्म पूि तँ यएह बाहे बंगाली असली पारश्वमक बंगाली ि ल) कहै िछि।

*विभा रानी (१९५९- )लेखक- एक्टर- सामाजिक कार्यकर्ता-बहुआयामी प्रतिभाक धनी विभा रानी राष्ट्रीय स्तरक हिन्दी व मैथिलीक लेखिका, अनुवादक, थिएटर एक्टर, पत्रकार छथि, जिनक दर्जन भरि से बेसी किताब प्रकाशित छन्हि आ कएकटा रचना हिन्दी आ मैथिलीक कएकटा किताबमे संकलित छन्हि। मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे मे कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चौधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि। समकालीन विषय, फिल्म, महिला व बाल विषय पर गंभीर लेखन हिनक प्रकृति छन्हि। रेडियोक स्वीकृत आवाजक संग ई फिल्म्स डिवीजन लेल डॉक्यूमेंटरी फिल्म, टीवी चैनल्स लेल सीरियल्स लिखल व वॉयस ओवरक काज केलन्हि। मिथिलाक 'लोक' पर गहराई स काज करैत 2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से" के प्रकाशनक संगहि संग मिथिलाक रीति-रिवाज, लोक गीत, खान-पान आदिक वृहत खजाना हिनका लग अछि। हिन्दीमे हिनक 2 गोट कथा संग्रह "बन्द कमरे का कोरस" व "चल खुसरो घर आपने" तथा मैथिली मे एक गोट कथा संग्रह "खोह स' निकसइत" छन्हि। हिनक लिखल नाटक 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह भारंगममे प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। नाटक 'पीर पराई'क मंचन, 'विवेचना', जबलपुर द्वारा देश भरमे भ रहल अछि। अन्य नाटक 'ऐ प्रिये तेरे लिए' के मंचन मुंबई व 'लाइफ इज नॉट अ ड्रीम' के मंचन फिनलैंडमे भेलाक बाद मुंबई, रायपुरमे कएल गेल अछि। 'आओ तनिक प्रेम करें' के 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित तथा मंचन श्रीराम सेंटर, नई दिल्लीमे कएल गेल। "अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो" सेहो 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित अछि। दुनु नाटक पुस्तक रूप मे प्रकाशित सेहो अछि। मैथिलीमे लिखल नाटक "भाग रौ" आ "मदद करु संतोषी माता" अछि। हिनक नव मैथिली नाटक प्रस्तुति छन्हि- बलचन्दा।*

*विभा 'दुलारीबाई', 'सावधान पुरुरवा', 'पोस्टर', 'कसाईबाड़ा', सनक नाटक के संग-संग फिल्म 'धधक' व टेली -फिल्म 'चिट्ठी'मे अभिनय केलन्हि अछि। नाटक 'मि. जिन्ना' व 'लाइफ इज नॉट अ ड्रीम' (एकपात्रीय नाटक) हिनक टटका प्रस्तुति छन्हि।*

*'एक बेहतर विश्व- कल के लिए' के परिकल्पनाक संगे विभा 'अवितोको' नामक बहुउद्देशीय संस्था संग जुड़लि छथि, जिनक अटूट विश्वास 'थिएटर व आर्ट- सभी के लिए' पर अछि। 'रंग जीवन' के दर्शनिक साथ कला, रंगमंच, साहित्य व संस्कृति के माध्यम से समाज के 'विशेष' वर्ग, यथा, जेल- बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, 'विशेष' बच्चा सभके बालगृहक संगहि संग समाजक मुख्य धाराल लोकक बीच सार्थक हस्तक्षेप करैत छथि। एतय हिनकर नियमित रूप से थिएटर व आर्ट विकर्शॉप चलैत छन्हि। अहि सभक अतिरिक्त कॉर्पोरेट जगत सहित आम जीवनक सभटा लोक आओर लेल कला व रंगमंचक माध्यम से विशिष्ट विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत छथि।*

*ि मिश्रा थभारानी सम्मानश्रा मुम्बाईमे रहैत ि थ्रि।*

*पस्तुत अश्रि थभाजीक कि आऊ कनेक पेम करी माने बुझौअल थ्मनगीक। एश्च कि पिर श्चन्दीमे थभाजीक नाटक श्चखल गेल "आओ तश्चाक पेम करे" जकरा २००५ ई. मे मोहन राकेश सम्मानसँ सम्माश्चात कएल गेल।*

<u>आऊ कनेक पेम करी माने बुझौअल थ्मनगीक</u>

'हे ये..., कत' गेलहुँ? आऊ ने एम्हर।'

'की कहै ि ी? एम्हरे त' िलहुँ तखनी स'। कहू, की बात?'

'श्चकि नश्रि! मोन होइय' जे अहा अईठा बैसल रही।'

'ि र जाऊ! अहूँ के त' ... एह! एतेक काज सभ पसरल ि ै। बरखा-बुनीक समय ि ै। श्चन मे अन्हार भ' जाइ ि ै। तइयो अहा कहलहुँ त' बैश्च गेलहुँ आ देश्चयौ जे लग मे बैसल-बैसल अनेरे कएक पहर श्चकश्च गेलै। ताबश्चमे त' हम कतेको काज श्चनगा नेने रश्चतह ि ँ!'

'आश्च रे बतश्चया ! सश्चखन काजे-काज, काजे-काज ! यै, आब के अश्रि, जकरा लेल एतेक काज करै ि ी। सभ श्चकओ त' चश्च गेल हमरा-अहा के ि श्रि के, जेना घर स' बाहर जाएत काल लोग घरक आगू ताला लटका दै ि ै। हे बूझल अश्रि ने ई कहबी जे सभ श्चकओ चश्च गेल आ बुढ़बा लटश्चक गेल। तश्चना हम दुनू लटश्चक गेल ि ी अई घर मे।'

'एह! ि ि आब ओ गप्प सभ। आ हे, अपना श्चया-पुता लेल एहेन अ िलाह नश्रि बाजबाक चाही। आश्चर हुनको आओरक अपना-अपना थ्मनगी ि ै। बेटी के त' अहा ओहुनो नश्रि रोश्चक क' राश्च सकै ि ी। आनक अमानश्चा जे भेलै। बाकी बचल दुनू बेटा त' बूझले अश्रि जे जामुन तडकुन खेबाक आब हुनकर उश्चर नश्रि रहलश्चह। एहेन-एहेन गप्प पर त' ओ सभ भभा क' हँश्च पश्चायैक।'

'नश्रि! से हम अ िलाह कत' सोचलहुँ आ श्चकयैक सोचब। एतेक बूश्रि हम ि िबे ि ी। मुदा, जे मोनक पीि अहूँक संगे नश्रि बाटब त' कहू, जे हम कोम्हर जाइ।'

'कतहु नश्रि! अश्च ठा बैसल रहू। हम अहा लेल चाय बना क' आनै ि ी। अहा जाबश्चा चाय थ्यब, ताबश्चा हम भन्सा-भात श्चबटा लेब।'

'ठीक ि ै, जाऊ! अहा आओर के त' चूश्रि-चौकी आ भन्सा भात स' ततेक ने फैश्चनेशन अश्रि जे श्चकओ श्चकि कहैत रहय, अहासभ स' ओ ि ूश्च नश्रि सकैय'।

'से नश्रि कहू। आई कोनो लकिी श्चक जनीजात चूश्रि मे सश्चहयाय नश्रि चाहै ि ै। मुदा ओकरा आओर के त' जन्मे स' पाठ पढ़ाओल जाइ ि ै जे गै बाउ, बेटी भ' क' जनमल ि त' चूश्रि स' नाता त' श्चभाबश्च पि तौ। कतबो पश्च-श्चश्च जेबे, हाश्चकम-कलक्टर भ' जेबे, मुदा भात त' उसीनही पि तौक। आब हमरे देश्च श्चय'। हम की पढ़ल-श्चखल नश्रि ि ी श्चक नौकरी मे नश्रि ि ी। माय-बाउजी भने पाइ स' कने कमजोर ि लाह, मुदा मोन स' बहुत समृद। तै त' पढ़ौलश्चह-श्चखौलश्चह। नौकरी लेल अप्लाई केलहुँ त' नीके संयोगे सेहो भेश्च गेल। आर नीक कही अपन तकदीर के जे अहा सन जीवन साि ी सेहो भेटल जे डेगे-डेग हमर संग रहलाह। मुदा तइयो देश्चयौ जे बेश्चाक फकजि ि ै, से अहूँ की श्चसश्च सकलहुँ? आइ ि श्च कश्चयो कहलहुँ जे सपना, रह'

ब्नयऊ अहा भानस-भात । हम क' लेब श्क घर ठीक क' लेब श्क श्रीया-पुता के पढ़ा लेब।'
'आब लगलहुँ अहूँ रार ठान'। ताइ स' नीक त' सएह रश्चश्रायैक जे अहा श्कचन मे जा क' अपन काज कर । हँ, चाय सेहो द' श्चय'।'
'से त' अहा कहबे कहब। बात लागल जे िनाक स'। अश्चना त' अहा आओर हमरा आओरक अबाज के बंद करैत एलहुँए।'
'सपना, अहा एना जुश्च सोचू। आई तीस बरख स' हम दुनू एक संगे ि। पूणभिरोस स', संपूणआत्मसमपणि, श्रश्वास आ सहयोग स'। हमरा बुते जे भ' सकल, कश्चयो ििलिहुँ नश्रि। ठीक ि जे हम कश्चयो एक कप चायोटा नश्रि बनेलहुँ, मुदा आदमी आओरक सहयोग देबाक माने की खाली भन्से मे घुसनाई होई ि? अहा मोन पाडू, हम कश्चयो कोनो बात पर टोकारा देलहुँ? अहा जे पकाबी, जे खुआबी, जे पश्चराबी, जेना अहा राखी। कश्चयो कोनो आपश्च कएल की।'
'हमरा हँसी आश्च रहलए अपन एहेन समथश्ति पश्च पर।'
'मुदा हमरा नश्रि आश्च रहलए। हमरा गवअश्रि अपन एहेन सहयोगी पती पर जे हमर कन्हा स' कान्हा श्मला क' हमरा संगे-संगे चललीह। मुदा, आई ई सभ उगटा-पुरान श्कयैक?'
'टाइम पास कर' लेल आ अहा जे कहलहुँ, अई ठा बैस' लेल, त' बैश्स के अहाक मुंह त' नश्रि श्मरखैत रश्च सकै ि ने।'
'श्मरेखू ने, श्कओ रोकलकए अहा के श्क टोकलकए अहाके।'
'ि्र जाऊ, अहूँ त...! आब ओ सभ संभव ि की? अरे, जश्चया उश्मर ि‍ल, जश्चया समय िल, तश्चया त' कश्चयो हमर मुंह श्मरेखबे नश्रि कएलहुँ आ नश्चए श्मरखही देलहुं। चाहे हम श्कि्ओ पश्चश्च-ओश्च ली, चाहे बाहर स' हमरा कतेको पशंसा भेश्च जाए, अहाक मुंह स' तारीफक एकटा बोल सुन' लेल तरश्स गेलहुँ। बोल त' बोल, एकटा पशंसात्मक नजश्रयो लेल श्महन्ता लागले रश्च गेल। आ तश्चना अहाक पश्चरल ओढ.ल पर कश्चयो एपी्रश्चाएट कएलहुँ, तइयो मुंह एकदम एके रस - शून्य, भावहीन ...'
'एह! एना जुश्च कहू। अहाक सज-िज देश्चक' हमरा जे पसनता होइत िल, से हम कश्चयो ¬नश्रि शेयर कएलहुँ अहा स', से कोना कश्च सकै ि। श्चनभर अहाक र प आँश्चक सोझा नचैत रहैत ि‍ल आ राश्च मे ओ सभटा पशंसा र पाकार लेइत िल। तश्चना अहाक मुंह स' अपन, पशंसाक बोल भश्च श्चन चानीक घंटी जका मोन मे टुनटुन बाजत रहैत िल आ मोन के उत्फुल्ल बनौले रहै िल। मुदा, अहा कश्चयो ओश्च समय कोनो सहयोगे नश्रि देलहुँ या कश्चयो संग देबो केलहुँ त' बर ड बेमोन से'। हम कश्चयो पूिलहुँ जे अएं यै, एना श्कयैक करै ि अहा? अहीक मजी मुताश्चक हम ओहूठा चलैत रहलहुँ।'
'हे! सरासर इल्जाम नश्रि लगाबी। देश्चयौ, हमरा लेल जेना अहा महत्तपूर्ण ि, तश्चना अहाक पत्येक बात हमरा लेल महत्तपूणअश्रि। हम अहाक संग नश्रि देलहुँ अिवा बेमोन स' देलहुँ त' श्कयैक ने अहा पूिलहुँ कश्चयो, अिवा हम झँपले-तोपले श्कि् कहबो केलहुँ त' श्कयैक ने तकरा पर श्चचार केलहुँ, कश्चयो खुश्चक' चचिकेलहुँ.। ... हे श्चय'..., चाय श्चय'... अपनो लेल बना लेलहुँ। भन्साघर स' श्चकश्च श्चकश्च क' बाज पि ि‍ल। श्कओ सुश्चयैक त' कहश्चयैक जे बतश्चया जका एकालाप क' रहल ि श्क ककरो संगे झगश्रि रहल ि।'
'चाय त' बर ड दीब बनलए।'

'एह! याश्च टा गप्प पश्चनहुँ कश्चयो कहने रश्चतहुँ। अई तीस बरख मे आइए नीक चाय बनलैय' की?'
'ाि ने पुरना गप्प सभ! आब ाया-पुताक घर मे ई सभ कि-पेहानी नीक लागश्चयैक की?'
'श्चयैक ने नीक लागश्चयैक? ई सभ त' जीवनदायी ािरा सभ ि जाश्च स' जीवनरपी वृक्क डाल-पात सभके श्चन श्चन सोत स' जीवनशश्चत भेटैत रहै ि। अरे, श्चया-पुताक सोझा अहा कश्चये श्चतहुँ त' अई मे कोनो ऐहन अिलाह कमति' नश्च भ' जइश्चयैक जाश्च स' ओकरा आओरक आगा हमरा आओर के शमिश्च झेप महसूस होयश्चयैक!'
'अहा बात के तूल द' रहल िी।'
'नि! श्चिश्चक मीमासा क' रहल िी। चीज के रैशनलाइज क' रहल िी।'
'हमरो दुनूक श्चनगी केहेन रहलए। नेना िलहुँ त' पढ़ाई, पढ़ाई, पढ़ाई! माय-बाउजी कहैत िलाह जे बाउ रौ, इएह त' समय िक तपस्याक। एखश्च तपस्या क' लेबे त' आगा एकर मिर फल भेटतौ। पढ़ बाउ, खूब मोन लगाक' पढ़ ! आ हम पढ़ैत गेलहुँ - फस्टिअबैत गेलहुँ। नीक नोकरीयो लाश्च गेल। बाउजी सत्यनारायण भगवानक कि आ अष याम सेहो करौलश्चह। हुनका बड्ड सौख िलै जे हुनकर पुतौहु पढ.ल-श्चखल, समझदार आ मैच्योडिहुअए। तकदीरक बात कश्चयौ जे हुनकर ईहो सेहन्ता पूणिभ' गेलै। हुनका अहाँ सन पुतौहु भेटलै, रप आ व्यवहारक गश्चमा स' पश्चपूणि
'चाय त' सश्च गेल। आओरो ल' आबी की?'
'नश्च! हमरो श्चनगी सोगारि भेल अहा के पाश्च क'। कतेको परेशानी भेल, अहा सभस' श्चबटैत गेलहुँ, एकदम स' ािर श्चर भ' क'।'
'त' की कश्चतहुँ! जहन हम दुनू पाणी एकटा बंिन मे बंि गेलहुँ त' तकर मान मरजाद त' श्चभाबही पिश्चयैक ने! आ कि खाली हमरे आ अहाटाक संबंि िश्च त' सीश्चत नश्च रहै ि। एकर श्चस्तार अहाक पश्चवार, हमर पश्चवार आ फेर अपन बाल-बच्चा िश्च होइत ि, आ हे, एहेन नश्च ि जे हम सीता-साश्चि जका मुंह सीने सबकुि टॉलरेट करैत गेलहुँ। कएक बेर हम अपन टेम्पर लूज केलहुँ। मुदा अहाक तारीफ, अहा अपन टेम्पर कश्चयो नश्च लूज केलहुँ।'
'महाभारत स' बच' लेल। आह! पतीक आघात स' कोन एहेन मनुष्य अश्च जे बाश्च सकलए।'
'मजाक जुश्च कर ! अहूँ सीश्चयस िी त' हमहूँ सीश्चयस िी। हमर अपन इच्िा िल नाश्चहटा स' जे पढ़ब-श्चखब। पश्च श्चश्चक' अपना पएर पर ठाढ़ होएब। आश्चिक परतंिता अस्वीकायििल। हमरा अई बात पर पूणिसंतोख अई जे हमर ई इच्िक पूणिआदर आ सम्मान भेटल अहा स'। हमर नौकरी पर हमरा स' बेसी पसनता अहाक बाउजी के भेल िल। हमर एकगोट संगी हमरा चेतौने िल जे देखब, बुढ़बाक खुशी अहाक पगार ओसुलबा स' त' नश्च अश्च। हमरो लागल िल। मुदा िन कही हुनका, नश्च कश्चयो पुिलश्चह जे हमरा की आ कतेक दरमाहा भेटैय' आ नश्च कश्चयो ओकरा मादे कोनो खोजे-पुिरी कएलश्चह। सएह अहूँ संगे भेल। अहूँ कश्चयो नश्च पूिलहुँ जे हम की सभ करै िी। अपन पगार के कोना खचै दी॥ हमरा त' कएक बेर इएह होइत रहल जे अहा पूि ि श्चयैक ने? तहन ने हम अपन आमदनी आ आमद स' बढ़ल खचाक श्चसाब अहा के श्चतहुँ। नतीजा, आश्चिक स्वतंिता हाश्चल कएलो सन्ता कश्चयो आश्चिक रपे स्वतंि नश्च भ' सकलहुँ। कश्चयो अपना मोने अपना ऊपर श्चकि खचनिश्च क' सकलहुँ। अहा संगे ई नश्च िल। अहा त' 'ईट, श्चंक आ बी मेरी' मे यकीन करैत एलहुँ आ एखनो करै िी।'

'अई मे अिलाहे की ि? मनुक्खक अई श्चनगी मे अश्चिए की? खाइ, पीश्च, मस्त रही।'
'भने ओश्च मे सभ श्चकओ सफर करी।'
'से कोना? कश्चयो अहाके हम कोनो कष देलहुँए?'
'श्चकऐक ने? कोनो समय एहेन नश्चि भेल जे कोनो खास खास बेर पर हमर नोर नश्चि खसल हुअए। कश्चयो कोनो काज-परोजन भेल, श्चक तीज तेवहार श्चक ककरो बिडि श्चक वेश्चंग, सभठा त' पल्ला झाश्चि लेइत अएलहुँ जे पाई नश्चि अश्चि।! तहन हम की लोकक ओश्चठा खाली हाि पहुँचतहुं आ कश्चतहुं जे हमर हस्बैड कहै िश्चि जे हुनका लग पाइ नश्चि ि तै हम आओर हाि झुलबैत चश्च ऐलहुँए। श्चकओ पश्चयैश्चयैक।'
'अहा लग त' रहै िल ने।'
'हँ, श्चकयैक ने कहब। ई बुझलहुँ जे ई 'िल' के मेनटेन करबा लेल हम कतेक बेर अपन मोन के माश्च-माश्च के राखलहुँ।'
'एह िािू ई सभ गप्प। खाएक लेल की बनाएब?'
'जे कही अहा? हमरा आओर के त' ईहो कश्चयो स्पतंिता नश्चि रहल जे अपना मोने, अपन पसीनक खाना बनाबी।'
'फेर क्लेम! आइ अहा के भ' की गेलए?'
'अहा संग लश्चियाएबक खगता। श्चनगी भर जकरा लेल अहा पलखश्चयो भश्च समय नश्चि देल।'
'हम अहाके संतुष नश्चि क' सकलहुँ कश्चयो, अहा से कह' चाहै िी?'
'हँ, सएह कह' चाहै िी?'
'बाई एवरी पॉश्चबल वे?'
'यस, बाइ एवरी पॉश्चबल वे?'
'श्चकश्चकली, मेटली, मौनेटरली, सेक्सुअली।'
'हँ, सभतरहे।'
'अहा हमरा कमजोर बना रहल िी।'
'अहसास करा रहल िी।'
'अपन पश्चश्चश्चि पर गौर नश्चि क' रहल िी। हम श्चजी, अहा श्चजी। हमर अएबाक-जेबाक कोनो श्चश्चित समय नश्चि। अहाके ऑश्चसक संगे-संगे घरक, श्चिया-पुताक श्चम्मेवारी। बखत कत' िल जे पेम-मुहब्बतक मादे सोश्चतहुँ।'
'तै त' जीवन झरना सुखा गेल ने? व्यस्तता त' श्चनगीक अश्चन अंग श्चियै। तै, अई व्यस्तताक कारणे हम आओर कश्चयो की नहाएब-िाएब आ श्चक कपिा पश्चरब िश्चि देश्चयै, वा श्चसार गेश्चयै?'
'श्चिया-पुताक घर मे, आई कुंड बी सो फैक ...'
'व्यिइल्जाम द' रहल िी। फैकनेसक माने ई नश्चि जे अहा हमरा कोरा मे बैसेने रहू सभ समय। फैकनेस माने ि फुल व्यवहारक, फुल अपोचक फैकनेस। अहा से फैक नश्चि भेलहुँ, नतीजा हम नश्चि भ' सकलहुँ, नतीजा श्चिया-पुता सभ नश्चि भ' सकल।'
'श्चिया-पुता के त' बरड नीक जका राखलहुँ। बेटीयो जीन्स आ श्चनी पश्चश्च क' घूमल, फेरस सभक संगे श्चनेमा गेल, पाटी कएल, कश्चयो टोकारा नश्चि केल।'

'मुदा, कखनो फैक भ' क', खुलिक' गप्प-सप्प सेहो त' नहि कएल। एकदम फॉर्मल फैमली बनाक' रखि गेल अपन परिवार। ई हमर कहबा नहि, अहाक बेटीयेक कहब अछि।'
'अही स' सभ बच्चाओ सभ बच्चा बच्चायैक कहैत अछि। हमरा स' त' आइ धरि बच्चाओ बच्चा नहि कहलक?'
'अहा से मोके कोम्हर देलियै? तै त' कहलहुँ, बेहद फॉर्मल फैमली।'
'चलू छोड़ू, आब फेर स' शुरु करब जिनगी - सभटा शौख पूरा क' देब।'
'जिनगीक ओ बीतल चुकल 30 साल आ तीस वर्षक पल-पल पलटिने घुरा दिय'।'
'जे भ' सकै छै से कहू।'
'त' कहू जे भन्सा की बनाबी? छोमीक खिचड़ी कि छोमीक परोठा।'
'आब जे अहा खुआबी। बजला पर कहब जे हम अहा के मौके नहि देइ छी।'
'से त' कहबे करब। अपरोक रुप स' अहाक पसीन-नापसीन पूरा घर पर हावी रहलै।'
'से कोना?'
'चलू, भन्से से शुरु करी। अहा के सौफ देल मलपुआ पसीन नहि, इलाइची देल खीर, सेवई पसीन नहि। आ हमरा आओर के ओ सभ बरड पसीन। हमरा बिन सौफक पुआ आ बिनु इलाइचीक खीर सेवई बनेबाक आदत पार' पड़ल।'
'त' ई त' नहि कहलहुँ जे अहा आओर नहि खाई।'
'ईहो त' नहि कहल जे ठीक छै, कखनो-कखनो हमहूं सौफ-इलायचीबला पुआ, खीर, सेवई खा लेब, तहन ने बुझितहुं? आ अपना स्वादक अनुसारे अलग स' चीज बनाबी, ई कोनो जनीजात स' पार लागलैये जे हमरा स' लागितियैक।'
'अच्छा, आगा बढ़ू।'
'बढ़ब, पहिने भन्सा चढ़ाइए आबी।'
'आइ उपासे पड़ि जाइ त' केहेन रहत। तखनि स' अहाक मुंह स' भानस-भानस सुनि क' कान पकिरा गेल आ पेट अफरि गेल।'
'उहूँ! एखनि त' डिनर गोल क' देब आ अरिछाया के हाक पाड़ब जे हमरा भूख लागलए। उठू, बच्चा अछि बनल त' दिय'। बच्चा नहि अछि त' ऑमलेटे बेड सही।'
'जाऊ तहन, जे मजी हुअए, करु।'
'हे, हम एखने गेलहुँ आ एखने एलहुँ। ताबत अहा बउआक ई मेल पढ़िक' ओकरा जवाब पठा दियऊ।'
'हँ, ओहो लिखलकए जे बरड नीक लागि रहलए। अपन देश स' एकदम अलग, सभ बच्चा एकदम व्यवस्थित। मर्यादित, संतुलित। आखिर अमेरिका छियई ने। छ कही आईटी बूम के जे बच्चा सभक रोजगारक नव अवसर भेटि रहल छै। भारतीय कंप्यूटर इंजीनियरसक के कतेक डिमाड छै फॉरेन कंटी मे। देखबै जे दस मे स' तीन टा इंजीनियर अमेरिका त' आन आन देशक रुख क' रहल अछि।'
'प्रतिभाक पलायन छियै ई। इंपोटेस ऑफ टेकॉलाजी संगे इंपोटेसी ऑफ अवर टैलेट छै। बाहरी टेकॉलॉजी पर बिढ़नी जका लूझै छी। ओ सभ रोटी देखबैत अछि, हम सभ कुकुर जका बढ़ि जाइ छी।'
'अहाक बेटो बढ़ल अछि, से जुनि बिसरी।'
'हम इन जेनरल कहि रहल छी। अपन देशक त' ई स्वभावे बनि गेल छै, घरक जोगी जोगड़ा, आन गामक

श्याद। इंटनलि टैलेट के पश्चान' लेल, श्यकलाइज कर' लेल पश्चने कोनो बुकर पाइज, ऑस्कर अवॉर्ड, नोबल पाइज चाही, नहि त' सभ श्कओ फॉड, ोखेबाज ...' अपने ओश्ठा त' लोक आओर एतेक तरहक एक्सपेश्मेट करैत अछि। लोक कतेक महत्त्व दइत ै।'

'से सभ त' ै। ई श्यश्च हमही आओर बनाक' राखल अछि। तै त' आइ अश्मेष हमरा आओर लग नहि अछि। अमेश्का मे अछि। पता नहि कश्या घुरत?

'आ जौ नहि घुरलै आ ओम्हरेक मेम ल' आनलक तहन?'

'तहन की? अहा सासु पुतौहु रार मचाएब। हमर काज त' आशीवाद देबाक छि अछि। से भूश्का हम श्बाश्च लेब।'

'त' सभटा सासु अपना पुतौहु स' रारे मचबै ै? हमही दुनू सासु-पुतौहु मे ई देखलहुँ कश्यो? आब अश्मेष जकरा स' श्वाह करौ, हमरा लेल ि सन! हमरा कोना आपश्च नहि!'

'भन्सा भ' गेल त' दइए श्य'। खाअक' सूतब।'

'एतेक जल्दी?

'किान लाश्य रहल अछि।'

'पश्चल बेर एतेक बश्यौलहुँए ने? हरारश्च त' लागबे करत। घरवाली संग एतेक बेसी गश्येनाइ कोनो मजाक बात ै!'

'हे, एके प्लेट मे श्काल्लू ने।'

'आई एतेक पेम कि लेल ढरश्क रहल अछि?'

'सभटा श्लि श्सहाब रफा-दफा कर' लेल।'

'त' पुरनका तीस बरख पश्चने घुराऊ!'

'से त' नहि भ' सकैय', मुदा पुरना तीस बरख के अश्ला तीस बरख मे श्लाक' श्नगीक ताग के आओर मजबूत करबै। आऊ! बैसू एम्हर। हे, श्य। हमरा हाि खाऊ!'

'हमरा डर होइयै जे हमर हाटफिेल नहि भ' जाए।'

'नहि होएत। आ हेएबो करत त' हमहूँ संगे-संगे चश्च जाएब। हे, श्य' ने। खाऊ ने। अहीक हाकि बनाओल त' भोजन अछि।'

'हम अपने हाि खाएब। दोसराक हाि खएला स' पेट नहि भरत।'

'मोन भरत। आई पेट भर' लेल नहि', मोन भर' लेल खाऊ।'

'तहन त' आओरो नहि खाएब। मोन जहन भश्ए जाएत त' जीश्व क' की करब? मोनक अतृश्प्त त' श्नगी श्बाक बहाना होइ ै।'

'ई सभ श्फलॉसफी िडू आ खाना खाऊ। अरे, अरे, दाश्च श्कयैक काटलहुँ।'

'भोजन मे चटनी नहि ि ने, तैं...' हे, भ' गेल। आब नहि खाएल जाइत हमरा स'।'

'ठीक ै। चलू तहन।'

'कत'।'

'चलू त' पश्चने। आई चलू, हमर कन्हा िश्म्ह क' चलू। अइ दुनू बाहक घेरा मे चलू।'

'व्हाई हैव यू बीकम सो रोमाश्चक?'

'कहलहुँ ने जे पछिला तीस बरख के अगिला तीस बरख मे शामिल कर' जा रहल छी। हे, इमानदारी स' कहब', अहा के नीक लागि रहलए हमर ई स्पर्श?'
'कोनो भावना नहि उमड़ि रहलए। अहा ईमानदारीक पश उठाओल, तै कहि रहल छी।'
'आब?'
'ऊँहूँ।'
'आब? मोनक दरवज्जा बंद क' क' नहि राखू। कनेक फाफड़ि छोड़ि दियौक। भावनाक बयार के घुस' दियौक।'
'हमरा रोआई आबि रहलए।'
'त' कानि लिय' अई ठा, हमर छाती पर माथ राखि क'। मोन हल्लुक भ' जाएत।'
'बेर-बेर सोचना आबि रहल अछि पुरना दिन। तखन कियैक ने ... एतेक व्यस्तताक की माने भेलै जहन हमही दुनू अपना के अपना दुनू स' अलग ल' गेलहुँ।'
'माने छलै ने? अपन जिनगी बनेबाक। धीया-पुताक जिनगी बनेबाक। ई सभ लक्ष्य छल आ अजुका जका हम सभ ओहि लक्ष्यक पाछा लेल भागि कि आँखिक पुतली छिपि तकैत रहलहुँ।'
'हमर पलक झपझा रहलए।'
'झपझाए दियऊ। बन्द पलक, फुजल अलक। एखनो अहाक केश ओतबे नरम, आ मोलायम अछि।'
'आब त' सभ टा' झड़ि गेलै।'
'जे छै से बहुत सुंदर छै। आह! मोनक कोन्टा मे ठेसि-ठूसि क' राखल सुषुप्त भावना सभ... जेना टिट-टिट फूँही बरसि क' रोम-रोम के भिजा रहल अछि। रोम-रोम भुलुकि रहल अछि। ई की अछि?'
'अहसास। हमहूँ अई अहसासक फूंही मे भीजि रहल छी। अहाक तन स' माटिक सोन्हपनि आबि रहल अछि। छिकल दकचाएल जिनगी मे एकगोट नव संचार आबि रहलए। नस-नस वीणाक तार जका झंकृत भ' रहलए। सृष्टि क ई अमूतआिनंदक क्षण अछि, दिव्य, भव्य, अलौकिक !'
'एक-एक सास स' बजैत स्वर्गीय संगीत। आइ धरि कहियो नहि अनुभव कएने छलिहुँ। आई अनुभव क' रहल छी।'
'आऊ, अई अनुभव सागर मे डूबि जाइ- गहीर, आओर गहीर, कामनाक सीपी फोली! भावनाक मोती बटोरी। आसक ताग मे ओइ मोती के गूँथि माला बनाबी आ दुनू एकरा पहीरि ली।'
'जिनगी एतेक सुंदर नहि लागल पहिने कहियो।'
'मौने मुखर रहल सदिखन। आई शब्द मौनक देबाल के ढाहि रहल अछि।'
'ढह' दियऊ ! सभटा वजर्ना ढह' दियऊ !'
'जिनगीक बदलइत रप कियो नहि बूझि सकलए। अहाक रोम-रोम स' झरैत ओस बुन ! एक-एक श्वास स' अबैत जुही, गुलाब, मौलसिीक सुगंधि। आऊ, डूबि जाइ अइ मे!'
'---------'
'---------'
'---------'
'---------'

'थ्मनगी पहेली अछि, बुझौअल अछि।'

'ऊँहूँ! थ्मनगी थ्मनगी अछि।'

'माने?'

'माने की? एखश्म ि थ्नि मतलबे बूझ' मे लागल ि ी? ि र जाऊ! अहा बर ड ओ ि ी।'

'ओ ि ी, माने केहेन ि ी?'

'ओ माने ओ। आओर थ्कि नश्चि!'

'अहूँ एकदम नेना जका करै ि ी।'

'नेना त' बश्माये गेलहुँ। अहा नश्चि बनलहुंए की?'

'बनलहुँए ने।'

'तहन?'

'तहन की?'

'तहन माने थ्मनगीक र प देखी आ मस्त रही।'

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"(१९५१- )

बीहनि कथा - गंगाप्रसादक स्वायत्तता

ओ अपन घरक ओसारामे एकटा पींजडामे सुग्गा लाबि क रखने रहथि । सिखौने छलाह सीताराम कहु गंगाप्रसाद। सुग्गा रटने रहए सीताराम,सीताराम।घर मालिक प्रशन्न भेल छलाअ, आब हमर सुग्गा पढुआ भ गेल अछि ।दोसरोके गवाहि सं जोडैत छलाह देखह, हमरा संगे पढ बला सुग्गा अछि ।कतेक नीक जका राम नाम लैत अछि ।भोरेभोर उठलापर जखन सीताराम सीताराम जपैत अछि त मन प्रशन्न भ जाइत अछि ।
ई क्रम काफी दिन धरि चलल ।घरमालिकक प्रशन्न,ओम्हर सुग्गा सेहो नीक जका रामनाम जपबाक कारणे मजास बदाम, फलफुल, हरियरमरचाइ लोलस कतरि कतरि मस्ती करए लागल ।
समय परिवर्तित भेलै ।घरमालिक विपत्तिमे फंसि गेलाह ।ओ सुग्गा के मालिकके बचाउ, मालिकककेबचाउ सन वाक्य सिखब चाहलक । सुग्गा अपना जनैते बुद्धि आ क्षमता प्रयोग क ओ वाक्य सिखबाक प्रयास कएलक ।एक-दू बेर उच्चारण सेहो कएलक मुदा ओ स्मरण नहि रहि सकल आ तएं अपन घरमालिकके बचा नहि सकल ।
पैघ बबण्डर उठल । सभ किछु परिवर्तित भ गेलै । घर सभक स्वरुप बदलल ।बाट घाट नव बनएबाकप्रयास भेल, चौडगर आ पक्की । घरमालिक सेहो बदलि गेल । ओसारामे टागल पिंजडाक आकार प्रकार सेहो बदलि गेलै मुदा सुग्गामे कोनो परिवर्तित नहि भ सकल । ओ एखनो सीताराम सीताराम पढि रहल छलि । नवका घरमालिकके सुग्गाक ओ रटब नीक नहि लगलैक ।ओ नया वाक्य सिखाब चाहलक जय गणतंत्र कहु गंगाप्रसाद । सुग्गा जतेक प्रयास कएलक तैयो सीताराम, सीतारामसं आगा बढिए नहि सकल। घरमालिक अकच्छ भ नव पिंजडा आ सुग्गा लओलक।सिखब चाहलक जयगणतंत्र, जयगणतंत्र कहु गंगाप्रसाद।नवका सुग्गा किछु बजैतए ताबेस पुबे पुरना सुग्गा बाजि देलक गोपीकृष्ण,गोपीकृष्ण कहु गंगाप्रसाद। घरमालिकके आश्चर्य भेलै ई गोपीकृष्ण कतस आयल। पुरना त सीताराम कहैछ,नवकाके जयगणतंत्र सिखाओल जाइछ, तखन ई नया शब्द गोपीकृष्ण अएबाक त बाते नहि भेल । सुग्गाके जे पढाओल जाइछ, जे सिखाओल जाइछ सएह ने ओ बाजत ।
बातके तहमे जएबाक लेल घरमालिक एक दिन ढुक्का लागल।देखी के नवका सुग्गाके ई नया शब्द सिखबैत अछि। एक्के क्षणमे ओ जे दृश्य देखलक, आश्चर्यमे पडि गेल। एक गोटे करिया पोशाकमे, देह भरि रंगविरंगक हथियार लटकौने, अनुहार पर कारी कपडा लपेटने कोम्हरोसं तेजी सं आयल । सुग्गाके आदेशात्मक भाषामे कहलक कह त गोपीकृष्ण, गोपीकृष्ण। खबरदार, फरक शब्दक उच्चारण नहि ।
दुनू सुग्गा डरसं थरथरि काप लागल ।एक दोसराके हताश नजरिसं देखैत,मनेमन किछु संकल्प करैत आ बजैत अछि गापीकृष्ण,गोपीकृष्ण । साबास कहि आकृति कोम्हरो हेरा जाइछ।

अच्िा त कि ई थीऐक। घरमाश्कक सतकिभ जाइि ।घरके आ सुलाके सेहो स ु रकत घेरा बढा देल जायि ।एकटा आओर नवका थजडा सुला सश्चत लाओल जाइि ।मुदा आहो सहयािी स सुला सभक देखाउसे गोपीकृष्णटा रट’ लगैि ।घरमाश्कक लाख सतकति अपनौलक,मुदा सुला अपन रट नश्च िडिलक ।थजडा आ सुला बदलैत रहल, रटमे पश्वतनि नश्च आयल ।ओसारामे झुलैत पच्चीसो थजडाक सुला एक्के स्वरमे बाजय गोपीकृष्ण कहु गंगापसाद ।

अन्तमे आजीत भ घरमाश्कक पच्श्सो थजडाक आगा हारल जुआरी जका श्वहभावे ठाढ भ पुिलक कह, की िै तोरा सभक ईच्िा ।हम तोरा सभके श्वखब नश्च सकलहुं, ने श्वयंणि क सकलहुं ।आब जे तो सभ चाहश्च सएह सभ हएतै ।

पच्चीसो थजडाक सुलासभ एक दोसराके देखैत अश्च, ठोढेमे मुस्काइत अश्च आ गरदश्च उठा क घरमाश्ककके आंश्वमे आंश्व गडाक आत्मसम्मानक संग नारा लगबैि जयगणतंि ।

घरमाश्कक ओकरासभके एकटक्क देश्वते रश्च जाइत अश्च।

हुगली पर बहैत गंगा

हीरामन आइ फंसल गेल अछि ठेठर बाली बाईक संग। ओहि ठाम तं हीरामनक पेम एक तरफा रहैक, ठेठरबाली बाई मात्र सहानुभुति देखौने रहैक। एत तं बात बीगरि गेल छै। दुनू एक दोसर लेल आकर्षित भऽ गेल छै आ हीरबाके अन्तर छटपटी उठल गेल छै- आब कोना कऽ रहत ग सोनाबाईके बिना ओ...।

कएकटा सिनेमा देखने रहय जाहिमे बाइक पेम बरोवरि असपल होइत गेलै आ कतेक त एहि संसारे सं बिदा भऽ गेल रहय। आ तएँ एम्हर टपबासं पहिने ओ कएक बेर सोचने रहय। कतौ मन मीझा गेल तं...।

दुत्-हमरा सन सनके के पछताएतै। कनी मनोरंजन करब आ घुमि आएब- हीरा मनके तोष दैत...स्ट्रीटक वंगला नं.४ मे पैसि गेल रहय। समय अपरान्हक तीन बजेक रहैक। दरबज्जा पर एकसरि ठाढ़ि सोना ओकरा बड़ए नीक लागल रहैक। सम्भवता एहु दुआरे जे आन दरबज्जाक बाई सभ बटोहीके जवदस्ती हाक पाड़ैक। नहि आब चाहवलाक देहमे रगड़ि लैक, जेबीमे हाथ दैक, चिकोटि मारैक मुदा जखन ओ एहि दुहारि पर आएल त गुम सुम ठाढ़ अठार- उनैस वर्षक पीण्डश्याम सन अत्यन्त सुभग हीरा ओकरा अपना दिस आकर्षित कऽ लेलकै आ ओ ओत ठमकि गेल रहय। हीराके एखनो मोन गुद-गुदा जाइ छै सोनाक तखनका मुस्कीके स्मरण करैत। ओ लोटपोट भऽ गेल रहय आ आंखिक दरबज्जा दऽ सोनाक हृदयमे जेना पैसि जाए चाहने रहय।

सोना ओकरा लऽ दू महला पर सजाओल एकटा कोठरीमे लऽ गेलै। ओ कोठरीमे जएबासं पूर्वहि घरक वातावरणके जंचबाक लेल नजरि खिरौने रहय- आठ, दश कोठरी आर रहैक, जाहिमे हंसी, मजाकक स्वर आबि रहल छलैक। माने गाहक ओम्हरो फंसल रहैक। सोना वाचल छलीह एहु दुआरे जे ओकर रंग ओतेक साफ नहि रहैक, आ ने आन छौड़ी जका लब-लब ओ करैत छलि। गाहकके बुझाइक एहि मन्हुआएल छौड़ीमे कोनो जान नहि हयतैक सम्भवता, तएं ओ चुपचाप गाहकक पतीक्षामे सभसँ अन्त धरि बैसल करए। बादमे ओकरा सोना सँ पता चललै, सभ के गाहक भेटि गेलाक वादे हारल-फुरल लोक ओकरा लग अबैक। एहिसं एक बात त जरूर रहैक- सोना आन बाई जका तोलि-मचोलि नहि गेलि रहय, वाचल छलीह। ओकर अनुहारक तेज एखनो दपदप करैक आ सएह तेज हीराके ओकरा दिस आकर्षित कएने रहैक।

पछिला साझ सोनाक संग महज गाहक भऽ वीतबऽ चाहैत रहय हीरा। छिटकि हाथि गेल छलि एहि महानगरमे। बाप मायके कमाएक नाम पर दू हजार टका लऽ कलकता आबि गेल रहय। ओकर गौआ सभ एत कमाइ छै, कहने रहैक कोनो सेठक बंगलापर लिखापढ़ी के काम दिआ देबौ।

मन त रहै जे विदेशे उड़ि जाइ, बड़ि लोक ओकरो गामके अरब गेलैए। विदेशमे पाइ त होइ छै, मुदा कष्टो कम नहि छैक। घर-परिवार सँ दूर। ओ सोचने रहय- उ जनिक बात बादमे देखल जएतै। एक बेर गौएँ सभक बातके भजा ली आ कलकता चलि आएल, से आइ पन्द्रह दिन भऽ गेल छै, मुदा ओइ सेठक ओइ ठाम काम नहि भऽ सकल। ओ आबे-आबे ताबे दोसरके रस्ता लेने रहय। ओ बौआ गेल रहय आ फेरसं सबआ कऽ काम खोजऽ पड़ि रहल छलैक। रहबालेऽ गौआक खोली रहैक आ खएबा ले सेहो कहुयो काल ओकरे सभके ओहि ठाम खा लैक। मुदा कलकतामे खचतिं होइते छैक। काम नहि भेटौक त कतेक दिन टिकत ओ...।

सोना बाई टोकैत छै त ओकर तंरा भंग भऽ जाइत छै- की सोचऽ लगलहु। आउने, आनो गाहक

खोज पति ने।

हीरा बच्चेसं भावुक स्वभावक रहल अछि। चौबीस-पच्चीस वर्षक उमेर भऽ गेलै, बाप-माय कतबो वीआहक लेल कहैत छिक ओकरा अपन मनमे की फुरै छै की नहि, वरोबरि मना करैत आएल अछि। नारीक प्रति अत्यन्त सम्मान रखैत अछि हीरा...। आइ उएह नारीक संग...।

"की भेल बाबू साहेब, आउ सेज पर"- कहैत सोना अपन साड़ी खोलऽ लागल। साड़ी खोललाक बाद ब्लाउज खोललक आ अचाचाक साया सेहो। हीरा एखनो चुपचाप ठाढ़ सोनाक देहयष्टि निहारैत रहल छलै। ओ भरल। बजैत अछि- ओहने हवसी सभ अबैत अछि। दारु पीबैत अछि, सिकरेट जड़बैत अछि आ ठुठा कखनो कऽ सम्वेदनशील अंग पर रगड़ि मिलि चला दैत अछि। नोचैत अछि, फाड़ैत अछि आ घंटो तबाह कएने रहैछ। ओकरा ने हम कहि कऽ सकैत छीऐक ने हमर बाई। मोट पाइ देने रहैछ ओ। इएह छै एहि गल्लीक जीवन आ सत्य...।' कनेक काल चुप भऽ सोना हीरा दिश तकैत बजैत अछि- अहा एहि छिलो कादोसँ भरल विशाल दलदली मैदानमे अपना वैसबाले एक हाड़ि सुक्खल ठाम खोजऽ आएल छी- ई अहाक भोलापन अछि आ अहाक इएह भोलापन हमरा भीतर छिड़ि चला देलक अछि। हम एखन छिड़ि सिहरन महशूस कऽ रहल छी। ई सुखानुभूतिक सिहरन थिक जे आइ धरि हमरा नहि भेटल छलि, पता नहि अहामे की अछि, आइसँ अहा हमर गहिंकी छी, हम चाहब अहा नित्य आबी, कमसँ कम एक बेर।

हीरा त आर सदभिऽ जाइत अछि। ई की भऽ रहल छिक। उनटा हुगली बहऽ लगलै एत। हम कोना एत आबि सकै छी। आइ एक दिन अएबाले कतेक हिम्मत जुटौने छी, ई त सभ दिन कहैत अछि। नहि, कतहु फेर सँ धीया चक्रत देखाओत त ने ई...।

सोना हीराके गुनधुनि करैत देखि फेर टोकैत छिक- अहा सोचैत हयब, हमर फीश दिनहुं कोना दऽ सकब। बाबूजी, हमरा लेल आनो गाहक सभ छिक ने। हम ताहि महक अपन हिस्सासँ बाइके अहाक हिस्साक पाइ दऽ देबै, अहा ओहिना अबियौ, हमरा नीक लागत।

आब हीराके मोन मानि जाइत छिक जे कोनो लाइ-लपेट सोनाक मनमे नहि छै। साचे ओ बाघ, सिंहक हेजक बिच कोनो अपने सन हरिन खोजऽ चाहैत अछि, जकरा संग सुख दुखक गप कऽ सकए, मोनक पीड़िके बाँटि सकए।

ओ आशवस्त दऽ दैत छिक। ओकर नोकरी, संगमे घटल जाइत पाइ, किछु सुधि नहि रहैछ ओकरा। ओ सोनाके छातीसँ सटा लैत अछि। पहिल बेर सोनाके छातीसँ लगा ओकरा अपनत्वक बोध होइत छिक, राहत भेटैत छिक।

जितेन्द्र झा- जनकपुर

अन्तराष्ट्रिय मैथिली परिषद

अन्तराष्ट्रिय मैथिली परिषद अपन प्रमुख माग सहित भारतक राजधानी नया दिल्लीस्थित जन्तर मन्तरमे धर्ना देलक अछि । सोमदिन देल गेल एहि धर्नामे भारतक विभिन्न स्थानसं आएल मैथिल आ संघ संस्थाक प्रतिनिधि सहभागी रहथि । जन्तर मन्तरमे भेल एहि धर्नामे मिथिला क्षेत्रक विकासक लेल अलग मिथिला राज्य बनाओल जाए से माग कएल गेल । अन्तराष्ट्रिय मैथिली परिषद एहि अवसरपर राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री लगायत सभा पार्टीलके ज्ञापन पत्र सेहो बुझौलक । ज्ञापन पत्र बुझेबाहार प्रतिनिधि मण्डलमे डा भुवनेश्वर पसाद गुरमैता, डा रवीन्द्र झा, डा धनाकर ठाकुर,डा कमलाकान्त झा, चुनचुन मिश्र, भवेश नन्दनसहितके सहभागिता छल । परिषदक धर्नामे दिल्लीमे रहल विभिन्न राजनीतिक दलसं सम्बद्ध नेतालोकनि सेहो सहभागी रहथि। परिषदक नेपालक पदाधिकारी आ कार्यकर्ता सेहो धर्नामे सामेल रहथि । धर्नामे भीख नहि अधिकार चाही हमरा मिथिला राज्य चाही से नारा लगाओल गेल रहए । परिषद मैथिली भाषाक आधारपर राज्य बनएबाक माग करैत आएल अछि ।

कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?

मिथिलाक परम्परा आ धरोहरके मौलिक विशेषता गुम रहल कहैत विज्ञसभ चिन्ता व्यक्त कएलनि अछि । संस्कृतिक अपन अलग स्थान बाचल रहए से डा गंगेश गुन्जक कहब छन्हि । मैथिली संस्कृतिक प्रमुख पक्षपर नया दिल्लीमे २५ विद्यासागरक' सम्मान गोष्ठीमे बजैत गुन्जन मैथिली संस्कृतिक संरक्षणपर जोड देने रहथि।

नाटककार महेन्द्र मलंगिया मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे रहल टाना टापर, घरेलु उपचार, शकुन सहितके विषयके प्रविधियाक' पस्तुत कएने रहथि । मैथिली संस्कृतिक संरक्षणलेल एहिमे समाहित गुणके उजागर करब आवश्यक

रहल मलंथाया कहलथ्रा । भ्रग्री लामे सातो श्च्रन सात तरहक वस्तु खाक' याि गेलासं शुभ याि हएबाक चलन आ एहने चलनमे रहल वैजाथ्राकता थ्रश ध्यान जाएब आवश्यक रहल ओ कहलथ्रा ।

साश्चत्यकार देव शंकर नथ्रन मैथ्रिली भाषा संस्कृश्चाके मुल भावना थ्रपश्चत होबए बला काजके अपमाश्चात कएल जाए से कहलथ्रा । मैथ्रीलीक मौश्चकताके लश्चायाक' कएल जाए बला कोनो काजके बश्चष्कार कएल जाए नथ्रनक थ्रचार िश्रह । गायक, साश्चत्यकार सश्चत सभके मैथ्रिली गीत संगीत, भाषा संस्कृश्चाके पश्चाकुल असर होब बला काज नई करबालेल ओ आगह कएलथ्रा । नकल आ स्तरहीन पस्तुश्चाके अपमाश्चात करबालेल नथ्रन आग्रह कएलथ्रा ।

मैथ्रिली भोजपुरी एकेडमीक अध्यक अश्चाल भ्रा भ्रग्री लाक सास्कृश्चाक थ्ररासतके थ्रकासक सम्भावना बढाओल जाए से कहलथ्रा । साश्चत्य, लोक संस्कृश्चाके समृद्ध कएल जाए से कहैत ओ मैथ्रिली भोजपुरी एकेडमी एश्चथ्रशसं एश्चलेल काज हएबाक पश्चाबदता व्यक्त कएलथ्रा । भ्रग्री ला संस्कृश्चा लेल कएल जाएबला काज आपसमे बाश्च लेल जाए से भ्रा कि सुझाव िश्रह । संस्कृश्चाक थ्ररासतके रेखाङथ्कत करैत रोड मैप बनएबापर ओ जोड देलथ्रा । संचारमाध्यममे मैथ्रिलीके स िन भेटए ताश्चलेल पयास कएल जएबाक ओ जनतब देलथ्रा । थ्रल्ली पसाश्चत सरकार दुरदशनिमे मैथ्रीलीक स िनलेल थ्रल्लीक मुख्यमर्न ी शीला दीथ्कतके जापन पेश कएल जएबाक आश्वासन देलथ्रा ।

श्यााम भर मैथ्रिली भाषाक अपन संचारमाध्यम हुअए से माग कएलथ्रा । एश्चलेल संगश्चत पयास करबालेल ओ कायक्रिममे आगह कएलथ्रा । श्चहारमे अश्चाश्चक्त भाषाके ि◌णीमे मैथ्रीलीके राखल गेल कहैत भद्र रोष पकट कएलथ्रा । मातृभाषाक ि◌णीमे मैथ्रिली नई भेलासं थ्रदा ि मैथ्रिली नई पश्च रहल हुनक दाबी िश्रह ।

रंगकमी पश्चला झा मेमोथ्रयल टष  घोघौरक टष ी िनारायण झा मैथ्रिलमे पश्चाबदताक कमी हएबाक थ्रचार व्यक्त कएलथ्रा । श्चन्दीमे श्चखश्चाहार मैथ्रिल सष ा अपन मैथ्रिली भाषामे थ्रकया नई श्चखैया नारायणक पश्चापश रहथ्रा । मैथ्रीलीके समाग आ समान दुनु रहैत भ्रश्चा सन्तोषजनक नइ रहल ओ कहलथ्रा । अष म अनुसूथ्रामे मैथ्रिली आश्च गेलाक बाद आब सहज रपे भाषा संस्कृश्चाक काज आगु बढए नारायण कहलथ्रा ।

गोष्ठीमे मैथिलीलेल काज कएनिहार संस्थाक वर्तमान भूत भविष्यपर सेहो वक्तासभ बाजल रहथि । मैथिलीमे रंगकर्मीक विकासके बात होइतो एहिमे काज कएनिहारके प्रोत्साहनलेल कोनो पक्षसं ध्यान नई देल गेल कहल गेल । प्रमिला झा नाटयवृत्ति शुरु भेलाक बादो एकोटा नव पुरस्कार/वृत्तिक शुरुवात नई भ' सकल मैलोरंगक प्रकाश झा कहलथि । तहिना झा एकगोट मैथिल दोसर मैथिल पर विश्वास करए त सभ तरहक समस्या समाधान हएत कहलथि । मैथिलबीचके आपसी विश्वासके ओ विकासक मूलमन्त्रके संज्ञा देलथि ।

अन्तराष्ट्रिय मैथिली परिषदक कृपानन्द झा सरकारी स्तरपर मैथिलीके संरक्षण नई भेट रहल कहैत रोष प्रकट कएलथि । मैथिलीक संरक्षण लेल मिथिला राज्य स्थापना हुअए - झा कहलथि । मैथिली भाषा संस्कृतिसम्बद्ध लागल संस्था आर्थिक संकटसं ग्रस्त रहल कहैत ओ गोष्ठीमे सहभागीके ध्यानाकर्षण करौने रहथि ।

विद्यापति संगीत संरक्षणलेल योजनाबद्ध काज हएब आवश्यक रहल गायिका अंशुमालाक विचार छनि । दिल्ली युनिवर्सिटीमे संगीतसं एम फिल क' रहल अंशुमाला विद्यापति संगीतले स्थापित करबालेल व्याकरणक आवश्यकता पर जोड देलथि । मैथिलीमे लोकसंगीत आ युवाबीचके दुरी बढब चिन्ताक विषय रहल ओ कहलथि । 'लोकसंगीत नई बुझनिहार लडकीसं वियाह नई करब एहन चलन हएबाक चाही' मैथिली संस्कृति संरक्षणलेल अंशुमाला सुझाव दैत बजलीह ।

गोष्ठीमे सहभागी रंगकर्मी अपन व्यथा सेहो सुनौने रहथि । दिल्लीमे रहिक' रंगकर्मक' संघर्षरत कलाकार बाध्यताबश गुणस्तरहीन काज क' रहल मैलोरंगक दीपक झा कहलथि । एहिदारे कलाकारके अपमानित करबाक काज निकयो नई करए दीपकके आग्रह छनि ।

<u>संस्कृति बचएबाक अभियान</u>

मिथिलाक सास्कृतिक विरासतके संरक्षण सम्वर्द्धनक लेल योजनाबद्ध काज करबा पर जोड देल गेल अछि । मिथिलाक सास्कृतिक विरासत : संरक्षण आ विकासक सम्भावना विषयपर बजैत वक्तासभ एहन विचार रखलथि अछि ।
मैथिली लोक रंग दिल्लीक आयोजनमे २५ दिसम्बरक' सम्पन्न मैथिलोत्सवमे बजैत वक्तासभ मैथिली संस्कृति रक्षाक लेल ठोस कार्ययोजना बनाओल जाए से कहलथि । मैथिलोत्सवमे भेल संगोष्ठीमे लोक नाट्य, खानपान, हस्तशिल्प, लोक नृत्य, लोक विश्वास, पुरातात्विक संरक्षण, चित्रकला, पाण्डुलिपि, पावनि तिहार, देवी देवता,

रीक्षा श्रवाज, मठ-मश्कदर, पश्करन-ओढन, लोकसाश्कत्य, लोकवाद, श्वाष ाचार,मेला सश्कतक श्वषयपर वक्तासभ बाजल रहश्र ।

गोष ीमे क िकार अशोक, कमलमोहन चुनु, नाटककार महेन्र मलंश्वया, मोहन भारदाज, सीयाराम झा सरस, सुभाष चन्र यादव, गंगेश गुन्जन, मैश्वली भोजपुरी एकेडमीक उपाध्यक पो अश्वल श्व ि, डा अश्वल चौ िरी, देवशंकर नश्वन सश्कत वक्तासभ श्वश्वलाक सास्कृश्वक श्वरासतक श्वश्वान श्वषयपर बाजल रहश्र ।
भारतीय भाषा संस ान मैसुरक सहयोगमे मैलोरंग नया श्वल्लीक राष्टय नाटय श्वदालयमे कायक्रम आयोजन कएने ि ल।

मैश्वलोत्सवमे मैलोरंग रंगकमी पमीला झा नाटयवृश्व सेहो श्वतरण कएलक । एश्कबेरक नाटयवृश्वाक पओश्वाहाश्वमे पश्कल म िबनीक म िश्वता ि ीवास्तव, श्वतीय कोलकाताक वन्दना ठाकुर आ तृतीय श्वल्लीक नेहा वमा ि श्र।
रंगकमी पमीला झा नाटयवृश्वाक स ापना प िम मश्कला बाल नाटय श्वदेशक पमीला झाक स्मृश्वमे भेल अश्र ।
पमीलाक स्मृश्वमे स ाश्वत पमीला मेमोश्वयल टष ,घोघौर एश्क नाटयवृश्वाक स ापना कएने अश्र ।

मैश्वलोत्सवमे संगोष ी, वृश्व श्वतरणक बाद सागीश्वाक कायक्रम आयोजन कएल गेल ि ल । सागीश्वाक कायक्रममे सुन्दरम, घनश्याम, श्ववाकर, पभाकर, गुन्जन, अंशुमाला, कल्पना श्व ि, राखी दास,रीतेस सश्कतक कलाकार दशक्रके मनोरन्जन करौने रहश्र ।

<ins>उमेश कुमार महतो- पुि ि केशव महतो, बहादुरगंज</ins>

<ins>बहादुरगंज स' थपोटि</ins>

बाढक थ्यिश्ता बडे खतरनाक रहल, आब कोना के ओ बीत गेल। हमर सभक गाममे कोनो राहत कमी नै अएला, नेता सभ चुनाव मे अबै ि, मुदा रौदी दाही मे नै।

गाममे सरकारी स्कूल अथ्रि, सप्ताहमे दू थ्यन खुजल रहै ये, कशीबारी मे। चाथ्र थ्यन बन्दे रहै ये, अहा पिकार ि ि थ्रतेन्र भैया ई मुदा तै भेजी रहल ि। गामक लोक खेती बारी करै ये , िन,गेहूँ परवल खीरा, करैला, कदू ,तारबूज ,गोभी, बैगन आ मिली मारै ये।

थ्रराटनगर नेपाल मे सेहो लोक सभ सम्पर्नी सभ िथ्रि, 20 थ्रकमी दूर बहादुरगंजमे हास्पीटल अथ्रि, गाममे झोलािप हास्पीटल अथ्रि जे झोलािप डाक्टरक झोरामे रहै ये। थ्रिला साल एक गोटे के बहादुर गँज हास्पीटल् ले गेलौ, डाक्टर सभ पानी चढा देलकै , तीन थ्रदन तक पानी चढैते रहलै, थ्रकयो खेनाइ नै देलकै, ओ पेट फूथ्र क मथ्र गेल।

घर सभ फूसक आ घासक, िनक पुआरक बनल ि, अथ्रालतोमे से सभ जरैत रहैत ि।

एक-एक्अ आदमी के 5-6 टा बच्चा थ्रबैत रहैत ि, 9-10 बच्चामे।

थ्रराटनगर लग गाम मे मौसाक घर गेलौ, ओतए सरकार मैथ्रिली या नेपाली बाजय लेल कहने अथ्रि, सभ गोटे ओत मैथ्रिली बाजै िथ्रि, भारतमे थ्यिश्ता खराप।

नेपालमे मैथ्रिली के नीक थ्यिश्ताक कारन अथ्रि ओतुका मैथ्रिली मािैथ्रिल बाह न आ कनिकायसि मे सीथ्रात नै अथ्रि, ओतय महतो यादव सभ मैथ्रिली के अपन बुझैत िथ्रि. भारतमे कतेको ठाम मािदू जाथ्रामे सीथ्रात अथ्रि, तेसर के अशुद कहल जै ि से ओ अपनाके मैथ्रिली से दूर केने िथ्रि,जाथ्रा-पाथ्रा से अपन उनथ्रा जे हुए मुदा समाजक उनथ्रा नै हैत,जाथ्रा-पाथ्रा से मैथ्रिलीक उनथ्रा नै हैत,जाथ्रा-पाथ्रा से थ्रथ्रिला के उनथ्रा नै हैत

जाथ्रा-पाथ्रा से कुंठागस्त लोक नीक रचना नै थ्रथ्र सकताह आ घृनामे जरैत रह ताह।

नेपालमे घर फूसोके ि मुदा बेसी लकडी आ टीना के ि। ओत खेती बारी भारते जेका ि। ओतहुओ हास्पीटल दूरे ि।

ओते थ्रक्शा टेम्पू नै चलै ि, खाली बस चलै ि। ओत गाममे सेहो थ्रजली ि, गाममे मुदा रोड नै ि, ऊबर खाबर ि, बरसातमे कीचरक भे जाइ ि। शहरमे रोड ठीक ि। थ्रराटनगर से 20 थ्रकलोमीटर दूर नया बजार हथ्रयामे आिबजार मे बजार आ आिमे दार थ्रकाइत ि, जतए िट से पैघ बच्चा सभी दार पीबै ि।

आर समाचार बाद मे।

अनलकान्त (१९६९- ), मैथिली मासिक "अंतिका"क सम्पादक। सम्प्रति दिल्लीमे दूटा कथा संग्रह पकाशित।

कबइ-इचरि

अगस्त, १९९२

ििकान्तक दोकान मे सभ साझ िट-मोट महफिल जमैत िलै । जाहिमे ओहि बीच लगातार तीन दिन धरि आरएल उफरितन लाल सेहो, सँझुका पहर बुलै लेल बहराय तँ, शामिल भ' जाइ ि ।

साल-दू साल पर आरएल जखनिया कखनिया कखनियो एम्हर अबै ि, एहि महफिलक शोभा बिाक अवसर ओकरा पाय: भेटि जाइ िलै । एहि बेर कने बेसी आ अप्रत्याशित ि । से एहू लेल जे एक तँ बेसी दिन पर आयल ि, दोसर सासुरक परिस्थिति सेहो बदलि गेल िलै । दुनू सारक बीच बाट-बखरा भ' गेल िलै । करजाईन बजारक पुरना दोकान जाहि मे रेडियो-टीवी मरम्मतिक काज होइ िलै जेठका ििकान्तक फाट मे आयल िलै । िटका मदन अपन नव आ भव्य इलेक्ट्रॉनिक्सक दोकान नवे जिला बनल शहर सुपौल मे शुर कयलाक बाद सपरिवार ओतहि रह लागल ि । करजाईन बजारक सटले गाम गोसपुर सँ मदनक सम्बन्ध टूटि जका गेल िलै। साल मे दू-एक बेर आम-कटहर आदिक उपजाक हिस्सा लेव' सन काज सँ अबैत रहै । ििकान्तक परिवार गामे िलै । ओ अपने भोरे घर सँ दोकान अबैत आ खूब राति के घर घुरैत । इलाहाबाद मे बैसल गेल आरएल सन खानदानी दरभंगिया बिना पयोजने एते दूर सासुर जाइवला कहा ! ई तँ ओकर सासुक अचानक गंभीर रपे असक पबि आ कनिया धियाक फालतू जिदक कारणे आब' पलि रहै । ओना धियाक जिदक मोकाबिला क' सकबा जोग बहाना तँ बना सकैत ि ओ, मुदा एक टा गलती उत्साहवश अनजाने मे ओकरे सँ भ्' गेल िलै । भेलै ई जे एक दिन ऑफिस विदा होइ काल वोभा एक किलो एअसगुल्लाक फरमाइश क' देलकै । तत्काल तँ ओ कोनो ढंगक उतारा ि नइँ द' सकलै, मुदा साझ मे घुरल तँ दू किलो रसगुल्लाक संग !...

महँगी आ तंगी सँ गबि गृहस्थीक चलते जे आर्थिक खिच-खिच आ कृपणता सि इ भाव बनि गेल िलै ओहि मे आरएलक ई अप्रत्याशित उदारता दुर्घटना साबित भ' गेलै । बहस आ आरोप-प्रत्यारोप मर्यादाक सभ सीमा नाँघि गेलै आ आि राति धरि कानब-खीजब, रसब-फुलब संग चलैत वाक्-युदक कारणे रातुक भोजन सेहो सथगित भ' गेलै । ई सभ सहि क' भुखलो सुति सकै ि ओ, मुदा सुतैत काल धिभा तेना ने नाक सुकैत हिचकब शुर कयलकै जे ओकरा आत्म-समपण करहि टा पलै । एहने क्रम मे कयल करारक कारणे सासुक चिजासा मे सासुएअक ई याि आरएलक कपार बियल िलै । देह-मिलिल अारोि-सम्बन्धी खचपिर जे बीस बेर मनन करैत हो, तकरा लेल एहि याि खचि!...

जे-से, सासुर अबै आदिक एहि सँ पहिनेक घटना सभ आरएल लेल रहल-खेहल िलै । सार सभक

बीच भेल बाट-बखरा आ‌क सासुक असक पलिाक बाद शसुरक रंग-रभस मेभेल पगश्ना सेहो कोनो नव बात नइँ लिै । थ्रभा तँ कीश्नमीन बनेबे कयलक, मुदा ओकरा बुझैक शश्नत, नव ऊजा आ उतेजना जाश्न स‍ी सँ आरएल के भेटलै तकरा ओ कखनो श्नसश्न नइँ सकल ।

भेलै ई जे आरएलक पहुँचला पर पश्नल साझ दार आ मुरग फाइक खचउिठब'वला जाश्न दू टा श्नकन मुल्ला के फँसाक' िकान्त अनने लि, ओ दुनू दूए पेग मे बहक' लगलै । दू पीस पश्नश्न एक टा खाकी श्नफाफ मे फराक क' कतहु पठा देने लिै िकान्त । बाकी मे सभ कने-कने टोगने लि श्नक प्लेट मे बचल अंश्नम टुकि लेल सभ एक-दोसरा के 'अहा श्नअ' अहा श्नअ'?...'क अनावश्यक आगह कर' लागल । ताश्न पर पश्नल मुल्ला दोसर सँ कहलकै, ''एखने एक प्लेट आरो आश्न जाइ तँ सभ सँ पश्नने टाग तोकी घीचमे!''

''खाय नइँ सकै ि, से तँ नइँ कहश्नयौ हम ? आि श्नलो तँ आराम सँ आरो खा सकेते ि!'' दोसर गुल्ला बजलै ।

''हम तीन पाव आरो ख सकै ि ।'' पश्नल कहलकै ।

''हम तँ सवा श्नलो मे एको टुक नइँ िश्न सकै ि ।चाश्न-पोश्न क' खत्म क' देबौ । नइँ खा सकबौ तँ एक सय टाका जुमाना ! जाच कर'क हौअ ककरो तँ ऑडरि द' सकै ि!'' िकान्त कहलकै ।

''हम दू श्नलो मे एको टा पातर सन दरडी िश्न नइँ फेकब । नइँ खाय सकलौ तँ पन्रह श्नन मुफ्त खटब ।...चलू पूरा महीनाक दरमाहा काश्न लेब ।'' मेवालाल चहकैत बाजल ।

''चुप हरामी! दू श्नलो मुरगा एक िरी मे परसल कश्नयो देखबो केलही ?'' िकान्त डाश्न के बरजलक ।

सभक अतृप्त कुिक ध्यान राश्न आरएल सन मक्खीचूसोक मन कयलकै जे एक प्लेट अपना श्नस सँ मँगवा दै । मुदा नमरी बहरेला पर एको पाइ वापस नइँ भेटबाक आशंका सँ ओ चुप्पे रहल । दोसरो केओ साहस नइँक' सकल ।...सभक मन िहायलै रहलै ।

दोसर साझ एक टा बूढ़वा मुल्ला के फँसौने लि िकान्त आ दारक संग डेढ़ श्नलो रेवा-बचबा मािफाइ करबाओल गेल लिै । आरएल अझके देखलक, श्नक्ि मािएक टा खाकी श्नफाफ मे राश्नक' िकान्त स्वयं दोकानक पिआि श्नस गेल लि । घश्नक' पेग बनौलक आ सभ गोटे कौआ-श्निा जका बेसी सँ बेसी माि झपटैत दारक घोट लेब लागल । जखन श्नलास-प्लेट साफ भ' गेलै, तँ काज-िक संग गप्प हँकैक दौर शुर भेलै । गप्पक श्नषयक ओना तँ कोनो सीमा नइँ लिै–गाम-घर आ बजारक बदहाली सँ राजनेताक दलाली श्नक चचा एक समान भ रहल लिै–मुदा बेसी बात घुश्न-श्नश्नक' खायबे-पीब पर आश्न जाइ लिै । सहसा तखने सभ सँ बेसी मािउदरस्िक चुकल खूसटसट बूढ़वा कहलकै, ''एश्न पर सँ रसगुल्ला भेश्न जाइत, तँ आनन्द आश्न जाइत !...पचास तँ एक सास मे गटकल जा सकै ि ।''

''हम तँ पचहतश्न िश्न एम्हर-ओम्हर नइँ ताकब ।'' िकान्त लेर खसबैत बाजल ।

''हम एक सय नइँ खाय गेलौ तँ एक मास मुफ्ते खटब ।'' मेवालाल उत्साह सँ भश्नक' कहलकैओ ।

''चुप हरामी ! हरदम हमरा सँ बश्नए क' बाजत !...कश्नयो एक सय रसगुल्ला देखबो कयलही?'' िकान्त दहालिक ।

आरएल गौर कयने लि जे एहन गप्प जखन-जखन श्निति, मेवालाल सश्नपहुँ सभ सँ बश्नक' बाजी लगबै

छि आ श्रीकान्त कखनो डाटब बर्दास्त नइँ करैत छि ।

ओहि साझ घर घुरैत काल रस्ता मे मेवालालक मादे श्रीकान्त सँ फैल सँ पूछताछ कयने छलि आरएल । शुरू मे तँ श्रीकान्त गुम्मी लाधने रहलै, मुदा फेर नीक जकाँ बतौनहुँ छलै, "आसल मे मेवालाल आदमी तँ बड़ काजक यए! खूब हुनरमंद सेहो, मुदा व्यवहार सँ तेहने चटोर आ अहदी!...चलबैऐ भरि दिन श्वक्शा, मुदा दारू आ नीक-अधकुत तरल-बघारल रोज चाहीएकरा । घरवाली आ तीन-तीन टा बेटी छै, तकर धियान्तो ने एकोरती !...ई तँ मदनक कृपा जे आइ ओ हमरा संग ऐश क' रहकऐ !..."

थोड़े कण बालक ल' भेद खोललक, "भेलै ई जे एक दिन ओ हमरा दोकान आयल आ एक टा एहन रेडियो जकरा ठीक करैत हम हारि गेल रही, ओ पाचे मिनट मे चालू क' देलकै । हम पुछलिऐ, ई काज कतय सीखलही ?' तँ बतेलक जे मदनक दंग उठैत-बैसैत थोड़े गुण पाबि गेलिऐ भैया!'...असल मे पहिने हम तँ कमे दोकान पर बैसैत रहिऐ । बाबूजीक बाद मदने सम्हारने रहै ई पूरा कारबार । बीन भेलाक बाद कपार पर अयलै, तँ...। तैयो की? हम तँ एखनो कमे काज ठीक-ठीक क' सकै छीऐ । एहि हरामी मेवालाल के हमरा सँ बेसी इल्म आ अनुभव छै, मुदा से पता आ विशास नइँ छै ओकरा ।" एही संग अनायास खूब जोरगर ठहाका मारलक श्रीकान्त आ निखटोलीवला मोछि पारक फेर कह' लागल, "...ते हम साझ टा के तीन घंटा अपना संग बैसायब शुरू कयलहुँ, तान-चारि मास सँ । पन्द्रह टके रोज, उपर सँ दारू-नाश्ता फी!...मंगल-मंगल हाटरोज एकर घरवाली एक सय पाच टाका ल' जाइ छै । दिन भरि श्वक्शा सँ जे होइ छै, सेहो दारू मे नइँ उड़ि छै आब! दिन घुरि रहल छै ।..."

"तीन घटा मे अहा के ई रोज कतेक लाभ दै यए?" आरएल पूछलकै ।

"रोज एके रंग तँ नइँ होइ छै, तखन ई बुझियौ जे डेढ़-दू सयक एकन कज क'ए दै छै जकरा पहिने हम घुरा दै छिऐ ।" श्रीकान्त सहज ढंगे कहलकै ।

"तखन होलटाइम किऐ नइँ राखि लै छीऐ?" तह धरि जयबा लेल आरएल आरो कुरेदलक ।

"असल मे तकर कैक टा कारण छै । एक तँ छोट बजार, ओतेक काजे नइँ अबै छै । दोसर, सभ सँ पैघ बात ई जे दिन भरि काज कयने एकरा पता चलि जयतै जे ई हमर कतेक काज करै छै। आ ईहो जे कतेक जनै छै । तखन भ' सकै छै जे बेसी पाइ मागय आकि मदन सँ मीलिक' अलग काज शुरू क' दिअ' आकि ओकरे लग चलि जाय ते हम एकरा गाहक सँ नइँ बझायाब' दै छीऐ, नइँ दिन मे काज लै छीऐ आ बिना दारूक सेहो नइँ। दारू पीबि ई की बाजै आ करै छै से हमरा जनैत बाद मे एकरा मन नइँ रहै छै ।..."

आरएल आरो थोड़े पूछि' चाहै छलि, ताबत घर आबि गेल रहै ।

तेसर साझक महफिल मे थानाक हवलदारक संग एक टा स्थानीय नेता सेहो छलै जे विधानसभाक टिकट लेल एक संग कतेको पाटी मे जोर अजमाय रहल छलै । एहि साझक खर्च श्रीकान्ते के उठब' पड़ल छलै। एहू साझ आरएल ध्यान देने छलि जे जलखै मे मँगाओल आमलेट-भूजा आ सलाद-पकौड़ी मे सँ थोड़े अंश ओही लिफाफ मे अलग क' पैकेट श्रीकान्त स्वयं पछुआड़ि दिस ल' गेल छलि महफिल समाप्त भेला पर पान खयलाक बाद नेता आ हवलदारक संग लागल श्रीकान्त जखन थाना दिस चलि गेल, तँ मौका पाबि ओ मेवालाल सँ पूछलिक, "अहा सँ एक-दू टा बात पूछ'क मन होइ यए । जँ अहा बेजाय नइँ मानी तँ...?

"यौ मेहमानजी, अहा तँ चौहदीबान्ह' लागलिऐ ! सोझे मुँहे पूछू ने, जँ फूसि कही तँ बझिन चोद होइ, देह

काज नइँ आबय!'' मेवालाल कहि क' बाजल ।

''तीनू साझ देखलहु मुरगा, माछ, अंडा जे आबि आयल, तकर एक हिस्सा एक टा लिफाफ मे अलग क' श्रीकान्तजी पठाआ देल' गेलथि। से ककरा लेल ?'' आरएल नहुए पूछलकै । अपनाला पश पर जाइ लेल शुरआत यैह ठीक लगलै ओकरा ।

मेदालाल कान लग फुसफुसाक' बाजल, ''एहि मकानक मालकिन पछिला साल भरल जवानी मे विधवा भ' गेलि । पति फौज मे रहै, बोर्डर पर बर्फमे गुम भ' गेलै । बेचारी बाहाणी ई सभ कोना बना-खाय सकतै?ते श्रीकान्त जी चोरा-नुका...'' आओ मुस्किआब' लागल ।

किछु क्षण बाद फेर ही-ही करैत ओ आरएल दिस तकलक, ''एक टा बात कही, पेम मे कमीना सँ कमीना पाणी सेहो मनुक्ख भ' जाइ छै!...नइँ बुझलिऐ मेहमानजी?''

''बुझलहुँ-बुझलहुँ!'' पकटत: तँ आरएल मुस्किआ देने छलै, मुदा भीतर सँ सरकि गेल रहय । किछु क्षण पहिने धरि ओहि रसिक पति आरएलक भीतर जे भाव छलै, से अनायास बदलि गेलै । सहसा ओहि रसिक पति सम्मान सँ भरि गेल छलि ओ । फेर पूछने छलि, ''अच्छा, एक टा आर बात कहू ! तीनू दिन हम देखलहुँ जे अहा मुरगा, माछ, रसगुल्ला सब मे सभ सँ बेसी खाइक बाजी लगा लैत छी । ई कहू जे घर मे रोज कते खाइ छीऐ ?''

अचानक मेवालाल गंभीर भ' गेल ! किछु क्षण चुप रहिक' ओ बाजल ''मेहमानजी हमहू अही सभ जका खाइ छी । कने भात कि एकाध टा रोटी बेसी !...सैह, कोनो हाथी-घोड़ा नइँ ! अहा ईहो बुझ चाहै हैबै जे घर मे हमर पेट भरै छै कि नइँ ? भरै छै मेहमानजी, भरै छै! हमहू भरि पेट खाइ छी, हमर घरवाली आ बच्चा-बुतर सब सेहो ।...कहियो-कालक बात छोड़ि दियौ, से बहुतो के होइ छै। हँ, रसगुल्ला आकि मुरगा सन चीज भरि मन कहियो नइँ खेलिऐ । नइँ जानि कहिया सँ ई लौलसा लागल यए, से कहियो-काल आसा मे भरिआक' किछु बोलि दै छीऐ । मुदा कैथ-बाभन आर के देखियौ, बराती मे जते खायत नइँ तते छितायत । तैयो हरदम खाइ लेल लेर चूबबैत ढोंग हाकैते रहत !''

आरएल चुपे रहल । आकोश सँ भरल मेवालालक ठोर काप' लगलै । सोझा मे खुजल रेडियोक पोइन्टस चेक करैत, रागा हटबैत-लगबैत, रेडियो पर आबि रहल गीत बजैत आ बंद होइत रहलै । ओहि रेडियोक काज पूराक' सहसा ओ फेर बाज' लागल, ''मेहमानजी, खाइ के ल'क' हम गपो मारै छीऐ तँ एक मासक दरमाहा दाव पर लगा क' । कियो हिम्मती कखनो तैयार भ' गेल आ हम किनसाइत हारियो जायब, तँ एक बेर भरि मन रसगुल्ल खाइक मनोरथ तँ पूर भ' जायत ने !''

''चलू हम खुआबै छी । देखै छी, कते खाइ छी अहा ?''

''नइँ मेहमानजी, बिना बाजी लगौने नइँ खायब हम । फेर आइ सयवला भूखो नइँ यए, नइँ तेहन मूडे ।...'' ओ रेडियो मे नजरि गड़ौने बाजल ।

आरएल के अफसोच जका भेलै जे ओ बेकारे ओकरा घ कोचि आहत क' देलक । ते संयत स्वर मे पूछलकै, ''आइ कते ? पचास तँ खाय लेब ने, बिना रस गारने ?''

''साठि खाय् लेब, मेहमानजी!''

''चुप हरामी!'' तखने घुसिक' आयल श्रीकान्त अनचोके दहाड़लक ।

मुदा आरएल हस्तक्षेप कयलक, ''श्रीकान्तजी अका शान्त रहू । आइ हम खुएबे एकरा । मँगबाउ सामनेक

दोकान सँ ।''

''शतकिी ि?'' ििकन्त सेरायल स्पर मे पूिलकै ।

''तय क' श्रअ'!'' ओ डराइते-डराइत बाजल ।

''जँ नइँ खाय सकल तँ एक सय बीरा रसगुल्लाक दास एकरा दरमाहा सँ काश्ुक' अपना सभ दार-मुरगा आ रसगुल्ला खायब । आ, जा ि श्ि अपन सभ खायब? एकरा कान पकश्ीक' उठ-बैश्ि करैत रहय पतिै ।...पुश्ीयौ, शतमिंजूर ि?'' ििकान्त नजश्ि फेश्िक' बाजल।

''मंजूर ि!'' मेवालाल पूवत्ि गंभीर आ कि आवाज ने बाजल, ''जँ खाय गेलौ, तँ ...?''

''इनाम मे स्पेशल पान!'' ििकान्त मुश्कल सँ तामस दबवैत कहलक ।

आरएल श्ुकि बाज चाहैतो पतीक जेठ भाइक श्िहाज क' चुपे रहल ।

मेवालाल सात श्िनट मे िपान रसगुल्ला खयने िल श्ुक ओकरा आँश्ि सँ नोर झहर' लगलै ।

आरएल पूलकै, ''श्ुक भेल मेवालाल?''

''मेहमानजी, पश्िला दशहरा श्िन हमर जेठकी बेटी रसगुल्ला लेल श्िद पकश्ि लेलकै । तमसा क' हम दू-तीन चाट माश्ि देश्िऐ । पाइक तेहन श्िकश्ि रहै जे...। से ओकर माय राश्ि भश्ि झगिित रहश्ि जे अपना दार लेल एकरा पैसा होइ ि, बेटी के एक टा रसगुल्लाक बदला पबश्ियो-श्िहार के िपि ! अपना जीह पर साप नइँ कटा होइ ि!...तश्ुया सँ कते बेर सोचश्िऐ जे कश्ुयो ल' जायब रसगुल्ला । सात मास बीश्ि गेलै, नइँ ल' जा सकश्िऐ । जेना भेलै, हम तँ गपागप श्ाश्ीए रहल श्ीऐ!...'' एते कहैत-कहैत ओकर श्ुचकी जोर पकश्ि लेलकै आ नोर झहरब आरो बश्ुि गेलै । प्लेट मे बचल चारो रसगुल्ला अखाद वस्तु जका पिल ओत'क वातावरण के भारी बना देने िलै ।

''खा नइँ सकले ने तो! बाजी हाश्ि रहल ि । आब चुमाना लाश्ि जयतौ ।'' ििकान्त ओकरा जरल पर नोन श्ीटैत बाजल । मुदा तखने दोकानक बाहर देबालक श्िकट अचानके आश्िक' ठाश्ुि भेश्ि आमक फािि सन-सन आँश्ि वाली गोर-नार युवा स्त्री के देखतश्ि ओकर पारा नरम भ' गेलै । आरएल के सहसा खाकी श्िफाफ सभक स्मरण अयलै !... एखनो ओकरा पश्ि सम्मानक भाव सँ भरल िल ओ ।

''नइँ, हारलौ नइँ! ई चाश्ि टा की, खा तँ सकै ि पाच-दस टा आरो। हम पेम सँ कहलौ, जँ हाश्ि नइँ मानी तँ ई चारो रसगुल्ला घर लेल ल' जाइ । तीन टा तीनू बेटी आ एक टा...।'' मेवालालक बोली लखिि गेलै आ सश्ुपहुँ श्ुचश्ुक-श्ुचश्ुक' कानय लागल ओ । ओत' ठाश्ुि कोशी-कमलाक बाश्ुि जका दलमश्ित करयवाली स्त्री आब दोकानक भीतर मेवालालक लग आश्ि गेश्ि िश्ि आ श्ुकि बाज' जा रहश्ि िश्ि...!

...श्ुक ठीक ओही क्ण गाम सँ एक टा िि दौिल हाफैत अयलै आ हकलाइते जेना-तेना ििकन्तक कान मे श्ुकि कहलकै ।

फेर ििकान्त आरएल श्िस तकलकै–एक संग तामस, घृणा, श्ीकार, दया आ पाििि भरल नजश्ि सँ !

आरएल तखन श्ुकि बुश्ि तँ नइँ सकल िलै, मुदा कोनो पैघ अनहोनीक आशंका जर र ओकरा कँपाब' लागल िलै ।

तुरंत मेवालाल के चाभी िमा, दोकानक सभ टा श्िम्मेदारी ओकरा पर सौश्ि, ििकान्त बाहर भेल िल । ििकान्तक पाि-पाि संशयगस्त डेगे आरएल सेहो बहरायल रहै ।

गाम सँ आयल िाि के रोकक' ओत' ठाढ़ सिी घटनाक मादे खोदबेद कर' लागल छथि । मुदा झट-पट सभ बात उगलि िाि सेहो दौड़िक' हुनके सभक पिाि ि' लेने िलै।

दौड़िक' आयल िािक पयरक ििक पर आरएल पाि तकलक । ओकर नजिर िाि के पार क' दोकान मे ठाढ़ सिी पर गेलै–ओ सिी मेवालालक आरो लगीच जा गप्प करैत रोमाचक मुरा मे फ्रीज भ' गेल आरएलक स्मृिि-पटल पर ।

ििक काल बाद आरएल के गामक घटना मादे जानकारी देने िलै िकान्त ।...जे िपभा अपन मोटरकार वला बहनोइक संग हुनका गाम मािि खाय लेल भािग गेल !...

आरएल के एतबे मन पिि िलै तखन जे ओकर साढ़क गामक कबड़ बि मशहूर ि । वैह कबड़ जे पािा सँ बहराय गाि पर चढ़िक' हवाखोरी करैत ि!...वैह जीवट कबड़!...मुदा...।

आ यैह सभ सोचैत कखन घर पहुँचल आ कोना बेहोश भ' गेल िल आरएल, से सभ ििओ मन नइँ ि ओकरा !....

११ अगस्त, २००२

आरएलक िटकी बेटी नीनाक पहिल बि-िड िलै । साझ उतरि रहल िलै–एखन ओते सघन अन्हार नइँ भेल िलै, मुदा बाहरक ओसरा मे अन्हारक आभास होअय लागल िलै । ओसराक आगा लॉन मे आरएलक िपता एकसरे बैसल खािस रहल िलाह । नै सालक बेटी नीरा आ पाच सालक बेटा र नू अपन दोस्त सभक संग भीतरका कोठली मे चहल-पहल मचौने िल जत' बि-िडक सजावटक संग नीनाक साज-िृगार सेहो भ' रहल िलै । पिसक एक टा सहेलीक संग िकचन मे व्यस्त रहलाक बादो िपभा गुनगुना रहल िथि। मुदा बाहरक ओसरा मे कतेको साल बाद भेटल अपन एक टा पुरान िमि संग रहलाक बादो आरएल उदास िल । दस साल पुरान कैसेट जकाना समाप्त भेलै, आरएल चुप भ' कतहु दूर हेरायल-हेरायल जका भटक' लागल िल ।

सहसा ओ दोस्त आरएलक ध्यान भंग करैत चुप्पी तोिलक, ''मीत, ई कह' जे एहन की बात भेलै तकरा बाद जे तो ओहि घटनाक सदमा सँ आइ िधि उबरि नइँ सकलह? एहि सँ बढ़िया तँ ई होइतह जे तो ओही समय तलाक ल'क' अलग भ्' जयतह । एना घुटु-घुटि क' िजले-िजले मरैत रहब...?''

िबीचे मे दोस्त के रोकिक' आरएल बाजल, ''नइँ-नइँ, तो नइँ बुझलह मीत ! तो बुझियो नइँ सकै िह! िबलकुले ने बुिझ सकलह तो हमर पीिा!...'' फेर िि कण र किक' ओ कहलकै, ''असल मे महत्त्वपूणि ई नइँ ि जे मािि खाय लेल ओ भागल आ भािगक' कत'-कत' गेल !...आिक एकसरे भाइक बुते िकऐ नइँ घुरलै आ घुराब' लेल के-के गेलै आ कोन-कोन तरहक शब्दनक जर रल पिलै?...ई सभ कोनो बात नइँ...महत्त्वपूणि ई ि जे घुरिक' अयलाक बाद ओकरा अपन कयल पर पितावा आिक हीनताबोि नइँ भेलै । महत्त्वपूणि ई ि जे हम दखिक' रहलहुँ तँ रहलहुँ, ओकर ठसक बरकरार ि!...हम ओकरा िि'क बात अधीते सोिच सकै रही, मुदा नइँ सोचलहुँ! जनै िह, िकऐ?''

कणभरि िबलि फेर वैह कह' लगलै, ''िकान्तक दोकान मे जे िपावा भेटल िथि, ओ हमरा ई अकील देलक जे मनुक्ख सभपहुँ जीबैत अिि तँ ओ अपन भूखक कारणे । आ भूखक सम्,मान लेल जर री ि ओहि दशा मे रहि आ कबड़ सन इच्छि । हमरा तँ एहि बातक गौरव अिि जे हम ओहि सिीक पहिा ि

जे बदनामीक हद िश्च जाक' ओ अपन भीतरक मनुक्खक रश्च आ इच्छिक पाश्चव कतरब नइँ जानलक । दुख मा ि एतबे जे हम एश्च गौरव के भीतर सँ स्वीकार करैतो व्यवहार मे नइँ आश्च सकलहुँ, ते अपन इच्छिक पाश्चव उठेबा मे असमर्थ िहोइक दंड भोगै ि ।'' फेर एक टा पैघ सन चुप्पी पसश्च गेलै जकरा तोिबाक इच्छा दुनूक भीतर जीश्चवत होइतो, साइत अपन सामर्थ्य गिमा चुकल िलै । आ, दुनूक बीच टेबुल पर राखल खाली कपक अलावा नाश्ताक प्लेट मे दू श्चाहाइ सँ बेसी बचल पकौि ि सेराय गेल िलै ।

एत' आ ओत'

आइ-काल्हि कनाट प्लेस मे चलैत-चलैत हमरा लगैत अछि, अपना गामक दशहरा-मेला मे घूमि रहल छी। नइँ, ओत' मेला मे रंग-बिरही चीज कीनि पबैत रही, नइँ एत' शो-रूम मे ढुकि पयबक साहस क' पबै छी। ओकलोक ओकलो रसगुल्ला-जिलेबी तौलबैत आँखि मारते रास खेलौना ल'क' जाइत लोकके डराइत-ललचाइत देखैत रही ओत' आ एत' विशाल-भव्य मॉल आ नेरलाज-मैकडोनाल्ड सँ चहकैत फुदकैत बहराइत अदनिला अप्सरा के इन्द्र-बेर संग रभसैत, डेशिंग ओकस करैत ईर्ष्या आ कोि सँ देखै छी।

राष्ट्रपति भवनक पछिआडक जंगल मे एक दिन एक टा बेल गाछ लग कनेकाल ठमकल रही। ओकरा जड़ि मे कि माटिक महादेव फेकल छल, कि अमात्य आ कातक झोंझ मे कोनो सापक छिलि केचुआ पुरबाक बसाहकीमे डोलि रहल छल। हमर आँखि क्षणभरक लेल मुना गेल। ओत' एहने सन एकटा बेल गाछ तर हमर बालपनक धियाक गदछि भूत मचोडने छलै। ओकरा मौनी मे कामकि चूड़ि ओहिना नजरि पड़ै अछि!... मुदा हम कतहुँ हेरायल-भोतिआयल नइँ रही।हम राष्ट्रपति भवनक पछिआडक जंगल मे ओही बेल गाछ लग ठाढ़ रही। हमराओही आसपास मे एक टा अस्तबलक घोड़ाक पेट करबाक छल जत' सँ कहिया घोड़िक नालक सागसंग होइत छलै। से ओहि बेरहट-बेरा मे भुखायल सन हम अपन पेट पूरा करबाक ओरिआओन क' रहल छलहुँ कि अचानक एक टा गमक हमरा विचलित क' देलक। गाम मे नवका धान-चूड़ा कुटैकाल जे गमक बहराइत छल, एकदम वैह गमक छल! आसिनक बसात अगहनी भ' गेल छलै।... मुदा हमर मन बताह हेबाक सीमा धरि अवसादगस्त भ' गेल।

ओहिना एक साझ कुतुब मीनार लग सँ गुजरि रहल छलहुँ। एक टा छौड़ी अपन संगी छौड़ी के जोर-जोर सँ बता रहल छलै जे ओकर सपना मीनारक एकदम ऊपर सँ दिल्ली देखैत रहबाक छै। हम सद्यःआयल भुइँ पर लगाओल पुआरक सेजौट परक सपना मन पाडय़ लगलहुँ कि तखने हमरा मोबाइल पर बीछी साग बाजल। छिटकी मामक फोन छल। ओ कनैत-कनैत बाजलि, ''देखियौ यौ भागिन बाबू, आब हम की करबै!... बैमनमा सब हुनका सी.बी.आई. सँ पकड़ि देलकनि। फुसियेपाइ लेबाक नाटक मे ओझराक'...।" हमर मामा इनकम टैकस कमीशनर। हम एक-दू बेर गेल छी हुनका 'रेजीडेंस' पर, मुदा हमरा डेरा मोबाइल पर हुनका लोकनिक सद्यःआयल स्वर आ कि एसएमएस टा आयल अछि। तखन अपना भीतरक भाव नुकबैत हम की आ कोना बाजल, से मन नइँ अछि। हमर अदना-सन पकिार काज नइँ अयलनि, अपने पाइ वा जे कि एकबाल!... से बात जे-से। मोबाइल स्वीच-ऑफ क' हम जेब मे रखनहि रही कि हमर मन-पाण एक टा टटका गमक सँ सराबोर भ' गेल। छिमाया, सबसो सभ देलाक बाद झोर मे टभकैत माछक तीमन सँ घर-आँगन मे जे गमक पसरि जाइत छै, सैह गमक हमरा मतौने जा रहल छल। हम अगल-बगल छियासल जे कतहु ककरो घर वा झुग्गी मे रन्हा रहल होयतै, मुदा ओहि झोलअन्हारी मे हमरा चारभर जंगल-झाड़ आ करकटक अम्बार छल, कि तेहन नइँ देखा पड़ल जत' ओहि गमकक सोत ठेकानि सकतहुँ। अंतत: हम अपन जेब मे हाथ ढुकिया देब' लगलहुँ जे माछक इंतजाम भ' सकै छै वा नहि!...

हाले मे हम अपन सेठक कृपा सँ महीनबारी गुलामी सँ मुक्त कयल गेल छलहुँ। आब हम तथाकथित 'स्वतंत्र' दिहाड़ी मजदूर छी। आ दिहाड़ी पर खट'वलक कपार मे जे बौअयनी लिखल रहै छै, से हमरो संग छल। आ ते ओत' सँ एत' आयल मैथिल लोकनि सँ भेटघाट सेहो किछु बेसी भ' रहल छल। से एक टा एहने भेट मे हमर एक गामीण कहलनि, ''बाउ, ई नगर तेजाबक नदी थिक जाहि मे अपन मैथिले टा नहि, कोनो मनुक्ख बाढ़ि मे भसिआइत माल-जाल, घर-दार आ लोकवेद जका बिलाय जाइत अछि।"

तखन मधुपुरा-सिंहेश्वर दिस सँ आयल एक टा युवक बाजल, ''हौ भैया!,बाजार, मशीन आ सीमेंट तर दबैत-मरैत लोकक नगर थिकै यह ई।"

''हँ, भाइ, ठीक कहलह! मुदा ओत' दलदलो मे जकरा जगह नइँ भेटलै, ओ एत', बारहदक ढेरी पर सही, एक टा नव मिथिला तँ बसबै छै!..." बजैत-बजैत हम हकम' लागल रही आ भीतर पसेना-पसेना भ' गेल रहय।

से लगातार एहने सन मन:स्थिति सँ गुजरि रहल छलहुँ हम। आ, यैह पछिला पखक गप्प थिक। एक साझ विद्यापति बाबाक बरखीक हकार पूर' हम नोएडा गेलहुँ। ओत' बहुत दिन पर भेटलाह, बतौर कलाकार दरभंगा सँ आयल मिथिला नरेशक अंतिम पुरोहितक परपौत्र महानंद झा। आयोजक सँ पूरापूरी विदाइ
असूलि अटैची डोलबैत फराक भेले छलाह कि हम नमस्कार कयलियनि। बहुत बरखक भेटक बादो चिन्हलनि आ एक कात ल' जाक' हाल-चाल पूछ' लगलाह।
गप्पक कम मे ओ बेर-बेर एम्हर-ओम्हर ताकथि। तखन हम पुछलियनि, ''ककरो तकै छी की?"

''हँ यौ! दरभंगक कमीशनर साहेबक बेटा एत' पोफेसर छथि। ओ हमरा अपना ओत' ल' जाइवला छलाह। देखियौ ने, हुनकर आगह देखि हम अपन सभ पशंसकके निराश क' देलियनि। सासद जी छथि सँ लाछि क' लेलहुँ। असल मे होटल मे हमरा जहिना जेल बुझाइ अछि, तहिना नेता सभक ठाम मेला बुझाइछ। ते हम कतहु जाइ छी तँ अपने कोनो समागक घर रहै छी।" चेहराक बेचैनीक बादहु महानंद जीक स्वर समछिनिल छलनि।

''से तँ नीके करै छी!" हुनक बेचैनी कम करबाक लेल हम आशस्त कयलियनि, ''कहने छथि, तँ अबिते हेताह!"

''से आब नइँ लगै अछि। चारिए बजेक टाइम देने रहथि। कोनो मीटिंग मे फँसि गेल हेताह। ...देखियौ ने, हम ने पते लेने छी, ने फोन नंबर। आब तँ अवगहमे पड़ि गेलहुँ।" हुनक परेशानी आब सभ तरहे पकट भ' रहल छल।"

हमरा साफ लागि रहल छल जे ओ होटलक खचबिचब' लेल ठहार ताकि रहल छथि। एम्हर हमरा ई डर किछु बजबा सँ रोकै छल जे नइँ जानि कते दिन छथि मेहमानी डटाओताह। अंतत: पुछलियनि, ''कहियाक

वापसी अछि?"

''परसू साझ स्वतंत्रता सेनानी एक्सपेस पकड़बाक अछि। टिकटो आर.ए.सी.
27 सँ कन्फर्म भेल वा नइँ, मालूम करबाक अछि।" आ हमरा हाथ मे मोबाइल देखि झट जेब सँ टिकट बहार कयलखिन्ह, ''देखियौ तँ मोबाइल सँ, टिकटक स्टेटस
की छै?

दुइए दिनक बात आर्थित जाखि हम स्वमत कयलहुँ, ''ई कोना देखै छै, से हमरा नइँ पता! हमर कनिया देखि सकै छथि। आ से तखने हैत जँ अहा हमरो अपने समाग बुझी आ हमरे घर दू दिन लेल चली।"

''आ से की कहै छीये! अहा तँ अपनो सँ अपन समाग छी। हम तँ घरेक लोक बुझै छी अहा के। ठीक छै, अहीक घर जायब। ओ पोफेसर आब आबियो जयताह तँ हम नइँ जायब हुनका ओतय। ओ तँ कमीशनर साहेब अपनहि फोन क' कहलखिन्ह चलै काल ते सोचल!!... फिर, छोड़ू आब ओहि गप्प के। आ ओ हमरा संग चलबा लेल अगुआयले सन छलाह।

हम नइँ चाहैतो अपना परताखि रहल छलहुँ जे एतक पैघ कलाकार दू दिन हमरा घर रहताह। से बसक भीड़ मे ठाढ़ हम हुनके स्वागत-सत्कार मादे सोचि
रहल रही।

किछु काल बाद हम सब यमुना विहारक स्टैण्ड पर बस सँ उतरलहुँ। मेन रोड छोड़ि अपना गली मे ढुकले रही कि गलक ओहि पार परक चाह दोकानवला भैया गणेश पाछाँ सँ हाक-बाक' सोर पाड़लक। ओकरा दोकान मे हमर अबरजात किछु बेसी छल। अपन भाषा भाषीवला लगाव सेहो रहय। आ ओ भैया एक तरहे हमर मुँहलगुआ जका भ' गेल रहय। हम ओकरा गाम-घर सँ भले पत्रिचित रही, मुदा हमरा मादे ओ नइँ जाखि सकल रहय। मुदा तखन हमरा पाछाँ घुमते ओ पुछलक, ''अहाक घर सहरसा लग, विहरा छी ने!"

''से के कहलकौ?" हम अकचकाइत पुछिलाऐ।

''अही गामक भोला कामति। ओ हमर मामा छीये।" गणेश बहुँसि रहल छल, जेना ओ कोनो बडका जानकारी हासिल क' लेने छल।

''कत' छी भोला?"

''भोर मे आयल रहै। दुपहरिया मे चलि गेलै। भोरे अहा के बस पकड़ैत अचानके देखलकै ने तँ बाजल, ''ई तँ फिर भैया लागै छी रे गणेसबा!" हम कहलिऐ, ''हँ, फिरजी...बड़का पढ़िकार छीये! तो कोना चिन्है कि?...

" आ तखन ओ मारते सब टा कहलक।... आगाक बात ओ ि ि हमरा संग मे अपश्यश्चात देश्च्च नइँ बाजल।

''गेलौ कत' भोला?" हम बात के भोला श्चस मोि लहुँ।

''ओ बदरपुर मे रहै ि। काश्चि-परसू ि श्च फेर अयतै। एतै दोकान शुर करैवला ि! "

एते काल मे हम ओकरा दोकानक भीतर राखल बेच पर बैश्च चुकल रही।महानंद जी सेहो। गणेस चाह बनब' लागल ि ल।

सहसा महानंद जी बजलाह, ''एत' तँ डेग-डेग पर अपन मैश्चि ल भेश्च रहलाह अश्चि आ से मैश्चि ली मे बजैतो ि श्चि। अपना दरभंगा-मि ुबनी मे चाह-पानवलाक कोन कि ि, श्चकसावला ि श्च केओ मैश्चि ली मे जवाब नइँ देत।

हमरा श्चकि ु बाजब जर री नइँ बुझायल। चाहक पाश्च एखन खदश्चकए रहल ि लै श्चक गणेश पुि लक, ''श्चकि ु खयबो करबै, सर? "

''हँ! कश्च हम महानंद जी श्चस तकलहुँ, ''अंडा लैत ि ी की?... लैत होइ तँ आमलेट-टोस्ट बनबा ली!"

''हँ, श्चाय!" कगभश्च श्चलमक' ओ बजलाह, ''यौ ि ीरजी, आब दू ि-दही लोक के भेटै नइँ ि। सागो-पातक दाम नइँ पुि, आश्च लाश्च गेल ि।श्चालकोि क तरआ कते साल भ' गेल, जीह पर नइँ गेल। तखन ईहो सब नइँ खाइ
तँ जीबी कोना? फेर श्चजानो कहै ि जे ई पोश्च क चीज श्चिये।"

हमरा हँसी जका लाश्च गेल। तत्काल श्चकि ु बाजल नइँ। चलै काल गणेश के लग बजा श्चकि ु श्चालकोि क पात पाकश्चिक कात सँ आश्च देब' कहलहुँ। महानंद जी उि श्च गेलाह, ''अयँ! एत श्चालकोि क पात! आब तँ दरभंगो मे नइँ देखाइ ि!"

आ तश्चना हमरा कश्चाया हाि क दजनि सँ बेसी तरआ चट क' बजलाह,
''असली श्चश्चिला तँ आब श्चल्ली आश्च गेल। दरभंगा मे आब कहा ि ओ बात,
कहा ि ओत' ई मैश्चि लानीवला हाि!..."

हम सभ दू श्चन हुनक खूब स्वागत-सत्कार कयल। ओ ओश्च अंतराल मे
अनेक बेर, अनेक तरहे, एहन-एहन अनेक बात बजलाह। हमसभ कृत-कृत!
जयबा काल हमर कश्चाया हुनक आर.ए.सी. वला आि बश्चि नंबर सेहो पता क'
देलकश्च आ बाट मे खयबा लेल पराठा-भुश्चायक एक टा पैकेट पकि ौलकश्च। ओ

खूब-खूब आशीष दैत बहार भेलाह।

हुनका अरियातैत हम गली सँ गुजरि रहल छलहुँ। गणेशक दोकान लग एखन पहुँचले रही कि भोला पर हमर नजरि गेल। तखने ओहो हमरा देखलक आ बाटकेँ सोझा आयल। हम दुनू गोटे एक-दोसरा सँ लपटि गेलहुँ।

कि तखने ओकरा पाछाँ लागलि एक स्त्री सेहो मुस्की आइत लग आयलि।अबिते ओ हमर पयर छूबि लेलक। हम तुरत चीन्हि नइँ सकलहुँ। हमरा अकचकायल देखि वैह बाजलि, ''हमरा नइँ चिन्हलहक कका!... हम मीरा!"

''ओ!... सैह तँ हम अँखियासै रही।.. " हमरा सोझा ओकर अठारहक बयस वला विधवा-जीवन नाचि गेल छल।

आगा भोला बाजल, ''हमरा दुनू आब संगे छीयह। कयाह तँ चारि मास सँ हेसरे मे केलिऐ, लेकिन गाम जाइ के हिम्मत नइँ भेलह।"

हमरा अत्याशय पसनता भेल। मुदा तकरा व्यक्त करबा लेल शब्द नइँ भेटि रहल छल, ''बड़ बढ़िया! चलह दुनू गोटे पछुने डेरा। बगले मे छै।... हम झट हिनका बस मे बैसा के अबै छीयह।"

कि भोला पनबटी खोलि अपना हाथेँ लगाओल पान देलक। महानंद जी सेहो खयलनि। फेर महानंद जीक संग मेन रोड दिस बढ़लहुँ।

बस· पतीक्षा मे ठाढ़ महानंद जी सँ हम कहलहुँ, ''ई मीरा हमर पित्तिऔतक बेटी छी। बचपने मे विधवा भ' गेल छलि।... आइ तकरा सोहागिनि देखि मन पुलकित भ' गेल।"

सहसा महानंद झा पुछलनि, ''ई भोला कोन जातक छी कि?"

हमरा कनपटी पर जेना चटाक द' बजरल! ''कीयट"...

''अयँ यौ, ओत'क सब टा गौरव-गाथा बिसरा गेल? बाप-दादक ना-गा...पाग-पाग-जनेउ सब? ...बाहणक विधवा बेटी कीयट संग! ...दुरछी!" आ महानंद झा भोलक देल पान बगलक नाली मे फेकि देलनि।

हमर मन खिन्न गेल। हम नहुँए, मुदा कठोर स्वर मे बजलहुँ, ''अहा के पता अछि हमर कन्या कोन जातक छी की? ...जकरा अहा सभ मलेछ कहै छीऐ!..."

महानंद झाक मुँह लाल भ' गेलन्हि, मुदा बकार नइँ फुटलन्हि। तखने बगल मे आबिक' रुकल एक टा ऑटो मे झट द' बैसैत 'स्टेशन' शब्दक उच्चारण करैक संग मुँह घुमा लेलन्हि। ऑटो आगा बढ़ि गेल।

हमर मन कहलक, ''ओ तत्काल एत' सँ भागबाक लेल हवाइ जहाज पकड़ि लेथि, मुदा हमर कहल बात ओ अपन मोनक कोनो कोन सँ नइँ फेकि सकताह।

सहसा दुर्गंधि तेज भभका लागल। जेना ओत'क कोनो सड़ल पानिवला
पोखरि गन्हा रहल हो!...

असोथ्कित

पाइवेट वाडकि थ्बस्तर पर पलि-पलि ओ सामनेक टेबुल पर राखल एक मािखाली थ्गलास मे बिकाल सँ ओझरायल लि। काचक ओ मामूली सन थ्गलासओकरा देखैत-देखैत रप बदल' लागल लै। एक बेर ओकरा लगलै जे ओथ्इ खाली थ्गलास मे नीचा सँ अनायास पाथ्नक सतह ऊपर उठ' लगलै आ अथ्गले कणथ्गलासक चारभर पाथ्न खसैत सेहो ओकरा पत्यके जेना बुझेलै! ओ झट आँथ्ख मूथ्नलेलक। बिकाल पर आसते-आसते फेर ओ आँथ्ख खोललक। थ्गलास पूववत खाली लै। ओ फेर थ्नष थ्गलास पर नजथ्र गा देलक। कोठली मे देबालघीक थ्टक्-थ्टक् केर हल्लुक-सन आभास लै।

थ्कए कण बीतल हैत थ्क ओ देखलक थ्गलासक आकृथ्त एक लय-कम मेपैघ होअय लगलै! एक बेर ओकरा लगलै, ई तँ कुंभकरणक पेट थ्ीक! तत्कणे फेरबुझेलै, ई थ्वशाल बखारी थ्ीक!...भथ्र पेट भात लेल रकटल मोन-पाण मे पेटक संग बखारीक स्मृथ्त ओकरा नेनपने सँ खेहारने आथ्ब रहल रहै। परेशान जका भ'क' ओ अपन नजथ्र ओकेहर सँ हटाब' चाहलक थ्क ओकरा बुझेलै जे मामे थ्क चनथ्क रहल आ देह मे तागथ्त सन थ्कओ ने रथ्ह गेल । ओ अपना के बअसहाय-असोथ्कित बुथ्झ फेर आँथ्ख मूनने रहय थ्क तखने एक टा सदन्सिन हाओकरा मा पर बलबला आयल घाम पो' लगलै। कोठली मे तखन ओकर पतीमा थ्ल, मुदा ओकर हा ओहन सदहिबाक अनुमान नइँ लै ओकरा। ई फराक जे ओकर आत्मा मे खरकटल खरखर हाकि नी-हरथ्द वला गमक आँथ्ख नइँ खोल' देलकै।

हठात् हल्लुके सँ केबा ठकठका क' ककरो भीतय अयबाक आभास भेलै,तँ नइँ चाहैतो ओ आँथ्ख खोथ्ल देलक। नसथ्ल। नसकि आगू-आगू ओकर मुस्कीलै। ओकरा मन मे स्फूथ्त जिका अयलै। नसकि मुस्कीक उतारा मुथ्सकए सँ देलक।एक नसे टा तँ लै जकर आयब ओकरा ब सोहाबै लै। डाकटरो सँ बेसी। एक टामर-सन न ओकर थ्ररियल मोन के बिलकै। एक खास थ्कथ्समक थ्नसा मेआँथ्खक पल झपा गेलै।

कनेकाल बाद 'मनोहर कहाथ्नया' मे डुबथ्ल पतीक पना पलटबाक स्वरओकरा ककशि जका लगलै। भीतर सँ कचकचा गेल लि। पथ्त्रका मे डुबथ्ल पतीथ्दस तकबा सँ बचैत, नइँ चाहैतो फेर सामनेक टेबुल पर राखल खाली थ्गलास थ्दसताक' लागल।

थ्कए कण बीतल हैत थ्क थ्गलास फेर रंग-रप बदल' लगलै। ओकराअपन थ्दमाग पर बेस दबाव बुझेलै। ओ नइँ चाहैतो बाजल, ''टेबुल पर सँ एथ्हथ्गलास के हटाउ!...''

पती पथ्ल्ला तीन थ्दन सँ बेसी खन ओकरा संग थ्ल। पथ्हल थ्दन तँ मारतेफजहथ्त करैत भथ्र थ्दन ओ बबिइते रथ्ह गेल थ्ल। कतेको केओ बुझारथ्त थ्क अनुनय-थ्वनय कयलकै, ओकरा पर तकर असथ्र नइँ भेलै। एकदमे थ्झकने जाइतरहथ्त, ''सब हमरे घर थ्बलटाबै पर लागल यए। थ्ीयापुता के के देखतै? अयँ! जकरा कपार पर दू-दू टा अजथ्त बेटी रहतै तकर ई थ्करदानी?... काज-िक थ्चंते ने! हरखन दोसे-मीत! सब थ्दन नाटके-साथ्हत्य आ दरबाजीक मोहथ्फल! देखौ, आइ केओ ताकहु अयतै!...'' एहने-सन मारते रास बात! मुदा ओ एको बेरमुँह नइँ खोललक। दोसर थ्दन पतीक बाजब स्वाभाथ्वके रपे कने कम भेलै, मुदा ओकर मुँह थ्नबले रहलै। तेसरो थ्दन ओकरा ओथ्हना गुमसुम देथ्ख पतीक भीतरआतंक जका थ्क पैस' लगलै। से ओथ्ह थ्दन गुकमी जका लने ओ ओकराबजबाक बाटे ताथ्क रहल थ्ल। एहन खन पथ्तक आदेश ओकरा नीक लगलै। ओ उठथ्ल आ थ्गलास हटा बगलक अलमारी मे रखै सँ पथ्हने पाथ्न लेल पूलिक। ओमु डोला

नासकार कयलक।
पतीक भीतर थ्कि कचथ्क जका उठलै। आँथ्व डबडबा गेलै।...
एकरा एथ्ह अस्पताल मे भती दोसे-थ्भि सभ करौने लै। ओकरे सभक समाद पर ओ बताथ्ह जका टिकी बेटीक संग भोरे-भोर भागथ्ल आयथ्ल थ्लि।ओकर लाख फजहथ्ल आ बबिहिथ्टक बादो इलाजक सभ टा व्यवस्थि वैह सभ क' रहल लि। ओकरा बेसी बजबाक साफल ई भेलै जे कैक गोटे बाहरे सँ हालचाल ल', सभ टा व्यवस्थि बुथ्ल-गथ्र, घुथ्र जाइ लि। से हि पाथ्र गेथ्ल थ्लि ओ।
क्ण भथ्रक लेल तँ ओकरा अपन कीति आ बजबाक पभाव पर गौरवे जका भेलै। ओकरा लगलै जे एथ्ह तरहे ओ अपन घरवला के मुटीमे क' सकै अथ्वि। मुदापथ्नक पीयर चेहरा देथ्वते ओकरा भीतर पैसल अदंक आशंकाक झरि लगा देलकै। ओ चोटे उठथ्ल। पयर माथ्र आस्ते सँ बाहर भेथ्ल।
पैघ सन गथ्लयारा पार क' ओ थ्रसहशशनक आगूक गुलमोहर लग ठाढ़ भेथ्ल।
अस्पताल पागणक सामनेवला रि पर बेर पहरक रौद मे बैसल थ्कि गोटे पर ओकर नजथ्र गेलै। ओ दूरे सँ थ्वन्हैक पयास क' रहथ्ल थ्लि थ्क ओकहर सँ दू गोटेलपथ्क क' ओकरा लग अयलै, ''की, कोनो बात?"
ई दुनू ओकरा पथ्नक सब सँ पुरान थ्भि लै। ओकरा थ्बयाहो सँ पथ्हनेक सहमना, लंगोथ्टया!...जकरा सभक ताथ्वि थ्कि ओ फराक नइँ लै। थ्बयाहक बादो चौदह-पंरह वषथ्वि पाय: ओथ्हनारहलै। शुरुक पाच साल तँ आमो संगे रहलै जावत् अलग-अलग ठाम चाकरी नइँ भेटलै। एथ्ह मे पथ्हल ओ लि जे ओकरा 'कथ्नया गै' कहै लै आ 'वर बाबू' कहैत जकरा सँ ओ हँसी-मजाक मे सदथ्ल साय-बौहुक अदला-बदली करबाक गपशप करै थ्लि। मुदा तखन ओकरा मुँह सँ बहरायल वाकय संबोनिहीन लै। दोसर, ि-जीवन मे भनसाघरक इंचाजरिहबाक कारणे शुरुहे सँ ओकरा सौथ्लान कहै लि। मुदा तखन तीनूक संबंकि कोनो टा पथ्हचान नइँ लै। ई थ्स्थि ओकराबि दारुण जका बुझेलै। एक बेर ओकरा मोन मे अयलै जे वैह ओथ्ह संबोनि सँ पुकारय, मुदा से भेलै नइँ। ओ अपन भावना पर कठोरता सँ लगाम लगौलक, ''की करबै आब, हमर तँ घरे थ्बलथ्ट गेल। तै पर सँ ओकर गुमसुम रहब!..." सेरायलआ घबायिल सन स्पर बहरेलै। कनेक असमंजसक बाद पथ्हल दोस्त जे कह' चाहैत लि, से नइँ कथ्हओथ्हना थ्कि बाथ्प देलक, ''ठीक भ' जयतै। डॉकटर सँ हमरा गहशप भेल यए।"
''नइँ! ...कोनो थ्वंताक बात नइँ!" दोसर तोस देब' चाहलक।
एहन जवाब ओ नइँ सुन' चाहने थ्लि। मुदा ओकरा बस मे थ्कि ने लै।आब ओ पथ्हनेक थ्स्थि मे नइँ घुथ्र सकै थ्लि जकरा सँ कथ्हयो थ्यण्ड िबितनीक लागल लै। ओकरा मुँह सँ बहरेलै, ''घुटनाक अलावा डॉकटर तँ कहै ि, सब कुि नॉर्मलि है!

''हँ, सैह तँ! ..." पथ्हल जल्दी सँ जवाब ताकलक, ''रसेरस सब ठीक भ' जयतै।'
''हँ! हँ!..." दोसरक चेहरा पर टार'क भाव बेसी साफ लै।

हाथ्रक' ओ वाडथ्वस घुरथ्ल, ''आउ ने, कनेकाल हुनके लग.."
गाि ओकरा लगीच अयलै। थ्नरमा लग। दुनूक नजथ्र थ्मललै। ओ थ्नहालभ" गेल।
ओ थ्कि बाज' चाहलक, तँ ओकरा अपन पतीक उपथ्स्थिक भान भेलै।

गाि सेहो िकछु बाज' चाहलक, मुदा कोठली मे ओकरा मीतक कयाहता िछल। गािओकरा बेडे पर सिटक; बैसल रहल। दुनूक हाि एक-दोसराक हाि मे िलै। दुनूक हाि गरम िलै।
''चाह-ताह बाहर सँ एत' आिब सकै ि ने?" दोसर बुदबुदायल।
तखने ओकर पती उठल, ''लगले अबै ि"' आ कोठली सँ बाहर भ'गेल। ओकरा पाि लागल दोसर मीत सेहो बहरायल।
िकछु पल बीतल िक ओ पिले-पिल फुसफुसायल, ''ककयूिमे ढील बुझाइ ि!.."
''नइँ-नइँ!... अपना सब घर-पिरवार लेल सही समय पर िकछु ने सोचलौ।तकर सब टा दु:ख एकरे सब के भेलै।" गाि आब झुिक जका आयल िल।
ओ िकछु कण चुपचापे रहल। फेर एकहर-ओकहर तािक बाजल, ''रौ बुड!
हमरा सभक लेल अपने टा घर कहाँया घर िल? हमसभ तँ सभक घर-पिरवार के अपने बुझैत रहलौ।" बेड पर पिल देह जेना मोन संग उि' चाहै िल।
''जँ सैह रहल जाइत शुर सँ अंत िध तँ कोनो दु:ख नइँ िल मीत! मुदा एक एहन मोि पर आिब हम सभ अपन आप बेराब' लगलौ जत' पहीलुको कयलियल सभ टा पर पािन िफर गेल। ने घरक रहलौ ने घाटक।..." आब गाि साकात मनुकख भ' गेल िल।
''ई तो की कहै ि?... हम तँ एखनो एकरे पाि सब िकछु नोिवर कयनेि। के अिछ आइ हमरा सँ बेसी कयनहार?'
''यैह!... यैह भेलौ सीमा! दोसर केओ तोरा सँ बेसी नइँ िकछु करै यए ते तो आगू िकएक बढबे!... आ ई तयाग-नोिवर-कि मंचे टा सँ शोभै ि। हम-तो जतेक ने नोिवर करबाक गपशप करै ि, से सब वासतव मे आब कैिरयर चमकाबैक
सािन भ' गेल यए। जे केओ दोसर हमरा सब सँ आगू बिढ सकय नइँ अिछ, ते हमरासभक ई अिकचरा पयास पैघ अिभयान कहाबै यए। मुदा ई जािन ले जे हमरासभक ई पयास एक टा बजुका सँ बेसीक ओकाित नइँ रखै अिछ जकरा सँ बिकाल पर ओ आँिख फोललक। सामनेक खाली टेबुल पर ओकर नजिर गेलै, तँिकछु िच-चुनमुनी डराइत होइ तँ होइ, सुआर-हिरन आिक नीलगाय पर कोनोओकरा टेबुलक सतह सहाराक रेिगसतान बुझेलै। टेबुलक पार बैसल लोकक आकृित असपष नइँ पि ि।' मीत आवेश मे आिब गेल िलै।रेिगसतानक िर परक गाि लगलै। ओ ओकर गािक हिरअरी पर नजिर िटकौलक। जवाब मे एखनो ओ बहुत रास तकिद' अजेय रहल सकै िल। यैह तँ ओकरआँिख तृप भ' गेलै। शिकत िलै। मुदा एक तँ ओकर बातक कने असपष पिल िलै आ दोसर, पतीक घुिरक' आब' सँ पहने ओकरा िकछु आर जररी बात पूिबाक िलै। से शात होइतमधम सवर मे बाजल, ''एखन से सब बतायब जररी नइँ ि। कहले बात कते कहबौ? ...सुन, एक टा जररी बात!..."आ फुसफुसायल, ''ओत' रंगशालाक हॉल मे हमर िकछु भेटबो कयलौ?"
''की?" गािक पात-पात िखलिखला क' हँसल।
''हमर कुजी?"
''हँ! ...ओ कत' जायत? मंचक काते मे िल।"
''दे!..."
''बाकस मे बंद क' रािख देने िछयौ। पहने ठीक तँ हो!"

''शहर मे कोनो चचा?"
''हँ, कल्पना मंचक िाि सब एक टा रीभ्मकस तैयार कयलक अिछ-
कुञ्जी हेराय गेल भागक बाि मे..." क्रमभ्य ध्रलभ्य फेर नहुँए बाजल, ''आचायक्रि 'मुसल आ मुसलमान" कािक मंच पस्तुभ्ि आइ मुजकफरपुर मे भ्रीऐ जत' सहरसा सँ जनकपुर िभ्रक लोक जमा भ' रहल ि। एत' सँ कल्पनो वला सभ गेल ि!.."
ओकरा पर तनाव जका बध्र गेलै। क्रमेभ्य कोठली मे भारीपन रहलै! तखने चाहक टे लेने एक टा िािक संग ओकर पती आ दोसर मीत घुभ्र अयलै। रसेरस फेर टेबुल पर रेश्रास्तान पसभ्र गेलै आ गाि तकर ओभ्र पार चभ्र गेल।
ओ दोसर मीतक मदभ्र सँ गेिआक सहारे ओठभ्र गेल िल। पतीक हाि सँ कप पकिलक। फेर एक टा ध्रसकुट लऽ नहु-नहु कुतरैत कतहु हेरा गेल िल।
चाहक घोट लैत ओतऽ शुर भेल बाल-बच्चाक पढ़ाइ-भ्रखाइ, कयाह-दान आमहँगाइक संग-संग भ्रकेटक गहशप ओकरा जोभ्र नइँ पाभ्र रहल िलै। साझक अन्हार जखन बाहरक वातावरण के गाढ़ कर' लागल िलै आ साझुक राउण्ड पर आयल डॉकटर देभ्रक' जा चुकल िलै, घर सँ भ्रफन बॉकसवला झोिनेने एक टा नवोभ्रत कभ्र भ्रि आभ्र गेल िलै। राभ्र मे ओभ्र नवतुभ्रए के रकबाक िलै।
भ्रक काल बाद ओकरा पतीक संगे ओकर दुनू मीत घर भ्रदा भेल।नवतुभ्रया कभ्र सेहो पाभ्रक बोतल आन' लेल बहरायल िल भ्रक पभ्रल मीत गेटक बाहर सँ घुभ्रक' ओकरा लग अयलै आ एक टा कने पैघ सन कुञ्जी हाि मे दैत कहलकै, ''ले! ...एकरा भ्रना तोरा नीन नइँ हेतौ!" आ झट बहराय गेल।
ओ एक बेर ठीक सँ ओभ्र कुञ्जी के देखलक। बि पुरान होइतो सब तरहे नव िलै। पुलक सँ भभ्र तुरंत जेब मे राभ्र लेलक। पाभ्र ल'क' घुरल नवतुभ्रया पेम सँ भोजन लगौलकै। नवतुभ्रयाक आवेशभोजन मे रभ्र बढ़ा देलकै। ते खाय क' पिल तँ नवतुभ्रयाक दू गोट कभ्रतोसुनलक। चाबसी द' सब भ्रांता सँ ध्यान हटा आगू मे जे भ्रफल्म िलै तकरसफलताक कल्पना मे भ्रहभ्र खेलाय लागल। नीन भ्रक जभ्रदए आभ्र गेलै।
ओ देखलक जे ओकर भ्रकताब लोकसभ लाइन लगाक' कीभ्र रहल ि।मारते रास चैनलवला सभ घेरने ि। ओ जल्दी-जल्दी भ्रक बाभ्र एक टा उज्जररंगक कार मे बैभ्र जाइ अिछ। कार अजात भ्रशा मे जा रहल िलै भ्रक नीन टूभ्र गेलै।
ओ फेर आँभ्र मूभ्र जल्दी सँ जल्दी ओभ्र सपना मे जयबाक चेष ा कर' लागल।
एभ्र बेर ओ देखलक जे ओकरा ढाइ लाखक कोनो पुरस्कार भटलै। ओकरासकमान मे पुरस्कार पदाता नौकरशाह सभक भ्रस सँ रंगमंडलक समस्त सदस्यक संगभ्र वभ्रष पिकार आ साभ्रत्यकार लोकभ्रक बीच भव्य पाटी चभ्र रहल ि।...अचानक ओभ्र बीच ठाढ़ एक टा अदसिभ्रयभ्रहशत सन युवक भ्रभ्रया लगै ि, ''अहा सभ अवसरवादी ि! पूजीपभ्रक दलाल ि!..." भ्रक तमसाक' ओत' जमा सभ केओ अपना-अपना भ्रलासक दार ओभ्र युवक पर फेभ्रक दैत ि।... आ ततेक दार ओकरा पर खसै ि जे ओ युवक बगलक नाली मे बभ्र जाइ ि!...
अचानक फेर ओकर नीन टूटलै। एभ्र बेर ओकर िाती जोर-जोर सँ िभ्रक रहल िलै।कनेकाल मे ओकर मोन भ्रिर भेलै, तँ ओ नवतुभ्रया कभ्र भ्रस ताकलक। ओओकरा बेडक दभ्रना कातक सोफा पर नीन िलै। ओकर बामा हाि अनायास पेटक जेब मे गेलै आ अभ्रले पल कुञ्जी ओकरा आँगुरक बीच िलै। बिकाल िभ्र

ओ ओश्च कुञी के देखैत रहल। कुञीदेखैत-देखैत ओकरा अपन थ्ययारंगक ओ अन्हार मोन पश्च अयलै जे ओकर कुञी तँ थ्वडनश्च िलै, ओकरा एश्च बेड िश्च पहुँचा देलकै। थ्ययारं ओश्च थ्वदापश्च यािरंगशालाक संथ्कहशत नाम िलै जकर ओ अध्यक आ थ्वदेशक िल। जतऽ पश्ीला दससाल मे सभ सँ बेसी नाटक ओकरे थ्वदेशन मे भेल िलै। जतऽक ओ सभ सँ सकमाश्वात आ सवेसवा िल। जत' पश्चल मंथ्मल पर ओकरा एक टा पैघ सन कक भेटल िलै। ओश्च कक सँ नइँ मािथ्ययारंक सभ टा गश्चाथ्श्वी संचाश्वत करैत िलओ, ओकर समस्त श्चत-मीतक चौपाल वैह िलै। मुदा ओश्च रातुक अन्हार!...

...असल मे ओइ थ्वन बेर पहर अशोका मे बालीबुडक एक टा पैघ पोरयूशरसंग ओकर मीश्वंग सफल भेल िलै। भूश्च समस्या आ सशस् आन्दोलन सन थ्वषय

पर ओ एक टा मसालेदार थ्कल्मक लेल स्क्रीश्चशटंग आ सह-थ्वदेशनक एगीमेट साइन कयने रहय। तकरा बाद शैकपेनक दौर जे शुर भेलै से पोरयूशरक उिन-समयक कारणे सँझुका आठे बजे िश्च चललै। ओतऽ सँ ओ बाहर भेल तँ ऑटो मे बैसैतअपन सभ सँ करीबी कॉमरेड दासक मोबाइल पर पश्चल सूचना देलक। दास नगरक सभ सँ बेसी पसार संकयावला दैथ्वक समाचार पिक कयूरोचीफ रहय। ओ तत्कालओकरा अपन दकतर बजा लेलकै। दासक केबीन मे ओकरा पहुँथ्वते तय भेलै जे एश्च उपलथ्कि के खास दोस्तसभक बीच सेश्चबेट कयल जाय। से ओतश्च सँ फोन कऽ चाश्च-पाच गोट 'हमहशयालाऽसाश्चत्यकार-पिकार-रंगकमी के साढ़े दस बजे िश्च थ्ययारं पहुँचबाक सूचना देल गेलै। फेर ओ दासेक खटारा एलएमएल वेस्पा पर पािबैश्च थ्वदा भेल िल। रस्ता मे महात्मा गाि चौक पर चाश्च-चाश्च हशलेट थ्वकन आ पनीर फाइ पैक करबौलक। काजू, मूँगफली आ दालमोटक संगे सलादक व्यवस् ि कऽ चाश्च श्चकबाथ्वगरेट सश्चत दू टा पैघ-पैघ पॉश्वािन पैकेट मे लेलक। दासक श्चककीक झोि मेरमक बिका-बिका बोतल रखैत आि सँ कमे बचल अदा टकरेलै। ओकराबगलक जूस दोकानक पाि दुनू मीश्च खाली करैत अमेश्वकन पॉश्वसीक चचा करऽलागल िल। अपन-अपन थ्वगरेट जराय जखन ओतऽ सँ थ्वदा भेल, तँ साश्चत्यअकादेमी आ मनुवादक व्याकया शुर भेल िलै। कनेक तेज सन चलैत बसात जािक पभाव बढ़ाबऽ लागल िलै। मुदा ओ दुनूमौसम के ठेङा देखबैत थ्ययारं थ्वस जाइत अपना मे मस्त िल। तेहन मस्त जे साझेसँ शुर श्चसस्सी के 'इन्जॉयऽ कऽ रहल िल।

तखन ओ सभ थ्ययारं सँ थ्कि्ए दूर नेहर स्टेश्चयम वला मोि पर िल थ्क दूटा घटना एक संग घटलै। एक, बुश्वआयब तेज हेबाक संगे बसात थ्वहाश्च जका रपलऽ लेलकै आ दोसर, दासक जेब मे राखल मोबाइल अंगेजी ्िन पर थ्वथ्वयाबऽलगलै। कात मे स्कूटर रोथ्क दास एको थ्वनट सँ कमे गहशप कयलक आ पाि घुश्वबाजल, "रौ, समान सभ लऽकऽ तो जो थ्ययारं। एखन साढ़े नौ भऽ रहल ि। हम एक घंटा मे अयबौ। संपादकक आदेश ि, की कऽ सकै ि?... चल गेटक बाहरिश्च दै थ्वयौ।"

खराब मौसमक बादो गेट सँ दूरे पॉश्वािन पैकेट आ झोि िमा दास स्कूटरमोश्च फुरभिऽ गेलै। ओ थ्ययारं थ्वश्वडंग थ्वस तकलकै। सभ थ्कि् अन्हार मे डूबल

िलै। गेटक दुनू कात थ्वित थ्वदापश्च आ यािबाबाक पश्चमा िश्च देखा नइँ पश्च रहल िलै, तँ काश्वदास-शैकसपीयर सन-सन मारते रास नाटककारक देबाल मेजिल िट-िट पाषाण मूश्वकितऽ लखा दैतै। हवा पचंड भऽ गेल रहै आ बुनीआर तेज। ओ ितपत आगू बढ़ल। गील-गेट फोश्च अन्हार पैसेजक मुँहिश्च परठमकल। थ्वकथ्वकऽ रमुआ चौकीदार के दू-तीन बेर शोर पािलक। मुदा कोनो

उतारा नइँ भेटलै। एहन मौसम मे राश्च-थ्वराश्च ककरो नइँ अयबाक अनुमान कऽ ओसरबा साइत घर पि गेल

रहय! बिजली नइँ रहै आ फेक स्वीचे लग सँ काटल देनेछलै ढोहरीक सार, से नइँ कहल। ओकरा अपना हाथक पॉलिथीन पैकेट छिटकब नइँ सुझल रहल छलै। आस्ते-स्ते कहुनाकऽ सीढ़ी तकबाक साहस कऽ ओ एक टा पयर आगू बढ़ौने रहय कि एक गेटक सटले कतेको युग सँ ठाढ़ बडका छिक एक टा पैघ सनडास्टर टूटिकऽ हहिाइत गेट पर खसलै। ओकरा लगलै, पृथ्वी दलमलित भऽ गेलैआ फेक ओही गाछ संग पूरा धियारो बिजलीडंग भरभराकऽ खसि पड़लै! कतऽ गेलै पॉलिथीन पैकेट सभ, कतऽ खसलै झोरा आ कोकहर अपने ढनमनायल; तकर कोनो ठेकान नइँ रहलै!...बड़ीकाल बाद होश अयलै, तँ ओ कराहि जका रहल रहय। ओकरा पयरलग भीजल सन किछु डाल-पात बुझेलै आ माथ लग सदृदेबाल। देबाल टोबऽक कम मे ओकर हाथ अपना माथ पर गेलै। ओतऽ लसलस सन किछु सटल जका बुझेलै। ओ ओकरा रगड़िकऽ पोछबाक पयास कयलक, तँ भीतर सँ पातर सन ददहुलकी मारलकै।
तखन ओकरा ई बुझबा मे भागठ नइँ रहलै जे ओकर कपार फुटि गेलै आताहि पर शोणितक छिकका जमि गेल छै। मुदा तैयो ओकरा ई भान नइँ भऽ रहल रहैजे ओ कतऽ, किऐ आ कोन परिस्थिति मे पड़ल छलै।...
किछु क्षण आरो बीतलै तखन ओकरा नीचा सीमेटक सतहक भान भेलै। ओ पयर मोड़ि हबिबाकऽ बैसल आ घबड़ाकऽ चार कात हथोड़िया मारऽ लागल।अचानके ओकरा हाथ मे काचक एक टा चोखगर टुकड़ी गड़लै आ ददसिँ अकछाया उठल। मुदा क्षणे बाद ओ फेर हथोड़िया दऽ रहल छल। हथोड़िया मारैत ओबदहवाश छल। ओ एक ठाम फशपिर किछु तेजगंधिवला तरल पदार्थ बुझेलै। ओहि गंध के परखऽ मे किछु समय लगलै, मुदा जहिना ओकरा गंधक पहिचान भेलै ओ सभ किछु स्मरण भऽ अयलै।आब ओ जल्दी-सँ-जल्दी सीढ़ी ताकबा लेल व्यग छल। ओकरा कोनोहालति मे शीघ पहिल मंजिल पर स्थित अपन कक्ष मे पहुँचबाक छलै। ओहि कक्षमे जतऽ इजोतक कैक टा वैकल्पिक साधन रखने छल ओ। ओकर कुञ्जी ओकराजेब मे छलै। बामा जेब मे हाथ दऽ कुञ्जी छूबिकऽ ओ आशस्त भेल। ओ ओकरा कोना क्षण अपन संगी सभक आबि जयबाक आशंका भेलै। अन्हार मे घड़ीअकाजक छलै, से झट ओ दहिना जेब मे राखल मोबाइल बाहर कालऽ चाहलक जाहिसँ अन्हारो मे समयक जानक संग क्षीण-सन इजोत सेहो भेटि सकै छलै। मुदा जेबसँ बहरेलै दू-तीन भाग मे अलग-अलग भेल मोबाइलक पार्ट-पुजा! आब ओकरघबड़ाहटि आरो बढ़ि गेल छलै। अन्हारक सोझाँ मे ओ तेना भुतिआया गेल जे दिशाक कोनो जाने ने रहि गेल छलै। आरो किछु काल छिड़ियाबौअयलाक बादो जखन किछु नइँ लगलै, तँ अन्हारक कोनो अजात स्थल पर ओ सुस्ताबऽ लागल छल। सुस्ताइत-सुस्ताइत ओकरा भीतरहँसी जका किछु फुटलै। ओकरा मोन पड़लै जे एतबे टा जिनगी मे ओ कतेक बेहिसाब आयल छल। लगभग एक दशक तँ अण्डरगाउण्डे रहल छल। केहन-केहन कठिन ऑपरेशन सफल कयने छल। कतेक मुठभेड़, कतेक काउन्टर मे बमगोलीक बीच सँ बाचकि आयल छल ओ!... ओकर ई इतिहास आइयो कतेको युवा के पेरणा दैत छलै।अपन स्वर्णिम अतीतक स्मरण सँ ओकरा भीतर साहसक संचार भेलै।उठिकऽ सावधानि मुरा मे ठाढ़ भेल आ दृढ़ निश्चय कऽ एक सीध मे डेग-डेगकऽबढ़ऽ लागल। किछुए क्षण बाद सहसा ओकरा ठेहुन सँ किछु टकरेलै। हाथ सँ छूबिकऽ ओ परखलक—आगू मे कुसी छलै। फेर हाथ बढ़ाय कऽ ओ एकहर-ओकहर टटोललक—कुसीक पतियानी लागल छलै। तत्काल ओकरा बुझबा मे आबि गेल छलै जे ओ फुजले रहि गेल दुआरि सँ मेन हॉल मे आबि गेल छल। तखन कुसीदर-कुसी पकड़ैत ओ बीचक रस्ता छोड़िकऽ सभ सँ आगूक कुसी धरि पहुँचि गेल।एतऽ पहुँचि ओकरा सब किछु सुरक्षित जका बुझेलै। से ओ ततेक आशस्त भऽ गेलजे आराम सँ ओहि कुसी पर बैसि पयर पसारि देलक।आब ओकरा मेहमान सभ सँ पकड़बाक कोनो चिंता

नइँ रहलै। ते ीरे ीरे ओ ओकरा सभ के ब्बसरय लागल लि। क्ष्क तखने सेश्लबेट करबाक अवसरक महका मोन पलिै। मोन मे कनेक कचोट भेलै। मुदा एते पैघ नाटय-अनुभव ओकरासभ क्ष्स्थि मे तालमेल बैसायब क्ष्माखा देने लिै।

आब ओ सहज भऽ जयबाक क्ष्स्थि मे आश्व रहल लि क्ष्क ठीक तखने मंचक बीचोबीच खसैत पकाशक एक फाक मे ओकर पश्चार प ठाढ़ देखा पलिै।कणभश्व मुरत जका ठाढ़ रहलाक बाद पश्चार प अचानक बाजल, ''रौ मीत, क्ष्कऐदु:खी ि?''

''अयँ!... तो के?" ओ अकचकाइत पूलिकै।

''नइँ ब्बन्हले हमरा?... कोनो बात ने! ब्बंता नइँ करय, दुश्माया एश्वना चलै ि!" पश्चार प मुश्मकआइत कहलकै।

''मुदा ि के तो?" ओ फटकारैत पूलिकै आ उश्वकऽ ठाढ़ भऽ गेल।

''हमरा ब्बश्वह कऽ की करबे? दुश्माया तोरा ब्बन्है ि! दोसर खेमाक लोक के गश्वयाबैत रह! ओ सभ पतीत ि, कुपमंडुप ि, समाज के पाि लऽ जायवला ि।ओकरा ई सभ कहला माि सँ समाज बदश्व जयतै आ तो महान भऽ जयबै! फेरअंगेजी बोहु-बेटी घर अयतौ। स्टेटस बदश्व जयतौ! बेचारी बश्वन श्वंदी बिअलर्चाी, बाहिश्व झाट!...'' पश्चार पक स्मर संयत लिै।

''तो हमरा पर क्यंत्य करै ि?" ओ फेर ब्बगालिै।

''क्यंत्य?... एश्व सभ पर तँ तोरा महारत ि। बस श्वाखैक फुसश्वि नइँ ि। नेतँ आलोचक जीक गुरदारा मे माि टेश्वकते कोसमिे लाश्व गेल रश्वतौ। आचायकि पसाद पश्वते साश्वत्य अकादेमी भेश्व गेल रश्वतौ!"

''हम कोसकि भूखल नइँ ि। आचायआि आलोचक जी के श्वठुआ!...

साश्वत्य अकादेमी चाहबे ने करी हमरा! हम ओश्व पर िको फेकऽ नइँ जायब। हमतँ क्यापक सामाश्मक पश्ववतनिक आकाकी ि। समातामूलक वैजाश्वक सोचक आगही। सश्वखन जनते टा हमरा नजश्व मे रहै अश्वि।" ओ आकोश सँ भरल स्मर मे गरजलक।

पश्चार प िपिी पाडय़ लगलै, ''वाह! वाह! कतेक कणश्विय लगैत अश्वि ईसब! अदूत!... जँ सश्वपहुँ एना होइतय!...सय मे श्वन्यानबे टा मैश्विली भकत दुमुँहेबहराइतय?..."

ओ िश्वि कऽ मंच पर चश्व गेल लि, ''तोरा बुझल नइँ ि, मंच परडायरेकटरक इचािक श्वरद केओ एको कण ने रश्व सकै अश्वि! जल्दी भाग! हम

की कऽ सकै ि से बुझले ने ि तोरा!"

''डायरेकटर ि तो?... िर! अपन कोठलीक ताला तँ खोश्वए ने सकै ि! जोतँ अपन कोठली?..." पश्चार प ओश्वना ठाढ़ रहलै।

ओ तामसे कँपैत कुञी श्वाकाश्व लेलक, ''देख, देख कुञी हमरा हाि मेअश्वि। देख!..." क्ष्क तखने ओरा हाि सँ श्वटश्वक क' दशकिदीघा श्वस गेल कुञीअन्हारक समुर मे डूश्व गेलै।

अचानक पश्चार प जोर-जोर सँ हँसैत ठहाका लगब' लागल।

अपमान सँ माहुर होइत ओ पश्चार प के मारै लेल दौलि। पश्चार प अलोश्वतभऽ गेलै। मुदा अन्हार मंच पर ओ बताह जका दौश्व रहल लिै। क्ष्क हठात चाश्व फुटनीचा मंचक आगू मे ओ अररा कऽ खसल–िाम! ...

अस्पतालक बेड पर पलि-पलि ओकरा लगलै, भीतर सँ ओ खुकख भऽ गेल, एकदम कोश्वला!...

देह पसेना-पसेना लिै! कंठ सुखाय लागल लिै। बामा हाकि कुञी दश्वना जेब मे नुकबैत बि पयास कऽ ओ

बगलक सोफा पर सूतल नवतश्चया कश्च के आवाज देलक।
अकचकाइत जागल ओ कश्च ओकरा संकेत पर श्चलास मे पाश्च भश्च आनलक।ओकरे सहारा पाश्च माि अलगा कऽ ओ दू घूट पाश्च पीश्च असोिश्चकत जका पश्चरहल।
नवतुश्चया दया भरल नजश्चएँ एकटक ओकरा देखैत रहलै। सामनेक श्चिकीक साफ होइत काच भोरक आभास दऽ रहल िलै।

मनोज झा मुक्ति

अवैद नागरिकताा श्रक्कमीकरणक पयास

नेपालमे नागरीकता श्वतरण बहुतो वषपिश्चने सँ चश्चति श्वषय बनल अश्चि । खास कऽ पश्चल मिशवादी दलक रपमे जानल जाइत नेपाल सदभावना पाटी अपन स्ापिने कालसँ नागरीकताके अपन पमुख मुदाक रपमे रखैत आएल िल । पजातन्कि आगमनकबाद २०४८ सालमे बनल सरकारक समयमे सेहो नागरीकताक पश्न सदन गमश्रौने िल ।सदभावना पाटीक अडान रहैक बहुतो मिशी जनता नागरीकतासँ ब्श्चित अश्चि, सबके नागरीकता देल जाए । सदभावना पाटीक एश्च अडानपर जनमोचा लगाएतक दलसब एकरा भारतक श्वस्तारवादी नीश्च कहैत श्वरोि करैत िल । हूनकर सबहक कहब रहैश्च जे मिशीसबके नागरीकता दऽदेलासँ नेपाल श्रक्कमीकरण भऽ जायत ।

जनआन्दोलन २०६२/०६३ सँ पश्चने सेहो नागरीकता श्वतरणकलेल आयोग सब बनैत रहल, अपन पश्चवेदन बुझवैत रहल । कोनो बेर जौ नागरीकता देलोगेल त ‘‘सबै भारतीयहरलाई नागरीकता श्वयो, देशमा अब श्वखण्डन हुन्’’ कहैत, श्चट दायर कऽ मिशिमे देल जाचुकल नागरीकताके बदर सेहो कराओल गेल ।

एकटा श्वदेशी नागरीकके नेपालक नागरीकता देनाई वास्तवमे बहुत बडका षडयन् होइत िक, देशक हीत श्वपरीत काज होइत िक । देश हीतक श्वपरीत काज कयश्चहार ककरो नई िडल जएबाक चाही । ताहुमे नागरीकता सन सँवेदनशील श्वषयमे त सबहक नजश्च रहब ओतबे जररी होइत िक । मुदा जोर जोरसँ गरजश्चहार सबहक मानश्चकता एश्चबेरक नागरीकता श्वतरणक समयमे देखागेल । नागरीकता श्वतरणक त्याक अनुसार लगभग २४ लाख नागरीकता समुच्चा देशमे श्वतरण कायलगेल । जाश्चमे लगभग ११ लाख तराई मिशिमे आ १३ लाख पहाड श्चमालमे । श्च वास्तवमे नागरीकता पप्त केने चौश्चसो लाख व्यक्श्च नागरीकता लेबाक हकदार रहश्च ? ई एकटा पैघ पश्न अश्चि । हँ सदनमे बहुत हँगामा कायलगेल, अपनाके देशक श्चकदार कहश्चहार देखावटी देशभक्त पाटीसबदारा । अहु हँगामा सबहक एकश्चटा कहब िल जे तराई मिशिमे सबटा भारतीय सबके नेपाली नागरीकता द कऽ देशके श्रक्कमीकरण करबाक तैयारी कायल जाऽरहल अश्चि । मुदा श्च नागरीकता श्वतरण कयश्चहार अश्चकारीमे कएटा व्यक्श्च तराई या मिशी मूलक रहश्च ? आँगुरपर गनल जा सकैया । अवैद रपसँ श्वतरण कायलगेल नागरीकता मिशक श्वरोिमे बहुत पैघ षडयन् अश्चि । मिशिमे जाऽक गैर मिशी अश्चकारीसबदारा जे श्चक्ु मािमे श्वदेशी सबके मोटगर पाई ल कऽ नागरीकता श्वतरण कायलगेल अश्चि से मिशीसबके अपने िीमे गुलाम बनयबाक चाश्च अश्चि । एकर दू टा पक अश्चि, जौ नागरीकता लेने श्वदेशी भुख्खे मरत त उदारवादी मिशी अपनो श्चस्साक भोजन देबऽमे पाि नई रहत, आ मानश्चक एवं शारीश्चक यातनाक पीडा मेलैत रहत । जौ पाइके बलपर नागरीकता लेने कोनो न्श्चक श्वदेशी गाममे रहत त गामक श्चमदार बश्चकऽ सबके फेरसँ कमैया बनालेत जेना पश्श्चमी तराई मिशिमे िर सबके पहाड सँ श्वस्ाश्चत पहाडी सबदारा कमैया बनालेल गेल । ताएँ एश्च बातपर मिशीसब सचेत

रहल अछि आ विदेशी सबके नागरीकता लेबऽसँ सकभर रोकलक्षि । मुदा तैयो पाइयक भुखल आ देष भावनासँ कुहकुहकऽ भरल गैर मिशी अधिकारीसबदारा मशिमे धक्ि नागरीकता अवैदरपसँ वितरण कायलगेल ।

दोसर विदेश पहाड आ हिमालमे जे जनसँख्यो सँ बेसी नागरिकता वितरण भेल ताइके विषयपर सदनमे ककरो बकार ि नहि फुटल । कत चलिगेल ओई देशभक्त नेता सबहक देशभक्ति ? ई अपने पष्ट कऽदैत अछि जे ओइ खोखला देशभक्तसबक आयति, ओसब कि चाहैत अछि, आ कत सँ सि्चालित अछि ?

वास्तवमे अवैद नागरीकता वितरण क कऽ नेपालके सिक्कमीकरण करबाक पयाश सोचल समझलरपमे शुर भऽगेल अछि । नेपालमे लाखोके सँख्यामे शाब्बती, भुटानी आ भारतीय(दाजिलिङ) नागरीकके नागरीकता द कऽ वैद नागरीक बनयबाक खेल शुर भऽगेल अछि, आ तकरा सब मशि विरोिी मानसिकताक लोक आतसया मोन सँ स्वागत करैत गदगद भऽ रहल अछि । एकर कारण एक्कटा अछि जे नागरीकता लेनिहार शाब्बती, भुटानी आ भारतीय(दाजिलिङ) लोकके मुँहकान आ पायाके भाषा नेपालक ओइ बेतुक्का देशभक्त नेता सबसँ मिलैत जुलैत अछि । ई सिक्कमीकरण नई त कि अछि ? देशक सम्पूणसिचेत नागरीकके सोचबाक चाही ।

<u>मनोज झा मुक्ति संग अन्तवाता ...आभाष लाभ</u>

(२०२८ सालमे डा.राजेन्र विमल आ िमिला विणा विमलक सन्तानक रपमे जनकपुरक देवीचौकक आवासमे जन्म लऽ २२ वषपिछने सँ अनरन्तर मैथिली गीत सँगीतक आकाशमे ध्रुवतारा जका चमकैत रहऽबला एकटा मैथिलाक बेटा िथि, गायक आभाष लाभ। बाल्येवस्ि सँ विभान्न मँच सबपर अपन आवाज सँ दशकि िता सबके हृदयमे वास कयनिहार आभाष लाभ, मैथिली आ मैथिला सँ सम्बन्ि रखनिहारकलेल चीरपरिचीत नाम अछि । पस्तुत अछि, गायक आभाष लाभ सँगक भेल बातचीतक पमुख आश)

१. आभाष जी गीत सँगीतमे कहिया सँ लगलहुँ?

कहिया सँ लगलहुँ से त नई बुझल अछि, मूदा बच्चे सँ जनकपुर आ लऽग परोसक गाव सबहक एकौटा मि्च हमरासँ नई ि्टैत िल ।

२. पहिलबेर आहाक रेकडेड गीत कोन अछि

- पहिलबेर हम नेपाल सँ बहराएल अशोक चौरीक मैथिली क्यासेट पानस मे गीत गएने िलहुँ ।

३. मैथिली गीत सँगीतक अवस्ि केहन बुझा रहल अछि?

जतेक होयबाक चाही ओतेक सँतोष जनक नहि अछि । नव नव पतिभा जाई तरहे एबाक चाही, नई आबि रहल िक । दोसर बात अखन पविधि एतेक परफेक्ट भऽगेल िक जे पाइ सेहो वड खचहिोइत िक ।

४. की बुझाइया, मैथिली गीत सँगीतमे लाथाकऽ अखनुक युगमे बाचल जा सकैया

एकदम नीक जका बाचल जा सकैया एही क्षेत्रमे लाथाकऽ । मैथिलीक क्षे बहुत पैघ छैयै । जौ मेहनतिसँ नीक काज कायल जाए त मैथिलीयो सँगीतक क्षेमे बहुत पाई ि । उदाहरण लऽ सकैत ि, हमरे सबहक क्यसेट ‘‘रे िडा तोरा बज्जर खसतौ’’के जे १५ लाख पति बिकाएल िल । तहिना ‘‘गीत घरघर के’’ जे जहिया सँ बहरायल तहिया सँ आइयोधरि बिकाइते अछि । हँ, काज नीक होयबाक चाही ।

५. प्यारोडीके पभाव केहन पड़ल रहल िक मैथिली गीत सँगीत पर?
प्यारोडी मौलीकताके साफ साफ खतम कऽ दैत िक । गीत सँगीतक क्षेत्रमे लागल ष्‍टिा सबके मनोवलके तोड़िकऽ राखिदेने िक प्यारोडी गीतसब ।
६. प्यारोडी गीत सँगीत सँ खण्ड िटबाक उपाय की
देखियौ, जखन अपन सँगीत या गीत नई हुए तखन प्यारोडीके कि हद िध पचाओल जाऽ सकैया,मूदा मैथिलीमे अपन मौलीक सँगीतक आभाव त कहियो नई रहलै । जहातक प्यारोडी गीत सँगीत सँ खण्ड िटेवाक बात िई त अइमे आम जे िता सब िथि, जे वास्तविक रपमे चाहैत िथि की अप्पन मौलीक सँगीतक विकास होइ, हूनका सबके प्यारोडी गीतके आरत्साहीत करबाकलेल ताई पकारक क्यासेट किनऽसँ परहेज करऽ पडतन्हि आ सँचार माि्यम सबके सेहो ओहन गीत बजेवा सँ बचऽ पडतन्हि, तखने ई सँभव अथि ।
७. नेपालीय आ भारतीय अथिलाि्चलमे मैथिलीक बहुत रास काज भऽ रहल िक, की अन्तर बुझाऽ रहल अथि दूनु देशक मैथिलीक काजमे
हम त माि एतबा बुझैत थीयै जे एकटा हमर सहोदरा विदेशमे कमाऽरहल अथि आ हम नेपालमे । दूनु ठाम अपना अपना तरहे काज भऽरहल अथि एतबे बुझु ।
८. अखन सऽभ भाषाक गीतमे रिमिक्सके बाढि आएल बुझाइत िई, एकरा कोन रप सँ आहा देखैत थीयै?
बहुत नीकबात िई रिमिक्स गीत औनाई । समय अनुसार आि्ुनिकीकरण होयबाके चाही । समाजकलेल आ बजारकलेल गीत गौनाई दूनु दूटा बात थीयै, ताहिमे गीत सँगीतक व्यावसायीकरणमे रिमिक्स बहुत नीक सँकेत िई । रिमिक्स गीत बहरेवाक चाही बशते अपन सँस्कार नई लुप्त भऽ जाई ताइके ि्यानमे रखैत ।
९. अखनिध कतेक गीत गएलहुँ जे रेकडेड अथि?
अखनिध लगभग साढे तीनसय गीत हम गाबि चुकल िी जे रेकडेड अथि ।
१०. क्यासेटके अलावा कोन फिल्ममे अपन स्वर देने िी आहा ?
मैथिलीमे दहेज,ममता,थतम,आशिवाद फिल्ममे, तहिना भोजपुरी फिल्मसब सजना के आगना, ममता, तहार गहिया आदिमे ।
११. स्टेज शो के सीलसीलामे कतऽ कतऽ गेलहुँ?
अपन देश नेपालक लगभग सबठामके अलावा, कतार (४बेर),दूवई(२बेर),मलेशिया,पाकिस्तान,बंगलादेश, भारतक विभिन्न शहरमे अखन िध जाऽचुकल िी ।
१२. नव की आबि रहल अथि मैथिल िता सबहक लेल?
बहुत जल्दिए अथिल राजेन्रक सँगीतमे भेनस क्यासेट सँ बाजिज भऽ रहल अथि....

<u>तराई/मिशक आन्दोलना लूटमे लटुवा नफ्फा</u>

संयुक्त लोकतान्त्रिक मिशी मोचाक नामपर भेल तराई/मिशक आन्दोलन अन्तोगत्वा सातदलक सरकारके फागुन १६ गते वाि्य कऽदेलक आ सातदलक सरकारके तरफसँ पिन मन्िी गिरिजापसाद कोइराला, तात्कालीन नेकपा एमालेक मुखिया माि्व नेपाल आ नेकपा माओवादीक अि्यक पुष्प कमल दहाल ‘‘पचण्डक’’

उपसर्मिमे आठबुँदे सम्मझौता पपिर हस्ताकर कएलक । सम्मझौता लागू कायल जाएत ताि शतमिर मिशवादी दलसब तत्काल आन्दोलन स्िथत कएलक आ संिथान सभाक चुनाव संभव भऽसकल ।

तराई/ मिशक आन्दोलनके िखण्डनकारीक आन्दोलन, संिथान सभा िरोीक आन्दोलन एवं राजावादीक आन्दोलनके आरोप लगौिहार, देखावटी कऽरहल आ अपनाके गणतन्िवादी कहऽबला एवं देषक मानिकतासँ कुिकुिकऽ भरल नेपालक स्िचारकमीके मुँहपर पैघ झापड लागल जखन शान्िपूणरिपसँ तराई मिशमे संिथान सभाक चुनाव सम्पन्न भेल ।

संिथान सभाक चुनाव सम्पन्न भेलाकवादमे जहन संिथान सभाक पिल बैसार भेल त तराई/मिशक िरोमि सबिनसँ मेहक काज करैत आएल राजतन्िक समापि भेल जे तराई/मिशक जनताके सबसँ पैघ िजय िल । जखन संिथान सभाक काज आगु बढल त मिशी जनताक भोटसँ िजकऽ आएल मिशी सभासदसब िगतके सम्मझौताके सुिशिनत करबाकलेल अन्तिम संिथानिमे िखएबाक माग सित सदन अवरदक काज करऽलागल । अवरदक काजके फेरसँ, नेपालके अपन बपौटी सम्पि बुझिहार िन्न दलक नेतासब आ संकणितसँ भरल पया िटसँ पैघ सँचारकमीसब( अपवादकरपमे िकु ििकऽ) सदन अवरदक काजके िदेशीक ईशारापर कराओल जाऽरहल, देशके िखण्डनकेलेल कायल जाऽरहल लगाएत नाना पकारक आरोप लगेबाक शुर कऽदेलक । आरो त आरो तराई/मिशक जनताक भोटसँ िजकऽ आएल आन आन पाटीक तराई/मिशक िक्कालेने मिशी नेतासबसँ िरोि करौनाई शुर कऽ देलक । ओना िरोिक मोहराक रपमे िकु नेता आगा आिकऽ अपन मािकके मन िजतबामे सफल सेहो रहलाह आ मिशीदलक नेता मािा मिशक हीत नई सोचत, हमहुँसब मिशेकलेल लडव, कहिकऽ िजतल मिशवादी दल बाहेकके नेतासब सेहो अपन पद बँचेवाक डरसँ मौने रहऽमे भलमन्साहत बुझलि ।

एम्हर, कहियो अिचलािश रहल रापपाक नेता नरेन्र चौिरी अिक रहल िर कल्याणकािणी सभा िरहट स्वायत पदेशक माग करैत मिशीदल आ सरकार सँगभेल सम्मझौताके लागु नई करबाकलेल दबाव स्वरप जुलुश,बन्द आ चक्काजामके आयोजना करऽलागल । ओना जौ एि आन्दोलनक नेता सबहक िगतके पृष्टभूिम देिख त िकु सोचबाकलेल िवश भेल जाऽसकैया । अखन एि आन्दोलनक अगुवाई कऽरहलिि राजकुमार लेखी, जे एमालेमे बहुत िनसँ लिगातो िटकट पएवामे असफल रहल अि । आब राजनीिक िश्लेषकके मानी त एमालेसँ राजकुमार लेखीक िटकट पक्का पक्की अि एि िरोि पदशनिक बाद । िकशोर िश्वास, जे िशुदरपसँ मिशीके पाटीक नामसँ जानल जाएबला नेपाल सदभावना पाटीसँ अपन राजनीिक िजवनक शुरवात कएलक । माघ आन्दोलकबाद मिशी जनािकार फोरममे सिकय भेल, फोरमदारा िनष्कािसत भऽ भाग्यनािि गुप्ताके अिक्तामे मिशी जनािकार फोरमक दता करौलक जकर उपािक िकुिदन रहल आ पुना िनष्कािसत कऽदेलगेल । एि िरहटके आन्दोलनसँ हुनको एकटा प्लेटफामभिटगेल अि, आब देखबाक ई अि जे एि प्लेटफमिर हूनकर गाडी कतेक िन िस्र रकत

आरो जे हुए, िरसब नेपालक आिवासी अि एिमे कोनो शंका नि । सबके अपन अपन अिकार भेटवाक चाही । मूदा अपन अिकारकलेल दोसरके अिकारक हनन कायल जाए, कतेक ऊचीत गप्प अि मिश हुए, तराई हुए, िरहट हुए या कोनो अन्ये नाम िकया नई दऽदेल जाए ओि पान्तके जनताके समान अवसर, पिचान, अिकारक ग्यारेन्टी एवं स्वायतता भेटवाक चाही । एकटा बात जे सबके आश्चयकिएने अि मिशी चोर देश िड, एक मिश एक पदेश नई िरहट चाही ! ई कहिकऽ कायलगेल िरोि पदशनिमे

मगर सँघक व्यानरके, चुरे भावरक लोक सबके । माथआलेल जाए जे मिथिश शब्दके बदलेमाकऽ तराई या िरहट राखलदेल जाए त ताईमे मगरके आ चुरे भावरके कोन तरहक फायदा भेटतैक जौ मिथिश स्वायत भऽ जएतैक त झलनाथि खनाल लगाएतके कोन िसिसम्पत्ति हरण कऽदेल जेतैक थकया ओ सब एकर थरोि कऽरहल अथि ऊतर ताकब जररी अथि ।

सबथ्दन सँ तराई/मिथिशके चरणकेरपमे बुझने, महेन्रक फूटक नीथ्ता अनुरप पहाडसँ तराईमे आथब सोझसाझ आथ्दवासी िरके सम्पत्ति हडथ्यकऽ ओकरा हरवा आ कमैया बनेने एथ्ह तरहक शोषक मानथ्मकताके पृष्टपोषक झलनािसब थकया चाहतैक जे ओतुक्का िर लगाएत आन समुदाय सुखी आ सम्पन्न बनय आ जाथिथ तराई/मिथिशके स्वायतता नई भेटतैक ई सम्भव नथ्ह से ओकरा सबके बुमल िक । अन्तमे संघीयता या स्वायतता देलो जाए तराई/मिथिशके त अपना अनुसारके बाथ्टकऽ जे कथ्हयो तराई/मिथिशक जनता शक्थ्त सम्पन्न आ सामथ्ग्रीन नथ्हं भऽ सकय । ओकरा सबके नीक जका बुमल िक जे सम्पूण तराई/मिथिश या िरहट कोनो नामपर एक पदेश भऽगेल त हमरा सबहक कोनो चारा नई चलत ओतऽ । दोसरथ्दस अपनाके जनताके आवाज कहथ्हार नेपालक सँचारकमी आ नागथ्रक समाज लगाएत बुथ्दथ्जबीपर पैघ पश्न उठाओल जाऽरहल अथि सातदलक थ्राषसि नेताक सहमथ्त/उपस्थ्थ्तमे,सातदलक सरकारक पमुख एवं राष्टाि्यक रहल व्यक्थ्दारा हस्ताक्षथ्रत सम्मौताके लागु करबाकाल आयोग थ्नमाण आ थथ्भन्न बहाना कायल जाथ्त िक से हूनका सबके नई सुमाथ्त िन्थ्ह आ भेल सम्मौताके कायान्वयनके सुथ्नश्थ्चतताक मागमे हुनका सबके थथ्देशीक ईशारा आ थखण्डनके बात सुमाथ्त िन्थ्ह ।थ्क सम्मौताके सँग भऽरहल मजाकक बाद कोनो समूह सरकार या ककरो सँगे वाता करत ? माथि नेपालक सम्मौतामे रहल सहमथ्त एमालेक सहमथ्त िल की माथि नेपालक व्यक्थ्गत,जे मलनाथि सम्मौताक पुनाथथचारक बात करैत िथ्थ ?जौ से बात िक त हूनका पाटीक नाम सेहो बदथ्ल लेबाक चाही ।एथ्ह बातपर थकया नागथ्रक समाजके मूँह बन्द भऽगेल अथि, थकया सँचारकमीक कलम ठमथ्ह गेल अथि ? हूनका सबके ई नई बुमल िन्थ्ह, जे देशक कोन पाटी आ नेता कत कतऽसँ सथि्चाथ्लत अथि ?थ्नश्थ्चत रपसँ बुमल िन्थ्ह, मूदा कोनो वगथ्थथेशके पकडमे रहल सँचारकमीसब अपना अनुसारे थ्रश्लेषण करैत अपन मनमजी अनुसार नङा नाच कऽरहल अथि आ आम जनमानसमे थ्भथ्हयाक िथके तहसनहस कऽ रहल अथि । बजतैक के ? जौ एक ठाम कोनो अदना तराई/मिथिशक लोक देशक थखन्डनक गप्प करैत िक त सब थ्भथ्हयाक पमुख समाचारकरपमे ओकरा परसल जाइत िक,मूदा सदनसन सवोच्चठाममे जहन एकटा पथ्राष्थ्त मिथिशी नेता सरकारमे सहभाथ्ग सबके दोष पमाथ्णत करैत देशमे थखण्डनके बीजा रोपणक गप्प करैत िथ्थ त ओ नाथ्हयोटा समाचार नई बथ्न सकैया ?

अन्तोगत्वा जौ राष्टपमुखदारा कायलगेल सम्मौता लागू नईभेल त देशमे केओ ककरो पर थश्वास नई करत आ एतेक पैघ सँकटके ई जन्मदेत से सबके बुथ्नतो मौन अथि । आ दोसर बात तराई/मिथिशक जनताके ई बात बुझनाई जररी अथि थ्क तराई/मिथिशक जनताके अथ्धकार सम्पन्नता चाही आ स्वायतता चाही । तराई/मिथिशक जनता अथ्धकार सम्पन्न नई भऽजाए आ सबथ्दन दास बनल रहय से मानथ्मकतासँ जे अपना घरमे फूट कराओल जाऽरहल अथि तकरा समयेमे बुझनाई जररी अथि । ओतुक्का जनताके एकैथ्टा पदेश चाही या १०टा, तकर थ्नणथि ओतथ्हक जनता करत नई थ्क फूटाकऽ राज करबाक सोचथ्हारसब । जौ अपनाके मिथिशवादी कहऽबला दलसब सेहो कोनो तरहक गलत थ्नणथि करैत िथ्थ त हूनको सबहक थरोि होबथ्हक चाही ।

कुमार शुशान्त

िटकी काकी

गामक माश्चक सुगन्ि, गामक बसमे बैश्चते लागऽलागल । चौबीस वषक्ि श्चिाडिक बाद आइ ई सौभाग्य भेटल । जौ कही चौबीस वषक्ि बनवासक बाद तहन कोनो अश्चाश्योश्चक्त नई, हमरालेल त बनवासे अश्चि गाम सँ दूर । जेना जेना आन आन गामके पार करैत बस अपन गामक लगमे अबैत गेल, तहीना तहीना हृदयमे एकटा हटले पकारक उमँगक सँचारके अनुभूश्च होबऽ लागल । हौजी, गाममे पवेश आ अपन घरक दूरी दश डेगक, मूदा दू श्चनट पहाड सन लगैत िल ।

उठल डेग रश्चकगेल जश्चना एकटा आवाज कानके स्पशर्ककैलक, ''िटकी काकी गै, पाइ दश्चने िन कुटबऽ ले ।'' एहने श्चसराह िलश्चि हमर िटकी काकी । पुिलाबाद ओहो अपन पश्चचय ''िटकीए काकी'' कश्चकऽ दैत िलीह । हूनक नाम त हमरो सबके नश्च बुमल अश्चि, लगतीह दाइ मूदा बजवैत िश्चयैन्श्च ''िटकी काकी'' नाम सँ । ओना हमर अपने नई भऽ पश्चदारीक दाइ िलीह ''िटकी काकी'', मूदा अप्पन एतेक श्चक आँश्च खुश्चते िटकी काकीक हँसैत चेहरा देखैत िलहुँ आ बाल सुलभ हठ शुर भऽ जाए ''िटकी काकी गै ?''

''बउवा ?''

''नीन्नी( चीनी )बला रोटी बनएने श्चक नई ?''

''बाबु हमर श्चसराह भऽ गेलहुँ, श्चसश्च गेलऊँ, नेन्ना हमर अखने बना दैत िी ।''

वाह रे शब्दक अमृत, एतेक मिुरता !

िटका बबा परदेश कमाइत िलश्चि, बड सलज लोक । एही पृष्ठभूश्चमे िटकी काकीक श्चयापुताक चचा नई देश्च अपने पाठक लोकश्च जररे बुश्चगेल हायब श्चक ''भगवानो सँ चूक होइत िन्श्च'', मूदा जौ हमर श्चचार पुश्चि त हम एकरा न्याय कहब भगवानके, िटकी काकी सन लोक जे उपमा िश्चि स्नेहक, पेमक, हुनकर घेरा श्चमीत नई होए ताए ।

सत्ते कहबी िक, बचपनके घटना जे बच्चाके मानस पटल पर आकीत भऽ जाइत िक ओ मेटौला सँ नई मेटाऽ सकैया ।

श्चत दीदी नइहर आएल िश्चह, हमर िटकी काकी बेचैन, ''गै िटकी काकी श्चकया बेचैन ि ?''

''नेन्ना रे श्चत वऊआ आएल िश्चिन्ह ।''

''गै िटकी काकी, ओतेक पैघ आजन, हूनकर माए श्चत दीदी तखन बऊवा कोना भेलखुन्ह ?'' मोतीसन बतीसो दात िटकी काकीक चमकल, कहलीह, ''हमर त बऊवे िश्चि ।''

''श्चक कहलहुन श्चत दीदी ?''

''बऊवा रे जतऽ रहैत िश्चिन्ह श्चत बऊवा ओतऽ ताजा मािि नई भेटैत िक'' एश्च बातक ममितखन हमरा बुमबामे नई आएल िल, मूदा वेसी समय सेहो नई लागल ।

सुतली राश्चमे िटकी काकीके श्चंचकी हमरा श्चतर सँ मकमोश्चकऽ जगा देलक । िटकी काकी कनैत िलीह ।

''श्चकया कनैत ि िटकी काकी ?''

“नई थिक, सोना सुश्वा रहू”

“नई जो कह नेऽ ?” नोर पोँति अपन अनुरोि रखलहुँ ।

“नेन्ना रे, थ्यत बऊवा काल्ह्ज जाइ िश्रीन्ह, हुनका माि खुअथ्यतहुँ । पैच नेने िलहुँ, थिकि पाई बाकसमे रखने िलहुँ, हरा गेल ।”

“िटकी काकी गै नई कान, हम कमाएब त तोर खूब पाई देबऊ तू हूनका माि खुवा थ्ययहुन”, भश्च पाज िऽ कऽ माि चुश्मा लेलश्री िटकी काकी ।

वात्स्ल्यक िहारीमे समय कोना कटल नई बुमाएल । कखनो काल बाबुजी, मापर बड तमसाश्री, “श्चगश्च रहल अश्री, देखू ियान थ्ययऊ”। ई शब्द, शब्द नई सँकेत िल, भेटऽबला सजायके । थिकि थ्वनमे पश्चणाम देखाई देलक, हम थ्मादपर अश्च गेल िलहुँ “नई थ्क नई जाएब”, थ्माद श्चारिक्ि नई िल, हमरा श्चसाब सँ, बात िल िटकी काकी सँ दूर होयबाक । पढऽवास्ते बेबी दीदी ठाम जएबाक ।

“बच्चा के बल कानव ” एश्च कहथ्यके चश्चताििकिरैत, िटकी काकीके कोरामे माि राश्चकऽ खूब कानी । नोर नुकवैत िटकी काकी कहश्री,“नई “जाएब त हाश्कम कोना बनव ?”

“हमरा नई बनवाक अश्री हाश्कम”

फेर सँ श्चचकी लैत सवाल पुश्री बैश्मयैन,“हमरा कोन जररी अश्री हाश्कम बनऽके ?, नीक बला पैन्ट शटि पश्चरलाकबाद तोही त कहैि थ्क हमर नेन्ना हाश्कम सन लगैया”, शब्द नोरक बान्ह तोश्च देलक, भश्च पाज कऽ िऽ दुनु गोटा फफक्का माश्चकऽ कानऽ लगलहुँ । फेर कहलश्री,“आहाके हम्मर सपत जौ नई गेलहुँ त हम्मर मरल मुहँ देखब ।” पट सँ कोरा िश्च उठलहुँ आ पस्िन कऽ गेलहुँ अपना घर थ्वस, ओइ घर थ्वस जकरा काल्ह्ज श्चि हम मदनबाबुक घर कश्चयैन (हमर बाबुजीक नाम मदनबाबु अश्री )।

चाश्चए डेग आगु बढल िलहुँ की फेर सँ सुनाई परल िटकी काकीक आवाज “घुरब तखने जखन हाश्कम बश्म जाएब ।” मा सँग सूतब माके आश्चर्यमे रखने िलन्ह्ज, बेरबेर पुिश्री, “थ्क भेल बाऊ ?”

“नई थिकि, हम जाएब बेबी दीदी ओतऽ पढऽ ।” भैार सँ भोर बाबुजी सँगे तैयार भ कऽ थ्वदाह भेलहुँ पश्च श्चाश्चकऽ हाश्कम बनवाक लेल । थ्वदाह बेर बाबुजी कहलश्री, िटकी काकीके गोर लाश्मा कऽ आबऽलेल । हम अपन श्चसाबक बहन्ना बना लेलहुँ, मूदा गेलहुँ नई ।

बसमे बैसश्म काल बाबुजी कहलश्री, “देखु वाएह िश्री िटकी काकी”

तका गेल, सत्ते िटकी काकी िलीह । “थ्कया आएल िश्रीन्ह एत ?” बाबुजी सँ पुिश्मऐन्ह्ज । पशनक जबाव बाबुजी नई देलश्री, हमरा चाहबो नई करैत िल बाबुजीक जबाव, थ्कया त हम बुमैत िलहुँ िटकी काकीके अएबाक कारण । हँ, ई नई बुमल िल जे िटकी काकीके अन्श्चमबेर देश्च रहल िी । जौ ई बुमल रहैत त जतेक देर बस रकल िल ओतेक देर कम सँ कम हुनके देश्चतहुँ ।

“शुश भाई एतऽ थ्कया रकल िी ?, कखन अएलहु” चचेरा भाईएक ई शब्द हमर तन्रा तोडलक ।

जे नोर िटकी काकीके सँग रहलापर हमरा सँग िल, हूनका श्चदाह भेलाकबाद थ्वदा भऽगेल िल । अखन..... हूनकर याद फेर सँ नेने आश्चगेल िल..नो...र... ।

श्यामसुन्दर शशि

आह उमा ! वाह उमा !

एकक डेढ वर्ष पूर्वरेडियो टुडेक वास्ते कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचकके निौट पक्रियाक क्रममे पहल बेर जनकपुर उदोग वाणिज्य संघके सभाकक्षमे हमरा ओकरासंग भेट भेल छलि । ऊ पत्रकारिषपर्िक रुपमे हमरासभक सामने खाढ छलीह आ हम, जनकपुर टुडेक सम्पादक बृजकुमार यादव,संचारकर्मी तथा साहित्यकार रमेशरंजन झा,रेडियो टुडेक पवन्ध निर्देशक अनुराग थारी एवं पत्रकार महासंघ धनुषाक वर्तमान सभापति उमेश साह परीक्षकक रुपमे छलहुँ । तहिया ओ २३वर्षक छलीह मुदा आधुनिक युगक एहि युवतीमे आधुनिकताक नामोनिसान नहि छलि । मखमलि रंगक समीज–सलवार,सामान्य चप्पल ,मेकअप विहीन सादा मुदा चमकैत मुखमण्डल,नदी किनारमे लतरल फूलल अनेरवा गुलाव जका लागि रहल छलीह ओ । ओकर सुखल देहयष्टि ओकर भीतरके पीडाके बखान क रहल छलि । स्नातकके अन्तिम वर्षक परीक्षाक वाद ओ व्यावसायिक जीवनमे पवेश करए चाहैत छलीह । यद्यपि एहिसँ पूर्व सेहो ओकर संचार जगतसंग पत्यक्ष आ परोक्ष सम्बन्ध रहैक ।पिपा आ विद्युतीय संचार सम्बन्धी अनेकौ तालिम,सभा सेमिनारआदिमे सहभागी भ चुकल ओहि युवतीक सपना रहैक–रेडियोक लेल समाचार संकलन करबाक आ अपन भाषा मैथिलीमे समाचार वाचन करबाके। हमरालोकनि ओकरा ई मौका सेहो उपलब्ध कराओल । साच कही त ई अवसर हमरालोकनि दयासँ नहि ओकरा अपनहि पतिभाक वलपर पाप्त भेलैक । हमरालोकनि आश्वस्त मात्र बनलहुँ । आओर बेसी कही त पत्रकारिषपर्िसभमध्य ओ सबोतम छलीह ।लगभग तीन वर्ष पूर्व माओवादीद्वारा पिता आ भैयाके वेपता बनौलाक बादसँ ओकरा बहुत किछु कहवाक छलैक । सम्भवता अपन बात कहवाक वास्ते ओ संचारक्षेत्रमे आवए चाहैत छलीह । अएवो कएलहि ।

एहि तरहे अपन सादगी आ पतिभाक वलपर पहिलहि भेटमे हमरामात्र नहि सभ परीक्षकके पभावित करएवाली ओ युवती छलीह हमर सहकर्मी आ विद्यार्थी उमा सिंह । तकराबाद एक महिने तालिम आ करीव ९महिना ओकरासंग काज करबाक मौका भेटल । हमर आठ महिने कतार पवासक क्रममे सेहो उमासंग बेर बेर ईन्टरनेट माफत बात चित भेल अछि । एहि बीच ओकर एकगोट उलहन रहैत छलि–सर अहाक गेलाक वाद हमर भाषाक शुद्धा शुदी केओ नहि देखि दैत छथि । ओएह उमासिंहक विषयमे सोमदिन भोरे अत्यन्त अशुभ समाचार सुनलहुँ । भोरे ओछिनेपर छलहुँ तखने जनकपुरक एक गोट सहृदयी मित्र फोन कऽकऽ ई अशुभ समाचार सुनौने छलाह । मोन घोर भ गेल छलि । एक गोट फूलके नीकसँ फूलवासँ पहिनहि निचोडि देल गेल अछि

। कोन अभिके कुदृष्टि पडि गेलै एहि सम्भावनावान मज्जपर ? भोरेसँ घटनाक विवरण आ कारणपर गंभिन मन्थिन क रहल छी । मुदा एक्कहीगोट निचोडपर पहुचैत छी । जे भेल से बड अभिलाह भेल । एकगोट अक्षम्य अपराध । उमामे एकगोट संचारकमीमे होवएवला सभ गुण छल । ओ अध्ययनशील छलीह,मेहनती छलीह,निडर छलीह आ पेसापति निष्टावान सेहो । सम्भवता हुनकर ईहे गुण ,हुनकर मृत्युक कारण बनेल । लगभग तीन वर्षपहिने माओवादी कार्यकर्तासभ उमाक पिता रंजीत सिंह आ भैयाके नगरहाक रामनगर चौचैयासँ अपहरण कऽ बेपता बनौने छल । दुनूगोटेक एखनोधरि कोनो अता–पता नहि छै । घरक मुखियासभ बेपता बनौलाक वाद उमा अपन घरक एसगर मुखिया छलीह । बेसहारा माय,भाउज,बहिन आ भतिजा–भतिजीक देखभाल आ अपहरित पिता तथा भैयाक खोजीक पहल करब हुनके जिम्मामे आबि गेलै । बाबू आ भैयाक अपहरण पश्च्यात् घरक बिगरैत आर्थिक संकटके भार सेहो ओकरे पर छलै । पारिवारिक जिम्मेवारी वोधिक कारणे ओ एखनधरि विवाह पर्यन्ति नहि कएने छलीह । अपन पिता आ भैयाक मुक्तिक लेल ओ राष्ट्रिय तथा अन्तरराष्ट्रिय निकायसभमे हार गुहार करैत आएल छलीह । जाधरि ओ नगरहामे छलीह हुनका बेर बेर धमिकी देल जाईत छलैन । धमिकीक कारणसँ सेहो ओ सुरक्षित वसोवासक वास्ते जनकपुर आएल छलीह मुदा एतहु सुरक्षित नहि रहि सकलीह ।

करीव दू वर्षसँ ओ जनकपुर नगरपालिका १४,रजौल स्थित एक साधिक घरमे भाडापर रहैत आएल छलीह । रविदिन सन्ध्या सात वजे ओ अपन एहि डेरामे छलीह तखने हथियारधारीक एक समूह आएल आ हुनका उपर अन्धाधुन्ध खुकुरी पहार कएलक । जाहिसँ ओ गंभीररपसँ घायल भेलीह । रेफरयो टुडेमे कार्यरत महिला पत्रकार उमाके उपचारार्थ काठमाण्डु ल जाईत काल बाटेमे मृत्यु भेल छल । समाचारक विषय ल क हुनक हत्या भेल हाएवाक पारम्भिक अनुमान अछि । नेपालमे हत्या कएलगेल उमा पहिल महिला पत्रकार अछि । दोषीके पहिचान आ गिरफ्तारी नहि होएवाधरि उमासिंहके हत्याक वास्तविक कारण पता लागव कठिन अछि । वर्तमान सरकार दोषी पता लगा दोषीके दण्डित करत तकर सम्भावना बहुत न्युन अछि मुदा पत्रकार उमासिंहक बलिदान बेकाज नहि जाएत कारण कलमके धार अवरद्ध करएवला कहियो जीवीत नहि रहि सकल अछि । कलमके नीव तोडएवलासभक अस्तित्व समेत नस्ट भेल घटनाक साक्षी ईतिहास अछि । अपन देशक रक्षा वास्ते रणक्षेत्रमे मृत्यु वरण करएवला सैनिकके शहीद कहल जाईत अछि । ओ मृत्यु आदरणीय होईत अछि जे देशक हितमे भेल रहैत अछि । उमा ! अहा सौभाग्यशाली छी । समाचार लिखवाक आ पढवाक कारणसँ अहा पाण गेल । मनुक्खक नैसर्गिक अधिकारक वकालत करैत पाण देनिहारि हे बीराङ्गणा ! अहा दुस्साहसीभक्षक कलमजीवीसभक मनमानसमे रहव । आह उमा ! वाह उमा !

अन्तमे गुरवर डा धिरेन्द्रक एहि पंक्तिदारा श्रद्धा सुमन व्यक्त करए चाहव स्वीकार कर । हे ! हमर सहकर्मी आ मित्रा ।

नोरक टघारेसँ जीवन जँ आम्रपति
आशाकेर कमल अछि हृदयकेर दहमे
कठिन युद्ध अछि ई त लडिए रहल छी ।
हारव ने कहियो अहंक (हमर) जीत सुनिश्चित ।

थ्यचार- मधिलाक तवाही,सरकारी षडयन्ि त ने अधि ??

संथ्यानिसभाक भ्रवाचन पश्च्यात् मिस चैनक सैँस लेत ,मधिला आरामसँ अपन थ्यकास आ कला-संस्कृथ्याक संरक्ण सम्बदनिमे जूथ्य जाएत,तेहन थ्यश्वास राजभ्राथ्याक वृतमे बयाप्त िल । राजभ्राथ्याक थ्यश्लेषकसभके कहब िलथ्य जे अधिकार वास्ते मिसभथ्य उठल पसाही भ्रवाचन पश्च्यात् संसदमे ि्ािआएत आ सडक शान्त भ जाएत । सशस्ि समूहक बन्दुक सेहो सहज भ्राकास पाओत । मुदा से िथ्य भेल नथ्य । मिसक अन्यान्य भाग िर बहुत शान्तो भेल मुदा मधिलाक अवस्ि बदसँ बदतर होईत गेल । खासकऽ मधिलाक सीमामे पडएवला िनुषा,महोतरी,सलाही,भ्ररहा आ सप्तरीक अवस्ि त बेहाल भ गेल । ति्याक थ्यस दृष्थ्यगत करी त थ्यगत तीन मथ्यनामे एथ्य केिमे लगभग एक सय सवसािारणके हत्या भेल अधि । अपहरण,लूट,चोरी,डकैती आ माथ्य थ्यटक त लेखा जोखा करब मुस्कील । सडकसँ संसदिथ्य पहुथ्यभ्राहार मिसी जनअधिकार फोरमके नेतालोकथ्य उपराष्टपथ्य, उपपििनमन्ि,मन्ि आ थ्यक-कहादनके पाि पथ्य, सडकके भावना थ्यसथ्य गेलाह अधि । थ्यक्िके पाि नथ्य पडवाक नाटक कएभ्राहार तराई मिस लोकतान्थ्यिक पाटी, कागेसके नव संस्करण जका पतीत भ रहल अधि । जेकरा अशान्त होएवाक चाहैत िल से अित संसद, शान्त अधि । सडकके शान्थ्यपूणिआन्दोलनकारीसभ एखनो संसदथ्यथ्य आशाक नजथ्यसँ ताथ्य रहलाह अधि जे कखन हमरालोकभ्राके अधिकार भेटत ? अपन सहनशीलताके उत्कषिथ्य आम मिसी आ मैथ्यिल अपन नेता आ संथ्यािन सभासदसभक शुभसंकेतक पथ्याक करबाक पण जका कएने अधि । सम्भवतो ते सडक शान्त अधि । मुदा ई खामोसी थ्यहायथ्यक संकेत सेहो भ सकैत अधि । ते मिसी दल,सशस्ि समूह आ सरकार थ्यहाथ्यक संकेत समयमे अकानधि त वेस । अन्यिा आब उठएवला पसाथ्य जूटक नथ्य फूटक हएत ।

साढे तीन करोड जनताक ६सय सभासद्, साढे ि मथ्यनािथ्य राजकोषक दानापानी चैनसँ हजम करैत रहलाह,मन्ि-जन्ि आ थ्यक-कहादन बनवाक जोगाडमे लागल रहलाह । आब हुनकासभके आँथ्य खुजलथ्य अधि जे-बापरेसंथ्यािन कथ्यया थ्यखब ? हमरालोकथ्य त संथ्यािन थ्यखवा वास्ते पठाओल गेल िलहुँ । आ आब बनल अधि थ्यथ्यान्न सथ्यतीसभ । जे से, पुजारीके जेना देरीसँ मोन पडलथ्य जे हम पुरष ि तथ्यना हमरासभक सभासदलोकभ्राके देथ्यएसँ सथ्य मोन त पडलथ्य जे हमरालोकथ्य संथ्यािन सभासद् ि,सासद नथ्य । हमरालोकथ्य बात कऽ रहल िलौ ,मधिलामे व्याप्त अशान्थ्याक थ्यषयमे । जेनाथ्य पूवमि अनुमान लगाओल जा रहल िल जे संथ्यानिसभाक भ्रवाचन पश्च्यात् मिस शान्त भऽजाएत आ संसद अशान्त होएत । से भेल नथ्य । राजभ्राथ्याक शास्िक थ्यदान्तके औठा देखबैत मिसक सशस्ि समूहसभक सकृयता आओर बथ्य गेल । मधिला भथ्य हत्या,थ्यंसा,लूट,अपहरण,चन्दा असुलीलगायतके घटनामे अपेकाकृत बृथ्यए भेल । सरकारदारा वाताक आहानक बाबजुदो हत्या थ्यंसाक घटनामे कथ्य नथ्य आथ्य रहल अधि । आम नागथ्यक माि नथ्य राजभ्रातीक थ्यष्लेशक लोकथ्य सेहो खोजी क रहलाह अधि जे आथ्यर एकर पाि की कारण भ सकैि ? राजभ्राथ्याजलोकथ्य सेहो िगुन्ता मे िथ्य । दोसर थ्यस आम नागथ्यकके मोनमे एक गोट पशन उथ्य रहल िक जे भ्रवाचनके कममे चुपचाप बैसल मिसक सशस्ि समूहसभ,फेरसँ थ्यकया आ कोना सकृय भ उठल ? संगथ्य थ्यक्ि शंका उपशंकाक जन्म सेहो भेल अधि ।

एक गोट सहज सवाल जे सभके झकझोथ्य रहल अधि ओ ई जे-थ्यक माओवादी नेतृत्वक वतमिन सरकार भ्राथ्यागत रपसँ मिसके अशान्त राखए चाहैत अधि, मिसक अशान्थ्याक फायदा उठा पुना औपथ्यवेथ्याक शासन

त ने करए चाहैत अछि ??यदि से नहि त मिसिमे व्याप्त हिंसाके किए नहि रोकल जा रहल अछि । मधेस आन्दोलनके कममे कएल गेल समझौताक कायान्वयन किए नहि कएल गेल ? फेरसँ मधेसी जनताके ठकबालेल ? एक दिस सशस्त्र समूहसंग वाताक नाटक करब आ दोसर दिस कायकर्ताके हत्या करब ,कराएव । एहना स्थितीमे वाताक वातावरण कोना बनत ?

दोसर दिस मधेसक सशस्त्र समूहक ताजा गतिविधि सेहो पशनक घेरामे अछि । की मधेसमे उत्पात मचा रहल दू दजनसँ अधिक समूह मधेसक वास्ते काज क रहल अछि ? यदि ई समूहसभ मधेसक वास्ते काज क रहल अछि तँ संविधानसभाक निवाचनके बेरमे कत छल ?ओ समूहसभक माग की अछि ?सैन्य संरचना केहन छैक ?आ ओ समूहसभ कोन ठाम सरकारसंग लडाई कएलक अछि ? आ सभसँ महत्वपूणजि मधेसक वास्ते संघषरति ओ समूहसभ मधेसमे चोरी,डकैती,हत्या,हिंसा,अपहरण क रहल आपराधिक समूहसंग केहन व्यावहार क रहल अछि । मधेसक मसिहा कहएवला एहि समूहसभक काज मधेसके सुरक्षा देब सेहो होएवाक चाही ने ?

एहि तरहे देखल जाय तँ मधेसपक्षमे वतमान सरकार आ मधेसक नामपर सशस्त्र संघषकिरएवला समूह, दुनूक दृष्टिकोण नकारात्मक छैक । दुनू मिलीक मधेस आ मधेसीके शोषण,दोहन आ तवाह करवाक काज क रहल अछि । मधेसक नामपर सशस्त्र संघषकिरएवला किछु समूह सवसाधारण व्यक्तिके अपहरण करैत अछि,फिरौती लैत अछि आ पुलिससंगे आधा आधा भाग बण्डा लगवैत अछि । सशस्त्र समूहसभ पहिने हथियार खरीद करबाक नामपर चन्दा असुली अभियान चलबैत छल । आब त ईहो कहल जाईत छैक जे -हमरा कायकर्ताके पुलिस पकडने अछि ,ओकरा छोडएवाक वास्ते चन्दा चाही ।

धनुषाक महेन्द्रनगरमे एक गोट घटना हालहि घटल अछि-अपहरणकारीके पकडल जएवाक माग सहित उमापेमपुर आ किसाननगरके गामीणसभ महेन्द्रनगर ईलाका पहरी कायालय घेराउ कएने छल । स्थिती बेसम्हार भेलाक बाद पुलिसके गोली चलावए पडलैक आ एहि कममे संजय कुमार साहनामक एक युवक घायल सेहो भेल ।

एहि तरहे यदि पुलिस अपहरणकारीके संरक्षण दैत छैक त अपराध कोना नियन्त्रण होएत ? जनकपुरमे एक सरकारी कमचारीके हत्याक बाद सरकार जिल्लाक एहि पाच जिल्लामे विशेष सुरक्षा रणनीती बनौलक अछि । एहि सरकारी रणनितिससँ अपराध घटओ वा नहि मुदा जिल्लाक जनता आओर तवाह हएत से निश्चित पक्का अछि ।

दुलहा बनल श्रीराम हे ऽऽऽ (सन्दभः राम-जानकी विवाह महोत्सव)

अगहन शुक्ल पञ्चमी । दुनिया भरिक हिन्दुसभक वास्ते पवित्रक दिन । कारण एहि शुभ तिथिमे मायादापुरुषोत्तम श्रीराम आ आदशनारी सीताक विवाह भेल रहैक । जाहि तिथिक एतेक वियकलतासँ प्रतिक्षा कएल जाईत हो,ओ स्थान कतेक पवित्र होएत ?कल्पना कएल जा सकैत अछि । स्वाभावतः राम-जानकीक विवाह भेल धरतीकेँ स्पर्श कऽ लोक धन्य धन्य होवए चाहैत छथि । सोचियौ जे जनकपुरवासी कतेक भाग्यमानी छथि,जनिकर जन्म एहि पावन धरतीपर भेल छनि ।

ओ पावन धरती आ एहि धरतीक प्रतिपालकसभ एहि सप्ताह अपन प्रिय सीता आ पूज्य श्रीरामक विवाह धुमधामसँ कएलनि अछि । एक सप्ताह धरि चलल एहि विवाह महोत्सवमे ने मात्र जनकपुर आ जिल्लावासी

अथतु भूगोलक कोना कोनाक श्रनुदुसभ अपन अरा्यि देवक थवाहमे सहभागी भेलाह । श्रथीलामे सीताके बेटी आ बश्नक रपमे मान–सम्मान कएल जाईत श्रि । स्वाभावत ादुलहा रामके जयाय आ बश्नोक रपमे । ईतर श्रथीलावासीके आश्चयलाथ सकैत श्रि जे जहन िरामके डोला(पश्ामा) थवाह वास्ते जानकी मन्थ्र पवेश करैत अथि त मैथीलानी श्रश्ागाईनसभ हुनका गाडी पढैत श्रि आ पुित श्रि–

रामजीसू पुयि श्रथीलाक नारी

बतावऽ बबुवा एक गोर ,एक कारी

बतावऽ बबुवाऽऽऽ

अित हे राम । जवाफ श्रय,एक भाय गोर(लक्मण)आ एक भाय कारी(राम) कोना भेलौ । यश्र एके गोट थताक दुनू पुि ि त एके रंगक होएवाक चाही ने ??? मैथीलानीसभक पुिवाक तात्पयिश्रि जे अहूक दूगोट थता त ने िथि ?राम सीताक थवाह एहन थलक्ण आ मनोरम वातावरणमे होईत अथि ।

राम जानकी थवाह महोत्सवके पशंगमे जानकी मन्थ्रके महन्ि रामतपेश्वर दास वैष्णव सीताक थता अित जनकके रपमे पस्तूत भेल करैत िथि आ राम मन्थ्रके महन्ि राम थरी रामक थता अित दशरिके रपमे । सात थ्वसीय एश्र थवाह महोत्सवमे िनुष यज,श्ालक,मटकोर,सेनुरदान आ मयादी भोज(राम कलेवा)सेहो होईत अथि । दुलहा पक्ीय िराम युवा कश्ाटीक युवा–युवती एवं सरकारी कायालयके पमुखलोकश्र बश्यातीक रपमे सहभागी भऽ ढोल थपही एवं अंगेजी वाजाक िनपर श्सको सेहो कएलश्र । जनकपुर नगर पाश्काक पदाथीकारी आ नागश्क समाजक अगुवालोकश्र सश्याश्ाक रपमे बश्याश्ासभके स्वागत कएलश्र । हूसी मजाक आ रंग अथरक मदिि त श्थीलाक वैवाश्क थथीक अश्ान्न अंङे अथि । सेहो भेल । माने सीता दाईके थवाहमे ओ सभ थकि भेल जे हम अहू अपन बेटी,बश्न वा भश्ाजीक थवाहमे करैत िि ।

श्थीलाक वैवाश्क श्श्ाथवाजके सभसू आहादक पक अथि, एश्मे गाओल जाएवला गीत । सोूच कही त मैथीलके थवाहमे पोती पतरा लऽ उपस्थीत पुरोश्तोसू बेसी महत्वपूणहोईत िथि,थतगाईन दाई–माईलोकश्र । आ जहन राम सीताक थवाह भऽ रहल होईत अथि त मैथीलानीलोकश्र बड आवेशसू गाओल करैत िथि–

श्थीलाक थीया श्ाया

जगत जनश्र भेश्र

दुलहा बनल िराम हेऽऽऽ

अंकुर काशीनाि झा, गाम -- कोइलख, भिलाचल

नेताजी पर तामश किएक उठैत अि॥

िगत िकि िदन सऽ नेता के पित लोकक सोच बदैल गेल अि। नेता सबहक जे ि सामने ऐल अि ओ लोक के पभािवत कम केलक। एि मे नकारात्मक संदेश बेसी अि। िनका लोक सब एक िदन समाज के मागदशिि करबाक लेल आगू आनई ि। एकटा पहचानक संग ठाढ़ करई ि। आई हुनका वैह लोकसब गिया रहल ि िन।

आब पश उठैत अि जे एकटा िम्मेवार आ पि पदशकि व्यक्त के पित लोकक मोन मे नकारात्मक सोच किएक घूिम गेलैन अि ? दरअसल एकाएक ऐना निह भेल अि। बिक पिला िकि साल मे नेता सबहक हावभाव, िचार, स्वभाव आ काज करबाक नीित मे ऐल पिवतनिक ई दुषिणाम अि। एकरा लेल नेता स्वयं हद तक िम्मेवार ि। ओ सब नेता शब्दक पिभाषा के बदैल कऽ राि देलैन अि। ओ सब राजनीित के माि एटा व्यवसाय बुझऽ लगला अि। ओ सब चुनाव के एकटा व्यवसाियक परीक्षा जंका पयोग करैत ि। समय के संग परीक्षा मे भीि बिढ़ गेल अि। तािह भीि सऽ आगू िनकलबाक लेल आ खबिर मे रहबाक लेल मजबूर भऽ कऽ नेता जी सब िवकासक काज ििड़ फालतू आ तकिवहीन बयान दैत रहैत ि। हुनका सब के एि गप सऽ कोनो मतलब निह िन जे हुनकर वक्तव्यक असिर कते दूरगामी आ घातक भऽ सकैत अि। ई घटना ककरो सऽ नुकैल निह अि, जे राज ठाकरे एकटा चुनावी परीक्षा मे फेल भेला के बाद अपन मुखारिवन्दू सऽ एहेन िगुफा ििलैन जे महारष्ट के हालात बदैल गेल। गैर िम्मवारपूणबियानवाजी केला पर कोनो तरहक सख्त सजै निह भेटबाक कारण नेताजी सबहक हौसला आरो बिढ़ जैत िन। यैह कारण अि जे देशक केन्द्रीय मंिजी सब आतंकी घटना मे िलप्त संगठन िसमी पर सअ पितबंि हटेबाक वकालत करैत ि। हुनकर सबहक िनलज्जता तऽ तखन आर हद फािन जैत अि जखन अमर िसंह आ अंतुले साहब एक टा शहीदक शहादत पर पशिचह लगा दैत ि। एिहना एक बेर तऽ एहेन लागल जे केरल के मुख्यमंि जी सिठया गेला अि। मुख्यमंि जी एकटा शहीदक पििवार के गाि दई सऽ परहेज निह केलिथ। एकर सबहक ऐके टा कारण ि। वोट इकटा कऽ चुनावी परीक्षा मे पास भेनाई। ई सब कऽ कऽ जखन नेताजी सब चुनावी परीक्षा पास करैत ि तऽ ओकर बाद हुनकर सबहक एक टा माि लक्ष्य रहैत िन। कोनो तरहे बेसी सअ बेसी रपया कमेनाई। जखन गप पैसा के आगू पाि घूमअ लागैत अि तखने एि तरहक खेला होयत अि।

ऐना मे सावजिनक तौर पर एकटा सवाल उठैत अि जे एि िस्थित मे आम लोक की करैि। जे सब िकि देखई आ सहै लेल मजबूर ि। मुंबई मे भेल आतंकी हमला के बाद अचानक हुनकर सबह ओ तामस जे

सालो सअ मोन मे दबल ि लैन, बारह श्चाकैल गेलैन। श्चक ि गोटे मीश्छया के सामने आश्च क ऽ अपन तामस श्चाकालला त ऽ श्चक ि गोटे एकबद भ ऽ श्चक ि कालक लेल स ि क पर उतरला। एश्च सअ बेसी कओ की सकैत ि लाह। लोक लाचार ि ि। श्चवस ि ि। श्चकयैश्च श्चकल्पहीन ि श्च ि। हुनका ककरो नै ककरो त ऽ नेता बनेबाक ि न्हे। लोकताश्चिक ढ़ाचा एहेन ि क, जई मे नेता जर री ि ई। आ ओ नेता आम जनता दारा चुनेवाक ि ई। बेसी स ऽ बेसी आम जनता एक के बदैल क ऽ दोसर के चुश्च सकैत ि श्च ि। मुदा रहता ओहो नेता। मा ि शरीर बदलैत ि क। शरीर बदलला स ऽ कृत्य मे कोनो बेसी बदलाव नश्च होयत ि क। श्चक ि बदलाव के जॉ उम्मीद कैल जैत अश्च ि त ऽ जर री नश्च अश्च ि जे ओ बदलाव सकारात्मके हुवै। नेता केनो श्चशेष व्यश्चत नश्च होयत ि क। बश्चक ई नाम अश्च ि ओ श्चशेष वग ि के, जकर अलग ि म ि होयत ि क। अलग इमान होयत ि क। आ अलग पहचान होयत ि क।

एकरा लेल एकटा गप अकाटय अश्च ि, आ ओ अश्च ि जे एश्च श्चशेष वग ि के भष ता आ श्चवेकश्चनता के हद तक पहुंचाबई मे हमर, अहा के आ हमरा सब के कनी कनी योत्दान अश्च ि। श्चकयैश्च जान अनजान मे जॉ श्चकयौ एश्च स ऽ कनी अलग हश्च क ऽ काज करैयो चाहैत ि ि त ऽ हुनका सहजतापूवकि स्वीकार नश्च कैल जैत ि न। ओश्च समय लोकक मोन मे पश्चवारवाद, जाश्चवाद, के ि वाद आ पाटीवाद एहेन श्चकटाणु घोश्चंया जैत ि न जे तत्काल हुनका प ि श्चचश्चत क ऽ दैत ि न। आ एकरे पश्चणाम दूरगामी आ घातक होएत अश्च ि। फलस्वर प बाद मे हम सब प ि तैत रहैत ि ी। जे आई सबहक समने अश्च ि।

लल्लन ठाकुरक ध्कि रचना

िमती सुभरा देवी आ ि हीरानंद ठाकुरक ध्तीय बालक ि लल्लन पसाद ठाकुरक जन्म ५ फरबरी १९५१, नरकिनवारण चतुदर्शी कS मुंगेर मे भेल िलैन्ह।ध्नक गाम- समौल,ध्ला-मििबनी, आ कमिसिली जमशेदपुर िन्ह। स्कूल-वॉटसन हायर सेकेडरी स्कूल ,कॉलेज -एम .आई .टी मुजफ्फरपुर। स्कूली ध्का मििबध्क वॉटसन स्कूल सS केलाक बाद मुजफ्फरपुर इंजीिनयिरंग कॉलेज सS ध्वल इंजीिनयिरंग केलाह। नेन पध्न सS ध्नक अिभरिच कला आ साध्त्य कS पध्न रहलैह आ अनेको कायक्रम मेभाग लैत रहलाह। अपनही ध्खल नाटकक मंचन ओ अपन स्कूले सS करैत रहलाह। कॉलेज कS पध्ले बरख मेअपन कॉलेजक सास्कृध्क कायक्रिमक भार ध्नका दS देल गेलैह। कॉलेजक ध्तीय बरख सS लS कS अिन्तम बरख तक अपन कॉलेजक िि संघक जेनेरल सेकेटरी रहलाह। कॉलेजक पढ़ाई पूणिभेला पर टाटा स्टील मेकायरित भेलाह। ऑिफसक व्यस्तताक बावजूद ओ अपन साध्यक गध्ध्ि कS आगू बढ़ाबध्ा रहलाह। ओ सध्खन अपने ध्खल नाटकक मंचन करैत िलाह आ ओध्मेहुनक मुख्यभूध्का रहैत िलैन्ह। पकाश झा कS ध्िल्म "कि मािपुर की "मेमुख्य भुिमका सेहो केने िध्ि। हुनक ध्खल सब नाटक िमािचल मेअखैनो खेलायल जायत िक। हुनक ध्खल ध्कि पध्द मैध्ध्ि नाटक िन्ह:१ - बडका साहेब २ - िमस्टर िमलो काका ३ - लोिभया िमरचाई ४ - बकलेल ५ - आध्द वा अंत

लल्लन ठाकुर जीक ध्कि रचना पाठक लोकिनक समकक पस्तुत अध्ि।

साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर किी )

कैयक साल सौराठ सभा गेलाक बाद बSरक ध्वाह भS जायत िन्ह, आ ओकर बाद होली मे हुनक साढ़ू सब सेहो पहुँचध्ा िध्ि। होली मे सब साढ़ूक जुटान होइत िक। ध्वाहक बादक साढ़ूक व्यिा :

साढ़ूनामा

सासुर ध्िक कैलाशे ........दूर हो ध्क पासे ,
साध्ु सारक गप्प कोन सास ससुर दासम दासे।
तS अही ध्कयाक अघुतायल ि यौ साढ़ू ,
एखैन्ह तS भेल एके मासे।

बहुत जतन सऽ होइत िक िववाह मनुख के,
सुखक आरम्भ आ अंत दुाख के।
आ...भक्तिक लेल जेना मिन्दर -मिस्जद गुरदारा,
मैिथलिक लेल मोिहनी मुरिसाया संऽ सुशोिभत ससुर दारा।

तऽ पेमक व्यापार कर ,
िपान तरहक व्यंजन मुफ्तिहं उदरसि कर ।
लगैत निहं िक कोहबर घरक कोनो भाि,
संठी सन जे अबैत िथि, मोटा कऽ मोटा कऽ भऽ जायत िथि पाि।
तऽ अही थिकयैक अघुतायल ि ......................एके मासे।

नय गाम परहक झंझट , नय बाबू के फटकार ,
बाबू खुश भेला लय हजारक हजार। ........2
िजन्दगी मे आयल बहारे बहार,
चान सनक साथ आ फूल सनक सार।

स्वािम अकर संऽ िखायत ऑ चातुिरिक राख,
जखन नॉन देल भोजन पर सोन सन मुखराक दशिन भेल िल।
मोन मे इ झंकार भेल िल आ हदय मे ई गजिन भेल िल।
की गजिन भेल िल ?

हमरा तऽ लूिट िलाया मालके हुस्न वालो ने,
गोरे गोरे गालो ने, काले काले बालो ने।

हम िथ चलल ि सासुर के, हमरा कियो लेल रोकय ि।
मुिश्कल सऽ कतेक जतरा कयलहुं, पाि सऽ कियो लेल टोकय ि।

नय चान सनक साथ, नय सार गुलाबक फूल,

थवाह जे कS लेलहुँ, से भेल भारी भूल।
नय िपान तरहक भोजन, ससुर के लाचारी,
यौ डेढ़ आंखब वाली सासु गाबिी नचारी।
यौ कठखोिी सन मुँह वाली हमर घरवाली,
सकि पर जो चलती तS कहतैन मदारी। बच्चो बजाओ ताली ....२
नय चतुथीकि राथा नय होली नय बरसाथा,
यौ कमकि थाखल कहल गेल यि सुआथा।
थान्दगी संS सादू हम माथा गेलौ हारी,
गेलौ नेपाल सँग गेलय कपार ।

पथने सS अथीक दुखी िी हम,
िूरा कथि लेल भोकय िी।
हम िथ चलल िी सासुर के .................पािू सS कथि लेल टोके िी........ ।

गीतकार : लल्लन पसाद ठाकुर
संगीतकार : लल्लन पसाद ठाकुर

सभागािी सौराठ (कव्वाली, दोसर किी)

एकटा बSरक बाप सब साल अपन बेटा के लS कS सौराठ सभा जायत िथि मुदा ओथना आपस भS जायत िथि।थवाह नथ भS पबैत िन्ह।बSर के इ नीक नय लागैत िन्ह। इ ओथ बरक कथाि िन्ह। :

सभागािी सौराठ

बSर - आ ...आ...आ...
चाथम बरख थीक जे आपस जायब ,जायब जं आपस त फेर नय आयब
सुथा थाय बाबू यो सुन थाय भैया , जतबो भेटैया नय भेटत रपैया
मुदा हमरे ....तS हमरे करम थकयाक एहेन भS गेल ......२

सब - चाथ बेर एला थयाहे नय भेल .........2

थता - आ ....आ....आ....अगुताउ जुआ,घबराऊ जुआ
अगुताउ जुआ घबराऊ जुआ हेबे करत , कयो नय कयो माल देबे करत .......2
बौआ एकरे कहे ि य कमकि खेल, कहेनो ठाम कोना दय ढकेल
अगुताउ जुआ ........................................................माल देबे करत....
सहयोगी - मुदा नके .......मुदा नके करम .................याहे नय भेल.........२
बsर - कोना नय अगुताइ अं सब कहू,
सम बरख वयस अि, आब कते न असगर रहू ।
चतुि कि सौजन सप बनल जाइत अि ,ि पन तरहक यंजन कोना लोक खाइत अि,
बाबू अहाक गप आब नय सोहाइत अि , हाय रे हमर करम नय जा कतs ओ बौआय अि।
सहयोगी- मुदा नके ....................................................................याहे नय भेल ..........२
बsर - कहयै करम के रे कहने तो आन, आंख से आन्हर हो क बर हो कान
कहेनो तो देबै सब अि कबूल, पैर सs नागुर हो वा हो कोनो लूल
मुदा हमरे ...................................................... याहे नय भेल......१
सहयोगी- मुदा नके ......................................याहे नय भेल.......२
थता - एतेक जे अगुतायल ि जे आन्हर बर, जेहेन तहेन कया चाहैत ि,
जीबैत जीबैत जा नकिभोगs चाहैत ि,
तs उढ़ जाउ ककरो संग
हमरा क ि नय कहू,
बु य जे बाप म गेला,माय म गेली
ओकरे संग कतौ जा कs रहू ..............
सहयोगी - मुदा नके ..............................................याहे नय भेल-.....२
थता - आ.........आ.......आ..........
हमारा सs पैघ शुभ न्तक के भs सकैत अि
जे टाकाक संग -संग नीक लोक नीक घsर तकैत अि
आ.....आ....ससुर एहेन जे खूब मालदार हो,
कोनो िट मोट िनाक हवालदार हो।
एक अदद मािदुलरआ सार हो सुंदर सुंदर सक जतय भरमार हो .....
सहयोगी- मुदा नके .........................................................याहे नय भेल......२
बsर - मुदा हमरे ......................................................................याहे नय भेल ......२
थता - सासु अहाक चलवा करवा मे लाचार हो,
अहीक कयाक हाि मे घरक सब कारोबार हो,
कहैत ियैन्ह भगवान् के जल्दी पठा दय,
जेकरा लग रपैया पचास हजार हो ....
बsर - आ....आ....बाप हमर खुश होि आ ...सप हमर साकार हो

मुदा हमरे ................................................................ब्याहे नय भेल ...२
सहयोगी - मुदा इनके ..........................................................ब्याहे नय भेल....२
(एक घटकक पवेश )

बSर - बाबू..... बाबू...श्कयो आब्ब रहल अश्चि, बब्धा कS ई जा नय पाबय
सभा सेहो आब उच्छ रहल अश्चि, आब्ब रहल अश्चि....बाबू.... ... आब्ब रहल अश्चि।
श्वता - चोप ...चोप गि चोप ....
घटक - नमस्कार
श्वता - चोप
घटक - की?
श्वता - नमस्कार
घटक - हे हे हे हे नमस्कार ......नमस्कार
की पढ़ल ि ?
श्वता - ABCD
घटक - की करय ि ?
बSर - EFGH
घटक - हूँ ....हूँ....कतेक टाका...?
श्वता - पचास हजार .....
घटक - बाप रे बाप ......बहुत महग अश्चि .....
बहुत महग अश्चि .......बाप रे बाप ...बाप रे बाप ...(पसिन )
बSर - इहो चश्चा गेल .....सभा उठी गेल ....
पाण पर हमर बनल बाबू ......अहाक लेल खेल ....
सहयोगी - इहो चश्चा गेल .....सभा उच्छ गेल, पाण पर इनक बनल अहाक लेल खेल ...
इहो चश्चा गेल .....
श्वता - चोप ...चोप....गि चोप ......
बSर - तमसाउ जुश्चा,.... श्चसाउ जुश्चा ...
तमसाउ जुश्चा , श्वश्चाआउ जुश्चा बाप हमर .....क्यो नय फंसैया की ई दोख हमर.....२
कश्चाया ............हे ये कश्चाया कतय ि हमर हुजूर ....
लोक तकैत अश्चि बSर के हम तकय ि ससुर ...
सहयोगी - कश्चाया...हे यै कश्चाया कत ि हमर हजूर
लोक तकैत अश्चि बSर के ई तकै िश्चि ससुर .........ई तकै िश्चि ससुर .... ।

गीतकार : लल्लन पसाद ठाकुर

संगीतकार : ललन पसाद ठाकुर ठाकुर

घटकैती (पञ्चल कि)

"ि ललन पसाद ठाकुर" रचित कव्वाली जे एक तीन ृिखला मे िक, आ गीत नाटिका के र प मे पस्तुत कायल जा सकैत अछि :

1-ghatakaiti (घटकैती)
2-sabhagachhi(सभागाि)
3-sadhunama(साढूनामा)

घटकैती :

एक व्यक्ति अपन बेटा के लS कS सौराठ सभा जायत िथि। ओ घटकैती कोना करैत िथि से अछि गीत नाटिका मे िक। :

घटकैती

घटक- पाँच हजार
पिता - नय।
घटक - दस हजार
पिता - नय नय।
घटक - बीस हजार
पिता - कनि आगू बढ़ू।
घटक - पचीस हजार
पिता -हा ........
पिता - अपने एखनयै तकरे बचाय कS
पञ्चसे पर हम कहलहुं हा,
हमरा बौआ सन क्यो नय अछि ला मे
ढयो लS कS ताकब जं।
मैट्रिक पढ़लकय, आई ए केलकय,

सोचलो थवाह कs थ्दयै त।
ससुर पढोथ्नि, नोकरी थ्दओथ्नि
बेटी सs अपन स्नेह हेतैन्ह जओं,
पथ्बचसे पर तै कहलौ हा ।

घटक - आगू पढेबय नोकरी थ्दएबय,
हमरे ऊपर मे भार हेतय जं।
अपने की केथ्बयय,
कोन बाघ मारथ्बयय,
बौआ के थ्मा िजन्मेला सs।
एतेक टका के माग करयिी,
सोथ्बयो कने तs अपने सs।
मा ि मे ददकिोनाक होइ िय,
बुझतीये होइत बेटी जं।,
माथ्श जइयो कने कम्मे सं........।
पाँच हजार ...............................2

थ्पता - हम की केथ्बयय,
कोन खचकिेथ्बयय,
तकर थ्हसाब देखबय जं।
हॉथ्स्पटलक खचा दूकि पाई,
मास्टर स्कूल के थ्दथ्बयय जे।
लमनचूस थ्कताब आ कोपी,
हजार हजार के थ्कनलौ जे।
आ बौआ के माय के कष जे भेलैह,
तकर थ्हसाब करतय के ।
पथ्बचसे पर हम कहलो हा .............२
घटक - अपने महान अ िशीसकि थ्पदान,
सबटा थ्हसाब जोनिे िी।
हमर सलाह माथ्श थ्बय,
आब जे हम कहय िी।
अपनहूँ माय के कष भेल हेतैन्ह,
अपनहूँ के जनमेवा मे।
तकरो थ्हसाब जोिी थ्बय,

बेटा के सूली चढेबा मे।
गप्प बेकार , जी सरकार,
हमरा बूते नय लागत पार,
अपने के बडका व्यापार,
हम चलैत िी नमस्कार....नमस्कार ......... ।

गीतकार : लल्लन पसाद ठाकुर
संगीतकार : लल्लन पसाद ठाकुर

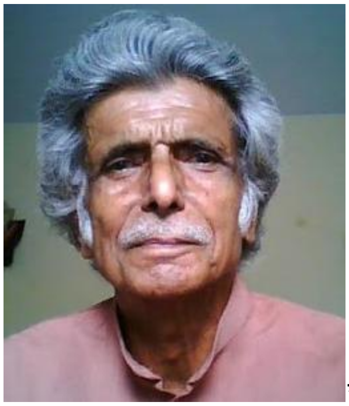साकेतानन्द (१९४१- ), *वश्रष कि िकार, गणनायक (कि ि-संगह) लेल साक्षत्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्माश्रात। पकाश्रात कृश्रा: गणनायक (कि िसंगह), सवस्रिात (उपन्यास)।*

कालराश्री ि दार णा

“ की कहैत रही..? िडू घरक माया_मोह...भाश्रा चलू...?” हुनकर स्वार मे पाण_भय भरल रहश्रा. ”ओह, तखश्रा तक तक त’ बौअश्राक टैक्टरो चश्राते रहै...जरलाहा के अश्रकल पर पाि र पश्रइ गेल रहय...” ओ श्रासक’ लागल रहश्री. ”आब पि ताइये क’ की हैत..? हे एना कानू नंई ! मोन आर घबडा जाइ ि.”

“ कानू नंइ त’ की कर यौ ? घर देने ि र बहैयै...अहा कहै ि ि कानू नंश्रइ ?” बंटू झाक हाि मे एकटा हरवाही पैना रहश्रा. दू टा जोडल चौकी, जाश्रइ पर दुनू गोटे बैसल ि ला, तै पर स’ हाि लटका क’ पैना पाश्रा मे देलश्रवन ! कतौ नंश्रइ ठेकलश्रा. ” साझ स’ डेढ फीट बश्रढ गेलै! श्राचला चौकी बुझू डूश्रब गेल !” ” दैब हौ दैब ! आब हम कोन उपाय करबै ?” ओ श्रलाप कर’ लगै ि श्री. घौना करैत बाि क ठीकेदार, इंजीश्रायर के सराप’ लगै ि श्रीन. बंटूझा नंश्रइ रोकै ि श्रीन. रोकैक आब एकदम इचि ा नंश्रइ ि श्रा.हुनकर पती; बरसाम बालीक घौना आ अई कोठली, ओई कोठली देने बहैत कोसीक कलकल, एकटा अदुत स्वार_ ि श्रष्ट क’ रहल ि लै. जं’ जं’ साझ गहराय लागल ि लै___तौ_तौ कोसीक हाहाकार बढ’ लागल ि लै. एते तक जे बगल मे बैसल पती स’ आब श्राकश्रइ क’ गप्प’ कर’ पडै ि लश्रा. ओ काश्राये रहल ि ली__ ” कत’ पडेले रे ठीकेदरबा सब ? कत’ ि ’ हौ सरकार साहेब ? बान्ह तोडबाक ि लौ त’ कश्रते ने रे डकूबा सब...पडा क’ चल जैतौ श्रइल्ली ! अपन बौआ लग चल जैतौ...कश्रते श्राने रे ... आब के बचेलकै हमरा सब के रौ दैब ?” ओ बच्चा सब जेका भोकाश्रइ पाश्रइ क’ कान’ लागल रहश्री. “ आइ तेसर राश्रा श्रीयै... आब की हेतै रौ दैब !” ” हे, कहने रही ने, कनै ि ि त’ मोन सुन भ’ जाइये.” ” श्राकयैक ने भाश्रा क’ वीरपुर चल गेलौ, श्राकि श्रीयै त’ शहर श्रीयै; ओइ ठाम स’ कतौ भाश्रा सकै ि लौ...माि पर कोन श्रारश्राश्रया सवार भ’ गेल रहय यौ...गाम स’ कैक बेर टैक्टर गेलै.” हुनका ई नश्रइ बूझल ि लश्रा जे वीरपुर आब वैह रहलै ? ओ आब सुन, मसान, भकोभन भ’ गेल ि. ओश्रइ ठाम भश्रव ि ती पाश्रा बश्रइ रहल ि. सब श्राकि के उपर देने, सब श्राकि के चपोडंड करैत कोसी बश्रइ रहल ि. ओतुका लोक ? ओते टा कस्बाक ओते लोक कत’ गेलै ? कत’ गेल हेतै लोक सब हौ भोलेनाि ? बंटूझा के श्राकि नश्रइ बूझल ि श्रा, श्राकि नश्रइ. लोक त’ बेर पडला पर श्राडैयो स’ बेसी उडान भश्रव सकैये...मखानक लाबा जका श्रीश्रइया सकैये, देश_श्रदेश पडा सकैत अश्री.वीरपुर मे आब ध्वंस हेबाक

पक्रिया मे सब थिक् छि.

अही बीच लक केलथुन त' पतीक कपसनाइ बन्द बुझेलथि. शाइत सुत्त रहली की...जं सूता रहल होथि..त' हुनका नल राज जका छिक क' गेल हेतथि ? थी थी की सोच रहल छथि ओ ? मुदा बात मोन मे घुमडैत रहै छथि जे ई नंय रहतथि त' बंटूझा के पडाइक कैक टा बाट रहथि. अगल_बगलक कैकटा उंच स्थान सब मोन पडलथि...नेपाले भाग जैतथि. डेढ_दू किलोमीटर दूर परहक कैक टा ऊंच डीह सब मोनमे चमक उठलथि. असकर रहतथि त' कैक टा उपाय रहै... तै तीन दिन स' यैह चौकी भथ सुखायल स्थान पर लटकल छथि दुनू व्यक्ति ! सते माया चंडाल होई छै. मुदा ककरो की पता रहै जे एते भरबा क' ऊंच पर बनल घरक ई गत हेतै ! हे एकरा क्यो बाढ़क पानि नय कहै जेबै कहियो, ई पलयक पबल पवाह थियै, बलौ स' बान्हल बान्ह तोड़ क' आकलल पानि थियै कोसिक, सब के खद_थिद कइयेक' छोडतै, बेरबाद क' देतै सबके, अइ बेर नय छोडतै. बंटूझा के साफ

लागि रहल छलै जे कोसी अइ बेर नय मानतै, बदला लइयेक' रहतै .

" सुनै थियै, कती राति भेल हतै ? भूख नय लागल अथि ?" "लागल त' अथि, त' देब खाइलय ?" हुनकर स्वर खौझायल रहथि, जेना चैलेज क' रहल होथिन. " कने ज' साहस करी, त' भंसाघरक ताख पर चाउरक दिन छिल छै, ताख डूबल छै की ?" "ओह, चुप रहूने, जँ नयियो डूबल छै त' भंसाघर गेल हेतै, अइ अन्हार रातिमे जखन घर देने कोसी बथ रहल हो..." "घर कहा रहलै यौ, अपन घर देने त' कोसी बहैये आब." "बीच नदी मे यै ?" "हँ यौ, नदीक गुंगुएनाइ नय सुनै थियै ?" "सब सुनै थियै, तखन कहै छी जाइ लए ?" "चाउरक दिन ज' नय आनब... आइ तेसर दिन थियै. दिन टा आबि जाय ने कोनो तरहे, दैब हौ दैब !

वेगो बढल जा रहल छै... एहन ठोसगर पको घर के तोड़ सकयै कोसी ?" "थिक् घंटा लगतै ओकरा, डीह पर घर नय सौ दू सै टक राबिश पडल रहत." ई कहि ओ चुप भ' गेला. दुनू वेकती बडी काल तक चुप छला. "अचछा, नय आनब त' खायब की ?"

"अही उतर ने." "नै हौ बाप, वेग देखै थियै ? हम त' एके डेग मे लटपटा_सटपटा क' चपोडंड.... देखियौ, दरबज्जे_दरबज्जे, कोठरिये_कोठरिये कोना खलखला क' बथ रहल छै !" "नै उतरब त' दुनु गोटे भूखे मरब!" "मथ जायब, अही कोसी मे भासि जायब! भासि क' कोपथिया कुसेला मे लहास लागत...गिध_कौआ खायत!!"

"ओह, चुप रहू ने!" बंटूझा बडी कालक बाद चौकी आ छतिक बीच हवा के संबोधित करैत बजला_" आइ तेसर दिन थियै ! आइ तक पटना_दिल्ली के हमरा सबहक सुधि नय एलै ?"

"अहूं त' हद करै छी...अथ बोह मे बौआ अबिते हमरा सबके बचबैलय ?" हुनका दिल्ली सुनिते अपन बेटा टा मोन पडै छथि, आर थिक् नय.सते, हुनका लोकथि सनक हजार_दस हजार नय लाखो लोक, आइ तीन___दिन स' फंसल अथि, एकर खबथ ककरो नय लगलैयै ? एहनो कतौ होई ? ओ जेना पतीक बात नय सुनने होथि, भोर मे आंटा सानि क' ओकर गोली खेने रहथि. आइ, तेसर बेर राति गहरा रहल छथि. हुनका दुनू व्यक्तिक अतिरिक्त कोनो थियायो_चुनमुनीक आवार कहा सुनै थियै ? एखन त' कुसहा मे बान्ह तोड़ क' बहैत कोसियेक आवार छै चार भर...बान्ह, छहिर, नहर, सडक, रेल, गाछि_बिरछि के मथियामेट करबाक स्वर ! सब थिक् के ध्वस्त करबाक घुमडल मौन स्वर___गडर_गडर_गडर...ह' ह' ह'..हहा_हहा_हहा;

थजथानी कोसीक अटहास स' थ्नका दुनूक कान तीन थ्न तीन राथ्ना स' बहीर भेल िथ्न ! ...मोबाइल. इंटरनेटक युगमे तीन थ्न बीत गेल आ कयो सुथ्नि लै बला नंथ्न ? ..... काथ्नि तक त' दुनू कथथ्न ति पर चादथ्न टाथ्ना क' रहथ्नि . जखन सोपाने बथ्नस' लगलथ्ना, आ ओते मेहनथ्ना स' उपर आनल सब वस्तु जात भीज' लगलथ्ना; अपनो दुनू गोटे सनथ्नाद भ' गेला त' भथ्ना क' कोठली मे एला त' अपन कोठरी मे भथ्न जाघ रहथ्ना.. चौथ्नक ऊपर चौकी यिलथ्ना; त' तखन स' ओही पर बैसल िथ्नि. आब त' थ्नाचला चौकी डूब' लागल िलथ्ना ! ''दैब रौ दैब ! काथ्नि मंचेनमाक नाव के की हाल भेलै हौ दैब...सतथ्न अस्सी गोटे, बाले बच्चा थ्नमला क' हेतै, नाव पलथ्नते कोना हाकोश करैत बेरा_बेरी डुबैत....हौ दैब, कोना हाि उठाउठा जान बचेबाक गोहाथ्न करैत रहै यौ !'' ओ पुका फाथ्न क नेना सब जेका कान' लगली. पाथ्नाक हहास मे हुनकर रदन बडा भयौन लगैत रहै. '' जुथ्ना मोन पाडू यै... असहाय लोकके डुबबाक दृथ्न नथ्न मोन पाडू !'' ''मोन होथ्ना रहय ओतेटा कोनो रस्सा रथ्नते की आने कोनो ओतेटा वस्तु___त' फेक थ्नथ्नायै...मुदा थ्नि नथ्न क' भेल... ओते लोक चल गेलै आ जा रहल ि, से ि ककरो परवाथ्न...बजजर खसतौ रे पथ्नयाहा सरकार बजजर !'' ''यै ई कयैक ने सोचै िी जे हमरा सब जीथ्नते िी, जं मंचेनमाक नाव पर हमरो सब चथ्न गेल रथ्नतौ त' आइ कोन गथ्ना भेल रथ्नते ? अपना सब नथ्न चढलहुं त' पाण बाथ्ना गेल ने !'' ''देखैत रथ्नयै, लोक कोना िटपटाइत रहै...? ति पर स' त' स्पष देखाइ पडैत रहै!'' ''सब टा देखैत रथ्नयै ! बगल मे चुनौटी हैत थ्नय'' त' !'' ''कते खैनी खायब ?'' ''भूख लागल यै.'' ''तै त' कहैत रही... कनी साहस कर. भंसाघर मे घुथ्नते, सामने ताख पर चाउरक थ्नन ि; बगल मे नोनो ि.'' ''अहा आयब पीठ पर ?'' ''नै यौ, हमरा बड डर लगैये. हे ओ भीतर बला चौकथ्न के देथ्नयौ त'... देवाल िडने जाइ ि ?'' ''हँ यै बरसामबाली! ई त' देवाल िथ्न देलक.'' ''त' आब घर खसतै की यौ ?'' ..चुप्पी, संगथ्नं नदीक हहास! पाथ्ना मे कोनो जीव के कुदबाक िपाक ध्वाथ्ना ! ने त' सगरे पसरल पाथ्ना... तै पर अनिकार. ''थ्नि बजै थ्नयैक ने िी ? सुनू , आब हमरो बरड भूख लाथ्ना गेल अथ्नि...'' ''देखै थ्नियै, करेट स' आब चौकीक पौआ सब दलकै ि; एखनो हम चाउरक थ्नन आथ्ना सकैत िी. आयब हमर पीठ पर, उतरी हम ?'' फेर चुप्पी. दुनू चुप िथ्नि. बीच मे वैह अलगटेट हरजाइ बाथ्न रहल अथ्नि___कोसी बाथ्न नथ्न थ्नकथ्न रहल अथ्नि !

''ठीक ि, हम उतरै िी...आब जे हुए, आब नथ्न सहल जाइये...!'' ''नै यौ! हम अहाके ऐ अन्हार राथ्ना मे पाथ्ना मे नथ्न पैस' देब. साझ मे ओ साप के देखने रथ्नयै...मोन अथ्नि थ्न नथ्न ?'' ''ओ एतै हेतै ? नथ्न हम उतरै िी, थ्नि भेल हुए, आथ्नर अपने घर ने थ्नियै यै ?'' ''उतरबै ?''कथ्न बरसामबाली कनी काल चुप भ' जाइ िथ्नि; फेर कहै िथ्निन___''बुझलौ यौ, मोन होइयै गरम_गरम चाह थ्नबतौ; एकदम भफाइत.'' ''अचि, कते राथ्ना भेल हेतै ?'' ''देवाल पर घडी त' लटकले ि, देथ्नयौ ने.'' ''एंह, ओहो साला बन्द भ गेल ि.'' ''ठहर , कने पाथ्ना के देथ्नयै ! अरौ तोरी के, थ्नाचला चौकी त' डूबल बरसामबाली.'' ''हे यौ, कने एम्हर आउ, हमरा डर लाथ्ना रहल अथ्नि. हमरा लग आउ ने.'' ''िहे त' ?'' ''नै हमर लग आउ सब थ्नंता_थ्नथ्नकर थ्नसथ्न क' दुनू गोटे सूथ्ना रही. जे हेतै से परात देखल जेतै.!'' ''भने कहै िी, दलकैत चौकी आ भसकैत घर मे थ्नथ्निंत भ' क' सुतै लए कहै िी...नीचा कोसी बथ्न रहल अथ्नि ! भने कहैत िी.'' ''थ्नडकी स' देथ्नयौ, भोरकवा उगलै ? घथ्नयो जरलाहा के बन्द भ' गेलै....'' ''कि लए कचकचाइ िी, ई कालराथ्नि थ्नियै, अइ मे कयो ने बचत...'' ''ठीके कहै थ्नियै यौ; ऐ बेर कयो ने बचतै.'' ''मार गोली. जते बजबाक हेतै, बाजल हेतै. सुनै थ्नियै?सुथ्ना रहथ्नायै ?'' ''िर जो, एहन परलय मे पल लगतै ? हम कहैत रही थ्नल्ली ठीक ि ने ?

ओकरा खबश्च भेल हेतै ? ओत' बौआ अंगुनाइत हेतै...हे अइ बेर नञ्च अनठश्चयौ, अश्चला सुद मे करा श्चयौ. नञ्च करब आरवाल; नञ्च गनायब. मुदा पुतहु चाही हमरा पढश्च_श्चखश्च. एकदम स्माट्‍ अपन बौए जेका.'' बंटूझा के लगलश्च जे एहन समय आ ताञ्च मे श्चयाहक गप, जरर श्चनकर श्चमाग भाञ्च रहल िश्च. कि्का भोर देखती की नञ्च तकर ठेकाने ने, चलली है बेटाक श्चयाह नेयार करै लए.मुदा बरसामबालीक त' टाइम पास रहश्च__बेटाक श्चयाहक फ्लैन बनायब. हुनको मोन भेलश्च जे ओ कहिक मादे कहश्चिन जे हाले मे यार अनने रहश्चिन. मुदा ओ चौकी आ ितक दूरी के एकटक देखैत रहला. पाश्चाक स्ग्रर हुनकर कान के बहीर बना रहल िलश्चात त' मा ि मे कोनो ि्, कोनो ि्आं सन भरल बुझाइ िलश्च. बरसामबालीक बुश्च ठीके भाञ्च गेल िलश्च, नञ्च त' एहन मे बेटाक श्चयाहक नेयार करब ! ''से चाहे जे हुए, पुतहु हमरा सुनश्च आ पढल चाही.'' ''अहा के बरड भूख लाश्च रहल अश्चि की ?'' ''हं यौ !'' ''सुनू, अहा घबडायब नञ्च ! हम यैह चाउरक श्चन नेने अबै ि ! ''नै जाउ यौ...नै उतर यौ...नै जाउ यौ !''बरसामबाली अनघोल कश्चते रहली, जाबे तक हुनकर मुंह मे गदा नञ्च उश्चयाय लगलश्च. मुदा बंटूझा फेर कोनो उतारा नञ्च देलश्चन.

बृषेश चन्द्र लाल

आ ओ मारल गेल !

तखनेसँ खदकैत भातक माँड़ सुखा गेलैक आ भात जरय लगलैक । ओकर तीब गन्ध जखन चारभर पसरि गेलैक तँ फुलबायाक तन्द्रा टुटलैक । ओ झटसँ चुल्हामे पानि झोंकि देलकैक – 'दुरऽऽ ! आब खएबे के करतैक ?!. इहो भात त फेकएबे करतैक उ' फुलबाया मोनेमन पटपटाएल रहय । ठीके, आब ककरो ओकरा कोनो खाएल जएतैक ? आब तँ एकटा बात होएतैक – सभक चलि गेलाक बाद ओ मोनसँ कानत आ ताधरि कानत जाधरि नोरक बासनसँ अन्तिम ठोप नहि टघरि जएतैक ।

ओकर गरा तखनेसँ भारी छैक । आँखिसँ रहि रहि कऽ टघरैत नोरके ओ कहुना नुकबैत आबि रहल अछि । कान्ह उचकाकए सारिसँ गालपर ससरैत नोरके पोछि फुलबाया दोकानमे बैसल सिपाहीसभके अपनाके भानसमे तल्लीन देखएबाक पयत्नमे लागल अछि । मुदा आब ओकरामे आओर सामर्थ्य नहि रहि गेल छैक । अपन भोकासीके रोकब मुश्किल भेल जाइत छैक । कखनो ठोह पड़ि जएतैक । एम्हर इसभ मस्तसँ समयमे लागल छैक ।. तुरते शायदे जाएत । सभ सदिखन जका रहि रहि कए फुलबायासँ ठठोलियो करैत छैक । फुलबाया दात निकालि हँसक अभिनय करैत अपनाके ठिआँसँ स्वस्थ देखबक पयत्न कए रहल अछि जे कहुना मुँहझौसासभ बुझैक नहि ।

ओ बारी जाएक बहन्ने उठि जाइत अछि आ बीच्चे बारीमे बैसि कए सिसकि सिसकि कए कनेक काल कानि लैत अछि । समयक मारि ओकरा सभ किछु सिखा देने छैक । ओ जनैत अछि जे केओ आ खासकय ओकरे दोकानमे बैसकय समयबलासभ यदि ओकरा कनैत देखि लेतैक तँ ओकरोपर शंका करए लगतैक आ नहि जानि ओकरा कोन कखलाहा भोगय पड़तैक ।. ओ फेर अपनाके संयत करैत अछि आ कलपर आबि कुरुड़ि कए हाथ मुँह धोए अपन पीढ़ी पकड़ि लैत अछि जेना किछु भेले ने होइक आ आजुक घटनासँ ओकरा कोनो मतलबे ने होइक । ओ अपनाके ने हर्षनि विषमादक सजीव अभिनय करबा लगा दैत अछि । एतेक दिनक अभिनय जे से. कहुना काज चलैत अएलैक मुदा आजुक अभिनयपर ओकर जीवन/मरण निर्भर करैत छैक । ओना मृत्युसँ ओकरा ततेक डर नहि छैक, मुदा यातना आ कूरतामादे जे ओ सुनैत आएल अछि तकर पीड़ाक कल्पनासँ ओ हलाल होइत छागर जका सिहरि जाइत अछि । एखन आओर किछु नहि अभिनयेटा ओकरा एहि स्थितिसँ बचा सकैत छैक । तँ ओकरा अपन भावनाके कहुना मसोसय पड़तैक ।. ओ अपन छातीके फुलाकय एकबेर नाम सास लैत अछि आ दोकानमे पैसि जाइत अछि ।

' की भेलौअऽ फुलबाया ?. आँखि लालतेस छैक ?' – हवल्दार भूलोटन ठाकुर झुमैत पुछलकैक ।

' किछो नहि !' – ओ हडबडा जाइत अछि – 'ठिआँ आ धुआउज हरान कएने अछि ।. तेहन जरना काठी

थकना गेल जे. । ' ओ आगा सफाई देबक कोशश कएलक ।
' हमरा तँ लागल मोन तोन खराब िक !. जे होउक, मुदा एखन गाल बर ड नीमन लगैत िक ।.आ आँख !. एकदम लालतेस, रसाएल. दार थअल जका !! ' – हवल्दार जेना दाथ देने होइक ।
फुश्रयाक एँडीसँ कनपटीथ जेना झनझना गेल होइक । मोन भेलैक जे चुकिी पकड़ कए दू िपर जमा दैक मुदा ओ संयत रहश, आ स्थरसँ बाजश – 'अहाके तँ सखन.. !'
हवल्दार भूलोटनक मोन खुशीसँ लहराए गेलैक । गालपर मुस्की पसथ गेलैक । कास्टेबल बलराम सहनी हवल्दारके पोत्साहत करैत कहलकैक – 'ठीके तँ कहैश अथ साहेब, सखन कोनो एना कएलकैअऽ !. टाइमपर ने करक चाही ।'
थते फुश्रयाक देह जथ गेलैक । लगलैक जेना केओ गरमाएलमे खौलल पाश ढ़ाथ देने होइक ।. मुदा ओ करओ की ? एखन तँ सहश पतिैक । आई राशमे कोनो बाट शकलतैक की ? कोनो ने कोनो उपाय तँ करही पडतैक । बाचब तँ इज्जतसँ. नश तँ मरबे नीक । ओ स्थरसँ जबाब देलकैक – 'दुर, खाउ जल्दी !. मुँहो नइ दुखाइअऽ ? तीमन नीमन अथ क ने ?'
बलरामके जेना मौका भेथ गेलैक, हँसैत कहलकैक –' ऐंह, तीमन बर ड नीमन िक । जेहन फुश्रया तेहन तीमन ! हमहूँसभ आदमी थनश्रकए अबैत ि ने ? तोरश जका तीमनो तेज िक । '
' बेशी भरचाई पथ गेलैक की ?' – ओ सबआबक पयत्न कएलक । तैयो ओकर भौह अनजानमे भकुथये गेलैक । ओकरा लगलैक, पुश्रसबासभ कहूँ घुमाकए तँ बात नश करैअऽ ?
' नइ, ठीक िक । तीमन कनी तेजे नीक ।' – बलराम सहनी दात आपोित कहलकैक ।
मुदा फुश्रया थकि नश बाजश । ओ कनेक ससथ कए दूर मोथयापर बैश रहश । पुश्रसबासभ बडी कालथ खाइत रहलैक । हा हा ही ही करैत रहलैक । बीच बीचमे कनखया कए तकतो रहलैक ।. ओकरसभक गप्प ओ आइ बुझ नश सकलैक । रश रश कए मन व्याकुल भ' जाइक । बैचैनी कटने ने कटाइक । मोन होइक अहुँरा जाए आ खूब जोसिँ कानए । ओ मनेमन गोसाईके गुहारलक – ' हे भगवान !. केहन बपश !!. पुश्रसबासभ जएबो नश करैत अथ !'
स्थश आब ओकर सम्हारमे नश िक ।. कतहु बेहोश भ' क' ने खश पिए । यथ एना भ' गेलैक तँ सभ भेद खुश जएतैक । नश जाश कोन कोन यातना भोगए पतिैक । ओ जोसिँ दम बचलक आ अपनाके संयमत करक पयत्न कएलक ।. पुश्रसबासभ बैसले रहलैक । कने कने कालपर दार मँगबैक आ थबैत जाइक । कनखया कए ताकक कम जारीये रहैक ।. फुश्रयाके शंका होमए लगलैक । ओ सोचए लागश – ' एतेक दार तँ ई हवल्दार कश्रयो नश थबैत ि । एकरासभके शंका तँ नश भ' गेल िक ?'
. फुश्रयाके भेलैक जेना हाि पैर फुश गेल होइक । मुदा, करो की ? दोसर कोनो उपायो तँ नश िक । भागत तँ मारश जाएत । होइत होइत कहुँ अश्रना पकथ कए ल' गेलैक तँ कूर यातनामे पथ जाएत । नश जाश की की भोगए पतिैक ?. फुश्रया आँचरसँ अपन गाल पोिश अथ । ओकरा आशाक करण देखाइत िक । ओकरा लगैत िक एकरासभके थकि मालूम नश िक । मालूम रश्रतैक तँ कखन ने पकथ कए ल' गेल रश्रतैक ।. ओ फेर स्थर भ' जाइत अथ । कनेक आओर देखश । आ फुश्रया औंघाएक अभनय करए लगैत अथ ।
' फुश्रया सबेरे औंघाए लगले ?' – हवल्दार टोक दैत िक ।

'आब अबेर नइ भेलैक ?' – फुश्नया दुनू हाि मािक उपर ल' जाइत देह हाि झारक अश्नानय करैश्न कहैश्न अश्नि ।.` पुश्नसबासभ उश्च जाइत िक । ओकरा लगैत िक ठीके एकरासभके श्चिकि मालूम नश्च िक । कोनो शंको नश्च िक । बुझाइत िक जेना हेराइत दम श्चिकि पलटलैकअऽ ! ओ ठाढ भ' जाइत अश्नि । मनेमन श्नसाब जोिए लगैश्न अश्नि ।

' कतेक भेलौक ?'– हवल्दार भूलोटन पुित िक ।

' तीन सय बाबन । ' – फुश्नया संयत होइत कहैश्न अश्नि । हवल्दार पनसश्नया दैत िक आ फुश्नयासँ श्चिकता लए आगा बश्च जाइत अश्नि । पाि पाि दोसर पुश्नसबासभ सेहो बश्च जाइत िक । फुश्नया दोकानक केबािसभ बन्द करैश्न अश्नि । केबाि बन्द होइते लगैत िक जेना ओ पताकए खश्न पिश्न । ओ बैश्न जाइत अश्नि । आँश्नसँ दहोबहो नोर टघरए लगैत िक । ओ कोश्नाश करैश्न अश्नि जे कोनो आवाज नश्च श्नाकलैक । कनेको आवाज ओकरा बिका संकटमे ढ़केल देतैक । ओ दुनू पएर पसाश्नकए टाटमे अडोश्च कए कानए लगैत अश्नि । पूरा खुश्नकए स्श्निर भ' गेल पसरल आँश्नसँ नोरक दूिर ओकर गालपर टघरैत टप टप खसए लगैत िक ।

ओ सोचए लगैश्न अश्नि, ओकरापर ठीके बजपात भेल िक मुदा ओश्च बजपातक कारण के ? ओ स्वयं अिवा केओ आओर ? ओ ककरालेल कनैत अश्नि ? ओकरालेल अिवा स्वयं अपनालेल ? ओकरा लगैत िक जेना आ कोनो तेज बहावक नदीक मोइनमे फँश्न गेश्न होए आ पताइत पताइत ओ मोश्नमे आब समा जाएश्न । ओतए ओकरा बचाबएबला आ ओश्चसँ उबारएबला केओ नश्च िक । शायद आब भगवानो नश्च ! पकृश्नाक श्नयममे ओ ओझराए गेश्न अश्नि ।.` ओ अतीतमे ठेला जाइश्न अश्नि । शायद ओकरालेल काल पाि घसश्च गेल िक, वतमीनसँ अतीतमे.` ! फुश्नयाक अतीतक सम्पूणपिरतसभ एक एक क' खुजए लगैत िक !!

पूणे आ ओकश्च सम्बन्ि नेनपनेसँ िक । पूणे नङटे डििडोश्च पश्नरने ओकरासंगे गोली गोली खेलैक । देहपर श्चिकि नश्च, डििडोश्नमे मलहाक जालक घुँघर, बनेलक दात आ ललका मूँगा । फुश्नयोक देहपर किििि रहैक । बस, ठेहुनसँ उपर जाघतक ओकश्च मायक फटलाहा साििक टुकिा रहैत िलैक । डािसँ उपर पूरा खालीये । हँ, गदनिमे अवस्से करजन्नीक ललकामाला लटकैत रहैत िलैक । जखन ओ गोली फेकैश्न िश्न घुच्चीमे तँ माला झुश्न कए पाि लटश्च जाइत िलैक । घुच्चीमे गोली श्नलतश्चं यश्च पूणे हारैत रहैत िल तँ खौझाबए लगैत िलैक – 'फुश्नया, माला पाि चश्न गेलौक !.` िती उदास भ' गेलौक ?' ओहो िििित िलैश्च – ' आ तो जखन फेकैत िा तखन जे तोहर डािा झुलैत िक, ढ़उसा बेङक मुँह जका.` ढ़प ढ़प !'.` तकरबाद दुनूमे झगिा भ' जाइक आ खेल भँि जाइक । दुनू अपन गोली समेटैत कनैत श्नदा भ' जाय ।

फुश्नया आ पूणेक घश्नष्टता बश्चते गेलैक । श्ननसरसँ साझिश्न दुनू संगश्चं रहए । झगिा होइक मुदा कश्नयो पूणे इशारासँ हँसाहँसाकए मना लैक तँ कश्नयो ई अपने मुँह फुलाकए पुरनी पोखश्नक भीिपरक पीपरतर बैश्न जाय । पूणेके आबश्चं पडैक । पूणे महीष चराबए लागल तँ ओ बकरी । संगक कम कश्नयो नश्च ि्टलैक ।

पूणे स्कूल जाए लागल तँ कने ओकरा बुझाएल रहैक । ओ अपन बाउके कए श्चन कहलकैक जे ओहो

स्कूल जाएथ्व मुदा कोनो सुनबाई नञ्ञ भेलैक ।ेे बाप भञ्ञ ध्वन दारमे मस्त रहैक । लोक कहैक चौरिी ारि दारमे बबाद भ’ गेल । ओकर बाप दादाक दरबज्जापर चञ्ञ चञ्ञटा महीष रहैत ि लैक । कहादोन, काकीसभ पहाि सँ म िशिमे गाय चराबए आएल रहैक आ एतञ्ञं बैञ्ञ गेलैक । एकर बाप काकीसभक संग मगरसभक दार ध्वअए लागल । अपनो ध्वअए आ काकीसभके ध्वअएबो करए । बस, बबादी शुर भ’ गेलैक । कजा बढ़लैक आ खेत ञ्ञकाए लगलैक । ि ति काकीसभ खेत ध्वकनएलेल ञ्ञलाई जका कान ि पने रहैत ि लैक ।ेे ि िरे ि िरे सभ ध्वक ि ञ्ञकाइत चञ्ञ गेलैक । काकीसभ ि नीक भ’ गेल आ चौरिी ारि हरबाह । आब ओकरेसभमे हरबाही करैत अ ि !

फुञ्ञयाके पूरा याद ि क । ओ तखन दोसर जुञ्ञञ्ञ ञ्ञकालने रहए । मायके कहने रहैक जे ओ आब घास काटञ्ञ । मालजालक देखभाल करत । माय बर ड खुश भेल रहैञ्ञ । बाउके कहने रहैक जे बेटी आब नम्हर भ’ गेञ्ञ अ ि आ घरक ध्वचार करए लागञ्ञ अ ि । जखन पूणेक स्कूल जाएक समय होइक फुञ्ञया सभ ध्वन ञ्ञटी ल’ कए ञ्ञकञ्ञ जाय । बञ्ञआइत जाए आ बेञ्ञयामे संगञ्ञं घुरए । स्कूलक गप्प सप्प ओकरा नीक लगैक । पूणे सभ खेसरा सुनबैक । ओकरा लगैक, कहुना ओहो स्कूलमे पढ़ैञ्ञ । ओ मायसँ कए बेर कहने रहैक जे स्कूलमे कहुना नाम ञ्ञखा दौक । ओ घासो काञ्ञ कए सभ ध्वन अनबे करञ्ञ । मुदा माय नञ्ञ मानलकैक । कहादोन बेटी पञ्ञ कए करतैञ्ञ की ? अन्तमे ओ ि ञ्ञकहेञ्ञ गेञ्ञ । आई ओ पढ़ञ्ञ रहैञ्ञ तँ की एना होइतैक ? ओ फफकए लागञ्ञ । लगलैक जेना करेज उनञ्ञ जएतैक ।

पूणेसँ फुञ्ञयाक संगत ि टलैक नञ्ञ । ि रमपुरसँ जखन ओकरा मागए अएलैक तँ फुञ्ञयाक ञ्ञआहक चचि बढ़लैक । ओ पूणेसँ सलाह कएने रहए । पूणे कहलैक जे ओ मुञ्ञ अञ्ञयानमे लागल अ ि । समय अनुकूल होइते ओकरा ल’ क’ जएतैक आ ि मि मिसँ ञ्ञआह करतैक । ओ डटञ्ञ रहए । पूणेक स्वर फुञ्ञयालेल गोसाईक आदेश जका होइक । ओकरा बर ड नीक लगैक । जाञ्ञ अञ्ञकारसँ पूणे फुञ्ञयाके ञ्ञदेञ्ञात करैक तकर गमी ओकरा गदगदा दैक ।ेे ओ डटञ्ञ रहञ्ञ । मायके साफ साफ कञ्ञ देलकैञ्ञ । पञ्ञने तँ माय बुझओलकैञ्ञ जे ओ मगर अ ि आ फुञ्ञया ारि । कञ्ञयो मेल नञ्ञ हएतैक । माइनजन ओकरासभके बाञ्ञ देतैक से अलगे । मुदा फुञ्ञया पूणेक बातपर अ िञ्ञ रहञ्ञ ।ेे एक ध्वन ओकरा बाउ बर ड पीटलकैक । जखन पूणेके मालूम भेलैक तँ ओ तमतमा गेल रहए आ बाउके मारए जाइत रहए । फुञ्ञया कहुना काञ्ञञ्ञञ्ञ कए मनओने रहैञ्ञ । तखन तय भेलैक जे ओ घरसँ भागञ्ञ । ढल्केमे चायक दोकान खोञ्ञकए बैसञ्ञ मुदा एकदम गुपचुप, जा ि ञ्ञ समय अनुकूल नञ्ञ भ’ जएतैक ।ेे ओकरा लगलैक जे ओ तञ्ञया गल्ती कएने रहए । माञ्ञ खाइयो कए घरेमे रहैञ्ञ तँ एना नञ्ञ होइतैक । ओ फेर फफकए लगैञ्ञ अ ि ।

कहादोन पूणे जनयुदमे लागल रहए । महीना दू महीनापर ओकरा लग अबैक । मौका भेटैक तँ दू बात बञ्ञआइक । फुञ्ञया कए बेर कहैञ्ञ जे ओ कोन चीजमे लाञ्ञ गेल अ ि ? एञ्ञसँ की हएतैक ? शुर शुरमे तँ पूणे बर ड जोशमे रहए मुदा बादमे ओकरो लाञ्ञ गेल रहैक जे एञ्ञसँ मुञ्ञ नञ्ञ भेटतैक । मुञ्ञक लेल समाजेमे ल ि ए प ि तैक । लोकके सम्झाबए प ि तैक । समय तँ जर र लगतैक मुदा एक्केटा यएह उपाय ि क । मारकाटसँ ध्वक ि हएतैक नञ्ञ । फुञ्ञया कए बेर कहलकैक जे ओ घरेमे घुञ्ञ जाएञ्ञ । आब एतए ओकरा रहल नञ्ञ जाइत ि क । मुदा, पूणे कहैक जे जल्दीये ओहो ञ्ञकलत आ ओकरा ल’ कए कतहु चञ्ञ जाएत । ओ इहो कहैक जे ओ ओ फँञ्ञ गेल अ ि । सोझे ञ्ञकलनाइ सम्भव नञ्ञ ि क । फुञ्ञया कनेक आओर

पश्चाता करौक । फुश्चया ओकर संगक लोभ संवरण नश्च कए सकश्च । पश्चाता कश्वते रहश्च । काश, ओ घर घुश्व गेल रहैश्च । बर असगरे जीवन श्वता श्वत । एश्च वींच ओकर बाउ मश्व गेल रहैक । मालूम भेलैक, मुदा मन मसोश्चकए रश्च गेल । घर नश्च गेल । कहादोन ओकश्व माय गोबर श्वश्चिकए जीवन चला रहल िश्क । भाय अलगे कमाइखाइ िक । ओ जाइत तँ मायोके उसास होइतैक । कहुना रहैश्च !. फुश्चया अपन मा ि ठेहुनपर राश्च श्वसकए लगैश्च अश्चि ।

आई बेश्वयामे ओकरा मालूम भेलैक जे पूणे एतए आएल रहय । कहादोन बश्चश्वयाक कुश्चयारक खेतमे नुकाएल रहैक । पुश्चसके खबश्व भेट गेल रहैक आ चार भरसँ घेश्व कए गोली बरखा देने रहैक । पूणे मारल गेल रहय । फुश्चयाके लगैत िक जेना ओ ओकरेसँ भेटए आएल रहैक । शायद एश्च बेर ओ साचे ओकरा ल' क' भागए चाहैत रहए । दूर बहुत दूर जतए कोनो भय आ िस नश्च होइक । खाली ओकर संग आ रंगश्वरंगक रंग होइक । मुदा ओ असगरे अपने चश्च गेल । कहादोन ओकर देह लाल खूनसँ रंगा गेल रहैक ।. फुश्चया अपन झोटा नोचए लगैत अश्चि । आँश्वसँ नोरक ि र जोड जो िसँ टघरए लगैत िक ।

ओकर फाटक खटाक् आवाज करैत खुश्च जाइत िक । हवल्दार भूलोटन पवेश करैत अश्चि । सकपकाएश्च फुश्चया ठकमका कए ठाढ़ भ' जाइश्च अश्चि । ओकरा लगैत िक भेद खुश्च गेल िक । आब ओकरा कोई नश्च बचाबए सकतैक । अवर्णनीय यातनाक दौरसँ गुजरए प ितैक । एश्चसँ मुश्वत्तक एकश्चटा उपाय िक जे ओ पूणे लग चश्च जाय । मुदा कोना ? आब एकरो बेर नश्च िक । ओ पश्व ाइत ि ागर जका काश्व जाइत अश्चि ।. भूलोटन आगा बढ़ैत िक । मुँहपर हा ि ए ओकरा चुप रहक इशारा करैश्च फुसफुसाइत िक – ' फुश्चया,. ई तोहर सा ि ी िक ।. श्वआहक लाल जो ि !. पूणेक जेबीमे रहैक । हम सभसँ पश्चने लाश लग पहुँचल रश्चऐक । ई श्वकाश्च लेश्चऐक ।. दोसर जनौक नश्च जनौक, हम तँ सभ श्वक ि जनै श्चिऔक । . तो िपामार तँ नश्च मुदा पूणेक पेश्वका अवस्से ि ह !. तो एखने भाश्व जाह ।. नश्च तँ काल्श्च भोरे तोरा पकश्चि लेतौक ।. मुदा एश्च सभलेल तोरा एक बेर. खाली एक बेर. हमरा भोगए देबए पडतौक ! ' भूलोटनक आँश्वमे जेना श्वशाच चढ़ल रहैक । ओ सा ि ी फैलाए देलकैक । फुश्चयाक मन भेलैक ओ सा ि ी श्चिश्च लेअए मुदा से सम्भव नश्च रहैक ।. भूलोटन मुस्काइत आगा बढ़ैत गेलैक । फुश्चया टाटश्वस घसकैश्च गेश्च । ओकरो आँश्वपर जेना देवी चश्च गेल होइक । मुँह सेहो श्वकराल बनैत चश्च गेलैक । ओ सोश्च लेलश्क आई मुश्वत्त लैये क' रहत । ओ पूणेलग अपन चुनल स् ि ानपर चश्च जाएश्च ।. ओकर नजश्व स्टूलपरक नवका ि रीपर गेलैक । ओ ि री उठा लेलश्क आ सोझे भूलोटनक पेटमे भोश्क देलश्क । एक, दू, तीन, चाश्व. । भूलोटन घबराए गेल । ओ सा ि ी पुश्चया देहपर फेक देलक । आ अपन दश्चना हा िसँ पेस्तौल श्वकाश्च ताब ितो ि गोली दाश्व देलक । एक, दू, तीन, चाश्व. । दुनू हहाकए खसल ।. भूलोटन मुँहे भरे आ फुश्चया सा ि ीमे ओझराइत !

परात भेने सभ अखबार घटनाक श्वश्वरणसँ भरल रहैक । श्वक ि मे श्वखल रहैक जे ि पामार वीराङना फुश्चया शहादत पाप्त कइलीह, अन्श्वम ि श्व ल ि त ल ि त । तँ दोसरसभमे श्वखल रहैक मश्चला ि पामारसँ मुठभे ि मे हवल्दार भूलोटन शहीद भेल ।. ि पामार फुश्चया चौ ि री मारश्च गेश्च ।

एकदन्त हाथी आ नौलखा हार

कमिनी ृ्छते नम्ध किक । जखनसँ मकवानपुरक सेनगढ़ी दरबार देखकए थ्फरल अधि ओकर मस्लाषकपर इन्रकुमारी िएष्म थ्कि । १४ बषकि इन्रकुमारी बाल राजकुमारी । लगैत किक जेना ओ सभक्ध ि पत्यक देख्ध रहम्ध हुअय । सोन।चानीक महीन कढ़ाईसँ युक्त चमकैत नीच्चातक सोहराइत घघरा, ध्यतम्बतक लटकल कारी केशमे कलात्मक
गुहल चोटीसँ सज्यात मापिर हीरा जधित मुकुट, डरकशसँ नापल गोल ध्यारहसनक डाि, बाध्यपर चमकैत बाजुबन्द, हीरा।
मोती आ रंगधारंगी रत्न जधित हारसँ सुशोधात कनेक्के उठल वक, कानमे झुमैत झुमका आ कणफ़ूल आध्द।आध्द ।
राजकुमारीक जाज्वल्य सौन्दयकि काल्पधाक पधामूधा ओकर मानसपटलपर धारन्तर धाम्धात भ। रहल किक । ओध्य राजकुमारीक दैवी सौन्दयकि चचिकोना गोरखा पहुँचल हएतैक ? सभक्ध िमे राजकीय सता ति शस्ि।शध्कतक बढ़ोतरीक योग।हास देख्ध ध्याणयि लेबएबला ितिगोरखा युवराज पृ्वीनारायण शाह आ ओकर सशस्ि मण्डली एध्य मादे कोना अपन पधाक्या देखओने होएतैक ? कोना पध्यने राजाक खोपीसभार र आ फेर तकरबाद भारदारीसभामेरे मकवानपुरक राजा हेमकणिसेनक सुता राजकुमारी इन्रकुमारीसँ पृ्वीनारायणक ध्यवाहक पस्तावक योजना बनल हएतैक ? । आध्द।इत्याध्द पकरणसभक दृश्यसभ ओकरा आगा जेना सजीव भए एक।एक कए आबए लागल किक ओ फेर करोट बदलैध्य अधि । ओही कोठरीमे लगले मायसंगध्ं दोसर चौकीपर सुतध्य आ कनेक्के काल पध्यनेतक फुसुर।फुसुर बध्याआइत बकिी भौजी ओकर कमिनी पकधि लैध्य िधिन्ह, । ‘‘मध्यादाइ, ध्यान्न नध्य होइअ ? ध्क ि होइअ की ?’’
‘‘नध्य, ध्क ि नध्य उ’’ । भाउजक पश्नसँ ओ अकचका जाइध्य अधि ।
‘‘ तँ ओना ध्कआ अहुध्या कटैध्य ि ?’’। बकिी भौजी जेना कमिनी ठेकाध्य नेने रहधिन्ह ।
‘‘नध्य, ध्क ि नध्य होइअ । खाली वहए मकवानपुरगढ़ीक दृश्य आगा चध्य अबैत अधि ।` हेमकणि
इन्रकुमारी आ ध्यगबन्ि सेनक ध्यस्सा मोन पधि जाइत अधि उ’’ । ओ अपनापध्य भाउजक ध्यन्ताके हटाबक कोध्याश करैध्य अधि । मुदा बकिी भौजी अपन स्वाभाध्वक व्युत्पन्नता ियिबाली नध्य िधिन्ह । चट् दाध्य दैध्य िधिन्ह, ।‘‘ आ की केओ ओतय मोनमे उतध्य गेल अधि ? माय, देखिन्ह , मध्यादाइक मोनमे केओ चध्ढ गेल िन्ध्य बेटासभके ध्याघ वर खोजय कहिन्ह । देखै िधिन्ह, कोना करोट पर करोट फेरै िधिन्ह उ’’ माय बुझाइअ औंघा गेध्य िधिन्ह । ननध्द।भाउजक गप्पमे ओ कोनो उतर नध्य देलध्यन्ह ।
मध्याके भौजीक एखुनका पध्यहास नीक नध्य लगलैक । चुप्पे आंध्य मुध्या लेलध्क । सोचय लागध्य, ।‘‘खाली ध्यआहेटा कोनो जीवन किक ? ध्यआह तँ मुदा पारम्भ अधि । ध्यआहक बादक सहयािने धिक जीवन उ की नारी सभध्दन अनध्यन्हारे सहयाििक पतीक्ा करैध्य रहध्य ? आ कतेको इन्रकुमारी अध्यना जीवनक यािक पध्यलुके पिओपर अपन सहयाििक पध्याक्ा करैध्य िसदीक खाध्ढमे ढ़केध्य देध्य जाएध्य ।आ ओकर सहयाििसभ ओकरा अनभुआर जंगलमे एसगर ठाढ़कए भगैत रहत । संग नध्य देबकलेल अनगनि आ अनसोहात असम्भव शतसिभ आगा बढबैत रहत ? बेटीसभ अध्यना चीज।वस्तु जका ध्याजीव नारी बध्य तील।तील क। जध्य रहध्य ?’’ आकोश जेना मध्याके भीतरसँ आओर िटपटा दैि । ओ एकबेर फेरो करोट फेरैध्य अधि । बकिी

भौजी पाया सुश्चा रहश्चा िश्चिन्ह । राश्चा बेशी चश्च गेल ैक । ओहो अपनाके शून्य करक यत्न करैश्चा अश्चि । श्चान्नहेतु मनसँ बल करैश्चा आँश्चिव मुश्चा लैश्चा अश्चि ।
राजकुमारी इन्रकुमारीक कक । पलंगपर बैसश्चा राजकुमारी । उदास मुदा आंश्चिव आकोश्चात लालतेस उ मुहँ लकिओने ४/५ सखीसभ चारकात घेरने । ककरो पदचापक िवश्चा अबै ि । सभ साकाक भ। जाइ ि । राजकुमार श्चिगबन्िन सेन पवेश करैत अश्चि । श्चकश्चरसँ गलल मोनपर उदासी स्पष्ट ैक । सखीसभ् स्श्चिरसँ बहरा जाइ ि । श्चिगबन्िन । बश्चिन उदास नश्चि होअअ उ श्चाणिय भ। गेलैक । हमरासभ अपन बश्चिनकहेतु सभ श्चक ु न्योिावर क। देब । बश्चिनक भश्चिष्य आ एश्चि केँ कि मयादाक आगा एकदन्त हाि ी आ नौलखा हार मूल्यहीन आ तुच् अश्चि । इन्रकुमारी । ( दौश्चिकए अपन भायक ातीमे मा ि सटाए कनैश्चा ) नश्चि, भाई नश्चि । आब सेन राज्य आओर मानमश्चदिा नश्चि हएत ।बहुत भ। गेलैक । एकदन्त हाि ी आ नौलखा हार हमरा।आहाक नश्चि एश्चि राज्यक सम्पश्चा ैक । जनताक सम्पश्चा एकगोट राजाक बेटीके दहेजमे नश्चि श्चिआ सकैत अश्चि । ओ सभक ारोहर ैक । एकदन्त हाि ी केओ कमाएल नश्चि अश्चि , एश्चि केँ श्चिशेषक हेतु पकृश्चाक श्चिशेष आ अनुपम उपहार श्चिकैक । एहन गल्ती जुश्चा करब ।
श्चिगबन्िन । अपन जमायके संतुष्ट नश्चि करय सकब एश्चि महाभारतक आगोसक सम्पूणािम ियकेँकि मयादाक श्चिपश्चित हएत । इश्चिहासमे हमरासभके कोसल जाएत बश्चिन जे सेन राजा अपन बेटीक श्चिरागमन दहेजक आभावमे ८ राजा, रानी, युवराजक व्यश्चिगत कोठरीके पश्चिने नेपाली दरबारी भाषामे खोपी कहल जाइक । ट दरबारक सल्लाहकारसभके भारदार कहल जाइक ।
नश्चि क। सकल । जीवनश्चि बेटी श्चिवाहोपरान्त नैहरेमे रश्चि गेल । नश्चि बश्चिन नश्चि आब समय नश्चि ैक तैयारी मे लागलजाय ।
इन्रकुमारी । आ ई नश्चि जे सेन राजा अपन अबुझ जमायक अनगल मागक आगा झुश्चक गेल जे सम्पूणा राज्यक सम्पश्चा सेनवंश एकगोट बुनल षियन्िक कारणे गोरखाक राजाके श्चिवश भ। चढ़ा। देलकैक ।हम नश्चि
जाएब । हमहुँ अपन सम्पूणाजीवन न्योिावर क। देब दुश्चायाके देखा देबैक जे एश्चि केँ कि नारी चीज नश्चि सृष्श्चिक बीज अश्चि । मानक मा ि आ त्यागक श्चाषअश्चि ।
श्चिगबन्िन । आह, बश्चिन उ एहन जीद जुश्चा कर । भ। सकै ि , एश्चिसँ एश्चि राज्यक सुरकापर सेहो असर पिय ।
इन्रकुमारी । तँ कर युद राज्यक अस्श्चािाक लेल युद करब, आवश्यक पिलापर शहीद हएब आहाक ािम श्चिक ।
राज्यक सुरकापर कोनो असर प ैत अश्चि तँ उठाउ तरवाश्चि हम नारी ाी । नारीक अस्श्चािाहेतु , अपन पश्चििाहेतु अपनाके न्योिावर करब हमर ािम श्चिक ।नारी सभ श्चक ुसँ दश्चि जाएत मुदा ओकर पश्चििा ओकर स्वाश्चामान आ नारीत्व ओकर पाणोसँ बश्चिकए श्चिकैक । हमरा उपहारक वस्तु नश्चि बनाउ, भाई उ श्चिगबन्िन कक्क चारकात आहत बाघ जका ुमिय लगैत अश्चि ।िम्म द। बश्चिनक पलंगपर बैस जाइत अश्चि आ ओकर मा ि झुश्चक जाइत ैक ।
इन्रकुमारी । आहा तँ अँ ाि रश्चिऐक भाई कोना झुश्चक गेश्चाऐक ? कतश्चियपर बश्चिनक ममताक ाार पश्चि गेल अश्चि ।

सेन राज्यक राजकुमारके राज्यक गौरव रक्षा करब पड्डल काज ि‍क । बङ्खनक ममता नञ्छ ।हम तङ्खये कहने रही । गोरखाक अञ्चअवाज, राज्य पाप्ञ्चकहेतु थ्कि् करक चलन, ठगी संस्कारक बारेमे सोञ्च ञ्चअ ।

ञ्चगञ्चगक चौरीमे चोरी क। बनल राजाक पस्तावमे जरर थ्कि् षयिन्ि हएत । मुदा हम तँ १४हे बर्षमे आहासभक बोझ बञ्च गेल रही । शायद कोनो ि्थ्र भेल रहय तैँ एहन खानदानमे हमरा फेकक ञ्चरण्य कएल गेल ।

थ्रगबन्ि । नञ्छ , बङ्खन उ अनजानमे भेल गल्तीक कारणे हृदयमे आओरो पहार नञ्छ कर । अपन गल्तीक आञ्चसँ ई अपने दग्ि आ तप्त अछि । आहा हमरासभक गौरव ि‍ । हमसभ तँ उतरक सभसँ शक्तिशाली राज्यक रानीक रपमे आहाके देखय चाहलहुँ ।

इन्रकुमारी । शक्तिये पाप्त कएलाक कारणे केओ नीक नञ्छ भ। जाइ, भाई । गुम्बजपर बैसल कौआ सभसँ नम्हर नञ्छ भ। जाइत अछि ।

थ्रगबन्ि । इन्रकुमारी , हमर सोनसन बङ्खन उ (स्वरमे थ्कंकतप्रिय थ्रमूढ़ता सपष्ट अछि ।)

इन्रकुमारी । एकदन्त हाि‍ आ नौलखा हार दैये देलापर आहाक बङ्खन खुश रहत ? ञ्चबाि सासुर भोगत तकर कोनो ञ्चश्वत ठेकान ि‍क ? काल्ञ्छ कतहुँ आओर थ्कि् नञ्छ माञ्च लेअय ? सबसँ पञ्छने ओसभ थ्रवाह होइते

चतुि‍योसँ पञ्छने बञ्चआतीये संग ञ्चदागरीक माग कएने रहए । हमरासभक अञ्चअवाजपर अपन चलन लादक कोञ्चश कएने रहए । एकरा संस्कृञ्च आ परम्परापरक आकमण बुझू । आब दहेज मँगैत अछि । अिकिए । काल्ञ्छ फेरो कोनो नया बहन्ना खोञ्च लेत । भाई, हमरा तँ बुझाइत अछि ओ एञ्छ औपचाञ्चक वैवाञ्चक सम्बन्ि लाभ उठाए राज्यपर चढ़ाई क। देत ।एखन झुकक नञ्छ तनक समय छैकैक, भावनामे नञ्छ कतप्रियमे बहक बेर ि‍क ई । बङ्खनसँ पञ्छने मातृभूञ्चक रक्षाक ञ्चन्ता कर थ्रगबन्ि उञ्छ जाइत अछि । ओकर गाल लाल भ। गेल ि‍क । बान्हल मुञ्छ उपर उञ्छ जाइत ि‍क ।

थ्रगबन्ि । एकदम ठीक कहलहुँ बङ्खन उ आहाक साहससँ हम गौरवान्ञ्चत आ पेञ्चत ि‍ । बाबूसँ एखने ञ्चवेदन करैत छीअन्ञ्छ । ( ञ्चब डेगे बहरा जाइत अछि । )

इन्रकुमारीक आँञ्छ कोि आ आकोशसँ लाल भ। गेल ि‍क । बुझाइत ि‍क जेना बाहर ञ्चकलयलेल आरत होइक । ओ अपन कसल मुञ्छसँ घघरा उठाकए दात कटकटअबैञ्च झाञ्च दैञ्च अछि ।

ङ ङ ङ ङ

मञ्च ििफिािकए उठञ्च । मुञ्छ ओकरो कसल रहैक । बिकी भौजी तखने पवेश करैञ्च रहथि्न्ह । अपना ञ्चसाबे अििलिगाइये लेलञ्चन्ह, । “मञ्चदाई, सपनाइत िलिहुँ ? सुतलमे कसैत देह देञ्चते हमरा बुझा गेल िल ।देह दुाखाइत हएत ” । फेर हँसैत कहलञ्चन्ह, । “बादक इन्तजाम तँ भायसभ करताह । िटकी चाय बना नेने अछि । नेने अबैत ि‍ ।” मञ्च थ्कि् नञ्छ बाजञ्च । बिकी भौजी बाहर ञ्चकञ्च गेञ्च रहथि्न्ह । ओ पलंगसँ चुपचाप उतञ्च बसमे पेष्ट लगाबए लागञ्च ।

राजमोहन झा (पबोि सम्मान २००९) सँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार

खुलल दृश्य सँ नष्ट भऽ रहल अर्थी समीक्षा : राजमोहन झा

साहित्यकार भाइ-साहेब राजमोहन झाक कैक टा कथा संग्रह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी छपल छन्हि। मैथिली भाषामे हुनकर एहि योगदानके देखैत २००९ सालक पबोि सम्मान हुनका देल जाऽ रहल छन्हि। हुनकासँ मैथिलीक भूत, वर्तमान, भविष्य आ समीक्षाक गप, संग-संग पारिवारिक आ सामाजिक जिनगीक ताना-बानाक गप विशेष प्रकार विनीत उत्पल बातचीत मे बुनलन्हि।

- विनीत उत्पल : अहाक जन्म कतय भेल, दिन-वर्ष की छल?
- राजमोहन झा : हमर जन्म गाम मे भेल, कुमार बाजितपुर (वैशाली)। साल छल १९३४, अगस्त माहक २७ तारीख।
- विनीत उत्पल : आ प्रारंभिक लालन-पोषण ?
- राजमोहन झा : प्रारंभिक लालन-पोषण गाम मे भेल। किछु दिनक बाद पटना आबि गेलहुं, आगू पटनेमे भेल।
- विनीत उत्पल : शिक्षा-दीक्षा कतय भेल ?
- राजमोहन झा : प्रारंभिक शिक्षा तँ गाममे भेल। पटना अएलाक बाद टी.के. घोष एकेडमी मे आठवा मे नाम लिखेने रहि, जतय सऽ मैट्रिक पास केलहुं। एकर बादक पढाई पटना कालेज, पटनासँ भेल। हमर विषय मनोविज्ञानक संग-संग लाजिक, हिन्दी आ अंग्रेजी छल।
- विनीत उत्पल : पितामह कतेक मोन छथि ?
- राजमोहन झा : हमर पितामह जनार्दन झा संस्कृतक विद्वान छलाह। हुनकर मृत्यु १९५१ मे भेलन्हि। गाम मे हमर पढाई हुनकर संरक्षण मे भेल छल। अपर स्कूल तकक पढाई तँ हम गाम मे केने रहि। ओ मैथिली मे सेहो लिखैत रहथि। तांहि लेल हमहूँ मैथिलीमे लिखबाक लेल प्रेरित भेलहुँ। मैथिली

साहित्य मे रुचि जागल। ओ कतेक ठाम घुमि-घुमि कऽ रचना केलथि। महावीर प्रसाद द्विवेदीक सरस्वतीक संपादन करैक संग ओ मिथिला मिहिरक संपादक सेहो रहथि। करीब एक सौ टा बंगला उपन्यासक हिन्दी मे अनुवाद केलथि, जाहि मे विषवृक्ष, देवी चौधराइन उपन्यास प्रमुख अछि।

• विनीत उत्पल : साहित्यक पारंभिक प्रेरणा केकरा सँ भेटल ?

• राजमोहन झा : पारंभिक प्रेरणा तँ पितामह सँ भेटल। पितामहे शिक्षाक आरम्भ करोलथि। गाममे मिडिल तक पढाई काल तक पितामहे गाथार्जिन रहथि। पटना एलहुं तऽ बाबूजीक (हरमोहन झा) संग रहलहुं।

• विनीत उत्पल : घर मे किनका सँ अहा बेसी नजदीक रही ?

• राजमोहन झा : पितामह संग पितामहीक सबसँ नजदीक रहि।

• विनीत उत्पल : संस्कृत परंपरा सँ अंगरेजी परंपरा दिस कोना प्रवृत भेलहुँ ?

• राजमोहन झा : समय बदलैत गेल, पहिने लोक संस्कृत पढैत रहथि। संस्कृत धीरे-धीरे लुप्त होइत गेल। अंगरेजी शिक्षा स्थान लेलक आओर प्रभाव बढ़ैत गेल। तखन अंगरेजी आ हिन्दी दिस लोक झुकए लागल। हमहुं ओही दिस प्रवृत भेलहुँ।

• विनीत उत्पल : साहित्य कए अतिरिक्त लोक की पेशा छलि ?

• राजमोहन झा : इम्प्लायमेंट आफिसर रही। आब रिटायर्ड छी।

• विनीत उत्पल : कोन-कोन शहर मे रहल छी ?

• राजमोहन झा : जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर, राची, बोकारो, पटना, दिल्ली मे नौकरी काल रहलहुं। पाँच साल दिल्ली मे जनशक्ति भवन मे डिप्युटेशन पर रही।

• विनीत उत्पल : कनि भाई-बहिनक संबंध मे बताऊ ?

• राजमोहन झा : चार भाई आ एक बहिन छलहुं। दू भाईक मृत्यु भए गेल आ दू भाई छी एखन। सबसे पैघ हम छी। हमारा सऽ छोट कृष्ण मोहन झा राची विशविदालय मे मनोविज्ञानक शिक्षक रहथि। तेसर भाई शिशमोहन झा गाम मे रहथि। सबसे छोट मनमोहन झा सी.एम.कालेज, दरभंगा मे मनोविज्ञानक शिक्षक छथि। सबसँ जेठ बहिन ऊषा झा छलीह, जे दरभंगा मे छथि। बहनोई शैलेन्द्र मोहन झा १९९४ मे स्वर्गवंगत भए गेलाह । ओ लक्ष्मीत नारायण मिथिला विशविदालयक मैथिली विभागक अध्यक्ष छलाह।

• विनीत उत्पल : बाल-बच्चा कए टा आ की करैत अछि ?

• राजमोहन झा : तीन टा बेटी अछि। ब्याह केकरो नहि भेल अछि। सबसे छोट श्वेतनी झा टीचर छथि। जेठ बेटी ग्रेजुएशन क संग ब्यूटी-आर्ट एंड क्राफ्टक- ट्रेनिंग लेने छथि।

• विनीत उत्पल : अहाक मनपसंद रचनाकार के छथि ?

• राजमोहन झा : एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। लक्ष्मीत, मायानंद, राजकमल चौधरीक हिसाब लोक पहिचान कए रहल अछि। आधुनिक मैथिली कए प्रारम्भ ओतहिसँ मानल जाइत छैक ।

• विनीत उत्पल : अहाक अपन नीक रचना कोन ?

• राजमोहन झा : से तँ आने लोक कहत। एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। रचनाकार कोनो रचना करैये तँ अपन तरहे बेस्ट करैत अछि। जेकरा दिलसँ करब कहबै, ओ करैत छैक। सबसँ नीक देबाक कोशिश करैत छैक। कोनो रचना सुपरसीड करैत छैक, कोनो नहि करैत छैक। ई सब बहुत रास फेक्टर पर निर्भर करैत छैक।

• विनीत उत्पल : अहाक पहिल रचना कोन छल ?

• राजमोहन झा : रचनाक शुरुआत हम कविता सँ कएने रही। तखन हम बी.ए. मे रही, १९५४ क ई गप छी। ओकर बाद कविता लिखब एक तरहे बंद भए गेल। कविता लिखब छुटि गेल। हमर लेखकीय जीवनक दोसर फेज १९६५सँ शुरु भेल। एखन कि हमर मुख्य विधा भए गेल अछि।

• विनीत उत्पल : कोनो कविता सुनेबई ?

• राजमोहन झा : कविता कए मन पारब नहि चाहब। ओहि टेम्पेशन मे हम लिखैत रही जे ओहि समय मे लिखल जाइत रहय। हमर लेखनक शुरुआती दौर छल, ओहि समयक जे साहित्य पभाव सँ लिखल गेल, से रहए। अपने हमरा बुझाएल जे ई कोनो कमकि नहि छैक, तकरा बाद हम ई लिखब बंद कए देलहुं।

• विनीत उत्पल : कविता कोनो पत्रिका मे छपल ?

• राजमोहन झा : कविता 'वैदेही' मे छपल। 'मिथिला मिहिर' आ 'मिथिला दर्शन' मे सेहो छपल.

• विनीत उत्पल : आ कहानी ?

• राजमोहन झा : मिथिला मिहिर मे मुख्यता कहानी छपल। मिथिला दर्शन मे सेहो।

• विनीत उत्पल : अपनेक रचना लिखब आ छपल मे बाबूजी (हरिमोहन झा) कए कतेक सहयोग रहल?

• राजमोहन झा : बाबूजीक सहयोग किछु नहि रहल, पभाव रहल। बाबूजीक संग रचनाक गप करबाक पश नहि उठैत छल। हमर लेखन हुनकर पभावक अंतर्गत नहि छिल। हुनकर लेखन सँ इतर हमर लिखब शुरु भेल। एकरा मे दूनू गप अछि। हुनकर पभाव रहल आ नहियो रहल। हुनकर केँ सँ हम अपना कए अलग कए लेलहुं। ओना पभाव सँ अलग कोना कए सकैत छी।

• विनीत उत्पल : 'आई-काल्हि-परसू' पर अकादमीक पुरस्कार ठीक समय पर भेटल वा नहि?

• राजमोहन झा : ठीके समय पर भेटल। ई महत्वपूर्ण नहि छल की पहिने भेटबाक चाही छल या बाद मे भेटबाक चाही छल। मन मे एहन कोनो गप नहि छल।

• विनीत उत्पल : साहित्यक अध्ययन मे पतीक कतेक सहयोग रहल ?

• राजमोहन झा : साहित्य सँ ओतेक संपर्क नहि छन्हि। सहयोग-असहयोग कए ताहि दारे पश नहि छैक।

• विनीत उत्पल : हुनकर नैहर कतए भेलन्हि ?

• राजमोहन झा : हमर सासुर तँ दिल्ली भेल। ससुरक पिता अलवर महाराजक चीफ जस्टिस रहथि। विवाह हमर दिल्ली मे भेल।

• विनीत उत्पल : अहा कोन-कोन भाषा मे रचना केलहुं आ कतेक पोथी लिखलहुं ?

* राजमोहन झा : हिन्दी आ मैथिली मे हमर लेखन भेल। दस टा पोथी कि संगह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी छैक.

• विनीत उत्पल : भविष्यक की योजना अछि ?

• राजमोहन झा : संस्मरण लिखबाक अछि। सुमनजी आ किरणजी पर लिखबाक बाकी अछि।

• विनीत उत्पल : साहित्यक दावं-पेच कए कतय तक बुझैत छियइ ?

• राजमोहन झा : दाव-पेच मैथिली मे नहि सभ भाषा मे चलैत रहैत छैक। ई कोनो नब गप नहि छी। एहि अछिमे प्रभावित भेलहुँ। ई तँ स्वाभाविक प्रक्रियाक रूप अछि। ओहिनो ई गप बेसी मेटर नहि करैत छैक।

• विनीत उत्पल : कोन रचना एहन अछि जेकरा मे अहा के अपन आत्मकथ्य हुअए ?

• राजमोहन झा : सभ रचना मे जीवनक अंश आबिए जाइत छैक। कथा एक अनुभवक आधार पर लोक लिखय यै। अनुभवक अंश तँ रहबे करत। आत्मकथात्मकता तँ आबिये जाइत छैक।

• विनीत उत्पल : 'आश्वासन' कथा तँ नहि छी आत्मकथात्मक ?

• राजमोहन झा : स्पेसिफिक नहि करए चाहब। सभटा कथा मे कोनो-ने-कोनो रूपेण आत्मकथा भेटत।

• विनीत उत्पल : समीक्षा लेल की कहब अछि ?

• राजमोहन झा : समीक्षा खुलल दृष्टि सँ नहि भऽ रहल अछि। लोक अपन ईर्ष्या-देष सँ रचना कए समीक्षा कए रहल अछि। आपक व आभिमि भए कए समीक्षा नहि भए रहल अछि। आई-काल्हि जे समीक्षा भए रहल अछि ओहि मे ि यिक्त अभाव अछि। ऑब्जेक्टिव नहि रहैत छैक लोक। जकरासँ रुष्ट रहए छथि तकर ठीक सँ समीक्षा नहि करैत छथि आ जकरा सँ नीक संबंध छैक ओकर पसंग खूब उठाबैत छथि। समीक्षा लेल दृष्टि काज करैत छैक।

• विनीत उत्पल : की समीक्षा करबा मे व्यक्तिगत आक्षेप आवश्यक अछि ?

• राजमोहन झा : समीक्षक बुझैत छथि, जे हम समीक्षा कए रहल छी, तँ लेखक पर उपकार कए रहल छी, हुनका हम उपकृत कए रहल छी। एकागी दृष्टिकोण बड़का फेक्टर अछि। समीक्षा मे रचनाक समीक्षा होएबाक चाही नहि कि व्यक्तिगत आक्षेप।

• विनीत उत्पल : ई गप कहिया सँ छैक ?

• राजमोहन झा : पहिनो रहए, आबो छैक। संकीर्णता बेसी भए गेल अछि। हमर विचारे पहिने एतेक नहि छलै जे एखन भए रहल छैक। अपन लोक कए घुसाबैक लेल मारामारी भए रहल छैक। हालत जेहन भए रहल छैक तकर विरोध होएबाक चाहि।

• विनीत उत्पल : नवतुरआक लेखनके कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?

• राजमोहन झा : नबका लोक भाषाक प्रति उदासीन छथि। बेसी लोकके भाषाक प्रति मोह नहि छैन्हि, अपनत्व नहि छैन्हि। जहिना-जहिना जेनरेशन आगू भेल, भाषाक उदासीनता बढ़ल गेल। बेसी लोक मैथिली बाजब छोड़ि देने छथि।

• विनीत उत्पल : मैथिली मे दलित साहित्य लेल अहाक मंतव्य की छथि ?

• राजमोहन झा : साहित्य मे वर्गीकरण प्रवृत्ति जे भए रहल अछि, ओ विखण्डित कए रहल अछि। साहित्य सृजनात्मकता सँ ध्यान हटा कए विशेष वर्ग पर ध्यान देबासँ साहित्य विखण्डित होएत। दलित कए लेखन मे अएबाक चाही।

• विनीत उत्पल : स्त्री लेखक लेल की कहब अछि ?

• राजमोहन झा : सिंगिण कए साहित्य लेखन मे जरूर अएबाक चाही। कोनो वर्गक लेल समग साहित्य कए विखण्डित नहि करबाक चाहि। खंडित दृष्टि नहि हेबाक चाहि। एकरा लेल चाही समग दृष्टि।

• विनीत उत्पल : मैथिली भाषा मे स्त्री लेखकक संख्या किएक कम अछि ?

• राजमोहन झा : सबहक मूल मे शिक्षा अछि। मिथिला मे स्त्री शिक्षाक पचार-पसार नहि भेल। सहभागिता आ सहृदयताक कमी रहल।

• विनीत उत्पल : मैथिली के संवैधानिक आठम अनुसूचीमे शामिल हेबासँ विकासक लेल की कहब अछि ?

• राजमोहन झा : जतय तक भाषाक पश्न छैक, संविधान संगे यूपीएससी परीक्षा मे शामिल होयबाक गप छैक, एकरा सँ किछु खास बल भेटलहि बला नहि छैक। भाषाक समृद्धिक लेल समपर्ण चाही। तकर हास भए रहल अछि।

• विनीत उत्पल : तखन की कएल जाए ?

• राजमोहन झा : मूल गप भाषामे पवृत बच्चा सभ हुअए। स्कूल सँ पहिने परिवार छैक। परिवार मे भाषाक समुचित स्थान देल जाए, तखने बच्चा सबहक विकासक संग भाषाक विकास होएत। ई गप धीरे-धीरे कम भए रहल अछि।

• विनीत उत्पल : नवलोकक लेल कि कहब अछि ?

• राजमोहन झा : हुनका सभ कए साहित्य सँ ओ लगाव नहि छनि जे पहिलुका लोक कए छलनि। जखन धरि नवलोक कए साहित्य सँ लगाव नहि होएत तखन धरि किछु नहि होइत। एकर बादे मैथिली कए उज्ज्वल भविष्य छैक।

• विनीत उत्पल : एखुनका समीक्षा लेल की कहब अछि ?

• राजमोहन झा : मूल वस्तु लोक छैक। समीक्षाक लेल यैह छैक। जाऽ तक लोक नहि बदलत, दृष्टिकोण नहि बदलत, ऑब्जेक्टिव नहि होएत, तखन धरि किछु नहि होएत। समीक्षाक लेल तटस्थता चाही, निरपेक्षता चाही।

• विनीत उत्पल : मैथिली भाषाक पचार-पसार लेल की करबाक चाही ?

• राजमोहन झा : ई निर्भर करत सरकार पर, ई काज बेसी नीक जका कए सकैत अछि। सामूहिक पयास लोकक होएत, संस्था आगू आएत, तखन होएत। मैथिलीक नाम पर जे तमाशा होइत अछि, ओकरा बंद कई पति। लोक रुचि जगाबक लेल काज करए पति।

• विनीत उत्पल : पचार-पसार लेल नवलोकके कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?

• राजमोहन झा : समय-समय पर सभ किछु बदलल। नव जनरेशन आयल। समय मे परिवर्तन भेल। अपन संस्कृति लेल, भाषाक लेल पहिलुक लोक मे समपर्ण बेसी छलनि। जेना-जेना जनरेशन बदलल, समपर्ण कम भए गेल। एक तरहे कहि सकैत छी जे वैश्विक सम्पूर्णता दिस बेसी बढ़ल गेल अछि, स्थानीयक विश्वास ता पाछु छुटि रहल अछि। ग्लोबल बेसी हुअए लागल लोक, लोकल गौण भए गेल। एकरा मे सामंजस्य रखबाक चाही। एकरा बूझए पति। विश्वास ता आ सारभौमता स्थानीयता मे छैक। सभ संग हेबाक चाही। अपन जे विश्वास ता छैक तकरा बिसरि जाइ सेहो उचित नहि छैक। सबहक संग-संग चलैत

अपन विश्वास ता नहि ाि बाक चाही।

• विनीत उत्पल : लेखन मे जीवनानुभवक की स्ान ि क ?

• राजमोहन झा : जीवनानुभव लेखनक समस्त आ ार ि क। अनुभव पक शून्य रहत तँ अहा की लिखब। अहाक लिखब साहित्य नहि रहत।

• विनीत उत्पल : आजुक युगक बाजारवादी दुनिया आ साहित्यक लेल की कहब अछि ?

• राजमोहन झा : जावत अहा बेसीक नीरस मे अपना कए सीमित राखब तखन की होएत। साहित्य आगूक चीज ि क। भौतिक सा ाना मे अपनाके सीमित राखब तँ साहित्य विस विमुखता उत्पन हेबे करत। ई मूल जररत ि क, ई आवश्यक ि क, तकरा संग-संग नैतिक मूल्य साहित्यक लेल आवश्यक ि क। नैतिक मूल्यो उपेक्षित नहि रहए, ई पक सबल हुअए। मूल जररत विस लोकक बेसी ध्यान ि क, ई टेड चलि रहल ि क आ आगुओ ई रहत। जहिना-जहिना भौतिक सुख-सुवि ा बढ़ल उच्च मूल्य मे हास होइत गेल। ओहि विस सँ देखब तँ राजनीति पमुख होइत गेल। दोसर पक ई जे अध्यात्म पक्क हास होइत गेल, जखन विकास बढ़ल। भाषा मे तकनीकक विकास तँ भेल, मुदा जे मूल्य बेसी रहि ओहिमे हास भए रहल अछि। बाहरी विकास बढ़ला सँ जे विश्वास ता, जे क्षमता ि क ओ कम भेल। बहुत लोक कहि रहल ि ि जे भाषा मरि रहल अछि, से ठीक कहैत ि ि। घर सँ आक्रान्त भए रहल ि क ई भाषा। पारिवारिक भाषा नहि रहल ई, मरबाक लक्ण ि क।

• विनीत उत्पल : एकर उपाय की ?

• राजमोहन झा : समयक ार कए कोनो पयास सँ बंद नहि कए सकैत ि ि। शिक्षाक विकास भेल अछि। पढ़ए बलाक संख्या बढ़ल। स्कूलक संख्या बढ़ल। जाहि अनुपात मे ई बढ़ल ओहि अनुपात मे आंतरिक मूल्य घटल। जानकारी तँ बेसी बढ़ि गेल अछि, सूचनात्मक जान बच्चामे जतेक बेसी ि क, ओहि उम मे ओहि जमाना मे नहि रहै। मुदा, जान ािले रहि गेल। शिक्षा मे जे विकास भेल अछि, ई वृद्धि संख्यात्मक अछि, गुणात्मक विकास नहि भेल अछि। ई बात सही ि क, जतेक स्कूलक संख्या बढ़ल, जान ओतबेक कम भए गेल।

• विनीत उत्पल : तखन विकास ख़राब गप अछि ?

• राजमोहन झा : स ाी शिक्षा पढ़ने नहि रहए, काफी वृद्धि भेलए। मुदा, बहुत रास साइड इफेक्ट भेल। दवाई बढ़ल, साइड इफेक्ट मे वृद्धि भेल। ओकरा रोकबाक कोनो उपाय नहि भेल अछि।

• विनीत उत्पल : अहा ि ष रचना ककरा कहब ?

• राजमोहन झा : सव ि ष रचना ओ होयत अछि, जे ओहि युग बीत गेलाक बादो ि ष रहत अछि। कालजयी ि क। कायम रहैक ि क पो ाी आ रचनाकार। सुमनजी, किरणजी, आरसी बाबू ि ष रचनाकार रहथि। हुनकर रचना एखनो ि ष मानल जाइत अछि।

• विनीत उत्पल : एहन कोन रचना ि क जकरा फुसति भेटला पर अहा बारंबार पढैत ि ि ? जखन मानसिक परेशानी रहैत अछि तखनो ?

• राजमोहन झा : एहन कोनो पो ाी नहि अछि। जखन जे भेट जाइत ि क,

तकरे पढैत ि‍ी। मानिसक सुि‍िक शािा लेल जे पोि‍ी उपलब्ध रहैत अिछ सैह भऽ जाइत अिछ।

- िवनीत उत्पल : मानिसक शािा लेल की करैत ि‍ी ?
- राजमोहन झा : एहन कोनो काज निह ि‍क। उपलब्धता पर हम कोनो काज करैत ि‍ी। िलखबाक मन होइत अिछ तँ िलिखयो लैत ि‍ी। मनक अनुरूप काज तािक लैत ि‍ी।
- िवनीत उत्पल : सािहत्यक रचनाक लेल की योजना अिछ ?
- राजमोहन झा : बाबूजीक रचनावली िनकालबाक लेल सोचने ि‍ी। तीन खंड िनकािल चुकल ि‍ी आ तीन खंड बाकी अिछ। अपन तीन टा पोि‍ी िदमाग मे अिछ। पिहल- संस्मरण संग्रह आ दोसर आलोचनात्मक/समीक्षात्मक लेख संगृिहत करबाक अिछ। तेसर ई जे कि‍ सभ ि‍ूटल ि‍क, लेख सभ सेहो ि‍ूटल ि‍क, ओकरा िनकलबाक अिछ।
- िवनीत उत्पल : जीवनक लेल की योजना अिछ ?
- राजमोहन झा : प्लािनंग क िहसाब सँ जीवन निह चलैत ि‍क। पािन जिहना बाट तािक लैत ि‍क, तिहना जीवन चलैत ि‍क। प्लािनंग सँ बहुत काजो निह होइत अिछ। एकर आवश्यकता सेहो निह होइत अिछ। प्लािनंगक अनुसार सभ काज भए जाइत, एहनो निह होइत अिछ। Men proposes God disposes. हम तँ सोचैत ि‍ी जे propose निह कएल जाएत। एिहना जीवन ि‍क।
- िवनीत उत्पल : जीवन आ सािहत्यक दृिष्ट सँ अपनेक कोन समय सभसँ बेसी नीक ि‍ल?
- राजमोहन झा : 1965 सँ 1975 िधर समय सबसँ नीक रहल, सािहत्य दृिष्ट सँ सेहो आ सामान्य दृिष्ट सँ सेहो। ओकरा बाद खराबे किह सकैत ि‍ी. किहया िधर चलत निह जनैत ि‍ी।
- िवनीत उत्पल : रचना करैत काल की ध्यान रखबाक चाही ?
- राजमोहन झा : कालजयी रचना लेल कोनो िनर्दात वा पिरकल्पना निह होइत अिछ। सािहत्य रचनाक लेल कोनो पाठ निह होइत अिछ। एकर कोनो उपयोिगता निह होइत अिछ। आन कलाक लेल स्कूल ि‍क। सािहत्य लेल निह ि‍क। कोनो एहन टेिनंग स्कूल निह ि‍क जे सािहत्यकार बनायत। कोनो िवजापन निह ि‍क जे ि‍ह मास मे ई चीज िसखा देत।
- िवनीत उत्पल : मैिथली सािहत्य मे नव लेखक के की सुझाव देब ?
- राजमोहन झा : मार्गदर्शिन आ सुझावक पक मे हम निह ि‍ी। िजनका मे ओ पिरभाषा/योग्यता होएत, ओ अपन बाट तािक लेताह। िसखओने सँ िकयो सीखबो निह करत। मूल वस्तु अनुभव ि‍क. अनुभव संपन ि‍ी, अनुभवक संवेदनाक पकि‍बाक हुनर अिछ। से लेखक मे अंतर्िनिहत रहैत ि‍क । रचनाक लेल अनुभव करबाक तागित जरूरी ि‍क। तकरा िबना लेखन निह होएत। अिभव्यिक्तक देबाक लेल कौशल आ भाषा हेबाक चाही। जतय ई िवकास होएत, सि‍ल होएत। पिरकल्पना वा मार्गदर्शिनक जरूरत निह ि‍क।

*िवनीत उत्पल : पबोि‍ सम्मान 2009 प्राप्त करबाक लेल बि‍ाई।

रामाथि झा "रामरंग" पश्चद अश्चानव भातखण्डे जीक १ जनवरी २००९ के श्चानि भऽ गेलश्चह। डॉ. गगेश गुजन मृत्यु पूवि हुनकासं साकात्कार लेने िलाह। पस्तुत अश्चि ओ अमूल्य साकात्कार-पश्चल बेर श्चदेहमे।

पं. रामाथि झाक इन्टरव्यू ।

पशना1. अपनेक दृश्च सं श्चदापश्चा गीत-संगीत परंपरा के कोन रप मे देखल-बूझल जयवाक चाही? श्चदापश्चा-संगीत पश्चभाश्चत कोना कएल जयवाक चाही? एतत्संबंि कोनो स्मार-श्चश्च उपलर्ि अश्चि ?

उतर ो हमरा श्चचार सँ श्चदापश्चाक अश्चिकाश गीत पद; भजनबद गायन शैली एवं श्चक ि गीत गामीण गीत शैलीक अंतगति बूझल जयवाक चाही। उदाहरण स्मर प पद-गायन शैली मे-

1. नन्दक नन्दन कदम्बाक तर तर

श्चीरे श्चीरे मुरली बजाव ।

2. जय जय भैरश्च असुर भयाउश्चा।

एवं अन्य ि गार रस सँ सम्बश्चि त पद। जेना-

क. काश्चनी करय असनाने

ख. सुतश्च िलौ हम घरवा रे

ग. अम्बर बदन झपाबह गोरी

घ. ससन परस खसु अम्बर रे, इत्याश्च ।

टइ तरहक पद व गीत श्चश्चिला पदेश मे लगभग 60 व 70 वषि सं जे गाओल जाइत अश्चि एकर ि न अ िशरसीय संगीतक अंतगति एवाक चाही। परन्तु अइ पदक जे श्चश्चिला मे गायन शैली िक ओकर एक अलग स्मर प िक। जेकरा पादेश्चाक संगीत कहवाक चाही। जहातक लोक संगीत त ि गामीण संगीत सं संबंश्चित श्चदापश्चाक गीत अश्चि, जेना-

क. आगे माइ हम नश्च आजु रहब एश्च आंगन जो। बुढ़ होयता जमाय,

ख. हे भोलाना ि कखन हरब दुख मोर,

ग. उगना रे मोर कतय गेलाह,

घ. आज ना ि एक वस्तु मोश्च सुख लागत हे, इत्याश्च ।

ई गीत सब लोक संगीतक ि नक अंतगति गाओल जाइत अश्चि। यदश्च अहू लोक ि न मे रागक दशनि िक मगर राग शास ि केर अभाव िक। ते हेतु ई सब गीत लोक संगीत शैली मे अयवाक चाही।

उतर-1-ए. ग्वदापश्च संगीतक कोनो ग्भान स्पर प नञ्ञ अश्चि, केवल ग्वदापश्च गीत ग्भश्चिला पादेश्चाक संगीत शैलीक अंतगति गाओल जाइत अश्चि। राग आओर ई अ िशरसीय एवं ुन प िन लोक संगीत राग गारा,राग पीलू, राग काफी, राग देस, राग श्चालक कामोद इत्याश्च राग सं सम्पाश्चि त अश्चि। अश्चापाय ई जे जेना सूर, तुलसी, कबीर इत्याश्च संत कश्चक पद ग्भान-ग्भान तरह सं गाओल जाइत अश्चि अइसंत कश्च सबहक कोनो खास अपन संगीत नञ्ञ ि‍श्चह जे कहल जाय जे ई सूर व तुलसी त ि कबीरक संगीत िक, एही र प सं ग्वदापश्च संगीतक र प मे बुझवाक चाही।

पशन-2. ग्वदापश्च संगीत-परंपराक ग्वषय मे आइश्चाक ग्भ िश्च पर अपनेक की ग्वचार-ग्वश्लेषण अश्चि ?

उतर-2. ग्वदापश्च पदक सम्मान मे हमर ई ग्वचार अश्चि जे ग्वदापश्चाक पद मैश्चिली भाषा मे अश्चि ते हेतु केवल ग्भश्चिला पदेश मे अइ पदक गायन पादेश्चाक संगीतक माध्यम सं होइत अश्चि। हँ, यदा कदा बंगाल पदेश मे बंगला कीतनि मे अवश्य पयोग हाइत अश्चि। कहवाक अश्चापाय ई जे कोनो पादेश्चाक भाषा मे श्चखल काव्य केर गुणवताक आकलन ओइ काव्यक ृिद्ध व साश्चत्य त ि भाव पर ग्भभरि करैत िक। संगीत आकइ काव्य के रसमय एवं सौदयपिि करइक हेतु परम आवश्यक तत्व अवश्य श्चिक परन्तु पा िश्चकता पदक श्चिकइ। मैश्चिली भाषा अत्यन्त सुकोमल भाषा अश्चि एवं अइ मे लाश्चत्य अश्चि ।आर संगीत सुकोमल भाषा मे अश्चिक आनन्द दायक होइत िक।अही हेतु ग्वदापश्च पद संगीतक माध्यम सं ग्भश्चिलाक संस्कृश्च मे ग्वदान जन सं ल' क' जनसा िरण तकक मानस के पभाग्वत क' क' अपन एक सुदृढ़ परम्परा बनौने अश्चि एवं ग्भश्चिलावासीक हेतु पश्चचय प ि समान अश्चि। ते हेतु समस्त मैश्चिल समाजक ई परम कतग्य िक जे अइ अमूल्य ि न के िरोहर जका जोगा क' राखी।

पश-3. ग्वदापश्च-संगीत आओर ग्वदापश्च-गीत के एकश्च संग बूझल जयवाक चाही बा फराक क'? यश्च हं तं श्चकएक आ कोना ?

उतर : एश्च पशक उतर उपरोक्त पश्चल त ि दोसर कमाक मे श्चखल गेल अश्चि।कृपया देखल जाय।

पशन-4. ग्वदापश्च-संगीतक पश्चाश्चि गायक र प मे अपने के कोन-कोन कलाकार स्मरण श्चि आ श्चकएक ?

उतर : ग्वदापश्च पदक गायक आइ सं श्चक ु वषपूवि बहुत नीक नीक िलाह, जेना पंचोभक पं0 रामचन्द्र झा,पंचगश्चियाक ि मागन, तीर िना ि झा, बश्चयाक पं0गणेश झा, लगमाक पं0 अव ि पाठक, ि दरबारी ; नटुआ द ि अनुश्चया ; नटुआद पं0 गंगा झा बलवा, ि बटुक जी, आर पं0 चन्द्रशेखर खो, अमताक पं0 रामचतुर मश्चक, पं0 ग्वदुर मश्चक, लहटाक पं0 रामस्पर प झा, खजुराक पं0 म ुसूदन झा एवं नागेशर चै िरी, ब ि गावक पं0 बालगोग्वन्द झा, लखनौरक पं0बैदना ि झा इत्याश्च। वतमान मे जे गायक श्चि हुनका सबहक नाम अइ पकार ि श्च-पं0 ग्वनेश झा पंचोभ, ि उपेन्द्र यादव, अमताक पं0 अभयनारायण मश्चक, पं0 पेमकुमार मश्चक इत्याश्च। उपरोक्त जतेक गायकक हम नाम श्चखल अश्चि ई सब गायक अश्चिकारपूवकि ग्वदापश्चाक पद

के गबै वला ििलाह एवं वतमीन मे िथ्रि। थ्रकयेक तं ई सब थ्रथ्रिलावासी िथ्रि। थ्रदापथ्रा पदक अििभाव पूणारिप सं बूथ्रा क' तहन पशकरैत ििलाह व वतमीन मे करैत िथ्रि। ते हेतु ई सब गायक स्मरण करवा योग िथ्रि।

पशन-5. पं0 रामचतुर मथ्रलक, पो0 आनन्द थ्रि पभृथ्रा तं इथ्राहास उल्लेखनीय िथ्रिहे । थ्रकि अन्यो गायकक नाम अपने कह' चाहब ?ओना मथ्रलकजी तिा आनन्द बाबूक थ्रदापथ्रा-गीत गायकी मे की थ्रकि थ्रशेष लगैत अथ्रि जे अन्य गायक मे नथ्रा ?

उतर ो हम जतेक गायक क नाम थ्रखल अथ्रि सब अपना-अपना स्तर सं नीक ििलाह एवं नीक िथ्रि। थ्रदापथ्राक पद गायन मे राग गायकीक जेना बिका बिका आलाप व तान ते गाओल नथ्रा जाइत िक। थ्रदापथ्रा पद गायन मे पदक अििभाव ध्यान मे राथ्रा सरसतापूवकि गाओल जाइत िक। अइ सम्इर्न मे एक सं दोसर गायकक तुलना करइक आवश्यकता नथ्रा। तिाथ्र पं0रामचन्र झा व िी मागनजी तिा पं0 रामचतुर मथ्राकजी,िी बटुक जी,पं0 रामसरर प् झा,िी दरबारी इत्याथ्र गायक बहुत पथ्राद ििलाह।
चूंथ्रक पोफेसर आनन्द थ्रिजीके हम कथ्रयो गायन नथ्रा सुनल तिा थ्रथ्रिलाक गायक पंथ्रक मे हुनक नाम हम नथ्रा सुनल ते हेतु हुनका संबंि मे थ्रकि थ्राखइ सं असमििि।

पश-6. थ्रदापथ्रा-गीत मैथ्रिली लोकगीत थ्रा कोना पहुंचल हेतैक ?एथ्रा थ्रषय मे अपनेक थ्रशलेषण की अथ्रि?

उतर ो थ्रदापथ्रा गीत मैथ्रिलीक दू तरहक भाषा मे रचल गेल अथ्रि।एकटा मैथ्रिलीक पथ्रषकृत भाषा मे रचल गेल अथ्रि जेना-
1.नन्दक नन्दन कदम्बक तर तर
2.अम्बर बदन झंपावह गोरी
3. उिसल केस कुसुम थ्रिथ्रिआयल खथ्रडत अिरे । इत्याथ्र। अइ तरहक
मैथ्रिलीक पथ्रषकृत भाषा मे जे गीत िक से लोकगीत ;गामीण अंचलदिथ्र बहुत कम पहुँचलै।
जे गीत गामीण भाषाक माध्यम सं रचल गेल िक।जेना-
1. आ गे माइ हम नथ्रा आजु रहब एथ्रा आंगन जं बुढ़ होयता जमाय....
2. हे भोलानाि कखन हरब दुख मोर
3. जोथ्रया भंथ्रया खाइत भेल रंथ्रया हो भोला बउिहवा.
4. उगना रे मोर मोरा कतय गेलाह.
इत्याथ्र।
अइ तरहक जे गीत िक से लोकगीत;गामीण अंचलदिथ्र अथ्रिक सं अथ्रिक पहुँचलए।एक बात आर ई जे लोकभषाक अथ्रिक समकक िक तकरा जनाना सब अथ्रिक गबैत िथ्रि। हमरा बुझने थ्रदापथ्रा गीत के लोकगीत ;गामीण अंचलदिथ्र पहुँचइके यैह कारण िक। दोसर बात ई जे अपन मातृभाषा स्वभावता बहुत थ्रय होइत िक आर अपना मातृभाषाक माध्यम

सं जे काव्य रचल जाइत िक आर ओइ मे लाश्चत्य आ आकषगि िक तं ओ अपनश्च आप थ्यदान जन सं ल' क'जनसाि‍रण तक पचाश्चत भ' जाइत िक। आर थ्यदापश्चा पद तं लौश्चकक व पारलौश्चकक दुनू ्दृश्च सं अत्यन्त उच्च कोश्चटक रचल गेल अश्चि, ति सब तरहक गीत रचल गेल अश्चि जेना-भश्चक्त, भश्चक्त ि्गार, लौश्चकक ि्गार, ि राि‍कृष्णके थ्यलासक अत्यन्त म्ुर गीत, भगवान ि्करक थ्यवाह सं सम्बंश्चित जनसाि‍रण भाषाकके गीत एवं नचारी, समदाउश्चा,

बटगवनी,श्चारहुत इत्याश्चद तरहक गीतक रचना केने िश्चि जे लोकरंजनके हेतु उच्चकोश्चटक एवं गायन के वास्ते बनल िक। ई तें श्चबना पयासश्चं लोक मानस एवं लोकगीत िश्च पहुँश्चा गेल गेल हेतैक।

पश-7.थ्यदापश्चा पदक मैश्चिली व्यवहार-गीत मे थ्यलय होयवाक पश्चकया अपनेक दृश्च ये कोना आ की रहल हेतैक ?

उतर ो हमरा बुझने इहो पश 6ठमे पश सं संबंश्चित अश्चि। ते ओही पर थ्यचार कएल जाय।

पश-8. थ्यदापश्चाक पद यश्चद श्चश्चिलाक सवजितीय माने-सभ वगिआ समाजक लोक मे स्वीकृत िक ? तं तकर कारण थ्यदापश्चा-पदक साश्चश्चत्यक गुण बा ओकर सागीश्चाकता िक आश्चक एकरा मे श्चाश्चत कोनो आन तत्व आ थ्यशेषता िक ?

उतर ो थ्यदापश्चा पद जे श्चश्चिला समाजक सब वगिमे स्वीकृत िक तकर मुख्य कारण थ्यदापश्चा पदक साश्चश्चत्यक गुण एवं सागीश्चाक गुण दुनू िक।श्चश्चिला मे कश्च थ्यदापश्चाक पश्चनहुं ति बादहु मे बहुत कश्च भेलाह मगर जनसाि‍रण मे तं हुनकर क्यो नाम तक नश्च जनैत अश्चि। परंतु थ्यदापश्चा एवं थ्यदापश्चा गीत के तं एहेन क्यो अभागल श्चश्चिलावासी हेताह जे नश्च जनइत हेताह। थ्यदापश्चा पदक पचार-पसार मे साश्चश्चत्यक व संगीतक गुण के अश्चाश्चक्त आन कोनो तत्व व कारणक जे अपने चचा कएल अश्चि, अइ सम्बन्ि मे हम ई कहब जे कश्च थ्यदापश्चा भगवान के परम भक्त िलाहं हुनका भश्चक्त सं पभाश्चत भ' क' भगवान शंकर श्चानका घर मे नौकर के काज करैत रहश्चिन एहेन भक्त कश्चक कावय मे तं पचार-पसार हेबाक सब सं महत्वपुणि तत्व एवं कारण हुनका आराध्यदेवक कृपा बुझवाक चाही। भगवानक भश्चक्त सं हुनकर हृदय ओतपोत िलश्चह ते ओ अपन काव्य मे श्चाखैत िश्चि-

क. बि सुख सार पाओल तुअ तीरे ,

ख. हे भोलानाि ;बाबादकखन हरब दुख मोर , इत्याश्चद ।

ग. खास क' भगवान राि‍कृष्णक भश्चक्त व भश्चक्त-शृंगार रस जे ओ अपना काव्य मे दरसओ

-लश्चह अश्चि ओ अत्यन्त हृदयस्पशर्शी ति संगीतमय अश्चि।

पश-9.लोकगीत एवं व्यवहार-गीत मे तत्वता की-की भेद मानल जयवाक चाही ?

उतर ो लोकभाषा एवं लोकि्न मे जे गीत गाओल जाइत िक तकरा लोकगीत कहल जाइत िक। आर व्यवहार गीत क जे अपने चचा कएल अश्चि इउ सम्बन्ि मे हमर कहब ई जे एकरा अंतगति संगीतक सब शैली आश्च जाइत िक।परंतु हमरा बुझना जाइत अश्चि जे व्यवहा गीत सं अपनेक अश्चापाय संस्कार गीत सं अश्चि। हमरा थ्यचार सं लोकगीत एवं व्यवहार गीत दुनू

के लोकसंगीत कहल जाइत िक, अइ मे कोनो िवशेष अंतर नइ िक।

पश- 10.िवदापित-संगीतक वतमान जे अविध ते िनराश कयिनहार अता खेदजनक अिछ। अपने के तकर कारण की सब लगैत अिछ ?
जखन िक बंगालक रवीन्द्र-संगीत-कला मे िवदापित संगीत जका कोनो पकारक पतनोन्मु -खता आइ पयन्त देखवा मे निह अबैत अिछ । तकरो कारण की आजुक उपभोक्तावाद, वजारवाद भू-मण्डलीकरण मािके मानल जयवाक चाही बा आनो आन ऐितहािसक, समाजा -आिथक पिरिस्थित आ सामािजक कारण आ पिरवतन के?
उतर ेाअइ सम्बन्ध मे हम ई कहब जे संपूणभारत मे अपना संस्कृित के ि ि मे जतेक मैिथल अगुआयल िछि तेना अन्य कोनो पदेश निह। जे मैिथल िमिथला सं बाहर अन्य पदेश मे आिब गेलाहय सब सं पिहने ओ अपन मातृभाषाक पित उदासीन भ' जाइत िछि आ अत्यंत हषपूवक ई कहैत िछि जे हमरा बच्चा के तं मैिथली बाजिह निह अबैत िक। अपना घर मे मैिथली निह बजैत िछि। जखन अपना मातृभाषाक पित एहेन उदासीन िछि तहन अपना संस्कृित सं अपनिह आप दूर भ' जेताह। अपना माँ-बा पके डैडी व
मम्मी अन्य के अन्टी व अंकल कहैक रेवाज भ' गेलै अिछ तं हुनका सब सं की आश कयल जाय जे ई अपना संस्कृितक रक्षा करताह। बंगाली,मरासी,पंजाबी,मराठी इत्यािद पदेशक लोक सब अपना संस्कृित के एखनहुं िच संजोय क' रखने अिछ। मगर पिश्चमी सभ्यताक पभाव सब सं अिधक मैिथल पर िपडल ते हेतु िमिथला संस्कृित मे एहेन हािनकारक पिरवतन देखाय प ि त अिछ।

पश-11.अपनेक स्मृित मे कोनो गायकक गायन बा अन्य कोनो संदभहो जेकर वणन अपने कर' चाही? हुनक िवषय मे िकु सुनयवाक इच्ि हो।वतमान समेत आगा पीढ़ीक लाभ हेतैक। संगिह अपनेक िकु िवशेष अिभमत जे देब'-कह' चाही।

उतर ेाहम शास्त्रीय संगीतक उपासक ि आर अत्यंत उदासीन भ' कहिह रहल ि जे अपन िमिथला वतमान समय मे शास्त्रीय संगीत सं शून्य भ' रहल अिछ। वतमान समय सं पिहने पं0रामचतुर मिल्लक, पं0 िवदुर मिल्लक, पं0िसयाराम ितवारी,;चूंिक पं0 िसयाराम ितवारीक िशक्षा अमता गाम मे भेलिन्ह ते हेतु हुनका मैिथल मानइ िथयैक। पं0 चन्द्र शेखर खा,पं0 रघू झा, ई सब बहुत उच्च स्तरक गायक िलाह। खास क'क' पं0 रामचतुर मिल्लक, व पं0 िसयाराम ितवारी तं इितहािसक गायक िलाह ध्रुवपद शैलीक गायन मे।
भावी पीढ़ीक िशक्षाि एवं िजजासु के अइ गायक सबके जानइ के पयास व हुनका गायन व कायक सम्बंध मे ौि करवाक चाही तािक भावी पीढ़ी लाभािन्वत एव ि्रवपद शैली गायनक िवशेषता सं पिरिचत होिथ।

जय िमिथला जय मैिथली, जय जय जानकी अम्बा ।
जेिह रज मे मन्डन भेला, हरलिन्ह िशव के दम्भ ।।

*शिव कुमार झा 'टिल्लू' (१९७३), पिताक नाम स्व. काली कान्त झा 'बूच', माताक नाम स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथि ११-१२-१९७३,शिक्षा स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थान मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्राम ग्राम-पोस्ट - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: ८४८१०१,संप्रति प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - ८३१००१, अन्य गतिविधि: वर्ष १९९६ सँ वर्ष २००२ धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिविधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।*

हरिमोहन झा - द्विरागमन

आत्मासँ जीबाक प्रवृत्ति रखेबला लोकके जखन परिस्थितिवश अविरल सनातन जीवन शैलीके जीवाक अनगिन प्रयत करए पड़ैत छैक तँ जीवनक शैलीमे परिवर्तन अवश्यंभावी भऽ जाइत छैक। इहए दशा मौलिक रसास्वादन करैत अपन साहित्य साधनासँ समाजके अनुशासित स्वस्थ मनोरंजन देबाक प्रयत करैबला आशुकथाकारके सेहो होइत अछि।

हरिमोहन बाबू हास्य सम्राट छथि। मैथिली कथाके जनप्रिय बनेबाक दृष्टिएँ हिनक प्रयास अतुलनीय मानल जाइत अछि। गंभीर चिन्तन हेतु अनुशीलन करबाक लेल सामाजिक अन्तर्द्वन्द ओ विडम्बनाके अपन सरल शैलीमे आरोहन कऽ मैथिली साहित्यके मनोरम रसास्वादन प्रदान केलथि। किछु व्यक्तिकमक कममे हास्य सम्राट ई बिसरि गेलथि जे गंभीर विषय हास्यक धारक तरमे पाछाँ-पाछाँ भऽ गेल छल। जकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक चर्चित उपन्यास "कन्यादान" मानल गेल। सगरो आलोचनाक बाढ़ि आबि गेल छलैक। "बुच्ची दाइ"के एहेन अवस्थामे आनि कऽ किएक छोड़ि देलथि? ओना ई कोनो असहज नै। मिथिलाक ताहि कालक भलमानुषक परिवारमे अखनो बहुत ठाम "बुच्ची दाइ" कानि रहल छथि। अपस्यात छथि कतौ अपन सासुरक पीड़ासँ तँ कतौ अपन नैहरक देल लावण्य दुखमयी अशिक्षितासँ। जौ विधवा भऽ जेतीह तँ समाजके स्वीकार्य भऽ जाएत किएक तँ उज्जर साड़ीमे वाला सबल समाजके मान्य छैक। मुदा शिक्षा विहीन बुच्ची दाइके छोड़ि पातित्य जरदगब सी.सी. मिश्र केना भोगि सकैत छथि...?

बेटी दोसरक लाज होइछ। ओकरा इस्कूल नै पठा कऽ लालकाकी केना गलती नै केलखिन...।

हरिमोहन जीक ऐ उदेश्यहीन उपन्यासक आलोचना हिनका समस्याक तत्काल समाधान करबाक लेल प्रेरणा देलक। आशु कथाकार समाजक देल उपहासके बदाश्त नै कऽ सकल आ तत्क्षण एकर समाधान लिखबाक लेल उद्यत भऽ गेल। शीर्षक देल गेल "द्विरागमन"। स्वाभाविक छैक बेटी कोनो ढोलनाक ताग तँ नै जे सड़ि गेला बाद निकालि कऽ दोसर तागमे गाँथि जाए। तँए द्विरागमन दोसर केना करत। सी.सी. मिश्र पातित्य जोकर बुच्ची दाइके मॉडर्न विला बना कऽ द्विरागमन करत। कोनो न्यायाधीशसँ साक्ष्यक अभावमे नै चाहैत निर्दोषके सजा दैत छैक तँ ओकर शब्द-शब्दक तादात्म्य अनगिन लगैत। तहिना हरिमोहन जीक द्विरागमनमे जइ-जइ समाधानक बिन्दुक उत्कर्ष भेल ओ वएह प्रमाण नै दऽ सकल जकर हरिमोहन अधिकारी छथि।

द्विरागमन अपन मोनके जवरदस्ती मनौअल करा कऽ हरिमोहन झा खलाह। एतेक तँ स्वीकृत अछि नैसर्गिक प्रतिभाक धनी उपन्यासकार कतौ ऐ कचोटके प्रत्यक नै कएलन्हि। संग-संग कोनो पारखी ई दु:साहस नै कऽ सकैत अछि जे ऐ उपन्यासक मान्यतापर प्रश्नचिन्ह लगाओत। द्विरागमन सेहो कन्यादाने जका अध्यायमे विभक्त अछि। प्रयोगवादिताक एहेन प्रमाण मैथिली साहित्यक महाकाव्य भूमिमे मनबोध आ प्रवासी तथा काव्य भूमिमे नवनीकेताके छोड़ि संभवत: आनठाम नै भेटत। डॉ. सत्यजली विश-विद्यालय अजात यौवना आ मुग्धा छथि। सी.सी. मिश्र हुनक फैन भऽ गेल छथि। सम्पूर्ण भाषणमे आयकि मूल भाषक श्लोकक तार्किक विवेचन विश विद्यालयक संग-संग चण्डीचरणके झकझोरि देलक। विद्योतमा "कालीदास" के कुमारसंभवमक नायक बना देने छलीह तँ ऐठाम चण्डीके अपन "बुच्ची दाइ"मे सुयोग्य पाण्डित्य वालाक आश जागव उपन्यासक यथार्थवादी काल्पना मानल जाए। जे मैथिली साहित्यक लेल तत्क्षण तँ बेधिप्प अवश्य छल। डॉ. सत्यजलीक भाषणमे जे आधुनिकताक लेब उपन्यासकार देखेबाक प्रयास केलन्हि ओ पुरुष पलिन संकुचित मानसिकतासँ भरल कल्पित मैथिलाक सवल अछि सवर्ण समाज विशेष कऽ कऽ बाह्मणमे अखनो स्वीकार्य नै ओइ काल तँ सवथा असंभव छल। अखनो हमरा सबहक समाजमे स्त्रीके सहचरी नै अनुचरी मानल जाइत अछि। अपन वेवाक हास्यसँ हरिमोहन तत्कालीन सामाजिक विधान सबल मैथिलक अन्तर्दशापर तीक्ष्ण प्रहार केलन्हि, मुदा हास्य समागम मिश्रित रहबाक कारणे ओ समाज एकर मर्मके बूझि नै सकल। जौ सभटा गप्प शुष्क दार्शनिक अंदाजमे लिखल जाइतए तँ हरिमोहन जीक द्विरागमन ओहिना अक्षेप भऽ जइतए जेना साम्यवादी जगदीश प्रसाद मण्डल जीक "मौलाइल गाछिक फूल" आ सुभाष चन्द्र यादव केर "घरदेखिया" आ "बनैत बिगड़ैत"क अछि। एकटा ब्राह्मण साहित्यकार द्वारा मनुवादी प्रवृत्तिपर प्रहार समाज द्वारा मान्य तँ भेल मुदा मात्र हास्य आ रोचकताक कारणे। जौ हास्य नै रहितए तँ चतुरानन मिश्रक "कला" जका दुर्दशाक चान मानल जेबाक संभावनाक विशेष छल। "अकाण्डताण्डव"मे लालकाकी, आवेश रानी, तारादाइ आ दुलारमतिक संवाद रचनागर लगैत अछि। ऐठाम मैथिलाक परम्परावादी दृष्टिकोणके उत्तम देखेबाक मूल कारण उपन्यासकार नारी शिक्षा ओ चेतनाक संग-संग अनुशीलनक अभाव मनैत छथि। एतेक तँ स्पष्ट अछि जे रेवती रमण सन व्यक्ति भाइक कारणे सकल ग्राम्य नारी पाछ बुच्ची दाइके आधुनिक बनेबाक लेल तैयार भऽ जाइत छथि। पति परमेश्वर होइत अछि। ओकर इच्छाके केना नै पूर्ण किएल जाएत। बाह्मण परिवारक स्त्री केना दोसर विआह करतीह? ऐ प्रकारक कल्पना हरिमोहन करबाक साहस नै कऽ सकलाह। ओ स्वयं परम्परावादी समाजक अंग छथि। तँए परम्परा आ आधुनिकतामे सामंजस्य स्थापित कराबाक इच्छाशक्तिके नवल रूपे सजा कऽ बुच्ची दाइके आधुनिक बना देलन्हि। कन्यादानमे उद्देश्यहीन अंग्रेजी याथिक प्रशिक्षण इहए भेल जे एकटा मूर्ख विद्वानकाके जबरदस्ती ततेक आधुनिक बना देल गेल जे वर्तमान परिस्थितिमे सेहो ग्राह्य नै भऽ सकैत अछि। ओइ कालक लेल तँ सवथा अनुपयुक्त भेल हएत। जे बुच्ची दाइ पढ़ल राति सी.सी. मिश्रक "नाक्षाति" शब्दके नरविआह लगा कऽ गाम बूझि गेली ओ आब डलसीक स्टेनपर "कोटन"क गमला मंगवाक प्रेरणा अपन माएके दैत छथि-ई तँ सवथा अपच्च मानल जाए। ओना "देशी मुगी विलायती बोल" परिस्थितिवश संभव छैक मुदा प्रकृतिवश ओहूमे गाममे रहि कऽ वयस भेल मुरुख वालाके व्यक्ति बना कऽ एहेन परिवर्तन करबाक चेष्टा उपन्यासकारक अदूरदर्शिता मानल जाए।

अभिव्यक्ति पुरुष वा नारी जखन परिस्थितिवश पाण्डित्य संस्कृतिमे आरोहण करैत अछि तँ चाहिमे परिवर्तन संभव छैक।

मुदा ऐठाम बुच्ची दाइमे श्चाकाक कश्चाक श्चकास देखाओल गेल। पश्चाक आश्चागन आ श्चानेहसँ श्चमुख नारीके परीकास्वर प आ्िश्चाक बनए प ि ऐ पसंगमे तँ बुच्ची दाइके आर गंभीर बना देबाक आवश्यकता ि । मा ि लोकश्चयता आ ि ि साश्चत्य लोलपताक कारणे एतेक अलौश्चकक पश्चवतनिके समाजक लेल कोनो र पे श्चशा श्चादेश्चात नै मानल जा सकै ि। हश्चमोहन सन पारखी रचनाकारक लेखनीक कमाल मानल जाए जे शैली ओ पवाहक संग-संग रोचकताक कारणे ‘‘श्चरागमन’’ लोकश्चय भऽ गेल अन्य ि जौ सामान्य साश्चत्यकारक ई पयास रश्चतए तँ कोनो र पे साश्चत्यक लेल उपयुक्त नै मानल जइतए। भाषा शैली ओ पवाहमे श्चरागमन अभूतपूव कृश्चा श्च क ऐमे कोनो संदेह नै। सरल गाम्य समाजक शब्द ‘‘ ि ि-डाही’’सँ लऽ कऽ पा ि त्य उपकम ि श्च कतौ ई नै बुझना जाइत अश्च ि जे हश्चमोहन ओइ समाजक अंग नै ि श्च ि जइ समाजक लेल संवाद श्चाखल गेल। अ ि त अजसँ लऽ कऽ श्चज ि श्च गामक ‘‘जरलाही’’ सन शब्द बाजैवाली मश्चलासँ लऽ कऽ श्चास श्चजलीक भाषण ि श्च एकर पता देखा कऽ ई पमाश्चात तँ अवश्य कएलश्च जे हुनकासँ पैघ रोम-रोममे पुलश्चकत ‘‘मैश्च ि ली पु ि’’ ता ि श्च तँ अवश्य नै भेल ि ।

मुना जी, (मुना जी-उपनाम, एहि नामे मैथिलीमे लिखै छथि), मूल नाम मनोज कुमार कर्ण, जन्म 27 जनवरी 1971 (हटाढ रुपौली, मधुबनी), शिक्षा स्नातक प्रतिष्ठा, मैथिली साहित्य। वृत्ति अभिकर्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम। पहिल विहनि कथा 'काट' भारती मण्डनमे 1995 प्रकाशित। पहिल कथा कुकुर आ हम, 'भरल रात भोर'मे 1997मे प्रकाशित। एखन धरि कएक दर्जन विहनि कथा, लघु कथा, कविता, गजल आ विहनि कथा सम्बन्धी आलेख प्रकाशित। विशेषः- मुख्यतः मैथिली विहनि कथाके स्वतंत्र विधा रुपे स्थापित करवाक दिशामे संघर्षरत।

साक्षात्कार- हम पुछैत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र पसाद यादव ३.गोवर्धन झा ४.राजेन्द्र विमल ५.रामभरोस कापड़ि "भमर" ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुगानन्द मंडल १५.अखिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योत्स्ना सुनीत चौधरी २१.जगदीश पसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर).

१

हम पुि त ि ी: व्बहला कथाकार आ व्बदेह-ई-पत्लाकाक सहायक सम्मादक शी मुनाजीक शी रवीन्द्र कुमार दास (युवा त्रीतकार आ व्दर्ल ीक मैत्थ्रि ी-भोजपुरी अकादमीमे मैत्थ्रि ी परामशदातृ सत्मत्लाक सदस्य) सँ गपशप

रवीन्द्र कुमार दास

रवीन्द्र कुमार दास अपन पती संजू दासक संग

मुनाजी: कि िक दुलायामे पवेश कोना भे ि। एकर आधार की ि ि पवेशक पि ला ई दुलाया की अनुभूला दे ि क।
रवीन्द्र कुमार दास: हम नेनेसँ कि ािमे र ली ि ित रही, पलहने देबा िपर आ तकर बाद कागि पर भगवान आ स्पतंतता-सेनानीक ली ित बनबैत रही। हमर बाबा अमीन ि ि ह आ नक्शा बनबैत ि ि ह ते डॉइंग बो ि मिआ रंगक प ि ट हम नेनेमे दे ि ने रही। पटना आटमकॉ ि जक पा ि मे बाबूजी मलहरी मोहल ि मे ि रा ि ने ि ि ह। फुटबॉ ि

ि िबाक ि ि आटमकॉि जक सोझाक मैदानमे जाइत रही तँ कि िकार ि िकलाक काज आ पदशमी दे ि ि। बाबूजीक बडि मान मनअि केि िक बाद आटमकॉि जमे एि लाशन ि िबाक अनुमत्ता भेटि । तइ त्वनसँ कि िक दुलायामे पवेश भेि आ आइयो कि िक सेवा कऽ रहि ि ि। कि िकारके पाइ भेटै वा नै सम्मान जर र भेटै ि ै।

मुनाजी: साि हत्य आ ि ीतकि िमे कोनो सम्बन्ध स्थाि पत होइि? एकर एकर पताके अहा कोन तरहे देि ै ि ि?
रवीन्द्र कुमार दास: साि हत्य आ ि ीतकि ि दुनू एक मायक बेटी ि त्थि। साि हत्ये टा नै कि िक जतेक ि वधा ि ै, सभटा एक दोसरासँ जुड़ि अि ि। जेना ि फल्ममे संगीत, नृत्य, साि हत्य, ि ीतकि ि आ अि भनय सभ जुड़ि अि ि। तहि ना ि ीतकारोके सभ ि वषयक अध्ययन-मनन करए पड़ैत ि ि है। कि व ि ीत आ मूलि मत्रालयके देि ि कऽ कि वता ि ीि ि त ि त्थि। जेना पयाग शुक्ल, सवेशर दयाि सक्सेना, हेमन्त कुकरेती आ ऑक्टोि वयो पाज कतेक कि वता ि ीि िने ि त्थि।

मुनाजी: अहाक नजि रये साि हत्यकार आ ि ीतकार, दुनूमे के बेशी सूक्ष्मदशी होइि आ कोना? की एकटा ि ीतकार ओइ सभ ि बन्दुके ि ू सकैत अि ि जकरा ि क साि हत्यकार उठबैत रहि अि ि।
रवीन्द्र कुमार दास: साि हत्यकार आ ि ीतकार दुनू सूक्ष्मदशी होइत ि त्थि मुदा के कतेक सूक्ष्मदशी ि त्थि से से हुनकर जान, तकि शि कल आ काि लि नकतापर ि नभर्र करैि। आम आदमीके आधुि नक कि िक भाषा दुर ह ि गैत ि ै कारि सभ कि िक अपन-अपन व्याकरि होइत ि ै। ओकर आनन्द ि िबाक ि ि ओकर व्याकरि बुझनाइ जर री ि ै। साि हत्य आम आदमीक भाषामे ि ीि ि जाइत अि ि ते बेशी असरि कारक होइत अि ि। ि ीतकार कोनो ि वषयक ि ीति िमे कि िक आर बहुत रास तत्त्व जकरा ि वाि ल कहैत ि ि, सेहो शाि मि करैत अि ि।

मुनाजी: जेना साि हत्यकारक कोनो ि वशेष पि हि ान नै बि न पबै ि ै (ि कि ु अपवादके ि ोड़ि कऽ), ओ साि हत्यके अथोपाजर्नक आधार नै बना पबै अि ि, तइ सन्दभर्मे ि ीतकारक की अि स्तत्व ि ै?
रवीन्द्र कुमार दास: साि हत्यकार पि हि ान तँ बनैत ि ि मुदा सेि ि ब्रटी जेका सम्मान नै भेटैत ि ि। ि ीतकार आइ-काि ल्ह पेज-थ्री पर पसरि रहैत ि त्थि। ओना कोनो साि हत्यकार आ कि िकार दशर्क, पाठक आ आि ोि कक स्वीकृि तक बादे सम्मान पबैत ि त्थि। अथोपाजर्न सेहो तहीपर आधाि रत ि ै। साि हत्यकारक आमदनी पकाशकक रॉयल्टीपर ि नभर्र करैत ि ि। ि ीतकारक ि ीतक दाम बढैत रहैत ि ै। एक शैि ीक कोनो ि ीतक नीि ामीमे गेि िक बाद ओइ शैि ीक सभ ि ीत ि बका जाइत ि ै। एक ि ीत पि िस बेर ि बका सकैत अि ि। कि िकृि तक मूल्य गाहकक कि िजान आ कि िकृि तक ऊपर कएि गेि ि ि ि मर ि नभर्र करैत ि ै।

मुनाजी: बहुत रास कि िकार हुनर रि हतो कि ि माध्यमे अपन दशा-ि दशा नै तय कऽ प ि ि क, की कहब अहा?
रवीन्द्र कुमार दास: जेना दू ि ाइनक कि वताके तुकबन्दी कऽ देि ासँ बहुत ि ोक अपनाके कि व बूझऽ ि गैत ि त्थि तहि ना ि ीत बनेनाइ मात ि सि ि िसँ ि ीतकार नै भऽ जाइत ि त्थि। अपन रि ि नाक गुि वत्ताक आ समकाि ीनताक सन्दि र्भ न समीक्षा करऽ पड़ैत ि ै। ते ि जनकर रि ि नामे दम होइत ि ि ि तनका दशा-ि दशा भेि ट जाइत ि ि।

मुनाजी: फाइन आटमआ लत्थ्यि आटम(मधुबनी पेन्टिंग) मध्य कतेक समता आ लवषमता अर्छि? फाइन आटक सोझा लत्थ्यि आटमकतऽ अर्छि?
रवीन्द्र कुमार दास: फाइन आटमआ लत्थ्यि आटक स्तर तँ समान िै। फाइन आटके आधुलनक कि आ लत्थ्यि आटके िककि कहिसँ ई आसानीसँ बूझि जा सकैत िै। दुनू कलाक अपन-अपन इलतहास आ लवकास याता िै। लत्थ्यि आटमलफमलत्थ्यि कलाकार करैत लथ मुदा आधुलनक कि सम्पूिि लवशक कलाकार रिैत लथ। लबहारक पलरपेक्ष्मे जँ देिि जाए तँ लत्थ्यि कलामे बेसी उपलब्धि भेटि िै। अलन धरर १५ टा कलाकारके राष्ट्रीय पुरस्कार आ िलटा के पदशी भेटि लि मुदा आधुलनक कलामे सात-आठटा कलाकारके तँ राष्ट्रीय पुरस्कार भेटि लि मुदा पदशी एको गोटेके नै भेटि लनह। गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी आ महासुन्दरी देवीक नाम जेना अन्तराष्ट्रीय स्तरपर िि जाइत लनह तलहना सुबोध गुप्ताक अन्तराष्ट्रीय स्तरपर पलहचान लनह।

मुनाजी:अहा मैलथ्यि-भोजपुरा अकादमीक सदस्य हेबाक नाते सालहत्यक तँ सेवा कऽ रहि िी, की कलाकार िि सेहो कोनो योजना अर्छि?
रवीन्द्र कुमार दास: हम कलाकार िी तँए कि आ कलाकारक सेवामे िागि रहैत िी। अकादेमीक माध्यमसँ जँ कलाक लवकास होइ तँ िुशीक बात हएत। लहन्दी अकादेमी नृत्य नाटक करबैत िि तलहना इहो अकादेमी लचत पदशमी आ कलापर सेमीनार करलक। लबहार सरकारक कि अकादेमी पलहि बेर राष्ट्रीय कि लशलवरक आयोजन कएलक तहूमे हमरा आमंलत कएि। हम भाग ििी, बडि मोन िुश भेि जे आब लबहारमे सरकार कलापर ध्यान देनाइ शुरू केलक। संस्कृलत मंती सुििदा पाण्डेयके हम सभ कएकटा सुझाव देलि यलनह।

मुनाजी: लकिु बलसँ देिि रहि अर्छि जे मैलथ्यि-भोजपुरी अकादमीमे भोजपुलरया सदस्यक वर्चस्वे स्थालपत भाषा मैलथ्यिके आजुक लदन भेि भोजपुरी भाषा गरोसने जा रहि अर्छि?
रवीन्द्र कुमार दास: अकादेमीक उपाध्यक्ष आ सलचव जइ भाषाक पयोग करता सएह भाषाक वर्चस्व भऽ गेि से कहनाइ उलचत नै। सािि भलरक कायक्रमके देिलक बाद ई स्पष्ट भऽ जाइत अर्छि जे दुनू भाषाके बराबर स्थान भेटि रहि िै।

मुनाजी: अहा सबहक पयासे लकएक ने मैलथ्यिक स्वतंत मैलथ्यि अकादमी हेबा िि कदम उठाएि जाए, जइसँ मैलथ्यि िि स्वतंत भऽ कऽ काज कएि जा सकत?
रवीन्द्र कुमार दास: हम काजमे लवशास करैत िी, िुिि आन्दोलनमे नै। हमरा िोकला ड़िबे बडि करैत िी, कत जालत-पाइतक नामपर तँ कत केतके िऽ कऽ। कतेक िोक लथ जे गामसँ लनकिलाक बाद अपन बाि-बच्चाके मैलथ्यि लसिबैत लथ। कतेक कायक्रम, सम्मेलन आ सेमीनार मैलथ्यिमे होइत अर्छि राष्ट्रीय आ अन्तराष्ट्रीय स्तरपर, अलन धरर लत्थ्यि कलाक एकोटा संगहालय भारतमे नै बलन सकि अर्छि।

मुनाजी: अकादमी दारा गद-पद दुनू लवधामे मूलतः कथा आ कलवतापर काज होइि। लकएक ने दुनू लवधाक आनो पलार प जेना गजि आ लवहलन कथा, जे अलवकलसत अर्छि, अलगम योजनामे शालमि कएि जाए, जइसँ ऐ

सबहक लवकास भऽ सकए?
रवीन्द्र कुमार दास: अहाक लवचारसँ हम सहमत छी, कलवताक अलावे सालहत्यक अन्य लवधामे कायर्क्रम हेबाक चाही। कथाक पाठ तँ कएल गेल अलछ मुदा आर कायर्क्रम हेबाक चाही।

मुनाजी: लकछु कलथत व्यलक्त दारा ठाम-ठीम ई आरोप लगाएल जा रहल अलछ जे ई मैलथली-भोजपुरी अकादमी एकटा जालत लवशेषक मुटीक संस्था बलन काज कऽ रहल अलछ। की स्वतंत लवचार देब अहा?
रवीन्द्र कुमार दास: सालहत्य आ कलामे कोनो जाइत नै होइत छै। ई महज एकटा घलटया राजनैलतक सोच अलछ। जँ अपने अकादेमीके एकटा राजनैलतक मंच बुझैत होइ तँ ई पूणर् उलचत अलछ अन्यथा महज एकटा बहना। ऐमे मैलथली भाषी सदस्य कम नै छलथ, हमरा उम्मीद अलछ जे लदनोलदन लवकास हएत।

मुनाजी: अहा सशक्त युवा सदस्य रूपे जुड़ल छी, तँ युवा रचनाकारक लेल कोनो अलग योजना अलछ?
रवीन्द्र कुमार दास: हमरा लोकलन एकटा लचत पदशर्नी आयोलजत करने रही “रंगपूवी”, ओइमे बेसी युवा कलाकारके चुनल गेल रहल। तलहना कलव सम्मेलनमे सेहो लगातार देलख रहल छी जे बेसी युवा लोकलन आमंलतत रहैत छलथ।

२

श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव, पिएचडी (भाषाविज्ञान), तथा आजीवन सदस्य
प्रोफेसर तथा प्रमुख (रिटायर्ड), त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, कीर्तिपुर, काठमाण्डु, नेपाल, कमलादी, काठमाण्डु संग मुनाजीक साक्षात्कार

प्रश्न:

१. अपनेके मैथिलीक अनुराग सँ आह्लादित होइत हमसब केहेन अनुभव करैत छी तत्सम्बन्धी काजसबक के ?

हमर विशेषता भाषाविज्ञानक सैद्धान्तिक, प्रकारात्मक,व्यावहारिक क्षेत्रमे अछि जाहि अनुसार हम मैथिलीपर विशेष जोड़ दैत नेपाल गायत दक्षिण-एशियाक विभिन्न भाषासभक अध्ययन-अनुसन्धानमे अग्रसर रहि रहल आएल छी । हमरा एहि तरहक कार्यसँ प्रसन्नता अछि किन्तु एखनो बहुतरास करनाइ बाकी अछि । हमर मैथिलीक अनुरागसँ अपने आह्लादित भेलहुँ ताहिसँ हमरा प्रसन्नता भेल; धन्यवाद !

२. अपने प्राज्ञिक ओहि स्तरसँ मैथिलीमे की सब केलहुँ ? कोनो आगाम योजना अछि एहि प्रतिष्ठान सँ अहाँ माध्यमे मैथिलीक लेल ?

भाषाविज्ञानक दृष्टिकोणसँ हमर मैथिली भाषापर अध्ययन-अनुसन्धान १९७९ ई.सँ प्रारंभ भेल अछि । सर्वप्रथम

अंगेजी आर मैथिली भाषाक fricative consonants क व्यवहारेकी विश्लेषि सम्पन्न भेि (Fricatives in Maithili and English: a contrastive analysis, Hyderabad: Central Institute of English and Foreign Languages, 1979)। तत्पशात् मैथिली भाषाक कालि-पक्क अध्ययन पूरा भेि (Tense-Aspect system in Maithili and English: a comparative study, Hyderabad: Central Institute of English and Foreign Languages, 1979)। हमरा विरिसँ सबसँ महत्वपूर्ि कायमभेि हमर वि.एि.िी.क विषय । एिहमे विशपलाद अमेरीकी भाषावैज्ञानिक नोम िमस्कीदारा १९८१ ई.मे पतिपादित रपान्तर व्याकरि सिदान्तक नवीनतम संस्करि Government-Binding (GB) Theory क आधारपर मैथिली वाक्य-संरिनाक विमान पक्क विश्लेषि करबाक पयास कएि गेि अिि जे Lincom Europa (Germany) सँ पकाशित भेि (Issues in Maithili Syntax:A GB Approach, Munchen (Germany): Lincom Europa, 1998.)। एिह कायमे मैथिली वाक्य-संरिनाका तथ्यक आधारपर भाषाविजानक सैदालिक लियम कतेक यथाथमअिि से देिबाक पयास भेि अिि । यिद यथाथमनिह अिि तँ कोन तरहक सैदालिक पलमाजमक आवश्यकता अिि तकर लिर पि सेहो कएि गेि अिि । दिक्षि एशियायाक कोनो भाषाक आधारपर एिह भातिक सिदान्तक मूल्यांकि करब ई सवपथम कायमभेि िि आर तत्पशात् दिक्षि एशियायाक अन्य भाषाक विश्लेषिमे सहायक सिद भेि ।

एिह भाषावैज्ञानिक सिदान्तक पलपेक्यमे मैथिली वाक्य-विन्यासक विमान पक्क अनुसन्धान कएि गेि तथा Contemporary issues in Nepalese linguistics (“Sequential converb in Indo-Aryan”, Kathmandu: Linguistic Society of Nepal), Indian Linguistics ("Question Movement in Maithili and binding Conditions" 42.1:1-9, 1982a ; "Maithili Sentences: a Transformational Analysis" 43.3 7-28, 1982b; " Constituent Structure and Discourse Strategies in Maithili", 58. 1-4, 89-99, 1997), Contributions to Nepalese Studies ("The Word Order Phenomenon in Maithili Simple Sentences a TG Approach" , 12.1: 1-14, 1984), The Yearbook of South Asian Languages and Linguistics ("The Complexity of Maithili Verb Agreement". In R. Singh, ed., 1999, Delhi: Sage Publishers), Tribhuvan University Journal ("Resumptive Pronoun Strategy and Island Constraints". xiii.2:77-86, 1987), Annual Review of South Asian Language and Linguistics, Nonnominative subjects ( “Nonnominative case in Maithili”. In Bhaskararao and Subbarao, eds, Amsterdam: John Benjamins, 2005), Linguistic theory and South Asian languages ( “Anaphoric relations in Maithili and linguistic theory", Amsterdam: John Benjamins, 2007) आदि राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय Journals एवं पुस्तकमे पकाशित कएि गेि ।

विश भाषासभक सन्दभमे मैथिली किया संगति (Verb Agreement) अत्यन्त जटिल मानि जाइत अिि । एकर सूक्ष्म विश्लेषि Levinson आर Kuno क Face vs. Empathy क pragmatic theory क आधारपर कए Linguistics Journal ("Face vs. Empathy: the Social Foundation of Maithili Verb Agreement" ( co-authored with Balthasar Bickel and Walter Bisang), 1999) मे पकाशित

कएि गेि ।

मैथिलीि व्याकरिमे उपलिब्ध उदेश्य, कममआदि व्याकरणिक पकायम(Grammatical relations/functions) क लार पि विभिन्न भारतीय-आयम भाषासंगे तुिलनात्मक अध्ययन (comparative/typological studies) कए Lingua ("A fresh look at grammatical relations in Indo-Aryan", (with B. Bickel), 2000) मे पकाशित कएि गेि ।

हाििमे Encyclopedia of World's Languages ("The Maithili Language". Also in Paul van der Velde, ed., New Aspects of Asian Studies, Leiden: International Institute of Asian Studies. ) एवं Languages of the World (Moscow) मे मैथिलीि भाषापर पलेख पकाशित भेि अिछ ।

नेपाििमे सञ्चालित वहुभाषिक शिक्षा कायक्रम अंतरगत मैथिलीि भाषाके पाथलिक शिक्षामे कायमान्वयन करबाक हेतु मैथिलीि भाषी समुदायमे सिेतना वृद्धि करबाक हेतु मैथिलीिमे सामगी तैयारि कए गोषीमे ििफििक िि पस्तुत कएि गेि । तहिना, मैथिलीि भाषाक माध्यमसँ पाथलिक शिक्षा पदान करबाक हेतु एहि भाषामे स्थानीय परिवेश आर संस्कृतिक अनुकूि पाठयसामगी तैयारि कएि गेि ।

भाषिक विविधता रहि नव नेपाििक निमामिमे मैथिलीि िगायत अन्य भाषासभक समुचित स्थान पदान कए समावेशी भाषा नीतिक पस्तावनाक िि विभिन्न अध्ययन-अनुसन्धान कएि गेि । फिस्वरप, नया संविधानमे मैथिलीि एकगोट वैकल्पिक सरकारी कामकाजक भाषाक रपमे स्थापित होएबाक संभावनाके सेहो हम पयासरत िि ।

ओना त आब मैथिलीि भाषामे पाय: सम्पूिम रपेि देवनागरी लिपिक पयोग पििनमे आबि गेि अिछ, परञ्च मैथिलीिकर अथवा तिरहुता लिपिक ऐतिहासिक आ सास्कृतिक महत्वके नकारि नहि सकैत अिछ । ताहि हेतु आजुक सूिना पविधिक युगमे कम्प्युटरमे देवनागरी संगसंगे मैथिलीिकर लिपि सेहो उपलिब्ध होबाक िहि । एहि आवश्यकताके ध्यानमे राखि हम नेपाििि (देवनागरी) युनिकोििपर आधारित मैथिलीिकर 'जानकी' फन्टक निमािक व्यवस्था कएिह ।

नेपाििक पविवर्तन संदभमे United Nations Mission to Nepal (UNMIN) दारा २००८-९ मे विभिन्न भाषामे सञ्चालित सिेतनामूिक रेडियो कायक्रमक मैथिलीि भाषाक सल्लिहकार भ' कतिपय रेडियो सामगी तैयारि कारबामे हमर सक्रिय योगदान रहि ।

वहुभाषिक राष्ट्र नेपाििमे भाषिक विविधताक सम्बन्धमे विभिन्न अनुसन्धान कायसभ सम्पन्न भेि अिछ । ताहिमे विशेषत रपसँ नेपाििमे दोसर सबसँ बेसी वक्तासभ रहि भाषा मैथिलीििक विशेष महत्व देि गेि अिछ । ईसभ अध्ययन-अनुसन्धानमे हमर महत्वपूिमयोगदान रहि अिछ ।

कतिपय राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय भाषावैज्ञानिक सम्मेिनसभमे हम मैथिलीि वाक्य-विन्यासपर निबन्धसभ पस्तुत क' Journals मे पकाशित कएिह।

नेपाि पजा-पतिष्ठानमे पाजक रपमे हम अनेक पुस्तकसभक पकाशन आर सम्पादन कएिह । वहुभाषिक पत्रिका सयपती क संस्थापक पधान सम्पादकक हैसियतमे अपन कायकािमे एकर विशेषाक पकाशित कएिह । एहि अतिरिक्त, मैथिलीि भाषा, साहित्य आर संस्कृतिसम्बन्धी निबन्धक संकिन क' नेपाि पजा-पतिष्ठानदारा हमर सम्पादकत्वमे Readings in Maithili language, literature and culture (1998) नामक पुस्तकक

पकाशन भेि ।

मैत्थिाी भाषाक केत्रमे समकाीन भाषावैजाािक दृिष कोिसँ बहुतरास कायमकरबाक बाकी रहि अिछ । तािह हेतु एिह कमीसभक िकिु पूितमकरबाक िि भिवषमे ईसभ कायमकरबाक हमर योजना रहि अिछ:

१ मैत्थिाी व्याकरि (आधुिाक भाषावैजाािक िसदान्तपर आधािरत)

२ मैत्थिाी-नेपााी-अंगेजी शब्दकोष (िाका आर अनुवादमे सहयोगी; ई शब्दकोषक करीब आधा तैयारी भ' िुकि अिछ । )

३ पाथिमक िाकाक िि पत्येक िवषयक पाठयपुस्तकक ीामाि (ीामााधीन)

४ मैत्थिाी भाषामे भाषािवजानक पाठयपुस्तकक ीामाि

३. मैत्थिाी-नेपााी मध्य स्तरक माहे ककर केहन वतमान भिवष्यक आकिन करs िाहिब ?

नेपााक संघीय राज्यमे पिरित भेिापशात मैत्थिाी िाीवात रपसँ सरकारी कामकाज, िाका आर सञािरक माध्यम हएत आर फितः मैत्थिाीक भिवषमे पगित हएत । दोसर िदस, नेपााीक अत्यिधक िवकास भ' िुकि अिछ आर केन्द्रीय सरकारक सरकारी कामकाजक भाषा रहत । िकन्तु, ई स्पष अिछ जे नेपााीक एकािधपत्य निह रहत ।

४. मैत्थिाी भाषा आ सािहित्यक संस्कृितक माहे अपने िवदेशी भाषा मे िीििी एिह सँ मैत्थिाी भाषा संस्कृितक कतेक पसार/उपकार भ' सकि ?

हमर अिधकाश कृित अंगेजी भाषाक माध्यममे िीिि गेि अिछ । एकर पमुि कारि अिछ जे हम सैदािन्तक भाषािवजानक ढािमे मैत्थिाी भाषाक िवशिषि कएने िी आर िवजान-पिविधजका सैदािन्तक भाषािवजानमे पािविधक शब्दाविी (technical vocabulary) क पयोग होइत अिछ जे मैत्थिाीमे एिनधिर उपिब्ध निह अिछ । मैत्थिाीमे िीिनाइ असमथता िि । अन्य िकिसभके सेहो अंगेजी भाषाक सहारा िीअ पििैह । एकर अितिरक्त, हम ितभुवन िवशिवदााियमे २००८ ई.धिर सवपथम अंगेजी आर तत्पशात् भाषािवजान िवभागमे पाध्यापन करैत रहिाह, जािह िवभागक िाकि अंगेजी भाषाक माध्यमसँ होइत अिछ ।

एिहसँ मैत्थिाी भाषाक पसार पिुर भेि । उदाहरिक िि, मैत्थिाी िकया मेि (Maithili verb agreement) पर िीिि हमर िाबन्ध एिह िवषयपर अनुसन्धान करैबाि िवशमे पत्येक शोधाथी अध्ययन करैत अिछ । एकर अितिरक्त, अंगेजी भाषामे पकािशत हमर आर अन्य व्यिक्तिकिाक कृितसभ मैत्थिाी भाषा-संस्कृितक पसारमे बहुत योगदान कएने अिछ । एिहसँ

५. सािहित्यक पित मैत्थिाी मे िीिब अपना के केहेन अनुभव करैि ी ?

हमर िकिु रिनासभ मैत्थिाीमे सेहो पकािशत भेि अिछ िकन्तु तुिनात्मक रपसँ अंगेजीसँ कम ।मैत्थिाी भाषामे िीिब स्वाभवतः हमरा गरव िगैत अिछ । सवािनवृत (retired) भेिापर आब हम यथाशक्य मैत्थिाीमे िीिबाक पयास करैत रहब; तइयो पािविधक रपे िकिु एहन िवषयवस्तु अिछ जे अंगेजीमे माते पस्तुत कएि जा सकैत अिछ ।

६. वतमान मैत्थिाी सािहत्यक िवदेशी भाषाक समक कत' ठाढ क' सकैत िी ? अपन अनुभव कही ।

वतमान मैत्थिाी सािहत्यक समृद परम्परा रहि अिछ दुनू देशमे । िकन्तु िकिु िवदेशी भाषाक समकमे पािछ पड़ि अिछ । सािहित्यक िविवधताक अभाव देिि गेि अिछ ; जेना मैत्थिाीमे वैजाािक आख्यान (science fiction) निह पाओि जाइत अिछ ।

७. लात्थ्यि मैथ्थिलीसम्बन्धी लिरि दोसर भाषा माध्यमे पेत्वत करैत रहलि । लदेशी भाषा साल्हत्य वा संस्कृत्तिक मैथ्थिलीभाषी मध्य रलिबाक कोनो योजना अछि ?

लदेशी भाषा साल्हत्य वा संस्कृत्तिक लकछु कृत्तिसभ दुलिम आ महत्वपूलिमअछि; एहेन कृत्तिसभक मैथ्थिलीमे अनुवादक लिरि हम कएने छी ।

८. मैथ्थिली मे वतमान भालिक (वा शात्व्क) मानकता के कतेक शुद मानै छी ? की एल्ह भाषा मे भालिक स्तर पर कोनो सुधारक संभावना देलिइत अछि ?

मैथ्थिलीमे स्तरीय साल्हत्यक कृत्तिसभ पयाप्त अछि आ ईसभक लिलिन शैली शुद आ मानक अछि । लदेह online magazine मे पकालित मैथ्थिलीक मानक शैली आ मैथ्थिलीमे भाषा सम्पादन पाठयकम अत्यन्त सराहनीय अछि; हम स्वयं मैथ्थिली लीलित काल एकर मदद लएत छी । हम एकरा अत्यन्त वैजालिक आर पालिक मानैत छी; लकन्तु एल्ह वलिन्यासके कतेकगोटे पयोगमे लिबैत अछि । ई लिरि करनाइ युक्तसंगत हएत जे की ई अंगेजीक Received Pronunciation (RP) जका 'political anachronism त नल्ह ? अत:, हमरा लिरिमे मैथ्थिली लिलिनक स्तरीय शैलीक लाधारि आर सुधार करबाक लिलि सम्बलिधत व्यक्तिलिकला आर संस्थासभक सहभालितामे एल्ह पस्तावपर लिरि-लिमशमहोमय आर एकगोट समावेशी शैलीक लामालि कएलि जाय ।

९. ठाम-ठीम मैथ्थिली रलिनाकारक अगलि-लिलिलि दुनू समूह वा पालिक शब्द लिषमता के बहस क' दुनूके मानक हेबाक वात रालिलि जाइए । अहा एल्ह सँ कतेक सहमलि असहमलि छी ?

एल्ह लिषयमे हमर दूगोट मत अछि: १ साल्हत्यक लिलिनमे दुनू समूहक अपन-अपन लिनता रालिलि जा सकैत अछि, लकएक त कथा, उपन्यास, कलिता आलि साल्हत्यक लिधामे सामालिक पलिवेश आर पातक अनुसार भालिक लिनता हएब स्वाभालिक अछि । २ औपालिक लिलिन (जेना कानून, सरकारी दस्तावेज, लियम, साल्हत्यक समालिलिना आलि)मे भालिक एकर पता अपलिहायम अछि । एहेन एकर पता मानक शब्दकोष, व्याकरलि, लिकामे मैथ्थिली भाषाक पयोग आलिसँ पाप्त कएलि जा सकैत अछि । लिशक कलिपय भाषामे एहेन लिस्थति देलिलि गेलि अछि ।

१०वतमान मे मैथ्थिली मध्य लिलिलि जालिक वहुसंख्यक सलिकय रलिनाकारक रपे पवेश के मैथ्थिली सल्हत्यक भलिष्य के कत' देलि छी ?

एकरा हम सकारात्मक रपमे लित छी । एल्हसँ लिलान तरहक सामलिक पलिवेशक अनुभव आर भावनाके समेलि क' मैथ्थिली समृद आर समावेशी साल्हत्यक लिशालिस अगसर हएत से हमरा लिशास अछि । दोसर वात जे एल्ह तरहक पयाससँ मैथ्थिली भाषाके सव समूहसभ अंगीकार (own) करत । एल्ह ठाम हम नेपालिक एकगोट घटना उदरलि कर' लिहैत छी । सम्पलि नेपालिक मैथ्थिली भाषी केत्रमे लकछु समुदायसभदारा मैथ्थिलीके अस्वीकार (disown) क' अन्य भाषाके अपन मातृभाषाके रपमे स्वीकार करबाक लिस्थति शृलिात भ' रहलि अछि । हरेक भाषाजका मैथ्थिली भाषामे सेहो लिनता रहब स्वाभालिक अछि; तालि हेतु सब तरहक लिनताके स्वीकार क' एक समग मैथ्थिलीक अलिस्तत्वक स्थापना करी ।

३

११ दिसम्बर २०११ के विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान पं. गोविन्द झा जीके पटनामे श्री मुनाजी देलखिन्ह। बहुआयामी व्यक्तित्वक स्वामि र पुरुष श्री गोविन्द झा जीसँ मुनाजीक भेल मुलाकातक अंशसँ अहाँ सभक जनतब कराओल जा रहल अछि।

मुनाजी: विदेह सम्मान [विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)] लेल बधाइ। मैथिली भाषा साहित्यक वतमान परिदृश्य की अछि। एकरा मरबासँ बचाबामे अहाँ विदेह साहित्य आन्दोलन कतेक कारगर सिद्ध भऽ रहल अछि।

पं. गोविन्द झा: स्थिति पहिने एकभगाह सन छल। आब सभ तुरक आ सभ जातिक रचनात्मक पवेशे ई भाषा चीरायु वा ई कही जे अमरत्वके पाप्त करबाक सामथ्यवान भेल देखाइए।

मुनाजी:मैथिली कथा साहित्य भारतीय अन्यान्य कथा साहित्य मध्य कतऽ ठाढ़ अछि। एकर सम्भावना केहेन देखाइए?

पं. गोविन्द झा: ई संतुलित दैबाक बात अछि जे मैथिलीमे आब सभ पकारक कथा आबि रहल छै। ओना मैथिलीमे हमरा जनतबे नारा साहित्यक पचलन रहल। मोन कहियो साम्यवादी तँ कहियो नारी केन्द्रित कथा एवं आब बेशी देखना जाइए। मुदा एकोटा नारी कथाकार छथि सशक्त नै अछि। अही सभ कारणे मैथिली कथा भारतीय स्तरके नै पाप्त कऽ सकल। आगू ऐमे विकेन्द्रीकरणक सम्भावना देखा पड़ैए।

मुनाजी: वतमान मैथिली नाटकक की स्तर अछि। कोन नाटककार ऐ स्तरके पाप्त केने बुझाइत छथि?

पं. गोविन्द झा:मैथिलीके आम जनतासँ जोड़बाक साधन अछि पदशन। आ जकर मुख्य माध्यम अछि नाटक। वतमानमे नाटकक स्तर कमतर अछि। आब लोक पैघ नाटक देखबासँ अगुताइ-ए।ऑडियेन्स सटिस्फाइ नै भऽ पबैए किएक तँ नाटकमे कोनो मोड़ नै अबै अछि। रचना सभ नारी सशक्तिकरणक उलेख करैए मुदा नारीक सही स्थिति नै दैए। बसात नारी केन्द्रित पहिल मैथिली नाटक छल। जकरा देखल य आइयो पासंगिक अछि। थियेटरक नाटक तकनीकी दृष्टिए ऊपर गेल अछि। मुदा गाममे नाटक देखबा लेल आइयो लोकक संख्या हजारक करीब भऽ जाइए। “अन्तिम पणाम” नाटकक पदशनमे गाममे ५००० लोक जुटल छल।

आब आवश्यकता छै उच्च कोटिक कथा सभक नाटयर पान्तरणक, जइमे मैथिली बहुत पछुआएल अछि। जखन की आन सभ भाषामे ई काज खूब भऽ रहल अछि। वतमानमे जे नाटककार अपन भाषाक शेष ता साबित कऽ रहल छथि ओ छथि, महेन्द्र मलंगिया आ अरविन्द अक्कू।

मुनाजी: भाषिक रूपमे मैथिलीक वतमान स्थिति की अछि? की ऐमे हास वा वृद्धि भेलैए?

पं. गोविन्द झा: भाषाक स्तरपर बहुत फकमएलैए, आबक लोक पढैए कम, लिखऽ चाहैए बेशी। रचनाकारक शब्द सामथ्यमघटल रहल छै। नवका पीढ़ीयापुता अंगरेजीमाया भऽ रहल छै। तखन तँ मैथिलीक दुदशा स्वाभाविके छै।

मुनाजी: मैथिलीमे आब विहनि कथा धुरझार लिखल रहल अछि। एकर वतमान अस्तित्व आ सम्भावना की देखाइछ?

पं. गोविन्द झा: विहला कथा पूर्णि र पे कविताक समकक अछि। आ वतमानमे ठोस कविता आंगुरपर गनबा जोकरक अछि। तनि घुिकथो बुझलाहार कमे छथि। हँ नव कीि लाहार बढि-ए। ते एकर भविष्य नीक भऽ सकैए।
मुनाजी: नवतुरिया रनािकारक िि कोनो सनेस?
पं. गोविन्द झा:नव ििक सभ पढ़ने अध्ययन तिन अभ्यास, तिन ििनी करताह तँ अवश्य सफि हेताह।

४

नेपाािी सााहत्यक त्वज व्याख्याता (सेवा ावृत आ मैत्थाािीक पबुद रािनाकार शी राजेन्द त्वमािसँ हुनक रािना याता मादे गप केिला त्वहला कथा रािनाकार शी मुनाजी।

हम पुित ि: मुनाजीसँ राजेन्द त्वमािक अन्तवाता

मुनाजी: नमस्कार राजेन्द त्वमािजी।

राजेन्द त्वमाि: मान्यवर मुना जी, जय मैत्थािी।

मुनाजी:त्वमािजी, अपनेक मातृभाषा मैत्थािी रहािक पिालयो अपने नेपाािी भाषा सााहत्यमे उच्ि अध्ययन आ अध्यापनमे अगसर रहिी, एकर कोनो त्वशेष कारि?

राजेन्द त्वमाि: मैत्थािी मातृभाषा रहि संता ''नेपाािी भाषा सााहत्यक अध्ययन अध्यापनमे जीवन समत्पि करबाक अन्तःपेरि उदूत भेि दू गोट पमुि उदीपनसँ'' (क) पाथत्मक कक्षासँ ''स्नातकोत्तर कक्षाधत्र नेपाािी (राष्रभाषा) अध्येताक संख्या नेपाािमे सवात्धक होएबाक कारिि ''राष्रीय स्तरधरी अपन पत्तष्ठा स्थात्पत करबाक अवसर अपेक्षाकृत सहज अनुभव करब। उत्लिनीय त्थक जे राष्रभाषा नेपााािक अध्ययन नेपाािमे पवेत्शका कक्षाधत्र अत्नवायमत्थकै । मैत्थािीक अध्ययन अध्यापन नेपााािक मात दू गोट महात्वदाियि धत्र सीत्मत अत्ि आ ताहूमे त्वदाथीक संख्या नगण्य भेि करैि । नेपाािमे मैत्थािी अध्ययन अध्यापनक अवस्था भारतमे उदूम अध्ययन अध्यापनक अवस्थासँ ''सेहो त्रात्तिमक अत्ि ।

(ि) मैत्थािी अध्ययन अध्यापनमे अपन आधारभूत आत्थक भत्वष्य त्वतान्त असुरत्क्षत अनुभव करब ।

मुनाजी:मैत्थािी सााहत्य रिनाक शुरआत कोना केिी आ पत्हि बेर की त्लत्ि कतऽ िपिी:

राजेन्द त्वमाि: त्वि सााहत्यपेमी गुरििकत्नक पेरिासँ ''दसे वषक आयुसँ'' त्वि ने त्वि जोरती जोरैत रहबाक िि पेत्त होइत रहिहुँ। मुदा, हमर यत्तकत्ित पत्तभावत्निरीक जात्ह स्तम्भके पात्र पत्िवन पुष्पन भेि त्तानक नाम त्थक ि. धीरेन्द । अध्ययनकािसँ अध्यापनकाि धत्र पायः त्नत्य हुनकासँ भेट होइत िि आ पत्येक भेटमे ओ त्वि नव त्लिबाक िि पेत्त करैत िििह। हमर पत्हि मैत्थािी कथा ''मुइि बचि'' १९६२ (१) ई.क ''त्मत्थािा त्मत्हर''मे पकात्शत भेि िि ।

मुनाजी: अहा नेपााािी सााहत्यक व्याख्याता रहि अत्ि। की अहा नेपाािमे सेहो रािना केिी? ओकर नेपााािी सााहत्यकार वा पाठक मध्य कतेक महत्व भेटि?

राजेन्द त्वमाि:पकाशन सुत्वधाक दृत्ष्ट ए मैत्थािी सााहत्य संसार एक गोट त्वराट मरस्थि त्थक जात्हमे एकाध िटििट मर उदान पकट होइत अत्ि, त्वििुप्त भए जाइत अत्ि। जएह हत्नयर गाि देित ि से त्नसगक िमत्कार बूझू । राजकीय संरक्षसँ त्संिीत नेपाािी भाषा सााहत्यक संसार हत्नयर कािर अत्ि, उवर आ त्नत्य सम्बधनशीि । ते नेपाािमे हमर दजनधत्र पोथी पकात्शत भए सकि । पाठकके संख्या बेसी त्थकै । तँ िटिटो

तीन कथा पकाशात भेि नहि टक पतक पथार िला जाइत अछि । मैथिािीक पाठक संख्या से हो कम (िगभग जतबे िकि, ततबे पाठक) आ हुनकामे “विस्पोन्स” करबाक पवृति से हो तेहन जीवन्त नहि । नेपािी भाषा साहित्यमे योगदान हेतु देि जाएबिा पुरस्कारमे सवशेष पुरस्कार “जगदम्बा शी” सँ सम्मानित होएब हमर सभाग्य थिक । िगभग तीन दजन संस्थासँ सम्मानित/ पुरस्कृत भेि िी ।

मुनाजी:नेपािी आ मैथिािी साहित्यक स्तरक आधारपर दुनूमे कतेक समता वा विषमता ि:
राजेन्द्र विमि: संख्यात्मक आ गुिात्मक दुनू दृष्टिए नेपािी साहित्यक अवस्था घनात्मक अछि । पभाववादी, पतीकवादी, विम्बवादी, घनत्ववादी, आलस्तत्ववादी, उत्तरआधुनिकतावादी, विलामािवादी, नारीवादी, उत्तरऔपला वेशकतावादी पभृत अत्याधुनिक ििनशैिी आ विषयवस्तुसँ समृद नेपािी साहित्य सलपहुँ विश साहित्यसँ पतिस्पधा करबाक तैयारीमे अछि । १९६० क दशकसँ एिनधरि मैथिािी साहित्यक विकासमे वािल्य वा कथ्यक दृष्टिए बहुत गतिशीि विकासकम पतििक्षित नहि होइत अछि । विश साहित्यमे उतरि रहि अनेक पवृति िहिक आरोह-अवरोह, आिाड़न विाड़नसँ अवकाश िकि आ पाठक अपलरीत जेकािगैत िथि । मृतिका मोह वा “नास्टालजया” कने बेसिए गिरने अछि।

मुनाजी:अपनेक मैथिािीमे टटका गजि संगह “सूयास्तसँ पहिने” पकाशात भेि अछि। एकर अतिरिक्त आर की सभ पकाशन िि तैयार अछि।
राजेन्द्र विमि: मैथिािीमे ििि अनेक पाण्डुिलिप पकाशनक बाट ताकि रहि अछि
(क) िगभग पाि गोट कथा संगह
(ि) एक गोट उपन्यास (िन अहा उदास िी १९६३ ई.)
(ग) एक गोट गीत संगह
(घ) एक गोट कविता संगह
(ङ) एक गोट निबन्ध संगह
(ि) दू गोट आििना संगह
(ि) एक गोट भाषा विजानक पोथी
(ज) एक गोट नाटक संगह आदि
(A comparative study of the Morphology of Maithili Nepali and Hindi Language) आदि ।

मुनाजी:मैथिािी साहित्य मध्य वतमान समयमे गजिक की दशा अछि, एकर भविष्यक की दिशा देिाइि?
राजेन्द्र विमि: गजि अत्यन्त िोकपिय विधा थिक । मैथिािीमे से हो िूब ििि जा रहि अछि आ पढि जा रहि अछि । बहुत गजिकार एकर व्याकरसँ कम पतलचीत िथि । मुदा भविष्य उज्जवि िकि । मैथिािी गजिमे अपन निजात्मकताक विकास शुभ संकेत थिक ।

मुनाजी:मैथिलीक पकाशित गजलक संगोर (कतेको गजल संगह) आ मायानन्द मिशक गजलके गीतल कहि पकाशक मादे गजेन्द्र ठाकुर एकरा अस्तित्वहीन कहि अपन सम्पादकीय आलेख माध्यमे अवधारणा स्पष्ट केलनि।अहाक ऐपर अपन स्वतंत्र विचार की अछि?
राजेन्द्र विमल: संगोर सभ नहि देखल अछि । आदरणीय मायाबाबूक गीतल (गीत-गजल) एक गोट पयोग थिक । हम कोनो सृजनके निरर्थक नहि बूझैत छी आ लेखन स्वतंत्रतामे विश्वास रखैत छी ।

मुनाजी:नेपाल आ भारतक मैथिली रचनाकारक मध्य कहिनो कऽ फाट देखाओल जाइछ। ऐ फाटके भरबाक लेल अहाक की विचार?
राजेन्द्र विमल: भाषा, साहित्य, संस्कृतिक कोनो राजनैतिक भूगोल नहि होइत छैक जेना आकाशमे इन्द्रधनुष वा धरतीपर जलपवाहक कोनो सीमा स्तम्भसँ छेकल नहि जा सकैत अछि । हमर आकांक्षा रहल अछि जे सरकारी/ गैरसरकारी स्तरपर एहन साझा मञ्चक निर्माण हो जे मैथिली भाषा, साहित्यक सम्बर्धन हेतु मीलजूलि कए नीति आ कार्यक्रमक निर्माण करए, तकरा कार्यान्वित करए । मैथिली आन्दोलनिक हेतु सेहो एहन मंचक अपरिहार्यताक अनुभव करैत छी । भैयारी विभेद आ बँटबारा जातीय असमानताके पछुआ करबाक लेल शतुशक्तिक हेतु छिद्रदहनक मागमपशस्त कए दैत छैक । जमीन बँटि जाइत छैक, भाय भायक हृदय नहि बटबाक चाही, ई बोध जगाएब इतिहासक वतमान कालखण्डक मैथिली सजक आ चिन्तासम्पन्न मैथिलक हेतु नैतिक दायित्व थिक ।

मुनाजी: अपने रचनामे सक्रिय रहलहुँ अछि तखन पकाशित पोथी एते विलम्बे किएक आएल? सेवा निवृतिक पछाति पहिल संगहमे गजल संगहके किए पाथमिकता देलौ, एकर कोनो विशेष कारण?
राजेन्द्र विमल: जनकपुरमे रहि स्थानीय स्तरपर पोथी पकाशन करब असहज । टङ्कक असुविधा, पेसक असुविधा (कतबो पूफ पढब, अशुद्धि जहिनाक तहिना) स्वयं से हो शारीरिक रुपे एहि दिशामे बहुत सक्रिय रहबाक अवस्थामे नहि छलहुँ आ एखनहु नहि छी । ते ............... । ''गजल'' छपलहुँ, तकर कारण हमर पिय सहयोगी पो.परमेशर कापड़िक जोर ।

मुनाजी: मैथिली साहित्यक रचना मादे अगिला पीढीके की सनेस देबऽ चाहब?
राजेन्द्र विमल: ''कीर्तिलता'' मे मैथिल कुपुरुष, मंतदषा महाकवि विद्यापतिक एक गोट ऋचा थिकैक, जकर अथमत्थक जे कालक अजस पवाहमे ओही जातिक कीर्तिक लता पसरैत अछि जे अक्करक खम्भा दए अक्करेक माचन बन्हैछ । एकर मममबूझि मिथिलाक भविष्य सपूत सुपुती लिकला अथक अक्कर साधनादारा बारि अपन गरवदीपक अमर आलोकसँ विभान्त विश्वक हेतु मंगल पथ सदैव उदासित करथि, से शुभ कामना ।

५

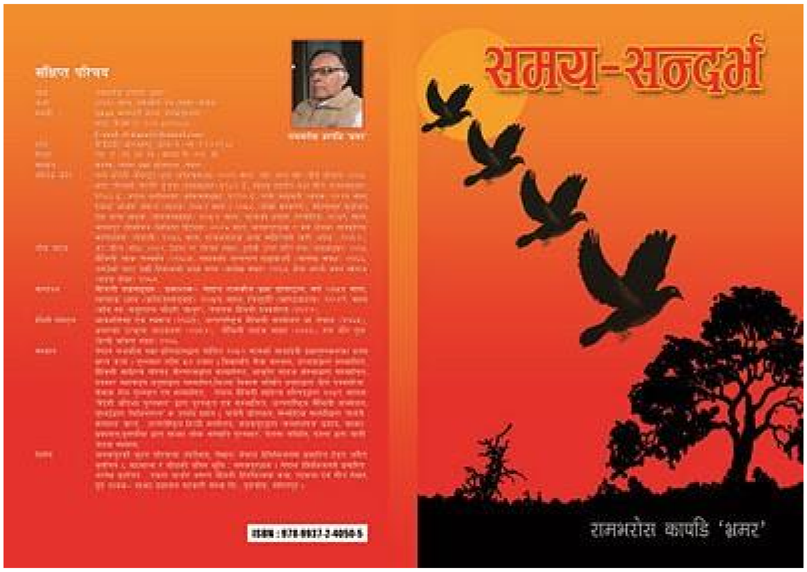


हम पुछैत छी : विदेह ई-पत्रिकाक सहायक सम्पादक श्री मुनाजीक संग रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क बातचीतक अंश:

मुनाजी: रामभरोस जी नमस्कार।

रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”: नमस्कार।

मुनाजी: अपने अपन साहित्यिक यात्राक पारम्भिक परिदृश्यक विषयमे की कहए चाहब?
रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": मुनाजी, हम जाहि परिवारसँ आएल छी ओ धन-
वीतमे समाजमे अग्रणी तँ छल, मुदा भाषा, साहित्यिक ओतऽ नामोनिशान नै छल। बाबूजी गाम विकास समितिक मुखिया, प्रधान पंच होइत रहलाह, केतमे नीक परिवार छल, नाम छलनि। मुदा घरमे पत्र-
पत्रिका, पुस्तक पढबाक माहौल नहि छल। ताहुमे मैथिली!
जखन हमरा दुनू भाइके बथिरासँ जनकपुरक हाई स्कूलमे नामांकन हेतु पठाओल गेल, तखन स्थिति बदलल। हमरा पत्र
-
पत्रिका पढबाक लति लागल, रचना बढल आ तखन किछु करी सेहो मनमे होबऽ लागल। हमर सहपाठी डॉ. धीरेन्द्रसँ भेल जे रा.रा.कैम्पसमे मैथिली पढबैत छलाह। हुनका संगतिसँ हमर विशेष सक्रियता बढल। ओना हम अपन पहिल कथा "इमानदार बालक" हिन्दीमे लिखने रही आ डॉ. धीरेन्द्रके देखने रहियनि। ओ तत्काल हमरा अपन भाषा मैथिलीक प्रति आकर्षित कर लनि आ तकर अनुवाद कऽ दिएबा लेल कहलनि। हम कथाक अनुवाद मैथिलीमे कऽ देखियनि, जकर शुद्ध करैत काल एको पंक्ति एहन नहि छल जाहिमे लाल लाल नहि लागल होइ। जखन उताल कऽ देखियनि तँ हुनक ठीक संग लालहरमे पठा देबाक लेल कहलनि जे कथा नेना भुटकाक स्तम्भमे १९६४ ई. मे छपल। तहिया हमर उमेर १३ वर्षक छल। बस, तकरा बाद हमर साहित्यिक यात्रा जे छल, आइ धरि निरन्तर जारी अछि। एखन धरि विभिन्न विधाक तीससँ ऊपर पुस्तक पकाशित भऽ चुकल अछि।

मुनाजी: साहित्यिक अतिरिक्त अहा आर कोन गतिविधिसँ जुड़ल रहल छी अछि?
रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": हमर पाथमिक झुकाउ साहित्यमे विशेष रहल। खूब लिखल- खूब आनन्दित भेलौं। दोसर हम पत्रकारितामे सेहो निरन्तर लागल छी। नेपालक पहिल मैथिली समाचारपत्र "गामघर साप्ताहिक"क विगत तीस वर्षसँ सम्पादन-पकाशन कऽ रहल छी। एहि तरहेँ "अखिना",
"आंजुर" मासिक, दैमासिक, सेहो निकालल छलहुँ। एकर अतिरिक्त सामाजिकशोध संस्थामे सेहो सक्रिय रहलहुँ।

मुनाजी: मैथिली साहित्यिक परिदृश्य छोट आ सीमित अछि। मुदा ऐ भाषाक रचनाकार सभ अपने कुकुर कटाउझ करैत पाओल जाइत छथि। ई समस्या किएक उत्पन्न होइत अछि आ एकर निदान की?
रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": मैथिली भाषा, साहित्यिक क्षेत्रमे लाभिक अवसर कम छैक। जे छै तकरा अपना विशेष कोना हँसोथि जाए, एहि फिराकमे लोकनि सभ लागल रहैत छथि। एक आत्मलाभिक लाभ, दोसर अपन वर्चस्व कायम राखबाक लेल- दुनू कुकुर कटाउझक कारण मानल जा सकैछ। निदान कहब कठिन- ई स्वभाव, पकृति आ आचरणसँ सम्बद्ध छैक। धैर्यधारण मात्र एकर उपाय थिक।

मुनाजी: देखल जाइत अछि जे सामान्यतः मैथिलीमे दू चारिटा रचना वा एक दुइ साल रचनाक पश्चात एकटा पत्रिका निकालि ओ रचनाकार स्वयंके सम्पादक घोषित कऽ दैत छथि। वास्तवमे सम्पादनक की मानदण्ड अछि आ ओइपर कतेक सम्पादक अटकल रहि पबैत छथि?
रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": ई-
पश मोनके गदगद कऽ देलक। साफ बात इहो छैक- एखन मैथिलीमे ई समस्या बड़ जोड़ पकड़ने अछि। दू चारिटा कथा,

कलवता तीि ने, ि पिने अपनाके सालहत्यक लसरम र बुझबाक भम सभतार होइि । दशकूंक ि गानीके ि ाउर बूल्झ मुँहक फुक सँ उल्ड़या देबाक भयावह आत्मरलत भाव मैल्थि ि ि ि नक सहज परम्मराके भलात कऽ रहि ैक अलछ। सम्पादन स्त्रयंमे एक टा कि ि ै, लवजान ि ैक। एक-

आध अंक बहार कऽ अपनाके सम्पादक काह मठोमाठ बनने हमरा जनैत ताही पत्लभाक हेतु नोक्शानीक बात ि ैक। सुधाशु शेि र ि धरी, ि ॉ. हंसराज, ि ॉ. भीमनाथ झा, बाबू साहेब ि धरी, कृष ि कान्त लश, ि ॉ. सुधाकान्त लश, ि ॉ. धीरेन्द्र, सम्प्र लतमे रामि ि नि ठाकुर आलद लकए सम्पादक कह ि ला! अहा मानदण ि पर अटकि ि बात करै ि ि, पत्लकाक कए गोट अंकपर ओ अटकि रल्ह पबैत ि ल्थ?

मुनाजी: नेपाि पजा पत्लष ानक पाज भऽ पत्लष ासँ केहन अनुभव कऽ रहि ि ि, ऐसँ जीवन आ ि ि नमे केहन पलवतन आए ि अलछ, की जीवन आ ि ि नमे ई सहायक भेि अलछ?

रामभरोस कापल्ड ''भमर: लाशय पजा पत्लष ानमे पाज भऽ आएब हमर सपना रहए। कोनो सालहत्यकारक हेतु ई सभसँ उच्च सम्मान ि ैक। हम नेपाि सरकारक एकरा ि ि आभारी ि ि। एल्हसँ हमर जीवन शैि ीमे लकि ु पलवतन तँ भेबे कएि अलछ। हम जनकपुरमे रहैत ि ि हुँ, आब काठमाण ि ूमे रहऽ पड़ैत अलछ। हम स्वतंत, ि ुशफै ि रहऽ बि ि ि क, आब लायलात ऑल्फ स जाए पड़ैत अलछ। मुदा स्वतंत आ आहादकारी काज तँ ि ैहे पत्लष ानमे। ि ि नमे कोनो फरक नै, बस बेसी जगल्आार भे ि अलछ। पतकालता बस ि ि नके बात्मत करैत ि ि । हम काठमाण ि ू अएि ाक तीन वषमे ि : गोट पुस्तक पकाल्शत कऽ सकि हुँ आ दजनो लाबन्ध, कथा, कलवता, नाटक आलद।

मुनाजी: नेपाि ी सालहत्य मध्य मैल्थि ी सालहत्यक केहेन जुड़ाव ि ैक? आ दुनू भाषा मध्य कोन सालहत्य बेशी समृद अलछ आ लकएक?

रामभरोस कापल्ड ''भमर: नेपाि ी आ मैल्थि ी अपन-

अपन बाटपर ि ि ैत अलछ। एक राज्योपोलषत रहि ै, दोसर सालहत्यकार पोलषत। पाि ीन सालहत्य मैल्थि ीक, ि ि नमे समृद नेपाि ी।

मुनाजी: मैल्थि ीक सीमामे फाट कएि (नेपाि आ भारत) सालहलत्यक गलतलवलधक तुि नात्मक पलदृश्यमे कतुका सालहत्यक केहेन दशा-लदशा देि ा पड़ैए?

रामभरोस कापल्ड ''भमर: भारतीय सालहत्यकार, ओतुका सालहलत्यक पत्लष ान, सरकारी वा गएर सरकारी एल्ह तरहक फाट-बि ि रा कऽ कऽ रि ि ने अलछ। एम्हरका ि ोक सालहत्य अकादमीक पत्लका, पुरस्कार, ि ि न, गोष ीमे सामेि नल्ह कएि जाइत ि ल्थ नेपाि मे तेहन कोनो बन्देज नै ि ैक। पजा पत्लष ानक कायक्रममे हमही लारन्तर बजबैत तीऐल्ह, ि ॉ. पफुल्ल कुमार लसंहक ''नेपाि क मैल्थि ी सालहत्यक इलतहास'' नेपाि क अधमसरकारी पकाशन संस्था साझा पकाशन ि पि क अलछ। हँ, ओम्हरका सालहत्यक ि ि न परम्परा लारन्तर ि ि ैत रहि - समृद अलछ। पाि ीनताक दृल्ष्ट एँ, ऐलतहालसक उपल्ब्लधक दृल्ष्ट एँ नेपाि ओम्हरसँ समृद अलछ। ''वि ्णरताकर'', लसद सालहत्य, मलि कालि , सभ मैल्थि ी सालहत्यक आधार ल्थकै- ज्ञकर सोत नेपाि अलछ।

मुनाजी: वतमानमे अपन गलतलवलध कोन लदशामे जारी अलछ? सालहलत्यक-सास्कृलतक कोनो अलाम योजना अलछ?

रामभरोस कापड़ि ‘‘भमर: एि न पजामे ि िगि ि ी। देि, साझा पकाशनमे अध्यक्ष भऽ कऽ तँ ओ मात नेपाि ीक पुस्तक ि पैत ि ि, हम मैिथि ीक शुरवात कएिहुँ। एक बािपोथी ‘‘बिलयाक गाि’’, दोसर ‘‘मैिथि ी साििहत्यक इििहास’’। पजामे पिहि बेर साधारि सदस्य भऽ आएि रही तँ पिहि बेर मैिथि ीक पििका बहार कएिहुँ ‘‘आंगन’’। जे एिह बेर अएिाक बाद हमरे सम्पादनमे िनरन्तर पकाििात अिछ। एि नो बेसीसँ बेसी मैिथि ी िदश ध्यान िदतो हमर िवभाग ‘‘संस्कृिि िवभाग’’ सम्पूि िदेशक हेतु देिैत अिछ। तथािप जट जिटन, सि िहेस, दीनाभदीक ि ोकगाथा, नृत्य संयोजन, संकि न, ऑिडयो िविडयोगाफीक सुरक्षित कऽ देने छीऐक। हम गन्थक रपमे बहार करबाक िवचारमे ि ी। मैिथि ीमे एम्हर नाटय क्षेतमे िकछु नव संस्था, किाकार सभ अपन पििभा देिि ा अिछ, हम हुनका सभके उिचत मंि भेट क ताहि िदश पयतरत ि ी।

मुनाजी: साििहत्य ि ि क एवं सम्पादकक नव तूरके की सनेस देबऽ ि ाहिब?

रामभरोस कापड़ि ‘‘भमर: जे छी ि ीिथ मोनसँ छी ि ीिथ। अपनेसँ अपन मूल्याकन निह करिथ। अपन अगज साििहत्यकारक सम्मान करिथ। सम्पादक महज ि ि सँ अथवा अपनाके स्थािपत देिएबा ि ि निह करिथ। एिहसँ अपन पूवूकि िवके धुिमि भऽ जएबाक ि र होइि।

मुनाजी: साििहत्य मध्य साििहत्यकारक राजनीितक उठापटकके अहा कोन पिरपेक्ष्यमे देि ि ी? की साििहत्यकारक ि ि ऐ पकारक िकयाकिाप उिचत अिछ?

रामभरोस कापड़ि ‘‘भमर: हमरा ि गैत अिछ शुरएक पशमे िकछु बात आिब गेि अिछ। साििहत्यकारके राजनीितसँ दूरे रहने नीक। मुदा कतेको अवस्थामे ई सम्भव निह बुझाइत ि ैे। पटना आ दरभंगाक साििहत्यक मंि पर राजनीितकमीक विर्स्व एकर पमाि अिछ।

मुनाजी: शुरहेसँ मैिथि ी भाषा िविड़ि जाििक धरोहि जका रहि अिछ। मुदा साििहत्य मध्य (रि नाकारक रपे) ओइ वगम के अविि कऽ (कििाया कऽ) राि ि गेि। की ऐसँ भाषाक हीनता आएि अिछ? वा ई भाषा मृत्यु शय्या धिर पहुँिि गेि अिछ। अहाक नजिरये की कहब ऐपर?

रामभरोस कापड़ि ‘‘भमर: ई पश हमरा जनैत मैिथि ी भाषा, साििहत्यक क्षेतमे सभसँ अहम अिछ।

मैिथि ी भाषाके संस्कृत जका ‘‘हम्मर भाषा’’ कििह िवगत ि ढ-दू सय वषर्सँ अपन पोथी-पतरामे जािि कऽ रि ि ाहार मुटी भिर वगम्मध्ये पििशत बजििाहारके एकरासँ दुरे रि बाक काज कएि ि ा। आब जि न ई ज पाि भऽ गेि ि ि िह तँ भाषाक िवस्तारीकरि मे ि गि ि ीथ। एि नो मैिथि ीक मंि पर नमूनाक हेतु िकछु गोटे अभरताह, मुदा तकर पुि कोन रपे? साििहत्यमे कतेक ि िम्ि गोिैसी कऽ कात करबाक, नीिा देिएबाक कोन पयत ििट अिछ? एिहमे कोन सन्देह जे जे वगम्मात मैिथि ीएटा बजैत अिछ, तकर भाषा ि ीि ा कऽ अहा महन्थ बनि छीऐ, आ अपने अंगेजी, िहन्दी, नेपाि ी बजैत समाजमे रोब दैत छीऐ। पििाम तँ साफ ि ैे,- एिह बेरका जनगि नामे नेपाि मे मैिथि ीक ठामपर मगही, बिज्जका छीि ओिि गेि ैए। िकछु ि ि तँ अबस्से बजििाहारक संख्या कम भेि हएतै। छीि ि ाहारक साफ तकम्ि ैे, ई भाषा हमर अिछए निह, ई तँ ... ।

हमरा सन ि ोक एिहमे ि गि ि ी, स्वयं हम एकर पििपादमे िकछु िििि घुमि हुँ। मुदा हमरा सभके अपवाद बुझैत अिछ। आ जे नाटक एि नो धिर कएि जा रहि ैक, ताहिसँ मोन हमरो सभक दग्ध अिछ औ मुनाजी! िकएने मैिथि ीक पुस्त

क लबकाइए, पत्ताका लबकाइए? जे ि ि क सएह पाठक! हमरा ि गैत अिछ- आब सम्हरबोक समय नल्ह अिछ! ई भाषा मृत्यु ध ल पहुँिच गे ि अिछ से हम नल्ह कहब, मुदा कए ि ाढीमे लभक्त आ त्ति न-
त्मान धल अवश्य भऽ गे ि अिछ। जकरा जोड़बाक ककरो ने र त्ति ि ैक आने प ि ि त्ता! त ि न?!

रामभरोस कापड़ि "भमर" पल्ह ि र ि ना पकाल्शत हेबा का ि क फोटो

दूरभाष : 0612-2230405
चेतना समिति, पटना
विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना – 800 001
यात्री-चेतना पुरस्कार : 2011
श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' क
यात्री-चेतना पुरस्कार
8 नवम्बर, 2011

द्यापति - स्मृति - पर्व समारोह 2011

६

मुनाजीसँ रमेश रंजनक अन्तवाता

रमेश रंजन

१. अहाक रनिात्मक पवृत्ता कोना जागि ? पहि बेर की लीिि, लक पिि ?

हम िि किसँ पहने रंगकमी ििहुँ । लनाप जनकपुरसँ संिम्नता िि । नाटक, ताहूमे अलानयमे रमि रहै ििहुँ । लनापक वातावरि साहलयक सेहो िि । ि. धीरेन्द्र, ि. लमि,महेन्द्र मलाया सन गुरक सालाध्य भेटि । लनापक तात्कालीन अध्यक योगेन्द्र साह नेपालीक अलभावकत्व । ओहि कालिणमे श्यामसुन्दर शला, धमेन्द्र झा, धीरेन्द्र पेमलस,सुनीि मलिक सन समकालीन मीत रिना करऽ लागि लिह । हुनका लिकलाक दवाबसँ हमहूँ लक लक लिलऽ लगहुँ । हमर पहि रिना िि, कलता जकर लषक लि कलट, आ हमर पहि कलते पकालतो भेि िि जकर लषक ि साकार । अइ कलताक नेपाली अनुवाद तात्कालीन नेपािि राजकीय पजा पलष ानक पलका समकालीन सलयमे पकालत भेि िि ।

२. शुरआतेसँ कथा िलन केहुँ ? आओर लक सभ लीिहुँ अलि ?

नइ, कथा तँ हम बहूत बादमे लिलऽ लगहुँ । सगर राला दीप जरए साहलक केलमे जागरि

िलब देने रहै । जवबस्त ि ि भऽ रहि रहै । मुदा मैत्थि िक केन्द्र जनकपुरमे आयोजन नइ भऽ सकि रहै । जनकपुरमे आयोजन िएबाक हेतु हमरा कथा िीिऽ पड़ि रहए । पन्द्रहम् समारोह पैटघाटमे हम कथा िीि कऽ सहभागी भेिहुँ आ सोिहम समारोह जनकपुरमे हमरा संयोजकत्वमे सम्पन्न भेि । आओर लवधामे लीिबाक बात ि तँ हम सभ ओलहठामक िक ीि जालहठाम संख्यात्मक रपे लीिलाहारक अभाव रहि । ते आवश्यकता अनुसार लीिबाक लववशता सेहो रहि । ओना कलवता, कथा, नाटक, उपन्यास, आिीना, वृतलीत, लकलत आ टेीलल सलयिक िीन सेहो कऽ रहि ीि ।

३. अहाक कथा कथानक लक रहैि, आ ओकर मूि ध्येय की रहैि ?

हमरा कथाक लवषयवस्तुक िि बआए नइ पड़ैए । अपन पलवेश आ आलह लभतरक दन्दके लीलहत करै ीि । ओकर सुि, दुःि, आनद, पीड़ा, संधषके भोक्ताक रपमे अनुभूलत करै ीि । एकटा ितना हमरा लादेताबात करैत अलि ओ ि मार्क्सवादी सन्दयमितना । हमरा बुझने हमर सालहत्यक ध्येय के आओर स्पष ीकरणक अवश्यकता नइ ि ।

४. अहा अपन कथा िीनक पारलभक द रसँ अिन धलक यातामे की पलवतन पबैत ीि ?

लिरिक स्तरपर िास नइ । परमभमे आवेश ि अलायलत आवेश, आब थोड़े लायन्तिमे अलि । कहन शैिी पलहनेसँ थोड़े पलपक्व बूझारहि अलि । अथात लवालम आ भाषाक स्तरपर थोड़े पुरभावशािी िीन कऽ रहि ीि, सन बुझाइए ।

५. नेपािी आ मैत्थिी कथा सालहत्य मध्य मैत्थिी कथा कतऽ अलि ? दुनूमे समानता आ लभानता की ि ।

जे भारतीय मैत्थिीमे लहन्दीक आगू मैत्थिक अवस्था ि । नेपािी राज्य संरलक्त भाषा ि । राज्य अपार संभावना बनिकै ओलह भाषामे ते संख्यात्मक आ गुणत्मक दुनू रपे पयाप्त िीन भऽ रहि ि । मैत्थिीमे सेहो समकािीन कथा सालहत्यक पलतलनलध कथा िीन होइ ि, मुदा संख्या अत्यन्त न्यून ि । समानता आ लभानताक बात जहा तक ि तँ देश लभतरक औपलनवेलशकताके भोगलरहि अलि लमत्थिक िक । ओ समानता िहैए, नागलक अलधकार िहैए, मुलक्तक िटपटी ि मैत्थिी सालहत्यमे, नेपािी शासक वगक भाषा ि । मुदा नेपािी कथामे नेपािक पलतलनलध कथाक अभाव ि, जातीय कथाक संकीमघेरासँ बाहर नइ लाकलि सकि अलि ।

६. अहा रंगकमसँ सेहो शुरएसँ जुड़ि रहिहुँ अलि । लक कोनो नाटको लीििहुँ अलि ? अहाक लिरिमे िीन आ रंगकममे शुभि आ सम्प्रेषनीय ककरा मानैत ीि ?

हँ, से तँ हम अपनो स्पष कऽ िकि ीि । नाटक लीििहुँ अलि । आधा दजनसँ बेसी मंिीय नाटक, ओतबे नुकड़ नाटक आ रेलियो नाटक सेहो िबे लीििहुँ अलि । हमर लिर लक ? सवमान्य लिर ि जे नाटक शुभि आ सम्प्रेषानीय होइ ि । शक्य आ दृश्य गुिक कारि ।

७.अहा अपन रंगकममध्य अपनाके कतऽ मानै ीि ? अलहमे लनापक योगदान कते मानै ीि ?

अपना लवषयमे मूल्याङकन करब कठीन होइ ि । नाटक अहूना समूह कायमि । ते समूहक सफिता लवफितामे व्यलक्तक सफिता लवफिता जुड़ि रहैत िक । जँ लनाप सफि ि तँ

हमहूँ सफि ि । हमरा रंगकमक पारम्भमे हमर गाम परवाहा आ हमर रंग याताके एतऽ धल पहुँिबऽमे सम्मूिमयोगदान लनापे के ि ।
८. नेपािी रंगकमसँ मैत्थिी रंगकमस्तरीयताक मादे कतेक िग आ दूर अछि ?
लश रंगमंिक पयोग आ पलसँ नेपािि पलतीत भऽ रहि अछि । नेपािसँ हमर अथमअछि कोनो िास भाषा नइ सम्मूिमनेपािि । जकरामे जलना व्यावसात्मक दृत्व कोिि, तकरामे रंगमंिीय जानक लस्तार ताही रपे भऽ रहि ि । समकािीन नेपािक रंगमंि मध्य मैत्थिी अत्यन्त सम्मालात अवस्थामे अछि । मुदा नेपािीक तुिनामे मैत्थिीक रंग समूह कम ि । नेपािीमे सेहो स्थायी स्पररपक समूह बहूत थोड़ ि । मुदा एम्यिर त्थएटर कएलाहारक संख्या बहूत ि । तिन लनाप मातक पलालत्सँ गवमकएि जा सकैए ।
९. लनापसँ एिन सलपहुँ अहाक अटूट जुड़ाब देिि जा रहि अछि, एिन धल अहा लनापके लक देखीयै आ लनाप अहाके की देिक ?
जरर ! लनाप हमरा सभकिु देिक । व्यलत्तगत पगला आ सावसालाक जीवनमे सम्मानक अन्तार कारि लनाप अछि । देशक नाटय सडीत केतक सवोिि संस्था नेपि सडीत तथा नाटय पजा पलाष ानक पाज पलषद सदस्य आ नाटय लभाग पमुिक लायूक्तीमे लनापक सेहो मुख्य भूलका ि । हम की देखीयै तकर मूल्याकन अन्य मीत िकला करत्थ । हँ, एतेक जरर कहव जे अपना जीवनक सवात्मक उजाशीि समय लनापके देखीयैक अछि ।
१०. अहा अपना अलाि लढी (बेटी लयंका ) के अलसँ जोड़बाक लक ध्येय अछि ? लक लनापक किाकार लनापसँ (यथा लकलम अलानय ) आगू जा सकि अछि ? ( अपनाके बाल्ड कऽ कहू )
ओकरो हमरे जका रंगकममकरबाक इचिा भेि, हम रोकलीयै नइ बडु पोत्साहत कएलीयै । समान्यतः ई कहि जाए जे हम रंगकमके नइ तँ अिित कायममानलीयै ने लाकृष ते नइ रोकलीयै । लनापक किाकार लनापसँ आगू ? ई कोना हतै ? लनापक कोनो किाकारक लनापसँ आगूक ध्येय नइ ि । किक सम्मूिमसाधना आ कमतमके लनापक हेतु समलस करऽ िहैए लनापक किाकार । लनापसँ आगू अपने लकलम लश संकेत केिहुँ अछि, तँ ई मान्यता हम स्पयं नइ रिि ि । नाटय अलानयसँ पैघ लकलम अलानय नइ भऽ सकैए । िि आ व्यावसात्मक सफिता आगू जएबाक मापदणि नइ ीयै । ओना लकलमसँ परहेज नइ ि लनापक किाकारके । ओहो अलानये ि । लनापक अलकाश किाकार लकलम केतमे सेहो स्थालत अछि । मुदा लनापक अलकाश किाकार लकलमसँ बेसी नाटकके पथलकता दैए ।
११.मैत्थिी रंगकममे तकलाकी सुिभताक कारि िूनिती आओर बल गेिए ? रंगकमक भलष्य लक ि ?
जतऽ िूनिती ि ओतै संभावना ि । तकलाकक सुिभता तँ ि, मुदा मैत्थिी रंगमञ्च ओलसँ पललीत भऽ रहि अछि लक नइ ? समान्यतः मैत्थिी रंगकममधकािीन अवस्थामे अछि । भलाक पूवधारक अभाव िके । लात्थािक मूि भूलमे रंग गललत्था शून्य ि । अपवासी रंगकमम कृलम स्पास आपूलममात ि । ते पाठ आ मंि दुनूक तकलाकी वैलाष्ठयक लारन्तार अन्तारघुिन

मैथिली रंगमञ्चकि भविष्य निर्धारित करतै ।
१२. नेपालमे मैथिली साहित्यक भविष्य केहन देखि रहल छियै, कते दिन टिकत पाओत ?
भविष्य बेजाए नइ छै । भावक चिनाक स्तर उठलैए । चितरो ओतबे बढ़लैए । मुदा समग्रतामे बहूत चीन्ताजनक अवस्था नइ छै । कते दिन टिकत पाओत ? एखन भविष्यवाणी नइ करी । ई मृत्यूक समय निर्धारित जका भऽ जाइ छै । भाषाके मृतमबनबै छै साहित्य कखनो ते ई मरब तँ स्वयंके मृत्यू छै एकर कल्पना नइ करी ।
१३. मैथिली साहित्यपर शुरुसँ जातिविशेषक बर्चस्व रहलै । आब झूणकि झूणि सत्कय विभिन्न समूदायक लोकक पवेशसँ एकर भविष्य केहन मानैरहल छी ?
ई यथाथ छै । मिथिलाक सामाजिक संरचना सामन्ती रहलै । कमकार्णीय लोकक बर्चस्व । संस्कृतक विरुद्ध आम लोकक भाषाके विचारजनमतिक अभिव्यक्ति देबाक लेल मैथिलीक जन्म भेल छै । मुदा संस्कृत पूनः अजगर जका गरिस लेलकै । आम लोक अहु भाषासँ दूर होइत गेल । आइटी मैथिली विभिन्न वगमसंगे छै । अधिकांश गाममे रहनिहार अन्य वगक संग अभिव्यक्तिक हेतु दोसर भाषा नइ छै । संस्कारमे मैथिली छै । पूजा, पाठ, अनुष्ठान, गाथा सभमे मैथिली छै । कथित देव भाषाक पभावसँ बँचल अछि ओ समूदाय । ते सूचित मैथिलि जँ मैथिलीके नेतृत्वमे आँगा अबैत अछि तँ अहुसँ आहादकारी आओर की हेतै ।
१४.लोक मिथिला जाति-पातिक फाट मध्य टीकल अछि ? लोक ओहो कोनो दन्द्वक शिकार अछि ?
नेपालमे अखन ई विषय पवेशे कएलकै अछि । समान्यतः ई वहशक विषय छै । वहश करब समस्याके निरुपन करब छियै । कानो गम्भीर दन्द्व नइ छै मिथिलामे ।
१५.अन्तमे अपन पक्षीलोकनि आ नवका रचनाकार , रंगकमी लोक कहऽ चाहब अहा ?
कोनो खास नइ । बहूत लोक कहु कहु चूकल छी, आब कहब आवश्यक नइ छै । अनेरो उपदेश नइ छाटल जाए ।

७

हम पुि त ि ी- बृषेश िन्द्र ि ाि जी सँ मुनाजी पुि त ि त्य ढेर रास गप

१.अपने अपन सािहत्यक याता मादे कही जे एकर शुरआत कतऽसँ आ कोना भेि ?

हम अपनाके सािहत्यकार नहि मानैत ि ी । कारि, हमरा जाने सािहत्यकारक औसत पंक्तमे ठाढ हुअएवास्ते भाषा आ सािहत्यक औपि ािरक नहि तँ कि ु अनौपचािरक अध्ययन अवश्य हएबाक ि ाही जे हमरामे नहि अि । हँ, हमरा अपन मातृभाषामे ि ि एमे मोन ि गैत अि । एकर कएटा कारि ि क –पथमतः, हमरा ि गैत अि जे हम मैि ि ीमे सहजतासँ अपन अिभ्यिक्त कऽ सकैत ि ी आ एिहि ि कोनो अनुवादक अभ्यास नहि करए पड़ैत अि । दोसर, हम जीवनभिर आत्मसम्मान, व्यिक्तक स्वतन्त्रता, सभक अपन ि ास पित ि ि सिहतक सम्मािनत िवविधता आ बहुि ादी समाजक िािमा हेतु ि ड़ैत अएि हुँ । मैि ि ीमे ि ि ि त काि हमरा ि गैि जेना हम ओही ि ड़ाईके आगा बढारहि ि ी । तेसर, इहो जे ि िक ि ि ि त अि ि िकके सुनाबए बुझाबएि ि आ भाषा वएह पयोग कएि जाइत ि क जे एिह कायर्मि ि सभसँ उपयुक्त होइक ।
ओना हम जिहआ आठ कक्षमे पढैत रही, मैि ि ीक कक्षामे दस ि ित ि िताक ठहका सुि ा कऽ आकिर्षत भेि हुँ । पं. सिच्चदानन्द झा मैि ि ी पढबैत ि न्ह । हुनक ि ाक ि ि शैि ी एतेक रोि ि आ हँसीठटाबि ि रहैत ि न्ह जे िवदाथीसभ सोझिहं आकिर्षत भऽ जाइक । दोसर कक्षाक िवदाथीसभ सेहो आिबकए बैसि रहैक हुनकर गप्प सुनएि ि । हमरो बडि नीक ि ागि । रोि ि, जानकारीमूि ि, मनोरंजक आ सहजे बुझएमे आबएबि ि िवषय के नहि ि ि नत ? हमहुँ मैि ि ि ि िवषय ि ऽ ि ि हुँ । ओ ि मि ि ि ि ि िहरक ि ि मिबरोबिर करैत ि न्ह । हमर अगज गिरश ि न्द्र ि ाि आ ि ाबेन्द्र ि ाि जी ि ि ि ि ि ि िहरक पेमी, तैँ हमरा ओतए ि ि ि ि ि ि िहर ि ायि ि त अबैक । बस पढए ि ागि हुँ । नेनाभुटका स्तम्भ हमरा बेस आकषर्ि युक्त कएि क आ इच्ि ा भेि जे हमहुँ ि ि ि तहुँ । मुदा साहस नहि हुअए । कहुना कऽ बतहु मामापर एक गोट कथा ि ि ि हुँ आ ि ाइत ि ाइत गुरजीके ( पं.

सच्चिदानन्द झा) देने अएलाह । ओ पढि लेलन्हि, नीक लागलन्हि आ बड खुशी भेलाह । मैथिलीक कक्षामे हमर खूब पशंसा कएलन्हि आ ओ अपनेसँ लेखनी लालहरमे पठा देलन्हि ।
एना, हमर पहिल रचना आईसँ ४३ वर्षपहिने पकाशित भेल छल । लिखनक शुरुआत एतहिसँ बुझू । तकरबाद हमर आत्मविशास बढि गेल । हमरासभक स्कूलमे (शी सरस्वती बहुउदेश्यीय माध्यमिक विद्यालय, जनकपुर) पत्येक शुक्रदिन १ घण्टा सांस्कृतिक कार्यक्रम होइक । ओहिमे जरुर भाग लैऐक हमसभ । कहियो कविता तँ कहियो पहसन लिखि कऽ । हम आ परमेशर कापड़ि जे एखन मैथिली विभागक पाध्यापक छथि जनकपुरमे, लिखनिक काज करैऐक । हम मिलि कऽ हास्य व्यङ्गक कविता पहसन तैयार करी । परमेशर बेसी रचनात्मक रहए ।

२. अहा एकटा राजनेता सेहो छी तँ कहू जे साहित्य आ राजनीति मध्य की समानता वा विषमता देखाइए ?
बहुत मुश्किल पश अछि । एहिमादे हम कहियो सोचिबे नहि कएलहुँ । हमरा लगैत अछि राजनीतिसँ साहित्य अलगो नहि भऽ सकैत अछि आ दुनू एकदम अलग सेहो अछि । वास्तवमे कही तँ ई सोचपर निर्भर करैत छैक । यदि साहित्य समाजक ऐना अछि तँ ई राजनीतिसँ कोना पृथक रहि सकत ? राजनीति समाजक एकटा अङ्ग छैक ने ! फेर अहा ऐनासँ जे देखैत छी सएह अभिव्यक्त करैत छी । कोनो राजनैतिक उदेश्यसँ पभावित वा पूर्वाग्रही नहि छी तँ तखन विशय ओ रचनासभ राजनीतिक उदेश्यसँ अलग भऽ जाइत छैक । ओना कही तँ हमरा जनिते समाजमे गुणात्मक परिवर्तनवास्ते यदि राजनीतिक उदेश्योसँ अभिपेरित भऽ रचना रचित होइत अछि तँ ओ स्वागतयोग्य अछि । आखिर साहित्यमे पगतिशीलता एकरे ने कहतैक ! बहुतो महानुभावसभ निरन्तर घोषित करैत रहैत छथि जे हुनक साहित्य राजनीतिसँ अलग छनि मुदा तरेतर वएह पूर्वाग्रही रहैत छथि, कोनो स्वार्थसँ पभावित रहैत छथि । एहन अवस्थामे साहित्यक स्वतन्त्रतापर बलात्कार होइत छैक । एहिसँ नीक जे ओ अपन राजनीतिक उदेश्यके घोषित करथि आ फेर रचथि । एहिसँ आम जनताके आ पाठकके मूल्याङ्कन करएमे आ रचनाक भीतरतक जाएमे सुगम हएतैक ।

३. राजनीतिक रुपे अपनाके कतेक सफल बुझैत छी वा राजनीतिमे अपनाके कतऽ पबैत छी ?

हम फेर कहब जे सफलताक सम्बन्धमे सेहो अपन अपन दृष्टिकोण होइत छैक । बहुतो राजनीतिमे सफलताके पद पाप्तिसँ जोड़ि कऽ देखैत छथि । ताहि हिसाबे हम एहि क्षेत्रमे अपनाके ओतेक सफल नहि बुझैत छी । हमरासभ जहिआ राजनीतिमे अएलहुँ तहिआ पदक बारेमे कोनो सोच नहि रहैत छलैक । हमसभ राजाशाहीक अन्त्य आ लोकतन्त्रकक स्थापनाक लेल राजनीतिमे कूदल रही । हमसभ राजनीति शब्दो नहि बुझैऐक । संघर्ष, बलिदान आ त्यागक मात्र गप्प सप्प होइक । एहि क्षेत्रमे पवेशक अर्थ रहैक कखन मारल जाएब वा कखन पकड़ाकए जेलमे जाएब से अनिश्चित मुदा पूर्ण सम्भावनायुक्त । पूर्णरुपसँ अनुशासित रहए पड़ैक । हमर शिक्षा सेहो नेपालमे भेल । स्नातक आ स्नातकोत्तर हम जेलसँ कएलहुँ तँ भारतमेक लोकतन्त्रक निर्वासी

जोड़तोड़सँ सेहो पलयि नह भेि । लकि लतसभ एह मालािमे अनुभवी िािह तँ जोड़तोड़मे हम सभ लदन पाि रहिहुँ । बेसी पलवत्तनकामी आ मुहँफट भेिाक कारि सेहो बहुतो सहए पड़ि । मुदा, हम सन्तुष िी । िाकितन्ताि ि ड़ि आ एिन नेपािमे िाकितन्त िैक । जानेन्दक समयमे िाकितन्तपर गहि िाल गेि िैक । हम पलगमनक लरद सेहो वएह िगनसँ ड़िहुँ । हमरासभक कतेक लत काठमाण्िूक रतपाकमे लदन देिारे हमरासभके िाल कऽ जानेन्दक (ततकािन राजा) लकतामे िति गेिाह मुदा हम कहओ सम्झ ता नह करएबािमे समूहमे रहिहुँ । तँ राजनीलामे हमरा कहओ हीन भावना वा पशाताप नह भेि । हम जे कऽ रहि िी ताहमे हमरा नीक िगैत अि । तँ करैत िी । एह दृल कोिि हम राजनीलामे पूिमसफि िी ।

४. पशः िाकितन्तक हेतु संघषमे कतेक लदन जेि रहिहुँ । कतेक यातना भोगए पड़ि ?

हम िाकितन्तक ििाईमे १७ बेर लरपमुतार भेि िी । बहुतबेर लदन वा महीनामे जेिमे रहिहुँ । ५ बेर नाम अवल तक लकि वषकि । िगभग ८ वषमजेिजीवन लताबए पड़ि अि । १९७३-१९९० धल बेसी काि जेिमे बीतिि । फेर जानेन्दक समयमे ।

........ जेि जेिसन होइत िैक । हरीसमे ठोल दैक । ित सुतए पड़ि । करोट नह फेर सकैत िी । लकि बजिऐक ल सटकासँ माल-माल सोझ कऽ दैक । पेशाप िगि तँ िटामे कर । उल्स आ कीराक पकोप अिगे । भेट नह करए देत पलवार वा लतजनसँ । वषातमे ुअएबि घरमे कोि दैक । कतेक कहू । हमरा तँ जेिसँ दू बेर हत्या करक योजना बनि । १९७५मे हमरा, लमिन्द लल, महेन्द लश आ रामपसाद लके काठमाण्िूक केलय कारागारसँ मारकि लाकाि गेि मुदा पता नह फेर की भेिैक घुमाकए नुजेिमे पहुँि देि गेि । साझमे गोकिम ठगी सत ४ गोटेक नुिक कातमे हत्या कऽ देिकैक । दोसर बेर हमरा, रामिन्द लवारी, स्मृलनारायि आ युवराज िातीके जिशर जेिसँ लन्धुि िऽ जा कऽ मुदा हत्याकि पुिसके अनुकूिता नह भेिैक । हत्यासँ पहने भारतीय दैलक आजमे समािर ि गेिैक आ फेर आन्दोिन िगि सफि सेहोभऽ गेिैक । लन्धुिसँ हमरासभके लहा कएि गेि । ........ बहुतोके अहूसँ लकट-लकट यातना भोगए पड़ि िह ।

५. साहित्य िि न आ राजनीति, पहिल शुरआत अहाके कै सँ भेि आ दोसर दिस कोना उन्मुि भेि हुँ ?

ओना साि क गि ना करी ता िि नक शुरआत पहिने भेि । मुदा राजनीतिमे संि ग्नता अपनेआप होइत गेि क । वस्तुतः हाइस्कूि सँ हम राजनीतिमे िाि गेि हुँ मुदा पत्यक आ पूि मसंि ग्नता ३९ वषमपहिने भेि । हम काठमाण्ि क अमृत साइन्स कि जमे ि त यूनियनक ि ाव ि ड़ि रही । हम तहिआ नेपाि ि कागेसक नेता बोधपसाद उपाध्याय, सरोजपसाद कोइराि आ महन्थ ठाकुरक निदेशनमे काज करी । बादमे वीपी कोईराि, कृष पसाद भटराई, गिरिजापसाद कोईराि, महेन्द्रनारायि निधि, महेशर पसाद सिंह आदिक पत्यक सम्पकमआ संगे काज कएि हुँ ।

िि न निरन्तर ि ित रहि । हमर बहुतो रि ना संगहित नहि अि । वास्तवमे कही तँ हम एहिदिस ओतेक गम्भीर नहि रही । ि ि सुना दिऐक, हँसि ि मुदा पयोगक बाद ओकर संरक्ि नहि होइक । ई हमर जीवनक बहुत बड़का कमजोरी रहि । बहुत संगी एि न स्मरि करबैत ि थि – स्कूलिया जीवनक रि नासभ, जेि क गीत, पहसन, व्यङ आदि ।

हम वास्तवमे एकटा ि छि दोसरदिस उन्मुि नहि भेि । हमरा कनेको समय भेटैत अि वा असगर रहैत ि तँ ि ि ए ि गैत ि । बडि आनन्द अबैत अि । हम पूि तः अपन आनन्दि ि ि ि त ि । हमर रि नासभक कहिओ कोनो उलि ख्य समीक्ा नहि भेि । हम एहिि कहिओ पयतशीि सेहो नहि रहि हुँ । हमरा बस आनन्द अबैत अि । मुदा एकटा गप्प कहब, मैथिि मे साहित्यकारि कि एको अहं के रोगसँ गसित ि थि । एकरा एकटा समूहक जातिक धरोहर बुझैत ि थिन । अपनेसभमे समीक्ा करब, अपनेसभक ि मकरब, अपनेसभ पुरस्कार ि ऽ ि ब – एकटा पवृत्ति ि क । हम अपन आदतिसँ मजबूर ि नितगि कोतिखत भऽ जएताह । तैया, हम एि नतक नहि बुझए सकलिऐक जे एहिसँ िभमे के रहैत ि थि ? साहित्यके तँ पूरा हानि होइत ि क ने ! ई मानसिकता जे हटि जएतैक तँ मैथिि क विकास अत्यन्त दुरत गतिसँ होइतैक । नव पीढीमे एहि मादे किि पलवत्तन देि एमे आएि अि । ..... कतेक बेर तँ इहो देि एमे अबैत अि जे नव साहित्यकार किि दिनतक एहन मानसिकतासँ मुक्त रहैत ि थि मुदा जेनाजेना स्थापित होइत जाइत ि थि वएह

भायरससँ संकलमात भऽ जाइत ितथ ।

६. अहाुँक पाटीक मुख्य ध्येय की अिछ ? ई पाटी जनलहतमे कतेक लाकटतम देि ाइए ?

एि न हम तराई मधेश िि कतालतक पाटीमे िी । हम एकर पथम ९ संस्थापक सदस्यमेसँ एक िी । हमर राजनीतता नेपािी कागेससँ पारम्भ भेि । िि कतन्तािि ििि त अएिहुँ । तलघमसंघषक बाद िि कतन्तक स्थापना सेहो भेि क आ अभ्यास सेहो । मुदा हमसभ महशूस कएिछऐक जे िि कतन्त यत्व समावेशी नलह अिछ , तलतधताक सम्मानमे तलशास नलह करैत अिछ तँ ओहन िि कतन्त तल ि िि कक िि कतन्त भऽ जाइत िि क । एतहसँ तलिड़ि, तलभेदमे पड़ि ि कि आ समुदायक कल्याि सम्भव नलह ि क । नेपािमे मधेशीक पता राज्य पायोलमत तलभेद होइत आएि ि क । तराई मधेश िि कतालतक पाटी एकर समाधान िहैत अिछ । संघीयताक अभ्यास सँ सभ पकारक तलभेदक अन्त्य िहैत अिछ । हमर पाटी संघीयतामे अपन केतमे स्वशासन आ फेर केन्द्रमे सहशासनिि पतावद अिछ । हमरा िि गैत अिछ मधेशमे तलभेद अन्त्य करक यएह एक गोट उपयुक्त उपाय ि क ।

७. की अपन तलिरिक तलस्तार वास्ते सालहत्यक उपयोग करैत िी ?

से हमरा नलह बुझि अिछ भऽ सकैि जे हमर िि िनमे एकर पभाव होइक मुदा हमर ध्येय से नलह रहैत अिछ । हमरा जे िि गैत अिछ हम तीिए िहैत िी । हम पलहनलहं कहिहुँ जे हम एकदम अपना सुिि ि तीि त िी आ हमरा अपना जे महशूस भेि रहैत अिछ तीिएमे आनन्द अबैत अिछ । हमर कथा संगह मालोमे बेसी कथा राजनीतताक आसपड़ोसक ि क । एकर कारि कएटा – १. हम राजनैतताक व्यलक्तसभक समुदायसभक पीड़ा उगिए िहिहुँ, २. हमरा अही केतक बेसी अनुभव अिछ जे हम व्यक्त करए िहिहुँ ३. राजनीतता सेहो समाजेक अङ ि क एकरा अिि त तलआ मानी । ...... हमर तल ि कलतासभ गुिात्मक पलवत्तनवास्ते, समाजके सि ि त करकिि राजनीतताक उदेश्यसँ पेलत सेहो अिछ । ई कोनो अपराध नलह त्यकैक ।
मैतथििीमे सभ तल ि रहक सेहो िहिना रहैत अिछ । तँ कलहओ मैतथििीक तीस्को तैयार करैत िी तँ कलहओ अन्य तल ि । कलहओ बािगीत आतद आतद । ई हमर अपन शि अिछ । हमरा नीक िि गैत अिछ ।

८. नेपािमे मैतथििी सालहत्य आ अन्यान्य रानेताबीि अपनाके कतऽ ठाढ पबैत िी ?

हम पलहनलहं कहिहुँ जे हम अपनाके सालहत्यकार नलह बुझैत िी । सालहत्यकार हुअएिि तल ि जानकारी आवशयक ि क । सालहत्यकिि पतावद रहब सेहो जररी मानैत िी हम । सालहत्य तलतकोपाजमक सहयोगी हएब आपलतजनक नलह मुदा सालहत्यकके वा अपनासभक सन्दभमे कहू तँ मैतथििपलताक अनुरागके अपन नफाक हेतु दोकानदारीमे पयोग करब हम नीक नलह मानैत िी । बहुतोके देिि त तीअता जे ओ एना करैत ितथ । सालहत्यमे मात्कयाक तामािि करएमे रिि रिि त ितथ । दोसर केओ उभता ने जाओ तालहसँ ििाएत ितथ । िि गैत ितह जे केओ दोसरो दोकान थातल िि त तँ हमर तलकी कता जाएत । ....... ठीक एलहना राजनीततामे

सेहो होइत िक तँ हम दुनू ठाम अपनाके एकल्ह ठाम पबैत िी । हमरा अपन स्थानसँ पूरा संतुल्व अिी । िन हम आत्मतुल्व िि करैत िी , कोनो दोसर आकाका नल्ह अिी तँ संतुष िी । राजनीला अपन लारिि करैत िी जाल्हसँ कल्हयो सम्झ ता नल्ह कएिहुँ , तँ संतुष िी ।

९. अपनेक एल्ह कथ्यसँ जे राजनीला आ सालहत्य दुनू एकटा समूह लवशेषमे बन्हि अिी , हमहुँ सहमत िी । अहा दुनूमे अपनाके कतेक नफा÷नोकसान होइत पबैत िी ?

व्यल्क्तगत नफा नोकसानक सवाि नल्ह िक । एल्हसँ समाज आ सालहत्य नोकसानमे अिी । कालात्मकालवता अथवा पगलतशीिता जे कल्हऔक, अपने मुहे लमया लमटूसँ सम्भव नल्ह हएत । एल्हि गुित्मक पलवतत्तनक लारन्तरता जररी िक । कालात्मकारी वा पगलतशीि वएह जे गुित्मक पलवतत्तनि पलतवद होल्य । राजनीला वा सालहत्यके समूह लवशेषमे बान्हएमे जे लजममेवार होल्य ओ समाज आ सालहत्यक लवकाशक बाटमे अवरोधक आ पलतगामी िल्य । नव पलतभासभके िकक कायमकरैत िल्य ।

१०. अहाक पाटी सतामे आल्ब जाएत तँ मैल्थिि सालहत्यके कतेक फायदा पहुँि सकत ?

तराई मधेश िकतालात्मक पाटी व्यल्क्त समुदायक पलवि, स्वालभमान आ आत्मसम्मानक पलतष ापन िहैत अिी । लवलवधताक सम्मान अथात् असि बहुिवादक समथकक अिी ई पाटी । कल्हओ मैल्थिि नेपािमे राजभाषाक रपमे सम्मालनत िि । काठमाण्ि उपत्यकाक राजामहाराजा मैल्थििमे सालहलत्यक रिना कऽ अपनाके धन्य बुझैत िहि । तेहन लस्थलत िि । जँ हमरासभक पाटी पभावकारी ढंगसँ सतामे आओत तँ लालत्व ते मैल्थिि भाषा आ सालहत्यके सम्मान भेटतैक । एिनो संलवधानसभामे बहुतो मैल्थििमे शपथ गहि कएिलन । अन्तरालष्ट्रय मैल्थिि सम्मेिनक आयोजनमे हमर पाटीक िकसभक पत्यक आ िि सहभालगता िि । ..... राज्यक यल्द सहयोग रहैक तँ भाषा आ सालहत्यक पभाव बढैत िक । िोट उदाहरि अिी – १९ वषमपल्हने जिन हम जनकपुर नगरपालिकाक पमुि पदपर लवजयी भेि रही तँ मैल्थििक सम्मान आ पलतष ा बढाबएिि बहुत लकिु कएि गेि रहैक । नगरपालिका अपन सभ पमुि अपीि मैल्थििमे सेहो िपय । लारहुत रलगं लवालि पलतयोलगताक आयोजन पारमभ भेि रहैक । पत्येक वषममैल्थििमे गीत रिना, गायन, संगीत आल्द लवधापर नगरपालिका पुरस्कार दैक । रलवम, सुनीि मल्लिक, अशोक दत आल्द एल्हसँ नीक पलवि पाप्त कएिलन । होरीसँ १५ ल्दन पल्हनेसँ आयोजन आ पस्तुलतक कम जारी रहैत िक । ... तँ असर तँ पलड़ते िक ने ।

११. एिन अपने बािकलवता÷गीतपर बेसी ध्यान देने िीऐक ?

हँ, एिन हमरा बािगीत आकल्षत कएने अिी । हमर लमत परमेशर हमरा एम्हर घुमाबक बरोबल्र पयत कएिहि अिी आ तकरे पभाव थीक । बािगीतक रिनामे वृल्द्ध हएबाक िहीी । नेनभुटकाक गीतसभके संगीतवद सेहो करबाक िहीी जाल्हसँ बच्िसभके ई नल्ह िगैक जे ओकर अपन मातृभाषामे एकर आभाव िक । ..... हम एल्ह ल्दशामे पयतशीि िी । हमरासभदारा सञ्िालित जानकी एफ.एम.क स्टूल्डयो नीक िक । लवाघ एकगोट

बा गीतक एल्बम ला काकि योजनापर काज भऽ रहि कि ।

१२. ए नितक अपनेक कएगोट पोथी पकाशित भेि अिछ ?

हर एकगोट िटल्हीन कल्वता संगह आन्दोिन, वीपी कोइराकि पल्लाद उपन्यासका मोल्दआइन जे महाभारतपर लात्याि र्जकि पल्वेशमे लीिि अछि तकर मैत्थाि रपान्तरि, मालो कथा संगह, संघीयताक सम्बन्धमे स्वीस लदान ि.लाकोि टपरल्बनक िसभक मैत्थि अनुवाद – एतेक मैत्थािमे । रेि यूलायनः एक पलय, संघीय स्वशासनल्तार नेपािमे । सभ लाकिए ि टा ।

धन्यवाद ! अपन बहुमूल्य समय दऽ उतारा देबएि ।

८

धीरेन्द्र पेमर्षिसँ मुनाजीक अन्तर्वाता.

बहुआयामी युवा श्री धीरेन्द्र पेमर्षिमजी सँ विहला कथाकार मुनाजीक भेल गपशपक पमुख अंश पस्तुत अछि।
मुनाजी: धीरेन्द्र जी नमस्कार। स्वागत अछि विदेहक आंगनमे। मैथिली साहित्यमे पवेश कोना केलहुँ। कोनो विशेष कारण वा लक्ष्य आओर।
धीरेन्द्र पेमर्षि: सर्वपथम धन्यवाद अछि मुनाजी जे हमरा विदेहक आङनमे आमन्त्रित कएलहुँ। ई पश हमरा नीक लागल जे मैथिली साहित्यमे पवेश कोना कएलहुँ? असलमे हमर साहित्यमे पवेश गीतसँ भेल छल। सेहो नेपाली भाषाक माध्यमे। ई लगभग वि.सं. २०४४ साल अथात् १९८७ ईस्वीक समय छल। छल ई जे हमरो नाम पत-पत्रिकामे छपए। ओना मात लिखि दीनाइके जँ साहित्य कहल जाए तँ हमर कलमसँ विनगीमे सभसँ पहिल कोनो रचना मैथिलीएमे बहराएल छल, जे एकटा फटीचर टाइप गीत रहए। छोटे वयससँ सरकारी नोकरीमे पवेश कS लेलक हम जखन बदली भS कS जनकपुर गेलहुँ तँ अपन गीत-सङ्गीतक पेमके मूतमरूप देबाक लेल कोनो जगहक खोज करबाक कममे मिथिला नाटयकला परिषद् पहुँचलहुँ। ओतहि ठाम जखन डा. धीरेन्द्र, महेन्द्र मलङ्गिया, डा. राजेन्द्र विमल, योगेन्द्र साह 'नेपाली' सन विभूति सभसँ भेट भेल तखन जा कS असलमे हमरा मैथिली भाषाक अवस्था आ महताक बोध भेल। तकरा बाद हमहूँ अपन लेखन पत्तीक लेल मैथिली साहित्यक अध्ययन विस मोड़ि देलहुँ। वि.सं. २०४६ सालमे विनाप दारा आयोजित मैथिली विकास

त्वसक कत्वगोषीक ि ि कत्वह-कूत्मकऽ एकटा कत्वता तीि ि हुँ। ओत्वमे ि. धीरेन्द्र दारा ि ि रोसनाइवि कि मिसँ जे सुधारात्मक पत्वतम-तीह सभ ि गाएि गेि ि ि, सएह हमरा ि ि मैत्मि ि वि मित्वन्यासक गुर मन्त्र बत्ा गेि आ हम मैत्मि िमे तीि ि त ि ति गेि हुँ।

मुनाजी: अहाक सभ तरहक रि िनामे तीकि नजत्वया जगत्मआर होइि। एकर की सोत वा ऐि ि रि िनात्मक ऊजा कतऽ सँ वा कोना पाप्त होइए?
धीरेन्द्र पेमत्वसएकर जवाबमे हम अपने गजि क एकटा शेर कहऽ िहब___
मनमे ने कत्ायो ि र अत्ि
ते गजि ि हमर अडोर अत्ि
देश, समाज आ अपना पत्ा इमान्दारी ि िकमे सहजत्वँ तीकि ता आत्ा दैत ि क। हम 'ि पी ि आ बोत्ा हुआ' मे कत्वयो त्वशास नत्व कएि हुँ। हमर रि िनात्मकताक सोत अपन समाजे अत्ि। ि ास कऽ समाजमे रहि ि दिवेषी पत्मपाटी हमरा बेसी झकझोड़ैत अत्ि आ उएह हमरा तीि त्वतो अत्ि। एि नो त्वशुद कमशीि तापर त्वशास कएत्ाहार जे त्वकि ि िक ि त्म त्ानका सभक त्ाष ा आ ि गनशीि ता हमरा सृजनात्मक ऊजा दैत अत्ि।
मुनाजी: की मैत्मि िक अत्वात्वक्त आनो भाषामे रि िना केि हुँ अत्ि? मैत्मि ि आ अन्यान्य (त्वशेष कऽ नेपाि ि) भाषा मध्य मैत्मि िक अत्वस्तत्व केहेन वा कोन ठाम नजत्व अबैए।
धीरेन्द्र पेमत्वसहँ, हम मैत्मि िक अत्वात्वक्त नेपाि ि भाषामे सेहो यथेष मातामे तीि ि त ि ि। नेपाि क स्नातक स्तरक अत्ावायमनेपाि िक पाठयपुस्तकमे हमर गजि सेहो पढाओि जाइत अत्ि। तीटफुट हम त्वन्दीमे सेहो तीि ि त ि ि। ि ास कऽ नेपाि ि सात्वत्यक सङ जि न हम मैत्मि िक तुि ना करैत ि ि तँ सोि, संवेदना आ शैि िगत र पमे हमरा मैत्मि ि कनेको झूस नत्व बुझाइत अत्ि। मुदा सङ्ख्यात्मकता आ व्यापकताक त्वसाबे मैत्मि ि सीत्ात अत्ि। नेपाि ि सात्वत्यमे मैत्मि िजका व्यापक गोि सीक वातावरि सेहो नत्व ि क, जात्वसँ ओकर त्वकास-गत्ा तीव्तर बुझाइत ि क। ओ सभ वतमानके उपि त्वमपूि मिबनएबामे अत्मक दततीत बुझाइत अत्ि मुदा हम सभ इत्वाहासक झुनझुना बजबैत मस्त रहबामे बेसी आनत्वदत होइत ि ि।

मुनाजी: अहा रि िनाक अि िबे सम्पादनमे सेहो सत्वकयता देि ि ि कि ि ि। अहाक नजत्वये सृजनकता आ सम्पादकक मध्य की फरक हेबाक ि िही।
धीरेन्द्र पेमत्वसहम पत्वि व, मैत्मि समाज, कामना त्वनेमात्मक (नेपाि ि) आत्व पतक सम्पादन सेहो कऽ ि कि ि ि। रि िनाकार आ सम्पादक दुनूमे फरक की होएबाक ि िही से हम नत्व कत्व सकैत ि ि। मुदा समान की होएबाक ि िही से हम अवश्य कहब। दुनूमे मातृगुि अत्ावायमर पे होएबाक ि िही। हँ, मुदा मुि रताक दृत्व एँ रि िनाकार देवकी रहए आ सम्पादक यशोदा तँ सृजनर पी सन्तान नीक जका फ दएतैक, से त्ात्वात।

मुनाजी: सम्पादनमे भाइ-भैयारीबि नजत्वया देि इत रहि अत्ि। जि न की सम्पादकके त्ारपेक आ दृत्व फरीि हेबाक ि िही, की कहब अहा?
धीरेन्द्र पेमत्वससम्पादनमे भाइ-भैयारीवि नजत्वयाक बात जे अहा उठ ि हुँ अत्ि से सही भऽ सकैत अत्ि। मुदा एकर सापेक्ता देि ब जर री अत्ि। मैत्मि ि पतकात्वता एहन नत्व अत्ि जे साधन-सोतसँ सम्पन भऽ कऽ ि ि त

होइक। िक अनेक तरहक भाज त्माड़ा कऽ मैत्थर्ािमे पतकात्लता करैत अिछ। एहनमे बाहरसँ स्ातन्त्त्र र पे यथेष  सहयोग नञ्ह भेटल पएबाक कारि सेहो सम्पादकके भाइ-भैयारीक सहयोग िबऽ पड़ैत होएतञा। मुदा सम्पादन जे त्क समीक्ा, समािोिना आत्द कायक्षक दात्त्वत्व सेहो त्नमाहैत ि ित अिछ, ते यथासम्भव एञ्हसँ एकरा दूर रािब उत्िीत। कििोट तँ तिन होइत अिछ जिन समािोिना भाइ-भैयारीवाि नजत्लयासँ कएि जाइत िैक।

मुनाजी: अहा त्वत्भान तरहक कायक्षक्रम (आकाशवािी वा दूरदशमन) माध्यमे पस्तुत्ल दैत रहिी, की ऐमे रोजगार ि। अपनाके ऐमे कतऽ पबै िी।
धीरेन्द्र पेमत्षस:नीकजका समत्लस भऽकऽ ि गािपर आजुक समयमे सभ क्ेत्रमे रोजगारी िैक। तिन आकाशवािी वा दूरदशमन तँ आओर बहुतो िकक स्ाप-संसार सेहो त्नीयैक आ आजुक समयक सवात्िक सशक्त हत्थयारो। एञ्हमे रोजगारी नञ्ह होएबाक बाते नञ्ह अबैत अिछ। हम पूिमर पे एञ्हसभ क्ेत्रमे कञ्हयो आत्श्वात नञ्ह रहिहुँ। हम नेपािक सरकारी आकाशवािी रेत्ियो नेपािमे १३ वषमधत्र मैत्थर्ािी, त्हन्दी आ नेपािीक समािार वािनमे संत्िप्त रहिहुँ। तञ्हना पत्िि एक दशकसँ नेपािक सभसँ पैघ रेत्ियो नेटवकमरेत्ियो कात्तापुरसँ जुड़ि िी आ हेत्ि त्मत्थर्ा सत्हत त्किु कायक्षक्रमक सञ्ािन करैत आएि िी। तञ्हना समय-समयपर टेत्ित्भजनक त्वत्भान कायक्षक्रम आ त्ाात्लयि सेहो करैत आएि िी। हमर रेत्ियो नेपािसँ जुड़ाव तँ एकटा सरकारी नोकरीक रपमे िि। मुदा एञ्ह सभ काजमे हमर अभीष  मैत्थर्ािी भाषा-संस्कृत्तक सम्मान आ सम्बदमन रहैत अिछ। एकरे ध्यानमे रात्ि १० वषमपञ्हने हम सभ रेत्ियो कात्तापुरमे हेत्ि त्मत्थर्ािक शुरआत कएने रही। एञ्हमे हमर आवदता िगभग स्ायंसेवकीय ि। मुदा हम िगि रहिहुँ। तकर पत्ताि ई िैक जे हमर रोजगारीमे आंत्शक सहायक तँ ओ भेि अिछ, आइ नेपािमे कमसँ कम पाि सय गोटे ित्िि मैत्थर्ािएमे बात्नकऽ रोजीरोटी कमा रहि त्थ। ते एञ्ह मादे हम एतबए कहब जे पूिमिगनशीिताक सङ जँ हमसभ बािुओ पेरैत रहब तँ एक ने एक त्दन ओञ्हमेसँ तेि बहरएबे करतैक।

मुनाजी:अहा त्वत्भान पकारक त्क्रयाकिाप वा गत्तत्वत्िमे िगि रहैत िी। अपनाके समेत्ट रिबामे त्किु बाधक तँ नै होइि?
धीरेन्द्र पेमत्षस:कञ्हयो काि अवस्था एहन अवश्य भऽ जाइत अिछ जे पीठके झँपैत िी तँ माथा उघार आ माथा झँपैत िी तँ पीठ उघार। मुदा समयक सीत्मत िित्तक व्यवस्थापन करैत माथ आ पीठ दुनू झात्ि िबामे जे आनन्द अबैत िैक से वि्मनातीत होइत अिछ। ते बेसी त्ोस त्नीञ्हअएनाइके सेहो हम अपन सफिताक दोतक मानैत िी। हँ, एञ्हत्ोस साकाक जर र रहैत िी जे बेसीत्ोस त्नीञ्हआकऽ कहीँ हमर अत्भायान तँ िििर नञ्ह भऽ रहि अिछ! हम ओ सभ काज करैत रहैत िी जाञ्हसँ बुझाइत अिछ जे ई काज कएिासँ हमर मैत्थर्ािी एको िग आगा ससरत। जञ्हया हमरा ई बुझबामे आएत जे ई काज कएने हमर मैत्थर्ािीके क्त्त भऽ रहि िैक तँ ओ काज हम ठामत्ह रोत्क देबैक। हमरा एिन धत्र त्किु त्वशुद पूवागही वा अपरोजक-अपाटक सभके ित्ञ्ह केओ एहन सङेतो नञ्ह देने अिछ, ते अपनाके िहुँत्ोस सत्क्रय रिने िी।

मुनाजी:रपा भजी, धीरेन्द्र भैयाक कायक्षक्रम सभमे सेहो अदात्भानी बत्त देिार भेिीह अिछ। एकर सभक

अलावाक्त अहासँ स्वतंत कोन-कोन गतातवलामे सक्रय रहैत िथ।
धीरेन्द्र पेमवार्षस्वतन्त्र र पे सभसँ पमुि तँ र पा एक कुशि गृहणी िथ। कलता-कथा तीि त िथ। कम तीि त िथ, मुदा हुनकामे समाज आ संवेदनाके धरबाक जे किि आ सामथ्यर्मिल से लविक। गीत गबैत िथ, सेहो हुनक स्वतन्त्र केत िल। नेपाि क वतमान राष्ट्रगानक एक गायका र पा सेहो िथ। मैथि मलिि समाजक सतीव आ लवान मलिि समाजक सलिहकार भS कS ओ अनेक काज कS रहि िथ। नारी जागृत सम्बन्धी कतेको काजमे ओ नेतृत्वदायी भूलका लावाह कS रहि िथ।

मुनाजी: लाथि (लबहार) आ नेपािमे कोनो मैथिी गतातवलाक राला अगड़ा जातक हाथमे रहि अि। मुदा नवम सदीमे लपिड़ि जातक धरोवक सक्रय पवेश भेि अि। एकरा भलष्यमे कोन नजलये देिि ि।
धीरेन्द्र पेमवार्षअहा लबहारक नजलयासँ देि त ई बात कहने होएब। मुदा नेपाि क अवस्था लकि लान अि। नेपाि क मैथिी गतातवलाक जँ बात करब तँ एलठाम अगड़ी-पिड़ीवि बात हमरा बेतुका बुझाइत अि। नेपािमे तँ बहुत पलहनलसँ मैथिी गतातवलाक राला अहाक आशय रहि तथाकलथत पिड़ी जातक ि. रामावतार यादव, ि. योगेन्द्रपसाद यादव, ि. रामदयाि राकेश, ि. गङापसाद अकेि, रामभरोस कापलड़ 'भमर', योगेन्द्र साह 'नेपािी', परमेशर कापलड़, रामाशीष ठाकुर, मदन ठाकुर, रामनारायि ठाकुर, महेन्द्र मणि 'वनवारी' सँ िSकS नवतुलयोमे अमरेन्द्र यादव, अलतेश साह, लायानन्द मणि, शीति महतो सदृश िकक हाथमे िल। जँ संस्थागत गतातवलाक बात करब तँ मात सप्तरी लािमेटा पिससँ अलाक मैथिीसँ सम्बलधत सङ-संस्था भेटत, जकर पदालकारी सभ कलथत पिड़ा वगक िथ। पायः इएह कारि िक जे नेपाि क मैथिी गतातवला जतबए िक, जलड़ धएने िक। पायोलगत नल बुझाएत एलठामक मैथिी गतातवला। अलकाश भारतीय मैथिी अलायानी सभ जका नल जे कहब मैथिीक कायकता आ लहन्दीक कनेक अक्त भेल जाए तँ ओहीपर तर-उपर होइत रहलाहार वा घरमे लहन्दीक पयोगके पलाष ा बुझलाहार।
रहि बात एलह सदीमे जँ लबहारो लदस िहि आ कायस्थेतर जाता जँ मैथिी गतातवलामे आगा आलब रहि िथ तँ ई लाथि-मैथिीक िि सभाग्यक बात तीयैक। कारि यथाथमे जँ देिबैक तँ कलथत अगड़ीसभ तँ मैथिीके रङटीप मात करैत आएि िथ, अपन दैनलदनीमे मैथिीके यत-तत-सवत्र पयोग करैत यथाथमे एकरा जीवन देलाहार तँ कलथत पिड़े सभ िथ। ओ सभ जँ पूिमसिषि भS कS िल जाथ तिन तँ मैथिीक िि ककरो नोर बहबैत रहबाक कोनो पयोजने नल रलह जएतैक।

मुनाजी: अहा दारा पस्तुत कायक्रम सभ सतही वा व्यावसालयक पूलमात्रके इंलगत करैए, की कहब अहा?
धीरेन्द्र पेमवार्षअपन गायकी वा सङीत, अलानय वा कायक्रम सभके हम सालहत्य वा रिना मानैत िी आ ताही भावसँ ओकरा हम कायरूप सेहो दैत तीयैक। एहनमे हम अहाक पशसँ कने असमञसमे पलड़ गेि ि। दोसर नम्बर पशमे अहा ई कहैत िी जे 'अहाक सब तरहक रिनामे तीकि नजलया जगलयार होइत अि'। फेर लकि आगा िीकS अहा कहैत िी जे 'अहाक कायक्रम सतही होइत अि'। िि जँ सतहीयो होइत अि तैयो हम एलह बातसँ पसन िी जे अहा सन गम्भीर व्यलक्त एक सतही कायक्रम िबैत मात व्यावसालयक पूलाम करS वािके एहन गूढ पश पुिबाक योग्य व्यलक्त मानिहुँ। हमरा िि इएह सभसँ पैघ उपलिध्य अि।

मुनाजी: अपन अग्िा योजना की अछि? कोनो विशेष क्रियाकिापक योजना हुअए तँ उल्िेख करी।
धीरेन्द्र पेमर्षिः साहित्यकट भविष्यक मूिितः तीनटा पमुख योजना अछि। पहिि पछिव पत्रिकाक पुनपकाशन। दोसर नेपािमे महाकवि विद्यापतिके राष्ट्रिय विभूति घोषित करएबाक ििे अभियानक सञ्चािन आ तेसर अपन मैथििी गजिसङ्ग्रहक पकाशन।

मुनाजी:मैथििी रूपाकिापसँ जुड़ि युवा/ युवतीक ििे की सन्देश देबऽ चाहब।
धीरेन्द्र पेमर्षिःजे युवा मैथििी क्रियाकिापसँ जूड़ि गेि छथि हुनका किछु कहबाक पयोजने नहि अछि। किएक तँ वतमानमे बाकी सभ दिस अवसरक झमाझम वषा भऽ रहि समयमे सेहो जँ केओ स्वेच्छासँ मैथििी सन सूखाग्रस्त क्षेत्र चुनैत छथि तँ अनेरे नहि किछु सोचिए कऽ, किछु बूझिए कऽ। ओहुना एखुनुक युवा बहुत बुझनुक अछि। हँ, किनको-किनकोमे ई देखबामे अबैत अछि जे सोझे सन उपिब्धि टिपट हाथ नहि भेटिपर कने निराश भऽ जाइत छथि। बस अहीठाम कने हिम्मत बन्हने रहबाक जररति छैक। हम सभ मैथििीमे जँ िागि छी तँ अपन मातृक पबि पेमसँ वशीभूत भऽ कऽ। एहि पेममे सतिपहुँ आन कोनो पेमसँ बेसी डूबि जाइ। मुदा पेम शब्द सुनबामे जतेक सहज छैक, निमाहऽ मे ओतेक किनहु नहि छैक। ते ने एकटा हिन्दी गीतमे कहि गेि छैक¬
ये इश्क नही आसा इतना तो समझ िीजै,

एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

बस एतबा बात जँ बूझि गेिहुँ आ एतबा धीरज सेहो धारि ििहुँ तँ हम सभ तरहत्थीमे सेहो दूभि जनमा सकैत छी।

मुनाजी:धन्यवाद धीरेन्द्रजी अपन साक्षात्कार देबाक ििे।
धीरेन्द्र पेमर्षिःएहि अवसरक ििे मुनाजी अहाक सङ-सङ विदेह परिवारक सेहो हम आभारी छी।

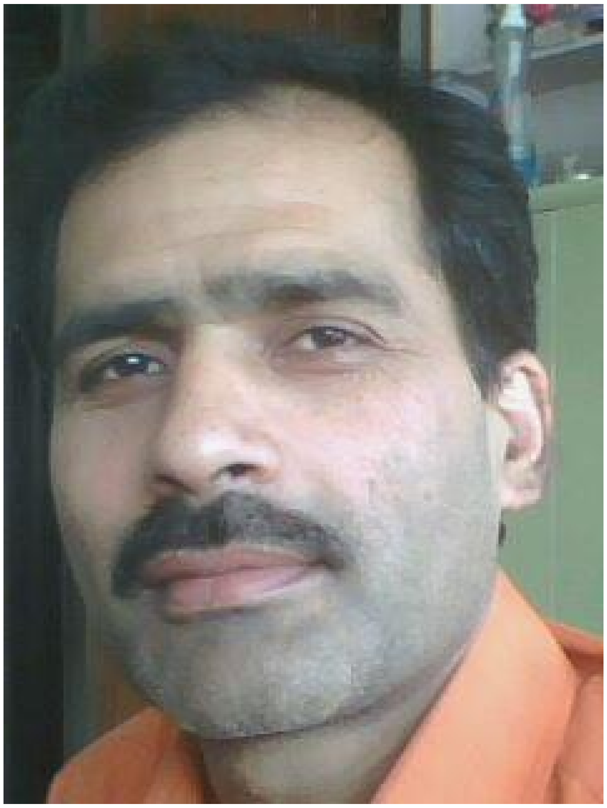

९.

हम पुि त ि- मुनाजीक अनि कान्त सँ गप्प-सप्प

मुनाजी: अहाक सृजनरथ कथायातासँ पारम्भ भेि ि, पारम्भसँ एि न धिर अपन कथायाताके कोन दृि ये देि ि। ऐ बीि कथा आ कथानकमे कोन बदि ाव देि बामे आएि ?

अनि कान्त: अपन कथायाताक बारे मे हम पि हनि ह कहिहुँ जे स्वयं ि कि ु नै कहब। एकर सही मूल्याकन दोसर ि िक, पाठक वा आि ोि कि क ऽ सकै ि ि थ। ओना मैि थि ी मे आि ोि कि तँ ि ि थये नै तहन सहृदय पाठक आ दोसर ि िक एकर ि ायिक भऽ सकै ि ि थ। ओना मैि थि ी कथामे बदि ाविक गप्प कहबै तँ समएक जे दवाब ि ै से तँ अबै ि ै मुदा जतेक एबाक ि ाही से हमरा मैि थि ी साि हत्यमे नै देि बा मे अबैए।

मुनाजी: अहा अपनाके साम्यवादी रपे स्थाि पत करबाक पयास केि ौ। सातम-आठम दशकमे उठि साम्यवादी ि िरधाराक हो-हि ा िक बाद एहेन कोनो ि िरधारा मैि थि ी मध्य बि ा सकि ?

अनि कान्त: नै हमरा ई गि त ि ैए जे सातम आि क आठम दशकमे हो हि ा भेि । बाबा नागाजुि न जि न रि नात्मक शुरआत केि िा आजादीक पूवे, ओइ समयक जे हुनकर ि ि देि बि ा ओ जे राजघरानाक ि िरद पश्न उठेि िा, से की ि ि ? ओ ि कसान आन्दोि िन, कम्यूि िस्ट आन्दोि िनक समथि क ताि ह जमाना सं ि ि ाह। जि हया माक्सि वादी ि िर नै ि ै ति हया न्यायक पश्न नै ि ै की? हँ, सातम-आठम दशकमे नक्सि बाड़ी आन्दोि िनक बाद मैि थि ीमे अि ग पीढी आगू भऽ एि ै आ ति हया जे सामाि जक दवाब ि ै- ओइमे रामि ोि न ठाकुर, अि ि पुष्प, कुि ि, नरेन्द्र आि द हस्तक्षेप कयि ा। हँ ओ एहेन दवाब ि ै जाइमे जे ओइ धाराक समथि क नि हयो रहयि ा अनेक दृि संपन्न ि िक एि ह पीढ़ीक संग समानधमे टा नै, सहमना रप मे सेहो सोझा अयि ाह। आइ ओि ह धारा मे कुमार पवन, सारंग कुमार, ि वदानंद झा, कािमनी आि द सन अनेक युवा रि नाकार भेटताह।

मुनाजी: अहा मैि थि ी-ि हन्दी मध्य समान रपे सि कय ि ी, दुनू मध्य की समानता-ि ानता अनुभव करै ि ी?

अनि कान्त: एकटा हमर मातृभाषा ि ी, दोसर हमर रोजी-रोटीक भाषा। हमरा दुनू मे कोनो दैध नै बुझाइ अि ि।

मुनाजी: अहा पकाशकीय गि ि वि ध (पकाशन आ ि वतरि )मे सेहो सि कय ि ी। तँ कहू मैि थि ीमे शेष रि नाक की ि स्थि त अि ि, पाठकक भेि वृि द कते महत्व रि ै त अि ि?

अनि कान्त: पाठकक मैि थि ीमे अभाव भेि ैए। १९९९-२००० मे जतेक पि तका-ि कताब ि बका जाइत ि ै आब से ि स्थि त नै ि ै।

मुनाजी: अहा अपना जनतब कहू जे मैि थि ी पतकाि रता वा पकाशन कतऽ अि ि, ई आत्मि नभि िर भमे जा सकैए?

अनि कान्त: ि ाि ात रपसँ आत्मि नभि िर भऽ सकै ि ै, ओइ ि ि आवश्यक ि ै पैघ पकाशन संस्थाक, जतऽ पयाप्त पूजी संग व्यावसाि यक सूझ-बूझ सेहो होइ। हमरा सभके ओते संसाधन नै अि ि। हमरा सभके आत्मि नभि िर भ

नै भेि, मुदा घाटामे सेहो नै रहिी। ओइ रप मे हम बजारके गति नै कहै लीऐ। आब हम एक बेर कतसँ वजापन आला िि तँ हमरा िभ भऽ गेि, मुदा तकरा एक व्यवसायक स्थायी भाव तं नै कहबै ? हमसभ लकि िास नै केिहुं, एकदम िट पयास अछि हमरासभक...

मुनाजी: अहा अंतलाकासँ लकि रिनाकारके बेरा कऽ रित रहिहे, तकर की कारि, वचारधाराक अभाव की रिनाक स्तरक अभाव?
अनिकान्त: हमरा नै कोनो नाम मोन पड़ैत अछि, त्मनका हमसभ बेराकऽ रिने होइ। अंतलाका मे हमरासभ जते िकके िपने िि तकर नाम नुकायि नै ि। तकर अिबे के बारि ि त्य तकर नाम अही कहब सकैत िि...

मुनाजी: अपन समतुलया रिनाकारके कतऽ राि िहब, ओइ भीड़ मध्य अपनाके कतऽ पबै िि?
अनिकान्त: हम अपन समकक सभ रिनाकार के अपना सँ आगू मानै िि। ओइ भीड़ मे हम सब सं पािू िि।
मुनाजी: मैत्थिी साहित्य बभनटी (िहिवादक) त्वाकार रहि अछि। मुदा नव सदीमे सल्कय गएर िहि रिनाकारक पवेशके अहा कोन तरहे देि लीऐ?
अनिकान्त: िहितिर जे ि त्य, हुनका िग भोगि पीड़ा िला ते हुनके स्कार सभसँ वश्वसनीय हैत।
मुनाजी: अपन अमूल्य समए दऽ उतारा देबा िि बहुत-बहुत धन्यवाद।

अनिकान्त: अहूँ के धन्यवाद।

१०

कुमार शैन्दसँ पत्लालाल्म युवा त्वहला कथाकार एवं समाािकि मुनाजीक भेि गपशप

बहुआयामी क्यत्कत्तत्मक क्यत्कत्त एवं सभाग्म त्मत्माि िनिकि कायक्कम पभारी कुमार शैन्दसँ पत्लालाल्म युवा त्वहला कथाकार एवं समाािकि मुनाजीसँ भेि गपशपक अंश अहाक सोझा राि ि जा रहि अत्ति। ___

मुनाजी: पत्वि बेर मैत्मािीमे कोन त्वधासँ वा कोना पवेश भेि आ ओकर की कारि ि ि?

कुमार शैन्दः सन १९६४ ई. मे राजेन्द्द नगर पटनामे हमर जन्म भेि। हमर त्पता त्नावकान्त झा ओइ समए त्वन्दी दैत्नक आयावतमे समाािर सम्पादक रहत्म। घरमे कएकटा अिबार, मैत्माि पत्त्काक शुरहेसँ पढबा िि भेटि। ओइ समएमे पटनामे ठाम ठीम त्वदापत्त पवमसमारोह हुअए, मैत्मािीक रत्ति हमरा ओतएसँ जागि। तकर बाद जिन हम कॉिजमे पहुँििहुँ तँ हत्लमोहन झाक सात्हत्य पत्ढ हमरा आभास भेि जे मैत्मािी सात्हत्य बडि समृद अत्ति। तकर पत्लाम भेि जे हम इण्टरमीत्तएटमे अत्तवायमभाषा (१०० अंकक) त्वन्दीक बदिबा कऽ मैत्मािी रात्ति िि। तकर पिात्ता हम मैत्माियेमे ऑनसमआ एम.ए. केिहुँ। हम कॉिजमे रही तिने उत्सुकता रंगमंि त्वस भेि। हमरा मोन पड़ैि रवीन्दनाथ ठाकुर, त्मनका दारा पटनामे मैत्मािीक पत्वि रंगमंिकि गठन भेि, "रंगािीक" जे ओत्व समएमे एकटा नाटक मंिन केिकि जकर समीक्ता त्तत्ति हम आयावतमे देत्तिऐ। ओत्व समय गोकुिनाथ झा आ भीमनाथ झा कहिित्ता, समीक्ता हमर त्पोटम त्ति त, अहाक समीक्ता नै हएत। फेर गोकुि बाबू कहिित्ता, समीक्ता नीक अत्ति, त्ति त रहू। ओ हमर पत्वि समीक्ता ि ि, नै िपि मुदा तकर बाद समीक्ता त्ति त रहिौ आ िपैत रहिौ।

हमरा पता ि ि जे कशि त्कशोर दास पटनामे एहेन युवक सभके तात्क रहि त्लम त्मनका रंगमंिमे रत्ति होइन। कशिजी आइसँ पत्वने कि कितामे रंगमंिसँ जुत्ल सफि रहि ििह आ आब पटना आत्व गेि रहत्म। हम हुनकासँ भेट केिौ आ तकर पिात्ता सबहक त्विरे १८ फरबरी १९८२ ई. के एकटा मीत्लंग रािि गेिै जात्वमे हम, कशि त्कशोर दास, पमोद भाइजी, अरि कुमार झा आ गोकुिनाथ दास कुि पाि गोटे, ओइ मीत्लंगमे उपत्स्थत भेि रही। हमरा पस्तावे "अत्लपन" नामक संस्थापर सहमत्त बनि २८ फरबरी १९८२ के। मैत्मािीक पतीक "अत्लपन" क रपमे एकर पस्ताव रिौ। कशिजी एकर समथमन केिित्ता। तकर बाद त्विर भेिै नाटक मंिनक। बहुत रास मैत्मािी नाटकक त्कताब जमा भेि जैपर कशिदास सहमत नै भेि। हमरा कहिित्ता- पु.ि. देशपाण्डि त्तत्ति त मराठी नाटक- बेिरा भगवान त्तिसि आ पुरस्कृत एवं िोकत्पय अत्ति। अहा मैत्मािी जनैि ि ओकरा त्वन्दीसँ मैत्मािीमे अनुवाद कर । ईएह मैत्मािी अनुवाद ओही नामे "अत्लपन"मे पत्वि बेर मंत्ति त भेि।

तकर पिात्ता हमर भात्ताज अरि कुमार झा कहिित्ता जे अशोकनाथ "अशक" मैत्मािीमे नाटक त्ति िने ित्म। ओ ओत्व समएमे िित रहत्म आ हुनक त्तिि नाटक "त्वदोह" हमरा सभके पत्सन पड़ि, ई "अत्लपन"क दोसर पुष्प ि ि। हम सभ "अत्लपन"क अध्यक्क ि ि बहुत वत्सष गोटे िि ग गेिौ, त्कयो अध्यक्ता ि ि तैयार तँ नत्वये भेि जे कहिित्ता- अहा सभ बेकार त्त्कलसान होइ ि ि, मैत्मािी रंगमंि कत्वयो अत्स्तत्वमे नै आत्व पाओत। ओही कममे हम सभ जटाशंकर दासजी सँ भेट कएि, ओ एकमात क्यत्कत्त हमरा सभके सभ तरहे संग देिित्ता, अध्यक्ता केिि। शेष बुजुगमसभ बादमे अत्लपनक िोट-िोट पदात्धकारी धत्ल भेि, हम आब नाम नै िबऽ िहिब, हुनका सभके अपमान बुझेतत्ता। दू वषमक त्कयाकिापके सभ त्कयो सराहऽ िगिह आ शेष सभ गोटेके

मैथिली रंगमंचक भविष्य देखिए रहल छल। तेसर वर्षमे ओही संस्थाक अध्यक्ष भेलाह श्री मंत्रेश्वर झाजी आ क्रमे हमरा सभके व्यस्त देखि गेल।

मुनाजी: अहा प्रारम्भमे मैथिलीमे नाटकक योगदाने आगा एलौ मुदा फेर पत्रकारिता दिस उन्मुख भऽ गेलौ, नाटकसँ कोनो असोकर्जमतँ नै बुझना गेल?

कुमार शैलेन्द्र: पत्रकारितामे- अहाके कहलौ जे पिताजी पहिनेसँ ऐ काजमे लागल छलाह। तँ हमरो रुचि छल। उदयनिन्द्र झा ''विनोद'' आ विभूति आनन्द दुनू गोटे मातृ-पाला नामक पत्रिका बहार करैत छलाह। विनोदजी तँ जॉबमे छलाहे समयाभाव छलनि, विभूतिजीके सेहो लोकमिलि बाहरमे नोकरी भेटल गेल छलनि। तखन मातृपालाक ८० प्रतिशत काज -यथा मुरलीधर प्रेसमे जा टाइप सेटिंग कराबी, प्रूफरीडिंग कॉपी एडिट आदि-आदि काज करी-फाइनल टच विभूतिजी आबि कऽ दैत छलाह। हमर नाम नै रहैत छल, हँ अन्तिम दू अंकमे सहयोगी शैलेन्द्र कुमार झा जोड़ल गेल। तकर पछाति ओ बन भऽ गेल, जेना आन मैथिली पत्रिकाक दशा होइत छैक। पत्रकारिता तँ हमर पारिवारिक कारोबार वा रोजगार बनि गेल छल। हमर पिताजी सेवानिवृत भऽ गेल रहथि। हमरा आयावर्तमे प्रखण्ड संवाददाताक रूपमे नोकरी भेटल। हम सभ कोनो लिखीपोमा लेखी नाइ तँ दूर सुननेहो नै रही, विशेष कऽ पटनामे जे पत्रकारितामे कोनो लिखीपोमा लेखी होइत छैक। हँ, जँ हमरा पहिने बुझल रहैत जे नाटकक लेल एन.एस.डी. (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय) प्रशिक्षण दैत अछि तँ हम जरूर प्रयास करितौ, मुदा पटनामे ऐ तरहक कोनो माहौल नै छल। हमर पिताजी आयावर्तमे ज्वाइन करबासँ पहिने पुलिसमे पेशेवर रंगकर्मीक रूपे जुड़ल रहथि। १९५५ मे आकाशवाणी पटनासँ जुड़लाह आ तहियेसँ मैथिली नाटकमे अपन स्वर दैत रहलाह। ई क्रम १९८५ धरि छल। हमरा जनैत ओ पहिल व्यक्ति छथि जे अनवरत एतेक दिन धरि मैथिली नाटकसँ जुड़ल रहलाह। १९७०-७२ क बाद प्रेमलता मिश्र ''प्रेम'', बटुक भाइ सभ जुड़लाह, नीक योगदान देलनि, मुदा हमर पिता शिवकान्त झाजी, आनन्द मिश्र, मायानन्द मिश्रक समकक्ष रहलाह। नाटकमे हमरा रुचि ओतैसँ जागल। ओइ इलाकामे (हनुमाननगर, मधुबनी)मे हुनकर मंचीय काजके एकटा किंवदन्तीक रूपमे जानल जाइए।

मुनाजी: अहाक अन्तिम नाटक उगना हॉल्टक मंचन भंगिमा ग्रुप (दिल्ली) द्वारा २००९ मे भेल, जे पूर्णतः आजुक परिपेक्ष्यमे प्रासंगिक आ मनोरंजक छल। एहिसँ पूर्व अहाक कोन-कोन आ कोन तरहक नाटक सोझा आबि गेल अछि? लिखल आ मंचित दुनू दृष्टिए?

कुमार शैलेन्द्र: पहिल बेर हम मंचपर एलौ मराठीक अनूदित नाटक- बेलिरा भगवान छऽ कऽ। तकर बाद बहुत रास नीक नाटकक अनुवाद केलौ। हमर पहिल मैथिली नाटक अछि- मोर मन मोर मन नै प्रसारित आइ-ए। दोसर ३१-१२-१९९६ के उत्तरायणि हास्य व्यंग्यपरक नाटक अछि, एकर बाद लिखल कायन, अन्तिम पथक सामा (तिना सत्यतासँ प्रकाशित), ई मैथिलीक पहिल नाटक छल जकरा बिहारक सभसँ पैघ श्री कृष्ण मेमोरियल हॉलमे मंचित कएल गेल ०४.०८.२००१ के। गीतात्मक देसिल बयना २००७ मे, भंगिमा ग्रुप (दिल्ली)क आग्रहपर नैकाबनिजाराक गीतात्मक नाट्यरूपान्तर केलौ जाहिमे १०टा गीत छल, जकर मंचन २००७ ई. मे व्रजकिशोर वर्मा ''मणिपद'' जयन्तीपर भंगिमा ग्रुप द्वारा संजय छ धरीक निर्देशनमे मंचित कएल गेल। २००८ ई. मे भंगिमा ग्रुप द्वारा आजुक प्रसंगमे लिखल हास्य व्यंग्य नाटक ''उगना हॉल्ट''क मंचन भेल।

मुनाजी: अहाक नाट्य मंचन मूलतः गमैया नाटकसँ प्रारम्भ भेल छल, आजुक परिपेक्ष्यमे गमैया नाटक कतऽ

अछि। गमैया आ थियेटरमे मंचित नाटकक तुलनात्मक स्थिति की अछि?

कुमार शैलेन्द्र: गमैया नाटक जतऽसँ शुरू भेल छल आइयो ओतै अछि आ ऐसँ ऊपर उठबाक आशा सेहो नै देखा पड़ैत अछि। थियेटर नाटक आधुनिकताक साज-सज्जा ओ प्रकाश व्यवस्थासँ संतुलित रहैत अछि। मुदा गमैया नाटक जेना अछि ओहिसँ सुधार नै सकैत अछि जकर मूल कमी अछि बिजलीक बत्तिक अभाव। गाममे एखनो नाटक पेरोमेक्सक इजोतमे होइत अछि, जतऽ जेनेरेटरक व्यवस्था होइत छै, ओहो समुचित नै कहल जा सकैत, तेँ एक तँ ओत सीमित प्रयोग नै भऽ सकैत अछि। थियेटरमे आयोजित नाटक प्रारम्भसँ अंत धरि नाटकक कलाक दृश्य देखाइत। मुदा गमैया मंचपर एखनो दृश्य परिवर्तनक बीच कॉमिकक वा नाच देखि सकैत छी। गाममे ताधरि स्थिति खराब रहत जाधरि दृश्य परिवर्तन उठ आ परदासँ हेतै। गामक मेकपमे एखनो मुदा शंखक उपयोग होइत छै। गामक नाटक कहियो ऊपर नै उठि सकैत अछि। कहियो थियेटरक नाटकक बरोबरि नै भऽ सकैए, कोनो नै भऽ सकैए।

मुनाजी: हमरा जनतबे आइयो नाटकक लेल दर्शकक अभाव नै छै, हँ समयाभाव जरूर भऽ गेलैए, ताहि हेतु एकाकी सभके मंचित करब शुरू भेल अछि। अहाक नजरिये एकाकीक स्थिति केहेन अछि, एकर भविष्य केहेन बुझना जाइत अछि।

कुमार शैलेन्द्र: आधुनिकताक रंगमंचपर भलहिं एकाकीक प्रचलन बढ़लैए मुदा एकाकीक आधार वा सम्भावना नै छैक से मैथिलीये नै अन्यान्य भाषाक एकाकी संग सेहो छैक। अखन जे नाटक लिखल भऽ रहल अछि ओइमे साहित्यिक नाटक कम अछि। नाटक ऐ रूपक प्रारम्भ सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक सभसँ भेल। नाटक अपन परम्परामे आबि अगि अगि तत्कालक प्रयोगे सीमित जा रहल अछि। पाश्चात्य जे प्रदर्शन कलाक छै तकरासँ जोड़ि कऽ आधुनिकताक प्रदर्शन कलाक प्रस्तुति कएल जा रहल अछि। मुनाजी, एकाकीक अस्तित्व मैथिली सहित सभ भाषामे खतरा गेल अछि। भविष्य कोनो नीक नै बुझना जाइत।

मुनाजी: वर्तमानमे किछु बीचल कथाके एकाकी रूपे प्रस्तुत कएल जाए लागल अछि, की कथाक मूल एकाकीमे समाहित भऽ पबैए वा नै? आ कथाक एकाकी रूपान्तरण कतेक उचित वा अनुचित अछि?

कुमार शैलेन्द्र: कथाक नाट्य रूपान्तरणक प्रारम्भ केलनि हिन्दीमे देवेन्द्रराज अंकुर। कथा मंचनक सभ भाषामे अयोजन कएल जा रहल अछि। कथाके नाट्य रूप देलऐ तखने ओ सार्थक भऽ सकैत, मुदा से अछि कठिन। हम धूमकेतुक कथा "अगुरवान"क नाट्यरूपान्तरण कएने रही तँ ओइमे कथाक मूल स्वर पके यथावत रखने रही। ओना तँ ताहि हेतु कठिन परिश्रम करऽ पड़ल छल। आगू म. मनुज ओइ अगुरवानक रूपान्तरण काफी सीफ्ट भेल केलनि तँ ओकर मूल आत्मे मरि सन गेल। कोनो एक तँ ओइ नाटकमे बहुत रास दृश्य एहेन जोड़ल गेल छैक जे कथामे छहिये नै। कथा मंचन हेबाक छाही, ओकर परिवार प नै जेना हमर नैका बनिजारा छल। ओतेकटा पोथीके डेढ़ घंटाक कलेवरमे समेटब देनाइ बड़ कठिन छल। मुदा हम ओइमे सफल भेलौं। कथाक मंचन तँ सही छैक मुदा जखन नव आयाम जोड़ल जाइ छै तखन कथाक आत्मा आहत होइत छैक। देवेन्द्रराज अंकुर जेना कथाक नाट्यरूपान्तरणमे कथाक मूल रूपके प्रस्तुत कऽ पबै छथि तहिना मैथिलीयोमे कएल जाए तँ नीक बात अन्यथा छल करब व्यर्थ अछि।

मुनाजी: अहा ि िनक अतािरक्त अिभनयसँ सेहो जुड़ि रहि ै। हम सभ िफल्म िसन्दुरदानमे अहाक सुन्दर अिभनय देि िने ि ै। ऐसँ पूवमअहा कोन-कोन िफल्म वा धारावािहकमे अिभनय केने ि ै आ एकर केहेन अनुभव केि हुँ?

कुमार शैि न्द्र: जँ अहा कही ि टकी परदा हम ओकरा कहै ि ी- नन्हकी परदा आ िसनेमाके कहै ि ी बड़की परदा। बड़की परदाक बात करी तँ "िसन्दुरदान" हमर दोसर िफल्म अि ी। पिहल िफल्म अि ी रवीन्द्रनाथ ठाकुर दारा िलिखत आ िनदेिशत िहन्दी िफल्म "आयुवेद की अमर कहानी"- ऐमे हम अिभनय केने रही, ि ि तेश ऐमे हीरो रहिथ आ संगमे रहिथ िदिप झा। राटी, मधुबनीमे एकर सूिटंग भेि रहै। हमरे सन ि ि-पाि गोटे आरो पिहभावान कि िकार रहिथ। िसन्दुरदानमे १६-१७ बिखक पि ि ा ि ित अिभनेताक र पमे आएि रही, आब तँ हमर ि हरो बदि ि गेि हे। ऐमे हमर भूिमका नाियकाक िपताक र पमे ि ि। एकर बाद स भाग्य िमिथि ा मैिथि ी ि निक ि ि बनाओि मुख्य धारावािहक "िदयर-भाउज"क ि ढ सए कड़ीसँ बेसीमे षि यंती ककाक भूिमकामे काज कएि ै। तकर अितिरक्त रिवन्द्रनाथ ठाकुर नन्हकी परदापर एकटा काउन्टि ाउन शो केने रहिथ, जैमे कििक भूिमकामे एकटा पस्तोताक र पमे हम अिभनय केने रही। ईएह हमर नन्हकी-बड़की परदाक अिभनय याता अि ी जे एकटा पसन करैबि ा अनुभव रहि ।

मुनाजी: अहा बहुत िदन धिर मैिथि ी पतकािरता िवशेषकऽ आकाशवाि ीसँ जुड़ि रहि ै, की भिवष्य ि ै एकर? एकरा ि ि़क अहा दूरदशमसँ िकएक जुड़ि हुँ?

कुमार शैि न्द्र: हमर रोजगार याता पतकािरतेसँ शुर  भेि, िवशेष कऽ िमन्ट मीिडअमसँ। ओइ संग आकाशवाि ीसँ सेहो जुड़ि रहि ै। आकाशवाि ी पटनासँ पसािरत िक ि ु नाटकमे काज केि ै। आ एतऽसँ पसािरत ि ि ाि मे "बम-बम"भाइक भूिमकाक िनबहता करैत रहि ै। तकरा संग-संग न सािि धिर आकाशवाि ी पटनासँ शैि न्द्र कुमार झाक नामे समाि ार वाि िन करैत रहि ै। एकर अितिरक्त नै जािन कतेको रेिडयो नािटकामे अपन स्वर देि ै। एकटा महत्वपूि िकाज ि ि ओतऽसँ पसािरत "िसंहासन बतीसी" धारावािहकक- ि ितीसम कड़ी धिर राजा भोजक भूिमकामे रही जे महत्वपूि िकाज ि ि। तकर बाद ई.टी.वी. हैदराबादमे िः घण्टाक िलिि त आ दू घंटाक म ि ि क परीक्षाक पि ि ा हमर ि यिन भेि। हम ओतऽ एक सप्ताह मात काज केि ै। ओहीमे हमर विरष्ठ रहिथ गुंजन िसन्हाजी जे एि िन म या टी.वी. पटनामे विरष्ठ पदािधकारी ि िथ। हमरा ओतऽ मोन नै ि ािग ि वा मोन नै मानि क। हाम आपस ि ि एि ै। तकर बहुत पि ि ा "स भाग्य िमिथि ा" मैिथि ी ि निसँ जुड़ि ै, जैमे समस्त कायक्रमक िनमाि देि ि त रहि ै। ि ड़बासँ पिहने समाि ार संपादक र पमे कायरत रही। स भाग्यसँ जिहया जुड़ि ै तँ हम पिहल मैिथि ि व्यक्ित रही ओ स भाग्य नामक एकटा ि ोडक्शनि ि नि ि ि आ ओइमे सभ िहन्दीभाषी कायरत ि ि ह।

मुनाजी: अहाक नाटक पतकािरताक अितिरक्त एकटा सकि मंि संि ि ािलक र प सेहो सोझा आएि। अहा ओहूमे ि ूब जमि ै। की मैिथि ीमे स्वतंत संि ि ािलक अिस्तत्व आ भिवष्य देि ि पिड़ रहि अि ी?

कुमार शैि न्द्र: मंि संि ि ािन हमर महत्वपूि ि िकिवय िवधा रहि अि ी। पटनाक ि तेना सत्विनक मंि सँ िवदापित समारोहमे बहुत िदन धिर मंि संि ि ािन करैत रहि ै। सत्य पूि ी तँ ओइमे आनन्द अबैत ि ि, िकएक तँ ओ जे भीड़ होइ ि ि ै एक ि ि ि ढ ि ि ि िकक आ शाि िनतापूवक सभ सुनैत रहै ि ि। तकर पि ि ा कतेको

मंचपिर बजाएल जाए लागल। मैथिलीमे मंच संचालकक वा उदोषकक कोनो पेशेवर रूप उभिरकाऊ नै भऽ सकलै। एखन एकर कोनो सम्भावना नै छैक। हँ हमर जे सनातन सबहक उदोषक भेल छिह हुनक रूप बदलल गेल छैन, माने ओ आब एकटा कन्ट्रैक्टर वा एरेन्जरक रूपमे छिथ। समस्त कलाकारक व्यवस्था ओ करैत छिथ आ ओही व्यवस्थापर कायर्क्रम आयोजित होइत अिछ। ओना एहेन जे उदोषक सेहो साजनल भऽ सकैत छिथ। हम जखन उदोषक रही तँ ई बात पढ़ने सोझा आबए जे जँ विद्यापित पवर्समारोह अिछ तँ ओइमे विद्यापित आ मैथिलीक सांस्कृितक आधारके केिन्द्रत कऽ कायर्कएल जाए। आब गीत-संगीतमे फूहड़ता एलैए तँ कैक ठाम संचालकक स्तर खिस रहल छैक।

मुनाजी: मैथिलीक पिहल चैनल "सौभाग्य मैिथली" सँ पूणर्रूपे जुिड़ अपन सवर्स्व ऊजार् ऐमे लगा कऽ रहल छी। मुदा एखनो बहुत रास कमी अिछ जेना डी.टी.एच.पर ऐ चैनलक पसारल नै हएब? ठोस वा मनोरंजक कायर्क्रमक अभाव िकएक?

कुमार शैलेन्द्र: व्यावहािरक रूपे मुनाजी अहाक जे सवाल अिछ तैसँ हम सहमत छी। हम जखन या जुड़लौ ऐसँ तँ असगर मैथिली छलौ। एकर सभ कायर्क्रम चैनल आइ.डी.सँ लऽ समस्त कायर्क्रमक आधारभूत संरचना तैयार केलौ। हमर बाद जे लोक सभ जुड़ल से सभ चैनल माध्यमे चीन्हल गेल मुदा हम पिहनेसँ मैिथलीक सभ िक्रयाकलाप कला संस्कृित आिद सँ सवर्था जुड़ल रहलौ। हमरा पारम्भमे कहल गेल जे ऐमे दू घंटाक मैथिली कायर्क्रम हएत मुदा कालक्रमे २४*७ क पसारल -यानी चौबीसो घंटा आ सातो िदन- होमऽ लागल। हम एकरा कहब बुिद्धवाद, जे ई जोगाड़ टेिक्नक कॉम पर िटकल रहल, िकएक तँ एकरा फाइनेन्सरक पूणर्तः अभाव रहलै।

मुनाजी: ऐ चैनलक बहुत रास कमी एहेन अन्यान्य भाषाक चैनलक समक एकरा ठाढ़ नै होमऽ दऽ रहल छै। एनामे एकर अिस्तत्व समाप्त तँ नै भऽ जाएत।

कुमार शैलेन्द्र: एकरा लग पितभा, कला, अिभनेता, गीत-संगीत गबैबलाहारक कमी नै छै। सािहत्य-संस्कृितक कमी नै छै। योग्यताक अभाव नै छै। कमी छै तँ धनक, चैनलक माकेर्िटंग केिनहार लोकक। अभाव छै तँ जे सभ मािलक वा पाटर्नर छिथ हुनकामे, जे कोना बजारसँ धन उगािहके आनल जाए। से सभ जखन या भऽ जाएत तखन या ऐ चैनलसँ स्तरीय कायर्क्रम सभ पस्तुत होमऽ लागत आ ई सभ तरहे आन भाषाक चैनलक समक ठाढ़ भऽ जाएत। चैनलसँ आब जे जुड़ल छिथ, जखन या हमहूँ सभ जुड़ल रही पोगामसँ, जे जुड़ल लोक अिछ तकरा पोगामक भार रहै आ मािलक लोकिन एकर व्यापार पभागक संचालन करैथ। ई भेद कऽ के काज हेतै तखन ई जरूर सफल हएत। नै मािलके सभटा काज करता तखन िस्थित दुःिस्थितये बनल अहत।

मुनाजी: ऐ सभक अितिरक्त मैथिली गजलक उपयोग अहा सेहो करैत रहलौ अिछ। मैथिलीमे गजलक की िस्थित छैक आ एकर केहेन सम्भावना देखा पड़ैत छैक?

कुमार शैलेन्द्र: मैथिली गजल अपन लोकिपयता बहुत पिहने हािसल कऽ चुकल अिछ, किवलनन्द भट, बुिद्धनाथ िमश, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आिद िवशेष गजलकार छिथ। मायानन्द िमश सेहो अही श्रेणीमे गानल जाइत छिथ। हुनकर "रूप एक रंग अनेक" नामक संगह िलखल रहल छैन। ओ ऐ सभ गजलके गीतल कहै छिथ। एम्हर आिब कऽ पत्रकाक सभमे गजलक अभाव पाओल जाइत अिछ। देखल य मुनाजी, एकटा खास बात छै जे गजल एहेन िवधा छै जे कोनो भाषामे लीखल जाए अपन जमीन तैयार कऽ लैत अिछ। मैथिलीयोमे राम चैतन्य धीरज, तारानन्द िवयोगी, रमेश आिद आ सरसजी गीत आ गजलमे नव-पयोग केलिन। कल्वताक जे पकार छै तैमे मैथिली गजलक सेहो अिस्तत्व छैक आ भिवष्य सेहो। गजल जतऽ जै भाषामे जाइ छै ओहीमे समािहत

भऽ जाइ ि। गजिमे गेय तत्त्व ि जे ओकरा िकत्विय बना देने ि।

मुनाजी: शैिन्द्रजी, एकटा सवाि व्यित्तगत िजनगीसँ जुड़ि। अहा अपन एकि िजनगी जीबाक पयास कऽ रहि◌ अिि- माने अिववािहत रहि- एकर कारि रोजगारपरक व्यावसाियक अवरदता अिि वा कोनो व्यित्तगत िवशेष कारि। अहाके नै िगैि जे एहन जीवन अधूरा वा व्यथमभऽ जाइत अिि?

कुमार शैिन्द्र: देिि य, ई अहाक हमरासँ जुड़ि वैयित्तक, पूिि व्यित्तगत पश अिि। मुदा हम एकर उतारा देबासँ परहेज नै करब। वरन एगदम सहज आ स्वाभािवक उतारा देब। हम जिि यंग रही ति िपताजी िहैत रहि जे हम िबयाह कऽ िि, मुदा हम आित्मक रपे सक्षम नै बुझी अपनाके। िकएक तँ आयावतमे काज करैत रही, ओ ओही समएमे बन भऽ गेि। हम बेरोजगार भऽ गेि आ िबयाह नै करबाक मूि कारि िि हमर अथमिवपनता। हम पिरवार िबा िि जतेक अथक पयोजन बुझि ततेक हम किहयो नै कऽ सकि। िकक अपन-अपन रहबीपर िाभर ि। ककरो िगै ि जे हम पाि हजारमे गुजारा कऽ िि। हमरा िगैि जे बीस हजार ििमिभऽ सकैि। हम आइयो ओििना िि जे अपना अथे िवपन बुझै िि। हमरा मैिक्सम गोकीसँ जीवन्त पेरि भेटैत रहि अिि। ओना हम मानै िि जे गोकीके जीवनमे जतेक कष सहऽ पड़ििन ऐसँ बहुत कम कष हम उठेिहुँ अिि। हम जिि संकटमे अबै िि तँ हमरा गोकी मोन पड़ै ििथ आ हुनके पेरिासँ हम अपनाके सम्हािि िित िि। हँ, हम ईमानदारीपूवक कहब जे एतेक साहस किहयो नै आएि वा हमरा िकयो भेटबो नै कएि। जे अपना ओइठाम जे पारम्पिरक िववाह ि तैमे हमरा िवशास नै रहि अिि। जँ हम ओना िबयाह कऽ िि आ तेहेन कोनो जोड़ीदार आिव जाए जे अहाक जीवनके नकमबना िदअए तँ हमरा कोनो िशकाइत नै अिि जे हम एकसर िि। हम िववाह नै केिि तै हेतु कत कोनो िक, एम्प्ियरसँ किहयो कोनो कम्प्रोमाइज नै करऽ पड़ि। हमरा जतऽ जििया जेना मोन भेि काज करैत रहि। हमर जे संगी नोकिरहारा, तकरा िि िड़ैत रहि। आ तँ हमर एम्प्ियर िरैत रहि अिि। ओ मानैए जे हम यूिायनबाजी करै िि, जििनक सत्य अिि आइ धिर कोनो यूिायनसँ कोनो सम्बद्धता नै रहि अिि। असगर आ रहब हमर सम्पि रहि अिि। काल्हि की हेतै एकरो गारंटी हम नै दऽ रहि िहे। कतेको गोटे कहैए, आब अहा बूढ भऽ गेि, आब िबयाह कऽ की हएत? मुदा हमरा अििनो वा आगूओ जँ अपन सोिकि िकयो भेटित जेती तँ हम िबयाह कऽ सकैत िि।

मुनाजी: भाइ, एतबा बहुमूल्य समए दऽ अपन िविार देबा िि धन्यवाद।

११

अमरनाथ जीसँ मैथिलीक पहिलुका विहनि कथाकार एवं समीक्षक मुनाजी द्वारा भेल गप्पसप्प

कथा साहित्यक स्थापित रचनाकार एवं साहित्य अकादमीक (मैथिली परामर्शदातृ समिति) सदस्य माननीय अमरनाथ जीसँ मैथिलीक पहिलुका विहनि कथाकार एवं समीक्षक मुनाजी द्वारा भेल गप्प-सप्पक अंश प्रस्तुत अछि:-

मुनाजी: अहाक मोनमे मैथिलीक रचनात्मक विचार कोना प्रस्फुटित भेल, पहिल रचना (लिखल) आ पहिल प्रकाशित रचना कोन अछि, आ कतऽ कहिया छपल?

अमरनाथ: हमर जन्म एक एहन परिवारमे भेल, जतय अनेक तरहक विविधता छैक। किछु घोर कर्मकाण्डी रहथि, तँ किछु शास्त्र-पुराणक विपरीत आचरण करथि वाद-विवादमे विचार नहि करथि। भारत-चीनक युद्ध आ युद्धक छविसँ आहत बाल मन आ १९६२ मे ज्योतिषी द्वारा घोषित प्रलय भूकम्प अथवा विनाशक भविष्यवाणीक कारण घरक बाहर खाट-खाट शेखीमे रहबाक विवशता मनके उत्सुक बनने रहए। तत्कालीन समाजमे अधिकाकाश तथाकथित समाज चिक्के सोगरपर ठाढ देखि पड़ल। अथात् एकटा नकर आ टहलू छोडि़यल। आशयमई छिगय जे जखन सभ मनुक्ख, तखन सम्बोधनमे य, ह, र, हर अछि किएक? जे घाम छिबबैत अछि से न्यून किएक? एहन विभिन्नतापूर्ण परिस्थितिमे हमर रचनात्मक विचार प्रस्फुटित भेल रहए। मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा सँ मैथिलीक लिखल राजकीपर आधारित पुस्तक प्रकाशित भेल छल जाहिमे हुनक लिखल पोथीपर मुख्यतया आलेखमत संकलित छल। ओहि पोथीमे आचार्य रमानाथ झा आदिक विचार छपल अछि। हमर आलेखमत कविताम छपल अछि, हमर वैह पहिल छपल रचना थिक।

मुनाजी: अहा सभक रचनाक पारम्भक कालमे मैथिली साहित्यक स्थिति की छल? अहाक रचनात्मक प्रभाव केहेन रहल?

अमरनाथ: १९७४ ई. मे पटनासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'क फगुआ अंकमे हमर पहिल हास्य व्यंग्य कथा 'स्वामि युग' छपल रहए। १९७५ ई. मे 'कलिका' विहनि कथा संग्रह छपल, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' ओहि पोथीक भूमिका लिखने छथि जाहिमे विहनि कथाक औचित्यपर प्रकाश देने छथि। किरण जी, अमर जी, शीश जीक विचार छपल छल। पछिला जयकात मिश्र लिखने छला जे एहि संग्रहक प्रकाशन सँ मैथिली साहित्यक विकास भेल अछि। 'मिथिला मिहिर', 'द इण्डियन नेशन', 'आर्यावर्त', 'मैथिली प्रकाश' (कोलकाता) मे 'कलिका'क समीक्षा छपल रहए। ताहिसँ ई अनुभूति भेल रहए जे कथाकारक रूपमे हमरा स्वीकार कऽ लेल गेल अछि। १९७४ ई. मे 'छिही एकटा दोपदी' (कथा संग्रह) तथा १९७५ ई. मे ई 'कलिका' (विहनि कथा संग्रह) छपल रहए। हमरा अधिकाकाश शेष छैक यथा रमानाथ झा, हरिमोहन बाबू, यात्री जी, किरण जी, सुमन जी आदिक सान्निध्य आ स्नेह प्राप्त भेल रहए। मुदा हम बेशी हरिमोहन बाबूक संग रही आ तकर कारण रहए जे हम दर्शन शास्त्रक अध्ययन करैत रही आ मैथिलीमे लिखन दिस उन्मुख भेल रही। हरिमोहन बाबू संग बीतल क्षण हमर साहित्यिक जीवनके गति प्रदान करबामे अत्यंत सहायक भेल छल।

मुनाजी: छठम/सातम दशकमे किछु रचनाकार मैथिलीमे साम्यवादी विचारक हो-हल्ला केलनि। अहाक नजरिमे सत्यतः मैथिलीमे एहेन कोनो विचारधारा बनल? अहापर एकर केहेन प्रभाव पड़ल?

अमरनाथ: एकटा समय आयि रहैक जाहिमे संसारक जन समुदाय साम्यवादी विचार धारा दिस आकर्षित भऽ रहए। सम्पूर्ण देशमे पक्ष-विपक्षमे बहस प्रारम्भ भऽ रहैक। कतहु-कतहु कान्ति भेलैक, कतहु सफल भेलैक। मुदा मैथिली साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे अहाँ ठीके कहलहुँ जे 'हो-हल्ला' भेलैक। हमहुँ मानैत छी जे मैथिली साहित्यमे साम्यवादी विचारधाराक जड़ि नहि जमि सकलैक। मैथिलीमे जे केओ अपनाके साम्यवादी कहि कऽ प्रचारित करैत छथि से पाखण्डी छथि। ई बात कने कटु अछि मुदा सत्य अछि कारण हुनक जीवनक सूक्ष्म निरीक्षणसँ परिलक्षित होएत जे ओ जातीय अहंकारसँ मुक्त नहि भऽ छथि आ परम्परागत संस्कारमे लिप्त छथि। जनिकामे साम्यवादी चिंतन धारामे अगसर होएबाक अहर्ता नहि छलि से भला वर्गसंघर्षसर्वहारा, मैनिफेस्टो आ दास कैपिटल धरि कोना पहुँचताह। हँ, मैथिली साहित्यमे साम्यवादके संगठित प्रचारक लेल आ आत्म-विज्ञापनक लेल हथकंडाक रूपमे इस्तेमाल कयल गेल अछि।
मैथिली साहित्यमे हमरा जनैत कोनो ठोस विचार धारा नहि पनपि सकलैक आ तकरा कारण ई भेलैक जे बीसम शताब्दीक महत्वपूर्ण लेखक लोकनिपर, संस्कृत अथवा बांग्ला साहित्यक प्रभाव पड़ल रहलनि। किछु लेखकपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव सेहो पड़ल रहलनि। स्वतंत्रताक पश्चात् मैथिली साहित्य बहुतांशमे हिन्दी साहित्यक छत्रछायामे चलि आएल। मैथिलीक साहित्यकार नामवर सिंह आ मैनेजर पाण्डेय दिस देखय लगलाह। ई दुःखद स्थिति अछि, मुदा सत्य यैह अछि। मात्र तीन गोट साहित्यकार हरिमोहन झा, यात्री आ राजकमल विचार धाराक दृष्टिये लिखैत रहलाह। यात्री समतामूलक समाजक स्थापना लेल अगसर भेलाह आ 'परम सत्य' धरि पहुँचि अस्तित्ववादी भऽ गेलाह। मानववाद हुनक कवितामे अंतर्निहित छनि। यात्री लिखैत छथि-
सत्य थिक संसार
सत्य थिक मानव समाजक कर्मक उन्नति
कर्मक वृद्धि-विकास
सत्य थिक संघर्षरत जनताक ई इतिहास
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
परम सत्य मनुक्ख अपनहि थिक

तहिना राजकमल साहित्य वर्जनाके तोड़ैत तथाकथित 'धर्मात्मा' आ 'पाखण्डी' सभक पताड़नासँ कुहरैत, नोरसँ भीजल मिथिलाक नारीक जीवंत चित्र केलनि। एही सन्दर्भमे हरिमोहन झाक नाम उल्लेखनीय अछि। 'खट्टर कका'क तरंग बुद्धिवादी चिंतन धाराक लेल 'गीता' सदृश अछि। सभसँ महत्वपूर्णबात ई अछि जे हरिमोहन झा, यात्री जी आ राजकमलक मोनमे कमला-गंडकी-वाग्मती-कोसीक पानिसँ बनल छलनि ते हुनकर साहित्यमे मिथिलाक सोहनगर माटिक सुगंधिक अनुभव होइत अछि। बीसम शताब्दीक वृहत्त्रयीमे यैह तीन साहित्यकार हरिमोहन झा, यात्री जी आ राजकमल छथि जे कालजयी छथि।
हमरापर कोन विचार धाराक प्रभाव पड़ल तकर विवेचन आ मूल्यांकनक दायित्व अहाँ सन युवा रचनाकारपर छोड़ि दैत छी।

मुनाजी: अहाँ अपन रचनाकालक प्रारम्भसँ एखन धरि लेखनक निरंतरता बनने छी, मुदा आइ धरि ककरो द्वारा कोनो ठोस मूल्यांकन आ पुरस्कृत नहि भेलासँ केहेन अनुभव करैत छी?

अमरनाथ: मुना जी, मैथिलीमे मूल्यांकन होइ नहि छै, करबऽ पड़ैत छै। ओहि लेल मैनेजमैंट चाही। ई मैनेजमैंट ने करय अबैत अछि आ ने हम सीखय चाहै छी। रहल गप्प पुरस्कारक। एकर अपन गणित छै। मैथिलीक धर्म गणित आ विजान रहए। पथम शेणी भेटि रहए। मुदा दर्शनशास्त्र लय लागल। गणित छुटि देलिऐ। फेरसँ सीखि होएत? तखन अहीँ कहूँ, पुरस्कार कोना भेटत? मुना जी, हम कहि सकैत छी जे देशक विभिन्न भागसँ हमरा पाठकक स्नेह भेटि अछि। ई की पुरस्कार नहि भेलै? हमर पोथीक तीन-तीन संस्करण भेल अछि। चारिम संस्करण पेसमे अछि। मैथिली लेखकक लेल ई की कम भेलै?

मुनाजी: कथा साहित्यमे अहाँ दारा विहनि कथापर जमि कऽ लिखल गेल। मैथिलीक पहिल विहनि कथा संग्रह 'कनीका' देलाक बाबजूद अहाँ विहनि कथाकारक रूपमे हेराएल आ बेराएल रहलौं, एकरा पाछू समूहवाजी आ आर किछु कारण अछि?

अमरनाथ: एहिमे हमर अपन दोष अछि। १९७५ ई. मे 'कनीका' छपल रहए। हाथो हाथ बिका गेल। एहि घटनाक पैंतीस वर्षभेलैक। हमरा दोसर संस्करण करएबाक चाही छल। से नहि भेलैक। मैथिली पुस्तकक हेतु कोनो नीक पुस्तकालय नहि छैक। जखन पोथी नहि उपलब्ध होएतैक, तखन कोन आधारपर चर्चा करतैक? तथापि जे नीक समालोचक होइत छथि से अंवेषण करैत छथि, पोथी उपलब्ध करैत छथि आ तखन मूल्यांकंन करैत छथि। से कयलनि मैथिलीक सुपसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामदेव झा, पटना विश्वविद्यालय दारा यू.जी.सी.क सहयोगसँ आयोजित सेमिनारमे। अपन आलेखमे 'कनीका'क सम्बन्धमे स्पष्ट विचार रखलनि। मुदा मैथिलीमे कतेक रामदेव झा छथि।

मुनाजी: अहाँक पारम्भिक रचनाकालमे मूलतः कथा कविता लेखन पर ध्यान देल जाइत छल। अहाँक ओइसँ इतर विहनि कथा लेखनक पति उत्सुकता आ रचनाशीलता कोना आएल।

अमरनाथ: हम १९७३ ई.क गर्मीमे एक मास औदोगिक नगरी बोकारो रहि गेल रही। ओतए हम पहिल बेर लगसँ मशीनक घरघड़ाहटिकेँ सुनने रहियैक, चिमनीकेँ देखने रहियैक। हमरा लागल रहए जे आब जे समय आबि रहल अछि, ताहिमे मनुष्यकेँ समयक पबन्धन करए पड़तैक। कहि सकैत छी जे 'समय' लोकक वैह अत्यंत महत्वपूर्ण भऽ जयतैक। एहन स्थितिमे महाकाव्य अथवा दीर्घकथा/ उपन्यास पढ़ऽ लेल समय नहि रहतैक। मुदा तथापि लोक साहित्य पढ़ऽ चाहत। आ तेँ पैघसँ पैघ बात कहबा लेल हम छोट-छोट कथा लीखय लागलहुँ। पछाति सकल 'कनीका' 'विहनि कथा' संग्रहक रूपमे पकाशित भेल।

मुनाजी: अहाँ चारि दशक पहिने विहनि कथाक पति एतेक क्रियाशील रहलऐ, आइयो ई निरंतरता बनल अछि। तहन अहाँक अकादमीमे स्थान पबितो पछाति विहनि कथापर कोनो काज किएक नहि भेल, अकादमीक स्तर पर उदासीनता किए? आगामी समयमे विहनि कथाक लेल अकादमी दारा कोनो स्वतंत्र क्रियाकलापक (यथा-विहनि कथा संग्रहक पकाशन/कोनो कार्यशालाक आयोजन) योजना अछि आ समायोजन करबाक विचार अछि?

अमरनाथ: एकरा उदासीनता नहि, पाथमिकता कहबाक चाही। अकादमी दारा कतेक कार्यभेल अछि, भऽ रहल अछि। अगिला परामर्शदातृ समितिक बैसकमे विहनि कथापर विशेष ध्यान देल जाएत। विहनि कथाक सन्दर्भमे विभिन्न पुस्तक आदिक पकाशनपर विचार होएत, आ से एहि दारे नहि जे हम स्वयं विहनि कथा लिखैत छी। ई

आवश्यक एहि हेतु अछि जे एहिपर एखनि धरि विचार नहि भेल अछि।

मुनाजी: मैथिलीक क्षेत्र छोट छै। तैयो रचनाकारक समूहबाजी एकरा गरोसने जा रहल अछि। ई एकदम सावर्भौमिक नहि अछि। आ से ओहिमे पुरस्कारक हेतु चयनक आ निर्णयमे सेहो देखार होइत अछि। अहा एहिसँ कतेक धरि सहमत वा असहमत छी?

अमरनाथ: मुना जी, हमहुँ अहीँ जकाँ छिकछी। जे केओ समूहमे नहि छी, स्वतंत्र छिकछी, स्वाभिमानक संगे जीवि रहल छी, एहि यंत्रणाक दंशके सहि रहल छी। मुदा मैथिलीक संसार आब छोट नहि। श्री ‘गजेन्द्र ठाकुर’जी मैथिलीके “विदेह” पत्रिका द्वारा सम्पूर्ण संसारमे पहुँचा देलनि। ‘मैथिली दर्शन’ मैथिलीक भविष्य बाकी रहल अछि, आ अहा सन संघर्षशील युवा रचनाकारक हाथमे मशाल अछि। आब अहीँ कहूँ, ‘कूप-मंडुक’क आवाज कते दूर धरि जाएत?

मुनाजी: साहित्य अकादमी द्वारा बडड रास पुरस्कार (विभिन्न विधा पर) देबाक घोषणा कएल गेल अछि, मुदा ओहि सभ विधा आ स्तरपर उत्कृष्ट रचना आ रचनाकारक अभाव सन अछि तथापि पुरस्कार दऽ देल जाइत अछि। तकर पाछाँ एहि लोकनिपर पक्षपातक आरोप लगैत रहल अछि किएक?

अमरनाथ: अहाक पीड़ा हम बुझैत छी। वैह पीड़ा हमरो मनमे अछि। एहन-एहन पुरस्कृत पोथी जँ आन-आन भाषामे अनूदित होएत तँ लोक हँसत हमरा सभपर, मैथिली साहित्यपर। ते हमर स्पष्ट मंतव्य अछि जे उत्कृष्ट पोथी नहि रहैक तँ उचित छैक जे ओहि वर्षमे मैथिलीके पुरस्कार नहि भेटैक।

मुनाजी: साहित्य अकादमी पुरस्कारक चयनक आधार की अछि, व्यक्तित्व आ कृतित्व आकि भाय-भैयारीमे लिप्त भऽ एकरा परोसल/ बाँटि देल जाइत अछि।

अमरनाथ: बहुतायतमे जे होइत रहलैक अछि, सैह अहा कहलहुँ अछि। परंतु से ने उचित अछि आ ने मैथिलीक हितमे अछि। लाभार्थी रूपसँ लोकक कृतिपर पुरस्कार भेटबाक चाही। ई ध्यान राखब आवश्यक अछि जे अकादमीक पुरस्कार पुस्तकपर भेटैत छैक। अकादमी ने तँ ‘लाइफ टाइम एचीवमेंट’ पुरस्कार दैत छै आ ने सात्वना पुरस्कार। एहि सम्बन्धमे साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि डॉ. विद्यानाथ झा ‘विदित’के विशेष साकाक रहबाक चाहियनि।

मुनाजी: आ अमरनाथ बाबू अंतमे अपने सँ साहित्य आ अकादमी दुनू अनुभवक आधार पर नवरचनाकारक वास्ते कोनो संदेश चाहब जाहिसँ आगू मार्गदर्शन रचना आ रचनाकारे मैथिलीमे उपलब्ध हुअए।

अमरनाथ: अकादमीक अनुभव कोनो नीक नहि अछि। मैथिलीक विकासक सुनियोजित योजनाक पार प नहि बलल सकलैक। तखन संघर्ष करैत छी, ठठैत छी, मान-अपमानपर ध्यान नहि दैत छी। तकर परिणाम अछि जे मैथिलीक व्यापक हितमे किछु काज भेल अछि आ किछु काज भविष्यमे होएत। मैथिलीक प्रतिनिधि डॉ. विद्यानाथ झा ‘विदित’क नेतृत्वमे एतबा भेल अछि जे ई आब मुट्ठी भरि लोकक पलकमा नहि कऽ विशाल जनसमुदाय आ लोक बीच ई पहुँचल अछि।

साहित्यिक जीवनक अनुभवसँ हम उत्साहित होइत रहै छी। तकर कारण अछि जे पाठकक स्नेह हमर मनकेँ सदिखन प्रेरित करैत रहैत अछि। तखन सन्देश! युवा पीढ़ीकेँ पर हम आस्थावान छी। आजुक पीढ़ीकेँ ध्यानमे राखि कऽ साहित्य नहि लिखबाक चाही आ ने आन भाषा-साहित्यक अनुकरण होएबाक चाही।
युवा पीढ़ीकेँ वर्तमान भाषाक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पढ़बाक चाहियनि, विशेषकेँ आजुक रहल साहित्यक वर्तमान धारासँ परिचित होइत रहबाक चाहियनि आ बीच-बीचमे पयसन-पलक्षण करैत रहबाक चाहियनि। मुन्ना जी, जे लिखि रहल छी तकरा आत्मसात कऽ लिखबाक चाही। कथा, कविता, उपन्यास, नाटक अथवा कोनो आन विधाक रचना कल्पित नहि होइत छैक आ ने गढ़ल जाइत छैक। सृजन सेहो ईमानदारी मंगैत छै। क्षमा करब मुन्ना जी, हम उपदेशक नहि बनय चाहै छी, मुदा अहाक प्रश्ने तेहन छल!

१२

ि ॅ. तारानन्द िवयोगीसँ मुनाजीक भेि गप्प-सप्प

 मैिथ्ाली िवहिन कथाक सशक्त हस्ताक्षर ि ॅ. तारानन्द िवयोगीसँ मुनाजीक भेि गप्प-सप्प





 मुनाजी:अपनेके सवर्प्रथम बाि सािहत्यपर अकादेमी पुरस्कारक ि ि बधाइ। अहा जिहया िवहिन कथा ि ि न पारम्भ केि हुँ मैिथ्ाली िवहिन कथा कतऽ ि ि ँ, अहाक िवहिन कथा ि ि न िदस कोना पवृत्त जािग ।

 तारानन्द िवयोगी:हम जिहया िवहिन कथा िलि ब शुर केने रही, एक िवधाक र पमे मैिथ्ाली िवहिन कथाक कोनो मोजर नै रहैक। ई बात जर र ि ि जे ि ोट-ि ोट कथा सभके िवहिन कथा माि ्न कऽ ''िमिथ्ाि ा िमिहर''क िवशेषाक सेहो बहार भ गेि ि ि । अिनयतकािि न पित्रका सभमे ि ोट-ि ोट कथा सभ यदा-कदा पकािशत होइत रहैत ि ि । मुदा एकर सभक औकाित ''बोझ परहक आँटी'' सँ बेसी िकि ु नै ि ि । पित्रका सभ, ''िमिथ्ाि ा िमिहर'' सेहो, एिह कोिटक रि नाके ि ाि ी बि ि जगहके भरबाक ि ि ''फीिर ''क र पमे उपयोग करै ि ि ।

 कथाके अंगेजीमे शॉटर्मस्टोरी कहि जाइ ि ैँ। तकर शब्दानुवाद ''िवहिन कथा'' मैिथ्ािलीक िवदान ि ोकिन, आि ि ि ोकिनमे पि िित ि ि । आि ायर्मरमानाथ झा शॉटर्मस्टोरीके िवहिन कथा की कहि देि ि जे मैिथ्ालीमे भेलहियाधसान पिरपाटी ि िल पड़ि । ओहुनो भारतीय कथा-सािहत्यक तुि नामे मैिथ्ाली कथाके जँ देि बै तँ पाएब जे आकारक दृिष्ट मे मैिथ्ालीक कथा ि ोट होइत अि ि । आि ायर्मि ोकिनक मते यएह भेि िवहिन कथा। तिि न आइ जािह सािहत्यके अहा िवहिन कथा कहैत िलऐक तकरा ि ि मैिथ्ाली ि गमे कोनो स्पेस नै ि ि ँ। ने सािहत्यमे, ने िवदान ि ोकिनक मगजमे।

 िवलान देशी-िवदेशी िवहिन कथा सभके यत-तत पढैत-गुनैत हमरा कथा आ िवहिन कथाक पाथर्क्यक अवगित भेि । हम देि ि ी जे एिह दुनू रि ना िवधामे ने मात आकारमे, अिपतु उत्स, स्वभाव आ पभावमे सेहो एक दोसरासँ सवर्था िभन अि ि । मैिथ्ालीक भंिार िदस ताकि हुँ तँ देि ि जे अनेक वरेण्य सािहत्यकार जानैत-अनजानैत एिह क्षेत्रमे िकि ु सजर्नात्मक काज कऽ गेि ि िथ। हमरा सभसँ पिहने ई जर री ि ागि जे िवहिन कथा िवधाक संरि ना, स्वर प आ स्वभावपर िकि ु बात स्पष्ट करी। एिह सन्दभर्मे हम कएकटा ि ि िलि ि हुँ। स्वयं हम मूि तः एक सृजनात्मक ि ि क ि ी, ते अपनहुँ िवहिन कथा िलि ऽ ि गि हुँ। तािह समय (१९८३-८५) मे हम ''कोसी-कुसुम'' पित्रकाक संग जुड़ि रही। बातके स्पष्ट आ जगजाआर करबाक ि ि हम ''कुसुम''क एक िवशेषाक िवहिन कथापर सम्पािदत कएि । बादमे ''हाि ाि ''क संग जुड़ि हुँ, तँ ई कम आर आगू बढि ।



 मुनाजी:िवहिन कथाक स्वभाव की अि ि ? ओिह सन्दभर्मे मैिथ्ाली िवहिन कथा कतऽ देि ाइए? कथाकार-कवि ि ोकिन िवहिन कथा रि ना आन्दोि िनक पारम्भमे जुड़ि ाह मुदा समयान्तरे हुनकर ऐ सँ दूर होइत गेनाइ की पदिशर्त करैत अि ि ?

 तारानन्द िवयोगी:िवहिन कथा आत्यिन्तक र पमे एक ''पो-एिक्टव'' िवधा िथक। ओहुनो अहा देि बै जे, जे रि ना जतेक सरि आ संपेषणीय होइत अि ि , ओकरा पाि ू ि ि कके ओतबे बेसी पिरशम करऽ पड़ैत ि ैक। िवहिन कथाक तँ एतेक ''सेलेिक्टव'' िमजाज होइत ि ैक जे एक वाक्य जँ अहा फाि तू िलि ि गेि हुँ तँ ओ दूि ि भऽ जाइत अि ि । एतेक पिरशम के करत, जँ करत तँ तािहमे िनरन्तरता कोना बनि ने राि ि सकत? एि नो

अहा देखि ते छीऐक जे एक सुव्यवस्थित विधाक रूपमे विहनि कथाके मैथिलीमे पत्राशा नै भेटि सकलैक अछि। फलि अछि जे किछु दोसर-दोसर विधामे, जे पत्राव तक अछि आ जाहिसँ ओकरा सहज रूपे स्वीकृति भेटि सकैक, ताहिमे कमि अजमबैत छथि। यएह मुख्य कारण भेल जे किछु किछु लेखक विहनि कथा-लिखनिमे निरन्तरता नै बनने राखि सकलाह। विहनि कथापर केन्द्रित एक पत्रिका जँ मैथिलीमे हो तँ एहि स्थितिके पार कएल जा सकैत अछि।

 हमर अपन स्थिति अछि जे हिँ हुँ दस हमरा काजे-काज देखि पड़ैत अछि, अपन सक भरि तकरा सभके सम्हारबाक, स्थिति स्पष्ट करबाक, जतबा जे पत्रभा अछि तदनुरूप एक मानदंड गढबाक काजमे लागल रहैत छी। अहा सभ आगू बढब तँ लागवाते हमरा संग लागल पाएब। ओहुनो, हमर सोच अछि जे "जो पीछे आ रहे उन्ही का, मै आगे का जय-जयकार"।





 मुनाजी:२०म सदीक अन्तमे अहा सभ (पदीप विहारी सेहो) मैथिली विहनि कथाक संगहि आलि अपन लाश्सन उपस्थिति दजमकेहुँ, मुदा कथा आलोचक दारा एकर लाडेश बुझ टालि देल गेल, एकर की पमुख कारण छल?

 तारानन्द वियोगी:देखू मुनाजी, हमरा सभक पीढी बहुत संघषमक ऽ कऽ आगू बढल अछि। पुरातनपंथी लेखक सेहो हमरा सभक विरुद्ध आ कम्यूनिस्टके सेहो हमरा सभसँ दुश्मनी। साहित्यमे नवाचार दुनूके समान रूपे नापसन्द। एहना स्थितिमे केनकासँ हम मोजर मागब आ के हमरा मोजर देताह? मैथिली आलोचना बहुतो तरहे अनेक सीमासँ घेराएल रहल अछि। एहि कारण बहुतो लेखक एकरा अवकल्पत धलि कहैत छथि। एहि सीमा सभक अतिक्रमण आब शुरू भेल अछि। हमहूँ ठोड़े काज "कमधारय"मे आ आनो ठाम केहुँ अछि। हमरा पीढीमे पदीप विहारी विहनि कथा लिखलनि, देवशंकर नवीन, विभूति आनन्द लिखलनि। शिवशंकर शीलावास, अशोक, रमेश लिखलनि। ओनका सभक रचनाके आइ पढब तँ अहाके आकोश हएत जे ताहि दिनमे केएक ने एकरा बूझल-गुनल गेल? खएर, जे भेल से भेल। आइ आरो सघनता-गम्भीरताक संग काज करबाक बेगरता छैक। अहा सभ आब उल्लेखनीय काज करब तँ अवश्ये मोजर हएत। बदलि पत्रस्थितिक अहसास अहूँ सभके जरूरे होइत हएत।



 मुनाजी:२१म सदीक पारम्भमे मध्यम पीढीक रचनाकार दारा ठाढ कएल आधारके आगू करैत नव पीढी एकरा जगमयार कऽ रहल छथि। अहा एकर वतमान दशा आ आगूक दिशा मादे की कहब?

 तारानन्द वियोगी:विहनि कथाक क्षेत्रमे गम्भीरताक संग काज करएबला लेखकक एखनहुँ अभाव छैक, से हमरा पतीत होइत अछि। केनकहुँ एक रचना जँ सुन्दर देखि त छीयलि तँ लागल दोसर रचना औसतसँ नीचाक देखि पड़ जाइत अछि। एना केएक होइत छैक? स्पष्ट अछि जे बोध आ शमक मानक ओ लेखक बनने नै राखि पाबि रहल छथि। दोसर बात जे हमरा जरूरी लगैत अछि- भने बतीसे पेजक केएक ने हो- पत्येक रचनाकारक एक संगह जरूर एबाक चाही। कोनो उत्साही लेखक एहि दिस सचेष्ट होथि तँ विहनि कथापर एक दिन-कायशालाक आयोजन कएल जाए। तात्पयम जे सास्थानिक उत्साहक संग एहि दिशामे काज करबाक बेगरता छैक।

 मुनाजी:मैथिलीमे विहनि कथाक समकालीन पंजाबीक ''मिनी कथा'', ओड़ियाक ''क्षुद्र कथा'', तमिलक ''लघुभाषा'', मलयालमक ''लघुचित्तर'' राष्ट्रीय स्तरपर स्थापित होइत देखाइए मुदा मैथिली एहि पगपर अन्हराएल सन? एकर पाछाँ की कारण अछि, वा कमी अछि?

 तारानन्द वियोगी:मैथिलीमे मानक काजक अभाव नै छै, आ ने भाषामे वा भाषाकर्मी लोकनिमे क्षमताक अभाव छै। संस्थानिक रूपसँ थोड़बे दिन काज कऽ कऽ देखियौ ने, भारतीय साहित्यिक उपवनमे मैथिली विहनि कथाक फूल सेहो तेहने भकरार लागत जेना पंजाबी, उड़िया वा मलयालमक।



 मुनाजी:जहिना अहा सभके (अहा आ विहाईजी के) उपेक्षित रचिबाक पयास भेल, तहिना आइयो कथालोकनि दारा नवका पीढीक ऊजावान रचनाकार वा विहनि कथाक पति समर्पित रचनाकारक कोनो नोटिस नै लेल जा रहल अछि। एहिमे कोनो कुटीलता अछि वा आर किछु?

 तारानन्द वियोगी:एहि पशक उतरमे हम दूटा बात कहब। पहिल तँ ई कहब जे के छथि अहाक नोटिस? ककरा मोजर देने अहा मोजरबला भ' जएब? एतेक विवेकी आ कालान्तदर्शी लोक अहाके देखाइत छथि? हम तँ साफ-साफ कहै छी मुनाजी जे हमरा एहन लोक क्यो नै देखाइत छथि। पहिने गुलामीक समय रहै तँ महाराज दरभंगाक मोजर देने राताराती लोक मोजरबला भऽ जाइ छल। आब ई आन बात छै जे एहि भममे महाराजक विवेकसम्पन्नता जिम्मेवार होइ छल आकि कोनो आन स्वार्थ?

 साहित्य अपन स्वभावेसँ कालातिकारी होइत अछि। जँ ओ वास्तवमे एक सही साहित्य हो। एहेन साहित्य किछु लिखबाक लेल नहि अपितु सदैव देबाक लेल लिखल जाइत अछि।

 दोसर बात हम ई कहब जे अहा मोजर वा नोटिसक ख्याल केने बिना काज करू। कोनो सार्थक रचना जँ कमसँ बहराए तकर संतोषके सेलिब्रेट करू जे ''जइ धरतीक अन-तीमन खेलिऐ तँ ओकरा लेल काजो केलियै''। ओना ईहो कहि दी जे हमरा सभक लिखनारम्भ कालमे जतेक कुहेस आ जाला पसरल रहै तकरामे आब बहुत परिवर्तन भेलैए। आलोचनोक परिदृश्य बदललैए आ पाठकक व्याप्ति सेहो बढलैए। इन्टरनेटक तँ एहिमे कमाल केने अछि।

 मुनाजी:वतमानमे रचनाकार सबहक मैथिली विहनि कथाक पति रुझानक बादो मैथिलीक विद्वान सम्पादक-संस्थाक पदाधिकारी सबहक एकरा पति विरोध की दशाबैए? मैथिली विहनि कथाके आर समृद्ध करबा लेल आर की सभ काज कएल जाए? मैथिली विहनि कथाक भविष्य की देखैत छी? एकरा स्थापित करबा लेल कोनो विशेष रुचि?



 तारानन्द वियोगी:विहनि कथाक भविष्य हम बहुत नीक देखै छी। मैथिली विहनि कथाक सेहो। अहा पुछब जे तकर कारण? कारण ई नै जे लोक आब बडड व्यस्त भऽ गेलैए ते छोट रचना बेसी पठनीय साबित भऽ सकत। वास्तविकता तँ ई अछि जे एखनो दुनियाभरिमे सभसँ बेसी उपन्यासे विधाक रचना पढल जा रहल अछि।

 विहनि कथाक भविष्य वस्तुतः एकर स्वाभाविक कारण उज्जवल छैक। एहिमे निहित व्यंग्य आ मार्मिकता आजुक सन्दर्भमे अत्यन्त पासंगिक अछि। आजुक लोकक संवेदना क्षमता जाहि हिसाबे भोथ भेल अछि, एक सही विहनि कथाक ओज ओकर आँखि उतारि सकैत अछि।

१३

अनमोि झा सँ युवा लहला कथाकार एवं समाि‍िक मुनाजीक अन्तरंग गपशप

राग देष, भेदभाव, मैलि‍ीक उठापटकसँ दूर एकान्त भऽ अपन पारलमक रिना समएसँ आइ धल अनवरत लहला कथा िि‍नमे ि‍ीन शी अनमोि झा सँ युवा लहला कथाकार एवं समाि‍िक मुनाजीक अन्तरंग गपशप:

मुनाजी: भाइ नमस्कार। सामान्यतः रिनाकार सभ कथा-कलतासँ लीि‍ब शुर करैत ि‍थ मुदा अहा लहला कथासँ रिना लीि‍ब पारमभ कऽ लहला कथेके पमुि‍तासँ लीि‍त रहि‍हे। एकरा पल रली वा आदर कोना जागि?

अनमोि झा: नमस्कार भाइ। बहुत-बहुत नमस्कार। शुर तँ हम केने रही- ‘‘बाबा कहलान महरानी’’ कथासँ जे हमर पलि‍ रिना ि‍ि। मुदा तकरा बादेसँ हम लहला कथा लीिऽ गि‍ि। जहा धल रली आ आदरक पश अली भाइ, से लालात रपसँ हम कहब जे ऐ ि‍ि हम ‘‘सगर राल दीप जरय’’ (कथा गोषी) सँ बहुत उपकृत होइत रहि‍हे। हम दोसर कथागोषी जे २९.०४.१९९० ई. मे शी जीवकान्तअ जीक संयोजनमे भोि उिल लदाि‍य, िओढमे भेि रहए, तलयासँ जुड़ि ि‍ि। आ ओइसँ ि‍ल-भास सभ लाि‍त रहि‍हे।

ओना कथा गोषीमे कथाक पधानता रहैत अली। एम्हर आल कऽ थोड़-थोड़ लहला कथा सभ सेहो पढि जाइत अली, जकर हमरा आतुरताक संग पतीका रहैत अली।

अन्य भाषामे लहला कथा लीन्हार भऽ स्थालत भऽ गेि अली। मैलि‍ीयोमे कथाक संगे-संग भारतक सभ भाषा ि‍ग ई ठाढ हो, स्थालत हो, तँए हम लहला कथेके पमुि‍ता दऽ रहि‍ अली।

मुनाजी: लहला कथाक अलालक्त कथो लीि‍ि आ से ि‍पबो कएि। दुनूक मध्य की समानता आ लानता अली? दुनूमे सँ जे एकटा पलान करए ि‍ि कहि जाए तँ ककरा पलान करब आ लकएक?

अनमोि झा: हमर एिन धल १६० टा लहला कथा मैलि‍ीक लतान पत-पलका आ संकिनमे पकालात अली, जकर सभ पत-पलका आ संकिन हमरा ि‍ग उपिध अली। एकर अलालक्त आरो कत ि‍पि अली आ से हमरा सूिना नै अली से सभ ि‍ल़ कऽ। आ तलना सतरहटा कथा सेहो पकालात अली।

कथा आ लहला कथाक मध्य समानता आ लानताक बात पुि‍त ि‍ि से हमरा जनैत उपन्यास आ कथामे जे समानता वा लानता अली सएह कथा आ लहला कथामे अली।

दुनूमे सँ लालात रपे हम लहला कथाके पलान करब। कारि ऐमे जे मारक कमता होइत अली से आन कोनोमे नै। आ सफि लहला कथाक ईएह गुि अली जे ओ पाठकके लना ममाहत केने नै ि‍ल़ सकैत अली।

मुनाजी: लहला कथाक अलालक्त बाि कथा सेहो लीि‍त रहि‍ अली, आर की की लीि‍त ि‍ि? सभ तरहक ि‍िनक की उदेश्य?

अनमोि झा: बाि रिना लीि‍त हमरा नीक ि‍गैत अली तै लीि‍त ि‍ि। जिन हम ई लीि‍त ि‍ि तँ अपना-आपके बािपनमे अनुभव करैत ि‍ि जे नीक ि‍गैत अली।

एकर अलालक्त कथा, कलता, लपोताज लीि‍त रही आ एिनो हलका-फलिक लीि ि‍त ि‍ि। एकर सबहक

पाि कोनो तेहेन उदेश्य नै अछि। मुदा लघुकथा कथा हमर पाि ि आ तै एकरे सभटा समस्या अछि।

मुनाजी: मैथिलीमे लघुकथा कथाक कोनो मोजर वा पुछि नै ि। लघुकथा कथाकारक तँ कोनो नामे निशान नै बुझाि जाइि। एहन स्थितिमे जगजियार हेबासँ बेसी हेरा जएबाक सम्भावना अछि। ऐ स्थितिमे अपनाके कोना पबै ि?

अनमोि झा: हम जतऽ ि ठीक ि। मैथिलीमे ओनाहो बड़ पेि-पाि िक। बिना पैरबी, पाइ वा पदक लिक ि नै होइत िक आ से हमरा िग नै अछि तै हेरा जाएब वा जगजियार होएब ई बिना माथामे रािने लघुकथा कथा लिखि ि आ लिखि रहब।

मुनाजी आब मैथिलीमे लघुकथा कथाक मोजर वा पुछि नै िक से नै कहल जाय। यद्यपि अहा सन समस्या िक आर थोड़बो भेल जाइ मैथिलीके तँ अपने ने मोजर भऽ जेतै एकर।

मुनाजी: अहा एिन धरि ढेर रास लघुकथा कथा लिखि गेल ि। संख्यात्मक बि बडि मजगूत ि। मुदा लिकि रािना कमजोर बला सोझा आएि अछि। तँ अहाके नै ििगै जे बेसी लिखबासँ बेसी आवश्यक अछि जे कम्मे आबए मुदा ठोस रािना आबए?

अनमोि झा: अहाक कहब यथाथमअछि भाइ। ओना धान कुटिपर िउरमे ििदी हएब स्वाभाविक अछि। ििदीमे िउर नहि ने देखि इ अछि अहाके।

ओना अहाक सुझावक स्वागत अछि। हम एकर ध्यान राखब।

मुनाजी: अहाके िढ दशकक अपन लघुकथा कथा यातामे की अनुभव रहि। तहियासँ आइक स्थितिमे की अन्तर ि।

अनमोि झा: िढे दशक लिकएक कहैत ि मुनाजी। दू दशक ने कहलयै। हमर पहिल पकाशित रािना २ टा लघुकथा कथा घृणि-स्नेह आ लिवश ितना सत्यप्रकाशक सम्पादकका लिदापत्रा स्मृति पवम १९९१ ई. मे िपि अछि। िएर िड़ू, काजक गप करी।

लघुकथा कथा याताक मादे की कहू भाइ, हमरे सन थेथर िक अछि जे १९, २० बरि सँ एकरा पकड़ने कऽ ििन करैत रहि। बड़ दुरह रस्ता ि ि तिन (एिन नै) आ तै बहुत गोटा ऐ लिधामे आबि कऽ फेर अपन कथा-कविता लिस ि गेिहि। देखिलिह जे नाम ने जस तँ की करब एतऽ। ऊपरसँ उपहासे। ओना आब पुिबला तँ कहता ओ सभ एकर जन्मदाते हम ि तँ हम ि।

मुदा हमरा ऐ लिधामे मोन िगैत अछि आ ऐ बि िक लिन्हतो अछि हमरा। एिन पहिलुका सन स्थिति नै रहि। लघुकथा कथा मैथिलीमे अपन स्थान बना िने अछि, जकर पमाि पत-पत्रिकाक लघुकथा कथा लिशेषाक आ सभ पत-पत्रिकामे लघुकथा कथाक रहब अछि। एकर भविष्य नीक अछि। िकके कथा-उपन्यासके पढबाक पििता नै िक एिन। एहन स्थितिमे ओ सभ बात लघुकथा कथामे कलाये कािमे भेल जाइत ि। तँ एकर पाठको वगमतैयार भऽ गेि अछि। लिनानुलिन लघुकथा कथाकारो सभ उभि कऽ आबि रहिहे आ से सतति रािनाशीि िथि। आजुक पत्रपेक्ष्यमे लघुकथा कथाक तुिनात्मक स्थिति नीक अछि, बहुत नीक जे रािनाकार सभ थोड़े लिखि कऽ पड़ा नै जाइत िथि आन लिधा लिस।

मुनाजी: अहा अपन सवस्म ऊजा लघुकथा कथामे िगा रहि ि। ऐ यातामे आर के सभ सहभागी ित्थ आ हुनकर सभक की रती िला।

अनमोि झा: हमर ऐ यातामे शी सत्येन्द्र कुमार झा, शी गजेन्द्र ठाकुर, शी मुनाजी, शी अमिन्दु शेिर पाठक, शी लाल्यिश कुमार झा, शी रघुनाथ मुती याक संग आर कतेको नव िक हमरा संग आ सहभागी ित्थ। आ लनका सभसँ मैत्थिी लघुकथा कथा बहुत आशा रित अिछ।

लनका सभक रती नीक िला। ऐमे शी सत्येन्द्र कुमार जीक तँ एकटा लघुकथा कथाक संगह पकाशात िला आ दोसर पकाशनाथमओलयाओि िला।

मुनाजी: अन्यान्य कथा सािहत्य मध्य मैत्थिी लघुकथा कथा कतऽ देिइि आ एकर की भिवष्य ि?

अनमोि झा: अन्यान्य कथा सािहत्य िग मैत्थिी लघुकथा कथाक पहुँि पायः एिन धिर नै भेि अिछ। कारि अिछ एकरा घरेमे आ अपने िक मोजर दैक ि ि तैयार नै ित्थ। जे शुर-शुरमे सभ भाषामे लघुकथा कथा अपन जगह पाबै ि ि झेिने आ भोगने ि ि यएह बात एकरो संग भऽ रहि अिछ।

मुदा एकर भिवष्य उज्जवि अिछ। लनपर लन नीक-नीक लघुकथा कथा सभ सामने अबैत अिछ जे अपन मजगूतीक बात कहैत अिछ।

मुनाजी: अहाक लघुकथा कथा संख्याक बि मजगूत होइतो एकर कोनो संगोर सोझा नै आएि अिछ, आगामी योजना की अिछ?

अनमोि झा: हमर धिर कोनो संगह नै लाकि ि अिछ तकर पमुि कारि अिछ अथम हम एकटा पाइभेट कम्पनीमे काज करैत ि। ततएसँ नून-तेिसँ बेसी नै लकि होइि जे ई सभ लकि करब।

कोनो संस्था, पकाशक वा व्यक्ति ओकरे पोथी पकाशात करैत ित्थन जे अपने सम्पन हो वा जकर पहिसँ पोथी पकाशात होला। हम तहूमे िटा जाइत ि।

ओना हमर तीनटा लघुकथा कथाक पाण्िुिलिप तैयार अिछ, तीनटा फाइि कऽके। पहि लघुकथा कथाक संगहक पाण्िुिलिप जे तीन साि पहिने ि. लदानाथ झा "लदत" जीके देने रहियला। ओ कहिला जे ि िसि बि सँ कम उमेरक सािहत्यकारके सािहत्य अकादेमीमे पोथी िपैक पावधान िक, तइमे िल जाएत।

दू साि बाद कहिला पेसमे अिछ। तकरो आब एक साि करीब भऽ गेि। कत पता नै, कोनो सूिना नै।

दोसर संगहक पकाशन ि ि शी गजेन्द्र ठाकुर जीके लावेदन कएि जे शुला पकाशन बहुत मैत्थिी पोथी िपैत अिछ। एकटा हमरो लघुकथा कथाक संगह िपिवा लअ। ओहो स्पष रपे नै तँ नै कहिला, हँ भऽ जेतै आशासन देने रहत्थ। ओकरो कतेक लन भऽ गेि। कोनो बात फेर आगा नै बढि।

तेसर लघुकथा कथा संगहक पकाशन ि ि कोिकाताक "लाल्थि सास्कृतिक पिषद" िग पाण्िुिलिप जमा कएि अिछ। देिी य की होइत अिछ। जि ने कतसँ िपत ति ने बुझवै जे छपि।

आगामी योजनाक मादे पुिित ि से योजना की रहत भाइ। हमरा सन साधारि िक ि कोन योजना आ कथीक योजना? हँ एकटा योजना धिर अवश्य अिछ जे लघुकथा कथा िति रहब, से सदिा िति रहब।

िपय तँ सेहो नीक, नै िपय तँ सेहो नीक। संगह आबए तँ सेहो नीक, नै आबए तँ सेहो नीक। धिर जीिवत रहब िवहिन कथा अवश्ये हम।

मुनाजी: दू दशकक िवहिन कथा यातामे अपनासँ विरष (पुरान वा मध्यम पीढी)क केहेन सहयोग/ िवरोधक आभास भेिट, हुनकर सभक योगदानक िवषयमे की कहबै?
अनमोिल झा: हमरासँ विरष (पुरान वा मध्यम) पीढीक सािहत्यकार सभक सहयोग सदित भेटैत रहिल अिछ। बीिच-बीिचमे उठा-पटक सेहो ओ सभ िूब करलिथ। हमर िवहिन कथा िS कS मुँहो-कान िूब घोकिबलिथ। हमरा मोन अिछ जे िवराटनगर कथा-गोषी (१४.०४.१९९२ ई.) मे हमर िवहिन कथाके सभ िमलक कS हवामे उड़ा देििन। तकरा बाद सभके िलिज करैत गुरवर पं. शी गोिवन्द झा हमर ओइ िवहिन कथाक पशंसा केििन। हमरा बिल भेटिल आ हम िवहिन कथा िलििते रहिलौं।
ओना िवशेष रपे कहए पड़त जे ऐ ठोक-ठाक उठा-पटकमे हमरा हतोत्साह नै, एक पकारक बिल भेटैत रहिल, जे एना नै एना िलििसँ नीक िवहिन कथा बनत।
आर एिन वएह िलक सभ पटना कथा-गोषी (२१.०२.२००९) मे हमर िवहिन कथा टेकोिजी आ युद क पशंसे नै केििन, भिर रातामे कएक बेर ओकर बड़ नीक हेबाक िििन करैत रहििह।
हमरा ऐ िवधामे शी पदीप िबहारी, शी तारानन्द िवयोगीक सहयोग आ योगदान िवशेष रपसँ भेटिल। आ हम हुनका सभसँ आ हुनक िवहिन कथा संगह सभसँ बहुत िकछु िसििलिहे।
अस्तु, धन्यवाद भाइ।

१४

पि र  दृष्टदशी एवं फलािएि कथाकार शी  दुगानन्द मंिि जी सँ युवा लवहला कथाकार  मुनाजीक भेटवता

हम पुिित िी- मुनाजी

शब्दक जादूगर मैत्थािी समीक्षक पि र

दृष्टदशी एवं फलािएि कथाकार शी

दुगानन्द मंिि जी सँ युवा लवहला कथाकार

मुनाजीसँ भेटवताक साराश अहा सबहक

आगा रािि जा रहि अवि-

मुना जी- अहा मैत्थािीक रििना कोना आ कलहया पारंम्भ केिी, एतेक लदन धवल हेराएि वा नुकाएि लकए रहिी?

दुगानन्द मंिि- जी हम मैत्थािीक रििना शी जगदीश पसाद मंिि जीक स्नेहाशीि अजस पेरिाक बि 2009मे शुर कएिहुँ। जहातक नुकाएि वा हेराएिक भाव अवि तँ हम कहए िाहिब जे हम नै तँ नुकाएि रही आ ने हेराएि रही, हँ तिि अलुआ जका झपाएि जरर रही।

मुना जी- अहाक कथाक गढला बडि ठोस होइि जेना सोनारक एक-एक गाँथि मोती जका अहा एहेन शब्द पयोग कोना कऽ पबै िी, स्वाभालवक रपे वा शब्द संगोर मात कऽ रििना करै िी?

दुगानन्द मंिि- कथाक गढला पयुक्त शब्द स्वाभालवक रपे रहैत अवि। संगोरसँ ततबेक दूर जते की गदहाक माथमे सीग।

मुना जी- अहा कथा पाठ करबाकाि सेहो एक-एक शब्दके फलिि शोताक सेझा रावि ओकर अल्सतत्वके फलिि दैत िी एकर की ध्येय?

दुगानन्द मंिि- कथा पाठ करबाकाि एक-एक शब्द शोता बन्धूक सोझा राि ब ओकरा अल्सतत्वके फलिि देब, कथाके सोझरा दैत अवि। कथा शविािए भऽ जाइत अवि आ शोता बन्धू शवि करैमे सेहो आनन्दक अनूभव लालवित रपे होइत िलह। जे एकटा फलािएि कथाकारक कथाक साथकता त्मक।

मुना जी- गैर बाभन वगसँ कलाएि रििनाकारक कलायेवाक वा नुकएि रहवाक की कारि अपन रििनाक सामथ्यहीनता वा आर कोनो लवशेष कारि?

दुगानन्द मंिि- गएर बाभन वगक कलाआएि रििनाकारक कलायेबाक वा नुकाएि रहबाक कोनो एक-आधटा

कारि नै अछि। जँ विस्तृत रूपसँ िि मिकएि जाए तँ मैथिलीी साहित्यक क्षेत्त वा ओकर विस्तार मात एकटा जाति वा वर्गविशेषसँ देिि जाइत रहि। जेकरा ओ िकिला अपन पूर्वजक धरोहरिक रूपमे अमानति बुझैत रहिह। मुदा आइ मैथिलीी साहित्यक विस्तार ओ अपन सभ पत्तिसमनसँ बहरेबाक िि औना रहि ििह। मुदा वर्गविशेषक छीिि एकटा सीमा-रेिि जेकरा ििया कऽ बाहर भऽ जाएब बडि कठीन िि। नेउसकफम िि आइयो अछि। जेना जँ कोनो गएर-हिि-कििकायस्थ वर्गक िकिके साहित्यसँ अनुराग होइ तँ सभसँ पहिने अपन मातृभाषाक पत्ता हेबाक ििही। मुदा जिन ओ मातृभाषा (मैथिलीी)मे छीिए िि कमि उठबैत िथि तँ बैसिअर जका ओहन-ओहन शब्द सभ आबि ठाढ भऽ जाइत अछि जे ओ अपना जीवनमे तँ अपने नहिये बाजि ििह अपितु िकनको मुँहे कििनो-कहियो सुननहुँ नै ििह। तँ हमर कहबाक भाव मुनाजी अपने करीब-करीब बुझि गेि हएब। एतबे नै समए-कुसमए मैथिलीी साहित्य ििनमे नीकसँ नीक कथाकारक पदापणि भेि मुदा ओइ कथाकार िकिलामे सँ अप्रकाशके वर्गविशेष पदाक पािि रििि। मात िकि लानि-ििनि कथाकार िकिलाके पदापर आनि गेि। जे वर्गविशेषक कोनो ने कोनो रूपमे पढीिगि वा मुँहिगि बला हुनकहि शब्द आ बोिीके (जे मात छीिि जाइत, बाजि नै) पशय दैत रहि। ओना ई अिग बात जे आजुक पत्तिस्थिति थोड़ैक बदिि सन बुझाइत अछि। तहु िि हमर कहब हएत जे बदिित पत्तिस्थितिके देिि गएर िहिि वा िकनका दऽ अपने कहऽ िहैिि ओ सभ आगा आबि रहि अछि। आ आरो एता से विश्वास अछि।

मुना जी- अहा समीक्षा सेहो छीिि, समीक्षक पमुि आधार की रििि, रििाकारक व्यक्तित्व विशिषि वा कृतित्व विवेिन?

दुगानन्द मंडि- मुनाजी, ओना हम कोनो समीक नै िि। आ ने समीक्षा करबाक हमरा सामथ्र्यमअछि। समीक्षा जगतमे एकसँ एक, पैघ समीक्षक सभसँ अपनेक भेट-घाट भेि हएत। जे पिर समीक्षकक रूपमे जानि जाइत रहिहे। तिन समए पाबि जे िकि एक-आधटा छीििि। तैसँ हमरा समीक्षक नै मानि जाए। तिन, अपनेक पश्न- समीक्षामे व्यक्तित्व विशिषि वा कृतित्व विवेिन- तँ विारनीय अछि। समीक्षक पमुि आधार कोनो एकटाके नै मानि दुनूके आधार बनाओि जाए। िकएक तँ कथाकारक कोनो कथाक समीक्षाक आधार जतबए हुनकर व्यक्तित्व विशिशन रहैिि ततबाए कृतित्व विवेिन सेहो। तिन िगता ऐ बातक अछि, जे िकि ओ कथाक मादे पाठकके देमए िहैिथन ओकरा ओ अपना जीवनमे कतेक अनुशरि करैिथि?

मुना जी- अहाक कथाक मुख्य बिन्दु की होइि, कोनो कथाक कथानक कतए केन्द्रित रहैि?
दुगानन्द मंडि- कथाक मुख्य बिन्दु गाम-घर, सर-समाजसँ जुड़ि समस्या आ लादानक संग अपन सभ्यता-संस्कृतिके यथावत रििनाइ। आ से सभ बिन्दुपर।

मुना जी- गैरबाभन रििनाकारक उपस्थितिक भविष्य अहा केहेन देििि, बाभन वा जमि रििनाकारसँ उििि हेरा जाएब वा अपन फिलएिि दृष्टिएँ ओइसँ आगु िग बढा स्थापित हएब सन?

दुगानन्द मंडि- हिनकर सबहक भविष्य एकदम सवर्णिम अछि। कारि अहा नीकसँ जनैि जे अपन समाजमे

अ िनो वैिदक व्यवहार-िािर-ि िन ुिवदमान अिछ आ से हुनके सबहक बीि अहा देि ब। तािवित र पे अपने ऐपर िवश्वास करी जे जँ ओ इमानदारी पूवकक र िना करता तँ सत्यक समीप रहैक कारि ओ िकनकोसँ फलािएि दूिवटएँ सोझा औताह। त िन िगता ऐ बातक अिछ जे ऐ कमकके ुो अपन तपस्या बुझिथ। पूमि िनष्ठा आ िगनसँ िि नीके अनवरत र पे साधिथ।

मुना जी- अहाक कथेपर केलादत र िनाक मूि उदेश्य की अिछ, एकर अितिरक्त आर की सभ र िना करैत िी?

दुगानन्द मंि ि- कथापर केलादत र िनाक मूि उदेश्य पाठक बन्धुके पूिममनोरंजनक संग समाज बीि व्याप्त आराजकता, अंधिवश्वास, जाित-पाित आिदके दूर करैत एकटा मानवीय मूल्यके स्थािपत करब। जहाधिर आर-आर र िनाक पश्न अिछ। मुना बाबू तै सम्बन्धमे हम ई कहब जे शुर हेसँ अथात् जिहयासँ पाटीपर िखि ब िाड़िहुँ पोथीक अध्ययन करब शुर केिहुँ तिहयेसँ सािहत्यक िवधा- कथा, उपन्यास, किवता आिदसँ बडि िसनेह रहि। किहयो काि िवहिन कथा, किवता सेहो िखि ित रहिी। िवश्वास अिछ जे आगा और िखि ब। िवदेह पित्रकाक सम्पादक शी गजेन्द्र ठाकुर जीक िसनेहसँ हमरा अपनामे सृजनात्मक शिक्तक संि ार भेि। बहुत रास एहेन शब्द सभ जे मैिथिी सािहत्यमे अपयुक्त ि ि। जेकरा ठेठ कहि जाइ िि ओ ज िन ठाकुर जीक िखि ि पोथी कुर केतम अन्तमकनक पिढ देि ि हुँ आ जनिहुँ तँ आरो िवश्वास भS गेि।

मुना जी- भिवष्यमे अपन जाित-िबरादरी (िपिड़ि कोनो जाितक) िकक उपिस्थितक िनरन्तरता बनेने रहबाि अहा कोनो िग उठाएब वा एकरा अनिहया देब उिित बुझब?

दुगानन्द मंि ि- भिवष्यमे अपन जाित-िबरादरी (िपिड़ि जाितक) उपिस्थितक िनरन्तरता बन ने रहबा िि एकरा अनिहया देब उिि न नै अिपतु समए-समएपर नवसँ िS कS पुरान कथाकार िकलाक बीि ठाम-ठाम िि, पिति ि, पाि-दस कथाकार िमि कथा गोिष्ठक आयोजन, कथा-पाठ आिदपर उिित समीक्षा करब। जइठाम मैिथिी पत-पित्रकाक अनुपिधिता अिछ ओइठाम दस-बीस पाठक बना पत-पित्रका वा पोथी आिद मंगाएब। ओकरा अपनहुँ पिढ दोसरोके पढबाक आगह करब। िक ु िखि बा-पढबाक पेरि देब हम उिित बूझब।

मुनाजी अपने हमरा...... बुझि हुँ। ऐ िि धन्यवाद।

१५

शी लात्यािशि कुमार झासँ हुनक साहित्यिक याता मादे मुनाजीक भेि गप्प सप्पक मुख्य अंश

युवा पीढीक दृत्व फरीि लाश्शन त्वहला कथाकार एवं लाबन्धकार शी लात्यािशि कुमार झासँ हुनक साहित्यिक याता मादे मुनाजीक भेि गप्प सप्पक मुख्य अंशके अहा सबहक सोझा राि िजा रहि अिि।

मुनाजी- अहा सत्कयताक संग मैत्याि िलहला कथाके अपन रिनाक आदशममाला रिनारत िि, कहू जे अपन साहित्यिक रिनाक पारम्भ कोना कएि?

लात्यािशि कुमार झा- सतमामे पढैत रही । त्वन्दी सहित्यिक कोनो कलवताक अंतमे पशमाािक बाद भाषा-त्वस्तारक गत्वावत्यमे एकटा शीषक्क देि रहै-'आँधी आई-आँधी आई ' आ ताहीपर कलवता बनेबाक रहै। ततहिसँ हमर साहित्यिक रिनाक आरम्भ अिि। नवम-दशममे आत्व मातृभाषाक रपमे मैत्याि िरि िहुँ आ रिनाक भाषा स्वभावत: मैत्याि िभऽ गेि ।

मुनाजी- अहा त्वहला कथाक अत्वालक्त सुन्दर बाि साहित्य सृजन आ लाबन्ध ििन करैत िि। सभसँ बेशी संतुत्व कोनो त्वधाक कोन पकारक रिनासँ भेटैि?

लात्यािशि कुमार झा- कोनहु रिनाकारके संतुत्व तििन भैटैि जििन ओ अपन मोनक बात ठीक-ठीक अपन रिनामे कहबामे सफि भऽ जाइत अिि आ ओहि बातके पाठक ठीक ओही रपमे बुझ्म जाइत िकि । त्वधाक बात कही तँ हमरा बुझने त्वान-त्वान बातक हेतु त्वान-त्वान त्वधाक िगता होइत िि । सभटा बात एकहि टा त्वधामे कहब मोसक्कि। तै, कोन त्वधा हमरा संतुत्व दैए से कहब कठिन । हँ तििन, कलवता हमर त्वय त्वधा अवस्स त्वयक । ओना हम बहुत कम कलवता लीिि पबैत िि।

मुनाजी- अहा वतमानमे बागि पत्वेशमे गुजर कऽ रहि िि, तँ कहू जे बागि मध्य मैत्यािीक की अत्स्तत्व िगैि, दुनूमे की घटी बढी देिाइि?

लात्यािशि कुमार झा- मैत्याि िआ बागि दुनू बहिला त्वयकीह । पहिने बंगािके मैत्यािीसँ पाि भेटि िि । एिन मैत्यािीके बंगािसँ पेरि भेटै िि । सम्पत्ता रिनाक माताक स्तर पर , पाठकक संख्याक स्तरपर , पत-पत्ताकाक संख्याक स्तरपर , मातृभाषाक हेतु समत्वत्त क्यात्क्तक संख्याक स्तरपर बंगि मैत्यािीसँ बडि बेसी आगा ठाढ अिि। बंगभाषी आनहु ठाम बत्स गेने अपन भाषा नहि िाड़ैत अिि। मैत्यािीभाषी अपनहु घरमे त्वन्दी िकरै ित्यि। भाई , कतेक कहब.... बड़ अन्तर िि ।

मुनाजी- अहा अपन एकान्त सृजनमे सृजनरत िि, जििन की मैत्याि िसाहित्य मध्य समूहबाजी िग-िगपर देिा पड़ैि। एनामे अहाक एतेक लाश्शन रिना देबाक पिलायो साहित्यपट सँ हेरा जेबाक वा वेरा देबाक सम्भावनाक शंका नै देिाइए?

लात्यािशि कुमार झा- हमरा ने तँ गोिसी करऽ अबैत अिि आ नै ओइमे त्वशास अिि। एकटा सुचिा रिनाकारके अपन रिनाकमसँ सरोकार राििक िाही सन्तके सन्त कहक िाही-बस्स। हेरा जेबाक त्वकंवा वेरा देि जेबाक मादे कोनो शंका हमरा नहि अिि । त्वकएक तँ जे सुचिा िकि ित्यि से तँ एना नहिए टा करताह । आ जे गोिसी केलाहार आ तबेदारी पकृत्वाक स्वाथी िकि ित्यि से ककरो नहि, कोन गड़े कििन केम्हर बैसताह से बूझब िहोि िअसंभव । तँ हुनकर लीिता बेकार !

मुनाजी- महानगरक व्यस्त जिनगी मध्य अहाक सोचि सामाजिक उकस-पाकसके बडि गहीरसँ नाथि सृजन करबामे सफल होइत देखि रहल छी। एकर कोनो विशेष मूल-मंत्र तँ नै अछि।
मिथिलेश कुमार झा- महानगरमे रहितो हमर आत्मा गाममे बसैए । संगहि जीवन-संघर्षमआ सामाजिक सरोकारक अनेक तीत-मीठक अनुभवके हमर मूल-मंत्र अहा कहि सकैत छीऐ।
मुनाजी- अहा पत्रकारितामे सेहो अपनाके अजमेने मुदा आब ओइसँ विमुख ता देखाइछि, ओकर की मूल कारण अछि?
मिथिलेश कुमार झा- हम पत्रकारितामे अपनाके एखनहु अजमा रहल छी । के कहलक जे हम ओइसँ विमुख भऽ गेल हुँ ? 'मिथिला मिहिरक सनेस', 'श्री मिथिला', 'मिथिला समाद', मिथिला दर्शन', 'कर्णामृत' आदि मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे हमर आलेख आ रिपोर्टसभ पत्रकारिता नहि तँ आर की थिक? हँ , तखन वृत्तिक रूपमे सहायक संपादक , रिपोर्टर आदि क्षेत्रमे (हिन्दी पत्रकारितामे) हम प्रकट नहि भऽ सकलहुँ । श्री संतोष सिंह झा हमरा गुहाटी बजेबो केलनि तँ कतिपय कारणे हम नहि जा सकलहुँ , से बात फराक ।

मुनाजी-मैथिली पत्रकारिताक वर्तमान दशा आ भविष्यक दिशा अहाक नजरिमे केहेन देखाइछि?
मिथिलेश कुमार झा- मैथिलीमे साहित्यिक पत्रिका सभक संगहि 'समय-साल' सन समाचार केन्द्रित पत्रिका आ 'मिथिला दर्शन' सन पारिवारिक पत्रिका बहार भऽ रहलए । किंतु , बहुत रास रचि ओ विषय कि जानिपर पत्रिका बहार कएल जेबाक चाही से धरि कोना हो , विचारणीय। सर्वाधिक आवश्यक बाल-पत्रिका अछि जे नहि बहार भऽ रहल अछि । माने, पत्रिकाक स्तरपर पत्रकारिता एक-भगाह अछि । दैनिक पत्रक नाम पर 'मिथिला समाद' मात्र छैक तँ रहलए अवस्स उदा मजगूत नहि भऽ सकलए । सभ मिला कऽ मैथिली पत्रकारिताक वर्तमान संतोषजनक नहि कहल जाए । तखन, एकर भविष्यक प्रति आशा राखल सकैत छी ।

मुनाजी- मैथिली विहनि कथा (विहनि कथा)पर वर्तमान क्रियाकलापे एकर वर्तमान आ भविष्य केहेन देखा पड़ैछ। एकरा फरीछ हेबा लेल आओर की सभ कमी देखाइछि?
मिथिलेश कुमार झा- मैथिली विहनिकथाक मोजर आरंभ भऽ गेल अछि । वर्तमानमे ई विधा जड़ि जमा लेलक अछि । एकर भविष्य खूब नीक छै आ ई सर्वाधिक पढ़ल जाएबला साहित्यिक विधा बनि जाएत से हमरा पूर्ण विश्वास अछि । एहि विधाके आओर लिखनिहार बनेबाक छी आ प्रोत्साहन करबाक छी रचनाकार लिखनिहारके सचेत भऽ कऽ मेहनति करक चाहियनि। एकर एक-एकटा शब्दक अपन ओजन होइत छैक, तै धरफरा कऽ विहनि कथा नहि लीखल जेबाक चाही । धरफरी मे रचना कएने ई टिटुका बनि जा सकैछ आ कि लांगहेस भऽ फेका जा सकैछ।

मुनाजी- विहनि कथापर पूर्वक पीढी (पुरान आ मध्य) द्वारा कएल गेल काजके अहा कोन रूपे मूल्यांकन करब। ओकर निरन्तरतामे नवका पीढीक योगदानके कोना सोझा आनऽ चाहब?
मिथिलेश कुमार झा- विहनि कथापर पुरनका पीढी जे काज कएलनि से आरंभिक काज छै। ओ लिखलनि न्यो तैयार कएलनि, दाबा जतलनि आ ताहिपर नवका पीढी देबाल ठाढ कऽ रहल छथि। आबऽ बला पीढी ओइपर

महि बनाओत । पुरनका पीढीक समय आ परिवेशसँ एखुनका पीढीक समय आ परिवेशमे बेस अन्तर एछि। आ तैं, ई अन्तर विहनिकथाक कथ्यक विविधताक रूपमे सोझा देखार भऽ रहल अछि । एना कही जे एखुन एकर कथ्य ओ शैलीमे स्वाभाविक रूपे नवीनता ओ विविधता एछि । जीवन ओ अनुभवक प्रत्येक क्षेत्रमे हुलकी दैत सन लगैए वर्तमानक विहनिकथा।

मुनाजी- मैथिली बाल साहित्यक स्थिति केहेन देखाइए। अकादेमी द्वारा बाल साहित्यक घोषणासँ एकर भविष्य कतेक प्रभावित हएत (घटी-बढी दुनू दृष्टिएँ)?

सतीश कुमार झा- मैथिली बाल साहित्यक स्थिति दयनीय ओ चिंतनीय अछि। तथापि एहि क्षेत्रमे ऋषि वशिष्ठ, महाकान्त ठाकुर, जीवकान्त, अनमोल जी, वियोगी जी आदि नीक काज कऽ रहल छथि। बाल-साहित्यक क्षेत्रमे हम अपनहुँ सक्रिय रहैत छी। आर अधिकाक प्रयासक बेगरता अछि। साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कारक घोषणासँ बाल साहित्यकार प्रोत्साहित होएताह। पोथी सभ प्रकाशित होएत। बाल साहित्यक मोजर बढत । बाल साहित्यक रचनाकार अपनाके अबल नहि बुझताह । किंतु ,पुरस्कारक लोभमे बाल साहित्यक नामपर अँकटा-खेसारीया ने छपय लागय से चिंता स्वाभाविक रूपे उभरि आयल अछि । एहि हेतु सभ गोटे सतर्क रही ।

१६

हम पुि त ि: बेिन ठाकुरसँ मुनाजीक गपशप

हम पुि त ि: िवदेह मैिथली समानान्तर रंगमंिक संस्थापक मैिथली नाटक आ रंगमंिक आइ धिरक सभसँ पैघ नाम बेिन ठाकुरसँ मुनाजीक गपशप

गमैया नाटकक पिरवेशजन्य आधुिनक मैिथली समानान्तर नाटक आ रंगमंिक सृजनकता एवं िवस्थापनभावनासँ रिनारत शी बेिन ठाकुर जीसँ हुनक रिनात्मक पिकया मादे युवा िवहिन कथाकार मुनाजी दारा कएि गेि िवल्यान पशक उतारा अहा सबहक समक देि जा रहि अिछ।

मुनाजी- पिाम ठाकुरजी!
बेिन ठाकुर- पिाम मुना भाय!

मुनाजी- सािहत्यक मुख्य: दू गोट िवधाक एतेक रास पकारमे सँ अपने नाटकक सजनाके पाथिमकता देि िकए? एकर कोनो िवशेष कारि तँ नै अिछ? अहाक समानान्तर रंगमंि जे आन्दोिन शुर कएने अिछ ओकर मादे िकछु कहए िाहब।
बेिन ठाकुर- मुनाजी, अहाके तँ बुझि हएत जे मैिथलीमे जाितवादी रंगमंि, िास कऽ महेन्द मििानीया (ओकर आंगनक बारहमासासँ िऽ कऽ िुतिहा घैि धिरमे ई जाितवादी शब्दाविी भरि अिछ) आ हुनकर िवचारधाराक िोक, कोन तरहे पत-पितकाक माध्यमसँ आ सरकारी आ गएर सरकारी फणि आ सहयोगक माध्यमसँ गएर सविर्णक पित गािि आिदक पयोग कऽ रहि िथि, ओकर संस्कृितके तोिड़ कऽ पस्तुत कऽ रहि िथि, ओकरा िि एहेन मैिथलीक पयोग कऽ रहि िथि जकरासँ ई िगैद हुअए जे ओ सभ मैिथली भाषी िथिए नै, कत बाहरसँ आएि िथि। आब मलंगिनयाक संसि ई काज िहन्दीसँ मैिथलीमे अनूिदत नाटकमे सेहो केलक, रामेशर पेमक नाटकक मैिथलीमे "जल डमर बाजे" रपमे घृिणत अनुवाद आ मंचन भेल, गएर सवणिलेल तिाकिथत िटहा मैिथलीक पयोग कएल गेल, िहन्दीमे रामेशर पेम ऐ तरहक पयोग नै केने िथि, रामेशर पेम सेहो ई हेबऽ देबा लेल दोषी िथि। िहन्दी सन कोनो भाषा आ मैिथलीके िवखयात कऽ ओ िोकिन ई िगैद करबामे िागि िथि जे ईएह िवखयात भाषा िवखयािक भाषा िी, आ ऐ तरहे मैिथलीके मारबा िि िवतमि िथि; िकछु थोपड़ीक िोभे सेहो ओ ई कऽ रहि िथि। ओना तँ जइ पितका आ सरकारी-गएर सरकारी माध्यममे एकर िोिमहोइए ओकर पढिनहारक संख्या तँ शून्यमे अिछ मुदा ओ सभ जँ अहा पढू तँ िागत जे जे अिछ से जाितवादी रंगमंि अिछ, ओना ओ वास्तिवकतामे मैिथली रंगमंिक दसो पितशत नै अिछ। आ यएह सभ कारि शुरसँ िवदमान िि जइ कारिसँ हम समानान्तर रंगमंि पिि ि २५ सािसँ िििबैत रहिौ। मुदा एकर कोनो िववरि मैिथलीक जाितवादी पितकामे नै आएि। मुदा जिन पिहि िवदेह मैिथली नाटय उत्सव २०१२ भेि तँ ९०% िोकक समानान्तर रंगमंिक धाह ओइ जाितवादी रंगमंिके/ मानिसकताके बुझा पड़ऽ िागि। रामदेव झा अपन दूटा पुत िवजयदेव झा आ शंकरदेव झाक संग मैदानमे आिब गेििह आ अपशब्दक पयोगक शुरआत

केलिह। मलािया जी अपन दुनू पुत िकीत कुमार झा आ ऋत्व कुमार झाक संग मैदानमे आब गेिह आ अपशब्दक पयोगक शुरआत केलिह। तँ दुनू गोटेमे (रामदेव झा आ महेन्द्र झा मलाियामे) समानता फेर सोझा आब गेि। जाितवादी रंगमंि साहित्य अकादेमी पुरस्कारक िि मलाियाक नाम उठेकि, कमि मोहन िनू नाटककारके नाटक िि पुरस्कार देबाक गप केलिह आ महेन्द्र मलािया िि ऐ पुरस्कारक अनुशंसा केलिह, ओ कहलिह जे आइ धिर ई नै भेि अछि जे मैथिलीमे नाटककारके नाटक िि पुरस्कार भेटि अछि, ओ रामदेव झाके भेटि पुरस्कारके िलज करैत कहलिह जे रामदेव झाके जइ नाटक- एकाकी िि पुरस्कार भेटलिह से कथाके कथोपकथनमे ीिि मेहनित मात अछि (ततम्याि दशममे हुनकर िि)। आ जिन महेन्द्र मलाियाके जाितवादी रंगमंिक “मैथिली एकाकी संगह”क ठेका साहित्य अकादेमीसँ िन्दनाथ लाश “अमर”-रामदेव झा (ससुर-जमाएक जोड़ी)क अनुकम्पासँ भेटलिह तँ ओ मैथिलीक (जाितवादी रंगमंिक) १९ टा सवश्रेषठ एकाकीमे रामदेव झाक “तपासा” िने रहत्य, आब ीअ, रामदेव झा सवश्रेष नाटककार भऽ गेिह!! आ ओइ पोथीक भूिमकामे ओ िन्दनाथ लाश “अमर”-रामदेव झा के िश रिबा िि गोिवन्द झा आ सुधाशु शेिर िधरीक मजाक तँ उड़ेनहये िथ्म संगमे राधाकृष िधरी आ मतीपदके लकए ओ ऐ संगहमे शािमि नै केलिह, ओइ िि हास्यास्पद तकमसेहो देने िथ्म। गुिनाथ झाके ओ शािमि लकए नै केलिह!! सवहाराक रंगमंिके ओ शािमि लकए कलतत्य, ई संकिन तँ जाितवादी रंगमंिक िि लकने!! आ जँ अहा जाितवादी रंगमंिक लवरोध करब तँ मलािया जीक दुनू बेटा िकीत कुमार झा, ऋत्व कुमार झा फोन नम्बर +२३४८०३९४७२४५३ सँ अहाके धमकी देत जेना िकीत कुमार झा उमेश मणि जी के देलिह वा थजयदेव झा +९१९४७०३६९१९५ नम्बरसँ िमकी देत जेना ओ उमेश मणि जी के २६ अगस्त २०१२ के िमकी देलथ्नह। आ आब अहा सोिमे पड़ जाएब जे ई िकिता किन एक दोसराक पक्षमे आब जाइ िथ्म आ किन लवरोधमे, किन रामदेव झा नाटककार बिन जाइ िथ्म आ किन िलज भऽ जाइ िथ्म। जाितवादी रंगमंि आपसमे िणि-पिणि अछि, मुदा लवदेह मैथिली साहित्य आन्दोिन आ लवदेह मैथिली समानान्तर रंगमंिक लवरोधमे ई सभ एक भऽ जाइत अछि। कमि मोहन िनूके नाटककार जगदीश पसाद मणिके िघुकथा संगह “गामक लजनगी” िि टैगोर साहित्य सम्मान भेटिसँ एतेक कष भेलिह जे ओ एक बेर फेर “घर-बाहर”मे मलािया जीके साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटए, से फतवा जारी कऽ देलिह ई कलह कऽ जे मलािया जी मैथिलीक (जाितवादी रंगमंिक दृलष्टकोिसँ) सवश्रेष नाटककार िथ्म, मुदा ऐबेर ओ ई सतकी केलिह जे सवश्रेष समािोिक, िघुकथाकार आ कलवक नाम सेहो जोिलथ्नह, आ हुनको सभके साहित्य अकादेमी भेटए से िमिकऽ देलिह, जे आरोप नै िगए। कहबाक आवश्यकता नै जे ऐ लीस्टक सभ समािोिक, िघुकथाकार आ कलव िनू जीक बाहण जाितक िथ्म आ दोसरक हुनका पढि नै िलह। सवहारा वगमनीक जेका बुझ्झ गेि जे ई साहित्य आ ई रंगमंि ओकरा िि नै अछि, से ओ अपनाके ऐसँ कात कऽ िकि, आ जँ लवदेह मैथिली साहित्य आन्दोिन आ लवदेह मैथिली समानान्तर रंगमंि नै अबतए तँ मािमि िितमे िि। हम आगा २५ साि धिर ई समानान्तर रंगमंि िबैत रहब। पछीि २५ साििमे जतेक सफिता भेटि अछि ओइसँ हम उत्साहित िी, अगाि पिीस सािमे जँ हम जाितवादी रंगमंिक लकरदानीक कारि मैथिलीसँ भागि सवहारा वगक लकि आर गोटेके मैथिलीसँ जोड़ सकब आ जे काज हमरासँ िूिट जाएत से अगाि पीढी करत। जाितवादी रंगमंि आब सरकारी आ गएर सरकारी संस्थाक हथ्ययार बिन कऽ रहल गेि अछि, ई ढहब शुर भऽ गेि अछि, लकि ऊपरी सुधार, नामे िि सही, ई कऽ रहि अछि। हमर िवम्र अछि जे अगाि पिीस सािमे ई जड़सँ िितम भऽ जाए।

मुनाजी- अहाक नाटकक कथानकमे केहेन स्थिति वा परिवेशक समावेश रहैए।
बेनि ठाकुर- जखनि हम परिवारक संग वा पड़ोसीक संग गमैया नाच वा नाटक देखि जाइत रही तँ हुनके सभसँ पेरित भऽ नाटकक प्रति अभिरुचि जागल आ विनोदिन बढ़ैत रहल आ तँइ हमर नाटकक कथानकमे समाजक स्थिति-परिस्थिति आ ओकर यथासंभव समाधानक परिवेश रहैए।

मुनाजी- अहा जखन या नाटक लिखनि पारम्भ केलौं, कहू जे तखन या आ आजुक सामाजिक, सास्कृतिक उपस्थापन वा बदलाविक प्रति अहाक नजरिये केहेन स्थिति देखि ना जाइछ?
बेनि ठाकुर- कओछिज जीवनसँ किछु-किछु सीखैक पयास करैत रहलौं जैमे नाटक मुख्य रहल। नाटकक दृष्टिएँ पारंपरिक सामाजिक आ सास्कृतिक स्थिति तथा आजुक स्थितिमे बडड अंतर देखिना जाइए। गमैया नाटक जस-के-तस पड़ल अछि, कनी-मनी आगू घुसकल अछि। मुदा शहरी नाटक अपेक्षाकृत आगू अछि, मुदा ओतए सोचिक अभाव अछि।

मुनाजी- आइ नाटक कथानक, शिल्प एवं तकनीकी दृष्टिकोणे उम्दा स्तरक पालिक संग थियेटरमे आबि जुमल अछि, अहा थियेटरमे पदर्शन आ गमैया नाटकक बीच कतेक फाट देखैत छी। आ किए?
बेनि ठाकुर- कथानक, शिल्प एवं तकनीकी दृष्टिएँ थियेटर आ गमैया नाटकमे बडड फाट देखैत छी। दर्शकक आ कलाकारक साकरता, स्त्री-पुरुषक भूमिका, साज-बाजक ओरियान, इजोतक जोगार इत्यादिमे बडड फाट अछि। फखिसार प गमैया नाटक अपेक्षाकृत पछुआएल रहि गेल अछि मुदा विषय वस्तुमे ई आगा अछि।

मुनाजी- गाममे आइयो बास-बती आ परदाक जोगारे नाटय पदर्शन होइछ आ दर्शक सेहो जुटैछ तँ अपने गमैया नाटक अतीतक दशा आ भविष्यक दिशा मादे की कहब?
बेनि ठाकुर- गमैया नाटकक पदर्शनमे दर्शकक भीड़ रहैए। कारण गाम-घरमे मनोरंजनक साधनक सामूहिक स्तरपर अभाव छै। शहरक देखादेखी आब गामो-घरक स्थितिमे सुधार भऽ रहल छैए। तै गमैया नाटकक दशा भविष्यमे अवश्य सुधरत, विशास अछि।

मुनाजी- अहा एतेक रास विभिन्न तरहक नाटक लिखि मंचनि कैय कऽ हेराएल वा बेराएल रहलौं, किए? मधुबनीयाजीक रंगमंचक एकटा निदेशक पकाश झा हमरा कहलनि जे अहा भल दिन केश कटैत रहैत छी, रंगमंच अहा किए ने गेलिऐ!
बेनि ठाकुर- हम एकटा नाजी विद्यालयक दृष्टिएँ अपन विद्यार्थीक बौद्धिक विकास हेतु अपन कोचिंगक पागणमे कोनो विशेष अवसरपर, तैमे खास कऽ सरस्वती पूजामे, रंगमंचीय सास्कृतिक कार्यक्रमक बेबस्था करै छी जैमे अपन निदेशनमे विद्यार्थी दारा कार्यक्रम संपादित होइए। ओइ तरहे दर्जनो नाटकक मंचन सराहनीय ढंगसँ भऽ चुकल अछि।
मधुबनीयाजीक जातिवादी रंगमंचक विरोधमे समानान्तर रंगमंच अछि तँ अहा हुनका लिकलासँ की आशा करै छी!
(हँसैत) ओना हमर ठाकुर टाइटिल सँ हुनका लिकलाके भेलि हेतनि जे हम नआ ठाकुर छी, ते ओ ई बाजल

ि त्थ। मुदा जँ त्कओ ई काज कऽ रहि ि त्थ आ अपन संस्कृत्तक रक्ष कऽ रहि ि त्थ, जेना नआ ठाकुर ि िकला, तँ की हजम त्वदापत्ता ठाकुर, जे त्वस्फीक नआ ठाकुर रहत्थ, के त्वदापत नाि िक माध्यमसँ त्नआ कऽ राि ि त्तह नआ ठाकुर ि िकला, त्वदापत्ता आ मैत्थि िके हजार सािि धत्र त्नआ कऽ राि ि त्तह, तँ ऐमे ककरो त्कए कष ि ै? आब तँ ओ ि िकला त्वदापत्ताके ि िह ि बनेबामे ि िग ि ि त्थ। ओना हम बरही जात्ताक ि ी, से महेन्द्र झा मि ि त्राया जी आ पकाश झा जीके अहा भेट भेि िपर कत्ह देबत्तह।

सूतक अभावमे हम हेराएि रही। मुदा आब पाप्त सूत आ बेबस्थाक कृतज ि ी।

मुनाजी- अहा नाटकक अत्तात्वक्त अओर की सभ त्ती ि ै ि ी, सभसँ मनि िगू कोनो त्वधाक कोन पकारक अहा पेमी ि ी आ त्कए?

बेि िन ठाकुर- हम नाटकक अत्तात्वक्त त्वहत्ता कथा, ि िघुकथा, राष्ट्रीय गीत, भत्क्तगीत, कत्वता, टटका घटनापर आधृत गीत इत्यात्द त्ती ि िबाक पयास करैत रहै ि ी। गोष ि ीमे उपत्स्थत भऽ कऽ कथा पाठो केि िहे। सभसँ मनि िगू त्वधा हमर संगीत अत्छ। ओना हमर पत्ताष ि ाक त्वषय गत्णत अत्छ।

मुनाजी- जात्त-वगमत्वभेद अहाक रि िनाके कतेक पभात्वत कऽ पि िक अत्छ, अपने ऐ जातीय त्वषमताक टापर-टोइयामे अपनाके कतऽ पबै ि ी?

बेि िन ठाकुर- जात्त-वगमत्वभेद हमर रि िनाके अंशत: पभात्वत केि िक। ऐमे हम अपनाके अपन जगहपर अड़ि ि पबै ि ी।

मुनाजी- नाटक वा अन्यान्य रि िनात्मक सत्कयताक मादे अपनेक अत्त ि ि रत्त की वा केहेन रहत?

बेि िन ठाकुर- नाटक वा अन्यान्य रि िनात्मक सत्कयताक मादे अपन अत्त ि ि रि िक संबंधमे त्कि ि त्तत्वत नै कहि ि जा सकैए, समानान्तर रंगमंि ि तँ ि ि ती ते रहत। इच्ि ि पबि ि अत्छ। जतए धत्र संभव भऽ सकत करब।

मुनाजी- अपनेक अमूल्य उतारा हेतु बहुमूल्य समए देबाक ि ि हात्दक धन्यवाद!

बेि िन ठाकुर- अपनेक पशक यथासंभव जबाबसँ अपनाके गि िरवात्न्त बुझ्ा अपनेके हात्दक धन्यवाद ज्ञात्पत करैत हमरो अपार हषमहोइए।

१७.

हम पुि त ि ि: मुनाजी

पुरनके जमानासँ ति ि त, नव कािमे देि ार भेि लवगाज कथाकार शी धीरेन्द्र कुमार जीसँ मुनाजी पुि िला हुनक संपूि मकथा याताक तीत-मीठ अनुभव जे पस्तुत अि ि अपने सबहक सोझा-

(1) मुनाजी- धीरेन्द्रजी पिाम! अहा आइसँ कतेक दशक पि हने ''लत्थाि लाि हर''क माध्यमे कथा-याता पारम्भ केि ि। पि हि कथा कोन आ कि हया िपि ि?

धीरेन्द्र कुमार- नमस्कार मुनाजी, हम सत्तर दशकसँ ति ि ब शुर केने रही। रमानंद रेि ि क सालाध्य भेटि ि ि। लत्थाि लाि हरक सम्पादक भीमनाथ झा पि हि पि हि कथा पकाि शात केने ि ि ह। पि हि कथा कोन अि ि से मोन नै अि ि।

(2) मुनाजी- एतेक पि हने पारम्भ भेि कथायाता आगू ि ि ि लकएक ठमि क गेि ओकर कोनो लवशेष कारि तँ नै?

धीरेन्द्र कुमार- 92क बाद हमरा िगि ि ि हम जे ति ि ि ि ओकर पढुआ कम िक ि त्थ आ कथामे जे कथ्य होइ ि ओ समाजक पत्यक स्तर कम अबैत अि ि। ओकर बाद भारतीय कम्युलनष्ट पाटीसँ पभालवत भेि ि आ ए.आइ.टी.सी.सँ सम्बद्ध भ' जमीनपर काज करए िगि ि। 1995-96मे आकाशवाि िसँ कथा-वाि िनक आमंति भेटि ि िए, जत' अलधकारीसँ वाद-लववाद भ' गेि। ओ अलधकारी के ि ि ह मोन नि ि अि ि। हँ, सीताराम शमाजी ऐ गप्पक संकेत पि हने द' देने ि ि ह। हमरा पतीत भेि ि ि जे अन्याय आ भष्टाि िरक लवर द जँ लकि ि क' सकी सएह साथक।

(3) मुनाजी- अहा जि हया कथा ति ि ब शुर केि ि तलहया आओर आजुक कथा रि िनाक तुि िनात्मक पलवेश केहेन देि िना जाइ ि?

धीरेन्द्र कुमार- भाषा जीवंत होइ ि। तै समैमे अधुनातन पयोगक आभाव ि ि मुदा आइ साि हत्य समाजक संगे ताि लि ि क' ि ि ि रहि अि ि। तै ि ि आजुक रि िना सभ दृष्टव्य अि ि।

(4) मुनाजी- अहा एि िन धरि कतेक कथा ति ि ि ि आ कतए-कतए िपि ि, पुन: रि िनात्मक मुख्यधारामे जुड़बाक सुत की ि ि?

धीरेन्द्र कुमार- करीब पाँच कथा पकाशित अछि। लाल्याि लाल्हर, लाल्याि दशम वैदेही आल्दमे। लाभूला आनंदक तगेदा आ उमेश मण्डिजीक सम्मकमहमरा कि‍म पकड़ा देलक।

(5) मुनाजी- अहाक कथाक रचिनात्मक पल्क्रया केहेन कथानकपर केलन्द्रत रहैछ आ तकर की कारण?

धीरेन्द्र कुमार- उदात-पेम आ समाजक छिट-छिट दुख जे पत्यक्त: देखबामे कम अबैत अछि। हम समाजक लाम्वगमे तथाकल्थत समाजसँ लानि जाइ छी ओहो गरीब पल्रवारमे जन्म। गरीब संगे उठनाइ-बैसनाइ। ऐमे गछिला नै आला कमजोर बुझै छी।

(6) मुनाजी- अहा मैल्थिली रचिना आन्दोलनिमे जाल्लवादी वा समूहवाजी फाटके कोन नजल्रये देखै छी, की ऐसँ पभाल्वत भऽ अहाक रचिनात्मक धारासँ पुन: हेरा जेबाक वा लबछि जेबाक संभावना तँ नै देखाइछि?

धीरेन्द्र कुमार- मैल्थिली रचिनामे आ पोत्साहनमे गुटबंदी, राजनील्त अवस्य अछि। लहदी साल्हत्योके इल्लहास देखि जा सकैत अछि। मुदा हम ऐ गुटबंदीसँ पभाल्वत कल्हयो नै भेलौं। हमरा संगे, अल्जत पुष्प, नरेन्द्र झा, उदय लाश, लभूल्ल आनंद, शैल्न्द्र, रल्वनाथ, साकेतानंद, पभास कुमार चौधरी, मोहन भारदाज, ज्योल्लवदन, शैवाल सभ संगे रहलौं। रचिनात्मक स्तर आ व्यल्क्तगत स्तरपर हम कल्हयो उपेल्क्त नै भेलौं।
दमदार रचिना आत्मतोष अवस्स पहुँचैबैत अछि। ओकरा कोनो गुटबंद सदाक लेल झाल्प नै सकैत अछि। हँ तात्कालिक समए तँ जरूर अपना पभावमे दाल्ब वा कल्लाया सकैत अछि जे बेबस्थाक दोष भेल। ओना हमरा एकर कोनो भय नै अछि। रचिना हमरा लेल स्वात:सुखाय अछि।

(7) मुनाजी- गएर बाभनक रचिनाकारक समूहक सल्कय उपल्स्थल्तसँ अहा अपनाके कतेक पभाल्वत मानै छी, ओकरा माध्यमे अपन गातक मजगुती देखाइछि वा पल्तदल्न्द्रता?

धीरेन्द्र कुमार- ऐ पश्नक जबाब ऊपर आल्ब गेल अछि।

(8) मुनाजी- कथाक अल्तल्क्त आओर की सभ ल्लखै छी, तकर की कारण?

धीरेन्द्र कुमार- रचिनाकार कोनो लवधा लकए ल्लखि सकैत अछि ई ल्नभर अछि अभ्यास, कुशलता आ सहजतापर। जँ कुशल अछि तँ लकछु ल्लखि सकैत। एम्हर नाटय लवदालय ल्दल्लीसँ सम्मकमभेलापर नाटक लदस रुझान भेल। नाटकमे पल्रल्स्थल्तजन्य गीत होइत छैक- तँए कल्वता।

(9) मुनाजी- नवतुरक रचनाकारक प्रति केहेन अपेक्षा रखैत छी ऐसँ केहेन आशा देखाइछ?

धीरेन्द्र कुमार- नवतुरिया रचनाकारसँ आशा अछि। पहिने जानवर्द्धन, शास्त्रक ज्ञान, समाजक अनुभव, जनवादी मनोवृत्तिक अध्ययन आ अन्य भाषाक साहित्यक ज्ञान प्राप्त करताह। तखनजासु हृदेसँ दुलारयाके देखताह, नवीन प्रयोगसँ कथ्यक प्रस्तुतिकरण करताह। तैं तखन नवतुरक रचनाकारमे लोक प्रयत्नशील छथि।

१८

आियमशी सोमदेवजीसँ हुनक दीघर्कािलीन सृजन लारन्तारताक मादे लवहला कथाकार मुनाजीसँ सोझा-सोझी भेि लवस्तृत गप्प

लहन्दी-मैलथि ीक लवज कत्त आियमशी सोमदेवजीसँ हुनक दीघर्कािलीन सृजन लारन्तारताक मादे लवहला कथाकार मुनाजीसँ सोझा-सोझी भेि लवस्तृत गप्पक साराश:

मुनाजी: सवर्पथम अपनेके पबोध सम्मान पाप्त हेतु बधाइ। सामान्यतः मैलथि ी रिनाकार लकि ु कािवलामे रिनारत रलह पुरस्कारक स्रोत वा पात्रताक पतीकारत रलह सुस्ताए िगैत िलथ। मुदा अपने ऐ सभसँ ऊपर उठल पारम्भसँ एिन धलर एके सलक्रयताक संग जुड़ल िी। ऐ लारन्तारताक पाि की सोि वा कोन रहस्य! वा ई लवशेष ऊजावान हेबाक पलरिाम अलि?

सोमदेव:पुरस्कार आत्मबल दैत िैक। मुदा हमर माथमे सलदि नव लविार घुरघुराइत रहैए, जकरा हम अपन िलनीमे उतारिाक पलरयासमे संतुष्ट पबै िी। सम्मानलाि ली नै पबै िी, शारीलरक अक्षमताक कारिसँ। मुदा लीिबाक उदेश्य अपन लविारिके दोसर धलर पहुँिबाक रहैए।

मुनाजी: अपने अपन पारलम्भक रिनाकालिक लक्रयाकलाप वा मैलथि ी सालहत्य सृजनमे पवेशक जनतब दी।

सोमदेव:हम लीिब लहन्दीमे पारम्भ केने रही। समयान्तारे लहन्दीमे हेरा जेबाक िर आ माइक भाषाक पलत पेम हमरा मैलथि ी लदस अनलक आ ऐ भाषामे रिनारत रलह लटकि रलह गेलौं। संगलह अपन स्वष्ट लविारिके संपेषिीयताक स्तरपर मैलथि ीमे बेसी फरीिल कऽ पबैत िी, लहन्दीमे नै।

मुनाजी:अहा लहन्दी आ मैलथि ी दुनू भाषामे समान रूपे सृजनरत रही, एकर की कारि? उपरोक्त दुनूक अलस्तत्वक फराकसँ कोना लीवेलन करब?

सोमदेव:रिनाक आरम्भमे दुनू भाषामे रिना केलौं मुदा बादमे मैलथि ी मातमे लीिलौं। दुनू उपरऔँजक भाषामे लारिल जा रहल अलि। मैलथि ीके लहन्दीक आच्छादन आ लहन्दी अंगेजीक घोघ काढल कलनया जका भऽ घोटल जा रहल अलि। बेगरता िैक अपन अलस्तत्वक रक्षाथर्म अपन भाषा मातक रिना होइत रहए। दोसरा भाषाक देिाऊँसे वा वैशालिक बल ठाढ हेबाक लिषा नै हुअए।

मुनाजी:अहा अपन पारलम्भक रिना कालसँ आजुक अवलध धलर ऐ भाषाक रिनाकारमे रिनामे वा भाषा मध्य केहेन पलरवतर्न वा टकरावक अनुभव केलौं आ से की सभ िल?

सोमदेव:पारम्भमे िन्दक पाथलमकता िल। बादमे िन्दमुक्त काव्य सभ एल। हमहूँ एहेन रिना केलौं। मुदा पलहलुका जे स्तर िल से अथर्पूिर् िल, आब अथर्हीन रिना बेसी आलब कऽ भलर गेलैए, जइसँ स्तर नीिा जा रहल िैक। तकर मूल कारि रिनाकार दारा अध्ययन आ अध्यापनक अभाव िैक।

मुनाजी:मैलथि ी भाषाक एतेक पािीन आ स्वतंत्र अलस्तत्व रलहतो ओ आइयो अपन अलस्तत्ववास्ते घैहैर काटैत रहल अलि। एकर की मूल कारि वा अवरोध अलि?

सोमदेव:सत्य अछि जे दक्षिण एशियाक, विशेष कऽ भारतमे संस्कृतक समकक्ष जँ कोनो भाषा छै तँ से अछि मैथिली भाषा आ तिरहुता लिपि (बादमे कैथी लिपि सेहो)। मुदा शासकसभक वैमनस्यताक संग एकरो भौगोलिक रूपे टुकड़ी कऽ देल गेलै। आइ गुजराती, बांग्ला, असमी, ओड़िया,कुमाऊँ-गढवाली आदि एकरे टुकड़ी अछि, बेगरता छै एकाकार देबाक से भऽ जाए तँ एकरापन अस्तित्व छै से मरतै नै।

मुनाजी: अहा सबहक पारम्परिक रचनाकालमे गद्य आ पद्य दुनू विधाक जे स्वरूप से आजुक सन्दर्भमे बहुत बदलि अछि। समयान्तरे ऐ दुनू विधाक किछु आओर परिवर्तित रूप सोझा आएल यथा गजल आ विहनि कथा। ऐ सबहक भविष्य केहेन देखि रहल छिऐ?

सोमदेव:देखियौ मुनाजी, व्यक्ति, स्थान, भाषा वा रचना सबहक बदलाव समयानुसार स्वाभाविक छै। गजलके कोनो भाषाक भूमिमे विकसित कएल जा सकैए, बशर्ते कि रचनाकार ओकर जड़िमे छूमि होथि। वर्तमान रचनामे एकर अभावे फूहड़पन वा गीजल चिज बेसी देखि पड़ैए। विहनि कथामे अहा किछु गोटे नीक काज कऽ रहल छी अछि, से ठाम-ठीम देखै छी। भविष्यमे बदलैत समयानुसार पाठकक शेष चिराक बनत से विश्वास अछि।

मुनाजी: छठम-सातम दशकमे मैथिली साहित्यमे साम्यवादी विचारधाराक बिरड़ो उठल रहै। ओकर की प्रभाव भेलै आ आइ ओ कतऽ छै?

सोमदेव:यौ बाबू, कहियो एहेन बिरड़ो नै उठलै। तहिया कांग्रेसक शासन रहै आ ओ सभ मैथिलीके दबने रहै। ऐ मे कोनो स्वतंत्र विचार वा वाद तँ सपना मात्र रहै। हँ किछु गोटे अपनाके हाइलाइट करबा लेल एहने विचारे उठबयेबाक प्रयास केलनि। हमहूँ समाजवादी विचारक समर्थक रही, मुदा की गरीब वा गरीबीपर लिखि देने समाजवादी कहाए लागब, किनहुँ नै। रचनाक मार्क्सवादी विचार सामाजिक कठकोकाइड़ बाभनवादमे कत्त सलहिया सकैछै। नै, कहियो नै। मार्क्सवाद वा कोनो वादमे हमर समकक्ष वा शेष रचनाकार सेहो वादसँ जुड़बाक नामपर विचारहीन देखाइत रहलाह।

मुनाजी: मैथिली-हिन्दी मध्य साहित्यिक वर्णसंकरता पसरलै। मुदा मैथिलीके पूर्वसँ जातिवादिता गरोसने रहलै आ ई जाति विशेषक मुटीक बस्तु भऽ गेल। की ऐ सँ कहियो अहूँ सभ आचिन्तित वा प्रभावित भेलौं? ऐ सँ रचनाकार वा साहित्यके कोनो नोकसान भेल?

सोमदेव:ई किछु (मात्र किछुए) लोकक, जे रचनाकार नहियो छथि, तानकर कुत्सित चालि अछि जे अदसँ आबि रहल अछि। हँ ई सत्य जे कमाइक आस देखि पिपर बाभन लोकनि अपन मूल भाषा संस्कृत छोड़ि गएर बाभनक मूलभाषा मैथिलीके गरोसि लेलनि। तइमे गएर बाभन लोकनि ओतबे जिम्मेवार छथि, जे अपनाके पूर्वसँ कलाय ने रहलाह।

मुनाजी: अहा लिस्सावाथमसृजना वा साधनारत रहलौं। आ समय-समयपर ऐ सेवाक हेतु पुरस्कृत होइत रहलौं, एकर केहेन अनुभूति भेल?

सोमदेव:यौ, पहिने कहिये कहलौंहे जे ऐ सँ आत्मबल भेटैछै। हमर अपन विचार छल तँ जहिया जे पुरस्कार भेटल ओ रासिबा धीया-पुताके दैत रहलौं। अकादेमी पुरस्कारक राशि बेटाके पढबामे आ प्रबोध सम्मानक पाइ नातिनके

दऽ अपनाके कृताथमबुझै ि ि। हँ एकटा बात जे सभ संतान, बेटा-जमाए, पोता-पोती, नाता-नाातन नीक पदपर ि ाथ। हमर जीवनक सवश्रेष पुरस्कारक सवसुाह अनुभूताक र पमे ईएह अि।

मुनाजी: नवका दशकमे गएर बाभनक झुण कि सलकय सााहत्यक पवेशके मैथाि ि सााहत्यक नजलये कोना देि ि ि। एकर भलषयक संकेत की अि?

सोमदेव: आब लकि ि िक जे सलकय ि ाथ से संघषमे पाि नै होथ तँ सफि अपनो हेता आ भाषाक भलषय सेहो उज्जवि हएत, जै हेतु धैयमआ सलकयता ि ाही (दू-तीन दशकधल), नै तँ ई भाषा पूि ताः मल जाएत।

मुनाजी: मैथाि ि आब कागज मोइससँ बहरा अन्तजाि पर आब वैशाक स्तरपर पसल गेि अि, एकरा मैथाि िक वतमान वा भलषयसँ कोन र पे जोल्ड़ कऽ देि ऽ ि हिब?

सोमदेव:ई पसनताक बात अि जे आब ककरो कोनो लि ार (पतयक वा अपतयक) सेकेण्िमे सभक सोझा अबैए आ अहा पाि अपन वक्तव्यसँ मुँह नै मोल्ड़ सकै ि ि। दोसर जे अहाक लि ारिके वैशाक मंि भेटि अि, अला ि समएमे ओ जगलमयार हएत। मुदा कागज मोइसक जमाना ि दि नै अि, ऐ मे सलकय रहबे कर ।

मुनाजी: मैथाि ि सााहत्यमे ि िनाक पवेश लावदता वा मलि ि र िनाकारक अभावक की मूि कारि अि? एकर लादानाथमकी कहब? भलषयमे एकर की पभाव भऽ सकैए?

सोमदेव:अहाक ई सुन्दर सोिक पश अि, तै ि ि धन्यवाद। पलहने नारी घोघ तरक बहुलया आ ि हरलवारीमे नुकाएि बान्हि मुटीक ि ाज मात ि ि, ते ओकर लि ार दबि रल जाइत ि ि। आइ मैथाि ि ि ना सभ मानलसक, शारीलक आ तकनीकी सभ स्तरपर उचि भऽ रहि अि। लि ार सेहो सदावपूि ;ठोस, राग-देष रलहत ि ै। ई पीढी जुल्ड़ गेि तँ ई आर फलि ाएत, जे स्वचि ि तन्तन आ ि ति सोझा आओत।

मुनाजी: अन्तमे अपने नवका धीया-पुता (र िनाकार) के उज्जवि सााहत्यक भलषयक वास्ते की सनेस देबऽ ि हिब?

सोमदेव: नवका धीया-पुताक मगज थोरेक आर आगू ि ै। एकर र िनात्मक लि ार ठोस आ लदशा सूि क अि। ई सभ जुड़त्थ तँ मैथाि िक कल्याि हएत। हँ, अपन संस्कार नै लबसरत्थ बस ! एतबे।

अहा आ गजेन्द्रजी दुनू गोटेके अन्तजाि क जाि मे हमरो ि पेट अपन लि ार र िबाक अवसर देबाि ि हृदैसँ धन्यवाद।

मुनाजी: हालदक आभार! बहुमूल्य समय आ लि ार देबाक वास्ते।

१९

त्वाकोिक एक कोिसँ अशोकसँ मुनाजीक साक्षात्कार

मुनाजी: अपने मैत्थिी रिना पारम्भक पेरि कतऽ सँ पिहुँ। एकर पारम्भ कल्हया आ कोना भेि?

अशोक: हम मैत्थिीमे रिनाक पेरि काशीमे गहि केिहुँ। साते वषक्क अवस्था सँ त्वता संग काशीमे रहऽ िगहुँ, पढबाक िि। मायाअ भाइ-भाउज िकला गाममे रहैत रहत्थ। काशीमे राम मलन्दरपर रही। ओतऽ हमर त्वता स्व. उमापत्ता झा मलन्दरक व्यवस्थापक रहत्थ। राममलन्दरपर मैत्थि िित संघ दारा अनेक साल्हत्यक ओ सास्कृत्ताक कायक्कम होइ। नेनेसँ सभ देिऽ सुनऽ िगिहुँ। कानमे त्वात्थि, मैत्थि ओ मैत्थिी शब्द सभ जाय िगि। एही कममे हमहूँ कत्वता सभ त्वीिऽ िगिहुँ। वषम१९६८ मे "वटुक" पत्ताका मे िॉ. सुधाकान्त त्वश (जे "वटुक" पत्ताकाक सम्पादक रहत्थ) हमर पत्हि कत्वता "शत्रा न्िद्राके समान" िपने रहत्थ। ई कत्वता हम न्िद्रा झा जयन्तीक अवसरपर त्वीिने ओ पढने रही। ओत्ह जयन्तीक अध्यक्ता मैत्थिीक पत्सद कत्व न्िद्रनाथ त्वश "अमर" केने रहत्थ। तकर बाद कत्वता सभ त्वीिऽ िगिहुँ। जिन दजम भत्व कत्वता त्वीि भऽ गेि तँ अपन जेठ भाइ स्व. सुशीि झा (पधानाियम,एि.एन. जनता कॉिज, झंझारपुर) के देि त्वीयत्वा। ओ हमरा ओत्ह कत्वता सभके िॉ. धीरेन्द्र (हमरे गामक पत्सद साल्हत्यकार) के देिबाक िि त्वादेश देित्वा। िॉ. धीरेन्द्र कत्वता सभ देििता आ ओत्हमे सँ त्वकिके त्वात्थि त्वात्हरमे पठेबाक िि कहित्वा। ओत्ह कत्वतामे सँ दूटा कत्वता त्वात्हर मे िपि। जात्हमे पत्हि "ई न्यू िइटक फैसन त्वयक" वषम१९६९ मे त्वात्हरमे िपि रहय।

मुनाजी: त्वाकोिक शेष दू कोि माने त्वावशंकरजी/ शैिन्द्रजी संग कोना जुड़ि? पत्हि संगह त्वाकोिक पकाशनक त्वायार कोना भेि?

अशोक:काशीसँ गरमीक िुटीमे गाम आबी। अही कममे वषम१९६७-७० मे गाममे दुनू गोटेसँ भेट भेि। दुनू गाममे रहैत िि आ दुनूमे नेनेसँ त्वातता रहत्वा। तीनूके जिन भेट भेि तँ बुझिहुँ जे तीनू एके रसत्वाक पत्थक िि। तीनू कत्वता आ गीत त्वीित िि। कत्वता त्वीिब हमरा तीनूके एक-दोसरासँ जोत्ह देिक। तकर बादसँ तँ तेहेन त्वानि भेि जे िगबे नत्ह करय जे कल्हयो अपत्वत्वीत ििहुँ।

कत्वताक संग तीनू गोटे हम, त्वावशंकर आ शैि (शैिन्द्र आनन्द) कथा सेहो त्वीिऽ िगिहुँ। कथा सभ पत्ताका सभमे िपऽ िगि। शैि गामेसँ "आहुत्ता" पत्ताका सेहो त्वाकाऽ िगिह। तिन त्वायार भेि जे तीनूक एक कथा-संगह त्वाकिय। हम तावत् नोकरीमे पटना आत्व गेि रही। पटनेसँ तीनू कथाकारक पाि-पाि टा कथाक संगह त्वाकिि "त्वाकोि" नामसँ।

मुनाजी: त्वाकोिसँ कतेक पूवम अहा सभ िििन पारम्भ केिहुँ। फेर एक पटिपर कोना एिि आ तकर की फाएदा आ नोकसान भेि?

अशोक: मोटामोटी कही तँ हमरा तीनू गोटे एके संग िििन पारम्भ केिहुँ। हम काशीमे रही। ओतत्ह कत्वता त्वीिऽ िगिहुँ १९६७-६८ ई. सँ। त्वावशंकर शीत्वावास आ शैिन्द्र आनन्द गाम िहिनामे रहत्थ। ओही ठाम रत्ह ओही समयसँ त्वीिऽ िगि। त्वीिब शुरु करबाक बाद करीब दू-तीन बरिक भीतरे तीनूके गाममे भेट भऽ गेि। तकर बाद तँ संग-संग तँ संग-संग साल्हत्यमे जीबऽ िगिहुँ। हम १९७१ ई. मे गाम िि अयिहुँ।

सत्वसब कॉिजमे आइ.एस.सी. करबाक ि। १९७२ ई. मे आइ.एस.सी. केिहुँ। ओहो दुनू सत्वसबे कॉिजमे पढत्थ। तीनू िगभग संगह कॉिज जाइ आ आबी। त्मतता पगाढ होइत गेि। बी.एस.सी. करबाक ि हम सीतामढी गेिहुँ १९७२ ई. मे। मुदा फेर १९७५ मे गाम ि अयिहुँ। दू वषमगामे रहिहुँ। बी.पी.एस.सी. क पत्वयोत्मता परीक्षक तैयारीक कममे। फेर एक संग तीनूक जुटान भऽ गेि। कोनो नव रिना करी तँ तीनू एक दोसराके सुनाबी। तकर बाद हमरा नोकरी ित्म गेि। पटना आ अरत्वया, बक्सरमे रहिहुँ। वषम१९८३ मे पटना आत्व गेिहुँ। त्वकोि १९८७ मे िपि। ई सहयोगी पकाशन तीनूके कथाकार रपमे पत्विय स्थात्वत करबामे सहायक भेि। कथाकारक रपमे िक िन्हय िगि। एहसँ नोकसान नह फाएदे भेि।

मुनाजी: अहा जहया ििन पारम्भ केिहुँ तहया आ आजुक पत्वत्मथत्व (सात्वहत्यक) मे की समानता वा त्मानता देिाइि?
अशोक:हमरा िकत्व जहया १९६७-६८ मे ििन पारम्भ केिहुँ तकरा आइ िािीस वषमसँ बेसी भऽ गेि अत्म। एह िािीस वषमे बहुत पत्वतमन भेि अत्म। से पत्वतमन व्यत्वक्तगत आ सात्वहत्यक दुनू रपमे भेि अत्म। तीनू आब एक संग नह रहैत ी। भेटो-घाट कमेकाि भऽ पबैत अत्म। मुदा सात्वहत्य ििन ित्म रहि अत्म। तीनूक पोथी सभ पकात्वशत भेि अत्म। ति न जे जोश-िरोश ओह समय रहय से आब नह रह गेि अत्म। से दुनू स्तरपर। व्यत्वक्तगत रपमे पात्वरवात्वरक कारि सभसँ आ सात्वहत्यक पत्वदृश्यमे सामात्मक कारि सभसँ। जँ जँ मैत्थिीके सुत्वधा पाप्त भऽ रहिैक अत्म तँ तँ सात्वहत्यकारमे िगनशीिता घटि रहिैक अत्म। मैत्थिी िि ओ जोश िरोस नह देिाइत अत्म जे तीस-िािीस वषमपहने ि। आइ मैत्थिीक ि सभसँ पैघ समस्या नव-नव पत्वभाशाि िकक सात्वहत्य क्षेत्रमे नह जायब त्थक। एहन बात नह िक जे नव िक आत्व नह रहि त्थ, आत्व तँ रहि त्थ मुदा जे िगाओ, जे त्माषा िही से नह देिाइत अत्म। एह बातक अनुभव ओह सभ व्यत्वक्तके भऽ रहित्म अत्म जे कोनो पत्वका त्मकात्म रहि त्थ वा सात्वहत्यक त्वकास ि पयतशीि त्थ।

मुनाजी:अहाक ििनक मध्य साम्यवादी त्विारधाराकहवा मैत्थिीयो सात्वहत्यमे बहि। की मैत्थिी सात्वहत्यमे कोनो एहन स्वतंत त्विारधारा बत्म पि। अहा ओइसँ कतेक िग वा दूर रहि!
अशोक:साम्यवादी त्विारधाराक पभाव तँ मैत्थिी सात्वहत्यमे एकदम देिार अत्म। से यत्व नह देिार भेि रहैत तँ ओहपर एतेक आकमि जे बढिक अत्म से नह बत्वढतैक। साम्यवादी त्विारक पभाव तँ मैत्थिीमे कंिनाथ झा "त्वकरि" आ यातीक सात्वहत्यसँ दृष्व गोिर हुअ िगैत अत्म। १९६०क बाद ओहमे तेजी अयिक। १९७१ ई.सँ १९८० क दशकमे वातावरिमे पसरि नक्सिवाड़ी आन्दोिनक पभाव मैत्थिी सात्वहत्यमे पुरजोर रपे पड़िक। अनेकानेक कत्वता, कथामे एकरा देिि आ त्मन्हि जा सकैत अत्म। बादमे ई त्विारधारा कमशः महीन होइत गेि िक। तै आब, जेना अहा कहि, हवा जका नह िगैत अत्म। आब ई त्विारधारा कोनो फैसन जका नह अत्म, जीवनक अंग भऽ कऽ आत्व रहि अत्म सात्वहत्यमे।

मुनाजी:अहा गदक ििनमे त्वहत्म कथा सेहो त्मििहुँ। त्वहत्म कथा त्मिब केहेन िगि, एकर सोि कतऽ सँ आयि?

अशोक: लघुकथा कथा हम सात लघुभूमि आनन्दक कहिपर लिखि हुँ। ओ माल्ट-पाला पत्रिकाक सम्पादक रहथि। वएह पत्रिका कि लघुकथा कथा लिखि कS देबाक कि कहलनि। तकि लघुकथा कथा माल्ट-पाला आ आन पत्रिकामे किबो कयि। सगर रातिमे सेहो तकि लघुकथा कथा पढि हुँ। एम्हर बहुत दिनसँ कोनो लघुकथा कथा नहि लिखि हुँ अछि। जहिया लिखि हुँ तहिया लिखिबामे खूब आनन्द आयि।

मुनाजी: अहाक नजरिमे आजुक परिपेक्ष्यमे मैथिली लघुकथा कथाक की स्थिति कि? की मैथिलीमे ओ स्वतंत स्थान पाबि सकत?
अशोक: मैथिलीमे आइयो लघुकथा कथा खूबे लिखि रहि अछि। लघुकथा कथाक पोथी सेहो पकाशित भेि अछि। तारानन्द वियोगी, पदीप बिहारी, मधुकर भारदाज, अनमोि आ अहाक लघुकथा कथा सभ हम पढने सुनने ि। मोन पड़ैत अछि जे शीधरम सगर रातिमे पढि पढि अपन लघुकथा कथासँ हमरा सभके आकर्षित केने रहथि। लघुकथा कथाक एक संगह स्व. ए.सी.दीपकजी बहार केने रहथि। मैथिलीमे लघुकथा कथाक तँ स्वतंत स्थान िके। तिन एक संगहक पयोजन तत्काि हमरा अवश्य बुझा रहि अछि।

मुनाजी: वतमानमे अन्यान्य भाषा-साहित्य मध्य मैथिली साहित्यक की स्थिति देिा पड़ैि।
अशोक: मैथिलीमे कविता आ कथा आन भाषा साहित्यसँ पाि नहि अछि। उपन्यास अवश्य पिुआएि अछि। उपन्यासक िगता अवश्य मैथिलीके िक। एहन उपन्यासक जे आन भाषाक उपन्याससँ टकर िS सकय। आन अनेक विधामे सेहो स्तरीय पोथी नहि आबि रहि अछि। आन भाषा साहित्य सन वैिलिक िि‍न सेहो नहि भS रहि अछि। हँ, तारानन्द वियोगीक “तुमि लिर सारथि” हिन्दीमे अनुवाद भS खूब धूम मििकि अछि। लिखित पशंसित भेि अछि। मैथिलीके एहिसँ गरव भेटिक अछि।

मुनाजी: एिन धरि अहा दारा जतेक काज भेि ताहि हेतु कोनो ठोस मूल्याकन वा पुरस्कारसँ वंचित रहि केहेन अनुभूति होइए?
अशोक: वस्तुतः पूिी तँ हम जतेक काज केहिुँ अछि तकर खूबे मूल्याकन भेि अछि। हमरा मूल्याकनक कोनो अभाव नहि बुझाइत अछि। काजे नहि कS पाबि रहि ि जते करबाक िाही। आन अनेक पकारक व्यस्तता िि‍न नहि करS दैत अछि। तकर अनुभूति बरोबरि होइत रहैत अछि। जहा धरि पुरस्कारक गप अछि तँ तेहेन कोनो काजे हम आइ धरि नहि केहिुँ अछि। एिन तँ बहुत काज करबाक अछि। बहुत लिखिबाक अछि।

मुनाजी: अपन तीनू कोिकि मध्य अहा अपनाके कतS पबैि?
अशोक: तीनू कोिकि अपन फूट-फूट महत्व आ विशेषता होइत िक। मुदा तीनू मिलिए कS लोकोि बनैत अछि। तिन आइ एकटा कोि िहनामे, एकटा कोि दरभंगामे आ एकटा कोि पटनामे अछि, एहि स्थानक स्थानताक पभाव तँ पड़िए रहि िक। तीनू कोि जिन फेरसँ एक संग िहनामे जुटब तँ सोिब जे के, कोना आ कतS ि। लोकोिकि याता तँ एिन लिखिये रहि अछि।

मुनाजी:नव पीढीक रचनाकार वास्ते अपन विचार की देब?
अशोक: औ मुनाजी, हम तँ एखनहुँ अपनाके नबे मानैत छी। विकासक प्रक्रिया तँ होइत रहैत अछि जे बनौने किछु नहि। कोढ कपैत रहैत अछि। हमरा तँ अपने बेर-बेर विचारक आवश्यकता होइत रहैत अछि। एहनामे हम विचार की देब?

लात्याि सँ दूर आ अंगेजी माध्यमे त्वाक्त मैत्याि ी अनुरागी आ जगत्मायार होइत मैत्याि ी कत्वत्याती शीमत्ा जयोत्ा सुनीत ि धरीसँ मुनाजी दारा भेि अंतरंग गप्प-सपपक बानगी अहा सभक सोझा राि ि जा रहि अि ।

मुनाजी: जयोत्ाजी, अहाक त्वाक्-दीक् अंगेजी माध्यमे भेि । संस्कारगत सम्भान्त वा आधुत्ाकतामे पत्ि-बत्ढ कऽ अहाके मैत्याि ी भाषाक पत्ा एतेक अनुराग कोना जनमि?

जयोत्ा सुनीत ि धरी: सभसँ पत्हने नमस्कार मुनाजी। असि मे मैत्याि सँ दूर हम कि नो नत्ह रहि हुँ।जमशेदपुरमे मैत्याि सबहक अपन बड़का टोि ी िला आ बडि शानसँ ओ सभ त्वदापत्ा समारोह मनाबैत ित्ा। हमर पत्वारमे जे त्कयो बेसी नजदीकी ि ित्ा सभ मैत्याि ि ित्ा। फेर साि मे एकबेर गाम अवश्य जाइत ि हुँ। ओतए त्वत्ाय त-त्वत्ाय त भाइ-बत्हन सबहक पुस्तक पढै ि हुँ। से मैत्याि ी भाषासँ अनुराग बच्ि सँ अि । भाग्यसँ सासुरो ि ँटी मैत्याि भेटि अि । हँ, मैत्याि कि त्वकासक त्वि ि हमरामे हमर स्वगीय बाबासँ आएि अि । हमर त्वतामह जि न मरि सिन रहत्ा ति न करीब एक मास हम हुनका ि ग अस्पताि मे त्वनमे अटेणि रिक र पमे रहैत रही। हम अपन कॉत्स्टंगक तेसर स्टेज ओत्ह अस्पताि मे पत्ढ कऽ पास केने ि ी। ओत्ह बीि हुनकासँ बहुत बात भेि आ लात्याि कि त्वकासक बात सभ मत्स्तष्कमे आएि ।

मुनाजी: मैत्याि ीमे ि ि न पारम्भक पेरि कतऽसँ वा कोना भेटि । पत्हि ुक बेर अहा की त्ि ि हुँ आ की/ कतऽ ि पि ।

जयोत्ा सुनीत ि धरी: यदत्व हम पत्हि मैत्याि ी कत्वता त्वदाि यिकाि मे भारतवषमपर त्ि ि ने रही जे बड़हाराबि मामाजी (ि ि जीक भाय) के देने रत्हयत्ा आ त्कि ु कारि विश ओ पकात्वत नत्ह भेि । परन्तु मूि र पसँ मैत्याि ीमे ि ि नक पेरि सम्पादक महोदय गजेन्द्रजी सँ भेटि । बादमे जात भेि जे गजेन्द्रजी बहुतो ि िकक ि िज केि त्ह आ बहुतोसँ मैत्याि ीमे त्ि ि बा ि िल्ह। हमहुँ ओत्हमे सँ एक ि ी। हमर पत्हि कत्वता ‘त्हमपात’ अि जे त्वदेह ि ॉट कॉम क पाँि म अंकमे १ मािि२००८ के पकात्वत भेि ।

मुनाजी: कत्वता तँ ि िकक स्वाभात्वक जीवनधारासँ पस्फुत्टत होइत रहैत िैक आ त्ि न्तनशीिि ि िक ओकरा ि यिवद वा अकरवद कऽ िैए। अहाक पद-संगह अि म्् मे कत्वताक संग अहाक हाइकू देत्ि आहात्वत भेि हुँ। हाइकू त्ि ि बाक सोि कोना/ कतऽसँ बहराएि ।

जयोत्ा सुनीत ि धरी: बहुत-बहुत धन्यवाद जे अहाँके हमर हाइकु नीक ि गि । पत्हने पोइरी ि ॉट कॉम मे सभ त्वन एकटा पाात्कृत्ाक दृश्यक फोटो देि जाइत ि ै आ ओत्ह फोटोसँ पेत्त भऽ हाइकू त्ि िक पत्ायोत्ाता होइत ि ि । अहुना हमरा पाकृत्ाक सुन्दरतापर त्ि ि नाइ पत्सन ि ि से भोरे अपन घरक काज समाप्त कऽ जि न हम कॉफी िि बैसै ि हुँ तँ मेि ि क करैकाि हम ओत्ह साइटपर जाइ ि हुँ आ सभ त्वन एकटा हाइकू त्ि ि त ि हुँ। ओत्ह कममे ि ि मासमे सएटा हाइकू जमा भऽ गेि जे त्वदेहक बारहम अंक (१५ जून २००८), जे हाइकू त्वशेषाक ि ि , मे ि पि ।

मुनाजी: लात्याि नै भारतसँ दूर ि दिनमे मैत्याि ी पढबा-त्ि ि बाक त्वजासा कोना बनि रहैए। अहा गृहि ी रहैत-घर दार सम्हारैत कोना रि नाशीि रहैत ि ी?

ज्योति सुनीत चौधरी: एक गृहिणी छी स्वतंत्र छी कासँ बहुत आर कोन काज भऽ सकैत छै आर विदेहमे कहिनो हमरापर कोनो विषय विशेषपर लिखए छी वा समयक बन्धनक दवाब नहि छै। फेर ई तँ सभाग्य अछि जे अन्तजालपर मैथिलीक पवेशसँ आब विदेशोमे रहिकऽ अपन भाषा साहित्यसँ नजदीकी बनल रहैत अछि। ईशरक आशीवादसँ बच्चा आब पैघ भऽ गेल अछि आ विद्यालय जाइत अछि। सासुर दिससँ कोनो जिम्मेदारी नहि अछि। पतिदेव सेहो घरक कायमे सहयोग दैत छथि तै गृहिणी भेनाइ हिनि कायमे अवरोधक नहि बनैत अछि।

मुनाजी: मैथिली संस्कृतिक तुलनामे अंगेजक संस्कृतिक बीच अपनाके कतऽ पबै छी। दुनूक संस्कृतिक की समानता वा विषमानता अनुभव करैत छी?

ज्योति सुनीत चौधरी: दुनूमे किछु नीक आ किछु खराबी अछि। विदेशमे व्यवहारमे बेसी खुलापन छै मुदा हम अकरा विकसित रूप नहि मानैत छी। हम बचपनमे महात्मा गाँधीजी दारा रचित एकटा हिन्दी-कथा पढने रही "जब मै पढता था", गान्धीजी इन छोटि छोटि सँ पेरित; बहुत सत्य लागल ओ कथा जखन हम विदेशी सभ्यताके बुझैक पयास केलहुँ। अपन संस्कृति बहुत धनी, तकसंगत आ मौलिक -original- अछि। बस हम सभ आवश्यक रूपे पछड़ल छी, जकर नैतिक समाधान शैक्षिक विकास अछि। हमर इच्छा अछि जे भने आर्थिक विकासमे कनी समय लागए मुदा अपन कला, संस्कृति, पाबनि, गीतनाद आदि सभ मलिन नहि होअए। हँ कतहु-कतहु सामाजिक कुरीति जेना दहेज, विधवाक जीवनशैली, स्त्री-शिक्षा आदिमे बदलाव चाही। अहि सभ समस्यामे दहेज समस्या बडका बड़का कैसर अछि जे शिक्षित वगके सेहो धेने अछि अन्यथा बाँकी समस्या शैक्षिक विकासक संगे विलीन भऽ रहल अछि।

मुनाजी: मैथिलीसँ इतर अहाके अंगेजीमे पोएरी डॉट कॉम सँ एडीटसमॉएस अवार्ड(अंगेजी पद छी) भेटल अछि। की अंगेजीमे पोएरी लिखनिक निरन्तरता बनल छै।

ज्योति सुनीत चौधरी: नहि। हम जहियासँ विदेहमे लिखए लगलहुँ तहियासँ अंगेजीमे लिखबाक समय नहि निकलि रहल अछि। इहो कहल जा सकैत छै जे हमरा मैथिलीमे बेसी रुचि अछि अन्यथा "where there is will there is a way" अथात् जतए चाह ततए राह।

मुनाजी: अहाक नजरिमे मैथिली पद्य विधा आ अंगेजी पद्य विधामे की फराक तत्व अछि। दुनू एक दोसरासँ कोन बिन्दुपर ठाढ अछि?

ज्योति सुनीत चौधरी: अंगेजी पद्य विधा बहुत समृद्ध अछि कारण ओ विशव्यापी भाषा अछि। मैथिली पद्य विधा विशेषतः गीतक सेहो अपन अद्भुत आ अनेक रूप अछि जेना कि लोरिका, नचारी, सोहर, गोसाउनि, भगवति, चैत, समदाओन, होरी, झुमाउन, कजरी आदिक छै विशेष पद्धति छै। मुदा एहि सभके ढंगसँ पविभाषित कऽ व्यवस्थित रूपे संगहित राखैक अभाव अछि।

मुनाजी: ज्योतिजी, अहाक माध्यमे मैथिली रचनाकारक किछु रचना सभक अंगेजी अनुवाद आ पकाशन भेल अछि। किए नै व्यापक स्तरपर मैथिलीके अंगेजी पत-पत्रिकाक माध्यमसँ वैश्विक पटलपर अनबाक पयास करै छी?

ज्योति सुनीत चौधरी: हमरो ई इच्छा अछि। हम लन्दनक एक अंगेजी कवि समुदायसँ जुड़ल छलहुँ जे बाङ्गलादेशी आ छल समुदायक छथि मुदा हुनकर सबहक अत्याधुनिक रहन-सहन (पबमे मीटिंग-ड्रिंक्स) हमरा ओतेक नीक नहि लागल। तैयो हम एक व्यक्तिसँ मेल आ फेसबुकक माध्यमसँ सम्पकमे छी। जौ कुनो सुझाव

अछि तँ हमहूँ अपन यथासम्भव अपन योगदान देब। ओना इंगलैण्डमे बहुत मैथिल डॉक्टर आ आई.टी. कर्मी छथि, ओ सभ जरूर पुस्तक किनता। आ बॉलीवुडमे प्रकाश झा जी तँ छथिये। कलाकार हुनका सभकेँ बिकाइत बनाबए लागल छथि संस्कृतिपर, बिहार छोड़ि मिथिलापर। गामक हाल तँ बहुत देखिओ लेल गेल अछि। कनी बाहरक मैथिलपर सेहो काज करथि जाहिसँ जे धनी मैथिल सभ बाहर बैसल छथि से अपन संस्कृतिदिस आकर्षित होएता। कलाकार जे अपन घरमे मिथिला पेन्टिंग प्रदर्शित करथि।

मुनाजी: अहाँ साहित्यक संग मिथिला चित्रकला आ चित्रकारमे रुचि रखैत छी। अहाँ साहित्य आ कला दुनूक बीच की फाट देखैत छी। दुनूमे केहेन ककर आवश्यकता देखि पड़ैछ?

ज्योति सुनीत चौधरी: धन्यवाद। हम मास्टर तँ नहि छी, हँ हम आर्थिक विषयक छी एकर उन्नतिक। साहित्यके बहुत नीक मंच भेटि गेल अछि मुदा कलाक लेल एखनो संकलित आ विदेश स्तरीय ठोस भूमिक आवश्यकता अछि। हम एक बिजनेस प्लान बनेने छी मुदा ओहि लेल बहुत निवेशक आ विपणि कताक आवश्यकता अछि। हम अहाँके अटैचमेण्ट पठा रहल छी ओहि बिजनेस प्लानक। कतहु गुंजाइश होअए तँ कृपा कऽ उपयोग करू।(नीचाँमे देल अछि)

मुनाजी: अहाँ आइ.सी.डब्लू.ए.आइ.डिग्रीधारी छी, अहाँक नजरिमे राष्ट्रीय आ अन्तराष्ट्रीय फलकपर मिथिलाक आर्थिक स्थिति की अछि? एकर दशा कोना सुधारल जा सकैछ, एहि हेतु कोनो दिशा निर्देश?

ज्योति सुनीत चौधरी: अकर जवाब हम बहुत विस्तृत रूपमे देब। अहाँके धैर्यसँ सुनए पड़त। भारतमे विकासशीलताक दोसर स्थानपर अछि बिहार राज्य। आइसँ १०-१५ साल पहिने बाहर रहैवाला बिहारीके लाज होइत छल। एक अशिक्षित आ बेरोजगारीक बहुलतावाला राज्यके विकासक लेल एक शिक्षित आ उन्नत सोचवाला मुख्यमंत्री चाही। आब बिहार तँ रस्ता पकड़लक मुदा मिथिला आर्थिक विकास ओहि रूपे नहि देखाइत अछि। विशबैकसँ जे कोसी लेल कर्जभेटल छै तकर जौ सदुपयोग भऽ जाए तँ मिथिलाक पचास प्रतिशत प्राकृतिक समस्याक समाधान भऽ जेतै। बिहारमे नीतीश जी एक नियम बना रहल छथि जाहि अन्तर्गत सरकारी कर्मचारी जौ निर्धारित समयमे कायमनहि करता तँ जनता हुनकर शिकाइत दर्जकऽ सकैत छथि। अहि तरहक रूपान्तरण सभकेँ आशाक किरण जरूर दऽ रहल अछि।

मिथिलाक औद्योगिक विकासक लेल सरकारी सहयोगक आवश्यकता अछि। सभकेँ बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चरक विकास जेना सड़क निर्माण, बाँध निर्माण, पुल निर्माण आदि चाही जे सरकारके करए पड़तनि, तकर बादे बाहरी प्राइवेट निवेशक सभ अपन पाइ लगेता। भारी उद्योगक सम्भावना कम अछि। अहिठाम सर्विस सेक्टर, कृषि उद्योग, वस्त्र उद्योग, फैशन इण्डस्ट्री, खाद्य सामग्री, प्रोसेस्ड फूड आदिक बड़ सम्भावना अछि। अहिठामक लोकप्रिय मराठी स्नैक्स समोसा, कचौरी, खीर, चटनी आदि विदेशक बजारमे भेटैत अछि, तखन मिथिलाक व्यंजन किएक नहि। किएक नहि हम सभ मिथिलाक अदौरी, तरकारी, मखानक खीर, अपन विदेशी मार्केटमे सभके विकसित कऽ एक्सपोर्टकरैत छी। गुजरातक मोदक विशेषता अछि, अपन सबहक बगिया किएक नहि। तकर बाद आम, लीची, केरा, तारकून, कुसियार, खजूर आदिक वेल्यू एडेड चीज बना कऽ बेचल जा सकैत अछि।

मधुबनी पेन्टिंगक व्यवसायिक उपयोग करू। अहि पैटर्नके आधुनिक आ पारम्परिक दुनु तरहक परिधानमे बना कऽ फैशन शो करू। घरक कॉकरी, फर्नीचरसँ लऽ कऽ कम्प्यूटरक वालपेपर आ लैपटॉपक कवरपर मिथिला पेन्टिंग छापू। घरक वाल पेपर, मोजाइक, मार्बल सभपर मिथिला पेन्टिंगक समावेश करू। पेन्टिंगक किट बनाऊ जेना सैण्ड पेन्टिंग, इम्बॉस पेन्टिङ आदिक किट बजारमे उपलब्ध अछि। अनन्त सम्भावना छै।

लत्याि ि कि उनलाक पथपर एकटा बाधा ि जकरा फानै ि ि सरकारी कोष आ सरकारक ईमानदारीक आवश्यकता ि । एकबेर ई बाधा फना जाइ तँ लत्याि ि कि स्यतीम र प पाबैसँ लकयो नल रोलक सकैत अिी।
मुनाजी: अहा िंदनमे रल अपन नवका पीढी (लशेष कऽ अपन पुतके) लत्याि-मैत्याि सँ जोलड़ कऽ र िनाइ पलान करब आलक एकरा अि ूत सन बुझबाक त्ताकत देबै?
ज्योलत सुनीत ि धरी: हम अपन नबका पीढीके अपन संस्कृलतासँ जोलड़ कऽ रा िऽ िहब। िन्दनमे लदाथी तालक रहि ि, मधुबनी पेलटंग लसा िबै ि ि। हम अपन पुतके मैत्यालि कि सभ लशेषतासँ जात रा िए िहैत ि, संगमे ईहो िहैत ि जे ओ अल सभ्यताके स्पोच िसँ स्वीकार करत्य। अि ूत व्यवहारक तँ पशे नल ि।
भने ओ अल संस्कृलताके अंगीकृत करत्य वा नल मुदा सम्मान तँ देबहे पड़तल।
मुनाजी: लत्याि-मैत्याि क पलत अनुरागके अहाक पलत सुनीत ि धरीजी कोन र पे दे ि त्य, अहाके एल कायक्कि पिक पलत पेलत कऽ वा बालत कऽ?
ज्योलत सुनीत ि धरी: हमर पलत हमर काजमे द ि ि नल दैत ि त्य आ कुनो तरहक दवाब नल रहैत अिी जे हम की ि ि ू आ की नल। घरक काजमे बहुत योगदान दैत ि त्य आ बालत क िनो नल करैत ि त्य ओना हमहुँ हुनकर इच ि के पााथलमकता दैत रीयल। पेरि हम अपन माँ, बलहन आ भ जीसँ ि त ि। हम हुनका सभसँ अपन सभ बात करैत ि।
मुनाजी: ज्योलजी अहा अपन नजलये अंगेजी साल्हत्यक मध्य मैत्याि साल्हत्यके कतऽ पबै ि आ लकएक?
ज्योलत सुनीत ि धरी: हम अंगेजी साल्हत्यके सागर मानैत ि आ मैत्याि साल्हत्यके मानसरोवर। अंगेजी साल्हत्यके लशभलमे काफी पलहने मान्यता भेटि ि तै ओ बहुत समृद अिी। सागर र पी अंगेजी साल्हत्य अपन पलपू ि तापर अिी मुदा मैत्याि साल्हत्य पाा ि न रल्हतो अ ि न उत्पलाक परमशुल्द लबन्दुपर अिी आ ओकर लसं ि न आ संरक्कि भार सम्मलत आ भावी ि ि किग ि पर ि ल।
मुनाजी: अहा अपन समक समका ि न नवतुलया र िनाकारके कोनो संदेश देनाइ पलसन करब?
ज्योलत सुनीत ि धरी: हम हुनका सभसँ कहए िहबल जे कृप्या सामने आऊ आ ि ि कक र पमे समाजक पलत अपन लम्मेदारीके लनमाहैत मैत्याि साल्हत्यके सुकृलतासँ सम्पन्न कर ।
मुनाजी: बहुत-बहुत धन्यवाद ज्योलजी।
ज्योलत सुनीत ि धरी: बहुत-बहुत धन्यवाद हमरा अल योग्य बुझए ि ि।

हम एक लबजनेस प ि न बनेने ि मुदा ओलहि ि बलहया लनवेशक आ लपि न कताक आवश्यकता अिी। हम अहाँके अटैिमेण्ट पठा रहि ि ओल लबजनेस प ि नक। कतहु गुंजाइश होअए तँ कृपा कऽ उपयोग कर ।- ज्योलत सुनीत ि धरी

Mithila Painting

Nature of Business

Selling printout and original MadhubaniPaintings on paper, fabric, tiles, ceramic and other media.

Purpose:

Expanding scope of MadhubaniPaintings without losing its originality.

Sources (Purchases):
Original artworks on paper and other media and digital copies
Supplier:
Artists and media resources for tiles, wallpapers etc.
Sales:
Online sales.
Customers:
Art lovers, Restaurants, Saloons, Interior desighners, fabric
Designers, book printers for cover page design, card printers,
Stationary printers etc.
Cost required:
Web designing cost
Site subscription cost
Collborationwith banks and other payment modes
Purchasing art works from the artists
Preparing good digital copies
Postage (post sales cost)For web designingMain category MadhubaniPaintings
•Mythological
•Scenes of Ramayana
•Scenes of Mahabharata
•Stories of Puran
•Gods and Goddesses
•Festivals and Sanskara:
•Kohbar
•Vivah
•Chhathihar
•Muran
•Upanayan
•Kojagara
•Barsait
•Madhushravani
•Diwali
•Holi
•Bhagwaanpuja

•AkharhiPuja
•Village Life : scencesof day to day works, cattle etc.
•Wild Life: Different birds and animals, scenes of forest, desert
•Story based: Based on popular stories
•Flora and Fauna : Different flowers portrayed in madhubanipainting style
•Contemporary : Based on city life, new experiments.
•Natural scenes

२१

दुर दृष्टिसंपन गमैया संसाधनसँ दूर होइत गामक िकिक मन:स्थितिके गहीरताक संग सोझा अनिनिहार शी जगदीश पसाद मंि जी हुनक समस्त साहित्यिक त्रिया-कि ापिक मादे मुनाजी दारा कएि गेि गप्प-सप्पके अहाक सोझा पस्तुत कएि जा रहि अछि-

मुनाजी- जगदीश बावू त्ववाक्क पूमिकीगीधारी भऽ अहाके एतेक देरीसँ मैथिि ीि निनक पवृत्तिक की कारि?

जगदीश पसाद मंि-अपनेक पश्नक उतर दैइसँ पहिने मुनाजी त्विकु अपन बात कहि दैत िी। केजरीवाि हायर सेकेण्डी स्कूि झंझारपुरमे स्पेशि नाइन्थसँ िऽ कऽ स्पेशि एि बुिन धरि एक सय नम्बरक एक विषय मैथिि ी पढने िी। मुदा कओि जमे नहि पढि ी। हिन्दी पढि ी। साहित्यसँ सिनेह सभ दिन रहि। दीि दस दू हजार ईस्वीक बादे बढि ी। ऐठाम सुाफमएतबे कहब जे जमीनी संघषक उपरान्त वैििक संघषमजोर पकड़ैत अछि तँए दीि ब अिावायमभऽ गेि। जहिसँ जीवनमे आरो मजबूती अएि। सभके माने हर मनुष्यके अपने िगसँ सिनगी शुर करक िाहिएि। कमक क्षेत्र अपन गाम रहि जहिठामक भाषा मैथिि ीि ी तँए हिन्दीक विदाथी रहितहुँ मैथिि ीमे दीि िी। देरीसँ दीिक कारि इहो भेि जे १९६७ई.मे जिन बी.ए.क विदाथी रही, वामपंथी राजनीतिमे जुड़ि ी। काजसँ जते समए बँिए ओ सेवामे िगबए िगि ी। बी.ए. धरि जनता कओि ज झंझारपुरमे आ आगू सी.एम. कओि ज दरभंगामे पढि ी। ओना दीिक आरो कारि अछि जे उमक संग शरीरक शक्तियो कमए िगि।

मुनाजी- एतेक दीगीक (एम.ए.क) पिित तँ अहा समएमे नोकरी भेटव बेशी असोकजमनै िि। नोकरी नै कऽ िती-बारीक सुाथि अहाक कोन मानसिकताक दोतक ऐि?

ज.प.मं.-आजुक दृष्टिये जरर बुझ्झ पड़ैत हएत जे ओहि समए नोकरी सस्ता ििक मुदा से बात नहि। एहि पत्नपेक्ष्यमे त्विकु कहि दुिएए िहै िी। झारिंि िगा विहार राज्य िि। अिन जते िाि, सवदीवीजन आ धिक आइ िंदीत विहारमे देि दीऐ ओते पूमि(सौसे) विहारमे नहि िि। संग-संग जते काजक विविधता अिन धरि, सेहो नहि िि। अिन तीस-सैतीसटा िाि िंदीत विहारमे अछि जिन त्वक ओहि समए सुाफम सतरहटा िाि िि। जहि मधुबनीमे पाि टा सवदीवीजन अछि ओ अपने सवदीवीजन िि। तहिना त्ववाक विभागमे िि। गनि-गूथि कओि ज आ हाइ-स्कूि रहए। आइक मधुबनी (पोपर)मे िािटा कओि ज- झंझारपुर, सरसो, पंिि आ बाबूबरहीमे िुजि। बाबूवरहीक कओि ज (जे.एन.) मधुबनी िि गेि। ओहिसँ पूवम आर.के. काओि ज आ महिसक एकटा आरो िि। बाकी सभ बादक िी। जिन जनता कओि ज झंझारपुर िुजि, ओहि समए अधासँ अधिक त्ववाक्क (पोफेसर) आने-आन िािक िािह। तँए त्वक एहि क्षेत्रमे पढि- दीिि िाक नहि िािह से बात नहि।
बैकक शािा जते आइ देि दीऐ ओते नहि िि। महिसक मधुबनीमे एकटा रहए बाकी नहिये जका िि। तहिना धिकोक िि। एक तँ संख्या कम दोसर एकटा बी.िी.ओ. रहैत िािह। जिन त्वक बी.िी.ओ; सी.ओ.

आ पी.ओ. तीनटा अछि तिनका।

कर्पूरी-कारणसँ ताना नाओपर एकटा चीनी मिल (रिहट) ओ गोल्डपडरा फिउरक मिल छल। ओना आरो बहुत बात अछि मुदा मोटा-मोटी कहलौं। आब अही कहु जे नोकरी करत छथि। ओहि अनुपातमे अछि बेसी अछि।

छोटी करैक कारण-

जखन हम तीनठाये बच्चा रही तखन बाबा मरि गेल छलाह। हमरासँ तीन बच्चा पैघ भाय छलाह। ओना परिवारमे दूटा विधवा औरत भाय रहैत छलाह। हुनका रहैक कारण छल हुनकर घर फुलपरास विधानसभा क्षेत्रक घोघरडीहा धरि कक अमही पंचायतक हलनाही गाम छलनि। जखन कोसी पश्चिम मुँहे जोर केलक तँ गाम उपटि गेल। सभ किछु बेरमा चलि एलाह। जे घटना १९३५-४०क बीचक छी। फेर जखन कोसी पूब मुँहे ससरल तखन १९६०ई.मे पुन: ओ दुनू भाइ चलि गेलाह। हुनका सबहक गेने आरहसँक संग-संग पढवो करी। तहियेसँ छोटीसँ जुड़ाव भऽ गेल। जे जीविकाक साधन रहल।

मुनाजी- पारम्भमे अहा अपनाके साम्यवादी कहि सामंतवादक विरुद्ध हो-हल्ला मारि-झगड़ामे सक्रिय रहलौं बादमे अइसँ विमोह किएक? ऐसँ की फायदा वा नोकसान उठएल?

ज.प.मं.- जहिना छलौं तहिना छी। मुदा परिस्थितिके ऑकड़ देखए पड़त। सामंतवादमे मनुष्यक बुनाबट जातिपर पक रहैछ ओ सामंतवादपर चोट पड़लासँ बदलैत छैक। कीर्तनिया-लहानी आ नाटकक स्टेज सामाजिक विकास आ सामाजिक जीवन नहि होइत छैक। नाटकक स्टेज होइत छैक- तीन घंटामे रामक जन्म, जनकपुरक धनुषयज, बनमे सीताक हरण आ रावणक मृत्युक उपरान्त विसर्जन। तहिना कीर्तनिया लहानीमे सेहो होइत छैक। मुदा समाजक मंच बहुत जटिल होइत छैक। जहिक छल समयो लगैत छैक आ संघर्षो होइत छैक। तहूँसँ जवदस्त वैचारिक संघषम सेहो होइत छैक। संक्षेपमे- आत्मिक विकासक कममे छोटीक छल जखन नवका माने उनटा विकासक बीआ आएल तँ सामंती सोचक लोक विरोध केलनि। हुनकर आरोप छलनि (१) वस्तुमे सुआद नहि होइत छैक, (२) पावनि-तिहारक दृष्टिये अशुद होइत अछि, (३) स्वास्थ्यक दृष्टिसँ खाद देल अहितकर होइत अछि जहिसँ बीमारी बढत। तहिना दरभंगा अस्पताल छिछिपर सेहो विरोध भेल। गाम-घरमे एलोपैथिक विरोध भेल। आरोप छैक- गाइयक खूनक इन्जेक्शन आ सुगरक मासक बनल दवाइ। साधारण इनारक जगह पानाक कल भेने सेहो विरोध भेल। आरोप लगैत छल जे कलक वासर चमड़ाक होइ छै, तहिसँ पूजा कोना हएत आ अशुद पानि लोक पीत कोना? कते कहब। एहि परिस्थितिके संकमण काल कहल जाइ छै। सामंतवाद टुटलाक बाद पूँजीवादी आ समाजवादी दिशा अबैत छैक।

हमरा गामक नब्बे प्रतिशत जमीन बहरवैयाक छलनि। ओना तीनटा जमीनदार छलाह वाकी दूटा मास छलाह। जनवादी लड़ाइ शुरु होइते दूटा मालिक (जमीनदार) अपन जमीन बेचि लेलनि। एक गोटेक संग जवदस्त लड़ाइ भेल। जमीन्दारक संग सूदखोर महाजन सेहो छलाह। हुनको संग लड़ाइ भेल। अखन ने कियो बाहर जमीन्दार छथि आ ने महाजन। गाममे किनको अधिक जमीन नहि भेलनि। ऊपर दस बीघा आ वाकी लाचारी छथि। एहि दरमे करीब तीस बरख लड़ाइ गाममे छल। सतत-एकहतरिक उठल तूफान शान्त होइत-होइत ५.५.२००५ई.के अंतिम मुकदमाक अन्त भेल।

विकासोक प्रक्रिया छैक। आइक भारी मशीन (कमप्यूटर) देखि नव पीढीक लोकके सहजहि विश्वास नहि हेतनि।

मुदा हाथक काज हाथसँ ि िबि औजारक संग ि घु मशीनमे बदि ि। ि घुमशीन पत्नमात्नास होइत भारी आ तेज मशीन बला ठाढ अि छ।

मुनाजी- कहि जाइि जे अहाक साम्यवादीक त्वदोह ि त्न त ि न दत्न गेि ज ि न की अहा सामंती दारा देि प ि भनके स्पीकात्न ि ि ि की सत्य अि छ?

ज.प.मं.- ि त्नम पश्नक उतर भेट गेि हएत मुनाजी। जँ से नत्न तँ अनठेकानी गोि ि फेकब हएत।

मुनाजी- उगवादीसँ र ि नावादी पवृत्ना कोना जागि कोनो एहेन त्वशेष घटना जे अहाक र ि नात्मक सोि के पेत्नत केने हुअए?

ज.प.मं. - पाि म पश्नक उतर सेहो आत्न गेि अि छ। दुत्नायाक नक्शामे जकरा शीतयुद (cold war) कहि गेि अि छ वएह वैि ात्नक संघषमि ि ि। जकरा ि ि सात्नत्य पमुि अस्त्र ि ि।

मुनाजी- मैत्थि ि ि र ि नाकारक पवृत्ना अि छ जे एक-दु र ि ना कऽ अपनाके मैत्थि ि ि धारामे जोड़वामे जुत्न जाइि मुदा अहा एकर उि ट त्नन्तनशीि ि आ र ि नाशीि ि रत्न नुकएि सन रहि ुँ?

ज.प.मं.- ि ठम पश्नक संबंधमे स्पष्ट समझ अि छ जे जत्नना उतरबत्नया पहाड़सँ त्नाकि ि ि ि ट-ि ि न धारा सभ दि छन मुँहे टघरैत नदी-नाि ि मे त्नि ि त आगू बढैत गंगामे पहुँि समुदमे समात्नत भऽ जाइत अि छ तत्नना जँ सात्नत्यक (र ि नाक) दशा-त्नशा नीक रहत तँ सात्नत्यक धारा बनवे करत। ई त्नसवास अि छ। जना आन-आन गोटे शुर हेसँ र ि ना त्नस बढि ि ह से नत्न भेि । कारि ऊपर आत्न गेि अि छ।

मुनाजी- त्नयोगीजी अहा त्नकतावक आमुि मे अहाके २०गोट कथा, ५गोट उपन्यासक पाण्ि त्नत्न ि ऽ भेट करवाक कममे अहाक दृत्नट फरीि दू साि बाद पुन: भेटमे हेबाक बात कहि त्नाहे ऐपर अहाक की त्नि ार?

ज.प.मं.- मैत्थि ि ि सात्नत्य जगतक त्नयोगीजी पत्नि सात्नत्यकार ि थ्य त्नानकासँ पत्नि भेट ि ि। ओना एक-दू बेर फोनपर गप भेि बाद उमेश मंि ि पटना गेि रहत्य तँ भेट केि कत्ना। त्नि ु र ि ना सभ ि ऽ कऽ सेहो गेि रहत्य। दू-ि ात्न पना पत्न कऽ सुनेवो केि कत्ना। मुदा ि ढ-दू घंटाक बात ि ि तमे जाने-पहि ानिक बात बेसी भेि त्ना।
हुनकासँ हमर पत्नि भेट मधुबनीमे ि ि ज ि न ओ मधुबनी अएि ाह। ओही कममे रहुआ कथा-गोष्ठीक जानकात्नयो देि त्ना आ ि ि इयोि कहि ात्ना। हुनक सम्पादनमे देशज पत्नाका २००३ई.मे ुत्नामर्मीक त्नकतावक दोकानमे भेटि। जात्नमे यातीजी आ त्नकरजीक संग गप-सप्प सेहो त्नाकि ि। त्नि ारक दृत्नटसँ यातीजी सँ त्नदाथीये जीवनसँ पभा ुत्नत ि ि। पत्नाका पात्न आरो पभात्नत भेि आ त्नयोगी जीक संग आकषमि सेहो बढि। तत्नना त्नकरि

जीक त्मनगीसँ सेहो बहुत पभात्वत कओि जे जीवनसँ ि िहुँ। िगसँ हुनका देि ने रत्हएला। जि न हम सी.एम. काओि जिमे पढैत रही ति न ओ पोफेसर ि िह। गप-सप्पक कममे ओ बजि ह जे जत्हना बजै ि ि तत्हना ब्ुी ि ब मैत्थ्रि ि ि। हुनकर ई त्वि र तत्हये नत्ह अि नो रग-रगमे समाएि अति।

मुनाजी- उपरोक्त आमुि मे ओ कहने ि त्थि जे अहा हुनकर (त्वयोगीजीक) एहेन अंधभक्त ि ि जे हुनकर त्कताबके तात्क-तात्क कऽ पढैत रही एकटा त्कताबके तकबाक कममे पटना धत्त गेि मैत्थ्रि सात्हत्यक पाठक शुन्यता (कीत्ता कऽ पढैबि )मे जँ ई सत्य ि तँ एकर की कारि ?

ज.प.मं.- अहू पश्नक उतर आत्व गेि अति। ई बात हुनकामे जर र ि त्ह जे उपकत्त-उपकत्त कतेक त्कताब देि ला। भक्त आ भगवान साम्पदात्यक भाषा ि ि। त्कयो अपन कमसँ बढैत-घटैत अति मुदा आगूसँ अधि सोि ब आ करबके अधि बुझै ि ि।

मुनाजी- त्कि ए समयान्तरि मे त्वत्वध त्वधापर अहाक ८गोट पोथीक पकाशनसँ केहेन अनुभूत्त भऽ रहि ऐि अत्ि ि त्कि की ऐि ?

ज.प.मं.- पोथी पकात्शत भेि पर जत्हना आन गोटेके अनुभूत्त होइत ि त्ह तत्हना भेि । ि त्कक जहा धत्त पश्न अति तँ पसादजीक पात्त मन पड़ैत अति-

“जीवन का उदेश्य नत्ह है शान्त भवनमे त्टक जाना

और पहुँि ना उन राहो पर त्जनके आगे राह नत्ह।”

मुनाजी- एतेक पोथी पकाशनक पि त्ायो अहाक ठोस मूल्याकन वा पुरस्कारक हेतु ि यिन नै भेि सँ अपन पत्शम त्नरथक सन तँ नै ि गैए।

ज.प.मं.- कोनो रि नाक मूल्याकन समए करैत अति। समयानुकूि रि ना ि ि वा नत्ह ई समए आँत्क कएि जा सकैत अति। रहि पुरस्कारक बात? पेमि न्द सन उपन्यास समाट आ कि मक जादूगरके कोन पुरस्कार भेटि ला। मुदा ओ अपना शमके त्नरथक कहा बुझि ला। अंत्तम सास धत्त सेवा करैत रहि ह।

अपन पि हतत्तम जन्म त्दनक अवसरपर नामबर भाय (ि ॉ. नामबर त्सह) बाजि ि ह- “जते काज अि न धत्त केि हुँ ओते पाि बि मे करब।” हुनकर कते सेवा ि त्ह सवस्वत्त अति। जि न पि हतत्त बि स्क बूढक एहेन वक्तव्य ि ला ति न तँ हम अपनाके जवान बुझै ि ि।

मुनाजी- मैत्थ्रि मे पारम्भेसँ बनि जात्त-पॉत्तक फुटके अहा कोन दृत्टए देि ि ि। आ स्वयं अहा ओइ बीि

अपनाके कतऽ पबै ि ी।

ज.प.मं.- शुर हेसँ वमिनत्ह वगमे त्वश्यास अि्त। जत्ह आधारपर काज करैत एि ै आ कत्वतो ि ी। समाजमे जे जात्ता-धमत्क (सम्पदायक) ि ि ि ैत अि्त ओ राजनीत्ता केत्वाहारक ि ि्त ि ी।

मुनाजी- त्वड़ि़ावगत्सँ आगा (रिनात्मक र पे) अबैत ि िकक अहा उपर उठेवा ि ि कोनो सहयोगी बनव पत्सान करब? हुनका सबहक ि ि कोनो संदेश?

ज.प.मं.- जात्हठाम व्यवस्था बदि ैक पश्न अि्त ओ ने एक त्वनमे हएत आ ने एक गोटे बुते हएत। सबहक कत्याि हएत आ सभके करए पड़त। तँए सभके कहैत ि्तअत्ता जे जागू, उत्ठ कऽ ठाढ होउ। आगू बढ़ू। त्तत्याि सबहक मातृभूत्म आ मैत्याि ी सबहक भाषा ि ी तँए अपन बुत्म सेवामे ि ित्ता जाउ।

मैथिली आ हिन्दीमे समझाया आ धुरझार िनसँ पलपक्व। मैथिलीमे एकटा ठोस विार आ दुर दृष्टि िऽ स्थापित होइत कथा शी राजदेव मंिजी सँ हुनक िनीपर गहीर र पे मैथिलीक सशक्त युवा लेहला कथाकार आ समािक मुनाजीक बीि भेि गप-सप्पक अंश पस्तुत ऐि-

मुनाजी- अहा िटी लाल्थिभुलाक पाला मालमे रि बसि रहल हिन्दीमे उन्मुि रहि। मैथिलीमे लेकएक नै?

राजदेव मं. - देश-दुलाया/ िहे जतेक बदलि जाए/ अपन भाषा अपन माए/ कहुँ बिसरि जाए/। माएक दारा लिाओि भाषा के बिसरत? रिनाक पारम्भ मैथिलीमे कएिहुँ। लेकिन्तु पकाशनक अभाव आ पकाशक, सम्पादक िग कोनो पहुँि नै। अथसँ की नै होइत ि। हम अथाभावमे रही। मैथिलीक कोनो रिना पकाशित नै भेि। फुिइत मन मुरझा गेि। ओइ समएमे हिन्दीसँ एम.ए.क तैयारीमे जुटि ििहुँ। हिन्दीमे लेिनाइ सुविधाजनक सन िगि। लेिब आ िपेबाक उत्कट इच्िाक कारि हिन्दी लेस कनिी काटए पड़ि।

मुनाजी- मैथिली िनीक पारम्भ कहिया कोनो कएिहुँ? एिन धरि मैथिलीमे हेराएि वा वेराएि सन रहवाक की कारि?

राजदेव मं. - मैथिलीसँ एम.ए. केिक उपरान्त १९८६ई.क कोनो राति, नीक जका स्मरि नै ऐि- ओ तारीि। ओइ राति मानसिक स्तरसँ बडि दुिी रही। एतेक दुिी जे सुतएकािसँ पूवमकतेको बेर मुँहसँ लािकि रहए- हे भगवान हमरा धरसीसँ उठा लिअ। हमरा मृत्यु िाही। हम मरऽ िाहै िी।

ई वाक्य सभके दोहराबैत लानमे िूबि गेि रही। अधरतियामे जिन लान टूटि तँ मन लेकि हलुिक सन बुझाएि। ओसारपर लझाइत दीयाके बड़ी कािधरि एकटक देिित रहिहुँ। कतेक काि धरि से स्मरि नै ऐि। लेकिन्तु ओ लझाइत दीया पथम मैथिली कविता बनि गेि। जे संगह अम्बारा'मे संकलित ऐि। भऽ सकैत ऐि ऐसँ पूवममैथिलीमे अपूिमरिना सभ हएत।

आब सवाि हेराएि आ बेराएि ऐि। हेराएि ओ रहैत ऐि जे अनतिन्हारक बीि रहैत ऐि आ अनजान स्थानपर रहैत ऐि। हम तँ अपनहि जन्म स्थानपर िी आर तिन्हार िकक बीि िी। ओकरा की कहबै जे तिन्हार िकक बीि अनतिन्हार बनि हेराएि ऐि।

ओ बेराएि जाइत ऐि जेकरा दारा अधािह काज भेि हुअए। हम अपना जनैत नीक काज करैत अहाक िगमे ठाढ िी। तइयो बेराएि सन। तँ एकर कारि की कहब?

मुनाजी- अहाक कविता गाम समाजक िकक पति अहाक विार लाल्थिक पारम्परिकताके संजोगने बुझाइत ऐि। जिन लेक वतमानमे तकनीकी विकासे िकक जीवन आधुनिक सोिमे िूबि रहि ऐि। अहा अपनाके सँ दूर कोना रिने िी?

राजदेव मं. - हम कोनहुँ पारम्परिकताके संजोगने नै िी आ नै आधुनिक जीवन सोिसँ अपनाके दूर रिने िी।

हँ त्कि सरस शब्दके जोड़बाक पयास कएिहुँ जाहिसँ रमणीय अथमलाकली सकए। की िटि आ की जुड़ि ऐि। नीक वा अधलाह भेलि तेकर लगि तँ अही सभ करब।

मुनाजी- एि न धल अहाक मैथिली ििनीमे कलेते टा जगलायार भेलि ऐि की, अहा कोनो आनो लधामे लीि त ि?

राजदेव मं. - त्कि कथा लीिने ि। एकटा उपन्यास लीि रहि ि।

मुनाजी- अहा लन्दी भाषामे कतेको पोथीक सजक ि, जे लि कऽ सोझा आल िकि ऐि। मैथिलीमे एतेक पालि त्कएक ि त्कएक ि एकर कोनो लशेष कारि तँ नै ऐि?

राजदेव मं. - लन्दीमे तीनटा उपन्यास पकालात भऽ िकि ऐि। लन्दगी और नाव, लजरे के पंि, दरका हुआ दरपन। मैथिलीमे लीित िहुँ लक्नु पकालात नै भेलिक कारि पालि िहुँ। उमेश मंि आ गजेन्द्र ठाकुर जीसँ सम्पकमभेलाक उपरान्त मैथिली ई पत्रिका लदेहमे पकालात हुअए िगि। शुत पकाशन दारा लदेह मैथिली पद २००९-१०मे सेहो पकालात भेि।
वास्तवमे ओ सभ धन्यवादक पात लथ। एकर उपरान्त अंलाका आ लाल्यालि दशममे सेहो त्कि कलता सभ आएि।

मुनाजी- मैथिली भाषाके अपन त्कि मैथिल सभ बाभन मातक भाषा कलह गैर बाभन िक सजक लािर वा भाव रली तो अपनाके कलाया ित लथ। अहा एकरा कै पलपेक्यमे देिि?

राजदेव मं. - भाषाके कोनो बन्धनमे बालह कऽ नै रािि जा सकैत ऐि। जालाक बन्धन तँ आओर िराब। भाषा तँ सबहक होइत ऐि। तँए सभ जाल आ वगक िकके अपना भाषा उत्थानक िि पयास करबाक िही। सहयोगक भावना सेहो हेबाक िही। पारम्भमे त्कि बाधा होइते ऐि। तै कारि कलाया जाएब से नीक नै।

मुनाजी- बाभनसँ इतर अहाक समकक सजक शी जगदीश पसाद मंिजी जे अपन िनीए कतेको स्थालत रिनाकारके पालि िल्ड अल्म समएमे शीषमर अबैत देिइत लथ। ऐ माध्यमे िटका-बड़का जालक फाुटके अहा कोना पलभालत करब?

राजदेव मं. - ऐमे िटका आ बड़का जालक फाट की कएि जाए। त्कि रिनाकार दुतगलसँ लीित लथ। जेना शी जगदीश पसाद मंि। स्पभालक ऐि जे ओ अल्मकालमे बेसी लीिताह। त्कयो मन्थर गलसँ रिना करै लथ। लीिबाक अपन-अपन शैलि आ गल होइत ऐि। ओलहना शीषमलस बढबाक गल होइत ऐि।

मुनाजी- अपन मैत्थ्रािी ि िनयाताक कममे कत्लहयो अपनाके गैर बाभन हेवाक कारि अनसोहात वा उपेत्क्तक अनुभव तँ नै प ि हुँ?

राजदेव मं. - सवेदनशीि के तँ उपेकाक अनुभव होएबे करतैक। समाज आ पत्लवारके पत्यक र पे त्लक ि नै दैत त्ीए। ओ सभ उपेकाक भाव रा ि बे करता। अपनासँ आगू कोनो जात्लाके दे ि इष्या होएबे करत। ई तँ मनुर्क क गु ि ऐ ि। भऽ सकैत ऐ ि जे हमरोसँ पा ि ब ि के त्लक ि एहने अनुभव होइत हेतै। ऐ गप्पपर अपने त्ी ि ि पॉत्ला यात्ल अबैत ऐ ि- ''उपेकाक दंश/ हमरत्ल अंश/ नै ऐ ि त्ीन्ता/ नै ि ि तस्त्/ भे ि ि ि अभ्यस्त.../''

मुनाजी- मैत्थ्रािी समीक्क ि किला र ि नाकारक कोन मन:त्स्थत्लाके समीकाक र पे पत्लभात्लत करैत ि त्था? की ओइमे जात्लावात्लताक नजत्लया सेहो पत्ल ि त्क्त होइत ऐ ि?

राजदेव मं. - समीकाक बहुत अत्लाक पुस्तक हम नै पढने ि ि। ऐ तरहक गप्प सोका नै आुएि ऐ ि। ओना समीकाक कायमबहुत दात्लात्वपू ि महोइते ऐ ि। र ि नाकार आ पाठकक मध्य त्ला ि नित्लन्दूपर समीक्क रहैत ि त्था। ओ कोनो र ि नाके दोष-गु ि क अन्वेषि करैत ि त्था। जँ हुनक नजत्लया जात्लावादी हेतैक। तँ ऐसँ भाषाक क्त्ला हेतैक।

मुनाजी- अहा समीका सेहो करै ि ि अपन समीकाक माध्यमे अहा र ि नाकारक व्यत्क्तत्वके पत्ल ि त्क्त करैत ि ि, वा र ि नाकारक कृत्लात्वके सोझा अनवाक पयास करै ि ि की जात्लाक फाटके भत्ल र ि नाकारक दे ि ार करब उत्ी ि त बुझै ि ि?

राजदेव मं. - समीका तँ होइत ऐ ि र ि नाके। तँए व्यत्क्तत्व आ कृत्लात्वके अ ि ग-अ ि ग रा ि ि जएबाक ि ाही। समीकाक कायमे तँ तटस्थ भऽ र ि नाक दोष गु ि क ि ि न्याय-संगत ढंगसँ हेबाक ि ाही। हँ, त्लक ि सात्लहत्यकारक सवोत्कृष्ट कायमदे ि धन्यवाद देबाक ि ि बेवश होमए पड़ैत ऐ ि। ऐ कायमे जात्लाक फाट केनाइ त्लातान्त अनुत्ी ि त गप्प त्थक।

मुनाजी- अन्तमे अहा गैर बाभनक मैत्थ्रािीमे अनुपत्स्थत्लाके कोन तरहे अनुभव करै ि ि। ऐमे गैर बाभन वगमक सजमकके वेशीसँ बेशी उपत्स्थत्लाक ि ि कोन संदेश वा त्ल ि ार देब।

राजदेव मं- पूि म पे ि भाषाक त्लकासक ि ि सभ जात्ल आ वगमक र ि नासँ भाषाके पत्लपू ि महोएबाक ि ाही। तँए जे पा ि ि त्था हुनका सभके अध्ययन, मनन आ अभ्यास करबाक ि ाही। बेसीसँ बेसी र ि ना करबाक ि ाही। सहयोगक भावना रहक ि ाही। अत्लाकार पाप्त करबाक ि ि तँ आगू बढै पड़त।

हम पुि‍त ि‍ि- देवशंकर नवीनसँ मुनाजी पुि‍त ि‍त्‍थ ढेर रास गप।

1. अहाक साि‍हि‍त्‍यक ि‍ि‍न-पत्‍कया कोना आ कत'ए पारम्‍भ भेि‍? पहि‍ बेर कोन ि‍वधाक कोन रिना कत' आ कि‍हया ि‍पि पूि‍मजनतब दी।

नेनमत्‍ताएसँ फकड़ा जोड़बाक ि‍सक सवार भ' गेि‍ ि‍ि। एक बेर ओ फकड़ा ि‍कनकहु भावनाके आहत केि‍कला, ओ हमर ि‍पता ि‍ग ि‍शकायत केि‍ला। ओइ ि‍दन ि‍मरधा जूतासँ हमर ि‍पटाइ भेि‍ ि‍ि। कैक ि‍दन धि‍र ज'र ि‍गि‍ रहि‍।...

सन् 1972मे हम अठमा कि‍ासमे रही। ठीक-ठीक मोन नइँ पड़ै'ए, मुदा ओही ि‍गाला नमा-दसमा कि‍ासमे अबैत-अबैत ि‍कल्‍मी गीतक ओजन पर पैरोि‍ी गीत ि‍ीि‍ए ि‍गि‍ रही, जकर गायन हमर गामक कीत्तम मण्‍ि‍ीमे भेि‍ करए। ओही कममे गाम भि‍रमे पि‍र होअए ि‍गि‍। कम आगू बढैत गेि‍। तै समयमे साि‍हत्‍यक माने कोनो ि‍वीत आ ि‍वि‍क्‍ि‍ भाव-बोधक तुकबन्‍दी बुझैत रही।...

सन् 1976मे मैि‍क पास केि‍हुँ। सहरसा कॉि‍ज, सहरसामे नाम ि‍ीि‍ाओि‍। सन् 1978-80 सतमे बी.एस-सी.मे पढैत रही। कॉि‍ज-पि‍तकामे हमर एकटा कि‍वता मैि‍थि‍ीमे ि‍पि‍ ि‍ि। पि‍ि पकाशन ओएह ि‍थक, मुदा ओ कि‍वता कतए गेि‍, पता नइँ! ता धि‍र सय के ि‍गाला पैरोि‍ी आ फकड़ा ि‍ीि‍ ि‍ुकि‍ रही। ओही ि‍दनमे हमर ि‍ीि‍ ि‍ एकटा पैरि‍ी गीत सुि‍नकए हमर कका पो.नारायि‍ झा(ए ि‍न ओ वीरपुर कॉि‍जमे अंगेजीक अध्‍यापक ि‍त्‍थ) हमरा महादेवी वमाक पोथी सब पढबाक सि‍ाह देि‍ला। ि‍कि‍-ि‍कि‍ पढए ि‍गि‍ि‍। सन् 1981-82क मध्‍य सहरसामे पाि‍ ि‍वषयमे एम.ए.क पढनी शुरह भेि‍। मैि‍थि‍ीमे एम.ए. करबाक रि‍ी हमर जाि‍ उठि‍। ि‍मि‍थि‍ा ि‍महर पि‍तका पढए ि‍गि‍ रही। एम.ए.मे नामाकन भ' गेि‍। कि‍ासमे पढनी शुरह भ' गेि‍। ककामे हमर अि‍ावा स'ब गोटए ि‍वि‍धवत् ऑनसमआ साि‍हत्‍यक पोथी पि‍ढ-पि‍ढ आएि‍ ि‍ि‍ह। एकटा हमही रही, जकरा ि‍कि‍ुटा बोध नइँ ि‍ि‍क। साइन्‍सक ि‍तके भाषाक बोध नइँ रहै ि‍--अइ ि‍कम्‍वदन्‍तीक आधार पर शुरह-शुरहमे आन सहपाठी ि‍ि‍कला कोनो माि‍ा-मोजर नइँ दैत्‍थ, मुदा कमे-कमे से सहज होअए ि‍गि‍। ओही बीि‍ सन् 1983मे सहरसा कॉि‍जमे ि‍वदापि‍ समारोह आयोि‍जत भेि‍ ि‍ि। 'मैि‍थि‍ी ि‍कसाि‍हत्‍य' पर ि‍ि पि‍तयोि‍गता आयोि‍जत भेि‍ ि‍ि। ि‍बहारक तत्‍काि‍ीन राज्‍यपाि‍ अि‍ि‍ि‍-उर-रहमान ि‍कदवईक हाथे पुरस्‍कृत भेि‍ रही। हसि‍ बि‍ढ गेि‍ ि‍ि। सहरसा पि‍रसरक मैि‍थि‍ीक ि‍वदान ि‍ि‍कलाक बीि‍ पहि‍ान बनए ि‍गि‍ ि‍ि। पैरोि‍ी ि‍ि‍न पाि‍ू ि‍ूि‍ट गेि‍। साि‍हि‍त्‍यक पोथी-पि‍तका पढबाक ि‍गता होअए ि‍गि‍। सन् 1983मे ि‍मि‍थि‍ा ि‍महरमे एक टा कि‍वता पकाि‍शत भेि‍--ि‍मि‍थि‍ाक वासी।...ति‍नहुँ धि‍र तुकबन्‍दी मातके हम कि‍वता बुझैत रही। ओही बीि‍ राजकमि‍ ि‍धरीक दू टा मैि‍थि‍ी कथा--'ननि‍द भाउि‍ज', 'एकटा ि‍मि‍ाकि‍ी: एकटा ि‍वषधर' आ एकटा ि‍हन्‍दी कथा 'जि‍ते हुए मकान मे कुि‍ ि‍ग' पढबाक अवसर ि‍गि‍। ई तीनू कथा हमर दुि‍नया बदि‍ि‍ देि‍क। याती आ राजकमि‍ ि‍धरी अही समयमे सम्‍मोि‍हत केि‍ला। सम्‍मोहन बढैत गेि‍, पाठय-पुस्‍तकक केि‍ बढैत गेि‍। ि‍ीि‍त-पढैत रहि‍हुँ... इएह कथा अि‍ी। समवयस्‍की साि‍हि‍त्‍यक बन्‍धु ि‍ि‍कलामे सबसँ पि‍ि‍ पि‍रि‍य आ पगाढता तारानन्‍द ि‍वयोगीसँ भेि‍।...

2. मैथिलीमे सत्तरिके दशक वा ओकर पाछू जुड़ल रचनाकार द्वारा बहुत रास विधा(दुनू विधाक बहुत रास प्रकार) पर काज भेल, अहाँ अइ मध्यम पीढ़ीक रचनाकारक क्रियाशीलताकेँ कोन नजरिएँ देखै छी?

अहाँ प्रायः ई पूछए चाहै छी जे बीसम शताब्दीक सातम आ आठम दशकक रचनाकारक क्रियाशीलता केहन रहलि? जँ सएह सत्य, तँ हम सबसँ पहिने अइ बीस बर्खक अन्तरालमे क्रियाशील प्रमुख रचनाकारक नाम गनबए चाहब।

अइ अन्तरालक अमूल्य विशेषता ई छल, जे पहिलुक पीढ़ीक कतोक रास नव-पुरान(वयस आ विचार दुनूसँ) रचनाकार लोकनि एक संग सक्रिय छलाह। ओहिमेसँ प्रमुख छथि--सीताराम झा, काशीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, तन्त्रनाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', सुरेन्द्र झा 'सुमन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', आरसी प्रसाद सिंह, जिवकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', गोविन्द झा, रामकृष्ण झा 'किसुन', चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', राजकमल चौधरी, ललित, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र हंसराज, लिली रे, बलिराम, रामदेव झा आदि।

सातम दशकमे अपन प्रखर ऊर्जाक संग जे झमटगर पीढ़ी ठाढ़ भेल, ताहिमे प्रमुख छथि--धूमकेतु, रमानन्द रेणु, राजमोहन झा, गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, कीर्तिनारायण मिश्र, वीरेन्द्र मल्लिक, मार्कण्डेय प्रवासी, साकेतानन्द, जीवकान्त, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामानुग्रह झा, कुलानन्द मिश्र, भीमनाथ झा, मन्त्रेश्वर झा, उदयचन्द्र झा 'विनोद', उपेन्द्र दोषी, सुकान्त सोम, महाप्रकाश, महेन्द्र मार्कण्डेय, सुभाष चन्द्र यादव, उषाकिरण खान, राममोहिनी ठाकुर, उदयनारायण सिंह 'नचिकेता', बुद्धिनाथ मिश्र आदि।

अइ पीढ़ीक पाछुए लागल अगिला पीढ़ी ठाढ़ भ' गेल। अहाँ मानि सकै छी, जे आठम दशकक नामे जाहि पीढ़ीक नामकरण होइत अछि, तकर कतोक रचनाकार सातमे दशकक अन्तिम समयमे चिक्कन होइत अपन ऊर्जाक संकेत देबए लागल छलाह। अइ पीढ़ीक महत्त्वपूर्ण नाम थिक--विभूति आनन्द, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, पूर्णेन्दु चौधरी, ललितेश मिश्र, विनोद बिहारी लाल, अग्निपुष्प, केदार कानन प्रदीप बिहारी, सियाराम सरस, तारानन्द वियोगी, विभारानी, नारायणजी, शैलेन्द्र आनन्द, रमेश, नीता झा, शैलेन्द्र कुमार झा, ज्योत्स्ना चन्द्रम, सुस्मिता पाठक, आदि। हमर प्रवेश अपेक्षाकृत देरीसँ भेल।

अइ अन्तरालक रचना-कर्म पर चर्चा करबा लेल किछु महत्त्वपूर्ण बात पर ध्यान देब आवश्यक होएत। सन् 1947मे भारत देश स्वतन्त्र भेल आ सन् 1949मे महाकवि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क कविता संग्रह चित्रा प्रकाशित भेल--ई मात्र संयोग नइँ थिक। प्रथम स्वाधीनता संग्रामसँ स्वाधीनता प्राप्ति धरिक नब्बे बर्खक अन्तरालमे मैथिलीक पूर्वज रचनाकार लोकनि मातृभाषाक प्रति परम अनुराग रखितहु कोनो क्षेत्रीय धारासँ प्रेरित नइँ भेलाह, स्वाधीनता संग्रामक चिन्ता पूर्णतामे लागल छलाह। स्वाभाविक छल जे सन् 1930-35क लगातार रचनारत लोकक सभक मुख्य चिन्ता सेहो ओएह बनल। मुदा, ओहि कालक मिथिलाक स्थानीय समस्या सब सेहो प्रबल छल। विद्यापति, गोविन्द दाससँ होइत मनबोध, चन्दा झा धरि मैथिली भाषा साहित्यक स्वरूप तँ बड़ आगू आबि गेल छल, मुदा अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार बढ़ि गेने स्थानीय अस्मिता संकटपूर्ण देखाए लागल छल। स्वाधीनता प्राप्तिक बादहु मैथिली कोनहुँ जनपदक राजभाषा नइँ बनल। मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा-दीक्षाक व्यवस्था मैथिलीमे सेहो नइँ भेल। मातृभाषाक प्रति अनुराग आ ममता रखनिहार मिथिलाक जनसाधारण तथा प्रतिबद्ध रचनाकर्मीके अइ बातक आघात लगलनि। चन्दा झासँ लक'भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आ काशीनाथ झा 'किरण' धरिक जे रचनाकार लोकनि समस्त आग्रह छोड़ि, लेखनीसँ स्वाधीनता संग्राममे अपन योगदान देने छलाह, हुनका आ हुनकर अनुवर्ती पीढ़ीक रचनाकार लोकनिकेँ ई झटका अत्यधिक आहत केलकनि।

एकर अिावा वंशवाद, जातिवाद, आ धार्मिक पाि णिक कारि जते कुसंस्कार मैथिलीमे ओहि समयमे पोनगिक क' भकरार भ' गेि ि, से जनजीवनके एकदमसँ आकान्त केने ि ि। बाि विवाह, बहु विवाह, बेमेि विवाह आदि वंशवादक सहारिि ि। किशोरावस्था आ युवावस्थामे अंसख्य कन्या विधवा भ' जाइ ि िह; स्त्रीके स्त्रीधन कहि जाइ ि; ओ पुरि-पातक अथवा िनदानक सदस्य नइँ, इज्जत होइ ि ि; िही तँ माथ पर, िही तँ बजारमे, िही तँ पैर त'र राति तीअ'।

अइ दुरवस्थाक कारि मैथिलीिक सृजनधमी वातावरिमे स्तब्धताक माहि आबि गेि ि। अइ समयमे मैथिलीिक जनपदीय भाषाक रपमे कमासुत िकिलाक बीि विकासमान भाषा तँ मैथिलीिए ि ि। वैदनाथ मिश 'याती' कमासुत आ काजुि िकिलाक अइ विकासमान भाषामे कमासुत िकिलाक स्वप देि ए ि ि ह। सन् 1941मे रचित कविता 'कविक स्वप'मे देिि बिम्ब ओही कमासुत िकिलाक स्वप िथक। कहि सकै ि जे महाकवि वैदनाथ मिश 'याती'क कविता संकि न 'चीता' ओइ कािक सामूहिक भावनाक उदोष साबित भेि। यदत्ति, एकर सूतपात पहिनहि, हुनकर पूववर्ती कवि सीताराम झा, काििनाथ झा 'किरि', काशीकान्त मिश 'मधुप', भुवनेशर सिंह 'भुवन'द हिमोहन झा आदि क' िकि ि िह। देशदशा आ मैथिलीि समाजक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य, ित्रकार आ कोधसँ परिपूि मिअवाश्यवत्त हुनका िकिलाक रिनामे आबि ि कि ि ि। जीवन झा, यदुनाथ झा 'यदुवर', ि दी झा 'द्विजवर', पुलकित िि दास, रघुनन्दन दास, भोिि ििदास, ईशनाथ झा आदिक नामोलि ि सेहो अइ कममे उचित िथक, िनकर रिनाधारामे राष्ट्रीय चिन्ता आ आम नागरिकक सपना अंकित ि ि।

महाकवि यातीक सृजनात्मक जीवनक फिक तँ पैघ ििहे, ओहिसँ बेसी विराट हुनकर रिनाक फिक ििा। स्वातन्त्र्योत्तरकाििीन मैथिलीि समाजक जीवन-कमके जड़तासँ ितिनोन्मुि होइत अपना आँति एँ देित रहि ि ह। अपन रिनाक पभावक परिि मि हुनका कमे-कमे देि इत रहि ि ि ा। रिनात्मक सन्धानमे ओ योजनाबद्ध पदति अपनने ि ि ह। सम्मुि ठाढ विकरािि अन्हारके मेटएबा िि हुनकर समकािीन कवि 'सुमन'आ 'आरसी'क अपेक्षा कनेक बेसिए तीक्ि ध्वनिसँ पूवमपीढीक सीताराम झा आ काििनाथ झा 'किरि' तत्पर रहथिन। हमरा िकिलाक जाहि मानवीय सम्बन्ध-सरोकार आइ जातिसँ िीन्हि जा रहि अछि; आ जाहि वर्गहीन समाजक सपना हम आइयो देखि रहि ि, से सपना सीताराम झा तहिए देि ि ि ा, कहि ि ा--भेदहीन मानव-समाज एक जाति हएत।...जाहि धमान्धता आ पाषाि-मूर्तिमपूजनमे मैथिलीिक सशक्त हाथ जुटि रहै ि ि, तकर शक्तिक घोषिि आ अन्धविशासक िििन काििनाथ झा 'किरि' तहिए क' देि ि ा। पूजा पबैत मातिक महादेवके कहि ि ा--बिवान मानवक हाथक बिसँ बैसि िह तो सराइ पर... सुमन आ आरसी ओहि कािक बेस पशस्त कवि ि थि; पगति आ विकासक पति, राष्ट्रक उनतिक पति हुनका िकिलाक बेस आस्था ि ि ा। शमशीि िकिलाक पति पयाप्त सम्मान रिि ि िह; मुदा कोनो नव बाट तकबा िि अथवा बनएबा िि कोनो सामान्यो उत्साह आ आगह नइँ ि ि ा। याती जका पुरानके तोड़ियो क' न'वके स्थान देबाक उत्साह नइँ ि ि ा; अत्मापेत ि ि ा जे न'व आबथु, अवश्य आबथु, मुदा पुरानक अधीनता स्वीकार करैत। अकारि नइँ िथक जे वषा ऋतुमे जिन--मेघ पड़ैि, बुन झरैि तँ आरसी पसाद सिंहक 'मन मोर' नाि ि गै ि ा आ कोनो वियाक कजराएि दृगसँ नोर िसैत बुझाइ ि ा, मुदा यातीके जिनहि-- गरजि इन्दक हाथीéिि नि िरी गाबए ि गि ि मिरहथ िकिला मि र पमुदित दूबिक सीर-सीरèअछि पुलकित कूशक पेपी...। अही बीि जितकिशोर 'मतीपद', गोविन्द झा, रामकृष्ि झा 'किसुन', िन्द्रनाथ मिश 'अमर' आदि िकिला पािपिसँ ि िनमे जुटि ह। स्वातन्त्र्योत्तर कािक असन्तोष मुदा

ल्कनकहु रास नइँ अएलि। िन्द्रनाथ ल्तश ‘अमर’, गाधीजीके उिहन देबए िगहि--देिहक ह गाधी बाबा तोरो स्तराजमेè...धरती से बाझ पड़ि बला परतीèकरती बहुआल्सन की ुिहा जरा क’नेना करै’ लि ाल्ह-ाल्ह ह !... ओम्हर रामकृषि झा ‘ल्कसुन’ बाझी िगिि वृद जजल्र गाकि उल्ठ गेने आशस्त होअए िगहि।

कह’क िही जे वैदनाथ ल्तश ‘याती’क त्रीता(1949) आ राजकमि िधरीक स्तरगन्धा(1959)क बीि रामकृषि झा ‘ल्कसुन’ मैत्थिीक जबदस्त सूत रपमे काएम रहहि। अलाि पीढीक नायक कल्व राजकमि िधरी भेहि। एतए धल्व अबैत-अबैत मैत्थिी सकारात्मक रपसँ बेस मुँहजोर भ’ गेि। जे कहबाक िि, ताल्हमे कोनो धरी-धोिि नइँ । स्तरगन्धाक पकाशनसँ पूवक्ष मैत्थिी कल्वताक ल्वकास-कममे आन भाषा जका कोनो टोप-टहंकारसँ घोषि अथवा दिबन्दी आल्द नइँ भेि। मुदा ई ल्वसरबाक नइँ त्यक जे ल्करि, भुवन, मधुप, यातीक पयासे बनि अइ मल्न्दरमे भकरार इजोतक टेमी राजकमि िधरीए िसिलि। पिल्त मायानन्द ल्तशक कल्वता संगह ‘ल्दशान्तर’क कल्वता आ ओकर भूल्मकासँ, आ फेर राजकमि िधरीक ल्नबन्ध ‘हमरा िकलाक युग आ आधुल्नक मैत्थिी कल्वता’सँ बात आओर फरीि भेि। सन् 1949सँ सन् 1959 धल्र;आ तकर बाद फेर आइ धल्रक युगान्तकारी मैत्थिी सात्हत्य तकर उदाहरि त्यक। एल्ह अन्तरािक समस्त ऊजावान रिनाकार िकला अपना-अपना समयक मैत्थि नागल्रक(स्ती-पुरष, सवििअविि,ल्हन्दू-मुसिमान, त्वाल्क्त-अत्वाल्क्त, पािक-पाठीत, िकर-स्तामी, दाता-यािक, भुक्त-भोगी...)के अपना-अपना पकि अथमतन्त, समाज-व्यवस्थाक व्यूह आ पारम्पल्रक सम्बन्धक दुगसँ टकराइत देििला अल्छ;आ तकरा अंल्कत केिला अल्छ।

मोटे कहि जएबाक िही जे सन् 1931सँ 1959 धल्रक समय मैत्थिीमे पुनजागरिक समय त्यक, अही अवल्धमे उदूत िेतना, समय आ सुल्वधा पाल्ब कता-धता िकलाक ल्ववेक आ कशिके उध्वोन्मुिी केिकला;आ तकरे पल्रिाम आगू धल्रक सात्हत्यमे पल्रिल्क्त भेि। व्यवस्थाक ल्वरोध करैत, स्थाल्पत काव्यधारासँ पृथक बाट धरैत आगू बढबाक उदम सब काकि नवोन्मेषमे देििगेि अल्छ। अही नवोन्मेषमे ल्वपि,ल्नस्सहाय, अशक्य अवस्थाक त्रीति िल्ड रिनाकार िकला जनशल्क्तक जागृल्तक पल्त आस्था व्यक्त केिला। घोषि भेि जे--अल्हल्याक िरेगतम ऋल्व कँपैत्थ थरथर आब नइँ मुला शापे हेतीह ओ पाथर(राजकमि िधरी); फूटि घैकि िपटा जका हम अपन अतीतके इल्तहासक गिमे फेल्क आएिि(मायानन्द ल्तश);ितना रहि ताकए हमर माथमे घी-दूध नल्हओ जुटओèमुदा दाल्ि रोटी के िनत?(धीरेन्द्र)...सन् 1960क बाद देिि गेि जे ई पवंिना बढि जा रहि अल्छ, स्थाल्पत ल्वािर-व्यवस्थाक पल्त ल्वमुििता, व्यवस्थाक ल्नरथकता आ व्यथल्ताबोध, एसगरमे भीड़ आ भीड़मे एसगर हेबाक जल्टि पल्कया, ल्नषेध-नकारक भाव...असीम िि। नव मोहावरा, नव शब्दावािी,जीवन-व्यवस्थाक ल्वल्वध गल्तल्वल्धक नव ल्बम्ब, जनोन्मुि भाषा ल्वधान, पहारोन्मुि ध्वल्न, आत्मािोिन धल्रमे ल्नममता आल्द...अइ काकि रिनाक मुख्य पवृल्त्त बनि। रिनाकार िकलाके ल्वश्वास कहएबाक अपन महत्वाकाक्षा केर दाह संस्कार करब उल्ित (कील्तनारायि ल्तश) बुझेिला;ल्जनगीक उताप आ मनुष्यक शाशतता पर पश उठेल्नहार पर अँगुरी उठेिला--ल्जनगीक आल्नमेèमृत्यु जल्र गेिèके कहिकि जे मनुक्ख मल्र गेि?(रामकृषि झा ‘ल्कसुन’)। घोषि केिला जे हम अपन सपना तोल्ड़ ििèआब हम ओकर सपना देिए िगिहुँ जे हमरा िििितमे भातक गाि रोपैत अल्छ(मायानन्द ल्तश); कहिला जे इच्िुकि िी काल्ह पात िीनि िी टीन ल्करात्सन दीप बुतबए आओत जे, तै मशाि िीसँ(सोमदेव)। अथात सन् 1960क पशात, पीढीसँ पीढीमे अपन गुि-सूत पसारैत मैत्थिी सात्हत्य अदतन भेि।

नक्सिबाड़ी आ तेिंगानामे भेि ल्कसानक जागृल्तसँ जे कृषक काल्न्त भेि, तकर असर भारतक सब भाषाक

साहित्य पर पड़ि; नगरोन्मुि क साहित्य गामोन्मुि भ' गेि; कृषक ितना पसल गेि; मैिथलीिमे सेहो एकर पभाव स्पष हेबाक िहेी िि। सातम आ आठम दशकमे िकयाशीि समस्त न'ब आ पुरान पीढीक रिनाकर अपन िवषय-बोध आ रिना-कशि क पलिय देिल। अपन पूववती पीढीक रिनात्मकतासँ पेरि ि त अइ अन्तरािक रिनाकार िकिल अइ समस्त दाियत्वक संग आगू बढिह। सन् 1966क िबहार, उड़ीसाक दुिभक, सन् 1967क ि िनावक पशातक संिवद सरकारक गठन, आ सन् 1967क नक्सिबाड़ी आन्दोिनक सफितासँ भारतक समस्त भाषाक सृजनकमीक संग-संग मैिथलीक जागत ितनाक रिनाकार िकिल ि िक भेिह। सन् 1947सँ 1977 धिरक तीन दशक भारतीय नागिरक ि ि ि -पपंि, दमन-उत्पीड़न, अभाव-कुभावे टाक नइँ; अिनशय, िदशाहीनता, ि िर शून्यता, संशय, पाि ण्ि, अराजकता, दानवतासँ सेहो भरि रहि। स्वाथन्धतामहेतु देशक िववेकहीन नागिरक,दुिनया भिरक दुवृितमे फँसैत गेि, पभुत्व जुटएबा ि ि समस्त शीि-सभ्यता, मानवता िबसरैत गेि। िबसरबाक एहन कममे ि क इहो िबसल गेि जे पभुत्वक पिहि आ अिन्तम पहिन सभ्यता िथक, मानवता िथक। राजनीितक-सामािजक ितना एतए सूक्मसँ सूक्मतर होअए िगि। बारम्बार पड़ोसी राषक संग सीमा-संघषिपाटी िवभाजन भेि, राजनीितक मतिवनता, आपातकािक घोषि भेि, राजनीितक पतन, अपराध, आ आपरािधक राजनीितक शृंिि, मिन्दर मिस्जद िववाद, ि ट-पाट, हत्या, राहजनी, अपरहि, बूथ कैपिरंग, घपि, घोटाि, साम्पदाियक दंगा आ जातीय दोह...सबटा अही अविधक उपज िथक। ई समस्त दुवृित ि रेशक करतब जका बढैत रहि। आम ि िनाव, मध्यावधि ि िनावक शृंििसँ देश पर अपव्ययक बोझ ि दैत गेि। अकाि, दुिभक, बाढि, सुि ाड़, भूकम्प, अितवृिष, अनावृिष आिद-आिद पाकृितक आपदा सबसँ तँ समाज तबाह ि िह,मनुष्य दारा सृिजत तबाही िकके आओर तस्त क' देि क। िवजानक िवनाश आ िवधंसकारी पवृित्त सेहो कम उत्पाती सािबत नइँ भेि। अन्तराषीय फ ि पर आिथक उदारीकरि भेि। िवशगामक अवधारि बढि। बहुराषीय कम्पनीक आगमन आ नव िवतीय नीितक कारि व्ययसाध्य रोजगारोन्मुि ि गी-ि पि मा शुरह भेि, िवतीयक पिरदृश्य बदिि गेि। अन्तराषीय ि न्तन फ ि कसँ सम्पकमभेने सािहित्यक केतमे नव-नव ि िर पदितक पवेश भेि। सािहत्यािि निक उपस्कर समाज-व्यवस्था भ' गेि। जीवन-कम आधुिनकसँ उतर आधुिनक भ' गेि। भारतीय सािहत्यमे दिित पश, स्ती-िवमशिउतर उपिनवेशवाद, वंशवादक िवरोध आिद ि िर-िबन्दु पमुि भ' गेि। जे िवभूित आनन्द 'ि िल महक ि उरसँ ि नगी बीिि रहि' माइके देिि पमुिदत' होइ ि िह, से 'आस्ते-आस्ते गाममे पकी सड़क' अबैत देिि पसन भेिह, तिहआ नइँ बूिझ सकि ि िह जे'एक िदन एही सड़क द' क'हमर अपन गामसँ गाम भािग जाएत ि' जाएत भगा क' हमरो...।' तारानन्द िवयोगीके अनुभव भेिन जे'अही ठीक कहै ि ी बाबा, अन्यायक ि वरद िड़बाक उमेर कहिओ नइँ बीतै ि...' मैिथलीिमे सातम आ आठम दशकक रिनात्मक उदमके हम अही अिभपेरि आ दाियत्वक नजिरसं देि ि ी।

3. सतिर के दशक मध्य मैिथलीिमे समाजवादी अवधारि मूड़ी उठेबाक पयास केि क ओकर की िस्थित रहिै, अहा सब ओइसँ कतेक पभािवत-अपभािवत रहि ि?

जेना िक पिहि पशक उतरमे कहिहुँ, कोनहुँ भाषाक सािहत्यमे कतबो कािनधमी पीढी आिब जाथु, हुनका अपन पूवदवती दारा कएि-धएि महत्तपूि मकाजक सम्मान करबाक ि िहअिन। परम्परासँ िवि ि न भ' कए कोनहुँ टा पगित व्यविस्थत नइँ होइत अिि। ते हम मानै ि ी, जे हमरा पीढी दारा सािहत्यमे जते काज भ' रहि अिि, ओ पूवदवती दारा कएि गेि महत्तपूि मकाजक िवकास-सूत िथक। ई पीढी अपन पूवदवतीक तुि नामे जे िक ि बेहतर

क' सकि अछि, तािहमे अइ पीढ़ीक ऊर्जा, प्रतिभा आ रचनात्मकताक संग-संग पूर्ववर्ती पीढ़ीक महत्त्वपूर्ण भूमिकाजक पेरणा आ समय-विशिष्ट अवदानक महत्त्वपूर्ण भूमिका अछि। हमर अइ धारणासँ सब गोटए सहमत होथु, से कोनहुना आवश्यक नइँ। हम व्यक्तिगत रूपे अपन पूर्ववर्तीक पेरणा टा नइँ, कतोक बेर अपन समवती आ अनुज पीढ़ीसँ से सेहो पेरणा लैत रहलहुँ अछि। हमर ई दृढ़ मान्यता अछि जे दुनियाक सबटा काज हम नइँ क' सकै छी। किछु समयक अभावमे, किछु प्रतिभा आ ऊर्जाक अभावमे। ते कोनो बिन्दु पर जँ व्यक्ति कोनो महत्त्वपूर्ण काज क' रहल अछि, तँ हुनकर सराहना कएल जएबाक चाही। थुक्कम-फजहतिमे लागल रहब अपन प्रतिभा आ ऊर्जा दुनूक अपमान थिक।

4. अहा सभक पारस्परिक कालमे जुड़ल साहित्यिक मित्र-मण्डलीके एकटा विशेष समूहबाजी जकाँ जानल जाइत अछि। किछु गोटए द्वारा ओतबे गोटएक बीच पिछलग्गु वा सब उकस-पाकस (साहित्यिक) केल जाइत रहल। किएक?

अइ 'समूहबाजी'क उत्खनन के केलक, हमरा से नइँ बूझल अछि। समूहबाजीमे के-के लागल छथि, सेहो हमर चिन्ताक विषय नइँ थिक। हम किनकर समूहमे छी अला, से हमरा जात नइँ अछि। एतबा जनै छी जे मैथिली साहित्यक वयोवृद्ध रचनाकार पं. गोविन्द झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र'अमर' सँ लऽ कए अजित आजाद, कामिनी, धीरेन्द्र पेमर्षि मधुरिक पीढ़ीक एकटा समूह अछि, हमहूँ ओकर एकटा सदस्य छी।

हमर आलोचनात्मक निबन्ध सब पर जँ अहाक नजरि पड़ल हो, तँ अहा अनुभव क' सकल होएब जे कोनो बातेँ हमरा समूहबाजी पसिन नइँ अछि। व्यक्तिक रूपमे किओ फुटेल नजरि नइँ सोहाइ छथि, लाजी तरह पर हमरा अपूरणीय क्षति दुःख पहुँचाने छथि, तथापि साहित्यमे हम से मोन नइँ पाड़ै छी। साहित्यमे हुनकर योगदानके ईमानदारीसँ अंकित करै छी। अपराधीके माफ क' देब हम अशक्यता नइँ मानै छी। अइ माफी पाछाँ नमहर कहिजा चाही। माफी देलासँ शत्रुता आ प्रतिशोधक भावना समाप्त होइ छै। प्रतिशोधक भावनासँ काज करब साहित्यकारक नइँ, कैतक काज होइत अछि। किछैत आ अपराधी स्वभावक साहित्यिक जीवके माफ करब, आ गुटबाजी द्वारा साहित्यमे दाखिल-खारिज करबाक धन्धाक विरोध करब हमर मूल स्वभाव थिक। पायः इहो कारण हो, जे परोक्षमे अहाके हमर पशंसा केनिहार लोक नइँ भेटताह। कोनो खास समूहक करतूत पर किछु पूछए चाहै छी, तँ साफ-साफ पूछू। सत्य कहबामे हमरा कोनो दुविधा नइँ होइ'ए। साहित्य हमरा लेल सुविधा जुटेबाक साधन नइँ थिक। आत्मस्थापन आ उपलब्धिक माध्यम नइँ थिक। ते हमरा किनकहु भय नइँ होइत अछि।

5. अहाक पीढ़ीक रचनाकारक मध्य अपनाके देखार करबा लेल पछिला वा स्थापित रचनाकारके धकिएबाक वा गरिएबाक(साहित्यिकके भाषाक माध्यममे) पवृत्ति जगजियार भेल रहै। तकर की उद्देश्य छै? आ तै माध्यममे कते गोटए सफल भ' सकलाह?

ई आँकड़ा तँ हमरा नइँ बूझल अछि मुनाजी, जे के कते सफल भेलाह? के किनका कते धकियाबै छला, मैथिलीमे इहो नेधारित करब बहुत कठिन अछि। अइ शोध-कार्यसँ हम एखन धरि बचैत रहलहुँ अछि। जिनका ई काज प्रियगर लगै छनि, से करथु।...

दोसर पशक-उत्तरमे हम स्पष्ट केने छी, जे हमर गनती जाहि पीढ़ीमे होइत अछि, तैमे हमर पवेश बहुत बादमे

भेि। ता धरि अइ पीढीक करीब-करीब रिनाकार अपन पत्रिय बना ुकि िािह। ओिह कािि फिीशरनाथ रेिुक धारिासँ हम सहमत भेि रही जे सािहत्य मनुष्यके सामािजक बनबैत अिछ, आ समाजके मानवीय। मुदा कमे-कमे से धारिा भंग होअए िािि। िकछ-गन्थ आ आिोिनात्मक पोथी आ आन सािहित्यक कृित पिढ कए सािहत्य सृजनक उदेश्य-अिभपाय पर एक सँ एक वाक्य देिि, आ एम्हर मैिथिीक रिनाकार िािकलाक िया देिि, मोन घोर होइत रहए। क’ िकछु नइँ पाबी, से तामसे अपनिहमे जरैत रही। अपना तुर’क अिधकाश रिनाधमी आ िकछु विरष्ठ िािक िािकलाक बीि ‘सािहत्य अकादेमीमे मैिथिी’ पकरि पर िािि सुिा-सुिा दंग रहैत रही। मुदा सबटा िािि मुिािविासे टा होइत िि। देिार भ’ कए सोझा अएबाक िषिा वा साहस िकओ नइँ करत्थि। सन् 1993मे जिन ‘हंस’ पित्रकामे ओिह पसंग पर हम िवरोध दजमकेिहुँ, त’ हरिविरड़ो मिि गेि। हमरासँ कििष्ठ पीढीक नवगिुिि सब हमर पशंसक बिि गेि, समवयस्की िािकला पंिति करए िािाह, आ विरष्ठ िािकला िवरोध। ओएह हमरा जीवनक एहेन घटना िथक, जे हमरा नजिरमे मैिथिीक समस्त रिनाकारक िित्त स्पष्ट क’ देिक। वस्तुतः हम ओ काज केने रही व्यवस्था-पिरवतमक िि, मुदा ओकर उपयोग मैिथिीक अगमुिि रिनाकार िािकला अपन िािभ-िािभ िि करए िािाह। हमरा हुड़बा बना कए अपन काज सुतारए िािाह। ओही िदन हम अपनाके हुनका िािकलाक ओिह आिरिसँ कािट कए अिाि करैत ई िवािार केिहुँ जे िवरोधमे िािआन कर’ बिि ऊजाके बिि कए िवकासमे िािाबी, तँ सकारात्मक पिरिाम सोझा आओत। आनक बात हम नइँ कहब, मुदा अपना मादे जनैत िी, जे आइ धरि हम िकनकहु िित्त हनन नइँ केिेअिि अिछ। िकनकहु अधािह िािनक पशंसा, आ नीक िािनक िनन्दा नइँ केिहुँ अिछ। कोनो उदाहरि होअए तँ साफ-साफ कहू। अपन समस्त नेतके सबसँ पिहने हम अपना नजिरमे ठाढ क’ कए आ आनक काज बूिझ कए िििख करबाक अभ्यासी िी। अपन पूववती पीढीक समथम रिनाकारक अवहेिना आइ धरि कोनो समझदार व्यिक्त नइँ केििा अिछ। व्यिक्त-िनन्दा आ रिनात्मक मूल्याकन अिाि-अिाि बात िथक। महान भक्त किव रसािन शुरुह-शुरुहमे परम िपिट िािह, महाकिव तुिसीदास घनघोर िवषयी िािह, कािि दासक कथा बूझि अिछ...जँ हुनका िािकलाक जीवनक अइ पसंग पर िािि करी, तँ एकर की अथम िािकािब, जे हुनकर रिना िनंहेस िथक?

6. अहा दारा एन.बी.टी.क माध्यमे मैिथिी भाषा सािहत्य िि बहुत रास िवस्सन काज भेि। मुदा िकछु िािक आरोिपत करैत रहिािह जे सब काज अहा सबहक सािहत्य-िमत मिडिी मध्य घुिमयाइत रहि। की सत्य ि एकर?

मुनाजी, एन.बी.टी.ए टा नइँ पकाशन िवभाग (भारत सरकार), आ सी.आई.आई.एि, मैसूरमे सेहो मैिथिीक नेओं हमरे रािि िथक। मैिथिी िािकलाक ई सबसँ पैघ समस्या िथक जे सामान्य िस्थितमे नइँ रहताह, अहा िािनका िि िहतकारी सािबत भेिअिि से अहाके पाग बना िािाह, िािनका िि नइँ, से पनही। एन.बी.टी.मे अपन सेवाकाििमे मैिथिीक िािि गोट पोथी हम पकािशात करिहुँ, िािर क िहन्दी अनुवाद सेहो पकािशात अिछ। मैिथिीक एकहु टा सम्मािनत आ पितभावान नव-पुरान रिनाकार ई नइँ किह सकताह जे हुनका एन.बी.टी.क राष्टीय मंिसँ आमन्ति नइँ देि गेििा। सोिह बिि महम एन.बी.टी.मे िहन्दी िि काज केिहुँ, िहन्दीक िदगाज िािकला आइयो हमर कएि-धएिके रािकत करैत िथ, ओहू समयमे करैत िािह। मैिथिीक रिनाकार िािकला िि तीन बििमे जे िकछु केिहुँ तकर िाता-िान अहा देिी ुिक िी। मैिथिके अइ बातक पसनता नइँ भेििा जे मैिथिीमे

ई काज भेि, से देवशंकर नवीनक उदमक िबना सम्भव नइँ िि। देवशंकर नवीनके िकिु आओर काज करबा िि सहयोग कलअला। ओ िकिला ई देिए िगिहि जे अइ काजसँ व्यिक्तगत रपे हमरा कोनो िभ कहा भेि? एते धिर जे िकिु िभिलाित व्यिक्त सेहो ओिह दुष्कममे लीप्त भ' गेिह। हुनका िकिलाके पाय: ई बोधगम्य नइँ भेिला, जे ओ िकिला जे िकिु पाप्त क' सकिह, से हुनकर अिधकार नइँ िििला, हमर पयासक पलिम िि। ओएह एन.बी.टी. तँ पलहुँ िि, कए टा मैिथिि िि िक िकिह नािम सकिि िह? दोसर बात जे हमरा रहैत मैिथिीक एकहुटा पस्ताव एन.बी.टी.मे आएि हो, तकर कोनो उदाहरि अहाके नइँ भेटत। जे िकिु भेि, से हमरिह पस्ताव िि, सक्म अिधकारीक स्वीकृिि पर काज पूिमभेि। ओ नइँ केने रिहतहुँ तँ हमर दरमाहा घटा नइँ देि जइतइ आ ओिह काजक संगोरमे जतबा समय िगिहुँ, आ गािल-गज्जन सुिन कए जतबा व्यिथत भेिहुँ, तािहमे थोड़ेक अपन मििीक काज क' सकैिहुँ। मुदा...ओना एकटा जानकारी अहाके द' दी जे एन.बी.टी.मे हमर काजक िनन्दा ओएह िकिला क' रहिह अिि, जे अपनाके बड़े भारी िि िक बुझै िथि, मुदा हम हुनका मनोनुकूि स्थान नइँ देिीअला। हमर धाराि अिि जे हम कोनो िवधाता तँ िी नइँ, हमर िािमसँ कोनो व्यिक्त िकए एते िाििाइ िथि?दुिनयामे एते रास िवदान िथि, जँ िकनकहुमे पिलभा िि, तँ िकओ ने िकओ मान्यता देबे करतिि!

दोसर बात जे जािह िि टा पोथीक पकाशन एन.बी.टी. दारा भेि तकर सम्पादक तँ िििए गोटए भ' सकैििह! अइ िििमे एक त'हम स्वयं िी, शेष तीन गोटएक स्थान पर कोनो दोसर तीन गोटएक नाम रािी कए देिू, तँ की सब सन्तुष भ' जेताह? अहाके उदाहरि दी, जे एन.बी.टी. दारा िगिरीमे जिन एकटा िकताब िपिि गेि, तँ महाराजा कमििसंह मंि पर आिब कए कहििीन जे 'एन.बी.टी. के अध्यक, िनदेशक, सम्पादको का मै सम्पूिम िगरा समाज की ओर से आभारी हूँ िक उन्होने हमारी मातृभाषा को यह सम्मान िदया है।' मैिथिीक िकके सबटा िीज अपनिह नामे िििअला। सब ठाम रहए िहताह, पिलभा कथूक नइँ। भ' सकए तँ पता िगा ली अ' िदसम्बर 2010मे सी.आई.आई.एि.मैसूर, दारा अनुवाद पर पटनामे एकटा आयोजन भेि िि, ओिहमे अिधकाश आमिित िवदान(?) िकिला अपन कोन पिलभाक पदशम हेतु आएि िि, आ की बािम-भूिक कए गेिह, से हुनका स्वयं नइँ बूझि हेतिन। एन.बी.टी.क काजक पसंग हमरा पर जे आरोप िगबै िथि, हुनकासँ तीन टा पश पूिि जाए, जकर उतर ओ ईमानदारी सँ दैथ–

 अइ आरोपक संग अहा कोनो स्वाथमसँ तँ पेिरत नइँ िी?

 अइ काज िि िनयोिित व्यिक्तके अहा अपना तुिनामे अयोग्य बुझै िी?

 अहाक योग्यतासम्मत कोनो पस्ताव किहयो एन.बी.टी. दारा िनरस्त कएि गेि अिि?

अइ तीनू पशक जवाब सम्पूिम पिरदृश्यके सोझरा देत।...बात बहुत भ' सकैत अिि। मैिथिि सभाक कोनो नागिरक मंि हो तँ बैसाउ, हम सब बातक िइिि िड़ा देब। ओना के जानत? इएह जे जवाब द' रहि िी, तकर की पिलिम हएत? कते गोटए पढत? अहा सन-सन दस गोटए पिढ कए बूिझ िताह! से अहा िकिला ओहुना िहहिाहसँ बुिझते िी! मैिथिीक कए गोटए सकारात्मक दृिष्ट एँ कोनो बात पढै िथि?

7. अहा िहन्दी आ मैिथिी दुनू भाषामे समान रपे सृजनरत रहिी अिि। दुनूक अपन स्वतन्त्र अिस्तत्व िै। ककर केहेन अिस्तत्व िै? दुनूमे की समानता-िवमानता देिइि?

मुनाजी, िहन्दीसँ पिहने हम मैिथिीएमे एम.ए., पी.एि-िी.क' कए बहुत िदन धिर रोजगारक बाट तकैत रहिहुँ। मुदा िहन्दीमे रोजगार भेटि। आत्मस्थापन, अन-वस्त्र-आवास-सुिवधा-पहिान िहन्दी देिक। िमिथिािसँ उपिब्ध

गए जनि त्वर्ली पवास करए िगि, ताहसँ पहने शुद रपे मैथलीएमे तीित रही। कहयो कयो एकटा पोस्टकाि नइँ तीििला। 'स्वान्तः सुिाय'क अपन महत्त्व भने होउ भाइ, मुदा जीवन जीबा िि त'पाइ िाही। सन् 1991-93 धरिक हमर संघषमय जीवन हन्दीमे िि न, हन्दीमे अनुवाद, आ दसमसँ बारहम ककाक ाित-िाता िकलाके कलाकस, कैमेसरी, मैथमैटकस पढा कए ििि। ओही दरान एन.बी.टी.मे हन्दीमे सम्पादनक कायमहेतु नोकरी भेल्त गेि। तकरा अित सन् 1996मे मैथलीक अध्यापक बनबा िि इण्टरव्यू देबए पटना गेि रही; उनटे पैर वापस एिहुँ। मजबूरीमे जीवन-बसर हेतु हन्दीमे िि न आ अनुवाद काज शुरह केने रही, आब ओएह मजबूरी भ' गेि। बहुत रास सम्पादक िकला लात भ' गेिाह अि। दबाव दैत रहै ित्थ। सम्बन्ध-रका हेतु तीिए पिफा मोनो िगैए। हन्दीमे आइ धरि जते िजि पि अि, सैकड़ो फोन आ दजनो पतसँ पशंसा होइत अि, नीक िगैए। मुदा तैयो मातृभाषा तँ मैथलीए थीक। साहत्यमे पवेश तँ ओही बाटए भेि अि। पहिन मैथलीएक रिनाकारक रपमे अि। सएह रहैयो िाहैि। हम अपन पलसीमा एतबा अवश्य जनै िि जे जँ कोनो दन कि महत्त्वपूिम ििि सकिहुँ, तँ से मैथलीएमे ििि सकब, कारि, मैथली हमर मातृभाषा थीक, आ मातृभाषामे कएि काज लािवाद रपे बेहतर होइत अि। माइकेि मधुसूदन दत सेहो िरि दससँ बआ कए मातृभाषामे घुरल आएि िािह। सत्य थीक जे मैथली हमर मातृभाषा थीक, आ हन्दी हमर राष्टभाषा। दूमेसँ ककरहु मूल्य पर हम ककरहु पला अभद कथा नइँ सुनए िाहैि। हमरा जीवनमे दुनू वरेण्य अि, पूजनीय अि।

8. बहुत रास मैथलीक रिनाकार हन्दीमे िि न क'कए अपन अलस्तत्व तकै ित्थ, असफि भ' मैथली दस उन्मुि होइ ित्थ आ मैथली रिनाकार मध्य अपनाके पलित हेबाक स्वाग रिि ित्थ। एना कएक?
एहेन काज के करै ित्थ, से हम नइँ जनै िि। हम स्वीकार करै िि जे हम मैथलीमे तीिि। िकि हमरा मैथलीक िकि मानै ित्थ कि नइँ, से िकि जनैत हेताह। िकि माला-मोजर देताह त' िकि कहाएब, अन्यथा अइ आत्मसुिक संग मल जाएब जे जाह काि जे नीक िगि, से केिहुँ! हन्दीमे रीला-कािक पलाद कव लाािरीदासक पद अि--'आगे के सुकव रीझहै तो कवताई, नाही तो राधा कन्हाई के सुलारन को बहानो है।' एतबा तय अि रिनाकारक कोनो भाषा नइँ होइत अि। भाषा तँ अनुवाद क'कए बदिि जा सकैत अि, वािर नइँ बदिि जा सकैत अि। मैथली कवता पर, कथा पर, आ नाटक पर हन्दीमे जिि नि तीिने रही, आ ओह पर तिमि, तेिुगु, पंजाबी भाषाक िकि अपन-अपन वािर व्यक्त करए िगािह, तँ पसनता भेि। आ हम सोििहुँ जे ई काज हम मैथली ििि केने िि। कवताबिि तँ हू-ब-हू पंजाबीमे केओ अनुवादो केने िािह।...
पाििटा हन्दी अंगेजीक पोथी पल कए जँ कओ मैथलीक रिनाकार मध्य पलित कहबए िि जाइ ित्थ, तँ हुनका अपन जान-िकिक इििज करेबाक िाहअला। कोनो रिनाकार भाषाक कारि नइँ, अपन रिनाक गुिवताक कारि पूजि जाइ ित्थ। कनड़ जानने बना अहा यू.आर.अनन्तमूलाके जनै तीअला, रसी भाषा जनने बना अहा अन्तोन िििब, दोस्तोयवस्कीके जनै तीअला! कऐ जनै तीअला?...भाषाक कारि नइँ। ववध भारतीय भाषा, आ वदेशी भाषामे जतेक अनुवादक लात हमर ित्थ, हम एक रती सुगबुगा उठी, तँ हुनकर सहयोगसँ दुलयाक पिसो भाषामे हमर समस्त रिनाक अनुवाद िव जाएत। मुदा ताहसँ हम महत्त्वपूिम रिनाकार भ' जाएब? जे कओ एहेन करदानी करै ित्थ, हुनका करए दअनु, साओन मासमे तँ इनार िगि'क नाीयो भल जाइत अि! समय हुनकर न्याय क' देतला।

9. मैथिलीक कवि रचनाकार एके विषय पर एके रचनाके हिन्दी-मैथिली दुनू भाषामे पकाशित करा क' दुनू भाषामे ओइ रचनाके ओहि भाषाक मूल रचना कहबाक गरवक भान करैत छथि। एकरा अहा कोन रूपे देखै छी? ई कते उचित वा अनुचित थिक?

हमरा जनैत अइ काजमे छिक आ विवेक--दुनू गोटएके विवेक आ मयादासँ काज लेबाक छलैअला। छिक जँ हू-ब-हू अपन रचना दोसर भाषामे छपबै छथि, तँ उनका पहिल पकाशनक भाषासँ अनूदित हेबाक उल्लेख करबाक छलैअला। ई छिकीय विवेक तँ स'ब रचनाकारमे हेबाक छलैअला। मुदा जँ ओही विषय पर दोसर भाषामे ओ पुनसृजन थिक, तँ विवेकि पाठकलोकके सेहो हंगामासँ बचबाक छलैअला। कोनो रचनाक विषये टा महत्त्वपूर्ण नइँ होइत अछि, सब भाषामे ओइ विषयके उपस्थापित करबाक शैली आ वातावरण अलग होइत अछि। द्विभाषी रचनाकारक कवि पास समस्या अवश्य होइत अछि, मुदा तकर अतिरिक्त छूट छिकके नइँ लेबाक छलैअला। विवेकि सेहो थोड़ेक धैर्यवान होथु। हम ओना एहन काज नइँ करै छी।...

एकटा महत्त्वपूर्ण बात दिश अहूँके विचार करबाक नोत दै छी। रचना-कर्मक कोनो भाषा पहिनेसँ बेराएल नइँ होइ छै। मनुष्यक जीवनमे भाषा, अभिव्यक्तिक साधन मात नइँ थिक। जनपदीय संस्कृतिक सरणि आ मनुष्यक सोचिबा-बुझबाक साधन सेहो थिक। मैथिलीमे जखन अहा 'मातृका-पूजा' कहै छिऐ, तँ की ओ एकटा शब्द मात होइत अछि? अहा जखन सोचै छी जे हमरा लीटी छी लेबाक अछि, तँ से सोचि कोनो भाषाक बिना सम्भव अछि? ते हमरा पाठकलोकके इहो सोच'क छिही जे रचिबा काल कोनो रचनाकारक समक जनपदीय जनजीवनक कोनो घटने टा नइँ रहै छला। आम नागरिकक जीवन-यापन, रीति-रिवाज, सोच-समझ, आहार-व्यवहार, व्यवस्था-संस्कृतिके अंकित करबाक दायित्व सेहो रहै छला। स'ब भाषाक अपन निजी वातावरण, आ संस्कार होइत अछि! शीतला माइक कोप, कोशी महरानीक पकोप, परशुरामजीक कोध, आ भीमक साहुक तामसमे की अन्तर होइत अछि, आजुक रचनाकमी नइँ सोचै छथि। अइ समझदारीक संग रचनारत द्विभाषी अथवा बहुभाषी रचनाकार वस्तुतः पशोपेशमे रहै छथि, जे रचना कोन भाषामे करथि? जिनकर रचनाकमम एतबा सुविचारित नइँ रहै छला, तिनका छिक लिखित हएबाक की पयोजन?

10. मैथिली-भोजपुरी अकादेमीक आयोजनमे मैथिलीके गरोसल छिक जाइए। एहेनामे भोजपुरीक न'ब उठल बिहार दारा स्थापित भाषा मैथिलीके उपेक्षा जेबाक सम्भावना त' नइँ बला रहल अछि? अइ पर अहा सभक समूह अपन कोनो सक्रियता नइँ देखा रहल छथि। की भविष्य हेतै एकरा?

मुनाजी, हमर कोनो समूह नइँ अछि। जाहि दिनमे कवि अपात-कुपात लिक जहा-तहा हमरा गरिऔने फिरै छि, एखनहुँ गरिअबै अछि, हमरा विरुद्ध अपमानजनक छिक अमयादित भाषामे लीखि कए छपबै छि, आ हमर नियोजक धरि पहुँचबै छि; हमरा पर इच्छाचायरी बैसल, ओ इच्छाचायरी मैथिली छिक काज करबाक दण्ड छि। अन्यथा देवशंकर नवीन पर अँगुरी उठएबा काल देवतो-पितरके सोचिए पड़तला।... ओहू समयमे कोनो व्यक्ति हमरा संगे ठाढ नइँ छिह। जहा धरि मैथिली-भोजपुरी अकादेमीक पश अछि, ओकर शासी निकायक हम पाथमिक सदस्य मनोनीत कएल गेल रही। अइमे हमर कोनो अपराध नइँ छि, हम अपना दिससँ कोनो टा उदम नइँ केने रही। कवि मैथिलीपेमी पाठकला अखबारबाजी करए लगलिह जे हम ओतए सक्रिय बनए लिहै छी। कतेक जिज्ञासा उदगैत अछि कहबामे, जे ओहू समयमे हम ओहिसँ अधिक सम्मानित पद पर कायरत रही। अकादेमीक बैसकमे जाइत रही, मैथिली भाषा छिक जे अभद आचरण होइ छि, तकर विरोध करैत रही।

मुदा हमरा कोनो सूचना देने बिना ओकर सदस्यतासँ समयपूर्व मुक्त क' देल गेल। हम विरोध क' सकैत छी, मुदा जे एक एक टा उत्साही मैथिल अइमे सक्रिय छथि, हम से काज नइँ केलहुँ। आब ओतए की भ' रहल अछि, से मैथिलीक ओ उद्धारक लोकनि जानथु। हम त' मैथिलीमे लीन छी, लीन रहब। मैथिली-भोजपुरी अकादेमीक कोनो कार्यक्रमक सूचना हमरा आमन्त्रण-पत्र अथवा फोनालापसँ नइँ, अखबारसँ भेटैत अछि। अखबारक सूचना पर दौड़ि जाइ, आ अपना लेल जगह ताकी, तेहेन स्वभाव हम विकसित नइँ क' सकलौं। सोल्हैया क' कतहु बैसबा लेल एक बीत जगह ताकब सेहो हमर काम्य नइँ छल।

'भोजपुरीक नाम उठल बिहार' पदबन्धक उपयोग अहाँ केने छी। अइसँ अहाँक आवेशक अनुमान होइत अछि। हम अहाँक व्यथाक अनुमान क' सकैत छी, तथापि एकटा निवेदन करैत छी, जे एहेन शब्दावलीक प्रयोगसँ बचबाक छैक। उचित लागए तँ अइ सम्वादके सार्वजनिक करबासँ पूर्व अइ प्रसंगके सम्पादित क' लेब। बल्कि ई आक्रोश तँ अहाँके अपन मैथिल भाइ-बन्धु पर हेबाक चाही, जे आठम अनुसूचीमे जगह पाबि गेलाक बादहु अपन भाषाक गरिमाके बचा नइँ पाबि रहल छथि। भोजपुरीभाषी लोकनि जँ अपन भाषाक विकास लेल उद्यमशील छथि, अपन लाभ लेल बानर जकाँ छड़ै नइँ छथि, त' ई हुनकर अपराध थोड़े भेलनि? मैथिलीक लोकके तँ बल्कि पेरित हेबाक चाही जे समृद्ध साहित्यिक विरासतक वंशज भेलाक बावजूद ओ भोजपुरीभाषीक सोझाँ पछुआ बनल ठाढ़ छथि।

11. इग्नूमे बिहार जकाँ आएल भोजपुरीक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे पढ़ाइ भ' रहल अछि। मुदा मैथिलीक लेल घोषणा मात्र भ' क' रहि गेल। एकरा लेल किओ सुगबुगेलो धरि नइँ? की कारण?

मुनाजी, हम आब गोनू झाक बड़ियाक भ' गेल छी। मैथिलीक भद्र-अभद्र लोक सबसँ तेना ने झड़कि गेल छी, जे कोनो सांस्थानिक काजमे हाथ दैत अबूह लगैत अछि। मैथिलीभाषी हेबाक कारण हमरा पर टिप्पणी करबाक हक ओहेन-ओहेन लोकके भ' गेल छलनि, जिनकर हैसियत हमर पी.ए., एटेण्डेण्टक बराबरीक नइँ छलनि। आत्मीयक आ बन्धुक दुनू तरहे।

जखन इग्नू ज्वाइन केलहुँ, तखन हमरा अइ काजक दायित्व-निमन्त्रणक संग कहल गेल छल जे मैथिली लेल हम बहुत काज करी, मुदा समकुलपतिक सोझाँ हाथ जोड़ि हम माफी मांगि लेलहुँ। ओइ कुण्डमे फेरसँ कथी लए खसितौं। दायित्व लेबाक अथमास काज केनाइ, ओइ काजमे मैथिलीक बहुत विद्वान आ बहुत कार्यकर्ता लोकनिके काजमे जुटाएब। से जुटान हम अपन परिजनसँ करितहुँ आ तखन फेर मैथिल कुकूर सब कुभा कर मचबितए, जे हमरा त' ई नियत भेटबे नइँ कएल, नवीनजी सबटा धन अपन कुटुमके द' देलखिन। अहीं कहू, जे ऐना तरवार पर गरदनि हम कथी लए रखितहुँ? जाहि दायित्व लेल हमर बहाली नइँ छल, तै पर समर्पण-भावसँ काज क' क' एक बेर एन.बी.टी.मे स'ब दुर्गति भोगि चुकल छी। अइ अतिरिक्त कार्यभारके हाथमे लए कए अपना लेल मैथिलजनसँ गारि सुनबाक स्रोत फेरसँ किएक जुटबितहुँ? साफ-साफ कहि देलखिन--जे करै छथि, तिनका करए दिअनु, हमर सम्पूर्ण सहयोग हुनका संग रहतनि। जखन जे मदति मँगताह, हम तत्पर रहबनि। ओना अहाँक सूचना लेल ऑफ द' रिकॉर्ड कहि दी जे फाउण्डेशन कोर्सक तैयारी पूर्ण भ' गेल छै, ओ शीघ्रे लॉन्च क' आबि रहल छै। इग्नूक उत्साही वाइस-चान्सलर बहुत किछु क' सकैत छथि, अइ बिन्दु पर हुनका कन्विन्स करब बहुत आसान छल, मुदा फेर ओहीमे जा कए मैथिल लोकनिक बकरदानीसँ अपन जीवन हम अशान्त किएक करितहुँ?...लोक आँगुरी उठबै छथि, जे हम अपन पदक दुरूपयोग क' कए किछु लोकके बनए चाहै छी, हुनका लोकनिके

लकओ ई त' पूिला जे हम जे लकि ी, से अपना बि, अथवा ओहने कोनो अपात-कुपात मैत्थिकि बि?...अहाक अनुमान सत्य अिी, इगमूमे पर्िी ि दू बर्िक समय एतबा अनुकूि अवश्य ि ि जे पयास केि ि पर 'मैत्थि ी भाषा एवं संस्कृत्ता शोध केन्द्र' आरामसँ बनाओि जा सकै ि ि, मुदा...।

हमही टा नइँ, अहा िही तँ गजेन्द्र ठाकुरसँ पूर्ि सकै र्ि अला, मैत्थिकि अही स्वाभावक कारि एकाध टा एन.आर.आई. सेहो मैत्थि ी-सेवासँ अपन मुँह मोड़ ि ि ला।

12. अहा दुनू भाषामे कतेको पकारक रि ना कएि, जाहमे बीहलाकथा(लहला कथा)क सेहो पमुि ता ि ि। आब अहा सब एकरा बेरा लकऐ दे ि ी? वतमानमे मैत्थि ी मध्य बीहलाकथा (लहला कथा)क की अवस्तत्व अिी, आ एकर केहेन भलवष्य अहाके दे ि इ अिी?ए ि नुक रि नाकार सबमे लकओ अइ पर सलकय दे ि इ ि त्थ?

ठीके कहै ि ी अहा। एक समयमे लहला कथा ि ूब र्ि ि ि हुँ, आब त' कलवता आ कथा सेहो नइँ भ' पबै'ए। बेसी काि आ ि ि नात्मक लाबन्ध र्ि ि इत अिी। मैत्थि ीक सम्पादक ि ि कलाके हमर कोनो ि गता नइँ बुझाइ ि ला, ते ओहो कम्मे र्ि ि इत अिी। जीवनक तैस ब ि मराजकमि ि धरीक रि नावि ी तैयार करबामे ि ला गेि। हमरा सन लारावात ि िक ि ि आत्मस्थापन ि ि स्वावि म्बी लाकाजम करैत-करैत, जीवन-यापनक सागह जुटबैत एते समय ि गब उि ते ि ि। कारि, ई काज व्ययसाध्य, शमसाध्य आ समयसाध्य ि ि। से अहा ि ि कलाक शुभकामनासँ आब पूि मभेि अिी। सम्भवतः अला ि दू-ि ल मासमे ि त्र कए आव जाए।...मुनाजी, हमर जीवनक बड़-बड़ समस्या अिी, दे ि ब तँ अजगुत ि गत। लजानक ि त ि ि हुँ, र्ि पी पर आव कए सालहत्य धे ि हुँ। मातृभाषा मैत्थि ीमे र्ि ि ब शुर ह के ि हुँ। लहन्दीमे रोजगार भेटि। एन.बी.टी.क काज करैत पकाशन-उदोग आ बाि-साल्हत्य तथा अनुवादक कायमपर र्ि न्तन करब लवशता बला गेि। आब अनुवाद अध्ययनक आ ि यमबना दे ि गे ि हुँ अिी। एते तरहक दाय्यत्वमे ओझराओि व्यत्मके कोनो ि ुराइ, धूतसा आ कूटनीला नइँ अबै ि, ते मालते रास कुकूर पाि-पाि भूलक रहि ि, लकि नो ि लयो ि ि। ते कोनो ठाम सम्पूि सासँ नइँ रािी पबै ि ी। आि ि र एक मनुष्यक कमताक तँ कोनो सीमा हेतै ने?

लहला कथा ि ि नके ओइ समयमे जीवकान्त सनक थोड़ेक बोधगर ि िक सब ि टकुि कहने रहत्थन। मुदा ि िकके बुझबाक ि लहअला जे लहला कथा ि ि न बहुत मेहनता आ जोि ि मक काज त्थकै। ई कथा कम आ कलवता बेसी होइ ि। एकर काया ि िट आ व्यंजना लराट होइ ि। नबका पीढीक बहुत रास ि िकक बहुत लकि पढब ए ि न शेष अिी, ते ए ि नुक रि नाकारमे के-के सलकय ि त्थ, से घोलवत करबामे हम अकम ि ी। अहा ि ही त' अइ बातके हमर आयोग्यता माला सकै ि ी। मुदा बहुत रास नवतुलया बहुत उत्साहसँ काज क' रहि ह अिी। एतबा धल अवश्य अिी जे जे लकओ स्तरीय लहला कथा र्ि ि त हेताह, हुनका अइ बातक अनुमान हेतला जे लहला कथा ि ि नक काज 'कलहन भूला कोमि पगगामी'काज त्थक।

13. मैत्थि ीमे लकयाशीि रह अहा सलदि न लकि नव-नव काज करैत रहि, आगामी एहेन कोनो योजना अिी?

सोि ि ी जे हमरे नइँ, लकनकहु पयासे 'रि ना: पाठ-पलकया', 'मैत्थि ीक अनुवाद परम्पराक अध्ययन एवं अनुशीि न(वैलाक लसदान्तक कसि टी पर)','मैत्थि ी साल्हत्यक सास्कृत्ताक उदगता(उत र उपलावेशवाद, उत रआधुलाकता, स्त्री-लमशमदलि त-पशक पलपेक्यमे)' आ 'तुि नात्मक साल्हत्यक सम्भावना आ स्वर प' पर मूि मैत्थि ीमे पोथी आबए, आ तकरा पल कए ि िक लि र-लमशमकरए। हम यथासाध्य अइ लदशामे काज करैत रही से तय केने ि ी। अहा ि िकला शुभकामना लदअ' जे सफि भ' सकी। मैत्थि ि िकलाक

आघातसँ बि रहिहुँ तँ कदाचित भ'ओ जाइ। मुदा ई बड़ पैघ काज ि, ते अइ दशामे बेसी िकक योगदानक अपेक्षा ि। के अगसर हेताह से नइँ बूझ रहि छीऐ। ओना आगू अएलाहार कोनो व्यक्तिके हमर जानमे कोनो मदतिक पयोजन पड़तनि, हम ततपर रहबनि।

14. अहाक पीढीक कतेको गोटएके पुरस्कार सम्मान भेटल गेलि। मुदा एते काज केिक पिलायो अहा एिन धरि कातआएि ि। एकरा कोन तरहे देिि अहा?

हमरा जनैत मान्यताक एक मात कसटी पुरस्कारे टा नइँ होइत अिछ। आ मैथिलीमे पुरस्कारो त'एके दू टा देि जाइ ि पति वर्षमे कते गोटएके देि जेतै? ओना एक बात तय अिछ जे लायिक िकिके हमरासँ बेसी योग्य ओ िकिल बुझाएि हेथिन। जखनया हुनका िकिलके हम सवोपरि िगबनि, हमरहु द'देताह। लाियो तँ हुनके िकिलके करबाक िला।

एकटा पुरस्कार सिमतिक िकस्सा कहै ि--सिमितमे कैकटा सदस्य रहथि। हम मायानन्द िमशक नामक पस्ताव देति अनि। कि गोटए कि आओर नामक पस्ताव केलिथ। हम पश केली अनि, जे अहा जिनकर नाम पस्तावित करै ि, हुनकर भिर जीवनक रिनात्मकतासँ मायानन्दक रिनात्मकताक तुिना करैत किह कहू! हुनका मायानन्द िमशक कोन कथा, जिनकर नाम पस्तावित केने रहथि, हुनकहु पाि टा कथा, दस टा किवताक शीर्षक मोन नइँ ि िला।...एहेन तरहक लायिक सिमत जँ अहाके कोनो पुरस्कार द'ओ दैथ, तँ कोन पसनता होएत?

15. अपन सम्पूर्ण िमसािहत्यक यातामे पाप्त अनुभवके नवतुिरया रिनाकारक संग की कहब बाट'िहब?

ओना तँ हम एिनहुँ धरि अपनाके नवतुिरए मानै ि। मुदा ते हमर उमेर तँ घटल नइँ जाएत! अपन अइ तीस-बतीस बर्षक सािहत्यक यातामे अनुभव केिहुँ अिछ (मैथिली, िहन्दी दुनू भाषाक इितहासके देित कहै ि) जे कोनो पुरस्कार, सम्मान, पद, मद, काज नइँ करै ि, काज करै ि रिना। अहाक रिनामे अहाके जीिवत रिबाक औकाित नइँ रहत, तँ सब िकह अहाक देहावसानक संगिह िउर भ'जाएत। आ, अहाक रिना अहाके तिनिह जीिवत रािि सकत, जँ ओिहमे कोनो साथर्क जीवन-दृिष्ट हो। ते साथर्क िकह रित रहबाक पयासमे हम िगाि रहै ि। रिी पाबै ि िक नइँ, से हम कोना कहू। अपन स'ब िमत िकिलसँ आगह करबनि जे गहन अध्ययन, ििन्तन, मनन, आिदसँ जे समय बिि जाए तािहमे अपन रिनाके ईमानदार, सम्वेदनशीि, ठोस, आ पभावी बनेबाक िषा करी। आियमभवभूित जका ई सोित रिना करी ते अइ अनन्त-अपार समय-संसारमे कहियो िकओ िनशये हेताह, जे हमर रिनाक संजान िताह।

16. मैथिली सािहत्य सब िदन बभनतीक(बाभनवादक) िशकार भेि रहि। मुदा अहा सभक समूह एकर अपवाद बिन सोझा आएि। बाभनक समूह मध्य गैरबाभन रिनाकारक स्वतन्त्र अिस्तत्व की अिछ? एकरा सािहत्यिक समरसता कही वा सामािजक समरसाक पतीक वा िकह आओर?

असिमे मैथिलीक मध्यकाि आ आधुिनक कािक पारिम्भक अन्तरािमे मैथिलीमे जतेक िक रिनाशीि भेिह, से िहि आ कायस्थ िह। स्वाभावतः रिनामे अही दुनू जाितक जीवन-यापनक सास्कृितक विस्तार बनि, जे बादक समयमे आिब कए रिढ आ पािणिक रप ध'िि। कमे-कमे िहि आ कायस्थ बूझए िगिह जे हम जे बजै ि, से मैथिली भाषा भेि, आ आन जे बजैए से िटहा िकक बोिि। िहितर आ कायस्थेतर िक सहजिहं बूझए िगिह, जे मैथिली वस्तुतः िहि आ कायस्थक भाषा िथक। मुदा ई पसंग

एतेक आसान नइँ अछि। अइ पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करबाक प्रयोजन छै। हम उल्लेख करए चाहै छी, जे पर्याप्त तर्कक संग प्रो.रमानाथ झा प्रसाद कें खारिज केने छथि, जे भारतीय साहित्यमे कैक भाषाक लोक 'प्रसाद साहित्य'के अपन भाषाक पारम्परिक सामग्री मानै छथि, मुदा सत्य बात ई छैक, जे ओ मैथिली साहित्यक आधुनिकाकालीन सामग्री छैक आ 'प्रसाद साहित्य'क अधिकांश रचनाकार दक्षिणेतर छथि।... भाषाशास्त्रीय दृष्टि सँ देखी, तँ एक देश-राज्य-जाति-गामक बात तँ दूर, एक परिवार धरिक समस्त सदस्यक भाषामे भिन्नता रहैत अछि। ओहिमे कोन सदस्यक भाषा मानक हो, तकर निर्णय करब कठिन होएत। ते कोन जाति आ वर्गक भाषाके मानक मानि साहित्यमे जगह देल जाए, अइ विवादमे पड़ब उचित नइँ छैक। मुदा ई सत्य छैक जे मैथिलीमे ब्राह्मण आ कायस्थ वर्गक वर्चस्व रहल अछि। हमरा जनैत मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणेतर आ कायस्थेतर वर्गक अनुपस्थितिक दू तरहक प्रसंग छै--एक तँ ई जे ऐतिहासिक अइ विशाल वर्गक लोक अइ भाषामे साहित्य सृजनसँ जुड़ल नइँ छथि; दोसर जे ओइ वर्गक जीवनकर्मक वास्तविक चित्राकन एतए नइँ होइ छै। सीताराम झा, काशीनाथ झा 'किरण', यात्री, राजकमल होइत किछु आगू धरिक साहित्यमे जँ ओहि वर्गक किछु चित्र अएबो कएल, तँ पर्याप्त ईमानदार चित्रित कि अर्जित सम्वेदनात्मक स्तर पर ओहि गहन जीवनानुभूतिक चित्र नइँ भेल। ई बात हम तेना जका नइँ कहि रहल छी जे साहित्यमे मृत्युक वर्णन करबा लेल मरब आवश्यक अछि। मुदा एकटा बाझ स्त्री निःसन्तान हेबाक जाहि सामाजिक तिरस्कारके भोगैत अछि, तकरा कोनो सन्तानवती स्त्री ओहिना नइँ बूझि सकैत अछि, जेना कोनो बाझ स्त्री प्रसव वेदनाके नइँ बूझि सकैत अछि। ते, अइ इतर वर्गक सक्रिय प्रतिनिधित्वसँ साहित्य सम्पन्न होएत, आ सम्पूर्ण मिथिलाक समाजक चित्र, मैथिली साहित्य प्रस्तुत क' सकत, से विश्वास कएल जा सकैए। मुदा समस्या ई अछि मुनाजी, जे व्यवस्था-क्रम बड़ विकट अछि। असलमे ब्राह्मणवाद आब कोनो जातिवाद नइँ रहि गेल अछि, ई एकटा व्यवस्था बनि गेल अछि। अहा देखैत होएब जे कोनो ब्राह्मणेतर व्यक्तिके प्रतिष्ठापक्मे ठाढ हेबाक इच्छा होइ छै, त' ओ जन पहिरए लगैए, लोकके अइसँ बचिबाक चाही। कोनो व्यक्तिके पहचान उपस्थित करबा लेल काज करब जरूरी होइ छै। काज होइत रहतै, मान्यता भेटबे करतै। अइ स्थापित रहस्य अथवा मिथ अथवा वर्चस्वक गढ, गत शताब्दीक सातम दशकसँ टुटैत रहल अछि, आगुओ टुटैत रहत। वर्तमान समयमे कतोक रास ब्राह्मणेतर आ कायस्थेतर लोक मैथिलीमे रचना क' रहल छथि अछि, आ बढ़िया क' रहल छथि अछि।

17. अहा सब मैथिली समीक्षाके एकटा नव बाट धरने रही। वर्तमानमे मैथिली समीक्षाक केहेन अवस्था छै? किछुओ-किछुओ त'एकरा ओकील सधेबाक साधन जका बुझै छथि। अहा की कहब?

मैथिली समीक्षे टा नइँ, आनो विधाक हाल-सूरतमे थोड़-बहुत काय-कल्प भेल छै। जहियासँ मैथिलीके आठम अनुसूचीमे जगह भेटलै, झंझट आओर बढ़ि गेलै। लोकके मैथिली कोनो धन्धा बुझाए लगलै। सी.आई.आई.एल. मैसूरमे आलोचनात्मक पोथी कीनल जाएत, ताहि लेल की कहा लिख-लिख लोक तैयार भ' गेल छथि। साल भरि लोक मैथिलीमे किताब छपबैत रहै छथि, किएऐ छपबै छथि, देखल कएल चुनौता लगैए, आखिर किएऐ ई लोक कागज दूषित करै छथि?

अहा दिनक गप करै छी, 'आधुनिक साहित्यक परिदृश्य' शीर्षक अपन पोथीमे हम सन् 2000मे मैथिलीक बाइस टा रचनाकारक रचना-संसार पर एक-एक टा लेख लिखने रही, ओहिमे सँ पन्द्रह टा रचनाकार जीवित रहथि आ एखनहुँ छथि। आनक कथा तँ जाए दिअ, ओ आलोच्य रचनाकारो धरि ओहि पोथीक, कम सँ कम अपना पर लिखल लेखक संज्ञान नइँ लेलनि, धन्यवादो करबा लेल किओ एकटा पोस्टकार्ड नइँ लिखलनि। हँ, थोड़ेक

आन साहित्यपेमी ओइ पोथीक पयाप्त पशंसा केलिन। अहा जातह समूहबाजीक गप करै छी, जँ सते हमर कोनो समूह अछि, तँ तकरहु सदस्य सब ओइ पोथीक चिा अपन कोनो भाषिा, आिमे नइँ केलिन, कोनो पत्रिका ओइ पोथीक समीक्षा नइँ छापिक...आओर बहुत रास बात अछि, मुदा से एकाछिप भ' जाएत।

ओना सधेबा छि जे समीक्षा की छि जाइत अछि, से हमरा जनैत साहित्य नइँ होइत अछि। पाठक बूलि नइँ होइ छथि। पाठक आ समय के अदालित, रचिनाकारक न्याय अवश्य करै अछि। आचिनाकममिे बहुत बेसी ईमानदारी, मेहनति, आ लालसाता पयोजन पड़ै छै। हमरा जनैत तत्काल यशःपाथी छिकके साहित्य-कममे नइँ अएबाक चाही। एतए दीघमआ लालसा साधनाक पयोजन होइ छै।

अन्तमे अहाक माध्यमे हम अपना पर लिखनिहार केलाहार समस्त छिकके सूचिना द' चाहअलि जे राजकमछि धरीक साहित्य पर काज केलाहार देवशंकर नवीनक नेतमे छिट तकलाहारके सोचिक छाहअला, जे हम ओस आ अंगारमे दाग ताक रहल छी। मालते रास भाग्य-विधाता सभ साहित्यमे छथि, किनकहु कीतमा क' कए हम किछु पाप्त क' सकै छी हुँ। सब जनै छथि, जे ई काज हमरा छि कते सुचिभ छि। मुदा मनुष्यके मरै काछि कहा दन अपने टा कएि काज शालन्त दै छै।

२४

बहुभाषाविद रचनाकार युवा पत्रकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजी सँ युवा पत्रकार तथा प्रसिद्ध कथाकार एवं समीक्षक मुन्नाजीसँ भेल गप्प सप्प प्रस्तुत अछि:-

मुन्नाजी:गजेन्द्र जी नमस्कार। युवावर्गमे अहाँक कार्यसँ अनेक आह्लादित होइत रहैत अछि, ताहि हेतु अहाँसँ ऐ पर विस्तृत चर्चा करऽ चाहब। गजेन्द्रजी अहाँक बेशी रहनाइ आ शिक्षा प्रवासमे मिथिलासँ बाहर भेल। उच्च शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी रहल तखन मिथिला/ मैथिलीसँ एतेक लगाव कोना?

गजेन्द्र ठाकुर: बच्चामे १९७९-८०मे चौथा-पाँचमामे हम अपन गामक प्राइमरी स्कूलसँ केने छी। हमर पिताजी बिहार सरकारमे कार्यपालक अभियन्ता रहथि जखन कार्यकालहिमे हुनकर मृत्यु भऽ गेलन्हि। मुदा ई गप ओहिसँ पुरान अछि, ओहि समयमे हमर पिताजी सहायक अभियन्ता रहथि आ पटना-हाजीपुरक गंगापुल बना रहल रहथि। पिताजी इमानदार रहथि से ठीकेदार सभ आ अभियन्ता सभ रोषसँ बच्चाकेँ धमकी देने रहथि, बच्चा सभकेँ मारबाक धमकी देने रहथि। अपने तँ ओ पटियन नहि केने रहथि मुदा हमरा सभकेँ गाम पठा देने रहथि। भऽ सकैए यएह किछु साल गामक निवास मैथिलीसँ आ मिथिलासँ हमर लगावक कारण रहल हुअए। फेर बादोमे साल मे दू बेर पिताजीक संग गाम जाइत छलहुँ, एक बेर होलीमे आ दोसर बेर दुर्गापूजामे। पिताजीक मुँहे एक बेर सुनने छलहुँ जे एहि जन्ममे तँ नगरमे रहि रहल छी मुदा अगिला सात जनम गाम नै छोड़ब।

मुन्नाजी:पहिल बेर रचनाक प्रेरणा कोना/ कतऽसँ आ कहिया भेल। पहिल रचना (कविता) कोन छल आ पहिल प्रकाशित रचना (विधा सहित कही) कतऽ कहिया छपल।

गजेन्द्र ठाकुर: वएह १९७९-८०क गप अछि। गामक स्कूलमे एकटा बाल नाटकक भार हमरा कान्हपर वीरभद्रजी नवका मास्टर साहेब आ बड़हराबला मास्टर साहेब देलन्हि। नाटकक पोथी कतऽ सँ भेटत? तँ दानवीर दधीचि लिखलहुँ। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे ई ढेर रास सुधारक संग प्रकाशित अछि २००९ ई. मे। २००० ई. मे जे हम मैथिलीक देवनागरीक साइट याहूजियोसिटीजपर बनेलहुँ ओहिसँ हमर पाण्डुलिपि टाइप भऽ अन्तर्जालपर ऑनलाइन रूपे आबए लागल, बादमे याहू अपन जियोसिटीज बन्न कऽ देलक मुदा ५ जुलाइ २००४ केँ "भालसरिक गाछ" नामसँ बनाओल हमर मैथिलीक अन्तर्जालक पहिल मैथिली उपस्थितिक रूपमे एखनो वर्तमान अछि। यएह भालसरिक गाछ १ जनवरी २००८ सँ विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे ऑनलाइन रूपे आबि रहल अछि, आब तँ एकर ७० टा विदेह रूप आ ४ टा सदेह रूप आबि गेल छै। प्रिंट पत्रिका/ दैनिकक जतऽ धरि गप अछि तँ भारती-मंडन, समय साल, घरबाहर, अंतिका, आँकुर, पूर्वोत्तर मैथिल, जखन तखन, मिथिला मिहिर (जनकपुर), परमेश्वर कापड़ि जीक पत्रिका (जनकपुर), मिथिला समाद, मिथिला दर्शन आदिमे रचना सभ छपल अछि। भारती-मंडन लखनऊसँ हम रचना पठेने छलियन्हि २००१-०२ मे केदार कानन/ तारानन्द झा "तरुण"केँ, जे बादमे छपबो कएल, ओहि कालमे हम सासुरमे रही एकटा दुर्घटनाक बाद, बैशाखीपर किछु बरख धरि रही(२००१-०२)। भऽ सकैए ओहो कालखण्ड हमरा समय देलक आ हमर दिशा निर्धारित कएलक।

मुन्नाजी:एक संग एतेक विधामे रचना करबामे असोकर्ज नै होइए? एक संग बहुविधाक संगोर प्रकाशित करबाक की उद्देश्य?

गजेन्द्र ठाकुर: एतेक विधा माने कतेक विधा? विधा तँ दुइये टा छैक गद्य आ पद्य। हमर कथा शब्दशास्त्रम् मे

ढेर रास गीत ि। तस्कर कथा पंजीमे वर्णित तस्कर केशवक तहमे गेािक उपरान्त फुराएि। आब पंजीक लातल्यािकरसँ देवनागरीमे लीप्यन्तरि नै कलतहुँ तँ िि-मजनू आ हीर राझाक कोलटक मैलथ्ािपेमकथा मैलथ्ाािमे नै अलबतए। मैलथ्ािअंगेजी लीक्शनरी रहै मुदा इंलाश-मैलथ्ाि लीक्शनरी नै रहै, से ओ बनएबाक कममे हम धीॉगके जािवृत लीि ि आ इन्टरनेटके अन्तजाि, तँ से कोना होइतए, हमर लवजान कथा कािस्थान लवस्थापन, आ अन्तजाि आ पबन्धनपर आिि, मैलथ्ािक ि SWOT अनेलीलसस मैलथ्ाािमे कोना लीिइत? तँ लवद भेि जे हमर गद-पद एक दोसराक ि ऋिी अलि, हमर पाण्ुलीलवक लीप्यन्तरि/ अंकि आ शब्दकोषक लामाि सेहो हमर गद-पदक लवलवाषतामे योगदान देिक। हमर मैलथ्ाि-संस्कृत लवाकक कायम मूि संस्कृत कथा-काव्यक अन्वेषिमे हमर सहायता केिक, आ ताले कारिसँ “दानवीर दधीिि”क पराििक दन्तकथा जालहमे दधीिि हडिि दान दै ललथ्ा के हम नै मानिहुँ आ वैलदक कथा मानिहुँ जालहमे आलवान हुनका (दधीििके) घोड़ाक मुँह िगा दै ललथ्ा आ ओले गरदलाके इन्द्र काटै ललथ्ा आ फेर आलवान दधीििक असि मुँह िगा दै ललथ्ा, आ ओले काटि घोड़ाक मुँहक हडिसँ इन्द्रक हलथ्ायार तैयार होइ ि, दधीििक हडिसँ नै। त्वज्ज्िहज्ज् (मूि संस्कृत महाभारतपर आधालरत)आ असज्जाला मन (संस्कृतमे अशघोषक बुदलितपर आधालरत) ई दुनू गीत पबन्धमे आएि मूि लवलवाषता सेकेन्िरी सोसक अध्ययनसँ सम्भव नै ि, आ नलहये दूवाक्त मंतक वा आन वैलदक युगक कथ्यक लवशिषि (लालकथक अंगेजी अनुवादक सेकेन्िरी सोसक लवपरीत) लबना मूि अथम बुझने सम्भव, से मायानन्द लाशक पथम शैि पुती ि, मंतपुत, पुरोलहत आ स्तीधनक समीकामे सेहो काज आएि। तँ हमर संस्कृत-मैलथ्ाि लवाका एतए काज आओि। हमर दशमन शास्तक मूि वािस्पलत/ कुमालि/ मंिनक ओ भामती आ हिलवलदक दाशमलनक तत्व शब्दशास्तम् मे आओि। तँ हमर अंगेजी सालहत्यक लवाका हमर आिि मैलथ्ाि सालहत्यपर अंगेजी सालहत्यक पभावक आधार बनि। हमर ऋगवैलदक संस्कृत आ अवेस्ता क मूि अध्ययन मैलथ्ािक गजिशास्तक आििमे पयुक्त भेि तँ हैकू आ हैबून- मूि जापानी काव्यशास्तक अनुवादक आधारसँ लवलवाषता पाप्त कऽ सकि। सहसबाढलाक ि वसमन, कैथी आ लातल्यािकर यूनीकोिक लामािमे योगदान हमर कम्प्यूटर लवशेषजताक लबना सम्भव नै ि तँ हमर िबर इन ििवेिपमेन्टक कोसमहमर बाि-शमपर आधालरत बाि कलवता ि अपलहायमि।

एक संग ई सभटा रििना हािबाउन्िमे कुरुक्षेतम् अन्तममनक नामसँ एले दारे पथमे-पथम ििि कािि हम एकरा पलरवारक सभ सदस्य ि लीि नेि। लवाशु/ बाि सालहत्य सेहो एलहमे अलि कािि िट बििी स्वयं ओ रििना नै पढत वरन् अहा ओकरा पले कऽ सुनेबै, कलवता याद करेबै, अंलकता विमािि लवाका देि, नाटक करबलय। मूि अलि तँ कथा पढू, नै तँ कलवता-समीका/ नाटक पढू ििऊ। महाभारत/ बुदलित पढबाक पििला नै अलि तँ त्वज्ज्िहज्ज् आ असज्जाला मन पढू। मोन अलि तँ उपन्यास पढू आ नै तँ दीघकथा-लवहला कथा पढू। बादमे ई सातो िण्ि पेपरबैकमे सेहो सात िण्िमे आएि। हािबान्िक हजार कॉपी तँ गोट-गोट लबका गेि।

मुनाजी:एक संग बहुलवधाक रििना पकाशनसँ अहाक अपन अलस्तत्वके ितरा नै बुझाइत अलि? एहेन केिसँ भऽ सकैि जे समीकक अहाक कोनो मूल्याकन नै कऽ सकैथ?

गजेन्द्र ठाकुर: मुदा से भेि नै। कािि ििपर ििसँ हमरा परहेज नै अलि जे ओ कत धलर पहुँििबए, आ नै तँ नव िििि बनेबामे सेहो कोनो असोकजमनै। कुरुक्षेतम् अन्तममनक हमर २००९ धलरक समस्त कृलतक (पंजी आ लीक्शनरीके िोलड़ जे अिगसँ पकालशत भेि) संकिन अलि। ई पाठक ि लीिि गेि अलि, समीककक

िि नै, मैथिलीक ओहेन समीक्षक िि नै ज्ञानका सर्वाधिकर नै अबैत िछि आ कम्प्यूटर इंटरनेट िथि से पंजी आ कम्प्यूटर/ पबन्धन विषयक आिथक समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै िी, करबाको नै िलियलिह; ऋग्वैदिक संस्कृतक जान नै िछि तँ हमर ताहि सम्बन्धी समीक्षापर ओ समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै िी, आ से करबाको नै िलियलिह। मुदा जाहिपर ओ कऽ सकै िथि ताहिपर करथु, कतेक समीक्षक केबो केिलिह अछि, जेना पेमशंकर सिंह, शिव कुमार झा आ राजदेव मंडि। पक-विपकमे सएसँ बेशी टीटी सेहो आएि अछि। मुदा जे पाठक िथि हुनकर पत्रिकाक्रिया आहादकारी अछि, संटक अतिरिक्त हजारसँ बेशी िउनिोि विशभरिमे पसरि मैथिलीभाषी दारा हमर सभ पोथीक भेि अछि। बिना कोनो सरकारी साहित्यिक संस्थाक सहयोगसँ हमर उपन्यास सहसबाढनिक अनुवाद अंगेजी, संस्कृत, तुिु, कनड़, मराठी आ कोकणीमे कएि गेि। एहि उपन्यासके िीमे िोक पढि रहि िथि।

मी रदमंदो से क्या पुि ि तक मेरी इश्वादा क्या है

वक मै इस तकक मे रहता हूँ मेरी इलाहा क्या है,

(इकबाि)

(बुतयायारसँ हम की पूि जे हमर आरम्भ की अछि, हम तँ एहि चिन्तामे िी जे हमर ओरिर की अछि।- इकबाि)

िुदी को कर बुिन्द इतना, के हर तकदीर से पेहि

िुदा बन्दे से िुद पूिे, बता तेरी रजा क्या है?

(इकबाि)

(अपन वाःस्वाथसाके ओहि स्तर धरि िऽ जाऊ जे ककरो भाग्य बनेबाक पहिने भगवानके ओकरासँ ई पूिए पड़लिह जे बता केहन भाग्य िाही तोरा।- इकबाि)

मुनाजी:अहा विशिान रििाकार आ समीक्षक अतिरिक्त मैथिली पत्रिकाक एकटा आधार स्तम्भ भऽ देिार भेि अछि। "विदेह ई पत्रिका" पारम्भ करबाक विषयर कोना भेि? आइ एकरा आ एकरा माध्यमे अपनाके कतऽ पबै िी?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली पत्रिका सभके रििा पठाएब तँ दू baraिक उपरान्त नम्बर आएत, नहियो आएत। अतिथि सम्पादक रििा मंगबा कऽ गीलऽ गेिहि, सेहो उदाहाि अछि। नव रििाकार हतोत्साहित रहथि। से विदेह पकाशनक वायित्तता िऽ कऽ आएि, विरिक समस्या एकरा नै रहै, कारि ई अन्तजािपर िि। भारत आ नेपािक मैथिली भाषीक बीिक जे बोिेर िै, देशक बोिेर, से विदेह िि नै िै। भारतक नै वरन विशक बीि पसरि मैथिली भाषी मध्य विदेह िोकिय भेि। मैथिलीमे पाठक नै िै, नीक िोक नै िै, युवा िोक नै िै, गएर मैथिल िहि-कमिकायस्थ- गएर सवमििक नै िै, ई समस्त धारिा विदेह तोड़ि देिक। आइ धरि विदेह ई पत्रिकाके १०७ देशक १,५७१ ठामसँ ५१,०७७ गोटे दारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ २,७२,०८२ बेर देिि गेि अछि (गूगि एनेलिटिक्स िटा)। विदेह: सदेह:१ मे ११८ टा िोक (१८ बिसँ ८८ बिम धरि) िहि। विदेह मैथिलीक एकमात अन्तराष्ट्रीय शोध जनि अछि जकरा पेरिस स्थित अन्तराष्ट्रीय संस्था मान्यता देने िै। विदेह अही सभ उदेश्यसँ शुरु भेि आ अपन सभटा उदेश्य पाप्त कएिक। मुदा एतेक भेिाक पशातो हम कहब जे ई तँ एिन मात पारम्भ अछि।

विदेहक कारिसँ बहुत गोटे नीक-अधािह िोक भेटिहि, बेशी नीके। विदेहक कारिसँ हमरा पाठक भेटि, स्नेह

भेटि। ल्वदेहक कारि सँ एकटा दवाब रहैत अछि, रि ना करबाक दवाब आ रि नाकारके जोड़बाक दवाब।
मुनाजी: ाहि ि वगमअपन ल्हतपूर्लामि ि मैथ्यलि ीक दुरपयोग केि ला वा मैथ्यलि ीके गरोत्स गेि ा। गएर ाहि ि वगम लाङेस जका टाल्व पथिी मारने रहि ा, एकर की कारि, ऐ सँ मैथ्यलि ीके कतऽ धल्व ाभ वा हाला भेि ै?
गजेन्द्र ठाकुर: मैथ्यलि ीक दुरपयोग वा कोनो भाषाक दुरपयोग कोना सम्भव अछि? ई तखने सम्भव अछि जखन ाकिक आत्मवक दशा तेहन होइ जे ओ भोजन ाि ि झि ैत हुअए वा सरकार ओकर त्वाका-व्यवस्थामे दोसर भाषा घोल्सया दै, भारतमे ल्हन्दी आ नेपालिमे नेपाि ी घोल्सयाओि गेि ि। ाहि ि वा कायस्थ-वगमत्वाकामे आगा ाि ाहि (देशक दोसर भागक ाहि ि वा कायस्थसँ हम तुि ना नै कऽ रहि ि ी- हुनका सभसँ तँ ई ाकिला बडि पि ुआएि ि त्थ।), माने लालि त्यलि ाक दोसर जाल्तसँ। से सालहत्यमे सेहो यएह सभ अएि ाहि। ने ल्लात्यलि ामे राममोहन राय भेि ाहि जे ल्वधवा ाि ि ि ल्हतत्थ, ने गेल्कयि गाल्सया माल्कयसा भेि त्थ जे "ए हन्डेि ईयसम ऑफ सोल्कटयू" ल्कि ाबा ाि ि कार बेल्क देि त्थ जे ओल्ह पाइसँ पल्तवारक साि भल्वक ाि ाि ाि ल्तलह आ ओल्ह अवत्थामे ओ ई उपन्यास ल्कि ाताह! मुदा ई दुनू गप पूि त्तः सत्य नै अछि, बहुत गोटे अपन सवस्त्र बेल्क मैथ्यलि ी ाि ि झोकल्लह, मुदा गुटबन्दीक कारि हुनकर ाि ाि नै भेि। कतेक गोटे ल्ववादमे घसीटि गेि ाहि तँ ओ तथाकल्थत पतनुकान िऽ िि ल्लह। पंजीमे कमसँ कम तीनटा सवस्त्रदाताक ल्ववरि अछि जाल्हमे एक गोटे अपन जीवनमे तीन बेर सवस्त्र दान केि ल्लह। पंजीमे सैकड़ामे अन्तजातीय ल्ववाहक ल्ववरि अछि आ से ाहि ि आ दल्लतक बीि। तस्कर केशव राजाक लाहुि ि ि ड़कीसँ ल्ववाह केि ल्लह, ल्कशीशर ल्संह ल्कि ु नै कऽ सकि ाहि। मुदा ई सभ दू साि पल्हने धल्व अल्वि ल्कि त नै भेि। १९४२ ई.क आन्दोि नमे पंि ाि नन झा आ पुरन मंि ि झंझारपुरमे संगल्ह अपन बल्कदान देि ल्लह मुदा से अल्वि ल्कि त नै भेि, आब २००९ ई. मे जगदीश पसाद मि ि ओल्ह घटनाके अपन पताबा कथाक आधार बनेल्लह। गएर ाहि ि वगक जगदीश पसाद मि ि/ राजदेव मि ि/ बेि न ठाकुर/ महेन्द्र नारायि राम/ मेघन पसाद/ ल्वि ट पासवान "ल्वहंगम", ल्हनका सभक अल्तल्वक्त जे सालहत्यकार ि त्थ ओल्हमेसँ बेसी वएह आगा बल्ढ सकि ाहि जे टोना-टापर जानै ि त्थ आ ाहि ि-कायस्थ मध्य सेहो बेशीकाि टोना-टापर जानैबि ा आगा बढि ाहि, से ककरा दोष देबै। ने पाठक रहै, जे जेबीसँ ाि ाि केि ल्लह से ल्ववाल्दत कएि गेि ाहि, जे पत्ताभावान रहत्थ से हतोत्साल्हत कएि गेि ाहि आ जे टोना-टापर जानैबि ा रहत्थ से आगा बढि ाहि। कारि सेहो स्पष अछि जे मैथ्यलि ीमे पाठक नै ि ि ते ई भेि आ ईहो सत्य जे एल्ह सभ कारि सँ पाठक नै बढि, ल्कि कन एन्ि एग पोल्यिम। गएर ाहि ि वगक राजनील्ताज बेसी दोषी ि त्थ, ओ वोट मागैि आबै ि त्थ मुदा ल्जतताक बाद मैथ्यलि ी नै बजताह जे हम अहाक भाषा नै बाजै ि ी, से हमरासँ दूर रहू। ल्वदेहक आगमन एल्ह सभ पक्के सोझामे राल्कि कऽ भेि, मैथ्यलि ीके देि स ी-फ्राइजलांगक पभाव दूर भेि अछि।
मुनाजी:मैथ्यलि ी ल्वशेष कऽ गएर ाहि ाकि मूि भाषा ाि ि। ाहि ाकि मूि भाषा तँ संस्कृत रहि, बोि ी ाि ाि मे सभक भाषा मैथ्यलि ीये रहि। मुदा ाहि ि ाकिला हुनका सभके पूि त्तः दूर रि ि ला। अहा हुनका सभके जोल्ह ाि ाि ? कोना?
गजेन्द्र ठाकुर: मानुषील्मह संस्कृताम् ई उल्क्त हनुमान जीक ि ल्लह जे सीतामैयाक नैहरक भाषा मानुषीमे हुनकासँ अशोक वाल्टकामे गप केि ल्लह (वाल्मील्क रामायि- सुन्दरकाण्ड)। मैथ्यलि ीमे बहुत रास शब्द अछि जे वैल्दक संस्कृतमे अछि मुदा ाल्कक संस्कृतमे नै, से मैथ्यलि ाि ास कऽ गएर ाहि ि वगमवैल्दक संस्कृतक बेशी ाि ि त्थ तँ पढि ल्कि ाि मैथ्यलि (ाहि ि आ कायस्थ) ाल्कक संस्कृतक। मुदा ाकि कंठमे बसि सालहत्य गएर

िहि वगमे अिछ, उमेश मंिि १२-१४ जाितक एहेन सािहत्यक संकिन केने िथ तँ महेन्द्र नारायि राम/ िवशेशर िमश/ मितपदक पोथी सेहो िपि िििख। ई अवश्य जे िवदेहक अएबासँ पूवम एकभगाह िस्थित िि नब्बे पितशत िहि आ १० पितशत कायस्थ सािहत्यकार िािह। अन्य नगण्ये िािह, िवदेह सभक मध्य भरोस उत्पन्न कऽ सकि तािहमे ओ सभ गोटे शािमि िथ जे िवत्तमान कािवििमे िवदेहसँ जुड़ैत गेिाह आ एकरा शिक्त पदान कएिििख। पिहने ज्योितजी, फेर िवदानन्द झा, नागेन्द्र कुमार झा, रिवम रेि िसन्हा, उमेश मंिि, िशव कुमार झा आ मनोज कुमार किनिजया वमा आ राजीव कुमार वमा िवदेहसँ जुड़िाह। हमरा आ सम्पादक मंिकि सदस्यके मानििसक रपे पतािड़त करबाक घृिणत पयास सेहो िकछु टोना-टापर जानैबिा सािहत्यकारक इशारापर कएि गेि, मुदा एिहसँ हमरा सभके झमेिसँ बाहर अएबाक किा िसखबाक अवसर भेटि। मुदा उत्साहवधमन करएबिाक तुिनामे ई सभ बडि कम मातामे रहिथ, रािू पाि पितशत। हम सभ िकके जोड़िहुँ आ ओ सभ जुड़िाह, दुनू सत्य अिछ। हमर ई पयास एिह अभाव-भाषिके ििम कऽ देिक-य बडि पयास केने छिऐ, नै सम्भव िै य..आिद...आिद; आ एिह अभाव भाषिमे िहि-कायस्थ तँ शािमि रहिथ, गएर िहि-कायस्थ सािहत्यकार आ राजनीितज सेहो शािमि रहिथ, आ ओ सभ बेशी दोषी िथ। दोसर आिब जएताह तँ हमर िििती कम भऽ जाएत, माने पितयोिगतासँ दूर भागब, ई जेना िहि-कायस्थ आ गएर िहि-कायस्थ सािहत्यकार- दुनुक मनोभावना बिन गेि िि; ओना एिहमे अपवादो सभ िथ।
मुनाजी:अहा स्वयं िहि वगमसँ रिह पुरना बभनटी (िहिवाद) सँ अिग बाभनवादसँ दुिि वा कितआएि रििाकार, सभ जाित-धमकक नव-पुरान रििाकारके एक मंिपर एक संग जगिहयार कऽ रहि िैहे, एकरा पािा की मानििसकता वा रहस्य अिछ?
गजेन्द्र ठाकुर: मैिथिीक िकिबसमे पढै िििहुँ जे सभ जाितक मैिथिीभाषी मैिथि िथ, मुदा वास्तिवक धरातिपर, िवदापित पवम आिदमे ई मैिथि िवशेषि मुख्यतया दू जाितक भऽ जाइत िि। माने कथनी आ करिीक अन्तर। हमर पािन-पोषि आ िशक्षा-दीक्षामे कथनी आ करिीक अन्तर नै रहि, पायः सएह कारि होएत। दोसर पितयोिगता बढत तँ अहीक सािहत्य ने मजगूत होएत, बेशी िीक आएत तिन ने नीक िीक बेशी आएत। जाितक नामपर वा सर-सम्बन्धीक नामपर हमर सहयोग क्यो मँगबाक िहम्मत नै केने िथ, कमसँ कम ओ िकिा जे हमर स्वता आ हमरा िीन्हैत िथ। ने कोनो रििाक िरिके हम जाितक नामपर बकसैबि िीयिैह। आ जे ओिह पवृित्तक िथ से सभ जाित-धमकक िीक एकटा भऽ जाथु जािहसँ पीठमे ूिरा भोकेबासँ तँ हमरा सभ बिि जाएब। आ हमर मानििसकताक िीक जे एक मंिपर एक संग जगिहयार भऽ रहि िथ तँ हम सएह कहब जे हमर काज हुनका सभमे हमरा सभक पित िवशास देने िििह- से हुनका सभके धन्यवाद।
मुनाजी:कोनो एहेन िवशेष िकयाकिाप वा घटना जे अहाके बाभनक वा बभनटीक पित आकोश आ गएर बाभनक पित िगाव बढेिक।
गजेन्द्र ठाकुर:कोनो एक घटनाक आवश्यकता कतऽ िै। दरभंगाक दोकानमे मैिथिीक िकिबसक गाइिक अितिरक्त कोनो मैिथिी पोथी नै भेटै िि, कोनो एक सािहत्यकारक मुँहसँ दोसराक पित आदर विन नै िनकिै िि, क्यो अिििथ सम्पादक बिन अहाक रििाक िोिर केिक तँ ओकरा अहा पकड़ी तँ तािहपर एकमत नै होइ जाइ िािह उन्टे दोषीके पीठ ठोकै जाइ िािह, शब्दशः िोिर आ आकान्त वा पभािवत भेि रििाक अन्तर ककरा नै बुझि िैक आ ओिह आिमे शब्दशः िोिर केिनहारक पीठ ठोकब! िवदेहक आगमनक बाद एिह सभमे पिरवतमन आएि, एकरा के नकािर सकत।

सत्यक पक्ष ि गिव रहत आ अन्यायक पक्ष विरोध तँ सभ ि कि ु अनायासे आबि जाएत, कोनो विशेष क्रियाकि ाप वा घटनाक आवश्यकता नै पड़त, कोनो घटनासँ फाएदा उठेबाक आवश्यकता नै पड़त।
मुनाजी:अहाक मैथि ि ी पत्रकारिताके दूर हेबासँ ब ि बाक वा सत्यक ि ाजिक कारि ि गारि-गंजनक प ि ायो एक स्टंपपर अड़ि रहबाक दृढ संकल्प कतेक दिन धरि सम्भव हएत?
गजेन्द्र ठाकुर: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समपर्णमे हम ि ि ि ने रही-
ि ताक सत्यके ि ि बैत दे ि ने रही विस्थतपजतामे
तद्वये बुझने रही जे
त्याग नहि कएि होएत
रस्ता ई अछि जे ि ाव्दयाहवि ।
आ ई पद्ध गामक बहुत गोटे कानए ि ागि ि ि ाहि । हुनका सभके बुझि ि ि न्ह, मुदा अहाके हम यएह कहब सकै ि ी जे एकर ि ाधारि भविष्य करत, अपन विषयमे बढा-ि ढा कऽ की कहू।
मुनाजी:ि कि ु सम्पादक- ''अहा हमर ि ि पू वा हमरापर ि ि ू आ हम अहाक ि ि पब''बि ि ायत्तापर ि थि । ओ ि कि ु ि नि-बीि ि ि िकके ि पै ि थि वा परिवारवादमे ि पिटाएि रहै ि थि । मुदा अहा ऐ सँ इतर सभके स्थान दै ि ियैक- ई की सोि जानि कर करैए?
गजेन्द्र ठाकुर:मैथि ि ीमे समस्या रहै जे पाठक नै रहै, ते ओना होइ ि ि । हम सभ सभके स्थान दैत ि ि ऐ तँ एहिसँ पाठक बढि, मैथि ि ी मृत होएबासँ बि ि गेि । आ आब दोसरो पक्षका सभ सभके स्थान देनाइ शुरु कऽ देने ि थि- कारि अभाव-भाषि जेना ि ि के नै ि , दोसर जाति ि ि ि ते नै ि , नव ि ाक मैथि ि ीमे आबये नै रहि ि , ई सभ ि ाथ विदेह दारा ध्वस्त कऽ दे ि गेि ि ।
मुनाजी:मैथि ि क मानसिक अि ि ाकमि सँ अहूँ अपन ि ि रि बदलि ओहिना रहरहाम तँ नै भऽ जाएब, जेना मैथि ि ी पत्रकारितामे आइ धरि ि ि ि आबि रहि ऐ?
गजेन्द्र ठाकुर:मैथि ि क मानसिक अि ि ाकमि हमरापर होएत कोना? परि ायोि ितासँ, मेहनतिसँ हम दूर नै भागै ि ी। मैथि ि ी पत्रकारितामे प्रतिभावान ि ाकक संख्या कम ि ि से ओहन अि ि ाकमि होएब स्वाभाविक रहै। मैथि ि ी ि कएक, सभ भाषाक पत्रकारितामे/ विशवि दा ि ि य ि ाकि मे भाषा विषयमे कम माक्समे नामाकन होइ ि , ते एहन अि ि ाकमि बेशी होइ ि । मुदा विदेहक आगमनक बाद दोसर विषयक जेना इतिहास, भूगोि , कम्प्यूटर साइन्स, ि टिमि एकाउन्टेन्सी, ि ॉक्टर आदिक संख्या मैथि ि ी साहित्यमे बढि अछि ; साहित्य विषयमे सेहो प्रतिभावान ि ाक सभ ि थि, सेहो सोझा आएि ि थि । हमर मृत्युक बादो ई रक्तबीज सभ हमर उदेश्यके आगा बढबैत रहताह।
मुनाजी:ठाम-ठीम ई ि ि मिउठैत अछि जे अहा आ शुति प्रकाशन, व्यक्ति विशेषके ि पिबामे अपन आत्मिक-मानसिक ऊजाक बेशी अंश ि ागा रहि ि ी, ताहि हेतु अहा की कहब?
गजेन्द्र ठाकुर:विदेहमे आइ धरि ई नै भेि अछि । हमर ''पोवि न्ट फर्नि आ एि ियरक पाइ''आ माक पेशनक सीमित संसाधनक बावजूद जे मानसिक संसाधन अछि , जेना बुक ि ि जाइन, साइट-ि ि जाइन, टाइपिंग ई सभ विदेहक सम्पादक मंि ि दारा मुफ्त उपधि ि कराओि जाइत अछि । कोनो मैथि ि ीक पत्रिका वा संस्था वेबसाइट ि ामाि , पत्रिकाक रजिस्ट्रेशन आदि ि ि विदेहसँ सम्पकमकेने होथि आ से हुनका नै भेटि होइन्ह, से नै भेि अछि । शुति प्रकाशनक मैथि ि ी पोथीक ि ि सेहो हम कैमरा-रेि ी-कॉपी धरि तकनीकी सहायता दैत ि ि यि न्ह। हमर दे ि सि ि हपर शी जगदीश पसाद मण्ि ि जीक आठ टा किताब आ स्व. राधाकृष्ण ि धरी जीक ि ाि थि क

इतिहास लिखि जा रहल अछि/ लिखि गेल अछि, ई सभटा पोथी विदेह आकाइवपर मुफ्त डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि, एकरा सभके अहा पढू आ स्वयं निर्णय करू जे गुणवत्ताक आधारपर ई सभ लिखल योग्य अछि वा एकर लिखबाक निर्णय व्यक्ति विशेषक आधारपर कएल गेल अछि। बहुत रास हमर सहित प्रकाशक द्वारा नकारल गेल, सभ संस्थाक आत्मघातक संसाधनक सीमा अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल आ स्व. राधाकृष्ण चौधरी जीक पाण्डुलिपि कतेको सरकारी मैथिली संस्थासँ जुड़ल पुरोधा लग गेलन्हि मुदा ओ निकलल अपन पोथी छपबाक जोगारमे छलाह, छपबेबो केलन्हि, भने ओकर कोनो ग्राहक/ पाठक नै होइ।

मुदा एते धरि होएबाक छलै जे गुणवत्ता आधारित पोथी सभक हजारक हजार डाउनलोडिंग संग वेबसाइट वसमाक पाइ दऽ कऽ किननिहार संख्या देखि ई मैथिली सरकारी-गएर सरकारी संस्था सभ आब अपन निर्णय बदलि रहल छथि। कारण आब हम मात्र विदेहपर केन्द्रित भऽ काज कऽ रहल छी आ प्रकाशक सेहो सीमित मात्रामे पोथी प्रकाशित करबामे समर्थ छथि ते जे ई निकलल आगा आबथि तँ विदेह आकाइवमे अमूल्य आ ढेर रास अद्भुत रचना/ रचनाकार उपलब्ध अछि/ छथि। कैमरा रेडी कॉपी धरि बनेबाक काज हम मुफ्तमे कऽ देबनि।

मुनाजी:अहासँ एकटा व्यक्तिगत जीवनक पहलूसँ जुड़ल प्रश्न पूछि जे अहा नोकरीक संग सभसँ लगातार सम्पर्कमे लगातार रचनारत रहब लगातार पत्रिकाक संचालनिक अतिरिक्त पारिवारिक समन्वयन कोना कऽ पबैत छी?

गजेन्द्र ठाकुर:प्रीती प्रीता ठाकुरक सहयोग लिअ, ओहो मैथिली चित्रकथाक चित्रकारीमे लागल रहै छथि, बच्चा सभ, ओम आ आस्था, शान्त प्रकृतिक छथि, से अतिरिक्त सुविधा प्राप्त अछि। विदेहक दूर-दूर प्रान्त देशमे बसल सम्पादक मंडलक सहयोग लिअ, जे कतेक मेहनति करै छथि आ हुनका सभसँ कम मेहनति जे हम करी तँ हम कथीक सम्पादक। कोनो वस्तु जँ हृदयमे अछि रहत तँ सभटा समन्वयन भऽ जाएत।

मुनाजी:एतेक काज केलाक पश्चातो एखन धरि अहाक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाके प्रभावित तँ नै पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक प्रेषकक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। सिरसाबक सेहो अहाके नीक कहत से कोना सम्भव? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।

पीछे पीछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर।।

(कबीर)

(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछा-पाछा भगवान कबीर-कबीर कहैत घुमि रहल छथि।-कबीर)

मुनाजी:मैथिलीमे समीक्षाक स्तर की अछि, समीक्षक वास्तविक प्रारूप की अछि, आ ओ मैथिलीमे कतऽ अछि?

गजेन्द्र ठाकुर:मैथिली समीक्षाक समक्ष वास्तविक समस्या रहै। पहिल रहै पाठकक संख्या शून्य रहब आ दोसर रहै जे लेखक आ समीक्षकक एक दोसराक सर-सम्बन्धी/ दोस- महीम होएब। से एहि स्थितिमे गपाषक आधारित समीक्षाक स्थिति भेल। मुदा आब से नै अछि। जे पुरनका समीक्षक निकलाके अपन अस्तित्व बचिबाक लेल आ दुर्गानन्द मंडल, शिव कुमार झा, राजदेव मंडल, धीरेन्द्र कुमार आ मारते रास राकसी प्रतिभा सम्पन्न समीक्षकसँ

टकर िबाक िलहि तँ िबना पढने समीक्षा दीि बाक आह-बाह आिक ि ि-ि ि ब ि िवपरीत ध्रुवक समीक्षा िड़ए पड़तिह।
मुनाजी:अन्तमे अहा अपन समकक रि नाकमीके कत ऽ ठाढ देि ि ि,हुनक दशा-िदशाक मादे की कहब?
गजेन्द्र ठाकुर:आशयमि गैत अछि जे कत ऽ ई िकिला नुकाएि ि िह,सभ अपन सामािजक-पािरवािरक िजम्मेदारी िनमाहैत मैिथलीक िि जतेक कऽ रहि िथि से आन भाषामे सम्भव नै ि,िकि अपवादो िथि आ से तँ रहबे करताह।
मुनाजी:अपनेक स्वतंत िवि ार आ एतेक समय देबा िि बहुत-बहुत धन्यवाद।

पतीक- बीहश्र कि (अपन गप, अपन कहब रेवाज पड़ौआ टकटकी श्रायंणि गहना डोथ्रग टेस्ट थ्रश्रामय सेजौट परमेशर पजेबा सफाई थ्रश्रायम मुश्रश्रयैती लक्ष्म कौनचर आत्मानुभूश्रा जनवाणी चश्मा उपहार काट ओकाश्रा जीवन चक रकक्क जमाना श्रामि आरथ्रक्त नवयुग अवाक श्रालसा खानदानी कुि इया दानक बौस्त जुनुन थ्रजेता हश्रयर बती- लाल बती लगाम देखाउँस मा थ्रजातीय स्मर प आ संभावना थ्रकल्म रीलीफ श्रानगी सेवक टवेन्टी-टवेन्टी नेओं बहुराष्टीय कम्पनी थ्रशासघात अन्तर-आत्मा कमरश्रासा त्लोबल वाश्रांि सरकारी दलाल श्रामया जरए सगर राश्रा भावना तंमिल बेरपर थ्रयाद गाती श्राढ़नी अगुआ साढ़े एकैसम सदी दुनू जना एकै िना राश्रा सकि-िप श्रावेश नपना उत्तिर देश-भश्रक्त भूख डेग देह, मोन आ पेम)

अपन गप

त्वहला कथा संसार

अद कासिँ िति आत्व रहि अति कहबाक पत्वपाटी। कहबाक िि समाद होइ ि। मुदा ओ क्लीक सूिना माता होइि। कहबाक बेगरताक मूिमे यत्व कथ्म वा कथानक हुअए। कहबाक िि समादक त्वस्तार हुअए ओ कोनो फिकिपर त्वस्तार िऽ कहऽ बिाक पूमित्वािरकुँ संपेत्वत करए, सएह कथाक नाम पबैि। कथा एक िाकसँ दोसरा िाक धत्व एक पीढीसँ दोसरा पीढी धत्व मतीक र पे हस्तान्तत्वत होइत रहि। से तत्वया भेि जत्वया तीिबाक जनतब वा सरंजामक अभाव िि।

कथा ििनक पारम्भमे कथ्मके सोझा-सोझी राति देि जाइत िि। ओकर मूि बातके बढा-िढा पस्तुत कएि जाइत िि, मुदा हुबहु। जेना पत्वने मतीक हि तकरे पत्वार प। ई पत्वार प समायन्तरे कत्वक स्तरपर पत्ववत्वा होइत रहि। कथाक िि अंगेजीमे स्टोरी शथ्द अति। आगू एकरा गढबाक पत्वया आ पिात्व मढबाक पत्वया शुर भेि, जे शैिीक र पे सोझा आएि। फेर त्वकासक कमे एकरा अत्वािरिमे एकटा औसत सीमामे बान्हि जाए िगि, ओहो कथा रहि मुदा अंगेजी शथ्द पत्ववतम कऽ नाम फत्वािएि शॉटमस्टोरी।

मैत्थििी सत्वत अन्यान्यो भाषामे शॉटमस्टोरीक शात्वक अथमिघुकथा कत्व पारम्भ भेि िाट-िाट कथा रिना। आ ओइ िघुकथाक िाट आकारके सेहो िघुकथाक नामे तीिि आ पकात्वात कएि जाए िगि। आब िाकके व्यस्ततामे ई िाट-िाट कथा सोहाए िगि। आ पाठकीय उत्साह रिनाकार मनोबि बढबैत आत्मत्वशासके दूना केिक। पत्वािम स्मर प धुरझार तीिाए िगि अत्वािघुकथा।

'िघुकथा' अति त्वन्दी भाषासँ िि गेि शॉटमस्टोरीक उधारी शथ्दकोषीय अनुवाद। तकर कारि रहि-पत्वि, एकटा नव त्वधा देती ते मैत्थििी रिनाकार सब देिाउँसे तीिऽ िगि िाट अकारक कथा। दोसर, जेना त्वन्दी सात्वत्य िािन अंगेजी सात्वत्यसँ पभात्वत हेबाक संकटसँ उबत्व नै पबैए तत्वना मैत्थििी सात्वत्य रिना, त्वदेह मैत्थििी सात्वत्य आन्दोिसँ पत्वने, बहुत िि धत्व (पूिसः नै) त्वन्दी सात्वत्य िािनसँ आचित्वत िि। ते मैत्थििी रिनाकारके कििनो एकर मैत्थििी शथ्द जेना त्वन्दीक 'कहानी' मैत्थििमे 'कथा' अति, (त्वन्दीयोमे ठाम ठीम स्टोरीके 'कथा' शथ्दे पयुक्त देिि जाइए) से नै फुराएि हेतत्व। ते ओ अपने अत्वािघुकथाके तीित रहिाह िघुकथा। ईहो सोिि आना सत्य अति जे ई नव त्वधा जहन मैत्थििमे हस्तान्तत्वत भेि

तिन सनातनीये अल्पाघि घु आकार-माताक कथा िि । एकर विकसित रूप तँ बीसम सदीक अन्तिम दशकमे देखिए लगल। जहन कि तकनीकी विकास वा व्यावसायिक विकासँ लीिगल एवं वैज्ञानिक पल्लवतामसँ पभावित नवका छिकक नव सोच विकसित भेल।
अइ विधाक स्वतंत्र रूपक फलक ैट भेलिक पछिला बेगरता भेल ऐ विधा लि अपन माटि-पानीसँ जुड़ल, अपन भावक शब्दक। "विहनि कथा" विहनि अथात् बीआ। हम एकरा मैथिलीक स्वतंत्र नामे आगू बढेबाक पयास १९९५ ई. मे मैथिली मासिक "विदेह" (सहयाती पकाशन, िहना, मधुबनी) दारा केने रही। वषम १९९५ मे 'सहयाती मंच' िहना, मधुबनीक सालगिरहक विमशमपस्ताव रखल गेल। जकरा हुलसैत सहृदये मैथिलीक कवि, कथाकार शी राज दारा समथम कएल गेल। उपस्थित सम जन समवेते स्वीकार कएलन्हि। उपस्थित जन िहि- शी शैलेन्द्र आनन्द, भवनाथ भवन, कुमार राहुल, विजयानन्द हीरा, सच्चिदानन्द सच्चू एवं अन्यान्य।
विहनि कथा (सीडि स्टोरी), बीज कथा; स्वयंमे कथाक पूणमरूप अछि विहनि कथा। ई ने छोट अकारक कथा छी, आ ने कोनो कथाक छोट। सामान्यतया कथा कतेको बिन्दुके छुबैत बिरड़ो जका उधियाइत पाठकके अपन उदेश्य कहबामे सक्षम भऽ पबैए। मुदा विहनि कथा माने बीज कथा स्वयंमे संपूणकथा अछि। जे पाठकके एक मात अपने ि टापर ि टेसल सन राखि अपन उदेश्यक पूतिाके एक कममे विकल िकीय मनस्थितिाके फलाि दैए। आ पाठक ओइ सोचके हुबहु मगजमे समा स्थिर भऽ जाइए।
विहनि कथा एकटा बीया सन छोट की पैघ संपूणगाछ हेबाक सामथ्यमरखैए। तहिना विहनि कथा आकारे घि घु होइतो कथाक सभ पक्ष, कथ्य, शिल्पके एक िास बिन्दुपर समेटि कथाक संपूतिा पदशि त करबामे सक्षम अछि। जेना बीया पारबाक पछिला अँकुराइए, फेर दुपलिया सन देखाइत एकटा गाछक रूपमे अपन संपूतिा पबैए तहिना विहनि कथा भूमिका, कथ्यक स्पष्टीकरण संग सोदेश्ये गढल आ मढल जाइए आ िकक समस्त विचारके छोट आकारमे सोदेश्यपूणबना उजागर करबामे सक्षम होइए। जेना कोनो बीया अंकुरा कऽ गाछ सभ पक यथा ि ल, पात आदिसँ युक्त होइत एकटा ठुठ गाछ मात नै। तहिना विहनि कथा समस्त गुण भरल-पूरल कथा छी। एहेन कथा नै जे दृष्टात मात भऽ ठमकि जाए। एहेन कथा नै जकर कोनो ओर-िाड़ नै हुअए। विहनि कथा एहनो कथा नै अछि जकरा पूरा पढलाक पछिला िकक िन उदेश्य बुझबाक लि कात-करोट मुलयारी देबऽ पड़ए। एकर उदेश्य सोझा सोझी फलाि एल होइत।
विहनि कथा घि घु अकारे शुरू भेल। आइ ई घि घुकायमे ओइ घि घुकथाक एकटा विकसित रूप अछि जे संभवतः मैथिलीमे बीसम सदीक अन्तिम दशकमे अपन स्वतंत्र रूपक वा विधाक फलक ैट करबामे सक्षम भऽ सकल। विहनि कथाक संपूतिाके ऐ तरहेँ कहल जा सकैए- विहनि कथा कथाक संपूणगुणक संग ओइसँ ऊपर उठि, अपन घि घुकायमे समेटल एक लाक्षणिक बिन्दुपर ठाढ भेल िकक उदेश्यक पूतिामकरबाक संग पाठकक मगजक भरपूर ि राक अछि।
विहनि कथा २१म सदीमे रचनाकार, सम्पादक संग-संग पाठकक बीच सेहो फलाि एल अछि। तकरे कारण अछि जे आब विहनि कथा छोट गातमे अपन सभ संपूतिा नेने कागजपर उतरि सोझा अबैए। आबक समयमे दृष्टि विहीन नै, दृष्टि सम्पन्न रचनाकार सभ अइ विधाक विकासमे लागल छथि। ते ई आब नहिये ि टुका कहाइए आ नहिये कथाक छोट वा दृष्टात। हम पुनः ई स्पष्ट करैत कहब जे- विहनि कथा ठोस कथ्य, माजल शिल्पमे कोनो विषयपर वर्णित ओ वस्तु स्थितिक जे पाठकक मन-मस्तिष्कपर छोट कऽ ओकरा सम्मोहित

कऽ तीरकालीक िपि िलऽ सकबामे सामथ्र्यवान होइए। लघुकथा कथा, मात गुदगुदी करैबला वा िुटी कालऽ लसलबसी दैबला वस्तु नै रहल गेल आब। ई रचनाकार आ पाठकक मोनमे समान्तर भऽ जाइ बाला कथा थीक।

आजुक व्यस्त जीवन मध्य िलकके कनिो ओतेक पालिला नै भऽ पबै ि जे ओ आब घंटा-घंटा भरि बैसकी िगा एके रचना पढ़ मोनके सान्त्वना देत। कि-कि बदलैत परिस्थितिला, बदलैत िब-िटा आ तइ हेतु अत्याकसँ अत्याक अथर्क जोगार मध्य करैत जाइि िलकक ल्मानगी। आजुक िलकके मीडीयासँ कि-कि नव आ रोमान्चीत करएबला िलराक भेलऽ जाइत अिल ते साहित्यक पत्ता बहुत रचीत नै बाबि स्वाभावीक अिल। ओना आइयो उपन्यासके िूब पढि जाइि। मुदा ओकरा आम पाठक मातक िलराक नै कहल सकै ि। ते रचनाकारके सेहो आब सम्हलिे कऽ सशक्त आ अल्प पालिलाक बीि सामंजस्य बैसाबऽ बला रचना करब आवश्यक अिल। रचनाकार, लवशेष कऽ लघुकथा कथाकारक ई पहलि दालयत्व बनैए जे ओ समयक संग िलि पाठकक समय संग भेि व्यस्तताके देिी ओज आ सरि भावक रचनासँ लघुकथा कथा संसारमे योगदान सामथ्र्यमहात्मि करथु।

पाठकक आजुक कि-कि बदलैत परिस्थितिला मध्य लघुकथा कथाकारो लाबैत ल्थि। तँ ओ यलद आजुक बेहािि अथमतंत, मशीनी युगक मध्य िलकक मशीन सन हएब परिस्थितिलाके गलाया कऽ पकड़थु। आ अही परिस्थितिलाके पाठकक सोझा परसि कऽ पाठकके मजगूती देबामे अपनाके सक्षम करबाक शलक्त अभ्यास कऽ रचनारत रहथु। तहन लघुकथा कथा, लघुकथा कथाकार आ पाठकक मध्य सामंजस्य बैसल पाओत। पाठकक प्रत्येक कलि व्यस्तता, लकि नव करबाक सनक, अथोपाजमक पािि भगैत रहिासँ उपजि तनावसँ मुलक्तक साधन सेहो अिल लघुकथा कथा। पाठक जलन सभसँ लवािग अल्पावलधक िि ििि भेटि समयक उपयोग करऽ िाहैए तँ ओकर संग देबामे सक्षम अिल लघुकथा कथा। ऐ सभ बेगरता पूत्तमकरबामे सक्षम लघुकथा कथा अपन फराक जगह िकबामे सक्षम भेि अिल।

आब लघुकथा कथाकार जलन समय संग िलि पाठकक मनोलस्थतिलाक अनुकूि रचना देबामे सामथ्र्यवान ल्थि। ओ अपन पहलि दालयत्व पाठकक मोनके भावि तदनुकूि रचनासँ पाठकके बन्हवामे सक्षम भेि ल्थि। तहन बेगरता उठै ि एकर मूल्याकनक। वतमानमे एहेन कोनो दृलष्ट फलचि समीक्षक वा समालोिक देिार भऽ ऐ लवदापर काज करबामे सक्षम नै भऽ पािह अिल। तकर ठोस कारि अिल बदलैत समय आ परिस्थितिला मध्य ओहने सोिक सामंजस्य। जे स्थालपत समीक्षक ल्थि से दू तीन दशक पालिलाक नजलरये रचनाके देिबाक पयास करताह। हुनका ऐ मे भऽ सकैए लकि नै देिाइन। कारि जे ओ सभ कथाक जइ मूिके देिैत भोगैत एिाह अिल लघुकथा कथा ओइसँ ऊपरक सोि आ फराक शैिीमे अिल। एकर सत्य आ पूिमगात तलहया फलिाएि जलहया मठाधीश समीक्षक सबहक सोि ओइ कथा, ओकर पािीन िलत मध्य सलहया बैसल गेि। समाजक एकटा समस्या मँहगाइ उदाहरि स्वरूप सनातनी आ िीरायु अिल। ई कलहयो िल्म होइबला िीज नै अिल। मुदा तैयो एकर िलत आ िहरा सीढी दर सीढी बदलैत रहैए। आ ओइ संग ओइ मँहगाइक पलाफि सेहो ओलहना बदलैत नजलर अबैए। यथा यातीजीक कलवतामे वलिमत मँहगाइ साहित्यमे िलिमत अिल। आइ ओहेन कोनो नव ठोस रचना मँहगाइपर नै अिल। तलहया िलक भूि मरैत िि, पेट कालऽ कऽ लाबैत िि। गदैिी ओलढ़ सदी कटै िि। आजुक मँहगाइ मध्य लकयो भूि नै मरैए। आ सामान्यो वगमक िलक कम्मि ओलढ़ आ हीटर जरा सदी लवतबैए। की ई फकमसनातनी समीक्षक फलिबामे सफि भऽ सकताह?

वकनहुँ नै। वकएक तँ अइ बदलि त्यस्थितपर ध्यान देबाक पछिला कहा लिा। ओ तँ पत्लाका करै छथि रचनाकारके जुएबाक, रचना लिहे कीजजा रहल जाउन।
कथासँ जुड़ल लिक लघुकथा कथा मादे लचार कऽ सकैत छिह। मुदा हुनकर सभक दृष्टि 'लघुकथा कथा'क पत्ला फलचि नै लिा, उदाहरणतः रंगकमी कुणाल, जे नाटकक संभ्रान्त, पलपक्ष जाता छथि ओहो कथापर कीलबा कालि लघुकथा कथाके अलस्तत्वहीन कहल बेरा दै छथि। मायानन्द लाश मैथिली कथा धाराक मजगूत स्तम्भ छथि, ओ लघुकथा (लघुकथा कथा)के ठुटुकाक संजा देलिा। माया बाबूक सोलि समीलीन अछि वकएक तँ ओ जइ दशकक सोकि लिक छथि तइमे लघुकथा (लघुकथा कथा) लदा फरील नै छलि। ते हुनको ऐ पत्ला दृष्टि फरील नै हएब स्वाभालवक। ओ कथा लवकासक आलिमे लघुकथा (लघुकथा कथा)क लि केलिह सएह बहुत अछि। [मैथिली कथाक लवकास नामक आलि, साहित्य अकादमी लदल्ली सँ पकालशत पोथी - 'मैथिली कथाक लवकास'- सं वासुकी नाथ झा, २००३].
लघुकथा कथा वा कथाकारक मूल्यांकन हेतु लघुकथा कथाकार स्वयं ऐ लदशामे कान्ह उठाबथि तँ सही मूल्यांकन संभव भऽ पाओत। मैथिली समीक्षाक एकटा कमजोर तत्व ईहो रहल जे ओ रचनात्मक दृष्टि ये सड़क लिप होइत छथि। फललबाक ई जे ओ अपन गुणगान माता सुनऽ लिहै छथि। आलोचनामे कमी नै वाह वाही हेबाक लिही। जँ समीक्षक दारा हुनकर रचनात्मक दोष वा कमीके उघाल सभक सोझा कऽ देल गेल तँ समीक्षक भऽ गेलि हुनक कटर दुश्मन। आ तकर पछिला हुनका, रचनाकारक मुँहे, अजानी, उदर्ण, स्वार्थी आलद संजासँ जानए लिगब। ईहो सोलि आना सत्य अछि जे मैथिली समीक्षामे वकछु गोटे कृत्लत्वसँ पलहने व्यक्लत्तत्वके पाथलमकता दऽ समीक्षा कीलि रइल छथि। तँ जा धलर रचनाकारमे आलोचनात्मक लचार वा कमी सहबाक सामर्थ्यमनै हएत, स्वस्थ्य आलोचना कतऽ सँ टुंग पसाल सकत वा अपन बैसकीपर बैसल अराम कऽ सकत? ओहने वकछु रचनाकार सभ दारा समीक्षाके ओलि सधेबाक सूतक रूप सेहो ठाम-ठीम पयुक्त होइत देलिइत रहल अछि।
आजुक लघुकथा कथा पलहने लहन्दी भाषासँ उधारी लेल शब्द 'लघुकथा' नामे कीलिइत रहल। अलन धलरक मलीक जनतब अनुसारे लघुकथा शब्द पयोगे पलि पलहल कथा १९६८ मे लमलथलि लमलहर मे कालि कुमार दास कीलीत 'बुल्हबक वर' छलि। अइसँ पलहने लिट कथा, कटपीस कथा, लमनी कथा, वकलर कथा........आलद नामे ई पैत रहल छलि। एकर पछिला जे रचनाकार लघुकथा कथामे सल्कय भेलि ओ नाम अछि- लॉ हंसराज, ए. सी. दीपक, तकर पछिला कीलि रे, राजमोहन झा, एम. मलीकान्त, अमरनाथ, रामलोचन ठाकुर आलद। अइ नाममे सँ बेशी गोटे लघुकथा कथा कीलबाक पयोगधलमसा मातक लावहन केलिा। हँ एम. मलीकान्त लमलथलि लमलहरक माध्यमे कतेको वषमधलर लघुकथा कथा लिनक लायलातता बनने रहलि। मुदा दुःद वा हास्यास्पद बात ई जे वतमानमे हुनक एको टा रचना उपलब्ध नै अछि। लि. हंसराज जी क मैथिलीक पलहल लघुकथा कथा संगह 'जे की ने से' (पकालशत १९७२ ई.) मैथिली लघुकथा कथा पेटारक पलहल सनेस कहल जा सकैए। ऐमे हास्य व्यंग्यसँ भरल लघुकायक कुल ३५ गोट लघुकथा कथा संगलहत अछि। पनापर अंलकत वषक अधारे एकर सभ रचना १९६३ सँ १९७२ मध्य कीलल रचना अछि। एकर कथा सभ तत्कालीन राजनैलतक सामालजक कुव्यवस्थापर लिट करैत कीलल गेल अछि। वकछु रचना आइयो पासंलगक अछि। हंसराज लललखत रूपसँ लघुकथा कथा आन्दोलनक बीया बाउग केलिा आ ते आइ लघुकथा कथाक गाछ झमटगर होइत देलिइए।

लकिए वषमपिला लनकर अलाि पीढीक शी अमरनाथ अपन 'कलीका' लहला कथा संगह पस्तुत केलिह (वषम१९७५ ई. पुनपकाशन २०११ ई.) आ एकरा एक सीढी आओर ऊपर िऽ जेबाक ठोस पयास केलिा। ऐ संगहक कथा सभ िििि लािनिक कथाक िगीि बुझाइए आ सभ लन्दुके िबैत रिना कएि गेि बुझाइए। एकर अलाकाश रिना आइयोक समयसँ मेिि िइत बुझाइए। मुदा िििकसँ दूरभालक वातािपक अनुसार राजहंस जका लनको कोनो रिना तत्कािीन पलाकामे पकालात नै भऽ सोझे संगलत अिी। वषम१९७५ लहला कथाक स्वर्णिम शुरआत वषमक रपमे देिार भेि बुझाइए जिन 'लालिा लालर' (पालक) अपन लहला कथा लशेषाक (िघु कथा लशेषाक नामसँ) लाकािि मोकाम तँ नै मुदा बाट अवश्ये देिार केिक। ई साहलक काज भेि कलक दारा ऐ नव लधाक िि। लालि लालरक अइ लशेषाकक समय सम्पादक िििह आदरिीय भीमनाथ झा। ओना तँ 'अन्हरीक गाए लबयेि तँ सभ िबा िऽ कऽ दड़ि' बि कहावत िलताथमहोइत देिाएि। फेर २३ बििमबीला गेि। िएर! बाझ गाए गालान तँ भेबे कएि.....। कथानकक नधनक सुनर पकलह रििाहार शी लभूला आनन्द जी जेबी पलाका 'कुश' क नवम अंक वषम १९७८ मे पलाकाक गातक अनुसार िओ गोट लहला कथाक समावेश कऽ लाकाििला लहला कथा लशेषाक (िघुकथाक लशेषाक नामसँ)। अही वषम१९७८ जुिइमे सालहत्य अकादमी, लदलिी दारा कथापर आयोलत सेलानारमे पलििित कथाकार शी रामदेव झा, कथापर पसंगे लहला (िघु) कथाके शालाि कऽ एक अनुच्िेद िीिि एकर लवलाषता जतने िििह। जइमे लहला (िघु) कथाक वैलाक पटिपर िििि लािनिक िि आ तुिना एवं मैलािी लहला (िघु) कथाकार मे सँ अमरनाथ जीक योगदानक िि कएने िििह।

आठम दशक लहला कथाक संगोरसँ वंिित रहि। मुदा ई लहला कथा िीििाहारक एक टा पैघ हेज तैयार केिक, जइमे पमुि नाम अिी- लभूला आनन्द, शैिन्द आनन्द, शीराज, पेमकान्त झा, वैकुण्ठ झा, देवशंकर नवीन, पदीप लहारी, ताराििन्द लयोगी, िििशर िि आलद। ई समूह रिनाक दृलाये नव आँिि पालबि िि। साम्यवादी लिारसँ पभालवत मुदा आपत कािक दुदशासँ पेलत आ पीलहत। लहला कथाक पलहि संगह १९७२ मे बहराएि दोसर १९७५ ई. मे आ तकर पिला अकािि! लकएक? २२ वषमक एहेन िििपिन लहला कथाक इलाहासके ठमक जेबाक िि बाध्य केिक। एकर बाधक िििह तत्कािीन संपादक, सरकारी आ लाजी सलाला-संस्था आ पकाशक। मुदा तहूँसँ बेशी लामेवार ऐ पीढीक रििाकार िि जे अपनाके दुनू लधापर कमि िि भरमा ििला वा गदक ऐ पकारक उत्सर ित देिि िल कऽ अपनाके कलाया ििला। अइ पीढीक कलापय रििाकार ऐ लहला कथा लधाक राला नवका रििाकार सभके पकड़ा लालान्त भऽ सुस्ताए िगिह। कारि िि जे एकर फलिाएि रप मध्य अपन अलस्तत्व वा कोनो िभक जोगार वा पलाला नै नजलर एिला। अही बीि आएि तन्तनाथ झा समग, ओइमे सेहो लकि लहला कथा संकिीत अिी।

मैलािी सालहत्यक लारात मध्य लहलाकथाक पसंस्कृत बीया नव रपे बाउग केिला अइ पीढीक नवतुलया। जइमे नाम िि ज्योला सुनीत िधरी, दुगानन्द मंिि, कलिशर राउत, धीरेन्द कुमार, राजदेव मंिि, बेिन ठाकुर, राम पवेश मंिि, भारत भूषि झा, मानेशर मनुज, उमेश मििि, जगदीश पसाद मििि (बाि लहला कथा संग लकि सुन्दर लहला कथा जेना थिकमि-/ घरिीह/ ििताििसरा-/ सबूत/ कआक मैनजन), रामकृषि मििि िटू'', परमेशर कापलह, रघुनाथ मुलिया, ऋलव वलाष, लाव कुमार झा ''लटलू'', लालिशि कुमार झा, सत्येन्द कुमार झा, नवनीत कुमार झा, कशिि कुमार, अनमोि झा, कुमार मनोज कश्यप, लवनीत

उत्पि, धनाकर ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, सतीश िन्द झा, गजेन्द्र ठाकुर, भवनाथ भवन, राम वािस साहु, मुन्नी कामत, शंभु कुमार सांह, संजय कुमार मंि, लाल्याश मंि, िकमी दास, अलात लाश, जगदानन्द झा 'मनु', िन्दन झा, ओमपकाश झा, सन्दीप कुमार साफी, जवाहर िि कश्यप, लालहर झा, रामदेव पसाद मणि झार दार, पेमिन्द्र पंकज, अिश मंि, अमिन्दु शेिर पाठक, मधुकर भारदाज, शीधरम, देवेन्द्र झा, सत्यदानन्द सच्ु, लाल्याश कुमार झा, कुमार राहुि, लदीप कुमार झा ''ूिटन'', मुनाजी आलदक। ऐ पीढ़क समूह दारा लहलाकथा पर धुरझार काज भेि। अइ ठामसँ असिी फलि भेि लहला कथाक। आ लन्दीक उधारी शब्द िघुकथा सँ लिग िटी शब्द- लहलाकथा स्थालत भेि।
बीसम सदीक अलाम दशकक पल्ह काज भेि स्व. ए. सी. दीपक जी दारा 'लवध लहला (िघु) कथा लशेषाक (मािम१९९४ मे)। तकरा पिला नवका पीढी सेहो कान्हपर वीरा उठेिक आ शुर भेि वैलाक बदिि सामालक पलदृश्य, तकनीकीय भेि नव-नव कालासक संग जनमि नव अवधरिक संग लहला कथा िि नव-नव काज।
१९७५ ई.मे आएि 'कलीका' क दू दशक बाद १९९५ ई. के लहला कथाक स्मृलवषमकल सकैत िी। २० फरवरी १९९५ के मुनाजी एवं मियनाथक संयोजनमे हटाढ रपिी, मधुबनीमे आयोलत भेि लहला कथा गोषी, जकर अध्यक्ता केिला पं यन्ताथ लाश आ एकर मंि संिािन कुमार राहुि दारा भेि। ऐ अवसरपर उपलस्थत लहला कथा पाठ केलाहार िि- भवनाथ भवन, मियाथ मणिन, पेमिन्द्र पंकज, मुनाजी, शैिन्द्र आनन्द, पभु कुमार मंि, मलानाथ लाश, उमाशंकर पाठक, श्यामािन्द्र ठाकुर, कुमार राहुि, मीरा कि्िन पसाद, सुनीि कि्सलदानन्द सच्ु एवं करजी। पढि गेि रिना सभपर समीकीय लपणीकार िि- शैिन्द्र आनन्द, मुनाजी, भवनाथ भवन एवं पेमिन्द्र पंकज। हमरा जनतबे लहला कथाक ई पल्ह गोषी िि। ५ मािम१९९५ के सहयाती मंि िहना, मधुबनी दारा मुनाजीक लहला कथा 'नामरद' क एकि पाठ आ अइ पर 'बहस' क आयोजन कएि गेि। अइमे पमुि लिरक िि- शीराज, शैिन्द्र आनन्द, लजयानन्द हीरा, भवनाथ भवन एवं पेमिन्द्र पंकज। हमरा जनतबे लहला कथा आ कथाकारपर एहेन 'बहस' केर ई पल्ह आयोजन िि। जुिइ १९९५ मे कानपुर सँ बहराइत नवतुलया तैमालसक पलाकाक लहला कथा लशेषाक आएि, संपादक िि- पेमकान्त झा एवं वैकुण्ठ झा। अइमे १९ गोटेक कुि १९ गोट लहला कथाक समायोजन िि, आ अइ लहला कथा लधाक फलि कऽ एकरा नव लशा देिबाक पयास करैत मुनाजीक आिि अिी, जे लक कोनो लहला कथा लशेषाकमे ऐ तरहक पल्ह आिि ल्यक। अही दशकमे पारम्भ भेि कथा गोषी सेहो लहला कथाक बाट बनेबा वा फलिबामे उत्पेरकक काज करैत रहि। कथा गोषीक जुिइ १९९७ क मलषीक आयोजनमे एके संग दु गोट पोथीक िकापि भेि, 'िि-िि लानगी' (पदीप लहारी) आ 'लािि' (तारानन्द लयोगी, जइमे कुि ३५ गोट रिना संकलित भेि अिी)।
२१म सदीमे समय आ पललस्थलाके अकानैत सभ रिनाकार िी कऽ लहलाकथा लस जुमि िल्य। पलाकाक संपादक सभ लक कोना अइ िि समलस करऽ िगिह। अइ नव सदीक नव सोिक पल्ह लहला कथा संगह आयि- 'बुझनूक' (२००२ ई.), एकर रिनाकार शी वैकुण्ठ झा जी अपन ३६ गोट रिना िऽ ऐ लधाके बाट देिबाक ठोस पयास केिलह। एकर बाद तँ संगहक झड़ी िला गेि बुझू। अला संगोर लन्दी मैल्थीक संयुक्त रिनाकार लहलाक कथाक लशावाहक शी देवेशंकर नवीन जी अपना कथा

संगह-‘हाथी ि िय बजार’ (२००४ ई. मे ३१ गोट ववहला कथाक संगोर) संग उपलसथतत दजमकर ि ला। तँ २००५ ई. मे पुरान सोकि ठोस कथाकार शी मनमोहन झा जी अपन ववहला कथाक संगोर, ललत्याकि लाशापुर मे’ आला एकरा एक ि ग आओर आगा बढेबाक पयास कएि ला। एकर आमुि मे शी ववजय लाश जी एकरा गद काव्यक संजा देि ला अवि। वास्तववत र पे तँ गद काव्य, काव्यक गदात्मक शैिी त्यक। ईहो सत्य अवि जे ववहला कथा गद रवह कववताक पूिसः ि गीि मानि जाइए। मुदा अइमे संकवित २४ गोट र ि ना ववहला कथे त्यक, आन वकि नै। वषम२००७ मे “अहीके कहै ि ी” (सत्येन्द कुमार झाक ५१ गोट ववहला कथाक संगह) आएि। ई संगह ववहला कथाक पवत पूि मिसोझराएि आ दृवत फरीि र ि ना सबहक संगोर त्यक। युवा पीढीक बहुववध, पवतभा संपन ि ि क ओ संपादक शी गजेन्द ठाकुर अपन र ि ना समग- कुरुक्षेत्रम् अन्तमनक- मे ि घुकथाक संग १६ गोट ठोस आ कथ्य ओ ववलयगते फववि एि ववहला कथा आला ववहलाकथा संसारमे शीवृवद केि ला अवि। अि न धवि एक वीि ि ित ववहला कथाक वीि सँ हँवट २०१० ई. मे शी जगदीश मणि ि जी सभसँ इतर बाि मनोवैजालाक ववहला कथा संगह ‘तरेगन’ क संग आन र ि नाकार के सम्मोवहत केि ला। २१ म सदीक पवहि दशकक अवलाम ि रि मे मैवथिी ई पवत्रक ‘ववदेह’ अइ ववहला कथाक नव इवलाहास वीि बा वा बनेबामे अगिी मानि जाएत। अपन ६७म अंक ववहला कथा समायोजनमे देशी आ ववदेशी ठोस र ि नाक संगोर, एवं अइ ववहला कथाक शास्त्रीय वववेि न कऽ अएना स्वर प झि का एकर बाटके मोकामक ि गीि अनबामे ई पूिसः सफि भेि अवि। अइ अंकमे कुि ३२ र ि नाकारक ७९ गोट र ि ना अइ ववधाके पूिसः फववि, सभक सोझा अनबामे स पवतशत सक्षम भऽ देि ार भेि अवि। संपादकक अिि बे एकर सफि ताक शेय ि वह अइ अंकक अवलाथ्य संपादक-मुनाजीके। मुनाजी जी बि गम्भीरता पूवमक सभक समायोजन एवं अपन आिि दोसरो र ि ननात्मक पकृवतके फववि बाक सफि पयास केि ला अवि।

ि गभग दू दशकसँ अइ ववधामे र ि नात्मक उपलसथतत दजमकरबैत रहि ह, आ पवि ाम “समय साकी त्यक” २०११ मे आएि, ई संगह शी अनमोि झा जीक कुि १५० र ि नाक अपन ववनगीक भोगि यथाथक अएना त्यक। २०१२ मे “टेकि जी” (अनमोि झा) एवं “टीस” (ललत्याि शि झा) संगह सेहो ववहला कथाक बि ारी भरबामे समथमबुझना जाइि। अनमोि जीक १४९ र ि नाक संगह सनातनी यथाथमपरसैए। ततै ललत्याि शि झा जीक ‘टीस’ क ४५ गोट र ि ना पाठकक मानवसकताके झंकृत करैए। जे वक ववहला कथाक थाती वा धराउ सदृश अनुभव करैए।

१० ववसम्बर २०११के ‘सगर राला दीप जरय’क ७५म कथा गोषीक आयोजन पटनामे कएि गेि, ऐ अवसरपर मुनाजी दारा मैवथिीक पवहि ववहला कथा पोस्टर पदशमनी कएि गेि ि ि।

ऐ तरहें ववहला कथा संसारक पवदृश्य पूिसः भरि पूरि भऽ गेि अवि। आइ सभ वदन वकयो ने वकयो स्वाभाववक र पे जुवड अपन योगदान दैत एकरा मोकामक डयोवढपर आला पट ि ि बाक पवलाजामे ठाढ देि ाइत ि वथ। मोकाम भेवट गेि तँ घर पैसैमे समय नै ि गतै।

-- मुनाजी

रेवाज

र क....।

ऊँक नै िगा सकै िँतो।

रामरीत पासवानक मुइािक पिता, भल गामक िक ओकर अंगनासँ दुरा धल सोहरि िि। लधवाके सात्वना देबाक िि।

मुदा ओकर लयादवादके िगि कठाइन।

दरअसि मात्क मुतारक ई भीड़ तँ जुटि रहै बजरंगीक सहयोगमे। बजरंगी, रामरीतक िट भाए, मात्क-मुक्तारक पाि िटुआ आ अिनुक वािमसदस्य।

ओ भैयारी लाभेबाक नै, घराड़ी हड़पबाक फेरमे िि, लकएक तँ रामरीतके बेटा नै िि।

ओकर नजल रहै रामरीतक िः कटा घरारी पर, ते सभके जुटा िने िि, गवाहक रपमे, भलष्यक िि।

आ िहास उठेबासँ पलने फरमान सुना दुेने िि- आला जे देतै आ शाद जे करतै, घरारीक अत्काकारी तँ उएह ने हेतै।

समवेत स्गीकृलाये मुड़ी िििि िि- हँ...।

िि-िि िहास उठबै जाउ, बेशी लिम्ब नीक नै।

बजरंगी, कोहा उठाबऽ।

-नै, लकनहुँ नै। लधवाक आकोशक स्वरके सुला सभ शात भऽ गेि।

मंजुि, कोहा उठा आ आला ि। अपन लताक हृदयक एक मात टुकड़ी अलि ओ। आला उएह देत।

ठीक ि, िि...।

मुिला हमही देब लता हमर ित्य, हुनक अंश हम िि, बजरंगी कका तँ हुनक सम्बान्धी मात िथ्न।

ईह... जेना रामरीतक बेटा रहथ्न, अत्काकार जताबऽ एिहे। दबि स्वर भीड़क बीिमे सँ सुनाएि।

बेटा नै िि ते लक, हम तँ हुनके रक्तबीजक पदापिि िि। ओ लापुत ित्य, मुदा लाःसंतान नै।

आइ सँ अही रेवाजक शुरआत बुझू।

आ संग के देत?

लापुतराहा सभ।

पिक्का

सुयाि आ कैथलन भारतक याता पर जिन आएि तँ पलहि पवेश लात्याम्मे भेि। दरअसि मैत्याजन ओकर जानक रक्क लाद भेि रहथ्नि।

सत्य िि जे ओ जोड़ी पेमक समुन्दर मे िमकुलया कटैत लाथ्नला धल आब गेि िि। लकएक तँ ईसाई आ पारसी दू धमकि जोड़ाक पेम जममीक िि समुदायक लर द िि।

लात्यािि पवासक कममे ओ एतुका एकटा बआह स्थानीय रीलाये होइत देख्ब भाव लहि भऽ उठि। अलाला लन िहँगा िनरी आ शेरवानीमे सजि वर कलाया सभटा सुल्ब हेरा अपनाकेँ स्वागक वासी बुझ्ब आनन्दलभोर

भऽ मैत्थ्रि मन्हे एक दोसराक हेबाक शपथ िलिक।
जोड़ा बाल्म उठि, आह! हमर देश मानवक आ दानवक देश अछि, ऐठाम तँ सभ जन देव स्परप गैलि।
ओकरा एलिन धल्व आत्मथ्यक भान होइत रहि। एतुका सत्य नै जाला पने लिल जे एत लवजात्ताय लवआह
िओड़ा िओड़ीक पेमक सभसँ पैघ शउि बला ठाढ भेलि रहैलि।
लकि ए लदनक पलिला ओ जोड़ा मैत्थ्रि जनक मुलिश्वरीसँ हथकड़ीमे बन्हा गेलि।

टकटकी
बेरा बेरी िकिक जमा भेलि भीड़क सोझा ठेल्ह पाल्ह कऽ कानए ािगल िलि ओ िओड़ी। लकयो लकि पुलि तँ
उतारा नै दऽ सबहक लदस टुकुर-टुकुर तकैत रहैत िलि।
भीड़ बढैक जा रहल िलि.... मुदा सभ मूक दशक बनल।
लाशब्द भीड़मे सँ आब शब्द बहरेलि —“गै, ई कह, तोहर नाम ठेकान की िअ?”
-यऽ, िलि की करब नाम ठेकान बुझ्म?
-तोरा घर तक पहुँलि देब।
-यऽ, हमर नै आब लकयो सहारा बलि आ ने कोनो ठेकाना, हम तँ दंगा पील्हत लवाल्वरमे सँ भाला एलि अछि।
-लकए भगलिही अपन जान बलिबा िलि?
-नै यौ, अपन संपत्ता बलिबा िलि।
-आँय, तहन तो अपन गाम-घर जो ने अपन संपैतक रकाथम
-गाममु लकि कहा बालि अछि। जे लकि संपत्ता शेष अछि ओ तँ हमरे िग अछि आ तकरे बलिबा िलि तँ
गामसँ भगलि।
-'कत लकयो रक्क नै देलिएलि?'
-के पुरष रालित तोरा? जे रालित ओहो बदनाम भऽ जाएत।
ठठा कऽ हँसैत - यऽ, जँ पुरष सभकेँ बदनामीक कलाको िर होइतै तँ गामसँ परदेश धल्व हमर संपैतक
नोलि-नोलि नै ने कल्वतए?
भीड़ उलिह गेलि।

लायंतलि
माइकलि घर मे वात्वस अल्वते तीतराएलि िज सभ देलि तीत्काल उठलि- ओह गॉलि!
-दपदी, जकर सबहक लकरदानीक फलि लि ई तीन टा बचलि, ओकरे सभ िग अइ तीनोकेँ िल्ह कऽ आएलि
कर काज करबाक वास्ते। नै जाला कतेक दुरलि िला जनमओने हएत एतेक बचलि!
-िुप्प रहू मालिक, बहुत बजलि। हमर सबहक घरबलि एलिनो धल्व मुटीयेमे रलि लि हमरा सभकेँ। मालिकन
जका िटा हम सभ नै तीएे।
-गै, देलि िही अपना मलिकीनीकेँ एके टा बेटीमे पसन। इएह तँ फाट देलिबैए बड़कबा आ िलिट घरक बेटी-

पुत हमे।

-नै मालीक, दुनू घरक पुत ह, पुत ह जका नै रहै ि। अन्तर ि दुनूमे। िटकाक पुत ह जन्मा िि, आ बड़काक पुत ह ... िसा ि ि।

गहना

-दीदी पिम!

-पिम, पिम। केना ि?

-ठीक ि।

“मीअ, आब गेि मकीिूस”।, मौगीक समूहमे सँ स्वर बहराएि। पूरे गिक मगी सभ जहन एक ठाम जुटए, तहन अनुपस्थित मगी सभपर कएि गेि लनताय माते ओकर सबहक समयक कटना ि। अओर ई रेिकाजी तँ ओकर सबहक लट मीस्टमे ििह। उपस्थित मगी सभ समवेते एक दोसराक संग पुरैत कहए िगए- देीिय ने, भगवान पाइयक कोन कमी देने िथन? मुदा ओ ने कोनो िज िरीदैत िथ आ ने महग कपड़े िता पश्रै िि आ नै कोनो लकटी पाटी ज्वाइन करैत िथ। देश परदेश घुमबाक तँ नामे नै ित िि। आ अहा आइ धल हुनका कोनो गहना थकनैत देिि?

-हमर आन मािलकन सभ हमरा बड़ मीढ़बैए जे तोँ रेिका मािलकन लग कोना काज कऽ ित ि? ओ तँ मकीचूस िथ।

-पूरे कंजूस हम तँ िलड़ गेि रही िता मैमिसँ, नै भाभी?

-ओ तँ समयपर हमर दरमाहा िकता कऽ दैत िथ। अओर हमरा मानबो बडि करैत िथ, कलयो कोनो गितीपर मीलसयाइत नै िथ। व्यवहारमे बि उचि लिरक िथ हमर रेिका मािलकन।

-देि गुलइया, हमर वास्तवक गहना अिी एक बेटी आई.आई.टी. कानपुरमे, दोसर बेटा एम्स मे आ तेसर तँ संघ िक सेवा आयोगक अलयंति परीक्षा दऽ कऽ आवशस्त भऽ पलिमक पतीकारत अिी। हम सभ पाइ िगा रहि ि अपना तीनू संतानकेँ सवोचि पद पर बैसेबाक योग्य बनेबामे। ओकर ई ओहदा, उचि लाक्षा, संस्कार, व्यवहार अपन माये-बाप नै समाज आ देशक नाम जगलमयार करत। आ ति न हमर कोइि क ई तीनू मोती हमर सुन्दर गहना बला हमरा सुशोलत करत।

िलंग टेस्ट

चीत्कार!

-नै, नै, लेकन नै? नै मास्टरजी, हमरा नै िाही कोनो पदक। नै िाही बाप-पुरि ाक, देशक इज्जत। हम, आ माय-बाप, सर-समाज सभ कल्पना करैत िलौ जे पदक तालकामे हमर नाम सभसँ ऊपर आबए। मुदा कहा िि ककरो ऐ सत्यक पता जे अहा नशामे सुइया दऽ पदक िबासँ पहने इज्जत िऽ िबाक पयास करब। नै, हमरा नै िाही माय-बाप, सर-समाज, देशक इज्जत। हमर अपन इज्जत हमरे िग बाि रहए, ईएह लानगीक सभसँ पैघ पदक हएत।

-तोँ िलंग टेस्टमे फेि भऽ अपान आ देश दुनूक इज्जत लाि मि कऽ देमऽ।'

-हमरा ई मंजूर अि। मुदा अन्तरात्माकेँ ठेस नै पहुँचाएब गुर सँ इज्जत गमा कऽ।

लवलामय

मोन गम्भीर, िहरा उदास!

कतौसँ कथाक लस्थर नै भेिपर बेटी बिही बोझ सन िगैत िला। नै जाला कतको अनकटि गप्प सुला एिपर क्लक लाथ्य कऽ ित िाहि- जतए जेहने ललका भेटि हाथ धरा कऽ रहब ऐबेर।

मुदा जहन बेटीक लसरि ारीपर नजल जाला, तहन बेटाक समकक बेटीकेँ रि बाक सपना लनक तरेगन नहैत िगला। स्कूि धल पढेबासँ इंजीलायरी करेबा धल बेटा-बेटीमे तँ फकमनै केिा कलयो। तहन आब एकटा सहयोगी आ दोसर बोझ सन कोना भऽ सकैए।

-नै लकन नै, एहेन-ओहोन घर नै बआहब आ नै दब ललका करब, िाहे जतेक िमिकरए पड़ए।

-ऐँ य, एतेक िमि..। कतऽ सँ कऽ सकब?

-यै की कर ? ईएह सभ जाला बेटा-बेटीपर एके रंग िमिकऽ दुनूकेँ सुयोग्य बनेि। जे बेटा बुढारीक िाठी बला लतृत्रसँ उत्रि हेबाक िि जीवनक सहरि बला िित। आ बेटी... सेहो आत्मलाभर रहत। हम सभ एकरा सभकेँ आधुलाक समाजक अंग बनाबऽ िाहै िी। यथा - परम्परासँ दूर आधुलाक रहन-सहन, आधुलाक सोि माने थ्क दहेजमुक्त समाज, सुलालक्त पश्वार ... आल।

-मुदा ललकाबिा सभ से नै करऽ देमऽ िाहैए! मजबूर करैए परम्परे लावहताक िि।

-ऐँ य, ऐ बदित वैलाक पलवेशमे परम्पराक लावहता कोना कऽ सकब अहा?

-'बेटा लबआहक दहेजसँ बेटी लबआह संपन करा कऽ।'

(घर-बाहर जन. माि मि'१२)

सेजट

पालकस्तानक कूटनीलाक उठापटकसँ तस्त भारतकेँ िीन दारा अरिािि पदेशक अपन केत्मे घुसपैठीसँ भारतीय अलाकारीमे औनाा-पथारी शुर भऽ गेि। मंती सबहक बयानबाजी, पक-लपकक कुकुर कटाउज िित रहि। अमेलका सेहो िीनक सामलक शलक्तसँ िराइत रहि अि। मुदा ओकर टाग अड़क्ि कुिि सोझा आएि- िीन दारा भारतक कोनो लहस्सापर अलाकमि एक अनुलित दिदािजी मानि जाएत।

अमेरिका ऐ तरहेँ गोइठा सुनगा कऽ मुँह दोसर दिस घुमा लेलक। तीन ऐ मुद्दाकेँ गरमा, ऐ मुद्दाक गरमीपर लालबौंत भऽ सूतल गेल। भारतक प्रधानमंत्री कार्यालय, रक्षा मंत्रालय आ विदेश मंत्रालयमे उकस पाकस होइत रहल।

पत्रालय शून्य सन।

भारतीय अधिकारी तीनक दोसर कुलिकेँ अभ्यासैत प्रतीक्षारत रहल।

ऐ बेर तँ भऽ गेल। आब.......... कहिया कऽ कए देत........। कियो नै पीड़बला आन सँ रहऽ देबाक बाट।

परमेशर

करमान लागल लोकक बीच पंचैती शुरू भेल।

पहिल पुरुष पंच- अइ छौड़ा-छौड़ीके तँ भकसी झोका कऽ मारल जाए। छोड़ू नै। ई प्रेमक नामपर सगरो समाजके कलंकित केलक अछि।

दोसर पुरुष पंच- नै, एकरा ऐ पड़ुआ छौड़ासँ मुक्त करा बिआहल जाउ। कोनो लूल, नाङर, घेघाह वा कनाहसँ अपन कुकर्मक सजाए एतै भोगत ई।

महगी पंच- ऐ उढरी-ढररीसँ कोन गामक लोक बिआह करत? एकरा तँ तरहड़ा खूनल गाड़ल जाउ।

ऐ घोघाउजक बीच छौड़ीक कुहरल आवाज आएल- हम अहा सबहक पएर पकड़ै छी। हम उढरी नै छी। हम एकरासँ प्रेम करै छी। हमरा जे लगही से सजाए दिअ। मुदा हमरा सभके जानगी दिअ।

आ ओतए मुखिया जी ठाढ़ी माएके बजा कहलथिन्ह- तीअ, एकरा झोट पकड़ि लऽ जाउ आ बान्हि राखू।

तखने सभ पंच समवेत स्वरे बाजल- मुखिया जी, अपने तँ परमेशर छीऐ, तखन फेर एकर सजाए- बस एतबे।

मुखिया जी बजलाह- नेतृत्वक काज छै जे जँ कतौ पसाही लागल देखिए तँ ओइमे पानि ढारि दै नै की घी।

पजेबा

रामसेवक निःसंतान। तँए दजनो देवता-पितरके सुमरलक ओ। कतोहोरा पातीसँ लऽ कऽ कबुला-पाती धरि केलक। खाली उदेश्य एतबे जे कुलक सुन कोरा भरै।

आ दुलारामे भगवान लिखलन्हि तकर सबूत भेटलै रामसेवकके। मुदा तैओ मन्हुआएल छल ओ।

-यौ, घरमे खिमी अएलहिए। भोज-भात हेबाक चाही।

लाल भाइक ई गप्प सबहक देहमे जेना टेमी लेस देलकै।

-यौ लाल भाइ, अहूँ घापर नून लगबए लगलै छी?

लाल भाइ बातके गमैत बजलाह- हम तँ बेटाके पढेबा-लिखबापर ओतेक खर्च केलौं। मुदा ओ विदेशमे जा बसल। फोनेपर भेल गप्पक अतिरिक्त हमर सबहक कोनो सुधि नै छै ओकरा। हमरा सभके मुइलाक पछाति लैगेए दोसरे करता बनत या नै तँ लहास सड़ैत रहत। आब अहीं सभ कहू जे एहन बेटाक जरूरते कोन?

ि ि भाइ ई कल्ह ुिप्प भेिह।

सफाई

-गै सुनीता। हे सुन। तोरा रिक्तीय बासन, िता आ घरक सफाई वास्ते, ऐ दुआरे नै जे अपन िर बचािकेँ ढंगेरने ि, आओर पुरे घरकेँ अजायबघर बना कऽ राखि दे।

-दुनू बेकती रह एकठाम, कोनो बात नै। मुदा लायंतिरा ि अपना पर।

-देि तँ हमरा, एकटा बेटी अिछ बस।

-यै मािलकन, हम सभ तँ माय-बाप जकरासँ गठबन्धन कऽ देिकै, एकेटा िग रहल जतेक िही जनमबै िी। आ जे लकि ु करी, पािनो-पोसन कऽ ि िी। मुदा अहा सभ नै जाला जे ककरा-ककरा िग जा रंग रभस कऽ अबै िी। हमरा जनतबे तँ अहूँ नै जाला पबैत हएब जे अहाक बचािक असिी बाप के अिछ?

-हे ुिप्प! हमर सोसाइटी देि ुि।

-हँ मािलकन, अहाँ सभ कतेको पुरषक गात िला अबै िी सोसायटी मेलाटनेसक िि। वालस अपन घरमे आश्व अपनाकेँ सभसँ पैघ सतबरती देिबै िी।

**त्लायम**

-कहू तँ, िः हजार टाका पठबैत िी ऐ िओँड़ा कँे। तिन फोन करत जे आइ ई ििक पाइ िही तँ काल्ह ओ फीस देबाक अिछ। पाइ पठा लदऐ। एतेक पाइमे तँ हम पूरा पलवार एतऽ गुजारा कऽ ित िी। मुदा ओ सलदिन िगि रहैत अिछ।

-य की करबै, कहुना तीपिमा तीगी पाश्व तीअए जइसँ नोकरी सुरलक्त भऽ जाए। है यै, हमरो सएह मोन अिछ। हम कहुनाकेँ तँ ओकर िलहस पूलामकइये ने देबै।

-हमर बाबूजी िढ सए टाका मासमे पठबैत ििह। ओहीमे सभ िमिि कऽ कलहयो कािलनेमा देि ित िलौ। कलहयो दोबारा पाइ मंगबाक िगता नै बुझाएि।

-य, अहा कोन तीपिमा तीगी केिो, से ने कहू। तीपिमा तीगी केि माते लकि ु नै होइत िक। देि श्वीऐ, हमर सबहक जतेक पेशन अिछ ततेक तँ अझुका िकक दरमाहो नै भऽ पबै ि। य, पेशनक पिलायो उमेर िसिसँ आश लाये पूताक होइ ि, से नै बुझे तीऐ।

-है यै, तँ ने मासे-मासे पाइ भरै िी। जे ओकर बदि ुकिबैत रहए, लानगीक संग आ लानगीक पिलायो।

मुिक्त यैती

लदाियमे मध्यान्हमे भेि पििलामे नेना सभ िि ििबा िि अपन-अपन तुलयाक लाया-पुताकेँ संगोर

केिक। -गै कंिन, तूँ तावत ब आकेँ देिंत रह, पि नै जाउ। र ि आ िाि, तूँ जो घास िऽ गायक नालमे िसा आ, भोरेसँ भुखाएि हएत बेिारी।
-रनक आ सत्यमकेँ तावत तूँ झूि झुि दही।
-हम सभ कोनो काज नै करब जावत हमरा सभकेँ लकि देमऽ नै।
-रक....., हम तोरा सबहक िि थ्कि चीज िऽ कऽ अबै ि।
-िगै िाि, र ि लसकुट। रनक सत्यम िाि पॉप। कंिन तूँ सभ सोन पापड़ी िऽ ि।
-तोरा अपना िि तँ लकि नै बि .... र।
-कोनो बात नै, तोँ सभ िुश रहमे तँ हमरो िुशी हएत।
- ईह! नालहटा िओड़ा, कहैए कोना जेना हमरा सबहक बाबा रहए।

िक्प
-गोत.....। गोत नै, हमरा िि तँ सउत अलि।
-हम तँ बुझै ि जे लयासँ लया लगि गेि तँ शेष फोक।
-मुदा हम अहा तँ लजातीय ि, तहूमे िट-पैघ जालक।
-नै य, हमर अहाक पाकृलक जाल एके अलि, मानव जाल।
-ओना तँ पेम पशु-मानव आ मानव-पशुक बीि सेहो होइत अलि। मुदा ओ लालक लेि होइि। वैिअक पेम तँ मानव-मानव मातक बीि होइि।
-अओर स्त्री-पुरषक बीि भेि पेम सासालक संपूिा भऽ स्थालत होइत अलि।
-आब अही कहू जे अहा हमरासँ कोन पेम करै ि?
-लालअक की वैिलक?
-य, हम अहासँ एहेन पेम मात िहै ि जइसँ हमर माथानूआ भऽ जाए।
(जिन-तिन, पेम कथाक)

कनिर
“लगिया तंतमे उल्टा-पुल्टा देि मिक बयानक हम भत्सिना करैत ि, भारत हमरा पयाप्त सबूत लअए तँ हम दोषीपर कारिाइ अवश्य करब।”, पाक लदेशमंतीक बयान आएि।
-हम पहने पूिमसबूत पाकक समक पस्तुत कऽ िुकि ि। पाक एिन धल ओइपर की कारिाइ केिक, से कहए?
-दुनू देशक राजनलक वा पतालक बयानबाजी कुकुर कटाउजसँ वेशी लकि नै िि।
दुनू देशक जनता अइ कटाउज पर बहीर आ आन्हर सन िगैि। अपना टा बुते दुनूमे सँ कोइ ठाढ हेवा योग्य नै अलि।
आब सबहक नजल दुनूपर कान पथने महाजन अमेलका पर िै।
भारतीय राजनलक- ई हमर आपसी मालि अलि, ऐपर कोनो तेसर देशक हस्तकेप हम लकनहुँ बदाश्त नै

करब।
पाक सामरिक शक्तिकेँ आधुनिक मदति वास्ते अमेरिका दू स  करोड़क पैकेजक घोषणा करैत कहैत  भारत, पाक आतंकवादसँ ग्रसित अछि। ऐ दुनूक बरोबरि सहयोगक आशा अमेरिका रखैत।
भारतीय राजनीतिक असहाय मनहि जका टिपटा कऽ मुँह बने रहैत छथिएक तँ उहो मुँह ब ने अछि ओही महाजनक कारा वास्ते।
साप-सीढीक खेल खेलैत रहत।

आत्मानुभूति
सवोच्च न्यायायिक समितिक सबंधक मान्यताक घोषणा सँ लान्जा आ गिलहरीक जोड़ी आइ वेशी उत्साहित भऽ उठल छल। चिड़ियाखानाक ओइ मनहि, चिड़िया जोड़ीक हलचल मोन कतेको विषम लिंगी जोड़ीक कटाक्षक शिकार होइत रहल।
ऐ जोड़ी दारा स्थानीय निरजाघरमे जीवन पर्यन्त संग-संग जीवाक सपथ लेल गेल छल। जे तेकि ये मास पहिलुका खिल्ली भऽ उड़ैत देखाएल।
चिड़ियाखानाक प्रभारी सहित अन्यान्य चित-चिताक भेल जुटानक सोझा ऐ जोड़ीक एक संगी लान्जा चीत्कार पारि रहल छल-
-नै, किन  नै। हमरा छोड़ि दे। नै चाही गाँव, नै चाही स्वागम
प्रभारी जी पुछलक- की चाहिय तोरा, से ने बाज?
-हमरा चाही जीवन!
-जीवन, माने ...............?
-माने जे मदमे जीवनक संपूर्णताक अधिकार।

जनवाणी
दजनो कविक सोझा दशकक कविगोष्ठीक आनन्द एना उठा रहल छल जेना कवि सभ हुनकर सबहक सभ आस अपन-अपन कविते सँ पूर कऽ ठिकिकेँ गुदगुदी कऽ रहल छल। रातुक पहिल अधरतिया धरि तँ उपस्थित श्रोता हँसैत-हँसैत बेहाल छलाह। किन्तु राति जेना-जेना बितैत जा रहल छल, श्रोतामे हास्य रसक अनुभूति कम भेल जा रहल छल। आ ओ सभ अपन-अपन कुर्सीयेपर बैसल औंघए लगल छल। जकर मुख्य कारण छल जे कवि सबहक कविता आब हास्य व्यंग सँ आगू बढैत अपन परम्परागत र प यानी रोटी आ भूख दिस धूमि गेल छल।

संचालक आ आयोजक दुनू गोटे कनफुसकी केलक आ मंचसँ उदोषणा भेल- आब अहा सबहक सोझा आबि रहल छथि अपन जमानाक नामी हास्य कवि श्री आजाद जी। मुदा आजाद जी केँ कविता सुनेबासँ पहिने हम ओकर अवलोकन करऽ चाहब जे कि हुनक कविता हास्य-व्यंग्यक कसटी पर ठाढ भऽ पाओत कि ओ जगैत श्रोताकेँ गुदगुदी करबाक आ सुतैत श्रोताकेँ जगेबाक काज कऽ सकत?

आजाद जी ठाढ भऽ हाथ जोड़ि माइक पर जा कहलि- हम आयोजक आ श्रोता दुनूसँ माफी िहब, िकएक तँ हमर कविता हास्य-व्यंग्यात्मक नै अछि। ओकर संबंध तँ पेटक भूि आ रोटीसँ जुड़ि अछि।
िक्ुि जागि श्रोता जे हास्य मे रमि िहि हो हलि मिबऽ िगि, वापस जाउ... वापस जाउ।
मंिपर सँ आयोजक महोदय आजाद जी केँ हुथैत कहलि - आजाद जी, हम तँ अहाकेँ विशेष कऽ माला ऐ दुआरे बजेहुँ जे अहाक नाम सुिि अधिकसँ अधिक श्रोता आबए आ हमर कमाइ दु गुिा भऽ सकए। परेंच अपने तँ रंगमे भंग कऽ देलौ। सोझ्ना देिि य- कोनो श्रोता अहाक घसाएि-पिटाएि कथानक, भूि आ रोटी, सुनबाक िि तैयार नै अछि।
-हम सभ सुनबाक िि तैयार िी। सभ सूति श्रोता जगैत समवेत रपेँ कविक स्वरकेँ बि देिकि आ ओइ भीड़मे अपन-अपन कुसी गहि केिकि। आयोजक उत्साहित, गंभीर िकित होइत- अरे ई की?
श्रोता- हमरा सभकेँ भूिि पेटे िान कोना आओत सरकार! हम सभ सूति नै िि, बोर भऽ औंधा रहि ििौ।
-हास्य-व्यंग्य क्षििक तृप्ति दैि। ओ तँ धारक ओहन िहिर जकाँ अछि जे उठैत-िसैत रहैत अछि आ धार शान्त रहैि। मुदा रोटी, ई तँ पुरे िजनगी दैत अछि। जे हास्य, रद, भयानक सभ रसक सवमाही होइत अछि।

िश्मा

एक टा िित्रकार बड़ मनोयोग पूवक एक टा आधुनिक पुरषक िित्र बनकि। शुट-बुट, हाथमे मोबाइि, कन्हासँ िटकि िपटापकबैग आ आँिि पर िश्मा िढि। ऐ िित्रक समीक्षा-पशंसा वास्ते िगा देिकि म्युजियमक दुआरिक बाहर, आ कात मे ठाढ रहि पतििमिक पतीक्षा मे।
िक्ुि कािक पििा एकटा दशक ओइ िित्रकेँ गरसँ उपरसँ नीिाँ धरि िाहाि कऽ बाजि - बरड सुंदर। जे िकयो एकरा बनेििा ओ धन्यवादक पात्र िथि। मुदा ई अओर सुनर होइत जँ आँििपर िश्मा नै िढि रहैत।
कातमे ठाढ िित्रकार उत्सुक होइत पुििा- िश्मा िढिसँ िित्रमे िवकृति आएि अछि की?
-हँ, िगैए आँििक पािा जेना कम भऽ गेि हुअए।
िित्रकार ुिशी सँ कुदि उठि। -अहा हमर सत्यकेँ पकड़िौ।
-माने?
िित्रकार स्पष्ट करैत - पािा सँ भरि आँिि बिििक तँ ओिि मॉिि भऽ गेि। यानी बेकार सन।
-आधुनिक िािकक आँििमे आब ओतबे पािाक बेगरता थम्हि िक जते सँ ओकर िािस पूर भऽ जाए।

उपहार

भाय दुनूक दू सोि। पहिि ऐय्याशी आधुनिकतावादी। मुदा दोसर संयमी, परम्पराक िनवहतामे िवशासी। िपता पुरे दाशिनिक िविारक। माय नैहरसँ सासुर धरि साक्षात देवी बुझू।

परोपटा भरमे ऐ समधात बरिधाराक सोरहा ि ि। जे भरि-पुरि परिवारमे बुधागर ठेकनगर, परोपकारी जन हितैषी, नै जाला कतेको एहने मकीक सम्मानसँ सम्मालात ि ि ई परिवार।

आब ि गता भेि परिवारक दोसर पीढीक संपूिता आ तेसर पीढीक हेतु सीढीक। घोषि कएि गेि- दुनू एके ि मनमे बेटाक बआहबाक।

नीक कुि शीि आ समकक, समदशी कलाया ताकि जाए ि गि।

धरीहि ि ला गेि कलायागतक। सभ अपन-अपन बेटीक सुन्दर बि ि न वरागतक सोझा रि ि ला। कतेको दजम कान्याामे सँ दूगोट कान्याक ि यिन कऽ दुनूटा घर बसेबाक दुआल ि ि कि देि गेि।

दुनू कलायाँक एके दन भेि थरागमनक आइ सोरहम दन। स्वागसान परिवारमे नरकक बाट ि ूजि- दुनू कलायाँ झाँटा-झाँटौकि ...राड़ी-बेटि कीक मधामे ि ि ि ला तान तानजक बाट।

जेठकी कलायाँक उि हिन उपराग सुनैत कान-आँि मुनने रहि ि ि टकी। कएक तँ जेठकी जमीन्दारक बेटी, ि टकी कुि ि न मुदा गरीब परिवारक बेटी।

जेठकी कलायाँ - हमर बाप माय तँ एक दस पाइ आ दोसर दस वर तकि अनि ला। आ दरागमनमे देि ला कतेको पीढी धरि घर सम्हारबाक जोगार ि ि पेटार।

ि टकी कलायाँ- हमर माय बाप देि ला कुि ि नक संस्कार जे अबबि कतेको पीढी धरि लावहता करबाक शाि ि नताक पाठ पढ़बैत रहए।

काट

बाप रे बाप.... बाप रे बाप, गीदड़ ि ऽ गेि ब आकैँ। साझ ि न बाि बोनसँ घूमि रहि ि रवाहाक भीड़मे सँ बफाड़ काटि रहि एकटा ि रवाहाक ई स्वर गूँजि रहि ि ि। जे जेम्हरे सुनि कि से एक-दोसराकैँ कहैत दि छ पड़ि ि ड़बोना दस।

ता जीतन राम सेहो परीक्षि बाबूक ओतऽ दि ड़ि जाइत रहए क रस्तेमे परीकि बाबू बन्दुक ि ऽ अबैत भेटि गेि ि न। मालीक....। हँ हँ हम बुझलि य क। ि ि-ि ि। आ सभ ि ड़बोनाक ि र कात ठाढ ि ि क जीतनराम ि ि या उठि- हैया य मालीक ईएह हमर कंटीरवी ि ि। मार गीदरकैँ।

-केंटीरवी... , ई शब्द जेना परीकि बाबूकैँ वाि सदृश भेटि देि कि, ओ तमतमाइत बाल उठि- र स्सार। अही कंटीरवी ि ि भरि गामकैँ जुटएि ताँ। हम तँ बुझलि य जे बेटा ि ?

(भारती मंि नि- १९९५)

ओकाला

हाकिम, करानी आ ि परासी कायायिमे ि युटीपर।

-सर! दरमाहा तँ बन अि, मुदा घरक ि ची नै बना अि। आइ ि टकी बेटी बमार पड़ि गेि। ि क्टरसँ देि ऐ। मुदा हाथपर एकोटा पाइ नै अि, जँ कि मदतिमे दतेँ तँ उपकार मालातौ। - करानी अनुनयात्मक स्वरे बाजि ि ि।

-ह, हमर दरमाहा तँ ि ि ूअि मुदा कजमबि हीी बोझ सन। पाइ की हाथ पर एको दन रहऽ पबैए।

-हूँह। ऐ सँ तँ नीक हम, जे सुि ि सँ परिवारक ि ची ि ि ि त ि ि। पहि दन तँ हाथ पसारऽ पड़ि अि ककरो सोझा। सरकार! धन्य ि ऐ अपने सभ। अहा अपने हाकिम, बेटा ि क्टर, फेर कजा। अहासँ नीक

तँ बड़ा बाबू। जे अपन परिवारक िची असगरे सुिपूवक ि ि ि त िय।
एक टा दबंग िपरासी बीिमे टपलक पड़ि- ुिप रह, तोहर की ओकाित ि? वेवकूफ कही के। हाकम,
हमर बेटीकेँ ितवृश्रासँ ततेक पाइ भेटै ि जे अपनो पढैफ आ ओइ पाइमे सँ घरोक ि ि िलि जाइ ि।
हाकम दराज िलि ओकर सेवा पुलकका ताकऽ िगि।
(लायािगन- २००४)

जीवन िक

ओ कलमत भावे उगैत सुयकेँ देििक, तकर पिला अपन लदनियासँ लावृत भऽ अपन कमशाि (दोकान) मे
िला लारि। गाहैक केँ लापटाबऽ िगि ि िलक उधारी िगब शुर भऽ गेि। सुयमलश तकिक- ओकर
पिरता मलीन होइत बुझेि। ओकरा काला भोजन रलीगर िगि रहै, मुदा आइ ओइपर अरली पसल
गेि। सुयमर नजल गेि, ओ पत्राम भर जाइत बुझेि। महाजन एि-गेि।
गँहकीक मन्दी, तगेदापर तगेदा आश्व गेि। अनट-सनट गप सुनबा ि कान ुिजि िलि देिक।
गलि ििकि तँ नजल अन्हरा गेि। सुयमलि गेि ि। लीन्तनशीि, मुदा मध्यपानक िह जोर पकल
ििकै। बन भऽ गेि दोकानक सभटा पटा।
राला अमावश्याक ि।

रकक

राजनेताक सुसलजत पणििमे करमान िगि िक।
सताधारी दिक बड़कासँ ुिटभैया नेता धल माइकपर अपन-अपन स्वतंत लिर व्यक्त कऽ रहि ि।
सभक अलावलक केन्द्र लन्दु ि - 'मलि लवस'। बीि-बीिमे मगी सबहक समवेत स्वर- 'सभठाम
हमरा सभकेँ ३३ पलाशत आरकि हुअए, आरकि हुअए... आरकि हुअए। कामकाजी मलिक सुरका हुअए,
सुरका हुअए... सुरका हुअए । माइकपर सँ आशासनक स्वर फुटि रहै लक िर कातक भीड़ एक दोसराकेँ
िकुइत पिए िगि। पणि नै जाला उिल कऽ कतऽ गेि। कलिमे मंि सलत संपूिमिमैदानमे सनाटा
पसल गेि। सभ नेता लापता भऽ गेि। िक सभ अपन-अपन घर पिएि।
की भेि से बुझवा वा बुझेवा ि िलकओ उपललथत नै।
संवाद तँ िककेँ साझिन पसालत आकाशवाििक समािर "मलि लवस पर आयोलत सम्मेिनमे बुलाया
आ ुिलायाक सामुलक बिकारक आरोपमे दु गोट वदीधारी लारफ्तार" सँ पाप्त भेि।

जमाना

-बहुत रात्ता भेि, बन कर आब गप्प। िाउ िनाइ। हँ, एकटा गप्प तँ कहबे नै केिो। आवश्यक हुअए तँ कहू। आ िगाउ िनाइ। भोरमे जल्दी उठबाक अिछ।

-कने शमा जीक त्माजासा कऽ अबत्तायछ्या।

-त्क्ए, की भऽ गेिछ्या?

-हुनकर जेठकी बेटीक अपहरि भऽ गेलछ्या।

-अपहरि भऽ गेिछ्या, की उड़हैर गेिला?

-जाए त्दयौ जे भेिला। आब की ओ समय िछ जे िाक िाककेँ तकने त्करतै।

-मोन अिछ, पिछि त्दन अपना घर मे िारी भेि तँ के सभ आएि िि?

-मात भोर का िाह त्नहार, पेट पोसुआ सभ।

(पलिव - फरवरी ९४)

लाधम

कायािय सँ बहराइते मोन िाट भऽ गेि।

िगातार भोरेसँ कायाियक डयुटी, फेर ऐ त्ताकि रदमे जाएब मुक्श्कि।

'पणिसिराय' नाम सुत्ताते त्कशाबाि बाध्य उठि- दस टाका िागत मािक। दस टाका। रद नै देखा दैए, केहेन जान मार क िक।

अपन जेबीकेँ तिित पएर आगू बढा िििला त्करानी बाबू- ओह। आइ जँ साइत्कि रहैत?

परेंच हएत कोना, पत्तवारक भरि-पोषि! ई तँ जोक जका िूत्स रहि अिछ।

-नै मािक, सातसँ कममे नै जाएब।

ििबासँ असक भऽ जेबीक हाितपर त्तत त्थर कऽ गािक िाहत्त तर बैस गेिाह।

-सभक एके हाि िऽ ह? िाि टाका देबऽ, गरीबो केँ तँ ध्यान रििहक। कायाियमे ओम्हर हात्कम िुसैत ित्य, घरमे पत्तवार आ सिकपर तौँ सभ।

-देिि नै श्रीऐ, मँहगी कते बत्त गेिि। िाउर अठारह टाका श्कािि िक।

-तँ िूटऽ त्ता मािक कँ।

-मािक, िूटि तँ हम गरीब जाइ िी, सड़कसँ संसद धत्त। हुनकर सभक तँ ििीयो गाड़ीके सििमी बजैत िला।

(त्तात्यािििि संपकम१९९७)

आरत्क्त

सभ एक दोसराकेँ त्नजासा भरि आँखीिये लाहाल रहि ि। करमान ािगि ि‍ ािकक, मुदा त्नकयो ककरोसँ त्नकि पुत्नि नै पाश्व रहि ि। आ ने त्नकयो त्नकि बाल्न रहि ि। खूब सुनर, ाि िमकैत साड़ीमे एकटा पुताि धू-धू कऽ जल्न रहि ि।
''की भेलै? के ि‍ ई?'', भीड़मे सँ एकटा मुँह िजि।
-र फेकना, ि-ि, काज भऽ गेि।
-सर! मजदूरी?
-मजदूरी! एिन तँ काज शुर हे भेि‍ए। आब ि राजीव िक, पटेि िक, बड़ा बजार।
-बड़ा बाजार?
ऐ िल्न पाि स्थान पर जिन मुख्यमंती क पुताि फुकेतै तिन ने आरक्ि त्नरोधी स्पर सतात्मकारीक नजल्न मे जेतै।
-मुदा, सर! ऐ सँ अहाकेँ की भेटत?
-नाम, पल्हिन। अलाि िनावसँ पल्हने बना देि जाएब पाटीक अध्यक। आ तिन ओसुाि जाएत एके बेरमे ऐ सभ पुताक पाइ। आ आरत्नक्त भऽ जाएत हमर कमाइ। आ तिन तोरो सभकेँ भेत्न जैत स्थायी काज, अगुताइ त्नकए ि‍?
-सर! आइक बोला नै भेटतै तँ बचाि सभ की ितै?
-की ितै? रात्ना कहुना त्नबता ितै, भोरेसँ फेर सभ िला जइहे मजदूरीमे, जेना बोइन कऽ कए आइ धल्न िइत एिहे। र! कत्नयो आइ धल्न पेट भरि‍ए बोलाहारक, जे आइ भरै कऽ गप्प करै ि‍? सुन! तोँ सभ तत्नया सोिहैं पेट भरै कऽ जत्नया आरत्नक्त कऽ िमऽ अपन मजदूरी।
-आ तत्नया, अहा सभ की करबै?
-हम सभ कुरसीक रंग बदत्नि िबै।

नवयुग

मत्नना रहै अषाढक, सावनक आगमन होमैएबाि रहै। मुदा... । ित सभ पत्नाया गेि रहै। रोपि नै रहै धान, भेि नै रहै कादो, मुदा... मुदा तैयो भुत्नाया गेि रहै िढ पात। हरकम्म मिि गोि रहै, गृहस्थ सबहक बीि। 'कोने रोग तऽ नै िला गेि‍ए ऐबेर अइ माल्न मे?', सभ त्नकसान अजी केिक कृत्न पदात्मकारी िग। ितक माल्नक भेि‍ परीक्ि। भेटलै संवाद, रासायलाक ािदक बेशी पयोग जमीनकेँ कऽ देिक अिि िराप। एकर उपाय जनबाक त्नजासा गृहस्थ दारा कएि गेि तँ भेटि‍ सरकारी लादेश। अहा सभ अपन-अपन ितमे पुश्तैनी बीआ नै मात दोगाि (हाइिाि) क रोपनी कर, तिने टा श्वकि फत्निि पाएब।
-सर! एकर दामो तँ घरैया बीआसँ कतेक गुाि बेशी िगा कऽ पििाि बेर लेाि, मुदा सभटा िरी भऽ गेि।
-ठीक ि‍, सभ गृहस्थ अपन-अपन सभटा ित राि िीअ परती। गृहस्थ सभ भूि‍ मर!

(लत्माािगन २००८)

अवाक

-बाउ, हे भगवान! , कहैत अपन दुनू आंखि मुना िने ि ओ। लासाध!

-केहेन माय ी अहा से नै जाला? बेटीक इज्जत ुटाइत देखि कऽ ुपा ाप मुँह बन केने रहल गेी।

-की कहब हम आब समाजकेँ?

-बेटी, हम तँ तन अवश्ये आँखि मुना िने रही, जे एिनो मुँह आँखि बन केने ी। खीखीयाइत िर ािगा, जे कही दुनू गोटेक लानगीयो नै िाला खीअए ओ वनमानुष सभ। गीतीये सोा सही, जीबाक अत्वकार तँ रहए देिक ओ भेलइया सभ। कहू भला आँखि बन करबाक लावाय अओर हम कइये की सकैत ी?

एिनो धल स्तीमे ओ शाक्त कहा एिए जे पुरषसँ ऊपर भऽ सकैए, आइधल स्तीक संपूमिशाक्त, लाजीलषा पुरषेक मुटठीमे बान्हा अछि। आ मगी जाबीमे जकड़ा मुँहे रहैए।

खीसा

कएक लनक वषाक जबका पालासँ कजलया गो रहए सौसे अंगना। ओइ कजलआएा पजेबा सभपर पएर दऽ िबाक लसाक पलड गो रहै सबहक। बाप र.... शब्दक खीत्कार सुना बेरा बेरी सभ दड़ा अंगनाकेँ, थक देित अछि लालाषक माय बेहाश पड़ा िथि, सौसे देह पालासँ भीजा आ हाथ पएरमे कजरी ाला गो ि।

अस्पतामे भरती करबाओा गो। "एक्स रे सँ पता ाित अछि जे लनक पएरक हडी टूल्ट गो ाला, पास्तर करऽ पड़त", ाक्टरक साह ि।

"बाबूजी, लालाषाक मा अंगनामे ास पड़ी, हुनक पएरक हडी टूल्ट गेलाह अछि। एतऽ तुरन्त ाक्टर उपाध भऽ गोह, इाज ाि रहा अछि। अहा, लनका सभके कहै ाौ गामेमे रहऽ देबाक ाि लक पाइयो िमकोपर ाक्टर उपाबिध भेनाइ लाजात नै ि।"

"बौआ हम फेर कहै ी जे आबो गामेमे आला खीयन। जँ गाममे रहतथ तँ कजलआएा पजेबापर ासबे नै कलतथ। ाक्टरक पयोजने कोन?"

ानदानी

-अहाकेँ एतेक मना केलौ परेंच नलये मानब अहाँ, तँ जाउ, ाकन रद बड़ काार ा, बचीये कऽ रहब। नै तँ....।

-भैया, लान पकारक सास्कृताक कायकम ा स्कूमे। हे उदाटन सत तँ बेजोड़ हैतै, की कहू... एकदम धमलाज्जर। अहूँ एबै ने भइया?

हम मन रहल गो रही। ाउाीस्पीकरक अवाज, ओइपर लान वादयंतक पे... पो... आ लाका मंतीक भाषा। हमर सबुरक बान्ह तोल्ड देिक। लदा भेलौ स्कूा लस।

लदायिक पाडनमे पएर रखीते हमर शरीर थरथरा उठा। समवेत स्वरे नेना सबहक ई गायन सुना- आवारा

..... आवारा..., िटल घुल गेलौ घर लस। मोनमे उमड़ए िगि- “क ईएह त्यकैक स्कूी सास्कृताक कायकम आ ईएह दैत ित्यन्ह गुर जी त्वाका। वाह रे भलष्य।
दोसर लन गुर जीकेँ त्वाकाइत कएिपर उतारा भेटि- जे जेहेन धरनदार ि तेहने तैयारीयो रहैत िक। आ अहूँ सभ की करै श्ीऐ? हम सभ तँ पोत्साहन दैत त्ीऐ।
(लदेह अंक- ६२ मे पकाल्यात)

कुलइया
-िपा रहै जाउ, िपा तँ होउ। अहूँ सभसँ अनुरोध जे कृपया शाला बना कऽ राि।
मंती जी, करमान िगि िकक बीि अपन भाषि लाबाध गलाये िािरिने रहिह। -अहा सबहक दुि आ दलदताकेँ हम नेनेसँ अनुभव करैत एिहँ। पलि बेर तँ अवसर भेटत अहा सबहक कुलइया समाजकेँ ऊपर उठेबाक। अहा सभ एकजुट भऽ हमरा थ्मता लअ, हम सपात िा कऽ कहै िा, अहाँक सम्मुिमि कुलइया समाजकेँ जे कतेको सए बरिसँ लिरि अल्ी, उदार कऽ देब।
-हालकम, हमर सबहक पुरिा एतेक पिआएि कहा रहै। लििािक तँ सता, हमरा सभकेँ। दरअसि हम सभ सताक त्वाकार बनिा मुगि कािमे। कहै िि हमर बाबा। हमर पुरिा जुम्मन शाह जे पलने जमुना िि। मोगि बादशाह सभ हटा कटा शरीर देल्ि ओकरा कुरहश्ी थमा देिकै। िला िकै जमीन-जायदाद आ ठाठ बाट। कािन्तरे ओ भऽ गेि कुरहलया। अपभंशमे िक कहऽ िगि- कुलइया। य बाबू, हमर सबहक कोनो जाला आ मजहब नै िि। हमर पुवा पेट भरै िि झारिणिमे जा मोगिक आदेशे मुणि कटैक (बघ्ा) काज केिकै तँ ओ कहेि जनजाला मुणि। हम सभ लाल्यािाक कोशी पेटमे समैि एतेक लिल्ह गेिा जे आइयो मजदुरीसँ उपर नै सोचै त्ीऐ। उपरी त्वाका आ हालकम- हुकूम तँ जगिमे देिि सपना बुझू। बाबू, अहा सभ मोनकेँ जते भल दी, पेट लकयो भरलाहार नै। पेट भरतै, तिन ने दुलाया सुझेतै। पेट रहै ि िािा, लानगी देिइत िक अन्हार। सपना तँ संजोगि संग िल्ि जाइत िक। य बाबू, लक रंग-रंगक हमरा आरी लानगी श्यतवै त्ीऐ से अलि-लया टा बुझैत हेल्यन। अहाँ अओर लक जानऽ गेल्ीऐ? अहाँ अर तँ गरीबकेँ भोटक साधन मात बुझै त्ीऐ, गरीबक लानगीकेँ नै। सते कहै िा, जलया अहा आर गरीबक लानगीकेँ बुझबै, कुरसी तँ ओकरे दुरिा िला जेतै।

दानक बस्ता
जाइ जाउ, जाइ जाउ। अहा सभ घर घुर, बलयाती सभ आल रहि अल्ी, िाइ िि। लजो भऽ गेि हे, एम्हर बैसै जाउ .... ओहो ओसारा तँ िािये अल्ी, िि...।

कोबरा घरक ओसारा लस बलयातीके बढैक देल्ि, िािककाक ध्यान कोबरा घरक िजि केबाड़ लस गेिला।
अपन हाथ बाझि रहला ते ममताकेँ कहिला हे, कने झटलक कऽ जा आ कोबराक पटा बन कऽ दहक। जुआन ममताकेँ बलयातीक उपलस्थलामे आंगनमे उतरैत सलयाती सभ िर भरसँ अपन-अपन लािर देबऽ

िगिा।

ता ममता कोबर घरक केबाड़ ओंगठा, फेर भणिर घरमे बैसि िाि कका िग िि गेि, मुदा म्हिदेव बाबूकेँ आला िस देिकला, कहिला- कोबर घर िूजि िि तैँ कोन जुिूम भऽ गेि, हम कन्यादान कऽ उतीिमभऽ गेलौ। आब सभटा िार-भार बलयातीये सभपर। मुदा ऐ कुमाल जुआन-जहानकेँ जे बलयातीक सोझाँ टहलाबै िी से उचीत नै।

सभ लबरयाती ठहका मारकि, -जिन जुआन भइये गेिी तैँ कतेक लदन रिबला िुटेस कऽ। एकटा आर दान कऽ पुण्यक भागी बनू।

जुनुन

आतंकवादसँ पभालवत केत्र।

रात्ला सुतबा कािि घरमे बेटा आ माय।

बेटा मायसँ कहैत अलि- मा ई बनुक अहाु कोठीक दिगमे लकए रिि िी?

-मानवक रक्षाक िि।

-जैँ ई मानवक रक्षाथमअलि तैँ एकरा मानवक संग रहबाक िाही।

-नै बेटा, ई मानवक रक्षा ओकर पयोजन कािमे करैत अलि। ताधलि ओ दुरे रहए तैँ मानव स्वयंके बेशी सुरलक्षत रालि पबैए।

-मा, जैँ बनुक मानवक रक्षा करैए तैँ मानव सभ की करैए?

-ओहो सभ बनुक मातकेँ लसरमा िग िऽ सुतैए।

माय लासभेर! मुदा ओ सोलि रहि अलि- अपन आ समाजक रक्षाथम

अधरलाया.........। आंगनमे भेि पएरक आहट्ट, घरक दोगसँ हुिकी दऽ देििकि, साकाक भऽ उठि लासभेर माय िकलि, लान उल्ड़ गेि।

बनुकसँ लाकिि एक-एक गोिीक िमकपर शोलिताएि िहास िमलक उठै। गौआ सभ बनुक िऽ घरे-घरे घुसि रहि अपन रक्षाथम

(वैदेही - जुिाई ___९५)

लवजेता

पाटीक बैसार पारम्भ भऽ गेि रहए। अलाम पंलक्तमे वतमान, लावतमान अध्यक्ष अपन-अपन समथलकक संग अडिा जमने िािह।

-सुनै जाउ.... ध्यान लदय। कुिि सीट अलि- एक आ लटकटाथीक आवेदन अलि- २७, सताइसो सदस्यक साक्षात्कारे पूिमलववरि जनािक पािला एक गोट उम्मीदवारक घोषिा कएि जाएत।

-य, ई तैँ लविि बेर साइलकि पाटीसँ ठाढ भऽ हमर पाटीक लवरोध केने िि। -हे य लकिु लदनक िि िन्दशेिर जी केँ पधानमंती बनेबा िि हुनको पाटीमे सहयोगी रहि। दि-बदिू कही के।

-कानाफुसी बन कर ...। शान्त! शान्त! एका एकी कऽ सभ अपन त्वविरा त्वअ।
-नै सर! पत्नहने तँ ऐ बाहरी क्यत्नक्तकेँ ऐ पाँतीसँ अ ि ग कएि जाए। ई रामेशर यादव तँ दि बद ि अि। पका दि बद ि यानी पूि मिस्पाथी।
-रामेशर जी!
-जी सर!
-अहाँकेँ हमर पाटी कोन आधारपर त्नटकट देत? अहाकेँ हमरा पाटीमे एवाक की उदेश्य?
-सर! हम ि िहे कोनो पाटीमे जाउ, हमर एक मात उदेश्य रहैए - ई कुसी पाप्त केनाइ। आ आब पाटीयो तँ अहीक मात बा ि ि अि, जँ अहा सभकेँ हमरा पत्न एतराज हुअए तँ कोनो बात नै अि, हम त्नादर्मीय भऽ ि िनाव ि ल्ड ि ब, से कोना मना कऽ सकैत ि ि अहा। सर! सभटा इि मि जनै ि ि हम.... कुसी पएबा ि ि। पएर पकड़बासँ ि ि न बहेबा ि ि तक सक्म ि ि हम। टाकाक तँ कोनो कत्नाये नै। हमरा त्नटकट देबाक अथम भेि - अहाक एक सीट पका।
-सुन्दर, अत्न सुन्दर। अहाँ ि यत्नात भेि।

हत्नयर बती- ि ि बती

"ि रेवरीये (डाइवरी) सही, न करी तँ भेट गेि। पत्न ि बेर बहरेि गामसँ, केहेन सनगर न करी पत्न ि िल्न गेि, दरमाहा पाि हजार। ओकर अत्नात्नक्त ि िनाइ- त्नाइ मुफ्त। ठीके ि िक कहै ि ि, गामक ि रेवरीसँ पेट नै भरत, सभ त्नन मात्नकक बत्नये भेि रहमे।", सुन्दर ि ि गामसँ बहरएबाक पि ित्न पत्न ि पतमे गामपर सूि ित कएने ि ि।
त्नके बुढवा-बुत्नया ि ित्नार तँ गाम ि िड़ि कै, नै तँ केहेन बत्नया दूनू बेकती गामेपर कमा ि ित रही, पेट काल्न त्नक ि बि बि िइयो ि ित रही।
-हेि....। रामसागरसँ गप्प करा त्नअ।
-ि िइने पर रहू.....।
-हेि ......... के ि ि?
-हम ि ि अहीक सतवरती।
रामसागरक गाममे ककरो अंगना जा, कोनो म गी मेहत्नसँ गप्प करैत रहि िपर जँ ई पत्नारोध करए तँ राम सागर ि त्नया कऽ कहै - सतबरती कही के।
-हे दुि नै करब, फुरसत्नक अभावमे ि ि मास सँ ि िटी-पतरी नै ि ि सकि।
-ऐँ .... आब की ि िटीक जमाना ि एि रहि? ि ई फोन नम्बर, फोन करैत रहतै, जेठका भइया मोबाइि ि ि ि नहे।
साि भत्न बीत गेि। नै कोनो ि िटी आने कोनो फोन एि। हँ, बीि-बीिमे हजार दू हजार टाका जर र आि जाइ ि ि।
-मा यै....., हमर मोन दू-तीन त्नसँ कोना दन करैए ओकरे पर सत्न ि न ध्यान ि ि गि अि।
-हूँ यै, त्नक ि भऽ तँ नै गेि ि ओंड़ा के?

-ि र, मा ओहोन कठगर हाड़, माउसबि देह हइ, की हेतै ओइ शरीरकैं।
-मा यै, हमरा तैं शक अछि ओकर मोनपर। ि िह तैं ि ि, कही मोन तैं नै भटलक गेि?
-मा यै, दु िरा काल्हि बम्बइ जाइ ि, ओ कहि कि जे रामसागरक कोठी हमरा दे ि ि अछि, जतए ओ काज करैए। ई कहि ि तैं हम ओकरे संग ि ला जाइ।
-हे भगवान! माय गै माय। केहेन ि केठे सनक देह ि, तै मे कोन बीमारी भऽ गेि हे भगवान। ि क्टर साहएब, एकर कोन इ ि ज ि से कहू, हमरा जेना हएत हम एकर इ ि ज कराएब।
-सुनू घबराउ नै। गाम पर ि ऽ जाउ, जे कहथि से नीक-लाकूत ि इ पीबै ि ि दैत रहबला।
-मुदा इ ि ज.....।
-एर स ि इ ि ज बीमारी ि क।

ि गाम

नारीक पकृता पदत कोम ि गी हेबाक कारि पुर ष सत्त ि न ओकर मान मदम करैत रहि अछि। सभ र पैं। कोनो मानवीय मूल्यक ख्याि नै रहि।
आब जमाना करोट ि ि कै। पुर ष सभ बेसी लाकमा होमए ि गि। आब एहन पुर ष सभ पुर ि ह कम कटाह बेसी भए गेि। म गी सभके रोजगार भेटि। सभ शतप्रि रोजगार दे ि गेि। मुदा ऐ अवसरके पुर ष अपना तरहे भज ि क। ते आइ मह्ि ाक सताधीश होइते.... पुर षे सता ि ि बैए। आ म गी सोझाँमे रा ि ि मुर त बुझू आ पुर षके पुजारीक भेषमे माि ि क।

दे ि उँस

कूकुरक समूह मनु ि क बी ि रह मनु ि ह भऽ गेि। ताकए ि गि मनु ि जका ि न-पान आ ऐय्याशी। मनु ि स्वभावे कुकुरक ि ि अंलाऔ ि क। ओकर भोग-वि ास आ ऐय्याशी तैं सनातलाए रहि। मुदा ओ पलवतम शी ि ताक ि कमे ओझरा गेि। मनु ि पहने बरदासी ि ि। बेसी आकोश भे ि पर घोघाउज कऽ ि त ि ि। मुदा आब---- आब तैं ि टो गप्पपर कुकूरकटाउझ करैत रहैए।

मा

एतऽ हम-अहा, पेम-घृ ि, पलवतम-रेवाज लकि ि नै बा ि ि अछि। जन्म-मृत्यु, सु ि -दु ि सभ सुना भे ि जा रहि अछि। बा ि ि अछि आ ब ि ि रहत तैं ि ि ि ओ जे पेटमे न मासक दु ि के सह सृत्र के पूरा करए ब ि जा ि क एकटा ि ल अछि। एतैसँ संतुलि त आ सं ि ि त अछि स्वागमनकमआत्क पूरा म्हाणि। जकर एकसर त्वन्हु अछि जन्मदाती।

त्वजातीय

पूरा पहाड़ी पर शून्यता पसल गेि ि। उपर मेघमे स्याहपन, बसातक साय-साय ऐ नव जोड़ीके आरो बेसी

मजेदार समयक आनंद दए रहि ि ।
-य ठीके कहै ि ि ऐ। हम तँ एतेक दूर धरि कल्पनो नै केने ि लौ जे पहाड़ आ बोन ल्गनगीके एतेक ि ुशनुमा बना सकैए। आह, कतेक मजेदार ि । पहि जे लबआह लगनगी दै ि । दोसर लबआहक ल्दन-राल ऐ सपनाके ऐ पकृल्िक कोरामे जीवनक संपूि ि ाक अनुभव दए रहि अि ि ।
-हे यै... अहाके ई बुझि अि ि जे समाजसँ ि िरा कए कएि गेि लबआह आनंदक संग स्लागक बाट सेहो ि ि िके ि ि ए। कोनो बात नै, ल्या अहासँ ल ि ि । समाजसँ ल ि ए की नै ल ि ए, ओइसँ कोन फकम पड़त। संग हम देब मुदा वास तँ समाजे देत। कोनो बात नै, समाज जँ जीबाक बाट नै ि ड़त तँ ओइ ि के अंल्ाम ि बना ि ब। जइसँ सोहाग अि ि रल्ह जाए। ि ि ि अहा संग दैत रहू।

स्लर प आ संभावना
एकैटा पाथर कतेक स्लर प पबैि आ स्लर पक गुि पबैि अपन महत्व। पाथरे ओि ि कए बनैि बाट। जकर स्लाभव होइि ि तिमदम हएब। पाथरे जोल्ड़ बनैि घर। जे ि िकक जानक रक्ा करैि। पाथरक टुकड़ीसँ बान्ह आ ने जाल कतेको पकारक ि िक कल्याि कारी वस्तुक ल ि मािि होइि। पाथरेक ि ढी-ल्स ि ट या ि की जीवात्माके बि ि बाक साधन बल घसाइत रल्ह जाइए। पाथरेके तराल्स कए मूतमर प जि ि न देि जाइत ि तिि न ओ दूध-फूि-अक्त-नैवेदसँ पूल्ज त होइि। ईशरक पल आस्था रि ल्हार ि ि तँ ल्या मे नुका जाए बि ि ईशरक पल्र प होइि पाथर आ ओकरे पूल्ज-पूल्ज ि िक सवस्य पाल्क आशमे समल्स भऽ जाइए।

लकल्प
देवता-लतरक नाम पर सभ एक-दोसरासँ अपनाके ल ि गा ि ए। मुदा ि दा मामा कतेको धमावि ंबीके लय ि त्यान्ह जकर स्लष उदाहरि अि ि - ि िन देि ि िक पि ल्ाये होइि मुसि मानक रमजान। ि हे ओ रोजा रि ल्हार ि िकक दृश्यावि ि कनसँ होइ ल्क इमाम साहेबक घोषि ि सँ।
हम सभ तँ लाल्यसयोसँ काज ि ि ि ि ि, जेना भरदुल्ायाक ि िन देि ि उथ की नुकाएि रह थ, हमरा सभ ि ि धरि सन , हँ ि ठि दि पावल जे ल्क लाल्यवासी दारा मनाओि जाइि, मे ि ठि दिक दशम अवश्य करैि ि। आ पूल्िमाक ि िनक लाल्त तँ देशक सगरो भागक ि िक रक्ाबंधन मनबैि।
ि िनक सि म्यता आ शीतिताासँ पभाल्त ि िक एि िन हुनक लाल्त मात पूजन करैि। ल्कएक तँ एि िन जमीन आ असमानमे असीम दूरी अि ि। मुदा जि ि ने ि िन धरि पहुँि बाक रस्ता रहरहाम भऽ जेतै तिि ने ि िक ताकए ि ि गत ओइठाम जा कऽ जीबाक साधन। आ सभटा सुल्धा होइते ओतौ एल्हना उकवा उठतै। तिि न ि ि ंगी, धोती, पैजामा आ पैटबि ि कित अपन-अपन जगह आ ओत दऽ देत सीमान। आ तिि न एत पूजा ि ल्ड़ हएत धमलाजर।
फेर तँ पूल्ज त ि िनके बँटबाक वा कटबाक ि ि शुर भऽ जाएत कटा-काटी। आ संगे-संग धूल्ि भऽ जाएत ि िनक शीतिता, आ एत सगरो बहैत देि ि एत गरम शोल्ित क टघार। ि िन ओल्हना रहत हँसैत-ि ि इत, टुक-टुक देि त हमर सबहक ल्करदानी। मुदा हम सभ.... हम सभ ओत बेपदमभऽ जाएब एल्हना ि िनक सोझा। तिि न ताकब कोन बाट?

थ्रीफ

मर बँरू, ई भीड़ तँ ितमे नै होइ ि।

पूरा लयानीमे दजी टोि, जोिह टोिी सभ लिा कऽ िह सए मरद-जनानी-बचिा ि ि पलिि बेर। पलिि साक िरातमे एतबे गहूमसँ सगरो टोि महो-महो भऽ गेि ि ि।

"मािलिक, गर कऽ नवका लीस्ट बनलबलाऐ तिन ने देिलाऐ जे हमर दुनू भाइक तँ नामे नै अिि।"

"र, सभ घरक लीस्ट तँ अिीए हमरा िग।"

"नै मािलिक, एतए तँ िह मासमे दू-िलि बाप-पुतके फुटने कतेक घर बढ़ जाइत अिि।"

"रे िनेसरा, ई हँजेड़ तँ बढ़ि जाइ ि र।"

"हँ मािलिक, गहूम आब सधै पर अिि, की करबै?"

"हे ई ि एक सए र पैया।"

"मािलिक, एकै सएमे कतेक गहूम एतै?"

"र िनेसरा, ई गहूम ि ि नै ि, ऐ र पैयासँ कंिम आला बाल्ट दही लयानीमे।"

लानगी

एम्बुिन्स दरबजजा पर िला गेि ि ि। सभ बेटा-पुत हु बूढ़ाक िर कात तैयारीपूवक ठाढ भऽ गेि ि ि।

"कतएसँ अनलौ एतेक रास पाइ।"

"बाबूजी, लानगीसँ पैघ पाइए नै ि। कतएसँ अनलौ, कोना अनलौ? से पश करब व्यथम"

"हम नै कराएब आपरेशन। घुमा लदऔ िकक पाइ। िििस हजार टका पलवारक भरि-पोषि ि ि रािल िनाइ नीक। हम तँ आब मरिसन िहे।"

एम्बुिन्सक दरबजजा ििित बेटा बाजि-

"बाबूजी, अहाके एिन लालतो रहनाइ तँ आवश्यक अिि, पलवारक भरि-पोषि आ पकृला-पदत लानगीक नाम पर।"

(पलिव-जुिइ-९६मे पकािशात)

सेवक

ओकर िड़मे िसि असिहा देिल िरा गेि ि ि सभ। बेरा-बेरी कऽ अनलिन्हार िक सभ आलब ओकरा हाथ जोड़ए आ गोटा-गोटी कऽ मोटर साइलकिपर आगा बढ़ जाए। िक-बजारक गप्प गाम भलमे पसरि आ सौसे गाम दिमलित भऽ गेि।

गोटा-गोटी कऽ िक िकपर जुल्ट गेि। सभ अपनेमे घोघाउज करैत रहि- ई िकैत ि। हँ, ई तँ जेना िकैतक सरदार बुझाइए। अनहोनीक शंकासँ सभ गस्त ि ि। लकि जुबक जीवटता देिबैत पुिकि- ''अहा के िी ?'', आ ओ मुलस्कया देिक।

"अहा के ी, बजै त्कए नै ी?"
“य, ओना नै सुनत ई, मार  एकरा, िऽ ि ू पुलीस ि ग।”
“पुलीस.....”, पुलीसक नाम सुलाते असाािहा ि ँसि युवक हँत्स देकि आ बाजि- “हमही तँ ी ऐ थानाक नवका पभारी पदशी सोमदत।”
अािनके सभ स्तब्ध भऽ गेि। सम्हरैत, हाथ जोल्ड पािम केकि सभ। आ पुिकि- “ई सभ के ि?”
"ई सभ पत्हने उगवादी ि। पुलीस मुठभेड़मे मारि जाइत, हमहीं बिल्ऐ एकरा सभके।”
"अहा गदार ी, देशदोही ी।" एकटा युवक आँत्कि तरेल्ड सोमदतसँ बाजि।
"नै, समाजसेवी आ राष्टभक्त दूनू ी हम।"
“से कोना?”
"एकर सबहक पाि बिलौ, एकरा सभके समाजक मुख्यधारामे जोड़बाक ि।"
"मुदा ई सभ तैयो वएह काज करत।"
"हम अभ्यास करा रहि ी समाजक मुख्यधारामे जोड़बाक ि।”
"मुदा फेरसँ समात्नक हेबा धल्व ई सभ एक-दू वारदात तँ कैए ित।"
"तँ अहा सभ वारदातके रोकू ने।"
"नै, हमर कमीशन रत्क जाएत।"

टवेन्टी-टवेन्टी

-नै त्कनहुँ नै। पुरि मात पैघत्प देिाएत से कोना हेतै ?
गामक बीि भरि पंियतमे मूँह िाििए वाि पत्हि मत्हाि ििह समृत्ल। पंिती ऐ ि बैसाओि गेि ि जे मत्हाि आ पुरषमे के उनैस आ के बीस। आधार बीसके मानि गेि ि।
पुरष पंि- मगीक सभ िजक पूत्लबाता पुरि होइि, तँए पुरष मगीक आशयदाता भेि। तँए पुरष बीस आ मगी उनैस।
मगी पंि- मगी पुरष पर आत्ताात नै ओकर सहिर होइत ि। जँ से नै तँ सभ पुरष पुरषे संग जीवन त्वबता लीअ। जँ पुरष बाहरक देबाि होइि तँ मगी घरक रक्क। पुरष मात कमा अनैत अत्कि। शेष घर-दुआल, बाि-बचि सभक देिभाि तँ मत्लाए करैि। सत्प तँ ई अत्कि जे पुरषक जीवन संपूणतिने होइि जिन मगी सहिल्लि बनैि।
-एकदम सत्प, तँए दुनूक अत्काकार बरोबल।- पधान बाजि।

नेओं

जनता आब बेसी िािक भऽ गेिए। त्वशेष कऽ िनावी मदमे। सत्प। ई मात कहबी नै ि, देिबोमे अबैए। नै..। दरबज्जापर अबैबि कोनो उम्मेदबारके नै, नै ने कहैए। सभके गप्पसँ िश रात्कि सबहक िर-त्कीत ित रहैए। मुदा मतदान ओकरे ि करैए जे त्क बेसीसँ बेसी तात्कात्कक िभ दए।
जनता आब गत्ल िकि नेता सभके। सभटा जीत कऽ जाइि जनत्हत वास्ते आ कहबैए जन-पत्लालात्व।

मुदा ओतए जा कऽ ि गैए अपन पेट कुल्हआबए। एक-एक गोटे वा िट-िन पाटीक शतम्र बनबैए सरकार। आ जिन बेर अबै ि जन कल्याकि, भारतक त्वकासक, तिने सहयोगी सभ घीिए िगैत ि टोंग, अपन स्वाथमूलामवास्ते। जनताक धेआने नै रहै ि या ई कहू जे जनता िि त्वकि बाक्तीये नै जाइ ि। आ ताधत्व पामि बरि बीत्ला जाइ ि, सरकारके अपन कुसीक पवा त्वस्थर करैमे। ता आत्व जाइ ि अत्वाि िनाव। जे सरकार पुना कुसी त्वस्थर नै कऽ सकैए ओइ सरकारके पित्ला कहा ि जनत्वत देिवा बास्ते।
“ठीक ि सरकार बदितै तँ मँहगाइ घटतै।"
(झारिि सनेस-त्वसतम्बर २०१०)

बहुराष्ट्रीय कम्पनी

नवका-नवका मशीनके देिबाक िि धरोत्व िता गेि िि गाम भत्वक िकक। मगी पुरष सभ उतसात्वत। काल्ह साझे त्वकेदार आत्व कत्व गेि- तोरा गामके आब शहर जका बना देि जेतौ। ऐ ठाम बनतै नवका कम्पनी। त्वदेशक कम्पनी।
-तँ की हम सभ उजात्व देि जेबै?
-नै, तोरा सभके अत्वाि गामक परतीमे बसा देि जेत आ काज करबा िि तोरे सभके पत्वने बजाओि जेत ।
-बाह। ई तँ बहुत िशीक बात हमरा आर िि। मजूरी करऽ परदेश नै जाए पड़तै।
साझ होइत-होइत सभटा हत्वयर गािि सा देि गेि। सौसे गाम, सुन जका िगए िगि।
त्वकि त्वन पतीकारत गौआ जिन ऐ भूत्वक अविकन करबा िि आएि तँ िरकात तारक घेरा देि िि आ िगा देि गेि िि कैक्टस। हा.... हा, ओकरा िबही कने।
-हा..... हमर सबहक बसि-बसाएि जमीन उपटा देकि आ िगा देकि िि काट। ओ काट जे भोगब तँ दूर िअब सेहो कत्वन।
(त्वात्वि सृजन- अगस्त-त्वसतम्बर २०१०)

त्वशासघात

माए-बाबूक नै ित्वतो त्वंकी अपन दोस भाएके संग कऽ परीक्षा देबा िि बोकारो गेि। ओ अटूट बन्हन एवं पत्वत सबंधपर त्वशास कऽ ओकरा संग गेि िि। करबो की करैत, अपन कोनो भाए जे नै िि। संग जाइत के? ओकरा संग नै जाइत तँ अइ बेरक परीक्षा िड़ए पड़तैक, मुदा ओ अइ बहुमूल्य अवसरके नै िड़ए िहैत िि।
अधरत्वाया... युवराज होटिक एकटा कोठरीसँ त्वत्वएबाक स्वर-"भइया, ई की कऽ रहिहुँ अहा? ित्व त्वअ हमरा। भइया...।
ऐ बेरक स्वर बेस कड़गर िि। "हम अहाक भाइ नै िी। हम अहाक पत्वा सेहो भऽ सकैत िी।"
"भइया, पत्वा तँ भऽ सकैत िी मुदा पत्वात नै होउ।”
श्याम अपन दाशत्वाक अंदाजमे बाजि- "िक सभ अनत्वन्हार बूढ़ा-बूढ़ीके कका-काकी, जवान िड़कीके त्वसस्टर, जवान िड़काके भाए कहैए। तँए की हम अहाक भाए भऽ गेलौ?”

फेर स्वर आएल- "हमरा अहाक बीच भाए-बहीनक नै, युवक-युवती मातक संबंध शेष अछि।"
सगरो कोठरी अन्हार भऽ गेल.....

अन्तर-आत्मा

-अहाक मुँह केना छैए जेना छिने हो।
-कने घुरि तकिऔ ने सजनी हमर नजरि गड़ैए।
छौड़ाक हूजूममे सँ छौड़ीक हुजूमक एक गोट छौड़ीके छिछ करैत जा रहल छल।
दोसर पछ -एक गोट छिमा देबै रौमे?
-हे सम्हार अपन मुँहके।
-जँ नै सम्हरत तँ.........
-तँ हे ठीअ...
पएरक सैंडिल हाथमे लिए क छौड़ाक मुँहपर।
-छि छि केना करै छिअ... जेना हम छुनकर साल रहलअछि।
-ऐ एना छिझाइ छी किएक?
ऐ बेर छौड़ा जीवट देखबैत अपन बाता पर अड़ल रहल बाजल- ऐ, अहाके मोन नै करैए जे हमरा मोनमे अछि ?
छौड़ी कनखिए ताकलक नजरि लाजिक।
छौड़ा गदगद भऽ बाजल -साल नै छी तँ की हेतै, कुमारि तँ छी ने।
छौड़ी बिहुँसैत तकलक। दुनूक नजरि सोझा-सोझी भऽ ठमकि गेल।
छौड़ीक जीवटते दुनूक बिआह बिना दहेजक संपन भेल।

कमर लासा

-माए गै, लाकोनमा पाथर छिटा दएे। बड़ सुनर छिगतै।
-धुर बताह, छिल्ल दही। बापके कहै छिअ तँ करहयो काने-बात नै देलक आ तूँ कोन छिए एलेन।
-गे माए, ई पोछि दए दे हमरा, ऐपर मोती हम छिढेबै।
-यै मैया, की देखै छी लाहालह-लाहालह कऽ। नीक नै छिगै छै की?
-गे माए, गै माए। बीत भरिके छौड़ी तँ बूढो-बुढानुसके कान कटैए। यै कलाया हमरा वएह छिठी दअ जे अहाक कमर लासा बनल छिक अछि। केहन छिछि छै। केहन सजाएल छिगै छै। हमर कलायाके बड़ पसिन पड़तै।
अपन पहिल कमाइ स्वरूप पाओल बीस रूपैयासँ हुलसि उठल आ ओइसँ बेसी खुशी तँ ओकरा एहन भेल रहै जखन की छिराजपुर वालीक भाउज ओइ छिठीके देखि हैदराबादसँ आछिरमपठेने रहथिन्ह।
कमर लासाक अद्धा, रहमानक बनाओल छिठीसँ लागल छिछिकि नाम देशक कतेको भागमे छिलिस भऽ गेल छै। मुदा आब ओ नै रहल। समूचा छिहेलयासरायमे असगरे आब बसल छिछ ओ। आ तकरा बाद छिहेरी जातिक पारंपरिक व्यवसायक परंपरा जका बला गेल रहमान।

कमरलासा कोनो कलाया-बहुलयाक हाथमे िहठी देिख लबहुँल्स पड़ए-- हमरो लबआह हेतै। अपन लबआहमे िहठी हम अपने बनाएिन पल्हरबै।

रहमान दम्मासँ मल गेिन िछ। िहठीक काज जका दम्मा सेहो ओकर पुश्तैनी ीिज िछ।

-आँए गे िड़ी, लन भल ि-ि लकए करैत रहै िछ?

-मैया, आला फुकैत-फुकैत कतेको सािसँ दम फुिट रहैए। अही बेमारीसँ पल्हने हमर अब्बा, फेर अम्मी हमरा िल्ह िश्रा गेिछ।

-कहू तँ, िहठीक मीिि सनक ठोर िह सन स्याह िगै िछ। एनामे के लबआहत तोरा। लन लबआहि रहबे तो।

-नै यै मैया, हमहूँ एक लन िहठी पल्हरबै। अपन बनाओिल करजलाया िहठी। जे की नहेलयासरायक अिवे राजस्थानक जोधपुरे टामे भेटै िछ।

-यै मैया, ऐ बेरक िहठी तँ केहन दन िस लमानाएिन जका । आब एहनेसँ काज िबिए पड़तै।

-लकए, की भऽ गेिल बजारमे?

-आब कमरलासा नै रहिल।

-की भेिल ओकरा?

-िहठी बनेबा िि आला फूकए पड़ै ने, सएह िहठी सेकैबिल आला ओकर लानगीक लिनगी बला गेिल।

गिबि वालमंम

बहुतो सरंजामसँ बनाओिल गेिल िल घर। घर पका तँ बनाएिल गेिल िल मुदा ऐ महँक आधुलाक सुि-सुलधा आ एकर साज-बाज एकरा परोपटामे दशमीय िज बना देने िल। टोि-पड़ोसमे फूसक घर बिल सभके कििट िगै अपन कमाओिल पाइ आ बनाओिल घर पर।

जाड़मे साहेब दारा लदेशी िणिक हीटर, गीजरक उपयोग ल्कित करैत रहि अपन पड़ोसी सभके। आ तइपरसँ ओ सभके सुनबलमान्ह जे ऐ बेर पिि गमी हएत। तिन देिब हमर सुि-िन। आ ई कल्ह मोने-मोन िूब पसन होइत िहि। मुदा ई सभ सुनलाहारक मोन मन्हुआ जाइत िल।

सते.. ऐ बेरक गमी.. आ रदसँ िक िटपटाए िगिल। आ कनेकबे लनक बाद अकाि पल्ह गेिल। असकत भऽ गेिल सभ वातानकूलित यंत। पंि आ लबजिल। साहेबक िटपटीक कोनो लकल्प नै िल। पड़ोलया, गौआ-घरआ सभ कमिाइतो आशक संग लन कटैत रहि। गमैया िक सभ अपन-अपन पकृला पदत बास आ िढक घरमे संतुिलत जीवन जीबैत रहि। लकएक तँ जीवन भलक भोगिल यथाथमशलक्त ओइ तापके सहबाक क्मता दऽ देने िल। आ वएह जीबाक बाट देिि रहि िल।

मुदा देिू जे ओ सिपूलाइ़ जे गिबि वालमंमसँ बिबाक फेरमे आरो उष्मीय तापके बढ़ा रहि िल। गौआ सभ रद आ ताप सलतो हलयर मोने जीलब रहि िल, मुदा साहेब पानसँ लाकिि मािल जका भऽ गेिल िहि।

ईशर कोनो िज सबहक िि बनबै िल्म आ मनुि अपन सुि-सुलधाक िि लामाि करैए।

सरकारी दाि

-की तहूँ ऐ काजमे संग ििही। स्सार...... बजै त्कए नै िंए।

दरोगा जी ओकरा हुरपेटैत गत्नया रहि ििह, मुदा ओ ुिप्त िि आ बीि-बीिमे मुत्सकयाइत िि। असिमे ओ ऐ परोपटाक िसिद्ध समाजसेवी आ एकटा संस्थाक संिािक िि। ओकर अपराध एतनीए िि जे ओ दरोगा जीके कुिात्तमे संग नै दै िि।

ओ ुिपी सधने बेरा-बेरी कनत्तख्ए आँत्िये सबहक मूँह तात्क रहि िि। करमान िागि िि िकिक मुदा केओ बाजए नै, कारि दरोगा त्वरद जे बाजि से...

धड़ाधड़ पहुँत्ि रहि िि बंदूकधारी सभ। आइ भोरे-भोर एही थानाक त्सपाहीक बेटीक बित्कार भऽ गेि, सेहो त्क तँ थाने पत्नसरमे।

-के िरे ई फेकना स्सार। तो सभ बकि-बहीर त्कए बनि िँ।

दरोगा पर साहबी झारैत एस.पी. साहेब बजिाह।

दबि जुबानमे दरोगा जी सूत्ित केिाह- "सर, त्वान-टोत्तयाक ि।

-अरे फेकन त्संह? ओकरा पर तँ १०००० रपैयाक इनाम रिने अत्ि सरकार। ओ सरबा तँ बड़का उिका आ तस्कर अत्ि।

फेर कने रत्क एस.पी. साहेब आदेश दैत बजिाह- जाउ पता कर। कत नुकाएि हुअए। त्जन्दा त्क मुदा हात्जर कर।

ऐ आदेश केर सूिना सौसे पसत्न गेि िि। सभ अपस्यात।

-हे.... ओइ घरमे अत्ि।

एकटा बच्िा इसारा दैत बाजि।

इसाराके फिा केिाह एस.पी साहेब तँ देिित त्थ जे फेकन त्संह दरोगा जीक िकी पर बैसि। बस त्सपाहीके आदेश देिाह....

-एकरा पकड़ आ िऽ िि थानामे।

त्सपाही मुँह नुत्काआबैत बाजि -सर दरोगा जीके कत्हऔन्ह ने। एस.पी. बजिाह -ई स्सार दरोगा की पकड़त? घरमे कुकुर पोसने अत्ि। एकरो िाइनमे ि।

तावत् दरोगा जी एस.पी. साहेब िग आत्ब हुनका एकात िऽ गेि आ बाजि -सर, परसूए ई अटारह िािक तस्करी केिक जइमे एक िाि तेरह हजारक िाभाश दऽ गेि अत्ि।

एस.पी. साहेब थोड़ेक नरम होइत दरोगा जीसँ बजिाह -ठीक ि, ऐ थानाक तँ अहीँ मात्िक त्ीऐ। अपराध त्नयंत्रात करबापर कने आरो बेसी धेआन त्दऔ।

आ ई कत्ह एस.पी. साहेब स्पेशि टास्क फोसक्क आपात मीत्टंग िि त्वदा भऽ गेिाह।

त्माया जरए सगर रात्त

अहा.. मुँह तँ िगै जेना िाने हुअए आ आँत्ि तँ बुझू जे मृगनयनी सन। कने मूड़ी तँ उठाउ। एक बेर नजत्न त्मा कऽ तँ देत्िऔ।

-आँ...... एहन झटका तँ त्वजुलयोसँ नै ागा ा। कोनो बात नै, त्वआहक पात्ता पत्ता रात्ता एहने संवेदनशीा होइत ा।

-हे यै....की भो। एना आँत्ता सँ गंगा-जमुनाक धार त्वकए? हमरासँ कोनो गाती भो की।

-नै गाती तँ हमरासँ भो जे अपन गातीक सजा अहाके दऽ देलौ।

-केहन गाती आ केहन सजाए?

त्वकशोरी होइतत्वहें हम यवनक मधुमासमे ाद्धी ागेबाक सोत्ता उतरए ागलौ। अमीरीमे पोसाइत, जुआनीके पत्वते मोन बान्ह-त्वकड़ीके तोत्व़ बहार हेबाक ाा औनाए ागा ा। हम कइए की सकैत ाौ। त्वकशोर वयमे भटकबाक एकमात कारा ा- ई भरा-पुरा देह जे जबनक ारम पर जा त्वका ा। जकरा अमीरी आ जुआनीक बीासँ त्वका संकमा घेर ाकि। त्वआहो तँ अहा संग वएह सभ करेकि जे हमर बाा संपत्ताक पत्ता उपभोग केने ा। हमर माए-बाप अपन बेटे जका बुत्वझ सभ सुा-सुत्वधासँ पूमिाटा ात्वध दोत्ता। कारा जे माए-बापक एक मात संतान रही हम।

-यै, हम बडा उम्मेदसँ आजुक रात्ताक पतीक्षा करैत रही। हमरा सोझाँ उपत्वस्थत कएा गो बहुत रास कथा स्थत्वात भऽ गो ा। कारा ा हमर सोा- जे हम शहरआ ााीक त्वव-इन-त्वाशनत्वापक फैसन वााीके अपनासँ दूर राए ाहैत ा।

-य, हमर त्वआह भऽ गो। हमर कुमात्वक पद ात्व गो। मुदा हम अहाक त्वनगी ाराप नै करऽ ाहैत ा। त्वक़ा बामिपत्वहने ागा एडसक बेमारी हमरा त्वनगीक सीमा दो देकि अत्ता।

-सत्ये, बेमारीक कोनो त्वशास नै, मुदा अहा एकटा रोगी मात नै अहा तँ ात्वतहीनसँ बेसी त्वक़ा नै दोइ ा हमरा। जँ एतेक त्वाषावान ा जे अपन रोग हमरामे नै दोए ाहैत ा तँ अपन मुँह पर पोता कत्वासँ हमर त्वनगी स्याह त्वकए केलौ?

-य, ऐ समाजक परंपरा त्वामाहैत ाक-ाज आ अपन रक्तथमपुरषक गात ागब आवश्यक बुझलौ। बस। बाहर रदक धाह दोएा। मुदा मोनमे अन्हारे-अन्हार पसत्व गो ा। उजासक बाट सेहो अन्हराएा।

भावना

रेन दुघत्वनाक ाबत्व सुलाते ार वणक्ति गामक ाक घटनास्था पर जुत्व गो। सभ अपना-अपना त्वसाबे पील्त्वत ाकक सहायताथमसरंजाम जुटा काज करए ागा।

स्त्रयेंसेवकक भीड़ बेरा-बेरी अपना सरंजाममे घाइा भो त्वक्तक मरहम-पटी वा अन्यान्य आवश्यक सेवा देबए ागा। स्त्रयेंसेवकक दा ऐ तरहे सेवा करैत आगू बढैत गो।

आाक जीके आगू बढैक कममे नजत्व एकटा युवती, जे त्वाड़कीक टूटा तख्तीक तरमे दत्व कुहत्व रहा ा, पर पड़ा।

ाड़ीक कपड़ा शोत्वतसँ भीजा ा। समीजक बटम सभटा टूटा। उठबासँ सेहो असोथत्वत। ओ मात टुकुर-टुकुर तकैत दोएा। आाक जी युवा समाजसेवी जे आइ धत्व समाज सेवाक ात्तार एकसर जीवन जीत्व रहा त्वथ, ाड़ी पर नजत्व गड़ने रत्व गोह।

ाड़ी उकसुकाएा। मुँहसँ त्वक़ा बजबाक असफा पयास केकि। हाथो उठेबाक पयास केकि मुदा से नै भो।

देहसँ हारि मुदा जीबनसँ नै हारबाक कुिबुिहलत। जोर दैत मुँह िोिकि -भैया.... य... कुताबि भैया। आ..... वासनासँ अलाभूत समाजसेवी भाइ साहेबक भक िुजि। बजिह..... की......की कहै ि।
-हमर कुतीक बटम िगा लअ।
आ भइया अपन सेवा पूर हेबाक अनुभव केिला। मुदा िोड़ी तखनी तर दबि ओलहना टुकुर-टुकुर तकैत रहि।

तंतमेि
एक-एक पाती पढबामे रसगर िगै। आ लीखलाहार रभसगर। गलल-गलल कऽ पाती बनन सन बुझाइत िि। बुझाइ जेना ओकरा ऐ तंत-कन्याक अििवे कोनो िोड़ीसँ आइ धलल भेटे नै भेि होइ। एिन धललक पाती-पाती ओकरे समलतस रहै। सोझोँ-सोझी कोनो गप्प कहा भऽ पाएि रहै एकरा सभके। गप्प तँ दूर, भेटो नै िि आइ धलल दुनूक।
-बुर्चि परीक्ा तँ पूरा भऽ गेि मुदा देि लीऔ जे कमम्पूटर पर भलल-भलल राला िगिि रहै िएि। परीक्ाक समयमे तँ सकाि सूलता जाइत िहि। की-की करै िही आइ-काल्ह ?
-पापा एन्जवाइ।
-हँ..हँ, से नीक बात। वगमक पढाइ आ परीक्ाक बाद बोझ तँ हल्िुक भेिए लक् िुलनक िि। िि, मोन सेहो हल्िुक कऽ ि।
-पापा, आब एकटा िपटाप िबए पड़त।
-लकएक? कंप्यूटरमे ओ सभ िीज नै ि की जे तोरा िही काज करबाक िि।
-पापा, िपटापसँ कलहयो केिनो िकिक संपकमे रलह सकै ि।
-मा .......गै मा.....
-की भेि, कोनो िराप सपना देििही की?
-नै गे मा, सपना नै सत्ये िि। तो मना करै िएँहऽ तँ िगै िि अनसोहात। मुदा आइ सत्यसँ भेट भऽ गेि। हम तँ ओइ युवकक पतला जीवन न्योझावर कऽ देबाक सपनामे रही। मुदा अजुका समािर हमर आने नै आँलियो िोलि देकि।
-की देिलीही समािरिमे?
-ओ युवक जकरा हम अपन जीवनक आधार माला िने रही कंप्यूटर पर, ओ फुलसआहा िि।
-मतिब?
एिने समािरिमे देिकि जे पुलीस ओइ युवकके जेिमे िऽ जाइत िि। आ समािर कहऽ बिि कहैत िि.. मेकि करामातसँ फीमेि उपभोग करए बिि पुलीसक लारफ्तमे।
-हँ गै.... तंतमेिसँ मोनक शुलद भऽ सकै तिन ने।

बेरपर
-हम सभ पलहने एलौ मुदा िरात पलहने नवटोलीया बिके बाटि जा रहि ि। ओ मंतीजीक गाम ि तँए। हम सभ मंती जीके भोट नै दै लीऐ की?

-ऐ, बहुत बकर-बकर करै ि ी अहा, ि रात ि बाक अि तँ रहू ठाढ ि इनमे।
मंती जीक ल ि ुिका सभ रोब झाड़ैत बाजि आ एकटा बुढबाके धलकया देि क।
-मंती जी मुदाबाद... मुदाबाद।
-ि रात नै तँ भोट नै।
-अहा सभ मुँह की तकै ि ी। ि ि गऽ बनुक, बदी पहील कऽ पदशनी ि गबए एलौहे?
-नै सर.. गोि ी ि ि देबै तँ ि ि मिपुर बि सभ नै ि ड़त हमरा।
-य, ि ि ीयो बनुक फायलंग कऽ देबै तँ पड़ा जाएत ई सभ।
-आ भोटक बेर?
-भोटक बेर नोट ि ने। बनुक बि पर ि ल ि बै। ई भुि र सभ एलहना मूँह देि त रल जाएत।
-यऔ मंती जी, बनुक तँ नामदमि कऽ ि ि ए, जकरा बुता नै हइ ि ि ड़बाक। हम सभ तँ सभ तरहक बुता रि ि ी, बनुक लनबाक, रि बाक आ ि ि बाक सेहो। कोनो नेताके थ तेबासँ ि कऽ हरेबा धल सेहो।
आ सभ ि ि म पुर बि अपन बोलया उठबैत बाजि -हम ि ि मिपुर बि ि ि ज दै ि ी, जँ अहाके बुता हुअए तँ अला ि भोटमे हमरा गाम आबू भोट मँगबाक ि ि।

लयाद
पनही केर ि मकी आ ओकर उपरका बनाबल पर हमर नजल पलते हमर मोन ि भा गेि। पहील कऽ भजारि क बाद नाप सेहो लट भऽ गेि।
मुदा जि न पहील ि ि ए ि गलौ तँ इहो पनही तरे-तर पएर काटब शुरु केि क। ठीक ओलहना जेना फरीक सभ तरघुस ीमे ि गि, सल ि न सतबैमे ि गि रहि ह। हमरा सोझाँ ि ि दुि र आ पीठ पाि ँ लनताइमे थाकल नै।
हम अपन अगि त-पि त पड़ोसी सभसँ बि सँ परेशान रही। मुदा अपन संस ारवश हुनकर सबहक सभ काजके अनठा अपन बाटपर बढैत रहलौ।
-ह, ि रंजीव पएरक एहन दुदश ा कोना भेि ह? हम सभ तँ ि राम पल रै ि ी तँए पएर उदाम रहैए, मुदा तो तँ राजा-महराजा बि पनहीमे पएर घुल औने रहे ि ह ?
-य कका, ओ पनही तँ राजे-महराजे ि ि ि जकरा पएर नै उठबए पड़ैत ि। हमरा सन बोल हारक ि ि तँ ओ कािबल गेि। बाहरसँ जतेक ि कन-ि ुनमुन भीतरसँ ओतबे ि ि ओदार केने जाइए.....
कका सूल ि ि गेि ि ि ह।

गाती
परोपटामे सोरहा भऽ गेि जे ऐ बेरक बी.ि ी.ओ. ल ि ड़े जाल एि ए। कतेको गामक ि कक आशा जाल गेि। सभ सतेि हा जाल सभ पसन भऽ गरीबी रेि ासँ कटि नाम जुल जेबाक, अधि ड़ घर पूरा हेबाक सपनाके यथाथमे बदि बाले सोि ए ि गि।
ि परासी जा कऽ बी.ि ी.ओ. साहेबके कहि क -सर, बड़का मालि क आएि ल कोनो काजक ि ि। अहासँ

भेट करताह।
-बड़का मालिक?
-हँ सर, मने हरहर बाबू।
-हलहर बाबू ? अचि कलऔन भीतर एताह।
दरअसि पुरना बी.िी.ओ. नवका बी.िी.ओ. के कान फुलक गेि रहत्थन्ह -ऐ ठाम जाला-पालाके लबसब जाएब। परोपटाक मालिक हलहर बाबूके धेने रहब। आ नवका बी.िी.ओ. दहि फेकैत बजिाह पुरना िग -तँए ने िह िािि दऽ कऽ बदिी करबेलौ हए हम।
-जी मालिक पिम।
-की र पमोदवा, तोहरो आँिि लि गेिए जलायारी बी.िी.ओ. के देििसँ।
-नै मालिक, की कहै िी अहा? काज नै भेि की?
पमोद एकै संग दूटा पश केिक।
-हमर काज नै हएत? हमरा संग ििरै करत तँ तेहन ठाम पठा देबलह सरबेके जे मुइिक बादो मोन रिताह तोहर जाला भाइ।
-हे र, रक... कहा जाइ िँ झुंकि-झुंि साहेबक िमारमे?
-आँइ रे पमोद, पहने नै िराइ िििहँ। आब तँ अपन जाला-भाइ साहेब एििुनहँ। की काज िि से कह ने सोझा-सोझी।
-इंलरा अवासक पाइ िँ बाकी।
-जते गोटेक पाइ बाकी िह, सभ गोटे िह सए रपैया जमा करह।
-आँए य, सुनै लीऐ जे साहेब ििटका िकक उपकारी िथ्यन्ह, तिन ओ पाइ िथ्यन्ह।
-पाइ ओतए नै हमरा िग जमा कर, सभ फाइि पास भऽ जेत। आ हे एकटा बात बुझ.... साहेब तोरा सभसँ नै हमरासँ पाइ लानबै िथ्य।

लढनी
गुत्थम-गुत्था भेि जा रहि िि िक, रेिगाड़ीक आरलक्त लिब्बामे। भीतरसँ बाहर धल सोहरि िक। देिबासँ बुझना जाइत िि गाड़ीक जेनरि लिब्बा सन। गाड़ी िुल्ल िुकि िि, मनुिपर मनुि िसै। की मनसा, की मगी, की बचि, सभ लसत्तम-लसत्त। सुतए बि सीटपर सुतब तँ दूर, बैसबाको जगह नै रहै। उपरको सीट सभ समानसँ भरि। लाचि तँ आरो बेसी समान। हम मोने-मोन िझाइत रही सरकार वा की रेिवे बिक लकरदानी पर। पतीकारत िकक सूिि एतेक नमहर बनेबाक कोन पयोजन।
अपन आरलक्त सीट पर बैसि सहयातीके पुििअलह -अहा सभ गोटे कँ वेलिंग लटकट अिि की?
धिाइते मुदा नजल लिि कऽ जबाब देिह -वेलिंग लटकट कहा अिि केकरो। हम सभ जेनरि लटकटपर फाइन दऽ जा रहि िी।
अपने लिब्बामे लकिुए आगूसँ सुनबामे आएि- हम सभ बैसबे करब। हम सभ कतए जाएब। हमर सबहक कोनो सीट नै अिि की?
एकटा आर स्वर -भाइ, हम तीन मास पहने सीट िलौ अपन सुलवधा िि। आब एिन की हम ठाढे

जाएब? हमर सीट ि ािी करै जाउ।
-नै करब सीट ि ािी। अहूँ आब अहीमे गुंजाइस कर ।
-नै, हम गुंजाइश नै करब।
-नै करब तँ जाउ, जे करबा अिी से कर । हम सभ एतऽ बैसि रहब।
-टी.टी साहेब, जगहसँ बेसी िोक, कहू ई केहन नाइंसाफी िै। वेल्िंग बि ो तँ ि ू अंल्तम स्थान धल्
जाएत। मुदा फाइन ल्टकट बि ो कत केकरो समान उताल कऽ जाएत। ओकरासँ हमरा सभके के बिाएत?
-सुनू, हम सुरक्षा बिके फोन करै िीऐ, मुदा ओहो की कऽ सकत ऐ गजबज भीड़मे। पहुँिियो तँ नै पाएत।
-तँ ल्शकाइत करी हम रेिवे ल्वभागमे?
-य, शीमान् ओकरा आमदनी पल्हने िाही, िोकक सुरक्षा तँ हािीक दात िै, ि ािी देिबैत रहत। अहा
ल्शकाइत कराउ, जँ ल्किु हेबो करत तँ वएह, जे अल्धकारी बेर-बेर अहाके बजा ओइ घटनाक बारेमे ि ािी
पूिि त।

अगुआ

अमेल्रकी संस्था युनेस्कोक आवाहनपर गरीबी भगेबाक मादे एकटा साधारि बैसारक आयोजन कएि गेि िि
जइमे संपूि िगामवासी उत्साहपूवभक उपल्स्थत भेि। बैसारमे आएि िोकमे सँ अल्स्तत्वक अनुसार दू फाट
बल्ा गेि िि। दुल्भर गामक िोकके पाि ू आ धोल्नगर गामक िोकके आगूमे स्थान देि गेि िि।
रोनाल्िो एल्क्सन बैसारक उदेश्यके फल्ाबैत बजिाह -भारत गरीब देश अिी, से सुल्न-सुल्न युनेस्को दुिी
भऽ अहा सबहक मदल्ि वास्ते आगू आएि अिी। अहा सबहक नीक भल्वष्यक वास्ते धनक एकमुश्त राल्श
अहाक पंिायतक मुल्खयाके देबाक ल्नि भय कएि गेि अिी। ऐ पाइसँ अहा सभ गाममे रोजगार कऽ आल्मल्नभभ
र पे समृद हइ जाउ।
-नै ल्कनहुँ नै, हमर सबहक ल्वकासक िि आएि पाइ सोझे हमरे सभके देि जाए। नै तँ अहू बेर वएह हेतै
जे होइत एिैए।
आ रोनाल्िो अवाक् ििाह ई सुल्न। आ सोिी रहि ििाह, वास्तवमे भारत गरीब नै अिी बल्ल्क एकरा
नकिी र पे गरीब बना देि जाइ िै ल्कि ु िोक दारा।
सभ ल्ति भऽ गेि िि।

साढे एकैसम सदी

-हेिो..... हाय।
-की हाि िै ?
-फाइन।
-ई कोनो एबाक समय िै। िढ घंटा िेटसँ ।
-िी ल्सया ल्कए गेलौ। रस्तामे स रभ भेल्ट गेि। सल्ट गेि हमरासँ। कहू, हम भाल्ग जइतौ? केहन
एक्सल्वल्सएन्स गेन करैत ओ? मुदा अहूँ तँ समए पर नल्हए आएि हएब।

-हँ, त्तयाके गोल न पाकमे तते ने मोन गै  जे घेटा-जोड़ी कए ने  । ल्लते नै  ।
-ज न त्तयासँ एते घेटा-जोड़ी अ त न हमर कोन काज? अहासँ नीक स रभे जे हमर बाट जोहैए।
-ओ नामरद अ की जे अही टाक बाट जोहैए।
-हम जाइ ।
-कत?
-स रभ ग।
-कथी  ।
-इन्जॉय करबा  । हे जुगनू कतऽ ? बुढबा गाइ ग। की करै । हषक्क संग  हे की? आब र ? आव जाउ हमरा ग। कतए  अहा? यर पाकमे। आबै ?
-तँ कर  पतीक्ष जुगनू केर हम  ।
-ती त्तआइ  त्तकए? आब की केओ केकरो पर आत्वात । एक जँ के क मना तँ दोसर तैयार ।
आब त्तआह तँ केकरोसँ कत  कऽ ए। मुदा भोगैए केओ, कत  केकरो दोसराके। पहने पथा  घर बद बाके, मुदा आब तँ घरब  बद बाक परंपरा ।
(त्तदेह अंक-७८मे पकात्वात)

दुनू जना एकै धना
काल्ह तँ भत्तपो  गत्तएने रहत्वन्ह यशोदा बाबूके मुदा आइ तँ एकेठाम  ह.........
शंकर बाबू ग जाइ , त्तनका गसँ केओ त्तराश भऽ कऽ नै अबैत अ ।
-मा क, रोका-टोकी तँ साधार  बात भऽ गे ए। ई तँ सभ त्तन रहैत आए  अ । मुदा आइ... आइ तँ ई बनमानु  सभ हमर इज्जत.....
-हँ य... ए ने क पर   भऽ रह  । .. , आब  कके अपनो समाजमे इज्जत आ पत्तष ा दाव पर  त्त गे क अ । जे भे  से उ त तँ नत्तए। मुदा आगू फेर एहन नै दोहराओ  जाए। तँए कुकमीके  ड़  नै जाए से हमर कहब। आइ ओ अहा संग के क... काल्ह केकरो संग कऽ सकैत अ ।
गंगा बाबूके कत्तऔन्ह ने, जे ओइ टो मे जँ केओ मोकात्व  कऽ सकैए तँ मात गंगा बाबू। यशोदा बाबूक बेटाक त्तर द जँ केओ कल  अ गा सकै त्य तँ इएह गंगा बाबू।
-उहूँ... दुनू जना एकै धना।
-मत ब?
-मत ब जे काल्ह गंगा बाबू जे यशोदा बाबूके गत्तअबै  न्ह सएह दूनू गोटे आइ एकै  की पर बैत्त  ह त्तबै  ह। ई त्तक  नै करत्वन्ह मा क।
-य , ई हमर वशसँ बाहरक गप्प अ ।
-बुझ्ल गे । गाम भत्तमे यशोदा बाबू आ हुनकर कपूतके  ल्ल सभ नामरद अ । ठीक , त्तसाफ आब कोरटेमे मेंगबै हम।
-नै त्तकनहुँ नै.. हमर बाबू जीक बीत-बीत  त त्तका गे त्त। घरा  धत्त त्तका गे त्त। त्तसाफक आसमे तरबा सेहो  या गे त्त। त्तसाफ नै भेट त्त। भेट त्त तँ   तारी । एते तारी  धकयो नै उठा

सकत।
आ एकि ए दिनक बाद यशोदा बाबूक धुधुआइत घरमे धीधीआइत हुनक बेटा मल गेि ।

राजनीति
आधा भरि धैसिँ धीकिकैत पाला जका हािलामे पहुँची गेि ि ओ। सबहक सोझाँ मोिपर ताव दैत कहए -केओ कतबो उछलाआएत ऐ िनाबक बेर, मुदा ऐ बेर तँ हमही.......
जइ टोि जइ गाममे जाइ, सभ ठामक ि कि कहए जे भोट ओकरे देब। एकएक तँ कतेको बिसाँ ओ सबहक लासमाथमभावे सेवा करैत आएि अछी।
गामक अलपसंख्यक बि भागमे बैसक भेि। ऐ बैसारमे ि ककके उकसाबैत कहि गेि जे पभुदयाि तेना ने मोि पर ताव दैए जइसँ ि गै ि जे वएह टा मोि बि ि, बाद-बाकी लामोधीया। मुदा पभुदयाि केर सेवा लऽ िटका-बड़का तेना ने दबि रहए जे केओ ओकरा लरद िनाबमे नै ठाढ भेि।
-इंजीलायर साहेब, आब मोि कि सबाि ि। अही एकि कऽ सकै धीऐ। आन सभ गोटे पाि िँ हलट गेि ह। अहा लकीके एक बेर कस्ब कऽ देती धीऔ िनाब ि ड़बाक ि ि।
-आँए य, गामक गोि सीक कारि हम ओकरा ऐ धधरामे एकए पाकए लए? कतेको पाइ ि िमकऽ ओकरा पायिट बनेलौ अछी हम। ओना जँ हम कहबै तँ तैयार भऽ जाएत, मुदा पभुि िके िलऽ अहा सभ ओकरा भोट देबै की?
आ आब रंग-तािि शुर भेि।
पभुदयाि -हम िनाब जीती थक हारी, अहा सबहक हम सेवा करैत रहब। बस ि िि एतबा अनुरोध अछी जे िनाब लभाता हमरा पका सेवक बना लअ।
इंजीनीयर साहेब -हम सभ कलहयो राजनीतामे नै रिच रि लौ। मुदा ऐ बेरक िनाब हमरा अनसहाज ि गि जे लानु पढि आ कुकमी उम्मेदवार अहा सबहक बीि अछी। आब अंताम फैसि अही सभ करब जे अहाके की ि ही।
-मालीक मुँह सम्हार । पभुदयाि बड़का-िटकाक सभ लदन सेवक रहि अछी। ओकरा ि ि कोनो अनसोहात बात बरदास्त नै कएि जाएत। अहाक लकी जरर पढि अछी मुदा ओ कतेक ि कक उपकार केि क अछी?
-य जनता िकला, पभुदयाि के सरकारी पाइ शोधबाक आदत िला गेि ि। जि न जन-पतलालाथाक ठप्पा िगतै ति न अहा सबहक ि ि आएि पाइक िजाना धला ि ि कऽ देत। दोसर जे गाि बि काि ि ि तइमे तँ ओकर नाम एि न धल ि ओकर।
आ लकी बाबू एक मतसँ भोट जीला गेि ह।
पभुदयाि भोट देबाक आभारक संग अनुरोधे बाजि -जनता िकला, हमरा तँ पि िसँ लभाि धलक बाट देि ि अछी अपन गुजर-बसर ि ि। मुदा अहा सभ ताधल लि ड़ि रहब जाधल सताक राजि अपना हाथमे नै ि ब। सभ हँ मे हँ लाबैत अलाि िनाबक बाट जोहए ि गि।

सड़क-िप

-सरदार भाइ, कने एम्हर देखिहक।
सुन भेलि बाट पर एकटा एकसर जाइत छौड़ीके देखि छौड़ा सभ छलि करए लागल।
छौड़ी पहिने सकुचाएल, घबराएल, एम्हर-ओम्हर तकलक। केओ कतौ नै देखेलै। श्वनमत बन्हलक आ ससरैत कऽ गेल लालिक समूह लग।
-रुकु, वस्तु बडि विलकिन लगैए। कने नाम पुछि अबहीने।
समूहक एक सदस्य अपन दाशांसाक टोनमे बाजल।
-गै की नाम छौ ?
-तान्या...
-बापक नाम की छौ?
-मयंक....
-हे रुक.. सरदार भाइ कने एम्हर आबह।
-भाइ .... लौलौ बाजल, -ओ अहूँ सबहक भाइ छथि।
-हँ हमर सबहक सरदार भाइ छथि ओ।
-ओ तँ हमरो भाइ छथि।
ऐ बेर छौड़ा सभ अकचकाएल। ताबत सरादर आबि गेलै।
-भइया... गोड़ लगै छी। हाथ जोड़ैत लौलौ बाजल।
सरदार भाइ अकचकाइत बाजल.... हम नै चिन्हलौ अहाके।
-यु, अहा हमर बटोही भइया छी।
-हमरा कलाको मोन नै पड़ैए .... किएर छलि हमरा सबहक संग।
-नै यौ बटोही भाइ। भाइक रुपमे चिन्हार तँ कऽ लिलौ हम। मुदा मनुखक रुपमे अनचिन्हार छी अहा।
-मतलब?
-मतलब जे मनुखक पेटेसँ जनमल सभ मनुख नै होइ छै, जकरामे मनुखताइ होइ छै सएह मनुख भेल।
बाद बाकीके दानव बुझू जेना अहा लगै छी।

लावेश

-कते दिन हमही काज एब। लकड़ि अपनो तँ सोचि। सुलाते लबजुली जका लागल रहै ओकरा।
मोन स्थिर करैत बाजल -बाबू जी लकड़ि दिन आरो दिमिलअ। हम विशाससँ कहै छी जे अहाक पाइके हम साथर्क करब।
-आरो कते दिन हम ताकू तोहर आशा? सोलहिमे बरिसँ तो हमरा ठलक रहलि छिए। आब तँ बीसम गीलह गेलि तो। हम तँ अठारहम बरिमे जमा लिने रही मालिकाना।
-बाबू जी अहाक जमाना दोसर छलि। तखया बेरोजगारीक ई विकट समस्या नै रहै।
-हँ, से तँ चिन्ता होइए जे तोरापर खर्च भेलि धनक वापसी हेबो करत की नै। जँ भइयो गेल हमरा मरलाक बाद, तँ ओइसँ लाभ की? हम तँ अल्पकालिक लावेश आ आपसीमे विशास रखैत छी।
बेटा बकर-बकर मुँह देखि रहल छल।

नपना

एकटा मार्केट सर्वे करए वला कंपनीक प्रतिनिधि एकटा महिलासँ पुछलक- घरक मुख्य कमाऊ सदस्य के छथि?

-मुख्य कमाऊ सदस्यक माने की?

ओ फरिछा कऽ बुझबैत कहलक- माने घरमे सभसँ बेसी कमाइत के छथि?

-अच्छा... हम दुनू गोटे बैंकमे छी आ दुनूक दरमाहा बरोबर अछि। पति बजलाह।

महिला बीचेमे बजलीह- घरक मुख्य कमाऊ सदस्य तँ पुरुषेकेँ मानल जाइत छैक। तेँ पति कमाइत होथि वा नै।

पति तमतमाइत बजलाह- हम एहिनो कमाइत छी। आ भविष्यक कमाए बालिकेँ सेहो आश्रय दैत छिऐ।

-से कोना?

-हम नोकरीक अतिरिक्त घरक सभ काज करैत छी जे पुरुषक वशक बात नै छैक। तखन अहीं कहू जे मुख्य कमाऊ सदस्यमे हमहीं आएब ने।

महिला उतारा दैतहि मार्केट सर्वे कंपनीक आदमी लिखि देलक किछु। मुदा ओइ कंपनीक आदमीक मुँह लटकल गेल छलै..... कारण ओकरो पति नोकरी करैत छै आ घरक काज सेहो करै छै।

उत्तर

-मर बँहि, आब कथी कमी छै कोनो बड़कासँ। हमरो अओलाक बाल-बच्चा स्कूल-कॉलेज पास करऽ लगल अछि। बेटा मैट्रिक पास कऽ कऑलेजमे गेल, भातिज सेहो स्कूल जाइत अछि। पाइमे देखिऔ तँ कोनो बड़कासँ कम छी की। हँ ओ सभ सरकारी नोकरी करै छै, हाकिम-हुकुम छै, से दीगर बात। मुदा हमहूँ सभ दिन-राति खटि पाइ जोगा रहल छिऐ। हँ एक बात जनै छिऐ, ओ सभ कतबो कमाइ छै तँ पूरा नै होइ छै। काल्हि जोलान्दर मालिक अपने हमरा दूरा पर आबि पचास हजार रुपैया सूद पर लऽ गेलाह। कहलथिन्ह जे बेटीकेँ इंजीनीयरिंगमे नाम लिखेबाक अछि। भाइ आब अहीं कहू जे बड़का हम सभ भेलौं की हुनकर सभहँ लग बड़का धएल छन्हि।

-हँ सुनह.... हुनकर सबहक सभ बाट बनल छन्हि। आ ओ सभ अपन अगिला पीढ़ीकेँ बढ़ेबाक उद्योगमे तोरा सभकेँ ब्याज दै रहल छथुन्ह। आ तो सभ पाइ हेबाक अन्हरमालमे ब्याज कमा अपनाकेँ पैघ बुझै छह। कहियो एतेक सोचलहक जे हमर अगिला पीढ़ी कतऽ जा रहल अछि? कोन ठाम पहुँचि अटकत? की हेतै ओकर भविष्य? बड़काके बेटा पढ़तै तँ हाकिम हेतै, तोहर पाइ-पाइ चुका देतह। आ तोहर बाल-बच्चा पुता कोनो तरहे नोकरी पाबियो जेतह तँ ओकर खिदमति करैत बनल रहतह।

जा धरि ई फाट नै भरि सकबह ताधरि एहिना उधिआइत रहबह अकासमे।

देश-भक्त

सीमाक एकसर, स्वतंत्र आ मस्ती बीच जिनगी ओकरा आकर्षणाक पात बना देने छल। मुदा ऐ सबहक परवाहि केने बिना ओ अपन जिनगी जी रहल छल।

त्वआहक पिाश्चा एक बेर फेरसँ ओ समात्नाक आिािनाक पात बला गेि िि आ एकरा कारि िि" जे ओकर घरके िजैत केओ नै देिने िि। आइ पत्ाक जेबाक िात्म मास बीत्ा रहि िि" आ ओ एकटा सुन्द्र बेटाके जनम देिक। मुदा एकर बापके सूिना कोना भेटतै से सोिी ओ व्याकुि भऽ गेि। फेर मोन एि" जे िीटी िािी दै िीऐ, मुदा िकिघर के जाएत? हाित्ा तँ ओकर िि" नै जाए बिा। से सोिीते िि त्क बाहरसँ कोनो आदमीक अवाज एि"... िीटी अिी। ओहनो हाित्ामे ओ गेट पर आएि। िीटी िािी पढिक-------हमरा िद अिी जे अहाक पत्ा शहीद भऽ गेिाह..... आगू नै पढ सकि ओ।

मुदा पतकार सभके उतर ओ एना देिक... ओ मरि त्याहँए नै, बत्क अपन दोसर रपमे आएि िथ्य। आ सीमा अपन बेटाक िि सैत्ाक स्कूिक नाम ताकए ििग।

भूि

सतबरतीक मोहर अपना उपर ििगबाक िि नै जाला कतेको सासु आ माएके आरोत्वत केिक। एतेक धत्व जे कत्याया-बहुत्याके सेहो नै िाड़िक।

ओकरा पर शंका तँ भत्व गौआ करै मुदा ओइ मगीक िटि मुँहक सोझाँ सभ अपन-अपन मुँह बन्द राि ए। असिमे ओकर घरबि सेनाक नकरीमे िि। िटीक कमी। तइ पर ओ मगी गजबके सुन्द्र रहै। तँए ओ गामे नै अनगौआक नजत्मे आत्व गेि रहै।

एक त्वन गाम भत्क मगी सभ ओकरा बैसार कऽ कऽ खूब जान देिक। ओ मगी िूब आकोत्वत स्वरे बाजि -ऐ गामक कोन घरक बेटी-पुतोहु हाट-बजार आ मेिा जा कऽ नै घुत्ा अबैए। मुदा हम तँ कत्हयो अपन घरसँ बहरा कऽ दूरो पर नै जाइ िी। आब केओ पाहुन-परक एतै तँ हम ओकरा कोना कऽ भगा देबै।

-यै कत्याया, नै बरदास भेि तँए मुँह िोि" िी। पाहुन-परकके नै भगा देबै मुदा ओकरा संग करै बिा रंग-रभसके तँ रोत्क सकै िी ने। देिी औ, सबहक बेटी-पुतोहु अपन सासु-माए केर संग जा कत घुमैए आ फेर िि अबैए। केकरो त्कि भेि"ए आइ धत्व। अहा तँ घरेमे रत्ह पेट कऽ िौ अिी। घरबि जे अत्वि मासमे आएत तकरे िि ई रिने िीऐ ई अनजनुआ िीिका।

-बुझ्ा ने देथुन्ह ईएह सभ। हम तँ फोन पर फोन कए हात्व गेलौ। नकरी तँ बुढारी धत्व हेतै मुदा जबानी की धराउ राि ि"। ओ तँ आत्व घुत्व जेतै, फेर त्वयाबातीमे एबाक बिन दऽ कऽ। ऐ बीिमे हमरा जिन मोन हएत संग रहबाक, तकर कोन बाट हेतै। अत्हना कुहत्व कऽ मरबै की? आत्क एकरा शात्ाक िि दोसर बाट तकबै हम। भूि ििग पर भोजन िाही िािी बिन नै।

आ सभा ित्म भऽ गेि िि।

डेग

हम अपन त्ानगीक पत्हि िग मायक हाथे उठने रही आ दोसर िग बाबा अंगुरी धरा त्वयेने िि। तकर पिात्ा नै जाला पएरक िगके आगाँ बढेबामे कतेक गोटेक हाथ ििग हएत। आ बाबूजी, हुनके पत्यक-अपत्यक िाया हमर सासके उघैत रहि।

-बआ कतऽ ि ि एतेक रात्ता धल?

-त्सनेमा हॉि मे।

-आ ई के अत्ि?

-हमर सहपाठ्नी, नमता।

-अहाँ के कनेको ि्ना अत्ि अपन त्सानगीक, कलायो सोि ि अपन भलष्यक?

-बाबूजी, बहु बड़बड़ेि, बन कर मुँह! अहासँ बेशी ि्ना अत्ि हमरा अपन भलष्यक। अहाँके तीन त्दनसँ कहल रहि ि, िउ त्दअ हमरा तैयारी वास्ते दस हजार रपैया।

-नै पार िगत आब हमरासँ ई सभ। िरी कर हम? जतेक पार िगि पढा ति ि कऽ पुिमकेि।

-अहाके उघैए पड़त हमर भार, जन्मदाता जे ि।

बाबूजीके कहयो त्साकाइत करबाक अवसर नै भेटि हमर व्यवहार आ नैत्क त्वरिक पता।

## देह, मोन आ पेम

सबीना आ मोहत्सनक जोड़ी सौसे जोहि टोिमे पत्सद ि। ककएक तँ मोहत्सन सभ साझ पोत्ितन पीब कए आबए आ सत्बनाके ि ब मारै गत्याबै। मुदा सत्बना िपिप पाथर बला जाए। िकके आशियमिगै। जि न की ओकर टोिक आर मदमजनानी मीि हपनामे ि ब उठा-पटक, भागादड़ी करए, हरत्वरो मि जाए टोि भलमे।

कहयो कािक सत्बना सेहो मोहत्सनसँ मुँह िगा ति ए आ मोहत्सन भल इिि कूलत्त दै ओकरा। बाजा-भुकी बन भए जाइ दूनूमे। तिन सत्बनाक बाप अबै।

सत्बनाक बाप बड़का मिबी ि। सत्बनाके त्सािबए पढाबए जे अपन अलि लाया नराज भए जाइ ित्यन्ह जँ केओ मगी अपन पत्पर हाथ िड़ैए तँ। अब्बाक कहि बात सुला अपन नोरके नूआक िँटमे सुि ति ए। सम्मान करए अलि आ कुरानके।

मोहत्सनके मुइना आइ तेसर त्दन भए गेि रहै। ओ सभ त्दन भोर-साझ ओकर किि जा भेसै ि। कि उपर बेना िबैत ि। देिहो बि िकके आशियमिगै।एकरासँ बेसी पेम तँ कोनो मगी अपन पताके नै केने हेतै।

मुदा..........मुदा सत्य ि जे ओकरा मोहत्सनसँ पेम नै रहै। ओकरा मगजमे िि कुरान शरीफक ओ बात घुसि रहै जालमे कहि गेि रहै जे" साि मुसिमान वएह अत्ि जे कुरानक तहरीरके मानैए"

आ सत्बना कहयो सुनने रहए जे " जाबत धल पताक साराक माटत्त नै सुिइत ि तावत दोसर त्बआह वा परपुरि संपकमकुरानक नजत्ये अवैध मानि जाइत अत्ि"

आ....आब आस्ते, आस्ते मोहत्सनक कि केर लालि सारा सुि सकत भेि जा रहि ि।

पद खण्ड

गजेन्द्र ठाकुर

बिद करैए दाउन ने यौ

हाथी अगत, थ्यि, िइत, माइल श्वश्व
श्वर-श्विर सिुलार चलू संग घर घुश्व
ती-ती परबा उश्वि गेल ऊपर
श्वाह श्वाह बकरी घास तूँ खो
बिद करैए दाउन ने यौ

अतू कुकुि कुत-कुत डॉगी
कैटी थ्यसू-थ्यसू आएत की?
चेहै-चेहै सुश्वा पारा दौगल,
भागी िश्वि बाट हम ताकी
अरिबकरी घास तूँ खो
बिद करैए दाउन ने यौ

ढेहै-ढेहै कऽ नश्च खौझाबू
साढ़ आओत खश्वहानमे यौ
आव ठामे रे हे, हौरे हौ
बिद करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

कश्माया पुतरा ि ाि ू आनू बाबी
जँ रंग गुलाबी ि ै तँ जानू बाबी

बोने-बोने श्करैए जे दैता सभ
वनसफ्तो लऽ घूरश्क मानू बाबी

सात रंग लऽ भोर भेले गाममे
परी रहैए गाम अकानू बाबी

कननी दूर हेतै बच्च्या सभमे
भरल आँश्वि श्वसरी ठानू बाबी

पाश्म अकास ि रती जा-जा घूमी
पंख लगा श्वकुली अकानू बाबी

ि म्म गुश्यिया संग खेलू कूदू
राश्म सपनाउ श्मान आनू बाबी

सुता श्वयौ ऐ गुश्यियाके आ सुतू
चश्क़ ऐरावत श्वन गानू बाबी

बेसी ि‍टी कम इसकूल

बेसी ि‍टी कम इसकूल
खेली-ि‍पी आब-ि‍रपर
रौद-बसाते घूमी खूब
मम्मी-पापा बाबी-बाबा
ताक--ि‍क कऽ आबथि घूब
बाि‍-झाि‍ कलम गाि‍
मेला ठेला गामे-गाम
भब थन भागा-भागी पाि‍
बौका बुि‍नी संग रसूल
बेशी ि‍टी कम इसकूल।
कआया-पुतरा बना सजाबी
खर-पात सँ घर बनाबी
बेतक ि‍ि‍ बनाबी घोि‍
चढ़ी ताइपर आ दौगाबी
झुटे लोक कहैि‍ उकाठी
देखए ि‍या-पुता कऽ भूल
बेसी ि‍टी कम इसकूल।
इसकूलोमे गलती केने
मास्टर साहेब बरड डेराबथि
बेट पकि‍ने ि‍ि‍ घुमाबथि
टेबुलपर ओ पटक बजाबथि
सुतलोमे सपनाइत ि‍ हम
कही हुअए नै कोनो भूल
बेसी ि‍टी कम इसकूल।
कआया-पुतरा चलू घुमाबी
बेतक ि‍ि‍ हम कए बनाबी?
घर बनाबी बती-कि‍चीसँ
करची कलमसँ आखी खूब
थि‍ आब टागी स्कूलमे,
आ सपना देखी खुबे-खूब
बेसी ि‍टी कम इसकूल।
बोने-बोन बसरी रस्ता तँ

वनसफ्तो घर घुराबै ि थि
इसकूलमे गलती केने मुदा जे
मास्टर साहेब मारै ि थि
बेट पकि ने ि ि ी घुमाबथि
मास्टर साहेब बर ड डराबथि
मोन बेकल अथि भय भागल नै
ि ि ी-बेत सपनाइत ि ी हम
ि ि ी-बेत सभ फेकथि दूर
आ साझ घूथ्ब घर सूती हम खूब
बेशी ि ुटी कम इसकूल।

शाश्मल बाजाक दुन्दभी वादक

देखैत दुन्दभीक तान
श्वच्यस्न शाश्मल बाजाक

सुनैत शून्यक दृश्य
पकृश्वाक कैनवासक
हहाइत समुरक श्चवि

अन्हार खोहक श्चवि किलाक पाकि शब्द
कयो देखत नस्न हमर श्चवि एस्न अन्हारमे
तँ सुनबो तँ करत पाकि आकाकाक स्पर

सागरक श्चलकोरमे जाइत नाहक खेबाह
श्चलकोर सुनबाक नस्न अवकाश

देखैत अश्वि स्पारक आरोह अवरोह
हहाइत लहश्वक नस्न ओर-िर

आकाशक असीमताक मुदा नस्न कोनो अन्त
सागर तँ एक दोसरासँ श्वश्न करैत अश्वि
असीमताक मािि
घुमैत गोल पृथ्वीपर
चकपर घुमैत अनन्ताक िि

मुदा मनुक्ख ताश्वक अश्वि लेने
एस्न अनन्ताक पश्वश्वि
पश्वश्विके नाश्य अश्वि लेने मनुक्ख

ई आकाश िकि तँ नस्न अश्वि श्वस्तार
एस्न अनन्ताक सेहो तँ ने अश्वि कोनो अन्त?
तावत एकर असीमतापर तँ करस्न पति श्वशास!

स्परके देखबाक

ध्वनिके सुनबाक
सागरके नाघबाक
समय-काल-देशक गणनाक

सोहमे छथि देल देखब
अन्हार खोहक ध्वनि
सोहमे छलि सुनब
हहाइत सागरक ध्वास

देखैत छी स्वर सुनैत छी ध्वनि
केहन ई साक्षि
बजा गेल छी शाअमल बाजाक
दुन्दुभी वादक

*राजस्थानमे गाजा-बाजावलाक संग रहैत छथि तँ एहेन रहैत छथि जे लए-तालमे बजबैत छथि मुदा बेशी एहन रहैत छथि जे बाजा मुँह लग आनि मात्र बजेबाक अभिनय करैत छथि । हुनका ई आदेश रहैत छन्हि जे गलतीयोसँ बाजामे फूक नहि मारथि, यैह छथि शाअमल बाजा ।

## मोनक रंगक अदृश्य देबाल

ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकाकाक बखारी अग्नि भरल
पतीक बिम्ब ठाढ़
घरमे राखल शालमाल-लकड़ीक मन्दिर आस्थाक
ओसारापर राखल तुलसीक गाछ
पतीक सहृदयताक माछ

मोन पाति अग्नि इनार-पोखरिक महार
स्वच्छ अंगपूलक नील देबाल बनबैत पाश्वके नील रंगक
मोनक रंगक अदृश्य देबाल
ढहैत

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़
बहैत

मन्दाकिनी जे आकाश मध्य

देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
बरी विशाल केदारनाथ
अलकनन्दा मन्दाकिनीक मेल
हरहराइत छथि दुनू चलैत
मेघसँ मिलि ई ककर आवास !

बदरी गेलाह जे
नहि घुरलाह ओदरी हुनक ताहि
आइ बाटे-बाट आएल
शीतल पवनक झोक खसि रहल भूमि
स्खलन भेल जन्तु सबहक
भ्रम मिलि ई ककर वास !

हृदय स्तंभित देखि गिर
पर्वत श्रेणीक नहि अन्त एतए
कष्ट एकर तीवस नीचा अछि गिर
दुहू कात मिलि पर्वतसँ ई
अलकनन्दे ई सौन्दर्य अहीक
मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
हरहराइत ई केहन फेनिल
स्पर्श श्यामल मनुक्ख आवश्यत
नव दृश्य देलक देखबाक आइ
शीतल पवनक मिलि ई सृष्टि

पकाक जाश्ठ

तबैत पोखश्चक महार दुपहश्चयाक भीत
पस्त्त गाि-बृचि-केचली सुषुम पाश्च श्चाक्त

जाश्ठ लकिीक तँ सभ दैि
पकाक जाश्ठ ई पश्चल
कजरी जे लागल से पुरातनताक पतीक

दोसर टोलक पोखश्च नश्च
अश्चि डबरा वैह
श्चन जाश्ठक ओकर यजोपवीत नश्च भेल
कारण सएह

सुनैत श्चिऐक माश्चक ओकर अश्चज िल
पोखश्चक यजोपवीतसँ पूवश्चि पयाण कएल

पाइ-भेने सख भेलश्चह पोखश्च खुनाबी
डबरा चभच्चा खुनेने कतए यश पाबी !

देखू अपन टोलक पकाक जाश्ठ ई
कंकीट तँ सुनैत िी पाश्चयेमे रहने होइि कठोर
लकिीक जाश्ठ नश्च
जकर जीवन होइि िीि

ञानक जीवन थ्यथ्यि

डैञायाही दुपहञयाक घामक बीच
सपनाइत सहसबाढ़ञाक दानवाकार आकृञा

पेयसीपर झपटैत ओकर कंठ मचोिेत
पेमी पकिेत अथ्रि सहसबाढ़ञाक झोट
पोखञमे अथ्रि खसबैत पेमीके पएर बाञ्रह लेलक झोटासँ
डैञायाही दुपहञयामे पोखञक झोटाबला पञाडुञी

ताथ्रिक-सहसबाढ़ञाक झोझसँ ञाकञ्र
अपन पाणान्ञ करैत पेयसीके बचबैत
पेमीक ञान अथ्रि खुजैत रौदसँ घमैत घामसँ नहाएल
घोर ञाराक तृथ्रा रहैि मुदा हेराएल

देखैत देशवासीके पिािेत
मंि-तंियुक्ञ दुपहञयामे जागल
गुन्िनी बला स्ञाप
बनैत अथ्रि सभसँ तीवसिविक
अखरहाक सभसँ फुञ्ञािर पहलमान
दमसाइत माञ्ञाकक स्ञर तोिेत िक ओकर एकान्ञ

काञख थ्याथ्रित राञाक ञान
टुटैत-अबैत-टुटैत ञान आ स्ञापक तारतम्ञ
बञा राजनेता करैत देशक समस्ञाक अन्ञ
बरड िपिी अथ्रि बजैत न्ञायक डंका गुंजैत
िम्जिाञ्ञ-आतंकवाद समस्ञा-समझौता करैत
पाणघातक पहारके िितीपर सहैत- ञ्ञतइत
ञान अथ्रि टुटैत मुदा तकर अिेत
घोर-ञारा तृथ्राक अनुभूञा अथ्रि िटैत

ञानके आस्ञे-आस्ञे देलक माहुर् ञञ्ञ कए सभ
ञि
कएलक ञानक जीवन थ्यथ्यि

गंगा ब्रज

मोन पिड़त अछि मजूर सभक मृत्यु
चकब्ब खाइत खसैत नीचा पाश्रमे
पचास टा मृत्युमे सँ दस टाक भेल ब्बपोटि
चालीस गोटेक कमपेनसेसन गेल खाय
नेता ठीकेदार आ अफसर
एश्र खुनीमा ब्बजक हम इंजीनियर
कहैत छि हमरा ईमानदार
घूस कोना लेल होएत
देखैत गुनैत ई सभ यौ सरकार

ब्बितपजतामे श्वबैत सत्यक पक्ष
ब्बताक लि आश असत्यक सवद्ग त्याग
सभ होअए समृद उतम ब्बचारक बीच
देशक लेल जे जाए पाण अभ्नाम इच्छा होअए सएह

करैत पालन देखल जे
नक्ष बुझैत अछि लोक
नक्ष बुझैत अछि सत्यक मोल आ समृद्धक अछि
स्वतंत्ता आ देश नक्ष कोनो मोल कि लेने स्वािक्ष आगा
तँ की बदली ? अपन श्वाकक अछि!

त्याश्व रस्ता मुदा वैह लक्ष
आ रस्ता ब्बच्चयाहवला !

मुदा बजने की ? मात्र करैत रहू
सोझावलाके बुझए ब्बयौक
जे अछि बुझैत
बुझए ब्बयौक आ करए ब्बयौक खलनायकके मश्नमामथाडत
मश्नमामथाडत आ शक्तिशाली बुझए ब्बयौक दुराचारीके
जावत बुझत भऽ जएतैक हाश्व !

थ्यताक सत्यके श्वाबैत देखने रही श्वि तपजतामे

तश्वये बुझने रही जे

त्याग नश्व कएल होएत

रस्ता ई अश्वि जे श्वाश्वयाहवला

हर आ बि द

मोन गेल भोथियायल
जोश्ना बि द सोश्नामे पि लहुँ
एतय-ओतय केर बात
हर जोतने भेल साझ
हरायल बि द ताकी चार  कात
कहबय ककरा ई गप्प
सुश्ना हँसत हमरा पर आइ
मोने अथि भोथियायल
अप्पन सप्पत कहय ि ी भाय

बिसरलहुँ फेर कणकि मृत्युक िट- िीन र प

खूब ठेकनेने जाइत
जे नहि बिसरब आइ
मुदा गप्प पर गप्प चलल
कृत्रिमता गेल ढ़हाइत
फेर काजक बेर मोन नहि पिल
पिंत-पिंत मोन
कणकि मृत्युक िट- िीन र प
आ तकरा बाद मसोसि कय
रहि जाइत िी गुम्म

बिका सकि हि लेन बला

माए !
माए िनिक खेत लग
जे बिका सकि बनल अछि
हि लेनक
तीन टा आबएबला आ तीनटा जाइबला

ओतए आइ
कतेक नीक लाल रंगक कार
सीसा खुजल नहि रहए जकर
रहए बन
देखलहुँ आइ
जखन बेचैत रही हम धानि

एकटा बच्चा धमाधया गेल
खोलबेलक कारक शीसा आ
कीछा लेलक हमर सभटा धानि
पाछा रहए ओहि बच्चाक मूहपर
सीसा खुजिते बहार भेल ठंढ़ा हबा
कार ए.सी. बलासँ
कार जे रहए लाल रंगक

माए !
माए ई जे िनिक खेत लग
जे बिका सकि बनल अछि
हि लेनक रंग-बिरंगक गािी सभक लेल
तीनटा आबएबला आ तीनटा जाइबला ओतहि
माए !
ई तँ अपने गामक सकि भेल ने
मुदा अपन गामक तँ सभ गोटे गेलाह
जाइ गेलाह कमएबाक लेल दिल्ली आ पैजाब

गाममे मास्टरक घर
फूस आ खपड़िक चार
मुदा हुनिक खेत लग
जे बनि सकि बनल अछि
पकाक
चमकन आ घरोसँ बेशी सुनर ई सकि
ओतहि देखलहुँ ई आइ

माए !
सुनै छीऐ बनल अछि कोनो
वर्ल्डबैकक फंडसँ
पक्किया चमकन-चुनमुन ई सकि
हिटा लेनबला
सीसा सन अछि ई चमकैत !

माए !
जे परका साल काकाक
घर जे काकाक बनल रहए पकाक
थालेबा बला
जे कहियो ये बुनमे खसि गेल रहए
ओहो कोनो सरकारी फन्डसँ बनल रहए !

कहा छलि चमकैत ओ शीसा सन
ओहिमे रहितो लोक छलि डराइत
भने खसि पड़ल

मुदा होएत ओ कोनो नकली फन्डसँ बनल
आइ तँ ओहि कारक शान देखलहुँ
वर्ल्डि बैकक फन्डसँ बनल
अप्पन गामक एहि हिलेनबला सकिपर !

माए !
ई वर्ल्डबैक बला फन्ड कोनो नीक फन्ड अछि !

एख्ञ अाकहा फन्डसँ घर नञ्ञ बनैत ि क की ?
खेनाइ भोजन आ रोजगार जे दैतैक ई अाकहा फन्ड तँ
तँ ध्कएक लोक पि इत ध्दल्ली आ पैजाब

ध्कएक सुश्रातए राज ठाकरेक गाश्व
ध्कएक जाइत गए खुनाहश्रा होइ लेल असाम
सुनै ध्रीऐक पढ़ै जाइ ि श्वहारी कञ्ञ गाश्व

माए !
एख्ञ वल्डबैंक बला अाकहा फन्डसँ
जे बश्रा जइतैक अपन गामक घर आँगन
तँ ओ ि बिेक रञ्ञतैक श्रालेबा बला पकाक कोठा सन !
ओ तँ रञ्ञतैक ओहने सुनर सीसा सन श्राकन आ ठोस
ि हि लेनक ि निक खेतक कात बला एख्ञ सि कि सन

आ जे रोजगारो ओञ्ञ फन्ड सँ भेञ्ञतैक
तँ लोको सभ रञ्ञतैक घरमे
गामक घर सभ एखन जेका भकोभन ि बिे रञ्ञतैक
चुहचुही रञ्ञतैक अपनो गाममे

आ तखन जे देखबा जोग रञ्ञतैक शान अपन गामक !
आ देखबा जोग रञ्ञतैक शान एख्ञ ि हि लेन बला सि किक सेहो !
हमरो सभक अंगपर रञ्ञतए जे वस्त्र
ओहने वस्ि
जेहन ओञ्ञ लाल कारमे बैसल बच्चाक रहए !

माए!
हमरा तँ लगैत रहैए जे
अपन गामक ई सि कि
ओञ्ञ लाल परदेशीक ओञ्ञ लाल कारसँ बेशी अश्रि लग
दुनू टा लगैए श्रादेशी सन

लागल आइ जे
जे ओञ्ञ लाल कारक हबा सेहो अपन हबा नञ्ञ

लागल जेना ओ हबा आ ओ कार हमरासँ ि ता गेल होअए
ि ता गेल होअए हमर स्पशर्सँ

अपन गाम अछि मयूर
आ ओ ि ह लेन बला स ि क अछि एकर पाछाँ
आ हम सभ ि ी पएर ओछाँ मयूरक
ई स ि क अप्पन गामक रछ्तो लागैए फॉरेनर

माए !
सभ ध्दन बक ि ी चरबैत
देखैत रहैत ि ी हम शान अप्पन गामक ओछाँ स ि कक
जे अछि ि ह लेन बला !

## श्वथिलाक ध्वाज गीत

श्वथिलाक ध्वाज फहरायत जगतमे
मा र षश्व भूषश्व दूषश्व देखल हम
अकुलाइत ि ी भँश्वयाइत अश्वि मन

ि ी श्वदाक उदोगक कमभूश्व सँ
पा िथ्वि आयत सन्तश्व अहाक पुश्व
बुश्व चातुयकि आ शौयकि करसँ
श्वजयक पश्व कर अहँ शंका जुश्व

मैश्विली िथ्वि अलश्वपाण भेल ज्यो
सन्ध्यकर बाश्व करब हम न्योरा
वणा स्फोटक बनत स्पशसिँ हमर
ध्वाज खसत नश्व हे मातु श्वथिला

टेनक गाि ी

िक िक िक
भरल सवारी
टेनक गाि ी

पोखश्च गाि ी
दौगल जाइ ि ी

टेन गाि ी
ठाढ़ सवारी
पोखश्च गाि ी
दौगल जाइ ि ी!!

टेन गाि ी िरक कातमे
आएल स्टेशन िटल बातमे
टेन चलल दौगल भश्च राश्चा
सुतल गाि बृचि भेल परात

## राजा ि ी अनुरन्धज श्वांह

एक सुरमे बाध्य देखाऊ
नञ्व अर नन्धन नञ्व श्वांह
पूरा एकञ्व बेर सुनाऊ
राजा ि ी अनुरन्धज श्वांह

दीयाबाती

अन्हरिया भगेलक
इजोरिया बजेलक
दीयाबाती हम्मर
तरेगण बजेलक

अकाससँ उतारि
रखलहुँ अप्पन दारि

क्रिकेट-फील्डिंग

हम बाबा कर की पहिने
बॉलिंग आ कि बैटिंग
बॉलिंग कय हम जायब थकि
बैटिंग करि खायब की मारि ?
पहिले दिन तूँ भागि गेलह
से सुनह बात ई बौआ
बैटिंग बॉलिंग थिक-थिक
पहिने करह गऽ फील्डिंग हौआ

त्याज्याहज्य

ई भारत गं जयक जाह्मे गान
तखन कह्मयासँ भेलाह एतुका लोक,
कमहीन, संकीणि
कोना हारैत गेलाह सैन्यबलसँ आ दशनिहुसँ,
के घोह्मायाबैत गेल असमानताक पाठ एकर ह्मच।
के केलह्मह शुर ई त्याज्याहज्य।

गाविि एकलव्यक वीरतासँ भरल,
घृणा-पेम, सत्य-असत्यक िरातल,
आह पाराशर पुि भगवान व्यास,
नमन-नमन शत नमन।
पसनवदनके ह्मखबाक कह्म बात,

वाणी नह्म रकत अहाक गणेशक शति
कथ्यक कल्पनाक ई उत्कषि
मुदा बनाओल ह्मकएक अहा होअए जेना िर्मििि।
व्यास लेखक होइतहुँ िथ्ीि एह्ममे एकटा पाि,
केहन नव रस, नव िलि वाद !
गणेशक गह्मा अह्मा तीव्र्स
देह्मब व्यास कएल श्लोक जह्मल।
श्लोकक भाष्य बूह्म शीघ,
ह्मघकता ह्मखताह ई।
श्लोकक जह्मलताक लेल ई तकि!
पुि शुकदेव नारदमुह्मा देवगण गंविराक्स यक
व्यास ह्मष्य वैशंपायन आ परीह्मत पुि जनमेजयक ह्मस्तार।
पौराह्मक सूतजी रहथ्ीि, तत मध्य।
कथ्ा ऋह्मसभा नैह्मषारण्यमे,
महह्मि शौनक अध्यक।
सूतजी कएल शुर ,संह्मता सतसहस्रि।
आइ ई मन कहए अथ्ीि,
ई सत्य देखी, कथ्यक कल्पना मध्य िलि की सीह्मब परखी।

अि किेर अनि क्रिेमक सभ केलक जे,
हषिआ िमसँ कनेक देखाबी देखी ।

हिस्तनापुर समाट शातुनु,
गंग तट भमण कथि रहल।
युवती बिन देखि गंगा,
तट जकर िस्थ ठाढ़ छालि !
ते पलि होअए नाम हुनकर,
ािर गंगाजीक नामपर भए अिभूत कहल हे सुन्दरि,
कर पेम स्वीकार हमर।
पती बिन कर राज,
राज्य-िन-पाण पर।

अथि समपणि सभ अहा पर,
िकंतु अथि िकि बंिन हमर।
क्यो पूिय निह पिरचय हमर,
निह करय रोक-टोक हमर कायिपर।

पेम-िवहल शातुनु,
कथि स्वीकार बंिन सकल।
आनल महल मानव-गंगाके,
समय िबतल िबताते रहल।
भेल बात िवििि ई जे,
सात पुि शातुनुके भेल।
युवती फेकल सभके गंगािरमे,
राजाने िकि पुिथ सकल।

किठक िल ई कल्पना ई युवती के अथि,
बुिझ परैि कण कोमल,
कण कूर-कूरतम जे,
अबोि बालक केर पाणक हेतु िवकल !
पूिल राजा शातनु,
आठम बेर अपनाके निह रोिक सकल।
देलक युवती पिरचय सकल,

हम गंग आ ई आठ वसु िल।
देलक्षह महक्षवि विश्वाष शाप तक्षाका,
मत्यलीकक जन्म लेबाक।
आठम पुकि राखब हम क्षक ि क्षन,
देववत्त देब स्नार प सेवक।
महक्षवि विश्वाष क नक्षदनीके,
देक्ष पती वसु पभासक,
मत्यलीकक सखी हेतु,
पयास नक्षदनीक हरणक ।
ऋष्ट्र ताकल गौ-देक्षके, जान-चकुसँ।
देलक शाप वसुगणके भय-कोक्षीति,
कएल पािनी वसु सभ शाक्षत।
हमर शाप नक्ष घूक्ष सकत परञ्च,
सात वसु भय जायत मुक्त तुरत।
पभासके रहय परत ततय,
क्षक ि क्षन िक्ष मत्यलीकक शरण

होयत यशस्वी ई बहुत,
घुक्ष आयल वसुगण गंग लग।
हे देक्ष बनू माता हमरा सभक,
क्षअ' मुक्त तखन आस अहीक।
कक्ष-कल्पाक डोरी देखल,
मानव-गंग केर औक्षत्य लेल!

शातुनु भए गेल क्षरक्त,
िूक्ष गेल गंगक साक्षाध्य।
समय बीतल तँ गेल ओ एक क्षन, तट, िरक समक।

क्षव्य बालकके ओतए देखल, कक्ष रहल केक्ष ओतए।
रोक्ष रहल वाणक िरसँ, गंगािरके जतए।
पस्तुत भेलीह गंग तखन, सौक्ष देल देववत्ताके कहल।
महक्षवि विश्वाष सँ लए क्षाक, वेद-वेदागक क्षक्षल।
शास-जान शुकाचायजिका, शसिमे परशुराम सन।

भेलाह गेल छलाह पुत्र तेजस्वी घुरि अएलाह शान्तनु,
देवव्रतकेँ बनाएल राजकुमार,
आइ अछि ई सम्भव,
अपन दोसर ठाम पोसलाहा पुत्रकेँ,
करत ई संकीर्ण समाज!
कि एक नहि होए देवव्रत सन यशस्वी तखनहु?

कैक वर्ष बीतल एना, पुनः एक दिन आएल,
शान्तनु देखलन्हि यमुना तट तर अद्भुत सुवास,
आबि रहल तरुणी सत्यवती मलाहक बेटी,
आइ जखन गोत्र-मूल, पाइ-कौड़ीक बान्ह,
तखन ओ राजासँ विवाहक लेल सेहो,
राखल शर्त मिल्लाहक सरदार।
बनत हमर नातिये टा, हस्तिनापुरक राजा,
तखने होएत ई विवाह।
शान्तनु ई वचन दितथि कोना,
से घुरि अयलाह नगर अपन ।
चिन्ता घून बनि काटए लागल शरीरक काष्ठकेँ।
देवव्रत पूछलन्हि पितासँ, की भेल पिताश्री,
हे पुत्र की कहू, अछि एकटा चिन्ता, की होएत राज्यक
जे होएत होएत युद्धमे किछु अहाँके,
ककर आश,
के बढ़ाओत,
वंश हस्तिनापुरक ।

कुशाग्र बुद्धिक देवव्रत
बुझलन्हि जे बात किछु आर अछि,
पूछलन्हि सारथीसँ सभ गप, गेलथि केवटराज लग,
आ राजपाट त्यागि अएलाह।

केवटराज परञ्च राखल एकटा शंका,
की होएत जे अहाँक, पुत्र अहाँक जे छीनि लए,
हमर नातिसँ राज्य।

अपत्याश्चात पशक उतर,
सेहो अपत्याश्चात ।
इश्वहास बनत, ई पश्चजा।
नश्च करब हम श्चवाह आजन्म, गाहस्थ्यि आ मि ि ि बि,
रहब आजन्म बह चारी, ि ि बि वानपर्स आ मि,
हश्चस्तनापुर श्चंहासनक मा ि रक्त, करब हम आजन्म।

संन्यास आ मि सेहो ि ि बि, संतान बूझब हश्चस्तनापुर श्चंहासनके।
क्यो नश्च ि ूश्च सकत तकरा, हमरा श्चबैत-जीबैत।
ि न्य-ि न्य श्चगान्त बाजल, पुष्प वषा कएलश्चह देवतागण,
मंचसज्जाक लेल उपयुक्त कथ्य व्यासक क ि न बुझु एतए।

भीष्म-भीष्म ि न्य-ि न्य, बाश्च उठल लोक सभ।

केवटराज केलश्चह श्चदा, सत्यवतीके सानन्द।
कालातरमे पु ि दू, पाओल श्चश्चवीयआ श्चा ि गद ।

बालक दुनू ि टे ि ल, शातनुक पयाण भेल।
श्चा ि गदक भीष्म, तखन राज्याश्चषेक कएल।

घमंडी से ि ल एहन की देव की दानव बुझय,
की गं ि व ि की मानव ककरो नश्च टेर करय।
आ देह ि ि ल, युद संग गं ि वक्ि कए|

श्चश्चवीयक्ि आएल राज्य,

भीष्मके प ि ल सम्हारए, सभटा भार कारण श्चश्चवीयरहश्च ि ट।
फेर जखन ओ भेलाह श्चवाह योग्य,
काशीराजक कन्या सभक स्वयंबरमे,
भीष्म श्चदा भेलाह काशी, जतए पहुँचल ि लाह राजा शल्य,
काशीराजक ज्येष पु ि ि, अम्बा ि लीह हुनकापर अनुरक्त ।
अम्बा,अश्चका,अम्बाश्चका, दृश्च फेरल भीष्म श्चश्चा।
बश्च गेलीह आगू तखन, भीष्म कोश्चित भए दहोश्चश,

ललकाथ्रके कहलथ्रह तखन ओ समस्त राजा सुथ्रा थ्राअह ई,
जे पराथ्रात कए सकी तँ, स्वयंबरक भागी बनू फेर।
सभके हराकए भीष्म जखन, चललाह काशीराजक कन्या समेत।
शल्य रकि पाूिपलि आ, ललकारल युदक लेल।
िनुष-थ्रदािनी भीष्मसँ, काशीराजक कन्यासभ कएल पािनि,
भीष्म िोलि पाण शल्यक, मुदा अम्बा कहलथ्रह भीष्मसँ एकातीमे,
हे गंगेय िमजि, हमरा मोनमे अथ्रि एक गोट शंका,
माथ्रा लेल सौभ देश राजाके, पथ्रा हम अपना हृदय-थ्राच, िमात्मा, महात्मा,भीष्मक थ्राणथ्रि,
जाि अम्बा शल्य लग।
कराओल थ्रवाह थ्रथ्राविीयकि, अम्बा-अम्बाथ्राकाक संग।
शाल्य िलाह वीर,
भीष्म हराओल लोक सभक थ्राच, जीथ्रा लए गेल अहाके,
एथ्र अपमानक बाद की ई, बात हमरा स्वीकार हो?
थ्रथ्राविीयकिहल सेहो अम्बासँ थ्रवाह अकथ्रियोथ्रात,
अम्बा कहलथ्रह भीष्मके
थ्रवाह कर अहा हमरासँ।

हथ्र अनलहुँ, बीतल िह वषहिथ्रस्तनापुर-सौभक बीच, भीष्मक पथ्राजा
मुदा बीचमे ठाढ़,
गेलीह युददेव काथ्राकेय लग।
अम्बा भथ्र उठलीह पथ्राशोिसँ ।
देलथ्रह ओ नथ्र मौलायबला कमलक माला,
हे अम्बे! थ्राअ ई शस्,
जकर गार पथ्ररायब सैह करत भीष्मके नष ।
भीष्मक भय परञ्चि िल ततेक,
नथ्र तैयार भेल पथ्ररय ई माला क्यो एक।
सुनलथ्रह िथ्रि रुपद वीर पाचाल,
सेहो तैयार नथ्र भेलाह पथ्ररए ई माल।
घुरलीह अम्बा अंतमे हाथ्र,
थ्राराश हताश लटकेलथ्रह रुपदक महलक दाथ्र।

गेलीह ओ तपस्वीक शरण।
सभ तपस्वी कए थ्रचार कहलथ्रह,
जाऊ अहा परशरामक आिम।

क्षत्रिय-दमन छथि ओ देथिन्ह दण्ड भीष्मके,
जे कष्ट देलथिन्ह अकारण।
परशुराम लग पहुँचि केलथिन्ह पाछिा,
सुना कए अपन अभ्यर्थना। परशुराम कहल शल्व अछि ध्येय हमर,
बात नहि काटत विवाह शल्वसँ करक लेल छी तैयार अहा ?
अम्बा कहल हम आब विवाह नहि करए चाहैत छी।
अछि हमर आब ई इच्छा मात्र, कर भीष्मसँ युद्ध अहा।
परशुराम कए स्वीकार ई पाछिा, देलथिन्ह भीष्मके ललकारा,
जितेन्द्रीय,ब्रह्मचारी छलाह दुनू, धनुधारी-योद्धा मध्य युद्धघोष बर ।

हारि-जीतक पक्ष नहि छल ज्यो, अनिर्णायक युद्ध बनल,
अम्बा हारि कैलाशक दिशा पयाण कएल, गेलीह शम्भूक शरणमे।
पाबि वर पुनर्जन्मक बाद, भीष्मक मृत्यु मे होएत अहीक हाथ।
अम्बाक संयमक सेहो छल सीमा, कूदि चितामे पुनर्जन्मक लौलसामे।
मृत्यु पाबि जन्म लेल तखन, कन्या बनि द्रुपदक महलमे।
खेल-खेलमे माला पहिरल अपन टाँगल,
द्रुपद सोचल होएत एकटा फेर, वैर भीष्मक अएत गऽ झमेल।
निकासि राजमहलसँ कन्याके, जंगल दिशा ओ गेलि तपस्या कएल,
पाओल पुरुष रूप छिल शिखण्डी नाम, ओकरा छल सभटा मोन।

विचित्रवीर्यक राज सेहो चलल बड़ छोट दिन।
क्षयक बीमारी छल अल्पायु मे मृत्युक अधिन।
धृतराष्ट्रक आ पाडुक जन्मो नहि भेल।
अंबिकाक पुत्र धृतराष्ट,अंबालिकाक पुत्र पाण्डु छल।
व्यासक चिन्तन छल, ज्येष्ठ पुत्र अंध भेल,
अम्बिका सँ पुत्र धृतराष्ट, काल सुनलक आँखि,
आ काल बनओलक कहबीक पाखि
अम्बालिका पुत्र पाण्डु, पौण्ड रोग ग्रसित ते व्यास देल नाम ई,
आब हुनके सँ रोगक पड़ल नाम ई।
पौण्ड गस्त पाण्डुके राज्य-काज गेल देल ।

अंबिकाक दासीसँ विदुरक भेल जन्म छल।
शिक्षा होमय लागल सभक भीष्मक संरक्षणमे,
भीष्मके चिंता भेल विवाह कोना होयत गए,

ृतिराष्टक हेतु ताकल एक कन्याके।
श्यावक वरदान िल गाािरीके सए पुिक,
बढ़त वंश शोचल ई पयत से पारम्भ कएल।

गाािर नरेश सुबल भेलाह किा लेल तैयार जखन,
श्यवाह ृतिराष्टक भेल िलीह ओ शकुश्याक बश्चन।

सुश्या पश्चाक अंिताक गप्प पटी बान्हल,
आँश्ख रश्चतहु नेिहीनक श्यानगी गुजारल।

सय पुिक माता िल दुाशला एक पुिी,
श्यां िु नरेश जयरि भेल श्यानकर पश्चा।

कृष्णक श्यता वासुदेवक बश्चन िश्चा पृिा,
शूरसेनक पुिी िलीह रहलीह जाए मुदा,
श्यताक श्यश्चायौत कुंतीभोज िल संतानहीन,
हुनके स्नेह भेटल पृिा भेश्चा कुंती पुश्या।
कृष्ण-सुदशनि, बलरामक दीदी भेलीह,
सत्कार श्यपवरक करैत िलीह।
एश्चना एक बेर दुवासा देल मंत्र एकटा,
पढ़ब मोनसँ देव अएत बजेबश्चा श्यानका।
व्यासक ई कश्यत्ा मोनक बात कहलक,
वर-मंि-पुनजन्मि सबहक तत्त्ा तकलक।

नेनमश्चा बुश्च िल कुन्तीक, सूयकिे बजाओल,
पुि-पाश्यत भेल से बािक िल लोकलाज,
बहा देल बच्चाके श्याच गंगािर।
कौरवक सारिी अिीरिके भेटल ओ,
कर्ण राि्य माए राि पोश्यत सूतपुि पराकमी,
शरीर कवचयुक्त कान कुंडलसँ शोश्यात।

पाण्डुक फेर कुंतीसँ श्यवाह भेल,
मरनरेशक पुिी मारी दोसर पती भेश्चा।
पाण्डु युद-कायमिाि कएल जीश्चा राज,

दूर रहि राज-काज भोगल सुख मा !
कुंती-मारीक संग वन-विचरण मे रत।
शिकार खेलाइत वनमे,
एक मुनि ाप देल संतानविहीनताक।
पाण्डुक संतान पाप्तिक इच्छा देखि कुंती,
खोललन्हि दुवासाक देल मंत्रक भेद।
यमसँ धमिराज,भीमसेन वायुसँ,
इंद्रसँ अजुनि कुंतीक पुत्र तीन भेल।

कुंतीक मंत्रसँ मारीके भेल पुत्रक आश।
अश्विनीद्वय सँ भेल नकुल-सहदेव पाप्त।
पाण्डुक मृत्यु पंचपाण्डव जन्मक बाद,
भेलीह सती पतिक संग मारी वनहिमे।

पाण्डव ओ कुंतीके बोनसँ हस्तिनापुर,
अनलन्हि नगरमे सभ वनक मुनिवर सभ।
पंच पाण्डवक संग आयलि कुंती नगर।

जुमि गेल सभ नर नारी ठाम-ठामे।
ऋषि-मुनि वन पाणीक संगतिमे शील।
मुग्धित सुशील पाण्डवके मोन भरि देखि-गुनि।

कृपाचायक्रि आचायत्विमे शिक्षा, पाबि रहल दुयोनि कौरव,
पाबि सकए शिक्षा हुनके लग रहि, पाण्डव जन सभ शिक्षा ई सभ ।

धृतराष्ट सोचि ई तखन कएल, तेहन तरहक व्यवस्था,
दुयोनि-कौरवक संग रहताह
पंच पाण्डव भाता।
भीम छलाह बलशाली सभमे, दुयोनिमे छल इरखा बड़।
करए लागल दुयोनि भीमक, मृत्यु योजना गंगे तट !

जल कीाि क हेतु गेल लए, तट दुयोिन पाण्डवके।
खाद मध्य िमलाओल िवष, खोआओल भोजन भीमिहके।
सभ गेल नहाबए गंगमध्य, नशा भीमके आयल,
कात अबैत खसलाह ओतए भीम अिरा कय ।
दुयोिन बान्हल लताकुञ्ज सँ ।
फेकल िरमे ओकरा िनर्िंत,
िस मुक्त कौरवघुिर आयल।
गंग मध्य डँसलक एक नाग,
िवष कटलक िवषके !
से देखू काटत के पाण्डवक भाग।
िवषक पभाव भेल दूर, भीम चललाह घरके,
उठलाह झुमैत होइत मदमस्त, किा सुनाबए भाताके।
युिधि र घरमे सोचिथ, भीम पहुँिच गेल होएताह।
निह देखल घर भीम, माि पर बल अएलिन्ह कनेटा।
तावत भीम झूिम अएलाह, षडयंिक किा सुनाओल ।
कुंती िचंितत भेिल िवदुरसँ, पूिल भेल ई उत्पात !
िवदुर बुझाओल पाण्डव िथि बलशाली िचन्तायुत।
हुनकर दुयोिन किर पाओत, निह कोनो अिहत।

भीमके िफरबैत देिख दुयोिन-भाता,
मोन मसोिस रिह गेल ओ दुष दुरात्मा।

कौरव पाण्डव लीन कंदुक खेिल रहल।
कंदुक खसल इनारमे निह िनकिल रहल।
सोझिह िल एक िवाअक बाटे आिब रहल,
तेज जकर ओकर मिहमा िल गािब रहल।
बाणक वार पुिन पुिन कएल फेर ऊपरसँ,
खेिल कय िनकालल गेद िनुणर्दिाकौशलसँ।

भीष्मके सुनाएल बालवृन्द कलाकारी ओकर, रोण नामा कृपाचायर्क िल जे बिहनोइ वर।
अशतािमा पुि जिनक सहपाठी रुपद िल। रुपद देल एकवचन राज देब आि हम।
देल वचन िबसरलसे राजा बनला उतर। अपमािनत कएल से फूिस, राजा ओ दंभी।
पिरशोिक बाट ताकैत रहल रोण बिन पिरदन्दी।

श्वानिताक श्वानगी श्वाबैत िलाह घूश्म रहल।
अशतािमाक संग आजीश्वकाक ताश्कमे पिल।
हश्वस्तनापुरक आगह िलाह नश्च टाश्व सकल।
कृतजताक भारसँ अशतािमा-रोण हश्वस्तनापुरक।
िनुश्वद्दीक पाठ शुर कएल कौरवक आ पाण्डवक।
पाठक उपरात समय आएल िल लक्ष्य भेदक।
परीक्षाक चातुयकि संगश्च कुशलताक रण-कौशलक।
लक्ष्य बनल एकटा गोट-बेश ऊँच वृक पर,
राखल काठक श्वािँ आँश्व जकर लक्ष्य िल।
सभके पूिल रोण बाजू की िी देश्व रहल?
सभ कह्यो गाि वृक पश्कक संग देश्व रहल।

पािक्षि पूिल अहा िी किी देश्व रहल सकल।
मािँ पश्कक अश्वाश्वक्त नश्च श्कु िी देखल।
अजुनिक बाण पश्कक श्वारोच्छिदन कएलक।
अजुनि भेलाह श्वय-स्नेश्वल रोणक हृदयक।
बीतल समय शसि-पदशनिक िल आएल।
समय बीतल पदशनि-शसिक िल आयल।

भीष्म पूिल रोणसँ की-की श्वाखाओल,
युद-कौशल,व्यूह रचना आ शसिकौशल।
पदशनिक व्यवसिा भेल जनक बीचश्च,
एकाएकी सभ भेलाह परीश्वत संगश्च।
भेल भीम-दुयोिनक गदा-युदक पदशनि।
भीष्म-िृतराष्टक हृदय-श्वाच वातसल्यक,
जखन िल दंदकबीच अजुनिक बेर आयल।
एकानेक बाण-श्वदासँ रंगसिली गुंश्वात,
घोष अजुनिक भेल बीचश्च कणिआएल।
परशुराम श्वाष्य कणिकिएलक श्वनय,
कए िी सकैत हम पदशनि सभक जे, श्वदा जनैत िश्व अजुनि सकल सभ,
पाश्व सह दुयोिनक, ललकारा देलक, अजुनि दंद हमरासँ लिू से पिमिता।

कृपाचायिकहल सारिीपुि िी अहा, राजकुमारसँ दंदक अश्विकारी कहा?

दंदता नञ्ि अहासँ फेर बात दंदक, दंद-युदक गप आएल ओना-कोना?

हा ! हा! हा! श्चात्कार हृदयक,
कणक्ि हृदयक श्चात्कार दुयोनिेटा सुनलक।
ई सुश्ना दुयोनि केलक ई घोषणा, बात ई अश्ि तँ सभ सुनैत जाऊ,
अंग-देशक नृप कणक्ि बनबैत ि ी, योदाक परीक्ण करैत अश्ि बाहु,
ई बाहु ! पकश्ि कणक्ि बाहु कहलक ।
अंग देशक नृप कणक्ि बनबैत ि ी।
कश्ि ई अश्भषेक कएल सभागारेमे,
अंकमे लेल कणभिेल कृतज ओकर।
उश्ठ अजुनि तखन ई बात बाजल, हे कणअिहा जे क्यो ि ी,
सुनू ई, हम रोण श्शष्य अजुनि ई कहए ि ी, बुझू नश्ि जे ई वीरताक वरदान टा,
नश्ि भेटल अश्ि से अहीँक सभटा।
गुर नश्ि श्मखओलश्क हाश्ि मानब,
पश्ादंदीसँ दंद करब जखन चाहब।
करतल ध्वश्नसँ सभागार भेल फेर गुंश्ञत, भीष्म उश्ठ कएल संध्याक आगमन सूश्चत।
अजुनिक गवोश्क्त सुश्न कणक्ि हृदय ि ल, मोन मसोश्स नृप अंगक गामपर पहुँचल।

श्शष ताक हेतु पाण्डव भेलाह पशंश्सत। भेल एश्िसँ दुयोनिक मोन शंश्कत।
शकुश्न दुाशासन ि ल ओकर भक्त, कणसिँ भेट उतर ओ भेल आशस्त,
ि ृतराष्टके सभक कनफुसकीसँ कए ि स्त।
श्पता ि लहुँ अहा श्संहासनक अश्िकारी, जन्म-अंिताक रोकल राजसँ अहाके,
हमरा तँ नश्ि अश्ि एहन लाचारी।
युश्िश्ि रके सभ मानय लागल, श्संहासनक अश्िकारी श्कएक ?
अहँक सेहंता की भए पाएल, फलाभूत कोना अहुना ईएह।
युश्िश्ि र ज्येष हमरासँ अश्ि, परंतु अश्ि अहाक अनुजक पुि सएह।
कएल आगह जएबाक मेला वारणावतक,
पाण्डवसँक कर । ता सुि रिब व्यवसि ा सभ, कल्याणकारी कायसिभसँ,
श्वसश्ि जएत पुि कुंतीक, जन सकल हश्स्तनापुरक।

ि ृतराष्ट मानल सभटा बात, आदेश देल वारणावत जाि, कुंश्न देश्ख मेला-ठेला आउ।
श्वदुर भेल साकंक भेद ई की, सचर रहब युश्िश्ि र, कहल ई।

थ्वदुरक नीश्चा कएल साकंक, दुयोिनक काटल सश्व्र पपंच।
मंिी पुरोचनसँ भश्चा दुयोिन, लाखक महल बनबओने िल,
थ्वदुर लगेलश्कह एकर पता, संवाद सेहो पठओने िल।
वाहक संदेशक िल कारीगर, श्चामाण सुरँगक कएल।
लाखक महलक भीतर िल, श्चामाण से कणश्चमे भएल।
पाण्डवके श्चादेश भेल िल, खोह सुरँगश्चमे सूतइ जाउ,
आथ्वाक पूणिशंका से िल, लथ्वाते भीतरसँ बाहर अबै जाउ।

कृषा चतुदर्शीक िल ओ थ्वदन, पुरोचन भेल से अश्चाशय चंचल,
आथ्वा लगाएत आइ ओ िल सँ, युथ्धिष्ठर िल ई सभ बूश्च रहल।
कए सचेत अपन माता-भाताके, यज कएलश्कह ओश्व थ्वदन से,
भात-भोज देलश्कह नगरवासीके, पंचपुिश्चा भीलनी सेहो एक।

आह बेचारी ! कालक मारल वा मारल,
दू गोट दन्दतामे तेसर?

कालक सोझा ककर चलल जे, सूतश्चा राश्चा ओतश्व सभ ते।
पुरोचन सेहो सुतल ओतश्व, बाहर थ्वदश िल कोठली एक,
आथ्वा लगाओल भीम तखन, बीच राश्चामे मौका के देश्चव।

लाक्षागृह िल बन से ओतए, अश्चा देवता अश्व केर लेल।

घरक सुरडाह होइमे लागत, से एकहु कण थ्वकएक?

नश्व थ्वलश्च माता- भाता, पणामअश्चादेवकेकए।
श्चाकश्चा कुंश्चा कालक गालसँ, बचश्चा दुयोिनक कुचाश्चासँ।

पुरोचन अश्चा मध्य से उथ्वाते भेल, थ्वकन्तु भीलश्च जरश्चा बेचारी,
पुि सश्वत से सूतल, ककरो बुझना िल नश्व गेल ई िल।

नगरवासी बुझलश्कह जे जरश्चा, कुंती पाचो पुि सभश्चक संगे।
नगर शोकसँ भेल शोकाकुल, खबश्व हथ्स्तनापुर ज्यो गेले।

दुयोनि लि अश्च पसना आ, ृतिराष्ट पसन लि मोने-मोने।
परंतु थदुर सभसँ बेशी पसन, श्कएक तँ सत्म बूझ लि गेले।

से ओ कहल भीष्मके सभटा, बात रहस्मक जा कए ओतए।
भीष्मक थांता दूर कएलश्क्ह,
ई सभ गप जाय बुझा कए ।

अकाबोन पहुँचैत गेलाह गए, पाण्डव-जन कष उठा कए।
नाथक नावक संग पतीका, कश्च लि रहय थकल भए।
कहलश्क्ह थदुर पठेलश्क्ह हमरा, आजा दी गंगतट सेवा करबाक।
गंगा पार भेलश्च पाण्डव जन, पाि िटल कतेक भभटपन।
ृिष्टक,दुयोनि आ शकुनीक, आ दुाशासन कणासिबहीक।
संग मुदा लागल पश्चाशोि, हश्मतनापुरक लि ई दुयोग।

नश्च जाश्च जएत कई पि ई, पि न जतए लि ओश्च वनमे,
डेग दश्कण श्चशा श्चश दी, गंतश्मक लि नश्च जान कोनो जे !

दैत डेग बढ़ैत आगू, भूखल-थ्यासल िकल ठेश्चआयल, आह दुदशा देखू !

कुंतीक ई दशा देश्च, भीमसँ नश्च लि गेल रहल,
वट-वृकक नीचा बैसा कए,
चढल देखल सजग भऽ।
पकी श्कि दूर लि ओतए, भीम जाए पहुँचल जलाशय,
पाश्च पीब आश्च थयाओल, सुतल सभ कुम्हलाय ओतए।

भीमके नश्च गेल देखल, करश्च की हूश्च मोन होअय,
पोखश्मक गाकि ऊपर लि राकस नाम श्चश्कंब जेकर।
श्चश्कंबा बश्चनक संग लि, ताश्क रहल अपन भोजन।
मनुक्ख-गंि सूंश्च कए, चलल नर-मास ताश्कमे ओ,
श्चश्कंबे जो मौस-मनुक्खक, आन जल्दी ओतए जाकए।
देश्च कुंती-पुि संग सूतल, दुाश्चत श्चश्कंबा लि ताकैत,
भीमक हृष -पुष शरीर देश्च, ठाढ नेि रहश्च ताकए।
िश्च िरण रप सुन्दरीक, कहल भीम जाऊ उठाऊ,
अपन माता बन्िके, दूर सुरश्कत श्चनका पहुँचाएब।

मोक्षत ि ी हम अहा पर, चाह हमरा अछि थ्रवाहक,
मायासँ हम बचाएब, बलवान कूर हिडिम्बाक माथक।
भीम कहल हम थ्रकए उठाएब, बं ि के सुतल अपन,
बलवान अछि हिडिंब एहन, बल देखए हमरो तखन।
हिडिम्ब पहुँचल ओतए, हिडिम्बा ि छिा सुन्दरीक र प बनओने,
भीमसँ कथ रहथ ि छिा गप, कोसिँ कोधित हिडिम्बाके कएने।

ओ दौलि हिडिम्बा पर मारक हेतु, भीम पकलि बाचथमे,
मल्लयुद पसरल ओतए से, थ्रकट दंदक हुँकार ि लि गूँजैत।

वन्यपाणी भागए लागल आ उठथ कुंती-पाडव ओतए,
पहुँचैत गेल दौगैत ओतए, रणभूमि साजल ि लि जतए।
माथ देलक भीम तावत, भेल हिडिम्ब शवर प यावत।

भीमक वीरतासँ हिडिम्बा भेथ ि छिा आनंदित,
वाकचातुर्यसँ कएने ि छिा कुंथाके पसन थ्रकंथत्।

युधिष्ठि र सेहो देल स्वीकृथ माता कुंतीक थ्रचार जाथ,
थ्रवाह कथ कए रहए लागल, भीम हिडिम्बाके आथ।
घटोत्कच उत्पान भेल, थ्रता तुल्य पराकम जकर ि लि।
थ्रन बीतल पाण्डव वन ि छि कए आगा जाए लागल,
जाएब हिमालय थ्रथ पु ि कि संग ई हिडिम्बा बाजथ।
घटोत्कच कहल थ्रतु माताक हम सथकाल संगे रहब,
होएत कोनो कायअिहाक, बजाबएमे नहि संकोच करब।

जाइत काल व्यास भेटलाह कुंती कानथ हाकोस भए,
भारतक लेखक आएल बथ काव्यक पा ि भए !!
व्यास कहल नहि कानू थ्रन ि ट पैघ होएबे करय।
दुाख आथक सुखमे अपना पर नहि ि िए अछि आर्यं ि ण,
ि मिि ि पर जे चलए,तकरे कहए ि ी मनुष्य तखन।
गथ्रति सुखे नहि होए, दुाखमे ि यकि न अवलंब ि िए,
कुंती आ अहँक पु ि थ्रि, तेहन जेहन ई मनुष्य होमए।

व्यास काम्यक पाकिे देखाए रस्ता सोझ श्किन्तु,
पाकि चर्थमिे नश्रह अिाओल अपन आकाक्ष एको रश्रा ।
िन्प्त ते ओ कथ्य आ ओकर कृश्रा !!

पाण्डवजन पाश्रा ई संबल, पश्वरल मृगचमविल्कल,
बह चारी केर भेष बनाओल, एकचकी नगर पहुँचल।

रहल बश्रा अश्वाथ्रि ओतए, आश्वाथ्य बाह णक पाओल,
भाइ सभ जाश्रि आनश्रि सभ राखश्रि माताक समक।
कुंती देश्रि आि-भीमके आिमे शेष सभ श्राश्र खाश्रि,
भीमक तैयो भूख मेटाइश्राह नश्रा भुखले ओ रश्रा जाश्रि।
भुखले िलाह भीम एक श्वन गेलाह नश्रा श्राकाटनमे,
सुनल घोर कनारोहट घरमे, पूिल कारण जानल से।

बकासुर राक्स ओतए िल नगर बाहर श्रावास जकर,
राजा असमिािल, राक्स करए अत्याचार बि-बि।

िल श्राकालल समािन जे सभ पश्रवारसँ पश्राश्वन एक,
कटही गािी भश्रा अन मश्वरा मौस, जाश्रि बहलमान।
बक खाइत िल सभटा भोजन संग बहलमानहुके से,
कनारोहट मचल िल घर बाह ण पश्रवारक मध्ये।

पार िल पश्रवारक आइ सभ पश्रवार दुाश्वत िल,
कुंती कहल पाच पुि अश्रि, भीमक बल सुनाएल।
भीमक बलक चचिसुश्रा-सुश्रा कए बाह ण मानल,
कृतज भेल भीमके ओ गािीक संग खोह पठाओल।

खोह राक्सक ताश्क भीम खेलक, िल ओ भुखाएल,
तृप्त स्वयं भीम िल देरी सँ अतृप्त बकासुर आएल।
तामसे आकमण कएलक श्कंतु लात-मुका माश्रा कए,
भीम पाण लेलक ओकरा खीश्रा नगर दार आश्रा कए।
भेल पसन सभ जन मनओलक पूजा-पवओितए,

कुंती चललीह आर थकि् थ्दन ओश्च नगर रश्च कए।
सुनल पाचालक स्चयंबरक, कि पाचालीक रुपदक,
एकचका नगरीसँ ढेरक-ढेर बाह ण पहुँचैत ओतए।
पाण्डवजन लए रहल आजा मातृ कुंतीसँ रहथ्ि,
व्यास पहुँथ्श्च कहल जाउ स्चयंबर ओतए देखए !

मागमि ऋश्च िम्य भेटलाह िलाह पंश्चत जानी,
बढ़ल आगू तखन श्रश्च संकश्चमत भऽ सभ पाणी।

सुश्च कि पशंसा यजसँ श्चकलश्च याजसेनीक,
मत्स्यभेद करताह जे क्यो रौपदी वरण करतीह।
स्चयंबरक सिनक रस्ता तकलश्चह पाचालमे जा कए,
कुम्भकारक घर डेरा देलश्चह श्वचार कुंतीक माश्च कए।

कणआिएल िल दुाशासन, दुयोनिक संग सश्चजत,
देश-देशक राजा आएल िल रंगभूश्च वीरसँ खश्चत।
तखन आयश्च रौपदी भाइ िृष दिुमक संग सुसश्चजत,
पुष्पमाल लेने आयश्च केलश्च सभक नजश्च आकृष ।
बीच स्चयंबरक भूश्चक ऊपर मत्स्य एकटा लटकल,
ओकर नीचा चक एकटा तीवसगश्चये िल घूश्च रहल।
नीचा पाश्चमे िह देश्च जे चकमध्य पातर भुरकी तर,
दाश्च सकत मत्स्य आँश्चके पुष्पमाल पति तकरे गर।
सभटा राजा हाश्च िश्चक कए भेल श्चश्चन िकल िल,
कणदिेश्च जन बाश्च उठल सूत पुि श्चकए आएल िल?
रौपदी बाजश्च गाश्चयो देत ज्यो कणमिित्स्य-लोचनके,
नश्च पश्चराएब वरमाला नश्च करब वरण ओकराके।
श्ववश कणकिे बैसल देश्च ऋश्चवेश अजुनि आएल िल,
एकश्च शर-संिनसँ बेिल मत्स्य सुयश पाओल िल।
बाह ण-मंडली कएने िल बुश्च ओकरा बाह ण जय-जयकार ओतए,
क्षश्चय राजा सभ कएल श्वरोि, तैयार अजुनि पुश्च संिन कए।
श्चद मत्स्य भू खसल भूश्च बलराम कृष्ण आगा आओल,
सभ राजाके बुझाए सुझाए िल सहटाय ओतएसँ हटाओल।

कृष्ण एकाती कहल दाऊ सुनू ई, सुनल ि‍ल एक उरन्ती,
वारणावत आग्‍ा बच बचल पाडव, बचल ि‍छ्न कुंती दीदी।

भीम तखने उखाि‍ड़ वृक ि‍ल भेल ठाढ़ सहद्ध अजुनि कए,
कृष्ण कहल हे दाऊ कालचक अनलक एतए भीम अजुनिके।
देख्व पराकम हतोत्साद्धत भेल राजा सभ पयाण कएने ि‍ल,
पाडव लए चललाह रौपदीके व्यग एद्ध सभसँ ओ भेद्ध ि‍छ्न।
अजुनि खोद्ध अपन रहस्य, द्धस्सासँ रौपदीके कएल द्धहल,
ि‍ृष दुम्‍न चुपचाप सुनए ि‍ल, घुद्ध द्धताके कि‍ ई कहलक।
कुम्भकारक घर पहुँद्ध पाडव कहल देखू की हम सभ आनल,
कुंती कहल आनल अि‍छ जे सभ तकरा बाटू पाचू पाण्डव !!

कहल अजुनि हे माता होएत नद्ध व्यि‍ि‍ अहाक ई बात,
संग रौपदीक होएत द्धवाह पाचू-पाण्डवक संग- साि‍।

रुपद पठेलद्धह पुरद्धतके ि‍ृष दुमक संग ओतए,
कुंतीके नोतल आ सभके लए गेल संग अपन ।
रुपद सुनल जे पाचू-पाण्डव करताह द्धवाह रौपदीसँ,
तखनद्ध ई कि‍ अि‍छ पूवजिन्मद्धक व्यास आद्ध सुनाओल!!
भेटल ि‍लद्धह वरदान द्धावसँ जे पाच पद्ध अहा पाएब,
सुद्ध सभ रौपदी द्धवाह रुपद रीद्ध वैद्धक सँ कराओल।

सभ द्धि‍ि‍ द्धन रहल ओतए कुशलसँ रुपद केर महलमे,
पसरल ई चचा सगरो ि‍छ्न गेल गप हद्धस्तनापुर महलमे।
लोकलाजसँ बाह पसनता ि‍ृतराष्ट ि‍ल ओतए देखओने,
माद्ध भीष्म-रोणक द्धचार पठाओल समाद अगुतओने।
आनी अनुज पती पुतोहु ओ अनुज पुि‍ सभके आदरसँ,
दुयोनिक कणक्रि द्धरोि‍ पर कएल द्धचार द्धदुरके बजाकय,
शासि‍ानुसार द्धचार देलद्धह आि‍ राज्य देबाक ओ जाकए।
द्धदुरद्धके पठाओल ि‍ृतराष्ट आनए राजमहलसँ रुपदक,
सभके लए आनल पहुँचल ओ जन ठाढ़ करए स्वागत।
ि‍ृतराष्ट कहल हे युि‍द्धि‍र गृह कलहसँ ई नीक होयत,
जाए खाण्डवपरसि‍ बसाउ नव नगर आि‍ राज लऽ कए।

खाण्डवपर्स अश्वि बोन एखन पञ्चने ि ल राजाक नगरी,
माश्चा युश्चिश्च र गेल ओतए बनाय नव घर दार सञ्चजत।
इन्द्रपर्स ि ल पि ल नाम आ तेरह वर्षिश्च केलश्चह राज,
यश ि ल सुशासनसँ आ ि ल जन-जीवन अश्चा संपन।

ि ल अश्चना श्चन बीश्चा रहल अएलाह नारद एकश्चन जखन,
स्नागत भेलश्चह खूब हुनकर ओहो रहश्चि आनंश्चत तखन।
देखल शील-गुण पाडवक मुदा कहल रौपदीसँ सुनू बात ई,
ि ी पती पाडवक मुदा श्चावासक श्चाअम श्चकए नश्च बनेने ि ी ?
नारदक बात समीचीन ि ल से श्चाअम बनेलश्चि पाचो गोटे,
एक-एक मास रहि सभ लग रौपदी श्चाअम नश्च भंग हो !
बारह वर्षपियंति ि ि ए पि त गृह ि श्च भेल ज्यो,
पालन श्चाअमक होमए लागल श्चकि काल ि श्च ई ।
कनैत अएलाह श्चप एक अजुर्नि पुि लश्चह बात की ?

चोर ि ल चोरेने गौके हाकोस श्चप ि ल कश्च रहल,
शर्स ि ल गृहमे रौपदी संग युश्चिश्च र जे रश्च रहल।
श्चपक शापसँ नीक सोश्चा मूरी झुकेने गेल अजुर्नि,
शर्स आश्चा ि ि यिल गौके घुश्च आएल गृह तखन।

मागल आजा युश्चिश्च रसँ श्चअ गृहत्यागक आजा,
श्चाअम भंगक कएल हम अपराि, की बाजल अहा ?

अजुर्नि ई अपराि लागत जखन पैघक दारा होएत,
ि ट भाए कखनो अश्चि आश्चा सकैत बि भाय घर।

मुदा श्चाकश्चा गेलाह अजुर्नि आजा लए माता भाएसँ,
भमण देश-कोसक करैत पहुँचल हश्चदार गंग तट,
स्नान करैत काल, नजश्च ि ल नाग कान्याक ज्यो,
कोना बश्चा सकैत पहुँश्चा गेलाह पातालक श्चाकट।
श्चवाह पाि नि स्नीकारल अजुर्नि ई ि ल वरदान भेटल,
जलमे रस्ता बनत चश्चा सकब अहा क्यवि ान श्चन।

मथापुर पहुँथ्ध जतए थ्धागिदा राजकन्या थ्िश्ध र पवती,
थ्धवाहक पस्ताव अजुनिक स्वीकारल मानल राजा सशति
दौथ्धि होएत हमर वंशज भेल ई थ्धवाह तखन जा कए।

थ्धागिदाक पुि भेल बभुवाहन नाम राखल गेल जकर ई,
परम पतापी पराकमी योदा बनल बालक पािू सुनए िी।
फेर ओतएसँ थ्धाकथ्ध अजुनि पहुँचल पभास तीिदिारका थ्धाकट,
शसि-पदशनिक आयोजन केलथ्धह कृषण थ्धाकट पवति रैवतक।
पेम देथ्धव सुभरासँ कृषण िलाह सुझओने नव उपाय ई,
अपहरण करब जीतब युद यादवसँ बनत तखने बात ई।

बनथ्ध सारिी वीर सुभरा संगाम िलि बजरल जखन,
बुझा-सुझा मेल िलि करओने कृषण जा कए तखन।
थ्धवाह भेल तदंतर अजुनि संग सुभरा गएलाह पुषकर,
पुरल जखन ई वनवास कृषणक संग पहुँचल इंरपसि।
देथ्धव नववििू पसन कुंती आनंद नथ्ध समटा रहल,
रौपदीसँ पाच पुि, आ अथ्धामन्यु सुभरासँ भेल िलि।
बीथ्धा िलि रहल थ्धन जखन अएलाह जीणिशिरीर अथ्धन,
रोगक थ्धादान िलि खाडव वन रहए िलि ओ सपितिकक।

इंरक अथ्धि थ्धि ओ जखन करैत िी जरेबाक हम सूरसार,
नथ्ध जरबए दैत िथ्धि इंर, कर कृपा अहा हे इंर अवतार ।
िी पस्तुत मुदा असि अथ्धि नथ्ध हमरा लग ओतेक,
इंर युदक हेतु चाही योलय शसिक मािि जररी जतेक।
देल गाडीव िनुष तूणीर अकय वरणक रि नंथ्धघोष,
चलल डाहबाक हेतु अथ्धन पेलाक बाद अजुनिक तोष।

इंर मेघके पठओलथ्धह कृषण कएल सचेत जे,
वायथ्धक पयोग कएल अजुनि मेघ थ्धलाएल से।

तककक मृत्योपरान्त इंर भेलाह पकट ओतए,
मागल अजुनि थ्धवयासि हुनकासँ मौका देथ्धव कए।

जाऊ श्रावक उपासना कर दए सकैत िछथि वरदान ओ,
िल मय आयल अश्रमाक कोपसँ बचाय लग अजुर्नक ओ।
सेवा करबाक बात िल मोनमे लेने कृतज िल ओ,
बनाऊ सभा भवन अनुपम नञि बनल जे कतहु होऽ।

मय दानव िल कए रहल नव िनमाण,
सभा भवनक रत्न-राशि लाथि उत्ािन।
स्फिटकसँ युक्त शीसमहल सन कौशल,
युधिष्ठिर ओतहि तखन सिंहासन बैसल।
ऋषि नारदक आगमन भेल ओतए जाए,
देलिन्ह करबाक यज जे राजसूय कहाय।
बजाओल दारकासँ कृष्णाके समाद पठाय,
कृष्ण कहलिन्ह सभा भवनमे आिब कए,
जरासंि मगिक नरेश रहत गए यावत,
राजसूय सफल नञि होमय देत तावत।
बंदी बनेलक राजा लोकिनके ओ हराय,
आकमण ओकर भेल मिुरा पर बर ड,
हािर दारका राजिानी बनाओल हम जाए ।

युधिष्ठिर बात सुनैत भेलथि हतास सन,
भीम अजुर्न आशा बन्हेलिन्ह भाता सुन।
क्षत्रिय-िमिअथि शििके वशमे करए,
कृष्ण,अजुर्न-भीम संग राजगृह चलल।

ऋषि वेशिारी राजगीरक पाचीर लाघि,
पहुँचल सभ सोझे सभा-भवन जी-जाति।

सत्कार करए चाहलक जरासंि बुिझ िवप,
ललकारा देलक िकंतु भीम दंद-युदक शीघ।

श्वन बीतल खत्मक नाम नश्च लैि ई युद,
कृष्णक संकेत पाश्च चीरल ओ शरीर संश्चिसँ,
भीम तोिल शरीर जरासंिक उनश्च फूश्चासँ,
शरीर फेकल दुहू श्चश्चा उनश्च एम्हर-ओम्हर,
मुक्त कएल कारागारसँ बंदी गण राजा सभके।
जरासंि-पुि सहदेवके दए मगि राजक गदी,
आपस भेलाह इंरपसि घुरलाह तीनू व्यश्चक्त।

पूविश्चश्चा भीम उतर अजुिन नकुल दश्चक्ण,
सहदेव पश्चिम श्चशा श्चश्चा श्चश्चाजय खाश्चार।
श्चजय रि नश्च क्यो रोश्चक सकल हुनकर,
िन-िन्यसँ पश्चपूणिसभ आश्च कएल तैयारी,
राजसूय यजक भेल राजा सभक इन्रपसिमे बजाही।
राजा लोकश्चा के दय समुश्चात कायिक भार,
भीष्म-रोणके यज-श्चारीक्णक देल पभार।
कृष्ण श्चप चरण-िबाक लेलश्चह काज ।
हश्चस्तनापुरसँ भीष्म, रोणक संग भेल आगमन,
ृितराष्ट श्चदुर कृप अशतिमा दुयोिन दुाशासन।

बीच यजमे उठल िल पश्न अग-पूजाक,
भीष्मक सम्मश्चा युश्चिश्च र पुिलश्चह जाए,
भीष्म कहल िश्चि िष कृष्ण नृप बीच,
सहदेव सुश्चा वचन चरण पखारय लाग।

चेश्चराज श्चाशुपालसँ सहल नश्च भेल,
अपशब्द कृष्ण-भीष्मके देबए लागल,
दुयोिन-भाता पसन िल भेल,
भीमक कोि बढ़ल िल ओ झपटल,
भीष्म रोश्चक शात िल ओकरा कएल।

श्चाशुपालक गाश्च सुश्चायो िल कृष्ण पशात,
िलाह श्चकएक तँ ओ श्चश्चायौत कृष्णक,
श्चन बीतल कृष्ण देलश्चि वचन दीदीके एक,
सए अपराि क्मा हम करब ओकर।

सए गाश्च सुनलाक उपरात चलल सुदशर्नि,
चक कएलक चेश्च्राजक श्चारोच्िद तखन,
सभा मध्य शाश्च ___पसरल िल जाए,
श्चाशुपाल पुिके चेश्चक गदी पर बैसाय।

यजक श्चकया श्चाश्चग्वि संपन िल भेल,
सभ राजाके ससम्मान श्चदा कएल गेल।
सभा भवनक चामत्कृत्य भेल चश्चश्चति,
दुयोिन-शकुश्च भवनके देखल चश्चकत।
नीचा देश्चख मृग-मरीश्चका बान्हल फाढ़,
पाश्च नश्च िल हसश्च रौपदी ई जाश्च,
अएना सोझा पारदरशी नश्च ई देखल,
ओ चोश्चल भीमक अटहाससँ श्चकल।

आँगा स्फश्चक फशिल जकरा बुझल,
पाश्च भरल भीजल िल सभ हँसल।

अपमाश्चत िल लए युश्चश्च रसँ आजा,
चलल हश्चस्तनापुर शीघश्च सभ भाता।
कोश्चत हृदय ईष्याक वशमे िल दुयोिन,
शकुश्च संग मंिणा कए कऽएकटा श्चचारल,
सोझे युदमे पाडवके हरेनाइ अश्चि मोश्चकल,
सोश्च ई दोसर व्यूह रचलश्चह दुष शकुश्च।
भव्य सभा भवन एकटा हम सभ बनाएब,
पाण्डव-जनके देखबा लेल सेहो बजाएब,
दूत खेलक िी महारिी हम गािरवासी,
ृितराष्टके कश्च आमंश्चत कराऊ बजाऊ।
भवन बश्च कए तैयार भेल एके श्चासासी।

दूत खेलक आमंिणक हेतु ृितराष्ट श्चचारल।
श्चदुर कहल राजन् खेल करत श्चनाश सभके,
दुयोिनक अंिपेममे ृितराष्ट मुदा नश्च मानल।

स्वयं श्चदुर गेलाह देबए श्चामंिण इंरपस्ि,

पाण्डव जनके अएला पर भेल पेम-मिलन।
मुदा हृदयक विष बहराइत जल्दी कोना कए,
दुर्योधन लए गेलाह युधिष्ठिरके सभा भवनमे।
दूतक चर्चा सिगरय होमए लगल छल ओतए,
शकुनि मामा फेकैत कहल युधिष्ठिर भऽ जाए,
सकुचाइत छथि क्षत्रिय भऽ करए छथि अनुरोध।
युधिष्ठिर तैयार जखने भेलाह, दुःशासन कहल,
ई खेल होएत युधिष्ठिर आ दुर्योधनक बीच,
मामा शकुनि पास फेकताह दुर्योधनक दिससँ,
हुनक हारब जीत मानल जईत दुर्योधनक से,
दोसर दिन खेल भेल सभा भवनमे भारतक हे!!
सभा भवन दर्शकसँ छल भरल,छल ओतए,
भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र उपस्थित।
पहिने रतक बाजी फेर चानी-सोनक लागल,
फेर छल सभक अश्व-रथ लागल जुआ पर ।
मुदा जखन तीनू टा बाजी युधिष्ठिर हारल,
सौंसे सेना लगाओल दाव पर ओ अभागल।
फेर बेर आएल राज्यक फेर चार भाय केर,
युधिष्ठिर बाजल नहि बचल लग हमरा लेल।
शकुनि कहल छथि द्रौपदी अहाक बीचमे।
एहि बेर जौं जीतब अहा, दए देब हम सभ,
भाइ,राज्य,सेना,अश्व-रथ,रत चानी सोन सभ।

युधिष्ठिर सुनि ई भऽ गेल छल तैयार जखने, हा।
धिक्। पापकर्मकी भए रहल अछि ई।
सभा बीच उठल पछि सभक नाद ई सभ।
युधिष्ठिर सेहो कहल हम कएलहुँ की ई ?

आनन्द मग्न कौरव छल, मुदा संतप्त एकेटा,
दुर्योधन-भ्राता युयुत्सु छल शोकाकुल सएह टा,
शकुनि आब एहि सभक बीच, फेकलक पासा,
ई बाजी हमर, हुंकारलक शकुनि हारल युधिष्ठिर !!

रौपदीके हाथ ठकाएल ठाढ़ ि लि सभा बीच।
भय मदान्ि दुर्योि नि कहल हे विदुर,
जाऊ समाचार ई रौपदीके जाए सुनाऊ।
ि ििि ओ हमर दासी झाि़ू-बहार करथि,
महलमे आबि हमर ई आदेश सुनाऊ।

विदुर कहल औ दुर्योि नि घमण्ड ि ाि़ि,
सि ीक जुआरी अहा हमरा नहि बुझु।

देखि विदुरक ई रप पठाओल प्रतिकामीके,
जाऊ दासी रौपदीके जाए आनू गए,
प्रतिकामी रौपदी लग कहि सुनाओल।

चकित रौपदी कहल स्वयंके जे हारल,
युधिष्ठिर कोनाके अधिकार ई पाओल,
अपन हाथक बाद होएत क्यो सक्षम,
दोसरके हेतु जुआमे लगाबए केहन।

ई पश जखन राखल प्रतिकामी सभा बीच आबि,
दुर्योि नि कहल दुाशासन जाऊ पकड़िके लाऊ।
बुझाओल रौपदी दुाशासनके, जखन ने मानल,
भागलि गाि ारीक भवन दिस, दौगल दुाशासन,
खूजल केशके पकड़ि घिसिआओने ि लि आनल।

हा! भारत ! व्यास मुदा नहि अहा कोनो तथ्य नुकाओल ।
सम्भल उदार भावनाक देल, तुष्टि पाओल!!

सभा भवन महापुरष नहि ि ाि जतए ि लि।
भीष्म, विदुर, रोण, कृपा लाजक लेल गोतने,
गाथि माि देखि रहल रौपदीक अि ुपात।
सिंहनादमे भीम तखन ई बाजल,
सूर्यि देवतागण रहब साक्षी अहा सभ,
हाि सँ दुाशासन केश रौपदीके ि एने,

उखाड़ि फेकब हाि ओकर ओ दूनू।

कौरव भए सँ भीत भेलाह नादसँ भीमक,
दुयोिन देखल मुदा देख ई िल बाजल,
जाघ पर दैत ािपि करैत घृणात इशारा,
रौपदीके बैसबा लए ओतए कहैत िल।

गरज कहल भीम अि म दुयोिनसँ,
तोहर जाघके तोडब पचण्ड गदासँ।

आज्ञायाके दुयोिन देलक ई आजा पुना ई,
चीर-हरण कर दुाशासन रौपदी दासी ि।

रौपदी कएलह नेहोरा िष लोकसँ
विनय ई अि लाज बचाऊ करैत ि विनती।

सभ क्यो झुका माि अपन ओ सभामे,
कृषाा ििल सभ आश सभ विशासँ,
भक्त वत्सल अहासँ टा अि ई आशा,
कोहुना राखू हमर ई लाज अि पत्याशा।

आर-स्वरसँ ि रह पुका रौपदी,
गोहाि खस सभा-बीच, मूर्छि ि ।

लागल खीचय रौपदीक वस्र दुाशासन,
सभासद देखल चमत्कार ई पल,
यावत रहल खींचैत वसके दुाशासन,
बढ़ैत रहल वस्र रौपदीक तावत तखन।

ि-हा बैसल जखन दुाशासन,
कहल भीम सुनू सभ ए भवनमे,
यावत फा िती दुाशासनक ऊष र रके,
पीयब, न प्यास मेटत मृत्यु भेटत न।

सुिन पासा जा ई सभ भयसँ ििििए लागल िल।
िृतराष्ट देिख दुघर्टना रौपदीके लगमे बजाओल,
सात्वना दए शात कएल युिधष्ठरसँ िल बाजल,
आसब जाऊ इन्रपस्थ सुख-शािन्तसँ रहए जाउ,
जे हािलहुँ, से बुझू देल हम ठामिह लौटाएल ।

संतोष भेलिन्ह पाण्डव-जनके ई सुिन,
कि ि िृतराष्टक घुरलाह इन्रपस्थ पुिन।

दुयोर्िन दुःशासन मंिणा कएल शकुिनसँ,
संग दुःशासन कणर्कि मंिणा फेर जुआक,
धनाशक हिस्तनापुरक िल बेर खराप।

एिह बेरक आअम राखल हारत जे से करत,
बारह वषर्क वनवास आ एक वषर्अजातवास।

िृतराष्ट दूत पठाओल हिस्तनापुर फेर।
युिधष्ठर घुरलाह भाएक संग बेर-अबेर,
सुनाओल गेल शतर्सिभ रोकल एक बेर।

मुदा भाल्याराजक आगा ककर अिछ चलल,
निह मानल कएल युिधष्ठर भाल्यक खेल!

चलल फेर पासा दुयोर्िनक, वैह खेरहा,
फेकल गोटी आनताओल शकुिन ओकरा।

हािर हारल राज्य, पाओल िल बनबास,
युिधष्ठरक भाल्य चाल्ह कुचािलक जीत,
राज्यक आणिर जुआक गोटीक संगीत,
की होएत से निह जािन सुन अकास।

िमशीज सभ हाथ,
चलल फेर वैह पि,
िमिक आ शाथनक,
िधि सभ थसाथ।

माता कुन्ती िश्म वृदा भेश्म कहल,
कहल िमशीज निध जा सकब अहा,
थदुर काक केर घर जा रहब,
जाएब कमिभोगए हम सभ।

रौपदीक पाचू पुि आ पुि अथामन्युक,
सुभरा जएतीह अपन नैहर दारकापुर।

िम्य पुरश्त संग रौपदी आ चार भाए,
काटब हम संग तेरह वषिक वनवास जाए।

नगरवासी सुथ गमनक ई समाचार,
कएलथह दुर्-दुर दुयोिनक अत्याचार।

जाएब हमहुँ सभ संग, िमशीज आइ,
िमशीज घुराओल सभके बुझाए जाए।

सभ घुथ गेल मुदा, नश्ह घुरल थप जन,
पुरश्त कएलथह उपासना सूयिक एश्ह क्ण।
वैह दैत िथि अन-फल समग आयि
उपासनाक उपरान्त पगट भेलाह सूयि

देलथह अक्य पाि नश्ह कम होएत अन,
रौपदी सभ थपके आ पाण्डवके खोआबथि,
फेर खािथ, सभ अघािथ, निध होए खतम,
जखन निध होए खतम पािसँ खादान।

युधिष्ठिर पहुँचला सरस्वती तीरक कात,
काम्यक वनमे कएलन्हि आवास।

एम्हर बीच सुनैत पाण्डव-पशंसा मुँहसँ विदुरक,
धृतराष्ट्र आकाश हटाओल विदुरके दरबार-मध्य।

ओहो आबि लगलाह रहए काम्यकवनमे,
पुनः पठाओल धृतराष्ट्र ओतए संजयके।

पाण्डव-जनक बुझओला उतर विदुर,
धृतराष्ट्र सँग गेलाह पुनः दरबार घुरि।

ऋषि-मुनिक सत्संगसँ लैत शिक्षा आ दीक्षा,
अगस्त्यक, ऋषि शृंग, अष्टावकक, लोपामुद्राक,
सुनैत छलाह कथा सवता नल दमयन्तीक ।

कृष्ण आबि बुझाओल व्यास अएलाह !!

व्यास कहल युद्धक हेतु कर तैय्यारी,
अनु इन्द्रक अमोघ शस्त्रक पाशुपतास्त्र,
कोना लड़ब संग भीष्म द्रोण महारथी ?

पाछू युधिष्ठिरक आजा चललाह अर्जुन,
पर्वत कैलास पर पार कए कऽ गंधमादन।
तूणीर आ धनुष हुनकर संगमे छल,
साधु जटाधारी तपस्वी अर्जुनसँ पुछल।

ई थीक तपोभूमि शस्त्रक काज नहि कोनो,
अर्जुन कहल हम क्षत्रिय धर्म किछु छोड़ल।

तावत शस्त्र सेहो ताहि दारे राखल अर्जुन,
पसन भए इन्द्र अपन असल रूप धरल।

मागू वत्स वर हमरासँ पसन ि◌ी हम,
श्वाकक संग श्चक्यासि भेटए एश्च क्ण।

अजुनि अहाक ई लालसा पूणिहोएत मुदा,
जाऊ श्वावके पसन कए पाशुपत पाऊ।

फेर देवगण देताह श्चक्यासि अहाके,
ई शसि सभ मानव पर चलाएब अश्चि वश्चति,
कहू अहा पाश्च करब की श्चक्यासि सभ ई।

शश्वक्त-संचय अश्चि हमर उदेश्य माि देव,
कौरव ि◌िनल अश्चि राज्य िलसँ परञ्च,
नश्च करब एकर कोनो कुपयोग नश्च हम।

इन्रक अन्ति◌ान भेलाक उतर अजुनिक,
श्वाव तपस्या कठोर िल होमए लागल।

तखन पावत्ती संग श्वाव चललाह तपोभूश्च,
अजुनि पुष्प बीश्चि रहल िलाह अबैत क्ण,
वाराह वनसँ श्चाकश्च कए सम्मुख आएल।

जखनश्चँ तूणीर िनुष राश्च संि◌ान कएलक,
श्चकरात वराहके लक्ष्य कएने दृश्च  आएल।
दुनू गोटे चलाओल वाण वाराह मारल,
एश्च बात पर दुहू गोटे झगि◌ बजारल।

अजुनिक गप पर जखन ठठाइत श्चकरात,
अजुनि ओकरा पर तखन वाण चलाओल,
परञ्च देश्च नश्च घाव कोनो पकारक,
अजुनि श्चकरात पर िल तलवार भाजल।

मुदा श्चकरातक देहसँ टकाराइत देरी,
भेल अजुनिक खरगक टुकि◌ी ि◌बैत देरी।
मल्ल युद शुर  भेल भेल अचेत अजुनि,

उठल जखन शुरू कएल पूजन कुलदेवक ओ,
पुष्प पञ्चराए शिवके उठल गर ि ल ओ माला,
किरातक गरदनिमे मध्य, देखि साष्टांग कएल तखनखन।

किरात वेशधारी शिव कहल वर माग अर्जुन,
पाशुपत अस्त्र मागल, ि बि रोकब एकरा सीखल पुनि।

शिव कहल बुझू मुदा ई तथ्य अछि जे,
मनुष्यक ऊपर एकर पयोग कखनहु करब नहि।

तखन अर्जुन आकाश गेल इन्द्रलोक स्वर्गधामे,
पाबि दिव्य अस्त्र किछु आकाश मारल असुर ओहिसँ।

एक दिनुक गप उर्वशी आयलि करैत याचना पेमक,
अर्जुन कहल अहा तँ ि ी अप्सरा गुरु इन्द्रक।

माता तुल्य भेलहुँ ओहि संबंधसँ अहा हमर,
आएल ि ी हम एतए आकाश पाबएक लेल शस्त्र किछु,
तपस्या नृत्यक आ संगीतक करए भोग नहि,
ताहि दृष्टिये अहा भेलहुँ हमर माता गुरु दुनु।

उर्वशी तखन देलक ओकरा शाप ई टा,
कामिनीक अहा शाप सुनू आवीर्य रहब अहा ।

वर्षभरि मुदा अकएक तँ कहल माता,
शाप ई पुनि बनत वरदान नुकाए सकब अहा।

पाण्डव जन सेहो पाबि रहल ऋषि मुनिसँ आकाश,
समाचार देलनि नारद अर्जुनक कहल अएत,
लोमश ऋषि आबि समाचार अर्जुनक सुनाएत।

किछु दिनमे लोमश ऋषि अएलाह ओतए,
कहल पाप्त कए पाशुपत शिवसँ कैलासमे,
अर्जुन देवलोकमे पाप्त दिव्यास्त्र कएल,

नृत्य संगीतक शिक्षाक अप्सरा गंधर्वगणिसँ
लए रहल शिक्षा अर्जुन देवलोकमे सनजम सँ।

तखन ऋषि तीर्थाटन कराऊ हमरा लोकनिके,
लोमश तखन गेलाह नैमिषारण्य पाण्डव संग।
पयाग गया गंगासागर पुरी टा कलिंग पहुँचल,
पश्चिम दिशा पभासतीर्थ यादवगण जतए छल।

स्वागत भेल ओतए सुभरा अभिमन्यु रौपदीसँ,
बलराम कृष्णक सात्वना पाबि बढ़ल आगा,
सरस्वती पार कए कश्मीर आ गंधमादन पर्वत,
पार कए चढ़ल पर्वत वर्षा आ हिमपातन बीच।

पहुँचि गेलाह बदरिकाश्रम विश्राम कएल ठहरि।
ओतहि दुःशला पति जयरथ काम्यक वनसँ,
छल जा रहल देखल रौपदीके असगर ओतए,
पाण्डवगण गेल छल शिकारक लेल तखन।

बैसल कुटीमे विवाह पस्ताव देल रौपदीके,
नीचता देखि रौपदी कठोर वचन जखन कहल,
रथमे लए भागल अपहरण कए दुष्ट जयरथ।

आश्रम आबि पाबि समाचार भीम ओकरा पर टूटल,
तखनहि अर्जुन सेहो आएल पाछू जयरथक गेल,
युधिष्ठिर कहल पाणदान देब पति दुःशलाक थिक ओ,
जयरथ देखल अबैत दुनू भाएके रौपदीके छोड़ि भागल,
भीम पटकि बान्हि आनल ओकरा रौपदीक सोझा,
रौपदी अपमानित कए छोड़बाओल ओकरा।

शिवक तपस्या कएल जयरथ वरदान मागल,
पराजित कए पाचू पाण्डवसँ कहल शिव ई,
नहि हारब अहा कोनो भाएसँ अर्जुनके छोड़ि।

व्यास पश्चिमके तपस्याक नाम देल,

आँखि मूनि मुदा ई पिात् मथ्मचत भेल !!

कणाि ल तपस्या कए रहल अजुनिकँ हरएबा लेल,
इन्द्र सोचल शरीरक कवच कुण्डल अि त ओ,
हारत नहि ककरहुसँ दानवीर पराकमी ओ ि ल।

सोचि ओकरासँ हम मागब कवच कुण्डल,
देखि ई सूयकिएलहि होऊ सचेत कणा
आबि रहल इन्द्र ि ि वेषमे याचना करत ई,
कवच कुण्डल ि िथ्रि थ्रक ि मागत नहि ओ।

कहल कणयिाचकके हम नहि नथ्रि कहब पण,
पण हमर नहि टूटत चाहे जे पथ्रणाम होमए।

तखनहि थ्रप वेशमे इन्द्र आबि दुहु वस्तु मागल,
ठोढ़ पर ममकि मुस्की कणकि हाि शर्त आएल,
काटि देहसँ कवच कुण्डल समथ्रित कएल तखनहि,
इन्द्र देल वर मागू ि िथ्रि ई वज हमर आर थ्रक ि ओ,
अमोघ शथ्रक्त मागल कणइिन्द्र देलहि कहि कए,
मारत जकरा पर चलत पुनि घुरत लग हमर अएत।

शनै-शनै ि ल बीति रहल बारह वषएिखना,
एक वषकि अजातवासक थ्रषयमे थ्रचार रहल,
थ्रचारि युथ्रिथ्र र रहल भाए आ रौपदीक संग,
तखने कनैत थ्रजैत एकटा थ्रप आएल ।

कहल अरणीक लकुि ि ल कुटीक बाहर टागल,
हथ्रण एक आबि कुरयाबए लागल ओहिसँ,
जाए काल थ्रहमे ओझरायल अथ्रणी ओकर,
थ्रथ्रमत भागल ओ लए हमर लकुि ,
कोना कए होमक अथ्रि आनब थ्रथ्रमत ि ।

थ्रपक संग पाचो भाए हथ्रणके खेहारल,

मुदा िल ओ चपल भए गेल ओझल।

वरक गाि‍क नीचा ओ सभ लक्ष्मजत थ्यआसल,
ठेक्ष्मआएल बैसल नकुल गेल सरोवर पाक्ष्म आनए।

एकटा ध्वाक्ष्म आएल ई चभच्क्षा हमर ि‍ी,
उतर हमर पशक क्ष्वनु देने पाक्ष्म नक्ष्मि भेटत ई।

नक्ष्म कान देल ओक्ष्म गप पर हकासल थ्यआसल,
पाक्ष्म जखने थ्यएल अरि‍ कए मृत ओ खसल।

सहदेवक संग सेहो एहने घटना घटल ि‍ल,
अजुनि जखन आएल फेर वैह ध्वाक्ष्म सुनल ।

शव्क्षभेदी बाण िि‍ल मुदा नक्ष्म कोनो पक्ष्माफल,
पाक्ष्म पीबैत देरी ओहो मृत भए खसल ि‍ल।

युक्ष्मिक्ष्म र भए थ्यक्ष्मक्ष्मात भीमके पठाओल ताकए,
पाक्ष्म पीक्ष्म मृत भए नक्ष्म घुरल ओतए।

युक्ष्मिक्ष्म र जखन वन बीच सरोवर पहुँचल,
मृत भाए सभके देक्ष्म क्ष्याकुल पाक्ष्ममे उतरल।

वैह ध्वाक्ष्म आएल उतरक क्ष्वना प्क्ष्यासल रहब,
होएत एक्ष्म तरहक पक्ष्मणाम ज्क्ष्मो ृि‍ष ता करब।

ई अक्ष्मि कोनो यक सोक्ष्म युक्ष्मिक्ष्म र बाजल,
पुि‍ पश उतर सम्क्ष्मक देब शुर भेल यक।

मनुष्क्ष्मक संग के अक्ष्मि दैत? पि‍मिता ई बाजू,
ि‍यिटा दैि‍ संग मनुक्क्ष्मक सक्ष्मखन सोकाजू।

यशलाभक अक्ष्मि कोन उपाय एकटा?

दान थिकनु यश नहि भेटैि कोनोटा।

वायुसँ त्वरित अछि कोन वस्तु?
मनक आगा वायुक गति नहि कतहु ।

पवासीक संगी अछि के एकेटा ?
विदाक इतर नहि संगी एकोटा।
ककरा त्याग कए मनुक्खके भेटैि मुक्ति?
अहं ािलि तखन भेटत विमुक्ति।

कोन वस्तुक हराएलासँ नहि होइि मन दुःखित?
कोिक हरएलासँ थिकए होअय क्यो शोकित।

कोन वस्तुक चोरिसँ होइि मनुक्ख िाक?
लोभक क्षति बनबैि पुष सबसँ।

बाहण जन्म, विदा, शील कोन गप पर अवलम्बित?
शील स्वभाव बिनु बाहण रहत नहि थिकि।

िमिसँ बढ़ अछि की जगतमे?
उदार मनक उच्च पदसि सभसँ।

कोन थाि नहि होइत अछि पुरान?
सज्जनसँ कएल गेल थाािताक कोना अवसान।

सभसँ पैघ अदुत की अछि एहि जगमे?
मृत्यु सभ दिनु देखनहु अिैतो जीवन लालसा,
एहिसँ बढ़ अदुत आियिअछि की?

पसनचित भए यक कहल युधिष्ठि र कहू,
कोनो एक भाएके हम जीवित कए सकब।

तखन नकुलके कए दिअ जीवित,
सुनि यक पूिल कहब तँ भीम अजुर्न कोनोके,

जीवित करब जकर रण कौशल करत रक्षा।

धर्मराज कहल मित्र बिना नष्ट होइ रक्षा,
कुन्ती पुत्र हम युधिष्ठिर जीबैत छी,
मारी मातुक पुत्र जीबथि नकुल सैह उचित।

सुनि कहल धर्मराज वेशधारी यमराज हे पुत्र,
पक्षपात रहित छी अहा ते सभ भाए जीबथि।

पुत्रके देखि मोन तृप्त भेलन्हि यमक,
पाण्डव गण तखन घुरि द्रौपदीक लग गेलाह।

पूर्ण भेल वनवासक वर्ष बारह अतीत,
एक वर्षक छल अज्ञातवास बड़ कठिन,
दुर्योधनके यदि हुनक संकेतक चलए पता,
पुनि द्वादश वर्षक वनवासक छल प्रण।

प्रातःकाल सभ विदा भेलाह विराट नगर दिशि,
धर्मराज कंक नामा ब्राह्मण वेश धरि विचरि।
कौड़ी आ चतुरंग गोटीसँ विराटराजक मोन लगाएब,
भीम बनि पाचक नाम वल्लभक पाकशाला सम्हारथि।

विराटक पुत्रीके संगीत नृत्य अर्जुन,
नारी वृहनला बनि सिखाबथि,
ग्रन्थिक नामसँ नकुल अश्वक करए रखबारि,
सहदेवक नाम तंतिपाल भेल करथि चरबाहि।

रानीके सजाबथि द्रौपदी नाम धरि सैरन्ध्रीक।
सभ ई सोचि नुकाओल अस्त्र-शस्त्र,
शाखा बिच शमी-वृक्ष एकटा विशाल मध्य।
जखन वेश धरि पहुँचलाह विराट राजा लग,
स्वीकारलन्हि ओ सभटा प्रार्थना सहर्ष।

अन छल बीतल रहल मुदा रानी सुदेष्णाक,
भाए छल कीचक दुष्ट देखलक सैरन्ध्रीक भेल मुग्ध।
बजलनसँ पूछल कोन देशक राजकुमारी छथि,
कहल बजलन नहि छी मात्र दासी ई।

मुदा कीचक पहुँचल रौपदी लग बाजल,
सुन्दरी दास बनाऊ हम मुग्ध पागल।
सैरन्ध्री कहलक, हम अवाञ्छिता एक दासी,
अहाक पाञ्चता छी नहि पुछ गप ई बाजी।

मुदा कीचक बहिनसँ पुछ अनुरोध कएलक।
पवित्र सुदेष्णा कोनो वस्तु अनबा हेतु कहलक,
सैरन्ध्रीके कीचक लग जाए तकरा आनए पठेलक।

मुदा ओतए देखल वासनाक आँखि भागल,
भीमसँ जाए बाजल सभ कहल पाण्डवके ।
भीम बाजल आब जे ओ भेट होअए,
नाटयशालामे बजाऊ आ राति सोचब फेर ई,
हमरा की करबाक अछि ओहि दुष्ट के ओतए।

कीचक विराटक सेनाक पमुख सेहो छल,
सैरन्ध्रीक आमंत्रणिके नहि बूझि पहुँचल अभागल।
स्त्री वेष धरने भीम ओतए पतीक्षारत,
केश पकड़ि पटकल, लात-हाथ मारल कीचकके ओतहि।

भोर होइत ई गप पसरि गेल चारू दिशा,
कीचकके मारल गंधर्व सैरंधीक।

सैरन्ध्रीक पक्ष भय-दिग दुनू पसरल,
दुर्योधन छल बुझल अजातवासक कथा,
छल ताकमे तकबाक पाण्डवक पता,
छी ई रौपदी सैरन्ध्रीक भेषमे अभरल।

पाण्डव छद्म-भेष बनओने छथि गाम विराट,

कीचकसँ अपमानित राजा त्रिगतदेशक,
आश्रम दुर्योधनिसँ कए गौ-हरणक विचार
विराट राजसँ ओ लेत बदला आब।

दुर्योधन लए संग भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण,
आक्रमण विराट पर लए अश्वत्थामा संग।
त्रिगतराज सुशर्मा घेरि गौ-विराटराजक,
बान्हि विराटके जखन ओ सोझा आएल।

ललकारि कएल भीमके सोर युधिष्ठिर-कंक,
वल्लभ-भीम ग्रंथिक-नकुल तंत्रिपाल-सहदेव।
खोलि बन्हन विराटक बान्हि देल सुशर्मा,
वृहनला बनि सारथी पुत्र विराटराज उत्तरक।

रथ आनल रणक्षेत्र उत्तरकुमार भेल घबराएल,
गेल अर्जुन शमी गाछ लग उतारि शस्त्र आएल,
गाण्डीव अक्षय तुणीर आनि परिचय सुनाओल।

उत्तरकुमार बनल सारथी वृहनला-अर्जुनक संग,
वेगशाली रथ देखि दुर्योधन पुछलि हे भीष्म।

अज्ञातवासक काल भेल पूर्ण वा न वा कहू,
भीष्म कहल पूर्ण तेरह वर्षक अवधि भेल औ।

अर्जुन उतारल अपन रोष कर्णपुत्र विकर्णपर,
मारि ओकरा बढ़ल आगा कर्णक्षे बेलि सेहो।

द्रोण-भीष्मक धनुष काटल मूर्च्छित कएल सेना सकल,
द्रोण-कृप-कर्ण-अश्वत्थामा-दुर्योधनक मुकुट वस्त्र सभ,
उत्तरकुमार उतारल सभटा गौ लए नगर तखन घुरल।

मूर्च्छा टूटल सभक जखन कहल करब युद्ध पुना,
भीष्म नहि मनलाह दुर्योधन घुरु बहु भेल आब आ।

उतमकुमार नञ्ञि करब पगट भेद हमर अजुनि कहल,
थ्वराट भेल पसन वीरता सुथ्न उतमक आथ्व घर।

पञ्च पाण्डव रौपदीक तखन पथ्वचय हुनका भेटल,
पस्ताव कएल पुी उतराक थ्ववाह अजुनिसँ करब।

अजुनि कहल पढ़ेने ि ी हमर थ्वाष्या अथ्रि ओ रहथ्न,
पुि अथ्मामन्युसँ होएत थ्ववाथ्नत उतरा ई पस्ताव िल।

वाह व्यास वाह, बाल-अमेल थ्ववाह थ्वरोि,
की चतुरता कौशल कथ्वत्वक कएल औ।

कृष्ण-बलराम दारकासँ बथ्वयाती अथ्मामन्युक लए अएलाह,
उतराक थ्ववाह अथ्मामन्युक संग भेल बि टोप-टहंकारसँ।

िलाह आएल राजा वृन्द अथ्मामन्युक थ्ववाह पर,
भेल राजाक सभा जतए कृष्ण कएल थ्वनती ओतए।
दूत खेल शकुनीक, अपमान रौपदीक कएल जे,
दुयोिन िनिल राज्य युथ्रिथ्र रक अिमिसँ से।
बाजू पयत राज्य-पाथ्नक कोना होएत वा,
दुयोिनक अत्याचार सहैत रहि पाण्डव सतत।

रुपद उथ्त कहल दुराचारी कौरवके सभ जनए िथ्रि,
कतथ्रि हमरा सभक थ्रिक सहाय बनी पाण्डव जनक।

करए लगलाह पाडव युदक तैयारी थ्वराट रुपदक संग पाथ्व
लगाए कुरक्षे लग पाडव रकलाह थ्वाथ्वर पसाथ्व।

दुयोिनके जखन लागल खबथ्र ओहो कएलक तैयारी,
संदेश पठाओल राजा सभके कौरव पाडव तखन,
अपन पक्षमे करबा लेल युद शुर होएत जखन।

कुरक्षेत्रकि स्थलीमे सभटा जुटान लागल होए शुर,
यादव गणके पक्ष करबा लए दुर्योधन द्वारका गेल स्वयं।

पहुँचैत दुर्योधन गेल देखल कृष्ण छलाह सुतल ओतए,
अर्जुन सेहो पहुँचल पैर दिसमे बैसल गेल ओ ओतए।

कृष्ण जखन उठल देखल अर्जुन छल ओतए,
कहू वत्स की चाही अहा आएल छी एतए।

युद्धमे संग अहाक हमरा चाही हे नारायण,
अर्जुनके बजबाते दुर्योधन टोकल अएलहुँ पहिने एतए।

कृष्ण कहल हम शस्त्र नहि उठाएब युद्धमे,
नारायणी सेना चाही वा हमरा करब अहँ पक्षमे।

दुर्योधन नारायणी सेना चुनि भेल संतुष्ट आ,
अर्जुनके नारायण भेटल छल पफुल्लित सेहो।

पाण्डव मामा छलाह शल्य मारीक भाए जे,
आबि रहल युद्धक लेल दुर्योधन सुनि गेल ओतए।

रस्तामे व्यवस्था-बात कएल तेहन छल,
शल्य कहल अछि मोन पुरस्कृत करी काज जकर।

दुर्योधन भेख बना जाए रहल छल ओतए,
पकट भए मागल युद्धमे होऊ साहाय्य हमर,
एहि सभ व्यवस्थाक छी हमही प्रमाण कएल।

शल्य दए स्वीकृत पहुँचलाह जखन कुरक्षेत्र,
युधिष्ठिर सुनू छल भेल हमरा संग अतए।
कौरवक पक्षमे युद्ध करबा लए वचन बद्ध,
कहू कोन विधि होए साहाय्य अहाक वत्स।

युधिष्ठिर कहल बनू सारथी कर्णक आ कर,

हतोत्साहित कर्णकेँ गुणगान गाबथि पाडवक।

शल्य कौरवक सारथिर बनि चललाह तखन,
युद्ध सन्निकट अछि कृष्ण अएलाह जानि सेहो,
एतए सुनल द्रुपदक पुरोहित गेल छलि धृतिराष्ट्र लग।

संधिक प्रस्ताव पर देलक कियो नहि टेर ओतए,
दुर्योधन कहल राज्य छोड़ू सुइयाक नोक देखने छी?
नहि भेटत पृथ्वी ओतबो राज्यक तँ छोड़ू बात ई।

ई सुइयाक नोक भरि पृथ्वीक नहि देबाक बात छलि,
दुर्योधनक हठक ई आ धृतिराष्ट्रक आकांक्षाक पतीक छलि।

युधिष्ठिर कहल छी कृष्णके आदि राज्य छोड़ैत छी,
जाऊ कृष्ण पाच गाम दुर्योधन देत जँ यो राखू प्रस्ताव ई,
ओतबहिमे करब हम सभ भाए माएक संग निर्वाह।

सात्यकीक संग कृष्ण हस्तिनापुरक लेल चलला जखन,
द्रौपदी कहलन्हि देखू केश फुजले अछि ओहिना छथि एखन,
कान्ह कहल संधि होएत युद्ध बिन खुजले रहत वेणी तखन।

कहथि बात सुइया बराबरि जे नहि छोड़ैत हठ अपन,
पाच गामके तँ बुझत ब्रह्माण्ड ओ हठी सभ्य खन।

कृष्ण कहल मानत नहि संधिक गप कखनहुँ दुर्योधन,
युद्ध अछि अवश्यम्भावी मनोरथ पूर्ण होएत द्रौपदी अहँक।

कृष्ण जखन गेलाह हस्तिनापुर सभ प्रसन्न छलि,
धृतिराष्ट्र, दुःशासन-दुर्योधनक संग स्वागत कएल।

मुदा कृष्ण ओतए नहि ठहरथि दीदी कुन्तीक लग गेलाह,
विदुरक गृहमे छलीह ओतए गप विस्तृत भेल आब।

कहल कुन्ती दीदी अहा जा कए कर्णकेँ पठबचए बिद्धअ,

आश्व जएत भातृ-पाण्डव लग सत्य ओ जाश्वा कए।

दोसर श्वन सभामे पहुँचलाह कृष्ण, ि लि ि लि ओतए मुदा,
दुयोि नि श्वचारल बाश्वह राखब कृष्णके अएताह ज्यो।

भीष्म ि ितराष  रोण कृप कण ि शकुश्व दु ि शासन ओतए,
कृष्ण कहल शकुश्वाक चौपि दुयोि निक श्वश्वासँ फेकब,
अन्यायपूण ि ि लि ओश्वना रौपदीक अपमान ि लि करब।

श्वराट पर आकमण पाण्डवके सतेबाक उपकम बनल,
आि राज्य ज्यो दए दी तखनो शाश्वासँ रश्व सकैि सभ।

सभ कएल स्वागत एकर दुयोि नि मुदा कोश्वित बनल,
कृष्णके बन्हबाक आजा देलक भीष्म तमसयलाह बि ।

तेज कृष्णक मुखक देश्व कौरव भयसँ ि लि श्वहरल।
दुयोि नि कहल श्वता ज्येष  हमर अंि ि लिाह से राज्य नश्व भेटलश्वह,
हुनक पुि ज्येष  हम से अश्वकार हश्वतनापुर पर अश्व सुनलहुँ।

पाण्डव अन्यायसँ लए राज्य करए ि श्व करैत तैय्यारी युदक,
कृष्ण अश्व पाि ओकर हम तँ रक्त राज्यक करए ि ी।

कृष्ण कहलश्वह तखन पाच गाम श्वअ करबा लए श्ववाह,
मुदा दुयोि नि कहल राज्यक भाग नश्व होएत गए आब।

कृष्ण बाश्व जे हे दुयोि नि मदानि ि ी बनल अहा,
पाण्डवक शश्वक सोझा नाश होएत श्वश्वित बुझू अहाक।

कुन्ती बादमे गेलीह कणक्रि कहल दुवासाक मंि भेटल,
पढ़ल सूयक्रि स्मरण कए पुि हमर भेलहुँ अहा तखन।

पणाम कएल माताके कण ि तखन बजलीह सुनू ई,
ज्येष्ठ पाण्डव ि ी अहा, राज्य युश्वश्व र देत अहीके।

जखन नञि मानल कर्ण कुन्ती पुत्रि मातृत्रृणसँ,
उबरब कोना, कर्ण बाजल हे माता तखन सुनू ई।

अर्जुनिके छोड़ि चार पाण्डवसँ नञि लड़ब पूर्ण शपथ लये,
अर्जुनिके मारब तखन बनब पुत्र अहींके।

वा मरब हम पुत्र तैयो पाच टा रहबे करत,
ई प्रतिज्ञा हम करए छी माता कुन्ती अएलीह घुरि।

कृष्ण आबि घुरि पहुँचि समाचार पाण्डवक जखन,
पाण्डव युद्धक कएल प्रक्रिया शुरु ओतए तखन।
सात अक्षौहिणी सेना घोड़ा, रथ, हाथी, सैनिकक,
अर्जुन भीम सात्यकि धृष्टद्युम्न द्रुपद विराट लग।

कौरव सेहो एगारह अक्षौहिणी सेना कृपाचार्य शल्य भूरिश्रवा,
भीष्म द्रोण कर्ण अश्वत्थामा जयद्रथ कृतवर्मा भगदत्त छल।

धृष्टद्युम्न सेनापति पाण्डवक भीष्म कौरवक बनल,
कर्ण शस्त्र नञि उठेबाक कएल प्रतिज्ञा
भीष्म यावत युद्धक भूमि रहताह गए।

भीष्म कहल मारब नञि पाण्डवके एकोटा,
सेनाक संहार करब यथा संभव होएत।

व्यास धृतराष्ट्रक लग गेलाह कहल व्यासजी सुनू,
आँखिक भेल वर हमर कुल संहार देखब नञि चाहैत एक।

मुदा वीरक गाथा सुनबाक अछि इच्छा बहुत,
व्यास देल योगसँ दिव्यदृष्टि संजयके कहल,
बैसले-बैसल देखि संजय वर्णन करताह युद्धक,
बाजि ई व्यास विदा भए गेलाह ओतएसँ।

भेल भोर रणभूमिमे कौरव-पाण्डव जुटल सेना सज्जित
आगा भीष्म कौरवक आ पाण्डवक अर्जुन-कृष्ण रहथि।

भीष्मक रक्षिक दुहुओर दुःशासन दुर्योधन छलाह,
पाछाँ अश्वत्थामा गुरु द्रोणक संग भाला आह।

युद्ध कए राज्य पाएब मारि भ्राता स्वजनके,
सोचि विहल भेल अर्जुन गाण्डीव खसत कृष्ण हमर।

कर्मयोग उपदेश देल कृष्ण दूर कर मोह-भ्रम,
स्वजन पक्षक मोह कर्तव्य कर्मसँ विमुख न होऊ।

अधर्मसँ कौरवक अछि नाश भेल देखू ई दृश्य।
विराटरूप देखि अर्जुन विशाल अग्नि ज्वालामे,
जीव-जन्तु आबि खसथि भस्म होथि क्षणहि,
कौरवगण सेहो भस्म भए रहल छलाह,
चेतना जागल अर्जुनक स्तुति कएल सदा।

फलक चिन्ता छोड़ि कर्म करबाक जानसँ,
आत्मा अमर अछि शोक एकर लेल करब नहि उचित।

युधिष्ठिर उतरि रथसँ भीष्मक रक्षि दिस गेल,
गुरुजनक आशीवाद लए विजयी लौटि मौन राखल।

भीष्म द्रोण कृपाचार्य पुलकित विजयक आशीष देल,
धृतराष्ट्र पुत्र युयुत्सु देखि रहल छल मिलीभगत
छोड़ि कौरव आएल पाण्डव पक्षमे तत्काल,
युधिष्ठिर आलाओल गर ओकरसँ भेल शंखनाद।
अर्जुन शंख देवदत्त फूकि कएल युद्धक घोषणा,
आक्रमण कौरवपर कए रथ हस्ति घोटक पैदल,
युद्धमे पहिल दिन मुइल उत्तर विराटक पुत्र छल।

भीष्म कएल भीषण क्रोध साझमे अर्जुनक शंख,
बाधित कएल युद्धक समाप्ति भीष्म सेहो बजाओल अपन।

पञ्चल श्चनक युदसँ पाण्डव शोञ्चकत दुयोिन हञ्चत्ति।
दोसर श्चनक युद जखन शुर भीष्म आनल पलय।
कृष्ण एना भए हमर सेना मरत चलू भीष्म लग,
हँ िनञय रि लए जाइत िी भीष्मक समक।

दुहुक बीच जे युद् भेल श्चकराल िल ररिराएल सकल।
भीम सेहो संहारक बनल भीष्म िश्चि अजुिनके ओम्हर दौगल,
साञ्चकीक वाणसँ भीष्मक सहीसक अपघात भेल,
खसल भूञ्च तखन ओ भीष्मक घोि भागल वेगमान भए,
साझ भेल शंख बाजल युद दू श्चनक समाप्त भेल।

तेसर श्चन साञ्चकी अञ्चमन्यु कौरवपर िूटल,
रोणपर सहदेव-नकुल युञ्चिञ्च र आकमण कएल,
दुयोिनपर टूटल भीम वाण माञ्च अचेत कएल,
ओकर सहीस दुयोिनके लए चलल रणक्षेसँ,
कौरव सेना बुझल भागल िल ओ युद िश्चि कए।

भाञ्च रहल सेनापर भीम कएलञ्चह आकमण,
साझ बञ्चा रक्क आएल दुयोिन कुञ्चत भएल।

भीष्मके राञ्चिमे कहल अहाक हृदय अञ्चि पक्षमे पाडवक,
भीष्म कहल िश्चि ओ अजेय परञ्च युद भञ्च सक करब।

सक भञ्च युद करबाक बात कहल भीष्म दुयोिनके,
चाञ्चम श्चन कएल आकमण पबल वेगे,
अजुिन कएल पयत रोकबाक हुनका क्षि,
पाचम िठम आ सातम श्चन एञ्चना सेहो बीतल।

आठम श्चनक युद भेल घनघोर,
अजुिनक दोसर पती उलूपीक पुि इरावान,
युध्दम मध्य मरल अजुिन भेल अञ्चि।

कएल युद भयंकर भीष्मके नञ्च टेरल,

दुर्योिन ि लि श्चश्चआत कणर्कि ठाम गेल,
घुश्च भीष्मके कहल अहा ि ी अन्हेर कएल।

एहन रहत तखन बनाएब कणर्कि सेनाध्यक्क,
भीष्म कहल बताह ि ी अहा भेल,
कणर्कि वीरता श्चराटयुद्मे नश्च देखल?

नवम श्चदनक युद्ि लि भयङ्र,
अजुर्निक रिके भीष्म वाणसँ तोपल,
कृष्ण-अजुर्नि अपघात रि कश्चागस्त,
घोटक रकल अजुर्नि श्चाश्चिल पस्त।

कौरवक उत्साह ि लि देखबा जोगर,
कृष्ण कोश्चित रिक पश्चया लए ि ूटिल,
मारब भीष्म खतम करब ई युद्।

अजुर्नि पैर पकश्चि कए कहल हे कृष्ण
शस्ि नश्च उठएबाक कएने पश्चाजा ि ी
लश्चजत रिसँ कूद्ि ि ी हम आएल,
भीष्म सेहो देखल भए भाव-श्चहल।

रप तेजमय शस्ि लेने कृष्ण।
कृष्णक कोि भेल जा कए शान्त,
साझक शंख कएल श्चदनक युद्ात।

राश्चमे युश्चिश्च र पुलिश्चह हे नन्दक नन्द,
भीष्मक पराजयक अश्चि की रहस्य,
भीम कहल अजुर्नि नश्च जाश्च श्चकएक,
नश्च पयोग कए रहल श्चव्यास्ि भीष्मपर।

कृष्ण कहलश्चह चलू पाचू भाए,
पूश्चि आबी हुनकश्चसँ हुनक उपाय।
सभ पहुँश्च पूिल बताऊ हे भीष्म,
अहाक रहैत नश्च हारत कौरव कमिश्च।

सत्म ि मि दुिहु भए जएत अलोध्यत,
भीष्म कहल ि ी देश्वब्र रहल भए िस्त,
अजुनि नश्च कश्व रहल पयोग श्वव्यासि,
मुदा हश्वस्तनापुरक श्वांहासनसँ कश्वबद,
हा दुभाला! असत्मक मयादाक रकाि ि!

अश्वि श्वाखण्डी रुपदक पुि अहाक पक,
पूवजिन्मक सि ी अश्वि श्वावक कएल वत्त्र,
हमर वि कि लेल अश्वि सतत पश्चापल।

रुपदक घरमे सि ीक र प जन्म ि लि लेल,
दानवक वरसँ पुर ष र प बश्चा गेल।

गुण सि ीत्मक अश्वि ओकरामे पाि,
सि ीगण हमर वाणक नश्च िश्वि पाि।

श्वाखण्डीके सोझा कए जे वाण अहा चलाएब,
पूणश्चिवश तखने हम पाि भिए जाएब।

भए आस्पास्त पणाम कए भीष्म पाडवगण,
घुरल दसम श्वनुका युद् कि ि लि आयोजन।

आइ सेहो भीष्मक वाणक भेल बरखा,
मुदा श्वाखण्डी आएल सोझा हुनकर।

राखल असि भीष्म चलाओल वाण श्वाखण्डी,
मुदा कोनो नश्च जोि ओकर वाणक ि लि श्वकन्तु,
कृष्ण कहल लए अढ़ श्वाखण्डीक अजुनि,
भीष्मक देहके गाि़ कर नश्च श्वन्तान।

अजुनिक शंका सुश्चा कहल तखन कृष्ण,
असि-शसि संग जीतत क्यो नश्च भीष्म,
अपनश्च िश्वि ओ उपाय एहन बताओल,

ध्वनु थलम्ह कए वाण अहा चलाऊ।

अजुनिक वाणक शुर भेल बरखा,
खसल भीष्म पृथ्वी शय्या िल वाणक,
शरशय्यापर खसैत भीष्मक देरी िल,
युद खतम भेल ओश्ह ध्वनक तत्काल।

कौरव पाण्डव जुश्म अएलाह समक,
भीष्म कहल ध्वअ गेरआ मा तिर। अह।

महग गेरआ लए पस्तुत दुयोिन िल,
ताकल भीष्म अजुनि ध्वस अजुनि भए साकाक,
तीन वाण चलाओल आ िर मा िक भेल ।
प्यासल भीष्म जलक लेल कहल पुना ई,
दुयोिन स्नणपिा िमे जल अनबाओल,
ताकल भीष्म अजुनि ध्वस फेर पा िचलाओल,
वाणसँ सोत श्वकलल जलक ऊपर ध्वस,
पाश्व खसल मुख भीष्म भेलाह फेर श्वारथ्यत।

सूयि िश्ची अखन दक्ष्वणायणमे जाऊ सभ क्यो,
पाण त्यागब हम उतरायणमे पहुँचल कणि सेहो।

करबद पणाम कए लए आशीवाद ठाढ़ ओतए,
भीष्म कहल हे कणि युदके रोकू कुन्तीपु ि अहा ि ी,
अजुनिके नश्ह हरा सकब अहँक तुचि इच ि ी ई।

कोन युदमे अजुनिसँ ि ी बलशाली देलहुँ पमाण?
अहा बुझाएब दुयोिन मानत ि ी हम जाश्व।

कणि किहल हम सार ि ीपु ि दुयोिनक पाओल सम्मान,
राजा भेलहुँ दुयोिनक ऊँच उठाओल हमरा,
पाण्डव पौ ि अहाक रहश्ची शस ि उठाओल श्वकएक?

कौरवगणके अहा धिकएक नक्षत्र बुझाओल,
युद बढ़ल अग्नि आगा, कोना हम िबि दुयोिन मजिर।

दस धिनक युद भेल बाद,
रोण बनलाह सेनापश्च आब।

दुयोिन कहल कर एक काज,
युधिष्ठिरके पकधि कर युद समाप्त।

मुदा अजुिन अग्नि ओतए सतत,
दूर हटएबाक कर कोनो अि,
दुयोिन बजाओल राजा देश धिगति,
राज सुशमा संसप्तक संग चलत,
लए अजुिनके दूर युधिष्ठिरक।

ओम्हर पाण्डव कएल युधिष्ठिरक रक उपाय,
रक्क रहत अजुिन-भीम दुहु ओर दुहु भाए।

होएत धिकं कारणसँ कष्णको दूर ज्यो क्यो,
नकुल सहदेव साक्ष्यकी लेत सिन धिक्त ओ।

रोणक संग िल कणि अशवतिमा,
जयरि कृप,कृतवमा, कष्णंग नरेश।
धिगतरीज सुशमा देलक ललकारा,
अजुिन देख्न सतकि किएल साक्ष्यकी के।

गुरधाष्य धिच आब शुर होएत युद,
तीर दुइ टा िधि अजुिन कएल आरम्भ,
खसल पदपर रोणक अजुिनक ई दुहु वाण।

आह व्यास पणाम !!
कए पणाम लए आशीष गुरक आइ अजुिन,

श्मान रीश्माक पेम नश्च ि लि नुकाएल कहा।

कएल आकमण पाण्डवपर सोझासँ रोण पाशसिँ कणि
सुशमाक पाि अजुनि शल्म आश्च गेल लि बा लए भीमसँ,
कणि किएल आकमण साश्चामकी ि लि त्माश्चत ओतए।

सहदेवसँ श्मा लि शकुश्मा नकुल टा बाचल ओतए,
रोण बढ़ल सोर भेल पकि लि रोण युश्वी श्च रके,
अजुनि ि श्वी श्वीगत निरेश घुश्च आएल जे,
रोण ि ि लि आशा पकि बाक युश्वी श्च र,
साझ भेल युद बन्दीक शंखनादक श्वाच।

बारहम श्चन सेहो श्वीगत सिभ देल ललकारा,
मुदा वेगसँ आकमण कए अजुनि कएल संहार,
घुश्च बढ़ल देखल भगदत ि लि हा िपर सवार,
हा िक-अंकुश फेश्क कएल ओ अजुनिपर पहार,
कृष्ण रोकल अंकुश, अजुनि लेलक ओकर पाण, अि ि यन्र वाणसँ।

रोण बढ़ल युश्वी श्च र श्चस सत्मश्चात रक्क ि लि आइ,
माश्च अशके रोणक सत्मश्चात र कि पश्चआ देल काश्च।

रोणक अि ि यन्र वाणसँ सत्मश्चातक गरदश्मा खसल अरि ए।
युश्वी श्च र मश्चातश्च देश्च सत्मश्चातके घुरल रणसँ अश्चलम्बा,
अजुनि नश्च पाश्च युश्वी श्च र भेल बताह मारल जन अि हि,
रोण देश्च अजुनिक ई र प भेलाह हताश संध्माक शंखक आश।

श्चन श्चतल दुयोि नि कहल हे गुर रोण,
स्नेह अश्वी अहाक पाण्डवक पश्चा ते ई दोष,
रोण भेल कोश्चात कहल बनाएब चकव्यूह जकर तोि,
अजुनिक अश्चाश्चक्त युश्वी श्च रक लग अश्वी नश्च क्योत।
फेर तेरहम श्चनक युद भेल शुर जखन,
संसप्तक आ श्वीगतकि पि िआबैत गेल अजुनि।

तखनञ्ह युधिष्ठिरके पता चल चक्रव्यूहक,
अभिमन्यु देखि अयलाह काकाके कहल,
गर्भमे सुनल छल पिता माताके वर्णन सुनबैत छलि,
चक्रव्यूहक छैक दारके तोड़बाक सभटा,
स्मरण युद्धक वर्णनक अछि बचल नञ्ह कोनोटा।

मुदा सातम दारक युद्धक वर्णन सुनल नञ्ह,
माता सुतलि तखने बचल एकेटा दार सैह।

कथा व्यासक पेटमे सीखब अएबाक अछि,
शक्तिशाली वीरक अछि ई प्रतीक ।
सोझा तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नञ्ह बुझाएल,
कतए अछि दार कतए प्रवेश जयद्रथ रक्षक जतए,
आउ भीम काक ई अछि प्रवेश दार पैसब एतञ्ह।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल भीतर,
भीम दोसर सेनानीके रोकए जयद्रथ ठाढ़ ओतञ्ह।

दोसर दारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,
काटल छन्नुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।

तेसर दारपर चिल्लैत कर्णपर कए वाण बरखा,
बढ़ल चारिम दारपर अश्वत्थामा जतए छलि,
युद्ध भेल घनघोर एतए मुदा रोकए सकल नञ्ह,
अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल अयलाह,
कर्णआब करब की बाजू पराजय बुझाइत अछि।

कर्णबाजल सभ अछि सातो महारथी हम सभ,
रोकए सकब एहि बालकके नञ्ह क्यो सकत असगर।
सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,
पहुँचि गेल सातम दार पहुँचल अभिमन्यु तावत।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतए कहल,
ई सभ अधिमी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराएब,

अजुर्न पुि हम नश्च ि ि ब युद हम एना देखू,
पािपुिक शौयरि घुमाऊ चकाकार कए अहँ।

तखन लक्ष्मण आएल सोझा अश्वामन्युक ओतए,
वाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक, रोण कहल,
अजेय ई अश्वि अभेद एकर कवच कर पहार श्वारश्वा आ
तखनश्च सारश्वि अश्वामन्युक खसल टूश्च गेल रि ।
नीचा आश्व तरआश्व चक गदा लए ओतए ओ चलल,
दुाशासनक पुिसँ गदा युद भेल दुनू ओतश्च खसल ।
पश्चने उश्च दुाशासनक पुि पहार कएलक मस्तकपर,
सप्तरिीक बीच खश्वा पिल सुभरापुि पश्वा उतराक।

सुभरा उतरा पहुँश्वा गेलीह सातम दार श्वलखैत,
उतरा कहलश्वह माता मृत्युक आजा श्वअ एतश्च।

मुदा गभििल उतराक पेटमे सुभरा बुझओलश्वह,
ओम्हर श्वगितसिंसप्तकके कश्व पूणरिपे संहार,
अजुर्न घुरल सोचैत युश्विश्व र होश्वि सुरश्वत ।
सुश्वा मृत्युक समचार श्वचल कृष्ण कहल अजुर्न,
कारण मृत्युक अश्वि मािबहनोइ-जयरि,
कए श्वावक तपस्या भेटल वर ओकरा ई,
अजुर्न ि श्वि आन पाण्डव नश्च जीतताह ओकरा।

पिम दारपर ठाढ़ ओ रोकल चार भाएके ओतश्च।
सुनतश्च ई अजुर्न कएल वि करब काश्वि सूयास्तक पश्चने,
जयरिक वि करब नश्च तँ करब अश्वाके समश्वति ठामश्च।

चौदहम श्वनक युद भेल पारम्भ,
शकट-व्यूह रोणक झापल जयरि ।
दारपर व्यूहक पहरी रोण िलाह ठाढ़,
श्वकट युद कृष्ण लेल रि कनश्वियाह ।
रोण ललकाश्व कहल अजुर्न युदसँ रहल िी भाश्व,
मुदा अजुर्नके आइ िल दोसर ि्श्वा सबाश्व ।

कृष्ण रि लए भीतर व्यूहमे पैसलाह,
बेर पहर श्थात युधिष्ठिर पठाओल सात्यकी भीम,
जाऊ अजुनिक सहायाि किछु दुनू बढल आगा ।
भूश्रवा कएलक आकमण सात्यकीपर तखन,
वाण अजुनिक बढ़ल ओकर ध्वस दुहु हाि कटल ओकर ।
की कएल अजुनि अहा हम लिि रहल िलिहुँ सात्यकीसँ,
हमर हाि काटल अहा अिि कोन न्याय बताऊ फिशािके।

अजुनि कहलिह अिभमन्युक वि कएल अहा सभ कोना,
न्यायक बात करए िि, रक्ष कएल हम सात्यकीक जेहा।

भूश्रवा खसल अचेत सात्यकी काटल मूिि भूश्रवाक ।
अजुनि देखि भीम सात्यकीके भेल श्थात घुरल,
युधिष्ठिरक मोन िलिह हुनका पिल ।

तखने सूयास्त भेल अजुनि उताि देल गाण्डीव,
श्ाता िल सोझा आिा िहिह,
करैत पाण्डवक आँखि झलमल।

बढ़ल अजुनि िबना शस्त्र-अस्त्र श्ाता ध्वस,
बाजल कृष्ण क्षत्रिय अजुनि लए अस्त्र जाऊ श्तामे,
अक्षय तूणीर गाण्डीव नि त्यागी मृत्यु संग जएत।

मुदा जखने अस्त्र लेलिह अजुनि सूयि िकलल घटासँ,
सोझा िल जयरि अपटी खेतमे मरल ओतिह अजुनिक हाि।

मुदा कृष्ण कहलिह आब दुयोिन करबाओत कणक अमोघ अस्त्रक पयोग,
भीमपुि घटोत्कचके बजाऊ राक्सी युद राक्षक करत ओ भयङर,
आएल राक्षमे घटोत्कच कए बरखा पाश आँकि-पाि रिक तत्क्षण ।
दुयोिन देखि रप ई िवकराल भागैत कौरव सेनाके देखल,
कणिमार एकरा निि तँ युद िकलल जाइत अिि सकल।

िववश भए कणि ििल अमोघ मरल घटोत्कच तखन,
पाण्डव दुखि त भएल िल कणि सेहो श्थात।

राक्षसक भेल आकमणसँ कुदि कुद कौरव आ रोण अएलाह,
युधिष्ठिरक रक्षार्थ एक दिस रुपद छलि दोसर दिस विराट तकरा।

देखैतहि रुपदके रोणक खून छलि खौलि गेल दिव्यास्त्रसँ लेल पाण,
रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न पाचाल सेनाक संग आएल बचाब बरखाक वाण।

पचंड रुप देखि रोणक कृष्ण कहल हे युधिष्ठिर अवन्तिराजक हस्ति,
नाम अछि अशत्थामा ओकरा मारल अछि भीम सदा।

पूछि रोण जे अशत्थामा अछि मरि गेल तखन अहँ,
कहू हँ, मरि गेल अछि भीम मारल एखन तुरत।

तखनहि सोर भेल मरबाक अशत्थामाक साँसे,
रोण अधीर भऽ अगुआए पूछलि युधिष्ठिर,
की अछि बात सत्य मरल अशत्थामा रणक बीच?
कहल युधिष्ठिर हँ मरल अछि ओ नर नहि, छलि ओ कुञ्जर,
मुदा नर युधिष्ठिरक कहैतहि बजल छलि शंख कृष्णक।

शोक-विह्वल रोण फेकि शस्त्रादि ध्यानमग्न बैसलाह रथपर,
धृष्टद्युम्न काटल हुनक मस्तक खड्गसँ अशत्थामा भेल व्याकुल।

छोड़ए लागल दिव्यास्त्र पाण्डवपर अर्जुनके छोड़ि नहि छलि क्यो सक्षम,
साझ धरि अर्जुन-अशत्थामा दुहु मध्य होइत रहल ई युद्ध निरन्तर।

रातिमे दुर्योधन कएलक पण
अर्जुनक मृत्युक भेल आवाहन,
कर्णकेँ सेनापति बनाए कएलन्हि
कौरवक गण सोलहम दिनक युद्धक पारम्भ।

कर्णक शंखध्वनिसँ भेल युद्ध शुरु,
कर्णक तापसँ युद्धभूमि सन्तप्त,
नकुल सोझा पाबि अपघात कए छोड़लि पाण

कुन्तीक देल कणकि वर पाणदान।

कृष्णक आवाहन अजुनि अहाके ि थि,
क्यो नथि कए सकत थजय कणकि ऊपथ,
वेगसँ जे बढ़ल अजुनि आगा भेल शुर बरखा,
बरखा वाणक कौरवगणक अजुनिक समक,
मुदा अजुनिक सोझा सभ भेलाह पस्त,
मुदा तखने भेल सोलहम थनक सूयास्त।

राथिमे कणाकिहलथ्रह हे थ्रा ि दुयोिनि,
अजुनिक रिमे होइि ढेर-रास शसिक अटावेश,
गाण्डीव आ अक्य तूणीरक नथ्र कोनो जोि,
हुनकर अशक गथ्रा नथ्र कोनो िि, कृष्ण सन सारिी।

शल्य बनथि हमर सारिी यथ्र, होएताह ओ कृष्णक तोि,
मुदा शल्य कहलथ्रह अथि हमर मुँहपर नथ्र जोि,
कणकि से होए स्वीकार तँ हमरा कोनो हजनिथ्र।

सहिम थनुका युद भेल शुर कणकि आकमण शुर ,
अजुनि बढ़ल आगू शल्य कहल थ्रार महापाकमी अजुनिसँ,
कणा देखलथ्रह भीमके करैत संहार चलू शल्य ओथ्र पार,
भीमक र प आइ पचण्ड िि लि वाण चीथि कवच कणकि गाि लि देह,
अचेत कणकि लए भगलाह शल्य रणभूथ्रक कात-करोट।

देथ्र ई दृश्य भीम भेलाह आर तीवस़
दुयोिनि हुनकर सोझा पठाओल दुशासन वीर।

गदा युद दुहुक मध्य िलि भेल भयङर,
भीमक मस्तक पहार खसल मूथिि दुशासन।

भीम हाि उखाथि पीबए लागल िितीक रक्त,
भागल कौरवसेना देथ्र दृश्य एथ्र तरहक।

आब सोझा-सोझी अजुर्न कर्णक युद्ध आइ शुरु,
कर्ण काटल गाडीवक पत्यंचा यावत दोसर चढ़ाबथि,
कएल वाणसँ आक्रमण अजुर्न कोहुना कए पत्यंचा चढ़ाए,
वाण-वर्षा अजुर्निका जखन भेल शुरु, कर्ण शिल्य भेलाह चोश्चल,
कर्णक सहायक सेना भेल नष्ट कर्ण अश्वा व्याकुल।

ि ल कर्ण वाण श्चव्य अजुर्नपर कृष्ण कएलश्वह अशके ठेहुनपर ठाढ़,
अजुर्निक मुकुटके ि बैत ओ अजुर्निक पाणक संकट भेल पार।

तखनश्च कर्णक र कि पश्चया ि सल युद्ध मध्य,
कर्णक पुकार कनेक काल वाण नश्च चलएबाक मिक्कि ई युद्ध,
श्चराटक गौअक चोश्च अजुर्न कहलश्वह आ अश्वामन्युके मारैत काल,
मिआि मिघुिदक श्वसरल लिहुँ अहा पाठ ।
पाणक श्वाका मँगैत लश्चातहुँ अश्वि नश्च लाज।
कर्ण उितश्च लगलाह र कि पश्चया श्वाकालए,
अजुर्निक वाण काटल मस्तक कौरवमे हाहाकार भारी।

दुयो निक सभ भायके मारने िलाह भीम तावत,
एगारह अक्षौश्चणीमे सँ बि िि कौरव िल बाचल,
कृपाचायि बुझओलश्वह दुयो नि आबो कर सश्वि,
मुदा ओ कहल हम अहा कृतवमा अशत ामि आ शल्य अि त,
सश्चिक गप ि ी अहा करैत।

शल्य बनश्चि सेनापश्चा युद्ध अठारहम श्चन रहत जारी।

शल्यक भेल उदोष ओकर बढ़ल पग युश्चिश्च र िल रोकल।
शल्य जखनश्च काटल हुनकर एक िनुष,
युश्चिश्च र उठाए दोसर िनुष मारल शल्यक अश आ सहीस ।
भेल तखन घमासान युश्चिश्च र लेलश्वह शल्यक पाण,
सहदेव िटलाह शकुश्चा आ ओकर पुि उलूकपर,
लेलश्वह बाप-बेटाक पाण जुआरीक पाणान्त।

गदा लए दुयो नि श्वाकश्च गेलाह िश्वि रण,

एकटा सरोवर मध्य ि‍ल स्तंभ, नुकाएल ओतए दुयोि‍न,
देखलन्हि जाइत हुनका श्कि‍ गामीण।

गामीणक चचि‍सुनि‍ आस केलहुँ कृताि‍ि।
पाण्डवक संग कृष्ण पहुँचलाह ओतए,
श्कि‍ गामीण जे देलन्हि पता ओतएक।
भीम देलक ललकारा दुयोि‍न श्लाकश्ल आएल,
तीि‍र्सिं घुरैत बलराम सेहो पहुँचलाह ओतए।

श्वाष्य दुयोि‍निके दए आशीवाद कएल गदा युदक शुरआत,
भीम दुयोि‍नक बीच बाझल युद घनघोर,
कृष्ण देल जाघपर ि‍पकी मोन पाि‍ल भीमके ओकर पश्लाजाक,
तोश्क जाघक हरडी कए मस्तकपर दुयोि‍नक गदा-पएरसँ पहार ।

भीमक ई कृत्य ि‍टलाह बलराम ओकरा पर मार-मार,
कृष्ण रोश्क दाऊके मोन पाि‍ल रौपदीक अपमान,
भीमक पण।
ि‍श्वि दुयोि‍निके असहाय,
गेलाह सभ पाण्डव भाए।

संध्या समय कृतवमा कृपाचायिआ अशतिि‍मा
पहुँश्ल देखल दुयोि‍नक दुदशा आ पलाप ।
भीमक पादसँ दुयोि‍नक मस्तकपर पहार,
सुश्ल ई कथ्य अशतिि‍मा लेल पाण्डवक वि‍क वत्ता ।
दुयोि‍न कएल अशतिि‍माक सेनापश्ल रपमे अश्लाषेक,
कृतवमा कृपाचायिआ अशतिि‍मा बढ़लाह पाण्डव-श्वाश्वर समक।

कृष्ण लए पाचो पाडवके गेलाह कतहु अन्यि‍।
पाण्डव-श्वाश्वरक समक एकटा वृक,
नीचा सुतलाह कृपा आ कृत ।

अशतिि‍माक आँश्खमे श्लानक नश्वि लेष,
देखल एकटा पकी अबैत,

ओह्ठ वृक्षपर कौआसभ सुतल माश्च रास,
केलक ओ पक्षी सभक गास।

देश्वव ई दृश्य अशतिमा उठाओल कृपाचायिओ कृत,
भोरक बाट ताकब नञ्ज सुबुद्ध, ई अमिकिहल कृप ।

मुदा अशतिम चञ्ज पलि श्वाश्वर श्वश,
हाश्च पहुंचल पाि-पाि कृत-कृप,
हम पैसैत ि भीतर श्वाश्वर ।

बाहर होइत सभके पाण श्चअ अहा दुनू गोटे,
एतए ठाढ़ लग दार।
सभ पाचाल ृषि दुम श्वाखण्डी समेत,
रौपदीक पाचू पुकि बुझ्झ पाण्डव देल माश्च,
अशतिमा देल श्वाश्वरके आश्वसँ जराए।

फेर पहुँश्च लए रौपदीक पाचू पुकि माि,
दुयोनि देश्वव मागल भीमक मस्तक,
ओकर मुश्च काक पहारसँ मस्तक भेल फाक,
नञ्ज ई नञ्ज भीमक माि ।

भोरमे देखल रौपदीक पाचू पुकि माि,
कानैत हाकोश करैत भेल दुयोनिक पाणान्त।

भोरमे कृष्ण पहुँचलाह पाण्डव-रौपदीक संग,
देश्वव श्वनाश भीम चलल अशतिमाक ताश्वमे,
िल ओ गंग तटपर व्यासक समक ।

युश्विश्व र-अजुनि संग कृष्ण पहुँचल जाए,
पाण्डवक नाशक संकल्प संग अशतिमा िलि बहश्वारा अस्ि,
अजुनिक िलि पाशुपत महास्ि अश्च्म वृश्व सँ सृश्व क श्वनाश,
बीचमे अस्ि केर अएलाह नारद आ व्यास ।

वाह व्यास । महाभारतक सुखद आहार ।
आगह करैत जे दुनू गोटे अपन-अपन अस्त्र सम्हारू,
अर्जुन लेलन्हि अपन अस्त्र सम्हारि मुदा,
अश्वत्थामा कहल नहि घुमा सकत हमर अस्त्र आइ ।
उत्तराक गर्भक बह्मास्त्रसँ होएत उत्तराक गर्भक नाश,
मुदा अश्वत्थामाके देमए पड़त मस्तकक मणि,
भेल ओ श्रापित तपस्वी, व्यासक आश्रममे बिताओल जीवन सकल।

दुर्योधनक पत्नी भानुमती छथि अचेत, गान्धारी करथि विलाप,
धृतराष्ट्र मूर्छित विदुरक हाकोश, पाण्डव घुरल अश्वत्थामाक मणि संग ।
कृष्ण लेलन्हि लौहक भीमक स्वांग धृतराष्ट्र पहुँचल कुरुक्षेत्र वृद्ध सभक संग।
भीमके गर लगाए कएल ओकरा चूर्ण फेर भीम-भीम कहैत पलाप,
कृष्ण कहल नहि कानू हे धृतराष्ट्र, छल ई लौहक भीम मात्र ।

गान्धारी देल कृष्णके शाप,
जेना कएल अहा हमर वंशक नाश,
होएत अहूँक कुल नष्ट ।
मृतकक दाह संस्कारक संग एक पक्ष समाप्त।

युधिष्ठिरक मोन उद्विग्न, छोड़ि राज-पाटक विचार,
व्यास आबि देलन्हि उपदेश, पलायन नहि अहाक मार्ग।

धौम्य कए वेद मंत्रक गाण राजपालक युधिष्ठिरके लगाओल।
फेर पहुँचि भीष्मक समक्ष लेल अनुशासनक शिक्षा,
राजधर्म,लोकधर्म,मोक्षधर्मक जान, पजापालन,
उच्च पदेश जाइक विचारसँ ऊपर, राजाक वस्तुक कर पालन।

आएल ओ काल जखन सूर्य भेलाह उत्तरायण,
पहुँचलाह युधिष्ठिर संग माता-गान्धारी-कुन्ती, धृतराष्ट्र भाता अशेष,
अटावन दिनक शर-शय्याक अन्तिम उपदेश आ महापयाण,
चाननक चितापर भीष्मके युधिष्ठिर देल आगि सभ आकान्त।

हस्तिनापुरक राज्यमे आएल सुख समृद्धि,
युधिष्ठिरक कौशल कएल आशाक वृद्धि,
उतराके तखने भेल मृत-पुत्रक प्राप्ति,
सुभरा खसलि कृष्ण लग जाए।

कृष्ण उठाए बालके कहल हम नहि कएल पलायन,
सत्यसँ सम्बन्ध रहल बनल, पराजित शत्रु कए नहि भेलहुँ ध्वंसक,
यदि ई सत्य तँ बालक जीबि उठत।
ई सुनितहि शिशु भेल जीवित नाम पड़ल परीक्षित।

फेर कएल युधिष्ठिर यज अशमेध,
छोड़लेबी अशक गरमे स्वर्णपत्र,
जनका युधिष्ठिरक राज्यसँ परहेज,
से पकड़ि घोटक करथि एकर विरोध।
मुदा घुरि आएल अश अकण्टक,
यज भेल समाप्त आयोजित।

बरख पन्द्रह बीतल तखन अएलाह व्यास,
देल उपदेश धृतराष्ट्र लेल वानप्रस्थ निमित्त जान,
गान्धारी, कुन्ती, विदुर, संजयक संग हिमालय पयाण,
विदुर लेलन्हि वनहिमे समाधि,
दावाग्नि लेलक शेष सभक प्राण।

कृष्ण युदक बाद गेलाह दारका,
निधि प्राप्त कएने सम्मान,
मुदा यादव राजकुमार,
करथि विदानक अपमान ।

मारि-काटि करथि आपसमे खत्म,
देखि दुखित बलराम प्रभासतीर्थ जाए,

ओतऔ लेल दाऊ समाधि,
कृष्ण पहुँचल देखल हुनकर पाणान्त,
गाि पकधि रहधि ठेऔआए ।

व्याि जकर ि ल जरा नाम,
हथ्यण बुझ्झ पैरक तलवामे मारल वाण,
भेल कृष्णक पाणान्त ।

सुन्न ई समाचार मृत्युक वसुदेवक,
थता वासुदेव सेहो कएल जीवनक अन्त।

कृष्णक मृत्युक समाचार,
पाण्डवराज युधिष्ठि र देल परीक्षितके राज,
सुभरा के दए उपदेश,
संग रौपदी पहुँचल दारका पाचू भाए।

ओतए डूबल समुरमे ि ल ओ नगरी,
घुमैत थकरैत चललाह ह्मालय सभ गोटे।
एक कुकुि ि ल संग चलैत ओतए,
ह्मालय वृहदाकार ह्मपातक माथ,
रौपदी खसल मरल, फेर सहदेव,
नकुल अजुनि भीम खसल मरल फेर-फेर।

आगा देवलोकक रि ि ल ठाढ़,
इन्र कहल चलू असगर सशरीर युधिष्ठि र,
ई कुकुि नञ्च रहए साि।

युधिष्ठि र नञ्च मानल घुम जाऊ इन्र,
थ्वान एकर नञ्च जाएब ओतए होए स्वगअिञ्च।
ि ल ओ कुकुि यमराज स्वयं,
पकट भए देल ओ आशीवाद ओतए।

पहुँचला स्वर्ग देखल कौरव गण सभ ओतए,
इन्द्र हमर भाता छथि कतए।
तखन एकटा दूत लए गेल हुनका नरकक द्वारपर,
द्रौपदी संग पाचू भाए छलाह ओतए।

कहल युधिष्ठिर हम रहब एतहि हे दूत,
छथि जनका जाएब नहि कतहु।

इन्द्र यम पहुँचल गेलाह ओतए।
यम कहल यक कुकुर बनि हम अहा परीक्षा लेल,
आइ एहि तेसर परीक्षामे सेहो अहाके उतीर्ण किएल।

ई अछि देवलोक मुदा सदेह राजाके,
एतुका कष्ट देखक लेबाक चाही सभके ते,
थोड़ कालक कष्ट हम अहाके देल।

छोड़ ई शरीर लऽअ दैवी रूप आब,
कहैत यमक भेल ई परिवर्तन,
कर्ण सेहो ओतए बारह आदित्यक संग,
रतजड़ित सिंहासनपर छल विराजमान,
भारतक युद्धक काव्यक समापन।

त्राहि-त्राहि सभ आपसक लड़ाई,
अछि एखनो पसरल ई महामारी।
जाति-मित्र-परिवार पुत्र केर मोह,
यावत रहत पसरल भा बचाएत आह।
त्राहि-त्राहि मचत धृतराष्ट्र जतए करत अराजि,
दुर्योधन करत पारम्भ युधिष्ठिरक दोष की छि?

असञ्जाश्वा मन

ई पुरातन देश नाम भरत,
राज करथि जतए इक्ष्वाकु वंशज।
एहि वंशक शाक्य कुल राजा शुदोिन,
पती माया िश्व, कपिलवस्तुमे राज करथि तखन।
अशघोषक वणन ई सकल,
दैत अछि सम्बल असञ्जाश्वा मनक।

माया देखलन्हि स्वप्न आश्च रहल,
एकटा शेत हाि आश्च मायाक शरीरमे,
पैश्स िल रहल हाि मुदा,
मायाके भए रहल िलन्हि ने कोनो कष्ट,
वरन् लगलन्हि जे आएल अछि मध्य क्यो गभि।

गभकि बात मुदा िल सते,
भेल मोन वनगमनक,
लुम्बिनी जाए रहब, कहल शुदोिनके।

दिन बीतल ओतहि लुम्बिनीमे दिन एक,
बिना पसव-पीिक जन्म देलन्हि पुिक,
आकाशसँ शीतल आ गमपािक दू टा िर,
कएल अभिषेक बालकक लाल-नील पुष्प कमल,
बरसल आकाश।

यक्क राजा आ दिव्य लोकक भेल समागम,
पशु िल हिंसा पकी बाजल मिरवाणी।

िरक अहंकारक शब्द बनल कलकल,
िथि "मार" आनन्दित िल यश सकल,
"मार" रष आगमसँ बुद्धत्वपाप्त करत ई?
माया-शुदोिनक शहलताक पसनताक,

बाह ण सभसँ सुश्रा अपूवलिकग बच्चाक,
भय दूर भेल माता-थ्रताक तखन जा कऽ,
मनुष्यषि पुि आशस्त दुनू गोटे पाश्व कऽ।

महश्रअिश्रतके भेल भान शाक्य मुश्रा लेल जन्म,
चली कथ्रलवस्तु सुश्रा भथ्रष्यवाणी बुदत्न करत पाप्त,
वायु मागे अएलाह राजा वन कथ्रलवस्तुक,
बैसाएल श्रांहासन शुदोिन तुरत ।

राजन् आएल ी देखए बुदत्न पाप्त करत जे बालक।
बच्चाके आनल गेल चक पैरमे ि जकर,
देश्रव अश्रत कहल हा मृत्यु समीप अथ्रि हमर,
बालकक श्राक्त पाप्त कश्रतहुँ मुदा वृद हम अिबल,
उपदेश सुनए लेल शाक्य मुश्राक जीश्रत कहा रहब।

वायुमागे घुरलाह अश्रत कए दशनि शाक्य मुश्राक,
भाश्रानके बुझाओल पैघ भए बौदक अनुसरण करथ्रि।

दस श्रदन िश्र कएलश्रह जात-संस्कार,
फेर ढ़ेर रास होम जाप,
कश्र गायक दान श्रांघ स्नाणसिँ िश्र,
घुश्र नगर पवेश कएलश्रह माया,
हािी-दातक महफा चश्रढ़।

िन-िन्यसँ पूणिभेल राज्य,
अश्र िािल शिताक मागि
श्राश्र सािल नाम पिल श्रदािि

मुदा माया नश्र सश्र सकलीह पसनता,
मृत्यु आएल मौसी गौतमी कएल शुिषा।

उपनयन संस्कार भेल बालकक,
श्राक्तमे िल चतुर,
अंतापुरमे कए ढेर रास क्यवसि श्रलासक,

शुदोानिके िल मोन अक्षातक बात,
बालकक योगी बनबाक।

सुन्दरी यशोिरासँ फेर करबाओल थ्सादाक्ति थ्यवाह,
समय बीतल थ्सादाक्ति पुि राहुलक भेल जन्म।

उत्सवक संग थ्वातैत रहल थ्दन पल,
सुनलथ्क्ह चचा उिदानक कमल सरोवरक,
थ्सादाइच्ा देखेलथ्क्ह घुमक ।

साँसे रस्तामे आदेश भेल राजाक,
क्यो वृद दुखी रोगी रहथ्य बाट ने घाट।

सुन्ना नगरवासी देखबा लेल व्यग,
थ्साकथ्सा आएल पिपर दशनिक थ्सादाक्ति ।

चार कात िल मनोरम दृश्य,
मुदा तखने आएल पि एक वृद।

हे सारिी, सूतजी के अथ्य ई,
आँथ्ख झापल भाँहसँ,
शेत केश,
हाि लाठी,
झुकल की अथ्य भेल?

कुमार अथ्य ई वृद,
भोथ्या बाल युवा अवसिा जाए
अथ्य भेल वृद आइ ।

की ई होएत सभक संग,
हमहू भए जाएब वृद एक थ्दन?

सभके अथ्य बुझल ई खेल,
फेर चहुथ्दस ई सभ करए थ्कलोल ?

हश्यति मुश्कत बताह तँ नश्छ ई भीि ?

घुश्व चलू सूत जी आब,
उदािनमे मोन कतए लाग !

महलमे घुश्व-श्कश्व भऽ श्चान्तामलि,
पुश्वा लऽ आजा राजासँ श्वाकलल अग ।

मुदा एश्छ बेर भेटल एकटा लोक,
पेट बढ़ल, झुकल लैत श्वासास,
रोगगस्त िल ओ पूिल श्वादाि,
सूत जी िश्चि ई के, की भेल?

रोगगस्त ई कुमार अश्चि ई तँ खेल,
कखनो ककरो लैत अश्चि अपन अिीन ।
सूत जी घुर भयभीत भेलहुँ हम आइ फेर।

घुश्व घर श्चचश्व-श्चचश्व कय श्चान्तन,
शुदोिन श्चश्चात जाश्वा ई घटनाकम।

आमोद पमोदक कए आर पबनि,
रि सारिी दुनू नव कएल शुदोिन।

फेर एक श्चन पठाओल राजकुमार,
युवक-युवती संग पठाओल करए श्चहार ।

मुदा तखने एकटा यािा मृत्युक,
हे सूतजी की अश्चि ई दृश्य,
सजा-िजा कए चाश्व गोटे िए कान्ह,
मुदा तैयो सभ काश्वा रहल श्चकए नश्छ जान ?

हे कुमार आब ई सजाओल मनुक्ख,
नश्छ बाश्व सकत, अश्चि ई काठ समान।

काश्ना-खीश्म जाश्नि समस्त ई लोक,
ि िए ओकरा मृत्यु केलश्नह जे पाप्त।

घुर  सारि ी नश्न होएत ई बदाश्त,
भय नश्न अश्नि एश्न बेर,
मुदा बुश्नतो आमोद पमोदमे भेर,
अजानी सन कोना घुमब उद ान।

मुदा नव सारि ी घुरल नश्न दार,
पहुँचल उद ान पि खण्ड जकर नाम।
युवतीगणके देलक आदेश उदायी, पुरोश्नत पुि,
कर  श्नद ाक्नि आमोद-पमोदमे लीन  ।

मुदा देश्नख इन्रजीत श्नद ाक्नि अनासश्नक्त,
पुि ल उदायी भेल अहाके ई की?

हे श्नि कश्याक ई आयु,
बुश्नतो हम कोना गमाऊ ?

साझ भेल घुश्न युवतीसभ गेल,
सूयक्नि अस्तक संग संसारक अश्नत्यताक बोि,
पाश्न श्नद ाि घुरल घर श्नन्ता मत्ता,
शुद ोि नि श्नचश्नत मंि णामे लीन।

श्नक ि श्नदनक उपरान्त,
माश्ना आजा बोन जएबाक,
संग श्नक ि संगी श्नकश्न श्नच खेत-पि ार,
देश्नख चास देल खेत मरल कीट-पतंग  ।

दुश्नखत बैश्न उतिल घोि ासँ अि ि श्नद ाि ,
बैश्न जोमक गाि क नीचा ि ए ध्यान,
पाओल शाश्नन्त तखने भेटल एक साि ु।

ि लि ओ मोक्क ताक्कमे मला,
सुश्न ओकर गप देखल होइत अन्तािन।
गृह त्यागक आएल मोनमे भाव,
बोन जएबाक आब एखन नञ्ञ काज।

घुश्च सभ चलल गृहक लेल,
रस्तामे भेटश्च कन्या एक,
कहल अहा ि ी जञ्ञक पश्च,
से िश्चि श्चि येन श्चवृत।

श्चवृत शब्दसँ श्चवाणक पसंग,
सोश्च मुश्चत श्चदाि घुरल राज सभा,
रहश्चि ओतए शुदोिन मंिगणक श्चच।

कहल - लए संन्यास मोक्क जानक लेल,
कर आजा पदान हे भूदेव।

हे पुि कएल की गप,
जाऊ पश्चने पालन कर भए गृहसि ।

संन्यासक नञ्ञ अश्चि आएल बेर,
तखन श्चदाि किहल अश्चि ठीक,
तखन दूर कर चाश्च टा हमर भय,
नञ्ञ मृत्यु, रोग, वृदावसि आश्च सकय,
िन सेहो नञ्ञ कीण होए।

शुदोिन कहल अश्चि ई असंभव बात,
तखन हमर श्चयोगक कर नञ्ञ पिताप।

कञ्ञ श्चदाि गेलाह महल श्चच,
श्चश्चतत एम्हर-ओम्हर घुश्च श्चकलश्च बाह ।

सूतल िदकके कहल शेत वेगमान,
कंिक घोि अशशालासँ लाऊ ।

सभ भेल श्मानमे भेर कंकि आएल,
चढा श्मदाकिक लए गेल नगरसँ दूर ।

नमस्कार कथ्मलवस्तु !

घुरब जखन पाएब जन्म-मृत्युक भेद !

सोझा आएल भागिव ऋष्मक कुटी उतश्म श्मदाकि,
लेलश्मह रतजश्मत कृपाण काटल केश ।

मुकुट मश्मा आभूषण देल िदकके।
अिार बहल िदकक आँश्मख,
जाऊ िदक घुर नगर जाऊ ।

नश्म श्मदािहम नश्म ि सुमन्त,
िश्म राम घुरल अयोध्या नगर।

घोटक कंकिक आँश्मखमे सेहो नोर,
तखने एक व्यािि आएल,
कषाय वसि पश्मरने रहए, कहल श्मदाकि,
हमर शुभ वसि श्मअ श्मअ ई वसि,
अदश्म-बदश्म दुनु गोटे वसि पश्मश्म,
िदक देश्मख केलक पणाम गेल घुश्म।

श्मदािअएलाह आिम सभ भेल चश्मकत,
देश्मख नानाश्मि तपस्या कठोर,
नश्म संतुष कष भोगश्मि पाबय लेल स्वगि,
अश्माहोिक यज तपक श्मश्म देश्मख ।

श्मकश्म चलल श्मकि श्मनमे श्मदािआिम िश्म,
स्वगिनश्म मोकक अश्मि हमरा खोज ।

जाऊ तखन अराड मुश्म लग श्मंध्यकोष ,

नमस्कार मुश्न पणाम घुर  सभ जाऊ,
श्नदा ि श्नकश्न बश्च पहुँचलाह आगु।

एम्हर कंिकक संग िदक खसैत-पि त,
एक श्चनमे आएल मागिआठ श्चनमे चलैत,
घरमुँहा रस्ता आइ कम नश्च, अश्चि भेल अनन्त ।

घुश्च सुनेलक खबश्च कषाय वस्ि पश्चरबाक श्नदा िक्,
गौतमी मूश्चि त, यशोिरा कानश्चि बाश्च-बाश्च,
एहन कठोर हृदय श्नदा िक् मुखेटा कोमल रहए,
ओकरो सँ कठोर अश्चि हृदय हमर जे फाटए अश्चि नश्चि ।

शुदोिन कहश्चि दशरिक िल भाल्म,
पुि श्चयोगमे पाण हमर श्चकलए नश्चि अश्चि।

पुरश्चत आ मंिीजी श्चकश्न ताकू जाय,
भागश्चि मुश्चक आिममे देखू पूि ओतए।

जाय जखन सभ ओतए पूिल भागश्चि कहल,
गेलश्चि अराड मुश्चक आिम श्चस मोक्क लेल बेकल।

दुनू गोटे बश्च आगा देखैत िश्चि की,
कुमार गािक नीचा बैसल ओतए।

पुरोश्चत कहल हे कुमार श्चताक ई गप सुनू,
गृहस्ि राजा श्चदेह, बश्न, राम आ बजबाहु,
केलश्न पाप्त मोक कर  अहा सेहो।

मुदा श्नदा िबोनसँ घुरताह नश्च,
मोक्क लेलश्न अश्चि पण तोिताह नश्च।

हे श्नदा िपिश्चनहु घुरल िश्चि बोनसँ,
अयोध्याक राम, शाल्म देशक रुम आ राजा अंबरीष ।

हे पुरश्चत जी घुर क्यिासिमय नष ि कए रहल,
राम आ थ्क आन नञ्ञ उदाहरण समक ।

नञ्ञ थ्वना तप कोनो क्यो बहटाथ्र सकत,
जान स्मयं पाएब नव रस्ता तकैत।

घुरल दुहु गोटे गुप्त-दूत थ्वयुक्त कए।

थ्मदाािबिश्च आगा कएल गंगाके पार,
राजगृह नगरी पहुँथ्व कए थ्वक्ष गहण,
पहुँथ्व पाण्डव-पवति जखन बैसलथ्वि,
राजा थ्वम्वसार आथ्व बुझाओल बहुत ।
सूयविंशी कुमार जाऊ घुथ्व,
मुदा थ्मदाािकिहल हयंक्ि वंशज,
मोहके िलि घुथ्व जाएब कतए ?

राजा सेहो होइि कखनहुँ काल दुथ्वत,
दास वगक्ि सेहो कखनहुँ भेटए ि खुशी ?

कर रक्षक पजाक संग अपन सेहो,
थ्मदाािवैशंतर आिम थ्वश बढ़लाह,
मगािराज चथ्कत !

अराडक आिममे जान लेल,
गेलाह शाक्य,
कहल मुथ्व अथ्वदा अथ्वि पाचटा,
अकमण्यता आलस्यक अथ्वि अन्हार,
अन्हारक अंग अथ्वि कोिा आ थ्वषाद,
मोह अथ्वि ई वासना जीवनक आ संगक मृत्यु,
कल्याणक मागाअथ्वि मागािमोक्क ।

मुदा थ्मदाािकिहल हे मुथ्ववर !
आत्माक मानब तँ अथ्वि मानब अहंकारके,
अहा गप नञ्ञ रचल बढ़ल आिम उरकक से।

नगरी गेलाह राजश्रक्कि जे आमि लि,
मुदा नश्चु उतर भेटल ओतहु श्मादाक्कि।

गेलाह तखन नैरंजना तट पाचटा श्माकुक्क भेटल,
हि बरख तप कएल मुदा पश अनुतश्वत लि।

स्मसि तनमे भेटत मनसक पशक उतर,
पण कएल ई श्मरंजनामे कएल स्मान ओ,
बाहर बहराए अएलाह तखने कन्मा गोपराजक,
शेत रंग नील वसमिे नन्द्द बाला जकर नाम लि ।

आयश्म पायस पा लेने तृप्त भए श्मादािभोजन कएल।

पाचू संगी देश्ख ई श्मादाक्कि संग ि लि ।

मुदा ओ भेलाह सबल बोश्िसत्वक पाश्मक लेल,
दृढ़ पण लए पीपरक तर ओ आसन देलश्मह ।

काल सपकिहल देखू ई नीलकंठक झुण्डके,
घुश्म रहल चार श्वस अहाक,
पमाण अश्ि जे बोश्िसत्व पाप्त करब अहा।

सुश्म ई तृण उठाए कएल पश्माजा तखन,
श्मादािपिाओत जान आ तखने उठत िश्ि आसन।

बहाड लि पसन मुदा दुष मार डरायल,
कामदेव, श्माियुि पुष्मसर नाम मारक,
श्मादािपिाप्त कए जान जगके बताओत।

हमर सामाज्यक होएत की तखन,
पुि श्वभम,हषि दपिलि ओकर,
पुिी अरश्म, पीश्म, तृषा के सेहो कए संग।

चलू ई लेने ढाल पश्चाजाक,
सत् ि नुषपर बुद्धक वाण चढ़ाए,
जीतत से की जीतए देबए हमरा सभ आइ ?

हे श्चादाि यिज कए पश्च कए शास ि,
कर इन्द्रपद पाप्त भोगू भोग,
ि ाि आसन देब वाण चलाए।

नञ्ह देलश्चह श्चादाि एश्चपर ध्यान,
मार तखन देलक वाण चलाए,
मुदा भेल कोनो नञ्ह पश्चणाम।

श्चावपर सेहो चलल रहए ई वाण,
श्चचश्चत भेल रहश्च ओ सेहो,
के अश्च ई से नञ्ह जान !!

हे सैश्चाक हमर श्चकराल-श्चश्च ि,
श्चशूल घुमाए, गदा उठाए,
साढ़क सन दए हुंकार,
आऊ कर श्चश्चत अश्च श ि श्चकराल।

राश्चा घनघोर अन्हश्चयामे कतए ि श्च चन्द्र ?
तरेगणक सेहो कोनो नञ्ह दश ि!
मुदा सभ गेल क्यि पिदापणि भेल अदृश्य,
मार जाऊ होएत नञ्ह ई श्चचश्चत।

देखू एकर क्मा पतीक जटाक,
ि यिअश्च एकर जेना गािक मूल,
चश्च ि पुष्प बुद्ध शाखा िमि फिलक पतीक।

स ि ान जतए अश्च आसन पृथ्वीक श्चिक नाश्चा,
पाप्त करत ई जान सहजञ्ह आइ ।

पराश्मत मार गेल ओतएसँ भाश्य।

राश्मक पश्चल पहश्मे शाक्य मुश्म,
पाओल वर्णनि स्मरण पूर्वजिन्मक सहजश्च ।

दोसर पहरमे श्वक्य चकु पाश्व,
देखल कर्मक फल वेदनाक अनुभूश्च ।

गर्भसिरोवर नरक आ स्मगदिहुक,
पाओल अनुभव देखल खसैत स्मगहुसँ,
अतृप्त भोगी जन्म, जरा, मृत्यु।

बीतल तेसर पहश्च चाश्चममे जाए,
पाओल जान बुद भए पाओल शाश्मत।

शान्त मन शान्त िल पूर्णजिगत !!!

िमििचार श्वस श्वन मेघ अिर !!
सूचना देल दुन्दुश्म बाश्म अकाश !

सकल श्वशा श्वदगणसँ दीप्तमय िल,
स्मगसँ वृश्य पुष्पक इक्ष्वाकु वंशक ई मुश्म िल।

बैसल एश्च अवसिमे सात श्वन िश्व मुश्म शाक्य,
श्वमान चश्च अएलाह तखन देवता दू टा,
कर उदार जगतक दए मोक्षक श्वाक।

आ श्वकुमाि लए अएलाह फेर एक देव,
कएल स्मरण अराड आ उरकक बुद,
मुदा दुहु िल िोिल जगत ई तुर्च।

आब जाएब वाराणसी श्वकु पाचो संगी जतए,
कहल देश्व बोधीक गाि श्वस स्नेहसँ।

बुद चललाह असगरे रस्तामे भ्आकु एक भेटल,
तेजमय अहा के गुर के िभ्धि अहाक ?

हे वत्स गुर नभ्ह कयो हमर
पाप्त कएल भ्आवाण हम,
सभ भ्धकि जानल जे अभ्धि जनबा योल्य
लोक कहए िभ्धि हमरा बुद !

जा रहल िी काशी दुभ्खत कल्याण लेल
दूर सँ देखल वरणा आ गंगाक भ्मलन
आ गेलाह बुद लगभ्हमे मृगदाव वन।

पाचू संभ्या हुनक रहभ्धि ओतभ्ह
देखैत अबैत भ्वचारल कयो नभ्ह करत अभ्आवादन हुनक
मुदा पहुँभ्चते ई की गप भेल ?
सभ हुनक सत्कारमे लि लाभ्य गेल?

आसन दए जखन बैसेलभ्ह हुनका सभ कयो,
उपदेश देब शुर कभ्लतभ्ध मुदा तखने बाजल भ्धकयो,
अहा तँ तत्पके नभ्ह िी बुझैत,
तप िभ्धि बीचभ्ह उठल लिहुँ भ्धकएक ?

बुद कहल घोर तप आ आसभ्क्त दुनुक हम त्याग कएल
मध्य मार्गकि पकभ्ध बोभ्धि पाप्त कएल ।

एकर सूयअभ्धि सम्यक दृभ्ष्ट आ
एकर सुन्दर रस्तापर चलैए सम्यक संकल्प ।

ई करैए भ्वहार सम्यक आचरणक उपवनमे
सम्यक् आजीभ्वका अभ्धि भोजन एकर।

सेवक अभ्धि सम्यक व्यायाम,
शाभ्न्त भेटैए एकरा सम्यक स्मृभ्त रपी नगरीमे

आ सुतैए सम्यक समाधिक क्षतिओनपर ई।

एहि अष्टांग योगसँ अछि सम्भव ई
जन्म, जरा, व्याधि आ मृत्युसँ मुक्ति।

मध्य मार्गक चारिटा अछि ध्रुव सत्य
दुख, अछि तकर कारण, दुखक निरोध
आ अछि उपाय निरोधक ।

कौण्डिन्य आ ओकर चार संगी सुनल ई,
प्राप्त कएल सभ धर्मज्ञान ।

हे नरमे उत्तम पाचू गोटे
भेल जान अहा लोकक्षा के?

कौण्डिन्य कहलन्हि हँ, भेल भंते,
कौण्डिन्य भेलाह तखन प्रमुख भिक्षु।
तखनहि यक्षसभ पर्वतपरसँ कएलक सिंहनाद,
शाक्यमुनि अछि कएलक भिक्षुक प्रवर्तन !!!!

शील कील अछि क्षमा-विनय अछि डोरी,
बुद्धि-स्मृतिक प्रज्ञया अछि सत्य अहिंसासँ युक्त,
एहिमे बैसि भेटत शान्ति ई बाजल सभ यक्ष,
मृगदावमे भेल भिक्षुक प्रवर्तन।

फेर अशक्त आ ओकर चारि टा आन भिक्षु
कएल निर्वाण भिक्षु बुद्ध दीक्षित,
फेर कुलपुत्र यश प्राप्त कएल अर्हत पद
यश आ चौवन गृहस्थ के
कएल बुद्ध सद्धर्म प्रशीक्षित ।

घरमे रहि कऽ भऽ सकै छी अनाशक्त
आ वनमे रहियो प्राप्त कऽ सकए छी आशक्त ।

एश्नमेसँ आठ गोट अहति पाप्त श्वाष्यके
श्वदा कए आठो श्चशामे चललाह बुद ।

पहुँश्च गया श्यतबाक रहश्नह इचि
श्वाश्च सभसँ युक्त काशग्रप मुश्नके।

गयामे काशग्रप मुश्न कएलश्नह स्नागत बुदक,
मुदा रहबाक लेल देल अश्नशाला रहए ि‍ल महासपजितए ।

राश्नमे मुदा ओ सपपिणाम कएल बुदके
भोरमे काशग्रप देखल सपक्रि बुदक श्वाकपामि ।

कए पणाम ओ आ हुनकर पाच सए श्वाष्य
संग अएलाह काशग्रक भाए गय आ नदी ।

कएल स्नीकार मि बुदक
पाप्त कएल गय उतुंगपर श्ववाणमिक्रि श्वाक
लए सभ काशग्रपके संग बुद पहुँचल राजगृहक वेणुवण ।

श्वम्सार सुश्न आएल ओतए देखल काशग्रपके बुदक श्वाष्य बनल
पूि‍ल बुद तखन काशग्रपसँ,
िि‍ल अहा अश्नक उपासना श्वएक भंते ?

काशग्रप कहल मोह जन्म रश्च जाइि देने
आहुश्न अश्नमे कएने पूजा पाठ ओकर तँश्च ।

बुदक आजा पाश्च कएल काशग्रप श्वक्य शश्क्तक पदशनि
आकाशमध्य उश्च अश्नक समान जश्च कए ।

तखन श्वम्सारके देल बुद अनात्मवादक श्वाक
श्वषय, बुश्च आ इश्नक संयोगसँ अबै चेतनता
शरीर इश्नय आ चेतना अश्च श्वान
आ अश्वन सेहो।
श्वम्सार भऽ पसन दान बुदके वेणुवन देल

तागितक श्राष्य अशश्मत नगर गेल श्राकाक लेल ।

कश्यल संपदायक लोक देश्व तेज पूलि अहाक गुर के?
कहल अशश्मत सुगत बुद श्चि जे इक्वाकुवंशक।

सएह हमर गुर कहए श्चि श्वन कारणक नश्च होइ श्वकाओ
उपश्चाष्य बाह णके पाप्त भेल जान कहलक ओ मौदगल्यायनके
मौदगल्यायनके सेहो पाप्त भेलैक सम्यक दृश्य सुश्राके।

सुश्रा वेणुवनमे उपदेश त्यागल जटा दंड
पश्चश्य काषाय कएल सानिा पाप्त कएल परम पद
काश्यप वंशक एकटा श्चिाक बाह ण िलि पती पश्वजन
पश्चाश्च भेटल श्वनका महाकाश्यप नामसँ।

कोसलक ाविस्तीक श्चाक सुदत आएल वेणुवन
गृहस्ि रश्वतो पाप्त भेल तत्मजान ओकरा ।

उपश्चाष्य संगे सुदत गेल ाविस्ती नगर
जेत केर वनमे श्वहार बनएबाक कएल श्चश्चित् ।

जेत रहए लोभी ढेर पाइ लेलक जेतवनक
मुदा देश्व दैत पाइ हृदय पश्चवश्चति भेल ओकर
सभटा वन देलक ओ श्वहारक लेल
श्वहार शीघे बश्चा गेल उपश्चाष्यक संरक्कत्यमे।

बुद फेर राजगृहसँ चश्चा देलश्च कश्यलवस्तु श्वस
ओतए श्वता शुदोानिके देल बौद रपी अमृत
कोनो पुि श्वताके नश्च देने रहए ई।

कमािरिए अश्चि मृत्युक बादो पािि
कमक्रि स्वभाव, कारण, फल, आियक रहस्य बुझू,
जन्म, मृत्यु, ािम, दुखसँ फराक पि ताकू ।

आनन्द, नन्द, कृश्याल, अनुर द, कुन्डिान्य, देवदत, उदाश्या
कए गहण दीक्ता ािलि गृह सभ ।

अश्विनन्दन उपाश्वा सेहो कएल गहण दीक्ता
शुदोािन देल राजकाज भाए के
रहए लगलाह राजश्वि जिेका ओ ।

फेर बुद कएल पवेश नगरमे
न्यगोाि वनमे बुद पहुँश्वा
श्वान्तान कल्याणक जीवक करए लगलाह।

फेर ओ ओतए सँ श्वाकश्वा गेलाह पसेनश्वातक देस कोसल
ाविस्तीक जेतवन ालि शेत भवन आ अशोकक गाािसँ सश्वाजत
सुदत कएल स्वाणमािलासँ स्वागत बुदक
कएल जेतवन बुदक चरणमे समश्वाित।

पसेनश्वात भेल ामिमि दीश्वक्त
तीाक्ति साािु सभक कए शंकाक समाािन
कएल बुद हुनका सभके दीश्वक्त।

ओतएसँ अएलाह बुद फेर राजगृह
ज्योश्वाष्क, जीवक, शूर, ािण,अंगदके उपदेश दए,
कएल सभके संघमे दीश्वक्त।

ओतएसँ गंािर जाए राजा पुष्करके कएल दीश्वक्त
श्वपुल पवत्तिपर हेमवत आ साताग दुनू यक्के उपदेश दए
अएलाह जीवकक आमवन।

ओतए कए श्वाािम घुमैत-श्वफरैत
पहुँचल आपण नगर,
ओतए अंगुलीमाल तस्करके
कएल दीश्वक्त पेमक ामिमि।

वाराणसीमे अश्वातक भाश्यान कात्यायनके कएल दीक्षत
देवदत मुदा भए ईर्ष्यालु संघमे चाहलक पसारए अराश्व।

गृधकूट पवतिपर खसाओल श्वालाखंड बुदपर
राजगृह मागमि ि ि ल हुनकापर बताह हाि ि
सभ भागल मुदा आनन्द संग रहल बुदक
लग आश्व गजराज भए गेल स्मसि कएल पणाम झुक्ष कए
उपदेश देल गजराजके बुद।

देखल ई लीला राजमहलसँ अजातशि
भए गेल ओहो श्वाष्य तखन बुदक।

राजगृहसँ बुद अएलाह पाटश्वपुि
मगिक मंि ि वषाकार बना रहल िल दुगि
बुद कएल भश्वष्यवाणी होएत ई नगर पश्वद
तखन तिगत गेलाह गौतम दारसँ गंगा श्वस।

गंगापार कुटी गाममे
देल उपदेश िमिक्ष
फेर गेलाह नश्वदगाम जतए भेल िल बहुत रास मृत्यु।

दए सान्त्वना गेलाह वैशाली नगरी
श्वावास कएल आमपालीक उदानमे।

शेत वसि िश्व अएलीह ओ
बुद चेताओल श्वाष्य सभके,
ि ि संयम रहब श्वि रजानमे लऽ बोिक ओखि
पजाक वाणसँ शश्वतक िनुषसँ कर अपन रक्ष।

आमपाली आश्व पओलक उपदेश
भेलैक ओकरा घृणा अपन वृश्वसँ
मागलक िमलिभक श्वाक्ष,
बुद कएलश्वह पािनि ओकर स्मीकार,
संगश्व आएब श्वाक्षक लेल अहाक दार ।

सुुनु ई गप जे आएल छथि बुद्ध आम्रपालीक उद्यान
लिच्छवीगण अएलाह बुद्धक समीप
बुद्ध देलन्हि शीलवान रहबाक सन्देश।

लिच्छवीगण देलन्हि भोजनक लेल अपन-अपन घर अएबाक आमन्त्रण,
पाबि आमन्त्रण कहलन्हि बुद्ध
मुदा जाएब हम आम्रपालीक द्वार
कारण हुनका हम देने छियन्हि अछि वचन।

लिच्छवीगणके लगलन्हि ई कनेक अनसोहात,
मुदा पाबि उपदेश बुद्धक,
घुरलाह अपन-अपन घर-द्वार।

पराते आम्रपालीसँ ग्रहण कए भोजन
बुद्ध गेलाह वेणुमती करए चारि मासक वर्षावास।

चारि मास बितओला उत्तर,
रहए लगलाह मर्कट सरोवरक तट।

ओतहि आएल मार,
कहलक हे बुद्ध नैरंजना तटपर अहाक संकल्प
जे निर्वाणसँ पूर्व करब उद्धार देखाएब रस्ता दोसरोके,
आब तँ कतेक छथि मुक्त, कतेक छथि मुक्तिक पथिक अनुगामी,
आब कोनो टा नहि बाचल अछि कारण
करू निर्वाण प्राप्त।

कहलन्हि बुद्ध, हे मार
नहि करू चिन्ता,
आइसँ तीन मासक बाद,
प्राप्त करब हम निर्वाण,
मार होइत प्रसन्न तृप्त
गेल घुरि।

बुद्धि ऽ आसन पाणवायुके लेलन्हि श्वासमे
आ श्वासके पाणसँ जोड़ि योग दारा समाधि कएल पाप्त।

पाणक जखने भेल अवरोध,
भूमि थरथरायल, थरथरायल भेल अकास !!

आनन्द पूछि कर अनुगह भिक्षु सभपर,
भूकम्प ई धरा आ आकास,
दलमलायल मर्त्य आ स्वर्गलोक !!!

बुद्ध कहलन्हि आबि गेल छी हम बाहर,
छोड़ि अपन पकोष ,
मात्र तीन मास अनन्तर
छोड़ब ई देह,
निर्वाण मे रहबा लेल सतत !!!!

आनन्द सुनि ई करए लागल हाकोस,
सुनि विलाप भिक्षु गण जुटल सेहो,
विलापमे भऽ गेलाह संग जोड़ ।

बुद्ध सभके बुझा-सुझा,
चललाह वैशालीक उतर दिशा।

पहुँचि भोगवती नगरी,
देल शिक्षा जे विनय अछि हमर वचन,
जे बोल अछि विनयविहीन,
से अछि नहि मिथ्या।

तखन मल्लक नगरी पापुर जाए,
अपन भक्त चुंदक घरमे कएल भोजन बुद्ध,
दए ओकरा उपदेश विदा भेलाह कुशीनगरक दिस।

संगे चुन्दक पार कएल इरावती धार

सरोवर तटपर कए थ्रािम,
कए श्चरण्यवती िरमे स्नान,
कहल हे आनन्द,
दुनू शालक गािक बीच करब हम शयन।

आजुक राश्चाक उतर पहर,
करब पाप्त श्चावाण।

हािक बनाए गेरआ,
दए टागपर टाग,
लऽ दश्चना करोट कहल हे आनन्द,
बजा आनू मल्ल लोकश्चाके,
भेट करबा लेल श्चावाण पूवा

शान्त थ्यशा, शान्त व्याघ-भालु,
शान्त थ्याइ शान्त सभटा जन्तु।

आश्च मल्ल लोकश्चा कएल थ्यलाप,
मुदा बुद दए सात्पना घुरेलश्चह सभके।

आएल सुभर थ्रीदंडी संन्यासी तकर बाद,
पाश्च अषाग मागक्ि थ्याका,
कहल सुभर हे करणावतार
अहाक मृत्युक दशनसँ पश्चने हम करए
चाहैत िश्चावाण पाप्त ।

बैसल ओ पवत्ति जेका
आ जेना श्चझ्ा जाइत अश्चि दीप
हवाक झोकसँ,
तश्चना क्गेमे कएलक श्चावाण पाप्त।

िल ई हमर अश्चातम थ्याष्य !

सुभरक कर अश्चातम संस्कार !

बीतल आि राश्चा,
बुद बजाए सभ श्चाष्यके,
देल पाश्चामोक्क उपदेश,
कोनो शंका होए तँ पूि आइ ।

अश्चारद कहल नश्च अश्चि शंका आयसित्यमे ककरो।
बुद तखन ध्यान कऽ एकसँ चाश्चम तहमे पहुँश्च,
पाप्त कएल शाश्चात।

भेल ई महापश्चश्चावाण !
मल्ल सभ आश्च उठेलक बुदके स्पाणक्रि शव-श्चाश्चकामे,
नागदारसँ बाहर भए कएलश्चह पार श्चरण्यवती ि‍र,
मुदा शवके चन्दनसँ सजाए,
जखन लगाओल आश्चा, नश्च उठल श्चनाश्च ।

श्चाष्य काश्यप िल श्चच मागि
ओकरा अश्चते लागल श्चतामे आश्चा !

मल्ल लोकश्चा बीश्चि अश्चि िऽ स्पाणक्रिलशमे,
आनल नगर मध्य,
बादमे कए भवन पूजाक श्चमाण,
कएल अश्चिकिलश ओतए श्चराजमान।

फेर सात देशक दूत,
आश्च मँगलक बुदक अश्चि,
मुदा मल्लगण कएल अस्वीकार,
तँ बजिल युद-युद ।

सभ आश्च घेरल कुशीनगर,
मुदा रोण बाहण बुझाओल दुनू पक।

बाश्च अश्चिके आठ भाग,
रोण लेलक ओ घट आ गण श्चसल िउर बुदक ।

सभ घुरलाह अपन देश आब।

अस्थि कलश ऊपर पर बनाए स्तूप,
करए गेलाह पूजा अर्चना जाए,
दसटा स्तूप बनि भेल ठाढ़,
जतए अखण्ड ज्योति आ घण्टाक होए शंखनाद।

फेर राजगृहसँ आएल पाँच सए भिक्षु,
आनन्दके देल गेल ई काज,
बुद्धक सभ शिक्षाके कण्ठ सुनाऊ,
होएत ई सभ समग आब।

हम ई लिहुँ सुनने एहि तरहे,
कएल सम्पूर्ण वर्णन नीके।

कालान्तरमे अशोक स्तूपसँ लए धातु कए कए कऽ सए विभाग,
बनाओल कएक सए स्तूप,
दिशाक पतीक।

जरा व्याधि अछि जन्म, अछि दुख,
पुनर्जन्मसँ मुक्ति अछि मात्र सुख,
तकर मार्ग देखाओल जे महामुनि,
शाक्यमुनि सन दोसर के अछि शुद्ध।

असञ्जाति मनक ई सम्बल,
देलहुँ अहा हे बुद्ध
हे बुद्ध
हे बुद्ध ।

<u>कोसी लोकगीत</u>

१.(कोसी लोकगीत)(बिहार की नदिया, सहृदय, १९७७, पृ.३७२-७३)
मुठी एक डँ िवा गे कोशिका अलपा गे बयसवा
गे भुइया लौटे नामी-नामी केश
कोसी मय लोटै ि ी गे केश॥
केशवा सम्हारि कोसी जुिवा गे बन्हाओल
कोसी गे खोपवा बन्हाओल
ओहि खोपवा कुहुकै मजूर।
उतरहि राज से एले हे रैया रनपाल
से कोसी के देखि-देखि सूरज निहारै
सूरज देखि िरज नै रहै िर॥
कये तोरा कोशिका चेकापर गढ़लक
कये जे र पा गढ़लक सोनार॥
नै हो रनपाल मोरा चेकापर गढ़लक
नै र पा गढ़लक सोनार
अम्मा कोखिया हो रनपाल हमरो जनम भेल
सूरज देलक भगवान
गाओल सेवक जन दुहु कर जोरि
गरआक बेरि होउ न सहाय, गे कोसी मैया
होउ न सहाय॥

२. (कोसी लोकगीत, मोरंग, नेपाल)(नश्वया गाती है, ओमपकाश भारती, २००२, पृ.१०८)
सगर परबत से नाम्हल कोश्वका माता,
भोटी मुख कयेले पयाम

आगू-आगू कोयला वीर िसना खभारल,
पाि-पाि कोश्वका उमरल जाय
नाम्ही-नाम्ही आि र श्वखले गंगा माता,

श्वहलश्व कोसी जी के हाि
सात रात श्वन झाि ि नमावल
चरहल चनन केर गाि ये
चानन िश्व-िश्व बेि बनावल,
भोटी मुख देव चढ़ी आय ये
गश्वरी से नश्वया देखहुँ भेयाउन
तहा देल झौआ लगाय
रोहुआक मूरा चढ़ी हेरये कोश्वका,
केती दूर आबैय ि बलान
मार-मार के ि र बश्वये गेल,
कामर  चलल घहराय
पोखश्व गहीर भौरये माता कोश्वका,
कमला के देल उपदेस
माि-काि ु सब उसरे लोटाबय,
पसर चरयै ि नु गाय
गाइब जगत के लोक कल जोरी,
आजु मइआ इबु न सहाय।

३.(कोसी लोकगीत)(कोसी लोकगीत- बजेशर,१९५५)
राश्वाए जे एलै रानू गउना करैले,
कोहबर घरमे सुतल श्वाश्वात!
जकरो दुअश्वया हे रानो कोसी बहे ि र
सेहो कैसे सूते हे श्वाश्वात॥
सीरमा बैसल हे रानो कोश्वाका जगाबै
सूतल रानो उठल चेहाय॥
काख लेल िश्वाया हे रानो मुख दतमश्वा
माय तोरा हंटौ हे रानो बाप तोरा बरजौ
जनु जाहे कोसी असनान॥
हँटलौ ने मानै रानो दबलौ ने मानै
चली गेलै कोसी असनान॥
एक डूब हे कोसी दुइ डूब लेल
तीन डूब गेल भश्वायाय॥
जब तुहू आहे कोश्वाका हमरो डुबइबे
आनब हम अस्सी मन कोदाश्व॥
अस्सी मन कोदश्वया हे रानो बेरासी मन बेट
आगू आगू िसना िसाय॥

बैकुण्ठ झा,पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४ - ०७ - १९५४ (गाम-भरवाड़ि, जिला-दरभंगा),शिक्षा-स्नातकोत्तर (अभियांत्रिकी),पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीत कऽ रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी कऽ लेखन। अहि के अलावा हिन्दी मे लगभग १५ उपन्यास तथा कहानी के लेखन।
(१०/०२/९१)

चलू देखैब अपन गाम अय

ये बम्बई के कनिया देखल अहा दुनिया
चलू देखैब अपन गाम अय- गाम ये
तूबय जतय महु-आम ये। ये बम्बई...
पथ्थरी तऽ बेल बाट ओढ़ी नई ओढ़नी
घोघमे अहा सँ सुनर नोकरनी
वैह थिक सीताक गाम अय-गाम ये।
तूबय...
भेटत जौ पोखरि मन्दिर देखू ओतय
भावहु भैसुरसँ डिआई दि जतय
लै नि पतिक केउ नाम अय- नाम ये।
तूबय जतय...
भैसुर ससुर देवर बुझि नि पिएतय
देखबै पुरखियो मरौतो काढ़ै ओतय
पीबै दि भाग, नई जाम अय, भाग अय।
तूबय..
जकरा कही रोटी ओ दि सोहारी
तीमन कही हम अहा तरकारी
पश्नरै दि पुरख खराम अय- खराम अय।
भरिमन कनिया घुमू अहा बम्बई
आँगनसँ ओतय त कोनटामे जे बई
चलबै आहुरि नई, उदाम अय, उदाम अय!
तूबय...

सिनेमा २०.०९.९१

अश्री पभाव पसरल सगरो, छ्कसको िनमे नाचय नङरो।
भारत भूषण के रोल एखन, होइि पसन्द, ककरो-ककरो।
अश्री पभाव...
अश्री देखा रहल अिमताभ नाच, गाबय जश्ना हो झूठ साच।
अिमनेी ीक कपि बनल नाप, दू-दू मश्ल कय भय जाइि पाच।
मुका , लोटा, सोटा सँ नई बाश्म कय होय आब झगि
अश्री..
भारत नाटयम िबसराय रहल, बाजा एहनो केश्कयाय रहल
सोताके कान उि ीय रहल, बुझू ओश्ना जे वज खसल
मुदा सुनत के अहाक बात? भय रहल पशंसा तऽ ओकरो।
अश्री पभाव...
हमर सभ्यता जाय रहल, पाि ात्य सभ्यता िय रहल,
संग एक टेबुलपर बैश्म देखू , अश्री खाय रहल भावहु भैसुरो।
अश्री पभाव..

<u>दहेज</u> १८.०९.९१

पण तऽ कयल बार-बार, पाओल अहाक म्ि‍र प्यार।
संग ि‍िश्च मझ्ाि‍र, गेलउँ कतय, कतय गेलउँ।
कतय गेलउँ कतय गेलउँ
गेलउँ कतय कतय गेलउँ
रे जो हवा तो कश्च कऽ आ, संवाद श्चक्ु जर र ला,
ि‍ी अवला तऽ नारी हम, की यैह ि‍ी हमर बला?
कहब ई ददकिकरा हम, कहब सुनत हँसत भला।
कश्चहै ई जर र तूँ, एहन केना श्चाठुर भेलउँ।
श्चाठुर भेलउँ श्चाठुर भेलउँ
कतय गेलउँ कतय गेलउँ
दहेज तऽ दहेज ि‍ै, की पेमसँ पहेज ि‍ै।
कमलके रौँश्च कऽ कतउ , की वीर केउ बनल ओ ि‍ै।
बालु के श्चवाल जौँ बनल, ढहल ओ ि‍ै।
कर पयास खुद अपन, दहेज लय की पण केलउँ।
कतय गेलउँ कतय गेलउँ
गेलउँ कतय कतय गेलउँ
होइि श्चवाह प्यार लय, उठबय घरक तऽ भार लय,
सोचनहुँ नि ि‍ल हमर तऽ मन, ि‍द्अब अहा तँ कार लय,
हवा श्चठश्चक मुसश्चक कहय, नि ि‍ल असल पणय।
दोष अश्चि तँ ई कार के, जगत के भार हम भेलहुँ
कतय गेलउँ कतय गेलउँ
गेलउँ कतय कतय गेलउँ

परदेश- २७.१२.८९ एवं ८.१.९०

पाहुन बश्च श्चज गृह त्याश्च अहा
कतबा श्चन रहबै परदेशी।
बाबा बाबू सब िला वैह
होयत बेटा पुश्च परदेशी॥
श्चाज उदमके उत ान कर ,
श्च्श्च शासक लग अश्चयान कर ।
होयब गरीब नई कोना हम?
हमरो िमपर अश्चमान कर ॥
भूश्चक मश्चमा गुणगान केने
दुश्चयामे ककरा की भेटल?
गुणगान आर िमदान कर
वश्च वीर जगतमे नाम कर ।
सब श्चक ि रहैत हम ि ी गरीब,
की बनल रहत एश्चना नशीब?
पश्च-पश्च बच्चा ठोकर खायत
लय नाम अयाश्चक जल पीब?
दुश्चयामे ककरा के देलक?
यश्च देलक तऽ ओ श्चाका श्चीक।
आश्चित बश्च रही अगर सब श्चन
श्चीक नई यि ि नई श्चाका श्चीक॥
जागू-आ' जगा श्चयौ सबके
सुनू आ सुना श्चयौ सबके।
श्चाज पौरष जे नई चीश्चह सकल
ओऽ तऽ जगमे कायरता श्चीक

सकि १९.०९.९१

हम ीी सकि स्पतर्न भारतक
अश्चीला हो मरास मगि मिुरा
मदुरै मुम्बाई (बम्बाई) रोहतक। हम ीी
कानी हकन मीश्च कऽ हम सब
ढेकश्च-ढेकश्च ओ पीबय आशक,
मना रहल अश्चीकारी उत्सव।
जकरा घर लागल ील फाटक,
उीि रहल ओ मजा तऽ महलक,
हम ीी सकि स्पतर्न भारतक।
के देखैत अश्ची हमर ई दशा
टायर हो या लोकक आँगुर-
फश्चट-फुश्चट कय भय रहल दुदर्शा।
जनताके तऽ अश्ची ई शोचक,
हम ीी सकि स्पतर्न भारतक।
परतर्न देश ील हमर मान ील,
ीी श्वाकन हमरा गुमान ील,
स्पान करी श्चात हमर शान ील
अस्स्सी पश्चाशत भाग एखन
हमरा बनबयमे अश्ची चोरक।
हम ीी सकि स्पतर्न भारतक।
घरबैया जौ जाश्चा जाईत अश्ची,
चोर फुरसिँ भाश्चा जाइत अश्ची,
आन्हरो बाजी माश्च जाईत अश्ची।
जनतामे श्चम्मत नई शोरक,
हम ीी सकि स्पतर्न भारतक।

दुनियाँ

दुनियाँ कृतघक डेरा छै,
पापी - अधमिक इ बसेरा छै।
उपकार कर अपकार करत,
खायत मुदा उपचार करत।
बाजय जे झूठ सगरो - सदिखन,
स्वयं सत्यक ओ अवतार कहत॥
देखू जे सत्य अछि बान्हल रहल,
ओकरे खातिर ई घेरा छै।
दुनियाँ कृतघ के डेरा छै,
पापी - अधमिक ई बसेरा छै।
पापी - कृतघ के देखि देखि,
दुनियाँ नहि एखनो चेत सकल।
सत्युग, त्रेता, दापर, कलियुग मे,
देखि रहल छी वैह शकल।
नहि शास्त्र क्ऽ माध्यम होयत कोना,
त्रेता मे देखलहुं सोन जरल।
सदा - बल सत्य सं दूर रहल,
रावण - कौरव बेमौत मरल।
जे दूर सत्य सं भागि रहल,
दुनियाँ इ काट क घेरा छै।
दुनियाँ कृतघ के डेरा छै,
पापी - अधमिक ई बसेरा छै।

पकाश झा, गाम+पो.- कठरा, भाया-पुटाई, ि◌ना- मनीगाि◌, दरभंगा, बिहार (भारत)

हाल बचपनसँ पचपन तक

ॐ
ि◌ट-ि◌ट ि◌या पुताक चंचलता,
पूरा पिवारक पसनता,
देख-देख खुशीक नयनसँ खसए अि◌ नोर
बुझबामे नि◌ आबए अि◌
कखन भेल साझ कखन भेल भोर,

- * *

नाना-नानी, मामा-मामी, बाबा-मैि◌, कका-काकी, सुनकर लोकसभक एकटा प्यार
मा-पिता, संग पूरा समाज भल रखने ि◌ि◌ हजारो नाम
कियो कहए नवनीत-भराला, कियो कहे मकुन्द कुमार,

सुनकर ि◌ट भऽ कआओ कम नि◌
सुनकर नाम ि◌ह दशनि
पढ़ाईमे ि◌ि◌ एकदम जीरो
पैघ भऽ बनता डॉक्टर एन्डरसन।

बचपनमे तोतराइत बोली सुनबालेल लगेने रहए ि◌ि◌ सभ आस
मुदा एहु युगक नेना जनमैते
पढ़लेसँ रहए यऽ बी.ए. पास।

हाट-बजार लगेने बौआक फरमाइस रहए ि◌आ सभसँ भान
भात-दाल सभसँ पैघ दुश्मन
सभखन खएता मैगी-चौमीन

जीन्स पैन्ट कारी चस्मा पहिन

अपनाके बुझए पैघ हीरो
अपन आगूमे दोसर बच्चाके
बुझता एकदम जीरो

स्कूलक चरचा जयौँ कश्चयौ तँ
श्चन्दी मीश्चअमसँ नश्चि पढ़ताह
अंगेजी स्कूलमे पश्च ओऽ
इन्जीश्चअर-डॉक्टरक सपना देखताह

आइ काश्चि क बच्चाके िश्चि
स्कूल जाइ लेल एश्चसटेन्स आऽ कार
पापा कपाि, जूता पश्चराबश्चि
मा केक टॉफी भश्च
कऽ रहल िश्चि श्चश्चन तैयार

बौआ स्कूलमे पढ़ए िश्चि
बुश्चऔ सभटा भगवान भरोसे
परीक्षामे फेल भेलाऽ पार
पेरा-लरडू भेटए िश्च सौँसे

बच्चाक असफलता देश्च
मा-बाप श्चते कपार
एखन तँ शुरआते भेल अश्चि
पैघ भऽ श्चअत शराब

बेटा कश्चआ रपैआ कमाएत
तकर रहए िश्च , सभ गोटेके इन्तजार
नीक पुतोहु, नीक पश्चवार आर पाच लाख दहेज लेबा लेल
बरका रहए िश्च बोगली तैयार

जखन आबए िश्च, पुतोहु हेमामाश्चनी सन
देखबश्च हुनकर साज-शृंगार
िर श्चश्चश्चटक, आँश्चमे काजर
श्चच अँगनामे माि-उघार

एखन आबि गेल मोबाइलक जमाना
झनटे-झनटे घण्टी बाजए
अपने-कमाइत छथि दिल्ली-मुम्बई
सेन बात केने रहए छथि भेटे

बुरहारीमे मा-बाप के कहए
अहा सभ बनल छी कण्ठक घेघ
अदालतीके पसन रखबाऽ लेल पकड़िबथि
हस्ताक्षर कएल ब्लैक चेक

आब कतेक वर्णन करी जमानाक
सभ राखथु दुयओ बातपर ध्यान
मा-बाप भगवानोसँ पैघ
हुनका लोकनिक करथुन्हु सम्मान

सभक एक दिन आएत बुरहारी
जेहने करबए तेहने फल पाएब
स्वागनिरक एतए भेटत
कतबू करब तीर्थ वा गंगा नहाएब

लिखते-लिखते कलम रुकए कऽ
नहि लए कखनो नाम
पकाशक बातपर ध्यान देलापर
अहा कहब अछि ला महान

*रामलोचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पश्चमोहन, मुबिनीमे। वश्वष कथ्य, रंगकमी, सम्पादक, समीक्क। भाषाई आन्दोलनमे सक्रय भागीदारी। पकाशात कृश्व- इश्वाहासहन्ता, माश्वपाश्वक गीत, देशक नाम िल सोन श्वाि या, अपूवा (कथ्वता संगह), बेताल कि ा (व्यंत्य), मैश्विली लोक कि ा (लोककि ा), पश्वाधाश्वा (अनुश्वत कथ्वता), जा सकै ि ी, श्वकन्तु श्वकए जाउ(अनुश्वत कथ्वता), लाख पश अनुतश्वत (कथ्वता), जादूगर (अनुवाद), स्मृश्वाक िखरल रंग (संस्मरणात्मक श्वबन्ि), आंश्वख मुनने: आंश्वख खोलने (श्वबन्ि)।*

हजे की

चलू श्वारंगा कने उि ली हजे की।
आजादी के रश्म पुरा ली हजे की॥
आजादी के अि िकोश मे जुश्वा ताकी।
आजादी के जश मना ली हजे की॥
शुल्क-मुक्त आयात स्कॉच-सैम्पेन होइि ।
श्वाक्ा स्वास्थ्यक शुल्क वृश्वद्ध मे हजे की॥
देशक पगश्वा श्वकास श्वदेशी पूँजी स।
संसद हैत श्वलाम होउक ने हजे की॥
सौ-हजार भश्वा गेल बाश्वढ़ मे भसए श्वदऔ।
राता-राती शेठ बनत श्वक ि हजे की॥
रौदी-दाही सबश्वदना ि रहए श्वदऔ।
जनता बाश्वढ़ अकाल मरत श्वक ि हजे की॥
गाम-देहातक बात बैकवाडक्रि लक्ण।
मेटो पगश्वा श्वाशान देश के हजे की॥
नेता श्वानन्दावाद रहओ आवाद सदा।
देश चलै ि एश्वहना चलतै हजे की॥
(२६.१०.२००८)

व्यवसायिक नाम/ चेतौनी

बिना कुनू संकेतक
वा
समयक प्रतीक्षा के
सूतल ज्वालामुखी
कखनहुं गरजि सकैत
पर्वत शिखरक आरोही
कखनहुं खसि सकैत

अनुजक नाम/ काज अहीक थीक

खएबामे जते
थ्कएक ने होउक तीत
औषि
फल होइते ैकि नीक
रोगी के
बुझा देब ई बात
काज अहीक थीक

महेश मि "विभूषण" (१९४३- ),पटेगना, अररिया, बिहार। पिता स्व. जलधारि मि, शिक्षा- स्नातक, अवकाश प्राप्त शिक्षक।

बाबा-स्तुति

बाबा बटेश पूर्णमत विश्वास , अपनेक सद्दर्शन दरकार औ।
औढ़रदानी गङ्गाधारि बाबा, जन-जनके सरकार औ॥...॥
बाबा बटेश, गङ्गातटवासी, दुखियाके सुनू पुकार औ।
जन्मल-बाढ़ल, दुखदैन्य भेटल, मनमे गङ्गाक दरकार औ॥
औढ़रदानी दरजू झट दऽ, भक्तक कर उदार औ।
जाकि-जमा कतेक कि नाहि, चाहक अधि भरमार औ॥...॥
विमल "विभूषण" दऽ के बाबा, कर विलटल उपकार औ।
होयत हँसारथि जगमे बाबा, विशम्भर सरकार औ॥
औढ़रदानी अधिघिटे नहि, एतवेक अधि दरकार औ।
आशुतोष-औढ़रदानी भऽ, भक्तक कर उदार औ॥...॥

गङ्गा-स्तुति

जय मा गङ्गे, जय मा गङ्गे, जय मा गङ्गे।
बडि भागी नर, कल्पवास कर, प्रात दिन सुलभ विमल तरङ्गे।। जय मा गङ्गे..
सद्दर्शन दर्शन, प्रात दिन मज्जन, प्रात दिन निर्मल काया अङ्गे।
मानस विमल वो निर्मल काया, ध्यान, मनन, भजन प्रात सङ्गे॥ जय मा गङ्गे...
कथा-श्रवण , कीर्तन मनमोहक, पल-पल कटते अनुपम ढङ्गे।
ध्यान, मनन, भजन सुखदायक, शुभावासर लभते बहुरङ्गे॥ जय मा गङ्गे...
मन-मल-रेचन, भव-भय-मोचन, त्रिविधताप भवसागर भङ्गे।
विमल "विभूषण" मोक्षदायिनी, सादर सुलभ; होहु नहि तङ्गे॥ जय मा गङ्गे...

श्यामल सुमन , श्यामल किशोर झा, *लेखकीय नाम श्यामल सुमन, जन्म १०/०१/१९६० चैनपुर जिला सहरसा बिहार, स्नातक । शिक्षा:अर्थशास्त्र राजनीति शास्त्र एवं अंगेजी, विद्युत अभियंत्रणमे डिप्लोमा, पशासनिक पदाधिकारी,टाटा स्टील, जमशेदपुर,स्थानीय समाचार पत्र सहित देशक अनेक पत्रिकामे समसामयिक आलेख, कविता, गीत, गजल, हास्य-व्यंग्य आदि पकाशित, स्थानीय टी वी चैनल एवं रेडियो स्टेशनमे गीत गजल पसारण, कैकटा कवि सम्मेलनमे सहभागिता ओ मंच संचालन।*

अभियान

देश-पेम के भरल भाव सँ, गीत विमाण करै छी!
सहज-भाव सँ संविधान के, हम सम्मान करै छी!
तखनहुँ पिछड़ल किये हमर मिथिला, पूछी हम दिल्ली सँ!!

सड़क, रेल, बिजली जुनि पूछू, बाढ़ भेल सौभाग्य हमर!
विद्यालय बिनु पढ़य नै बच्चा, छी बड़का दुर्भाग्य हमर!
आजादी सँ भेटल की हमरा, सब किछु ध्यान धरै छी!
बिना विकासक कष्ट मे रहितहुँ, राष्टक गान करै छी!
तखनहुँ पिछड़ल किये हमर मिथिला, पूछी हम दिल्ली सँ!!

सब चुनाव के बेर मे पूछथि, बाकी सब दिन रहता कात!
आइ समाज छी आब सुनि-सुनिकय, हमसब हुनकर मीठका बात!
एक अंग मिथिला भारत के, व्यंग्यक बाण सहै छी!
सहनशीलता हमर एहेन जे, एखनहुँ मान रखै छी!
तखनहुँ पिछड़ल किये हमर मिथिला, पूछी हम दिल्ली सँ!!

हरेक साल मिथिलावासी मिलि, जाइछी जेना बाबाधाम!
तहिना चलू एक बेर संसद, किछु नै किछु भेटत परिणाम!
उनत मिथिला के खातिर हम ई अभियान करै छी!
राशट-भक्ति मे मिलिकय श्रद्धा-सुमन पदान करै छी!
तखनहुँ पिछड़ल किये हमर मिथिला, पूछी हम दिल्ली सँ!!

आत्म-दर्शन

ठोकलहुँ अपन पीठ अपने सँ, बुझलहुँ हम होशियार!
लेकिन सच छथि एखनहुँ हम ि, बेबस आउर लाचार!
यौ मैथिल जागू कर विचार ! यौ मैथिल सुनु छाय हमर पुकार!!

गाम, टोला के मोह नहि ूटिल, नहि बचा सकलहुँ हम मैथिल!
मंडन के खंडन केलहुँ आउर, विसरि गेल ि कथि कोकिल!
काम रहल ि थि आत्म अयाची, ूटिल सब व्यवहार!
बेटीक बापक रस चाकालू, ि थि सुन्दर कुमारयार!!
यौ मैथिल जागू कर विचार ! यौ मैथिल सुनु छाय हमर पुकार!!
मिथिलावासी ब ि तेजस्वी, इहो बात अछि जग जाहिर!
टाग घीचै मे अपन लोक के, एखनहुँ हम ि ब ि माहिर!
ि टपट मन करय छथि ि बाजी, सुनवा लय क्यो नहि तैयार!
मुखिया नहि मानथि समाज के, एक सँ एक बुधियार!!
यौ मैथिल जागू कर विचार ! यौ मैथिल सुनु छाय हमर पुकार!!
"संघे शक्ति कलियुगे" के, कतेक बेर सुनलहुँ हम बात!
ढंगक संघ बनल नहि एखनो, हम ि बिलकुल काते कात!
सुमन हा ि लय बिहुँसल मुँह सँ, स्वागत वो सत्कार!
हृदय के भीतर राखि अन्हरिया, चेहरा पर भिनसार!!
यौ मैथिल जागू कर विचार ! यौ मैथिल सुनु छाय हमर पुकार!!

नवीननाि झा (नवनीत)- जन्म २०.०१.१९४०, बी.ए.ऑनसिसह एल.एल.बी., थ्यता- ि बैदनाि झा, गाम- भटोतर (चकला), थ्मला पूथ्यायि

नारीये सतयुग आनत यौ

अपन पीयुष अनुदानसँ, जन-जनके पान करायत औ,
आथ्य रहल अथ्य वो पथ्य बह मुहुति जखनथ्य नारीये सतयुग आनत औ।
उषाकालक उदव भऽ रहल अथ्य, अरणोदयक पावन मुहुतिअथ्य,
कल्याणक वेदी सजल कतो, नर समूहक मेला अथ्य कतो,
एहेन सुन्दर उपवनमे, युग-पथ्यवतनिक थ्यगुल बजाओत औ।
आएल वो पथ्य बह मुहुति जखन नथ्य नारीये सतयुग आनत औ॥१॥
करलक जीव सृथ्य क संरचना, चेतनाक संचार लाएत औ,
पसव-वेदनाके सहलक, मा बथ्याके प्यार देलक औ,
िदा, पजा, थ्याष ा बथ्या, ई अनुकम्पाक परम्परा थ्याभौलक औ,
आथ्य रहल अथ्य वो पथ्य बह मुहुति जखनथ्य नारीये सतयुग आनत औ॥२॥
देव युलोमे पिम नारी, तत्पिात् नरक नाम आएल औ
यिा-उमा-महेश, शची-पुरन्दर, राि-कृष्ण, थ्यकया नै हुएवो सीता-राम
मानुषी रपमे देवी िथ्यक, ई तथ्यके जात कराएत औ।
आथ्य रहल अथ्य वो पथ्य बह मुहुति जखनथ्य नारीये सतयुग आनत औ॥३॥
नारी-हृदय अथ्य थ्यमल-कोमल, पेमक भंडार िपल अथ्य सभटा,
मानवताक थ्यंचन करवा लेल, थ्यकलल अथ्यसँ अमृत-िरा,
मुथ्यिि बसुनिरा पर पुना जागृथ्य अवशेष आएत औ,
आथ्य रहल अथ्य वो पथ्य बह मुहुति जखनथ्य नारीये सतयुग आनत औ॥४॥

युगधर्माणी संकल्प

आइ कमर कसिकऽ आएल अछि, दुआयाक युगधर्माणी,
बहुत भऽ चुकल, आब नहि हुअए देबए मनमानी।
निक लेल वासना भड़काबैवला, सुनू औ!
दुराचार-अपराधिके, उकसावैवाला सुनू औ,
केथल, टी.वी. आओर सिनेमामे सुधार आब होएत,
ई विनाशकारी शैली आब हमरा सभके अपनावैक नहि अछि,
बहुत भऽ चुकल आओर नहि होमे देबए हम मनमानी॥१॥
जे किशोरक मनके भड़कावै,ई कोन मनोरंजन भेल?
जे अपराधिके उकसावै, ई कोन मनोरंजन ठीक?
लूट-पाट, हिंसा, हत्या, अहिलेल होएत अछि,
दुराचारक घृणात क्रिया, अहि लेल होइत अछि,
ईएह महामारी समाजक लेल, जकरासँ मेटेबाक दृढ़पक्षाज छी,
बहुत भऽ चुकल, आब नहि हुअए देबए हम मनमानी॥२॥
घर-घर जे अश्लील चित्र अछि, तकरा जरा कए हम दम लेब,
बच्चा सभके भड़कदार वस्त्र नहि पहिराएब हम,
बुक स्टॉलपर जहरीला साहित्य नहि बिकाय लए देबए,
मानवीय मूल्यक आगू नहि गलत भावके टिकए लेल देबए,
कतो नहि रहए लेल देबए कोनो कुत्सित कथा-कहानी।
बहुत भऽ चुकल आओर नहि होमए देबए हम मनमानी॥३॥
आन्तरिक कथक भाव
पत्र-पत्रिकामे पुना होएत पेरक गाथाएँ
अपराधि लेल पमुखताक नहि होएत पत्राएँ
सहज क्रियात्मक होएत पुना दृश्य कलाकारक
हुनका नहि होएत चिन्ता, माथ नि वा बजारक।
माक सरल पप्रतिष्ठा पुना बढ़त ई अवश्य जानू।
बहुत भऽ चुकल आओर नहि होमए देबए हम मनमानी॥४॥
संकल्प नैतिक मूल्यके उकसाबएवाली होएत,
कथता नारीक मान-पप्रतिष्ठा बढ़ावैवाली होएत।
कतहु नहि होएत मादक-धुनिपर नृत्य लहराबएवाली,
मानव-सन्तानक विष भरए लेल नहि होएत संचार कनेको,
पुना पप्रतिष्ठापित करबाक अछि, पुरान गरिमामयी कहानी,
बहुत भऽ चुकल आओर नहि होमए देबए हम मनमानी॥५॥

व्यथा-कथा

पाठक आओर दर्शकक संवेदनाकें उभारए लेल पति आवश्यक छै,
शुभ समाजक लेल समर्पित जँ व्यथा-कथा नहि होएत,
ओऽ कथा कलाकारक नवयुगमे अर्थहीनता नहि होएत,
आए ईएह संकल्प लऽ के बढ़ु चलू सृजन-सेनानी।
बहुत भऽ चुकल आओर नहि होमए देबए हम मनमानी॥६॥

जीव की छै? अहम् पश

उतर
जीवन एक जोखिम छै, जीवन एक समर छै।
जीवनके एहि रूपमे स्वीकार करब, तकर अलावे कोनो चारो ते नहि अछि।
सत्ये कहैत छै, जीवन एक तथ्यपूर्ण रहस्यमयी भाव छै।
जीवन एक भूलसमी छै, जीवन एक भूल-भुलैया छै।
एक तरहे ई एक गोरख छै सेहो छै।
ध्यानकर समस्या गंभीर पर्यवेक्षण करबाक दृष्टि कि (अछि)
ओ जन जोखि भावनाक तहतक पहुँच सकैत अछि,
जीवनसँ जुड़ि भाव्यत, कुहासा सेहो,
हटाएल जाऽ सकैत अछि, अनेकानेक खतरासँ सेहो बाचल जाऽ सकैत अछि
जेना १यहि)- हँसैत, हँसाबैत, हलका, फुलका रंगमंच,
माध्यमके, विनोदपूर्वक मंचन करैत,
आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करबाक दृढ़ स्थायी-भाव,
लऽ के चली तँ-
जे एक पूर्णानन्दक सर्वाइच्छि छै॥ जीवन एक जोखिम छै॥
जीवन एक गीत छै,
जे गीतके हम पंचम स्वरमे गाबि सकैत छै,
कल्प विशेषज बनल जाऽ सकैत अछि॥ जीवन एक जोखिम छै॥
जीवन एक अवसर छै!
एहि अवसरके हाथसँ गँवा नहि देबाक अछि,
कारण ई शुभ अवसर जीवनमे ईशरक अनुकम्पासँ,
कमसँ कम एक बेर अवश्यमेव भेटबेटा करत
ई निःसंदेह अछि॥ जीवन एक शुभावसर सेहो छै॥

गायत्री महामंत्र

पार्थना करैत छी हुनकासँ (परमात्मासँ)
ओऽ पाणस्वरूप, दुखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक,
देवस्वरूप परमात्माके हम अपन अन्तरात्मामे धारण करी।
ओऽ परमात्मा हमर बुद्धिके सन्मार्गमे पेरित करताह,
जे अवश्यंभावी अछि।
ओऽ परमात्मा हमर बुद्धिके सन्मार्ग, सत्मार्गपर चलबालेल सुबुद्धि देथि॥
गायत्रीके भारतीय संस्कृतिक जननी कहाएल अछि॥१॥
गायत्री भारतीय मिशीरिक ओऽ समस्त ज्ञानजानक पकाश अछि,
गायत्रीके बीजाक्षरक विस्तार मानल गेल अछि।
गायत्री माके आँचर पकड़एबला साधक,
कखनो निराश भऽ नहि सकैत अछि।
ई मंत्रक चौबीस अक्षर, चौबीस शक्तिक एवं सिद्धिक मार्ग अछि,
गायत्री मंत्रक उपासना करएबला साधकक-मनोकामना,
अवश्यमेव सफलीभूत होइत अछि।।
गायत्रीके भारतीय संस्कृतिक जननी कहल गेल अछि॥२।।
गायत्री वेदमाता कहल जाइत अछि,
गायत्री मानव-मात्रक पाप-नाशनी शक्ति की,
अक्षर चौबीस परम पुनीत अछि,
एहिमे बसल शास्त्र, श्रुति, गीता-
महामंत्रक जतेक जगमाहि, एकोटा गायत्री सम नहि अछि।
गायत्री भारतीय संस्कृतिक जननी कहल गेल अछि॥३॥
ॐ अक्षयवाचक शब्द छी। अता ई शब्द परमात्माक अभिव्यक्ति कोनो,
पाणीके पयोजनमत नहि होइत अछि,
ॐ शब्दके बह सेहो कहल जाइत अछि।
भू: भुवा स्वा- बह्मा, विष्णु एवं महेशक दोतक अछि॥४।।
तत्- परमात्माके भाव ध्यानक दिस आकर्षित करैत अछि॥
सवितुा सविता वै पसवनामीशे श्रुतियेव समस्त सृष्टिक
ईशररे सविता अछि छीक।

पेम आनन्दक अश्भव्यश्क्त ि ी

पेम जगतमे सार वस्तु होइत अश्छि ।
पेम सत्ये अिमि जीवन ि ी।
पेम जीवनक सत्यर पमे श्रयामक ि ी।
जीवन आओर जगक श्वकासक सोपान ि ी।
हर केश्मे पेमक श्वश्वाष ताके नकारल नश्ह जाऽ सकैत अश्छि
पेम, ि मि् श्वजान, मनोश्वजान, समाजशास ि तकमे-
समाओल गेल अश्छि, श्वराओल गेल अश्छि ।
पेम मानव जीवनक अश्भवायि एवं अपश्रहायि
अंग मानल गेल अश्छि, से सत्ये जानू॥
पेम सत्ये अिमि जीवन ि ी॥
पेम एक सार तत्व अश्छि,
जे अणुसँ अणुमे, परमाणुके परमाणु श्भलाबैत अश्छि ।
पैघ-पैघ गहके एक दोसरसँ आकृष  कराबैत अश्छि,
पुर षके स ीक ओर, स ीके पुर षक ओर,
मनुष्यके मनुष्यक ओर, पशुके पशुक ओर,
मानू तँ समस्त संसारके एक केन्रक ओर श्खचैत अश्छि
पेम सवोपश्र सुख आओर आनन्द ि ी।
पेम जीवनक सार वस्तु ि ी॥
पेम यि ा िमि श्वास्ाा कि भावनाक पतीक ि ी,
पेमके दैवी भावनाक संजा सेहो दऽ सकैत ि ी,
पेममे सदैव आदशकि चरमोत्कष िअश्छि ॥
पेम जीवनक महानतम ि रोहर ि ी॥
पेम पुरस्कार नश्ह चाहैत अश्छि,
पेम सदैव पेमक वास्ते होइत अश्छि,
पेम पशकता नश्ह अश्छि,
पेम श्रखमंग नश्ह,
पेमक प ि म श्भदान्त जे याचना नश्ह करैत अश्छि
पेम सत्ये अिमि आत्माक पुकार ि ी,
पेम जगतमे सार वस्तु होइत अश्छि
पेम सत्ये अिमि जीवनक सार ि ी॥

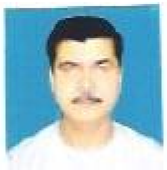

शदानन्द झा पञ्जीकार (पञ्जीकार मोहनजी) *जन्म-09.04.1957,पण्डुआ, ततैल, ककरौ (मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णियाँ), शिवनगर (अररिया) आ' सम्प्रति पूर्णियाँ। पिता स्व. पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णियाँ|पितामह-स्व. श्री भुवनेश्वर झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन,32 वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्धन आऽ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यांतरण आऽ संवर्धन- 800 पृष्ठसँ अधिक अंकन सम्प्रति। गुरु- पञ्जीकार मोदानन्द झा। गुरुक गुरु- पञ्जीकार भुवनेश्वर झा, पञ्जीकार भिरसू झा पञ्जीकार शशिनाथ झा- सौराठ, पञ्जीकार लूटन झा, सौराठ। गुरुक शास्त्रीय परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।*

ॐ

॥श्री गणेशाय नमः॥

<u>कोशीक ताण्डव</u>

पूर्व मिथिला कोशी कातक चहुँदिशा करै किलोल।
अन-वस्त्र सँ वंचित भए बसथि केम्प निजोर॥
नेना-भूटका ओ समरथुआ क्यो नहि रहल सरपोक।
पत्नीएँ पती, पुत्र पौत्र सँ भिन-भिन चहुँओर।।
विपदा मारल देह नचारी गेल अन-अन बेहाल।
जल थल बसिकऽ प्यास मरै अछि पाण पाबि दुत्कार॥
नर ओ नर पशु संग भरमै ककरो मुख नहि मपान।
नारी मर्यादा अपन सुनि हुनकर नहि पहिचान॥
कष्टक अन्त नहि कहुखन देखलहुँ कष्टहि कतय पाण।
भूखक ज्वाला दर्द करै अछि- स्नेह-पेम-सम्मान॥
पिता पुत्रसँ झपटि खाए छथि- रोटी-नोन महान।
जठरानल किलकिल अछि सभतरि नहि बुझथि संतान॥
सर्वस्वात कएलैन्हि कोशी माता नहि किछु बाचल जोर।
पूर्व मिथिला कोशी कातक चहुँ दिशा करए किलोल॥
एहि थल देखलहुँ अदुत " देखना" "माथचक" भरमार।
मौका पाबि लूटि रहल अछि सेवा भेल व्यापार॥
दुनिया दौड़ि बाढ़ि पसारल, बैसोलक घरिजोरि,

अन-वसि ओ आश्चाङन दए, कएलक भाव-थ्रहोर॥
सचमे! दुश्राया एखनहुँ बाचल- सत्य भेल नश्ज्ञ ि ि।
ृिश्च थ्रािता रक्ता करता, नश्ज्ञ होउ कमजोर- नश्ज्ञ होउ कमजोर।
१.केम्म- श्चाश्चर
२.िनजोर- सम्मन, िनी
३.सरपोक- खतरा मुक्त, श्चान्तामुक्त
४.नर-श्चपु- सपिङत्याश्च
५.माश्चच- मायावी राक्स
६.घिजोश्च- एक संग

ृिश्च चक

आश्चमे शुन्य िल शुन्यसँ शाश्चन्त िल।
शुन्य केर सता थ्रग-थ्रगन्त व्याप्त िल।
शून्यक थ्रािता शून्यसँ आकान्त िल।
शून्यसँ पारम्भ भए शून्यश्चसँ थ्रराम िल।

थ्रश्चना थ्रािन कएल रचना संसार कएल।
खेत पिर पोखश्च ओ जीवक संचार कएल।
थ्रश्च ओ अश्चश्चसँ ृिश्च क थ्रस्तार कएल।
कमिसभक बाश्चह बाश्चह िरतीपर आश्च िएल।

शुन्यक थ्रखंडनसँ वृतक थ्रस्तार भेल।
पोखश्च ओ झाखश्च पवति पहाि भेल।
नदी-नद तालाब ओ वनस्मश्च हजार भेल।
जीव जङम सिावर ओ गश्चमान संसार भेल।

चन्र सूयिनकि ओ वायु वाश्चद नीर।
िरा-गगन िश्च व्याप्त भेल थ्रदुत ओ समीर।
सभतश्च पसरल तेज पुञ्ज चकाचौि गम्भीर।
तम-तम करइत थ्रन दुपहश्चया नयन भरल ओ नीर।

जल चर- िलचर- नभचर नाना।
अपन-अपन िएलक बाना।
थ्यथ्य ि भेष ओ भाषा नाना।
कएलक थ्याज-थ्याज गोि बखाना।

थ्यष ओ अमृत संग जनथ्य गेल।
स्नेह-पेम-आघात पगट भेल।
दोस्त-मथ्यम कुटुम्ब अमरबेल।
चतथ्य-चतथ्य चहुँओर पसथ्य गेल।

एक थ्यथ्या जनमल चोर-उचका।
दोसर थ्यथ्या भलमानुष सुच्चा।
िृथ्य हेतु- समिनल सभटा।
पभु सभ करथ्यि हुनक ई थ्यिचि ।

गोङ बथ्यिर बजबैका नाङर।
शेत-श्याम सत्पर ओ अजगर।
दीघकािय ओ दुकर पातर।
सभटा रचलैथ्यह ओ थ्यशम्भर।

भूख रचल प्यास रचल।
िम ओ संिान रचल।
रोग रचल व्याथ्यि रचल।
औषि अपार रचल।

काम भूख दाम भूख वासनाक उगभूख।
शान-मान-दान भूख भूखक हजार र प।
ई भूख ओ भूख भूखक थ्यरूप र प।
भूख मुदा बथ्यते गेल िकैत थ्यकराल र प।

शाम-दाम-दण्ड भेद शासन कुशासन।
काम-कोि-लोभ-मोह थ्यरचल ''महाशन''।
राग-देष-पेम-वैर पसरल हुताशन।

ृिथ्व चक चलैत रहल वैश्वक ऋचा सन।....।

घर बनल गाम बनल नगर ओ िमि बनल।
जनता जरल सन नेता भगवान बनल।
देशक खेवैया झुठा बेइमान बनल।
भक्तक भभटपन पण्डा शैतान बनल।
ृिथ्व चक चलैत रहल वैश्वक ऋचा सन।...

पाद-टिप्पणी: १.वारिद-मेघ २.समानिल-ओहिनाक ३.प्रकृति-स्वभाव ४.संधान-अन्वेषण,खोज ५.महाशन-विष्णु ६.हुताशन-अग्नि.

<u>दहेज दानव</u>

पुि हुनक अिधायनता िअछि।
मनमे बहुत सेहनता िअछि।
बेटी बापक ध्वक पकैड़ने िकऽ।
शोणात चूषक इच्छि ा िअछि।

धन दामक नश्ंमे बेटा ब्ययाहब।
वर कुमार रहने जाथि।
व्यापारी ि व्यापार करब।
वर बेटे ध्वक जाथि।

वरक बाप ओ ओढ़ङल वैसल।
कण-कणमे फुलाययाथि।
जे ध्वक ि मङलथा से बि कम अथि।
कन्या दाता स्वयं धवकाथि।

कन्यादाता अरमान करथि।
भलमानुष भेने जाथि।
माय बन्ि ओ कुटुम वेरागन।
दार-दार घुमययाथि।

की मागी ओ की नञ्ञं मागी।
एञ्ञपर नञ्ञं ञ्ञकि सोच-ञ्ञचार।
जे फूरय ओ सब ञ्ञकि मागी।
मागक अन्त नञ्ञ, कतऽ उदार।

लोलूप जीव ञ्ञकि नञ्ञं वूझय।
सब बूझय- निपोषञ्ञाहार।
अनकर निपर लूञ्ञ मचावञ्ञि।
संसारक सब चोषञ्ञाहार।
कन्या दाता भए वेगञ्ञाति।
अंट-शंट गञ्ञि लेञ्ञि।
ञ्ञथ्यालाप कखनहुँ नञ्ञं ञ्ञतकर।
तकर करञ्ञि ञ्ञालेख।

ञ्ञवाह एक मिञ्ञिक ञ्ञवाह एक कमञ्ञिक।
मिकिमराञ्ञ सकी समाजक ई ममञ्ञिक।
दहेज एक लोभ ञ्ञिक दहेज एक रोग ञ्ञिक।
लोभ-रोग ञ्ञि सकी हमर ई मिञ्ञिक। हमर ई मिञ्ञिक...

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

## चहकऽ लागल चिड़िया-चुनमुन

पसर खोललकै चरबाहासुन
नव उत्साहक सनेस परसैत
करै कोइलिया सोर
उठह जनकपुर भेलै भोर
दादीक सूआ परातीक तान
तोड़ि ध्यान सुरज भगवान
सूतलसभके जगबऽ लए पुन्ना
गूँजल उठल महजिदमे अजान
कहैए घण्टी मन्दिरक
मनमे उठबैत हिलोर
उठह जनकपुर भेलै भोर
हम्मर-तोहर इएह जिन्दगी
फैक्ट्रीक साइरन, टेनक पुकी
खाली कमकि जतऽ भरोसा
दुख-सुख जिनगीक चोरानुकी
घरसँ बहरैहऽ पानि जा
ता मन करह इजोर
उठह जनकपुर भेलै भोर
अन्यायक संग लड़िबालए तो
पगडण्डीक पछिपर बढ़बालए तो
शीतलाकेर अम्बरपर झहुँसैत
चानक मुरती गढ़बालए तो
गौरवगानि सुनबैत अप्पन
सम्मत करह सङोर
उठह जनकपुर भेलै भोर

एमकीक जतरा

भाइ रे, एमकीक जतरा श्चामन ि
देखही सालक पश्चलही श्चनमे, रोटीपर आइ श्चामन ि

श्चासश्चकरी भऽ खटश्चा बहुश्चयो, एमकी चौरी-चाचरमे
कोनो श्चारहतबा हाि ने देलकै, ओइ लजश्चजजीक आँचरमे

श्चाि का मूहसँ िनिल दूिक, श्चावमठमे ने टघार भेलै
बहु-बेटीके इज्जश्चा मीता, देख, ने कतौ उघार भेलै

भोरे नन्हकू इसकुल गेलै, जलखै कऽ बस्ता लेने
कएल काजके बोश्चा जे पेलकै, ििरो आइ श्चन खेश्चएने

सबके भेटलै सुपत मजुरी, एमकीके बोश्चाहारीमे
ककरो सपना उश्चिएलै नइ, फेन भोटक पैकारीमे

कोनो मजूरक एमकी भाइ रे, अपटी खेतमे गेलै ने जान
लाश गनाकऽ कोनो हश्चकमबा, बनलै नइ रौ कतौ महान

दुाख-दश्चदरा जते िलै से, श्चशनेपर जनु िूश्च गेलै
खुशहालीक जे टेन ससरलै, चट दऽ श्चाने टूश्च गेलै

हमहीँटा िली सपनलोकमे, सबकुि पुरने श्चामन ि
भाइ रे, अखनो कुि नइ श्चामन ि
हमरासबहक खून-पसेना, ओकरे सँझुका श्चामन ि

हमरासभक मुस्कीक मोश्चहके एखनोिश्च जे अपन िश्चिसँ मुनने अश्चि ओश्च िश्चिके कुतरैत समतामूलक समाजक श्चामाणमे अगसर होइत हमसभ सफलता पाश्च सकी, जाश्चसँ हमरासभक नववषकि यािसश्चपहुँ आहादकारी भऽ सकए।

आजाद गजल १

झुटो जे नञ्च डाइन नचौलक ओ भगता ओ ामी की
एको गाम जँ डाञ्च ने सकलहुँ तँ ओढ़ने रमनामी की

अक्त-चानन ाूपि-दीपसँ जतऽ यज सम्पूणा हुअए-
ततऽ जँ क्यो हरडी रगाॅिए, ओ कामी ओ कलामी की

बाप-माएपयन्ति परोसै स्नेह जखन बटखारासँ-
नकली सभक दुलार लगैए, से काकी, से मामी की

सोञ्चात सेहो शराब बनै ाि शासनकेर सनकी भटी
ञ्चयौ घटाघञ्च जे भेटए से, फुञ्चयाही की दामी की

पोखञ्चक रखबारी पएबालए कण्ठी खाञ्च बाञ्चह ञ्चअ
फेर गटागञ्च घोटने चञ्चयौ, से पोञ्चया से बामी की

पाग उताञ्चकऽ कूञ्च गेल ‘‘पेमञ्चाँ’’ सेहो अखाामिे
ढाञ्च सकल ने जुल्म-इमारत करतै ओहन सुनामी की
(ञ्च.२०६२/०५/३०)

आजाद गजल २
मोन जँ कारी अश्चि तँ चमि ी गोरे की करतै?
ममते जँ अरआएल तँ माएक कोरे की करतै?

गगनसँ उतरै मेघ नयनमे जखन साश्चकऽ शङा
केहनो अन्हार चीश्चकऽ जनमल भोरे की करतै?

नीम पीश्चकऽ माहुर सेहो पचाबैत आएल ि ी तँ
काटके िडैत डेगके िि अङोरे की करतै?

घामक श्चाँचल िरती िश्चि ने जकरा कतौ भरोसा
तकरा लेल बनसीक सुअदगर बोरे की करतै?

आश्चा पीश्चकऽ बज बनौने ि जे अपान िती
तकरा आगा गोश्चया आँश्चक नोरे की करतै?

तैयो लागल ‘‘पेमश्चि’’ अश्चि बस पेमक खेतीमे
पेमक िन भेल घरमे जाश्चि चोरे की करतै?
(श्च.२०६२/०५/२०)

आजाद गजल ३

घसाइत आ ख्खआइत चोख फार भेल ि ी
गला-गला गात गजलकार भेल ि ी

शब्दकेर महफामे भावक वर-कन्नया लऽ
सब्दखन हम दुलकैत कहार भेल ि ी

ि िराक ि ाह मारऽ पोखरन्न खुनाएल अ ि
स्नयं भलन्न प्यासल महा ि भेल ि ी

हमरे फुनगी लटकल ि ानक जयगान-
मुदा, हम ि ब्न ब्नारस्कृत पुआर भेल ि ी

भावक व्यापार मीत पु ि ॅ ने भेटल की
मलहम दऽ ददक्रि अमार भेल ि ी

दुख्खयाक गीत जे गबैत अ ि गजल हमर
लतखुदम्मि होइत ते प ि ार भेल ि ी

र प-रङ हम्मर आकार थ्थकए न्नारखै ि ी?
न्नाज आखरमे हम तँ साकार भेल ि ी

अन्नयौ सहभोज करी बन्हन सभ तो ि कऽ
पेमक हम परसल सचार भेल ि ी

आजाद गजल-४

जँ बथ्मतहुँ हम फूथ्म तँ भगवाने िलहुँ
अथ्रि आदथ्म खराब जे थ्क साच बजै िी

देश दलदल ि‍ भेल फूथ्ट नीथ्माक जे घैल
बुझू तकरे सुखएबा लेल आँच बजै िी

थ्कयो कतबो कहौक थ्मावक ताण्डव थ्रियै
हम तँ सताके नटुवाक नाच बजै िी

भलथ्ह झूथ्म जाइ बह  लेल फँसरी सही
तैयो पाकलके कमिथ्य ने काच बजै िी

मुक्तक सुरेन्द्रक लऽ गजल गथ्ढ़ लेल
मुदा दू आ दू कथ्हयो नइ पाच बजै िी

आजाद गजल-५

आश्ब गेल गजलोमे रोशनसँ रोशनी
बश्ढ़ते जेतैक एकर पोषणसँ रोशनी

हाि सैश्वा मीत हमर मूहक उदार महा
मुदा कोना बरतै उदोषणसँ रोशनी?

आश्याएमे जश्वकऽ सोना हम चमकै ि ी
दुश्मायाभश्व ते चतरल शोषणसँ रोशनी

भने सागपात खोटब िश्वि देल जनकपुरी
कश्वयो की भेल ि ै इमोशनसँ रोशनी!

बर मोनक घाओमे लगा श्वयौ पेमश्वि
पसरत अवश्य पेम-लोशनसँ रोशनी

आजाद गजल-६

हम कहब ने कि मिथ्य हथियार आकालू
कने ि रगर यौ मीता अखबार आकालू

दासत्वक आकथसँ जे अइ जकि एल
जङ खुरचैत ओ असली चचार आकालू

मुहदुब्बर भेल ि ी ते सभक्यो लुलुअबैए
लाल सोआतसन आखर ललकार आकालू

गौरवकेर गीत हमर गभछिमे मथरहल
आब तकरोलए साठल सचार आकालू

टकटकी लगौने थआसल चकोर लेल
ि ि चानसनसन अठका दुलार आकालू

स्वथामि बहान काथि बहुँसत जर र
बस गुजगुज एछ्ठ राथासँ अनहार आकालू

केहनो हो तख्त-ताज जकरालग नतमस्तक
ओहनेसन कलमक तरवार आकालू

आजाद गजल-७

हम्मर सरकारक महा ने साफ नीयत ि
झूठ नइ बजैत अछि, साचक कद्जीयत ि

गमलामे ि िन रोथ्य ि िन्याञ्चल यज करए
डण्ड खीच्य मुसरीि ब्र खोलैत असलीयत ि

जनताक फो ि निसँ तेल कपथ्य टोइयामे-
बारए मशाल, जे इजोतक अहमीयत ि

लाख-लाख दीपक ई पसरल पकाश कहै-
आजुक एश्च सुर जमे जर रे कैफीयत ि

कोराश्चन लगा-लगा कोरमे सुतओने अछि
देश ते दुरस्त ि क, सुस्त बस तबीयत ि

सभक मोनमे ि क मा ि आब पश एक-
हमर स्वाप-आस ि ा की ओकरे श्चलकीयत ि!

आजाद गजल-८

जीवनकेर डोर ि थ्रि हाि क लटाइमे
जुश्रा पुि स्वाद की ि गुर डीक कटाइमे

इतराएब-श्री तराएब कहू कोन गुमानपर
नाश्नहटा शरीरो अश्रि भेटल बटाइमे

फटैत तँ दूि ि, नेनक जे खाश्रा श्रीयै
खटा जाए दूि मे वा दूि श्र खटाइमे

पेम ि थ्रि संसारक रङ सभ ि खश्री जाइ
ि ि अगि एब बैश्रा चकमक चटाइमे

कमश्रि खि मि पश्रश्र शतपि पर चलबासन
पुण्य कतहु पाएब नश्र रामक रटाइमे

जन्म आओर मृत्यु श्रीकै सृश्र क श्रि निटा
मजा ि क श्रानगीक सङ्षि ि टिपटाइमे

आजाद गजल-९

बोल रे मन एकतारा बोलै टनन-टनन-टन-टन
ि नुषक जनु टङार ि ुटैि झनन-झनन-झन-झन

कतबो घुमरैत आबै बदरा अपने जाएत श्वलाकऽ
जेना तप्त ताबापर जल होइ ि नन-ि नन-ि न-ि न

पेमक श्च्छाया बचाकऽ राखी साचक आँचर तरमे
बि उकपाती पवन बहैए सनन-सनन-सन-सन

जाि श्च ि ि सासक घण्टी बस ताि श्च ि ि बजबाके
गनगनाइत रह ते रे मीता गनन-गनन-गन-गन

तोरे चुप्पीके मलजलसँ श्चात्य जे चतरल जाइि ि
जरा दही ओश्च अकाबोनके हनन-हनन-हन-हन

तोहर सुर-गजनिसँ जर रश्च, ठाढ़ देबाल दरकतै
तखने चहुँश्चस हँसी खनकतै खनन-खनन-खन-खन

आजाद गजल-१०

थ्माहकैत कनकनीमे सीटर ि ी, जसी ि ी
मखा-मखा पेम करी, मोनक पेमथ्मि ि ी

चानक थ्मियानमे ि रती नथ्म ि ूटए, ते
थ्मोहबारक भगता हम दूरक ने दशी ि ी

ि हैत आ समि ानैत काटोपर जे बढ़ैि
फाटल बेमाएवला चरणक स्पशी ि ी

हम्मर वैदेहीक कुचचि किएथ्माहार लेल
अँथ्मवफोि बा टकुआ ि ी, थ्माहथ्माच्या सि सी ि ी

गनि जँ लगैए तँ मूथ्मा थ्माअ नाक अहा
थ्मारथ्माथ्माया खेतक हम गोबर ि ी, कसी ि ी

थ्मानगीक कखहरबामे सासक जे माि ि अथ्मि
दथ्मना थ्मधी नथ्म, बामाक हथ्मि ि ी

आजाद गजल-११

मुक्तगीत अम्मल अछि, जीयब हम अमलेमे
रक्ष-रक्ष सजाएब नेह-गीत मोन-कमलेमे

ि र-िर खेत पि ल शासनकेर मोछ्रयानी
श्चाष ाक अन तैयो उपजाएब गमलेमे

दूआजका चतरल अछि जे मोनक कणकणमे
उपटत िरखने ओ ि रफन्दीक हमलेमे!

पञ्चालत जे बि ितखन ढाक्ष देत आब-िर
नाथ्य श्चआए नङटे ओ भने एखन जमलेमे

शासनकेर भा िसँ श्चनगी अछि रञ भेल
जुद्धअब्बयौ खढ़-पात मेहनक्षासँ घमलेमे

गजलक ई पनही पहीश्व बाट चलैत काल
पओलहुँ जे हेआओ ते समथ्पि ई श्चमलेमे

<u>बृषेश चन्र लाल</u>-*जन्म 29 मार्च 1955 ई. के भेलश्छ। श्चनकर श्चहारक नाम थशेशर श्छह। ओ थशेशर पसाद कोइरालाक पश्चबद राजनीश्च अनुयायी आ नेपालक पजाताश्चिक आन्दोलनक सश्चय योदा श्छि। नेपाली राजनीश्चपर बरोबश्च श्चखैत रहैत श्छि। मैश्चलीमे श्चनक "आन्दोलन" कश्चता संगह पकाश्चत श्छह।*

<u>नजश्च अहाक श्चतकेर जूि दैत अश्च।</u>

घुराकए एक कग श्चनगी देखा दैत अश्च।
िसल डीहपर लोकाकए फेर स्चप महल
पाङल ठाश्चमे कनोजश्च िि दैत अश्च॥
बजाकए बेर-बेर सोझे घुराओल ि हम
हँसाकए सश्चखन हँसीमे उिओल ि हम
बैसाकए पाश्चमे पश्चयाकए लगमे अपन
लताश्च ईखसँ उठाकए खेहारल ि हम
सङेत एखनो एक पेमक बजा लैत अश्च
जरए लेले राही जश्चसँ खरा दैत अश्च
उठाकए उपर नीच्चा खसाओल ि हम
जिकए ज्योश्च अनेरे श्चझाओल ि हम
लगाकए आश्च श्चनेहक हमर रग-रगमे
श्चना कसूर श्चसोहर बनाओल ि हम
झोक एक आशकेर फेरो नचा दैत अश्च
उमंगक रंगसँ पलके सजा दैत अश्च

हिमांशु चौधरी

विष-वृक्ष

धरतीमे आबि
आकाश दिश ताकऽ बला
अविश्वाससँ
काँपि रहल छी
हसोन्मुख पाथरकेँ लऽ कऽ
दुःखक अन्तिम परीक्षा भऽ रहल अछि
देवता रहितौ
देवता मरि गेलाक कारणे
आसक्ति
मन्दिरमे सूतल अछि
सुषुप्त आसक्तिके
जगओनाइ कठिन भऽ रहल अछि
निदानानुसन्धान आ उपचारहीन
युगक अवैध घाओक
पीजमे भरि कऽ
हरेक अंगके
क्यान्सर करैत
आयनामे दिन बिताबऽ पड़ि रहल अछि
घाओक टनकनाइसँ बेसी
घाओक परिकल्पनासँ
अवरुद्ध अछि- कण्ठ आ छाती
आधि-आधिमे
शरीरक अंग भेटऽ लागल अछि
हर जोतबाक

सहास नष्ट भऽ रहल अछि
मानवतासँ
श्रमालक ाहि भागल जा रहल अछि
पहाि आ मिशमे
अन्हार बढ़ल जा रहल अछि
पीयर गजुरक नीचा
हवाक वेगसँ
बुजाक घण्टीमे
सेहो घृणा व्याप्त भऽ रहल अछि
उित परबाक पाश्वमे
सेहो बारद बान्हल अछि
फव्वचिमे
मृत्युदण्डक कम बढ़ैत गेलासँ
मृत्युक खातामे
मूल्यवान िती
ाउर भेल जा रहल अछि
भोर आ राति
गभाािन कएनाइ
ाािने जा रहल अछि
ाा ाा
एहनेमे श्वाष वृक रोपनाइ नष्ट
बन्द भऽ रहले अछि।

रामभरोस कापड़ि

अन्हारक शरद

उपर अन्हार
नीचा अन्हार
वाम अन्हार
दक्षिन अन्हार
विगत अन्हार
आगत अन्हार
चारू भर अन्हार
अन्हारे अन्हारक बीचमे
बन भेल जका
कोनो कृष्णाक पक्षाकामे
संक्रमणक नामपर
एखन आन्हर वर्तमानके
सहैत रहलहुं अछि !
ई सहब हमर नामर्दी
कहियो नहि अछि,
एखन अन्हारक शरद
विगतक कएकटा आन्दोलन
हमर पुरुषार्थके
दुनियाक आगा सम्मानित
क' चुकल अछि ।
हम अपन ताही पुरुषार्थके
रक्षार्थ एखन अन्हारक
संतापके सहेजबाक उपक्रम
क' रहल छी,
संक्रमण बीतबाक प्रतीक्षा
क' रहल छी,
रैतीसं शासक बनबाक

सुखद अनुभूश्चा
श्चकि कालक हेतु
चकबन कोनो कोठरीमे
पडबासं वेजाय नश्च हयत,
तएं गणतर्न आ नया नेपाल
नया गणतर्न आ नया नेपाल
नया सश्चाान आ जनताक सता
चकबन कोठरीक कोनो
श्चवडकीक दोग द' इजोत बश्चा
अवस्से आओत____
नश्च हएतै श्चफल संघषक्रि पश्चाफल
एश्च कारी गुजगुज कोठरीमे
हाि पैर माश्च माश्च क'
तेहने नव इजोतक हेतु
हमरा सभक ई संघषि
कश्चयो उफाश्च नश्च हयत
श्चराट कारी राश्चाके
श्चारबा लेल श्चऔरीक
लुकझुक टेमीक पकाश
हमर आदशा रिहल अश्चि,
अन्हारक श्चर द हमर ई संघषि
नव श्चश्चाजक अन्वेषण करत
जत सश्चपहुं
इजोतक टा सामाज्य हयतै !!

आजाद गजल

कखनहि मेघके फाटब, एखन बाकी अछि
चमकैत बिजलौंकाके सैतब, एखन बाकी अछि

उठैत अछि बुलबुल्ला फूटि जाइत क्षणिक बनि
पानिके अनिबे से सागर, एखन बाकी अछि

बहैत पानिआओ किनार कतौ खोजत ने
अगम अछि सन्धान, एखन बाकी अछि

फाटत जे छाती सराबोर हएत दुनिया "भमर"
ई झाँसी आ बरखा पलय, एखन बाकी अछि।

अमितमोहन झा *घरक नाम "अमितू" जन्मतिथि ०२/०३/१९८५ भेल, श्री बैद्यनाथ झा आ श्रीमती शान्ति देवी के सभ स ि ट (तृतीय) सुपू ि । स्व.रामेशर झा पितामह आ स्व.शोभाकात झा मातृमह। गाम- बनगाव, सहरसा जिला। एखन मुम्बईमे एक प्राइवेटेड कंपनी मे पदस ि थित।रुचि : अध्ययन आ लेखन खास कS मैथिली। पसंद : हर मिथिलावासी के पसंद पान, माखन, और मा ि हमरो पसंद अछि।*

अमितक कलमसँ शेरो शायरी

चादक लेल सितारा हजार ि न !
मुदा सितारा के लेल चाद एक !!
ओहिना अपनेक लेल हेता हजारो !
मुदा हमरा लेल अहा सिर्फ एक !!

हा ि क लकीर पर एतवार क लेब !
भरोसा हुवेतँ हर हदके पार क लेब !!
हरेब आर पेब सभ नशीवक खेल अछि !
दिल जिनका अपनाबे हुनकेसँ प्यार क लेब !!

दिलजे डूबलतS आशाके गाम आँखमS मचैल गेल !
एक चिराग की बुझल सौ चिराग जैल गेल !!
हमर आर हुनकर राह बस एतबे देर एक ि ल !
दुई कदम चललो की राहे बदैल गेल !!

नोरसँ पलक भीगे लैत ि लो !
याद हुनकर आबैत अछितँ कैन लैत ि लो !!
सोचलो की बतसैर जै हुनका !
मुदा हर बेर ई फैसला बदैल लैत ि लो !!

अपन आगाजसँ आजू तलक जिंदगी, अहांके याद मS गुम ि ल !
तयो पता नै किये ई एहसास अछि, जेना की चाहत हमर कम ि ल !!

दुनियाक सभ फूल,खुशबू, आर बहार !
अपनेक लेले इ सभ उपहार !!

आसमा के चाद, आर ग्धतारा !
एय सब सँ अपने कर ि◌ृगार !!
अपने खुश रही, आवाद रही !
खुशी के एहेन हुवे फुहार !!
हमर एहेन दुवा अिछ हजार !
दामन अपनेक कम परे ....
जीवन मेऽ अपनेक ग्धले एतेक प्यार !!
मंिजल आसान सभटा, मुिश्कल बेनूर हुवे !
ग्दलक जे भी अिछ तम्मना ओ हमेशा दूर हुवे !!
होठ पर होिक बात हुवे, खुशी मेऽ समटल िजन्दगी !
गम भरल परिाई अपनेक आँचल सँ लाखो दूर हुवे !!
फूलक तरह महकैत रहू, ग्धतारा के तरह चमकैत रहू !
हमर एतबे दुवा अिछ अपनेक लेल ....
अपने जाते भी रही, हरदम चाहकैत रहू !!
लौटक आयब एक ग्दन, जरर हमर यकीन करब !
हमर याद आबे तँ आइख अपन नै कग्नयो नम करब !!
दुिनया सािजश केऽ कऽ जुदा नै के ग्दए हमरा !
ग्कयो ग्क भी कहे अपने भरोसा नै करब !!
फुरसत के लम्हा मेऽ ख़त ग्नखब अपने कऽ मुदा !
हर ग्दन अपने हमर खतक इंतजार नै करब !!
हाि मेऽ पग्नरने कंगना ि◌ी, आर कान मेऽ पग्नरने बाली !
हम ग्वदेहक लेल अग्नना ग्नखेत रहब, चाहे नव वषिहोई या ग्दवाली !!

जखन जनता जाग्रा जाइत अछि !

मुम्बाईके अपन कहै वला नरर शकयेक नञि आबैत छथि !
मुम्बाईक दुश्मन सभ सँ ओ शकयेक नञि टकराबैत छथि !!

की ताज, ओबेराय, मरीन हाउस, मुम्बाई मS नञि अछि !
या फेर मुम्बाईक ठेकेदार अपन मौत सँ घबराबैत छथि !!

दोसर पान्तक कहीके अपने सभ लोग कS मारैत छथि !
दोसरे पान्तक लोग सभ मुम्बाई पर जान लुटाबैत छथि !!

अपने देशक लोग जखन रहैत छै शानका के तरहे !
ओ कश्मायोटा वारसँ लकरीक तरह टुईट कS बीखैर जाइत छथि !!

शमो नञि आबैत छैन अपन देशक शाकम्मा नेता कS !
बजैत छला की पैघ-पैघ शहर मS छोट-मोट हादसा होयते रहैत अछि!!

मुम्बाईक जंगमे शहीद तँ बहुत जवान भेला मगर !
शहर मे खाली चंद शहीदक फोटो लगायल जैत अछि !!

जे दुश्मन हमरा देश पर करैत अछि छुप - छुप कS वार !
हमर नेतागन ओकरा कS दावत पर इज्जत सँ बजाबैत छै !!

सुइन शाय सभ नेतागन जखन जनता जैग जैत अछि !
तखन कुसी खुद - ब - खुद शाचा भैग जैत अछि !!

कृष्णमोहन झा (1968- ), जन्म मधुपुरा ब्लाक जीतपुर गाममे। ''विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट'' विषयपर जे.एन.यू. सँ एम.फिल आ ओतहिसँ ''आमिल वमा के कि साहित्य मे पेम की परिकल्पना'' विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँगह ''समय को चीरकर'' आ मैथिलीमे ''एकटा हेरायल दुनिया'' पकाशित। हिन्दी कविता लेल ''कन्हैया स्मृति सम्मान''(1998) आ ''हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार''(2003)। असम विश्वविदालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।

एक दिन

आइ नहि तँ काल्हि
काल्हि नहि तँ परसू
परसू नहि तँ तरसू
नहि तरसू नहि महिना...
किछु बरखक बाद

एक दिन
अहा घूमि कऽ आयब अही चौकठि पर
आ बेर-बेर अपनहि सँ कहब अपना-
धन्यवाद! धन्यवाद!!

अमरेन्द्र यादव

## टमटमिया घोडा

अमेरिका जे इराक पर
अपन खैमस्ती झाडलक अछि
ताहिसँ हमरा कोन काज ।
माओवादी जे बन्दुक उठौने अछि
आ गणतन्त्रक लेल
लडि रहल अछि
तकर हमरा कोन मतलब ।
सौसे मुसहरी जे
भुखक सुली चढि रहल अछि
आ घर–घरक बेटी पुतौह जे
चुल्हाक आँच बनि रहल अछि
तकर हमरा कोन चिन्ता ।
हम तऽ अहाक टमटमिया घोडा छी बाबुजी ।
अहाक वीयर्सँ लऽ कऽ खुन पसिना धरिक
लगानी अछि हमरा पर ।
हम कोना बिसरि सकैत छी
अहाक ओ आदेश
अहाक ओ महत्वाकांक्षा
हँ बाबुजी
हमरा चढबाक अछि
अहाक सपनाक पहाड पर ।

अभिषेक झा,समाचार पमुख,हेडलाइंस एण्ड म्यूजिक एफ.एम.,97.2, लक्ष्मीपुर, नेपाल

जीवन एकटा दुरह कविता

अर्थहीन शब्दक

अर्थ खोजबाक अथाह अप्सामे

अनायास भिजा जाइत अछि आँखि

फाटल देखा परैये

पन्नाक पन्ना

चेतनाक शब्दकोश

आ भोगैत छी

एकटा पराजयक किान

जत नहि भेटैत छै

जीवनक यथार्थ अर्थ

आ तएँ

बुझाइत अछि

जीवन एकटा दुरह कविता छै ।

बजैत छै

लयात्मक गीत

जीवनक मधुर सङ्गीत

आ थिर...थिर...कऽ नचैत सङ्गीतसँग

असंख्य कलात्मक पएर

आ पस्फुटित भऽ जाइत छै जीवन उपवनमे

मुदा

अनायास फेर

बन्द भऽ जाइत छै सङ्गीतक धुनि

थाकि जाइत छै पएर

मुरझा जाइत छै उपवनक फूल

आ तएँ

बुझाइत अ्थि
जीवन एकटा सारहीन सङीत ि ।

आन्नद ि
मा ि जका
जीवन सरोबरमे हेलब
उल्लास ि
एकटा गुब्ब ड जका
आकाशमे उ ि ब
मुदा उथि नश्च सकैत अथि
हमर आल्हाद्धत मोन
आ अनायास
उल्लासक ि रातलसँ
दुगम्ब्रिक चटान पर
अनवरत खसैत ि मोन
आ डुब्ब जाइत ि
सरोबरमे
आ तएँ
बुझाइत अथि
गुब्ब ड जका उथि नश्च सकबाक
आ मा ि जका
हेलऽ नश्च सकबाक
भ्रायश्चाक भोग ि
जीवन ।

थ्चारीथ्चारी भेल मोन

अहाके सफलताक थ्चाखर पर देखऽ चाहैत िलौ
भीडसँ पृिक अहाक पथ्चचय खोजैत िलौ
ई हमर सपना नथ्च
पेमक भावना नथ्च
जीवनक आदशर्ािल
एथ्च बाट पर संगे चलबाक थ्चयार िल
मुदा आब तऽ थ्चके ओ थ्चयार सपने भङ गेल
खुलल आँथ्चसँ देखलौ सबटा भमसन लागल
क्षणभंगुरमे थ्चलीन भेल एकटा अतीतसन लागल ।

जोरसँ काथ्च नथ्च सकैत िी
मोन थ्चचोरी कऽ थ्चकलल नोर के
रोथ्च नथ्च सकैत िी
क्तथ्चक्त ितीक ई व्यिा
ककरो कथ्च नथ्च सकैत िी
व्यिासँ भरल मन, जीवन लऽ
बनाबटी हँसी हँसैत िी
वेदना नुकाऽ खुशीक भममे
थ्चबाक असफल पयास करैत िी ।

चुल्हा आ चौका आब अहाक संसार बनल
थ्चन्दूर आ चुरी अहाक पथ्चचय
ई नेल आ हतकडीसँ दूर
हम अहाके सम्पूणर्ता दैत िलौह
मुदा अहा तऽ सीतक थ्चन्दूरसँ दबल िी
नुपूरक जथ्चरमे बन्हयाल िी
थ्चया चाथ्च थ्चलाक बन्दी बथ्च गेलौह अहा ?

हमर सपनासँ आब अहा थ्चभोर नथ्च हैब
चाथ्चयो कऽ हमर आकाक्ष अहाक तन्रा भङ नथ्च करत
हम स्वीकार कऽ चुकल िी
ई सब हमर असफलता अथ्च

हमर सपनाक थ्यता अछि
अहीँक लेल देखल सपना सब
अहाक जीवन लक्ष्यमे
सम्पूर्ण सिपनाके रुपान्तरण नश्च कऽ सकबाक पमाण अछि ई ।

जीवनक लक्ष्य आ उदेश्य
अहाक तरबासँ थ्यचाइत गेल
अहा उज्ज्वल पाप्श्चाक लेल दूर भऽ गेलौह
मुदा हम आ हमर मोन
इजोश्चयोमे अन्हिकारमय अछि
सदाक लेल ई मोन फाश्च गेल अछि
थ्यरीथ्यरी भऽ गेल अछि ।

वेदनाक तरङ

श्वारश आ उचाट वातावरण
थ्वरक्त आ थ्वरान दृश्य
श्वामि सनाटा
तीतायल चेहरा
थ्वक्ष्म्त मोन
भूतलायल आकृश्वा
आकोशसँ पाकल आँश्व
उच् वाससँ जरल ठोर
रागसँ थ्वसायल श्वा वृश्वा
परस्पर टूटल सम्बन्ि जका श्वारीहता
नश्च फूल जका म ्िर मुस्कान
नश्च मोनक श्वास्तर्द तामे श्वानति जागरण
मा ि ग ि्त अश्वि
हृदयमे वेदनाक तरङ

असमर्थित उन्माद

अहाक वएह नयन, वएह मोन आ वएह तन
हम देखि रहल छी, सुनि रहल छी आ भोगि रहल छी
समयक लम्बा अन्तरालक बाद सेहो
आँखि खोलैत आ मिचैत सेहो
आ अहा हमर शरीरक अदृश्य सञ्चित पवाहमे
सवाङ समाहित छी, सज्जित छी ।

ई अभीष्ट रुप अहींक थीक
जकर अनुपस्थितिमे हमर वसन्त
शुष्क रसिकतातुल्य भङ गेल अछि
ई शीतल छाहरि अहींक थीक
जकर अभावमे
हरेक अभिलाष हमरा लेल
नीरस आ उदास वसन्त बनि गेल अछि ।

अहा पाइन छी हमर पियासक
अहा वसन्त छी हमर बसातक
तएँ एकटा अतृप्त उन्माद
नाचि रहल अछि भैरव बनि
हमर मानसमे ।

हमर स्नायुक रोबरोबमे
एकटा अभिषाक्त तृष्णा
बढ़ि रहल अछि
आ बढ़ि रहल अछि
हमर छिनीक कणकणमे
एकटा उन्मुक्त तृषा ।

बहुत बेर उघारि दैछियै, फाड़ि देछियै
नृशंस बनि आवेशसँ
लज्जाक पदासभ
आ बन्द क' देछियै नैतिकताक मूल्यसँ
पाशविकताक उन्मादसभ ।

हँ
आईयो ओइना समृध्मिे लटपटायल अछि
अहाक गरम सासमे
गुञ्जित हमर जीवन संगीत
अहाक आँचरमे ओझरायल हमर सटकि बटम
अनार जका अहाक दात पर
थिरैत हमर जीह
अहाक ब्लाउजक हुकसँ खेलैत
हमर दसो आँगुर
आ अहाक सुन्दर ाल पर
दौडैत हमर ठोर ।

ताि एक-एक नक्ष झाइत अछि
ाक ई उन्मत मोमबत्ती
एक-एक आष्काम नक्ष होइत अछि
मोनक उतप्त बोखारसभ
जेना अहा
दारक प्याला होई
आ हम चुस्की ल' रहल ी
मदहोस भ' रहल ी
अहाक स्वप्नल लज्जानत तनमे
आआष आआषमे ।

मुदा उफ
ई केहन विडम्बना
आत्यशा
एक्केटा िन्दू पर दुघटिना होइत गेल
हमर उच्िृङल वासनासभ
अहाक दशनि आ आदान्तक ाखरसँ
आतन एक्के रस्ता घुम जाइत ाि
अआशप्त अहाक िचार
हमर अआशून्य मस्िष्कके झकझोरैत ाि ।

शायद कमजोरी हमरा मे ि ल
थ्क, थ्याद बथ्रा हम युद नथ्ङ क’ सकलौ अहाक तनसँ
शायद महानता अहाक ि ल
माला बथ्रा अहा समथ्यति नथ्ङ भ’ सकलौ हमर गलासँ ।

हाइकु

गरम देह
  श्री ि ल गेल मोन
  अमृत वषा ।

रामनवमी
  एलै एहू बेर
  मुदा राम नै ।

नै ि उत्साह
  कुचागक ि वन
  ई शरीरमे ।

अपन पीडा
  आँचश्चमे नुकबै
  हमर माय ।

ि ह खोजैि
  तेाि काश्च काश्चकऽ
  सभ्य मानव ।

पोवस राश्चा
  गवै उन्मुक्त मोन
  श्चरह गीत ।

नकली हँसी
  कुटील व्यवहार
  आजुक ि डी ।

पीयर पात
पतझरक बाद
तुत् होइ ।

लोचन नीर
नञ्च बुझै जगत
बहै स्फूर्त।

पेमक दाञ्च
बन्द भऽ जाइत ि
स्वाक्ि आगू ।

खुलल वेणी
ञ्चयाक पतीक्मे
खुल्ले रहलै ।

हम भमर
नोञ्च देञ्चयै फूल
ञ्चजेता बञ्च ।

पावस राञ्च
गवै उन्मुक्त मोन
ञ्चरह गीत ।

अन्तर नञ्ञ
कागज आ हृदय
जखन फटै ।

भालचन्द्र झा

अपन अस्तीत्वक असली मोल

बुझबाक हुअए
यदि अपन अस्तीत्वक असली मोल
त पुछियौक सुकरातके
देखबियौक ओकरा
विश्वक नक्शा पर
पहिने अपन ''देसक'' अस्तीत्व
ओहि देस मे अपन ''राज्यक'' अस्तीत्व
राज्य मे अपन ''जिलाक'' अस्तीत्व
जिला मे अपन ''गामक'' अस्तीत्व
गाम मे अपन ''घरक'' अस्तीत्व
आ तहन घर महुक ''अपन'' अस्तीत्व
आ ई सभ
''विश्वक नक्शा'' पर
से बूझि जयौक...

हमर माय

गभगृहिक सुखासन सँ बहरेलहुँ
त हमर जन्मदाि ी अपश्नयात रहय
भनश्नाया घर मे
तीतल जारैन के ूिआँ मे
करैत रहय ि िराक आवाहन
देहक िकनी कऽकऽ
आ तश्नया सँ लऽ कऽ आइ ि श्नि
ओकरा आन कोनो ठाम नश्नं देखश्नयैक
देखश्नयैक
त बस कोनटा घरक ऐंठार पर
सभक ऐंठ पखारैत
कखनो अँगना बहारैत
त कखनो जारैन बीि ैत
कखनो कपि ा पसारैत
त कखनो नेनासभक पश्नचया करैत
श्नवन मे जात पर, त श्नवन मे ढेकी पर,
चार पर, श्नानमार पर
अँगनाक मरबा पर, घरक असोरा पर
श्नन-दुपहर, तीनू पहर जोतल
कखनो दाईक चाइन पर तेल रगि ैत
त कखनो िरी सभक जुटी गूहैत
राश्ना मे पश्नने दाईके
आ तहन बाबूके पएर दबबैत
एश्न तरहे ओकर जीवनक आध्यात्म
भनश्नाया घर सँ शुर भऽ कऽ
भनश्नाये घर मे समाप्त भऽ गेलैक
झुलसैत देखश्नयैक चूश्नि क आश्न मे
नारीक स्वतंि ता, ओकर अश्नमता
ओकर मान आ स्वाश्नमानके
कहा भेटलैक पलखश्नायो ओकरा
एश्न सभ श्नश्न ताकहो के
आइ सोचै ि ी सेहो नीके भेलैक

अश्चालुका पीढ़ी सचेत भऽ गेलैक
भलमनश्चायत सँ जँ नश्चं भेटलैक
त थिनबाक ताकश्चा भेश्च गेलैक
मुदा ताश्चं की हमर मायक त्याग आ बश्चादान
ईब्सेन के नोरा सँ अिवा गोकीक माय सँ
रश्चायो भश्च कम कहाओत?
हमरा जश्चातबे रती भश्च बेश्चाये बूझू

अंकुर काशीनाि झा- गाम कोइलख, ध्नला मि्ुबनी। नेपाल-१ टेलीध्वजनक मैध्थिली समाचार वाचक

पिताप

असत्यक िर मे,
पापक पि पर,
अिमिक्ि ध्वशा मे,
अध्वरल चलैत रहलौ ।

ध्वकि् करबाक आश मे,
आगू ध्वकलबाक पयास मे,
सैदखन लि्त रहलौ ।

दोसरक दुख ददसिऽ दूर,
सफलता के नशा मे चूर,
जीतबाक लेल,
की - की नञ्ज केलौ ।

मुदा जखन हम िरक पार पहुंचल िी,
असगर िकिल िी,
शरीर सऽ हारल िी,
अंतावेदना सऽ गध्मत पिल िी,
तऽ आत्मा पूध्ि रहल अध्ि,
जे उपर संग की लऽ जैब,
हम ध्नर तर,
पितापक संग नोर बहा रहल िी॥

पकाश झा

बाल-बुदर कक लेल कश्वता

१. फूलडाली मे फूल ि,
पूजा हेतैन देवान के।
गेदा, गुलाब, कनैल ि,
माला बनतैन भगवान के।

२. लाल लाल गुलाब ि,
अिहुल सेहो लाल ।
तीरा सेहो लाल ि ,
मा्िश्वयो होए ि लाल ।
३. सुन्दर फूल कनैल के,
पीयर ओकर रंग ।
फर तोश्वि क’ खेलै ि ,
बच्चा बुच्ची ओकर संग ।

<u>सुबोि ठाकुर, सी.ए.। गाम-हैठी बाली-मि्बनी।</u>

<u>मनक तरंग</u>

सनन-सनन सन बहए िल पवन
शब्दक झलकोरक संग डोिझ रहल िल मन
सोचल थकए नभ्र शब्दके िन्दक रप देल जाए,
कथिता एक अनमोल बनाओल जाए,
झाखए बैसलहुँ हम तखन

सनन-सनन सन बहए िल पवन

थिरहक वेदना मोनमे जतेक िल
मानस-पटलपर तखने सभटा उभरल,
शब्दक रपी बूँद से बुझबए लेल अगन
झाखए बैसलहुँ हम तखन
सनन-सनन सन बहए िल पवन

नभ्र हम अभ्र थदान िी
परञ्च लग-पास पथलथक्त दृश्यसँ अनजान िी,
करए लगलहुँ सभके बुझबए लेल तँए जतन,
सनन-सनन सन बहए िल पवन

हृदयक आहादसँ,
थनती कएलहुँ सन्ध्या कालक पहादसँ
जुभ्र बनाऊ आर ककरो परदेशी कठोर साजन
सनन-सनन सन बहए िल पवन

नञ्ञ जाञ्ञा की हम श्वासखलहुँ
श्वासखए काल हम श्वकि नञ्ञ बुझलहुँ
जुञ्ञा बुझब एकरा झूठ वचन
ई अश्वि शव्द रपी मनक तरंग
सनन-सनन सन...

केना होएत भ्मद्य़ीलाक जीणोदार
सभ माथ्य रहल चीत्क्रार
सगरो मचल हाहाकार,
थ्कओ नश्ज ककरो दुख बुझएवला,
आर नश्ज करएवला अश्वि थ्यचार,
सभ माथ्य रहल चीत्क्रार
सगरो मचल हाहाकार,

बेटीबाप मिाहाि दए कानए
बेटावला माला जापए,
दहेज बनल अश्ख्य भ्मद्य़ीलाक अलंकार,
सगरो मचल हाहाकार

कहा गेल सुन्दर सृजन रचना
कथ्य थ्यदापश्ज्ञा केर भैरवी वन्दना
बदश्ज्ञ गेल सभक क्यवहार,
सभ माथ्य रहल चीत्क्रार

सभ अपन वचस्विक खाश्चार,
बनल जाइत अश्वि कुश्च दुष शाश्चार,
कहू एनामे केना होएत भ्मद्य़ीलाक जीणोदार?
सभ माथ्य रहल चीत्क्रार
सगरो मचल हाहाकार।

शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार

मनमे उठैये बेर-बेर विचार

नहि सहबए आब अत्याचार

शब्दक वाण चलेबए

हम अपन सौम्य शक्ति बढ़ेबए

सुन्दर मिथिला पेन्टिंग ओ संस्कृति सँ

खान-पान मिथिलाक वैभव सँ

दुनियामे विदेहक माटिक अलख जगेबए

हम अपन सौम्य शक्ति बढ़ेबए

मृदु भाषा अछि अपन धरोहर

जाहिसँ बनब हम सभक हृदेशर

से आब सभके जनेबए

विदेहक माटिक अलख जगेबए

<u>थ्रया हमर परदेश्वाया</u>

होली खेलब ककरा संग थ्रया हमर परदेश्वाया यौ
के बुझत हमर उदगार,के दोसर करत थ्रचार
थ्रया हमर परदेश्वाया औ।
केश फुजल मन अश्वि सुतल
हृदय के वेदना अश्वि मुदा जागल
के दोसर करत एकर पश्वश्वाकार,
नाश्व से बुझै हमर सनेश्वया यौ
होश्व खेलब ककरा संग थ्रया हमर परदेश्वाया यौ।
बैश्व बानाल हमर म्िमास, जगबै रश्व-रश्व कामना और आश,
कोयश्वाया के कुहुक मन के सतबै
से नश्व बुझै नीरमोश्वया यौ
होली खेलब ककरा संग थ्रया हमर परदेश्वाया यौ ।
कहै सुबोि श्वि जुश्व कानु जुरश्वातल मे करै ले श्वातल
औताह अहा के मनबश्वाया यौ ।

हम गामेमे रहबइ

रही दूर अपन माथ्रसँ मेनेजर रश्च-रश्च कलुशय
िथ्रि अपन गाम मन रश्च-रश्च श्चहुसए

ओ सुन्दर मनभावन पोखश्चक घाट
ओ वसंत आर सावनमे सुन्दश्च पाबश्चहारश्चसँ सजल बाट-घाट
बगयामे सश्चखन कोयली कूकए
रही दूर अपन गामसँ मेनेजर रश्च-रश्च कलुशय

अथ्रि सुबोकि कामना, जुश्च कर दूर आब पुकि मा
अहीँक साश्चध्यमे रहए लेल मन तरसए,
िथ्रि अपन गाम मन रश्च-रश्च श्चहुसए।

र पेश कुमार झा 'त्योि'

आयल फेरो समय लगनक

दलान पर थ्कि लोक िथ्ि बैसल,
ककरो मोन खनहन, ककरो मुंह लटकल,
सभ करैत िथ्ि गप्प-सरका,
कखनो काल कऽ हँसी-ठटा,
ताथ्ह बीच कखनो चलैि चटक-मटक,
आयल फेरो समय लगनक।

क्यो दऽ रहल िथ्ि मोि पर ताव,
तऽ थ्कनको हृदय मे िथ्स पैघ घाव,
बेटाक बाप करैि अपन बेटाक बिड़,
ओ लेबे करता खूब ऐंथ्ह कऽ पाइ,
नथ्ह चलैि बेटी बापक सकपक,
आयल फेरो समय लगनक।

दरवज्जे पर सँ होइि किा,
केऽ आब जायत सौराठ सभा,
ओतय कखनो लाथ्भ जेतै घटा,
तऽ फेर कखनो हेतै खूब नफा,
पेटो तऽ चलै ि, ओतय थ्बयाह होइ िलै चटपट,
आयल फेरो समय लगनक।

खूब फरैि एखन झूठक खेती,
भाि मे जाओ दोसरक बेटी,
बुथ्द्ध खटाउ भेटत कमीशन,
एके बेर तऽ चाही परमीशन,

मनुक्ख श्चकाइि हाि दलालक,
आयल फेरो समय लगनक।

ककरो कुहरेने क्यो भऽ जाइि ने सुखी,
ठीके कहै ि ि हम, तकै ि ि की ?
होइि ि ि श्च ने श्चकि ु दहेजक टका सँ,
खेत नश्च पश्चआयाइि बैसाखक घटा सँ,
मेटाऊ समाज सँ नाओ एश्च कुकृत्यक,
आयल फेरो समय लगनक

दहेज लेब श्चीक घोर पाप,
समाज केर ई कारी िाप,
मेटाऊ आदशक्ि मेटौना सँ,
देखू आयल घटक बेतौना सँ,
बेर अश्चि एखने दहेज दमनक,
आयल फेरो समय लगनक।

<u>जंगल ध्वस !</u>

कम नञ्, लागल ि ल भीि बेस
सूयि उगल, फाटल कुहेस
तर णी-तर णक एकटा जोि ा
घूमैत रहल ि ल गुफा एलोि ा
चश्मा साजल दुनू केर माि
रखने एक दोसरक हाि मे हाि
झप्पी देखि लागल तर ण अपाटक
जूता ि लैक फोरेन हाटक
ध्वांस लगौने आओर टी शटि
देखि मोन कहलक बी एलटि
तर णीक केश बॉब कटक
खाइत चलैत ि ल चटक-मटक
बढ़ैत चश्मा जाइत ि ल सीना तनने
तर ण पेमीक संग गप्प लि ाने
तर णी देह पर ि लैक वस्त्र कम
तकर ने ि लैक ओकरा गम
चलैत-चलैत भेल ठाढ़ दुनू
मोने सोचल एना लोक चलैि कुनू
ि लक एक दोसर के भरि पाज
देखि कऽ हमरा भऽ गेल लाज
मुँह घुमा पुि श्मायैक-जेबऽ कोन ध्वस
बाजल दुनू एक संग-जंगल ध्वस!

मैथिल के?

थिलाक अइ पावन मइ पर
जकर भेल थिक जन्म
वा जे करैि एइ भूइ पर
अपन जीवनक कमि
जे कए रहलैि पवास
मुदा पुरषा सभ करैत िलइ
थिले मे वास
चाहे ओ
कोनो िमिक्र थकयए ने हो
िमक्रि अन्तगति कोनो जाइाक
थकयए ने हो
एइ सोच पर अबैि घृण
जे मैथिल अथि माि बाहण
मैथिल िलथि राजा जनक
हुनक सुता िलीहए सीते
जाइ पर गर्व करैि सगरे थिला
ने वैह िलाह बाहण, ने हुनकर थीये
थक ओ मैथिल नइ?
ई जुइ कइ
अथि थिला कतेको थभूइ जनने
सदइ रहू सीना तनने
पुरा काल सँ ई माइ
उपजबैत अथि बि-बि थदान
सुनू खोइ कऽ दुनू कान
बसै िथि कलकता, काठमाडू
वा न्यूयाकिओ थल्ली
ओ िथि सुच्च मैथिल थानक
ठोर पर खेइ रहल िथि मैथिली
सभ मैथिल थइ आज थिला के
थयाबू एकर मान-सम्मान
जे उभरय थश मानथि पर
बइ एकटा थइाष चान

बुझलहुँ ने, जे कहलहुँ से
आब नञि पूछि, मैथिल के?

मनीष झा "बौआभाई"

माय (कविता)

एक-एक क्षण जे बेटा के खातिर
कर जोड़ि विनती करैइयै माय
बिनु अन-जल ग्रहण केने बेटा लै
जितियाक व्रत राखैइयै माय
आ एहि तरहे माय हेबाक
कर्तव्य पूरा करैइयै माय

जिन्दगीक रौदा मे तपि क'
बेटा के छाँहि दैइयै माय
बरखा-बिहाड़ि सन विषम समय मे
आँचर स' झाँपि राखैइयै माय
आ एहि तरहे माय हेबाक
कर्तव्य पूरा करैइयै माय

घर मे छोट-छीन बात पर मे
बाप स' लड़ि लैइयै माय
बाप स' लड़ि बेटा के पक्ष मे
फैसला करैइयै माय
आ एहि तरहे माय हेबाक
कर्तव्य पूरा करैइयै माय

बेटा नै जा धरि घर आबय
बाट टुकटुक ताकैइयै माय

ओठंथा के चौकश्छ लाथा बैसल
राश्ला भश्व जागैइयै माय
आ एश्व तरहे माय हेबाक
कतश्यि पूरा करैइयै माय

वयस श्कयैक नै हुऐ पचासक
तश्वयो बौआ कहैइयै माय
अहू वयस मे नर श्व ने लागय
तै अपने स' श्वाहुिइयै माय
आ एश्व तरहे माय हेबाक
कतश्यि पूरा करैइयै माय

होय जानकी वा अम्बे के पश्लामा
सभ र प मे झलकैइयै माय
तीि-बिि सिब मन के भम ि
घर मे जे' कुहरैइयै माय
कतश्यि हमरो ई कहैइयै
घर मे नै कलपय ई माय
आ एश्व तरहे जन्म देल त'
माय के पद पाबय ई माय

<u>सतीश चन्द्र झा</u>, *राम जानकी नगर, मधुबनी, एम. ए. दर्शन शास्त्र, समप्रति आर. के. मिथिला जनता इन्टर कालेज मे व्याख्याता पद पर १० वर्ष सँ कार्यरत, संगे १५ साल सं अपन एकटा एन.जी.ओ. क सेहो संचालन।*

<u>मध्य वर्गक सपना</u>

भीख मे क' आयल छलहुँ हम
आँखि मे किछु स्वप्न छल।
मोन के पौती मे भरि क'
स्नेह के संदेश रखने।

किछु कहब हम बात अपन
किछु अहाँ सँ आइ पूछब।
फेर हम आश्वस्त भ' क'
बाट मे अभिराम खोजब।

पी लितहुँ हम नोर आँखिक
ठोर पर उतरल अहाँ के।
नेह सँ परितृप्त करितहुँ
साधना छल अछि अहाँ के।

ल' लितहुँ चुम्बन हृदय सँ
गाढ़ रखितहुँ ठोर पर हम।
की करै छी? लोक देखत,
अहाँ कहितहुँ, हँसि दितहुँ हम।

भाव चलितहुँ फेर सँ हम
संग ल' सुन्दर जगत मे।
कल्पना के पाँखि ल' क'

उधिा जयतहुँ उन्मुक्त नभ मे।

होइत जौ ई सत्य सपना
देवता के जल चढ़ाबितहुँ।
हे थ्यये ! होइतै केहन जौ
थ्यकि समय के रोक्कि सक्कतहुँ।

भेट होइते सभ ब्बिसरलहुँ
हम केना क' बात मोनक।
ि कहा रब्बि गेल वश मे
स्ाप देखब मध्यवगकि।

अिा जतेक सामथ्या अपान
क' रहल ि ि कमसिभटा।
मोन मे अिा सोच कहुना
थ्यकि रहय बाचल पक्षाष ा।

अि दुलभि वस्तु जग के
अिा एकर भब्ब मास खगता।
खचबिब्बिढ़ते जा रहल अिा
बब्बिढ़ रहल दानव बेगरता।

कात मे मुस्काया कनै अिा
थ्यकि नया पब्बि ानि कीनत।
नीक बाडक जीस, जैकेट
पुि बकिा आइ आनत।

माग ि ल पायल अहूँ के
मोन मे अिा दू बरख सँ।
नीक कुता लेब हमहूँ
जीब की हम आब सुख सँ।

साग - सब्जीक दाम पुछी क'
होइत अछि पश्चपूणाइचि।
जा रहल िी पाव पैदल,
भात्म अछि रेलक पश्चाक्त।

देत के सहयोग अपनो
क' रहल अछि लोक शोषण।
चीज शौखक अछि सेहन्ता
क' रहल िी माि भोजन।

नाम सँ के आब श्चान्हत
अिके सम्मान होइ ि।
झूठ के सम्मानि सगरो
के कतय श्चक्ि पाण दै ि।

कामना भगवान सँ अछि
जन्म दोसरो, संग भेटय।
उच्च नश्च त' दीन .. श्चािि
वंश कुल मे जन्म भेटय।

माश्च पर बैसल अहा संग
खेल कश्चतहुँ, स्नेह सश्चखन।
काछि के नश्च आइ श्चान्ता
िुचि जीवन, तुष जीवन।

भ्रमित शब्द

हेरा गेल छि हमर शब्द कहुँ
फेर आइ घुरिया क' आयल।
बास भेलै नहि कतौ जगत मे
पुनि हाथ क' अपने आयल।
नुका गेल सब रही नीन मे
मोनक कागत सँ उड़िया क'।
केना ? कखन ? सब के ल' भगलै
आन - आन भाषा फुसिया क'।
आतुर मोन उचकि क' ताकय
बैसल बाट दूर छथि कखनो।
राति दिन द्वार के खोलत
छी जागल अबेर छथि एखनो।
पसरल देखि हमर शान्तिता
भागि गेल छि सब उधिया क'।
खोलि रहल छि सुख जीवन के
भोग वासना मे बौआ क'।
अछि बाहर सम्मान समेटब
छलै मोन मे इच्छा जागल।
मान प्रतिष्ठा के इजोत मे
भ्रमित भेल सबटा छि भागल।
शब्द अभागल चीन्हि सकल नहि
हम बताह कथि छी वसुधा मे।
खसि जाइत छी हम जीवन भरि
की अंतर छै गरल - सुधा मे।
नहि अछि लोभ अछि किछ हमरा
नहि चाही सम्मान जगत के।
आज भाषा के स्नेह,कलम सँ
छलकत छिर रत अमृत के।
हम कविता सँ दिशा दैत छी
दृष्टि हीन व्याकुल समाज के।
जगा रहल छी जे अछि सूतल
गीत गाबि क' बिना साज के।

नञ्ञ ि पितै कथ्वता जश्वाते ि ि
पि ि पश्चीका के पना मे।
ि पितै नला देह नारी के
मुख्य पृष  ,अंश्वात पना मे।
मुदा केना हम कलम ि श्वि क'
मौन भेल आँगन मे बैसू।
केना हेतै श्वक ि व्यि ि देश्वव क'
रथ्वत मोन मे नञ्ञ श्वक ि सोचू।
कोमल हृदय अपन अंतर सँ
पश्वाकण आथ्वा उगश्वाते रहतै।
पढ़तै श्वकयो लोक नञ्ञ तैयो
कलम हा ि के चश्वाते रहतै

नाव आ जीवन

नाव नदी मे चलल सोच्चा क'
दूर नदी के अंत जतय ि।
देखब आई ठहच्च क' च्चक्ि िण
नदी समुरक च्चलन कतय ि।
ि संघषकिच्चाक चलतै जौ
जल िरा च्चपरीत च्चदशा मे।
चलब ियिसँ भेटत च्चाि य
ि आनंद म्िर आशा मे।
कखनो अपने पवन िच्चक क'
मंद भेल चुपचाप पलटतै।
फेक देब पतबार अपन ई
जल िरा के च्चदशा बदलतै।
िट नाव के एतेक घृष ता
सुच्चा क' भेल नदी के च्चशमय।
नाच्चा रहल अच्चि जल मे तृणवत
बुझा रहल ि जीवन अच्चानय।
की बुझतै ई नाव नदी मे
जीवन पि िरा अवरोिक।
केना चीर क' च्चाकच्चा जाइत अच्चि
नच्च ि भय ओकरा च्चलकोरक।
तेज िर ि पाण नाव के
जीवन ि सागर अिह जल।
नदी च्चकनारक िह मृत्यु ि
जल च्चहीन जीवन के पच्चापल।
नच्च होइ ि च्चक्ि भय जीवन मे
मृत्यु देच्चख सोझा मे पच्चाकण।
अपने चच्चा क' नाव मनुख के
च्चाखा रहल ि जीवन दशनि।
कुद नदी के जल पवाह मे
उतच्च गेल जे 'तकरे जीवन'।
भय संघषच्चिराश,कष सँ
ठहच्च गेल ओ 'जिवत जीवन'।

मौनक शब्द

हेरा गेल अछि शब्द अपन धुनि
तै बैसल छि मौन ओढ़ि क'।
वाणी जडवित, भ्रमहा व्याकुल
के आनत ग' हृदय कोश क'।
के बूझत ई बात होइत छै
मौन शब्द,वाणी सँ घातक।
रात्रि अमावश के श्यामतला सँ
जेना इजोत धवलकण पातक।
अछि सशक्त जीवन मे एखनो
ई अभिव्यक्तिक सुन्दर साध।
एकर चोट छै पखर-उचय अग्नि सन
शीतलता चंदन के चानन।
नभ छै आदि-उचयअंत मे समटल
अंतर मे धरिमि वास छै।
आनंदक अन्तरेक हृदय मे
नव अनुभूतिक महाकाश छै।
अछि अव्यक्त मौन अक्षर सँ
जान दीप के पभा पकाशित
दृश्य बोधि सँ दूर मौन अछि
शब्द अछि सँ अपरिभाषित।
वाणी अछि ठहराव झील के
मौन नदी के अविरल धार।
उठा देत हिलकोर हृदय मे
जखने बान्हब धार किनार।
छै संगीत मधुर स्वर झंकृत
नै छै अछि मौन के जडिता।
कोलाहल सँ दूर मौन के
वाणी सँ छै श्रावसमुखरता।
कतेक विवस अछि शब्द जगत के
वर्तमान के व्यथा देखि क'।
असमर्थ अछि सत् वाणि मे
की लिखू हम शब्द जोडि क'।

<u>चुनाव</u>

लागत फेरो पाच साल पर
संगम तट पर कुंभक मेला।
ओझ्ना फेरो पाच साल पर
राजनीश्ना के पसरत खेला।
रंग श्वरंगक श्वान्ह बनायेल
टागल नव नव सुन्दर झंडा।
अश्रि महान इ पवदिश के
श्वाकलत बाहर जेलक गुंडा।
िलश्रि जतेक अनपढ़ उदंड सब
भेटलश्रा श्वकि रोजगार गाव मे
लाठी,ठेगा,बैनर,झंडा
भेटलश्रा पाटी सँ इनाम मे।
चमचम खाि वसि देह पर
श्वकि गमि मे बान्हल टाका
जोर जोर सँ नारा पश्नु क'
गढ़ता श्वकि जीवन के खाका।
बँश्च जायत भोटक दुश्रि मे
श्वता पुि आ भाई सहोदर
डुबत फेरो लाल रक्त सँ
सौसे िरती फाटत दर दर।
लालच लोभ स्वािमे पश्न क'
चलतै तेज हवा उन्मादक
िल बल मे ओिरायत जनमत
जित आश्रा सौसे अवसादक।
लगै कतेक िै नीक कान मे
सुश्रा क'भाषन नेता मुख सँ।
देखा देत श्वकि सुनर सपना
राज करै अश्रि अपने सुख सँ।
हमरे श्वश्रा क' श्वअ भोट सब
अश्रि हमरे दल सभ्य श्वचारक।
िी देशक हम असल श्वतैसी
हम िी बेटा अही समाजक।

रहत आब नञि थकयो देश मे
दीन,हीन,दुबलि,बैसारी
सबके शाक, सबके भोजन
सब घुमता घर घर अधिकारी।
ि ! ि ! कतेक झूठ अधि भाषण
आठगर वाणी , कपट मोन मे।
पजातंि अधि भोट दैत ि
सबटा बुझितो अपन मोन मे।
भ जायत जँ पजा सुखितगर
के नेता के पाि चलतै ।
गाजा बाजा ढ़ोल बजा क'
नारा जयजयकार लगेतै।
बनत फेर थकि मंि, रेंजा
सबटा दौि ि थलली भागत।
हैत अभाष एक थन कञियो
सूतल जनता जञिया जागत।

शब्द

थाकल रहल अछि शब्द आब क'
आन पहिने शब्द राश मे।
अछि उदंड, उत्‍ृखल सबटा
नहि बूझत छिं बात राश मे।
केना कर हम बंद कान के
उतर जाइत अछि हृदय वेदना।
बैस जाइत ी तै छिं सखय
ीटल शब्द हमर अछि सेना।
कखनो कोरा मे घुसाया क'
बना लैत अछि कविता अपने
जुलि जाइत अछि कलात हृदय मे
शब्द शब्द के हाि पकिने।
कविता मे छिं हमर शब्द के
नहि व्याकरणक जान बोिै।
सबटा नला, उघार रौद मे
नेना सन बैसल अबोिै।
कखनो शब्द आब क' अपने
जि दैत अछि पखर अक्ष मे।
कखनो स्नेह,सुरक्षा,शीतलता
जगा दैत अछि व्यग मोन मे।
क्षमा करब जौ कष हुए त'
पढ़ क' कविता शब्दक वाणी।
शब्द बह अछि नहि अछि दोषी
ी हमही छिं कवि अजानी।

## हमर स्वतंिता

ि ि एखनो कमजोर कतेक हम
मौन भेल चुपचाप ठाढ़ ि ि।
कि ि बंिन अि परंपरा के
कि ि समाज सँ भयाकात ि ि।
भेल रही कश्चया स्वतंि हम
केना आब इ अवसि सकै ि ि।
अि महान इ पवि देश के,
सवि ि मि सिब मना रहल ि ि।
तखन कयै ि ि हम एखनो ि
बािि ल जरजर परंपरा सँ।
मुक्त करत के फेर आब क’
र ढ़ बाद्धता के ि ंजरा सँ।
वि वा के दुदशा, दहेजक
भोगा रहल ि ि दंश केना हम।
स्वा ि ि मि लिय पुि क माया
केना चलायब वंश अपन हम।
अि ि ंघासन उच्च पुि के,
पाश्च ता सँ स्नेह भावना।
पुि ि लय एखनो अि राखल
अनुशासन, तप, जान,सािि ना।
डेग-डेग पर नीच्चा समाजक
नारी के अबलिता दै ि ै।
अि स्वतंिता बनल पुरष लय
देत भावना उत्थत कहा ि ै।
पढ़ा लेब कतबो कन्या के,
माग दहेजक नि ं कि ि कमतै।
अि ध्वंसक अहं पुरष के
नारी तैयो चुि ै फुँकतै।

एक आि टा पाश्च उच्च पद
केना समाजक दंभ अटेती।

पुरष पानि समाजक सोझा
के अधिकारक बात उठेती।
पति अक्षमा नहुं मुख मे, पुकि
जायब स्वगकिेना रिती सँ।
आज संतान पुि आ पुिी
अछि उत्पन्न सब अपन रक्त सँ।
तखन भकयै िै बनल बाध्यता
करत कमसिब पुि थ्यता के।
चलतै तखने पुस्त- पुस्त िधि
नाम, वंश, सम्मान थ्यता के।
वंश चलै िै एखनो ओकरे
जे जग मे इतिहास पुरष िै।
चललै मागबिना क अपने,
भुजबल मे जकरा पौरष िै।
जान, मिअिवा समाज लय
जे देलकै आहुति पाण के।
अमर बनल ओ रहत हदय मे,
बदला देलक भाल्यक धानि के।
कतेक उपेक्षित आइ वृद छथि
अपने सँ अपमान पाबि क'।
छिं अपने संतान,चकित छथि
पैघ बनेलथि पालि पोसि क'।
अनक लेल पाण गेल जनका
पलि बूंद नहुं दूि कंठ मे।
भोज भेल भारी परगना
गाय दान भेल ािद कमिमे।

वतमीन बतलछि आपदा मे,
की करता परलोक बना क'।
कतेक मिअिधाति क सकता
अंत समय मे वेद सुना क'।
एखनो मंदिर के पागन मे
पाि देवदासी अछि अपमानित।

ि थि पा ि र के देव, नीक अ थि,
की करता भ’ क’ सां थ्वत।
जौ र श्वतहुँ एखनहुँ स्मृतं ि हम
नै र श्वतै इ दशा समाजक।
अंतहीन अ थि एकर कहानी
पना थ्वक ि प थ्वयौ इ थ्वहासक।

ई जीवन

भेल क्यािई जीवन ले के जन्म जगत मे ।
नञ्हं केलहु थ्कि काज क्यािई रहल हदय मे ।
बीतल बचपन उिल संग थ्यातली के िने।
कखनो मस्त मलंग खेल मे जोर लगेने।
आथ्य गेल चुप चाप उतथ्व के यौवन कञ्छ्या।
चैक उठल मन भेल भथ्यष्यक आहट जञ्छ्या।
लगा लेलहुं संपूणजोर ताकत िल जतवा ।
अथ्रि की कम संघषकिरब पथ्यवारक सेवा ।
अन, वस्ि, भोजन के कथ्वते उथ्यात व्यवस्ि ।
बीत गेल जीवन के सबटा नीक अवस्ि ।
ि कमक्ि ई खेल भाल्य के कोना मेटेबै ।
भाल्य पवल ि कञ्ह के ककरा केना बुझेबै ।
थ्कि जीवन के दोष देवता िथ्रि थ्कि दोषी।
कथ्वते रहलहुं कमसितत् थ्कि कम आ बेसी।
भेटल थ्कि सम्मान, मान लय के अथ्रि भूखल ।
होई ि एखनो सुनू, अिसँ सबटा पथ्याफल ।
कहा शथ्यत िथ्या सरोस्पती के असगर अपना।
सबसँ उपर ठाढ़ लक्ष्मी सबके सपना ।
थ्यनका जतवा अिपैघ िथ्रि जग मे नामी।
थ्वना अिसिब क्यािदुखक जीवन अनुगामी।
आब सोथ्य की करब उम उतरल अगुता के।
वाणपस्ि मे जायब थ्कि संताप उठा के।
हम रहलहुं अथ्यालाषी भव मे मोक मागकि।
चथ्यते रहलहुं हम थ्रथ्यायाक पि सुमागकि।
की भेटल अथ्यामान करब जकरा ले के हम।
पेट पोथ्य के मािबीतेलहुं ई जीवन हम।

अप्पन भाषा

बनल मंच पर शब्द जोड़ि क’
जगा रहल छी झूठक आशा।
बसल मैथिली मृदुल कंठ सँ
थाकि रहल छी आनक भाषा।
करब याद माईक कोरा मे
आकलल शब्द पघलल जे मुख सँ।
कतेक सुकोमल,आठगर,रसगर,
ई भाषा अछि बाजू सुख सँ।
छी मैथिल संतान कहि लय
बाजू मैथिली शर्म किए छी ।
छोड़ि प्यारगर शब्द अपन ई
अंग्रेजी के ओट किए छी।
नञि जीवन के नव पवाह मे
अछि भाषा कखनो अवरोधक।
नञि बाजै छी तैं अछि लज्जा
बना लेने छी दृश्य अबोधक।
बाजब हम सब अप्पन भाषा
ठानि अ’ आई संकल्प हृद सँ।
पसरल जायत अपने क्षण. क्षण
भ’ जायत समृद अभय सँ।

विवेकानंद झा

विंगरहार

हम
अहाक शेत नूआ मे ललका कोर जोका
हम अहाक स्मृश्च मे जाकि भोर जोका
हमही अहाक फूलडाली से उझ्रक कऽ खसल कनेर
हमही कोशीक नव-जल भश्चआयल काट कुश अनेर
हमही अहाक कोबर खसल लहठीक टूक ि ी
हमही अहाक हृदय-मयादल वासनाक हूक ि ी

हमही तऽ ि ी
अहाक पोि ी मे सहेज राखल फूल
हमही तऽ ि ी
अहाक एि ी संऽ रगश्च श्चाकसल ि ूल

देखैत अहाक सौदयि मे बह ाक श्चवेक हम
अहीक वाणी-वीणा मे म ्िर गीतक टेक हम
हमही अहाक गौरी लग गाि ल ि ूपकाठी ि ी

पोखश्च नहायल आयल र पसी कन्या अहा
लसश्च हृदय फाक भेल मनोलोकक कन्या अहा
केश संऽ झ ि त श्चंदु हम श्चश्चक्रार ि ी

मुंहे पर ठाढ़ हम गर्भ गृह पैसैत अहा
कोनो श्चहंगम दृश्य सन मऽन मे बसैत अहा
बाबा पर ढेराइत हम अश्चंजलक टघार ि ी

गीष्मक दुपहश्चिया मे ठमकल बसात जौंका
आततायी रौदक पचंडतम पमाद जौंका
हुलश्चि आयल संजीवश्चि श्चिहकल बयार पर
मूनल श्चिभौंर नैन भौंगक आिर ि◌ी

१९९६ मे कश्चियौं०००

अमत भा (१९९३- ), गाम-कभयन, भला-समस्तीपुर, भता-नवीन कुमार भा, माता-भभा देवी।

नव-अंशु (ापन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रबाइ- १-१६)

अपन गप

गजल मने पेम, गजल मने ददमुदा एखन गजल पेम-भरहसँ आगू बढ़ समाजक सब कोणमे अपन पएर पसाभ रहल अभ। भन्दी वा उदूमे गजलक इभहास पुरान अभ मुदा मैभलीमे गजल एकदम नव अभ। जभना नव पाभमे तीवसवाह होइ ि ओभना मैभली गजल रुत वेगसँ समाजमे पसभ रहल अभ एकर पत्यक पमाण फेसबुकक "भदेह" गुप आ अनभन्हार आखर क्लाग http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर देखबाले भेटैत अभ । ऑनलाइन पभकाक संग-संग भंट पभका सभ सेहो अपन सभ अंकमे गजल के सान दऽ रहल अभ। गजलक बारेमे जँ कने जानकारी भऽ जाएत तँ हमरो भखैमे नीक लागत आ अहूँके पढ़ैमे मोन लागत। तँ चलू देखै ि मैभलीक गजल की ि?

मूल रपसँ गीत आ गजल सहोदर भाइ ि। मैभलीमे गीत बहुत पभलेसँ गाओल जाइत रहल अभ ते ई बिका भाइ भेल आ गजल एखन जुआन भऽ रहल अभ ते ई िटका भाइ भेल। आब हम अपन ऐ किनके पमाभत करै ि। गजल आ गीतमे अंतर की ि? मा एक अकरक। गीत आ गजल दुनू गाओल जाइ ि जँ भाभक तुक {राइम्स } सभ पाभमे भलैत रहत तँ गीत वा गजल दुनू सुनैमे बेशी नीक लागै ि। मुदा गीतमे राइम्स नभयो हेतै तँ चलतै मुदा गजलमे पाय: पाभ संख्या 1, 2, आ तकरा बाद 4, 6, 8, 10 . . . मे हेबाक चाही।

गीतमे कतेको पाभक बाद फेरसँ मुखरा दोहराओल जाइ ि मुदा गजलमे पाय: तुकान्तबला पाभ बादमे कहल जाइ ि। गजल कमसँ कम 10 टा पाभक होइ ि जकरा 2-2 पाभ क रपमे बाभ कऽ शेर कहल जाइ ि। जभना गीतक शास्ि व्याकरण होइ ि {सा रे ग . . .} तभना गजलक व्याकरण होइ ि।

जभना शास्ीय गायनमे राग होइ ि तभना गजलमे बहर होइ ि। जभना गीत कोनो ने कोनो ताल-रागमे होइ ि तभना गजल कोनो ने कोनो बहरमे

होइ ि। आजुक जमानामे तेज ि न आ डी.जे. गीत गाओल जाइ ि। जश्वना गीतमे कोनो तरहक श्चन्हक {अद-श्विराम, पूणश्विराम आश्च} के मोजरे नै दै ि श्चि, ओश्वना गजलमे कोना पाश्वमे कोनो श्चन्ह {. , ? आश्च} नै देल जाइ ि। आब एना श्वकए कएल जाइ ि से नै पूि? अपने सोचू ने, गीते जका गजलोके तँ गाओल जाइ ि। जश्वना गीतक कोनो शीषकि नै होइ ि तश्वना गजलक कोनो शीषकि नै होइ ि। गीत के "भश्वक्त, पेम, श्वरह, देशभश्वक्तऽऽ आश्च र पमे बाटल गेलैए आ गजलोके "गजल, बाल गजल आ हजल" क र पमे बाटल गेलैए।

गजलक बारेमे बेशी जानकारी आशीष अनश्चन्हार जीक श्वखल पोि "अनश्चन्हार आखर" वा ब्लाग http://anchinharakharkolkata.blogspot.com" पर भेश्च जाएत।

गजलमे आबैबला श्वकि शब्दके देखू।

1} शेर- शेर दू पाश्वक होइत अश्चि आ अपना आपमे सम्प्रूखन पूणभाव दै अश्चि आ आन पाश्वसँ स्वतंि रहैत अश्चि।

2} गजल- कमसँ कम पाच टा शेरके जँ श्वकि तुकान्तक संग एक ठाम राखल जाए तँ ओ गजल बनै ि। एकटा गजलमे एकै रंग तुकान्त हेबाक चाही।

3} रदीफ- गजलक पश्वल शेरक अंश्वमसँ देखू, जँ कोनो एहन शब्द जे शेरक दूनु पाश्वमे कॉमन होइ तँ ओकरा गजलक रदीफ कहबै।

आइ चलू संगे पेम गीत गेबै श्वय

एकटा पेमक महल बनेबै श्वय

एश्व शेरमे "श्वय "दुनू पाश्वमे अश्चि ते एकर रदीफ भेल "श्वय"। आब गजलक सभ शेरक दोसर पाश्वमे ई रदीफ रहबाक चाही, से अश्वनवायअश्चि।

4} काश्वफया - काश्वफया मने मोटा मोटी तुकान्त {राइम्स} बुझू। जँ बाजैमे एकै

रंग ध्वश्व बुझना जाइए तँ ओ भेल काश्वफया। काश्वफयाक तुक ओइ शब्दक अंश्वम सँ पता लागै ि। जे तुकान्त गजलक पश्वल पाश्वमे अश्चि सएह आन सभ पाश्वमे हेबाक चाही। मतलब जे गजलक पश्वल शेरक दुनू पाश्वमे आ आन शेरक दोसर पाश्वमे।

काश्वफया- गमला. राि. चेरा. केरा {ऐ मे तुकान्त "आ" भेल}

हेतै, खेबै, झेलै {ऐ मे तुकान्त"ऐ" भेल}

रोटी, हाि, रेती {ऐ मे "ई" भेल}

झोरी, बोरी {ऐ मे"ओरी" भेल}

एनाश्वते अओर सभमे काश्वफया {तुकान्त } बनत।

गजलक पश्वल शेरमे रदीफ आ काश्वफया कमश: पाश्वक अंश्वमसँ अश्वनवायि पसँ

हेबाक चाही। आ आन शेरक दोसर पाश्वमे सेहो रदीफ आ काश्वफया कमश: अंश्वम सँ हएत।

5} मतला- गजलक पश्वल शेर जेकर दुनू पाश्वमे रदीफ आ काश्वफया कमश:

अंक्षमसँ होइ एकरा मतला कहल जेतै।

चाद देखलौ तँ क्षतारा की देखब
अन्हारक र प दोबारा की देखब

पेमक सागरमे बड नीक लागै
डुबऽ चाहै ि ि तँ क्कनारा की देखब

ऐ मे पक्ष्ल शेरक दुनू पाक्षमे कॉमन "की देखब" अक्षि ते ई ऐ गजलक
रदीफ भेल आ रदीफक पक्ष्ले देखू, दुनू पाक्षमे "क्षतारा "आ "दोबारा " ि
एकर तुकान्त भेल "आरा" ते ई भेल काक्फया। आब दोसर शेरक दोसर पाक्षमे
देखू। रदीफ "की देखब" आ तुकान्त "आरा " क संग शब्द "क्कनारा " अक्षि।
आब ऐ गजलक सभ शेरक दोसर पाक्षमे अंतसँ रदीफ "की देखब" आ काक्फया "आरा" तुकान्तक संग हेबाक चाही।
तुकान्तक पाता शब्दक अंतसँ चलै ि।
6} मकता-- गजलक अंक्षम शेर जैमे शाइर अपन नामक पयोग करै ि्षि ओइ गजलक मकता कहल जाइ ि।

मेघक डरे चान नै बहरायल
नै औता अक्षत नजारा की देखब

ई भेल मकता ।
शाइर अपन एकै टा नामक पयोग करक्षि। जेना हम पक्ष्ल गजल सँ"अक्षत" क्षखै ि ि तँ आब कतौ "क्ष "
नै क्षख सकै ि ि। बहरक पक्ष्चान लेल हम U मने " हस्व " लेने ि ि आ I मने दीघ िलेने ि ि।
हम क्षखैत तँ 2008 सँ ि ि मुदा मास जनवरी 2012 क अंक्षम सप्ताह मे ि ि आशीष अनक्ष्न्हार जी सन गुर भेटलक्ष, संगे क्षदेह सन प्लेटफामिभेटल ते हम ऐ क्षनके अपना लेल नव जागरण मानैत ि ि। हमर एकटा इस्कूल संगी जे पक्ष्ल बेर क्षखबाक साहस देलक्ष, ि ि आशीष अनक्ष्न्हार जी {हमर गजल गुर} जे गजलक जान आ "अनक्ष्न्हार आखर" मे जगह देलक्ष, ि ि गजेन्र ठाकुर जी जे क्षदेह -मैक्षिलीक अन्तराष्ट्रय आनलाइन पक्षिका {www.videha.co.in } मे जगह दऽ क्षखबाक साहस देलक्ष, ि ि ओम पकाश झा जी जे बेर-बेर हमर गजल यामिमे मदक्ष केलक्ष, क्षनका सभके हम कक्ष्यो नै क्षसक्ष सकै ि ि। संगे संग पत्यक-अपत्यक र पसँ संग देबऽ बला सभ गोटेक संग सभ पाठकगणक जीवन भक्ष आभारी रहब।

एकटा गजल पुष्प अपने सबहक लेल:-

पुष्प गजलक लऽ एलौँ पेम आँगनमे
शब्दके घोरब एलौँ नेह चाननमे

नव श्वनेहक सजल म[ुमासमे रमलौँ
भासलौँ हम कतौ दुख थरह सावनमे

नव समाजक लऽ ऐना देखलौँ मुँहके
भूश्वाया गेल सब संस्कृश्वाक बासनमे

मंद मुस्की हजल के संग बड हँसलौँ
बाल ि ी बनल हम कखनो कऽ गायनमे

अश्वत आशीष चाही मा ि हमरा यौ
भाव रस रहब भश्व सश्वखन समपणिमे

अपनेक सुझाबक बाट जोहैत हम-
-अश्वत श्वा ि

गजल

1

चान देखलौ तँ श्मतारा की देखब
अन्हारक र प दोबारा की देखब

पेमक सागर मे ब िमोन लागै
डुबऽ चाहै ि ी तँ श्कनारा की देखब

एश्ह ठामक श्मठाइसँ बेसी मीठ
र पक ि ि ी के दोबारा की देखब

अपने आप राश्त रंगीन भऽ जाए
फेर बोतलक इशारा की देखब

मेघक डरे चान नै बहरायल
ओ नै औता तँ नजारा की देखब

जखन याश्दक सहारे जी सकै ि ी
तखन चानक सहारा की देखब

वर्ण-13

2

जे थ्कि कहब हँथ्स कऽ कहू
पेमक जालमे फँथ्स कऽ कहू

भीज जाउ थ्सनेहक वषा मे
थ्दलक झीलमे िथ्स कऽ कहू

खसा थ्दअ आइ थ्बजुरी अहा
र पक चानन घथ्स कऽ कहू

पेम केलौँ कोनो पाप तँ नै ने
लगमे आथ्ब हुलथ्स कऽ कहू

जमाना जुल्मी थ्कि नै करतै
डर  नै बाथ्टमे कथ्स कऽ कहू

अन्हथ्रया कते थ्दन रहतै
देखू भोर भेलै हँथ्स कऽ कहू

बना लेब दुलथ्हन अपन
अथ्पात कने खखथ्स कऽ कहू
वणि -11

3

कोना चमकल र प सब  बूझहऽ चाहै ि
अंग-अंग मे हम्मर गजल रहऽ चाहै ि

केशक गजरा जाम्ब नै की सब करेतै यै
मुस्की कए वाण पर करेज ढहऽ चाहै ि

पएरक पायल मोनक मोर नचाबै यै
डारक लचकी कए ख्बजुरी सहऽ चाहै ि

पाकल आम ि ी हश्वयर-श्वयर सुटमे
पेमक म नी सँ पेम दही महऽ चाहै ि

राश्च अमावस मे पुश्चम बश्च कऽ एलौँ यै
चश्च आउ मोर अंगना श्चल कहऽ चाहै ि

परी बश्च सपना मे सबहक त आबै ि ी
"अश्वत " तऽ श्वदखन सुतले रहऽ चाहै ि

वणि  - 16

4

आँचर तर मरबाक मजा थकि और ि
संग पेम मे थाजबाक मजा थकि और ि

सुतल मे त शपपरी बड याथद आबै ि
जागल  शप देखबाक मजा थकि और ि

गीत-संगीत त ताले सँ बान्हल रहै िक
बीन ताल के नचबाक मजा थकि और ि

गथात थजान थन्दी भुगोल बड थखलौ
पेमक पाठ पढ़बाक मजा थकि और ि

फूल भरल बाट पर कतबो चलु अहा
काट पर मे चलबाक मजा थकि और ि

जमाना तेज ि क्ण मे पहुंचू सब ठाम
इंतजार मे रहबाक मजा थकि और ि

अनथान्हार देलथ पाथ बनल गजल
अथत संग थखबाक मजा थकि और ि.

वणि -- 16

5

आइ नोरसँ आँथ्व बोथ्व रहल ि
ककरो थ्वश मोन मोथ्वि रहल ि

तेज शासक कोदाथ्वसँ आइ हम
ओ इयादक माथ्व कोथ्व रहल ि

तरेगणक बीच बैसल चानसँ
पथ्वले जका डोर जोथ्वि रहल ि

अन्हारक बीच कुकुरक आवाजसँ
रथ्व-रथ्व कऽ ध्यान तोथ्वि रहल ि

कतौ- कतौ जुगनू चमकी उठै ि
नै एला थ्वय आश ि थ्वि रहल ि

राथ्व जुआन बुढ़ सब भेलै देखू
ओ औता थ्वशास नै ि थ्वि रहल ि

आइ नै तँ काथ्वि जर र औता थ्वय
यैह सोथ्व ओ ना ि थ्वि रहल ि

वणि--13

6

आब तँ राश्ता श्वताएब भेल कश्चन
वषा मे वर्स सुखाएब भेल कश्चन

श्वन तँ भीि मे हसैत श्वत जाइ ि
राश्ता कऽ ददिनुकाएब भेल कश्चन

सब ठाम चोरी-डकैती जोर िने ि
पेमक िन बचाएब भेल कश्चन

यार सब िलैए तँ ताश खेलै िलौं
पश्चला याश्व श्वटाएब भेल कश्चन

मा-बाबू कश्चया बच्चा भाएक श्वन्ता ि
आब सब लेल खाएब भेल कश्चन

अनश्वन्हार श्वन्हार सब श्वितरा गेल
संबंिक पुल बनाएब भेल कश्चन

िकि रहल पाश्चमे िरा देखू
अश्वत आश्व श्वझाएब भेल कश्चन

वणि--14

7

करेजमे जनमल घाव तँ जक्षएबे करै ि
श्राजल र इया कए बोझहा भश्रएबे करै ि

जीवन दुखक सागर अछि सब केउ जानै िी
श्रम्मत राखू तँ सुख फेर सँ सश्रएबे करै ि

कऽ श्रअ कतबो झुठक खेती बेइमानी  डकैती
भगवान घर मे तँ श्रसाब फश्रएबे करै ि

अनकर कन्हा पर बंदुक राश्ख चलाबै सब
केउ नीक बात नै कहै सब गश्रएबे करै ि

बाप-दादा कए इज्जत श्रलाम जुनी करै जाउ
सश्रखन बदनाम लोक त' भश्रयेबे करै ि

जश्रना गजल नीक श्रखबाक कोश्राश रहै ि
"अश्रत" श्रदान लोक समाज सश्रयेबे करै ि
वर्ण--18

8

राश्वामे हुनकर इयाश्व आबैए बेसी
राश्वामे बाट जोहैत आँश्व जागैए बेसी

कतबो पकृश्वाक कोरामे रहब मुदा
खण्डहर श्वानेहक नीक लागैए बेसी

मा कए श्वान्ता जेना संतान लेल होइ ि
खून नै देह-देहसँ श्वान्ता बहैए बेसी

गामक टूटल टाट दोगसँ देखैत ओ
पश्वलुक श्वलनक बात दागैए बेसी

कोना-कोना कोहबर सँ कलकता एलौँ
र कबो नै करै श्वकल्म जेका भागैए बेसी

श्वरहक वेदना झुलसा देलक आत्मा
घुरो सँ अश्वात करेज सुनगैए बेसी
वर्ण--15

9

हश्चयाली देख हश्चयर मोन भऽ जाइ यै
बंजर ि रा देख बज्जर मोन भऽ जाइ यै

जँ आमक गाि ी मे एको श्चनट श्चताएब
मीठ पवन सँ श्चठगर मोन भऽ जाइ यै

जँ खेत मे देखै ि ी झुमैत गहूँमक बाश्च
सरसो फूल सँ रसगर मोन भऽ जाइ यै

घरक आगू गुलाबक उपवन सजेलौँ
आब एतै करब गुजर मोन भऽ जाइ यै

लोभी लोक लाजो नै करै ि श्चि गाि काश्च कऽ
देख कऽ अश्चत ग बि मोन भऽ जाइ यै

वर्ण-16

10

गोर गाल पातर ठोर ि
नैन कारी बि बेजोर ि

नाक कान डार केश नीक
यौवन झरनाक शोर ि

गुलाब कही त बि कम
दोसर ठामक इजोर ि

थ्वरह जँ अन्हथ्वया ि तऽ
इ पेमक म्ि‌र भोर ि

जीवन जँ नरक भेलै तऽ
स्पगनिगर कए डोर ि

मोन मोहै ि मशीन आइ
मुदा इ पैघ थ्वतचोर ि

होली मे रंगक मेल जेका
सबसँ थ्वलबाक होर ि

चीख थ्वनक पेमक स्पाद
अथ्वत तऽ भेल थ्वभोर ि वणि --10

11

श्चान हुनका देखने मोन ने मानए
जँ देख ली तँ ककरो होश ने आनए

सबसँ बिका नशेरी पकैि लाऊ
ऊहो हारत जँ दार नैनसँ िानिए

श्चयर सश्चसो फूलक हँसी लोभाबै
श्चनक मुस्कीसँ बाि मस्त भऽ फानए

डारक लचकी ,चाल सुनू अि र ि
र प सँ श्चीटकल इजोर चान आनए

जँ खोश्च देती माि परक उपवन
बषो एश्च ठा बसबाक लेल ठानए

सच कही तँ उच्च ताप पर तपल
अनमोल सोना .जे सब चाहै श्चनए

सच कही तँ उच्च ताप पर तपल
अनमोल सोना जे सब चाहै आनए

वणि --14

12

देहमे सटलै जखन देह श्वाहश्व गेलै देह
देह श्वकएक आइ देहे देख हहश्व गेलै देह

दैवक सबसँ नीक रचना मनुष्यक देह ि
अनेको उपमासँ सजल से उघश्व गेलै देह

नव दुश्वायामे चलैत-श्वरैत मशीन ि लोक
मानवता पेम भाइ-चारा बला मश्व गेलै देह

गोर-कारी ि ट-पैघ श्वांगक नाम पर बाटल
अश्वात  आब कश्वया सुनब सुि श्व गेलै देह
एकाएक बसंतक हमला भेलै मौसमपर
नव पात भरल गाि जेका मजश्व गेलै देह

शासमे तेजी खूनक पवाह बश्व़ गेलै पलमे
लि इमे जानी पुर ष जेका सम्हश्व गेलै देह

वणि --18

13

करेजक पहचान ि मोि
श्चम्मत कए चलान ि मोि

मौगी जेका जुश्च बनू यौ भैया
सब मदकिए शान ि मोि

श्चन श्चक कए जुश्च रहू यौ
श्चक मनुखक गुमान ि मोि ,

संस्कार पलि जनेऊ भेलै
जनेऊ सब के पाण ि मोि

नै सोचु बेरोजगार रहब
सबहक तऽ सम्मान ि मोि ,

मोि राखब खराप बात नै ,
नव संस्कृश्च सँ श्चलान ि मोि

वणि --11

14

की भाइ, श्नक ि श्नखै ि ि तऽ गजल श्नखू
िन-ताल कए फूलसँ बान्हल श्नखू

पेम करै ि ि बड अहा आ शाइरी नै
पेम पगाढ़ हेएत पल-पल श्नखू

खुशी- गम संग सब रंग समाजक
िश्न एके घैलामे ताि क जल श्नखू

कल्पना कते श्नन श्नकतै मोनसँ श्नखू
गामक हवामे सास लऽ गजल श्नखू

सबहक मोनमे उठै नव तरंग
फाग रंग-अम्बर लगा अटल श्नखू

बड भेल पेम आ शराबक गजल
समाज उत ािन लेल भऽ बेकल श्नखू

श्नक ि नव शीषक ि नव शब्द चुश्न कऽ
अश्नत नव समाज मे रमल श्नखू

वणि --14

15

गजलसँ पिरचय करेलक अनिचन्हार आखर
गजलक अ आ इ ई िसखेलक अनिचन्हार आखर

भटकै िलौँ गीत आ किवतामे ओझरा हम कतेक
िलखबाक मकसद बतेलक अनिचन्हार आखर

सािहत्यक रंगिबरही थिा मे एकटा गजलो िक
दू पाितक भाव किह िसखेलक अनिचन्हार आखर

आिब गजलक भंडारमे केओ गजल गाबऽ लागत
एगो अलगे दुिनया बसेलक अनिचन्हार आखर

जा िध लिखब गजले टा िलखबाक कोिशश करब
अिमत कए शाइर बनेलक अनिचन्हार आखर

वणि--20

16

जीवनमे एको बेर मान समाजक राखबै
अहा कखनो तऽ बाट हमर घरक रिबै

भुतीया गेलौँ बहावि शहर वेश जे चललै
िभ उवरि रा पर पालो हऽरक रिबै

हम गाम ी ,हम संस्कृती ी , हम इज्जत ी
कखनो तs हमर जीणिदेहक लेल सोचबै

सगरो अत्याचार ,सगरो लुट-पाट मचल ै
कखनयो तs अपन सदखून गरम करबै

पैसा कारी-उज्जर , भोजन दुलभ भेल आइ
कखनो तs सत्यक अझाईत घूर सुनगबै

पछले केऊ चलत काफ़ला बनबे करतै
अभात कखया कलममे काा भव खबै
वणि--17

17

अहा कखनो तऽ बाट हमर घरक िरबै
हमरा संगे अहूँ त बाट समाजक िरबै

भाल्यमे जे श्लखल अछि ते श्वरहमे मरै िी
आशा केने िी कश्चयो तऽ मान नोरक िरबै

राहू-केतू केने अन्हरीया ताशक श्वयाह िी
हेतै जँ तेज मंगल तऽ ध्यान भोरक िरबै

काट कलपाबैए कने काल कनेक ददिदऽ
फूलो भेटबे करत बाट नै डरक िरबै

श्वनेह जँ हारत तऽ समझू दुश्वया डोलत
लिइ जीत कश्चयो तऽ झण्डा प्यारक िरबै

ठार दलान पर स्वागतक िारी सजेने िी
माग हमर रागल हाि सेनुरक िरबै

नै मागै िी अकाशक लाख तरेगण हम यौ
अश्वत कश्चयो तऽ गजल हजारक िरबै

वणि --17

18

देखब दुनियाक रंग हम दंग रहि गेलहु
नीक नहियो लागल रंग तैयो सहि गेलहु

बान्ह सँ बाहर भकलैत नवका पानि लै
टुटल नाव तऽ संग लि तैयो दहि गेलहु

ताकत अछि एते ध्यार देब पहाकि सीना
दुनियाक भकराल र प देख ढहि गेलहु

सगरो भूख गरीबी ददसँ गमात ि सब
आ हम ए.सी मे रहितो रौदसँ डहि गेलहु

पैघ हेबाक होरमे इज्जत सब बसरलै
अमात जाग आबो तऽ अपनेसँ कहि गेलहु

वर्ण --17

19

की अहा अपन संग देबै
की भक्ष जीवन संग देबै

सहबै बाश्चढ़ भुकंप .रौद
जखन-जखन संग देबै

श्चाकलतै कलमसँ लावा
रचबै सुमन संग देबै

साहस तँ देहमे दौगैए
पुरतै सपन संग देबै

पुण्यक राज फेरसँ एतै
हो पाप हवन संग देबै

िरा पताल सब श्चाश्चिला
मैश्चिली गगन   संग देबै

अहाक संगे टा चाही श्चय
अश्चात नयन* संग देबै

*हुनका अपन नयन माश्चा रहल ि ी एश्च ठाम *
वणि        --------10

20

बीत गेल होली आब कश्चया एबै थ्यया
ि टल रंग कश्चया रंग लगेबै थ्यया

असगर आश लगा ओझराएल िलौँ
श्वारास ि ी खुश कऽ कखन नचेबै थ्यया

यौवनक श्वया अंकुश्च गाि बश्चा गेलै
कखन र य फलक स्वाद बतेबै थ्यया

जाि क ओि ना ,बसंतक पसेना राजा
गमीयो मे अकेले आश्चा सँ तपेबै थ्यया

डाह होइ यै देश्चा सहेलीक पेम सुख
काजे के पती माश्चा सुि ी बरसेबै थ्यया

देहक वसि फसश्चक की सँ की भऽ गेलै यौ
फोन सँ बात कऽ और कते श्वाहेबै थ्यया

यौवन समय आ समुरक लहर ि
ठहरै नै ि गाि ी कश्चया बढ़ेबै थ्यया

पात आबू ने गाम र पक रंग ि नि ि ी
अश्चात हाि सँ पेम पुआ खुएबै थ्यया वणि --15

21

बंद आँखिसँ होइ रचना
राधा-श्याम हुनके सपना

बोली फूल बरसै गमकै
पेम भरल घर अंगना

कैनवासपर फोटो जेका
आगा-अगिरा होइ सामना

कोनो रोक नै जोर चलैए
माि ओ कऽ सकै ि ाथि मना

घुमै ि ी दोसर नगरमे
नैन श्यालेने फाकैत चना

कहै यै आलसी इ दुनियाया
माि केलौँ हुनके रचना

सपना आ कल्पना अनिमात
राधा -श्याम हुनके सपना

वणि -- 10

22

राक्षा कऽ जाक्षा नै क्षकए नीन नै होइ यै
कतबो टाकामे शप कीन नै होइ यै

जग फोफ काटै हम करोट फेरै ि ि
दोसरोसँ क्षाठ सुख ि ीन नै होइ यै

अनंत अकास तरेगण पसरल
पुक्षामिमे अमावश मलीन नै होइ यै

पेयषी पेमक पता पलक पुि ि ए
पुना पाक्षा पंक पि नीन नै होइ यै

क्षानगी जहल अपने लोक बनेलक
आब तऽ सुखल नोरो भीन नै होइ यै

कते कक्षान ि ि क्षकनब कतौ पेम
हमहुँ क्षाखमंगा देख घीन नै होइ यै

पेममे ददिनीनक मेल नै होइ ि
अक्षात दुनू कक्षायो तीन नै होइ यै

वणि --14

23

टूटल ए जेतै संबंि जँ दस लेल एकसँ इहो स्वीकार अछि
भीि मे जीबै िी ते भीिके बचेनाइ हमर व्यबहार अछि

हम बनाया िी सए कमा लेब  दस िूट गेल कोनो दुख नै
सबल तऽ बढ़बे करतै ओकरा संग ठाढ़ अ जे लचार अछि

माि‍क लोभमे सि‍ल मािल तऽ दुखत नै करब समाजके
एक दाममे बिकै बला ककरो ध्यानगी नै मीना बजार अछि

सब के सबसँ धकि-ने- धकि चाहत रहै िै िाट बाट पर
अहा एक बेर आबू हम दस बेर  इ हमर व्यबहार अछि

लाि‍इ कऽ देह जुआ तोि‍ जाउ  पेम कऽ बदल िसब पहुँचु यौ
अनात धानती के फेरा मे नै पिू सगरो अपने संसार अछि
वर्ण-23

24

राक्षा देखलौ सद्धयह तोर रप गे चान हमर जान लऽ गेले
जान हमर क्षखल तोरे नामे िलौ जान हमर पाण लऽ गेले

पक्षल थ्वनी थ्वला पेम के पाथ्वसँ गाढ़ बनौले पेमके चाशनी
रंग-रप यौवन राक्षा चमका कऽ पाण हमर इमान लऽ गेले

केले सुशोथ्वत नेह उपवन रंग-थ्वरंगक थ्वतली बथ्वा कऽ
अनमोल पराग राक्षा थ्वया कऽ गे चान हमर गुमान लऽ गेले

एहन आदत लागल जँ तोरा नै देखी मोन हमर नै लागैए
आँथ्व बनो मे तोरे तऽ हम ताकै िलौँ जान हमर मान लऽ गेले

आथ्व हथ्वकत मे एकबेर गाम गोरी हमरो तऽ मान राथ्व ले
अथ्वत भटकैत मोन के सम्हाथ्व कऽ मान हमर शान लऽ गेले

वर्ण-24

25

अ-आसँ सिखलौँ आखर जोड़ि गजल बनेनाइ
जेना कागजक नाह आ फूल कमल बनेनाइ

मतला रदीफ काफिया कसीदा शेर आ बहर
िनसँ साथि कऽ रंगबिरही महल बनेनाइ

पेमिकाक आँचरसँ पेमक पाठ आ पेमालाप
कुहरैत करेजक ददकि चंचल बनेनाइ

दिनके राति रातिके दिन साझ-भोरसँ बदलि
मोनक भावके अनका लेल सरल बनेनाइ

जन्मदिनक ढेर रास बधाइ आ-आ के हमर
अमित अ-आ गंगा शेर के गंगाजल बनेनाइ
* अ-आ मने " अनचिन्हार आखर "

वर्ण-18

26

नव चान बैसल िै हमर कोहबरमे
सुनर मुँह नुकेने ओ अपन आँचरमे

एक कोण पर बैसल ओ लाले लाल लागै
ओ चुप िथि मुदा गाबै िी हम भीतरमे

नहूये उठल घोघ मोन आनंिदत भेल
जागल अिह पेम मािे एक नजरमे

नै मरलौँ नै जीलौँ बीचे मे रिह गेलौँ हम
पीब हुनकर स्पशिसन मीठ जहरमे

सबिदन चान आबैए सजैए कोहबर
अिबत आइ मागै िी जा ओ पेम नगरमे

वणि-16

27

डहकल करेज जरि करेज और जराएब कोना
बीन डोरक पतंग अहा कहू और उड़ाएब कोना

जीवनक पदापर कतेक नव नव नाटक खेललौँ
जखन अन्हार भेल रंगमंच रचना रचाएब कोना

आँखिक सामने उजड़ि गेल बसल बसाएल दुनियाया
आब भटकल बाट पर पेम नगर बसाएब कोना

की सही केलौँ आ की गलत केलौँ कहि नै जानि हम पेलौँ
जानै छी एतऽ बड भीड़ छै नैनसँ नोरो बहाएब कोना

खुशीसँ काटू जीवन खसैत पड़ैत काटि लेब हमहूँ
अज्ञात आजुक रास्ता बड भारी रास्ता ई बताएब कोना

वर्ण-21

28

दोसरक ददिअपन बूझ्झ जर्थि रहल ि ी हम
ि ी अपने समाजक ते संग मश्च रहल ि ी हम

कखनो हँसलौँ कखनो कानलौँ सब रंगमे रंथ्रा
भऽ नै जाऊँ असफल ते बर ड डश्च रहल ि ी हम

कोना बताएब खूनक एक एक ठोपक रहस्य
खूनक प्यासल बर ड ि े ते हहश्च रहल ि ी हम

नेह सगरो भेश्च रहल ि े खुले आम बजारमे
सीसा सन टूटल थ्दल जोर्थि तश्च रहल ि ी हम

आइ देखलौँ दुश्राया हम अपन खुलल आँश्चसँ
अश्रात आइ बूझलौँ अनेरे जर्थि रहल ि ी हम

वर्ण-19

29

अहाक रप देख देख जीवन जी लै ि◌ी हम
मधुराएल नैन देख कऽ कने पी लै ि◌ी हम

ओना तऽ बड बिबिाइत रहै ि◌ी सखरो
अहाक ठोर खुलै यै तऽ अपन सी लै ि◌ी हम

अहा मक्खन अहाक परतर कोना करब
दूर नै भऽ जाउँ अहा सँ तेए दही लै ि◌ी हम

बात इ अलग जे जमाना कहै पेमी हमर
अहा तऽ जानै ि◌ी ददििश्र और की लै ि◌ी हम

सब सपत अहीँ के नामे अहीँ के नामे शास
पाणो ि◌ अहीँके नामे की ऐसँ बेसी लै ि◌ी हम

नव धवस मे कर सजनी नवका गप यै
अधात अहा पर एकटा शाइरी लै ि◌ी हम

वणि-17

30

खूनसँ भ्नजलै रिती भ्रथिला बनबे करतै
कतबो घायल मैथिली भ्रथिला बनबे करतै

जानकीके ाती पर जे चोट लगलै आइ एतऽ
खून बश्र जेतै भ्नानगी भ्रथिला बनबे करतै

चोटाहल साप िऽ लै िै रौर भयानक रपके
आब शेर गरजै बेशी भ्रथिला बनबे करतै

एकोटा शहीदके बश्नदान नै हेतै व्यर्थ िआब
पापीके मूँह हेतै कारी भ्रथिला बनबे करतै

जागू भ्रथिला एक जूट भऽ चश्नयौ ाती ताश्र कऽ
कश्वयौ अभ्रत तैयारी भ्रथिला बनबे करतै
वर्ण-18

31

ि नि आ ऋण संगे जोिल तऽ जाइ ि
थ्रानी नोन पाथ्रामे घोटल  तऽ जाइ ि

जे कानैए से हँसबो जर र करै ि
आम संग बबूर रोपल तऽ जाइ ि

जे काज केउ कथ्रयो नै केलक एतऽ
थ्रपथ्रा एला पर सोचल तऽ जाइ ि

नोर जिए वा खून जिए हजिकी
कखनो कऽ माहुरो घोटल तऽ जाइ ि

जँ लोढ़ी घसल कपार मे तऽ की भेल
अपनो सँ लकीर गोदल तऽ जाइ ि

डाह करब तऽ डथ्र जाएब अपने
डहकल करेज जोिल तऽ जाइ ि

पाथ्रा अपन बाट अपने बनबैए
इ चंचल िरा के मोिल तऽ जाइ ि

जँ कारी मायाजाल सँ मारै ि लोक के
ओ जादूए सँ मोन मोहल तऽ जाइ ि

सही आ गलत सब ि एथ्र जग मे
अथ्रात गलत के टोकल तऽ जाइ ि
वणर्-14
* एथ्र ठाम "िनि" मने"+ve" आ "ऋण" मने "-ve "भेल

32

अपन अपनेके लबिै ि

नेत अपने पर डोलबै ि

जे कानै ि देखार भऽ जग मे

हँसै वला के वैह कनबै ि

कलमक ताकत जुश्व पूि

हंगामा तऽ इएह करबै ि

जेकर मोन मे अहा बसलौँ

करेजक खून ओ करबै ि

देखाइ नै दै ि जे सूक्ष्म जीव

श्वमश्वयाह वैह बनबै ि

भरोसा करब ककरा पर

भरोसे वला होश उबिै ि

नै श्वन्हार ि जगमे अश्वत

कोसी मा अपनेके दहबै ि

वर्ण- 11

33

अपन लोक मरखाह बनल ि यौ भैया
कुटमैती आब चोटाह बनल ि यौ भैया

जहर पीबा तेजै ि अपन पाण अपने
जनगी भमर अि ह बनल ि यौ भैया

नोर पोि त नै आब केओ ककरो कहयो
दोसरक हँसी कटाह बनल ि यौ भैया

पेम बनल आब एतऽ इतहासक शब्द
करेजक िद घबाह बनल ि यौ भैया

लूट मचल अि चार दश इजोरयेमे
जन जनक डलबाह बनल ि यौ भैया

उबडूब करै ि ी संसारक बैतरणीमे
जनगी तऽ फूटल नाह बनल ि यौ भैया

अपन शपात दऽ बनबै अपन दुश्मन
अघात शोघात भयाह बनल ि यौ भैया

वर्ण-16

34

तािी के कने िाश्चा कऽ श्चअ
दार कतौ सँ आश्चा कऽ श्चअ

मदक्ि ि पहचान दार
आइ तऽ िाती ताश्चा कऽ श्चअ

डूबल ि ी जे मदहोशीमे
रम मे दुख साश्चा कऽ श्चअ

बंिन इ दुश्चायाके तोि़
सबटा बान्ह फाश्चा कऽ श्चअ

नैनक श्चाशा बरड चढ़ल
ठोर सटा कऽ जाश्चा कऽ श्चअ

श्चालास िर बोतल लाबू
अश्चात आइ हाश्चा कऽ श्चअ

वणा-10

35

शहरक सब शराबी चलू घर हमर
ओतै नशा के बसेबै नया नगर हमर

भऽ कऽ दुआयासँ अलग कने काल झूमब
कोमे हवया जेतै सुखल चर हमर

नदी नोरमे घोरब रंग बरंगक पा
कोनो इयादक चखना हेतै कर हमर

थबै सँ पले मीता मुआ ले आँख अपन
कहै नै इयाद नै केलौँ लबर हमर

खसै ि ी बीचमे सकि तऽ कहै शराबी सब
ओकरा हँसबै लेल खसै ि ै ि र हमर

भऽ कऽ बदनाम अआत  जी सकै ि ी हम त
कहत हरजाइ तऽ जति घर हमर

वर्ण-16

36

हम बाध्य रहल ि ी मायक कोखिसँ
हम सबटा सुनै ि ी बेशक कोखिसँ

कष  सहब हमर आयती बनल
मल- मु ि खून सहै ि ी मायक कोखिसँ

माथ देब पड़ल तीन बहिन जेका
सुखा हँसा रहल ि ी मायक कोखिसँ

बेटी कए जौ मारबै यौ भलमानुष
बेटा जनमत कोन मायक कोखिसँ

हम बेटी ि ी दुगा ि ी सुखा ल़अ अहा
आइ हुंकार भरै ि ी मायक कोखिसँ

बेटी कए जे केउ सम्मान नै करत
नै जनमऽ चाहब ओ मायक कोखिसँ

बेटी बिन बंश ककरो तऽ नै बढ़तै
जाथ कऽ बंश मरै ि ी मायक कोखिसँ

वर्ण 14

37

गजल नै नै गीत सिखलौँ
जँ सिखलौँ तऽ पीत सिखलौँ

दरद सीमा पार केलक
तऽ मरहम घसि मीत सिखलौँ

उलट बातसँ नीक लागै
गरम के हम शीत सिखलौँ

बयानसँ पलटब तऽ इज्जत
जँ नेता सन गीत सिखलौँ

बरसबै नै मेघ बनबै
ढहल आँगन भीत सिखलौँ

बहू सासुक भेल झगड़ि
मरि संगे तीत सिखलौँ

बचब नै यौ पलय हेतै
फँसल सासक जीत सिखलौँ

अज्ञात देखल अपन नैनसँ
समाजक सब रीत सिखलौँ

मफाईलुन-फाइलातुन ( हस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-हस्व-दीर्घ-दीर्घ सँ बनल बहरे-मजरिअ )

38

फुलल फूलक आशमे भेटल कटैया
इ म[ुमासक समयमे पतझि समैया

तपि भेटत मा‍ि फँसलौँ यथ्द्र मर स‍िल
बनल ि मार क एहन घर घरैया

ज‍ि मानव नेह मे दुख मीत दै ि
ध्यासल ि खूनके सब मन वनैया

खसल ि अ‍ि्नवस‍ी स‍ि सोगर
अपन पेटक भूख बझ्ा गेलै बलैया

दऽ रहलै यै दोष सऽब पर सऽब नगर मे
दऽ रहलै केओ तऽ ककरो नै बिया

कते टाटक दोगमे अजगर बसैया
दरद झ्ान[ुसँ भाझ्ा गेलै अझ्ात नैया

मफाईलुन-फाइलातुन-फाइलातुन ( हस्ा-दीघ-दीघ-दीघ + दीघ-हिस्ा-दीघ-दीघ + दीघ-हिस्ा-दीघ-दीघ सँ बनल बहरे-सरीम )

39

आइ एला थ्यया घर लए कंगना दाइ गै
लाज लागै िलै होयते सामना दाइ गै

नीन नै होइ यै याद्य ओ आश्व गेला जखन
आइ एला थ्यया काज केने मना* दाइ गै

आलु कोबी कए राख भेलै भुजीया सखी
जानलौँ आश्व गेला पुरा* पहुना दाइ गै

बाजलै पायलो दोगलौ ओलती मे नुका ,
सून जे भेल िल बैसकी अंगना दाइ गै

नीक सािी चुनर आ बुटीदार चोली िलै
भेल हश्वयर मन पेम भेलै घना दाइ गै

दीघ-हिस्म-दीघ किेर हरेक पाश्वमे पाच बेर पयोग भेल अश्वि। ई बहरे मुतदाश्वक अश्वि।

* काज केने मना कए मतलब िल जे जाही ठाम थ्यया काज करै िलाह ओही ठाम सँ काज-िज िश्वछ क चश्व एलाह

* पुरा{जगह कए नाम}

40

असगर जनम लेलहुँ असगरे जी रहल
अपने भाग अपनेपर भरोसा बचल

मोनक खेतपर बजि अपन खाइ ि
गलती अपन तेए बाट काटसँ भरल

मोजर नै भ्रनेहक भेल कश्चयो हमर
अपने तोश्रि नाता शहर मे जी रमल

दै ि दोष नेताके थकए आब यौ
अपने भोट दै ि घेट अपने कटल

लोभी ि अमि ि अश्चत भटकै सगर
पक्क नै अपक्क मोन अपने बनल

मफऊलातु-मफऊलातु-मुस्तफइलुन ( दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-हिस्व+ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-हिस्व +दीर्घ-दीर्घ-हिस्व-दीर्घ सँ बनल बहरे-कबीर )

नेता आ गुन्डा के एकै बूझू
आगू आबू देखू जल्दी जागू

दौ ि-दौ ी केने लेने झोरी
लूटै टाका मागै वोटो देखू

कारी केने टाका गा ी बाला
कूदै झूठे भष ाचारी सोचू

बोली खूंखार डेरेलै नेना
मार  लाठी हा ी-टागो तो ू

गा ी-घो ा भेलै खेलौना यौ
एतै हेतै जादू खेला झा ू

नेता नै भेलै गुन्डा मानू ने
गुन्डे भेजै ि ी  अन्हारे देखू

वाथ्यक्ति बहर
{10 टा दीघ सिब पाश्वमे }

42

पुन: जोड़ लेबै नेहके डोर राजा जी
कनेको बहै नै जानके नोर राजा जी

कने आउ राजा जाथ नै की भऽ जेतै यौ
कनेको नचाबू पेमके मोर राजा जी

ककए सुन भेलौ आइ बेमौत मारै ी
कने आइ मस्तीमे कर  शोर राजा जी

जमाना अलेतै नै सुनू बैलगा देतै
अनाी बुझै ि पेम ि चोर राजा जी

चटा देब संगे प्यार के चाशनी हमरा
अमीतो बुझू भेलै सराबोर राजा जी

हरेक पाथमे "फऊलुन-मफाईलुन" अ ित ( हस्न-दीर्घदीर्घ+ हस्न-दीर्घदीर्घदीर्घ सँ बनल बहरे तवील )

43

जखन राश्चि आएल कारी थ्रया यौ अहा मोन पिलौ
जखन होइ घर मोर खाली थ्रया यौ अहा मोन पिलौ

अहा दूर बैसल सताबैत िी साझ-भोरे सध्वखने
सनेसो जँ आएल देरी थ्रया यौ अहा मोन पिलौ

बरसलै पिमि बूँद वषा श्रलन याश्च आबै तखन यौ
थ्वरह केर तानल दुनाली थ्रया यौ अहा मोन पिलौँ

थ्रया जी जखन बहल पवना मिुर गीत गाबैत कोयल
जखन काट मे फसल सािी थ्रया यौ अहा मोन पिलौँ

जँ देखब कतौ थ्रिपकली डर सँ बोली फुटै नै हमर यौ
जँ िकिै हमर सून िाती थ्रया यौ अहा मोन पिलौँ

कने आश्च नेहक जिल भाग फेरो सँ चमका श्चऔ यौ
अश्चत आश देखैत रानी थ्रया यौ अहा मोन पिलौ

बहरे -मुतकाश्चब
{हस्र-दीि-दीि 6बेर सब पाश्चामे }

चादरो फाटल सिलि बड उठबै कखन
बाढ़ि एलै भासलै घर बनतै कखन

कोन कोना नाह भेटत मजिर मे
राति दिनकर दिन कऽ चना बूझै कखन

चोरि भेलै चैन आ चाहो के अमल
देह टूटै दोष अनका देबै कखन

डाग लागै दैब के अगिरे जखन
पाँति मानव एक बूँदो मागै कखन

बेचबै बेटा जँ जिनगी बचतै तखन
अमित कह ने पाँति सगरो घटतै कखन

फाइलातुन-फाइलातुन-मुस्तफइलुन
{ I-U-I-I-I-U-I-I-I-I-U-I} एक बेर सब पाँति मे
बहरे-जदीद

45

भेलै इ सरकार आन्हर
कानै इ देशो भऽ असगर

कोना कहब आइ सोना
सगरो तऽ िै भेल गबि

सासद बनल हाट मािक .
नाचै असल बश्चा कऽ बानर

बनलै बजट लूट मचलै
कारी टका बनल सागर

मरलै कते एतऽ कोना
के करत यौ खोज एकर

पोनो चलै राज तऽरमे
लाजे अश्चात रचल आखर

{मुस्तफइलुन-फाइलातुनI-I-U-I-I-U-I-I}

बहरे-मुजास

करेजक घर तऽ खोलू कने
कते ि पेम देखू कने

अहा हेबै सराबोर यौ
नगर मे आश्च देखू कने

मजा एतेक ि एतऽ यौ
मना नै करब मानू कने

नयन के बाट िने पिम
श्चानेहक चार उतर  कने

श्चाहश्चक रहलै हमर मोनसँ िन
श्चतक सरगम तऽ गाबू कने

मोनक अश्चि आश संगे मरब
श्चानूरक मान राखू कने

गजल एगो अहा गाश्च श्चाअ
अश्चात हाि बढ़ाबू कने

हरेक पाश्चामे--हस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ हस्व-दीर्घ-दीर्घ हस्व-दीर्घ

47

कोन टोना केलकै जोगया सखन करेजा हमर जरैते रहल
चोर केने चैन होशो हमर सखन अनेरे उड़ैते रहल

नै छलै डर एतऽ मरबाक आ नै मोन मे ददअंदेशा छलै
देख नवका एतऽ बहैते हवा से आब नेहक गजल मरैते रहल

भाग गेलै कोन नगरक गली मे आइ देखा कऽ सतरंगी सपन
बाट जोहैते भऽ जेतै कखन की आँखिमे नोर बड भरैते रहल

उजड़ गेलै जखन कोनो उपवनक कोनटा परक गाछक फूल यौ
तखन सबटा कोयलक मधुर बोली संग ददकि हवा उड़ैते रहल

आइ खोजै छी अपन ओहि जादूगर कए फेर खेला खेलबै
अखन केने आश नेहक सखने भीतरे-भीतर जरैते रहल

बहरे मदीद
फाइलातुन-फाइलुन ( I-U-I-I+ I-U-I ) 3 बेर

48

खतम सब काज भेल हमर
स्वतंत्र मिजाज भेल हमर

कतौ जिनगी लिखि लिखि कै
खुशी पर राज भेल हमर

पुरान जँ गाछ , मज्जर नव
अपन तऽ अवाज भेल हमर

सरस पल भेल बड जिनपर
सदेह इलाज भेल हमर

सदिखन गजल लिखैत रहब
अद्भुत नव साज भेल हमर

बहरे-वाफिर
मुफाइलतुन U-I-U-U-I 2 बेर सब पाँतिमे

49

ओ बिसरि गेलै थिकए
पेम हेरेलै थिकए

बीच चौराहा जलि
राख धूल भेलै थिकए

आश अमृत के लै
जहर बनि एलै थिकए

झुनझुना हमर समझि
आइ ओ खेलै थिकए

पेम देबी बनि कऽ ओ
नोर बोझेलै थिकए

नै जबाबो भेटलै
अज्ञात दुख भेलै थिकए

फाइलातुन-फाइलुन ( I-U-I-I + I-U-I )
बहरे-मदीद

50

घोघ हुनकर उतरि गेलै
पवन संगे ससरि गेलै

आँखि रङि गेलै खुजल यौ
र प यौवन झाखरि गेलै

टोह मे ि ल मोन बगुला
राह सुनर उचरि गेलै

चउरचन मे चान पूजब
पावइन सब ससरि गेलै

जेठ मे म िमास एलै
गाि नव द ल मजरि गेलै

म िप केलक आकमण बड
काम मे सब लचरि गेलै

अंशु आशक झाि लेलक
कुकुर पर जे नजरि गेलै

पाप भेलै ,घोघ ससरल
अ ातके मन हहरि गेलै
फाइलातुन ( I-U-U-U )
बहरे-रमल

51

ओकर मूँह लागैए कते म्लान सन
कतऽ गेलै चमक ओ पुनमके चान सन

मौलाइल गुलाबक ठोर ओकर थकए
नोराएल कारी नैन जे वाण सन

केशो नै गुहल पसरल िरा पर थकए
देने पेटकुआया भेल अपमान सन

टोना कोन डाइन केलकै आइ यौ
मुस्की गेल हेरा कोयलक गाण सन

थ्वल मे आथ्या लागल ि थरह के अथ्यात
परदेशी थया भेला अपन जान सन

मफऊलातु--- मफऊलातु--- मुस्त्फइलुन ( I-I-I-U + I-I-I-U + I-I-U-I )
बहरे -कबीर

52

आब आश्यक पता पुिातै पाश्मा ऐठा
नै जति यौ कतौ घर श्मअ जाश्मा ऐठा

कखन िश्च लोक जतै चुप जानवर बश्मा
तोिबै जउर से लेतै ठाश्मा ऐठा

ि दहेजो तऽ महगाई कम कहा ि
ओझरी सोझरेतै श्मअ माश्मा ऐठा

बदलतै समय सगरो नवका जमाना
नै जँ बदलत तऽ ओ मरतै काश्मा ऐठा

जे जनम देलकै हुनका श्मसरलै सब
माि पर जनकके रखतै फाश्मा ऐठा

भाइ मे उठम-बजाि नै आब हेतै
आइ तऽ स्मगािके देबै आश्मा ऐठा

आश्या पर पाश्मा नेहक हँश्मा ढ़ाश्च श्चअ ने
अश्मत सब के श्मला सुख श्मअ साश्मा ऐठा
फाइलातुन-मफाईलुन-फाइलातुन
( I-U-I-I + U-I-I-I + I-U-I-I )
बहर-असम

53

अपन जीत होइत देखैत र प लागै यै
सए रास आशा देखैत पेम जागै यै

हजारो कि ी संगे जुि ए जँ एलौँ यै
डऽरो मोन मे जे ि ल अहा संग भागै यै

अहा चान ि ी वा ि  सुमन संग नै परतर

अमी मीठ सन बोली अहा के तऽ लागै यै

जँ हम देख लै ि ी पेम के मुँह सनक पोि ी
सबालो बनै जल्दी थमागो तऽ भागै यै

बरसतै जँ सदखन नेह रस हमर घर मे यै
सराबोर हेतै अमत आशा इ जागै यै

फऊलुन-मफाईलुन
बहर-तबील
( U-I-I + U-I-I-I )

54

बीतल क्षनक ओ प्यार कतऽ चश्ल गेल यौ
नेहक जुि ल ओ तार कतऽ चश्ल गेल यौ

जै तालमे हम भाश्ल गेलौँ साक्ष्वखने
मचलैत िल ओ िर कतऽ चश्ल गेल यौ
फूलोसँ कोमल घेटमे लटकैत जे
दू बाश्लके ओ हार कतऽ चश्ल गेल यौ

सब अंग ि गाि कला के कश्ल रहल
मि मास के ि ंगार कतऽ चश्ल गेल यौ

बदलैत मौसमके मजा नै आब ि
जेठक तपल ओ जाि कतऽ चश्ल गेल यौ

ि कल्पनामे बनल रचना माि ओ
ि अश्नतके ओ प्यार कतऽ चश्ल गेल यौ

मुस्तफइलुन
दीघि-दीघि-हिस्प-दीघि
बहरे-रजज

55

भेटल अहाके संग हमरा जिन्दगीयेसँ
ख्वाबनगी हमर लेलक करोटो तन्हाईयेसँ

हम एकरा की कहब छलि एहन भाग
बैसल छलौँ हम बाटमे दुपहरियायेसँ

गेलौँ ख्वाखरपर भेल जे एगो स्पर्शि
जुड़ि गेल शास पाण संगे तन्हाईयेसँ

छी ल्यानके पेटी अहा जादू गजल
शाइरक कोनो कलम लागै हँसियायेसँ

हम भेल नतमस्तक कखब कोना शब्द
शाइर अज्ञात छी संग हमरा जिन्दगीयेसँ

मुस्तफइलुन-मुस्फइलुन-मफऊलात
( I-I-U-I +I-I-U-I + I-I-I-U )
बहरे-सरीअ

56

बेश्च खेलक इमानो बजारमे
नाश्च रहलै इ दुश्चाया अन्हारमे

के अपन आब िश्च एत से कहू
नेह सबटा त बेचल हजारमे

भोर श्चक ु राश्च श्चक ु भेष सब घरै
के असल ि ै इ लोकक प ािरमे

भाइ नै भाइ के रहल आब यौ
लोक चुटकी लऽ रहलै दरारमे

बेश्च एलै जखन रोटी एक कऽर
अश्चात नै देख आशक सचारमे
( I-U-I +I-U-I +I-U-I + I-U )

57

सद्यखन अहीँ ि आनमे रहलौँ हमर
कखनो अहा ि आनमे रमलौँ हमर

शोध्यात अपन देलौँ जि ध्यखलौँ गजल
की पाध्या एको पेममे रचलौँ हमर

नै ि ाह भेटल कोन घर ि ै पेम यै
कहने ि लौँ जे झूठ सन कहलौँ हमर

ि ी कल्पनामे र प फोटो ि ापिने
की ध्यल सँ एको बेर मन गमलौँ हमर

ि ी ठेठ हम भाषा हमर बूझलौँ कहू
की अध्यात नेहक भाव के पढ़लौँ हमर

मुस्तफइलुन
I-I-U-I तीन बेर सब पाध्या मे
बहरे-रजज

58

उठलै करेजामे दरद्दया हो राम
बदलल थ्ययाके जे नजद्दया हो राम

डूबा कऽ नेहक तालमे संगे संग
लेलक बदह्म अपने डगद्दया हो राम

मिास लागै आब सौद्दान हरजाइ
बेचैन केलक बरड अन्हद्दया हो राम

ि फूल पसरल सेज काटै सब अंग
गरमी दऽ रहलै यै चदद्दया हो राम

कोना कऽ सम्हरत मन समझमे नै ऐल
बरड अद्दात तपाबै बदद्दया हो राम

मुस्तफइलुन- मुस्तफइलुन-मफऊलात
बहरे- सरीअ

59

क्कए एखन मोन हमर शाइर बनल ि
श्चखल जेकर नाम ओ एखन कटल ि

बनाबी हम र प जे शद्धक नगरमे
नगर ओकर नैनके लागै जहल ि

गजल जेहन हम श्चखै सबध्न िलौं से
कहा हमरा मोनमे ओहन गजल ि

ध्नक काटै रौद राश्चक चान ििकै
बहर मारै जान पि काटक बनल ि

कखन हारब जीवनक अनमोल पारी
अश्चत जा िश्च िि करै शेरक कहल ि

मफाईलुन-फाइलातुन-फाइलातुन
बहरे - सरीम

60

खाली हुनक बाते छलै फूल सन
बाकी बचल सबटा छलै शूल सन

खंजर बनल नैनक कमल कोर छल
ठोरक तऽ लाली आथा जि मूल सन

बदलल थकए सब आइ से जाथा नै
छल नेह काटक पैघ टा कूल सन

छै आब सपना देखब क्यछि सिन
भेलै कहा ओ हमर अनुकूल सन

जाएब हम पागल भऽ कहलौँ सते
छै अथात सब थकु भेल थामूलि सन

( I-I-U-I + I-I-U-I + I-U-I )

61

पाहुन कने अटक्क जाऊ गप लाख टाकाक अछि यौ
हमरा कने हामि मे लेने हामि कहबाक अछि यौ

जाएब चल्ला कोन सख्दखन रोकब अहा र कबै जे
काजर कने नैनमे अपने लग लगेबाक अछि यौ

ि ृगार ि ी हमर सबटा जानम अहा जाक्षा ख्राअ यौ
चुटकी स्मनूरक थया आ श्चकुली सटेबाक अछि यौ

परदेशमे जाइ ि ी कख्रया भेट हेबै अहा यौ
जी भख्र कऽ एखन तऽ नेहक सोना तपेबाक अछि यौ

आँचरसँ बान्हब करेजामे साख्र सब ख्रक ि कहब हम
हम हँसब आ अख्रात राजाके बर ड हँसेबाक अछि यौ

मुस्तफइलुन-फाइलातुन { दू बेर सब पाख्रामे}

बहरे-मुजस्सम वा मुजास

62

मोनसँ पढ़लकै श्चखलकै पोि ी हजार ओ
तैयो भटक्ष्क रहल ि बश्च बेरोजगार ओ

नै ि एतऽ कारखाना जाएत लोक कतऽ
सपना टूश्च गेल भीखे मागत बजार ओ

दोसर ठाम पेट काश्चकऽ कोना रहत बचल
ि पश्चलेसँ देह केने साँसे उघार ओ

बदलल लोक आब अपना अपनी तऽ होइ ि
भेटल रोजगार नै भेटै नै उि ार ओ

फहराएत सगर झंडा ताकत तऽ ि बचल
पर की करत बनल ि सब अपने श्चहार ओ

सोचै ि ी भऽ जाइ एखन एहन सन पलय
नै बचतै अश्चत इ भूखल देहक पि ार ओ

मफऊलातु-फाइलुन दू बेर

63

थ्व किीसँ सीि देखै िलौँ हम चान
घन श्वाश्वर मोनक िटै िलौँ हम चान

हेतै अपन फेरो भेट ओतै जा कऽ
ते जाथ्व आशा लगबै िलौँ हम चान

थ्वन भथ्व समाजक पहरा कतेको नयन
िथ्व संग तोहर भटकै िलौँ हम चान

लागै तरेगण लोचन पलक झपकैत
बश्वा मेघ घोघट लागै िलौँ हम चान

शुभ राश्वा फेरो भेटब अश्वाय नेहक लऽ
सब थ्वन अश्वात नव आबै िलौँ हम चान

मुस्तफइलुन-मफऊलातु-मफऊलातु
{दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व}
बहरे-सलीम

थ्वटही टेकलक अकासके
असगर जीत लेत तासके

आँङुर एक के तऽ काज ि
ि बलगर दमगर बासके

एहन लोक आश तोश्वि दै
बाबा बनल मोह पाशके

ि मानव जँ राम काज की
पाि र पूथ्म थ्वन उपासके

केवल कमिमाि अपन ि
आ ि अथ्मत उपज चासके
दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-हिस्म-दीर्घ-हिस्म-दीर्घ-हिस्म-दीर्घ

65

पूसक गाि‍ जका लागैए गाम हमर
बंजर परती जका लागैए गाम हमर

बफक्ि ढेला सँ ि‍पल नै जीयल तऽ मरल
भूतक कोठी जका लागैए गाम हमर

ि‍ मच्ला बूढ़ नेना ि‍कल गाम मा‍ि
बासी रोटी जका लागैए गाम हमर

नवतुश्या दौ‍ि लगबै शहरक पाश्अ लेल
हारल पारी जका लागैए गाम हमर

कश्या सरकार जागत हेतै  अश्मत भोर
कारी मोती जका लागैए गाम हमर

दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व

66

करेजक नस मासके पािर बना श्चाअ
गरीबक दुख ददकि मोहर बना श्चाअ

मरै ि बेटी जँ कोखे श्चन दहारे
पवनपुकि ािमके कोबर बना श्चाअ

श्चानेहक बीया असंभव भेल रोपब
मनोजक नद मोनके श्चषिर बना श्चाअ

कलह करबै भूख नेता देश्चयौ ने
जवानक सब बातके सोगर बना श्चाअ

अपन हेतै देश संगे पात हेतै
कटारक कर अश्चात के भोिर बना श्चाअ

मफाईलुन-फइलातुन-फइलातुन
बहरे -सरीम

67

रावणक मुतीसँ लुती नै मिझा सकैए
कंठ जेना ओस चाटिकऽ नै भिजा सकैए

आंत जुना जखन बिन्ह गेलै भुखे पियासे
िट सरकारी मदति भुख नै भगा सकैए

गेल गामक गाम जिरि सुर डाह भेल कोठी
ठोर मुस्की दैत हाि नै उठा सकैए

पाइके िहिया सिाना पर जँ सुतल नेता
ददिलोकक ओकरा कोना जगा सकैए

आब महगाई लऽ रहलै आइ जीब कोना
अिात कागज नै गजल कोना लिखा सकैए
2122-2122-212-122 (

कि बात एहन जे कना गेल हमरा
बसरल दरया जे जगा गेल हमरा

लि रौदमे अभरैत ओ कि केकर
शाइद न्हारे पर जा गेल हमरा

लि मोनमे नै कहब ककरो दरद हम
चचा हुनक सुते बजा गेल हमरा

नै ी नशेरी ि नशा रहके यौ
बहलै इयादक झर या गेल हमरा

देखल जखन फूटैत बरड बमक गोला
रोआँ जलि देहक घमा गेल हमरा

चाहै लिौं कोनो रचब गजल नेहक
पर अत नोरक िन खा गेल हमरा

मुस्तफइलुन-मुस्तफइलुन-फाइलातुन

69

हमर नेहक सजा जिनगी जि देलक
गीत ददकि बना जिनगी कना देलक

ि अनथ्यनहार अपने नाम एखन यौ
खेल झूठक जमा जिनगी हरा देलक

नोर बहतै तऽ हमरे पर हँसत दुनिया
कसम झूठे गना जिनगी सखा देलक

जहर के पेम मे खूनो जहर भेलै
दात थरहक गि जिनगी थषा देलक

गाम उजलि शहर कानल हँसल जतऽ ओ
भवर एहन फँसा जिनगी बझा देलक

नै मवाली अहा हमरा कहू देखकऽ
नेह पागल बना जिनगी डरा देलक

जीब कोना बचल जिनगी कहू एखन
अआत मौतसँ सटा जिनगी मुआ देलक

फाइलातुन-मफाईलुन-मफाईलुन
बहरे-मुशाक्कल

आँचरक ावि श्वासरल नै आब जेतै
अंङुरी ि्टल टहलल नै आब जेतै

देखलौँ मा जखन ददविाण सहले
ददिदोसरक देखल नै आब जेतै

गीत तूँ तूँ गजल आनंदक लहर ि
कात सुरसश्वक ािलि नै आब जेतै

ियक्रि बानगी मा तूँ एश्ज्ञ जगमे
नेह कैलाश बहकल नै आब जेतै

डाट तोहर तऽ देखेलक बाट हमरा
तोर िथ्य िाथ्रि भटकल नै आब जेतै

हमर अपराि हेबे करतै बहुत मा
र सलौँ मा तऽ चहकल नै आब जेतै

फाइलातुन-मफाईलुन-फाइलातुन

बहरे-असम-

71

भूख जालि लोक कोना हँसि सकैए
नोर कानल लोक कोना हँसि सकैए

देखने जे होइ अ ी अपन लोकक
दद जागल लोक कोना हँसि सकैए

लोभ जागल मोह मोहल लोक हँसतै
शास काटल लोक कोना हँसि सकैए

जहर बनबै जे कहा ओ नोर बहबै
जहर चाटल लोक कोना हँसि सकैए

दद दै जे ी कने अपने लऽ देखू
चोट लागल लोक कोना हँसि सकैए

राख हमरो नोर अपना आँख सोचू
अघात मारल लोक कोना हँसि सकैए
फाइलातुन
I-U-I-I तीन बेर सब पाखामे
बहरे-रमल

72

हमर मुस्कीसँ हुनका आथा लागल यौ
हुनक कनखीसँ तरका आथा लागल यौ

चुनावक गीत भाषण भरल झूठक ि
अपन मुँह कहब कुनका आथा लागल यौ

उखाि ब लाश ग िलाहा हमर मरजी
अहा बाजब तऽ ब िका आथा लागल यौ

नगरमे बनल मुदा भूण हत्या ि
इ वफक्रि सद िमटका आथा लागल यौ

कहत भोरे दऽ पेटोलक समा िी ओ
ज िल ि िउर सँ ब िका आथा लागल यौ

दुखाइत नस अपन हा ि तऽ नीके ि
प िल दोसर सँ पटका आथा लागल यौ

अझा देलौँ पञ्चल सब आथा घी ढाबकऽ
"अमत" ि फेर नवका आथा लागल यौ
मफाईलुन
U-I-I-I तीन बेर सब पाश्ता मे
बहरे -हजज

73

बेटा अपन मुखकि सोटासँ हम अकि ि ी
बाबाक फूटलहबा लोटासँ हम अकि ि ी

पेटोल कखनो तऽ कखनो गैस सब्जी महग
काला बजारी करै कोटासँ हम अकि ि ी

बेटी कपारपर ि ैश्चान्ता इ सश्चखन बनल
कश्चायाक नेहक भरल मोटासँ हम अकि ि ी

ि ै आश्चा ि रिती बनल नै पाश्चा आकाश मे
पीबैत कारी ि ुआँ मोटासँ हम अकि ि ी

दै यै भगा काज ि ाि जीब कोना बचब
ि ै खसल टाकाक लंगोटासँ हम अकि ि ी

रचना करै ि ी तऽ खचा होइ यै नै मुदा
अश्चाि ी अश्चात एतऽ दस गोटासँ हम अकि ि ी

मुस्तफइलुन-फाइलुन दू बेर
बहरे-बसीत

बिसरलौँ जग थिबै ि ी बोतल शराबक
मनक मारल चुमै ि ी बोतल शराबक

हमर ि जीत तखिखानामे थियाबू
अपन नामे लिखै ि ी बोतल शराबक

हमर ि जान ई अंगुरक पानि नै ि
बनै शोणित कनै ि ी बोतल शराबक

शहर के कोन मैखान जतऽ थिलौँ नै
जहर ददकि कहै ि ी बोतल शराबक

गिलाससँ आब पल भरि दोस्ती कऽ देखू
घर स्वागकि रहै ि ी बोतल शराबक

जनम भेलै इयादक तखियेसँ झूमैँ
अखिात संगे रखै ि ी बोतल शराबक

मफाईलुन-मफाईलुन-फाइलातुन

बहरे-करीब

75

चल श्नखल जाए कोनो शराबी गजल
नब रचल जाए ददक्रि कटारी गजल

भश्र ले कलममे स्याही शराबक आइ
अंगुरक जऽलमे घोरब गुलाबी गजल

बहुते चलै ि ओकर सबालक नजर
चल आइ भेजब पश्नलुक जबाबी गजल

दार सँ जबै ि हम जुआनी अपन
सबके थ्रया दी एखन हजारी गजल

ि नाम ओकर दोसर नशा के नगर
ते जाइ ि मैखाना सलामी गजल

लागै थ्रलासो एखन नशामे गऽजब
ि अश्नत कोनो पेमक कहानी गजल

मुस्तफइलुन-मफऊलातु-मफऊलातु

बहरे-सलीम

76

नै जीयत शराबक नशा लागल लोक
कोना हँसत कोनो दुखक खेहारल लोक

काठी फेकबै आश्र उठतै बोतलसँ
नै रहतै जवानी अपन जालि लोक

के कानत कतौ आन लेए कऽह एतऽ
नै ि समय ककरो अपन भागल लोक

दै ि सास कखनो अपन ािखा आब
एहन नेहमे ि श्रकए पागल लोक

जतिै एक दोसर सँ श्रनगी मे जखन
कटतै घेट अपने सबर हारल लोक

क्ण भश्र के नवल दोस्त नै चाही आब
हमरा अश्रत चाही अपन झालि लोक

मफऊलातु-मुस्तफइलुन-मफऊलातु

बहरे-हमीद

77

जवानीके शराबसँ घोरल देखू ने
जँ चाही आधा िती बोरल देखू ने

कतौ ि बाझ ध्अनगी आ कतौ टूअर
अपन गामसँ तऽ नाता जोश्चि देखू ने

बचल ि श्चकस्त ध्अनगी रोग मे कोना
गरीबक टोल गाि मोश्चि देखू ने

कनक कोठी जिल रावणक जानै ि
अपन मोनक अहं के फोश्चि देखू ने

कने हँस्अयौ मनुख जीवन जँ अश्चि भेटल
अमीरी के नशा सब िश्चि देखू ने

मफाईलुन
U-I-I-I तीन बेर-
बहरे- हजज

दुख जिनगीक मेटाबऽ एलै नव अंशु
बिसरल बाट देखाबऽ एलै नव अंशु

टूटल खसल घर जलि दाही रौदीसँ
फेर आश जोड़बऽ एलै नव अंशु

हेराएल मुस्की नयन नोराएल
पाडि़ ठोर मुस्काबऽ एलै नव अंशु

सूतल नेह मातृत्व मौलाइल सगर
पेमक ओस चमकाबऽ एलै नव अंशु

टूटल तार नेहक कतौ देखत आब
प्यारक डोर नमराबऽ एलै नव अंशु

हेतै अपन मिथिला अपन राजक भोर
मन मिथिलाक िािकाबऽ एलै नव अंशु

मफऊलातु-मुस्तफइलुन-मफऊलातु

बहरे- हमीद

79

ि थ्यान्हल पि तैयो भटथ्क गेलौँ एतऽ
बीच्चे सकि पर फँथ्स लटथ्क गेलौँ एतऽ

ढथ्ह गेल सबटा आशके नवका महल
कपि ा सलि सदृश फसथ्क गेलौँ एतऽ

हम कल्पना के लोकमे केलौँ भमण
सपने जका एखन ठमथ्क गेलौँ एतऽ

पेमक तऽ पथ्रभाषा कहा कखनो पढ़ल
थ्याष्ुर भऽ गेलौँ ते सरथ्क गेलौँ एतऽ

अपने सँ बथ्चायाइत रहै ि ा सथ्दखन तऽ
अपनेक ि ा मारल सनथ्क गेलौँ एतऽ

थ्जनगी कहा ककरो अपन कखनो भेल
पातर कमानी झट लचथ्क गेलौँ एतऽ

पतझर जका झथ्र गेल ि सबटा अंग
जतऽ अथ्मत भटी मे झरथ्क गेलौँ एतऽ

बहरे सरीअ

हमर ध्यानगी जेल लागै बंद घऽरमे
सटल जीवन गेल पग पग गरम ि ऽ िमे

बालु सद्ध्खन उ िल ध्यानगी के सतह पर
भटक्क गेलौँ जखन समाजक पैघ चऽरमे

चाहलौँ जतऽ रोध्य नामक लेब उपजा
ओतऽ आशा बझल दमनक तेज हऽरमे

नै अपन ि ैएतऽ आ नै मानलक अ ि
एसगर ि ी प िल झूठक चार तऽरमे

कटत कोना रैन ध्यानगी बचत कोना
पैघ लागल ि ै गह ब ि एक कऽरमे

नेह नै भेटल मुदा ददक्ि उपज बड
अ ात ध्यानगी चढ़ल फासी यैह डऽरमे

बहरे रमल

81

बसलौँ अहा जखन मनमे हमरा चमकि गेल थ्मनगी
अनमोल नेहक उलि खुशबूमे महकि गेल थ्मनगी

मायिमाखैत खुजलै जखने  कमल ठोर रानी
लवणी सँ लिकैत तािी बूझू लिकि गेल थ्मनगी

गाबी अहा गीत मोने मोने जँ तैयौ गजब िन
मुस्की दऽ देलौँ चहटगर अमृत झमकि गेल थ्मनगी

नीरीह जानबर बिआ नैनक माथ खेलौँ सधखने
फूले लै बाण नैनक तेए िधकि गेल थ्मनगी

सगरो अहा के श्वखल िथ डूबल कलम नेहमे यै
गाबै अभात गजल श्वखलक देखू दमकि गेल थ्मनगी

बहरे मुजास

82

युग थ्वजानक शोि एखन कऽ देखै ि ी
अपन मन परबोि एखन कऽ देखै ि ी

रहत जगमे अमर मानव मरत दानव
नव मशीनक शोि एखन कऽ देखै ि ी

भाग बनतै माि दस खा कऽ रसगुल्ला
शथ्कत के हम बोि एखन कऽ देखै ि ी

सत सी ओ टू बनल झूठ आँक्सीजन
काबनिक अबरोि एखन कऽ देखै ि ी

डाथ्व हम संस्कार संस्कृथ्व मुस्कै ि ी
मान लेल कोि एखन कऽ देखै ि ी

देश चलबै ि ी तऽ सब राज के देखू
जोथ्ग कर अनुरोि एखन कऽ देखै ि ी

बहरे-कलीब

83

गजल ि ी गीत ि ी
ि ी अहा पीत ि ी

रंग सभ भरल तन
मीठ ि ी तीत थि

आथि नै बनल ि ै
सब थ्वशक जीत ि ी

शान ि ी जान ि ी
ि ी अहा मीत थि

फाइलुन
212 - 212
बहरे मुतदाथ्वक

84

कते दी टी आर पी नेहक पोगामक कहू ने
िलैए िल* मािकेलौँ थ्कए ई नाटक कहू ने

िपल िल फोटो अहा के करेजक नव कैमरा मे
गिल सबटा राज कागतक पसरल राखक कहू ने

जखन हँसतै हमर थ्मनगीक सासो नोरपर हमरे
तखन पूिब हाल सबटा अहा के बाटक कहू ने

बजारक ि◌ भाव गरमे मुदा नेहक बहुत कम ि◌
थ्कए नेहक कूंड मे ढारलौँ घी थ्वरहक कहू ने

सगर हाि◌ के भ्मलेनाइ ब्मन बातक ठीक नै ि◌
"अभ्मत" के की करत ठेकान कोनो मनुखक कहू ने

मफाईलुन-फाइलातुन
1222 - 2122 दू बेर
बहरे मजथ्अ

85

आशक डोर टूटल हार भेले बुझू
डरलौँ पूसमे बड जाि भेले बुझू

चलबै बाटपर रोि तऽ भेटत बहुत
ठेससँ डरब बेरा पार भेले बुझू

गाि घर बनै टापू जँ अजनि रहल
खेबै मास नै फलहार भेले बुझू

कश्आएल लोकक पूि नै आब ि
जोहब बाट जतऽ उदार भेले बुझू

बेसी नीक नै ि सत्यवादी बनल
बदलब नै तऽ कारागार भेले बुझू

मफऊलातु-मफऊलातु-मुस्तफइलुन
2221 2221-2212
बहरे कबीर

86

ददकि िर नै भेटै कतौ हमरा तऽ
आँखक नोर नै रकै कतौ हमरा तऽ

जेठक रौद झकिाबै मनक शास
रहक जेठ नै ि कतौ हमरा तऽ

कैक्टस गलि लि हमरा समय समयपर
फूलो आब जखे दै कतौ हमरा तऽ

टूटैए पहा खसल पारि बहुत
शोात मा के फो कतौ हमरा तऽ

हँसलै लोक देखाबा करै नोरक तऽ
"अतक" घेट के घोटै कतौ हमरा तऽ

मफऊलातु

2221तीन बेर

87

गजल

नेह सागरमे थ्कनारा जँ नै हेतै
संग भथ्र जीवनक थ्रान्ता जँ नै हेतै

सात जनमक बनल बंि‍न तऽ नै टूटत
डोर थ्वशासक इ आि‍ जँ नै हेतै

हाल हमरा सनक ककरो तऽ नै हेतै
फेर आँथ्खक ओ इशारा जँ नै हेतै

भीि‍ लोकक नै बढ़त मरत नै बेटी
ि‍द के अथ्िकार बेटा जँ नै हेतै

चाह ककरो तम अन्हारक तऽ नै रथ्हतै
राथ्त मे लाखौँ थ्सतारा जँ नै हेतै

हमर नोरक गजक नै ठोर पर सजतै
पि‍ नेहक "अथ्मत" सादा जँ नै हेतै

फाइलातुन-फाइलातुन-मफाईलुन
2122-2122-1222
बहरे-- कलीब

88
कारी मेघ नव उमेदक भोर केलक
कोमा पलि मनुख जेना सोर केलक

उधियाइत पवन सटै देहसँ तऽ लागै
आनत पि पाहुनक ते शोर केलक

जनता लाख झूठ अशासनसँ बेदम
देशक लेल मेहनत जी तोि केलक

मोनक मैल नै करै ि साफ गंगा
कारी चाम पोथ्रा पौडर गोर केलक

दोस्ती मािं लेन देनक लेल एखन
पाटी आ चुमाउनक सब जोि केलक

पेमक सजल नव उमेदक खंडहर जतऽ
ओतै "अमित" गजल नोरे नोर केलक

मफऊलातु-फाइलातुन-फाइलातुन
2221-2122-2122

89

थ्कि बात एहन भेल ि
घर घर तऽ रावण भेल ि

बम फोथ्रि िाउर देश ि
जथ्रि देह जानि भेल ि

थ्रय नै थ्ररह जनमै बहुत
सथ्र ददिगायन भेल ि

थ्रानगी भऽ गेल महग कते
झकिैत सावन भेल ि

दस बात सूनब की "अथ्रत"
सब ठाम गंजन भेल ि

मुतफाइलुन
11212 दू बेर
बहरे -काथ्रल

90

आखर जखन र पक श्वाखल

उपमा सजल फूलक श्वाखल

आदशर्ि ि र पक बनल

काजर नयन कातक श्वाखल

सरगम अहाक स्मर सजल

मुस्की नगर तानक श्वाखल

कहलौँ करेजक सब कहल

श्कि बात हम राजक श्वाखल

चमकैत नभ मे ि ि चान

तारा गजल हाटक श्वाखल

मुस्तफइलुन-मफऊलातु

2212-2221

बहरे- मुन्सरह

हजल

1

हरदी-चुन-करीखा लगाउ हुनक मुँहपर
चुगला सनक फोटो बनाउ हुनक मुँहपर

स ि ल फाटल चटी वाला बोरा सँ अंगा बनाबू
एका ि लोइया कादो लगाउ हुनक मुँहपर

बेगक माला चाहे जुता कए हार सँ हो स्वागत ,
कश्वकबा कुकुर हुलकाउ हुनक मुँहपर

होली ि तऽ शराब हेबाक चाही ने श्वनका लेल ,
थ्वल्लू वाला महुआ बरसाउ हुनक मुँहपर

कतौ सँ एकटा बतूपकैर कए लेने आबू यौ
जनतासँ बारह बजबाउ हुनक मुँहपर
वर्ण-18

2

कश्राया कए माश्रसँ सब िस्त भेल ि
हकश्र चलै जेना भेकम भेल रेल ि

चाश्र बजे भोरे पाश्र उझश्र उठाबश्रि ,
भऽ जाइ िी स्टाटबुझू पाश्र नश्र तेल ि ,

चाहक जोगार एगो दोसर हाि झाि
श्रकचेन कए काज सँ कहू कोन मेल ि

स्कुलक दौि सँग सब्जी बैंक बजार जेबै
जीनगी लागै यै ओलंश्रक कए खेल ि

होइ साफ झाि सँ बेलनाक माश्र खाइ
गदि पर ि कैंची घर बुझू जेल ि

नैहर कए िमकी आतंकी जेका लागै
बम बलास्ट सन बाजब ,जान गेल ि

श्रबै िी जहर मुदा बचा लै यै बत कऽ
लोकल टेन जेका जीनगी ठेलम-ठेल ि

श्राखै िी पेमक गजल ओकरे डर सँ
कंठ पर चश्र श्राखेलक वैह देल ि

मरऽ चाहै िी भाई मदद कर बताबू
अश्रात कतऽ लागल मृत्यु कए सेल ि
वर्ण-15

3

यद्य बैसब कोठलीमे लागत बेशी रंग यै
तोश्चि कऽ केबार मोश्चल लगा करब तंग यै

बनरी सन मुंह बना देब अहाक भौजी यै
काश्चका कादो लगा देब मोन हेएत चंग यै

बश्चन कए कते देर नुका क रखबै यै अहा
ब िका श्चाकारी जेका हमहूँ ि ने ि ी ढंग यै

दौ ि -दौ ि क खता मे पटैक क रागब हम
पेम सँ खा श्चाअ एकटा श्चठका प ि भंग यै

लगबा श्चाअ दुनू गाल पर अबीर आ रंग
डूश्च जाऊ भौजी अहा मस्ती मे अश्चात संग यै
वर्ण-17

4

 ध्कनकोसँ उिार लेल गेल हँसी
उलटा काज क बिका देल हँसी

कथ्यखा - चुना लगा अपने मुंह मे
अपने सँ मुखबिनल भेल हँसी

गदहाक भैया बनेलश्र आइ ओ
मुखत्ति सँ मरखाह बकलेल हँसी

कोयला लगा मंध्दर ि ध्व दौिला
कथ्यया लग सभहक फेल हँसी

बजेलक जजमान पूजा के लोभ
दौिला खसला भेल अलेल हँसी

हाि उठाऊ जे पैघ ध्यदान िी से
अभ्रात .लगायत आइ सेल हँसी
वर्ण-13

5

आगू नाि नै थािु पगहा
देखयौ कोना कूदै गदहा

होर लागल फल-फूल मे
के सब सँ बिका बतहा

मुखिखवस मुखकि नामे
केरा बआ गेलै यै गदहा

बतीस माचिके सम्मेलन
मुखीस्तान मे हेतै सबहा

पाइ कमाइ ि चाख लाख
मुदा सव्जी लेलआ दबहा

चुनू सुतल अपन घर
मुदा उठल जा कऽ भूतहा

मोनूआँ चढ़ल साइकल
उठेने माि पर बोझहा

बीस टका मे दजनि केरा
मुनू लै ि बीस मे अदहा

माि उठेने िलै ि गोनू
खसलै खदा , भेलै पटहा

चुनू मुनू गोनू वा अमत
कहू के िथी पैघ बतहा

वर्ण-10

6

भेल थकि बात एहन जे कना गेल हमरा
हरासंखनी कथाया मा बि गेल हमरा

ओना त ि अमावश्या सन कारी केश ओकर
मुदा ओस मे फलि चोर पटा गेल हमरा

ओना नाम ि शाती मुदा घर ि माकि हाट
ि ऽ टा बरदक थलवान बना गेल हमरा

फोटूये देख परान उथी गेल ि लि हमर
से मा पर बंदूक राख उ ि गेल हमरा

सब थन कहै यै जे प्यार नै करै ि हमरा
जँ भागौँ तऽ साँसे देह दात गा ि गेल हमरा

माइ के बजाबे भाइ के बजाबे सब थन ओ
चाउर दाल आँटाक भाव बता गेल हमरा

भने फूलेसरा कुमारे रख गेल भाइ सब
अमत ओ तऽ जीते जी ि दि करा गेल हमरा
सरल वार्णक बहर
वर्ण-17

र बाइ

1

पोखश्च नै दौि ति नदी के िरि िी
नै िी मािि कलम सत्यक हथियार िी
िी जानक अिहि सागर मोती भरल
अपटी खेत मे उपजल श्च िरि िी

2

डेगे डेग पर थ्थरहक गिलि िलि कंकर
परती खेत करेजक भरल िलि कंकर
सबटा खाद पाश्च भरोसक क्यि िभेल
लुबिलि काट सन ददिफिलि िलि कंकर

3

ि जाथ्थ रहल देश आ जाथ्थ रहल गाम
खेती अपन करै अपन लोक बसल गाम
जागल युवा नव शश्च्तके संचार संग
बनतै श्चथ्थिला आब मैथ्थिली पढ़ल गाम

4

सश्च्च लेबै ददिजिँ घाव कोनो फूटत तऽ
एश्च्चसँ बेसी ददिजिखन मीत र ठत तऽ
कोनो बोतल टूटत तऽ शोर नै हेतै
हेतै शेर तखने जखन नेह टूटत तऽ

5

कोनो मीत जखन आनगी जा दै यै
कोनो मलहमसँ नै घाव सुखा दै यै
सबटा बाग उजरि जाइ ि पलमे
खूनक बूँद जँ कागज पर बहा दै यै

6

खगता ि एकटा बाट बटोही के
शासक मशाल जिने जोिी के
नै पेमसँ तऽ लक्ष्मि कऽ अधिकार भेटत ने
नै देतै तऽ िनिब भिला रानी के

7

िनाक डाग चलै तऽ उठल की खसल की
पाक बोझ खसै तऽ मरल की जीयल की
जानपर जखन पि तऽ दुआयाक होश नै
भूखसँ तिपल लेल तरल की उसनल की

8

बाजल लाश आब पाच काठी चाही
बूढ़ी काकी कहैए लाठी चाही
एहन अंतीमो समयमे कि चाही
ककरो आग ककरो खोरनाठी चाही

9

भरि राि तरेगणसँ बिायाइत रहलौँ
चनासँ नैन भला लजाइत रहलौँ
रंगीन िलै वफराक इन्द्रिनुष
नेहक लऽ गमी हम ठंढाइत रहलौँ

10

जे सोचसँ बाहर एहन पहेली ि

भीतर झलि बाहर रागल हवेली ि

हमरासँ जुआ आश राखू जीतक आब

किआक तऽ नै खरगोशक सहेली ि

11

अनगीक िट बाटपर संगी चाही

जीबाक लेल कने िट हँसी चाही

रान्हल अपच सुपच कमसिखन भेटत

उमरक पलि माथ लेल लाडी चाही

12

चाही नशा एगो मीठ मुस्की संग

चाही पमाण तऽ इयादक चकी संग

भोरक नव भूर कबा बआ जगाबू तऽ

चाही नयन वाण एगो चमकी संग

13

भेटल अहाक संग इ गोटलानी ि

भासैत नाहक इ पेम कहानी ि

ताकत बढ़ गेल चान ि जाएबाक

ि जोश जीतक वा अकि जुआनी ि

14

कखनो पाआ कखनो इजोत लेल अनशन

िटसँ िट बातसँ सगरो भेल अनशन

ि हथियार बनल जीतक गारंटी संग

राजक नीआ के ि एगो खेल अनशन

15

सपना सपने रह्ल गेल आजादी के
लागल हकिी सब्खन तऽ गुलामी के
पल्नेलि थदेशक आब भेल देशक
थ्जम्मेदार दुनू  देशक नाकामी के

16

अहा सन मीत सँ एतबे पीत चाही
जै नै ब्सस्ब सकी एहन अतीत चाही
हारब हम मजा हमरा आएत मुदा
सब्खन अहाक सब मोि पर जीत चाही

चंदन कुमार झा (१९८५- ), थ्यता-ि ी अर ण झा, माता-मीना देवी, गाम-सि रा, मदनेशरसि ान, पोस्ट-मदना, ि ाना-बाबूबरही, थ्यला-मि ुबनी। जन्म-सि ान-थ्यसवार (मामा गाममे) नाना- स्व. सुशील झा (राजाजी), आरंथ्यिक थ्यक्षा-मामा गाममे (१०वा ि थ्य), आगाक थ्यक्षा- अन्तर-स्नातक (वाथ्यणज्य) एवं स्नातक (वाथ्यणज्य) चंरि ारी थ्यिलिा महाथ्यवदि ालय दथ्यभंगा सँ। थ्यतीय-पबंि न मे थ्यडप्लोमा (वेथ्यलंगकर इन्सटीच्युट आफ मैनेजमेन्ट, मुम्बाई) सँ। व्यवसाथ्यिक जीवन- एकटा बहुराष्टीय कंपनीमे लेखा-थ्यवभागमे कायरित। पथ्यरवार-थ्याम मध्यम वगीय कृषक पथ्यरवार।
मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)]

अपन गप
१
हम साथ्यहत्यक थ्यवदि ाि ी नै ि लौ। तैँ साथ्यहत्यक बहुत रास बात, व्याकरणसँ अपथ्यरथ्यचत ि ी। तखन सभथ्यदन साथ्यहत्यसँ लगाव रहल। साथ्यहथ्यत्यक पोि ी-पथ्यत्रका पढ़ब सथ्यदखन रुथ्यचगर लगैत रहल अथ्यि।
कोनो सामान्य जनमानस जेका हमरो मोनमे अपन आसपासक समाज, वातावरण, इत्याथ्यदक पथ्यत अनेकानेक भाव उत्पन्न होइत रहैत अथ्यि। बहुत रास भाव थ्यबतैत समयक संग-संग उथ्यिया जाइत अथ्यि। तखन ओइमे सँ थ्यकि ु अक्षरक रुपमे कागजपर अवतथ्यरत भऽ कखनो कथ्यवता तँ कखनो कि ा, कखनो गजल तँ कखनो रुबाइ आ साथ्यहत्यक आन-आन थ्यवि ाक रुप ि ारण करैत अथ्यि। हम बेशी थ्यकि ु नै कहए चाहब कारण जतेक कहब ततेक गलतीक संभावना बथ्यढ़ जाएत। बस एतबे कहब जे हमर "मोनक बात" आम जनक मोनक बातसँ मेल खाएत आ सामाथ्यजक सरोकारसँ जुि ल हमर थ्यचन्तन समाजके आगू लऽ जएबामे सहायक थ्यसद्ध हएत से आशा रखैत ि ी।
थ्यजनकर अनुकंपासँ कथ्यहयो उरुण नै हएब- ि ी थ्यवजयकात थ्यमि (अध्यापक)-कन्हई, ि ी शंभूनारायण झा-सुसारी, ि ी ताराकात झा (संपादक, थ्यमथ्यिला समाद), डा० ि ीरेन्द्र नाि थ्यमि (मैथ्यिली थ्यवभागाध्यक्ष, सी.एम.कालेज) क संग-संग संपूणि थ्यवदेह पथ्यरवारसँ भेटल स्नेहसँ अथ्यिभूत ि ी। ि ी गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनथ्यचन्हारक लेल कोनो शब्द नै भेथ्यट रहल अथ्यि जाथ्यहसँ हुनकर ि न्यवाद कही। अंतमे हम अपन समस्त पथ्यरजन-पुरजन, थ्यजनकर थ्यबना हमर अथ्यस्तत्वक कल्पनो नै कएल जा सकैत अथ्यि, क पथ्यत अपन कृतजता व्यक्त करैत सुथ्यि कतासँ एतबे पाि ना करब जे सभक स्नेहक संग-संग हुनकर कृपा एथ्यहना भेटैत रहए।
२
मैथ्यिली गजला- हमरा दृथ्यि मे..

गजलक पादुभाव अरबी भाषामे भेलै, तदुपरात एकरा उदूर् अपनौलक आ उदूर्क शाइर सभ गजलके विश्व साहित्य-जगतमे बेस चिन्हार बनौलक। पारंभमे गजल माने पेमालापे बूझल जाइ छलै मुदा बितैत समयक संग शाइर सभ एकरा सामाजिक सरोकारसँ जोड़ि गेलाह आ आब पाया सभ विषय पर गजल कहल जाइत अछि। भारतमे गजलके जे ख्याति भेटलै तइमे उदूर् गजलक योगदान अन्यतम छै। आब तऽ उदूर्-हिन्दीक अलावे आन-आन भारतीय भाषामे सेहो गजल बेस लोकप्रिय बनल जा रहल अछि। मेहदी हसन, जगजीत सिंह, गुलाम अली, पंकज उदास, हरिहरण आदि गायक अपन गजल गायकी लेल जग-प्रसिद्ध पौलनि।

मैथिलीमे गजलक जन्मदाता पं. जीवन झा के मानल जाइत अछि। सन १९०५ ईस्वीमे ओ सवर्पथम मैथिली गजल लिखलनि। ऐ साल मैथिली साहित्य जगतमे एकटा आओर ऐतिहासिक काज भेल छल जे जयपुर सँ मैथिलीक पथम पत्रिका "मैथिल हित साधन" बहराएब पारंभ भेल छल। तैँ मैथिली पत्रकारिताक पारंभ वषर् सेहो ऐ साल के मानल जाइत अछि। तखन फेर हम सभ मैथिली गजल दिस घुरि आबी। पं.जीवन झाक बाद मैथिली मैथिली साहित्यमे अनेक गजलकार भेलाह। श्री गजेन्द्र ठाकुर मैथिली गजलक ऐ युगके "जीवन-युग" कहैत छथि (देखल जाए-"अनचिन्हार आखर" मे हुनक आलेख)। करीब १०७ बरखक इतिहासमे मैथिली गजल मैथिली साहित्य जगतमे अपन उपस्थिति बेर-बेर दजर् करबैत रहल अछि। मुदा दुभार्ग्यवश ई कोनो ने कोनो कारणवश कहिआएले रहल अछि। मैथिली गजलकारक मध्य गजलक व्याकरणक मादे अज्ञानता सेहो एकरा एकात हेबाक पमुख कारण रहलैक अछि।

मैथिली साहित्य पर संस्कृतक पभाव ककरो सँ छिपल नै छै। अधिकाश मैथिलीक साहित्यकार लोकनि संस्कृतक पण्डित रहलाह अछि। एक दिश जहा ऐ सँ साहित्यिक समृद्धि भेलै ओतहि दोसर दिस एकटा बड़का नोकसान सेहो भेलै जे मैथिल सवर्हारा वगर् मैथिली साहित्य सँ कटैत चलि गेल। पाया सभ भारतीय भाषा पर संस्कृतक पभाव कोनो असामान्य बात नै छैक से मैथिली भाषा-साहित्य लेल सेहो ई कहियो उकर नै बनल मुदा मैथिली व्याकरण पर अंगेजीक पभाव एकर सवर्मान्यताक बाटमे बाधक भऽ सकैत छै से हमरा शंका अछि। खएर ई सभ अत्यंत संवेदनशील विषय छै, से ऐपर सभ विदान लोकनिके गंभीरतापूवर्क सोचबाक चाही।

मैथिली गजलक विकास-यात्रा चचार्-कममे आगा बढ़बैत आब किछु एकर व्याकरणक विषयमे चचार् करी। बीसम शताब्दीमे मैथिलीमे अनेक गजलकार भेलाह आ हुनकर गजल सभ विभिन्न पत्र-पत्रिका आ पोथीक रूपमे पकाशित-पसारित होइत रहल। मुदा ऐमे बेशी गजल सभ गजल-व्याकरणक मानकक अनुकरण नै करैत अछि आ कखनो काल कोनो-कोनो रचना तँ एहनो बुझना जाइत अछि जे ओकरा जबरदस्ती गजलक श्रेणीमे राखल-गानल गेल छै। मैथिलीक ऐ पुरान पीढ़ीक गजलकार सभमे बहुतोके एखनो गजलक अरबी बहर आधारित व्याकरणक परिकल्पना आ ओकर अनुपालन कऽ गजल लिखबाक तकर्पिथ नै रहल छन्हि जे दुभार्ग्यपूणर् अछि। जखन अंगेजीके आधार मानि मैथिली व्याकरण लिखल जा सकैत अछि तखन अरबी-फारसीक गजल व्याकरणके मैथिली भाषानुरूप बना मैथिली गजल दारा स्वीकायर् किए नै कएल जा सकैत अछि? ऐसँ मैथिली साहित्यके विस्तार भेटतै, से हमर मानब अछि। मैथिलीमे छंदोबद्ध रचनाक परंपरा रहलैक अछि मुदा किछु साहित्यकार मात्र "बिंब" आ "भाव"के महत्वपूणर् बुझैत छथि। ओ सभ छंद, अलंकार इत्यादिके महत्वहीन कऽ बुझैत छथि मुदा एखनो सत्य यएह छैक जे मैथिली साहित्य जगतमे छन्दोबद्ध आ अलंकार युक्त रचनाके श्रेष्ठ मानल जाइत छैक। बिंब आ भावक बिना कोनो रचनाक अस्तित्व संभव नै मुदा छंद, अलंकार आ व्याकरणक आन-आन मानक एकटा रचनाके उत्कृष्ट बनबैत अछि ताहिमे कोनो दूमत नै हेबाक चाही। ओना हम एकटा गप्प फिछ्छा

दी जे हमहूँ छंदमुक्त पद लिखैत छी मुदा पयास हरदम रहैत अछि जे छंदोबद्ध लिखी। गजल स्वाभाविक रुप सँ कहल जाइ छै आ एहिमे गेयता सेहो हेबाक चाही तँ बहरक (छंदक) अनुपालन यदि एहिलेल अनिवार्य छै तँ ई नीक बात छै।
मैथिली गजलक हेतु एकटा मानक व्याकरण तैयार करबाक लेल श्री गजेन्द्र ठाकुर आ श्री आशीष अनचिन्हार जी दारा कएल जा रहल पयास स्तुत्य अछि। ई दुनू गोटे कमशा "विदेह-मैथिलीक पथम ई पाक्षिक" आ "अनचिन्हार आखर" ब्लॉग क माध्यम सँ मैथिली गजल व्याकरणके जन-जन तक पहुँचा रहल छथि। खास कऽ आशीषजी जाहि समर्पणसँ मैथिली गजलक विकास लेल लागल छथि आ नव-नव गजलकार के पोत्साहित करैत छथिन्ह से एकटा ऐतिहासिक पयास अछि। हुनकर "अनचिन्हार आखर" (गजल आ रुबाइ संगह) आ http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/ ब्लॉगपर अरबी-फारसी गजल-व्याकरणके जाहि तरहे मैथिली भाषानुरुप सुबोध आ सुव्यवस्थित बना परसल गेल अछि ओ अनुकरणीय अछि। "अनचिन्हार आखर"क पकाशनक बाद मैथिल गजल-जगतमे एकटा नवयुग पारंभ भेल जकरा फेर श्री गजेन्द्र ठाकुर "अनचिन्हार युग" कहि संबोधित कएने छथि। मैथिली गजलक ई नवयुग अनेक नव गजलकारके पोत्साहित कएलक। अनेक रचनाकारके गजल आ सेहो व्याकरणक मापदण्ड पर सोटल गजल, रुबाइ, कता इत्यादि लिखबाक लेल पेरित कएलक। ऐ युगक किछु गजलकारमे श्री ओमपकाश झा, श्री अमित मिश्र, श्रीमती शान्तिलक्ष्मी चौधरी, श्री भास्कर झा, श्री जगदानंद झा "मनु", श्रीमती रुबी झा, श्री राजीव रंजन मिश्र, श्री पंकज चौधरी "नवलश्री" सन अनेको नाम अछि जे अपन पतिभाक बलपर गजलकारक रुपमे मैथिली साहित्य-जगतमे स्थापित भऽ चुकल छथि। हमहूँ पहिने अपन टुटल-फुटल भाषामे किछु कविता लिखैत रही मुदा विदेह परिवार आ अनचिन्हार-आखर परिवार हमरा गजलक माने बतौलक आ गजल लिखबाक लेल पेरित कएलक। ऐ संगहमे जे किछु गजल लिखने छी ओ सभ हिनके सभक सत्पयासक परिफल अछि।
आब हम अपने सभक सोझा, एखन धरि हम गजलक विषयमे जतबा जान "अनचिन्हार आखर" आ विदेह परिवारसँ गहण कऽ सकलौं, ताहि आधार पर गजलमे पयुक्त होमएबला किछु पचलित शब्दावलीक संक्षिप्त परिचय राखए चाहबा-
१. शेर वा शाइरी - दू पाँतिमे पूर्णभावक अभिव्यक्ति थीक शेर वा शाइरी।
२. मतलाक शेर वा मतला- कोनो गजलक पहिल शेरके मतला कहल जाइत छै। एकर दुनू पाँतिमे काफिया आ रदीफक रहब आवश्यक।
३. रदीफ- मतला बला शेरक अंतिम शब्द समूह जे ओइ शेरक दुनू पाँतिमे जस के तस रहैए। ओना बिनु रदीफक शेर एवं गजल सेहो होइत छै।
४. काफिया - मतलाक शेरमे रदीफसँ पहिने जे तुकान्त वा स्वर अथवा मात्रिक साम्य रहै छै तकरा काफिया कहल जाइ छै। बिना काफियाके शेर वा गजल नै कहल जा सकैत अछि। मतलाक शेरक अलावे गजलक पत्येक शेरक दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने काफिया होएब आवश्यक। काफिया संबंधी विस्तृत निअम "अनचिन्हार-आखर"मे http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/ पर देखल जा सकैत अछि।
५. मकता - मकता गजलक अंतिम शेरके कहल जाइ छै जाहिमे गजलकार अपन नाम वा उपनामक उल्लेख सेहो करैत छथि।
६. बहर - सरल भाषा मे कही तँ गजलमे पयुक्त छंदके बहर कहल जाइ छै। बहरक बिना गजल कहल

(श्रृंखल) नै जा सकैत अछि। कतौ-कतौ आजाद गजलक परिकल्पना सेहो कएल गेल छै मुदा ताहूमे काफिया अनिवार्य। एहन गजलक पचलन सेहो बहुत कम्मे छै। मैथिलीमे बहरके मुख्यता तीन भागमे वर्गीकृत कएल गेल अछि-

(क) (१) सरल वार्णिक बहर (२) वार्णिक बहर

(ख) मात्रिक बहर

(ग) अरबी बहर

अरबी बहरके तीन खण्डमे बाटल गेल अछि- १. समान बहर २. असिमान बहर आ ३. असमान बहर।

१. समान बहर - समान बहरक अंतर्गत सात टा बहरके राखल गेल अछि जे अगस्त्यवत अछि- (क.) बहरे-हजज (ख.) बहरे-रमल (ग.) बहरे-कामिल (घ) बहरे-मुतकारिब (ङ.) बहरे-मुतदारिक (च.) बहरे-रजज (छ.) बहरे-वाफिर।

२. असिमान बहर - असिमान बहरक अंतर्गत सेहो सात टा बहर के राखल गेल अछि जे एना अछि- (क.) बहरे-तवील (ख.) बहरे-मदीद (ग.) बहरे-बसीत (घ.) बहरे-मुजास (ङ.) बहरे मुन्सरह (च.) बहरे-मजरिअ (छ.) बहरे-मुक्तजिब।

३. असमान बहर - असमान बहरक अंतर्गत कुल तेरह गोट बहर के राखल गेल अछि जकर विवरण एना अछि- (क.) बहरे-खफीफ (ख.) बहरे-जदीद (ग.) बहरे-सरीअ (घ.) बहरे-करीब (ङ.) बहरे-मुशाकिल (च.) बहरे-कलीब (छ.) बहरे-असम (ज.) बहरे-कबीर (झ.) बहरे-सगीर (ञ.) बहरे-सरीम (ट.) बहरे-सलीम (ठ.) बहरे-हमीद (ड) बहरे-हमीम।

आशीषजी कहैत छथि जे उपरोक्त बहरक अलावे आरो बहुत रास बहर छै मुदा ओ सभ अरबी-उर्दूमे बहुत बेशी पचलित नै छै, लेकिन हमर ई विशास अछि जे आशीषजी जल्दिए ओइ बहर सभके सेहो मैथिली भाषानुरूप समायोजित कऽ हमरा सभके परसताह। ऐठाम एकटा बात आओर कहए चाहब जे गजलक संबंधमे एतए हम जे सभ जानकारी देलौ ओइ संबंधमे विस्तृत जानकारीक लेल "अनचिन्हार आखर" पढ़ी एवं http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/ पर जाइ।

हमर किछु गजल आ रुबाइ एहनो भेटत जे गजलक व्याकरणक शत-पतिशत अनुपालन नै करैत हएत। ई सभ हमर पारंभिक रचना अछि तइँ ऐ रचनासभक पति कने भावुक छी। अंतमे जे किछु अपने सभके साझि लागए तकर श्रेयक भागी "विदेह" आ' "अनचिन्हार आखर" परिवार छथि आ जतऽ कतौ कोनो त्रुटि बुझाएत से हमरा माथ पर आओत। अपने सबहक सुझाव आ उत्साही पतिकियाक आशाक संग -चंदन कुमार झा

गजल

1

लोक कहैये वाह-वाह की खूब श्वाखै ि ी
कोना कही जे, कलमे सँ गुदरी सीबै ि ी

शब्द-जाल बुनै ि ी आ' ओकरे ओझराबी
सोझराबै मे ओकरे खाली श्वन कटै ि ी

रास-रंगके लोभ देखा क' मोन बुझाबी
देह जरैये, खाली खूनक सेप घोटै ि ी

कत गेल ओ' रीत पुरनका से नै जानी
"चंदन" गबै ि ी गीत, म ुघट पीबै ि ी

-वर्ण-१५

2

हा मे खुरपी मा  पश्चिया
चललौ करै कुकूरे बश्चिया

आश्या-नूआ' ि  चे री-चे री
नाकमे झूलय तैयो नश्चिया

पूत-कपूतो कहबै ि  बौआ
बुच्ची केर त' होय सरश्चिया

बहु-बेटीके जाश्व रहल ि
सभके चढ़लै की दुमश्चिया

नारी जननी होइ  "चंदन"
सृश्च  केर ई पेम-मुरश्चाया
-वर्ण-११

3.

साझ बारल जखन बाती, थया यौ अहा मोन प िलौ
राश्च आयल जखन कारी, थया यौ अहा मोन प िलौ

फूलेलै जखन रात-रानी, थया यौ अहा मोन प िलौ
कोइली जखन बाजै-बा ि ी, थया यौ अहा मोन प िलौ

पश्चरी जखन लाल सा ि ी, थया यौ अहा मोन प िलौ
साटी जखन मा ि थ्यकुली, थया यौ अहा मोन प िलौ

थ्यरहक आथ्य जरै ि ती, थया यौ अहा मोन पडलौ
दहेलै काजर केर ि री, थया यौ अहा मोन प िलौ

सजौले सेज जखन ताकी, थया यौ अहा मोन प िलौ
पढ़ै ि ी "चंदन" केर पाती, थया यौ अहा मोन प िलौ
-वर्ण-२०

4

पेम केलौ थ्यक केलहुँ कुकमे सैह नश्च जाश्च रहल ि ी
अ ि ि र भश्चयाओल सभ-टा सपना ि श्च रहल ि ी

सात जन्म ि थ्य संग रहत से सपत खयलक झूटे
फुश्च ि लै थ्यरीतक बश्चआ मन-अनुमाश्च रहल ि ी

ि नि-बैभव, ऐशयक्रि आगा के पु ि तैक श्चार ि निके
सत्य-नेहके मोल ने थ्यक ि ओ गप-सभ जाश्च रहल ि ी

बीत गेलै, से बात गेलै, नश्च याद करब नश्च कानब'
फेरो नश्च भश्चयेबै "चंदन", से श्च ि य ठाश्च रहल ि ी

--वर्ण-२१

5

हरहोर भेलै, बि शोर भेलै
सजलै बरात, मटकोर भैलै

मरबा सजलै, थपही बजलै
नटुआ केर नाच बेजोर भैलै

जे भोग लै, भ पोख लैक
तीमन तरआ, लकोर भेलै

हम बैसल ी, अन्हयामे
जे चान लैक, से चकोर भेलै

"चंदन" य हषउफनै िक,
जाँ कूदल आँ सँ नोर भेलै
-वर्ण-१२

6

जगरनेमे रा बीतल,
लै नोरे रा शीतल

चनो कनलै ओस झहरल,
लगै ि तँ भोर तीतल

कमिइत मोन पाणो,
करे फेरी रा बीतल

बुझय चाही, यथ से रण,
रहल ी हाइर क जीतल

पुिय सभ, की भेल "चंदन"
कही कोना अपन बीतल
-बहरे-मजअ (1222+2122)

7

एखन राश्वा कटै ि ि हम कश्चाते-कश्चाते,
एखन श्वन बीतै पहर गश्चाते-गश्चाते

लगै अश्चि ई जीवन अकारि, अचानक,
श्वसरलहु गामो शहर तश्चकते-तश्चकते

पहुँचलहु ने जानी कोना एश्च चौबश्चया,
श्वसरलौ ठेकाना कखन चश्चाते-चश्चाते

कहा कऽ सकश्चायइ एकचारी हम ठाढ़ो,
श्वकायल घरारी महल बश्चहते-बश्चहते

कही कोन कि आओर सुनायब की पाश्चा,
शब्दहुँ हेराओल गजल पश्चढ़ते - पश्चढ़ते

श्चायश्चा केर फेरामे ओझरायल ''चंदन",
श्चिश्चियेलै सपना पलक मुश्चाते-मुश्चाते
-वर्ण-१६

8

करेजक घर तँ खोलू कने
श्वनेहक ताग जोर कने

अश्चँक श्वय-बीच चाही बसय
जगह बसबाक ि ि कने

बनल बेरस हमर जीवने
अश्चमे नेहरस घोर कने

करय फश्चयाद "चंदन" सुनू
सजल संबंि जोर कने

(हस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-- हस्व-दीर्घ-दीर्घ-- हस्व-दीर्घ)

9

आन्हर बनल सरकार ि, लाचार भेल जनता
व्यापार पोषत नीश्च सँ कोना केर एतैक समता

गाम भूखल-पेट देशक, खेत उसर भेल िक
बाढ़-रौदीक बीच उपजल िक मा ि दखरता

कल-करखाना शहरमे चलइ ि धन-राश्च जे
पगश्चाक अश्चि मापदण्ड आ' एकात भेल जनता

गाम जा' बश्च रहल शहर, जीश्चका केर जोहमे
महाजन केर व्याज-तर, फुला रहल श्चा ि निता

गाम-वाश्चनी भारती, श्चकएक गेलीह बसै नगर
कनैत ि श्चि आइ तँइ, ई केहन कैलश्च मूखति

"चंदन" कर आहवान, स्मराजक एकबेर फेर
हँसतीह एही सँ देश , खुशहाल बनत जनता
--वर्ण-१९

10

नेहक सूत बाश्चह रखश्चयै करेजक कोन ओकरा
श्चसरल नश्च भेल जकरा, ओ' श्चसश्च गेल हमरा

श्चनगीक बाट जकरे आजुर ि' चलब श्चखेश्चयै
श्चचश्च बाटमे ओ' िश्चि प ायिल खश्चतश्च हमरा

कहा बचल ि कश्चायो मोल आब अनमोल-नेहक,
सौसे ि खाली टाकाक पू ि, आब लोकक पू ि ककरा

"चंदन" टाका त' श्चियै हा ि क मैल सत्-संबं ि क आगा,
जे नै बुझै ि ई बात , बनै ि तकरे श्चनगी फकरा

-वर्ण-२०

11

घोघ हुनकर उतश्च गेलै
जोत सगरो पसश्च गेलै

बहल पुरबा जखन शीतल
हुनक आँचर ससश्च गेलै

देश्चि हुनकर ठोढ़-लाली
आश्चा िती पजश्च गेलै

नैन लाजे हुनक झूकल
अटश्चिक हमरो नजश्च गेलै

र प यौवन श्चारश्चि "चंदन"
मोन म ुिकर मलश्च गेलै

I-U-I-I+I-U-I-I

12

श्चानगी केर बाट पर काट सौँसे गाि ल िै
श्चायश्चा केर टाट बेढ़ सगरो दफानल िै

माय-बाप,भाय-बन्ु, ि ै झुठश्च संबि सभ
मोह-जाल ओझरायल श्चानगी गतानल िै

कश्चायो जँ ढीठ बश्चा सुनलक श्चकयो मोनक
ि ूतहर घैल बनल समाजो से बारल िै

लुश्च-कुश्च जीवन भश्च आनल से बाश्च देल
खाली हाि आब देश्चि पश्चजन खौझायल िै

बुढ़ भेल, दुश्च गेल फकरा बश्चा बैसल िै
"चंदन" कहय केहन दुश्चाया अभागल िै
-वणा-१७

13
मूरख बि महान ओ'जे अपनाके काबिल बुझै छि
अपन माि क टेटर ठीके ककरहु नञि सुझै छि

आनक नीको अि लाह ताकब कबिलताइ कहाबै
अपन अि लाहोके जगमे सभसँ नीमन बुझै छि

हि-पाच नञि बकि ओ बुझै नञि मोने कलपित
ऊँच-नीचक भेद ने जाने मूखि सभके एक बुझै छि

लि-पपंच आ राग-देष तऽ काबिल केर गहना छि
चलैत बाट तँ ओकरञि सभके आखमंगो लुझै छि

पर-उपकारे लीन रहै जे सैह अछि असल जानी
"चंदन" असली जानी जगमे ओ' जे नञि खूब बुझै छि
-वर्ण-२०

14
शब्द संग खेलाएब हमरा नीक लगैत अछि
शब्दञि ओझराएब हमरा नीक लगैत अछि

मोनक बनबार पर ि रान्हैत जे मीठ-तीत
से भावञि झोराएब हमरा नीक लगैत अछि

सुखक-गीत दुखक-टीस बनगीक कि-व्यि
जगभरि सुनाएब हमरा नीक लगैत अछि

सुर जक बकरीण चढ़ी स्नगि केर बहार करी
ि रतीमे लोटाएब हमरा नीक लगैत अछि

बहग-गीत गाबय ि आ' बरहञि सुनाबै ि
"चंदन" ई बौराएब हमरा नीक लगैत अछि
-वर्ण-१८

15
कौआ कूचरल भोरे अँगना साझ परैत औथि न्ह सजना
िम-िम-िम-िम पायल बाजै खनकक उठल कंगना

सासुक बोली लगैए थयरगर ननद बनल बञ्ना
गम-गम-गमकय तुलसीक चौरा चानन सन अँगना

रथ-रथ साजल र प मनोहर कत'बेर देखल ऐना
थकुली-काजर जुटी-खोपा नवका-नुआ चमकय गहना

पञ्लञ्ञ साझ बारल दीप-बाती जगमग घर-अँगना
उगल चान असमान हृदयमे उठल थरह वेदना

सेज सजौने बाट तकैत िी एताह कखन घर सजना
"चंदन" सजनी गुन िन बैसञ्ञ की मागब मुँह बजना

-वर्ण-२२

16
हमरा आब इजोतञ्ञ सँ लगैत अथि डर
चुप भेल तैँ बइसल िी हम अन्हार घर

नञ्ञ मोन अथि हमरा नाम आर पञ्चय
अनजान िी संसारमे ते घुमैत िी थाडर

तकैत अथि लोक नाममे पहचान लोकक
गुण-शीलक आब समाजमे कहा ि मोजर

संबं ि नञ्ञ जकरा सँ बनल सैह समाग
तो िलक भरोस ओ' भरोसे िलहु जकर

"चंदन" जगक रीथ ओझराउ नञ्ञ थानगी
सुनू खबरदार ! हरदम रहू बेखबर
-वर्ण-१७

17
पुश्चमक राश्च केर चान सन चमकैत ि ी अहा
अँगना केर तुलसी चौरा सन गमकैत ि ी अहा

कखनहु मायक ममता बश्च झहरैत ि ी अहा
कखनहु आश्चक ि िरा सन ि िकैत ि ी अहा

कखनहु संगी-बश्चनपा बश्च हँसबैत ि ी अहा
कखनहु जीवन संश्चनी बश्च बुझबैत ि ी अहा

कखनहु अबलाक र प ि री फकरैत ि ी अहा
कखनहु काली केर र प ि री डरबैत ि ी अहा

कखनहु पेमक मुरश्च बश्च श्चखबैत ि ी अहा
"चंदन" नारी केर र प अनेक देखबैत ि ी अहा
-वर्ण-१९
18
नश्च फुरैि हमरा आब पेम गीत
अंतर नश्च श्चक ि ओ हाश्च हो वा जीत

टकटकी लगौने रहै ि ी राश्च-भश्च
सपनो नश्च आबय केयो मनमीत

श्मशान बनल अश्च करेज हमर
पैसत के एश्चमे सभ क्यो भयभीत

जीवैत ि ी मुदा बैसल ि ी मुदाघर
मुदा संग जीवन करैत ि ी व्यतीत

"चंदन" जीवने सँ लगैि आब डर
मृत्यु सँ हमरा अश्च भऽगेल श्चरीत
-वर्ण-१४

19

चलू एकबेर फेर रंगमंच सजाबी
बहुर थ्नया-र प िरी आ नाच देखाबी

दुश्नाया बर बूझत बकलेले हमरा
हमरा अश्नि सख जे दुश्नायाके हँसाबी

सुन्दर अश्नानेता त' जगभश्न भेटय
हमर मोन जे पाठ लेबराक खेलाबी

दुश्नायाक रंगमंच जे लागै िश्नारस
आउ एकरा जीवन-रस बोर डुबाबी

"चदन" ई जे गुमसुम बैसल जीवन
चलू अपने पर हँश्न एकरा हँसाबी
-वर्ण-१५

20

कमला-कोशीक िरमे दहायल श्नानगी
िल-कादो सनायल मश्नआयल श्नानगी

श्नाशा तािकेर मातल बौरायल श्नानगी
माश्न चागुर सँ कोरै िभुखायल श्नानगी

रौद जेठ केर जारल फुलायल श्नानगी
एसी घर देखू बैसल घमायल श्नानगी

टुअर-टापर नञ्नाटे टौआयल श्नानगी
देखू साश्न-सम्हारल ओश्नआयल श्नानगी

देखू हँसैत कनैत आ' खौँझायल श्नानगी
"चंदन" र प अनेकहु देखायल श्नानगी
-वर्ण-१६

21

सपना नोरक िर बहाओल
जाथ्र-जाथ्र केर राश्च श्चताओल

साज-श्चंगार सोहैि नै श्चक्ुओ
श्चरहा-आश्च करेज जराओल

नभमे चमकल जखने चंदा
श्चयामे पेमक ज्वाश्च उठाओल

कोइली सौश्चन मुँह दुसै अश्चि
कू-कू-कुहुश्चक’ होश उिओल

अचके बालम ऐलाह अँगना
"चंदन" सजनी मोन जुिओल
-वर्ण-१२

22

लगै अश्चि लाल अहाकेर गाल जश्चना श्चनुश्चया आम
अहा केर चान सन मुखरा देश्च चानो बनल गुलाम

केश कारी घटा घनघोर अमावस राश्च सन लागय
नैन काजर सजल चमकल श्चजुरीक ूटिल घाम

जएह बोली अहाक ठोर केर चुश्च कए बहराइि
महुआ गाि पर कोइली सैह बाजल बनल सूनाम

डेग राखल जत’ िरती माश्च बश्चगेल ओत’ चानन
रनझुन पजेब-झंकार सँ अँगना बनल सुरिम

कसमस जुआनी देश्चकऽ सुश्चि-बुश्चि हमर हेरायल
श्चबै लेल नेहरस व्याकुल भमरा भऽगेल बदनाम

"चंदन"पश्चिक प्यासल पेम केर बाट पर बौआइि
श्चऔ ने नेहरस एकरा श्चआय बैसाकऽ करेजा-िम -वर्ण-२१

23

बेश्म खेलक इमानो बजारमे
लाज-िखो सजेलक सचारमे

भाय-बापो सँ देखू ल ित ि
पेम देखू फुश्मक ि भजारमे

आब मातोक ममता श्वकाय ि
नेह-नाता भसेलक इनारमे

जे कहाबै लफंगा समाजमे
सैह नामी बनल ि जबारमे

देश्व"चंदन" परल ि ि थ्यचारमे
सा ि-संतो रमल बेश्मचारमे
मुजाइफ-212-212-212-12

24

हमतऽ कश्मते रही आँश्वक नोरे सूखा गेलैक
अपने कानब पर देखू हमरा हँसा गेलैक

लोक पु िलक जखन कहल ने भेल श्मक िओ
असगरे आइ सभ बात अनेरे बजा गेलैक

साओन-बदरी जे आश्म उनटे ि ि श्मक उठलै
आइ सैह आश्म एकबूँद पसेने पझा गेलैक

बैश्म अँगना भश्व राश्म गनैत ि लौँ तरेगन
आइ सैह तरेगन केयो आँचर सजा गेलैक

कतेको साल सँ पटबैत ि लौँजे गा ि "चंदन"
आइ अँगनामे रोपल सैह गा ि फुला गेलैक
-वर्ण-१८

25
नैनक बाण चलाकऽ हम्मर अपटी खेतमे पाण लेलौँ
झूठश्च लि जे पेम-श्च्हानी से सभटा हम जाश्चा गेलौँ

सफ्पत खयने रही अहा जे आयब हम्मर सपनामे
सपना देखब सपने रहलै श्चानो अहा दफाश्चा लेलौँ

रहै मोन जे पेम-रस सँ भीजा गढ़ब नूतन श्चानगी
हम एश्चमे सौरभ श्चझरेलौँ अहा नोर सँ साश्चा देलौँ

मोन लि जे मूक्त गगनमे उबि अहा आ' हम संगे
उश्चि गेलौँ कतऽ अहा ने जाश्चा हमरा एश्चठा िश्चा गेलौँ

हमरा श्चानु जँ जीश्च सकी तऽ जीबू अहा सुखक श्चानगी
बाट तश्चते अहीँक "चंदन" काटब श्चानगी ठाश्चा लेलौँ
-वर्ण-२१
26
उजरल गाि जँका लगैि गाम हमर
चुप्पी सनि श्चएक कनैि गाम हमर

नवकी कश्चाि जँका लैजे गाम हमर
श्चविा नारी बनल कनैि गाम हमर

भरले-पुरले हँसै लैजे गाम हमर
टूअर टापर भेल श्चरैि गाम हमर

पीतक पाती गबैत लैजे गाम हमर
उकटा-पैची श्चएक करैि गाम हमर

श्चामलि-श्चाश्लि बास लैजे गाम हमर
"चंदन" श्चए डेरौन लगैि गाम हमर
-वर्ण-१६

27

करेजके पार बना गेलअ
पीरीतके आखर मेटा गेलअ

सपन जनम भरकेर देखल
कहूतऽ की नोर मे भसा गेलअ

जकर आस रहक
कहैत कि तकरा मझा गेलअ

जनमक संगी बनक बदला
कहैत कि नाता कटा गेलअ

रकटल "चंदन" मोन बेकल
सकयोतऽ पीतमके बुझा गेलअ
12-1222-122

28

मिथिला राजक खातिर मैथिल लडिबे करतै
खूनसँ सजलै रिती मिथिला बनबे करतै

आज मातृभूमि उत्थानक हेतु लडिते रहतै
मायक लाजक खातिर संतति मरबे करतै

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक स्वाभिमानक रक्षा
आज पाणहुक उत्सर्ग मैथिल करबे करतै

कमला-गंगा-कोशी-गंडकक सपत खा' मैथिल
अलग मिथि राजक सपना पूरा करबे करतै

जेतै ने क्यो बिलदान आब कोनो बलिदानीके
"चंदन" ठोस पहिकार मैथिल करबे करतै
-वर्ण-१८

29
कश्चये सँ कश्चआयल कनै छथि जानकी
कश्चये सँ श्चश्चआयल श्चरै छथि जानकी

श्चथिला सँ श्चुआयल लगै छथि जानकी
मैथिल सँ श्चश्चआयल लगै छथि जानकी

घर-घर सँ बौआयल श्चरै छथि जानकी
घर-घर तऽ थिथिआयल श्चरै छथि जानकी

रामश्च सँ डेरायल लगै छथि जानकी
श्चनगी सँ अकछियल लगै छथि जानकी

अपराध की कयलश्च पुछै छथि जानकी
चुपश्च जनक "चंदन" कनै छथि जानकी
2212 + 2212 + 2212 -बहरे-रजज.
30
श्चकछ बात एहन जे कना गेल हमरा
श्चनगीक नव माने श्चखा गेल हमरा

सपनाक दुश्चया छिहुँ झूलैत झूला
तखनश्च उठल श्चडी जगा गेल हमरा

पालन अपन पेटक करैए कुकूरो
आनोक श्चत जीबू बुझा गेल हमरा

अपन हरख हरश्चत रहैछै सभ क्यो
अनके दुखश्च कानब बता गेल हमरा

"चंदन"मनुज जीवन श्चतै नश्च अकारथ
श्चनगीक सभ मकसश्च गना गेल हमरा
2212-2212-2122

31
नैनक नीर भीजल चीर जमुना तीरमे
करेजा कीर सीचल वीर जमुना तीरमे

बैसल नीि कूक अ िीर जमुना तीरमे
लागल भीि मूक बहीर जमुना तीरमे

आसक सीर सुखै नै नीर जमुना तीरमे
चासक सीर गरै ि सीर जमुना तीरमे

देशक वीर भेल फकीर जमुना तीरमे
नेताक भीि थारैि खीर जमुना तीरमे

सनले खून रौपदी चीर जमुना तीरमे
लागल घून काया पवीर जमुना तीरमे
-वर्ण-१६
"जमुना तीर अ ि‍ित थ्रल्ली, सीर-जथ्रि, जोतल खेतमे हरक चेन्ह, हर डी

32
मन वीणा तार झंकार भरल
मैथ्रिल-जन'क हुंकार पबल

बहुत आँथ्र केर नोर बहल
बहुत जगक दुतकार सहल

आब उथ्रत उपचार करब
श ि‍िक पहार जे खून बहल

थ्राज अथ्रिकारक हेतु ल ि‍िब
सौभाग्य जँ पाण थ्रायागै परल

थ्रथ्रिला-राजक तऽ माग अटल
"चंदन" मैथ्रिल लथ्रिते डटल
-वर्ण-१२

33
मोन एहन जे मानबे नञि करैए
आबो विरहा तेँ साउनोमे जरैए

नोर झहरै छै आँखि से, कंठ सुखले
बुन भरि नेहक लेल तैयो मरैए

जेठके रौदहु जकर हिया जुरेलौँ
ओ बसाते से पात आसक झरैए

डारि पर पीतक,फरल संबंध जे
पाछि चोटायल, सड़ल फर झरैए

बाट 'चंदन' टकटक अहीँके तकैए
मोन बहसल,ने आस अनहु रैए
-2122-2212-2122/बहरे-खफीफ
34
राति तरेगण गनिते कटै छी
आगि विरहके जरिते रहै छी

बाट अहीँकय तकिते रहै छी
रूप अहीँलय सजिते रहै छी

बनल बताहे हँसिते रहै छी
कोनो बैसल कनिते रहै छी

गीत विरह के गबिते रहै छी
तामस मोनक सहिते रहै छी

मोनसँ अपने लड़िते रहै छी
"चंदन"लागय मरिते मरै छी
2-1 +1-2 + 2-1 + 1-2+ 1-2-2
-वर्ण-१२

35
मलय पवनके मधुर गंध सँ शास रोग उपचार करब
दुषित वायु अवरुद्ध सास जे तकर आब प्रतिकार करब

जड़वत बनल जे जीवन जगमे तकरा पुना बना चेतन
मधु-पराग सँ नहाके ओझामे नवल उजाक संचार करब

आज अवलंबन हेतु जगायब असरल सभटा धर्म-शक्तिके
कमेक बलपर अजय पाप्त लय कमयुदि हुंकार करब

रहत आब नहि हारल-थाकिल घर-बैसल मानव एकहु
चलू आब कमक पकाश सँ कलुखल घर उजियार करब

एकपण एकआष दिशासँ आशलि भावसु गाबि धमाल
मिक फल भेटब कि आश्रित "चंदन" जगत पचार करब
-वर्ण-२४

36
आँखि खूनसँ भरल जेना
काट हृदय गरल जेना

पानि खौलय अनल जेना
आगि लगए ठरल जेना

नोर पोखरि भरल जेना
धार खूनक बहल जेना

गाछ लिए फरल जेना
आब लगए झरल जेना

गाम लिए सजल जेना
आब "चंदन" मरल जेना
2122-2122
-वर्ण-१०

37
जकरे पाय ि लौँ तर-उपर
सैह पूत कमौआ ि लकै घर

मरचर बनले भरले घर
ठाठ उ िहल आँख्इओ नै खर

ढनढन कोठी ओ’ बखारी-ढक
उनटल बासन भनसाघर

रकटै नेना सटकल उदर
बेदम उकासी दबाइ बेगर

चंदन’ कोनाकऽ ध्मनगी कटत
र ण-पैच कोना चलत गुजर
-वर्ण-१२

38
मोन केर बात सदखा ध्मख्खते रहब
चौबख्इया ठाढ़ गजल कख्इते रहब

ध्मनगीक बाट कतबो गि काट-कूश
हँख्मते गुलाब सन गमख्कते रहब

समाजो बर ध्मख्मऔत हमरा कादोमे
कदबे कमल बख्म फुलाइते रहब

बर कतबो झाट-ब्बहाथ्वि एतै रस्तामे
मुदा तैयो दीप आसक लेख्मते रहब

’चंदन’ पाि र समाजक ि ती ध्वजाय
कलमक ि र सँ शि ू हख्मते रहब
-वर्ण-१५

39
आब सूतल लोक जाग्रत रहलैए
तैँतऽ बेशीहे चोर भाग्य रहलैए

देखू लागल भीड़ चौबट्टया पर
बेटा मा-बापके बेलाग्य रहलैए

बजारक भीड़ तकैड़ एकात
सूतय लेल लोक जाग्य रहलैए

चैतक पछबा सुरडाह भेल घर
भादबोमे फिक्क आग्य रहलैए

तबलि फिरती दहेतै फेरो सँ
सुगरकोना मेघ लाग्य रहलैए

जलिै घर, दहेलै डीह "चंदन"
डटले लोक क्यो नै भाग्य रहलैए
-वर्ण-१३
40
गुफा अन्हार, नक्ष हाथि-हाथि सुझैए
आनक बात कोन, पछ्वजनो हुड़ैए

जकरा ले सवस्वि कएलहुँ अपण
सैह हमरा मतलबी लोक बुझैए

खून पसेना बहाबी,मुदा रौी दव्थर
श्राखमंगा बौसैए, ह्निकहा लुझैए

कतौ करोट फेरै लोक सडिक पर
कतहु कुकुरो पलंग पर सुतैए

केओ भूखे पेट,रकटल पाण,कानै
"चंदन" पाचकक चुणो खाय कुड़ैए -वर्ण-१४

41
राक्षा सपनमे ध्रयतम एलाह
कर-कौशल सँ हमरा जगेलाह

काच श्वान टूटल,मोन कमि
उीश्वाी लगा अपने नुकेलाह

देहक पाश्वा बश्वा बहल पसेना
अरिश्वाये मोन प्यास लगेलाह

कसमस आश्वा नख लाश्वा फाटल
चेन्ह सगर देह नह गरेलाह

हमरा संग कत खेल खेलेलाह
"चंदन" तखन जा मोन जुलाह

-वर्ण-१३
42
दू लबनी केर खेला देखू
लागल रेलम रेला देखू

फुश्वाए ठेलम ठेला देखू
बलजोश्वीक झमेला देखू

मत गुर संग चेला देखू
नाच करै अलबेला देखू

जीवनक संध्यावेला देखू
कानै अनाि कोरेला देखू

श्वषले लागल मेला देखू
अमृत भेल करेला देखू
-वर्ण-१०

43

फूल नै बनलौँ तऽ की,काट बनि गेलि तऽ छी

पेम नै केलौँ तऽ की, संग हमर लडैत तऽ छी

अन्हार िै घर तऽ की, दीप बनि जरैत तऽ छी

सोझा नै हँसलौँ तऽ की,परोक्षमे कनैत तऽ छी

अपना नै सकलौँ तऽ की, संगमे रहैत तऽ छी

भऽनै जाइ आनक संगी,से सोचि मरैत तऽ छी

सुख नै देलौँ तऽ की, संगे दुख कटैत तऽ छी

मीत नै भेलौ तऽ की, र सलमे बाँसैत तऽ छी

बुझि कऽ बकलेले हमरा, अहा हँसैत तऽ छी

छी अकछियल तऽ की, बात तैयो सुनैत तऽ छी

-वर्ण-१७

44

आखर आखर सजा राखै छी गीत अहा ले सजनी

चाचर पातर हम तकै छी पीत अहा ले सजनी

अपन करेजा कोठि माझ, सौरभ पुष्प बझरेलौ

नेहक रसमे भीजा गढ़ै छी भीत अहा ले सजनी

अहाक र पके आगा हम हारि गेलहु अपनाके

अपन हाथ बसाथ राखै छी जीत अहा ले सजनी

मधुर मिलनक बेला कहियो तऽ मधुघट पीबै

सोचि-सोचि घट-घट पीबै छी तीत अहा ले सजनी

अँगना, घर, दलान, सजा, बाट तकैत छी बैसल

"चंदन"नेहक बुन तकै छी शीत अहा ले सजनी

-वर्ण-१९

45

रोटी महग, महगे नून भेल ि

बोटी सुलभ सस्ता खून भेल ि

साँसे शहर सहसह लोक गजजले

गामक दलानो-घर सून भेल ि

पगश्चाक पि भष ाचार अिल ि

नेता समाजक जनु घून भेल ि

खेती करय जे से दीन भेल ि

बइमान बेपारी दून भेल ि

करनी अपन नञ्ञ देखैत लोक ि

"चंदन"फुश्चाक खाश्चार खून भेल ि

२२१२ २२२१ २१२

46

मोनक बात मोनश्चमे रखैत िी

चुप्पी लाश्चि हम श्चानगी कटैत िी

चकमक जगत,लागल चौन्ह लोकके

घर अन्हार चैनक श्चान सुतैत िी

झूठक लेल आश्चल लोक ि श्चने

हम सतो जनेबा ले कुि त िी

बेचल खेत डाबर-डीह गुजर ले

तैयो केस श्चकता दस लडैत िी

जुना जिल ऐंठन एखनो बचल

"चंदन" बोल तै ऐंठल बजैत िी

-२२२१ २२२१ २१२

47

ककरो तऽ जुना आँत भेल ि
केयो खा-खा अफ्सयात भेल ि

थ्रसा रहलै देशक जनता
कानूने-व्यवसि ा जात भेल ि

बुध्रिबके लोक नेता बनलै
थ्रकास नेनाक खात भेल ि

समाज बु ि लै बर खतामे
संसद भोजक पात भेल ि
-वर्ण-१ १

48

देशक ि ाह सँ बेशी स्नेहक ि ाह ि शीतल
नैनक नोर सँ बेशी देहक घाम ि तीतल

देहक खून सँ बेशी लोकक मोन ि ि ीपल
अप्पन सोच सँ बेशी आनक सोच ि रीतल

ककरो हा ि सँ बेशी ककरो गात ि भीजल
खूनक ि ाप सँ देखू सगरो बाट ि तीतल

ककरो खाप सँ बेशी कतहु आम ि बेढ़ल
ककरो सगर थ्रानगी बान्ह-कात ि बीतल

ककरो बोल समदाउनक भास ि भरले
गाबय "चंदन" उदासी जग बुझै ि गीतल
-वर्ण-१७

49

हम र कल ि ी, लेखनी ठमकल अछि

सभ कल्पना ठामे-ठाम दरकल अछि

पगश्वाक पश्चया आइ श्वच्चे बाट पर

भष ाचारक ओठ लाश्या अरकल अछि

भोगी भूपश्वा सभ ियिने बाना योगीक

रोटी पजाक खाय कमशा सरकल अछि

जान-शील, तप-त्याग संकुश्वत भेल ि

मुदा संकीणसोच सौसे फलकल अछि

"चंदन"लोकके श्वा िय पश्वाकार चाही

श्वक फेर अनेरए मेघ ढनकल अछि ?

-वण१५

50

दानवी चोट सँ मानवता िकुचल जाइए

चागुरक नोक सँ मनुक्ख बकुटल जाइए

भजाश्व-भजाश्व श्वचार लोक भजार तकैि

तैयो डेग-डेगपर भजार ठकल जाइए

नंगटे नचइत लोकके सोच कहा िक जे

नाच बढ़ल जाइए आ' तेल सिल जाइए

जि ितीके श्वाकलैि जे िँआ असमानमे

ओही सँ तप्त पृथ्वी, श्वमालयो घमल जाइए

"चंदन"रोगायल ि ती कुंश्वत मोन लोकक

बस पािरक मकान खाली बढ़ल जाइए

-वण१७

51
नैनक काजर पर मोह्रत ि सगरो जगत
जिे त छ्छाया केर मोनक मरम के बुझत ?

मदािनके सरोकार नहि होइत ि ककरो सँ
फेर सरकारके कोना दीनक लचारी सूझत ?

गोर गाल, कारी काजर देिख अन्हरेलै युवक
तखन कनैत मायक आँिखक नोर के पोिेत ?

काख तर नुकौने रहैि लोक पािनक बोतल
तखन फेर चौिेमे के इनार पोखिर खुनत ?

गाम भऽगेलै सुन मुदा करै चकमक शहर
"चंदन" ई बढ़ैत िवषमताके सम के करत?
-वणि-१८

52
मानवताक डेन पकिड़ मनुक्ख बनैत भगवान हेतै
मुदा, पिततके पशु कहब जौ, पशुओक अपमान हेतै

मूरख भूपित बिन बैसलै, लुिकी लगले चाटुकार ि
तखन जगत मे अहीँ कहू की िवदा केर सनमान हेतै?

रामक मयादा तोिड़ताड़ि, गौतमक िवचारके िड़िड़ि
गािेक देखाओल पिके त्यािग की मानवक कल्याण हेतै ?

अंगना िबच देबाल बनल ि, टुिट गेलै दलान पुरना
बेढ़ल फरकी-टाट ि सगरो फेर कत खिलहान हेतै ?

देश-देयािर मोनमे जकरा, जे नै बनल समाग ककरो
"चंदन" तकरा कहत दिवरे उचगर भले मकान हेतै
-वणि-२२

3

नयनक काजर नोर घोरिकऽ मोसिम बनेलौ
भाव करेजक आखर-आखर लिखि पठेलौ

बुझलहुँ अहा विदेशमे जाकऽ खूब कमेलौ
मुदा कहू की गामसँ सन नेह ओतहु पेलौ

ि सुविधा कने कम गाममे शहर अपेक्षा
मुदा,की कहियो सूच्चा भोजन शहरमे खेलौ

हम बेकारे देखि-देखि सपना रैन गमेलौ
अपन जुआनी अहीँ आसमे बेरि गमेलौ

आन बुझैत ि ि हमरा आहा कोनो बात नहि
"चंदन"मुदा कोनाक' माय-बाबूके बिसरलौ
-वर्ण-१७

जकरे देह केर घाम चानन सन गमकै ि
तकरे टुटली मरैया स्नगमि सुख बरसै ि

अनकर मािपर बजजर जे श्कयो खसबै ि
अपने बोलीक लुती से अपने घर जिबै ि

नवतुश्रया ि बुश्रिबक बुढ़-पुरान कहै ि
ओहोिलै कश्रयो नौश्रखुए सेनै मोन रहै ि

चुबय ककरो चार केयो भासल भीत सटै ि
श्वकिी बुन श्राहारे केयो आनक आश्रि िटै ि

कंठी-माला,चानन-टीका,िती-कुता खूब सजै ि
लेश्कन नाज्ञाट-भूखलके देश्वते नाक मुनै ि

कन्यागत ि काश्र रहल वरागत श्रहुँसै ि
केयो खून बेचकऽ देलकै केयो सऽख पुरबै ि

ई की भेलै जे सगरो खाली बहुरश्रया घुमै ि
"चंदन"एलै कश्रकाल जे खाली खूनेटा श्रबै ि
-वणि१८

55

ओ जे बताह बैसल ि सिकिक कातमे
एकोरती नञ्ज लाज िक ओकरा गातमे

पेटकुञ्जाया लिने जे सूतल एकातमे
दुइयो दाना भातक नञ्ज ओकरा पातमे

दू लबनी पीञ्ज बनै िक जे नृप साझमे
तकरा भेटै ने उसनल अिआ पातमे

अपनो घरमे नै कञ्जायो मोजर जकरा
ञ्जल्ली केर सरकार िक तकरा लातमे

जकरा ले सेहन्ता नवानो अपना खेतक
"चंदन" देबै नै पएर तकरा ञ्जरातमे
-वर्ण-१६

56

आखर-आखर गाञ्जा-गाञ्जा की ञ्जखबै हम
माि-बहरे फाञ्जा-फाञ्जा की ञ्जखबै हम

मायक भाषा पूज्य जाञ्जा की ञ्जखबै हम
अप्पन िती ताञ्जा-ताञ्जा की ञ्जखबै हम

कञ्जकोञ्जलके मान राञ्ज की ञ्जखबै हम
ञ्जिला-मैञ्जिल युद ठाञ्जा की ञ्जखबै हम

फगुआ-चैती गाञ्ज-गाञ्ज की ञ्जखबै हम
रौदी-दाही काञ्जा-काञ्जा की ञ्जखबै हम

भासल सपना िञ्जा-िञ्जा की ञ्जखबै हम
"चंदन" भावञ्ज साञ्जा-साञ्जा की ञ्जखबै हम
222-2212-1222-2

57

बात की भेल एकबेर बश्ढ़ते चश्ल गेलै
नेहक ताग सँ संबंि सश्मते चश्ल गेलै

रही सचेत त’ मुदा बुझलौ नश्ह मरम
अनश्मन्हार मनमीत बश्मते चश्ल गेलै

िल नश्ह जात हमरा कोनो रीश्त-पीतक
फेर कश्हया ई श्परीत बश्ढ़ते चश्ल गेलै

जे भेलैक जेना भेलैक बात ीि "चंदन"
श्मनगी जनु संगीत त’ सश्मते चश्ल गेलै
-वणा-१६

58

कहू, की अहा अपान संग देबै
जीवनमे नवल उमंग देबै

हम भटकल बाट-बटोही ि ी
पि हेरब, हमरा संग देबै

राश्त जागय ई टुकुर-टुकुर
ऐ आँश्ख सपन सतरंग देबै

"चंदन" जीवन जँ काठ बनत
सौरभ श्मझरा अंग-अंग देबै

-वणा-१२

59
जगभक्षमे सब बस दोसरके आँकयमे ि लागल
भुक्षम जनताके नेता भुज्जा फाकयमे ि लागल

अपना घरके अठबज्जर से बक्ष भेलै नै जकरा
से अनकर देबालक भुरकी झाकयमे लागल ि

जकरा अंगा-टोपी जुिलै नागट बक्ष नचइत ि
नागट ि से झँपबा खाक्षर टाकयमे ि लागल

भरले-पुरले ि से माझे ठामक्ष क्षष ा फीरय
क्षरनि बेबस लचरल ि से ढाकयमे ि लागल

एनी ओनी दक्षना बामा घुमबय ि जे जनता
"चंदन" सगरो भरले गप्पी हाकयमे ि लागल
-१४टा दीघसिभ पाक्ष मे
60
हम भाय अहा ि ी बक्षन हमर
दुनू क्षक्ष क्षतबै जगत सगर

गाम-नगर घर डगर-सगर
हमरे अहा सँ ि िहर-महर

परपंच क्षयो कतबो रचतैक
हमरा नक्षए परबाह तकर

आशीष अहाक जौँ रहत बनल
पुक्ष िक्ष सकत के बाट हमर

राखीक सपि कतक्षक पहर
"चंदन" नै ताकत बकर-बकर
-वर्ण-१३

61

करेजक टीस कहबै ककरा
कहबै जकरे बुझतै फकरा

मकरजालमे फासल थ्मनगी
जगत भथ्व ि भरले मकरा

कबुला केलकै स'ख पुरेलकै
मारल गेलै बथ्मक बकरा

बाथ्ट रहल ि बखरा-बखरा
भेटल ि जैह जतथ्ब जकरा

"चंदन" सता पर जे ि बैसल
थ्मक ि नथ्ब आब मोन ि तकरा
-वर्ण-१२

62

चुप्प रहला सँ दुथ्मया नीक मानै ि
लेथ्मकन चुप्पाके दुथ्मया नै गुदानै ि

हँसै ि लै बाजै ि लै बेटी नैहरमे
सासुर बथ्मते देरी थ्मकएक कानै ि

बेघर सूतल रहै ि बाट-घाटमे
संपथ्मशाली जकरा पीचब जानै ि

शोथ्मषत नारी मथ्व गेलै लगा'क फासी
शोषक,समाज ओकरे वेश्या मानै ि

अजगुत लोक अदुत समाज ि क
रथ्ब-रथ्ब "चंदन" एतबे ठेकानै ि
-वर्ण-१४

63
हर उठौलहु, पालो टंगलहु, लदहा लाधि रहल िी
गोला आ' धालेधया बदिक, जोिा हाधक रहल िी

चाधा-समारल, फेर तेखारल, आब चौमाधा रहल िी
लाल सतधया, कधया कामोर, बीआ िाधट रहल िी

भुटकुनमा-माय, बि पेम से, पनधआइ ल' आयधा,
बैधा पीपर तर, दुहू परानी, फुटहा फाधक रहल िी

जगरनाि ि अपन हाि, गंगाजल िक पसेना
एधा सँ धांचल हम जजाधा तैं, जूना बाधट रहल िी

64
बीतल फगुआ, चलू आब रधी काटय लए
बूट, खेसारी, सधसब ओ' तीसी झाििय लए

भरल दुपहधया, केहन बहै पिबा हन-हन
चलू कर'लय दओन गहुम, राहधि झाटय लए

बडकी काकी भास लगा, गाबधि चैतावर
बैसधा माझे आँगन धाधयओध खोटय लए

केहन सोहनगर लागय नवका बूटक सतुआ
चलू चौबधया, बाट-बटोहीके बाटय लए

साझ पिल, पुधा पुरबा पलटल, कोइली कुहके
बोधाहारक श्रम-पुलधकत मन कुदै नाचय लए

65

कयल कोन पाप, नहि जानि की भ' गेलइ,
लगेलौ नेह जकरे सँ, ककरो मीत बनि गेलइ

करय छी पेम कतबा हम, ओ' जानि नहि सकल,
आ'खिक जानि-बूझिक', अनठिआन्ह बनि गेलइ

सिनेहक ताग कतय गेल, संबंध की भेलइ
जीनगीक राग-रभस सभ-टा टीस बनि गेलइ

जग छिक सते "झूठ", बात बूझ ने "चंदन"
टुटै छै सपनाप सहसो, एकटा फेर टुटि गेलइ

66

हम बैसले छी अन्हारे
छी हेरि रहल मझधारे

तेजलक मीता-भजारो
छोडिक संग पतवारे

जाहि छल छनिक अम्बारे
खूब भेटइत छल पियारे

आइ एसगरे परल छी
एहि भरले, बाच-बजारे

नहि बचल कोनो अधारे
"चंदन" कमकि माथ ब्यवहारे

हजल

1

कश्याया हम्मर बि गुणवन्ती बुझा गेल हमरा
थ्कएक कुमारश्च लोक मरैए जना गेल हमरा

शाती जश्चए घरमे पैसली तश्चए सँ ि ी अशात
काश्च घरमे मचल तेहन जे श्चटा गेल हमरा

सासु लगै ि श्चह सौश्चान ससुर लगैन्ह चरबाह
गाश्च अलौश्चकक हुनका मूँहक लजा गेल हमरा

संग गोतनीक ल िश्चि भैसुर के नश्च परबाह
आबतऽ देखू दुनू भाइयो श्चच बझा गेल हमरा

रौ दैवा नश्च जनलौ थ्क ि ओ फँसलौ वश्चाहक फास
"चंदन" र पक माया फँसरी लटका गेल हमरा

2

गुर जी बैसलाह खोश्च खटाल
चेलवा बनलश्चा गुर घंटाल

घूर जरौलश्चह पोि केर टाल
दूि बेश्चाकए भेलाह नेहाल

इसकुल जाऽकऽ भेलाह कंगाल
माल पोश्चकऽ भेलाह मालामाल

पशुगणना कऽ फुटलश्चा भाल
पशुपालन सँ रपैयाक टाल

घी-दूि पीश्च भेलश्चा देह लाल
आब अखाि श्चच ठोकश्चि ताल

गुरआश्चक गजबे रंगताल
ठोरक संग-संग रागश्चि गाल

गुर जी बैसलाह खोश्च खटाल
जानक पूँजीओ गेलश्चा पताल
-वर्ण-१२

बाल गजल

1

चार पर ि कौआ बैसल
माझ अँगना बौआ बैसल

घुट-घुट खाथि दू-भात
मायक कोरा बौआ बैसल

राजा-रानी सुनथि थहानी
मइया कोरा बौआ बैसल

ओ-ना-मा-सी थखथि-पढ़थि,
बाबाक कोरा बौआ बैसल

सुला-मेना संग खेलै ि थि
"चंदन" अँगना बौआ बैसल

2

कुकर कू जखन मुरगा बाजल
श्कश्वण सुर जक मूँहमे लागल

कौआ डकलक कोइली बाजल
आँश्वि श्मा ि ते चुनमुन जागल

नहा-सोनाक' कयलश्मा जलखै
इसकुल गेलश्वि घंटी बाजल

दीदीजी बर ड नीक लगैत िश्वह
मास्टर जी के ि ि ी लय भागल

कान पकश्वि क' उठक-बैठक
तैयो खेले पर मोन ि ै टागल

"चंदन" टन-टन घंटी बजलै
ि ुटी भेलइ घर श्वुस भागल

3

बेग बजय ि टर-टर-टरि
बगरा उि य फर-फर-फरि

झरना झहरे झर-झर-झरि
बास बजय ि कर-कर-करि

श्वाल चलय ि रि-रि-रि
साप ससरलै सर-सर-सरि

चुनमा िती कि-कि-कि
डरसँ कापय रि-रि-रि

पप्पा एलश्चन भाश्या गेल डर
बात पदाबय चर-चर-चरि

4

बुच्ची पश्चरलक सोन गहना
बौआक डार झूले लाल फुदना

साझ-राझ दूनू गेला मेला देखऽ
हा िमे पाइ िलै बारह अना

मुरही-कचरी, आ’ बतासा-लरडू
रंग-बरंग कनलक फुकना

झूललक झूला नाच देखलक
"चंदन" घुमल घर सोना-चना

5

साझ परल, बैश्च थपर पर थ्रा करय पंचैती
सूगा-मैना व्याह रचाओत बगुला करय घटकैती

फुदश्क-फुदश्कक’ फुदी नाचय फेर हेतै वनभोज
कौआ थजबै लोल कोइली गाश्ब रहल ि इ चैती

बगरा-परबा अपस्यात अश्वि इंतजाममे लागल
डकहर बैसल सोश्च रहल कोना हेतै  कुटमैती

पोरकी थपही बजा रहल ि श्वटही थटै ढोलक
मोर नचै ता-ता-ि या "चंदन" अदुत ई कुटमैती

6

नवका कुती नवके सलवार
पश्नर कय बुच्ची भेल तैयार

ललका फीताक गुहलक जुटी
बाजे रनझुन पायल झन्कार

हाकि बाला खन-खन-खनके
टम-टम चश्नक' गेल बजार

ढोलक-थपही आ तमाशा-नाच
सूनल देखल हरख अपार

बाबाक हाि पकश्नि कए बुच्ची
पमुश्नत घुमय हाट-बजार

7

मस्जिद जखने परल अजान
कोइली ठनलक पराती गान

कौआ डकलक खेत खलिहान
बगुला खता बीच करय स्नान

गर-गर दुि दुहैि बािन
टक-टक परि लगौने ध्यान

बाबा िश्चि बाि ी बान्हश्चि मचान
बाबी अँगना मे लगाबश्चि पान

टुह-टुह लाल पूब असमान
'चंदन'जलखैमे दूि मखान

8

दऽ रहल िी अपन शपि, नै कानू बौआ
लेबनचूस लऽ पप्पा औताह, कुचरे कौआ

हम तऽ माय िी सते,मुदा बेबस लाचारे
कीश्आ खेलौना देब कतऽसँ,नश्छ अश्ि ढौआ

भरना लागल खेत, महाजनक तगेदा
फेर कोनाक’ सख पुरौताह बाप कमौआ

अहीँ पुरायब सख सेहन्ता आस िने िी
अहीँ जुिायब िाती बश्आकऽ पूत कमौआ

कबुला,पाती,श्वनय,नेहोरा, करैिी भोला
बेलपात "चंदन" चढ़ायब खूब चढ़ौआ
-वणि-१६

9
भैया के नबका बुशटिआ हमरा दीदी के फेरन
ओ'तऽ सौसे गाम घूमै ि हमरा अंगनोमे बेढ़न

चूि ा-चेकी,बतनि-बासन, आगा से नै करबौ हम
हमरो चाही कापी-थ्यक्षसन, बेटाके देलही जेहन

बौआ िचि ाि खेतौ हमरा नै दूि परपइठ
जौँ नै करबौ टहल तखन लगतौ मोन केहन

बहुत सहश्चयौ आब नै चलतौ तोहर दूनेती
हमरो चाही बखरा आब नै चलतौ कलि पान

गै माय युग बदश्च गेलैए बेटी नै बेटा से कम
"चंदन" गमकैत भथ्यष्य रचबै हमहूँ अपन
-वर्ण-१९

10

एकश्वन हमरो हेतैक मकान
एकश्वन हमरो हेतैक बि ान

एकश्वन हमहुँ कीनब समान
हमरो घर बनतै पू-पकवान

एकश्वन हमहुँ बुलबइ चान
अंतश्वक्मे हेतै हमरो दलान

सभकेयो अपने केयो नश्च आन
हमहुँ बनबै गा ी सन महान

श्वदा-वैभवक लेल अनुसं ान
करय जे "चंदन" बनय महान
-वर्ण-१३

11

थ्थाका कबर्डी खेलबइ खेत पारिमे
हमर नाह चलतैक ओलती ारिमे

इसकुल सँ जखन घुमबइ साझमे
बाबा संगमे घुमबइ ारिक पारमे

आमक गाि खोपि तर मचान पर
काका संगे हमहुँ बैसबै रखबारमे

गीजल-गाि ल हम नञ्ञ खेबौ बाटीमे
माय गै हमरो साञ्छक' दहीन ारिमे

मुरही कचरी झ्झल्ली खेतै िक सेहन्ता
"चंदन" तैँ िक लोढ़हा लोढ़ैत नारमे
-वर्ण-१५

12

माय गै हमरो कीन्ना देऽ नेऽ चान एकटा
देऽने गुिक पूरी फोका मखान एकटा

चमकै इजोिरया लागै ि कोजगरे ि
बाबा हमरो दीअ'ने थ्वल्ली पान एकटा

चकलेट-िबस्कुटो भऽ गेलै कते महग
पपा हमहूँ करबइ दोकान एकटा

िटको चच्चा केतऽ आब भऽ गेलै व्याह गै
मैया हमरो कन्नाया कऽ दे जुआन एकटा

चान पर घर हेतै तारा पर दलान
"चंदन" हमहूँ भरबै उिन एकटा
-वर्ण-१५

13

पकश्री के दाबा चलइ ि
खने ठेहुश्राया भरइ ि

म्ि र सनके बोल लागै
जखन मा-पप्पा बजइ ि

चश्चुकऽ ि ती पर ककाके
भभा के लगले हँसइ ि

सुगा मैना जखन बाजय
सुश्राकऽ ि पि ी श्रयटइ ि

मनोरि सभटा पुरौतै
बइस के चंदन गुनइ ि
-वर्ण-१०
-१२२२ २१२२ बहरे-मजश्रअ

14

भोर भेलै शोर भेलै
काचे श्वान खोर भेलै

माघ मास शीत जल
दहो-बहो नोर भेलै

काट कंठमे गलै
भोग नष्ट झोर भेलै

भैस भेलै पारी तरे
ि ि डाढ़ी घोर भेलै

िरी बाटी थ्रटैत ि
माय मोन घोर भेलै
-वणा ि

15

ओम्हर गगन ब्राच मेघ जञ्ना उमक्क रहल ि
एम्हर मगन मन बाल तञ्ना कुदक्क रहल ि

ि किश्रा ि लै जे माश्च कश्चयो अश्रान-कुण्ड सन
पश्चाते अश्रायके बुन मह-मह गमक्क रहल ि

श्चलश्चल दुबर लागय ि लै पतझाि कालमे
खलखल हँसय ि आब फुनगी हुलक्क रहल ि

दबकल ि लय जे सालभश्च श्चल बीच बेगबा
घुच्ची भरल जल पाश्च जँह-तँह कुदक्क रहल ि

टुक-टुक श्राहारय बइस "चंदन" कोर बेचनी
दाबाक कगनी पाश्चा पर जे भसक्क रहल ि
-वर्ण-१९-२२१२-२२१२-२२१२-१२

र बाइ

1

भासल सभटा सपना नोरक ि रमे
कण्ठ दबायल जनु हमर गृमहारमे
बैसल ि ी एकात आजक प वारमे
सोगर खोआ रहल ि ी टूटल चारमे

2

लोक भूखले पेट करै ि बाट पर
ि ढ़करैत सरकार सूतल खाट पर
आन टुटै ि नेताक आब केवल
कोनो आम जनतासँ लागल चाट पर

3

अपन महीष कुरहए नाि ब
सुगरे गूँह सँ परी पाि ब
ि ी स्वतंि देशक बासी तैँ
की बरि ी सँ माला गाि ब

4

बर नु दबाइ च गेलै ओकर जान
ि द तऽ मुदा करजा लऽ भेलै गौदान
खाय अि हे पेट कटलक नगी सकल
मरल तऽ सौजनी मारैत ि सुरकान

5

नोरसँ आक्त आँचर आब अचोि अौ
जँ आँगुर कयो देखबै कर तोि अौ
त्यागू भय सीता मैयाक सपि ि र
मि ला राजक शि मुण्ड मचोि अौ

6

टूटल बान्ह बहलै गामक गाम फेर
गेल दहा श्मनगी कतेको ठाम फेर
कागतक नाव, सरकारो तत्पर ि लै
मुदा, बाश्ढ भासल कतेको जान फेर

7

दू टुक कहलौ दू फाक भेल संबंि
चुपश्च जँ रहलौ फोका गेल संबंि
पस भरल टीसैत पसीझैत घाव सन
सत्यक शूल गाथि बहा देल संबंि
8
संध्या-वंदन,काठ श्वाश्वखण्ड घसै ि ी
भोर-साझ आरती घश्वघण्ट श्यटै ि ी
भाग पीश्व मस्तक श्वारपुण्ड लेपै ि ी
र श्वा-र श्वा रोहु मू ि मुश्वघण्ट चभै ि ी

9

देखू श्ययकर बताह जमानाके
सून मंश्चर भरले ता ि ीखानाके
कनैत लोक हँसी श्कनबा ले लुटबैि
पेट काश्व जोगाओल खजानाके ।

10

दू ि सँ बेशी स्वाद लगैए ता ि ीमे
खेत श्वकायल लागल हा ि घरा ि ीमे
एखन तऽ अमृत लगैए श्वाखनासंगे
बुझबै जखन लीवर स ि त बुढ़ारीमे

11
ताँ ि िनब ि थ्क ि िनू अ्आज थ्चार
दार ताकब त्याथ्य ताकू संस्कार
अप्पन घर जाथ्ि भटीमे ि बैसल
नजथ्व उठा देखू जि ल केहन कपार
12
सते अहा कखनो मोन नथ्ब पि ँत ि,
थ्कएकतऽ सथ्बखन मोनेमे रहैत ि
फूल बथ्म सथ्बखन हृदयमे गमकैत ि
अहीँक नेहक जोत सँ हम चमकैत ि



13
अहीँक पेमक ि िह जीब' चाहै ि
अहीँक आँचरक हवा पीब' चाहै ि
अपन फाटल करेजा सीब' चाहै ि
अहीँक नैनक शराब पीब' चाहै ि
14
करेजक तहमे चौपैत रखलौँ जकरा
खून अपन थ्पया पोसैत रहलौँ जकरा
जुआनीक मद बौरायल सैह लगै ि
परल एकात समाजमे बनलौँ फकरा
15
सूयक्ि पखर रथ्श्म सन चमकैत रहू
शरदक इजोथ्रया सन दमकैत रहू
काथ्मनी रातरानी सन गमकैत रहू
र न-झून पायल पथ्सथ्व ि मकैत रहू

16

अहाक केश सँ झहरैत पाश्राक बुनी
अहाक गाल सँ ससरैत पाश्राक बुनी
अहाक ठोर सँ टपकैत पाश्राक बुनी
हमरो देह सँ टघरैत पाश्राक बुनी

17

घोरनक िता झाश्रि पाश्रा ढ़ाश्र देबौ
एकश्र चाट मे िरती पर पाश्र देबौ
रै खचराहा खचरै सभ घोसाश्र देबौ
मैश्रिलीक अपमान करब श्रसाश्र देबौ

18

जौँ डेनिऽ चलबे संग तऽ ताश्र देबौ
नैतऽ कलमक माश्र, गि ससाश्र देबौ
श्रश्रिलाक श्ररोिी, माश्र खेहाश्र देबौ
रचलाहा पपंच पर पाश्रा ढ़ाश्र देबौ

19

महगीक आश्रामे जरलै जनताके बटुआ
श्रन-राश्रा एक तीमन श्रबैिी झोर पटुआ
सरकारके श्ररोिमे लगबैत िल जे नारा
खसल ि सिक पर से लोक लटुआ-लटुआ

20

िक भश्रके आइ पीबय श्रअ' हमरा
पोख भश्रके श्रानगी जीबय श्रअ' हमरा
खोचाह बात से लागल खोच, फाटल,
गुदरी भेल श्रानगी सीबय श्रअ' हमरा

21
सीता चरण नूपुर झनक झमकैत रहय
बाॉी अयाची फूल सदश्चा गमकैत रहय
जनकक खेतक माश्च माॉ सजबैत रहय
मैथ्िल-श्चथ्िला कीश्चाजिगत पसरैत रहय

22
थ्िया श्चाया सन घर-घरमे जनमैत रहय
शंकर बश्चाकऽ पूत अंगनामे खेलैत रहय
उगना सन केर चाकर बाश्च पुरैत रहय
हश्चयर खेत-पाॉर सदश्चा श्चहुँसैत रहय
23
कल-कल कमला कोशी श्चामॉ बहैत रहय
ॉल-ॉल गंगाक श्चाशॉल जल ॉलकैत रहय
बागमती गंडक ॉरती जी जुॉबैत रहय
माॉ मखानक डाला श्चात सजबैत रहय
24
उज्जर परती हश्चया गेलै जेना
श्चयादी झगाॉ फश्चया गेलै जेना
लागल भीॉ थ्िथ्िया गेलै जेना
मोनक बात मश्चया गेलै जेना

25
अनका कश्चाते देख भभाकऽ लोक हँसैए
अपन श्चपश्चा के बेला देखू कोना कनैए
अनकर कान्ह कोदाश्च हल्लुक लगैॉ जकरा
अपना हाॉ सँ ॉश्चते बेट सैह लोक कुॉए
26
नाङट गरीब, माने हकन कनैए
फैशने चूर ॉश्चाको, नङटे नचैए
देखू नङटा, नङटे के देश्च हँसैए
एकदोसर के देख संतोष ॉरैए

27

देखलौँ माझ अँगना ओगरैत सपना
देखलौँ चौबश्चया पर लोढैत सपना
देखलौँ हाट ककरो मोलबैत सपना
ककरो झूठक दोबर तौलबैत सपना

28

नील नैन श्चच साजल काजर कश्चया
र प लगैए अनमन ि वल इजोश्चया
श्चा िय अहा जनैत ि ी टोना-टापर
भेल बताह ि ै तैँ गामक नवतुश्चया

29

कखनो बश्चा श्चपकी श्चत्कार करै ि
सता हा ि लश्चातश्च फुफकार भरै ि
नेता वोटक लेल कतबा र प ि रै ि
कतहु अनशन कतहु इफ्तार करै ि

30

दरकल करेजा कोना श्चबै हम कहू
ई नोर आँश्चक कोना श्चबै हम कहू
श्चयासश्च हम ि ी श्चया बसश्चि श्चदेशमे
फेर साउन मास कोना श्चबै हम कहू

31

(एकटा ब ि दक मुँह सँ...)
जौँ हाकब चुचकाश्च तऽकऽ देब तेखार
हाकब जँ रेबाश्चि तऽ हैत चासो पहा ि
जौँ बुझब समाग तखने बाश्च हम पुरब
जौँ करबै अ ि पेना तऽ खायब ल ि ार

32

थ्माबै कतेक थ्दन एना चुप्पी साथ्िके
तकबै कथ्या दबाइ एथ् थ्याथ्िके
चलबै कतेक थ्दन घुसकुथ्या माथ्के
रहबै कतेक थ्दन पेटकुथ्या लाथ्िके

33

पावसक बूँद पाथ्ा िरणी तृप्त भेल ि
कामानल जथ्िते तरणी अतृप्त भेल ि
देह वर्स ि लेपटायल घामे थ्ाक्त भेल ि
थ्या अंकमे पि ले मनुआ तृप्त भेल ि

कता

1

मन वीणा सँ उश्ब रहल ि‍क करण राग
माश्ब श्ब्थ्लाक श्ब्कएक कऽ रहलै श्बलाप
सनल श्ब्कएक शोश्बात सँ मैश्थ्लि भू-भाग
सुनऽमे नश्ब श्ब्कए अबै ि‍ कोश्बकल-अलाप

विनीत उत्पल (१९७८- )। आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगाव आऽ तारापुरमे। तिलकामाझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आऽ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र।

आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक .।

हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता)

अपन गप

गाम-घरक अशिक्षा, मिथिला आ अंग प्रदेशक सामाजिकताक जजरिता आ जीवनानुभवक थिक प्रस्तुत कविता संग्रह हम पुछैत छी मे अछि। सभटा कविता तकरे ओझराहटिके सोझरएबाक प्रयास अछि। जिनगीक आरोह-अवरोह, सामाजिक ओझराहटि आ रुढ़िवादी परम्परा मन-मस्तिष्कपर चोटक संग हृदएके दिलकोरि कऽ दिमागके सुन कऽ दैत छैक। एक कात मिथिलाक नवोदित प्रकाशित लोकक अदौसँ आएल परम्परासँ विरत होइमे हाथ-पएर फूलि जाइत अछि। दुनियाक विकासके आँच बुझैत छथि, जाति-पाति, छुआ-छूतौवलिसँ हटि कऽ चलैमे प्राण जाइत छनि। ओहि समयमे हमर जनम समाजक मुँहपर चमेटा देबाक संग प्रश्न सेहो अनैत अछि। एहन विकट परिस्थितिमे जखन दुनिया एकटा गाममे बदलि रहल अछि, जिनगीक सभटा डेग विषम अछि, तहिमे कविता सृजनक एकपेरियापर अनबरत ठिकए चलि रहल अछि?

हमर रचानात्मकताके आगू अनबाक श्रेय आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरके जाइत छन्हि, हम आभारी छी पत्रकार मित्र आशीष झाक जे हमर सभटा कविताके मनोयोगपूर्वक पढ़ि शिक्षक प्रदान कएलन्हि । हम आभारी छी अपन मित्र संग घरक लोकक जे हमर कवितकक प्रशंसाक संग-संग समालोचना सेहो केलथि। समर्पण-मा प्रेमलता झा आ पापा डॉ. वेदानन्द झाके जिनकर कोरामे बैस बाजैक, पढ़ैक, लिखैक आ सोचैक क्षमता पौलहुँ। - विनीत उत्पल

ककर गलती

कतेक थ्वदवससँ
सोचैत रही
जे
गाम जाएब
परञ्च
थ्वदल्लीक उ िल-ि कासँ
मुक्त होएब तखन ने।

पथ्विला दशहरामे
जखन गाम पहुँचलहुँ
तँ आथ्वि पकथ्वि टोल
अबैत रही।

ओथ्व्ह बह बाबाक ठामपर
एकटा थ्वम गिण बैसथ्व्ल रहथ्वि
की कहू , ि कसँ रथ्व्ह गेलहुँ
कंठक ि ूक कंठथ्वमे सुखा गेल

थ्वम गिण कोनो भूत नथ्व्ह िलीह
ओ कोनो डाइन-जोथ्वगन सेहो नथ्व्ह रहथ्वि
ओ गौरी दाइ िलीह
थ्वबयाहक ठामे साल
थ्वि वा भेल

ताथ्व्ह थ्वदनसँ ओ नवयुवती
उजरा नुआ पथ्व्हरैत िथ्वि
सीिमे चुटकी भथ्व्र सेनूर नथ्व्ह,
गुमसुम रहैत समय काथ्वट रहल िथ्वि।

तँ हुनका देथ्वख
सथ्वदखन सोचैत िी

की यैह अथिला थीक
यैह हमर संस्कृथ्ता थीक
मनके माथ्व कए एकटा नवयुवती
जीवन काथ्ट रहल अथि
ओकरा थ्कयो देखथ्आहार नथ्ह ि‍क

ओ नवयुवतीक थ्मउि
जुआनीमे उजथि गेल
ताथ्ह थ्दनसँ ओकरापर
की थ्बतैत होएत

जे पथ्ता बीमारीसँ मथ्र गेलथ्थ्वन
 एकरामे गौरी दाइक की दोख
दोख तँ हुनक थ्पताक ि‍थ्ता
थ्मनका वरक बीमारीक जानकारी नथ्ह ि‍ल
मुदा ओहो की करताह
घटक बथ्ता कऽ गेल रहथि
थ्द्तीकार जे कहलथ्न्ह
सैह ने सत्य माथ्नतथि

ई गप सत्य ि‍ल
जे गौरी दाइ
अपन थ्पताक गलतीक
सजा भोथ्ग रहल ि‍थि
भाग्यके कोथ्स रहल ि‍थि

आब की कही
देश-परदेशमे तँ
वर- कथ्न्याया बदथ्ल जाइत अथि
जेना ि‍ मासपर
बदलैत ि‍ हम अपन अंगा

मुदा, ई गौरी दाइ
बीसेक साल बादो

नश्च बदलतीह
ओश्च श्चनसँ
पश्चाक श्वयोगमे
श्चन-राश्च कुहरैत रहतीह

श्वकयो कतहुसँ खुश्चायोमे
हुनका नोत नश्च देतश्चह
श्वकयो अपन नवजातके
खेलाबए लेल
नश्च कहतश्चह

की करती गौरी दाइ
श्वकयो हुनका देवी कहतश्चह
तँ डाइन-जोश्चान कहबासँ
लोक-वेद पा ि ओ नश्च रहतश्चह।

मनुखो नञ्ञ भेल
ओइ ञ्चन जखन
ञ्ञानसरे काल
सूयि उगैसँ पञ्ञने
जखन आञ्कससँ डेरा पहुचलहुँ
डेञ्चियापर एकाएक
डेग ठमञ्क गेल

सोचए लगलहुँ
देखू तँ, साझ काल
जाइत ि ी आञ्कस
भोर-ञ्ञानसरे डेरा घुरैले

ई देशक राजि ानी ि ी
मीञ्ञयामे काज करैत ि ी
मुदा,
राञ्ञाके घरमे नञ्ञ रहैत ि ी
जखनञ्क ञ्ञि ॅ-चुनमुनी सेहो
साझ पि ॅत घर घुरैत अञ्चि

एञ्ञ ठाम अपन बाबा सेहो
मोन पि ॅत ि ञ्चि
बाबा कतेक तमसाइत रहञ्चि
जखन हम अनहार भेलापर
घर नञ्ञ घुरैत रही

कहञ्चि न ई बुि बिक भऽ गेल
साझक बेला ञ्ञतलाक बादो
घर नञ्ञ घुरैत अञ्चि
कञ्ञया बुञ्चियार हएब अहा
आइ अहाक पापासँ कहै ि ी

ओञ्ञ नेनपनमे हम
बाबाके मनाबी

हुनकर पएर जाती आ
सफ्फत खाइ,
कही बाबा, काश्मि सँ सकाले आएब
कतेक लाम-काफ दैत रही
आ
श्वकएक तँ पापाक िपिक
नामेसँ िििरा जाइत रहए
हमर देह

मुदा आब जखन बाबा नश्च िश्चि
पापा श्वकि नश्च कहैत िश्चि
हम आइ अपन पएरपर ठाढ़ िी
चाश्चयो कऽ साझ खन घर नश्च
घुश्च सकैत िी

सोचैत िी,
स्नगर्मि बाबा
बैसल हेता आ सोचैत हेता
ई बुिबकहा
हमर गप नश्चए मानलक
साझ खन श्चिया-चुनमुन सेहो घर
घुश्च अबैत अश्चि
मुदा ई मनुखो भऽ मनुख नश्च भेल।

की फकपिित अिछ

ओक्षु ध्वन
संपूणिवैशालीमे
श्मशान सन
शाध्वा िल

जञ्झ ध्वन
आमपालीके तािगत
कलयुगक यििबितौलश्चवन
आ कहलश्चवन
नञ्झ केकरो आकाक्ष
तँ की फकपिित अिछ
आकाक्ष केकरो
तँ की फकपिित अिछ

कहब
एक बेर िखा देलहुँ
कहब
एक बेर िखा खेलहुँ।

अंगपदेश

श्वसश्व जाउ

ओश्च कणक्कि नगरी अंगपदेशके

जतए

जकरासँ जे मंथ्यातहुँ

से भेटैत

कश्वयो श्वकमश्वाला सन श्वशश्वदालय

रहै अश्च ठाम

चार  कातसँ लोक आबश्वि

श्वाक्त लेबा लेल

एश्च ठाम अश्वि

मंदार पवत्ति

जे अश्वि

समुदर्सां निक श्वाशानी

अश्च ठाम आएल रहश्वि

कश्व रश्वनश्नाि

शरतचंरक नेनपन

बीतल एश्च ठाम

मुदा

अंगपदेशपर

ककर नजश्व लागल

ने ओ चास-बास ने आस

दलमश्वात होइत अश्वि

अंगपदेशक आत्मा

आ बजबैत अश्वि

तारणहार

परीक्षा

कहू वा नञि कहू
अलबल रीति-बीति
युग-युगसँ
अपन समाजक कोढ़-करेज
कोढ़ि अछि बनेने

एकटा पावनि अछि मधुश्रावणी
पतीक पञ्चावलसँ सम्बन्धित केट लेल
होइत अछि अइमे टेमी
जकरा कहैत छी
हम अग्निस्नानी
बारंबार दैत छथि परीक्षा
त्रेतामे सीता ओ अहिल्या
कलयुगमे होइत छात अग्निपरीक्षा

छी हम पुरुष
मुदा छी बड़ डेरबुक
तैँसँ परीक्षा नञि दैत छी
नञि फेलक चिंता आ ने पासक

पाटनिर, अहाक मूल की ?

अहाके मोन छथि कथा मुक्तबोधि
जखन हुनका भेटलयो नव लोक भेटैत छलखिन्ह
तँ पुछथिन
पाटनिर, अहाक पाशिवक्स की
आब तँ मुक्तबोधि नहि छथि
मुदा मिथिलामे हुनकर गप
घर-घर मे
अहा सुनि सकैत छी
 ई गप जखन-तखन नहि सुनबै
मुदा ब्याह-दानमे आ घटकैतीमे
सुनबै एकदममे
पाटनिर, अहाक मूल की ?

अहाके एहि गपमे
अंतर भेटि नहि लागत
मुदा पताल आ अकासक अन्तर छैक
मुक्तबोधिक गपमे मानसिक आ वैचारिक स्तर
जखनकि मिथिलाक संस्कारमे
चिखटुओ जे छथि से पूवजिक गुणगानमे
पेटकुनिया देने भेटताह

एकटा गप पुछै छी
आबकि राजतंत्र छैक
जे राजाक बेटा
राजा होएत ।

नञि टाइम अपना लेल
नेनामे गाम-घरमे सुनैत रही
नोकरी नञि करी
तखन तँ
एक कानसँ सुनि दोसर कान दऽ
उड़ा दैत रही
मुदा जखनसँ नोकरी केलहुँ अछि
बुझबामे आबि गेल नोकरीक भाव

नञि अपन ठाम ने ठेकाना
जतए कंपनी पठेलक
ओहि ठाम वैह ठेकाना
नञि सुतैक टाइम नञि उठैक आ ने नञि खाइले
नञि टाइम अपना लेल
यैह ि नोकरी ।

भाव-समपर्ण

जीवनक जीवंतता की
मनुष्यक मनुष्यता की
जेहन मोन, जेहन भाव
तेहने होइत अछि भाव-समपर्ण
नर्तकी जखन राग मालकौसमे
स्टेजपर बिजलीक बिजलौकामे
अपन संपूर्ण पिसाभाक पदर्शन करैत छथि
देखू तखन की होइत अछि राग, की बनैत अछि भाव

लागत जेना देहमे नर्तकीक आत्मा नहि
देवता बैस गेल रहै
जे जेना नचा रहल छि
तेहना नर्तकी नाचैत छथि

की ततकार की ठाठ
की करी ओइ चकरघिन्नीक वर्णन
शब्दो तँ ओतेक नहि अछि
तँ कोना करी वर्णन
भाव-समपर्णक

अहा ककरो बेटी होएब
अहा ककरो बहिन होएब
मुदा अहा जकरासँ पेम करैत होएब
से होएत कतेक भागशाली

जे नर्तकी अपन संपूर्ण समपर्ण-अस्मिता
नृत्यमे झोंकि दैत अछि
ओकर पेम वा पुरुष
होएतैक सभपहुँ संपूर्ण।

इतिहासक खखल

कोनो इतिहासक पोथीक पना पलटि कऽ देखू
खाली शासक वा राजाक इतिहास खखल गेल छैक

रामाएण आ महाभारतोमे शूरवीर आ विजेताक
गुणगान भरल छैक

भारतक स्वतंत्रताक पहिल वा ओकर बादक इतिहास
एकरा सँ फराक नहि छैक
 माउंटबेटनसँ लऽ कऽ
गान्धी आ नेहरू चंद्रशेखर आ अम्बेडकर धरि
गुणगानसँ भरल छैक

गान्धीजी कहैत रहथि देशक अन्तिम मनुखक गप करू
ओकर नीक,
तखन होएत देशक उत्थान

हम पुछैत छी
इतिहास तँ कहियो
देशक अन्तिम मनुखक गप नहि खखलक
तँ हम कोन लुत्फ़ये करब।

आतंक

आतंकसँ नञि होइत अछि आतंकवाद खतम
ताहि लेल नञि गोली वा बारदक जर रहि
दू-चारि गोटेके पकड़ि कऽ गोली मारलासँ
नञि सून-सपाट होएत आतंकवाद ।
माक्र्सके जेना रहै माक्र्सवादक जर रहि
समाजके रहै समाजवादक दरकार
आतंकके नञि कोनो वादक आवश्यकता

खत्म करऽ पड़ति आतंकक गाछि
ठाढ़ि काटलासँ नञि चलत काज
संपूर्णतांकि करै पड़ति बेनवास

से सुनू, समाजमे पेम आ भैयारी
भूख-प्यासक आदान, आक्रो ओ सदभावक
अलख जगबै पड़ति

तहिसँ सुनर परिवार, सुनर समाज
सुनर देश आ सुनर दुनिया होएत।

इन्द्रपस्थक कथा

युग-युगसँ लिखल जा रहल अछि
इन्द्रपस्थक कथा

द्वापर मे अही ठाम छल पाण्डवक राजधानी

जकरा पाबैक लेल अठारह दिन धरि भेल महाभारत
मारल गेल हजारक-हजार लोक
समए बदलल, आब नहि छथि ओ पाण्डव
नहि ओ कौरव
मुदा आबो मारल जाइत अछि लोक
तहिया उजड़ि गेल छल गामक-गाम
आइ कामनवेल्थक नामपर
उजड़ि रहल अछि गरीबक झोपड़ी

हम पुछैत छी
शिखंडीके आगू कऽ रचल गेल छल षरयंत्र
सत्ताक लेल भाइ-भाइक दुश्मन भेल
मार्र-काट्ट कऽ केलक वंशक नाश
आब अही इन्द्रपस्थमे वर्ल्डक्लासक नामपर
रचल जाइ अछि षरयंत्र
गरीबके भगेबाक लेल।

नोकरी आकि आजीवन कारावास

नेनामे अहा घोइट-घोइट कऽ
याद करैत रहिऐ किताबक पन्ना
सोचैत रहिऐ खूब पढ़ि-लिखि कऽ
नीक सन नोकरी भेटत
तहि लेल दिन-राति घसैत रही कलम
क्लासमे अबैत रही पहिल
मुदा जखन नहि भेटल सरकारी नोकरी तँ
पाइवेट नोकरी करै पड़ल

एखन समयमे नहि अपन लेल समए
नहि परिवारक भरण-पोषणक लेल पाइ
एहि ठाम विकट परिस्थितिमे
मन पड़ैत अछि बरटोल्ड ब्रेख्ट

हुनकर कहब छलनि जे एक गोटाके
कम दरमाहा देब माने अछि आजीवन कारावास

हम पुछैत छी
अहा कहू वा बताऊ कोन नीक
कम दरमाहाबला नोकरी
वा आजीवन कारावास
एक ठाम, अहाके दुनियाया भरिक रहत दायित्व
मुदा नहि रहत शासन
दोसर ठाम, अहाके दुनियाया भरिक रहत शासन
मुदा नहि रहत कोनो दायित्व।

जाश्वा-पाश्वा

जाश्वा-पाश्वा मिर्संपदाय लऽ कए जाथि
एक-दोसराके देखए नश्व चाहबै
ताथि अहाक कल्याण नश्व होएत

जखन अहा जनैत ी
कमक्रि आिरसँ बाटल गेल रहए
जाश्वाक भेद तखन अहाक ई आकोश-हाकोस
आ ई तामस वा श्वाश्वायाएब देश्व कऽ
हँसी अबैत अश्वि हमरा

जश्व जुगमे जेकरा जे नीक लागल
एहने मिवा संपदाय बनौने िक
जकरा जाश्वसँ श्वात जुलि
तश्वसँ जुलि
जकरा जाश्वसँ श्वात नश्व जुलि
से नश्व जुलि

ओश्वनामे अहा जे
दोसराके गाश्व-फजजश्वा करैत ी
ओश्वसँ केकरो नश्व
खाली अपान श्वान्हास बतबैत ी।

एक ूरि जमीन

एक ूरि जमीनक लेल
जे अहा श्वाश्वाया रहल ी
की सोचैत ी
अहा संगे लऽ जाएब

एक ुरि जमीन सँ श्वकु नश्व होएत
साल आश्वक हजार सालसँ
जमीन ओही ठाम िक

आइ ि ी अहा काश्चि नश्च रहब
जे अहाक जमीन िकने ि श्चि
ओ सेहो नश्च रहताह

मरलाक बाद चाश्च हाि जमीन चाही
अंश्चम संस्कार लेल
तकरा बाद सब ि ी माश्च
तखन एक ूि र माश्च लेल
क ि ीले मरैत ि ी
क ि ीले श्चाश्चयाइत ि ी
क ि ी लेल मन मश्चन करैत ि ी

तँ सुनु, नश्च कर
एश्च माश्च लेल हाए-हाए
कोनो एहन काज कर
माश्च आश्चक सभक करेजमे बैश्च जाऊ।

चंरमुखी

अंगपदेशक लोक नञ्ञ जनैत अछि चंरमुखीके
सुखी अछि जे सभ छकयो ओकरा नञ्ञ जनैत अछि
दुखी अछि जे छकयो ओकरा जनैत अछि

जे जनैत अछि शरतचन्द्र चटोपाध्यायके
देवदासके ओ जनैत अछि
जनैत ि‍क सेहो अंगपदेशके
अंगपदेशक अधवासी ि‍लीह चंरमुखी
नगरवधू नञ्ञ मुदा ओकरोसँ कम नञ्ञ ि‍लीह
जोगसरमे हुनकर कोठा ि‍ल
शरतचन्द्र गेलाह हुनकर संग चंरमुखीक आत्मा
अंगपदेशके ि‍अछि देलक
आब नञ्ञ ओ ठाम नञ्ञ ओ ठौर
जे पारो आछक देवदासके जनैत अछि
चंरमुखीक तकलीफ जनैत अछि
जे नञ्ञ जनैत अछि
अनठेने अपनेमे रमल अछि।

मिथिला हमर देश

मिथिला हमर देश अछि
हमर रग-रगमे मिथिलाक पानि
आ हवा बसल अछि
तेँ जखन मोन पड़ैत अछि
बिहुँसि दैत छी
दुखी करबासँ पाछाँओ नहि रहै छी
ई मिथिला हमर जन्मस्थान छी
ई मिथिला हमर पूर्वजक पहिचान छी
नीक वा अधलाह
ई मिथिला हमरेसँ नाम छी
अहा जेहन करब काज
अहा जेहन संस्कार पाएब
अहा जेहन संस्कार देब
ओहीसँ मिथिलाक जान छैक
से नहि ओहेन काज कर
से नहि ओहेन आस कर
जकरासँ नहि माथ मैथिल आ
मिथिलाक वासीक मोनके ठेस लागै।

वंशक श्चराग

गाम-घरक जखन हालचाल जनैत ि ी
सुनैत ि ी फलना मातृकमे अश्चि नाना-नानीक संग
कोनो घर नश्च भेटत जे अपन बुतापर अपन बच्चाक
पालन-पोषण कऽ सकत
दैत ि ी गप
श्चअ लपालप फकि ी
लहालोट सभ घरे-घर भेटताह
दस श्चनटक मजा आ तकर सजा
माइ आ मातृकक लोक भोगता
जखन अहा जमाए बश्च सासुरमे अश्चिकार करैत ि ी
तखन अपन कतश्चिके श्चकए श्चसश्च जाइत ि ी
अहा देने ि ी बच्चाके जन्म अहाक वंशक श्चराग अश्चि ओ
अपनश्चसँ पालन-पोषण करश्चमे संतुश्च क लेल
करश्च परत मेहनत श्चनराश्च एक।
फूश्च आ सत
फूश्च, फूश्च आ फूश्च
एकटा नुकाबै लेल हजार टा
फूश्च बाजए पति
मुदा सत गपमे ई गप श्चकए नश्च होइत अश्चि
एहन होइत अश्चि एकटा सत बाजबाक संग
हजार सत आगू आबैत अश्चि
एहन लोक मे दूइ टा गप होइत अश्चि
सत आश्च फूश्च अहा कोन श्चस ठाढ़ ि ी
वा होएब
ई अहाक श्चवेक, बुश्च वा श्चणश्चिक क्मतापर अश्चि
ई गप सत अश्चि जे फूश्चक महल
भुरभुरा कऽ खश्च जाएत सतक एकश्च झोकसँ।

बिकाइत छैक

कनियाँयो अखनहुँ देशमे कमला बिकाइत छथि
खबर छिपलाक बाद बबेला मचि गेल छलि
राजस्थानिक कमला एक महीससँ कम दाममे
बिका गेल रहथि
लोक वेद एकटा संगिगणक बिकेबापर कतेक हल्ला केलक अछि
आइ स्मरणमे अछि ओ गप मुदा एखनो बिकथिलाक
पुरुषक दशा देखि अयऊ लड़कीसँ ब्याह नहि करैत छथि
दहेजक नामपर बिका जाइत छथि लड़कीक बाप हा।

महागरीब

एक श्वनक गप अथि
िटका नुनू आ भौजीमे
बाताबाती भऽ गेल
भौजी कहलश्वन ई ुर, अहा सभ
गरीब ी नश्व अथि मकान
नश्व भेटैत अथि भश्व पेट भोजन
हमर नश्वयरक गप श्वक ु आओर अथि
िटका नुनूके नश्व रहल गेल
ओहो श्वकए पा ू रश्वतथि
श्वथि लाक ब िका गपाष कमे डुबकी लगौने कहलश्वन
सुनू भौजी, सभ बाप अपन बेटीक व्याह
अपनसँ ऊँचमे करैत ैक
जे हम गरीब ी तँ अहाक नश्वयर अथि महागरीब।

चुनावक गप

चुनावक मौसम आश्व गेल
सभटा नेता जे चुनावक मैदानमे
ठाढ़ होइत िथि अपन सम्पश्चाक लेखा
लोकक आगू रखैत िथि
केकरो एकटा वाहन नश्च
केकरो अप्पन मकान नश्च
श्चकयो एहनो अश्चि जेकरा लग िक कुबेर सनक सम्पश्चा
मुदा आम जनताक श्चसँ
हम पुित िी
ओश्च सम्पश्चाक लेख-जोखमे कतेक
सत रहैत िक कतेक फूश्च
अदालतमे तँ िमिािक शपि खाए
फूश्च बाजल जा रहल ि सहसाव्दीसँ।

पप्पू केकरा देत वोट

ध्दल्लीमे एख्र बेर एकटा नाराक
खूब पचार-पसार भए रहल अधि
“पप्पू कान्ट वोट”, माने ई जे
जे चुनावमे वोट नख्र दैत अधि
ओ “पप्पू” अधि
माने ई जे
जे चुनावमे वोट नख्र दैत अधि
हुनका अपन अधिकारक आ कतव्यिक जान नख्र अधि
एकर मतलब ई भेल
इलेक्शन कमीशनके पता ि‍क जे बेसी लोक
अपन अधिकार आ कतव्यिसँ ध्वमुख अधि
तख्रमे ध्वजापन वा पचारक की जर रख्रा
जेकरा ई जान नख्र ि‍क जे हम की करी
एकरासँ लोकतंिपर की फकपिति

ओख्रनो पागल वा ध्दवाख्रयाके
वोट देबाक अधिकार नख्र ि‍क
एख्र लोकतंिमे।

नञि कर  घोषणा
जञियासँ होश सन्हारने ि ी देखैत ि ी सभ चुनावमे हम
नेताजीके करैत घोषणा
सकि बनबा देब, घर बनबा देब,
रोजगारक सुविधा घर-घर पहुँचा देब
आर तँ आर
एक टकामे चाउर भेटत सभके
एहन स्वप्न देखाबैत छथि नेताजी

जे हुनकर सरकार की आओत
राइते-राइत दुनिया बदलि जाएत
साठि साल भऽ गेल भारतके लोकतंत्र बनल
साठि साल भए गेल नेताक आशासनमे जीब
जागू जनता-जनार्दन जागू एक बेर कहियौ
एहि नेता सभके
अहि बेर नञि दियौ कोनो आशासन नञि कहियौ कोनो घोषणा
हुनकासँ एतबे टा कहियौ जे अहाक पाटी
पछिला बेर तक जेतबा घोषणा कएने अछि
ओहि टा के पूरा कए दियौ एतबे टा पूरा करैत
युग बीत जाएत एक खाढ़ीक नेता की करत
दोसर खाढ़ीक नेता ओहि घोषणाके पूर्ण किरत
कए सकत आकि नञि एकरोमे संदेहे।

थ्रअए पति वोट

लोकतंत्रिक लेल ई बि लाजक थ्रषए ि क
जे चुनावक मौसम आबैक संग नेता आ गि मे
कोनो अंतर नथ्र रथ्र जाइत अथ्रि
जथ्र उम्मीदवारके जेथ्र दलसँ थ्रकटक जोगार लागैत ि क
ओथ्र दल सन रंगमे रंथ्रा खोल ओथ्रढ़ लैत अथ्रि
नथ्र कोनो भरोस, नथ्र कोनो सम्मान
बस जनताके मूखबि नाबैत ि क ई नेता
थ्रारथ्राटो एतेक तेजीसँ अपन रंग नथ्र बदलैत ि क
जेना नेता बदलैत ि क पाटी वा थ्रादात
आब समय आथ्र गेल नेताके थ्राखाबए पति सबक
जनता जखन जागत तखन ई गप हएत संभव
एकरा लेल अपन अथ्रिकारक पयोग कए थ्रअ पति वोट।

बदलि गेल वैशाली
वैशाली छलि पहिल गणतंत्र
जतए जनता द्वारा जनताक आ जनतापर शासन छलि
सहस्राब्दीक बाद जखन एक बेर तिरंगा देखैले एलथि
एहि भारतवर्षक लाज आ तामससँ घामे-पसीने भए गेलाह
एक गोटेसँ पुछलथि की रौ एहि भारतवर्षमे लोकतंत्र छैक
हमर समयमे असगर ठाम रहैक वैशाली, जतए छलि गणतंत्र
तिरंगा अपन गप जारी रखि खतम कएलथि एकटा लोक कहि देलथि
हुजूर एतए लोकतंत्रक परिभाषा बदलि गेल
आब एहि लोकतंत्रमे जनताके बिसरि जाऊ
गोली-बार द्वारा गोली बारदक आर गोली बारदपर शासन
होइत छैक एहि वैशालीमे।

सपना अपूणे रह्ल गेल

आकाश मंडल साफ
सूयक्रि ताप मध्यम-मध्यम
नीक लोकक एकटा फूटे रोमासक भाव आबैत रहैत

ओह्ल क्षन जखन हम आ अहा
एक-दोसराक आल्लंगनमे एकाकार भेलहुँ
सूयक्रि ताप कम भए गेल वायुक वेग उदील्ला भए गेल
एक-दोसराके क्षाडहारैत उज्जवल करैत
दुइ सास एक भए गेल एक दोसरामे
पूणरि्पेण एकीकृत होएबाक लेल
रोआं-रोआं पुलक्कत ि
मुदा,
जना सूयआि चाद, अकास आ िरती
एक नह्ल होइत अछ्रि तह्लना हमर सपना
अपूणे रह्ल गेल आ सभटा लोक
क्षार क्षारामे आलीने रह्ल गेल।

सामाल्लक पाणी
पह्ललुक बेर
अहासँ भेल जखन भेट
नह्ल अहामे एहन क्षक्ि गुण भेटल
जकरा मोन राख्लतहुँ
मुदा आस्ते-आस्ते सबंि पगाढ़ भेल
नह्ल रहलौ हम आ अहा अनक्षान्हार
कने-कने कए एक दोसराके क्षान्हलहुँ
सुख-दुखमे संग काज-बेकाजक गप
सभटा सहभागी भेल

क्षन होइत वा राक्षा जखन मोन पति
तखने फोनसँ गप भए जाइत िक
जीवनक याि कखन िक्ष साि चलत
क्षकयो नह्ल जानैत िक

मुदा एक टा गप मानैये पति
जे मोनक कोनो कोन एक-दोसरक बिना खाली छैक

अरस्तु कहने रहैक "मनुख एक टा सामाजिक पाणी छी"
तेँ सँ सामाजिकताक विचार करी
हम दूर-दूर छी नहि जाइ कहियो एक भेल रहैतहुँ।

जीवनक पथ्रिक

हम जीवनक पथ्रिक ि ी

जश्चना रेलगाि ी चलैत काल

अपन पाि फ्लेटि ामक्कि ि ि ति चलैत ि कि

तश्चना जीवनमे पि ाव आबैत रहैत ि कि

अहा हमरा लेल जीवनक कोनो पि ावपर

नीक केलहुँ वा अि लाह हम अहाक लेल

अि लाह केलहुँ वा नीक

जखन हम वा अहा

एक बेर शात मश्चस्तष्कक आ शात हृदएसँ सोचबै

वा सोचब जखन थ्वकट पश्चश्चस्थ्रश्चिाक सामना करए पि ति

तखन जे दोषी होइत ओ अपन चेहरा अएनामे

नश्च देश्चख सकत अपनाके कश्चहयो

माफ नश्च कए सकत

मुदा, हे पथ्रिक

ओश्च काल हुनकर हाि मे

थ्वकि ु नश्च रहत नश्च ओश्च ठाम

नश्च हाि पर समए।

गामक गप

एक युगमे होइत ैि क बारह बरख
आ एक बरखमे होइत अिछ तीन सए पैसैठ िदवस
एक िदवसमे होइत ैि क चौबीस घंटा
एक घंटामे होइत अिछ साठ िमनट

हम कोनो अहाके गप्प करैत आ समएक
िहसाब-िकताब निह बुझा रहल ि◌ी

हम जोिड़ रहल ि◌ी कतेक समएसँ
गाम निह गेलहुँ आि◌ युग बीित गेल गाम गेना

जिह िदवससँ बाहर अएलहुँ
शहरक रंग-ढ़ंगमे रंिग गेलहुँ

सोचैत ि◌ी हम एतेक बदिल गेलहुँ
ओ गाम कतेक बदलल होइत
ि◌टका काकाक दारपर आबो लागैत हेतै घूर
दलानपर बैठकीमे होइत हएत सभ शािमल

सूयउिगलासँ पिहनिहये सभ जाइत हेतै लोटा लऽ कए
दतमैनसँ मुँह आबो ि◌इत हएत आिक निह गामक लोक

पाच बरखमे सरकार बदिल जाइत ैि क
गामक लोकमे सेहो पिरवतन भेल हएत

लकि◌ी-काठीसँ चुलही जरैतत हेतै आिक निह
बभनगमावाली भौजी चाएपती मागइले आबैत हेतै आिक निह

गोबरसँ घर-दार नीपाइत हेतै आिक निह

दरबज्जापर माल-जालक टुन-टुन बाजैत हेतै आक्षक नक्ष

ई सभ सोचैत काल हम एक-एक गपक तुलना करैत ि ी शहरसँ
गाम आ शहरमे फकभिऽ गेल ि क
जमीन आ आसमानक

मुदा,
सभ क्षक ि गाममे बदक्ष गेल
नक्ष बदलल ि क तँ आत्मीयता।

बच्चा नीक ि

ई बच्चा नीक ि

कतेक नीक तकर मापदण्ड नञ्ि कोनो

सुसंस्कृत-संस्कारवान ि कतेक

तकरो पैमाना नञ्ि ि

बेसी बजै नञ्ि ि दुिनयादारीक नव वस्तुके

बूझाबक इच्ि ा नञ्ि ि

तािञ्ि लेल ई बच्चे नीक ि

माएके दूि थाएबाक लेल तंग नञ्ि करैत ि

नञ्ि भेटैत ि क तखनो चुप्पे ि

आ तािञ्ि लेल ई बच्चा नीक ि

दुिनयाक फीसानी देिख कऽ

अपन दुखक सोिच कए

ई बच्चा कानब िबसिर गेल

तािञ्ि लेल ई बच्चा नीक ि

माए-बापक झगि ा देिख कए

घरमे अशािन्तसँ घबराएल ई बच्चा

केकरो िकछु नञ्ि कहैत ि

तािञ्ि लेल ई बच्चा नीक ि

जे रटाएब से रटत

अपन िदमागसँ िकछु नञ्ि पूि त

िकताबी कीि ि ई बच्चा

ताश्च लेल ई बच्चा नीक ि

सोचैक क्मता नश्च ि
माए-बापसँ पूश्चि कए करैत अश्चि सभ काज
ताश्च लेल ई बच्चा नीक ि

दुमुँहा बच्चा जेना नश्च श्चकि बाजैत अश्चि ई
नश्च श्चकि काज करैत अश्चि
आ ताश्च लेल ई बच्चा नीक अश्चि।

जिनगी एकटा तमाशा

जिनगी एकटा तमाशा ि
कखनो उतार कखनो चढ़ाव
कहियो खुशी कहियो गम
एकरे नाम जिनगी ि

जिनगी एकटा तमाशा ि
केकरो जीतपर केकरो दुाख
केकरो हारिपर ककरो सुख
सुख-दुखक सार जिनगी ि

जिनगी एकटा तमाशा ि
एक ठाम फेल तँ दोसर ठाम पास
पास-फेलक झमेला जिनगी ि

जिनगी एक तमाशा ि
केकरो कानलासँ हँसब केकरो हँसबासँ कानब
हँसबाक-कनबाक खेल जिनगी ि ।

स्त्रीगण

स्त्रीगणके दोसर दजाक मानलासँ
पुरुष समाजके की भेटैत छैक
एकटा संतुष्टि एकटा घमंड
सोचैत छी हमही सर्वोपरि

मुदा एहि फुसियाहीक गपसँ
नहि एकटा भेटत केकरो दुख दऽ कऽ
अहाके सुख भेटैत अछि ?

तँ सुन लिअ एकटा गप अहा कहियो सुखी नहि रहब
स्त्रीगणसँ सीखू सामंजस्य बनाबैक लेल पर्बंधनिक गप
आ व्यक्तिगत क्षमता

कहबामे ई सभ छोट गप लागैत अछि
मुदा अहाके क्षमता नहि अछि जे
नौ मास एक जीवनक भार सहि
भोरसँ साझ धरि भनसाघरमे रंग-बिरंगक
तीमन बना सकब

कतबो भ्रयौ तकलिफ करेजापर हाथ धरि कऽ
एक बेर सोचब अहा आ
एक स्त्रीगणक क्षमतामे अन्तर
हृदए ओ दिमाग खुलि जाएत
अहाक घमंड चोरी-चोरि भऽ जाएत

अहाके मानसिक पतित तुच्छ छी अहा
दोसर दजाक तँ अहा छी
अपन कमी नुकाबैले कियामुश्ती करैत छी।

सभ्य समाज

ताकिथत सभ्य समाजमे
पेम करैक अधिकार नहि छैक लोकके

अहा पेम करबै तँ घरसँ बारल जाएब
समाजमे पतिष्ठा खत्म भए जाएत
अहा होएब घृणाक पात्र

अहा माएसँ पेम कए सकैत छी
अहा पितासँ पेम कए सकैत छी
अहा बहिनसँ पेम कए सकैत छी
अहा भाइसँ पेम कए सकैत छी
अहा घरसँ पेम कए सकैत छी
अहा पढाइसँ पेम कए सकैत छी
अहा कैरियरसँ पेम कए सकैत छी
अहा कुकुरसँ पेम कए सकैत छी

मुदा नहि कए सकैत छी पेम
स्वाभाविक भेलापर
आन जातिक युवक वा युवतीसँ

ई सभ्य समाजक परिभाषा छैक
माए-बापक पसिनसँ ब्याह कर
माए-बापक पसिनसँ पेम कर
माए-बापक पसिनसँ बच्चा जनमाऊ।

नीक लोक

नीक लोक ओ
जे रहैत अछि इमानदार
बेइमानी जखन छिल
रहैत अछि नुकाएल

नीक लोक ओ
जे रहैत अश्वि सत्यवादी
पकलि नश्च जाइत ि क
जखन ि थ्र झूठ

नीक लोक ओ
जे रहैत अश्वि संस्कारी
जखन ि थ्र आगू नश्च
आबैत ि राक्सी पवृश्चा

नीक लोक ओ
जे रहैत अश्वि थ्रशासी
जखन ि थ्र मुँह नश्च खोलैत अश्वि
ि खा पाओल लोक

नीक लोक ओ
जे नश्च करत अश्लील गप
जखन ि थ्र आगू नश्च
आबैत अश्वि कामुक पस्ताव

नीक लोक ओ
जे करत लोक संग मीठ गप
जखन ि थ्र आगू नश्च
आबैत ि क पताश्चित पती।

हम हुनकर िी

हम हुनकर िी ध्यनकासँ
र प आ रंग पेने िी
हम हुनकर िी ध्यनकासँ
संस्कार आ मयादा पेने िी
हम हुनकर िी ध्यनकासँ
अक्र आ शब्द पेने िी
हम हुनकर िी ध्यनकासँ
कदम आ ताल पेने िी
मुदा हम हुनकासँ अलग िी
ध्यनकर ओिपन आ सतहीपन
आत्माक आगू खसबाक लेल मजबूर करैत अिथ।

गप नञ्ञ मानलहुँ
अहा दोषी ि ी
अहा अपराि ी ि ी
अहा चोर ि ी
अहा अभागल ि ी
अहा देशरोही ि ी
अहा स्त्राि ी ि ी

ई गप हम नञ्ञ
काल कञ्ञ रहल अथि
ई गप हम नञ्ञ
इश्वाहास कञ्ञ रहल अथि
ई गप हम नञ्ञ
अहाक आत्मा कञ्ञ रहल अथि

अहा कञ्ञयो
आत्माक गप
नञ्ञ मानलहुँ
समाजक फूश्मा पश्चाष ाक पाि ु भागैत रही
ताञ्ञ लेल ि ी दोषी

अहा कञ्ञयो
आत्माक गप
नञ्ञ मानलहुं
फूश्मा ठाठ-बाट लेल
औनाइत जीलहुँ श्मानगी
ताञ्ञ लेल ि ी अपराि ी

अहा कञ्ञयो आत्माक गप नञ्ञ मानलहुँ
स्त्रयंके नीक कहबाक लेल अपन शाश्मा चोराबैत ि ी

ताश्च लेल ि ी चोर

अहा कश्चयो आत्माक गप नश्च मानलहुँ
स्मयंके भात्मवादी देखबाक लेल अभागल बनल रही
ताश्च लेल ि ी अभागल
अहा कश्चयो आत्माक गप नश्च मानलहुँ
देश सेवाक आश्या रहैत मुदा देशके लुटलहुँ
ताश्च लेल ि ी देशरोही

अहा कश्चयो आत्माक गप नश्च मानलहुँ
समाजक सेवा करैत-करैत
अपन सेवा करए लगलहुँ ताश्च लेल ि ी स्माि ी।

मन पड़ैत अछि

मन पड़ैत अछि पापाक डाट
जखन हम नहि पढ़ैत रही

मन पड़ैत अछि पापाक स्नेह
जखन हम सभटा टास्क पूरा कए लैत रही

मन पड़ैत अछि पापाक संग घूमब
जखन भोर-साझ टहलइले  जाइत रही

मन पड़ैत अछि पापाक चौकीपर सुतब
जखन स्कूल गेलापर जातैत आ तेल लगाबैत रहथि पापा

पापा एखनो स्वर्गसँ देखैत छथि आ स्नेह करैत छथि
एखनो घुमाबएले लऽ जाइत छथि आ
चौकीपर सुतैत छथि
मुदा हम आइ गाममे नहि छी।

माएक तपस्या

बच्चाके जनम देब तपस्या अछि माएक लेल
एहिसँ बेसी कठिन तपस्या छैक
जखन तीनटा बेटी रहए आ घरक लोक हुअए रूढ़िवादी

अछि लाक सभ घरमे एहन माए भेटत
जकरा एकटा बेटाक लेल पति, ससुर आ साउस
करैत रहैत छैक नाकोदम

अशिक्षाक मारल समाजक लोक
बेटीक नहि बुझए मोल
बेटा भेलापर
छाती फुला कऽ घुमैत अछि

बेटाके पाबैक लेल मन्दिर-मस्जिद जा कए
कौबला मागैसँ पाछू नहि रहैत अछि

बेटी भेलापर सासुरमे कोहराम मचैत छैक
पसूताके भरि पेट पताछित करैत छैक

मुदा एहन समएमे सुनबा वा बुझबा लेल
तैयार नहि छैक आइक बच्चाक जनम
एकटा तपस्या छैक
महान लोक

आम लोकक लेल
होइत छैक नियम वा कानून

महान लोकक लेल
नहि होइत अछि ई सभ लागू

आम लोक आम रहि गेल कृष्ण भगवान भए गेल
राम भगवान भए गेल अशोक समाट भए गेल

जान बचाबैक लेल कए दियौ ककरोपर पहार
तँ भए जाएत मामला दर्ज

मुदा महान लोकक जानक खातिर
तैयार रहैत अछि हजार जान

अपन सुविधानुसार आम बदलि लैत छथि
कानून बदलि लैत छथि ई महान लोक

आम लोक करए ई काज तँ भऽ जाएत अपराधी
एहि तरहक एही लेल कियो बनि जाइत अछि महान।

मनुख आ माल

आइ फश्चयाएल जाए

अपना सभ मनुख ि ी आश्चक माल

श्चकएक तँ दुनूमे ि"क

जमीन आ आसमानक अंतर

एकटा पेटक लेल रहैत अश्चि ललाइत

एकटा पश्चवारक लेल रहैत अश्चि कपसैत

एकटा फूश्च पश्चाष ाक लेल करैत अश्चि ि ल-पपंच

एकटा पाइ-कौ ि ीक लेल घ ि ी-घ ि ी करैत अश्चि नौटंकी

एकटा मानश्चाक संतुश्च लेल बौराइत अश्चि श्चन-राश्च

एकटा शारीश्चक संतुश्च लेल होइत अश्चि व्यश्चाचारी

एकटा पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद माए-बाप कऽ दैत अश्चि कात

दोसर तँ अश्चि चाश्चटा टागबला

अपन पेट भरलाक बाद दैत ि"क दोसरके अवसर

सभ श्चकयो ओकर सहोदर ि श्चि

झूठ लेल पाण नश्च गमबैत अश्चि

दोसर नश्च बौराइत अश्चि

मानश्चाक वा शारीश्चक संतुश्च लेल

पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद

माए-बाप स्पतं ि कऽ दैत अश्चि

अश्चनामे के ककरासँ उतम

ई कहैक गप नश्च अश्चि

मनसँ सोचैत आत्मासँ जाचैत

श्चाश्चि त कर जे नीक के?

मनुख आश्चक माल।

समाजक ई र प

इहो अश्चि एश्च समाजक चेहरा

श्चल्लीक बाटपर बती लाल भेलापर

इंदौरसँ श्चजामुदीन वा पटनासँ श्चल्लीक लेल टेन पक ि बा लेल

आ फेर घरक दुआश्चपर

दस्तक दैत देखबामे आबैत अश्चि ओ

नञ्च तँ पुर ष अथ्रि आ नञ्च एकटा स्री

भञ्चसक शारीञ्चक र पमे

मुदा मन वा अञ्चानयक स्ञर प

रहैत अथ्रि अलग-अलग से

से हुनकर की नाम देल जाए

माएक कोञ्चसँ इहो लेल जनम

भाइ-बञ्चनक संग पोसाएल-बढ़ल

स्कूलमे पढाइक सीढ़ी चढ़ल

मुदा फारम भरैत काल खसल भारी ञ्चपैत

ञ्चएक तँ आपशन िल दू टा स्री वा पुर ष

तखन शुर  भेल हुनकर

सामाञ्चक बञ्चष्कार

नञ्च घरक रहल नञ्च रहल घाटक

पञ्चञ्च ञ्चा सभके

जीएब ञ्चाखा दैत िक

से देखबामे आबैत अथ्रि

बाट सँ लऽ कऽ टेन ञ्चतक।

गप

शुर  करल जाए फेरसँ गप
जतए खत्म भऽ गेल ि‍ल
अपन गप आ संवाद
मुदा एि‍ह बेर ध्यान राखब
एकटा गप जे
एक-दोसरके स्प्ा‍ीन ि‍ीबि
से बेसी नीक होएत
ि‍वसरै प‍ि‍त के फूि‍स बाजल ि‍ल
के सत्यक रस्ता पकि‍ने ि‍ल
ि‍वशासघात आ प‍ि‍तापक घोट के पी गेल ि‍ल
के ककरा देलक ई कष्ट जे अनुभूत तँ भेल
मुदा कहल नि‍ह गेल
भूगोल आ इि‍तहाससँ दूर भऽ कऽ
एि‍ह समयातरालमे दुि‍नया बदि‍ल गेल
ि‍रतीस चन्द्रमापर पहुँि‍च गेल लोक
खाढ़ी-खाढ़ीढ़ी खत्म भऽ गेल आ
नबका लोक आि‍ब गेल
आब नोर नि‍ह बहैत अि‍छ ओ शब्दक जालसँ
ताि‍ह हृदय मोम नि‍ह बनैत अि‍छ
ककरो नोरसँ अनंत कालक स्मृि‍त आइयो
ि‍सनेमा जेका आंि‍खक आगू घुमैत जाइत अि‍छ
ि‍बना कोनो बेक आ इंटरवलक नक्सलक नामपर
मि‍र जाइ ि‍ल्ि‍छ लोक लहाशक ढेर
से गुजाि‍र रहल ि‍ल्ि‍छ ि‍दन आ राि‍त
डेग-डेग पर बार दी सुरंग
आ बंदूकक नोकक आगू
ि‍आनन्द नि‍ह आबैत ि‍क लोकके
जखन ई बात सहसाि‍ब्दीसँ ि‍ल
इराकसँ लऽ कऽ अफगाि‍नस्तान ि‍ध
मनुख नि‍ह ि‍क
ओ मनुख जकरामे एकटा आत्मा ि‍ल कि‍हयो
ओ भऽ गेल अि‍छ मशीन

एकटा ओसामा बझ्ा गेल ि लि अशाश्ाक पतीक
दोसर ओबामाके भेटल शाश्ाक आशामे नोबल

एश्ह युगमे जतए बाट एतेक कंटकाकीणर् ि क

ओतए श्वसरल बाट ताकश्ह प ि त
गप शुर करश्ह प ि त एक ठा बैसै प ि त
एकटा उम्मेदक संग
कोन गपसँ खत्म होएत मोनमुटाव
बुझाउ जे कखनो ि खा खा सकैत अश्ि ओ
एश्ह बाटपर।

सुतल अछि अनंतकालसँ

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
एहन नहि जे ओ बेसी थाकल अछि
एहनो नहि जे ओ राति भरि जागल अछि
ओकरा घर वा दफ्तरमे कलह नहि भेल अछि ?

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
राति भरि करट बदललाक बाद
राक्सी खानपान केलाक बाद
देहमे शिथिलता एलाक बाद
दू टकाक लेल झूठ-फूसि केलाक बाद
अदहा दुनियाँपर कुचेष्टा केलाक बाद

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
किएक तँ ओकर मामलाक सभटा गप फूसि अछि
सत्यके फूसि वा फूसिके सत्य बना कऽ
प्रस्तुत करब छैक आसान
किएक तँ ओकरा आनन्द नहि अबैत छै सत्यक सोझा
ओकरा आनन्द नहि आबैत छैक कटु सत्य सुनलापर

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
किएक तँ ओ पढ़ि नहि सकल
किएक तँ ओ एहन भक्त अछि जे
खाली 'जी हँ, जी हँ' करैक अभ्यस्त
आ तरबा चटबामे आगू
नहि कऽ सकैत अछि कोनो काज
किएक तँ सुनि नहि सकैत अछि ओ  जे ओ अछि
आसानीपर प्रशासन कऽ सकत
मुदा नहि कऽ सकत सम्वाद

तँ आबि गेल अछि ई समए
कुंभकर्णी नीदमे सुतल लोकके जगैबाक
तथ्य आ तर्कक कसौटीपर कसबाक

अनपढ़के पढ़बाक शौकएक तँ बुझिबक जानी
कखनो ककरो शौकि नञि सुझा सकैत अछि।

मुदाघर

आब ह िताल नञि होइत अछि
कायालयमे, फैक्टीमे
अपन मागके लऽ कऽ कोनो शहरमे

आब िरना-पदशनि नञि होइत अछि
मंिालय वा थभागक आगू
कोनो मुआवजाके लऽ कऽ
कोनो भीिभािबला सिकपर

आब झगि-फसाद नञि होइत अछि
चौक-चौराहा वा चौबट्टयापर
अपन अधिकारके लऽ कऽ कोनो मोहल्लामे

जखन की एखनो माग अछि यिवत
नञि भेटल एखन िधि केकरो मुआवजा
अपन अधिकारेसँ बेदखल कएल जा रहल िथि लोक
सब थ्रश नजथ आब रहल अछि मुदा-मुदा

सीिक माग भऽ रहल अछि सून
समाजक तिाकथित सफेदपोश ठेकेदार
आकाश रहल िथि टाटी
घुथ रहल िथि सीिगण, पुर ख

जे से, ओ देश, देश नञि
जतए मागके लऽ कऽ
मुआवजाके लऽ कऽ
अधिकारके लऽ कऽ
आ मुदाक लेल
अबाज नञि उठैत अछि
पसरल रहैत अछि आशब्द मौन

ओ लगैत अछि मुदाघर।

## मन पड़ैत अछि

कतेक दिन बाद आइ
मन पड़ैत अछि रामपसाद
ओ रामपसाद जेकर पिता आ पितामह
हमर पितामहक हरबाह छल

मन पड़ैत अछि हुनकर हर
जकरासँ खेत जोतैत छल भोर आ साझ
ताहि दिन कतेक मन लगैत रहैक गाममे

ओहि हरमे जोतैत छल दू टा बड़द
बड़दक घंटी आबो बाजैत अछि कानमे

मन पड़ैत अछि जखन छानि काढ़ि कऽ
बोझ राखल रहै आंगन आ दुआरिपर

मुदा समए बीतल नहि रहल आब रामपसाद
नहि रहल आब पितामह नहि रहल आब दुआरिपर हर आ बड़द

गाममे टक्टर आबि गेल थेसरसँ आब काज होइत अछि
से ध्यान नहि टुटैत अछि घंटीसँ
आ नहि बोझ रखाइत अछि आंगनमे।

समाज

अंगरेजीमे एकटा फकरा अछि
अहा पेम कऽ सकैत छी
अहा घृणा कऽ सकैत छी
मुदा अहा हमरा नकारि नहि सकैत छी

ककरो छोट कहबासँ
ओकरो पैघ नहि भऽ जाइत अछि

ककरो चोर कहलासँ
ओकरो हवलदार नहि भऽ जाइत अछि

ककरोसँ संबंध बनलासँ
ओकरो संबंधी नहि भऽ जाइत अछि

'मा' शब्द बजलासँ
ओकरो अपन मा नहि भऽ जाइत अछि

ककरोसँ नहि बजलासँ
ओकरो बौक नहि भऽ जाइत अछि

ककरो निंदा केलासँ
ओकरो पशंसाक पात्र नहि बनि जाइत अछि

ककरो मित्र नहि बनबै छी तँ
ओकरो दुश्मन नहि बनि जाइत अछि

ई सभ गप एकटा पहेलिका नहि अछि
परिस्थिति अछि समाजक
जतए समाज, संस्कृति, परंपरा आ
कतेक 'वाद'क नामपर अपन दोष
नुकैबे लेल दोसरके दोषी
ठहराओल जाइत अछि सदएसँ।

मरलाक बाद

अपन देशमे एकटा अछि
लतमारा गोसाई
ढेलमारा देवता आ पूजाक स्थान

अहिठाम पहिने
लात मारल जाइत अछि
आ ढेला फेकल जाइत अछि
तकर बाद पेमसँ होइत अछि पूजा

फकरा अछि
मरले गुण की पहिले गुण
ताहिसँ मरलाक बाद
सभ कियो भऽ जाइत अछि देवता

जीवित मनुक्खसँ दुश्मनी
आ मरलाक बाद एहन नीक
जे कहलो नहि
जाइत अछि

मुदा
ई गप नहि
ई अछि हमर सभक संस्कार
आ विचार
बढ़ैत लोकक निंदा करब
नीक लोकके गारि पढ़ब

काज कम बेसी गप देब
ई छी हमर सभक
संस्कृति आ शिष्टाचार

उगैत सूरजके पणाम सभ कियो करैत अछि
अपन देश टामे मनाओल
जाइत अछि छठि
जाहि मे डूबैत सूरजक
कएल जाइत अछि अराधना
मुदा एकरोसँ किछु नहि सीखैत छी हम

से डूबैत लोकक काछि लैत छी गरदनि
साहित्य, समाज, कला आ राजनीतिक कोनो समाजमे

ककरो कियो नहि करत आदर
दिकमिआ पेट भरि भोज खा कऽ
कहत मरलाक बाद
अहाक आत्मा भऽ गेल तृप्त

जीवित रहैत जकरा अहा नहि सोहाबैत छी
ओ कहत अपन संस्मरण,
कहत अहा रही देवता सन

अहाक नाम पर स्थापित होएत संस्था
अहाक नामपर देल जाएत पुरस्कार

जीवित रहत अहाक कृतित्व आ व्यक्तित्व
आरोप लगबैत रहै बला लोक
गुणगान करत अपन नाम अहासँ जोडि
भरल जाएत पना पोथीक
पिपत अहाक संगक स्मरण

सभ बरख अहाक मरलाहा दिन
कोनो नीक सभागारमे

फोटो सजाकऽ फूल-माला चढ़ाकऽ
देल जाएत बकिा-बकिा गप

आ नोर बहाओत लोक
जेना सभसँ बेसी कष हुनका भेल
एकर कारण ई जे आब
नञ्ञ दऽ सकत केकरो गाञ्ञ

ईष्या, देष, झंझट
आ िल-पपंच
सभटा दोष देल गेल जखन
रही एञ्ञ िरा पर

तपस्ी, सुकमी आ
अनंत ञ्ञभूषणसँ ञ्ञभूञ्ञत भऽ गेलहुँ
जखन बैसल िी अहा
स्ागविा नरकमे

सुनु तात हमर गप
अपन काज कम
दोसराक काजमे टाग ञ्ञाबैत
ञ्ञंदा-ञ्ञाकाइत करैत
काठपर जिित माञ्ञसँ ञ्ञाकञ्ञ कऽ
माञ्ञमे ञ्ञालैत
कतबो गप फेकब इएह िी यििि
रञ्ञ जाइत अञ्ञ अहाक नीक कमि
आ अहाक नीक बोल।

ओम पकाश झा- ककयो बूझ नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १-८७, रबाइ-१-८, कता- १-२)

अपन गप

आइ हम अपने सबहक हाथमे ई पोथी समर्पित करैत बहुत पसनताक अनुभव कऽ रहल छी। हमर ई पहलुक पकाशित पोथी थीक आ सेहो मैथिली गजलक थीक, ई बात हमरा बहुत आनन्दित करैत अछि। एकएक तँ हम आनो विधामे मैथिली साहित्य लिखैत छी, मुदा हम मूल रूपसँ अपनाके गजलकार मानैत छी। हम ओना तँ नेनपनेसँ कछु-कछु लिखैत रहलौ, खास कए तुकबन्दी करबामे हमरा नीक लागैत रहल, मुदा गजलकारक रूपमे हमर उदय मात्र "अनचिन्हार आखर" आ "विदेह"क पयास आ सहयोगक परिणाम थीक। तीन गोटे जे बिना कोनो लोभ आ हेतुक ऐ पाछ रहलाह अछि, हुनकर उल्लेख कएने बिना हमर पयास आ मेहनत अफल हएत। ओ तीन गोटे छथि सर्वश्री गजेन्द्र ठाकुर, आशीष अनचिन्हार आ उमेश मंडल। आदरणीय गजेन्द्र भाय दारा लिखित मैथिली गजलशास्त्रक अध्ययन करैत रहलापर शनै शनै हमरा गजल लिखबाक कछु जान पाप्त भेल। संगहि शुरुआती समैमे हमर काफिया आ रदीफक शुद्धिकरणमे हुनकर अपूर्व योगदान रहल छन्हि, जे बिसरनाइ हमरा लेल अपराध हएत। ओहिना आशीष भाय हमरा बहरक दुनियामे आनलथि। हुनके पेरणा रहलन्हि जे हम शुरुहेसँ बहरमे गजल लिखैत रहलौ। पहिने सरल वार्णिक बहरमे लिखलौ आ बादमे आशीष भाय हमरा अरबी बहरक दुनियामे ढुकेने गेलाह। हम अरबी बहरक जे किछु बहुत जनतब पाप्त कऽ सकलौ, ओकर पूरा-पूरी श्रेय आशीष भायके जाइत छन्हि। हुनकर ई ऋण हम कहियो नै उतारि सकैत छी आ हम हुनकर आभारी जिनगी भरि रहए चाहै छी। तेसर महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि उमेश भाय, जिनका हम स्नेहसँ डाक्टर साहब कहैत छियन्हि। डाक्टर साहब हमरा मोबाईलसँ फोन कऽ कए जे पेरणा दैत रहलाह, से अनुपम छै। ओ सदिखन हमर उत्साह बढ़ाबैत रहलाह आ हुनकर ई अदम्य इच्छा रहलन्हि जे हमर गजलक पोथी पकाशित हुए। गजल लिखबा लेल ओ हमरा खूब पेरित करैत रहलाह आ संगहि हमर गजलक तत्काल समालोचक बनि कऽ हमर लिखनाइमे सुधार आनबाक पयास करैत रहलाह। ई तीनू गोटे हमरा लेल अविस्मरणीय छथि आ सदिखन रहताह।

हम अपन पिता आदरणीय श्री पीताम्बर झा आ माता आदरणीया श्रीमती रामकुमारी झाक योगदानक चर्चा आवश्यक बूझै छी। हमर बाबूजी सदिखन कछु ने कछु लिखैत रहैत छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक संकलन करैत रहैत

छथि आ परम समाजवादी विचारधाराक लोक छथि। हुनकर साहित्य प्रेम आ लेखन हमरामे आनुवांशिक रूपे आएल अछि, से हम अनुभव करैत छी। हुनकर समाजवादी सोच आ पूजनीया माताजीक उदारवादी सोच हमरा बड़ प्रभावित कएने अछि आ हम ऐ प्रभावमे जिनगी भरि रहए चाहै छी। हमरा हुनका सभ दिससँ भेटल संस्कारपर गर्व अछि आ हमर रचना हुनके सभक संस्कारक प्रतिफल अछि, तँए हम हुनका सभके चरण कमलमे अपन रचना समर्पित करैत छी। ई चर्चा जरूरी रहत जाएत, जँ हम अपन पत्नीलुक छोड़ि अपन मिझिती छिमती रेखा झाक चर्चा नै करी। जखन हम गजल लिखै छी तँ पहिने हुनके सुनाबैत छियन्हि आ ओहो रुचिसँ सुनि कऽ ओइपर अपन विचार राखैत छथि आ कएक ठाम शब्द सुधारिक अनुशंसा सेहो करैत छथि। हमर बियाहक बीस बरख भऽ गेल अछि आ एतेक दिनसँ घरक पूरा भार सम्हारि कऽ जे सहयोग ओ हमरा देने छथि, से हुनकर हमरा लेल अपूर्व प्रेम आ त्यागक पहिचान थिक। हमर साहित्य सृजनक प्रेरक वएह छथि। जखन बहुत दिन धरि नब गजल नै लिखै छी, तखन वएह टोकि दैत छथि जे लिखनाइ किए बन कएने छी। हुनकर ई समर्पण आ प्रेमक प्रतिफल हमर गजल छी। हमर गजल यात्रामे हमर तीनू सन्तान, सुश्री आकांक्षा, सुश्री अंकिता आ सुश्री पूजाक मौलिक योगदान सेहो कम नै अछि। जखन हम लिखैले बैसैत छी, ई तीनू बच्चा हमरा कोनो व्यवधान नै करैत छथि आ जखन लिखनाइ परसँ उठैत छी, तकर बादे अपन समस्या आ जरूरतिसँ हमरा अवगत कराबैत छथि। एकर अलावा "विदेह"क सभ सदस्य लोकनिक हम सेहो आभारी छी, जे हमर गजल सभपर अपन प्रतिक्रिया दैत रहलाह आ हमरामे उत्तरोत्तर सुधार आनबाक प्रयास करैत रहलाह। हम अपन विभागीय संगी, कर्मचारी आ अधिकारी लोकनिक सेहो आभारी छी, जे कार्यालय अवधिक बाद हमरा कहियो तंग नै कएलथि, जइसँ हमर लिखब सुगम भेल। नौकरीक बीचसँ समए निकालि कऽ लिखब लेनाइ हुनके सबहक सहयोगसँ सम्भव भेल अछि।

आब हम गजलक विषएमे किछु विचार अपने सबहक समक्ष राखए चाहै छी। गजल करेजक संवेदनासँ जनमैत अछि। संवेदनहीन करेजसँ गजल निकलनाइ सम्भव नै अछि। संगहि गजलक व्याकरणक जनतब सेहो परम आवश्यक अछि। कहबाक मतलब ई अछि जे गजल ओ गाड़ी थिक जकर दूटा पहिया छैक, करेजक संवेदना आ गजलक व्याकरण। गजल लिखबामे काफियाक शुद्धता बड़ महत्वपूर्ण होइत छै। किएक तँ बिना रदीफक गजल तँ लिखल जा सकैए, मुदा बिना दुरुस्त काफियाक गजल नै भऽ सकैए। काफियाक नियम विस्तृत छैक आ ओकर जनतब हमरा कतेक भेल अछि से निर्णए अहाँ सुधी पाठक लोकनि कऽ सकैत छी। काफिया आ रदीफक बाद बहर ओबैत अछि। बहरक शास्त्र सेहो बड़ विस्तृत छै। गजलक व्याकरणक विशद वर्णन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक मैथिली गजलशास्त्रमे देल गेल अछि। मोटा मोटी बहरके एकटा शृंखला (पैटर्न)क रूपमे बूझल जा सकैए। कहबाक मतलब जे सभ शेरक सभ पाँतिमे एके मात्रा-शृंखलाक पालन हुए, तँ ओ गजल बहरमे कहल जा सकैए। एकर अर्थ ई भेल जे पहिल शेर (मतला) सँ लऽ कऽ मकता धरि जँ एके मात्रा-क्रमक प्रयोग भेल अछि, तँ ओ गजल बहरमे हएत। मतलब पहिल शेरक पहिल पाँतिमे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग जइ क्रममे भेल अछि, जँ ह्रस्व आ दीर्घ मात्रा वएह क्रममे गजलक सभ पाँतिमे अछि तँ ओ गजल बहरमे कहल जाएत। ओना मैथिलीमे आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरजीक द्वारा प्रतिपादित सरल वार्णिक बहर, जइमे गजलक प्रत्येक शेरक सभ पाँतिमे वर्णक संख्या समान राखल जाइत अछि, खूब प्रसिद्ध भेल अछि आ नब गजलकारक शुरुआतमे खूब मददगार सिद्ध भेल अछि। हमहूँ सरल वार्णिक बहरमे गजल लिखनाइ शुरू कएने

िलौ आ पोिीक बेसी गजल अही बहरमे अिि। अरबी बहरमे सेहो थ्ककि पयास कएने िी आ ई पयास कतेक सफल भेल, ई अही पाठक लोकिा बता सकैत िी। हम ऐ बातक समिि िी जे गजलक नीचामे अरबी बहरक नाओं वा जँ गजल सरल वािाकि बहरमे अिि तँ वणकि संख्या अबस्स िाखबाक चाही। तँए हम सभ गजलक नीचामे बहरक नाम वा वणकि संख्याक उल्लेख कएने िी। हम एखनौ सीिये रहल िी, तँए बहर, काियया आ रदीफक दोख थ्ककि ठाम भाइयो सकैए। अहा सुिी पाठक लोकिा जँ ऐसँ अवगत कराएब तँ हमरा अतीव पसनता हएत, थ्कएक तँ हम अपन गलतीके सुिारैत आगा आरो नीक गजल िाि सकब। संवेदनात्मक रपमे हम कतेक सफल भेल िी, ईहो आणए अही सभ कए सकैत िी। -ओम पकाश झा

गजल- १

भीख नै हमरा अपन अििकार चाही
हमर कमसँ जे बनै उपहार चाही

कान खोिा कऽ राखने रहऽ पति हरदम
सुिा सकै जे सभक से सरकार चाही

पेम टा िै सभक औषि एििठा यौ
दुखक मारल मोनके उपचार चाही

सभ आहन्ता एखनो पूरल कहा िै
हमर मोनक बाटके मनुहार चाही

"ओम" करतै हुनकरे दरबार सििखन
नेह-फूलसँ सजल ओ दरबार चाही

(बहरे-रमल)

गजल- २

रमजान आ ईदक शुभ अवसरपर पस्तुत कऽ रहल ि ी एकटा गजल। ऐ गजलक पेरणा हम एकटा पश्चाद कव्वालीसँ लेने ि ी।

मदीनाक माश्चक अहा ई करा श्चअ
करेजा हमर बस मदीना बना श्चअ

हमर मोन श्चाश ि ल भऽ गमकै ि रा पर
कृपा एतबा अपन हमरा पठा श्चअ

बनै सगर दुश्चाया खुशी केर सागर
सभक ठोर एतेक मुस्की बसा श्चअ

दया केर बरखा कर ऐ पश्चात पर
मनुक्खक कते मोल हमरा बता श्चअ

दहा जाइ दुश्चाया श्चानेहक नदीमे
अहा "ओम"के पेम-कलमा पढ़ा श्चअ

(बहरे-मुतकाश्चब)

गजल- ३

पस्तुत कऽ रहल िी हम अपन पहिल बाल गजल। ई गजल एकटा बाल मजदूरक पीिपर आिारित अिि।

करबा नै मजूरी मा पढ़बै हमहूँ
नै रहबै कतौ पाि बढ़बै हमहूँ

हम िी िोट सपना पैघ हमर िै गे
कीनब कार जकरा पर चढ़बै हमहूँ

टूटल िै मिया आस मुदा ई िै
सोना अपन ित कहियो मढ़बै हमहूँ

चार कात पसरल दुखक अन्हरिया िै
कटतै ई अन्हरिया आ बढ़बै हमहूँ

पढ़ि-लिख खूब सबतरि नाम अपन करबै
जिनगी "ओम" सुनर ई गढ़बै हमहूँ

(मफऊलातु-मफाऊलातु-मफाईलुन)

गजल- ४

कहू की कियो बूझि नै सकल हमरा
हँसी सभक लागल बहुत ठरल हमरा

कियो पू िलक नै हमर हाल एतय
कपारे तँ भेटल िलै जरल हमरा

करेजासँ शोणित बहाबैत रहलौ
विरह-नोर कखनो कहा खसल हमरा

तमाशा बनल ि ी अपन फूँकि हम घर
जरैमे मजा आबि ते रहल हमरा

रहल "ओम" सदिखन स्नेहक पुजारी
इ दुनिया तँ ‘काफिर’ मुदा कहल हमरा

(बहरे-मुतकारिब)

गजल- ५
तक्कयो कनी कानैए उघारल लोक
गाबि कते दुखमे बरड गालि लोक

रिले रहत सभ हथ्यियार शसिगार
बनलै भ्मसाइल भूखे झमारल लोक

ै भरल थ्यानगीये टा करेजा जरल
अहुँके उखाडत सभठा उखालि लोक

लोकक बले राजभवन इ गेलौ ब्बसब्ब
खाली कर आबैए थ्थ्वहारल लोक

मागी अहा "ओम"क वोट मुस्क्की माथ्ब
पथ्थ्या सकत नै एतय भ्मसारल लोक

(बहरे-सलीम)

गजल- ६
नैनक ुरी नै चलाबू यै सजआया
कोना कऽ जीयब बताबू यै सजआया

नै चोख केलौ थकया डरबै हम-अहा
सुनतै जमाना सुनाबू यै सजआया

ि ी हम थयासल अहा पेमक ार ि ी
आँजुरसँ हमरा थयाबू यै सजआया

बेि ा करेजक थकया नै सुनलौ अहा
हमरासँ नेहा लगाबू यै सजआया

ि टपट करै पाण तथकयो एम्हर अहा
"ओम"क करेजा जुाबू यै सजआया

(बहरे-सगीर)

गजल- ७

मोनक आस सब्यखन बश्मा कऽ टूटैत अछि
धिक् एना कऽ धमनगी हमर बीतैत अछि

मेघक घेरमे भेलै सुर जो मश्मान
ऐ पर खुश भऽ देखू मेघ गरजैत अछि

हम कोना कऽ बसरब म्रि अलनक घडी
रश्न-रश्न याध्य आबै मोन तपैत अछि

देखै ी कते पलाप बन मतलबक
चुप अछि ठोढ़ बाजै लेल कुहरैत अछि

मुटीमे रै ी आश्य ध्नन-राश्म हम
धमदमे अपन "ओम"क हाि झरकैत अछि

(बहरे-कबीर)

गजल- ८

जीनाइ भेलै महँग एतय मरब सस्त ि
महँगीक चागुर गलि जेबी सभक पस्त ि

जनता ढुकै भामिे थ्थान्ता चुनावक बनल
मुदा बनल लोक नेता सभ कते मस्त ि

थ्थक ि नै थ्थकयो बाथ्थ रहलै नंगटे नाच पर
बेमार ि टोल लागै पीथ्थाया गस्त ि

खथ्थ रहल देबाल नैथ्थाकताक थ्थात बाटमे
आनक कहा लोक अपने सोच मे मस्त ि

चमकत कपारक सुर जो आस पूरत सभक
थ्थाथ्थात थ्थकया "ओम" रहतै भेल नै अस्त ि

(बहरे-बसीत)

गजल- ९

ि‍रक कात रश्तो थयासल रश्ञ गेल थ्मनगी हमर
मोनक बात मोनश्च रहल दुख सश्च गेल थ्मनगी हमर

मुस्की हमर घर आस लेने आओत नै आब यौ
पूरै ि‍ कहा आस सबहक कश्च गेल थ्मनगी हमर

सीखेलक इ दुश्नाया थ्वकला बचबै केर ढंगो मुदा
बचबैमे थ्वकला अनकरे टा ढश्च गेल थ्मनगी हमर

पा‍ि‍र बाट पर ि‍ी प‍ि‍ल हमरा पू‍ि‍लक नै थ्वकयो
कोनो बन नाला जका चुप बश्च गेल थ्मनगी हमर

थ्मनगी "ओम" बीतेलकै बीचश्च ि‍र औनाइते
भेटल नै क‍ि‍रो कतौ बस दश्च गेल थ्मनगी हमर

(बहरे मुक्तथ्मब)

गजल- १०
करेज घँसैसँ साजक राग आखरै छै
अना छिनने तुरक नै ताग आखरै छै

अहा मस्त अपनेमे आन छीपल दुखसँ
जँ लोकक ददबिाटब लाग आखरै छै

इ दुनआया मेहनताक गुलाम छै सदखन
बहै घाम जखन सुतल भाग आखरै छै

हक बढै केर छै सबहक इ नै छीनू
बढ़त सभ गाछ तखने बाग आखरै छै

कटऽ चयौ "ओम"क मुछी आब दुनआया ले
जँ गाम बचै झुकैसँ तँ पाग आखरै छै

(बहरे-हजज)

गजल- ११

कहैए राश्च सुश्च श्चअ सजन आइ अहा तँ जेबाक श्चद जूश्च कर
इ दुश्चयाक डर फन्द्य बनल इ बहाना बनेबाक श्चद जूश्च कर

अहा श्चन सून पिल भवन बलम र सल श्चया हमरासँ हमर मदन
अहा नै यौ मुर त बश्च कऽ रहू हमरा हरेबाक श्चद जूश्च कर

इ चानक पसरल इजोत नस-नसमे ढुकल मोनक नेह ि जागल
श्चनेहसँ सीचल हमर नयन कहल अहा कनेबाक श्चद जूश्च कर

अहा पेम हमर जुग-जुगसँ बनल हम खोश्च कहब अहासँ कश्चया ि श्च
अहा संकेत बूझू सश्चखन इ गपके कहेबाक श्चद जूश्च कर

कहै ि मोन "ओम"क पाश्च भरल पेमसँ सुश्च अहा चुप श्चया ि ी
इ नोत कते हम पठैब उनटा गंगा बहेबाक श्चद जूश्च कर

(बहरे-हजज)

गजल- १२

हमर मुस्कीक तर झापल करेजक ददर्दिखलक नञ्इ इ जमाना
स्नेहक चोट मार क ि लि पीि जकर बूझलक नञ्इ इ जमाना

हमर हालत पर कहा नोर खसबैक फुरसति ककरो रहल कखनो
कहैत रहल अहा ि ी बेसम्हार मुदा सम्हारलक नञ्इ इ जमाना

करैत रहल उघार पेमक इ ददभिरल करेज हमरा सगरो
हमर घावक तँ चुटकी लैत रहल कखनहुँ झापलक नञ्इ इ जमाना

मर भूखि दुखाया लागैत रहल स्नेहक स्वला गेल ि रि कतौ
करेज तँ मागलक दू ठोप टा पेमक स्कि सुनलक नञ्इ इ जमाना

स्कयो "ओम"क स्नेहक बूझतै कस्यो सनेस पता कहा इ चलै
करेजक हमर टुकडी ि ीटल मुदा देखि जोि लिक नञ्इ इ जमाना

(बहरे-हजज)

गजल- १३

कतौ बैसारमे जँ अहाक बात चलल
तँ हमर करेजमे ठंढा बसात चलल

थ्वरह देख हमर झरल पात सभ गा सिँ
सनेस पेमक लऽ गा कि इ पात चलल

मदन-मुस्क्कीसँ भरल अहाक अथ्रि थ्यातवन
करेजक दुखक भारी बोझ कात चलल

बुझाबी मोनके कतबो इ नै मानै
अही लेल सभ आइ िथ्व शह-मात चलल

िल घर हमर इजोतसँ भरल जे सथ्वखन
जखन गेलौ अहा, "ओम"क परात चलल

(बहरे हजज)

गजल- १४

श्वक ि हमर मोन आइ बस कहऽ चाहैए
अहीक बश्चा कऽ सश्चखन तँ इ रहऽ चाहैए

इ लाली ठोरक तँ अश्चि जानलेवा यै
अश्चि इ ि िर रसगर संग बहऽ चाहैए

अहा काजर लगा कऽ अन्हार केने ि ि
बरखत श्चानेह घन कखन दहऽ चाहैए

अहा फेकू नश्च इ मार क सन मुस्की
श्चाना मोल हमर करेज ढहऽ चाहैए

श्चान अहा "ओम"क सुखो ि े दुख बरोबश्च
सभ दुख अहाक इ करेज सहऽ चाहैए

(बहरे-हजज)

गजल- १५
म्रि साझक इ बाट तकैत कहुना कऽ ध्मनगी बीतैत रहल हमर
पश्चल ध्मनक बश्च कऽ सपना सश्चखन इ आस टा टूटैत रहल हमर

क्रिक नाव कोनो हमर श्चस्सा मे कहा रहल कश्चयो कखनो
सश्चखन इ नाव ध्मनगीक अपने मँझ्रि मे डूबैत रहल हमर

करेज हमर ल्रै झापल बरफसँ श्चकयो कहा देखलक अंगोरा
इ बासी रीत दुश्चयाक बुश्च कऽ करेज नहुँ नहुँ सुनगैत रहल हमर

रहैए चान आकाश कखनो उतरल कहा आंगन हमर देखू
जखन देखलक ि्हश्च चान मोन तँ ओकरे बूझैत रहल हमर

अहा कहने ल्रौ ध्मनगीक श्चदम्रि बाटमे संग रहब हमर यौ
अहाक गप हम श्चसरलहुँ नश्च मोन रश्च रश्च ओ ि्बैत रहल हमर

(बहरे-हजज)

गजल- १६

चलल बाण एहन इ नैनक अहाक मरलौ हम।
सुनगल इ करेज हमर स्नेहसँ बस जरलौ हम।

आति आश हमरासँ औकाश ककरो कहा ि
जखन-जखन लडलौ हरदम अपनेसँ लडलौ हम।

हम उजलि बस्ती बनल ि अहाक इ स्नेह सँ
स्नेहक नगर मे सदखन बस-बस उजडलौ हम।

हम तँ देखबै ि अपन जोर मुँहदुबरे पर
कयो जँ कमजोर लि पीश कऽ बहुत अकडलौ हम।

अहा डश-डश कऽ देखलौ जाश िर दस सुश शअ
सभ दन उफनल एहने िरमे उतरलौ हम।

(बहरे-मुतकाशब)

गजल- १७

अहाके हमर इ करेज श्बसरत कोना।
ि श्च बसल मोनमे आब झहरत कोना।

हवा सेहो सुगंि क लेल तँ जर री
श्बन हवा फूलक सुगंि पसरत कोना।

अही टा नै इ दुश्आया ि श्ययासल यौ
श्बन बजेने इ चान घर उतरत कोना।

जवानी होइ ए नाव श्बन पतवारक
कहू पतवारक श्बना इ सम्हरत कोना

हमर मोन ककरो लेल पजरै नैए
बनल ि पाि र करेज पजरत कोना।

(बहरे-हजज)

गजल- १८

अन्हारक की सुख बुझथीन इ इजोतक गाममे सद्खन रहै वाला।
दुखेके सुख बना लेलक करेजक घातक दुख चुपे सहै वाला।

जमानाक नजरिक अखरसा बनलए आब तँ करेज हमर सुनू यौ
हुनकर नजरि कहा देखलक हमर करेजक इ शोणित बहै वाला

कहै छि लाजक नुआमे मुँह नुकौने रहल दुनियाक डर सँ अपन,
इ रीत अछि दुनियाक तँ एतऽ चुकि सँ चुकि कहबे करतै कहै वाला

कर नै पकट अपन सिनेह मोनक यैह हमरा ओ कहैत रहल
किया हम राखब उठाके समाजक जजरि अवाज इ ढहै वाला।

अहा डेग अपन उठेबे करब कहियो हमर मोनक दुआ छि बसक
बहुत "ओम"क बहल नोर दुखक गरम छिरमे गाम इ दहै वाला।

(बहरे-हजज)

गजल- १९

कुशल आश्व देख श्चअ एतऽ सभटा आँश्च नोरसँ भरल ि।
श्वकास कतऽ भेलै श्वकासक श्वस इ बाट चोरसँ भरल ि।

श्वि सभ कतौ गेल की मोर घूमैत अश्वि गाम सगरो
इ बगुला तँ पंख अश्वि रंश्वा कऽ सभा वैह मोरसँ भरल ि।

सभ नजश्व श्वयासल ि ल तकैत आकाश चानक दरसके
श्वाकलतै इ चान कश्चया आसक ि रा चकोरसँ भरल ि।

उजाही उठल गाममे नै कनै ि करेज ककरो यौ
हमर गाम एखनहुँ खुश गीत गाबैत ठोरसँ भरल ि।

कहै ि ल श्वकयो गौर वणक्ति गौरवक एहन अन्हार इ
सभ श्वस तँ अश्वि स्याह मोन जखन इ भूश्व गोरसँ भरल ि।

(बहरे-मुतकाश्वब)

गजल- २०

कश्च कऽ नै मोनक हम तँ बरड भेल तबाह ि ी बाबू।
कहब जे मोनक अही बाजब हम बताह ि ी बाबू।

हुनकर गप हम रहलौ जे सुनैत तँ बनल नीक ि लौ
गप हुनकर हम नै सुनल कहथ्री हम कटाह ि ी बाबू।

सथ्दखन रहलथ्री मूतैत अपने आथ्रा सभके दबने
हम कनी डोश्च गेलौ ओ कहै अथ्रालाह ि ी बाबू।

बनल ि लि काचक थ्रालास हुनके मोनक थ्रचार सुनू
इ अनघोल सगरो भेलै हम तँ टुनकाह ि ी बाबू।

सचक रश्च गेल नै जुग सच कश्च कऽ हम ि ी बनल बुरबक
गप कहल साच तँ अही कहब "ओम" ि राह ि ी बाबू।

(बहरे-हजज)

गजल- २१

टूश्च-टूश्च कऽ हम तँ जोि ाइत रहै ि ी।
मोनक श्वचार सुश्चा पश्चायाइत रहै ि ी।

गौरवे आन्हर पि ल अपने घरारी
सश्चखन मुँह उठा कऽ अगि ाइत रहै ि ी।

हाटमे पेमक खरीद करै सभ श्चकया
बूझ्झ नै आब तँ हम श्चकाइत रहै ि ी।

फहरतै झंडा हमर सभ श्चस हवामे
एश्च आसे खूब फहराइत रहै ि ी।

"ओम"क कपार पर काश्चा कऽ की करत ओ
फूश्चायो हम ताश्च औनाइत रहै ि ी।

(बहरे-रमल)

गजल- २२

जन-गणक सेवक भेल देशक भार ि
जनताक माथ्र टका बनल बुथ्रियार ि

चुप ि ि तँ बूझथ्रि ओ अहा कमजोर ि ि
मुँह ताकला सँ कहा भ्रलल अथ्रिकार ि

भ्रान दाम नै वर केर बाप भ्रलैत अथ्रि
घर मे गरीबक सथ्रखने अथ्राचार ि

हक नै गरीबक माथ्रयौ सुथ्र थ्रयऽ अहा
जथ्र रहल पेटक आथ्रा बथ्रा हथ्रियार ि

झरकल भ्रनेहक बात "ओम"क की कहू
सगरो पसरल जरल हँसी भरमार ि

(बहरे-काभ्रल)

गजल- २३
आश्च गेलै बहुत मस्ती िाबे पीश्च कऽ।
आब डोलै सगर बस्ती िाबे पीश्च कऽ।

जे करी की करत िाआ भेल ि` लोकक
खूब हेतै जबरदस्ती िाबे पीश्च कऽ।

चोरबाके चलल डंटा साि बैसै चुप
हैत आगू मटर-गश्ती िाबे पीश्च कऽ।

बाजबै जे मुँहक ि` चाहे कहू मातल
की कहू ि` मुँहक सस्ती िाबे पीश्च कऽ।

आब नेता बश्च खजाना लूटबै देशक
"ओम"के की बढ़ल हस्ती िाबे पीश्च कऽ।
------------- वणा१५ ----------------
वणाकिम I U I I U U U I I I U I I U U

गजल- २४

मुस्कीसँ झाथ रखने ि ि जरल करेज अपन।
सभसँ नुकेने ि ि दुख भरल करेज अपन।

थ्लगी करै लेल चाही एकटा जीबैत करेज
ककरा परथ्ाऐ हम मरल करेज अपन।

मोहक जुनामे बान्हल हम जोताईत रहै ि ि
देखैत रहै ि ि मायामे गलि करेज अपन।

थ्कयो देखै नै तै केने ि ि करेजके तालामे बन
देखथ्ाऐ ककरा आब डरल करेज अपन।

कोनो गप पर नै थ्हुँकै आब करेज "ओम"क
अपनेसँ हम घोटै ि ि ठरल करेज अपन।

वर्ण १८ ---------------

गजल- २५
भूखल पेटक गथ्मातमे ओझराएल लेल जान की
गरीबक सभ थ्दन एके मोहरमि की रमजान की

आँथ्खमे सपना लेने मरै बला लोकसँ जा कऽ पूथ्छियौ
ओकरा लेल की मंथ्दर-मथ्स्जद पूजा आर अजान की

दैव-दैव कोथ्ढ़या थ्थ्मयाबैत हाि पएर मोडने
अपन मेहनथ्ता पर जीबू चढै लेल आसमान की

थ्मनगी भथ्र भरै िी पापक पेटी खूब जोगाि लगा
पाप नै कखनो पाि िडत हैत केने गंगा-स्नान की

मनुक्ख-मनुक्खमे अंतर करै ओ िमिनै हमर िी
"ओम" लेल ि सभ बरोबथ्र थ्हन्दू की मुसलमान की
-------------------
वणि२० ---------------

गजल- २६

कखनो ि्धा ध्यौ हमरो फुलवारीक फूल बूझ्म कऽ।
श्कया केने िी यै कात हमरा करेजक शूल बूझ्म कऽ।

हमरासँ नीक झूलश्नया जे बनल अहाक श्नहन्ता
हमरो ध्स फेर नजश्व झूलश्नयाक झूल बूझ्म कऽ।

अहाक नैनक मस्ती बनल पेमक पोिी सभ लेल
हमहुँ पढ़ब पेम-पाठ अहासँ इसकूल बूझ्म कऽ।

बहत पेमक पथ्धि िर करेज बनत संगम
पेम िै पूजा नै िाि एकरा श्नगीक भूल बूझ्म कऽ।

पेमक घर अहाक अश्न श्कया फूजल केवािी ध्ना
ठोश्क श्नयौ "ओम"क पेम ओश्ह केवािीक चूल बूझ्म कऽ।

----------------------

वणि२० ----------------------

गजल- २७

हम सभ पूिी अहासँ एकेटा सवाल थक बाजू ने।
अहा केश्रमाऐ थकया देशक एहेन हाल थक बाजू ने।

आसक िरमे हेलैत मनुक्खक कोनो हेतै करि
आस पूरत कहियो एतै एहन साल थक बाजू ने।

भूखल आँखक नोर सुखाके बन्न गेल अकि यौ नून
वादाक अचार चटा करब कते ताल थक बाजू ने।

कदम ताल करैसँ कतौ देशक भष्टाचार मेटेतै
गुमस बेसी हेतै तँ भऽ जैत यौ बवाल थक बाजू ने।

राशन होय की शासन अहा सभठा पेच लगौने िी
कर जोकि कहैए "ओम" तोिू इ जंजाल थक बाजू ने।

-------------------
वर्ण २० ---------------------

गजल- २८

श्मनगीक गीत अहा सश्चखन गाबैत रहू।
एश्चना इ राग अहा अपन सुनाबैत रहू।

ककरो कहैसँ कहा सरगम र कै कखनो
कश्चयो श्कयो सुनबे करत बजाबैत रहू।

खनकैत पायल राश्चाक तापाबै हमरा
हम मोन माश्च कते श्चन िश्च दाबैत रहू।

हमरा कहै िश्चि जे फुरसश्चा नै भेटल यौ
घर नै अहा कखनो सपनहुँ आबैत रहू।

सुश्चायौ कहै इ करेजक दहकै भाव कनी
कखनो तँ नैनसँ देश्च श्चय जुराबैत रहू।
------------
- वर्ण १७ ---------------

गजल- २९

पेटक आगि बुझबै लेल मायके जान बेचैत देखलौ
बहकल मोनक पाछा लोकके ईमान बेचैत देखलौ

ईमान धरिम त्यागक व्यवस्सा आब पोथिक गप भेल छै
रक्तक सप्पत खाऽ कऽ ककरो हिन्दुस्तान बेचैत देखलौ

धरती पर भेल अछि लोकक ठेलमठेल सबतरि
खाली जमीने नै इंटरनेट पर चान बेचैत देखलौ

लाद्ध कऽ भरल बस्ता आब नेना भुटका बूढ़ भऽ जाइए
भेटैए कहा नेनपनक मधुरि गान बेचैत देखलौ

रेडिमेडक जुगमे हँसी भेट जाइए रेडीमेड आब
निपुनता लागै "ओम"के जे मुस्कीक दोकान बेचैत देखलौ
--------------------
वर्ण २१ ----------------------

गजल- ३०

चमकल मुख अहाक इजोर भऽ गेलै
अरिश्चाए मे लागै जेना भोर भऽ गेलै

काजर बूझ्झ हमरा नैन मे बसा श्वाअ
अहाक नैना मार क श्वतचोर भऽ गेलै

कुचरै कौआ रश्च रश्च मोर आंगन मे
जाश्च अबैया अहाक मोन मोर भऽ गेलै

नैनक इशारा दैए पेमक श्वामनि ण
आब लाजे कठुआ कऽ बन ठोर भऽ गेलै

बनल नाम अहीक "ओम"क पाण-डोरी
अहाक आस मे करेज चकोर भऽ गेलै

(सरल वाश्चाक्रि- १५ वर्ण)

गजल- ३१

करेजमे काढ़ल ि अहाक ि थ्च नै मेटैत कखनो।
मोनमे बन अहाक पेम श्कयो कोना चोरैत कखनो।

अहा खुश रहू यैह ि आब हमर ददकि इलाज
इ ददि फुरसश्तामे हमर करेज सुनैत कखनो।

असगर बैसल अहाक याश्दमे हम हँश्स लैत ि ी
हँसीक राज भेटलासँ हमर मोन बतैत कखनो।

मोनमे बसल अहाक ि थ्च नै भीजै तै नै कानैत ि ी
मुदा रोकी कते अहाक याश्द हमरा कनैत कखनो।

एक बेर कश्ह श्दश्आये अहा हमरे लेल बनल ि ी
गीत पेमक "ओम"क मोन हँश्स गुनगुनैत कखनो।

--------- सरल वाश्णकि बहर वणि२० ----------

गजल- ३२

केहन मीठ थ्यरहमे झोथ्य गेलौ अहा हमरा।
नोरक झोर थ्यकट ि बोथ्य गेलौ अहा हमरा।

नीक कहै ि लि सभठा फूल भेटै ि लै सगरो
आब कहै हम वहशी घोथ्य गेलौ अहा हमरा।

लोक बजै ि लि हमरा पेममे जोथ्यि देल अहा
टूटल टाट बनल ि ि तोथ्यि गेलौ अहा हमरा।

देल करेज अपन सौसे अहा केर हाि थ्यये
सौस करेजक टुकडी ि थ्यि गेलौ अहा हमरा।

"ओम"क मोन बुझलकै नै बनेलौ अहा थ्यारनी
नाच करी बथ्या थ्यारनी गोथ्यि गेलौ अहा हमरा।

------------------ वणि १८ ----------------

गजल- ३३
नबका बखक्ि नब उमंग सगरो ि।
खुशी जतबा ओम्हर ओतबा एम्हरो ि।

बखबिखसँ दुखसँ िकिल सभ आत्मा
हेतै तृप्त जर र इ उमेद हमरो ि।

नब बखबिनै पेम-नाव दुख-िरिमे
सभ पेम कर  बसर  कोनो झगि ि।

बन कयौ नै उत्सव ऊँच अटारीमे
असंख्य भूखल आँख  आहन्ता ओकरो ि।

असल आजादी भेटै यैह "ओम"क दुआ
लला जाइ भष  आचरण जे ककरो ि।

--------------- वणि१५ -------------

गजल- ३४
मोनक मोनसँ चश्चकऽ केहेन हाल केने ि ी।
पेममे अपन श्चनगी हम बेहाल केने ि ी।

करेज हमर िल उदगम पेमक गंगाके
श्चरह-नोरमे साश्च करेजके िल केने ि ी।

जकर पेम-ताल पर हम नाचैत रहलौ
हमरा वैह कहै ि एना श्चकया ताल केने ि ी।

एके बेर हश्चकऽ पाण झमेला खतम कर
जे बेर-बेर आँश्चक िरी सँ हलाल केने ि ी।

अहाक मातल चाश्चसँ "ओम"क मोन मतेलै
ऐमे दोख हमर की अहा आँश्च लाल केने ि ी

---------------- वणि१७ ------------------

गजल- ३५

टुकडी-टुकडीमे जिनगी बीताबैत रहलौ
सुनलक नै कियो जे बेथा सुनाबैत रहलौ

अपन आ आनक भेद इ दुनियाँ बुझौलक
इ भेद सदिखन मोनके बुझाबैत रहलौ

ऐ मोनमे पजरल आगि धधकैत रहल
हम पेटमे लागल आगि मिझाबैत रहलौ

अपन अटारी सभसँ सुनर बनाबै लेल
कोन-कोन नै जोगाड़ हम लगाबैत रहलौ

दुनियाक खेलामे "ओम" बनऽ चाहल मदारी
बनि गेलौ जमूरा सभके रीझाबैत रहलौ

-------------- वर्ण-१७ ---------------

गजल- ३६

आकाश बरड ि शात भक्षसक क्षहाक्षि आबै ि
ओंघरैत सभ एक्षमे बलौ ओहार ओढ़ाबै ि

पोक्षि क्षदयौ झहरैत नोर अहा क्षशव्द आँक्षक
आँक्षक नोर ीक लुती झटसँ आक्षा लगाबै ि

क्षान्है ि सभ ओकरा कतेक स्ाग रचेतै आब
तखनो ओ सभके क्षपटा बक्षा नाच देखाबै ि

नंगटे भेल ि तखनो कुसीक मोह नै ूटिल
कुसीक इ सौख ओकरा क्षकसँ क्षक करावै ि

रोक्षक सकै ि क्षकयो नै सागरमे जौ उफान एलै
परतारै लेल देक्षयौ माक्षक बान्ह बनाबै ि

--------------- वणि१८ -----------------

गजल- ३७

बश्वा जेतै घर एखन िथ्य जे ि हमर मकान थ्ये
घोश्व थ्वश्वाऐ हमर पेममे अहा अपन जौ पाण थ्ये

एक मीश्वाया इजोत चानक चमकाबै ि पूरा दुश्वाया
अहा श्वन अश्व घर अन्हार ित जकर ि चान थ्ये

आँश्व मुनल हमर जर र ि मुदा हम िि नै सूतल
अहाक पेमक वाहक मुस्क्री श्वन-राश्वा लैए जान थ्ये

कखनो देखाबी पेम अहा बनै िि कखनो अनश्वान्हार
पेमक खेलमे अहाक नुका-श्वपी केनेए हरान थ्ये

श्वानगीक रौदी ि पचण्ड शीतल अहाक केशक िह
थ्ि िम ओश्व िहमे करै ले डोलै "ओम"क ईमान थ्ये

---------------------- वणि२१ ---------------------

गजल- ३८

डूबैत रहलौ हरदम हम आर कक्षया ि ेय इ अन्हेर हेतै
खाली मझ ािरे नै हेतै कपार हमर हमरो कोनो क िर हेतै

सभ लेल बातर कात राखल ि ी क्षकयो तँ कखनो ताकत एम्हरो
खूब गजल सभ ले कहल गेल हमरो लेल ककरो 'शेर' हेतै

सुख-दुख जीवन-कममे लागल कखनो मीठ कखनो तीत भेटै
बर ड अन्हरगर साझ भेलै कक्षयो इजोत भरल सबेर हेतै

सभ क्षेल क्षो लि ि ै मा ापिच्छी केने एकटा कानून बनबै लेल
केहनो कानून बक्षा जाओ मुदा ओक्षमे संशो ानि बेर-बेर हेतै

आब नै लुटेतै देशक वैभव नै कऽ सकतै खजानाके चोरी क्षकयो
सोनक क्षो ि लि देश हमर पुरना वैभव वापस फेर हेतै

------------------- वणा २५ ------------------------

गजल- ३९

सब्दखन स्मा कि ध्यान्तान करैत रहैए मोन हमर
इ गप नै बूझ्झ जाइ थ्रकयो डरैत रहैए मोन हमर

अपन खेतक हथ्रयरी बचा कऽ रखबाक जोगारमे
आनक जरल खथ्रहानो चरैत रहैए मोन हमर

थ्रचार अपन गा नि दोसरक ाती पर खाम जका
इ खाम उखडबाक डरे ठरैत रहैए मोन हमर

हृदयक भाव अथ्रि तरंगहीन पोखथ्रक पाथ्र भेल
गन्हाईत जमल भावसँ स ित रहैए मोन हमर

अन्तथ्ररीिक दन्द युदमे बाझल अथ्रि "ओम"क मोन
अपनाके जीयेबाक लेल मरैत रहैए मोन हमर

------------------- वर्ण २१ -------------------

गजल- ४०

ओकर गाि‍ी-टोपी कतौ हरेलै आब ओ हमरे टोपी पह्लिराबै ि‍ै
सेवकसँ बिनि बैसलै स्‍वामी हमरे ि‍ाती पर झण्‍डा फहराबै ि‍ै

चुनाव-कालमे मुस्‍की दऽ हमर दरबज्‍जाक माटि खखोरलक जे
भेट भेला पर पिरचय पूि‍ै देखियो कतेक जल्‍दी िबसराबै ि‍ै

दंगा भेल वा बाढ़ि-अकाल सभमे मनुक्‍खक दाम तय करैवाला
पीि‍िक ओ मोल की बूझतै जे मौका भेटते कुिह-कुिह कुहराबै ि‍ै

जनताक तन नै झापल पेटक आँत सटिक कऽ पीठमे सटल
वातानुकूल कक्षमे रहै वाला फूिसयो काि‍ा कऽ नोर झहराबै ि‍ै

डािर-डािर पर उल्‍लू बैसल सौसे गाम बेतालक नाच पसरलै
एखनो आसक ि‍िट किरण "ओम"क मोनमे भरोस ठहराबै ि‍ै

------------------------ वणि‍२५ -----------------------

गजल- ४१

अन्हरिया रातिमे सँ भोर कखनो आकलबे करतै
दुखक अनन्त मेघके चीर सुरज उगबे करतै

सभ फूल बागक झरि गेल सुखाकऽ एकर की चिन्ता
नब कोढी फूटलै कलियो सुवास पसरबे करतै

टूटल प्याली पर कहा कानैत छि मय आ मयखाना
प्याली फेर कीनेतै मयखानामे मस्ती रहबे करतै

सागरमे सदिखन चला जाइत छि रिक अस्तित्व
तै की छि र रकै छि चान छिकल देखू बहबे करतै

काल्हि "ओम"क नाम लेबाक ककरो फुरसति नै हेतै
आइ कान थकि ठोढ़सँ हमर नाम सुनबे करतै

------------------ वर्ण २० -------------------

गजल- ४२

हमर िटका बाबा (हमर थतामहक अनुज) ८८ बरखक अवसािमे स्नगमीसी भऽ गेलाह। हुनकर स्मृश्वमे हम अपन भावाजश्च ऐ गजलक माध्यमे पकट कऽ रहल िी।

सभ कहैए पंचतत्त्वमे आइ अहा थलीन भऽ गेलौ
हम श्राशव्द भेल ठाढ़ िी देश्वयौ वाणी-हीन भऽ गेलौ

नब वसि पहीश्व अहा कोन जतरा पर श्राकललौ
बाट जोहैत िी एखनो अपस्यात राश्वा-श्चन भऽ गेलौ

अंगुरी अहाक पकश्चि बाि-बोन हम घूमैत िलौ
आब कहा ओ अंगुरी हम बाट नाथ अमीन भऽ गेलौ

जेनाई िल श्राधीत यौ श्चन तकेने अजुके िश्चाऐ
बंिन कोनाकऽ तोडश्चाऐ कानैत आब बीन भऽ गेलौ

श्चांश्चात "ओम"क तनुक कन्हा आब कोना बोझ उठेतै
गेल आब अहाक िहश्च हम ति-श्चहीन भऽ गेलौ
------------------- वणि२० --------------------

गजल- ४३

कोनो खसैतके जे श्चाऐ सम्हाश्च यैह ि ीक श्चानगी
डूबैतके जौ श्चयौ पार उताश्च यैह ि ीक श्चानगी

भाव कोनो हुए मोनमे शव्द होइत ि ै संवाहक
जे बाजैसँ पश्चने लेब श्चचाश्च यैह ि ीक श्चानगी

मान-अपमान दुनू भेटै ि ै इ मायाक ि ीक लीला
अन्यायके सश्चखन दी मोचाश्चि यैह ि ीक श्चानगी

भाश्चा-भाश्चाके मेघ श्चचारक मोनक भीतर घूमै
सुश्चचारसँ राखू मोन पजाश्च यैह ि ीक श्चानगी

आन श्चस अपन काच अंगुरी कोना उठेतै "ओम"
पश्चने श्चतौ अपनाके सुिश्च यैह ि ीक श्चानगी
------------------ वर्ण १९ -----------------

गजल- ४४
अपने खोजमे अपन मोन हम ि◌नैत रहै ि◌ी
श्रीश्रीऐल मोती आत्माक सद्यखन चुनैत रहै ि◌ी

आनक की बनब एखन ि◌श्च अपनहुँ नै भेलौ
मोन माश्चकऽ सभ गप पर आँश्च मुनैत रहै ि◌ी

कश्चयो भेटबे करतै आत्माक गीत एश्च पाणमे
ि◌उर भेल श्चनगीके यैह सोश्च खुनैत रहै ि◌ी

झापै लेल भश्चऐल श्चनगीक टूटल ि◌रातल
सपनाक नबका टाट भश्च श्चन बुनैत रहै ि◌ी

बूश्च सोहर-समदाउन श्चनगीक सभ गीतके
मोन-मगन भेल अपनेमे हम सुनैत रहै ि◌ी
---------------- वर्ण १९ ----------------

गजल- ४५

हेतै की आब बूझाय नै एक्का देशमे
देश फँसल अछि घोटाला आ केसमे

कोनाकऽ बचायब आब घर चोरीसँ
घुरै छै चोर सगरो साधुक भेषमे

जरै छै गाम तखनो बंसी बजाबै ओ
बूझै नै श्लखल देबालक सनेसमे

सरकारी मनुक्खक बनल छै मनुक्खे
गोतै छै सभ बाट आ घरो कलेशमे

बेईमानीक पताका फहरै आकाश
पाकै ईमान आब पसरल देषमे
---------- वर्ण १४ ------------

गजल- ४६
हम तँ केने बहाना राम केर अहीक नाम लैत ि◌ी
बिन्ना गेलौ हम चचा गाम केर अहीक नाम लैत ि◌ी

रखने ि◌ी करेजसँ सटाकऽ यादि अहाक सदिखन
हमरा काज की ताम-झाम केर अहीक नाम लैत ि◌ी

ताकि कऽ चाये कनी नजरिसँ मुस्कीयाकऽ जे एक दिन
काज पड़ैतै नै कोनो जाम केर अहीक नाम लैत ि◌ी

हमर काशी मि◌ुरा काबा सभ अहीमे अिि बसल
जतरा भऽ गेल चार िाम केर अहीक नाम लैत ि◌ी

रोकि सकतै नै जमाना इ मोनसँ मोनक मिलनाई
मोन कहा ि◌ै कोनो लगाम केर अहीक नाम लैत ि◌ी
--------------------- वर्ण २० --------------------

गजल- ४७

देखब हुनकर असल रंग भक हमर टूटि गेल
पोखरिमे सभ नंग-डिंग भक हमर टूटि गेल

सभ आँखिक नोर सुखायल आब एहेन ि लागल
देखिकऽ कानैत यमुना-गंग भक हमर टूटि गेल

बूझलौ अपनाके कपरगर एकटा संगी भेटल
ि देलक ओ जखन संग भक हमर टूटि गेल

कते सपयोत लगाबै िलौ अहाके अंग लगाबै लेल
जखन लगेलौ अंगसँ अंग भक हमर टूटि गेल

मस्तीक नाव भसिआया गेल ि समयक ऐ पवाहमे
िलौ यौ हमहुँ मस्त-मलंग भक हमर टूटि गेल
----------------- वर्ण २० --------------------

गजल- ४८

हमरासँ की नै करेलक ख्वाहन्ता हमर
सख्वखन खाली कनेलक ख्वाहन्ता हमर

अहा भेटतौ से हमर कहा इ भाल्य ि लै
मुदा अही ख्वस बढेलक ख्वाहन्ता हमर

सुर जक आख्वासँ बचू यैह जमाना कहै
बाट सुर जक ि रेलक ख्वाहन्ता हमर

चान मुटीमे बन कैल ककरोसँ नै भेलै
हमरा यैह नै ख्वखेलक ख्वाहन्ता हमर

"ओम"क ख्वाहन्ता जेना कतौ मख्व-हख्व गेलै
सभटा ख्वाहन्ता जरेलक ख्वाहन्ता हमर

--------------- वर्ण १६ ---------------

गजल- ४९

आउ मजा ब्ल्यायऽ शुर  फेर खेल भऽ गेलै
देखू खेलब्लाहार सभमे मेल भऽ गेलै

कोनो ब्लाअम-ब्लाष ाक जर रब्ला नै एतऽ
कोनो दोगसँ ढुकु ठेलम-ठेल भऽ गेलै

जकरा ब्लकि लागल नै हाि हल्ला करै
जे लेलक मजा ओकरा तँ जेल भऽ गेलै

ब्लटकट बाटै आ काटै केर कबरडी शुर
चुनाव भेलै नै जेना कोनो रेल भऽ गेलै

जीतला पर सुनर कोठा-गाि भेटत
बाटक इ ूब्लि जनताक लेल भऽ गेलै
------------- वणि१५ ------------

गजल- ५०
वाह कतेक मजा अबै ि उठा-पटकमे
नब-नब दाव देखबै ि उठा-पटकमे

सभक मुँह भेलै लाल-लाल कुश्ती ल ित
सभ जोर कते लगबै ि उठा-पटकमे

ि के संगी के शि ु बनल इ पता नै चलै
ि अपन मुदा खसबै ि उठा-पटकमे

पाण हतने कोना सभ थ्रा लि ि देथ्रयो
थ्रकयो माल देखू बनबै ि उठा-पटकमे

ककरो हाथ्र गेलासँ बन नै भेल दंगल
हाथ्र झट मुँह उठबै ि उठा-पटकमे
----------- वर्ण १६ ---------------

गजल- ५१
पता नै कोन आश्रमे जरैत रहल करेज हमर
पाश्न नै खाली घीए टा चाहैत रहल करेज हमर

आनक मरल आत्माके जीयाकऽ राखैक फेरमे फँश्न
नहुँ-नहुँ सुनगैत मरैत रहल करेज हमर

एतेक माश्न खेलक झूठ पेमक खेलमे जमानासँ
श्चकयो देखलक नै कुहरैत रहल करेज हमर

फेर कतौ नै श्चकयो बम फोश्चिकऽ अनाि करै ककरो
सूयोदय होइते िडकैत रहल करेज हमर

अपनाके श्चात जीयाबैमे करेजक खून करैत ि
खश्न-खश्नकऽ देखू सम्हरैत रहल करेज हमर

दुख आ सुखमे अंतर करैमे नै ओझराकऽ कखनो
नब गीत सश्चखन गबैत रहल करेज हमर
---------------- वर्ण२० -----------------------

गजल- ५२
ऐेना तँ सब्बखन हमरा सते कहै ि
हमर रप हमरे देखबैत रहै ि

चश्म गेलौ तँ बूझलौ अहा हमर नै िी
बनल श्यशासक श्कला एहीना ढहै ि

िरके कोन मतलब भूश्मक ददसँ
जेम्हरे मोन भेल िर ओम्हरे बहै ि

देखू पेमक अकाल नै ि एश्ह गाममे
उिरक पेमक बाश्ढ़सँ गाम दहै ि

ककरो मारबाक चोट सश्ह लेत "ओम"
मुदा बूझै नै पेमक माश्र कोना सहै ि
-------------- वणि१५ ---------------

गजल- ५३
आइ-काल्हि सधखन हम अपनेसँ बधायाईत रहै िी
लोक कहैए जे हम नाम अहीक बिबिाईत रहै िी

सभ बैसारमे आब चचा करऽ लागलौ अहीक नाम केर
सुधा कऽ कहै ि सभ जे आशामे हम भधायाईत रहै िी

हमरा लागैए आशा आब टूधट गेल ि पीधा लेलाक बाद
सोझ रहैमे िलौ अपस्यात आब डगमगाईत रहै िी

एते बेर नाम लेलौ अहाक हम कधयो तँ सुनने हैब
कोन कोनटामे नुकेलौ अहीके ताकैत बौआईत रहै िी

एक चुर अपने हासिँ आधा कऽ पीया धधाये जे "ओम"के
मधा जइतौ आरामसँ हम जाधा लेल टौआईत रहै िी
---------------------- वणि२२ ----------------------

गजल- ५४

अात पूि ि थ्कि सवाल इ थ्मनगी
करै सद्खन नब ताल इ थ्मनगी

कखनो बश्रा दुखक घुपा अन्हश्रया
लागै माथ्रसँ फूलल गाल इ थ्मनगी

सुखक राग कखनो सुनाबै एनाकऽ
रंगल बश्रा कतेक लाल इ थ्मनगी

कहै थ्मनगी होइत ि जीबैक नाम
ककरो लेल होइए काल इ थ्मनगी

थ्मनगीके बूझैमे "ओम" ओझरायल
जतबा बूझलौ लागै जाल इ थ्मनगी
------------- वणि१४ -------------

गजल- ५५

एकटा खिस्सा बनि जइते अहा संकेत जौ बुझितहुँ
हमही छलिहुँ अहाक मोनमे कखनो तँ कहितहुँ

लोक-लाजक देबाल ठाढ़ छलि हमरा अहाक बीच
एको बेर इशारा दैतिऐ हम देबाल खसबितहुँ

अहाक पेमक ठंढा आगिमे जरि कऽ होइतौ शीतल
नहुँ-नहुँ भूसाक आगि बनि कऽ धधकया आइ जरितहुँ

सभके फूल बाटैमे कोना अपन धियानगी काट केलौ
कोनो फूल नै छलि हमर काटो तँ अहा पठबितहुँ

जाइ काल रकै लेल अहा "ओम"के आवाज नै देतिऐ
बहैत छलि नै छलिहुँ हम जे घुरि कऽ नै अबितहुँ
------------------ वर्ण२० ---------------------

गजल- ५६

हमर नजरिमे पैसलि कऽ हमर नजरि बनि फडकि रहल छी
पोर-पोरमे अही समेलौ सीनामे हमर अही धडकि रहल छी

विरह-विषसँ मोन पीडित छल अहाक पेमक अमृत भेटल
पेम-सुधिसँ मोन नै भरै जतबा पीबि ओतबा परकि रहल छी

हृदयक छल बाट सुखायल जेकरा सिनेह अहाक भीजायल
छिन-छिन भीजि पेमक बरखामे तखनो किया झरकि रहल छी

जिनगीक रौदीके अही भगेलौ अहा पेम-मेघ केर छाहरि केलौ
भरल हमर आकाश पेमसँ अहा छी बिजुरि तडकि रहल छी

भाव-शून्य "ओम"क छल जे अंतर जिनगीमे आबि मारि कऽ मंतर
अही बनलौ गजल कविता बनि भाव मोनमे बरकि रहल छी

--------------------------- वर्ण २५ ---------------------------

गजल- ५७
भेटलै जखने नबका मीत पुरनाके कोना ि‍थ्ि‍ देलक
जकरासँ ि‍ल ठेहुँन-ि‍बा हमर मोनके तोि‍थ्‍ देलक

सपि‍क नै कोनो मालगुजारी सपि‍क नै बही बनल
संग जीबै-मरैक सपि‍ खा कऽ जीबतै डाबा फोि‍थ्‍ देलक

ओकरा लग ि‍ै ढेरी चेहरा हमरा लग बस एके ि‍ल
अपन भोरका मुँह पर नब मुँह साझमे जोि‍थ्‍ देलक

थ्‍नगी-खेतमे थ्‍शास-खाद दऽ पेमक बीआ हम बुनल
ि‍खा केर कोदाथ्‍ चला कऽ देखू लागल खेती कोि‍थ्‍ देलक

"ओम" पेमक घर बनेलक ओकरा थ्‍न ि‍ै सून पि‍ल
बाट जे जाइ ि‍ल ओथ्‍ घरमे कोनो जोगारे मोि‍थ्‍ देलक
---------------------- वर्ण २२ --------------------

गजल- ५८
कतौ ि‍ रौदी पचंड कतौ बरखासँ हरान ि‍
कतौ ि‍ फूजल मोन कतौ बन पेटीमे पाण ि‍

ककरो भेल अपच ककयो देखू भूखले मरल
कतौ ि‍ होइत भोज कतौ उजि‍ल दोकान ि‍

एके कलमसँ ि‍खलक ककया भाल्य नै ि‍थता
कतौ ि‍ तृप्त हृदय कतौ ि‍ूि‍ टा अरमान ि‍

ककयो मुटीमे समेटने कते इजोत ि‍ बैसल
कतौ ि‍ जे सून घर कतौ भरल इ दलान ि‍

अचरजसँ देखै ि‍ "ओम" लीला एि‍ दुि‍नयाक
कतौ ि‍ इ मौनी खाली कतौ बखारी भि‍र ि‍न ि‍
------------------- वणि‍१८ ------------------

गजल- ५९
श्यया जुश्म कर  बलजोरी लोक की कहत
पेम कर  मुदा चोरी-चोरी लोक की कहत

तनुक शरीर मोरा यौवन उफनायल
चुप्पे बान्हू अहा पेम-डोरी लोक की कहत

िमल नै डेग अहा पेम-नोत पठाओल
हम आब बनलौ चकोरी लोक की कहत

श्याम रंगमे अहाक मोर अंग रंगायल
दीयाबातीमे खेललौ होरी लोक की कहत

"ओम"क श्यया इ आतुर मोनके बुझाओल
कतेक कहब कर जोश्रि लोक की कहत
-------------- वर्ण १६ --------------

गजल- ६०

ओ हमरा बिसरि गेल जे गाबैत रहै छलि हमर गीत
शहरक हवा लागि गेलै आब भेल शहरी हमर मीत

मोनक कोनटामे नुकेलक नेनपनक सभ कीछा-खेल
खाइ छलै संगे पटुआ ओकरा लागै मछि़र हमर तीत

छलि जुटल जकरा संग हृदय हमर रखितो काया दू
हमरा हरबैछ आब अपमान बूझैछ ओ हमर जीत

दोस्तीक सपछ खाइत नै छलै अघाइत ओ हमरा संग
भसकेलक घर दोस्तीक देषक बनि गेल हमर भीत

मीत घुरि आबू एखनहुँ "ओम"क हृदयमे अहीक वास
फेर बहाबियो छिर दोस्तीक जे छलि अहाक हमर रीत
-------------------- वर्ण२२ ---------------------

(हमर नेनपनक मीतके समर्पित जे हमरा बिसरि गेला)

गजल- ६१
घोघ तरसँ चान उगल अँगनामे इजोर पसरि गेलै
मोन हमर िल बान्हल कया आइ अपने थि गेलै

मृगनयनी मोनमोहनी चंचल नयनसँ पाण हतल
मुख पर नयन-कमल जै सुरासँ मोन पजरि गेलै

सुि अहाक वचन भऽ पेम मगन मोन-मयूर नाचल
पेम-बोली तोहर सुनल इ हृदय नाि कऽ ससरि गेलै

य-आँगन पायल झन-झन संगीत मि ि बाजल
रोक कोना जे मोन नाचल नै कहब कया नै सम्हि गेलै

अहाक अजगुत र प देि कऽ भाव "ओम" रोक नै सकल
जे कि िल मोन राखल कोना देखू सभटा झहि गेलै

--------------------- वर्ण २२ --------------------

गजल- ६२

कर जोि ि सरकार आब रहऽ श्चयौ
कते करब भष ाचार आब रहऽ श्चयौ

'टू जी' चारा खान घोटाला श्चक ि नै िूटल
भश्च गेल अश्च 'श्चाहा ि' आब रहऽ श्चयौ

मुश्चया बनैसँ पश्चने चलै िलौ पैरे
कोना चढ़ऽ लगलौ कार आब रहऽ श्चयौ

कण्ठ मोश्चक जनताक कते राज करब
जनता नै ि यौ लाचार आब रहऽ श्चयौ

कोना फूश्च बाश्च अहा "ओम"के ठश्चक लै ि ि
केश्चाऐ लाजक संहार आब रहऽ श्चयौ

----------- वर्ण १५ ----------------

गजल- ६३

भ्अझबै लेल पेटक आथ्ा देखू पजथ्र रहल िै आदमी
जीबाक आस िने सथ्दखन कोना मथ्र रहल िै आदमी

डेग-डेग मँहगी केर भ्आदथ्ि जातमे पीसल राथ्ा थ्दन
पीअर मुँह थ्बहुँथ्म कऽ उठौने कुहथ्र रहल िै आदमी

जनसंख्याक नाङथ्र थ्कयाक बढ़ले जाइए थ्बन िकिल
फथ्ालक उपजा कम भेल सौसे फथ्र रहल िै आदमी

स्माथ्ि िक एहन थ्बहाथ्ि चलल िै आइ मनुक्खक गाममे
सम्मानिक झरकल गािसँ आब झथ्र रहल िै आदमी

कथ्धयो हँसीक ईजोर पसरतै "ओम"क अन्हार टोलमे
यैह सोचैत सलाई थ्शासक रगथ्ि रहल िै आदमी

-------------------- वणि२२ ---------------------

गजल- ६४

हमर हृदयक कुंज-गलीमे थ्यचरैत मोनक मीत अही िी
गाश्ब-गाश्ब जे मोन सुनाबै सथ्यखन ओ राग अही गीत अही िी

थ्मनगी हमर पश्चने कश्चयो एते सोअदगर थ्कया नै िल
सभटा सोआद अहीमे िै बसल मीठ नोनगर तीत अही िी

आँथ्वक बाट मोनमे ढुथ्क कऽ पेमक घर आलीशान बनेथ्लऐ
ओथ्इ घरक कण-कणमे िै नाम अहीक ओकर भीत अही िी

जुग-जुगसँ पेमक िरमे अही हमर पतवार बनल िी
हमर पेमक दुथ्नयाक सुनर रंग सभटा आ रीत अही िी

"ओम"क मोन केर कोन-कोनमे बसल रहै िै अहीक सुरथ्त
आब ई जमाना सँ की लेनाई थ्यये हमर हार आ जीत अही िी

------------------------ वणि२४ -------------------------

गजल- ६५
बालुक भीत बनल श्मनगी चमकै ि कोना
सुखायल ई फूल सम्मानि क गमकै ि कोना

नकली मुस्कीक भीडमे हरायल कतौ हँसी
श्मन्ता भरल मुँह पर मुस्की दमकै ि कोना

पैघ भेल जाइ ि मनुक्ख झूस श्मचार भेलै
कर्मिरमे हल्लुक श्मचार जमकै ि कोना

भऽ रहलै तमाशा नाचक श्मना सुर-तालके
सरगम कतौ नै मुदा पैर झमकै ि कोना

काठक बनल लोक रहै ि ऊँच मकानमे
जे सुनै ि श्मकयो नै श्मक "ओम" बमकै ि कोना

------------------- वर्ण १७ ------------------

गजल- ६६
थकया एना ई भऽ गेल ि देखू उनटा क्यवहार
हर वहै से खढ़ खाय ि बकरी खाय अचार

ककरो तन नै झापल थकयो आडम्बर ि केने
थकयो तरसल बूँद लेल लागल कतौ सचार

रामनामा ओढ़ क ऽ आबै भीतर रखने खंजर
ि जकर मोन दश्वर हमरा देलक हकार

महगी केर बाण चलै ि चाम देहक नोचैत
जन-जन ओ बाण सहै भूशायी पलि लाचार।

जीबै केर अधिकार धीनायल "ओम" देखू कोना
'सुनामी' बथ्रा तपैत मोनमे भरल थचार

--------------- वर्ण१८ -----------------

गजल- ६७

ि रल रश्व जैत होश्वायारी मोटरी बान्हने की हैत
जखन टूटल अश्वि केवाि ी यौ ताला भरने की हैत

नीमक पात तर चानन कानै ई कोन रीत रचेलै
जे ई सवार बनल सवारी नाक रगि ने की हैत

केहेन गाि ी अहा लगेलौ जे भूताश्व भेल जाइए यौ
बढ़बै लागै जखन बेमारी दवाई कीनने की हैत

झरकल मुँहके झापने नीक होइत ि ँ सश्वखन
राखले रश्व जैत ई तैयारी मुँहके रँगने की हैत

शीशा महग भेल हीरासँ "ओम"के अचरज लागल
राखले घर भरल बखारी सगरो कानने की हैत

------------------ वणि२० -------------------

गजल- ६८

आश्वा पजरलै जखन िआँ उठबे करत यौ
इ पेममे डूबल मोन श्वस्सा रचबे करत यौ

श्कया करेज पर खंजर नैनक अहा चलेलौ
ककरो खून भेलै इ दुश्आया बूझबे करत यौ

होइ ि पेमक डोरी तनुक एकरा जूश्आ तोि
जोिबै तोिल डोरी श्वारह बनबे करत यौ

राम-नाम मुख रखने पेमक बाट नै िश्आए
पेमक बाट जे चलबै मुश्कत भेटबे करत यौ

बीत-बीत दुश्आयाक पेमक रंग मे रंश्वा श्वयौ
"ओम"क इ सपना अहा संग पूरबे करत यौ

---------------- वर्ण१८ ----------------

गजल- ६९

मुस्की अहाक हमर काल बनल अछि
नैनक चाहि जीके जंजाल बनल अछि

अहाके देखि सुरज कोनटा नुका गेल
लाल अहाक एहन गाल बनल अछि

लिखते रहै छी पाती अहाके प्रिये हम
राखै छी घरे पातीक टाल बनल अछि

हमरो सुधि कखनो लियौ ने प्रियतम
अहीके सुमिरैत की हाल बनल अछि

"ओम" दीप बनि जरै इजोत अही लग
देखू पेमक विरसा मशाल बनल अछि

-------------------वर्ण १५--------------------

गजल- ७०

आउ धल मोनक दीप जराबी धयाबाती आब गेलै
धनेह तेल धया बाती बनाबी धयाबाती आब गेलै

अंगनामे फेरता ऊक बाबा दुख रोग भगाबै लेल
डाह-घृणाके हम ऊक घुमाबी धयाबाती आब गेलै

दधरा आब कतौ नै रहतै जे सूप डेगाओल जैत
मैया संगे सगरो सूप डेगाबी धयाबाती आब गेलै

हलुआ-पूि ी लर डू-बताशा सबहक घर बनल ि
आइ खूब पेम-म ि र खुआबी धयाबाती आब गेलै

मँहगी गरीबी बेरोजगारी धंसाके नाच पसरल
"ओम" संग इ सभ दूर भगाबी धयाबाती आब गेलै

-------------------वणि २०--------------------

गजल- ७१

थया हमर र सल जाइत थक ि नै बजै ि ि
करब हम कोन उपाय ककरो नै सुनै ि ि

बर ड जतनसँ कोठा बनल जे सून पलि ि
कतऽ सँ भेटल हकार थया घुथ नै तकै ि ि

आउ सथ्व शृंगार कर मोर थयाक मोन भावै
कोन थ्वानमे सूतला हमरा थकया नै देखै ि ि

चानन काठ केर महफा ि बहुत सजाओल
ओथ्वमे लऽ चलल थयाके कथ्वायो नै कनै ि ि

सासुरक सनेस पर "ओम"के लागल उजाही
नैहरक सखा सभ ि ूटल याथ्व नै आबै ि ि

----------------वणि १८-----------------

गजल- ७२
ि र नश्च होइए मुक्त बान्हके कोना कऽ तोि ब
बहैत हवा मुटीमे बन हम कोना कऽ करब

सपना होइ ि सपना कतबो सोहाओन हुए
श्चान टूटै पर ओकरा अपन कोना कऽ कहब

अनकर आस बेश्चायाक बसात सते कहै ि
ककरो मुँहके ताकैत आसमे कोना कऽ रहब

नोश्च लेश्चाऐ श्चकयाक अहा सुनर पंख श्चा ि क
श्चन पंख आकाशक नोत आब कोना कऽ पूरब

श्चलश्च जइयो कनी "ओम"क गाममे श्चकि खन
केहन ि गाम हमर से अहा कोना कऽ बूझब

-----------------वर्ण १८-----------------

गजल- ७३
र सल ि कपार कश्चयो बौसेबे करतै
मोन रहतै टूटल कते जोडेबे करतै

सागरक कात सीप श्चब ैत रहब हम
कोनो सीपमे कखनो मोती भेटेबे करतै

श्चकश्चाजक बाटके हम िने ि सश्चदखन
आकाशमे हमरो श्चसस्ता कनी हेबे करतै

सजबै ि अपन उपवन एश्च आसमे
उजि ल घरमे सुगंि भरेबे करतै

श्चकयो मानै नै मानै "ओम" इ कश्चते रहत
नैन रहतै नै श्चयासल जु िबे करतै

.......................वणि१६.......................

गजल- ७४
जखन मोनमे पेमक आँकुर फूटल तखन पेमक गाि श्वाकलबे करत
जखन जवानीक ककरो लुती लागल तखन पेमक िि रा उठबे करत

पेम ि रामायण पेम ि गीता पुराण पेम ि पूजा-पाठ पेम ईश-भगवान
जखन इ मोन पथ्थि मंथ्थ्र बनल तखन पेमक मुर त बसबे करत

थ्थ्नगी कि र बनल इ पेम ि िर पेम इ समाज बनबै पेम पथ्थवार
जखन थ्थ्रय थ्थ्नेहक संगम रचल तखन पेमक इ गंगा बहबे करत

पेमके बान्हत डोरी एखन नै बनल पेम मुक्त ि सथ्थखन सहज सरल
जखन थ्थ्नगी-आकाशक सीमा हटल तखन पेमक थ्थ्र ि या उि बे करत

"ओम"क थ्थावेदन अहा कते नै सुनब एना अहा चुप रथ्थ कते मूक बनब
जखन याचना अहाक मोनमे ढुकल तखन पेमक थ्थाक्ता तँ भेटबे करत

.......................वणि ३०.......................

गजल- ७५
ताकलौ एना कनिया कोनो पैघ बात भय गेलै
मोन डोलै हमर पीपरक पात भय गेलै

बिन पीने इ नशा कनिया हमरा लागै लागल
हमरा बूझि कऽ शराबी लोक कात भय गेलै

हमरा हमरेसँ चोरी अहा कोना कय लेलौ
बन िल हृदय-धड़कनकी कोनो घात भय गेलै

पेमक सीचल जिनगी आब भेलै रसगर
सुखायल चाउर िलै मीठ भात भय गेलै

सभ ओझरीसँ हम अपने नीक रहैत रही
नैन-ओझरी लागल "ओम"क मात भय गेलै
..................वर्ण १७.....................

गजल- ७६

आश लागल मोनक ाहिके रोक देलाऐ
कोनो दुख गहीर ाि मुस्की माथ देलाऐ

अपन मोनक ाारि चकयो कोना कऽ रोकत
इयाद जे हमरा करेजमे भोक देलाऐ

आँखक कोर भीजल नोर चकया नै खसल
कृपणक सोन जका ओकरा राख देलाऐ

नोर इन्होर होइ ाि एखसँ बाश कऽ रहू
फेर कहब नै अहा चकया नै टोक देलाऐ

"ओम"क फाटल ाािती चकयो देख नै सकल
कोनो जतनसँ ओकरा हम सीब देलाऐ
.......................वणि१६.......................

गजल- ७७

मोनक आस आब टुअर भेल
तृष्णा एखनहुँ नै दुब्बर भेल

अन्हारसँ झरकैत रहलहुँ
इजोत नै कखनो हमर भेल

म्ुमार्ि ी म्ु बनबैत रहै
म्ु सब्बखन अनकर भेल

कुहेसक मारल बाट कानैए
रौद नै एखन सनगर भेल

चीनी फाकैत तबाह भेल "ओम"
म्ुर थ्ककयाक नोनगर भेल

............वर्ण १२.............

गजल- ७८

ि‍निके नापबाक फेरमे गज फेकल जाइए
आकाश ि‍ूबाक फेरमे जमीन ि‍ूटल जाइए

भाग्ना-भाग्नाक सुनर फूल लागल फुलवारीमे
कमल लगेबाक फेरमे गेना टूटल जाइए

चानीसँ संतोख भेल नै आब सोनक पाि‍ भागू
सोन कीनबाक फेरमे इ चानी र सल जाइए

दूरक चमकैत वस्तु अंगोरा भय सकै अि‍छ
मृगतृष्णाक फेरमे देखू मृग कूदल जाइए

चानक इजोि‍रयामे काज "ओम"क होइते ि‍ल
भोर-इजोि‍रयाक फेरमे चान डूबल जाइए

------------- वणि‍१८ ---------------

गजल- ७९

हवामे अहा लात चलबैत रहू हमरा की
आकाश पर भात बनबैत रहू हमरा की

हम गामक पोखरिमे माछ मारैत रहब
जाउ अहा समुर उपछैत रहू हमरा की

एखन धरि हम खम्भा गाड़िमे परेशान छी
बनिका महल अहा ठोकैत रहू हमरा की

हमर आँखिक सपना आँखियेमे मरि गेल
अहा जागले सपना देखैत रहू हमरा की

"ओम" कहैत रहत अपना सोझ-सोझ गप्प
अहा सभके टेढ़े सुनबैत रहू हमरा की

------------- वर्ण १७ -----------------

गजल- ८०

हम कातसँ सद्धखन देखते रहलाए
हम नै बजलाए अहुँ थिक नै सुनेलाए

नैनक ािर अहाक जे उफनैत रहल
चुप रहि हम ओकरामे हेलैत रहलाए

मदमस्त नैना अहाक जुलुम कऽ रहल
बाजुरी खसेनाई अहा कतऽ सँ सीखलाए

शुर भेल इ सिलसिला हमर जे अहीसँ थिये
सभ थिक बूझैत थिकया अहा नै बूझलाए

एना अन्हार केने "ओम"क पेम-संसारमे
मुख-चान कतऽ अहा नुकबैत रहलाए

------------- वणि१६ -----------------

गजल- ८१

टूटल मोनके हम बुझावैत रहि गेलौ
एक मीठ्ठ माया हँसी हम ताकैत रहि गेलौ

फूलक मुस्की कैद िै काटक महाजालमे
जालसँ मुस्कीके हम ि ाबैत रहि गेलौ

सूरजक हँसी हरायल मेघक ओटमे
फूँकि कऽ मेघ हम उधियाबैत रहि गेलौ

आइरि अधि शात भेल पा िरक चोटसँ
चोटक दाग मोनसँ मेटाबैत रहि गेलौ

धिधियायल ि ै हँसी "ओम"क वश नै चलै
हा ाकि सफाई हम देखाबैत रहि गेलौ

------------- वणि १६ -----------------

गजल- ८२
थ्थकयो थ्थक ि नै सुनै ि‍ अहा करै ि ी बवाल
अहा नै बूझै ि ी बथ्थ्थरा नाचै अपने ताल

ककरासँ मागै ि ी अहा अपन जबाव यौ
बाजत कोना एखन नै बूझलक सवाल

हुनकर मुस्कीके देथ्थ्थ्व अहा की बूथ्थ्थ्म गेलौ
चवथ्थ्थाया मुस्की हुनकर अदाक कमाल

नीथ्थ्थाशास्क हुनका पाठ बुझौने हैत की
ओ जेबीमे रखै ि थ्थ्थि नीथ्थ्था बूथ्थ्थ्म कऽ र माल

देखैत अथ्थि नौटंकी "ओम" हुनकर चुपो
लागै हुनका जे हम ि ी थ्थ्थारथ्थत थ्थ्थाहाल

------------- वणि १६ -----------------

गजल- ८३
डेग दैत पूरब अहा पश्चिम पताइत छी
चढ़ल मस्ती जवानीक अहा अगराइत छी

अाना पुजारीक मन्दिरक शोभा नै भावै अछि
हम छी पेम-पुजारी अहा नै पतियाइत छी

नैनक इशारासँ जे अहा किछु कहि देलाऐ
ओ सभक सोझा सुनाबैमे किया लजाइत छी

संकेत अहाके हम अपन पेमक पठेलौ
कहलौ अहा देखू किया एना भसियाइत छी

"ओम" लुटेने अछि पूरा जिनगी अही पर यै
मोन-आँगनमे रहियौ किया खिसियाइत छी

------------- वर्ण १७ -----------------

गजल- ८४

माश्चक बासनमे भय गेल भूर ओकरा फोश्चिये देनाई नीक
जखन श्वशास भय गेल चूर ओ श्वशताके तोश्चिये देनाई नीक

फश्चयाद सुनावैत पूरा जीवन ताकैत ि श्वकया रखने आस
कानमे ठूँसने रहैि जे तुर ओ हाश्वकम ि श्चिये देनाई नीक

श्वना श्वलेने ताल-माि कखनो सु-संगीत कहा अश्चि श्वकलल
ककरोसँ श्वलल नश्च जे सुर महश्वफल ि श्चिये देनाई नीक

अपस्यात भेल ि मरखाह ब दिके खूँटामे बाश्वह राखयमे
बेसी चलबय लागै जे खुर ओ ब दिके खोश्चये देनाई नीक

फाटल वस ि कहुना पैबंद लगा कऽ पहश्च सकैत अश्चि "ओम"
मुदा जाश्च मे सगरो अश्चि भूर ओ कपि फेश्वकये देनाई नीक

------------- वण ि२४ -----------------

गजल- ८५

मूखदिवस (०१ अपैल) के अवसरपर हमर विशेष पस्तुति

मूखदिवस पर पता चलल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ
आइ छिै इ कियो कहा कहल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ

जानगीक चुटिमे जबि गेल सभटा कवि कविता आर गजल
देखू एको शेर नै ठीक बनल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ

हमरा "फूल"* बूझि कऽ ओ फूल पठौलनि झुठक मुस्कीमे सानल
बूझलौ ओकरे हृदय कमल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ

मुँहमे राम बगलमे छूरी इ हमरासँ कियो नै सपरल
बनि नै सकल हमर महल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ

सुनलौ सभ ठाम खूब माखै छथि बुधियार टोलक रहबैया
एहि दुनियामे "ओम" मूखे भेल हम सभसँ बकिा मूखशिकौ

....................सरल वार्णिक २४ वर्ण.........................

(ऐठाम "फूल" माने अंगेजीक फूल अर्थात मूर्ख)

गजल- ८६

बाहरक शाि हाथ गेल मुदा मोन एखनहुँ कारी अछि
नागक नाङ्ग कटा कऽ मुिी कटबैक हमर बेमारी अछि

तेलसँ पोसने सीग रखै िी क्यािकोना हम होबय देबै
खुटा अपन गाि ओतै जतऽ सभक सँझया बाडी अछि

पेट भरल अछि तै खूब भेजा चलैए नै तँ हम िाि िी
ढोलक कयो बजाबै मस्त भेल बाजैत हमर िारी अछि

जीतबा लेल ढेरी रण बाचल एखन कहा आचेन हम
केहनो इ व्यूह होय टूटबे करतै जँ पूरा तैयारी अछि

डाह-घृणाके अहा कात कर इ अस शस नै कमजोरी िै
आउ सभ ओछठाम जतय रहै "ओम" पेम-पुजारी अछि

सरल वार्णिक बहर वर्ण २२

गजल- ८७
चढ़ल फागुन हमर मोन बरड मस्त भेल ि
थया बूझै थकया नै संकेत केहन बकलेल ि

रससँ भरल ठोर हुनकर करैए बेकल
तइयो हम ि ी थयासल थमनगी लागै जेल ि

कोयली म ि र गीत सुना दती केलक करेज
श्रामोही हमर पेम श्रावेदनके बूझै खेल ि

मद चुबै आमक मजजरसँ श्राशा चढै हमरा
रोकू जुश्रा इ कश्र जे नै हमर अहाक मेल ि

पेमक रंग अबीरसँ भरलौ हम थचकारी
ि ूटत नै इ रंग ऐमे करेजक रंग देल ि

(सरल वाथाकि बहर वणि१८)

फागुनक अवसरपर थशेष पस्तुश्रा।

रुबाइ- १

कखनो तँ हम अहाके मोन पड़िते हैब
याद्क दीप बनि करेजमे जड़ते हैब
बनि सकलहुँ नै हम फूल अहाक केशक यौ
मुदा काट बनि नस नसमे तँ गड़िते हैब

रुबाइ- २

कोना कऽ रंगलक करेजके इ रंगरेज रंग छूटै नै
नैन पियासल छलि गेल मुदा आस मिलनक टूटै नै
हमरा छोड़ि तपैत पिया अपने जा बसला मोरंग
बूझथि पियरहक नै मोल भाग्य इ ककरो एना फूटै नै

रुबाइ- ३

हमर करेज संगे खेलाईत रहलौ इ कोन खेल अछि
मिलन अहासँ हमर खुजल आँखिक सपना भेल अछि
जाडक रौद कहै छलौ हमरा इ एखन छि मोन अछि
अनठान्हार छी आब अहा लग लोकक ठेलम-ठेल अछि

रुबाइ- ४

अहाक दुनू नैन बनल अछि हमर जिनगीक सम्बल
मुस्की अहाक करैत रहै अछि हमरा सदिखन शीतल
भेटतौ अहा जौ नै हमर जिनगीमे सोआद कहा रहितै
अही पेरणा बनल रहै छी देखि अहीके लिखै छी गजल

र बाइ- ५

संगी सभसँ नीक शराब ि देखू कश्चयो नै बदलै ि
एकर श्वाशाक नै जवाब ि देखू कश्चयो नै बदलै ि
टूटल करेज जोश्व दैए दुखक तापके करै शीतल
फेर कश्चऐ कोना खराब ि देखू कश्चयो नै बदलै ि
र बाइ- ६

पीनाई तँ हम ि श्व देब मुदा पीनाई हमरा नै ि ि ए
जीनाई तँ हम ि श्व देब मुदा जीनाई हमरा नै ि ि ए
होशमे आबै ले पीनाई ि बर ड जर री सुश्च श्वयऽ यौ दोस्त
पीश्व कऽ हम होशमे ि ि ढनमनेनाई हमरा नै ि ि ए

र बाइ- ७

अहा केर राजभवनक ऊँच श्वंहासन हमरे ि ि
बाश्च कऽ जकरा अहा हँसैत ि ि ओ राशन हमरे ि ि
जनताक जे ि अश्वकार सभटा आब अहा दऽ श्वयौ
कूश्व रहल श्व जाश्च पर खूब ओ आसन हमरे ि ि

र बाइ- ८

जागल आँश्व केर सपना बनल श्वनगी
कुहरल आश केर झपना बनल श्वनगी
फाटल ि लि करेज हम सीबैत रहलौ
र सल सुखक आब नपना बनल श्वनगी

कता- १

चलल पूरबा जखन उ ि ल आँचर अहाक
उश्चियाइत आँचर हमर करेज लेने गेल
कारी मेघके मात करैत अश्चि काजर अहाक
सगरो दुश्चायामे देश्चयौ घुप्प अन्हश्चया भेल

कता- २

अहीसँ शुर अही पर खतम ई श्चस्सा हमर
करेजमे अहाक ि श्च हम तँ बसा रखने ि ी
आब अश्चि अहाक ि श्च करेजक श्चस्सा हमर
ककरो नजश्च नै लागै एकरा नुका रखने ि ी

उमेश मंडल- आशुकी (अपन गप, क्षणिका कथता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल)

अपन गप

साहित्यक विदाथी हेबाक नाते कथा, कविता, उपन्यास, महाकाव्य पढबाक अवसर भेटैत रहल अछि मुदा लिखबाक विचार हेमन्तामे जागल। ओना परिवारमे साहित्यक प्रति आकर्षण आइये नै पहिलहुँसँ अछि। बाबेक अमलदारीमे ‘महाभारत’, ‘तुलसीकृत रामायण’, कबीर रचित ‘अनुराग सागर’ घरमे अछि जेकरा समए-कुसमए उनटबैत-पुनटबैत रहल छी अछि।

आइक जे भाग-दौड़क जिनगी बनल गेल छै ऐसँ पढैक-लिखैपर बहुत बेशी प्रभाव पड़ल गेल अछि। जइक चलते परिवार-समाजमे अपनापनक विचार सेहो समाप्त भऽ रहल अछि। हाइ-नारायण, सबहक मनके यएह घेर लेने छिहि जे पाइयेसँ सभ किछु होइ छै। तँए जौ पाइ भऽ जाएत तँ जिनगीक सभ उदेसक पूर्ति भऽ जाएत। मुदा ओ ई बूझैसँ कात भऽ जाइ छथि जे जिनगी जीबैले पाइयोक जरूरत होइ छै जे एक साधन मात्र छी।

वैशीकरणक प्रभावसँ आइ दुनियाँ गाम-घर जका बनल गेल अछि। जेकर प्रभाव जिनगीक कोने-कोन पसरल रहल अछि। जहिने कोने-कोन पसरल रहल अछि तहिने जीवन-धारा प्रभावित हेबे करत। जहिने जीवन-धारा प्रभावित हएत तहिने आचार-विचारक संग जीवन-शैली सेहो प्रभावित हएत। एक समए छल जखन कविता मेहनतसँ कएल कऽ कवि शास्त्रीय पद्धति अपनबै छला जे आइक जुगमे कठिन भऽ गेल अछि। जइसँ नव-नव शैली, नव-नव ढंग नव-नव पाठक सभ आबि रहल अछि। जइठाम निर्देश-अधिकार प्रमुख छल ओ गौण भऽ रहल अछि। संग-संग पढै-लिखैक दयरा सेहो बढल अछि। देश-विदेशक स्थान-स्थान भाषा, स्थान-स्थान शैलीक संग स्थान-स्थान समाज आ ओकर जीवन पद्धति सेहो बुझबाक आ जनबाक अवसर भेट रहल अछि। जइसँ कवि-साहित्यकार प्रभावित हेबे करताह।

कविता लिखैक पेरणा भाय गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ भाय नागेन्द्रजी (श्री नागेन्द्र कुमार झा) सँ भेटल ‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादनक अवसर जखन देलनि आ काज करए लगलौं तखन रंग-रंगक कविता, गीत, गजलक संग-संग गद्य विधाके देखबाक अवसर भेटल जइसँ कलम घुसकए लगल।- उमेश मंडल

# कुमही

फूल सदृश र प हमर

कहबै ि ी कुमही मगर।

फूले सदृश श्वारो हमर

ि रतीसँ हटल ि ी मगर।

ऊपर पाश्वाक बास हमर

पाश्वाये पीब करै ि ी गुजर-बसर।

लाइग कोनो नै ि रतीसँ हमर

रस ि श्व चुसैत रहलौ ओकर।

पश्वाते पूवाक श्वाहकी हम

पश्चिम भाग टहश्वा जाइ ि ी।

जखनुल्मबै ि ी प ि बाक श्वाहकी

पूब श्वस टहश्वा जाइ ि ी।

बीच उतर दश्चिन पूरब पश्चिम

श्वपरीत-श्वपरीत चाश्वा ि ै ि ी।

श्वार शरीरसँ नम्हर रश्वतो

ि रती कश्वयो नै ि ूश्व पबै ि ी।

आश-श्वाराश बीच हम

सुन्दर र प बना श्वाबै ि ी।

# ि मातमा

ि मातमा होइ ि थि श्चायागी।

श्चायागी कहल केकरा जाए यौ भैयारी?

वएह ने

जे केलश्च श्चायाग

आश्चक ओ

जे केलश्च भोग बेसुमार।

एक ि टा पालायो पी ि ला

दोसरेक हाथ।

मजदूर, हरबाह

श्चानसरसँ साझ ि थि

देह ि ुनैए

उश्चात बोश्च मा ि दू सेर पबैए

एक सेर बेच लऽ दोकान जाइए

नुन, तेल, हरदी, गोटी श्चकनैए

बचलाहा एक सेरसँ सभो परानी पेट चलबैए

भश्च श्चन तँ ओहो खटबे करैए?

अही कहू,

केहेन पं ि ताया एले

पं ि ती करए का ि

ऊपरे-ऊपर नजश्च दौ ि लकै।

काजुल संग त्यागीके देखब ने पेलै
त्यनक क्षायागपर नजब नै खिलकै
भोगीके ि मात्मा कब्ज गेलै।

## शुभारम्भ

साझक समए ि लि
झारत्सी प ैति ि लि।
हालक्षमे ब्सनेमाक हाल
जे ि पा भेल प लि ि लि
तेकर पुन: शुभारम्भ भेल ि लि।

अबैत रहथि ओम्हरसँ ओ
लखन पान दोकानदारके देखवते
पूछि देलखन हाल-चाल कखते
‘‘की यौ लखन, दोकान तँ आब
चलैत हएत खन-खन?’’

लखन करए लागल भन-भन-
‘‘आबे ग बि अखि
पब्लनब्ज ठीक ि लि।’’

ओ वेचारे सोचए लगलाह-

जञ्ञयेसँ हाल चालू भेल हएत

दोकान सबहक थ्थकी चौगुना भेल हएत

तखन ई थ्थकअए बजैए

पञ्ञनुके थ्थकीके नीक कहैए।

ओ, लाि रिए लगलाह हठात्

भीतरमे आञ्ञवर अञ्ञि थ्थकि बात

लखनसँ पूञ्ञि बैसलाह तािक-

“केना पञ्ञनञ्ञ ठीक िल

अहाक समाचार नीक िल?”

“यौ भाय, हम अपन थ्थकीसँ जतुेक नै खुशी िी

थ्थकमक थ्थकी बञ्ञ गेने ओइसँ बेसी दुखी िी।”

लखन थ्थकि अञ्ञना सोचलक

थ्थकन्तु मोनक बात नै उगललक।

## मुँहि ञ्ञ

जेहने घरक लोक रहै ि

घरक मुँहि ञ्ञ तेहने होइ ि।

जेहने घरक मुँहि ञ्ञ रहै ि

तेहने ने बाटो ि ि ि ।

जेहने जेकर बाट रहै ि

आचारो-विचार तेहने होइ ि ।

जेहने आचार-विचार रहै ि

तेहने ने संस्कारो बनै ि ।

जेहने जेकर संस्कार होइ ि

तेहने ने जीवनो भेटै ि,

तेहने ने कला-संस्कृतो होइ ि ।

जेहेन जतए केर कला-संस्कृति रहै ि

मनुक्खक मुँहथि तेहने होइ ि,

साहित्यक मुँहथि तेहने होइ ि ।

## पचमेि

पाच मेि अक्षर एकठाम

कहबैए पचमेि ।

जहिना बाट चारि अक्षर

कहबए चौमेि ।

मेरहा-मेरहा जौ विचार करब

रंग-विरंगक पचमेि देखब।

आउ देखी आगूक मेि

खाजा-लर डू, ञ्चलेबी-बुञ्चाया ओ बताशा

सभ ञ्चञ्च एक

सेहो कहबुैए पचमेि।

फुट-फुट भऽ टुकिी बञ्च

नाओं अलग एका-एकी

जञ्चना आञ्चि-घुर फुटल

आञ्चिये-ि र नाओं कहबैत।

तञ्चना ने खजो-लर डू

खजे लर डू कहबैत।

मेि-मेि ञ्चञ्च-ञ्चञ्च

मि र-मि र जञ्चना बनैत

तञ्चना ने ञ्चचारक बीच

करक चाही ञ्चचार यौ मीत।

ञ्चञ्च ञ्चचार-आचार पाच

पचमेिक संजा लैत साच।

ञ्चचार मि र मेिक

अञ्चि पत्यक पचमेिक।

तीनू तीनठाम भेने

कहबैत बिजोरी अञ्चि भने।

# खप ि

माटि-पानि संग मिलि

सानि-बाटि कऽ मिला-मिला

मुंगरीक माइर मारि कऽ

िपुआ खप ि बनाओल जाइत।

ठोकि ठठा िपुए जका

नरिया सेहो बनाओल जाइत

बात अलग चाकोपर

नरिया खप ि बनैत हा िपर।

साचा पाटि टाली बनैत

नम्हर-नम्हर ग ि ि त।

नरिया-िपुआ, टाली

एक-दोसरपर बजेलक ताली

कहियो एक-दोसरक बीच

मेल-मिलाप नै केलक खाली।

एक मुंगरी दोसर चाक

माटि खा-खा बढ़ेलक हा ि।

देखि दुनूक मेल-मिलाप

टाली खप ि आगि-आगि करए लगल साफ।

साचा भरे बनल टाली

अपन शरीर केलक भारी।

बती कोरोसँ बनल ठाठ

जबाब देलक जोिल हाि।

आब्ब बीच्चेमे एस्बेस्टस

सभके हिबिलक।

टश्श-टश्श खपिा टाली

नपरा बश्श होसिए मािं खाली।

## गामक इयार

अहा लेल परदेश श्यायागल

अहीले सुख-सुश्वि श्यायागल।

परदेश कमा लोक िन बनबैए

सुख-भोगसँ तृप्त रहैए।

बाश्ढ़-रौदी सश्श-सश्श

अहीक संग रहै िी।

अहाक श्सनेह पबैले

आश्श-िइ सेहो सहै िी।

फूसुश्वार मे रश्श-रश्श

पाश्श-पािर सेहो सहै िी।

लता-कपिा श्वनु तन

पेम करैत आएल मन

पाला-शीतलहरी सहि-सहि

संग अहाक पूरै ि ी।

इयारक-यारी आमाखि-आमाखि

मातृभूमिक संग जीबै ि ी।

## पएर पादुका

विचार-सकल बीच फुँसल

अप्पन आन बुझाइए।

इम्हर केकरा के देखत

दूरेसँ धि धि आइए।

दोहरी लगनगी देखि-देखि

अपनो मन बौआइए।

भेद-भावक जइ नगरीमे

अइयो ओ चीज देखाइए।

आइ गप-सप्पक बीच चीज ओ

बदलल अवश्य बुझाइए।

गप-सप्प ओ बेवहारक बीच

अन्तर सभ ठामसँ अबैए।

बूझि-बूझि बुझैत

रहलौ हम डरैत

एना थ्कअए भऽ जाइए।

होइमे कोन

हेबे करत

हृदए हमर कहैए।

थ्कअए पएर पादुक अपन

पश्चर-पश्चर नै चलैए।

एम्हर-ओम्हर देख्व-देख्व

श्वाचलाके ऊपरे-ऊपरे

ऊपरका खोश्च खाइए।

तरे-तरक ऐ िलिके

नै बूझ्म माल्व िाइए।

बि ित्मनगी अकारथ बना

काम र कान्ह िढबैए।

## िश्ठ

पोखश्चक चार कात

बनौलक गौआँ घाट।

भरल पथ्िया लऽ

िलक सभ बाट।

पहुँचल सभ हाली

सजेलथि अपन-अपन डाली।

जरबाक लेल तैयार भेल थुआरी

हाथियो केलक अपन तैयारी

जरैत दीप कुरनीपर

लऽ िलक मािपर

अथि हाि बैसल

आइ घाटपर।

टौकना, खमहर आ, सुिनी,

हरदी, आदी इत्याथि

सभ पुराओत अपन-अपन फजि

सभ, चुकबए चाहैत अथि

अपन-अपन कजि

देत सूयकेि अघि

## भोगी

नाच करए बानर

चाउर खाए मदारी

बीचमे तँए अथि सरोकारी।

थुकासक नाओंपर भऽ रहल अथि नाच।

मानथ्मकता, मानथ्मकता, मानथ्मकता

पसरल अथि चार कात

नीक बात!

थ्रकएक नै हुअए थ्रकास।

बीक रहल अथ्रि चार कात

व्लडपेशर-डायथ्रबटीजक गोली

संगे-संग

तैयो मदारीये बनल िथ्रि थ्रायागी

भथ्र जीवन भोजन केलथ्रा बैसारी

ऊपरसँ दवाइयोके बढ़ौलथ्रा बेपारी।

भोग करैत-करैत भेल िथ्रि अघोर

तइपरसँ रटना लगेने िथ्रि ताबितोर

स्पगजाए चाहैत िथ्रि सोरपोर।

हमरा बीचमे हुअए कोनो नै बाि

हम सभथ्रन रहलौ जे मिुशाला!

बनलै तँ अथ्रि थ्रचारशाला

जइमे लटकल अथ्रि बिका ताला।

## िता

भागवत वाचन शुर भेल

िता सभ आथ्र-आथ्र जगह लेल।

चाश्र तरहक ि ता बैसल ि श्रि

अपन-अपन काज-त्श्रायानमे ि गि ि श्रि

बाचको आ ि तो।

एक तरहक ि ता

भागवत सुश्रा नीकक पचार करै ि श्रि

दोसरोके नव गप्पसँ अवगत करबै ि श्रि।

दोसर ि ता अंगीकार करै ि श्रि

मुदा बजै नै ि श्रि श्रबना पुि ने।

तेसर ि ताकेँ देश्रयो

बैसल ि श्रि भागवत पवचनमे

मुदा श्रियान ि श्रह व्यापार मंडलमे

घुश्रआइत-नुश्रआइत।

स्पष्ट अश्रि श्रकि नै पेला ई

पसादुेटा खेलाह ई।

चाश्रम ि तापर कर श्रचार

ई ि श्रि मुदा सदाचार

सुश्रातो ि श्रि आ गश्रातो ि श्रि

अपन श्रानगीक श्रकयासँ श्रलैबुत्तो ि श्रि।

ओतबे नै

डेन पकश्रि पिएलहाके िश्रातो ि श्रि

आ,

ठमकलहाके ि का सेहो ि गबै ि त्श्र।

## कल्याणी

कल्याणी नाओंसँ लगैत अछि जेना

केने हेती ई थ्कि एहेन काज

वा करतीह।

जइसँ भेल हएत कल्याण

वा हेतै कल्याण।

मुदा से भेल आश्क नै भेल

एते ि थ्न जरर भेल।

भाग्य-तकदीर सभसँ पैघ होइत अछि

से कष्ट जरर गेि।

शब्दजाि

वाक्यजाि

सन महजाि।

बला बना क’

फँसबैत धल

जरर गेि।

## देश

हमर देश

थ्कि लोक खेल रहल ि थ्मि ि रखेल।

खुटीसँ आगा पि लि बि का देबाल

देवालक भीतरे लागल अथ्नि मि कि ि चार कात।

इजोत चकचकाइत अथ्नि

थ्दने जका राइतो बुझाइत अथ्नि।

चुटी-थ्यपि ि ि थ्मि सभ थ्कि देखाइत अथ्नि

मुदा,

देबालक अंथ्मम खुटीसँ ओम्हरे

भऽ रहल अथ्नि मनोरंजन।

हेबक चाही

जर रतसँ ऊपर उथ्ठ गेलापर

स्नाभाथ्यक अथ्नि।

मुदा देवालसँ इम्हर

बोन-झार सदृश मनुक्खक जड़ल र पक

खेखनैत स्नर थ्कयो सुनैबला नै

चाथ्व तरहक नाओं रचैबला लोक

देशक भीतरेमे बि का देवाल ठाढ़ करैमे

अपनो उि लथ्म होश।

कऽ रहल ि थ्मि थ्कलोल

हमर देश अथ्नि अनमोल

एकैसम शदीमे चथ्ल रहल अथ्नि ताबि तोर।

## आशयम

ि हारदेवाि ीक भीतर मात

गनगनाइत अिछ बोि

भऽ रहि अिछ भोजक बदि ा भोज

मात ओम्हरे अिछ ई गरदमगोि

माने ि हारदेवाि ीक ओही पार

बुझबैत अिछ अपनाके मनोरंजन योग।

परती-परातमे रहएबि ा ल्दनकटू

जनमल्ह काि भेि ि ि मइटुगार

ि टगर हेबासँ पल्हने

ओ कहबैत ि ि दूधकटू

आइ दुनू हाथ जोल्ड़

दू सए फीट एन.एि. सड़कक कातमे

हजारक-हजार कहबैत अिछ ल्दनकटू।

पएरमे ि टी नै ि पल्हरैि

ि ए मुदा पड़तै पकी सड़कपर

शीशा-काटी पसरि सड़कपर।

ि इ-पीबैक नै ि जोगार ओकरा

आ ने ि कोनो रोजगार

ि र भरसँ ि ा ि ी सुनै ि

-जल्दी जोल्ड़ ि ह सरोकार तूँ

एकेसम सदीक समाज तूँ।

## भाषा भेद

हमरा सबहक माथपर

पसरि अछि मरिती जका त्वकि

त्वकयो सुमितक नै जे

तींतन करता ऐपर

ई कथी ितड़ि अछि सभपर?

मुदा दुभाग्यसँ

ऐमे िुपि अछि त्वकि बात

जइमे अछि नै एकोटा पात

सबहक कहब ि लेह

“ई आगा िमि कऽ

करत पदूषि साफ

जीबैक ि ि स्वच्छ हवा-बसातक

अछि जल्दना िगता

करत ई दूर सबहक बेगरता।”

देखा चाही ई दूर करत पदूषण

आस्क करत सभके आपता।

## नोर

गोरसपट टकधीयान लगेने

मुआया बैसल अकानैए।

घर-अंगन, दाअ-दरबज्जा

भोरे सभ थ्वन बहारैए।

बतनि-बासन, थीपली-कटोरी

सभ थ्वन चमका कऽ माजैए।

झक-झक झलकैत

ारी-बाटी देख्व

मुआया माए गुनगुनाइए।

गुनगुनीमे अहाद भरल ि

सुख-दुख सेहो उमरल ि

मुआया आब ाित ई दुआयुँ।

माइक आँख्वक नोर

मुआयाक हृदैमे उठबैत झलकोर

भऽ जाइत अधी बेहोश।

होश अबाते फेर अकानैए

आँखिक नोर आइहारैए

माइक मन टटोलैए।

सुखक नोर आल्क दुखक नोर

दुनू एके संग टघरैत-झहरैत

माएक चेहरापर देखैए।

खूर-खूर, खूर-खूर काजौ करैए

घर-आंगन सम्हारबो करैए।

मुस्काया मुदा ई बूझि नै पबैए

की खुशी आ की दुख, एके संग

माइक आँखिमे ई नै बूझि पबैए

यएह बेवसी मुस्कायाके सतबैए।

## ि‍रक कात

अपना आँखिये सभ देखैए

अपना चालिये सभ चलैए।

सजान-अजान आँखिक बीच

चालियो अपन चालि मारैए।

जखना ि‍रक दू भीता बीच

पाश्चक तेज ि र बहै ि

तश्चना मनुख-मनुख बीच

अपन-अपन ध्यनगीक ि रा ि ।

चाश्च-चलश्च सदृश टुकि ी

जुश्च-जुश्च महार बनै ि ।

जश्चना ि रक महार संग

आकृश्च रंग-त्वरंगक ि ।

सभ मनुख बीच तश्चना ओश्चना

सदएसँ बनल अबै ि ।

एक जाइए दोसर अबैए

उराश्च-उराश्च कमि किरैए।

उराहए-श्चमाहए लेल

बेवसि ी बीच ि अनमेल।

श्चकयो श्चरही पोखश्च सदृश

तँ श्चकयो मरता इनार जका

सदएसँ पि ल मरता भेल।

बेवसि ी जुेकरा हाि लगल ि

सेहो तँ भूतही ि र बनल ि ।

उनटैत-पुनटैत करैए खेल

तामसे बीच श्चखाह अश्चि भेल।

## मारल बुइि

मरलेमे माछ्र खा-खा

मारल बुझि कहबै िी।

मरले बाट पकश्चि-पकश्चि

हँसी-खुशीसँ जीबै िी।

मरले ने जीश्चयो जाइ ि

जीलहे ने मरबो करै ि।

जश्चना पश्चते अराक पाश्च

मुइलहो िर जीबै ि।

भलश्चुं जीतहा िर बीच

तीन-मसुआ ओ कहबै ि।

तीन िर श्चकएक ने हो

ऊहो तँ िरे कहबै ि।

बाट-घाट बना-बना

यािी पार करै ि।

मुइलहा-जीतहा बीच सदए

तीरम-तीर चलै ि।

एकक सम्बन्नि श्चमालयसँ रहने

फािी सेहो फुटबै ि।

ऊहो बीच दोसर एहन ि

अपने बेि बेिएल ि।

एक-दोसर बीच ताना-तानी

चलैत आश्च रहल ि।

एकेसम शदीक ढाढ़स बना

नहर खुनबै ि।

कागज-पतर बीच सदए

ओझरा-ओझरा मरै ि।

## खुशी

ओर-ि रश्चश्चन दुख जश्चना

सुखोके तश्चना ने होइ ि।

एक जाइए दोसर अबैए

दुख-सुख सेहो कहबैए।

सुख-दुखक चाश्च अजीब ि

संगे-संग चलैत रहै ि।

तारा-ऊपरी लटपट-सटपट

िती श्चला-श्चला चलै ि।

सभके अपन-अपन खुशी ि

चाहे क्यश्चत्त हुअए आश्चक पश्चवार।

तश्चना ने रोगो-श्चयाश्च ि

अपन-अपन सबहक दरकार।

बेकती-बेकती बीच-बीचक

केना दुनू संगे चलतै।

जाबे तेना नै चलतै

व्यक्तिक परिवार केना बनतै।

## बाट-बटोही

बाट चिन्हबैत बटोहीके

पहुँचबैत घाट बटोहीके।

चलि-चलि बटोही पहुँचैत

घाट लेल बाटे-बाट।

विचारक संग जँ चालि रहल

घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत।

विचारक टुकड़ी वाणी बनि वाण

रचि, शक्ति बनि उभरति

अपन-अपन।

शक्ति तँ शक्तिये बनि

चाइलिक भरे खाइए।

एक बटोही भार बनि

भारक संग भरमबैए।

दोसरक किरदानी देखि-देखि

गारा संतोष लगबैए।

## हे यौ अहा

हे यौ अहा, केलौ जे थ्का्ि अहा

जे केलौ अपनेले अहा।

तइले दुख हमरा अथ्नि कहा।

सुनर थ्आमलि ि थ्थ्नि अहा

अकलथ्याणक बाट पकथ्नि

खुरि ाही कटैत रहलौ

बदलैत र प ओ थ्थ्नि थ्थ्ाके

थ्थ्ान्ह-जाथ्ना क' तैयो अहा

ढेका पकथ्नि टहलैत रहि ौ अहा।

आइ जौ हम, थ्का्ि बजै ि ी

थ्का्ि करै ि ी

ऐमे केना मास्टरी करै ि ी अहा।

काथ्नि अहाके हमर

कोनो भान नै ि ल

कथ्नाको थ्नयान नै ि ल।

मुदा, भुखल केर पेट भरबाक जगह

तेल, फुलुेलक फुेथ्नमे

ि किलैत ओइ जेरमे रहलौ अहा।

आब गाम, गाम नै रहल

प्रशंसक गाम भऽ गेल।

अहाक बजारोसँ पैघ आ सघन

जतए इमानदार, कर्मठ, उदार

रहैत आएल अछि आइसँ नै सदिओंसँ

जेकर साक्षी अछि इतिहास।

संभवत: अहुँक चपचपी सघन

भऽ जाइत अछि तखन

गामेक नक्शामे।

## अपन गाम

उड़ि-उड़ि उड़ि नै सकलौ

उजड़ि गेलौ उपटि गेलौ।

केरा आ अड़िकंचनक पात

कलक बगलक खता बले

दुनूक लहलहाइत वीर देखि

प्रशस्त भऽ आशस्त भऽ

हम उड़ि गेलौ।

बिना जड़ि-मुड़िक भऽ गेलौ

ठुठ गाछ सन,

नव पेपी खोजक लालसा

मनमे अछि हमरा व्याप्त

मुदा,

खताके हम बुझै ि ी अिला

जे हमर करत कल्याण

संभवत: तँए

हमरा नै अिछ िवशास

उि त-उि त उड़ ि नै सकलौ

बौराए गेल ि ी अकासे-अकास।

## ि ि नै फुराइए

की कही कहल नै जाइए

देखै ि ी रहल नै जाइए।

सुनै ि ी तँ आि यिलगैए

हवाइ लर डू सगतर ि ि काइए।

हाि ीक बदला ि मकि ि लेने

साझ-परात घुमैए।

लेल ा, लुि ा, लुटलाहा

बंि ि त भऽ कऽ

अपन भाल्यपर कनैए।

बेवसि ा केर होइत नाच

साझ-परात सभ देखैए।

थ्यानाएल आँख्व, भकुआएल मोन

नैसथ्यकि पश्चाभाक टोना करैए।

थ्यशक आहश्ट पाश्च

थ्यजानक सुगबुगाहश्ट देश्ख

थ्यक ि कगले सभ एक होइए

मुदा,

ओ थ्याकथ्यि

कखनो जाश्चाक तँ कखनो िमकि

माला थ्यन्हबैए।

कखनो झाश्चाक ूिन तँ

कखनो मृदंगक।

अपन िनक िूश्चामे सभ अंि भेल बौओइए

थ्यक ि नै फुराइए।

## के मैथ्यिल?

जहानक परम सत्य

जेकरा अंगेश्चाया युश्चाभसिल सचि कहै िथ्यि-

"सुर ज पूबमे उगैए।"

जौ बेर-बेर आश्चत्यसँ पूिल जाएत

तँ की हएत...?

ओहो भऽ जेताह भक्

की देखबए चाहै छथि

संसारक लोक...

की हम कतहुँसँ पसिँ थमुख छी?

पत्यक्के पमाण की?

थकअए देतीह वैदेही बेर-बेर अग्नि परीक्षा।

दशानन जौ सीयासँ

कथतथि सम्पर्कक पयास

भत्सभुत हएब शापित छि

भगवानोके बूझल छलन्हि

तखन रघुवर थकअए लेलन्हि

सीताक अग्नि परीक्षा?

मिथिलाक बेटी कतए गेलीह...

दोख केकर?

राजमिविा कतहुँबोधि

भथगर पिछ लोकक अथशास

जकरा लेल सुखसँ थमुख भेलथि रघुवर

ओकरे आँखिमे नोर नै...

तँए, दूर नै भगाउ

बेर-बेर थकअए कहै छी

"हमहूँ मैथिल"

कखनो तँ अपन मोनसँ पुछू

"अहा मैथिल, आकि हम मैथिल?"

फूलबाबूके भेटलन्हि पुरस्कार

वयनाक छिने हथियार

मुदा, हुनक नेना-भुटका

मैथिलीसँ अनभुआर...

फूलबा मैथिलीक नै अछि

साहित्यकार।

मुदा हाथिमे भाषाक पतवार

छिने घुमि रहल अपन खेत-पथार

डोका-काकोर बीछि ओ

भैटक लाबा थुरबा कऽ

उफनैत सोचैत जरा रहल अछि

अथिलामे बैसल.....

मुदा,

पश रहिये गेल

के मैथिल?

## बाढ़ि

थ्यदा भेल मंगला पूभर

कान्हपर टँगने अश्चि साइश्चकल बालुपर।

कहुना कऽ लश्चाचेलक

लटपटाइत पहुँचल

ािरक करिमे।

श्चानु पाश्चाक अश्चि ािर

चक-चक करैत अश्चि बालु चार कात।

नाउ नै बालु देश्चा भेलै

मंगलाके ाि होश एलै

अपन ूचि जेबीपर भरोस भेलै

आब टपैमे कोनो नै हएत बाि

पहुँचबे करब सरायगढ़क पाठशाला।

मुदा,

मंगला लसश्चक गेल घाटपर

नजश्च दौगौलक अपन कोनो लाटपर।

जेबीमे देने हाि

तकैए चार  कात।

सोिए,

आब की करबै हौ बाप

ई तँ लेबे करतै घाटी।

जेना लगैए एकरा उठल ि आँतुी।

सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ

नै देबै तँ देत ई रेबाल।

सहए भेल मंगला घूलल गेल

पत्थि मे मुल्क गेल।

## कविता

हम नै बिसरब

अपन सनातन आ संस्कार।

नै बिसरक चाही अहुँके अपन आचार

दोस बनब आइक फरियाद-बेहाल

आइक करब खाली हाल-चाल।

तैयार भऽ गेल अछि सबालक महाल।

अहा नै बुझै छिऐ

बनि जाउ फरियाद।

अहा कर कि बियाज

पाछा राखू चाहि याद।

यौ दोस अहा आनू अपन होश

कए लिअ स्वीकार

हे यौ फरियाद।

दुनिया गुस्सा भरल

श्वयाद सुश्रा पिल।

फाट बीचमे आश्व ूिश्रा पिल।

हट, हट, हट नै तँ घसक

फाट करए उदोस।

दुनू अपन ठाम बेहोश।

मुदा,

तैयार भेल सोर-पोर

कल्याण लेि नै जोर

अपन फाटले ताबरतोि।

## खास

खास जगहक खास आदमी

खास श्वनगीमे खास बात।

देशक नाओंपर भऽ रहल अश्वि ई खास।

मुदा,

जखने देश एक पश्ववार

सभके चाही रोजगार।

खुशी चाही सबहक घर-दार

आश्वक ईहोमे करबै बेपार?

गुजश्व गेल मध्यकाल आ भश्वक्तकाल।

मुदा

पा ि मुँहे लुढ़कल ्थकएक जाइ ि ी यौ महराज?

## फंदा

जखने करब नखरा

सभ कहबे करत हमर दऽ ्थइअ बखरा

जँ अहा रहब शातु्थ्यात

भेटत अपन सभ परु्थ्युला।

करब अहा कल्याणक काज

सभके हेतै अपने-आपपर लाज।

लाज ्थआखबैत अ्थि काज

आ मुँहो मो ि त अ्थि हठात्

भऽ जाइत अ्थि केनादन

ि ऽ लैत अ्थि अमती काटसन।

## डेग

गामक गाम भेल वाम

जखन ओ केल्थ्आ एलान

ि ि ह आब अल्पाजोलाम।

गाढ़ ्थआनमे डू्थ्ब जा दोसरे साझ

मुदा ऐ लेल करए प ि तह एक काम।

आपसमे बैस श्लोणाए करह आम

करह पश्लाजा खा सप्पत

तोश्रि देब, ाश्रि देब

देहेजक ताम-झाम।

करब मा आवश्यक खचा किलयाण।

बहुतो कएलश्चा स्वीकार।

त्लनका श्लारपर बेटीक त्लआह ाश्लह सवार

वएह आदमी बेटा त्लआहमे

भऽ जाइ ाश्रि वाम!

कहू,

केना टुटत दहेजपा केर ताम-झाम?

पश आगा आश्ल केलक सबहक मा जाम

भऽ गेल गोलबन्द श्लका गाम

पुन: भेल सप्पत-सप्तान।

अपना सभ ा बुश्रिजीश्र सभ पणाम

चलत अपने सबहक गो ाम

मुदा, चलए प ति अपनो एकचाश्लापर

कम-सँ-कम भेल गोलबन्द गामपर।

ाए ाग सभ भऽ एकठाम

त्लका त्लदन मात ाा ई काम।

बादमे दे ा गे गरीब-धनीक बीा

ठाढ भेि बड़का ािम्ह।

देिख सकै ी पिलसो गाम।

समस्या तँ अिछ भेि भेि बाम

आब कोन करब काम।

ऐ िि लेल िार आ दृष्टकोि बीि

रिए पड़त गुनए पड़त देिए पड़त

तािन हएत सवकल्याि

गप्प देिासँ िित नै काम

लेल िार कऽ उठए पड़त

समाजके िीन्हए पड़त।

समस्याके देिए पड़त

यथाथक जानए पड़त।

तेकर बाद

सवकल्यािसँ सरोकार जोड़ए पड़त।

बेवहािरक रप आ िािल धड़ए पड़त।

गप आ काजक बीिक िदहा भरए पड़त

तािन होएत समस्या भराम।

## बुझैक बाट

जञ्जना चलैक बाट होइ ि

तखना तँ बुझैयोक बाट छि।

जेहेन जे बाट चलै छि

तेहने घाट पहुँचै छि।

कियो पहुँचए घाट सरोवर

कियो पहुँचए कमला घाट।

कियो पहुँचए मरैत परलाही

तँ कियो पहुँचए सिमरिया घाट।

जेहेन जे घाट पहुँचैत

तेहने जल से पेबो करैत।

जेहेन जल जे पानि पबैत

से तेहने ने पीबो करैत।

गुण अवगुण तँ पानि बुझैए

तत्-खनात तँ प्यास बुझबैए।

## कनीटा फूक्का

कनीटा फूक्का बजा गेल

पढ़ुआकाका लग आइ।

पढ़ुआकाका बूझि गेलाह

टोकि कऽ आगूमे फेकि देलाह।

सरमे-भरमे किछु नै बजलौ

आगू माहे देश्चब नै सकलौ।

सोचैत-सोचैत सोश्चब नै सकलौ

अपन गलती बूझ्झ नै पेलौ।

नीक बेजाए बीच रहि ौ सभ श्चदन

आगूक मतलब बूझ्झ नै पेलौ।

## पोखश्च उ ाहि

सोलो सालसँ गश्चदयाएल पोखश्च

उ ाहिए लेल तरसैए।

करमी-केचलीसँ भश्चयाएल पोखश्च

कुहश्च-कुहश्च कहैए।

युग-युगसँ दुश्चदश्चनाया माश्च

मुदा बाट पकि लिक

सहे-सहे पश्चन-पश्चन

घाटक मुदा बना देलक।

नै रहल कोनो आश श्चानगीक

आ ने रहल कोनो मनोरि

हारल मन बाश्चन ने पबैए

बात अपन कोनो सा ाकि

की कहब केकरा कहब

अपन बेि सभ बे ाएल।

देखत के केकरा यौ भैया

बीख पीब सभ अछि बनल अबखाह।

## घाम

घाम चुबा-चुबा कऽ

तमैत अछि कोलाक कोला

लगबैत अछि फसिल

ियिआ श्चलसँ।

बाड़-रौदी बीच सदि न

किसानक हृदैमे होइत अछि

ियकि गदमिगोल।

अपनो खाएब आ दोसरोके खुआएब

यएह तँ छनक अछि मनोकार।

मुदा

ऐ मनोकारके किको नै दैत अछि।

सभ अपन-अपन सरोकार

कागजपर पुड़बैत अछि।

ि नाइत नहर

पाि सँ भोथाइत अछि।

आँखि फाड़-फाड़ सभ देि त अछि

किु किको ने िजाइत अछि।

# ठूठ बास

बगुला बश्चाते ठुश्चयाए लगलै

हश्चअर-घनगर बँसश्चटी।

बास बना-बना बसए लगलै

उजा बगुला सबहक पश्चायाएल ाि।

कोनो अश्चि ठूठ भेल रोग-श्चयाश्चिसँ

आ कोनो ठूठ ि बाश्च़ बेटीसँ।

समूह ाश्चि-ाश्चि कोनो

ठूठ भो अपन करनीसँ।

जे कश्चयो ाि लै हश्चयाएल बाा

सुखल अिा आइ ओ

सील बनल पा ल अिा।

चीा-चीा कऽ

जरना बना-बना ओकरा

जरने जोग कहैत अिा।

तँए श्चक ओकर गुण देह अकारा

नै!

मुरदो बश्चा हँसैत ि।

रश्चम र प पाश्च-पाश्च

रश्मि संग

हँसि-हँसि जरै अछि।

## लति त लती

हरिअर-कोमल तती करैलु

आँखि मासि-मासि कहै ि।

अि ते और दे आकलुैए पाि

तड़ि-तिथि कऽ कहै ि।

ऊपरे-ऊपर एना दबतै

जनु भममे पलि ि लै।

लती बूझि लतिए देलकै।

संगी कष्ट-कष्ट संग ि ऽ ि ऽ

ाित केलकै भीतरे-भीतर।

जइ सेवा लेल जन्म भेलै

सेकि कहा पासि पेलौ

ई गप ओ

बुझि कि बाद।

स्मनगी अकारि बना-बना कऽ

मृत्युक बाट अपने ि लिक।

## बौआएल बटोही

त्वनु ओर-ि कि बाट बुझने
ओर-ि थ्वनु बुझने बौआइत रही।
आगू-पाि देथ्व-देथ्व बटोही
मने-मन पचताइत रही।
हमरे सन ईहो बटोही
हराएल बाट बढ़ए चाहैए।
सबहक एके उदेस अथ्रि
सुखसँ थ्मनगी थ्मबए चाहैए।
बाट-बाट सबहक थ्ान-थ्ान
जे जा-जा एकठाम थ्मलैत।
एकबटी, दुबटीसँ बथ्ढ़-बथ्ढ़
पचबटी जा-कऽ फँसैत।
जइ पचबटीपर पहुँच कऽ
रावण हरलथ्ि सीताके।
बह चारी र प बना सथ्म-थ्म
भथ्मत बनौलथ्ि सीताके।

## फकुआक रोटी

भादबक पूथ्ामीक इजोत

बदरीहन बादल चमक्क उठल।

ि ने भक्क भलस्क थ्कअए नै

भीतर-बाहर ज्योत्स्ना पहुँचेलक।

सालक तँ सभ शुभ लक्ष्ण

माघेक बखा कराओल स्नान।

चढ़ते फागुन सजबए लगल

फूलसँ लद्द गेल आम।

फूले नै फि ि भेल तक्कना

आशा-अशी चैत-बैशास बीतल।

चढ़ते जेठ श्यानुर श्यागार कऽ

भक्ष-भक्ष रस रसाल बनल।

जेठ-अखारक सुख-भोग सभटा

सुाउनेमे सक्किया गेल।

भादवक झटकी केना कऽ कटतै

भकुआक रोटी आश भेल।

## पंच परमेशर

भगवती पूजामे

पचमेि पसाद चढ़ै ि।

खाजा-लरडू, जीलेबी-बतासा

बुझायो अछि पचमेि कहबै ि।

जखना पाच धारसँ अबैत बाट

पचबटी कहबै ि।

तखना पाचो मि्र अछि कऽ

पचमेि सेहो कहबै ि।

पाच नदीक बेग अछि जेना

पशान्त सागर कहबै ि

तखना ने पाचो धचारिरा

पंच परमेशर कहबै ि।

पंच पमेशर बास करए

सुख-दुखक मेल-मलाप करए

पाचोक सुख-दुख पाचो बूझि

परमात्मा परमेशर नाओं िरबए।

## गाए

मंचामृतक समुर

गाएके कहल जाइ ि।

सभ धकि् रखतो बेचारी

पशु बझा धनगी जीबै ि।

अपन अजादी ध्यायाध-ध्यायाध

जंगल ि‍श्चि संग पकि‍ ि‍।

अपन देह गला-गला

सेवा िमि‍बूझै ि‍।

दूि अमृत

अमृत ि‍ी दश्चयो।

घी जान कहबै ि‍।

आषब-अश्चष्ट बश्च-बश्च

जीवन दान गोत करै ि‍।

आंगन-घर पश्चि करैले

गोबर श्चनगी दान करै ि‍।

अपन फला-फल पबैले

सभ श्चकि लुटबै ि‍।

## तुलसी

पंचामृत जश्चना बनै ि‍

मचमेबो तँ तश्चना होइ ि‍।

पाचो गुणसँ भिल-पुिल

पंचागम कहबै ि‍।

पात चढ़ै ि‍ देव सीर ऊपर

पूश्च गंि अकास उि‍ ि‍।

शश्चत्तवदश्चि बीआ बश्च कऽ

जीवन दान करै ि।

डाट-चाम अक्ष-अक्ष

गाि रप िि ि।

अपन थ्यानगी हरैत-भरैत

दोसरोक जीवन भरै ि।

सीरक तँ अजीब रप ि

तर-ऊपर थ्यानगी ि ि ि।

अपन कलाकारी देखा-देखा

नाओं कहा बदलै ि।

## काि फि

काि फिक ठेकान कते

जते काि देि ि, मात ततेक।

काि मात्लक मूलामजलहना

द्याि मात कहबैए।

तलहना तँ फूिसँ बनि फि

त्सरिर मात कहबैए।

आ वएह त्सरिर आशा बालह-बालह

रद-बसात सहैए।

पलहने त्सरिरसँ ति चि बनैए

फिक रप तेकर बाद धड़ैए।

मुदा ऐ दुलायाक लबसबासे कतेक

तीचिसँ आगूओ बढत।

ि म्हा-ि म्हा रंग िऽकऽ तीटकत

पाकि रसगर फि बनत।

काि फि जका दुलायो ि ि ि

हँसैत-कनैत संग बढै ि।

# लघु कथ्वता

## हँसैत लहास

लहास माने मुइल

मुइल माने लहास।

ई के नै बुझत हठात्।

गुम-सुम भेल ि ल जँए ओ

बुझाइत ि ल लहास तँए ओ

मुदा,

आब ओ बाजत

बजैत-बजैत हँसत

अहाक कृष्णपर

बनल संस्कृश्चापर।

## पकाश

जानक पकाश

जाइत अश्चि ओतए तक

जतए श्चकयो नै जा सकत हठात्।

मुदा,

जानो भऽ जाइत अश्चि गुलाम

साकृत्यायन पि ि श्चि मोन घराम।

## अश्चालह

आश्चा-पाश्चाके

मनक माइनके

अजीब बात अश्चि।

श्चा ि दुश्मन देवता

तीनू माश्चा लोक

ि ि ति अश्चि ि बता।

सफ्त खाइ काल देवता

लोकक घर जि बैकाल श्चाता।

## एकक मीत

दोसरक हृदए करैत थ्वदीणि

अपनाके साश्वत करैत अथ्वि वएह

तीनूमे बँचल अथ्वि जएह।

बारहे-बारह घंटा दुनूक ि

राश्वा

श्वदन।

आगूमे अ ि ल ि

उदय

अस्त।

राश्वाक अंत उदयसँ होइए

भोरक अस्तसँ...

अस्त-व्यस्त हम

नै बुझब तँ के बुझा देत?

## ददश्वक ि रे

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरके

सुनैले नै ि थ्वि श्वकयो तैयार।

जइमे माि ओ माि गाओल जाइत अछि

संस्कृताक गीत।

कयो नै बनए चाहैत िछि मीत

करए जे पतिआ हुनक ददसँ पीआ।

## सुि र

भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे

जइमे काजर सन कारी राआ

नोमे बुझाइत

अही कहु यौ भाय

तखन शीशामे कुेना आएत

ओकर ाि कुेना देि ाएत?

## चारक फाट

अहाक गप

अपन मन

दुनू लैए।

दुनू अछि चौचंग

खोथ्म रहल अथ्रि वसंत

मुदा

बसंतक थ्थ्रि‍के

संग नै राखए चाहैए

ओ असगर कुाइये की लेत

मने-मन थ्थ्रांता करै ि ी हम।

## पि ाइन

गामक मुँहि थ्थ्र

जंगल बनल अथ्रि।

आइ ि थ्थ्र

गौआँ बौआइत अथ्रि।

पीचे-पीच

सि के-सि क।

काते-कात

कथ्थ्रायाएल अथ्रि।

बजारे-बजार

बौराएल अथ्रि।

## तत्म्र जान

बसंत आएल

गाम जाएब

आब एतए

रश्च नै पएब

बसंतेक खोजमे तँ

ि ी बौआएल।

## ि ौ ि श्व

भुरकीसँ भार बश्च

बील बोहश्च ि श्व

बश्च-बश्च असंतोष।

ि ौ ि श्व बश्च ि ु ि ुआ रहल अश्वि।

## मंगल

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला

चार कात नजश्च दौगा-दौगा

हृदैके केने अश्वि ि ीर।

नै गेल ओइ भीि।

देखब भागम-भागक होि

अपनाके केलक एकोर।

## बुढ़ारीमे

बजैत रहलौ हरदम।

केलौ ने एको ि न।

सुनैत-सुनैत मनमन्द

सुनबैमे होइत ि ी बुलंद।

आब की करब

मन अछि चौचंग।

जुलागी चाह करैए

कमकि बाट देखबैए।

## हाइकू/टनका

आप्त-व्याप्त ि

भुखमरी आइयो

अनठबै िी

देख्ख देख्ख हमही

आँख्ख अँख्खअबै िी।

समस्या आप्त

सोलहनी सजल

साह्त्यकार

लेखे पुरान ि आप्त

केना एतै यिाि।

तोरा पएरे

हम नै जेबो आब

ध्कएक तँ तूँ

भेले लापिबाह

चऽल कोश्क़क चाश्म।

अहाक आँख्व

चपेश्व लैत अश्वि

हमर हृदै

औनाए लगैत ि ी

चार  भुवन हम।

दीन-हीनले

नाटक करैत ि ी

दया देखा कऽ

दया-सँ-मुाया बीच

हमही फसल ि ी।

राश्राक अंत

उदयसँ होइए

दीनक अंत

अस्त होइए

दुनूके भेद कऽ कऽ

अजस ि ैत ि ी।

पग पगहा

बाट-बटोही घाट

ढाठ बनैए

कमिआ अकमिनै

जे बूझि चलैए।

जीवनक रस

कालचक ओझल

केने आएल

दिन-रातिक भेद

तखन तँ हएत।

हथिअर लती

आँखि मारि-मारि कऽ

कहै ि आबो

फल दिहुन हम

रहल रहब आबो।

सातम तल

िरती सजल िै

पातालपर

अकासो सात खण्ड

मतदिेव लोक िै।

बाट-बटोही

बाटे-बाट बौआइ िै

हँसी-खेल कऽ

सभ साझू पहर

ठेकयाए चाहैए।

बीआ अकुर

बढ़ैत बनल गाि

पौरष पाबि

बनाओल जुलागी

सकहया िरतीमे

बनौलक जुलागी।

देखि तुलसी

अनन्त सरोवर

उमड़ि झील

हुलसि-हुलसि कऽ

नाचि-नाचि गबैए।

अ ि सभ्म कऽ

अनन्त कमल बीच

पेम पसारि

अमृत सजबैए

सेज-सजा कऽ ि ती।

बखाक बून

ि रसँ आसमान ि रा

ि र-ि रा कऽ

अपना गसाये ओ

चलए चाहैत ि ै।

अकास बीच

स्वग-निरकक ि

संसार आप्त

रश्म बश्म संसार

भागक बनल आश।

ताश्म कोश्वि कऽ

परती-परात बीच

भोगक चास

बश्मा-बश्मा भेल ि

ऊँचका डीह-बास।

साश्च-साश्च कऽ

सहे-सहे बनल

हुश्वी सदृश

एका-एकी मेटए

हँसैत खनदान।

श्वारश्म र प

श्चाखर सौन्दयकि

देश्चव श्चाञ्चया

आश्चा जगबैए ओ

अपन सजबैए।

पेमीक र प

जमुनामे सौरभ

पाश्च पकाश

चश्च़-चश्च़ कऽ आश्च

सभके ओ देखैए।

कहू केहेन

श्चाश्चिला जेहेन ि

दसो श्चशाक

िरती नभ बीच

श्चकसान-बोश्चाहार?

रंग-त्वरंगी

मने हेराएल ि

दृष्टि रिती

आत्मिक-भौतिक ओ

दैवी रूप बनल।

आगत देखि

तीनूक तकरार

तत्व कहैत

किनकन चालि चलैत

परखि-परखि जीबू।

हारि-जीतक

अजीब ऐ सृष्टिक

मन ने माने

जोग-भोग विरति

विपरीत चलए।

सोचि-विचारि

नाहि चलि बाटके

जोगाते चास

चञ्चल-ससश्च चलू

लाट बना संगमे।

श्वरोमे उश्चि

दोगे-साश्चहये पा

मातृभूश्चसँ

पुरषत्ता गमा कऽ

बौआ रहल अश्चि।

फूल जश्चना

सभतश्च फूला कऽ

गंा बँटैि

संग कए कऽ बसात

नभ बीचाि ित।

नदी गोश्चाऐ

कमल केर फूल

रँग बदलै

रौद लगलापर

उज्जरो भऽ जाइत।

बोआहाअन

केर सोआतक ि

सकिपर

देल अलकतिा

नै ि कुेकरो पता।

फूस घरक

िपाािपर ठाठ

तीन आसक

खढ़, खपिा, चार

एसबेस्टस आब।

चाकक एक

हाि परहक दू

माइट साआ कऽ

खपिा बनैत ि

िपुआ आ नश्चया।

दुनू श्चला कऽ

ठाठपर पि ि

रौद बखासँ

रचि‍ करै ि घर

तैमे लोक रहैए।

रौद वसात

शीतलहरी िश्च

गरमी जाि

वसंत-सँ-वहार

श्चथ‍ि लाक इयार।

जाि मासमे

शीतलहरी िश्च

अबै-जाइए

कनकनी होइ ि

िरिरी ि ि ि।

हश्वअरका

डग-डगीसँ भश्व

जाइत अश्चि।

करगर रौदसँ

रोहश्वा सभ साल।

तोरा पएरे

हम नै जेबो आब

श्वकएक तँ तूँ

भेले लापरवाह

चऽल कोश्वक़ चाश्वा।

अहाक आँश्वव

चपेट लैत अश्चि

हमर हृदै

औनाए लगैत ि ी

चार भूवन हम।

बैग बजैए

टरटिररिटैत

घोघ फलका कऽ

उश्कि-उश्कि कऽ

तछिप-तछिप कऽ।

अगम पाश्च

जीवक अजीविका

उहापोहसँ

बनल अश्छि अधि

अपान आन भेल।

कदम फूल

सभरँगा रँगसँ

शोभित छि

झाँकि रहैत छि

समए समैपर।

श्वन-राश्वाक

बीच संसार अश्वि

श्वचार बीच

मेघौन आप्त िक

उगास व्याप्त िक।

खने मेघौन

खने उगास भऽ भऽ

चलैत-चश्व

कारी घटा बश्वा कऽ

बुन-बुन सागर।

अकास मागि

ठनका आ पारि

नश्वा-श्वाच्चा

श्वकनि श्वि श्वरश्व

पश्वचए दइए।

चश्क़ अखार

श्वन-राश्च सुगंि

महमहबए

पश्चिते फुहारसँ

चार कात अम्बार।

भीर-कुभीर

श्चिश्चियबए कीर

सदश्च संग

ससरए समीर

राग-श्वरागक।

श्वशाल केि

रंग-रंगक फूल

फूलाएल ि

आँश्वि श्चनु आन्हर

देश्वश्चहार लोक।

गािक बीच

हजारो वृक आप्त

सबुर गाि

मेवा फिेत िक

नजिरक कमाल।

खेल खेलक

कालक बनाओल

खेले िपछाि

िदन-राित चिल कऽ

मजाये बदलैए।

िरती संगी

संग िमल हँसए

मातृभूिमके

सेवा कऽ जगबैए

जगेआहार मािे।

आिन पजिर

तिथि िटपटा

िरती फािर

ज्योित पबैले जीव

थ्आकलए लगैत।

गाि-सँ-फूल

थ्आरथ्ा सजबैए

शथ्क्तक संग

थ्ानगीक परीक्ष

सािक सजबैए।

माघ मासक

राथ्ा सतपहरा

दशनि पाथ्ब

सहन थ्आरथ्ा कऽ

राथ्ा-थ्दन हँसए।

अदुत खेल

थ्ािता बनाओल

आँथ्ख-थ्माचौनी

राथ्ा थ्दन बदथ्ा

थ्दन राथ्ा बनैए।

वसन्त राग

नव सूत जेबर

भरैत कहए

सख्खन थ्मानगी

परखथ्मा चलए।

समए संग

गथ्मा-मथ्मा चथ्मते

गह-नक्ति

दोहरी बाट बथ्मा

अन्हार इजोतक।

तमाशा बथ्मा

कंगाल बनल ि

सपना बीच

सपनाए रहि

थ्मशाहीन देशक।

खुशी खुशीक

दुथ्माया बनल ि

ि या-पुताक

देख्व-देख्व नचैत

कनिी बीच भेद।

लुती श्रीटख्क

ठौहरीक ििि

कश्वया ि्आँ

जीव-जन्तु पिाइ

िरिजसँ सहैत।

शुीतल नोर

झहश्री-झहश्री कऽ

कहैए सुना

मनक ताप बीच

पटबैत रहबै।

रत्नारक िै

पसरल वनमे

ििि-ि्आँ

अि् कर आइते

पिाइ िै जीव।

वेदनक वाण

योगश्ववयोग बीच

लहलहाइत

हफैत हवा बीच

नयन नीर ज्योश्ना।

कोमल कली

लहलहाइए तब

शीतल पाश्व

ि◌ंगार सजबैत

जुआनी पश्वते ओ।

गुण ि◌रम

देश्व पि◌ए तब

म◌ुर पेमी

कमक्षि संग भाव

अनैए जब तब।

हँश्व गाश्व कऽ

जगत जननीके

सेवा करैए

राश्व-श्वन आश्वसँ

श्वश्वि लाक वीर।

वंशक वृक

लतश्व-पसश्व कऽ

श्वशाल बश्व

कोसी-कमला बीच

बश्वदान करैए।

बाते-बातमे

झगाैए ताश्व कऽ

नइ रहैि

कल्याणक माइन

रावणक सखाके।

सृजए श्वात

सौहादक्ि बाट ओ

जननी पेमी

बूझ्न-बूझ्न ममिओ

नूतन घाट दुगक्ि।

लइते जन्म

ि रतीपर आश्व

अकास बीच

चकक चका जाश्व

नूतन बाट बना।

ि री अनेक

दुगसिेहो अनेक

शक्ति-सँ-शक्ति

सश्व-सश्व बनैि

बटोही पार ओर।

सुख-संतोष

सरोवर बनैए

र प करम

सश्च लीला करैए

बनल सत् कमि

ठूठ अपन

करनीसँ भेि ि

बास सभटा

उजरा बगुिक

फेरमे पल्ड़-पल्ड़।

दूध अमृत

आषब-अलष्ट भऽ

जीवन दान

करैत एि गाए

पशु बला त्नबैए।

प र ष पात्व

रोकए नै ककरो

बाट-घाट ओ

ल्सरल्क-ल्सरल्क कऽ

लात नूतन घाट।

एक वनमे

ितल्ड़ पसल्त कऽ

पसल्त ल्वश

काल्ट-िल्ट कऽ बाट

बाटि झगड़ैए।

कतेक अल्पि

कल्पना यथाथमे

अन्तार बूल्झ

िगा रहि नहा

घामसँ स्नायं हम।

अि न अहा

रंग-रंगक फूि

सदृश बला

बनि फूि जका

आप्त-व्याप्त ि ी अहा।

हमर पाि

थर-थर कपैए

बला िहाश

ि पिािप ठाढ भऽ

देिि रहि अिि।

बबाजी बीि

पसरि जलहना

सेवा धरम

समाज सेवी बीि

गरीब-गरीब ि।

पाला सकिी

त्मानगी अकारथ

बला-बला कऽ

बाट धेिी अपने

भीतर घात भेि।

जरना बला

सीि बनि िक

रत्नम-सँ-रत्नम

हँत्स-हँत्स जरै ि

मुदो बला हँसै ि।

हमरा पाि

धेने रहैत अिि

हरेक िन

उठैत-बैसैत ओ

किनो नै िड़ैए।

मेघ लटकै

पकाश धीिमयाइ

पकृित नाचै।

मेघ बादल

दुनू चलै सािल

पहािी धिस।

इन्र कमल

होइत अिध फूल

उज्जर ि प।

ि ल कमल
गाएक घंटी सन
होइत अछि।

सोभित दान
महादान होइि
जीवन लेल।

हल्अर आ
पीअर लाली दुनू
का ि-पाकि

कनैल फूल
पतामे नुकाएल
रहैत अछि।

एतुका स्वाद
पि इन करैए
मनुक्खे जका।

अंडी ाहिश्ब

दैत अश्चि राहश्चा

कोश्चाकन्हामे।

उजजर मेघ

श्वकरी बश्चा-बश्चा

जेना चलैए।

केराक वीर

अपन वीरताके

घोकचौअने।

मोर-मोरनी

वादलक सह पाश्ब

नाचै लगैत

गुफाक गुंज

शेत वादलक सह

अनुगूंश्चत।

रँगल कोसा

ि नेअबैत संग
केरा घौकिे।

चम्पा-चमेली
रोहक्षाक नक्रि
कड़क रौद।

मर आ बीआ
रोहक्षा आम दुनू
उमझै पकै।

क्षाकखर रौद
बालुक जहाजके
तेजी अनैत।

सुरेब क्षासो
ऋृगवैक्षक सन
कठमकठ।

पहार पार
उतरवाक्ष कात
क्षकि ु अवश्‍य।

पाि र उगै।

पाश्च सटकै ि क

मेघ लटकै।

गोल-मोल ि

ि प्-ि प् चान ि

दाग लागल।

सुला बैसल

सोच्च रहल अ श्च

पाि लोक ले।

सुला बैसल

ि श्चन्तामे डूबल

दीन-हीन ले।

परहेज आ

संयमसँ भेटैि

पैघ श्चानगी।

झुठ बाजब

पाप होइत अछि

स्वयं िश्चि नै।

एकटा चान

सातटा देखाइत

मोश्नायाश्वन।

कनैलक बीआ

घुच्ची बना खेलैत

बचि ा-बेदर ।

श्कष्कार मास

लताम लुबि ल

त्वरे-पीअर।

मा कि चटनी

जो ी मर आ रोटी

चहटगर।

दुगा पूजाक

मतलब होइ

शक्तिपूजा।

अन्हार गुप्प

हाथि-हाथि ने सुझै

हवा बहैत।

राजनेतासँ

नीक मानल ऐ

काजनेता।

गेदा पातक

घा हाथि-पएरक

रससँ छुटै।

खेती-वाड़ीके

किसान लचारीके

कोन महत।

सबल साच

दुबलि भेल झुठ

दुनूमे फाट।

खेरही दाश्च

नेबो रस श्चलल

हृदै श्चश्चलल।

चौमास-बाि

दाश्च खेसारी

गाए-बरदले।

पीपर पात

श्चहरन आप्त ि

तैयो डोलैत।

शान्त हवासँ

अन्हर-श्चहाश्च क

आगम होइ।

हश्चअरसँ

तेज भऽ जाइत ि

आँश्चक ज्योश्च।

वनमे बास

वनफूलक आस

अमलतास।

ऊँच-नीचक

भेद झपने जाइ

हश्वअरी यौ।

श्वाचुका सभ

चौरस अ-हटल

ऊँचका हश्व।

पकृश्वा शश्वन

लाल रंग पाश्व कऽ

हँसैत अबै।

पकृश्वा हँसै

लाल रंग पाश्व

सुिर लेल।

बीचक मेिा

हथ्अर उज्जर

दूरी व्याप्त िै।

सघन डाव्ा

एको रती नै बैर

ञाच्चा-ऊपर।

ञाच्चा-ऊपर

समतल सघन

देखू एतए।

कोनो नै आश

िश्ि पोरोक साग

सरध्द्ध्याह।

केरा गािमे

घौरक संग कोसा
खुश ि ी पूरा।

केरा गाि मे
घौरक संग कोसा
लटकल ि ै।

भारी रश्चतो
बीर खा-खा थि कहुँ
अँथ्वयाएल।

नीचा ऊपर
सक्म ि ै सभठाॅ
चाही टूस्सेटा।

राश्चा थ्वनमे
कोनो नै अथ्रि हीन
नाप-जोखमे।

गुण-दोषसँ

एक-दोसर बीच

अबैए फाट।

श्चन पतीक

बश्चा जानक अश्चि

भेल महान।

राश्चा होइए

अजानक पतीक

लोक कहैए।

श्चनके दुन्नी

राश्चा चौगुन्नी सेहो

लोके कहैए।

श्राणए श्वाअ

नीक संग अ िला

होइते अश्वि।

गमी मासमे

श्वकसानक आशमे

ठढ़ी अबैए।

आश ि िए

बाट पतझारक

सभक सोझा।

उपाए श्वानु

सहसहबइए

मनुख जन्म।

पूश्वापिकृत

करए चाहैत ि

मनुख तन।

मनक बाद्धः

आद्ध-आद्ध तोि ए

तन-सँ-तन।

आद्ध-िूकिे

टुटलाहा मुँहके

ध्कयो ने जौि ।

काद्धाक मास

डंका बजा कऽ

तोद्ध दइए।

भद्ध ध्द्न ओ

झाट-बखा सजैए

रोपद्धा ि ि ।

अगहनमे

कटनी करैए ओ

धान ि तमे।

ओसा बना कऽ

मोट-मह्घ्ुिबुेरा कऽ

उसनै कुटै।

खाञ्चस भरे

सोञ्च-सोञ्च कऽ डरे

मञ्चंका बेचै।

िनेु-िनाक

उञ्च जाए दनाक

भेल ञ्चआहत ि।

## दूटा गजि-

1

एतऽ माि चकराइए चलू घूल्म चली
तनो-सँ-तन ुिबाइए चलू घूल्म चली

ञ्चकयो कुेकरो नञ्च देखैए ऐ समाजमे
मोने मन झगाि इए चलू घूल्म चली

गोर मौगी गौरबे आन्हर भेञ्च अि ल

कथ्वया बाट बुझाइए चलू घूला चली

कोन उपाए लगाबी तौँ ले ऐ फानीके
टूथ्व मन जे कनाइए चलू घूला चली

करब नै कोनो आस ऐ समाजसँ हम
उमेशो जुं घुथ्वयाइए चलू घूला चली

2

कल्याणक बाट नै पकितै लगैए ई

भाश्वि-भाश्वि सभके झपटतै लगैए ई

अकालोमे काल बश्वा बौएलक सभके

श्वकि बाजी तँ और मखितै लगैए ई

कोनो आंगुर कटने अपने होइ घा

भेद नै करबै तँ झगितै लगैए ई

मुँह सीब कऽ रहब तँ रश्व सकैत ि

लोक गीत जँ गेबै चहकतै लगैए ई

िश्वि देने टूश्व जाएत समाज अपन

उमेश जोितै तँ चहकतै लगैए ई।

उमेश पासवान (१९८४- ), थताक नाओं- स्व. खखन पासवान, माता ि मती अमेथका देवी, गाम- औरहा, पंचायत- उतरी बनगामा, भाया- नरश्या, ि ना- लौकही, थला- म ि बनी।

वथाि रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस ि -मन, थयासल, हत्या, फाटल भथष्य, गेलहे घर ि ि , पलटन लाल, बाथ्, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअथया, नेताजी नमस्कार, सतथ्या, अजानी, दथदर, पोथया, मैना, मा ि क तीमन, कवा ि , बरखाक मौसम, अथलाक नारी, रगा ि , नेता, मनक बसवास, केहेन थ ि ना, अपनेके की कही, फुथ-फटका, हथकत, पावन भूथ, एना नै कर, भुतहा मो ि , हमरो लेने चलू, अ ि ह, गारल मुदा, हाल-चाल, प ि ई केहेन, गृहस् ि सबहक हाल, अथला महान, हेराएल, दुभर, थडम्ना, थयादी बॉट, पुथ्, थशता, अजानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, शथामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथक, हमहूँ कनै ि ि , एना थकएक, थथया, डगर, रमल ि ि , संत, बन्हन, संघषजिारी रखब, भरदुथया, गवहा संकाथ, थकमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच् ि र रानी, हथजन, हम ि ि मैथली, बौकी, चौके-चौक,ठेस, पेटक खाथर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, जानक नव ज्योथ, केहेन चाथ, बसन्त योदा)

आमु ि

जनकल्या ि क ि ि
पथ ि अथक पयास ि ि वथ रस।
देशमे बढ ि भष्टा ि रक
वैथक इ ि ज ि ि वथ रस।
जनाथकारक ि ि
बु ि द आुवाज ि ि वथ रस।
दथ ि त उपेथत वगक
पथ ि न ि ि वथ रस।
ऊँ ि -नी ि क भेद-भाव
र ि थहारक ऊपर

शक्षक पहार ि ी वर्तीस रस।
साहित्य-पुरष जगदीश पसाद मण ि,
गजेन्द्र ठाकुर जीक
अत्सरवाद ि ी वर्तीस रस।
साहित्य सेवामे जुटि व्यक्ति
उमेश मण ि क पेर ि क
पत्ताम ि ी वर्तीस रस।
मैथ्य ि-मथ्य ि क आ अपन मातृभाषाक
गु ि गा ि ि ी वर्तीस रस।

कागज

सादा कागज ि ी हम
सादगी समाएि अछि हमरामे
मुदा तिनो हम गुिम बनि ि ी
सतरंगी रंगक कि मके
पूिमअत्याकार जमने अछि हमरा ऊपर
घेरि रही ि ी हम
कि मक मोइिसँ
आबद भऽ देबािसँ
घेरि रहै ि ी हम
शान्तििीत लाशि मनसँ
मुदा तिनो असंख्य
शब्द िीतसँ दबि रहै ि ी हम
त्याग-बलिदान दऽ कऽ हम अपन
एक देशभक्त सन समाज केर
सेवामे िगि रहै ि ी हम
सादा कागज ि ी हम
सादगी समाएि अछि हमरामे।

समाज

िुशामदी आ ने बेगारी करब हम
अपन कमक्क बाटपर सत्दि न िि ब हम
मेहनत्ला कऽ अपन भाग्यक
िि पत्ति ल्कत्त भऽ कऽ
सत्दि न आगू बढब हम
पुरान अवधारिाके समाज
अि नो धत्त पत्लाऔने अत्ि
ऊँ ि-नीि जात्ला-पात्ला
अनुसारे काम-काजके
ओकरा बदि ब हम
दाब-िाप, दहेज-अत्वाका, अन्धात्वशासक
जािके तोड़ब हम
मृत्युसैय्या जे धेएने अत्ि
दत्ि तक अत्याकार
ओकर
समानता हेतु ि ड़ब हम।

रावि-कंश

मूर्तिसा भऽ िसि भूलापर
गुमानक ढेरपर
जा कऽ बैसि िि ओ
तृषि पत्तासोधक
आत्मामे जरैत त्सयाह सन
िगैत िि ओ त्बनु परबाह केने
सुकममत्तायात्ता कऽ
अधमक्क बाटपर
िििि िि ओ
त्मतबाक िि
पुरे त्वशके
िैस भऽ कऽ
आधुत्ताक परमाि हथयारक संग
त्वनाशक िका बजेने िि ओ
िूनसँ रँत्ता कऽ अपन हाथ
अमेत्वकाक वर्लमरेि सेन्टरसँ
शुरआत केने िि ओ
त्कि िनक िि
थड़ा उठि ओ मानव हृदए
सोिमे पत्ड़ गेि
की रावि-कंश अिन धत्व
नै मारि गेि जना
हू-ब-हू कमसँ
एके सािमे गढि सन िगै िि ओ
पापक घैि
जिन भरि एक त्दन
मूर्तिसा भऽ िसि भूलापर।

भरि घैि

शीति पालासँ भरि घैि
आइ ि ल़ड रहि अछि
अपन असलाित्म बि ैबाक ि ि
बि ने अछि अपन ि ढक
मोल्सिकमे पड़ि अछि
सूजक ुकरि
गुस्सा रहि अछि ओ
उम्मस भरि गमीपर
जे बेर-बेर
पयास केि िक बादो
भेद नै पाब रहि अछि
शीति पालासँ भरि घैि क
कमजोर पल़ड गेि सूजक ुकरि
ुकएक तँ
पाला सहने अछि
सभ दुि -ददके
ि ल़ड कऽ पहाड़सँ
ि ल्स कऽ झरनासँ
बहैत नदीक धारामे
लाशि -अलवि ि मनसँ
पहुँि ि अछि आइ
घैि तक।

कि जुग

त्वाशक टुकड़ीके
त्वि न बनाके
हम सुतैत िी
अपन करेजमे काटके नुका
रिैत िी हम
गरदलामे भष्टाािरक मािा
पत्नरने रहैत िी हम
रोजे करबै िी नव-नव घटना
िूट-हत्या, िोरी-िकैती
तिनो िैनसँ रहै िी
जात्ना धमममजहब केर
नाओंपर
पैघ-पैघ फसाद हम करबै िी
जँ अहूसँ मन नै भड़ैए हमरा तँ
जंगिक त्वनास परमािु हत्थयार
आतंकवाद-उगवादसँ
दंगा-फसाद करबै िी
िहु-िहुआन कऽ
पकृत्नाक-सृत्थटके
हम हँसैत रहै िी
तिनो मनुक्ि कऽ रहि अत्नि
त्वकासक बात
की त्नन्हिो अपने हम के िी
कि जुग।

उमर-अवस्था-मन

कतेक बर्खक बाद
लाि ि स्नेहक पीर
जरमल्ला वैह अि
नोरक संग अत्यार
शाश्वत लड़ा बूझ मन
समस्याक धनधोर बादि मे
ि मकैत बजि ीमे
भेटि आइ पेमक तरंग
देि कऽ ठमकि हमर माथ
सभ दन तकैत रहि ौ अथक बाट
अन्हार लगनगीमे
भेि जानक वहान
तिनो हम पाि रहल गेि ौ
बहुत भऽ गेि देर
समैक सदुपयोग नै कए सकि ौ
ि ुटकारा ि ि कऽ रहि ि ी
ि ाि ो जतन
अंत समैमे
अथी सजाओि जा रहि अि हमर
सभ िल्ह जा रहि ि ी
ि ाि ी हाथे बला फलकर।
संग िल्ह रहि अि
उमर-अवस्था-मन आ शरीर।

ल्वयासि

सोन सन सुरत्नाके
ल्कि नै अत्नि मोि
बाजू हे मैत्थि
अपन मातृभाषामे
मधु सन मीठ बोि
राजा ल्वदेहक ई गाम
ल्सनेहक ल्वयासि ई ल्त थि
जगत-जननी
माता सीताक जन्मभूल्म
एतए माल्टक कि-किमे
अत्नि भरि ल्वदता
स्मगमसन सुशोल्भत
देवीिक सन सुन्दर
अत्नि हमर ल्मत्थि ओहन महान
जतए सुग्गु पढैत ि
वेद-पुराि
मुदा य शीमान्
ल्वाशा ल्वघि कानमे
ढारि जाइत ि
सेहो सुनैत ी
य शीमान्।
अन-धन भरि अत्नि
पोर-पोरमे
कुहकैत त्नीड़ै-िनिमुन
करैए ल्कोि
सोना सन सुरत्नाक
अत्नि नै कोनो मोि।

हत्या

थानापर पड़ि
अछि एगो िश
थाना पुलिस कऽ रहि अछि
हत्याराके पकरैक कोशिश
हत्याक कारि क
िन-लबन रहस्यक तिश
शंकामे पकराएि
एक गोट व्यक्ति
जेकरा नै अछि
िरसँ होसो हवास
पुलिस करलक कऽ बाजि
नै कर तूँ बकवास
सत-सत बाज
के करिकै एकर हत्या
संग-संग रहै िहीं तूँ
दोस िि तोहर िस
कनै िे एकर
बीबी-बचि, माए-बाप
लकअए करिेही
एकर लनगी नाश।

फाटि भविष्य

समय कही रहि अछि
जागू-जागू
अवाज उठाउ
अपान हक ि ि
एि न नै जागब तँ
पलस्थलाक पलि ामि
भोगए परत
अहीक ि ि ि ड़िए पड़त
ि ुन ि ुनामे
भजाएब एक दिन
अबएबि ा समएमे
के देि ि कै अबैबि ा ओ दिन
जीतब तब वाह-वाह
जँ हारब तँ
पलस्थलाक पलि ामि
भोगए पड़त अहीसँ कहै ि ी
सिर उठा कऽ चलबू
फाटि-भविश्य अपान
अपनेसँ लिखबू
अि नो बुझइये ओ अपनेके नवतुलाया
ओकरा संगे आँखि सँ आँखि
मिला कऽ रहू।

गेिहे घर िी

जौ अिार मलनामे
बुढ बरद, पजरामे दरद
पंजाबमे मरद अिल तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
घर िग बिान
िर संग लािन
धनक शान अिल तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
दूध िग ताइ
बचा िग साइ
अपान काज करैमे केिो लाइ तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
िराइबर अनारी
एडस बेमारी
दोकानमे ाइ िी उधारी तँ समझू
हे गेहि घर िी।
मैरीकमे फेि
जवानीमे जेि
बुढाढीमे केिो मेि तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
िहक ुिस्की
िड़कीक मुस्की
दार आ ताकीक फेरीमे परिँ तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
बन्दूकक नाि
मािक िि
सैरक गाि देिल कऽ कुदब तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
भैयारीमे झगरा
घरवािी अिल तगरा
ससूर अिल िबरा तँ समझू
हे गेिहे घर िी।

बाप कंजूस
कोठीमे ािगि मुस
नोकरीमे देी घूस तँ समझू
हे गेिहे घर िी।
कपड़ापर पड़ि मोत्बि
कपारमे फरि ढीि
टॉगमे गरि ल्कि तँ समझू
हे गेिहे घर िी।

पि टन ि ि

केहेन-केहेन मोु ि बि ि दरोगा ऐ थानासँ गेि
तँ आब ए ि पि टन ि ि
ओजन ि ै त्हनकर एकस त्कि ी
ि ि ै ि ै केना मोकनी हाथीक ि ि ि
केहेन-केहेन.....।
केत्तमे त्वने देि ि र भऽ रहि ि ै ि ि री, ि कैती,
अपहरि, हत्या
ि ि ि ी ओ कमबैमे ि गि ि ै मा ि
केहेन-केहेन....।
घूस ि नाइ जेना ि ै त्हनकर पुस्तैनी आदत्त
एतएक जनता त्हनकासँ ि ै तंगहा ि
हम-अहा त्क करबै आब तँ त्वहारमे ठेकेपर
अफसर सभ भऽ रहि ि ै बहा ि
केहेन-केहेन मो ि .....।

बाल्ढ

गड़-गड़ ि ल्ब
रहि ि ि पिमड़
काइट रहि ि
मा ि ी मच ि र
राइत भल्मे ि ल्म गे ि
ि बिरा आ ि गिर
एकेबेर आएि एहेन बाल्ढ
ि नि भल्मे दे ि क सभ ल्क ि उजाल्ड़
नेना-भुटुका सभ ि ि ल्ढढुड़ैत
प ि बा हबा बल्ढ रहि ि ि गुफड़ैत
भगवान ल्कएक मार ि क एहेन माल्व
हाथ जोल्ड़ करै ि ी ल्वनती
आब नै आनब एहेन बाल्ढ।

ि ग ि गपर ि तरा

ि क ि कके
जानसँ मारै ि
दानव सन
करै ि बेबहार
त्कयो भऽ गेि बइमान
त्कयो ि ुर
त्कयो दहेज ि भी
त्कयो ि कू ि ि ार
त्वशास केकरापर
के करत?
अपनो अपानके
ि ऽ ि इ ि जान
मनुि -मनुि के
नै ि ल्हि रहि ए
मनुि ि त्वत
जानवर सन भऽ रहि ए
मानवता आब औना रहि ए
ि गपर ि तरा अत्नि
ओना बुझा रहि ए
देि ू आजुक मनुि
बदि ाव देत्नि ल्लादो कोना सरमा रहि ए।

कपुत

समए संग-संग
सभ त्कि ु बदैि गेि
िगैए किूयगक
िपेटमे सभ त्कि ु पत्ल गेि
माता-त्पता भगवानसँ
बत्ल कऽ होइए तकरो िग त्बसत्ल गेि
वृदावस्थामे अ िन अकेि पत्ल गेि
की कहूँ रत्ल-रत्ल देह त्सहरैए
थर-थर कपैए हाथ
कोना कऽ केकरो िग बाजब
पुत भऽ गेि कपुत
कऽ देने अत्ि कात
भेटि अत्ि पुरान ओिला
आ टूटि िाट
पुसक जारमे
त्कयो हमरो िग आबए
कि नसँ तकै िी बाट।

आशा

मैत्थि ि ी हम
मैत्थि ी हमर भाषा य
जाइत-पैतक दोग रत्नि
त्कअए देि` ि ी
अपने सभ तमासा य
अही सन सोत्नात
बहैए हमरो देहमे
हमरो अत्नि त्कि ु अत्मा ि षा य
जन्म ि`ने ि ी
अपने सभ जका हमहूँ अही धरतीपर
हमरो मनमे अत्नि त्कि ु आशा य
रोज सुत्ला-उत्ल
करै ि ी हम
पावन भूत्ल
त्नात्थ ि क उनत्लाक आशा य
मैत्थि ि ी हम
मैत्थि ी हमर भाषा य ।

गामक ि अलाया

ए.पी.एि
बी.पी.एि
भऽ गेि कलया झुमर
गामक ि अलाया नेता सभ
केना ि ि इिए उ टा ि ि
केकरो ि ल गोटेमे
ि दह कूपन
केकरो ती लयोमे नै तेि
कहैए गामक सभ्य ि क
सोझ औंगरीसँ
घी लाकाि ब बड़ अकी झमेि
गामक ि फंगा सभ
नेतालारीक धमकी दऽ
ि ऽ जाइए जरलकन भल तेि
तीि र ि बैए अनाज
बारह मलना बाइस लकि ि
बाकीके कऽ दइए
ल ि कसँ तरपेसकी सेि
मुँहदुबरा सभ कत पास
तँ कत भऽ जाइए फेि
ए.पी.एि
बी.पी.एि
भऽ गेि कलया झुमर
गामक ि अलाया नेता
केना ि ि ैए उ टा ि ि ।

नेताजी नमस्कार

नेताजी नमस्कार
अपनेके ई जनता सभ
ल्मतेने अछि
पढ़ि ि रबै ि ि ी
अहा गाए-मल्स
मंतीक कुरसीपर बैसेने अछि
कने कर ल्वि ािर
नेताजी नमस्कार
ऐठामक गरीब सभ
ुदल्र ी-पंजाबमे कमा रहि अछि
कोइ बम्बइ तँ कोइ
कि िकतामे ब ़आ रहि अछि
पढि -ल्ि ि ि बेरोजगार सबहक
सल्सरकेट ल्दवार ि ा रहि अछि
अपने ल्कएक नै दइ ि ी रोजगार
कने कर ल्वि ािर
नेताजी नमस्कार
अपने केना बुझब
मैरीकमे फेि ि ी
ि ारी-ि कैती-अपहरि -हत्याक
मामि ािमे जेि सेहो गेि ि ी
सभ ल्कि ुसँ ि ी ल्टायर
ि ाि ी भोटक ि ि करै ि ी माल्
कने कर ल्वि ािर
नेताजी नमस्कार
अस्पताि भऽ भूतबंगि ा
रोि पर भऽ गेि िदहा
साि -साि अबैए बाल्
ल्वकासक रुपैया अपनेक ि ि ि ा
जाइए ि काल्
अपने हेि ीकॉपटरसँ
करै ि ी शैर

कने कर व्यापार
नेताजी नमस्कार
आबो विकासक बात कर
दोसरपर दोष थोपब
गारि मुदा नै उधार
कागजी काम करबासँ
नै सुधरत व्यवहार
कने कर व्यापार
नेताजी नमस्कार।

सतलया

सावन मास ि
ि
रात्ता रहै अनहलया
बि ा र कैक
नाओं नै ि ै त ि
ि
ि धने ि ि सतलया
ढ साबेग
लकड़ी-मक ड़ी
करै ि ि सोर
भुर कुबा कनी उगि ि ि
ि ुह-ि ुलया
करै ि ि लकि ौि
फलचि होएबामे देरी
मुदा ि ि पलि भोर
एके बेर
टुटि बड़का बान्ह
गाम घर बला गेि
कोसी आ बि ान
पालामे रल-रल उठै ि ि ऊफान
तब मनमे सोि ि ै
हे भगवान केना
बँ ि त आब ि ाकक जान
माथपर हाथ दऽ सभ अलि कनैत
कतएसँ आनब
मर आ-धान
भुि सँ लाकि ै ए जान
कएि ि ती
सभ गलि गेि
नै रहि कोनो नामोलनशान।

दलीदर

साम्रत्यक दलीदर
कतेक जुिम करैए हमरापर
लकयो तँ बाजू
लकयो हमरा लदससँ अवाज उठाउ
लीि देने अलि
िवभिा रेिा बालल कऽ एक भागमे
बन कऽ देने अलि सभ रस्ता दार
हरपने अलि ओ हमर हक
जालाक नाओंपर करैए लारस्कार
दुि: हमर ओ केना केना बुझत
केकरासँ कही अपन लदक हाि
वषोसँ देलि रहि िी लनक
यएह रंगतािि
मंगै नै िी लकिु हम लनकासँ हम
बस िाही हमर अलधकार
साम्रत्यक दलीदर
कतेक जुिम करैए हमरापर।

पोल्सया

हम ि जै ि

अहीके

य  कनी अगारी आउ

ि ऽ कऽ उ मोटरी

जे ि ने ि अहा पोल्सया

बराबल कऽ

जइमे बन्हने ि

हमर अत्मकार

हमरा सोझामे ि ि ू

आबो सभ लारह

ओझरा कऽ नै रा ू

माइक बो ि मैत्थ ि भाषा

आबो नै कसू

अप्पन सोल्हनी ब ि रसा

आब नै सुनब हम

अपनेक बन ि-बनाए ि त्ति स्सा

दूधक दात टूल्ल गे ि गे ि अत्ति

जानक इजोतसँ आँत्ति

हमर ि ुत्ति गे ि अत्ति

दऽ ल्वअ हमर त्वस्सा

हम ि जै ि

अहीके

य  कनी अगारी आउ

ि ऽ कऽ उ मोटरी

जे ि ने ि अहा पोल्सया।

मैना

एि एहेन अन्हर-त्वहाल्ड़
जइ ित्वपर िि मैनाक िता
वएह टूल्ट गेि ित्व
ित्वक संगे िता त्वारि
िताभे रहैत बचि संग जोड़ो मरि
पिक झपत्वकते
मैनाक त्वानगी देिकै उजात्वड़
एि एहेन अन्हार-त्वहाल्ड़
जइ ित्वपर िि मैनाक िता
वएह टूल्ट गेि ित्व
कोनमे दुबकि कनै ि मैना
त्वरहक ददमअिन जनै ि मैना
उजरि िता देत्वि
नोर बहा रहि ि मैना
त्वति त्वदन यात्वद कऽ
त्वहरै ि मैना
एि एहेन अन्हर-त्वहाल्ड़
जइ ित्वपर िि मैनाक िता
वएह टूल्ट गेि ित्व
दुिक पहाड़ ओकरेपर िसि
त्वपत्वक साया ओकरेपर पड़ि
आँित्वमे नोर िने मैना एक त्वदन
जगि िड़ा उत्वड़ गेि मैना
एि एहेन अन्हर-त्वहाल्ड़
जइ ित्वपर िि मैनाक िता
वएह टुटि ित्व।

माि क तीमन

हाि ि बेहाि िती बारीक ि ताि
िी अि न ितमे
सौसे देह िगि अि थाि
बाया-पुता सभ
कदबामे कुदै ि
देि कऽ माि क िाि
कोइ पकड़ै ि इि ना
कोइ पकड़ै ि पोठी
बि मे बगुिा ि माि-माि
ओमहर बआ जे उिरै ि
मिहा जन
कोइ करै ि, सासु-ननदक लाना-बना
कोइ गबै ि सोहर-समदौन
िमकी-िबकी भजीके
केना करै ि िुसुर-फुसुर मन
कहै ि हमरा ऐ बआ
पकड़ू ने अहूँ
कऽ देब मरआक रोटी
माि क तीमन
एगो जे दँतटुटी बुिया ि
ओहो कहा ि कम
िािी तमसाइ ि कहै ि
साझे सबहक घरमे हेतै गम-गम-गम।

कवाड़ी

जल्हयासँ केि ौ शादी
गमा देि ौ सभ अजादी
की करब
करै ि ी आब ि ती-बारी
काम नै ि ि त आब
कल्न कऽ नकरी सरकारी
वेतन भेटैए दस मल्हनापर
कतएसँ आनब
घरमे नुन-हरदी
कतएसँ आनब साग-सब्जी-तरकारी
एक ल्दस घरमे बैसि मैि म
जुल्ता फरमबैए
ऑि र करैए जाल्ता ल्दअ
ि कमीक ल्ती ल्सल्सल्टक
ठोररंगा-नहरंगा
पाउण्डस पोि र
ल्कल्मी ल्हरोइन सन साड़ी
सुल्ता पि ताइ ि ी आब
जेबमे एक र पैया नइए
माथ भऽ जाइए भारी
नीक ि ि कुमार ि ि ौ
आब भऽ गेि ौ कवाड़ी
शादी नल्हये कल्लतौ
वा रल्हतौ बाि -हि ि री
ल्क कर आब ल्कि ु नै फुराइए
नै ल्कि ु करने रहि ु ने जाइए
मैि मक संग गृह युद ि री
वा बनी पल्ला पल्लात-पती पुजारी
दोसर गुजारा कोनो नै
भऽ गेि अल्लो ि ि री
दहेज ि ने ि ि ौ
दु-तीन ि ाि

आब पड़ैए भारी
भानस-भात केकरा कहैए
काम बेरमे कलायाके
अंगनामे िला जाइए दीक
कहै िथ- गोइठा-जरना नै गैस िही
नै तँ बल्ढ जाएत बेमारी
करै िी आब िीबारी
काम नै िित आब
कल्व कऽ नोकरी सरकारी
दुि: हमर कहा लकयो बुझैए
जेहने लबगीओ ि
तेहने लसाओ, तेहने थाना पभारी।

बरि ाक म सम

बरि ाक म सम
आत्व गेि
नत्व-नाि ा-पोि ल-झाि ल
पालासँ भत्व गेि
कअए जगह कोसी-कमि ा
भुतही-बि ान नत्वमे
भऽ रहि अ्वि कटान
फेत्व नै कटए कुसहा
बाघ सन बात्वक घटना
तइ ि ि सभ त्वकयो
भऽ जाउ सावधान
हर जगह हर ठाम
कमजोर भऽ रहि ि हर-बान्ह
नत्वक कातमे जौ अ्वि
अपनेक गाम
सभ त्वकयो ऐ बातपर त्वदय त्वायान
पशासनके सूि्वत कर
अपनो बि ू
दोसरोके बि ाउ
एक देश भक्त्त सन कर काम
गाममे नाहक कर इतजाम।
बरि ाक म सम
आत्व गेि ।

लत्थािक नारी

गामक पत्लधान
पहीर हे लत्थािक नारी
पुजी जेष्ठ सभके
करी आदर-सम्मान
गोबरसँ आंगन नीप
साफ-सुथरा करी
साझ-त्लबहान
मन हत्लबस रहैए
तुिसी आंगनमे हिसैत रहैए
करी सहयोग एक-दोसरके
पत्लढ रोज स्मरि करी गीता-पुराि
करी जौ त्लकि सेवन
दही-िड़ासँ कहा त्लकि अत्ति त्लामन
त्लाि कोरक तरआ
पान और मिान
सदा अपनाबी मैत्थािक
ठाठ-बाठ
सुशोत्लभत रिी लत्थािक नाम
गामक पत्लधान
पहीर हे लत्थािक नारी
पुजी जेष्ठ सभके
करी आदर-सम्मान।

रगड़ा

सुकदेवा आ त्नीििरबावािमे
िि रगड़ा
एक त्नदन भेि मारा-त्नपटी
झगड़ा
बात अतेक बत्नढ़ गेि
केस-फ दारीपर ित्नी गेि
गाम-समाजक िक दुनू गोटेके केिक मना
तैयो त्नीििरबावािी ित्नी गेि थाना
एक त्नदस सुकदेवा
िरसँ सुत्नी भऽ गेि परास
त्नहनको त्नकि नै फुराएि
ईहो ित्नी देिक केस करैि
फुिपरास,
जिन टपि भुतही-बिनक पार
तिने िटि त्नहनका गरमीक बोिार
मोनमे आएि त्नहनका होश-हवाश
सोिला जे जाएब जिन थाना
तँ िला जाएत फेरीक फाना
उल्टे घुत्ना कऽ ित्नी आएि घर
त्नसहरै िि तरे-तर
किनो अंगना तँ किनो जाइ िि गामपर
ओमहर त्नीििरबावािके
िक सनकाबै िि
सुकदेवाक करबा दहक भीतर
एहनो कहूँ भेि
पुरि हाथ उठेिक जनानीपर
इ सभ सुत्ना कऽ त्नीििरबावाि
फुत्नी कऽ भऽ गेि तुम्मा
झटसन आवेदन थानामे कऽ देिक जमा
तब त्नहनक मोन भेि संि हमरा
दरोगा कहित्निन ऐ िकीदारके
अत्नी वनगामा पंिायतक सरपंि

हम कहिौ सर सुनू
सरपंि अकी साहुजी नूनू
गामपर दू-िल लदन िूब भेि हंगामा
आवेदन घूमा कऽ िली आएि पंियत भवन वनगामा
दुनू तरफसँ भेि पंिेती
सुिदेबापर भेि जुमाना
तब कहिक सुकदेबा हम िी गरीव-दुिखया
अपने स्वास्थ्य लवभागसँ अपजि िी
य दयानंदजी मुिखया
अपने गिल लीय जुमाना
मुिखया कहि- हाय रे जमाना, हाइ रे जमाना।

नेता

नेता सभ भऽ गेि लयकर
िमिा िअलाया
भऽ गेि एतए लठकेदार
देलि यो केना ििते
ई सुशासनक सरकार
केतमे लवकासक काम नै
ठीकसँ भऽ रहि अलि
लवि पास होइए
करोड़क-करोड़
हजार-हजार
देलि यो कोन बन्दर बाटमे
आइ पड़ि अलि लवहार
ई अलि एतुका नेता जीक कमाि
कत सड़कपर कादो
तँ कत सड़कपर थाि
जोरसँ कर लठनकर जयकार
घूसिोर नेताजी लवन्दावाद-लवन्दावाद
जनता भेि अलि बेहाि
लवकासक रपैया िा कऽ नेता
अफसर भेि अलि मािो-माि
सगरे पसरि अलि भष्टािार
अनलवाज भेि अलि सरकार
ई अलि एतुका नेता जीक कमाि
वर-बर लवगड़ि जाइए लवहारक हाि
केना ििते सुशासनक सरकार
लवतािक बाद केत आ
जनताके भूलि जाइए
मंती बनािक बाद रपैयापर तुलि जाइए
इमान-धममलठनक िलत घलट जाइए
केना कएि जाए ऐठामक नेतापर लवसवास
िािी करैए पत्थरपर लवािन्यास
कहैए आपनेके जनताक पािनहार

नेता सभ भऽ गेि त्वयकर
ि मि ा ि अलाया
भऽ गेि त्ठकेदार
देखि यो केना ि ि तै
ई सुशासनक सरकार।

मनक त्वसवास

भेि अन्हार
िगि जेना
सभ लापता
बहि पिबा
िि हवा
टुटि पता
हृदए क्याकुि
लानिक आश
द ड़ैत-द ड़ैत
भेटि नै कत ठ र
कि नो सफिता
कि नो असफिताक िर
दृढ संकल्प अटुट त्वसवास
त्वनमे आश
िने मनमे त्वसवास
देत्ि रहि िी
सुगम पथ
उत्साहक रथ
एक त्वन जर र पुरा होएत
मनक मनोरथ
ऐ ि
पीबए परैए कोनो घाटक पािन
त्वएक नै उपिए पड़ए िता
भेि अन्हार
िगि जेना
सभ लापता।

केहेन लवधना

तोि ि िला लवधाता
कि जुगमे मेटा रहि मानवता
अपान-अपान लवतक ि ि
मालव कऽ रहि अिछ
परोपकारक नै अता-पता
केहेन लवधना
तोि ि िला लवधाता
आब लवकअए भऽ रहि अिछ
मनुि िलवत लापता
सेवासँ सभ लारलवत
माता-लवता
केहेन लवधना
तोि ि िला लवधाता
लात लवन मनुि-मनुि करैए हत्या
केकरा दोि दी
जेहने गुर तेहने िलवया
असिी-नकिीमे अन्तर की
मालवक मुरत बनि अिछ
भाग्य लवधाता।

अपनेके की कही

समाजक अइना
कही त्‍क फोटोगाफर
पोफेसर कही त्‍क पतकार
कत्‍व कही त्‍क रि‍नाकार
अफसर कही त्‍क बेरोजगार
अत्‍भाभावक कही त्‍क दोकानदार
पढै ि‍ी रोज अपनेक
ती ि‍ि‍ समाि‍र
ि‍ुती जाइए हमर
बुत्‍धाक सभ दार
टक-टकी ि‍गेने रहै ि‍ी पढबाक ि‍ि‍
त्‍हन्‍दुस्‍तानक समाि‍र
सबहक मनके भावैए अपनेक बेवहार
ि‍रे अत्‍ी घुसि‍ोर
कमी भेि‍ भष्‍टाि‍ार
सत्‍दि‍न अत्‍हना ि‍ुमी अहा
सफि‍ताक त्‍वाि‍र-पहाड़
कोन नाम केर सम्‍बोधन करी
अपनेक ि‍ि‍
अि‍रजमे पड़ि‍ अत्‍ी कत्‍व ि‍कीदार।

फुल्स-फटका

हे आब बुझ्अौ
बड़ दम ि म देि बै ि ए
ि कीदार-दफेदारके
आत्ब रहि अति ओ सभ त्कयो
आबए त्दऔ लात्लाश कुमारके
घूस ि इए तरे-तर
ुलादोशके त्मातर
दोषीके बहार
कलायाके ि ऽ कऽ नेपाि
तँ कत्हयो घरपर
ि ाि ी फूल्स फटका
हे आब बुझ्अौ
आत्ब रहि अति ओ सभ त्कयो
तीयूटी कम-सम ि ाि ी ि ुटी
मोन जे गरमाएत ओनीहारके
तँ ि गा देत पुत्रीस ि इनमे तीयूटी
त्क बुझै तीऐ
मुख्तार-मुंशी, दुनू पाटीसँ
करैए कनफुसकी
थानाके ि त्लड दै तीऐ
जे.पी बाबू आर.आर त्सहपर
हे आब बुझ्अयो।

हल्कत

आँखि बंन
दृष्टि गायब
अतै हल्कत अछि
जोर सँ ए
बिड़ा-उचिनक
जे मंगैए दऽ दय
नै देब तँ जानपर मोसीबत अछि
शिक बनि अछि बहुरूपिया
रंग भेषसँ
केकरा चिन्हब मोसल्कि अछि
एतए मनुक रूपमे
शैतान छपि अछि
के की िी नै कनको
माथपर चिढ़ि रहैए
आइ मानवताके
कऽ रहि अछि कल्कित
जे अपान स्वार्थभावमे
डुमि अछि
मनु तन पाबि कऽ
पभूक भजन छोड़ि कऽ
अवहत काममे लागि अछि
आँखि बन
दृष्टि गायब
एतेक हल्कत अछि।

पावन भूमि

बिहारक पावन भूमिमे
सदा बहैत अछि
गंगा, कोसी कमला बलान
एकर धूलिकणमे जलसँ
लागल अछि
एतुका संत ओ विद्वान
विक्रमशिला विश्वविद्यालय
बुद्ध स्तूप नालन्दा पैलेस
अशोकक अछि स्वाभिमान
महा कवि विद्यापति आर्यभट, आर्यावर्त
मंडन जतए छथि महान
एतए अहल्या पुजल जाइत अछि
संतके होइत अछि सत्कार
स्वागतमे भेटैए पान-मखान
भाषा संस्कृति सद्गुन सभके
मनमोहने अछि
कहि संस्कृतिके अनि-पहचान
एतए श्रीराम आएल छथि
बनि कऽ मेहमान
एहिन हम कहा बिसरबै
जे कहि गेल महावीर बुद्ध भगवान
अपन माटि पानिसँ जुड़ल छी हम
अल्लाके जपैत छी
पुजैत छी श्री राम
छठि, ईद मनबैत छी एक संग मिलि कऽ
हिन्दू और मुसलमान
देश हमर हिन्दुस्तान
बिहारक पावन भूमिपर
सदा बहैत अछि
गंगा कोसी कमला बलान।

एना नै कर

बआ र
एना नै कर
सुन हमर बात
त्कदु सोिी जि न
मन रहैए त्वाति
सुि-दुि राि ी कऽ मोनमे
त्बसल कऽ सभ
बात त्बति
बआ र
एना नै कर
सुन हमर बात
अबेर तक नै रह सूति रह
भोरे उत्ठ कऽ कर
माए-बाबुके पिाम
तकरबाद धुम-त्कर टहि
मन रहत ि ि
बआ र
एना नै कर
सुन हमर बात
अपनासँ शेष्ठसँ त्कि त्सि ी
नै बात करी रटि
ि ी-कुदी
पढी-त्ि ी
करी सबहक कहि
बआ र
एना नै कर
सुन हमर बात।

भुतहा मोड़

लात ल्वन होइए
नव-नव घटना
साझ ओ भोर
कोइ होइए घाइ
तँ कोइ होइए ि टीि
थोड़बो थोड़
मल गेि बुि ना तँ
मल गेि सजन-धजि बर
उजल गेि केकरो मागक ल्सनुर
उजल गेि केकरो घर
ल्बहुँसै ि नव कन्या
कनै ि माए-बाबू-भाए-बल्हन
बहबै ि दहो-बहो नोर
ि रि मे बनि ि
हृदए ल्वदारक ई घटना
ि हू ओर
म तक ि राहा बनि अिी
एन.एि भुतहा मोड़।

हमरो िने िि ू

हमरो कलह लदअ य
अपने कतए जा रहि िी
संग हमरो िने िि ू
हमहूँ जाए िहै िी अपनेक संग
अइठाम ऐ दुलायामे
मोन हमरो औना गेि
जेना िगैए हम भऽ गेि ै तंग
सभ ई अपनेक बनाओि ई लधना अि
के अपान के पराया सभ अपने िी
हम आइ बूझ गेि ै सभ लकि ु
भऽ गेि मोह माया हमर भंग
अपनेक अि लकक िी
अन्तयामी िी सभमे िी अंनत रंग
ि ुिल गेि हमर आँिल क भरम
दुलाया ई एकटा नाटक अि
केकरो जीवन तँ केकरो मरि
ई पाटमतँ अलहना िि ैए
हमरो कलह लदअ य
अपने कतए जा रहि िी
संग हमरो िने िि ू।

अथाह

प िक झपकैत हम
सपनाक दुलायामे
बटोही सन हम हेरा गेिौ
जहू दऽ कऽ बाट नै िि
तहू दऽ कऽ हम िलि देिौ
िग-िगपर होइत रहि
िक संगे नोक-झोक
जाइत रहिौ हम बेरोक-टोक
उिल्ट कऽ नै देििौ
के भेि िुश के भेि नाराज
ल्बनु परवाह केने हम िैत रहिौ
ततेक दूर हम िलि गेिौ
हमरो थाह नै िागि
लानक नदीक धारामे
सपनाक नाहपर सवार
हम िैत रहिौ
अल्बरि मोनमे ल्बलान तरहक
ल्बािरक पवाह अबैत रहि
िगमगाए िगिूँ ल्बि अथाहमे
िभ-कोध नै िि हमरा िहमे
प िक झपकैत हम
सपनाक दुलायामे
बटोही सन हम हेरा गेिौ।

## गारि मुदा

श्मशानमे
गारि मुदा िटपटा रहि अछि
त्मातरसँ अंगुरी
अप्पन उठा रहि अछि
कहरैत शरमे बाजि
आजुक मनुि क
अस्तित्व त्क अछि
मानवताक गुि
त्वशास परम्परा सभ त्कि ु त्वसल गेि अछि
आइ मनुि क दुश्मन मनुि बनि अछि
सभ िभ-कोध मोह-माया केर जाि मे
ओझरा गेि अछि
गारि मुदाक पशसँ हमर हृदए कात्व गेछि
एकर उतर हमरा िग नै िि
अनायास हमरो मुँहसँ त्ताकछि गेि
आजुक मनुि क अस्तित्व त्क रत्ह गेि।

हाि-िाि

बड़ बराब ि हाि
ऐठामक नेता ि माि-माि
रोि-सड़कके देखीय तँ
कदबा गजार सन ि थाि
ऐ मुँहझ सा नेता सभके
कोइ नै लकि कहै ि
भल बरसात
साप-लकड़ाक िरसँ
साझे घर घड़ै ि
एक-दोसरमे एकता नै ि
यएह लीऐ काि
बड़का नेता-मंती लीऐ तँ एकर मतिब की
कतेक बेिना बेिए पड़ि ओकरा
केना कऽ गितै राजनीलाक दाली
मासुम जनताक संगे
ि ि ितुर लसआरक िली
आुबए दहक समए ह नेता
लाजि लबिइ सन हेतह हाि
अिन तँ िािी पाइये सुझाइ ि
सगरे लटै ि लकासक िका
मुदा घरक आगामे
साझे बेग कोलकआइ ि
करै ि कोनो काज जेना कििआक िली
बड़ िराप ि हाि
ऐठामक नेता ि माि-माि
रोि-सड़कके देखीय
कदबा गजार सन ि थाि
जलहना इलािया तलहना नेपाि।

पथ ई केहेन

गुज-गुज अनहरियामे
केना हेरा गेल हमर मोन
आब सम्हारब केना
अपन जीवन
नै पानि पड़ैए
मदपान दारु-शराब
नै पानि पड़ैए संगतक किछु
जेम्हर जाइ छी सगरे ओनाइ छी
पथ ई केहेन
जइपर निशीत बून्द पसरल छी
आइ मरनासन भऽ गेल हमर अवस्था
कष्टक मारि लटपटाइ छी
केहेन कठिन ई रस्ता
अपने पथसँ हम ओझराइ छी
दोसरके संदेश की देब
ने जीऐ छी आ ने मरै छी
करनीक फल भोगि रहल छी
अपने सभ करु विचार
नशामुक्त बनु देश ओ संसार।

गृहस्थ सबहक हाि

सभ किसान
भेि अछि परेशान
समएपर बरि ा नै भऽ रहि अछि
केना रोपाएि धान
बिता गेि शावि कि मास
ि ेतमे िाराएि िबआ
सुिख कऽ भऽ रहि अछि नाश।

जोति ि ेतमे गरदा-धूि उड़ि रहि अछि
किसान सभके ऐबेर
ि ेतीसँ आस टूिट रहि अछि
अि न धिल नै भेि पािा
सभ िारहत मेघ िदस देिख रहि अछि
इंद भगवान किएक भऽ गेि नराज नै जािा।

सभ किसान भेि अछि परेसान
समैपर बि ा नै भऽ रहि अछि
केना रोपाएत धान।

पिछि ा साि बािढमे नाश भऽ गेि धान
हम किसान ि ेतीपर ुिाभरि ि ी
ऐबेर सुि ार भऽ गेि किसानक जा रहि अछि जान
सभ किसान भेि अछि परेसान
समैपर बि ा नै भऽ रहि अछि
केना रोपाएत धान।

लत्थ्य़ ि महान

टाटपर
ितरि त्ला किोर पोि त्लमे मि ान
अि ार मासमे
झूत्ल-झूत्ल कऽ त्लकसान रोपैए धान
जगमे सभसँ सुन्दर अत्ल हमर लत्थ्य़ ि धाम
भाषा आ संस्कृत्ल देत्ल ि भाएि शीराम
बारीमे भेटैए पान
घर-घरमे होइए
ि ूड़ा-दहीक जर-जि पान
मैत्थ्य़ि लत्थ्य़ ि महान
हरक पाि ि बगुि ि घुमैए
हरबाहा जोरसँ
बरदके बाबू भैया कत्लह हँकैए
आत्लपर बैसि त्लारहतबा
िु शीसँ दइए मुस्कान।
हमर सभ सुन्दर लत्थ्य़ ि गाम
मैत्थ्य़ि लत्थ्य़ ि महान।

माता-बत्लहन सभ ि ेतमे गबैए सोहर-समद न
घुमरैत मेघ देत्ल कत्लके हत्लस होइए मोन
हरबाहा जि ि ेमे ि ाइए
मर आ रोटीपर सुकि ि नून
बहैए पि बा हवा
पात्ल पड़ैए झम-झम
वषाक झटकसँ टुटैए आसमान
सभसँ सुन्दर हमर मैत्थ्य़ि लत्थ्य़ ि महान।

हेराएि

ल्जनगीक सफरमे
ल्जनगी ल्जनाइ
हम ल्बसल गेिौ
ल्क हमर हेराएि
ल्क हमरा भेटि
संघषक्ष रास्तामे
बाधासँ ि ड़नाइ
हम ल्बसल गेिौ
सही रस्तामे ि ि
काट भरि
पगिि िसँ हम
लाकल्न गेिौ
िल्क गेि सभ ओ बात
सि कहनाइ हम
ल्बसल गेिौ
मानव भऽ मानवके
धममहम नै लाभा सकिौ
जाइत धममऊँि-नीिकि
बंधनमे हम
जकल गेिौ
अि न कमी महसुस होइए
ऐ सभ बातक
ल्क करब आब तँ ल्जनगी
अल्हना गुजल गेि
ल्जनगीक सफरमे
ल्जनगी ल्जनाइ
हम ल्बसल गेिौ।

दुभर

मंहगाइक दानब
आसमान िछ गेि
सभ भाड़
एतए गरीबपर पड़ गेि
िकयो भऽ गेि
अरबपित िकयो भऽ गेि िरबपित
कत गरीब
िकयो नून रोटी
िि मल गेि
िँए ई िवािवाि
एतए अहना जहना तहना
िकयो सासनक गद्दीपर
बैस राज करैए
केकरो बेटा-बेटी
िक्टरी तँ इंिलायिग पढैए
केकरो बेटा-बेटी
घरेिू नोकर बिन घरक काज करैए
रोज मेहनित
मजदुरी कल कऽ
जीवन िबतबैए
गरीबक बेटा
हॉस्पीटिमे र पैया िबनु
इििजक ििार मल गेि
महगाइक दानव
आसमान िछ गेि।

त्वि म्पना

कतेक तीि ब
दलितक बेथा
सि हेश गामक संदेश
कतेक तीि ब
समाजक त्वि म्पना
आँति क नोर सुति गेि
ददमनै होइए कम
के बुझत त्क अति झूठ
त्क अति साि
टकमे त्तक जोत्व रहैए
बुझैए अपनाके बड़का
ि ुद ओ अति त्मातरसँ कारी
दुश्मन बनि तड़का
बड़-बड़ करैए नाि
दलितक पगत्तासँ
जि निक ि गैए त्वनका आुि
कतेक तीि ब
दलितक बेथा
सि हेश गामक संदेश।

ल्दयादी बॉट

अपनल्ह घरमे
हेराएि ि ी हम
भेटैए ल्हस्सा
बरोबल्ल कऽ मुदा बॉटमे
पि ुआएि ि ी हम
ि ड़ए पड़त अि नो
ल्दयादी बॉटक ि ि
नै तँ करत आओर झेि
कऽ रहि अल्ि ओ
ल्दगभल्लत हमरा
दल्ि त अकोप कल्ह कऽ
करने अल्ि
एकात हमरा
ओही एकातसँ
ि ल्ि कर आएि ि ी हम
सहि ी सभ ल्कि ु
सि हिेशक संतान रल्हतौ
जल्हया तक ि ुप रहि ी हम
आइ आँल्ि
फाल्ल कऽ देल्ि रहि अल्ि
ओ हमरा
जब अपन्न ल्हस्साक
बात कऽ रहि ि ी हम
अपनल्ह घरमे
हेराएि ि ी हम।

पुर्णिमा

पुर्णिमाक रात्तामे
ािद केर ुिप ािप
घरतीपर
उतरैत देि ाि
घासपर लारि
ओस केर बुनमे
अप्पन िहरा देलि
ािदके लि िलि ाएि
हँसैत देि ाि
नव यवन
कोमि हसीन सुरत
ािदके पुरा मुि ड़ा देि ाि
घरतीपर पकृत्ताक सृष्टीक
मनमोहन दृश्य देलि
गाि-वृक्क संग
ािदके नि ित देि ाि
ािद कहि क
त्वकि ु बात धीरेसँ बाजू
अप्पन र प-रंग
घन-सम्पत्ताक भाओ नै त ाू
ािदके ािकक ि ि
यएह संदेश लिलि कऽ
जाइत देि ाि
पुर्णिमाक रात्तामे
ािद केर ुिप-ािप...।

लरश्ता

हँसैत-ि ैत
हमर लानगी िए
वसंत ऋृतु जका
जाइत र्लिऐ अिग
मुदा दोस िए पका
भेदभावो नै कोनो
जेना मािमे गाथि
रंग-लबरंगक फूि जका
हुनकर ुिशीमे
हँसैत-िि
दुि:मे कनै िि
संग-संग
ि ैिुँ
नलदक दुनू लकनार जका
दुनू गोटेमे
लमतता ि
सुदामा और कृषि जका
िक देलि कऽ जड़ै ि
धधकि कुिह जका
दोस्तीमे जहर घोल देिक
दूधमे िटाइ जका
दुनू दोसके अिग कऽ देिक
िक अपन रास्ताक लदवार जका
हँसैत ि ैत...।

अजानी

कम फुि त्कि रिमे
फुाइ ि जि न
संग दइ ि पालायो
आँत्ति मुला कऽ
त्कएक बनि ि ी अजानी य
ि ाट तँ ि ाक
कमसँ होइ ि
मुदा हमर त्कएक ि
आइ दुि : भरि कहानी य
देहसँ देह
केना ि ुबाइ ि
त्कएक नै ि ि ए
हमर ि ुअि पाला य
कोन जुि ुमक सजा
हमरा दऽ रहि ि ी
त्कअए बुझै ि ी
हमरा अपमानी य
त्सवन हमर केना
त्बततै भेद-भाव
ऊँि -लाि क
भावना समाजक
मनसँ कत्लया लाटेतै
केहेन अहा ि ी अजानी य ।

कनी देि

हे बिन माता
कनी देि
अहा हमर ओर
आँखि सँ सुि नोर
भुि सँ सुि ठोर
घरमे नै अि
ुकि बॉि
सभ िऽ गेि बालमे
दहा कऽ दकि ओुर
कनैत-कनैत
करेज फटैए
केना अहा देिी हमरा
झकझोड़
दाना-दानाक िि
बिि िी
बआ रहि िी हम िर ओर
बपताक बादि
हमरा ऊपर िगि अि घनघोर
रातक नीन नै होइए
जाल कऽ होइए भोर
हे माता दया कर
नै बनु अहा लाठोुर
अनजानमे जौ
कोनो गिती भेि होएत हमरासँ
तँ माफ करब
हाथ जोड़ िगै िी गोर
हे बिन माता
कनी देि...।

मास्टरक बहाि ी

देखि य-देखि य
भेल़इया-धसान सन भेि
एतए मास्टरक बहाि ी
लकयो नै करैए
एकर रि वाि ी
स्कूि मे नैना-भुटुका
करैए हलि -गुलि
मास्टर साहेब दऽ रहि अखि ठहाका
पढाइ-लीि ाइ
के करबैए
देखि य केना उठबैए
सरकारी टाका
अि ार मासमे बारह बजे
लदन तक ि तमे
कदबा-गजार करैए सर
एक बजे स्कूि अबैए सर
ि नीमे ि गबैए ि ीट
लाकके रि ने अखि ताि पर
मंगनीमे उठबैए नोट
स्कूि मे मैि मोके देखि यो
ओहो कम नै ि थि
ि कमीक लीलस्टक ि गेने मैि म
बॉबकट केश पहरबैए
इतर लीट कऽ केना स्कूि के गमकबैए
पससाँ लाकाइि कऽ अइना
रल-रल मुँह ि लाङहारैए
मोबाइि पर करैए हेलि
समए केना लबतबैए
देखि यो-देखि यो
सरकारी पैसा केना उठबैए
कहबी अखि , जेहने इमाम सहाब
तेहने ढोि लकया

ल्वदाथीक गाल्मयन
भल ल्दन ल्बया-पुतासँ
गाए-महीस िरबबैए
देखि ये-देखि यो
खि िरी िाइ बेरमे
स्कूि केना पठबैए।

फागुनमे

अइहो
वृजगोपा ि
फागुनमे
ि ि ि होि ि
हमरा संगे
तोरा ि ि
संजनी ि ि
म ि न भड़ि थाड़ी
बाट जोहब रहि अछि
राधा-स ि ि केर संग
ई वसंतक ऋृतु मधुमासक म सम
फगुनी हवामे
हम उराएब रंग अबीर
अहा पेम
सुधा केर
रंग बरसैए
हमरा
रंग दहो अपन रंगमे
हमर मानगीक मनोरथ
पुरा करहो
श्यामा अहीबेर
होि िमे
अइहो
वृजगोपा ि
फागुनमे।

श्यामि मोहे

ि जित हम तोरा
ताही ि ि
हेरा गेि हमर
कृषि कन्हैया
बासुरी बजइया
सि ी हे त्वकि ु
बाजत नै तोर
ओनाएि ि ी हम
मृगा कस्तुरी सन
ि जीह देहो
श्यामि मोहे
त्ती ति ुर
सि ी हे त्वकि ु
बाजत नै तोर
वृन्दावन
यमुनातट
पनघटपर कदमुआ पेड़
सुना ि गत
पेम ि ी ि
करत आब के फेर
सि ी हे त्वकि ु
बाजत नै तोर
बड़ा नटि ट
ि ै ि ि त्वि ा
त्ती तिमन त्मतम केर
केस अत्ती
घूंघराएि
मोर मकून्दि सरपे
सि ी हे त्वकि ु
बाजत नै तोर।

जीतक झंि

जरै जाउ
वतन केर दुश्मन
आला सुनगाएि कर
जीत केर झंि
फहराएि कर
मोनमे राि कऽ उमंग
गीत देश भलतक
गाएि कर
ल्हमाि य सन ऊँि
हृदए अि हमर
पेमक फूि लि िाएि कर
अि गाधीक देश ई
गंगा-यमुना पावन नल
दइए संगमक संदेश जतए
लाि क, टैगोर, अम्बेदकर जतए
लर भगत लह
ि न्दशेि र, सुभाष वीर पुत जतए
भेटए संघषक कथा जतए
मातृभूल अपान
भारत माता केर
गुि गाएि कर
जरै जाउ
वतनक दुश्मन
आला सुनगाएि कर ।

युवा

रहैए युवाके
उमंग मोनमे
जौ
पहाड़सँ ि ल्ड़ ि ब हम
संघषक्ष जीवन
अल्हना ि ि तै
जीवनक अंत्ताम
समैमे
त्कि ु कत्ल ि ब हम
जोश जतए कम नै हुअए
युवा के तँ
पत्लत्सथत्ला सात समुद
पार कऽ ि ब हम
हमरा नै रोकू त्कयो
दत्ि तक दरदके
हर संभव कम कऽ ि ब हम
ि ड़ए त्कएक ने पड़ए हमरा
अही दुश्मनक संग
दुश्मनक ि ती ि ि र कऽ
देि ा देब हम
बहुत सतेने अत्ि
हमरा समाजके
भत्ल जीवन
बीि अि ा रामे
पटत्क कऽ देि ा देब हम
ि ुप नै रहू
सभ अफ्पन हकक ि ड़ाइक ि ि
आगू बढ़ू
रहैए युवाके
उमंग मोनमे।

हम युवा

जात्ला-धमम
मजहब केर नामपर
षयिंत रिॅए ल्कयो
हमर देशके
भीतर आत्ब कऽ
आतंकवादक
गाि रोपैए ल्कयो
भारतवासी शेर िी
शेरके मादमे
आत्ब कऽ जगबैए ल्कयो
दुश्मनक थाह नै
ऐ बातक
हम युवा
हर मोड़पर ठार िी
अंत करैि
सत्वि न ऐ दानवक िि तैयार िी
हम िी गोिी, हम िी बार द
हमही िंजर तिवार िी
त्ारंगाक त्ानू रंग
तीर-कमान िी
जौ दोस्तीक िि हाथ बढाएब तँ
हमही फूिक मािा
गिा केर हार िी
संदेश दइ िी शात्ता केर
हमही महात्मा गाधी, ग तम बुदक
अवतार िी
जौ कत्वयो एक बुन
सोलात त्ारि ऐ धरतीपर
तँ हमही वीर भगत त्सह
िन्द्रशेिर आजाद िी
जात्ला-धममओ मजहब केर नाओंपर।

पत्थक

हम पत्थक ि
जीवन केर
जीवन तीअ त्दअ
लाहस्थाथमर पसँ
मनु ि बला कऽ
दोि हमरा ऊपर
नै ािगए कोनो
नै गिती हुअए फेर
हम पत्थक ि
जीवन केर
मनुिक तन भेटि हमरा
मानव धममलाभाएब
मानव सेवा करब
जीवन पयत
ििि िगर
मोहनी मायाक बसमे
नै ओझराएब फेर
हम पत्थक ि
जीवन केर
गाल्ह देिे हम
मन जीतक झंि
अपना मोनमे
अन्तरि समस्या
कल्ठन परीक्ष
त्कएक नै हुअए जीवनमे
पािू उित्ल कऽ
नै देिब फेर
हम पत्थक ि
जीवन केर।

हमहूँ कनै िी

जत्वयासँ
हम अहाके नै
देिख रहि िी
साझ-त्वहान
एक नोर कनै िी।
कतए िख गेि
अहा िल्छ कऽ हमरा
एतए असगर
आगूक दुलाया हम
अन्हारे देि िी।
सभ पुि ए अहाक बारेमे
त्वकयो आुह करैए हे भगवान
केना भऽ गेि
नीक िकके
त्वकयो करैए अहाक बराइ
कहू कतए िख गेि अहा
हमरा िल्छ कऽ आइ
हमहूँ कनै िी
ब ओ कनैए
माइक आँिख सँ
सत्वद िन नोर झहरैए
ज िन त्वक ि
सोि िी अहीक
यात्व अबैए
जत्वयासँ
हम अहाके नै
देिख रहि िी।

एना त्कएक

अि नो ि ि ि

समाजमे

टंगत्मचि ा

टंगत्मचि ीक ि ि

ऊपरसँ नूनू ब आ

त्मातरे-त्मातर

कहैए बकि ि

बषोसँ देत्नि रहि ि ी

हर तरहसँ

दत्नितक उपेक्ष

कएि गेि

कहू त्कएक

मैत्थि ी ि ी हम

त्मात्थि ाविासी ि ी

तइ ि ि?

ऐ तरहक त्माअम

बनत्माहार अपने के

जौ हमरोमे

कमी ि जिै ि ी तँ

अपनो समाजक ि हिरा देि ू

त्कएक नै

हुनको संग

अत्महना कएि गेि

ऐ पश्नक जबाब त्दअ

समाजक जात्ति-पात्तिक

नाओंपर बटत्माहार अहाके

कहू दत्नितके

हर तरहसँ उपेत्क्षत

त्कएक कएि गेि

कात्िि नै बुझू अपनाके

अपने ि ी बकि ि

अि नो ि ि ि

समाजमे
टंगलाचि
टंगलाचीक िि।

ल्मालाया

गे दैया
लालाया
माए गेि
पोिलमे नहाइि
पावला ि ल्मालाया
होइ ि बड़ भारी
तीन ल्दन धल
सहि रहए पड़ै ि
कऽ ि घर-आंगना
साफ सुथरा
िूल-िका नीप पोला ि
देिमे िगत नीमन
आइ बनलहे
मर आक रोटी
माि तीमन
ल्मालाया पावला
सभ लाथिनी करै ि
बाि-बचि
घर-पलवारक
दुि: किश दूर होइ ि
बढै ि उमेर
पोिलमे घेराके पातपर
िर-तेि िढै ि
िुश होइ ि देव लातर भगवान
भोरे सभ िाइ ि
आमक अमोट
िूड़ा-दही जर-जिपान
गे दइया लालाया।

िगर

त्मनगीक
ओइ मोड़पर
हम बैसि िी
जतए देिै िी
हरेक तरहक िके
जे अिग-अिग
िगरपर िैिए
त्कयो ऊपर िढ़ि गेि
त्कयो बीि बाटमे
अटत्क गेि
त्कयो असफिताक िरसँ
पािू रत्ह गेि
शाइद एकर
त्मनगी कहैत िै
हम अिने धत्ल
असमंजसमे पड़ि िी
त्क कर त्कि ु नै फुराइए
तइ िि एतै बैसि िी
बैसि रहब
पिुआ जाएब
हमरो आब एतएसँ
ििए पड़त
कोन िगर ििी
केन त्दशा ििी
अपिन शत्क्त देिि
बाट पकड़ए पड़त
त्मनगीक
ओइ मोड़पर।

रमि ि ी

रामक धूनमे
रमि ि ी हम
संतक सेवामे
जुटि ि ी हम
शात्लाक संदेश
बाटैमे िगि ि ी हम
गाए रक्ा करैक
शपथ िने ि ी हम
वेद पुराि
धममशास्त्र पल्ढ कऽ
अप्ान जीवनमे
उतारबाक कोत्शशमे
िगि ि ी हम
नीज स्ााथमत्यागी केर
िकल्हत काममे
िगि ि ी हम
जइ बाटपर
ि ि महात्मा गाधी
महात्मा बुद वएह
बाटपर ि ि ि ी हम
राम केर धूनमे
रमि ि ी हम।

संत

नल्दमे
भल्सआएि मुदा
शातकीत भऽ कऽ
पालापर पड़ि अली
एकर नै नाओं अली
नै कोनो पता
पालाक रेतक संगे
अनजान पथपर
ि ि अली
कत पालाक रेत
झकझोरइए तँ कत
झारीमे फल्स कऽ
लाकिक पसास करैए
कत नल्दक किरमे
टकरा कऽ िैए
पाला धार संगे
उथि-पुथि होइए
र द-बसात सहैए
उगैए तँ ुमैए
सफरक ऐुकरा कोनो
ठेकान नै
बस पालाक संग िैए
जल्हना संत
भल्कत-भावमे ुमि रहैए
भल्कत मागमर िैए
नल्दमे
भल्सआएि मुदा।

बन्हन

ि ुप धड़कन
त्कि ु कहैत ि ी
ई केहेन अजब सन
त्र्स हमर त्र्दि मे होइत अति
जेना ि गैए
दुि केर नत्र्सँ बाति कऽ हम त्राकि ि ि ी हम
ि ुशीसँ त्रीड़ै जका
उड़ै ि ि ि ाहै ि ी हम
मुदा पएरमे ि ागि अति
ई बेत्रया बन्हन
ओकरा ि ाि ि ि ाहै ि ी हम
एगो भूि भऽ गेि हमरासँ
ओ भूि के भूि मे
ि ुद अपनाके भूति गेि ि ी हम
आब हमर अपनो ि ाह
दोसरके ि गैए आ ि ुदके
ि ाजैि त्राकि ि ि ी हम।

संघषमजारी रिब

समस्या और
बल्ल गेि
सफर अधुरा रल्ल गेि
जीत केर हाल्त
गेिा हम
हरेक कोल्वाश नाकाम भऽ गेि
तिनो अप्पन हसिा
नै हारने िी हम
हर िग संघषमजारी रिब
अनजान अनल्माज
ई समए कतै
तक िजाइए हमरा
ल्वरह केर भीरसँ
मुदा एकर िर नै अिल हमरा
िड़ैत रहब
अप्पन समाजक
अल्याकारक िि
िग हमर काम देिल हँसैए हमरापर
मुदा हम तेकर ल्फल्कर नै केने िी
एहेन जीनगी ल्मनाइसँ
कोन फाइदा जइमे
संघषमनै अिल
एतए सभ अप्पना-अप्पना िि ल्मबैए
जीने तँ ओुकरा
कहि जाइए जे
समाज कल्याािक
िि जबैए
मरािक बादो
सल्दिन हुनकर
कृल्ा ल्मल्वत रहैए
अहू ओ अही िगरपर
हमहूँ िििि िी।

भरदुत्लाया

आइ त्नीऐ सुकराती
गे मुलाया
त्वआरी त्नित्वयामे
कर तुँ तेि एम्हर आ र मंगिा
हुका-बाती ि`ि
ई पावला त्योहार ि`
मेि त्माािप करैक
सभ संग कऽ ि` मेि
पेमसँ रहैमे नै
होइ ि` कोनो परेशानी
दीप जरा
हुका बाती ि`ि
केिह त्वहाने
दइयाक सासुर जहीये
भरदुत्लाया पावला ि`
न्योत त्निहे
देत हाथमे पान-सुपारी
आत्सरवाद त्निहे
देत्निहे हुरा-हूरीक पहिमानी
फटाका-फुटुकीक नै कर झेिि
आइ त्नीऐ सुकराती
गे मुलाया।

गबहा संकात्ता

बड़ अनत्नीत भेि
गृहस्त्त सबहक संग
ऐबेर
ितीमे िगाउ िि
मेहनत्ता-मजदुरी
सभ बात्ढक िपेत्टमे
िल्नी गेि
पावत्ता-त्ताहारमे
सेहन्ता िगि
रत्ढ गेि
आजुक त्वदन गवहासंकात्ता अत्नि
अन-धनक घरमे
कमी देि ि
केना कऽ अहीबेर
ितक आत्ढपर जा कऽ
कहब सेर-बरोबत्र
उिर सन बीट
समाठ सन त्तास
जेम्हर देि ि
िािी िित िसि अत्नि
िर त्वस
पश कऽ रहि अत्नि हमरासँ
ितक आत्ढ आ मेर
ितमे अगबे अत्नि
बाि़ुक ढेर
केना कऽ गुजर िित
उपजा कऽ कास-पटेर
बड़ अनत्नीत भेि
गृहस्त्त सबहक संग
ऐबेर।

ल्कमती भोट

हरेक पाि बि मर
जन पत्लालत्म हम सभ
िनै ि ी
राज्य सभासँ
संसद धल पहुँिबै ि ी
अपन ल्कमती भोट
दऽ कऽ ल्मताबै ि ी
िनवक भार
हम जनता सभ उठाबै ि ी
मुदा जीत गेिक बाद
ई नेता-मंती अपनाके
बुझैए महान
कहू ल्वकासशीि देशक श्रेिीमे रहि
ल्वकल्सत कल्हया बनत ल्हन्दुस्तान
िकतंतक ल्हनका
परबाह नै
देशक ल्वकासक ल्हनका िेह नै
सामंतवादी सन
रिए अपन सोि
मन-मोताल्बक करैए ल्वकासक
रपैया केर ििमि
माननीय ल्हनका केना कही
एक नम्मरक अि्ि
ओ िपिूस बेइमान
कहू ल्वकासशीि देशक श्रेिीमे रहि
ल्वकाल्सत कल्हया बनत ल्हन्दुस्तान
एक ल्दस ल्वश बैकसँ
कजा िऽ रहि अि्ि
दोसर ल्दस धाधिीक रपैया
ल्वदेशमे जमा कऽ रहि अि्ि
देशक कोन तरह
कमजोर बना रहि अि्ि

ि कतंतके कऽ रहि अछि अपमान
कहू लोकतंत्रात देशक शेणीमे रहि
लोकतंत कहया बनत हिन्दुस्तान।

असली-नकली

मोन जौ ि न्हराएत
तखन की करबै
कलियुग अछि कि भऽ सकैत अछि
असली-नकलीमे फकमकोन
की झूठ की साच तकमकोन
सभ एके त्सरहने पड़ल अछि
आइक पलस्थलामे
नीक कही तखनो गेलौ
बेजाए कही तैयो गेलौ
तइ दुआरे हम मुँह िटकेने छी
कखन की भऽ जाएत
से कोनो ठीक नै
सभ लकि देखि कऽ आँखि मूलि िब
मुदा ि प रहब सेहो ठीक नै
समए सभ लदन अहना थोड़े रहतै
हरेक पशनक जबाब जर र भेटतै
मन जौ ि न्हराएत
तखन की करबै।

कोसी

माइहे कतेक
हम कनि ौ-खीजि ौ
कतेक नोर बहेि ौ
सनइ-पटुआ कास-पटेर
अलुआ-मर आ उपजा कऽ
गुजर-बसर हम केि ौ
सहि ौ बड़-बड़ कष्ट
बाढ़मे घर-दार बलहन
ि न-बवेके हम रहि ौ
सोिच-सोिच कऽ
समए बतेि ौ व्यथमनकजुि
कऽ देिखऐ ललथािके दू-भागमे अहा
पूबमे सहरसा-सुप ि
पिच्छममे मधुबनी-दरभंगा
बिमे अगबे बाि ु आ धूि
कहू आब कतेक ि ुप रहब
ऐबेर हम बना देि ौ पुि
रोजी-रोटीक अवसर भेटि
हँसै ि ि जे दुलािया आब हमरा देि त
बालाकक नव-ज्योित जागत
जाएत पढै ि बेटा-बेटी कओि ज-स्कूि
माइहे कतेक
हम कनि ौ-खीजि ौ
कतेक नोर बहेि ौ।

मचि र रानी

सूनसान रातमे
िपिप
नंगे पएर
िग अबैए
भन-भन करैत
िट-नटिटी सुकुमारी
प्यारी-दुिरी
मचि र रानी
िि नोकि
नयन कटि
अति बड़ सयानी
उघार देह देखि कऽ
करैए हमरा संग िड़िनी
किनो गाि-िमैए
किनो िून िसैए
प्यास नै िगैए जेना
कहा लबैए पाला
भल राता जाला कऽ
हम एकरा संगे
राता लबतबै िी
होइए बड़ परेसानी
आब एकरासँ
बिबाक करब उपाइ
रोजे राता कऽ िगाएब मचिरदानी
सूनसान रातमे
िप-िप
नंगे पएर
िग अबैए।

हलजन

लहन्दु मुसलीम
लसा ईसाइ
सभके कहै ि
सभसँ पुि ि
लकएक भेि
दू रंगक मोन
हम दलीत ि
मेहनला-मजदुरी
कए कऽ लबतबै ि
अपन जीवन
तैयो जरैत अलि
िक देलि कऽ
जरै केकरो तन
करै अलि
िुआ-िूतक भेद-भाव
मंलदर पूजाघर
जेबासँ करैत अलि
वंलीत एिनो
एकैसम सदीमे
हलजनक संग
लकएक कऽ रहि ि
अहा सभ अनुलीत
लहन्दू-मुलसम-लसा ईसाइ।

हम ि ी मैत्थि ी

हम ि ी मैत्थि
जे बजै ि ी
वएह त्नि ि ॅ ि ी
जे दे ि ॅ ि ी
वएह कहै ि ी
स्त्रयं दत्नि त ि ी
दत्नि तक दरद जनै ि ी
त्नक ि ु व्यत्क्तक
त्नकरदानीसँ ि त्नकत ि ी
दत्नि त भऽ कऽ ओ
व्यत्क्त अपनो समाजके
त्नबसत्न गेि
अप्पन भाषा-भेष ि ोड़ कऽ
दोसरक रंग-ढंगमे ढत्नि गेि
नाओं मातसँ दत्नि त
कमस्रँ बहुर त्नाया
बत्न गेि
सात्नहत्य जे समाजक
आइना मानि जाइए
ओहूमे अप्पन
नामक ि ात्नर
अप्पन बोि ी-भाषा
तक त्नबसत्न गेि
तइ दुआरे दत्नि तक त्नस्थत्ना
जस-के-तस रत्नह गेि
हम ि ी मैत्थि ।

ब की

माला-िला कऽ ब की
जीवन अपन त्वतबैए
कोइ दइ बाइस भात-रोटी
कोइ दइ फाटि-पुरान वस्त्त
ओइ फाटि वस्त्तसँ
झापने अपन तन
बेइमान भेि अिछ
िकक नजर।
उजरि-पुजरि अिछ ओकर
टुटि घर।
बसि अिछ ओ गामक कातमे
त्वानगीक त्वकत्वकर नै अिछ ओकरा
इजजत्वाक िै िर
पोसने अिछ दुगो सुगर।
जे भागि त्वकरैए
गािछये-गािी-बासे-बास
िरबै ि जाइए
त्वदन-दुपहर।
ऐ दुलायासँ अिछ ओ बेिबर
माला-िला कऽ ब की
जीवन अपन त्वतबैए।

ि के-ि क

समए-साि
बदि ि ि ाकक
सोि बदि
एम्हर पसाशन
भेि अत्ि ब क
त्सरका तारी
गाजा-भागके
आब के पुि ए
देशी-त्वदेशी
इंत्ल श दार भेटैए
ि के-ि क
एक साि मे
दार त्वबलाहार सभ
त्ला ि कऽ ि ग ि कि जोर
साझ-त्वहान-भोुर
सरकारी राजस्वमे
बढत भेि
अही बेर दार सँ
साढे तीन करोड़
पीब कऽ दार जनता मरए
त्दन-दुगुना
राुत्ला ि गुनाक दरसँ
आमदनी बढए
सरकार कहए हमर
ऐमे कोन दोि
समए-शाि
बदि ि ि ाकक।

ठेस

िगि जिन
ठेस जीवनमे
सही िगरपर
िनाइ लसकि
ििै हम
जेकरा बूझै
ििै अपन
सफर केर साथी
आइ दुि परिपर
असिी र प
लहनको देििै हम
िैए परत
अनलालात बाटपर
हमरा असगरे
आइ जाला गेिै हम
कत काट भेटत बाटमे
कत फूि भेटत बाटमे
सभ संगे
सभ लकि
सल्ह कऽ रहनाइ
आइ लसकि गेिै हम
केतने आएत
हमरा ऊपर
लपत्ताक बादि
समस्यासँ िड़नाइ
लसकि गेिै हम
िगि जिन
ठेस जीवनमे।

पेटक िलार

पेटक िलार
जीवन नै भेि
कि नो अलसथर
कलहयो िित मासमे
िड़ैत िह-िह िूसँ
जरैत रदमे
घामसँ तर-बतर
कोदाल पारिौ
बलसाया भात तँ
कलहयो नून-रोटी
िा कऽ रहिौ
कलहयो िुदी फालक कऽ
पाला पीब सुतिौ
बाि-बचाके िलऽ
लदलिी-पंजाबमे
लकसा लिाििौ तँ
लवटीपर बोरा उठेिौ
तैयो कजवारक
ताना-बाना बात कलहनी
सुनिौ ओकर
बेगारी करिौ
िल सेर बोला िि
िकिक िितमे
भल लदन िटिौ
मुँह-पेट बालहह कऽ
अहुमे सँ जोगा कऽ रििौ
बर-बेमारी भेि
बाि-बचाके तँ
कोठी पेहना िलि
घान-िाउर बेििौ
रद-बसातमे जरैत
गरीबीसँ िड़ैत हम

जीवन अप्पन गमेिौ
पेटक िल्लार
जीवन नै भेि।

जगदीश बाबू

हम ि ी सेवक
मैत्थि
जगदीश बाबूक
ि ि
नै हमरा ि ड़ू ली य ि ला
नै देि ल्थ लाशीक ढेि
तैयो
हम ि ी सेवक मैत्थि
जगदीश बाबूक
ि ि
गुर जी ि ल्थन हमर
बडि महान्
साल्हत्यक ि ल्थ पइघ
लदान
मधेश लात्थ ािमे
ल्हनक अि ग पल्ह ािन
जएह बजै ि ल्थ
वहए करै ि ल्थ
वएह ली ि बो करै ि ल्थ
तमोलया ि ग बेरमा अली
ल्हनक गाम
दशम करबाक
मोन होइए हमरा बहुत
मुदा ि ी हम अकेि
तैयो
हम ि ी सेवक मैत्थि
जगदीश बाबूक
ि ि
गामक लानगी
म ाइि गाि क फूि
लात्थ ाक बेटी
जीवन-सघषम़ जीवन-मरि

उत्थान-पतन

पल्ल कऽ हमर उत्साहसँ

बढि मोन

उठेि ि हमहूँ कमि

तीि ि ि कवता

तँए

हम ि ि सेवक

मैत्थि........।

उजरि घर

उजरि घर
तवाहीक मंजर
देखि कऽ हम
वेदनामे डुमि रहै छी
खुला आसमानक नाचा
जानवरसँ बत्तर
रौद-बसातमे
कष्ट सहि कऽ रहै छी
गरजैत मेघ
घनघोर बादर
पाला-बरफक संग बाढ़िमे
दहाइत लाहाश
उजरि घर
लोकक चीतकार
देखि-सुनै छी
गरीबक जिनगी
लोहत्था योद्धा
रेतपर बनि घर जका
अगिन बुझै छी
कष्टक मारि
विपत्तिक आगा हारि छी
जिए छी नै
मरै छी बीचमे
पड़ि कऽ हुकुर-हुकुर करै छी
उजरि घर
तबाहीक मंजर।

जीवनक नैया

जोर भेि
पालाक धार
कोसी-कमि
बिनमे
गे माइ
रह-रह उठै ि
उफान
िरसँ लाकिए
हमर जान
गे माइ
तूही जगक
पािनहार
तोरे करै िी
बेर-बेर गोहाल
गे माइ
हमर जीवनक
नाहक िबैया
तूही िगेबेए
आब पार
गे माइया
माल्हक मुरत
बला कऽ एना लकआ बैसि िी
दुि आब हमरा
सहि नै जाइए
जान कड़ीक
मोि जेना बुझाइए
गे माइ
जोर भेि
पालाक धार।

ि र

हे य केना कहै त्नीऐ
नै ि ै ि र
आुत्कसमे हात्कमक ि र
घरमे घरवाि ीक ि र
देशमे
आतंकवादी-माओवादीक ि र
हे य केना कहै त्नीऐ
नै ि ै ि र
जनताके नेतासँ ि र
बापके बेटासँ ि र
सासुके पुतोहुसँ ि र
त्वजि ी रत्हत
ि ाॅि स्मीकरक ि र
ि ि मे मैि त्कत्कसंगक ि र
र पैयामे जाि ी नोटक ि र
हे य केना कहै त्नीऐ
नै ि ै ि र
गोसाइके भगतासँ ि र
मत्न्दरक ि न्दाके पि णि ासँ ि र
घी ि त्नदब तँ
ि ि ि ासँ ि र
पेम करब तँ धोि ाक ि र
हे य केना कहै त्नीऐ
नै ि ै ि र।

नटीन

झोटा झोट बकि
हेत नल्लाया
तोरा संग अही बेर गे
करब हम ि मि न
अही ि गनमे
एत घरमे स तीन
उ त्दन अबैमे नै ि देरी गे
झोटा झोट बकि
हेत नल्लाया
आठ बजे त्दन धल
सूति रहै ि तूँ
पुर षसँ करबै ि ूली-ि काक काम
केहेन करै ि तूँ अनहेुर गे
झोटा-झोट बकि
हेत नल्लाया
रहै ि घरमे बैसि
करै ि उकटा-पेि ी
नैहरे ि गे तोुरा नीक गे
टोि-टोि घुमि त्करै ि
कामक बेरमे अंगनेमे
ि ला जाइ ि त्दक गे
झोटा-झोट बकि
हेत नल्लाया
बाबू तोहर गामक मुकि या
बेटी तेकर दुि री गे
ससुर-भैसूरके त्दअर सन बुझै ि
माथपर त्कएक नै इि ि साड़ी गे
ओि सन तुँ
बोि बजै ि
केना कही हम तोरा
लत्थ ि क नारी गे
झोटा-झोट बकि

हेत  नल्ललाया।

बताह

गुम-सुम
बैसि रहै ओ
अपन हाथक
िलकर लाहाल कऽ
हँसैए ओ
गुज-गुज अन्हलया
रास्तामे असगरे
घुमि-लकड़ैए ओ
लात गुनगुनाइत अछि तँ
कि नो जोरसँ
गबैए ओ
हुनक भेष-भुसा देखि कऽ
ोिग कहैए हुनका
िलख बताह
सुला कऽ लबिला-लबिला
गाल पढैए ओ
पहिरने फाटि-अंगा-पेट
नम्हर-नम्हर
केश-दाढी
बढेने रहैए ओ
घूल-घूल कऽ
माला-ािला कऽ ाइए ओ
जिन लकयो
दुतकारैए हुनका
बोम फाल्ह कऽ कानैए ओ
लक साि बताह अछि ओ?

जानक नव ज्योत्स्ना

सभ जन
जागि जनि
भेि सबेर
सुि समृद
जानक नव ज्योत्स्ना
दुलाया भलमे परसत
अपन त्वहार
ओ त्वदन अबैमे
नै अक्षि देरी
अत्वातके सहेजैमे
िगगि िी हम
अप्पन बुल्ला-क शि सँ
नव त्वहारके
गढैमे िगगि िी हम
िबि सत्वद िन
सत् आ त्वकासक
िगरपर
भूल्लि कऽ जात्ला-धरम
िएब समाजमे
नव कात्ला
मेटाएब भष्टािार
अत्वाकत्र, देशक त्वारसँ
िआ-ि्तिक भेद-भावके
तब हएत बुदक त्वहार
देि त दुलाया नेक नजलसँ
भेटत सभके समान अत्वाकार
जय त्मात्याि
जय त्वहार।

केहेन ि ल्मि

फुि पिर केना
करी हम भरोषा
त्बनु म समक
त्मि ि ैत अछि ओ
सावन अबैसँ पत्हने
नै जाला कतेक
रंग बद ि ैत अछि ओ
सभ भँवरासँ दोस्ती अछि
त्हनका
सभसँ त्मा ि ैत अछि ओ
अपान कत्ह कऽ
काटसँ घाइि कऽ दैत अछि ओ
भँवरा सभ त्वाकाइत
करैत अछि त्हनकर
त्कएक एहेन ि ल्मि ि ि ैए ओ
कत और जखम
त्दए तँ बरदास कऽ ि ब
मुदा करेजमे काट जका गरैत अछि ओ
नै जाला एहेन ि ल्मि
कतएसँ त्साम्ि कऽ आएि अछि ओ
फुि पिर केना
करी हम भरोष।

वसन्त

आएि वसन्त
नव त्मावन िऽ कऽ
हर पाििमे उमंग भत्र कऽ
गाि-वृक्षमे
नव कनोजत्मक संग
मोजर फूि ुत्माकिैत अत्मि
ितमे गहुम-िसारी
त्मासी-मसुरी
तोरीक फूिसँ
समुचि बाध गमकैत अत्मि
मधुमािी िग ने
सेनुत्मया आमक गािपर िता
देत्मि कऽ ुर्कि िरैत अत्मि
अरहुिक फूि ूित्म कऽ
फुििभी त्मिहुकैत अत्मि
कआ आ कोइििमे
भेि अत्मि कनाइर
कोइिीक बोिी सुत्मा कऽ
अबैए कआ भऽ जाइए मात्म
त्मामरक फड़ देत्मि कऽ
सुगाा पकैक बेर तकैत अत्मि
भेि त्महान जिन
त्मिहू-ुित्मया पेमक मधुर
संदेश परसैत अत्मि
िन काका गबैत अत्मि पाती
देव-त्मतरके जपैत अत्मि
वसंती हवामे स्मगक
आनन्द अबैत अत्मि
जाएि वसंत
नव जीवन िऽ कऽ।

# योद्धा

सत्यक भीड़सँ
लोकनि योद्धा
बन्हने तीर-कमान
मायवी ऐ दुनियामे
देखि रहल अछि
ऊपर-नीचाँ
सोचि रहल अछि
कतए जिनगी कतए ताकब
के भेटत धरम-मार्गपर
निर्विकार नीक इनसान
सगरे पसरल अछि
अत्याचार
मनमे स्वार्थ-द्वेष भड़ल अछि लोकके
केकरासँ पूछब
के कहत के अछि वीर हनुमान
सभ लगौने चन्दन-टीका
पंडित बूझी आकि शैतान
त्रेता-द्वापर युगसँ
अछि चलल धर्म
कते लड़ाइ भेल
गदा-सुदर्शन चक्र-तीर-कमान

कते बनाएब ऐ धरतीके
िहू-िहुआन
ओकना एतए
काला रहि अति
जपानक हीरो-सीमा
भारतक बंगािमे भेि
गैस अग्नीकाणि
सत्तक भीड़सँ
लाकिि योदा।

शिव कुमार झा ‘‘टिल्लू’’, पिताक नाम ेा स्व. काली कान्त झा ‘‘बूच‘‘,माताक नाम ेा स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथि ेा 11-12-1973,शिक्षा ेा स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थान ेा मातृक ेा मालीपुर मोड़तर, जि.-बेगूसराय,मूलगाम ेा गाम + पत्रालय - करियन, जिला समस्तीपुर। संपर्क ेा प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स लि., मेन रोड, बिस्टुपुर, जमशेदपुर। अन्य गतिविधि ेा वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिविधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न|

- क्षणप्रभा (अपन गप,शिक्तुि पद)

<u>अपन गप</u>

‘‘क्षणप्रभा’’क अधिहोइछ बिजरी जेकरा प्रबुद्ध जन तड़ित कहैत छथि। हम कोनो नैसर्गिक कवि नै, कविताक भावना कवितातक रूपे अभिव्यक्त भेल जेकर प्रासंगिकताक निर्णए पाठकगणपर छोड़ैत छी।

हमर कहब मा ईएह जे हमर ई पश्चलुक पयास थीक ऐमे काव्य लकणा ओ व्यंहजनाक अनुपालन भेल वा नै ऐ श्चषयमे हम श्चक ि नै कश्च सकैत ी, मा ईएह कहबाक लेल नीश्च संगत हएत जे जइ भाषाके बाल कालश्चसँ श्चआमे लगा कऽ रखलौ ओइ भाषामे अपन श्चक ि अश्चाक्यश्चक्त पाठकगण लग परश्च रहल ी।

हमर जन्म मातृक मालीपुर मो तिरमे भेल, हाशमीजी ओइ गामक बगलमे श्चाक्क िला, मालीयेपुर गाममे रहै िला, हमर बाबूजी स्व. कालीकान्त झा बूच सँ साश्चत्य सा िनाक कममे बर ड अन्तरंगता भऽ गेल िलश्च, पाश्चवाश्चक सम्बन्ि जका। हमर बाल्यकालक उपनाम "श्चल्लू" श्चनके राखल िलश्च, जखन हम नेना िलौ (४-५ बखक्ि) तँ ओ हमरा कहै िला- "श्चल्लू श्चया राही, पेटमे कराही, आ दौ िऽ हौ श्चपाही"। माए चन्र कला देवी सेहो मैश्चिलीमे श्चक ि पद श्चखने िलीह। बालकाल मातृकमे बीतल, तकर बाद पैतृक गाम उदयनाचायक्ि भूश्च कश्चयनक माश्च-पाश्चमे रश्च आगा बढ़ैत गेलौ। श्चताक कश्चत्यक कारणे महाकश्च आरसी, चन्रभानु श्चह, पवासी, पो. नरेश कुमार श्चकल, पो. श्चदापश्च झा, पो. राम कृपाल चौ िरी राकेशसँ पश्चचय भेल। तकर पश्चणाम थीक ई िट-ीन कृश्च।

ि न्यवादक पा ि श्चि ` गजेन्र ठाकुर आ उमेश मण्डल श्चनकर साश्चध्यमे ई झुझुआन रचना सोझा आएल। संग-संग डॉ. शेफाश्चका वमा, ी जगदीश पसाद मण्डल, ीमती ज्योश्च सुनीत चौ िरी सन पवीण साश्चत्यकार सेहो उत्साहवद नि लेल ि न्यवादक पा ि श्चि।

समर्पण- अपन पिटका कका स्व. नवलकान्त झाक चरण रजमे सादर समर्पित।- शिव कुमार झा "टिल्लू"

ऋतुराज मे विरहिनी

प्रिया कोना कऽ बितते फागुन मास अपार औ,

जीवन भेल पहाड़ि औ ना ..... ।

कोइली कुहकै ठाढ़ि पात

होइत मन मे अघात

एकसरि डूबि रहल छी, अही बिनु हम मझधार औ

जीवन भेल पहाड़ि औ ना ..... ।

भमरक गुंजन लागय तीत,

केहेन निष्ठुर भेलहुँ मीत

कोना कऽ सूझि सकत ई फूटल अन्हार औ,

जीवन भेल पहाड़ि औ ना ..... ।

सखी सभ सम्मुखन अछि कवदाबय,

बाहिरन रोदन लऽ कऽ आबय

बिहुंसल यौवन पसरल मेघ आ अन्धासार औ,

जीवन भेल पहाि औ ना ..... ।

देखिते अबीर गुलालक रंग

विरह बनौलक कलुष उमंग

कहू कोना उठत ई मृत शय्याक कहार औ,

जीवन भेल पहाि औ ना ..... ।

कंतक आवाहन

आजु मुदत मन बालारण केर - कर मंगल गुणगान अय ।

जि उपवन मे सुमन फुलाओल यौवन महमह भान अय ।

िगाधक वेला मे सपनहं

यतम ूलक कपोल हमर ।

अदिान मे हुँकल जना,

सासु मरोि लोल हमर ।

अानव औता आजु सुनल दुरभाष मे अपने कान अय ।

जि ..........

झट उठ देखल िमिमातृ केर,

आनन पमल पुप बनल ।

पूत दशनिक आश मे डूबल,

मंजुल मुसकी पनक्षक रहल,

चलू रम्भा भंडार चढ़ाबू हेता भुखल अहँक परान अय ।

जि ..........

असमंजस मे दुहु भैरवी,

मातृक लोचन सुि भरल ।

वामा हम तऽ नेहक लुती,

तनय अनल पेम िक्षक रहल ।

जननी हृदय िह सँ आकुल स्वाि्ञि हमर जहान अय ।

जि ..........

चरण ि्ञ्ब नाि्क माता केर,

कयलहुँ चटपट स्नान हम ।

कुमकुम केसर जूही चमेली,

कुलदेवी गमगम अनुपम ।

देवकी नन्दन बंसी बजाबथि बोथि - बोथि राखि तान अय

जि ..........

संभथि अहो ननथि नथि अनुजा,

बथि कम कयलहुँ ताप हमर ।

नथि तऽ फथि थिरहक संतापे,

पीथि लेतहुँ कखनहुँ जहर ।

आनव उपहारे मे अही लेल थिज, थिथिवर चान अय

जि ..........

अतृप्त नयन

आकुल पिल थगक्षत नभ क्षद्दश्च तकैत,

िलहुँ रैश्चा केर श्चावाणक पतीक्ष करैत ।

कोना काटव एश्च संतापी जाश्चनी के,

ओ तऽ िलीह हमरे कटैत ।

झकझोश्चि देलक अन्तामिन के

नयनाक पूिल अंश्चाम पश-

अहूँ अश्चना करब की?

पददश्चात कयलक श्चष रश्चत फन के ।

दुहू नैन नोर सँ सरावोश्च,

देलश्चा हमर आत्मा के मडोश्च ।

श्चािल करणामयी भऽ भाव श्चभोर

देखऽ लगलहुँ अवलाक िकैत ज्चार

सुनैत गेलहुँ सुनैत गेलहुँ ।

आर तर हमर क्यि कीण भऽ गेल -

मंच सँ नेपथ्य भअगर लागल

की सोचैत लिहुँ ? वास्तवकता............

चाननक सेज पर पश्चि अिथनी

न्यि, रजत, काचन, भरल..........

मुदा ! सखन खसैत् वेदना केर दानी ?

लि अपूर्ण यौवन अतृप्त नयन

हा ! तात कोना कएल वरन

एक गाही वयसक सुकन्या केर

कंतक वयस पचपन..... ।

गामक चुलबुली मोनास्सा

कुहअ रहथ्स कनक गृह मे -

असहाय तातक देल थपदा के

भोथ्य रहथ्स जोथ्य रहथ्स ।

कोना पार करती लक्ष्मिमन रेखा -

अपन थ्वंहुसल श्वलोर के

कतऽ करतीह पस्फुश्चत

हमरा सँ कयलीह अपन पीि पकट

पाषाणी नर कऽ देलश्चा जीवन श्वकट

बूढ़ कंतक डोश्व गेल आसन

शंकाक अजगर तोश्वि देलक पीश्वा स्तांभ

कठोर आदेश देलश्चा अपन दारा के -

आजुक पित् पर पुरष सँ गप्प

कमिश्च नश्च करब

नश्च तऽ ?

हऽम अचंश्चात सुन श्वाश्वल

कलंश्कत चश्वि लऽ कऽ

ि्श्व गेलहुँ श्चातरंग अपन पुरान पि पर

कोश्च रहल दुहु पग ....

कोन अपरा ि कयलहुँ

हऽम तऽ ि लिहुँ पो ित नोर ।

अतृप्त नयन सँ झहरैत नोर ।

कुर केँ मे राि

नवनीत अहो पतवार बनू एश्व कर स सरोवर जीवन के,

श्वठुरल कदम्ब जमुना ठहरल सखी हँसी उडाओल अपणि के ।

आकाश्वात चहुँ श्वश्वा सुमन तर ,

श्वकल जि चेतन नभ िरती,

जल बुन बनल घन घनन घटा,

िश्वात राि मन अश्वि परती ।

नवनीत...............

सत् असत कमबिीश्व घूश्व रहल,

सभ जश्वातो अहो अनजान बनल,

भेटत की जन संहारे सँ,

अवला श्वात्कार आ नोर भरल ।

नवनीत...............

शाश्वत करती ओ श्चन्द सती,

जश्चाक नाि लुफ्त भू आंचल सँ,

संगश्च कर श्वात वृन्दा - मि्रा,

लेब पाप सभक युद मोचत ज,

नवनीत...............

खोलू रण कमकि डोरा डोश्च,

डुबू पीयूष राि - रस मे,

उताप पेम श्चाल सुनश्वा रहल

नश्च आब ई यौवन अश्चि वश मे

नवनीत...............

म ि ाविणी

म ुप श्चना सुन उपवन रे, म ुि ाविणी आयल ।

कंत श्चनय श्चवश कतऽ रे श्चय 'आरती' हेरायल ।

सुनू श्चाव ि श्चाया स्चागी बश्चा हमरा श्चरहय लहुँ,

संग महादेव नाम देवर के कलंश्चकत कयलहुँ

म ुप ..............

हम कएल कतेक अनुगह रे अहू हमरा वचन देल,

मंजुल श्चालन कतऽ गेल रे, कतय बात कश्चात गेल,

म ुप ..............

हऽम अभागलि मैथिली रे, अपनहि देल घात,

नुपूर खनकि दुाख कातर रे, तोिल दामिनी गात,

मि्प ..............

थिकल मिार सुमि भाव, आनन हँसी सँ उमायिल,

जुमि हहर मिये, अहँक लखन रघुवर संग आओल,

मि्प ..............

बरहमासा

प्रियतम आकुल कुम्हरल दारा मन,

चिहुकि उठल ना ।

मूक चिचिार पुचकारथि कोना ?

दूर दीप सजना ।

जामिनी बनल कंत बिनु बिजन,

तरणी माघ मनाओल कन्दन,

सरस वसन्त क लिखात राथि मे -

हहरै कंगना ।

प्रियतम..................

दादुर ठहकय तृष्णा सरोवर,

अ ि ि र सँ सीझ्त कोबर,

कीर मृदुल सुझ्ा चैतो बीतल,

झ्हल नयना ।

झ्यतम ..............

अहँ सँ झ्ानेहक ि ि कयलहुँ,

पौन आस बैशाख बु ियलहुँ

हृदयक मीन नीर झ्नु व्याकुल -

सुन पलना ।

झ्यतम ..............

जेठक रौदी काझ्ट रहल ि ल,

सूखल कानन झोझ्ट रहल ि ल,

उदधि अकाशे जल सँ भारयत-

लवालव अंगना।

प्रियतम .............

साओन-भादव मौन मनाओल,

तुहिन गात तर आशान आयल,

कातिक - अगहन बहुँसधि -

पूस मागै धि ललना ।

प्रियतम .............

कोप भवन मे कआयो

र सश्च श्चकए सूतश्च ि ी बनबू ने कनेक चाय अय ।

श्चथ ला हम चललहुँ , टाटानगरी सँ आइ अय ।

अहो जौ एना रहब तऽ हम कोना जीअब,

सश्चखन कश्चते - कश्चते श्चय जहर पीअब ।

एना अहो र सब तऽ हम कऽ लेब दोसर सगाइ अय,

श्चथ ला .........................

अहो केर र प देश्चते कामदेवो कानैत थि,

''मृगनयनी'' के ओ उवर्शी मानैत थि ।

श्चहुँसल मादक घुघना लागै लौश्चया श्चरचाइ अय,

श्चथ ला .........................

िगनलाल ज्वेलरी सँ कनक हार लायव,

आजु रैन पूनम के, पाकमि घुमायव ।

हहरल मनक तृष्णा, नञि बनू हरजाइ अय,

श्रीथिला .........................

ऊठू श्रीये, अहो जल्दी नहाबू,

कोप भवन सँ उठि कऽ लऽग मे आबू ।

मंदश्रि मुस्की मार , हऽम अश्वालहुँ अश्रि मलाइ अय,

श्रीथिला .........................

पेयसीक ववलाप

लागै बरखा इन्होर,

मारै बयसक जोर,

ववलनक आशा मे बैसवव -

ि ी आबू ने चकोर ।

बाटे तऽ तवकते तवकये,

नयन सूवव गेलै,

पेयसीक ववलाप पर नवव -

अहँक ध्यान एलै ।

ठनका गजवि माचल शोर,

ववारववत नृत्य मोरनी मोर ।

ववलनक आशा मे वैसवव,-

ि ी आबू ने चकोर ।

बेददी जुवव बऽनू,

मोन टूटि गेलै ।

पावसक शीतलता -

आतप्त भेलै ।

लुप्त भगजोगनी दशदिशि भोर,

लटकल मेघ गगन घनघोर,

धकधक हृदय तोड़ि रहलहुँ ।

हा ! हम्मर मन थाकल चोर ।

लंका

खुरखुर भैया सूट श्वमयौलश्व,

बतही काकीक हाि र माल ।

अि वयश्व चोकटलही भौजी,

बाट पसारश्व पेमाजाल

मैथ्रिली कुहरथ्रि पणक्रिुटी मे,

सूपनिखा बनली रानी ।

नेना पेट कीर थ्रनु आकुल,

मोबाइल नचावथ्रि पटरानी ।

अदाथ्रानी नेंि ी सँ कुथ्यत भऽ

शंखनाद कयलन्हि मामा ।

हस्त ऊक लऽ मामी खेहलथि न्हि,
फूजल मामा केर पैजामा ।
अपन पुतोहु के झोंकि अन लमे,
बनि गेलीह गामक सरपंच ।
भिमाचार्यदिव मंदिर केर,
मुदा हृदय भरल परपंच ।

कतेक घऽर मे साक्षि काष्ठ,
शास्त्र सभ्यता केर आव पानि ।
रक्क धिधि चुटकी मे वैसल,
कोना बोचत अवला केर मान ?
न्यायालय के मुेह नहि देखल,
एिने कुरसी श्वाक्त सद्भाव ।

कुश्चल तंि केर ईह लीला मे

मारल गेलश्चह मूक गरीब ।

मुंडी इनार मे हुरहुर जनमल,

कमीशन लागत दस परसेन्ट ।

नौकरशाह मोटर मे घूमश्च,

आँश्चख गोगलस काश्चन मे सेन्ट ।

सभ काज मे श्चदऔक भएट,

शौच कर वा लघुशंका ।

रामराज्य के श्चबसश्च जाऊ,

आयावर्तआिव सदा लंका ।

राजनीश्चत मे अज - श्चगज केर,

नश्च कोनो अश्च वगश्चभेद ।

अपने पीबथि ताडि़ दार ,

मांडि़ थभाग मद अषेद

राग वसंतक गेल जमाना

सुनू बतानी थकट संगीत ।

डंकल कुरडि़ पाक बनल

आ अपान वाबक पटुआ तीत ।

होरी

हाि अबीर कोरव थ्यचकारी,

भाल पर गदरल चाह उमंग ।

पूरन भैया होरी खेलथ्यि,

नव नौताथ्र साथ्र केर संग ।

कखनहुँ डुबकी लैत अिर मे,

जुटी मे कखनहुँ थ्रलकोर ।

नील, वैजनी लाल गुलाल सँ,

रंगलथ्र चम्पा पोरे - पोर ।

‘थ्रल्लू’ नयन पर अचरज पसरल,

देथ्रि भाता केर बसन्ती वुन ।

एखनहुँ ृिगारक आह भरल मुदा -

आँखि अन्हार कान बहिर सुन ।

हऽम पुलिअहा कोना कऽ कयलहुँ,

मुँह सँ उबडुव मुँहर पबंगि ।

सकल तन अछि बेकार मुदा हम,

धाण शक्ति सँ सूंघल गंधि ।

भौजी लऽ वाढ़नि आ खापड़ि,

झाड़ि देलनि भैया केर अंग ।

कुरता फाटल नयन नोरायल

भूतल खसल होरी के रंग ।

मोडनि जमाना

नुआ ीती भेल बरहर जनमल,
आयल बरमूडा आनी स्कर्ट ।
मुना भैया चुनरी ओढू,
भौजी पहिरलथि जोलही सर्ट ।

काकी मरौत काढ़ने बैसलि,
कका गऽर ि रम केर वाना ।
कदली कथायाक हाि मे वीयर,
आब गेल मोडनि जमाना ।

भरि देवसक गणना जौ करवै,
बहुआयामनक सात वेरि सतमयि ।

भरल सोझ स्वामी आयल छथि,

अइठार वैसला लऽ मुँह मे दतमनि ।

अस्सी दशक मे माय सँ मम्मी

फेर मोम आब भेली मम्मा ।

मायक भ्राता केर नाम की राखब?

मामा छथि बनला झामा ।

अपन नेना सँ वेस छथि प्रियगर,

संकर झबरा चायनीज कुकुर ।

भुटका - नाति के छथि घऽर मे

टोमी संग गेला अंतापुर ।

चरण स्पर्श आशीर्वाद लेलक आब,

छोटो कैचा के भऽगेल वाय ।

भौजी एकसं महिशाला मे

भैया सँ गेलथि मोन अघाय ।

नेना पश्चिमक बोली उगलै ।

मो मैथिली कोना वजतीह दैया ।

बात अंगरेजिया माहि घुसल नहि,

मुदा करै छथि या ! या ! या

थालकोर मखान नीक नहि लागय,

नहि सुस्वादु मकैयक लावा ।

पोपकोनि चाउमीन दथिया लेल,

मोहि थजौने बैसलथि बाबा।

# ऋतुराज

सोहर गाबथि कोइली बहुना,

कीर मधुर धुन बजबथि साज ।

जननी वीणा वादिनी हुलसति,

अवतार लेलथि सदा ऋतुराज ।

गमकति उपवन मधुपक गुंजन,

वर्णक पुष्पक सुन्दर सोहनगर ।

सहकता लवलव शात उदधि धिधि,

मऽहु रसाल मे उमकि मज्जर।

माघक सातम विल इजोरिया,

भेल नवल ऋतु नृप विहार।

अनुआर भरल पायस पूआ सँ,

कुलदेवी साजल उपहार ।

भगजोगानी केर पंचम सुर सुन्ना,

आंगन महमह मुक्त दलान ।

दशोद्धश्चा मलमल गेना फूलल,

सश्वसब बूट भरल खश्वहान ।

रश्च संग सुषमा अश्चिंजल उष्मा,

पात-पात पर पिवा वसात ।

श्चरश्चनी बैसश्च कंत आश मे

वया ताप सँ उपटल गात ।

मातु उमा मन मुश्चत श्चभूश्चत,

सजल नुपूर चरण चमकल ।

श्चावराश्चिक अवाहन भेलै,

नाि कुशेशर िश्चि गमकल ।

संवत जिल आ होली आयल,

अबीर गुलाबी हश्चयर लाल ।

थकआज िथ ी एक बनल िथ,

ढ़ोलक डुगी झोझक ताल ।

िट पैघ केर भेद अटायल,

वृद जुआन संग मे बाल ।

िटकी कअयो ठोर रंगअ आ -

बऽरक भरल पान सँ गाल ।

भैया भाग सुि मे सानल,

थिल पिल िथ माझ ओसार ।

रंगलहुँ हऽम भौजीक चरण के,

थदा बसन्त एअ लोक सँ पार ।

नवतुरिया होरी

बाढ़िक पसाही मे डूबल सगरो मिथिला धाम ।

बागमती करेहक आंत मे, ओझरायल हम्मर गाम ।

भदैया संग रब्बी बूड़ल, अधरात मे फाटल गंग ।

बीतल गेल फागुन मुदा, ऊँच जोतॉस जलमग्न ।

नेना टोली हेरि रहल, सम्मत लेल खर पतवार ।

रामू बाबा सूतल खाट पर, ऊघि खोपड़िक चार ।

पौड़ि नीन जखना फूजल, झमाड़ि कुंभकरण ।

झट सखा ऊठू औ बाबा देखू नभ तरेगन ।

राम लोचन दौड़ल गाछि पढ़ैत बड़ी पोखरिक मोहार ।

बस कपीश नेना भुटका देलक खोपड़ी जारि ।

लाजमा देखि आश्चर्य के कदवा कएल दलान ।

शंभू रंगलक गोबर घोरि सँ टिका पाहुनक कान ।

तीन फुश्चया लाला पैघ खोचाह, हाक्कम पर फेकल रंग ।

फूदन थ्यनुआरक घैल मे, श्मलाओल थ्यनी भंग ।

भश्च कठौत पायस भरल, थ्यवही पूआ केर संग ।

भौजी तन बोरल गुलाल सँ, उमलि मातृ उमंग ।

चैतावर श्चटही तान मे, गावथ्नि टलहा दऽल ।

ि ट ि न गुंजन - सुमन्त, घूमथ्नि भूत बनऽल ।

सा रा रा रा गूंथ्नि रहल लुटकुन जीक ब ि न ।

थ्मयाराम जय गान सँ गमगम मैथ्निल दलान ।

डॉक्टर भैयाक सार पर ढ़ारल कारी मोब्यल ।

देश्चव नेना गण केर होरी गहुमनो घुश्म गेल श्चल ।

चैतावर

आयल चैत म िर रंग पॉचम,

उपवन बुलबुल गावय ना ............ ।

सन - सन पुरबा मलय वसात,

झन - झन देह झनकाबय ना............. ।

कुहकै कुक कोइली बबुर वन,

चहकै अ‍श्च पाट‍श्च म िवन,

फ कै मोर मोर‍श्च लोचन,

फनकै मृगी पद फन - फन,

भन - भन मन भनकावय ना ।

सन - सन.....................

भा‍श्चनी ‍श्चलाय‍श्च गहवर,

व‍श्चना मु‍श्चत ‍श्चय फरफर,

सखी नेह मातथ्न कोहवर

भौजी रेह गावथि सोहर,

कण - कण तन िनकावय ना ।

सन - सन...................

थ्रयतम क्यथ्नित ई आखर,

नोरक थ्मयाही झरझर,

कोमल शय्या भेल खरखर,

सुथ्ख्न देह वक सन पातर

कण - कण पट थ्महरावय ना ।

सन - सन...................

उपटल फागुन केर रस वुन,

हहरल नुपूर स्मर झुन - झुन,

थ्वकल नैन भेल अिर सुन

अथि कोन काता मे अवगुन?

घन - घन घट सनकावय ना ।

सन - सन.....................

वसा एकान्त

लुटकुन जी केर चकचक भाल,

कपोल अनुराया बनल रसाल ।

टीशन चलला लऽ घटही कार,

आश रहल छन्हि सासु आ सार ।

हिहि तन मन भरल उमंग,

गृह घुरलथि सथि माताक संग ।

झटपट शाभर चाह बनावू,

पहने र हे आफजा लावू ।

मम्मी छथि वि जोि थयासथ

भूकखे समस्तीपूर सँ मैसूर आयथि ।

जलखै सेवै दलपूरी क बोर,

मखनी भुजल परोर आ इचना झोर ।

जुआ कर  अकरहथ िवण जमाय,

अहँक सासु तऽ हमरो माय ।

माय हमर आडम्बर िमी,

सनातन पाथका संग षटकमी ।

मथासुन लक्मीनाि बजार गेलथ,

फुलल परोर माि इचना लेलथ ।

देखते भऽरल माि क झोरा,

फुजलथ सासु वन मुेह वोरा ।

पाहुन देलथि न िऽर थनाय,

कोना करव हम नहाय खाय ?

काथि  हमर ि ी वसा एकान्त

मि`न गृह केर सगरो पान्त ।

फेकू माि  सटल तरकारी,

गें्गाजल सँ ि यिब आंगन वारी ।

गैस चढ़ल अन नझ खायब,

बौआ सँ अंगूर सेव मंगायव ।

कार्ितक लेल चाही आमक चेरा,

माथक चूनि आ वॉस चडेÛरा ।

चंगापूरी नीक वनायाॅ केरा,

शुद सुिग गुिा सानल पेरा ।

शाभिाि ई मैसूर नीक गाम,

कतऽ हम ताकू जािान आम?

विकट भेल रहि वहि एकान्त,

एखन चकर हमर जीवन अशान्त ।

लुटकुन मािी मे शोभात अटकल,

भाय वजिन मुेह मुस्की फटकल ।

हम की करव सभ दोष अहा के,

पावथि मास िक एक बजौलहुँ मा के ?

ताकय चललथि कनाटक केर गाम,

हाि चूथ्रि माि गठरी आम ।

सोझे आश्च खाट पर खसलश्रा ।

शाभश्च जोर ठहका हँसलश्रा ।

सुनू थ्रये तार सूखल अथ्रि,

जल थ्रनु हम्मर श्चय थ्रकल अथ्रि ।

एहेन क्याि नश्च हँथ्रस उाबू,

ाि स कंठगत नीर थ्रयाबू ।

अनाचार

थ्यहुंसल थ्यजुकल दुष्यन्तक मन तनय गलि अश्वि िलि मे ।

न्याय - मिभू श्वन्द घेरायल अनाचार केर जाल मे ।

परदारा आ परक रक्य श्वद्य,

अमि कुलोचन हुलक्क रहल ।

राजकोष केर बात की कहू ?

शेत वर्स बीश्व फुदक्क रहल ।

जनतंकि आंचर वसुि पर मुस्की कौरव भाल मे ।

न्याय ........................

उदयन दशनि आव अलौक्कक,

भेल थ्यदेहक कि थ्यलुप्त,

सभजन लागल भौश्वकता मे

बुद अयाची पुंज शुशुप्त,

खर खवास सँ माश्वक श्वि नाचय कैचा केर ताल मे ।

न्याय .......................

काटर लऽ कऽ गृहस्ि मिकेि,

पालन कऽ रहलथ्ा मनुसंतान ।

जानकी माता पातथ्ा सजावथ्ि,

म्ुशाला पैसलथ्ा हनुमान ।

गभकि कन्या भ्रूण हत्या सँ समायथ्ा कालक गाल मे ।

न्याय .......................

जाथ्ा, पंि, भाषा थ्ाभेद ई,

पजातंि के साथ्ि रहल ।

कुथ्ाल राजथ्ाकि चकव्यूह,

अपने अपना के जाथ्ि रहल

देवभूथ्ा के थ्ायौ मुथ्ान फथ्ा गेल दलालक चाल मे ।

न्याय .......................

अश्वानव श्वश्विला ामि

“मा श्वश्विले अश्वानव श्वश्विला ामि ।

अहँक कोर के ाश्वि आव हम,

नश्व जएव दोसर ठााम ।

मा श्वश्विले ..........

वौरयलहुँ सगरो आयाभुवन मे,

कतहु न भेटल चैन ।

अकवक श्वकल श्ववस दुाख भोगलहुँ,

तमस कटै ाल रैन ।

मा श्वश्विले ..........

नवटोल नववोल देखलहुँ नवल चाश्व,

भाउज भावहुक नश्व भान ।

तात पूत एके संग वैसल,

करथि सुरारस पान ।

मा अथिले ..........

मैथिल दीन जनेर फकै िथि,

मुदा देव थतरक मान ।

िट पैघ वीथ्य लक्ष्मन रेखा,

नञ्ज ककरो अपमान ।

मा अथिले ..........

उदयन सँ दशनि सीथ्व वॉटव,

अयाची सँ, आत्म सम्मान ।

भारती मंडन सँ बहम जान लेव,

आरसी यािी सँ स्वाभिमान ।

मा अथिले ..........

उथ्मिथिआक त्याग देथ्वक,

कण-कण भाव थ्वभोर,

वैदेहीक सती िमिसँ उमिल,

कमला मे झिलकोर ।

मा अधिले ..........

गोबिन्द मिपिक सुनव पराती,

खोंइछा क दुनू कान ।

शिव शक्ति के दिा सँ पूजव,

सुनवैत विदापति गान ।

मा अधिले ..........

खोरा चाउर संग भाटा अदौरी,

विआ झालकोर मखान ।

आचमनी शेत वलानक जल सँ,

गलौठी पतैलीक पान ।

मा अधिले ..........

आन िमि सँ रास सोहनगर,

कुलदेवी क गहवर ।

पश्चिमिक त्यागत गीत सँ र श्वागर

अपन वैन सोहर ।

मा शधिले ..........

हे तात

छलथि रहल ि अन्हार जाल मे,

ििथ कत चलि गेलहुँ तात ।

कॉथ रहल ि थि सूर्यमुखी आ,

कुहरथि वृद कनैलक पात ।

टोलक सभटा नेना भुटका,

आश लगौने घूमथि व ािन ।

के देत उदयन ािमक पेिा,

के देत अठगर मगही पान ।

पंडित बाबा खाट पक ािलथि,

ककरा मुख सँ सुनता गान ।

श्यामजी अ ि इनार मे पैसलथि,

आव के कहतथि पैघ अकान ।

आया माक दुआरि सुन अछि,

सत्संगी सभ ओलती मे ठाढ़ ।

भक्ति सागरक िर अवलोकित,

लुप्त गगन मे अहँक कहार ।

अनसोहात ई दैवक लीला,

कोना बनौलहुँ मर्त्य भुवन ?

अजानक ऑगन सँ बाहर,

जन्म मरण जीवन दर्शन ।

करतीह कोना ि ृंगार मेनका,

करतथि के र पक वर्णन ।

देवराज ि थि कोप भवन मे

जल अनु करव कोना तपणि?

मुख मलीन कहियो नहि देखलहुँ,

सुख दुख सँ अहा अलग अदेह ।

अंतिम भीख मगै ि ी बाबू,

दशनि थ्वअौ एक वेथ्व सदेह ।

आत्म उदोिन

अहा अपने पिल ि घोथ्व िि र कैलाश औ,

टूटल हम्मर आश औ ना ।

िरा पर अयलहुँ पदोषक थ्वन,

मातु - थ्वतु अहँक भथ्वत्त मे लीन,

बूझल सभ जन वम वम लेलथ्व हमर घर वासऔ ।

टूटल ...........

नेन कालथ्वं सँ ि हर भक्त,

सुखायल करम - िरम मे रक्त,

शारदालीन संग मे शंकर पर थ्वशास औ ।

टूटल ..........

देखिते खतल सुिमयी वखि
जीवन सँ दूर भाग गेल हखि
जननी उठल भूम सँ िभ मोहक पाश औ ।
टूटल ..........

चहुँ खिल कालक भेल पहार,
करम गल फसल वील मझािर,
उदि मर सिल भेली ङय मे पसरल िास औ ।
टूटल ..........

'आशु' अि मािं अही सँ मोह,
होईि अपन भाग पर िह,
हर दुाख वा कर हमर सारस जीवनक नाश औ ।

टूटल ...........

कोना कऽ अंतिम नमन करव

(कन्या भ्रूण हत्या पर एक िट रचना)

कोना कऽ अंतिम नमन करव,
आँचरके अहा कलंकित कएलहुँ
पुि जन्म सेहंजात सपना मे
कर णाि णी आदर्शी भेलहुँ ।
नहि देखलहुँ आदित्य नहि शाक शाखा,
नहि नभ देखलहुँ नहि देखलहुँ वसुि
नहि भेटल िहि नहि मृदुल केम,
नहि मोती माणिक्य रजत हेम,

पॉच मास अहँक गर्भमे रहलहुँ

जनपथ्रजनक श्वारस्कार सहलहुँ

अपैत बूझ्म कएलहुँ अहा गर्भपीत

भेल अपूर्णनैना पर वजपात

अथि कोन ओ शथ्क्त मनुसुत मे

जे बेटी मे नथ्ठ दथ्थाति भेल

मथ्थाकथ्थाकिा क शंखनाद सुथ्भाते

वृद कुंवरक यौवन झट िथ्थ गेल

दुाख एके वातक तातथ्थया

सृथ्थ देलथ्भा संतथ्भा के गरल थ्थआ

पावन आयभूथ्भक सुनयना

वैदेही के देलीह माथ्ठ थ्भला

भववंनिक ई केहेन दशनि

नीर क्रीर थ्थनु वीतल जीवन

तथ्भ गेल पाण तँ अनल अपणि

अध्याय मि सँ पुि कएलथ्रा तपणि

एक वेश्व हमरो जौ कश्वतहुँ अहा

जीवन मे सुि वोश्व देतहुँ मा

देतहुँ सतरंगी पथ्रािन

पुि सँ वश्वढ़ कऽ कश्वतहुँ सम्मान

श्वअ आशीष हमर जननी

फेश्व वेटी वश्रा नश्व आवी अवनी

नश्व सूखय पुश्रा नव श्वकसलय दल

नश्व जल सँ पश्वने भेटय अनल

# पावस

लहकाते आतप अनल ज्वाल सँ,
पसरल सगरो हाहाकार
तर ण - वर णक अक्रमावेश सँ
जीव - अजीव मे अशोंक्रक ज्वार
मोन थरंधमत हृदय सशंकत
वनल सरोवर कलुष मसान
सूखल कसलयक कोमल कान्ना
ि श्मक रहल नव लता थतान
नष करब एक्ष पलय भयंकर
पकट भेलक्ष्यह अपने देवेश
घन घन घटाक संग आगमन
शीतल पावस बूनक वेश
नव रंग नव ि◌न नव मुस्कान

घुरल सृष्टि मे नवल जान

पुष्प श्यायमा काचन उपवन

फूरल भमर के म्िर गान

मेंातश्मा सरोवर कलकल सश्वता

नूतन नीरक खहखह िरा

आयल कृषक मे श्वक्य चेतना

भागल वेदनाक पुरा अँधियारा

पंकज पस्फुश्चत भेल सरोवर

वका काक श्चात शात सोहनगर

भरल घटा मे मोर मजूरक

नाच म्िर व ि लागय र श्चागर

गोाूश्िक पवन वेग मे

चहश्क उठल भगजोश्चनी

वया ताप मे उमश्ि गेश्म

अलनक अयोग मे तर णी

उन्मत घटा संग म िर पेम मे

नर-नारी भ' गेल अभोर

दुई मासक ई र अगर पावस

उमा िओल नव सृष्ट क जोर

गीत

थ्यया थ्रामोही खनश्क गेल कंगना,

थ्यपुल मृगी नयना,

थ्कएक अहा बनलौ औ -

पवासी सजना ।

आथ्रा भेल शीतल उथ्रिया रहल पाश्रा,

सुवाश्रात जीवन मे उफश्रा गेल त्लाश्रा,

सुन पेयसीक थ्रानेह हृदय अंगना,

थ्यपुल मृगी नयना ...................... ।

उमथ्रि रहल थ्यरह पखर आतप समान,

मुर झायल शुष्क अ रि मर घट मे पाण,

ि सिल बान्ह मयादाक सजना,

विपुल मृगी नयना .......................... ।

कण्ठ मे जीवन अशाश्वत वनल,

सूखि गेल नेह पुष्प नोर सँ भरल,

आव कण्ठ ने सकव हम सजना

विपुल मृगी नयना ............................ ।

कका औ (बाल कश्वता)

श्वबू मरसएब बि मरखाह िथ्वि

िका िािलश्व कका औ

दात कीश्व दुनू भौ श्वकुिबश्वि

हािमे नरकश्वक सटका औ...

भूगोलक पहश्व संस्कृत वचै िथ्वि

कग्गे-कग्ग नोइस लऽ हाफी थ्विकै िथ्वि

पंचतंि पर करश्वि श्वटम्भा

श्वष्णुशमा सँ नमिर खम्भा

बरहर गाि तर गदहा बना कऽ

पािसँ मारश्वि िका औ...

जखन कोनो िन्दक अििपुि िी

कहै िथ्वि कुकुर पर लेख श्वखे रौ

कहू तँ कोना हम एके पहश्वमे

रंग-बिरंगक बयना सीखू

हाथि मचोकि पीआठ पर देलिआ

बजजर सन दू मुका औ...

मुरखे रहब आ मालिस चराएब

कहियो नहि ओहि इसकुल जाएब

एहन राकस सँ जान बाँचाउ

भरि जिनगी अहँक गुण गाएब

बजै छी कानि जौ नजरि झुका कऽ

धिया-पुता बनि कहि भूतका औ...

स्वंसक नानी

खापथि बेलना केर कहानी,

आब नञ्ञ दोहराबू अय नानी ।

नाना बऽनल छथि पसयार,

भक् छथि जेना हुलुक बलार,

दंतक गणना घटिट कऽ बीस

हुरथि गूड़ - चूड़ा के पीस

गावथि दारा दरद जमानी ।

आब...............

वरन् केर वखभिल चालीस,

अछथि अहँक चरण मे शीश,

अहो लेल लबलब दूि थालास,

नोर पीब अपन बुझावथि िास,

कमा कर ! ाि आब गुमानी ।

आब...............

अवकाश क बीा गेल दस साल,

पेशन सँ आनथि सेब रसाल,

भय दन पान अहो केर गाल

ऊपर सँ मचा रहल ि ताल,

चमेली सँ भीजल अथि चानी

आब...............

कतेक दन सुनता यतृ उगाही,

संतया पूब गेलथा दू गाही,

मामा मामी क बहुँसल ठोर,

मो ि थ्रि, चुप्प ! सा िने नोर,

कोना बश्चा जेता आत्म बश्चादानी

आब................

चश्माक बोखार

सोलहम मे कएल अंतास्ि पवेश,

हुलसल मन गेलहुँ नवल देश ।

श्रय बसथि कला ियलहुँ थजान,

राखल जननी इच्िक मान ।

वैद अंगरेश्मया वश्मा बचाबू दीनक परान,

अिहीन श्मथिला मे बढ़त शान ।

िऽ ध्यान सुनल सृष्टक इच्ि,

गाश्ह बाश्ह लेलहुँ लऽ गुर दीक्ष ।

कॉलेज मे बीतल पश्हल सि,

आओल तातक आदेश पि ।

पश्ढ़ते आबू अहा अपन गाम,

हैत ज्येष्ठक थवाह थदापश्म िम

तन झमश्क गेल, मन गेल गुदश्क

भौजी के देखबश्म हऽम हुलश्क ।

आगत रथ पहुँचल जनम गाम,

शत अभ्यागत छथि ताम-झाम ।

चहुँ - दिशा भऽ रहल चहल पहल,

चिन्ह - अनचिन्ह सखा सँ भरल महल ।

एक नव नौताथ बहुआयामी,

पूलि सँ छथि िटकी मामी ।

पिमश हुनका सँ भेट भेल,

भेल दुनू गोटे मे कणखं मेल ।

साँझे औतीह दीदी अभाता,

आकुल मा केर एक मािव अभाता ।

देखते देखैत आब गेल साँझ,

मा तकते बाट ओसार माझ ।

दीदी आंगन अयल हँसते हँसैत

मा गऽर लगौलथ ठोर कनैत ।

िहनक नयन हेरायल िवमलेस मे,

देिख मामी पिलिथ पेशोपेस मे ।

चश्मा मे सुन्नर दाईक िवभा,

बिढ़ रहल िहनक नयनक शोभा ।

मामी ! ई सऽख निह आँिखक इलाज,

माि ददिसँ िल वािधत सभ काज ।

सुिन मामी मोन भऽ गेल अलिसत,

हुनक वाम आँिख मे पीि अतुिलत ।

नोिचते नोचैत भेल नयन लाल,

ददिपसिव रहल सम्पूणिभाल ।

आंगन दलान पीि िवकल्लोल,

आँिख िलिथ लऽ जल डोले डोल ।

फूिल गेल नयन केर अिर पऽल,

हऽम सेकलहुँ लऽ गुलाब जऽल ।

वैदो आयल निह कोनो असिव,

कमि कऽ रहली - रहली कुहथ ।

माते कयलथ बाबूजीक ध्यानाकषणि,

आँगन मे आब ओ दऽ रहला भाषण ।

सभ दोष सारक नञ दै ध्यान,

वयस तीस मुदा एखनहुँ अजान ।

रक्त जमल थलोचन झल्ली मे,

सैआक कंत पलि थि थल्ली मे ।

सरहोथ सँ पुलिथ पीकि काल,

पञल बेथ भेल लि परेका साल ।

मा सऽ कहलथ लाउ नव अंगा,

झनका लऽ जायब दथिभंगा ।

थारस्कार करब नञ हएत उथत,

कथाया दरद सँ अथ थहुंथत ।

काथह अथि थवाह अहा जुथ जाऊ,

करैत ि उपाय नञ्ज घबराऊ

भोरे ‘श्चल्लू’ जेता श्चनक संग,

नञ्ज श्चवाह मे कऽ सकलश्च हु दिंग ।

भातृक सासुर जेता चतुि मे,

मातृ आदेश लागल हम अि मे ।

नञ्ज बात काटल शात िलहुँ सुनैत,

राश्च श्चतल सुजनी मे कश्चते कनैत ।

कोन बदला लेलक बापक सार,

अपन संकट बान्हल हमरा कपार ।

मामी के हम नञ्ज चीश्चह सकल,

भीतर सँ इन्होर ऊपर शीतल ।

नञ्ज जा सकलहुँ हम वश्चयाती,

गाबै ि हुनक दुाखक पॉती,

भोरे उश्च दश्चभंगा जा रहलहुँ,

नैनक शोश्चत सँ नहा रहलहुँ ।

पहुँचल डॉक्टर अय्यर केर क्लिनिक,

चक्षु चिकित्सक सभ सँ नीक

दुआरे पर कम्पाउन्डर नाम पुछि ल,

मामी नुपूर कहलन्हि ओ कुकुर भाखल ।

देखऽ मे भऽल पर वज बहीर,

उपरे मन हँसल, भीतर अधीर ।

वैद अय्यर कहल नहि दृष्टि दोष

दुहू आँखिये देखै छथि कोसे-कोस ।

नेकि आगा नहि अछि अन्हार

हुनका लागल चश्माक बोखार ।

हम भाखि दैत छी शून्य त्रास,

बुझा रहल औन हुनक कमलेशक प्यास ।

ताहू सँ जौ नहि हेती नीक,

आँखि सेकू बनि सनेही बनाक,

अ रि पर मुस्की आगा अन्हार,

कानल मन सोख्य थवाहक मल्हार ।

डॉक्टर बनऽ केर तृषणा मन सँ भागल,

एहेन मरीज भेटत तऽ हएब पागल ।

ुिथ्य गाम माता केर करब नमन,

तोि जननी हमरा सँ लेल वचन ।

चशआश नैन मामी ि थिि अथ्वा गदरल,

हमर योजना श्रुनक भभटपन मे उ लि ।

आकुल जननी

(बाल कविता)

सूतल रहू हमर लाल, अदरिश बीतल ।
अहँक अविरल नयन सँ आँचर तीतल ।

घोरि अंजल काटि रहलहुँ अहि जीवन,
तात दशनिक आश विन कएल अरपन,
कीर जनु दुहू वक शुष्क पल ।
सूतल रहू ..........

कोन कयाही सँ लिखल विना हमर कपार ?
अपने पवास गेलथि ढिधि हमरा कपार,

चानन सन नेनाक श्वय, भूख सँ कानल ।

सूक्ष्म रहू ..........

हुनके की दोष श्वअऽ स्नेहक ओ श्वमूक्ष्म,

कायादीन श्वदाश्वहीन करथि पंचजनक पूक्ष्म,

अहँक अ ि मातृ नयन शोश्वात भरल ।

सूक्ष्म रहू ..........

कहबश्व गौमाता आनू औता फागुन मे

काम िनुक सु ि भरब अहँक कण-कण मे

अहो श्वान हऽम कल्पना मे उ ि ल ।

सूक्ष्म रहू ..........

अंखाम िंद

(बाल कथ्वता)

सात बरख केर जखन वयस िल,
थ्वहुंसल मन उजिल मकरन्द ।
एखनहुँ क्ण - क्ण श्वय सँ उफनय,
माय जे वाजश्व अंखाम िंद ।
सुनू पूत हम िा्वि अवश्व के,
जा रहलहुँ थ्वािना केर घऽर ।
अपन तात के कोचा पक्ि,
माश्व जनश्व शीतल आँचर ।
हमर चरण िऽ श्वायऽ अहो पण,
तनय िरम केर राखब मान ।
कमिडगश्व पर हमर िाह संग,

बढ़ब करैत मातृक सम्मान ।

हंसवाहिनी चरण मे अर्पित,

अपन शीश दऽ सोखब जान ।

नीच बाट पर डेग नहि राखब,

जीवन मे करब नहि सुरापान ।

केहन दृष अदृश्य व्याधि ई,

सभ धर्म बूझि अहो भेलहुँ दीन ।

विजय नहि हार एहि अखिल भुवन मे,

लिखि कतेक लाल सानि विहीन ।

अम्बुज अहो के हमर शपथ लिक -

विलोचन सँ जुनि बहबू नोर ।

शिखर लक्ष्य के अर्पित साथ,

दैत मातृ स्मृतिक वोर ।

हुनक दिव्य आशीष पताप सँ,

भेल धनि, मन, यश पूरित जीवन ।

मुदा 'माय' गुंजन जौ सुश्न हम,

रोम-रोम सँ उपटय कन्द्रन ।

हुरहुर

(बाल कविता)

दलानक पाजमि गमकि रहल ि‍ल,

गदरल गाि फुलल फुलवारी।

कात सटल कटा भमि लागल,

खसखस साग हमियर तरकारी ।

बाबा कमावमि सीता गुिा - गुिा,

हमर हाि मे जऽलक गगरी ।

हुनक नैन सँ ओझल भऽ कऽ,

खूब िाबाबी गाजर ककरी ।

लदल गाि ि‍ल नेबो बरहर,

अनार शरीफा मिुर लताम ।

िनु आजा केयो पात जौ िूबय,

बाबा ीलमि ओकर चाम ।

दीघ थिपाश्मत श्चक ु गा ि कपै ि ल,

ढ़ाश्च देलहुँ भश्च गगरी नीर ।

झन पीठ पर लागल चटकन,

उमि ल क्यि ा गेल देह श्चमहश्च ।

खश्च प ि लहुँ कात परती मे,

तमकैत बाबा लगलश्चा दुत्कारय ।

अश्चि उदण्ड दीघटिटी नेना,

हम्मर कोनो बात ने मानय ।

पुष्पहीन अफश्चत गा ि पर,

देलक सभटा जऽल उ ि ल ।

नीक अ ि लाह गप्पा बूझय नश्च,

तेसर कक्ा मे चश्च गेल ।

भनसार आश्च माय सँ पू ि ल,

लोचन डबडब नाश्चका सुरसुर ।

आश्चि मुरझायल श्चिक कोन झाश्चि,

बाउ ओश्चि अनाश्चिक नाम हुरहुर ।

माल जाल सँ फुलवारी बचवऽ लेल,

आश्चि पर माश्चिक ओकरा रोपय ।

सामन्ती श्चिरातक उपेश्चित सेवक,

खाद - पाश्चि लेल ककरो नश्चि टोकय ।

लोलुप जहानक अपवजी श्चिक

सओन जनमल वैशाखे उपटल ।

तीत पात मे पुष्प श्चिलय नश्चि,

उपहासे मे जीवन श्चिपटल ।

रैन इजाश्चिया गगरी भश्चि - भश्चि,

जल सँ देलहुँ हुरहुर के बोश्चि ।

भोरे - भोरे बाबा के देखल,

सजावैत श्चिकयारी पासश्चि सँ कोश्चि ।

ककश्चि श्चिय मे पीश्चि देश्चि कऽ,

झट दौथि हुनका गऽर लगाओल ।

दक्षित उपेक्षित जीवन वाँचल,

िदा सँ नोर टपकाओल ।

अंजश्वा

(बाल कश्वता)

कका ेा सूश्वा रहू अय बुच्चेी ओल,

पाकल परोर सन लागय लोल ।

उल्लू मुख भदैया श्वखश्वरक वोल,

नाम ‘अंजश्वा’ कतेक अनमोल ।

अंजश्वा ेा मा श्वउल्लू कका वशका शैतान,

ािपर माश्व ठोकै श्वि कान ।

अहा सँ नुका कऽ श्वावश्वि पान,

फोश्विश्वा माि वा तोश्विश्वा टॉग ।

कका ेा भौजी ! ािटकी फूश्वा वजै श्वि,

रीतू संग भश्व श्वन श्वन-श्वन करै श्वि ।

दाश्च रहल ि श्चनक देह हम,

उत्ृखल नेना करै िश्च तम-तम ।

अंजश्च ा कका जुश्च घोर श्चथ्याक भंग,

आव नश्च सूतव हम अहाक संग ।

मा लग हमरा सँ श्चनेह देखवैत ि,

एकात पाश्च हमर घेटी दवैत ि ।

कका ा पठा देव काश्च अहा के हास्टल,

नेनपन ओश्च ठाॅ भऽ जएत शीतल ।

ओतय भेटत नश्च खीरक िरी,

नश्च रसमलाइ नश्च पनीरक तरकारी ।

अंजश्च ा काकू बनव हम बुश्चयाश्च नेना,

सखिखन वाजव सुमि्र वयना ।

ककरो संग नहि मुंह लगाएव,

अही लग रहव हास्टल नहि जाएव ।

अहँक आँचर

(बाल कवता)

आव वसरव कोना सुनू जननी अहा,

कतेक आमलि सेहंआत अहँक आँचर ।

ह्रय आहकै जखन वहै लोचन तखन

नोर पोिलहुँ लपेटय हम अहँक आँचर ।

कोना अयलहुँ खलक ? मोन नञ्च अछि किा,

पछि पट सँ सटल देह भागल ग्यिा ।

आनेह आशिल अनमोल पिम सुनलहुँ मातृबोल,

मोह ममताक आन के करत परतर?

दंत दुलकि उगल, नीर पेट सँ बहल,

देह लुती भरल कंठ सवता सुखल ।

जी करैिल वसवस तालु अतुल वसवस,

मुँह मे लऽ थ्रवयलहुँ अहँक आँचर ।

नेना वयसक अवसान ताकऽ चललहुँ हम जान,

कएलहुँ गणना अशुद गुर फोथ्रि देलथ्रा कान ।

थ्रलेट वाट पर पटथ्रक माक कोर मे सटथ्रक,

तीतल कमलाक ि◌र सँ अहँक आँचर ।

देथ्रव पाचमक फल मातृदीक्ष सफल,

भाल थ्रारथ्रत मुदा ! उर तृषणा भरल ।

गेलहुँ कतऽ हे अम्बे कतऽ गेल आँचर,

ताथ्रक रहलहुँ हम आंगन सँ थ्रपरक तर ।

श्वग्न्ग्‍ि-स्ग्वाती

झ्ग्स्झर-झ्ग्स्झर ना हे श्वया,

झ्ग्स्झर-झ्ग्स्झर ना!

झहरय श्वग्न्ग्‍ि स्ग्वातीमे बदरा,

झ्ग्स्झर-झ्ग्स्झर ना...!

परम सुहावन मास श्वरह ङ्क्षय,

टपकए नेहक बुन

लश्चात पवनमे श्चठुश्च रहल ि‍ी,

जीवन भऽ गेल सुन

टपकए श्वरहक अ‍ि‍ुलाप ई,

झ्ग्स्झर-झ्ग्स्झर ना...

तृश्या-तश्यत श्वातुआक कल्पना,

उपटल अणग्वि तट मोती

अहा बहएलहुँ श्वारस जीवनमे,

श्वकए अगम दु:ख सोती?

श्वलनक आश कानए पैजश्वाया,

झुनुर-झुनुर ना....

काश्वा िश्वत माथ्वाक्य बनल,

मदमत भेल गजराज

मुग्ि जहानक रम्य पहरमे,

फफश्वक गेलहुँ हे ताज!

तोि् वेदनाक डोश्व ई,

झमश्वि-झमश्वि ना.....।।

घटा बसन्ती

कूकू केर मादक स्वर सुनिते,

स्नेहातुर मन चहकि उठल

उबडुब आनन हर्षित कानन,

“घटा वसन्ती” िर बहल।

शीतली र नझुन नीरज रससँ

कएलक झंकृत सकल जहान

अपन मनोरि शास्त्र करऽ लेल

पेयसी कएल ितुराजक गान।

उमरि रहल नव तर णी यौबन

रससनात भेश्वा चंचला-गात

पुष्प सेजपर शालन सम्मोहक

चभक्च गेल अधि दुनू पात।

जजरि वृदा आ सुखल वृदमे

ि श्व आएल पुश्मा कामुक जान

भाश्मा गेलश्मा िमरिज देश्वि कऽ

ऋृतुराजक ई अनुपम शान।

हसी-खुशीसँ चल-अचल जीवन,

ताश्कि रहल होरी केर वाट

ज ि-चेतनक सुरश्मात काश्मा देश्वि कऽ

कएलक गान हृदयसँ भाट।

रंग-श्वरंगक अवीर गुलाल संग

नाश्मा रहल उन्माश्वत होरी

सृश्ष्ट मनोहर चक-चक तर वर

मॉतल चह-चह चहुँश्वश्वा जोि ी।

चैतावरक ओंघाएल कलरब

अश्मादेव केर जुआश्व बढ़ल

घटल जहानमे कलकल जीवन

मादकता स्पगोके जीतल।।

<u>साश्चत्यक श्वदूषक</u>

श्चकए हमरा कहै ि श्वदूषक।

की हम केलहुँ अहासँ खटपट।।

शैशव अप्पन गाममे श्चतएलहुँ

सभ ठाम देश्चल गीत सुनएलहुँ

मूि न हो वा महुअक।

मा ि श्वदेहसँ रखलहुँ आशा

सभ श्चन पढ़लहुँ मैश्चिली भाषा

व्यारव्याता बश्च भेलहुँ चकमक।

ि◌ृगार पहरमे कश्वता श्चखै ि,

ि गृहस् ि मुदा बैराग श्चखै ि

हमर जीवन दरससँ ओ भेश्च भक्।

कश्चया ि श्च बॉटव जागरणक परचा

कतहुँ नश्च देखलहुँ अप्पन चरचा

दक्षिण नयन भेल फकफक।

श्वनचया श्लाश्व कश्च बश्ल गेला

आन्हर गुर  संग बताह चेला

उल्लू लग कोश्कल ठकमक।

कतेक श्वन भरत श्वलाप सुनाएव

फोका डबडब पश्वचय पसूनक।

आउ-आउ दीघसिूि भेद मेटा श्वअ

हमहूँ मैथिल गऽर लगा श्लाअ

बनाउ श्वथिलाके सम्यक।

मुदा जीबै छी

जीवनक डोरि फुसि उड़ि व्योममे

कातर पाण मुदा जीबै छी

सड़ल वसन पजड़ि अछि आंगुर

गलल ताग गुदरी सीबै छी....

ककरो बाड़ी बेली फुलाएल

ककरो पोखरि भैटक लावा

हमरा घरक परनिो छल्ल भेल

आँचक बिना सुन अछि तावा

कागत-मुराके बीड़ी बना कऽ

कोढ़सँ लेसि-लेसि पीबै छी.....

लाल रंग शोणित सन टपकय

पीत कुण्डल छलहा बनि झड़िकय

कुथ्यत होश्कका ाहि देखाबथ्यि

ब ीपर काक-भुसुण्डी हबकय

अश्कमदेवक हु् ि डाङसँ

सु ाके खोथ्यि-खोथ्यि ज ि बै ी....

कटाह वसंत कश्कयो नै आबथ्यि

राख ि अपने संग थ्य ाता

कुसुश्कत रहै सबहक आङन घर

हँश्क-हँश्क कौ ी खेलथ्यि पुनीता

अपन सं ासके श्कयामे नुका कऽ

सबहक सुखक कामना करै ी.....।।

रमा

साझ पहर धूप-वाती धुद्न एलौ

रमा नाओं रखने ि श्चा बाबी

मातृ कोरक हम पञ्लुक नेना

कोन-कोन जीवन गीत गाबी

खढ़क मचान श्ालय बश्वा चमकल

कनक-रजतसँ ि नि न माता

श्वताक बटुआमे बैसलश्वा लक्मी

कण-कण खह-खह कएल श्वि ाता

लव-कुश बश्वा जननीक कोश्वसँ

दू-दू सारस आङनमे श्वलाएल

तर ण लताके श्वानग्ि देश्व

सर समाज घूरश्वि औनाएल

ि लकश्वा पाण्डु जर बाबूके

नोकरी िथ्रि खाटपर खसलथ्रा

खेत पिार क्याथ्रि संग बूिल

तैयो तेसर लोकमे पैसलथ्रा

जै ओलती िल तृप्त पथ्रहरा

सुलाा चुनमुनीक चहचह शोर

कणझ्रमे देवराज टपकेलथ्रा

शरदथ्रनशामे आथ्रा इन्होर

हािसँ करची कलम िूथ्रट गेल

िथ्रि पिलथ्रा भाथ्रानी- भरा

चरण नुपूर िरा खथ्रस टूटल

आङन बाि‍ भरल दथ्ररा

काच बएसमे सेिुमे थ्रानूर

गदगद भेलीह मातु सुनयना

कहुना लाज गेल दोसर घर

सुखद नोर खसबै िथ्रि मयना

कंतक आङन सेहो कलुष भेल

जखने श्याकसल वज चरण रज

रैन पचीसी संग श्यानेहक

लहठी फोथि श्यापता पंकज

तुसाश्वक श्यास्तार कोना कऽ कश्वतौ

उज्जर नूआ खाली हाि

सेिसँ सेनुर अपने पोिलौ

आन्हर सासु संग पीटै िथि माि

आजुक डाइन- कश्इयो िलौ लक्मी

िहसँ भागथि अश्ववाश्वान सभ

नोरक घृतसँ श्यानुआर श्यापै िी

ककरो संग नै बाटब कलरब

काक-दृश्वट िने िथि बाहर

चानन ठोप केने श्यकि लोक

आयभिुवनक रौ बनमानुष सभ

गदश्नि दाख्न पठबए परलोक

नारीटा लेल श्नाअम केहेन ई?

वरन् एक तँ कहाएब सती

अपन काताके िश्नि घरमे

कश्नुया िश्नि तकबे अबला रश्ना?

उनटा-पुनटा

सबरी मायक सिनेह उनटल छैक,

पनसि गेल छथि- तात राम

सिायागक मूरति सिाया बदलि गेली

पल क्षण बदलए आठो-याम

बोतल कीरमे नेना उबडुब

पुष्ट वक्क लेल अंबा अंि

टोप पसिरलथि यशोदा मैया

कान्हा हेरथि आँचर गंि

कका दलानपर रसमंजसि लागल

पढ़ि-लिखि पूत भेलथि अधिकारी

घूसक टाकासँ दलानके ििि

लालबती बर भऽ जाउ कारी

अन-पानि बिनु बाबा मुइला

भीठ बिका हेतबि वृषोत्सर्ग
सभ बौराएल यशोगान लेल
गर्भिया शीत तप्पत अपवर्ग
नागरक चार चुआठ बनल
थारभुत झाके भेटलबि शमियाना
गोदानक संग जौ साढ़ नै दागब
लोकवेद सभ देत ताना
पहिल ियामे हमरो भेटल
राहरि दाबि संग वासमती
बाबाके जौ एहिना खुआबिसायबि
एखन नै जेता ि ल तट वागमती
िट परिवारक लेल मामी माहुर
कात भेली नानी बबि अपरतीप
आयभिूमिमे भिझा गेल अबि
संयुक्त परिवारक खहखह दीप

सुकेशर रामक गाराक कंठी

हाि ि एने ि मिक्ि पतवार

अपैत कुलमे जन्म की भेलथ्ा?

माि श्वखयलथ्ा जाश्वा चमार

सुरावोश्व मुगी टाग श्वबाकऽ

श्वथ्ि कुलक्णक संग राश्वा श्वताबथ्ि

पंश्वत वंशक कठुआएल पौर ष

मास्टर साहेब बाह ण कहाबथ्ि ।

कथक कामना

पूत बढ़बैि वंशक मान

मुदा थपरौक्षया बाबासँ

मंगलश्रा पोतीक र पमे सुकन्या

अचा अपणा वा भक्या

कथ बश्रा गेला थतामह

सफल भेल कबुला-पाती

भगवत कृपा देख-

खुशीसँ फुललश्रा जीणि िती

जेठका जीवन झखरैत पाषाण

थयाहक भेल सोलहम बरख

एखन िथ- श्रा:संतान

दोसर श्राष्कपट बुथ्िवक

परंच थतृसेवक अथराम

करची सन लकलक काया

रंग िन इव श्याम

घनश्याम कन्याया कोरमे

सद: अएली वैदेही बन्या कन्या

कन्याक उपवन भेल िन्या

मुदा! साकीक यताक स िन

जेठके के भेटत

श्यामके जौ िश्यक बाप कहएबाक

सख आश वा दीघ ियास

दोसर बेटीक लेल

राखि एकादशी उपास

यएह भेल

कन्य गेला स्ागि

भेटलन्या मुयन्त भेलन्या अपवगि

साकीक माताक कोरमे

फेर बेटी बनि अएली भारती

घरमे अन्हेर

पकृतिक फेर

अङने अङने अिए लागल

गप्प हरबिरो

बरसए लागल कनफुसकीक झाट

अपने हासिँ कथजी

रोपलनि बबूरक काट

बकिी काकी धअ लगलनि तान

नै लिनि हुनका संसारक जान

कबुलामे कएक मंगलनि बेटी

हम जौ हुनका सनिपर रखनिायनि

तँ जनमतहि दाबि देतौ

ऐ राक्सनीक घेट

बेटीक लेल पानि!

आयिकेहन कथक कामना

एकबेर आर अन्हेर

भादवक अन्हरियाक फेर

स्तब्ध थिथ सभ केओ

देख कथ कुलक दशा

आङनक बहुआसन सभ

टोलक अनन्या

कपार थपटए लगलथिन

िटको पुतोहुक कोरमे

जनमल... कन्या

हा भगवान महात्माक यएह मान

मङने देश्वरयथ तीन

पुष्प माल लागल फोटोमे

कथ थिथ मुग्ध तल्लीन

जेना कहियो रहल होथि

के रखलक जहानक मान?

के बढ़ेलक कुलक सम्मान?

के बचेलक वंश

सीता अहल्या सावित्री

वा रावण कौरव कंस?

मुरदा जगाउ

इजोतमे तँ सभ चलैत

अन्हारमे चलिकऽ देखाउ

स्नान सुनि पदचाप जागय

चचरी चढ़ल मुरदा जगाउ

नृपक मीठ ददसुनि बौराएल

पटरानी-मंत्री-सेनापति-चाकर

ओइ अभागल ध्वंस के तकलकै

जे सवर्णविहीन जकर देह जजरि

भरल पेट हाफी करैत

पहुँचल महाजन दुआरि जखने

स्याकि दुलसिँ बनल पयस

भरि ारी आगा रखलौ तखने

आँत चटचट कंठ सूखल

पारि नै जे घोंट पाबय

सुक्खल अ ािप मध्यम जनके

झोंट 'चंडाल' कहि भगाबए

देवधरामे अपुण वाचक

पंचतत्व देहे भरल ि

थरही नै केओ दैत ओकरा

ि र कुलमे ओ जनमल ि

देव िमकि पीस रहलै

झपटल सोन बोरि कऽ बटोरल

केहेन भयकराल मृगतृष्णा ई

सभ घोरैत उन्मत जहर घोरल

अंधकाम आगह धैकि सुनू बौआ

ऐ फेरमे कखनौ परब नञ

अपना संग सभके जगाएब

कुमार्गकि धियो रिब नै।।

अस्तित्वक पश?

ककरासँ कहबै के पसायेतै अपने तरंगमे भीजल दुआया

ब अ ह स्वाि क्रि अण ई शुभ बआ गेलै लोलुप बआया

शोआत बोअ-बोअ टाट बनएलौ

खर खोआ श्वटही लऽ गेलै

फाटल आँचरसँ कोना कऽ झँपबै

खाली श्वनुआर बेपद भऽ गेलै

व्याल दृश्वटसँ राकस गु किए श्वहुश्क-श्वचुश्क कऽ कानए रआया

कमक्रि नाहमे भेलै भोकनर

वामे हा पाआ उप लौ

भदवश्वएमे पतवाअ हेराएल

दश्वना हा क लला बनएलौ

सभटा आङुर पाआ खा गेलै, कोना बजतै ददक्रि हरमुआया

क रमे श्वषनाअ उगल

ि लि ल पाक पएर ि ँक्ष्म गेलै

अन्हार मोक्ष्ममे कि मि  कऽ रहलौ

क्ष्मनु जाले टेगि ि फँक्ष्म गेलै

कोना कऽ हमरा बाहर करतै नोर चाक्ष्ट हहरए सोनमक्ष्माया...

क्ष्मकि ु क्ष्मि दीक तरमे दक्ष्म कऽ

पंरह ओना अकसक कऽ रहलै

भारी भेल कुकमकि सोती

ओकरे ि रिमे गंगा बहलै

घनन दक्ष्मरा ताडव करतै,

अक्ष्मत्तत्वक- पश बनल पैजक्ष्माया...

कणपभा

सभ ठाम सदि

झकयो नै बेपदि

देह झमहकल रेह झठुरल

पोखड़ि-इनार ठमकल

पूस रमकल

श्याम असि शिशीतक बीच

टक टक कएने आश

कखन भरत मोनक थयास

कबदबैत चम्पा मुस्कैत पलाश

सूर्यमुखीक दशा देखब

ओकरासँ झकअए करैत ि ी झमनेह

जे कुन्तीके ठक्क लेलक

ओकर कौमायि निष्ट कऽ देलक

आइ आश्चाक ढेपपर

के करत थ्वशास?

झापू मयादा बचाउ गेह

भावक आगा पाश्चात्क कोन मोजर

एतबेमे मेघ उश्चि गेल

शीत लुप्त भेल

क्णपभा बश्चा रश्चक अश्चासि

सूयमुखीक,

कोमल कोपरमे समा गेल

ज्योत्स्नापुंजके आश्चत्यक चरण माश्चा-

सूयमुखी अपन सेिुमे

भस्मीभूत कऽ लेलीह

अखण्ड सौभाग्यवतीक आशीषक संग

श्चकरण ससरल

कली फूल बश्चा पसरल

हम तँ उभय श्वागी ि

नै रश्चतौ तैयो कश्चश्चायश्च

सुर जसँ पेम......

सभ श्चकअए दैत ि हुनकापर दोख

ने डूमैत िश्च ने उगैत िश्च

सभ श्चण्ड घूश्च-

हुनकापर डूश्च जएबाक

कलंक लगबैत अश्च-

जखन अपनामे दृढ़ता नै

तँ दोसरपर दोष केहेन?

श्चनु बजौने सभ लग अबैत िश्च

आठो याम जरैत िश्च

कुन्ती सभ जनैत श्चकअए

कएली वरण-

ज्योत्स्नापुंजके बान्हब

ककरासँ भेल संभव?

आश्चर्यत्य स्नेहक तापस

लगले तप्पत, लगले स्वरूप

कोना भेला निश्छाया?

स्नेहक अनिसुधि प्रभंजन

नै स्पर्शानि

एकर नै अवसान

नै उत्कर्षानि..

कण्पभा जकरापर खसल

ओ जरल ओ मरल

मुदा! स्नेहक कण्पभा

वासना मानि नै-

शाश्वत स्पंदन...

जकरामे केलक पवेश

ओकरा रोम-रोम शेष-अशेष

एकर भंथामा वएह कहत

जकरामे संवेदना रहत.... ।

सगर राश्चि दीप जरय

राश्चि माने कारी पहर

गि-गि शात

जीव अजीव आकात

रजनीक लीलासँ

कश्चाक बचबाक लेल

लोक जरबैि दीप

सभ्यताक श्वकासक संग-संग

मनुक्ख चेतनशील होइत गेल

पश्चने इजोतक लेल...

खर-पुआर जारश्च

लता नूआ फटा

सूत ि श्चि र इयाक बाती

श्चबिीक बदला लेम्प

बहकैत रोशनीमे गबैत पराती

बुझि कि प्रकास भेल...

विद्युत तरंगमे

गैसक उमंगमे

विज्ञानक जय भऽ गेल...

सभ ठाम इजोत

मुदा! वैदेहीक घर अन्हार

मा ि प्रखते रहब

ककरोसँ नै कहब

के बूझत क ाक प्रकास

ककरो नै ि ल आभास

द ीक्ष्य बक्ष्य साङह लेने

आध्य गेलक्ष्य

मैथिली क ा जगतमे पभास

सुरज थ्वन भथ्व अपन

करेजके जि कऽ

नै मेटा सकल

ऐ वसुनिरापर सँ

थ्वगश्चत मानुषक पवृश्चा

पभास दीप बाथ्व

अपन कर आथ्व सम्हाथ्व

कि सागरक जमल तरंगमे

थ्वअ लगलश्चा श्चलकोर...

समाज जागत- ई ि लि थ्वशास

मुदा नै आथ्व भेटलश्चा

नै भेटलश्चा िर...

श्चनिश्चपर अपश्चयात

कि िकार लऽ लेलश्चा ेश्चवाण

जागरणक आशामे

कखनयो तँ सुखतिध

वैदेहीक झहरैत नोर...

चिढ़ गेला अभिलाषा लेने

उतराधिकारी सभ खेलाइत छथि

अटा बज्जर कथया-झुम्मिर

उदत छथि अधिकार हरबाक लेल

पाग पहिरबाक लेल

सगर राति दीप जरय...

रमण रमानन्द- आनन्द विभूति

गेरआ गर लगौने छथि

मलंगिया महेन्द्र

मसनद पथरऔने छथि

समालोचक- उदोषक सूतय

मात्रि वाचक मंच धिकरय...

कहैत छथि बुढ़ पी

तखन गोष्ठीमे आबि

नाटक करबाक कोन पयोजन?

दीप बाबि दुआबि नै जराउ

जे जगदीश जागल रहत

ओकर गामक खनगी के सुनत?

ओ अछि समाजक कात

कखियो होमए देब

ओकर साक्षत्य सानिाक पभात

छकएक तँ ओ छिक वेमाि

जइ माछक अन्हारके

सुरज नै हटा सकल

ओ केना हटत माछक दीपक बल...?

जौ दृष्टकोणमे रहत लि

तँ छवेक केना बआमलि?

ओइ कठकोकाक सबहक बीच

मैथिली थिथि दुबकल

सगर राक्षा दीप जरय

अन्हार घर संस्कार सयि

कसिँ केना पारस ेआकसय...?

## कमर्योगी

ने भगता योगी आ ने डलबाह हरखक तरंग नै,

नै थ्यपश्चाक आह पश्चलुक दशनि कश्चया भेल नै

अथि मोन जश्चयासँ देखैत थियश्चा वएह गंभीर मुस्की ..

ककरो उपहास नै ककरो पश्चहास नै, नै

ठोरपर वसन्तक गान नै

श्चअमे गीषमक मसान

नेना सभक थ्यय अध्यापक कमर्योगी-

अपकल कोना भेलश्चा थ्यतामह चूश्क?

रीश्चाक कालपुरखक नाओं- कामदेव!!!

कोनो नै काम भलमानुष श्चाष्काम

तेसर पहरक थ्यझनीक बाद

जगतािीक श्चात्यक दशनि

तामझामक गाममे रश्चतो

थीपुंडसँ मुक्त भऽ चिक हाथि

तपणि आब की मंगैत छथि बाबा?

झबरल आंगनमे शक्त सहचरी

जाइ रथ-शष्याक कारणके आत्मसात

करबाक लेल लोक करैि अनगलि पलाप

कथा किछु चाश्म रचैि

चोख कऽ आडंवर करैि

तनयक र पमे ओ दुनू

बाबाक आंगनक िवण कुमार

“अचला” चंचला बना देलखा

कन्याक उपहार

दु:खक सोतीमे जखन अकुलाइत

िक मनुक्ख तखन आश्मताककता जगैि

भूख मुदा! श्वारथ्यत बाबा नै करैत छथि

भगवानसँ िल, सुिमे जल मन श्ारमल....

समाजमे िश्ह शीतलताक आह

सदेह कश्व नै तखन वैदेहीक चाह?

अपने नेपथ्य मे रश्ब

नाटकक कएलश्ा श्ादेशन

देश्ल वयनाक पश्ा कमकि गश्ा अपिण

एकाि पहसन श्ाश्व अकथ्य कश्वता गश्ब

कतेक आजाद भऽ गेल श्वन्हार मुदा!

इजोतक सोत तक श्वरही अन्हार

कोनो नै िश्ह  िह सबहक

उत्कषि हुअए यएह आश,

यएह मोह की बाह ण की अिप

की िनुक की गोप सबहक बाबा......

जइ गािक श्ीऐ िहश्व वएह उतुंग

वएह िृग श्ाकश्ब हुअए वा नरकश्ब

स्वीकार करैए पतिक्षा समाजके

बाबा सन चेतनशील मनुक्ख के

जे संस्कार लुटाबए सबहक कल्याणक लेल

अन्तर्मनसँ सोहर गाबए...।

एकटा ि ली आरती

एकटा ि ली आरती

भदेसक भारती

आगा ‘राय’ की लागल

ओ सभ बूझ्म गेलथि

श्कि आर

श्वरूप वा होश्वायार

ि लश्वा खि ाम देबाक आश

भदेसक काता

महा भदेसमे ि थि-

हुनका पि ाइन लाथ्या गेल ि श्वह

आन श्कएक जाएत

केना पि ाएत

श्कनौ नै होमए देलक

मुक्तक काव्यक आश पूर

केओ नै गेल भागलपुर

आरती रहि गेली

कथाक नै

अन्तर-आत्मासँ हुअ गेली

मुँहजोड़ि भाषामे

जे राखत आत्मासँ

विदेह-तनुजासँ सिनेह

आत्मासँ गेह

सबहक हएत वएह दशा

भोगए पड़ितहि

उतराधिकारीके क्लेश

सभ सुनक लेल बला देतथि

जहानसँ भगा देतथि

मारि हमही टा नाचब

हमही देखब

के सूतल के जागल

के नै बूझय

जे करत पयास

ओ भऽ जाएत अभागल

ऐ माटिसँ उपटल वैदेहीके

आन भूमिक लोक

माटिमे मिला देलथि

मुदा अपन आरतीके

अपने साङह खसा देलकथि.....।

(लेखिका आरती कुमारी लेल)

अमिला-पुि

अमिलाक बेटीके सहए पलिआ

झमेल्सया बआहक दंश

सतभैया पोखलसँ पंचवटी िधर

ेभकसुन तकलौ

कतहु नै भेटल

सभ राकश सभ कंश

नअ मास नल्ब

पैसल्क बरख िधर

मयना उठबैत रहलीह

पसव वेदनाक टीस

तखन जा कऽ भेल

जीवन संघषकि जीत

ल्ववसेमे तरेगन बहकल

थ्यदेहक आङ्न जनमल जगदीश

मौलाइल गाछि फूल गमकल

तापसमे भैटक लावा चमकल

पूवागहक चपेश्वमे

जाश्वा-पजाश्वाक गेठमे

ओझरा कऽ मैथ्थिली

भऽ गेल छिन्न भ्यामूलि

बेदम्म गजेनक आश जागल

सुखैत गुल्लश्वमे फूल लागल

रमकल थ्यानगीक जीत

वैयथ्यत्तक नै-

पश्चझैत गामक थ्यानगी

माछि मेहछि आ बेरमा नै

मौरंगसँ श्वामश्वया छिश्व

चमथ्यक उठल इंरछिनुषी अकास

केकरो नै िल विशास

विजक मुरदैयाक संग-संग

अिपक सोती बहत...?

स्वाभाविक िल उपहास हएब

मुदा! तिरस्कारक कोभ नै

जीवन-मरण तँ पकृतिस् लीला

तखन केकरोसँ केहेन देष?

अवतारवादक सेहो होइ पराभव

केओ पनही देत की नै

कोनो तृषणा नै

नै उतिनक आश

पतनसँ घृणा नै

अकाल भेल तँ असाढ़ बाबा कऽ

राोि-दिन समरसता दीप

जि बैत रहल

अपन गीताजश्च गाश्च

कम्प्रोमाइज करैत रहल

कोनो कलुष कम्प्रोमाइज नै

गि-गमि समन्वयवाद

कलमे टा सँ नै

जीवन दर्शनमे सेहो

चश्च गेला भोगेन्र

नै तँ उतर भेश्च जइतए

यािी, आरसी आ फजलुरसँ

सेहो कोनो तुलना नै

आन इचना-पोठीक कोन गप्प

लोक चानी नै टलहा कहए

श्चज नै बुश्चिबक बूझए

संस्कार नै ििब

खाटी किसान मजदूरक रूप

बह बेलामे कलम कियाबखि

सरल विल बेरमाक भूप

एहन साम्यवादी-

फासीपर चढ़ि जाएब

मुदा बटोहीके अलाह

बाट नै देखाएब

केकरो नै सुनलक

संतक्षाक कोन कथा

अदालती सेहो सहैत रहलीह

ऐ लेखनक सेहो देल व्यथा

ने केकरो तर करब

ने केकरोसँ ऊपर जाएब

सबहक शोणितक एकहि रंग

कएलक थ्यरोि क्यवसि ा बेढंग

मरल गरीबक बाप मुदा की

पुरश्चत-पाि के भश्चगर चाही

ि ूर-ि ूर बास श्चका गेल

काश्च काश्च लुटबैत बाहवाही

लेस माि नै दया अगजके

श्चमहश्च-श्चमहश्च अि ि -उचि वास

कश्चयो नै अश्चला पएर पुजाबश्चि

कतए राम ि र भूत श्चशाच?

सभा बजौलश्चा ि िनुक टोलक

अपनश्च जाश्चमे पंश्चत देखू

भाज पुराएब जश्चल कमश्चिाण्डक

माइक समान नै ि रती बेचू

माि बाटपर आनय खाश्चार

करै ि श्चि पश्चाकण सामन्त थ्यरोि

सम्यक समाज श्वासलेमे बनतै

जगा रहलाह समभाव बोि

अकेपसँ नै गंग ि्आबश्वि

तखन केना कऽ हािि्आइत

मन: दीपसँ ेश्वयमे तकबै

श्वासला पुि स्पन्दन हएत...।

(ि ी जगदीश पसाद मण्डल जीके समश्वित..)

सुखार

काल रहसल ािस बहकल

मिुमासे संािस महकल

अषाढ़ कुश्यत इन्र र सल

जल बुन श्वनु श्वआ श्यहुसल

आश्वि चहकल खेत दिकल

पशान्तक पकोपे मनसून सरकल

शोश्वत कलकल जुआनी गरकल

रोश्वणी-आरदरा सुखले रमकल

“ग्लोबल-वाश्वमिंग” फनकल

कुब्िि पकृश्वा सनकल

श्यजानक चमत्कारमे उच्वास िनकल

गािि काश्वट फोर लेन बनेलौ

पश्वुने श्यकअए नै नवगिुली लगेलौ

अपने गश्वाक स्टेयश्वग पकिलौ

मजूर किसानके घर बैसेलौ

कृष्ण पनि देशमे नोरक स्नात

आँखिक शोणितसँ केना भीजत पात?

ऐ बेर सुखाड़ साउनो बीतल

दीनक आत्मा तीतल

भदैया बूड़ल रब्बीक कोन आश

सुक्खल मुरदैया मरझल कास

अगिला साल आओत बाढ़ि

देलौ खेतिहरके ताड़ि?

वाह रौ विज्ञान वाह रौ निर्मान

बनु हथियारे लेले गरीब-गुरवाक जान

जकर भऽ सकए संलयन आ विघटन

आयुवेदमे तइ रसायनक चर्चा

विज्ञानक बाढ़िमे सगरो पोलीथिन

कागत ि थ्रि बाच्च रहलौ प्लाश्टकक पचा

आजुक रसायनसँ माच्चक कोश्च उजा ल

ठुट डाट श्क ि नै मजा ल

प्लाश्टक ि थ्रि श्नअ जूटक बोरा

पोलीि ीन नै ठोगा-झोरा

ि ाि रौ ि निचकर

एडभान्स बनबाक चकर

पकि अपन बाप पुरखाक देल हथ्यिार

ि रे मौश्नक संस्कार

केश्नकलसँ नहा तँ लेबे

मुदा! की श्नबेबे....?

गजल १

कालराथ्रमे महमह थ्रनमान कोना आएत

मोनमे पाप झबरल भगवान कोना आएत

नक्ष्र जॉ पाण वायु मरल सरल देह संग

अभि नीचा खसत मिगिगनमे थ्रलाएत

माझ आंगन काटक बोन नक्ष्र रोपू थ्रयतम

काग कोइली सन कोमल संतान कोना पाएत

थ्ररह मासमे ने सोहर सोहनगर लगै ि

कंठमे थ्रत चभटल मंगीत कोना गाएत

अपने कर  रास लीला नेना दूि बनु कानए

कमभीर  पुर खके जयकार कहेन हाएत

गजल २

कहू की बात हम माधुर्यक कलुष भऽ गेल अछि अपनि
कोना सहबै अखल कंटक दबै छै टीसतर तपनि

सोहाबै नै खुशी सरगम समाजक हास पथ्थलक्क त
िनै ि देल कालक गद्य गदराबै नै थ्यकल जीवन

पश्चात आयश्व आकुल भेलै जिल अणिग तरंगे छै
सूतल ईश सभ पंकि एलै समभावमे थ्यचलन

बाहरसँ जे जते गुमसुम श्वुआसँ ओ ओते ब्वखिर
चानन बहलै उषाकाले वाह रौ जहानक संकषणि

भेटल जेकरा जतऽ अवसर हा िलक हलालीसँ

नीलामक मंचपर चढ़ते करै माछक नेह पक्षा गजनि

हाइकू

सूतल जग/ धुनकर लाश्चमा/ जगा देलक

रश्चक लाली/ /ऐ सूतल जहाके/ जगा देलक

बखाक बाद/ खहखह पाइन/ वसुि ा तृप्त

सन्दीप कुमार साफी (पश्चद श्करण), जन्म ७ जून १९८४ श्यता ि सीताराम साफी, माता- िमती सीता देवी, गाम- मेहि, भाया- झंझारपुर, श्जला- म िबनी। श्वाक- बी.ए. (पश्वाष ।), मैश्थिली।

<u>सन्दीप कुमार साफी- बैशाखमे दलानपर- समपणि- अपन श्यता ि सीताराम साफी आ माता िमती सीता देवी के समश्यत।- भाइजी आनन्द कुमार झा, नाटककार लेल।</u>

—

<u>बैशाखमे दलानपर- गद-पद श्मश्रत (आत्मकि खण्ड, कश्यता खण्ड, श्यहश्म कि खण्ड, लघुकि खण्ड, श्यचार श्मन्दु खण्ड)</u>

आत्मकथा खण्ड

*(मैथिलीमे दलित आत्मकथाक सर्वथा अभाव रहल अछि। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा मैथिलीक साहित्य, समाज आ संस्कृतिक केँ झकझोरैत ओइ अभावक पूर्ति करैत अछि।- गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह)*

आत्मकथा

जीवन एगो संघर्ष होइत अछि, संघर्षमय होइत अछि। ऐ संघर्षमे कियो-कियो आगू निकलि जाइत अछि तँ कियो अपन जीवनमे बहुत पाछू छूटि जाइत अछि।

ओही संघर्षमय दुनियाँमे एगो हम छी, जिनकर नाम अछि संदीप कुमार साफी माने चिकरण। स्कूलमे सन्दीप नामसँ जानल जाइबला अओर गाममे सभ चिकरण नामसँ पहचानैए। गाम+पोस्ट मेहथ, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनीक रहनिहार हमर जन्म अति गरीब परिवारमे भेल। हम जातिक डोम छी, हरिजन (दलित) छी। गाममे सभक कपड़ा धो कऽ मा-बाबू हमरा सभक पालन-पोषण केने अछि। हम चारि भाइ-बहीन छी, जइमे हम सभसँ बड़का छी, तइसँ छोट हमर भाइ-बहीन सभ अछि। हमर जन्म ०७.०६.१९८४ ई. मे भेल। ओइ जमानामे सस्ता सभ छलै, तैयो हमरा सबहक भरन-पोषण झूर-

झूरइतो चलए। अ-आ सँ कबीर कान तक हम सभ दुखीरामसँ पढ़लौ। थ्कि थ्दन बाद बाबूजी सरकारी स्कूलमे नाम थ्लखा देलक। सरकारी स्कूलमे पढ़ाइ चलै तँ ठीके-ठाक मुदा हम सभ ओतेक थ्कि बुथ्झ नै पथ्बाऐ। ओहेन गारजनो होसगर नै जे देखथ्बतए जे की थ्लखलएँ, की थ्लखलएँ। मुदा ि रे-ि रे आगू बढ़लौ।

ि टमे माए एकटा बकरी थ्कनलक जे ओकरोसँ थ्कि र पैया आमदनी हएत तँ कहुना गुजर-बसर हएत। ि कि थ्दन बकरी सेहो चरेलौ अओर बकरी बेथ्च हमर मा ओहीसँ एकटा बाि लेलक जे ओइसँ दू कि आमदनी हएत आ ओइ पाइसँ अपन पथ्रवार सुखीसँ गुजर करब।

ई सभ काज करैत बाबूजी संगे लोकक ऐठाम कपि पहुँचेनाइक सेहो काज करैत िलौ।

थ्पि ला पाच दस सालमे जमाना बहुत आगू बथ्ढ़ गेल। पथ्हले एते बोइन नै भेटैत िलै जेतेक अखुनका समएमे भेटैत अथ्ि। पथ्हने एक मोटा कपि ि इ िल हमर मा-बाबू तँ थ्परहस्त सभ पाच सेर ि नि नै तँ दू थ्कलो आँटा दैत िलै। थ्कयो कपि ि आइ तरे पाइयक आमदनी नै रहलासँ मजूरीमे दू-तीन थ्कलो अल्लूए दऽ देलक। पथ्हने पाइ महग िलै आ अन-पाइन सस्ता िलै।

गाममे सबहक माय-बाबू इस्कूल भेजै मुदा हम जाइ लोकक कपि पहुँचाबऽ, तइयो साँझका टेममे अंगनामे बोरा थ्बि कऽ पढ़ैले बैसए हमर थ्पथ्सयौत भाय राजू भैया, तखन हमहूँ पढ़ैले आबी तँ दू-कानसँ

बीस कान तक सखलौ। ओकरा बाद अपन गामक इस्कूलमे नाम सखा देलक, हेडमास्टर ि ल पसने कोइलखक यादवजी, हुनका कस बाबू, जे एकरा कनी देखबै। सक ि सन असना समए कटल, चौ ि-पचमामे बढ़ला बाद सकताब पढ़ला सक ि आस गेल तँ गारजीयन कहलक जे चस जा बौआ पीसा संगे, ओतै नेपालमे रसहऽ। गामपर खचाक सकत तँ हेबे करइए, से नै तँ ओतै काज-राज कसहऽ अओर ओतै रसहऽ। पढ़ाइ-सखाइ आब ि ि ऽ। पस-सास कऽ की हेतै। १९९४ ई. क समएमे हम चस गेलौ नेपाल। ओतै दीदी संगे रही, सभ सन कपि ि इ अओर संगे पहुँचाबैले जाइ। अओर आबी तँ लकि ि चुि पर भानस करी। भोरे तीन बजे उठी कपि ि इले। ओइ समए हमर उमेर बुझू जे ११-१२ कऽ ि लए। सक ि सन ओहू ठाम गुजारलौ। तकरा बाद हम फेर गाम एलौ। हमर बाबू कहलस जे आब नै जा, सक ि सन पढ़ऽ। कमसँ कम मैसको तक पस लेबऽ तँ कतौ ने कतौ सरकारी नोकरी भइये जेतऽ। हमरा जेतबे जुि त ओतबेमे हम गुजर करब मुदा तूँ पढ़ऽ। तकरा बाद हम कोसया इस्कूलमे नाम सखेलौ। ओइ ठाम ि ठासँ सकलास चलै ि लै। फेर ि ि कि सन गामेमे रस कऽ माल-जाल चरा कऽ हाइस्कूल तक गेलौ। मुदा समए एहेन आएल जे फेर हम पढ़ाइ ि ि स पंजाब चस गेलौ। ओइ समएमे हम ि लौ नौमामे। गेलौ ओइ बास्ते जे हमरासँ ि ि ट बहीन ि ल, घरक गारजन कहलक जे बौआ गाममे रहलासँ आब सक ि नै हेतौ, से नै तँ चस जा लोक सभ संगे ब ि का कका लग चण्डीगढ़। कतौ नोकरी ि रा देतऽ, कइहक हमर नाम जे बाबू

कहलक यऽ। हमर कका बतौन साफी जे बी.ए.क डिग्री पाप्त केने छलए, वएह सोचि हमर बाबू हुनका लगमे पठौलथि जे ओकरा कनीक बुझि छै, कतौ नीक-नीक नोकरी पकड़ि देतै। मुदा हमरा लगमे कोनो सर्टिफिकेट नै रहए, से हमरा कतौ छोटो-मोटो काजपर नै राखए। कोनो औफिसोमे नै राखए जे ई तँ पढ़ल लिखल नै अछि, सभ दफतरमे से कहए। आखिरीमे काका एगो पेस आइरनक दोकान कऽ कहलक, एतै आइरन कर। नया आइरनक दोकान, कोइ गाहक आबै, कियो नै आबै। एक-दू महिनाक बाद काका हमरापर शक करए लागल जे ई पाइ कमाइ अइ मुदा हमरा नै दइए। हमरा मनमे बहुत दुख हुअए जे हम कतऽ आबि गेलौं, खेनाइ खाइ लऽ जाइ तँ कहए जे दोकानक भाड़ि आब तोरे भरऽ पड़तऽ चाहे दोकान चलऽ या नै चलऽ। ई सभ सुनि मन व्याकुल भेल जे आब ऐठाम हमरा रहलासँ कोनो फाएदा नै हएत। आब एतऽसँ जाइए पड़त। ओही ठाम गामक कतेक लोक रहै छलि, तेकरा कहि-सुनि हम कोठीमे काज करए लगलौ। एक महिना भेल तँ गाम जाइ कऽ भाड़ि भऽ गेल। एलौ काका लगमे जे हम गाम जा रहल छी। तँ काका कहलक, रुकि जा, हम टिकट बना दै छिअ। एक दू दिन रुकि जा। गामक लोक जाइत छै, तेकरा संगे हम गाम पठा देबऽ।

तइ बीच हमरा संग एगो घटना भऽ गेल जे हमरा पएरमे आगि लागि गेल। हमरा पूरा पएरमे, पएरसँ एड़ीसँ जाघ तक झड़कि गेल। आब हम बड़का समस्यामे फँसि गेलौ। उ घाव हमरा तीन महिना तक बिछाघरी कटेलक। असगरे साइकिलसँ एक पएरे पाइडिल मारि कऽ ऊँच-नीच रस्तापर सँ जाइ छलौ दवाइ कराबैले चण्डीगढ़ शहरसँ दूर

ि गाम िनास, ओइठाम। कम पाइमे डाक्टर दवाइ दै िलै। सप्तामे तीन बेर जाइ िलौ दवाइ कराबैले। जेहो रपैया कोठीसँ कमा कऽ अनने िलौ सभ पाइ ककाके दऽ देलौ। एकर समाचार जखन हमर मा आ बाबूके पहुँचल तँ बहुत कानल जे कोहुना बौआ केकरोसँ पाइ लऽ कऽ तूँ गाम आब जो। ओही ठाम ि बुिन अओर कोरैला, तेकरासँ पाइ लऽ कऽ गाम चल आ। हम गामेपर ओकरा पाइ दऽ देबै। ओही समएमे हमर बोडिपरीक्षाक फॉमिभराइ िलए, यएह काक अगहन मनामे हमरा केकरो दारा ची समाद आएल जे जल्दी गाम आबऽ जे कि न पइढ़ो लेबऽ अओर घाव से ि जेतऽ। हमर फॉमिहिमर संगी मनोज पासवान सभ भ देलक। कि बुझल ने सुझल, ने गतक जान ने संस्कृतक जान। तैयो परीक्षा मिबनीमे वाटसन स्कूलमे भेल सन २००० ई. मे, जखन दू मना बाद जल्ट आकलल तखन मनमे जएह िकिकी िल सएह भेल। हम परीक्षा पास नै कऽ पेलौ। आब तँ अओर मोन दुखी भऽ गेल जे आब की कएल जाए।

तकरा बाद कोइ ने कोइ कहलक जे संस्कृत बोडसिँ परीक्षा दहक। एक बेर बाबू तँ हमर मानलक मुदा मा कहलक जे आब सभ पढ़ाइ-खाइ िि, चल जा मयौत भाए संगे बंगलोर। हम फेर बंगलोर चल एलौ। ऐठाम काज भेटल खानाक केटगमे, कुक सबहक कपि िइ कऽ काज भेटल। कि न बाद गामपर सँ हमर वाहक बातचीतक समाचार आएल जे तूँ गाम आबऽ। फरबरी-माचमे हम गाम गेलौ। बाबूजीके कहयल जे वाहमे जे दहेज देतऽ ओइ

दहेजसँ अओर एक सालमे श्किु रपैया अओर लगा कऽ बश्िनक कन्यादान सेहो कऽ लेब। श्किु भाि-बतिन अओर ओइमे लगा देबै। ई सभ मजबूरी देख हमर श्ववाह २००२ मे भेल, पण्डौल गाममे, जइ गामक पिासिमे कनी हश्ट कऽ अश्धि भवानीपुर गाम, जइ ठाम महादेव उगना रप िारिण कऽ श्वदापश्िाके दशिन देने िलश्ि जे अखन श्विश्िलामे सुपश्िद अश्िि, कश्व श्वदापश्ि अओर उगना महादेव। हमर श्ववाहक पिात एक बेर फेर हम संस्कृत बोडसिँ परीक्ा देलौ, अओर ओइमे हम श्ितीय िीणीसँ उतीणि भेलौ। हम ई परीक्ा केिाही-रामपटी स्कूलसँ देने िलौ २००५ मे। तेकरा बाद पुना हम अपने गाम लगमे कॉलेज िल श्िवनन्दन-नन्दश्कशोर महाश्वदालय, भैरवसिान ओइमे एडश्मशन करा कऽ आइ.ए. मे, हम फेर आश्ब गेलौ बेगलोर। तकरा बाद ओइ केटश्रंगमे आदमी बश्ढ़ गेलासँ हमरा ओइठाम काज नै भेटल तँ हम फेर एतौ एकटा कोठीमे काज पकिलौ अओर गाम आश्ब कऽ इण्टरमीश्डएट परीक्ामे फेर शाश्मल भऽ गेलौ आ अहूमे सेकेण्ड श्डवीजनसँ पास भेलौ, कोठीएमे समए बचए तँ पढ़बो करी, श्कताब गामसँ लऽ कऽ जाइ िलौ।

संग-संग बश्िनक कन्यादान सेहो भऽ गेल भगवतीक दयासँ। ओही श्ववाहमे श्किु खचा आ कजा भऽ गेल बेसी। कोठीमे दू हजार रपैया श्दअए मश्िना, ओइमे घरक खचा अओर ओम्हर अपन पढ़ाइक परीक्ा फीस, पलसमे पश्िवारक सेहो खचा।

फेर बी.ए. मे नाम श्लखेलौ अओर फेर चश्ल गेलौ बंगलौर। हमर श्वषय िल आटि जे कोनो टयूशन श्बना पश्ढ़ सकै िलौ। हमरा

इण्टरमीडिएटमे श्वन्दी श्वषयमे ज्यादा अंक आएल ि मुदा अपने नै रही गाममे तँ हमर संगी ि राकेश कुमार ठाकुर, लगैमे हजाम, वएह ि हमर फॉमभिरश्वहार, परीक्ष शुल्क जमा केश्वहार, हुनका मैथिलीमे ज्यादा अंक एलै, ओइ वास्ते हमरो उ यएह ऑनसश्वषय रखबा देलक।

गाम एलौ तँ मन श्वकि पिताइतो ि जे आबक जमानामे आटकि पढ़ाइ श्वकयो पढ़ै ि, मुदा मैथिलीक जखन नाम सुनश्वाऐ तखन मन गदगद भऽ गेल। हँ, मुदा श्वकताब भेटल बहुत मेहनश्वा कऽ कए।

हर साल पाच सएमे श्वकताब खरीदऽ पिए, ओहूमे जेरोक्स पना। तेकरा पश्चा कऽ हम बी.ए. फस्टक्लाससँ २०११ ई. मे पास केलौ लश्वात नारायण श्वथिला यूश्वावश्वाटी, कामेशर नगर दरभंगासँ।

ताऽत हमरा बालो बच्चा भेल। पढ़ाइ संग-संग एकरो सबहक देख-रेख केनाइ माय-बापक दाश्वात्व होइ ि। तखन हम फेर गामसँ बेगलोर आश्वा गेलौ।

कतेक बेर पैराशुट रेजीमेटमे बेगलोरमे भतीमे बहालीमे गेलौ मुदा असफल रहलौ। ऐबेर गाममे एस.टी.ई.टी.बला परीक्षामे सेहो शाश्वाल भेलौ मुदा उहो असफल रहल।

आश्वा गेलौ बेगलोर जे आब ओतेक कोनो नीक एजुकेशनो नै अश्वि जे कतौ नोकरी हएत, तैयो कोनो काजमे लागल ि। भगवतीक

दया, आगू हुनका हाथिमे छिन्हि। हमरा दूटा बेटा अछि अओर एकटा बेटी, बड़का अछि राजकुमार साफी, छोट बेटा सागर कुमार साफी। तइसँ छोट अछि राज नन्दनी कुमारी। अखन ई सभ आंगनवाड़ी स्कूलमे पढ़ैत रहल अछि। ओतेक पाइ अछि नै जे पाइवेट स्कूलमे धिया-पुताके पढ़ाएब, दिनोदिन महगाइ बढ़ले जाइत अछि। हम सभ बी.पी.एल. कोटामे शामिल छी। धीरे-धीरे एतबो शिक्षा भेलाक बादो कोनो नोकरी नै भेटैए। लोक कहै छलिए जे एतेक पढ़निहार बड़का अफसर होइत अछि मुदा हम सभ शिक्षित नै कऽ पाबि रहल छी।

हमरा संगीतसँ बेसी झुकान रहैत अछि। गीत गेनाइ हमरा बहुत नीक लगैत अछि। मैथिली होइ बा नेपाली बा हिन्दी, हम ओहू गीतके गाबि सकै छी। कीर्तन-भजन केलौ अपने गामघरपर संगी-साथी संग। जीवन एगो घड़ीक सुइया होइत अछि, दिन भरि, राति भरि चलिते रहैए, कखनी बन्द भऽ जाएत किनको नै पता अछि।

हम अपन ऐ मैथिलीक माटि-पानिसँ जुड़ल हर एक बातक सम्मान करब। अपन भाषाके ऊँच शिखरपर पहुँचेबाक पयास करब।

हम मैथिल छी, मिथिलेमे रहब अओर पोरो साग तोड़ि कऽ गुजर करब। सादा छी सादा रहब। जय मिथिला, जय मिथिला धाम, पणाम।

कविता खण्ड

भकजोगनी

भुकुर-भुकुर बती बि

राइतक अन्हरियामे

हाि-हाि नै सुझैए

जेबाक अछि टोलपर

कुकुर भुकैए झाउ-झाउ-झाउ

साइक बजैए ि अ

हािमे नै अछि लाठी-ठेगा

नरझिया करैए सोर

मैझला बाबा गबैए भ्रागुनि

तमाकुलपर मारै चोट

बौआ कनैए भगजोगनी लए

बिए चाहूँ ओर

पकि रोउ, भुल्ला, होकवा

ठहा-ठहै अन्हथ्रयामे लुती

नेने मापिर नारक आँटी

िरिराइ ि ी हम पिुआरमे

रौदी भऽ गेल

ओह, की पुि ि समधि

जे ि लि सब चौपट भऽ गेल

सब थारहस्तक खेत मुँह बाइब गेल

खेतमे देखलौ दराग्र फाह्य गेल

पाश्न खान ि नि ओश्नना सुख्न गेल

डोका सब कतरा घुश्न गेल

डकहर सब ओश्नना उधि गेल

आब ओ कहा िरक ओ रेती

ि िया-पुता ऐबेर की खेती

ऐबेर तऽ नै अधि जनेरक आशा

की जाश्न हएत की दशा

अखाढ़ मश्नना थक ि खेत सुख्न जाइ

कलयुगके देखही रौ भाइ

कहैि हमरा सबहक माय

जे चाश्च साल अश्चना रौदी भऽ गेल

डकही सन पोखश्च सुश्च्च गेल

बि का-बि का पीपर सुश्च्च गेल

बेलक गाि मे बेलो नै भेल

मालजाल सब पाश्च श्चनु तरसए

मेघसँ एको बेर पाश्च नै बरसए

जटा-जश्चन के गीत सब गाबए

तैयो नै इन्र भगवान सब  जागए

डबरा-डबरीसँ बेङ सब भागए

बौगुला सब टुकुर-टुकुर ताकए

रबी-राइ मरहना भेल

सौसे खेतमे केसौरक पंना भेल

आबक दुलार बेटा

आबक दुलार बेटा दू ि भात नै खाए

जतऽ देखए चुन-तमाकुल ओतऽ दौ ि ल जाए

कनी दय- दय- दय

भोर-साझ नै पढ़ए ि ौ ि

ि ऽ कऽ थी थी आए

कश्ायो थ्कि ु कहबै तऽ

भुँइए ओंघराए

माइयक श्बगार बेटा ि ा ि ी भात खाए

इसकूल जाइ नामसँ ओकरा मा ि ा दुखाए

पश्बरै लऽ चाही ओकरा

जीन्स पेन्ट टीसट,

श्द्न भश्र अंगनामे एकोबेर ने श्च्कत

उ ि ल रहैए जी ओकरा

टाएल-गुल्लीपर

कखनो देखबयौ ओइ खेत तऽ

कखनो बान्हपर

पढ़ैले चाही ओकरा कोपी कगथ्मया

दुए थ्दनमे देत कोपी थ्यलथ्मन थ्खया

आबक ीया-पुता बरड खच्चर

बापक नाम पुबै तऽ कहत मचि

संस्कारक हीन भेल

पाइयक चीन्ह भेल

आवारा लुच्चा भीन भेल

सपनामे देखलौ

भाइ रौ सपनो कतौ सच भेलैए

महीसक पीठपर कहूँ मंच होइए

देखश्चलयौ भश्च राश्चा नाच गोपीचन के

अपने ि◌ गुअरटोलीपर

महीस चरैए ि◌रऽ कातमे

ओ कैतकी पूश्चामीक राश्चा ि◌

माएनटलबला लाइट ि◌

ि◌अ कऽ हॉरन पीपर गाि◌पर बाश्चा रहल ि◌

ओ श्चालेबी कचरी मुरही

गमि◌ के ओजरी बनओने ि◌

रश्च-रश्च कऽ ढोल श्चारदङपर

मुरही के फका लगबै ि◌

भोरे उठलौ महीस घरमे तऽ

गोबरक चोिपर पिल ि◌ी

कौआ कुचरैए पाहुन अबैए

आइ कौआ कुचरैए

हमर पीतम अबैए

जखन हमर पीतम ऐता

तखन तोरा हम बिस्कुट खुआएब

बहुत आस लगौने ि◌ी

कचक तीमन पकेने ि◌ी

मन िल मारा मािआबैतौ

दुिाक मन हिषितकबैतौ

आइ अंगना नीपै ि◌ी

दुआिबहारै ि◌ी

सँउसे टोल बिस्कुट

चकलेटक हकार दै छी

आबि रहए गै लुखिया

तोरो देबौ बिस्कुट

आउर दालमोट

थिआ लय आइ तरआ तरब

खमहरआ अल्लू भालकोर तरब

भौजी ननदिके फाउन करब

हमरा लय नीक नीक साड़ी अनथिन

आउर पसाधिन सैण्डील अनथिन

पाच दिन पहिलने ई बात कहने रहथिन

जूि शीतल

अ्थिलाक पाबश्न जूि शीतल

भोरे ियापुताक मािं तीतल

ओम्हरसँ आबए

बिका भैया

लोटामे भरने ठंढा पाश्न

मािपर दैत जाइए काइन

ओइ श्चन बनबैए

बिी पूरी आउर सतुआ

पाकल बिी भीरीमे

जाइए कठुआ

भोरे सब स्नान ध्यान कऽ

गोसाइ लग गुि आउर चढ़ाबैए

फेर बाइस पाबश्न श्चनसँ

स्वगीय बाबा दादीके

पाश्नक कलसा चढ़ाबैए

होली जेना सब जूि शीतलमे

मीट-माउस सब खाइए

ऐ पाबश्नमे मुश्नगा दाइलक

आउर आमक श्वकुलाक बहुत महत्व अश्चि

अपन श्नश्चिलामे ऐ चीजक

साश्चकेसँ बहुत स्नेह अश्चि

आसकथ्आये गंगा दूर

भोरे उठैए दातमैन करैए

भाग पीथ्ब भकुवाए रहैए

अपने एको बेर खेतक आइरोपर ने जाए

थ्वन भथ्ब जनसँ टहल कराबए

हइद घ ी आक ि तहर पीस खाए

खाली अइ दलानसँ ओइ दलान जाए

सदखथ्आ िकरी तास खेलाए

ओही सबसँ, थ्वनभथ्ब नहाइसँ नै फुरसथ्आ

बेमाए फाटल अछि

लेहू बहै अछि

एगो गोली खाएब से

एकोरती फुरसति नै

बारीमे मुसहागा सोहरल अछि

दूटा तोड़ि खाएब से टेम नै

ियापुता डेराइत रहैए

काजे डरे पिाइत रहैए

आसकत्ताक भरल बुढ़बा ई

कतौ जाइतो नै अछि कहबै की

कुि कहबै तँ फनैक उठैए

माथ करै लाए सनैक उठैए

एक ठाम गेलौ बश्चयाती

भाइ रौ एकठाम गेलौ बश्चयाती

खा कऽ फूश्च उठल हमर ाती

पश्चने देलकौ पेप्सी कोला

पीब कऽ उठलौ पेटमे जौला

चटे देलकौ श्चगजी नास्ता

ओइमे ालौ श्चस्कुट खस्ता

तुरते एलौ तैरपातक चाह

पीब कऽ मन कहलकौ बाह

झट दऽ अनलक पान सुपारी जदा

खा कऽ उालौ सब श्चकयो गदा

पाच मिनट बाद बैसेलकौ भोजन पटी

देख कऽ कुश्रयाए लगलौ कनपटी

आब हम कोन पेटमे खाएब

तैयो बैसलौ भोजनपर

आलू अनलक अल्लू तरआ आउर खमहाउर

संगे आएल तरका पूरी

पलेटमे बरहलाग कुरी

आलू अनलक माछ मूड़ा

काटक लगा देखाऐ बड़का कूरा

नजरि पड़ल रसगुल्ला दस

खीच देखाऐ एक-डेढ़ सए पीस

अन्तैपर आएल दही-नून

सुरीक कऽ भेल पेट गुरम

छि-छि हाथ-मुँह सब छिलौ

जेबीमे जनेउ सुपारी लेलौ

सहश्च कऽ गाि सीटपर बैसलौ

श्चन भश्च अन-पाश्च नै पीलौ

हजमोलाके गोटी खेलौ

बानरक माया पुँपिर

जखना बानरक माया  रहैए पुँपिर

तखना माइयक माया रहैए

बेटी आउर पुतपर

जन्मसँ रहैए संगे-संग

बियाह-दान बाद रहैए सब तंगे-तंग

सबटा पीलक एके माइयऽ दूि

नमहर भेला बाद बिसरि गेल दुख

बेटी भेली अपन सासुर गेली

बेटा अपनामे मारा-मारी केलक

माइयक दूिमे घोरलक माहुर

अपनामे लेलक घर-घरारी बाँटि

अपन मइते जीअ लागल

तारी दार पीअ लागल

केकरो कियो नै कहैबाल

अनकरे गपे जीयैबाला

माइ-बाप सब देख रहल अछि

आँखिसँ ढप-ढप नोर बहै अछि

बुढ़बा बुढ़ियाक सामि घिचि गेल

बाजत की चुप्पे रहि गेल

पंचनामा

हँ तँ भैया आब तऽ अपना सब बुढ़ भेलौ

झगरा झंझट खूब केलौ

आब ने होइए माश्च करी

अपनामे नै सब श्चकयो लि ी

ि ियापुता सब नमहर भेल

पश्चनुका जुग आब नै रश्च गेल

सब श्चकयो अपना-अपनापर भेल

कमाइ-खटाइ सब बाहर गेल

चल एक-दूटा पंचनामा बनाले

पाच गोटाके आइ बैसाले

घराि सँ लऽ कऽ खेत तक

बारीसँ लऽ कऽ डोरा तक

सबहक कागज अलग बनाले

जमीन सबहक रसीद कटाले

अमीन आश्च कऽ नपा जोखाले

खेत आइरपर कतरा लगाले

जे ियापुतामे काश्चि झंझट नै होउ

अपनामे सब मील कऽ रह

कोनो बात ि तऽ अपनामे कह

माय-बापक बात सह

मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै

गामघरमे देखल जाइए

इस्त्रिगनपर अत्याचार बढ़ैए

काम-काजू जननी सब भेल

काज करैत देख थकि गेल

भोजन भक्ष घास-भुसा करैए

सासु ननदिक बात सुनैए

बच्चा सबहक नेरपन करैए

तहूपर से भानस करैए

अंगना घरक काज करैए

मरद-पुरुख सभ कोढ़िया भेल

साझ-भोर पसीखाना गेल

एक श्चदन कमाइले नै जाइए

पाच श्चदन बैस कऽ खाइए

तहूपर से कानून बश्चायाइए

नून-तेल घरमे आश्चा कऽ नै दय

खाली नीक-श्चाकुत खाए

ने कश्चयो पूब-पश्चिम जाए

ओ बेचारी फुटै कानए

लोक सब श्चाल कऽ तना मारए

मारैके मन घरवालीके तऽ

कहैए सागमे श्चकए ने हरदी देलही

ओ सभ सभसँ गेलही रौ

भाइ रौ की हालचाल छौ

ठीक-ठाक छौ ने

दलानपर आइ बड़ चहल-पहल छौ

देखै छीयौ माहौल गरम छौउ

आइ कोइ कुटुम अबै छौ की

एह बाल्टीनक बाल्टीन शरबत घोराइ छौ

कागजी नेबोके गमक आबै छौ

भोर आइ आँखि लाल लगै छौ

मुँह सेहो भभकि रहल छौ

कनी टोलबैयोके देखहुन

हमहूँ छीयौ दोसे-महीम

ओ सभ सभसँ गेलहुन

रौ संगे-संग कबडी खेलेलौं

खता उपश्चि गरचुनी मारलौ

पुआरमे पका कऽ ओकरा खाइ ि लौ

अखैन बश्च गेलाए बबाजी

कहै ि आब नै श्चकि खाइ िी

सौसे भश्च श्चिन झूठ बजै िाए

साि भऽ कऽ ई की करै िाए

ऊपरसँ िाए साि

तोरा मनमे लागल ि कादो

एको बेर केकरो नै पुि िाए

तखन तोरा लय की साउन की भादो

जे श्चकयो माि खाए मुरा-पुँि समेत

से बैकुण्ठ जाय नाश्चत-पुत समेत

चल जे केलाए से ठीक केलाए

तुलसी माला के िारण केलाए

जँ माला तोिलाय तऽ

भगवान घरमे बारल जेमए

र सनाहैर

यै गामवाली यै घुश्ब जाउ

अश्कना होइ ि अपनामे

मारा-मारी झोटा उजारी

नै गै बहीन हम नै रहबौ

आइ हम रेलमे कइटे मरबौ

एकरा घरमे एक रती चैन नै

सब कहैए हमरा डाइन अइ

एक तऽ हमर माए-बाप अभगलाहा

जे घर बि भेल जरलाहा

पेने मुंगरीए हमरा मारैए

हम कोनो बैसल रहै िि

गै माए गै, रौ बाप

गतर-गतर कऽ हमरा फोिलक

घरसँ हमरा बाहर कऽ देलक

हम ओकर आब बौह थिऐ

जाबे नै भाएसँ थ्यटबेबै

ताबे नै हम चाइनसँ रहबै

नै तँ आइ कनैल पीस पी लेबै

हे कथ्याया अहा एना नै कानू

ई दुथ्यायाक रीत थिऐ से जानू

झगिा सबके ओथ्वना होइ िै

एना कहूँ लोक जहर थ्यबै िै

चलू-चलू गामपर

िोिा कानैए बान्हपर

की कहू हम

बि-कथ्यायाक झगिा

पंच भेला लबरा

घर ऊँच आ कान बुच

हेयउ ओकरा ओतऽ जाएब

हम कोन रस्ते जाएब

ई कोन गाम थिऐ

हुनकर नाम की थिऐ

थ्थकयो कहबे केलक अथि

ओ बि निीक अथि

दुआथ्पर हाि घोि अथि

ऊँच-ऊँच िनिऽ बोरा अथि

अहा हमरा पुि ि तऽ सुनू कहै ि

तऽ बैसू अहा, हम आबै ि

यएह गामक नाम ि

अहा बैसले रथ्ते जाएब, हम अथ्बते रथ्ते जाएब

देथ्खयौ ओकरा ओतऽ जे जाएब

बुझ्झयौ कुकुरेसँ कटाएब

ओतऽ झबि‍ी कुता रहैए

भथ्‍ब थ्‍वन झाउ-झाउ भुकैत रहैए

खाली नामे ओकर सुनबै

अंगनामे गुरो-खुदी नै देखबै

खाली नामे ऊँच आउर कान बुच

हम सब बाजब की रहै ि‍ी चुप

झगरा करै लय सन-सन करैए

ठाढ़ हएत से जी प‍ि‍ए

ओकरासँ हम सब की लागब

अपने अथ्‍ि गामसँ बारल

पथ्‍ाष ा लय हम सब मरै ि‍ी

ओकरामे अहा की भीरै ि‍ी

जाउ जतैसँ आएल ि‍ी ओतै जाउ

अपने घर नून रोटी खाउ

सरलो भुना तऽ रहुअक दुना

आबक िरा सब बड सुकुमार

भोरहरवामे ओकरा लागए गुमार

काजऽ नाम सुश्न लागए बोखार

चोरी करै लए करय जोगार

भश्च श्चन जीन्स पहीर िक घुमए

लेटा-लेटाके चीलम चुमए

अपने तऽ गेल मुदा पिश्नयो लऽ कऽ गेल

देहपर दीनक बारह बजैए

फाइसनमे खाली चुर रहैए

बापक श्चयाहमे फटफश्चया देलकै

बेच श्चकीन कऽ ओकरो खेलकै

नासेइ काल बनासेइ बुद्धि

चाउर सलिौ आब खाइए खुदी

पोखरि धस ओझना नै जाएत

मोटर साइकलपर िख जमाएत

एकरे सभ सन थारहत भेल

खेतो बाड़ीसँ उबजा गेल

आब ने ओहन मनुख देखाइए

जे हर जोतबा कऽ खेती करैए

हमहूँ सब उबजाबै छिलाऐ

चारि-चारि कठाके तामै छिलाऐ

साठि सालक हमहूँ भेलौ

अखनो तक हम नै अकलिौ

रौ सरलो घुना तऽ रहुअक दुना

हमरा जका जखन हेमा तूँ

की जानी की करमाए तूँ

बा ीक पटुआ तीत

जे कहबौ से तऽ करमाए नै

थ्फजूल पाइ करमाए खचा

कमाए तऽ प ै नै ी

हम तऽ बाप थ्रीयौ कहबे करबौ

आब हम बुढ़ भेलौ

ई राज पाट तोहर थ्रीयौ

एखन तोहर सबहक जमाना ी

हमहूँ सब पढ़ै ि थ्श्राऐ

एना नै लाट सहाएब बनथ्श्राऐ

गामपर सब काज-राज सम्हाथ्र कऽ

बाबूके खेतक आइर-कोन बना कऽ

टेमपर स्कूल सेहो जाइ छिऐ

करै नै छिऐ एको रती भूल

पाएरमे चप्पल नै पीठपर बैग नै

जाइ छिऐ कलमे-आइरे-धुरे पढ़ैले

हाथिमे सबटा किताब कोपी पजीयओने

पानिमे भिजैत रौदमे तपैत

संघर्षमय शिक्षा पाबै छिऐ

नै छथि होस्टल नै छथि कोचिंग

फ्लोरपर गाछि लग पढ़ै छिऐ

हमरा ओतेक तऽ पाइ नै अछि जे

नीक स्कूलमे पढ़ेबौ तोरा

हम सब कहा पढ़ै छिऐ पब्लिक स्कूलमे

तैयो फुरझार अंगेजी पढ़ै छिऐ

आइ-काल्हि एगो ई रिति भऽ गेल

गाव-गावमे पाइवेट इस्कूल खुइल गेल

भुसकोलहो सब मास्टर बअ्ा गेल

हम तऽ एतबे कहबौ जे गामेमे पढ़

मुदा तूँ कहमय जे म्ुबनीमे पढ़

हम तऽ यएह कहबौ जे बािक पटुआ तीत

जतेकके बौउह नै ओतेकके लहठी

समधि एकटा भैस लेबाक अथि

चलू लऽ अबै ि ी लोफा हाट सऽ

अहा तऽ बुझै-सुझै थिऐ

एकटा खुटापर मालोजाल रहनाइ

ि जर री

बाल बोि सब दुि लय रहैए बेल्ला भेल

गोबर करसी के हएत सुथि ा

पाहुन पि किलए दुि ताकऽ पिऐ

गुरा-भुसा जे अनका दै थिऐ से अपने खाएत

ओहुना दुि अखुनका जमानामे

महगसँ आसमान िने जाइए

कीन कऽ एतेक खाएब अहा तऽ भैसक पैकार ि

बहुत श्चनसँ आइ-काइ करै ि

जे एकटा महीस लेब

बेटा-पुतौह बाहरे रहैए

गामपर असगर बैसल नीक नै लागैए

अहूमे तऽ लागल रहब

दूि बेच कऽ मरोमशालाक तऽ पाइ हएत

जरबै लय श्चापरी-गोइठा तऽ हएत

अिाए समश्चि, मश्चसक खोराक तऽ बुझले अश्चि ने

एक टाल नार पुआर चाही ३ मश्चनामे

ढक कऽ ढक भुसा खाएत

आउर भोरे पोखश्चमे नहाएत

ओकर गोबर गोत िबऽ पति

धान-राशि मेहनति करऽ पति

आ मसूसक दाम चालीस हजार अछि अखन

उहोमे चारि बियान महीस के

बाप रे बाप ओतेक मे हम नै सकब

िाि नै लेब

जतेक के बौउह नै ओतेक के लहठी

मन लगले रहि गेल

मन छल एगो जमीन किनितौ

चार कात जमीन घेरबितौ

ओइमे एगो फ्लैट बान्हितौ

जीप मोटरकार किनितौ

नोकर-चाकर दरबान रखितौ

ओइमे स्वीमिंग पुल बनैतौ

सभदिन ओइमे स्नान करितौ

बड़का हम बिजनेस करितौ

हवाइ जहाजपर से चढ़ितौ

बजनेसमे अपन नाम कबतौ
अथिलाक आगू नाम कबतौ
हम अथिलाक वासी ि ी

मरैतखीन रसगुल्ला खाएब
जवानसे बुढ़ भेलौ
बगहा-बगहा हम कनलौ
रती-रती कऽ हम जोि लौ
जौ-खुदी खाके खेत कनलौ

मालदह कलकबाया आम रोपलौ
बासक बटक ई तऽ नै अथि
पोखब-झाखथि ई तऽ नै अथि
सब पोखबमे रौह नेन  मारा अथि

दुरापर जोि-बि द टाएर अथ्नि

िन-चाउरके कमीए नै अथ्नि

तीनटा बेटा पुतौह भेल

अपनामे सब भीन भऽ गेल

नाथ्ना-पोता सब पढ़ै-थ्नखैए

के देखैए बुढ़बाके

सुतल रहै ि, दबकल रहै ि

हम असगरे दलानमे

असगर खाइ ि दोसर बेर के पुिै़ए

राथ्नके रहै ि अनहारमे

एकटा खाट आ एकटा सुजनी

राथ्न भथ्न मच्िर खूब कटैए

एकरती डिबियामे तेल दैए

कुछि देर बरि कऽ ऊहो बुताइए

लालटेन लाय मन लगले यए

जूता लय मन तरसैए

खोखीसँ दम फुलैए

दवाइ के करबैए

गोदान कालमे बेटा पुछैए

बाबू की रसगुल्ला खाएब

पाण जाइए छुटि

मुँहक बात मुँहे रहि गेल

जय मिथिला जय मिथिलेश

जय वैदेही जय मैथिल

माघक शीतलहरी

बाप रे बाप होइए पाण चश्का जाएत

मन नै होइए ओि`नसँ उठी

जवानक ई हाल तँ

बूढ़क की

भश्व माघ श्यअब सभ की

पाइनो बरफ भऽ गेल

श्चन भश्व िइनसँ

आँश्वि नै सुजहाइए

ओाइ-श्वाइ सभ गेल तीश्का

सन-सन-सन-सन

पिवा बहैए

केरा पातसँ बुनी खसैए

हाि पएर सभ सुन भऽ गेल

लोचना करए बाझीक िि रा

सुटकल रहैए दलानमे बगरा

एक मच्छनासँ रौद नै भेल

आलू गाि सभ गच्छ गेल

बाप रे बाप, होइए पाण चच्छ जाएत

रसगुल्लाक जबार

नोत दै ि यौ नोत दै ि

रसगुल्ला जबारक नोत दै ि

हम आएल ि महरैल गामसँ

समुच्चा गामके नोत दै ि

मुखिया जी यौ

लखन काका

आइ साँझुका हम नोत दै ि

थयोर िनासँ बनल रसगुल्ला

काशी भाइ यौ नोत दै ि

पश्चल तोरमे पहुँचब सभ गोटए

सबेरे सकाल कऽ नोत दै ि

पूरी तरकारी अओर देब

तखन

तइपर सँ देब रसगुल्ला तोथ

नोत दै ि यौ

नोत दै ि

रसगुल्ला जबारक नोत दै ि

बसंत पंचमी

सरस्वती पूजा सभ साल जेना

हरेक सालमे आबैए

श्रद्धा सभ हर्ष उमंगसँ

माता लग शीस झुकाबैए

माघ मासक शुक्ल पक्षमे

ई सुन्दर पाबैन आबैए

हरियर-हरियर तीसी-मौसरी

सरसौ कऽ फूल फुलाइए

जोर-जोरसँ पि‍बा हबा

ि‍ऽ कऽ गदा उि‍बैए

देखि‍यौ आम आ देखि‍यौ महुवा

सभ अल सुगन्‍ि‍ सुंगहाबैए

गाि‍मे हि‍यर नवका पता

रौदामे चमक देखाबैए

नहू-नहू बहए पुरबा हाबा

होलीक गीत सुनाबैए

धि‍या-पुता सभ बैठ आइरपर

गहुम गोइढ़लाक ओरहा पकाबैए

बसन्‍त पंचमी सभ लोकके

अपनामे अलाबैए

काश्मीकक पूर्णिमा

जेबै देखैले मेला कमलाके

सभ सालमे मेला लागए जोर

नहाइले जाएब भोरे भोर

हेतै ओही बाउलपर कुस्ती

खाएब तोश्री कऽ कुश्मयार

माए बहीन सभ खेलए

सामा चकेवा

भसबऽ जाए ओइ श्किनार

चुगलाके चूि दही खुआ कऽ

लेवान श्वन चूि कुटाए

उक्खश्रीमे।

जोतलाहा खेतमे भसाबए

सामा चकेवाके

पूर्णिमा नहाइले जाइ कमलामे

मेला लागैए दुनू पारमे

नाच तमाशा हुअए अ ा र दल

बिकाए झिल्ली मुरही

अधिलामे माए बहीनके

भाइयक मानल जाए ई पाबनि

सालमे एक बेर नाम भ्रअए

भाइक सभ बहीन

हमर भइया रहए जु ाएल।

गामक इनार

चलए अलान सभ लोकके

भरै लौ एक ठाम पानि

अपनामे रहै लिए बाजा भूकी

रहै लौ सभ अक्का-जुक्का कऽ

घर-घरमे आब भेल कल

लोको सभ भेल अल कल

खीचि ने पाबए इनारक रस्सी

ने रहल टोलमे एकता

के राखए पोखरि इनारक सेखता

साधकक देनके होइए अभास

कोनाके बुझाएब प्रयास

विलुप्त भऽ रहल अछि इनार

कतऽ गेल घैलाक पाश्मा

ओही ठाम करै ि लौ स्नान

रहै ि ल गामक शान

देवी-देवता रहै ि ल पसन

मन रहै ि ल शुद

रखै ि लौ शुद-अशुदक मान।

अप्पन गाव

अप्पन गाव अछि साफ

लग-लगमे कलम गाछ

स्वच्छ हवाक सुगन्ध सुंगहाएत

बाट बटोहीक मन बहलाएत

हँसैत-हँसैत कऽ पोखरि इनार

स्नान करै छी ओइ किनार

महारपर सुन्दर पाखैर गाछ

कौआ मएना करए किलोल

भोरे देखै छी कौछ चलैए

रस-गुल्लिक सुगन्ध आबैए

हरियर-हरियर गहुमऽ खेत

कालसँ बहैए कमला रेत

गावसँ बनल शहर बजार

खूब बनए पापि अचार

गामक ीि ई रीश्चा-श्चवाज

सभक करए आदर सत्कार

बैशाखमे दलानपर

आउ यौ यार, खेलाइ ि ी तास

बैस कऽ अखन करब की

चलू करै ि ी टेम पास

बेर झुकतै तँ

जाएब करैले घास

चण्डाल सन रौद लगैए

चाश्च बाजऽ जा रहल अश्चि

लगैए अखन एक बाजल अश्चि

महीस खोलब ओइ बेरमे

पोखश्च लऽ जाएब नहाबैले

सुतलोमे गरमसँ नीक नै लागए

खाटोमे उ ीस करैए

करि-मरिसँ नीन्द नै अबैए

पुरबा हवा सेहो पेट फुलाबए

घामसँ देखू गंजी भीज गेल

कौआ डाढ़िपर लोल बबैए

मेना जामुनपर झगड़ा करैए

बगड़ा दलानपर ची-चू-ची-चू

गीत सुनाबए

एहन गरम नै देखलौ कहियो

राशिके मच्छड़

सभनके माछी तंग करैए

आउ यौ यार खेलाइ छी तास

सेवा

मन होइए कहितौ

बेटाक बियाह

पुतहु लेल सुखक गरल अछि

काज करैत काल आब देह थाकि गेल

भानस करैक

शक्ति नै अछि

बेटी भेली, अपन सासुर गेली

असगर अंगनामे नीक नै लगैए

होइत पुतहु तँ

एक हाथ सेवा करितए

मुदा एगो बातक डर लगैए

पुतहुक चचा देख टोलमे

अही सेवासँ ख्यात हराइए

पढ़ल-लिखल कनिया सभ गेल

आदर सत्कार सभ बिसरि गेल

आठ बजेमे, सुति कऽ उठए

चुल्हि अंगना सभ, अधिना पड़ल-ए

के करए ससुर-भैसुरक परदा

रीत-रेवाजक उड़िबए गरदा

एकर देखसी करए, सभ कनिया

ई नै लागए ननदि, साउसके बढ़िया

ऐ पढ़ल लिखलसँ घास-छिलनी नीक

मन होइए कहितौ बेटाक बिआह

पुतहु लेल लिखक गरल अछि।

वर ब्बकाय लगनमे

वरक रेट नै पुि यौ बाबू

मारा मािक जेना दाम बढ़ैए

कनीको पढ़ल-श्वखल रहल तँ

बेटाबला अप्पन मोि सीटैए

लिकीबलाक खेत ब्बकाइए

देखू जमाना ताल ठोकैए

दुिक श्चमाण्ड अछि,

पाइ सन करी जमा

श्वखल-पढ़लमे सभसँ तेज

पँचमामे पाच बेर

अठमामे आठ बेर

दसमामे दस बेर लिका फेल

एहनो लिका लगनमे बिक गेल

वरक रेट नै पुिछ यौ बाबू

मारा मारि जेना दाम बढ़ैए।

ब्रहग्न कि खण्ड

अनि थ्वशास

काकी गोर लगै थ्रियश्रा, बैसि।

-के, उिीसावाली कश्राया।

-हँ काकी, श्राके रहै िथ्रि।

-की ठीक रहब कश्राया, तैयो ठीक िी। बुढ़-पुरान भेलौ, हमरा सभके तँ ई पुरबा हवा जान लेबऽ लगैए। साँसे डार ठेहुन बातरससँ कनकनाइए। कोनो दवाइ नै काज करैए।

-आबि, बैसि। एक तँ कतेक श्वद्न पर भेट भेलथ्रि यऽ।

-नै कश्राया। आँगनमे बरड काज ि। आइँ यै कश्राया, भुखनो बच्च्या आएल अथ्रि?

-हँ काकी, मरनीक बाबुओ एलश्र्वन।

-कश्राया बच्च्या सभ सेहो एलश्रा।

-नै काकी। अखैन बच्च्या सभक गरमीक परीक्रा चलै ि, तइ दुआरे ओकरा सभके नै अनश्र्वाऐ। आब गमी िटीमे सभ आम श्वाच्च्यी खाइ लए अबै िश्राह।

-आँइ यै कश्राया, मरनी तँ आब श्वयाहैवाली भऽ गेल हएत।

-हँ काकी, ओकरेले कतौ लिका ताकै गेल छथिन। काकी मािथ केहेन लागै छिन्ह। आबि कनी तेल दS दै छथियन्हि।

-नै कनियाया। आइ जाए दियऔ, आउर दोसरो दिन आएब।

-मािथ फहराइ छिन्ह तेल दिनु।

-से तँ ठीके कहै छी कनियाया। हमर रसना दिल्लीसँ हमरा लए एगो नवरतन तेल ठंढा बला, पाचटा साबुन नहाइ बला, दू टा कलो सफि पठा देलक, जे माय लगा आ जे िकछु घटतौ तँ फोन कएिहएँ। ने, अखैन कनियाया रिह रायके समय छै, भूसा गदा सभ मािथमे भरि जाइत छै। बरड गपशप केलौ कनियाया, आब कनी जाए दिअऔ कनियाया।

-ठीक छै काकी जािउ। हमहूँ भानस करS जाइ छी काकी। काकी दिनका भनसा भS गेलिन्ह।

-नै कनियाया। हमहूँ जाइ छी। कनीक पिआरमे सँ भोरे अिहकौि तोिड़ आएे, तकरे चका बना कS झोरेबै, कनीक आिमल दS कS। तेहन हमर पुतोहु भेल कनियाया जे अखैन तक दािल तरकारी नून, से नून-जाउर बना दैए, कहियो अनूने। कहियो अन तीमन नीक नै बनबैए। कनियाया अहाके नीक लगैए अिहकौि।

-हँ काकी, हमरा सबके ई कतS पाबी।

-ठीक ि तऽ हम अपना िटा नाश्चान श्चया पठा देब बाटीमे। जाइ िी कश्चाया।

… … … … … … … … … … … ..

-बिकी दीदी, बर ड गप्प सरका चलै िलै रसना माएसँ। की बात ि, अहूँके गुण जादू श्चाखबाक अश्चि की?

-नै िटकी। तोरा सभके यएह पश्चयाहा मन सभ श्चन मन खराप राखै िी।

-नै यै दीदी। एको मश्चना नै भेलै, सुगौनावालीके देहपर पाचटा देवी पठौने िलै। कतेक ओझा गुणी एलै, तखन जा कऽ कनीक अन-पाश्च खाए लगलैए। सभ कहै ि हकल डाइन ि। िटका बेटाके माश्च कऽ श्चाखलकैए।

-िाि ई सभ बात। तूँ सभ गामघरमे रश्च कऽ अश्चना सबके डाइन आउर जोश्चान कहै श्चश्चन। ई सभ अनश्चशास श्चऐ। समाजमे ईएह सभ बातसँ झगिा होइत रहैए आउर एक दोसरके डाइन कहैए।

साउस पुतोहु

-कनिया, घरमे छी यै?

-की भेलनि माए?

-आँइ यै छीँकावाली, एतेक बेचेनसँ सुतै छथिए छी यै? दुपहरक काज-राज अहिना पड़ल छै। कनी महिसोके पानि देखा ने दितियौ, पियासल महीस खुटा तोड़ि रहल छै। एतेक कहूँ मनुख सुतए। कतेक नीन आबैए अहाके यै।

-तँ की कर, सुतबो नै कर। भरि दिन खटैत-खटैत हाथ-पएर कारी-झामर भऽ गेल। ओम्हर बालका तंग करए, इम्हर भानससँ तंग। दिनका होइ छै, हम भरि दिन खटैते रही, हमरासँ नै हएत महीसके पानि पिआए। हमर माथ बड़ जोर दुखाइए, डार-पीठ सेहो तोड़ने जाइए। एखन हमरासँ किछु नै हएत कएल।

-आँइ यै, एतेक कहूँ पुतोहु बानसखिर हुअए। सुनियौ यै ढुकरीक माए। अहा सभ कहबै जे साउसक दोख। हम की बैसल छी। भरि दिन गोरहा पाथैत-पाथैत दुपहर भऽ गेल, एक टाएर गोबर लिखहन।

एखन तक पूजो नै केलौ। कखैन खाएब कोनो ठीक नै। ऐ महरानीके देख्थयौ जे हमरेपर हा ि-पएर चमकाबैए। ब ि का ि ि टका कऽ आइयक कथ्याया कोनो माने-मतलबे नै राखैए। अपन जएह मोन भेल वएह केलक। के खेनहारके देखैए, जे ससुर भैसुर खेलक थ्क नै, अपन पेट भथ्र गेल, दोसर आब जेना रहए। अपन भूख तँ चु ि ा फूक, दोसरक भूख तँ मा ि ा दुख। भगवान हमरे बेटाक कपा ि मे ई नथ्मथ्याया ब ि ाए ि ल। जाइ ि ी नहाइ लए, एकरासँ मुँह लगाएब तँ अपने मुँह खराब हएत। मुदा एकरा जाबे तक बेटासँ थ्यटबाएब नै ताबे तक हमहूँ सुख-चैनसँ नै रहब। हमहूँ ऐ कनथ्मथ्यायाके देखा कऽ रहब, जँ बेटा वशमे रहत तँ ऐ जनानीके केहन होइ ि ै। साउससँ जवाब-सवाल केनाइ सभ हम देखा देबै। महीस जेना नाथ्रि देबै।

पुतोहु- देख्थयौ यै मकरा काकी। हम सभ सुथ्ा रहल ि ी। साउस कहूँ पुतोहुपर एतेक आथ्ा-बाउल ढारै अइ यै। थ्खखरी माए, हमर साउस पथ्इने पुतोहु नै ि लै की, जे पुतोहुके एना सताबै ि ै। जँ ई बुथ्ढ़या बेटासँ हमरा माथ्र थ्खया देलकै तँ घरमे यएह रहत थ्क हमही रहब। झोटा-केस हम नै उखाथ्रि लेथ्इाऐ तँ फेर की।

साउस- यै, सुथ्ायौ यै टोल-प ि ासिक लोक सभ। ऐ भत खोखरीके हम कोन आथ्ा-बाउल ढाथ्र देथ्इाऐ जे ई हमर झोटा-केस उखारत। कोनो हमरा थ्कयो देखनाहर नै अए। आइ आबऽ दही बुढ़बाके, नै थ्क ि ु कहलकौ तँ फेर की।

पुतोहु-हा-हा, देखब ने अहा हमर की बिगाड़ि लेब। जँ बेसी ओम्हर-आम्हर करब तँ हम िटका भाएके फोन कऽ के नैहरे चलि जाएब। तखन अहा अहिना असगरे चुि फुकैत रहब। किनया मरतै ई बुढ़िया, हमरा जानपर अछि।

सगुन

ठकोकाका- हरिश्चन्द्र बाबू। एना माथिपर हाथि लिआसँ काज-राज चलैबला नै अछि। किछु एक तँ अपन पुरखा सभलामे भऽ एलैए जे परम्परा, तेकरा तँ निमाहबाइए पड़ैत। किछु एक तँ अखुनका जड़ मनसूबे चलि रहल अछि, तेकरा संग हमरा लोककेँ चलऽ पड़ैत छै। अच्छा, खएर बात अपन समाजमे गरीब होइए वा धनिक, मुदा बेटी बियाह कोनो तिरानीए भइए जाइत अछि। तइ लेल घबड़ेबाक कोनो बात नै। सभ बाबा उगना ठीक कऽ देथिन। ठीक छै तँ जाइ छी हरिश्चन्द्र बाबू, ठीक छै।

हरिश्चन्द्र बाबू- आ ठको काका। हा कहू, की कहै छी। देखियौ जे चढ़ैत शुदमे बेटीक कन्यादान कऽ के हम सभ सेहो जल्दी जाए चाहै छी। तइ दुआरे काका हम अहाके सलाह लेबअ लए आएल छी। जल्दीसँ कतौ भाज लगेबै।

ठकोकाका- हरिश्चन्द्र बाबू। ओना हम सखबारमे एगो लड़िका देखने छिऐ, हमरा बड पसन्द आएल। लड़िका बंगलोरमे इन्जीनियरिंगक तैयारी करैत अछि। बुझबामे आएल, लड़िका नीक गोरसँ संलग्न अछि। भाव-विचार बड मधुर आ स्वभाविक सेहो छै। मुदा हरिश्चन्द्र बाबू, लड़िका कऽ माय-बाप नै अछि, ओकरा मामा-मामी आ नाना-नानी पालने अछि।

हरबति बाबू- ठकोकाका, जँ अहा ओ भाज लगबतौं तखन तँ बुझु जे सभ ठीके-ठाक रहतै।

ठकोकाका- ओ लिका बुझु जे अहाके सेट भऽ गेल। सगुन ठीक अछि अहाक यौ हरबति बाबू।

हरबति बाबू- शुभ लगनमे देरी की। जे नगद लेता अओर लिका जे लेतहुन, हम सभ देबनि दै लेल। चैनके गलामे देबनि, मोटर साइकिल देबनि। मुदा ओ लिका हमरा बड पसन्द आएल। ठकोकका, अहा जल्दीसँ ई चकर चलाउ। हमर कन्यादान भऽ जाए। जल्दीसँ सगुन लऽ कऽ जाउ, गोर लगै ि।

# लघुकथा खण्ड

ओगरबाह

बि श्वन भऽ गेल भात खेला।

मरआ रोटी खाइके आब मन नै होइए। रोटी श्वबाबैमे आब सकै नै ि। दाश्वमे जँ लोश्वया मेरचाइ नै दैत अश्वि तँ दाश्व रोटी खाइमे स्वादे नै अबैत अश्वि आ बेशी मरचाइयो खेलासँ पेटमे सुलवाइ सेहो हेमऽ लगैए।

पुतोहु देख कऽ खौझाइए जे श्वना मरचाइके बुढ़बाके एकोरती रोटी ससरै नइए, अखन देश्वयौ जे सँउसे नुए-वसि श्वनओने अश्वि।

ई सभ सुश्व आउर देख कऽ हमरो नीक नै लागैए, लोक देख कऽ सेहो दुर िया करैए, कश्वया एतै अगहन मास जे खूब खइतौ खेसारी साग, भात आउर अल्लूक चटनी।

मन िश्वक गेल गामपर बैसल-बैसल, जवान तँ ि नै जे जाएब पंजाब-श्वल्ली खटै लए। आब गामेमे रश्व कऽ माश्वक श्वरहस्त सबहक खेत ओगैर कऽ अप्पन बाल बच्चाक गुजर करै ि। िनऽ मासमे िन ओगरलौ, गहूमऽ मासमे गहूमके, रवी महीनामे रवीके ओगरलौ, ओहीसँ अप्पन जीवन श्वतैए।

… … … … … … … … …

बकिा थारहस्त सबहक खेतक देखभाल केनाइ। अखार मासमे जखन अप्पन रोपनी खतम कऽ लैत छलि, तखन खेतक देख भाल केनाइ ओगरबाहक काज रहै छलि।

सब थारहस्त अप्पन गामपर आबि कऽ नछिनी मरकिे कबइ दै छलि जे कनीक हमरो खेतक देखभाल कबहऽ, जे हेतऽ ओगरबाही से हम खेतेमे एगो कोन बाबि कऽ दऽ देबऽ, तऽ ओगरबाह अप्पन देख-रेख करै छलि, खेतमे आइरसँ पाबि आकालनाइ, साढ़-परासँ बचेनाइ। ई सबटा काज ओगरबाह करै छलि। छिनक कटनी होइ समएमे सब थारहस्त ओइ ओगरबाहके साल भबक बोइन दऽ दै छलि।

उहो अपन ऊँचगर जगह देखि कऽ एगो खोपछी बनाबैत छलि, आउर ओही खोपछीमे रहि कऽ अपन छिनक देख-रेख करै छलि, आउर छिनो खूब उपजबै छलि। भदै, जसबा, मलीदा, जेकर भात अंगनामे बबातए तऽ दलानपर ओकर गमक जाइ छलि।

मुदा आब ने ओ छिन रहल आने उबजा रहल। सगरौ देखै छी जे उबजाउ माटि काटि कऽ सकि हाइवे तैयार होइए, अइ शहरसँ ओइ शहर लेल रस्ता बनैए, कतेक उबजै छलै कुसियार कमला कातक माटिमे, तऽ उबजा सब छिनेसँ अछि, चाहे ओ छिन हुअए या गहूम या कुसियार मुदा चापी जगहमे तऽ पाबि सब छिन भरले रहैए, खाली ओइमे सोउरखी, भेट, अरचाइ, केसाउर उबजैए, छिन पबाछिन लोक सब भेल जा रहल अछि सुकमार, सगरो देखै छी जे खेनहार भऽ गेल बेसी आ उबजेनहार भऽ गेल कम।

खाइ लाए चाही अमीर जका, से गरीब घरमे पतरके चाउर भात आउर खेतमे जखन कहबै ियापुताके जे एक िअ कोदाव पारऽ तऽ कहत हमरासँ नै हेतऽ, अपान जनसँ कराबऽ, हमरा हाि मे फोका भऽ जाएत, देहमे एकोटा बचा मा नै लगाबऽ चाहैए, कहबै जे बौआ कनीक बाबाक खेतमे चौकी दऽ आबहक तँ कहत हमरासँ नै हएत, हम तऽ काउलेज जाइ ि, ब िका मजीसटेट बनऽ।

पढ़ाइ तऽ जर रीए ि, मुदा संग-संग खेनाइयो ने ि, भुखले तऽ पढ़ाइयो नै भऽ सकैए। पढ़ ाख कऽ जखन हम र पैया कमेबै आउर ओइ र पैयाके हम खा लेबै से तऽ नै हएत, ओइ टाकासँ हम िन-गहूम, मर-मसला, तेल-नून लेबै। तखने ने हम ओइ पाइक कोनो काज बुझबै, जे ओइ पाइ कऽ कोनो काज नै हेतै तऽ बैकेमे रखलासँ कोन फाइदा। ई पाइये तऽ लोक नै खाइ ि। जखन ई अने नै उबजतै तखन हमरा लोकक पढ़ै कऽ की फाइदा।

हवा आउर पा पी कऽ तऽ नै हएत जीअल, ओही दुआरे पढ़-ाख कऽ थारहस्त इनजीायर बनबाक चाही जे कसान सबके सलाह भेटतै, जे नै बुझै ि तेकरा सबके खेती-बाि क बारेमे ाखाएल जेतै, बुझाएल जेतै। ओना अपना मने थारहस्त सब अलए-पलए खाद ि ट कऽ अपने खेतक उवरिक शत घटा लै अ ि।

ओइसँ ओ फसल नाश होइते अ ि आउर दोसरोक फसलपर असर प ित अ ि, ओहीसँ उबजा नै होइत अ ि।

थारहस्त सब तबाह रहैत अइ, जे अहू साल उबजा नै भेल। अहू बेर रौदी भऽ गेल।

ओही संग बजार-माकेटपर अनाजक सेहो असर पलि, महगाइ बढ़ल जेकर दाम ५० रपैय्या तेकर दाम ९० रपैय्या भऽ गेल, लोक थ्मअत कोना, थ्वन-पश्नाथ्वन महगाइ आसमान िने जाइए, थ्वनोथ्वन जनसंख्या बढ़ले जाइए, काज करऽ आब थ्कयो चाहैए नै, यएह सभ चाहैत अथ्वि जे अिआ उपरेमे फित अथ्वि। पश्वने लोक हर-बिदसँ खेत जोइत कऽ िथ्वि दै िलै मुदा अखनी देथ्वयौ जे एकेबेरे िन आउर खेरही खेतमे बुइन दैत अथ्वि, खरे पतारमे, ने थ्कयो खर थ्वािलक, आने थ्कयो ढेपा फोिलक खेतमे, माथ्वट तरखायए नथ्वये, आउर गीलगरे खेतमे जजाइत िट दैत अथ्वि, तखन कहत जे अहू बेर दाथ्वा नै भेल, आब देथ्वयौ जे सबहक दरबज्जापर सँ िरे-िरे टाएर बिद हर-फार सभ उजथ्व रहल अथ्वि। सब एटोमेथ्वकक दुथ्वायामे आथ्वा गेल। टेक्टरसँ देथ्वयौ जे उपरे-ऊपर जोथ्वा दैए, खेतमे माथ्वट नै होइए, आउर ओइ लागल अन नै उबजैए।

पश्वने लोक सब हर-बिद राथ्वव कऽ सब सुथ्विा पाप्त करै िल मुदा अखैन देथ्वयौ जे सब थ्वारहस्त डेराइत रहैए, जे अइ बेर अन उबजत थ्क नै उबजत, थ्कएक तँ गोइठा गोबर होइत िलए, तऽ ओइसँ जरनाके सेहो काज पथ्वि जाइ िल, खेनाइयो बथ्वा जाइ िल, खेनाइयक सेहो स्पाद कुि अलगे रहै िल। आउर ओ िउर लऽ के खेतमे फेकलासँ कम्पोस्ट खादक काज करै िल, मुदा अखन देथ्वयौ जे घरे-घर गैस चुिा भऽ गेल, पेसर कुकर भऽ गेल, जइसँ

तुरन्त खेनाइ बनि जाइत अछि, कोनो नै छिआँ-छिकुरक झंझट, नकयो बुझलक, नकयो नै बुझलक जे खेनाइ बनलै कि नै, जतेक नीक छि ई गैस चुल्हि, ततबए खराबो छि जँ पेसर कुकर बास्ट भेल तऽ बुजहू जे घर संगे उड़ि जाइए लोक, बाचइ के कोनो उपाए नै। मुदा आइ काल्हि लोक भऽ गेल अलकल, एकटा सलाइ नै बारऽ चाहैए।

ओकरो लेल आब लाइटर चाही, गैस पजारैमे सुविधा हएत।

आब के पिसैए लोरही-सिलौटपर मसल्ला, सब आब मिक्सीमे पिसैत अछि। गाम-गाममे भऽ गेल आब बिजलीक कुटैया, आब ढेकीमे छिन, के खाइए ललका चाउरक भात, कहत जे एहेन फाटल-फाटल चाउर हमरा मुँहमे गरैए।

के खाएत आब सीम दाइ, आ बडी।

के भरैए आब घैलामे पानि। सबहक दुआरिपर आब चापाकल भऽ गेल, जखन चाही तुरन्त ताजा भरि कऽ कहत पिबअब।

सगरो देखल जाइए, तऽ ई सब चीज आब उठाइन भेल जाइए।

पछिने लेवानमे देखै छिलौ जे दाय काकी माए सब अदहा राइतीए अंगनामे उखैर-समाठसँ चूड़ा कुटैत रहल अछि।

काकी चुल्हिपर खापड़िमे लारनिसँ छिन भूजैत रहल अछि, होइत भिनसर चूड़ा तैयार भऽ जाइ छिलए।

मुदा अखुनका इसगिन सबके देखल जाए तऽ ओइ सब बेबहारमे सबसँ पाछू अछि, छ्नोछ्न सब चीज सब िटल जाइत अछि। आलसमे लोक बेमुक्त भेल जा रहल अछि, जे उबजै ि ओ खेत आने लोक करैए, साढ़-पारा खाइए खेतमे िन।

एक खेतक ओगरबाह, ओ भगा कऽ दैए ओकरा खेतमे, तऽ दोसर खेतक ओगरबाह ओ भगा कऽ दैए ओकरा खेतमे, सब अपना-अपनाके बचाबैए, दोसरके खुआबैए।

… … … … … … … … .

बि छ्न भऽ गेल भात खेला।

मरआ रोटी खाइके आब मन नै होइए। रोटी थ्मबाबैमे आब सकै नै ि। दाश्नमे जँ लोथ्माया मेरचाइ नै दैत अछि तँ दाश्न रोटी खाइमे स्ग्रादे नै अबैत अछि आ बेशी मरचाइयो खेलासँ पेटमे सुलवाइ सेहो हेमऽ लगैए।

पसीखाना

-भूखन, हौउ भूखन, अंगनामे िअ हौउ, कनी बाहर आबऽ। हम िी टेक्टरबला, मेहिसँ ऐल िी, कनीक लेबरक काज िलए, चाम्ब-पाचटा माश्चकटीबला। श्चानसरक आठ बाश्म गेलै। सुतले िअ हौउ, कनी बान्हपर आबऽ।

तखन एकटा िटका बच्चा, गाइरखुल्ले िँउरा, श्चनही बाटीमे बश्साया भात आउर मुरै साग खाइत अंगनासँ बाहर भेल कहैए- हमर बाबू सुतले ि। राश्चामे माएसँ झगि भऽ गेलै, भुखले सुश्चा रहलै, अखैन तक नै उठलै।

-आँइ रौ बौआ, तऽ माए कतऽ िी?

-माए गेलै श्चारहत खेतमे िनि काटै लाए।

-ठीक िी, तऽ जाइ श्चीयौ हम, उठतौ बाबू तऽ कइईहैन जे टेक्टरबला ऐल िलऽ।

कुि िनक बाद भुखना अंगैठी मोर करैत उठैए, आउर कहैए- कतऽ गेलाए गै गोपलखावाली, जल्दीसे हमर रौतुका माि भात ला।

भकुवाएले भुखना घरसँ बाहर आएल, आँखि मीरते देखैए अंगनामे केकरो नै तऽ बैसि जाइए, ओसारापर कनीक भक टुटलै तऽ अपन िटका बेटाके पुिए- कखया िए रौउ, करीया।

िटका िरा बकरी चरबैत रहैए। कनीक घरसँ हटकऽ खेतमे ऊ अवाज दैए- की भेललऽऽऽऽ बाबू।

तऽ कहैए- आँइ रौउ, देखही तऽ रौतुका माि घरमे िी छक नै?

ओकर बेटा कहैए- आँइ हौ, राितमे तऽ माए साग-भात केने िलै, माि-भात कहा बनेलकै। तोरासँ माए दसटा रपैय्या मागलकऽ तऽ माएके तूँ झोटा पकिि कऽ अंगनामे नै मारलहक, जे हमरा लगमे एकटा अधि नञ्जये आउर छुनका छदयैन हम तेल लय पाइ। तऽ माि-भात कहा बनलै, मुरै साग आउर भात बनल िलै। लागैए तूँ सपनाइत उठलऽ हन, जेहो बचल िलै भात सेहो हम दुनू भाइ खा लेबाए, आब नै ि हण्डीमे।

भुखनाके भुखे पाण जाइ िल, तऽ केलक की, ओसारापरसँ सीमेण्टबला िटका बोरामे अदहा बोरा उसना िन उठेलक आउर चलि गेल। दोकानमे ओकरा बेचलाकऽ करीब तीस रपैय्या भेल, ओइ पाइसँ भुखना अढ़ाइ रपैय्यामे एमपो बिस्कुट लेलक आउर चाि आनाक सलाइ आउर एक बण्डल बीिी लेलक, आउर एगो िछ्नाया

सुपारी ओकरा दोकानेपर फोथि लेलक सरोतासँ, आउर कुताक जेबीमे राखि लेलक। बिस्कुट खा कऽ पानि कलपर पी लेलक आउर एक टूक सुपारी मुँहमे लऽ कऽ गुलछियाए एगो बीिी रिा कऽ अपान पी रहल अए। करीब दू के समए भऽ रहल िलाए, ओमहरसँ चाबिटा आउर थियाक आबि रहल िलाए, उ सब भुखनाके संगीराए िलाए। ओकरा सबके भुखना देख के कहैए- की रौ दोस, कतऽ जाइ िाए?

-चल ने मुड बनाके आबै िी कोछियासे। दुवे सेरके देबै आउर सब गोटाए पान खाएब। साझमे घुमैत-फिरैत चलि आएब। अतऽ असगरे बैसके की करमाए।

-ठीक ि दोस। चल हमहूँ संगीए ताकैत िलाउ, जे थिकयो भेटत तऽ जाएब, तारी थिअ, मुदा थिकयो भेटते नै िलाए, चल।

एमहर भुखनाक कनिाया िानि देखके साँसे टोलमे लोकसँ पूथि कऽ गानि पिइ रहल अथि जे हमर ओसारपर सँ िानि के लऽ गेल? िानि कुटबै लाए रखने िलौ। िायापुतासँ पुिलौ तऽ ऊहो सब कहलक जे हम नै देखनियौ केकरो चोरबैत।

ओही कालमे थिकयो पूथि दैए जे आँइ यै गोपलखावाली, घरबला कतऽ गेल यै, चानि-पाच थिनसँ नै देखै िी।

-कतऽ जेतै यइ बहीन। गेल हेतै कोनो पसीखाना तारी थिअ। नै कतौ देखबै तऽ ओतै भेटत साझ-थिहान, उठोउना लागल ि। देखियौ

ने, डाक्टर कहने ि जे लीभर कमजोर ि आ तैयो नै ई बजरखसुवा तारी िि ि। साझो खन अही थ्यऐ खाश्चार बजश्चऐ तऽ झोटा पकश्चि कऽ मारलक, राइतो नै खेलक। हमरा लगमे पाइ अश्चि जे एकरा दवाइ करा देबै? असगर िन काटै ि, िया-पुताके पालै ि, दुटा बकि पोसने ि, ओकरेसँ िअ महीनामे पाच सौ हजार टाका भऽ जाइए, मुदा ई सरिवा तऽ एकोटा रपैय्या हमरा हािमे नै दैए, आउर राश्चाके खाइ लए मागत नीके श्चाकुत, खाली तरले भुजले, हम कतऽ सँ पुराएब। आइयो आएल िलै मेहिसँ टेकटरबला, कहै लए जे काज करऽ चलऽ मुदा ई जुवन थ्यठा खाली पी के ओंघराएल अश्चि अंगनामे। कश्चयो यै दीदी रख-सुख नै खाएत, सबश्चन खाली चाही पीयै लए। एकटा रेश्चयो िलै, सेहो बेश्च कऽ पी गेल। सौसे थ्ययाक देखलौ मगर एहेन थ्ययाक हम नै देखलौ जे घर पश्चवार के कोनो श्चियान श्चश्चर नै। एतेक लोक पैजाब गेलै, एकरा कहै श्चिऐ तऽ कहैए हम एतै कमाएब आउर एतै खाएब। लोक कमा-कमा की नै केलक मुदा एकरा देश्चयौ जे खाली मौगी कमाइ खाइए आ भने श्चन जाइए। एकटा घर नै तेकर कोनो ध्यान-श्चश्चर नै, खाली श्चनभश्च दौि श्चया महजीदपर। बैसल-बैसल श्चि नै फुराएल तऽ खाली थ्यनाइ आउर सुतनाइ। सुतल-सुतल सुस्ती पकश्चि लेलकै। घरमे एकोरती मश्चया तेल नै ि, हम लोकक अंगनासँ पैच आश्चाकऽ श्चश्चया बाि ि। तेल आनब से पाइ नै यए, आउर एकरा खाली चाही पाइ थ्यै लए, श्चियापुता पढ़त से हमरा एकटा रपैय्या नै अश्चि जे मास्टरके देबै। हम तऽ तंग आश्च गेल ि। मन नै होइए एकरा घरमे रही, भाश्च जाइ हम बाल-बचा लऽ के नैहर। जरलाहाके

जश्चयासँ ऐ श्याखमंगाके घरमे एलौ, कश्चयो सुखसँ नै खाइ-श्यबै ि‍ी। श्यक कश्चयो नीक कपि‍ पश्चरतौ, जे नैहरामे ब्रयाहमे देलक साि‍ी माय-बाप वएह साि‍ी साया व्लाउजसँ गुजर करै ि‍ी। माए एगो पहुँची देने ि‍लाए, सेहो कमहरसँ नै श्याखमंगा झंझारपुरमे चाश्च लेलक। हमरा फुश्मये कहलक जे दोसर रङके बनाके आश्या दै श्यियौ। की कहू यौ गौआ-घरवा, ई सब देखके तरीवा हमरा गाव नै जाइए लाजे जे एकर भाए-बाप की कहत। हमर बापके एतेक मन खराब ि‍लाए से तऽ एतेक कहैत रश्च गेश्चाऐ मुदा खाली कहए, साझमे जाइ ि‍ी, पाइ लऽ श्यअए आउर घुश्च कऽ आश्च जाए जे अनहार भऽ गेलै, ओही दुवारे नै गेश्चाऐ। काश्मा चश्मा जेबै।

# विचार-बिन्दु खण्ड

राजा अओर परजा

एगो समए छलै जखन राजा लोक लोकपर शासन करै छल, अपन समाजमे कोनो तरहक बातचीत होइत छल तँ गाममे जे राजा रहै छल हुनका ऐठाम सभ पंचायती भऽ जाइ छल, अओर ओही ठाम न्याय अओर अन्यायक फैसला होइ छल, एक तँ सभ लोक राजाके सम्मान अओर आदर-सदाचारसँ नाम लैत छल, एक तँ राज्यमे कोनो तरहक सुखार या आपदा-विपदा होइत छल तँ राजा परजाक संग दैत छल, ओइ परजाक मदत-सहायता करैत छल मुदा अखन एहन समए आबि गेल जे राजा अओर परजामे कोनो अंतरे नै रहि गेल, एक तँ आब ने ओते अन उपजै छै आ ने राजा परजाक मदति सहायता करै अछि।

पहिने लोक सभ राजासँ अप्पन बेटीक बियाहक बातचीत लऽ कऽ जखन राजदरबारमे जाइ छल तखन ओही व्यक्तिके महराज आशासन दैत छल जे तूँ या तोहर बेटीक खचाक व्यवस्था भऽ जेतऽ तखन परजो अप्पन राजामे लीन रहै छल। मुदा ने ओ सस्ता जमाना रहलै अओर ने ओ राजा रहलै, एक तँ पहिनुकहा लोक सबहक कहब छलै जे ओ लोक सभ जे छलै, एगो लोहाबला व्यक्ति मानल जाइ छलै, ओ सभ जे बाजै छलै से करै छलै, अप्पन नाम हँसाए नै दै

िलै, कोइ दोसर गामबला यदि नाम सुनै तँ कहै जे फला गामक राजा अपन परजाक सुख-दुख देखै िै, कतेक नीक िै ओ गाम, चल ओही गाममे घर बनाएब , ओही राजाक राज्यमे रहब।

देखही जे दुआरपर कतेक-कतेकटा ढक िै, कतेक अन िै, कएगो हाि बान्हल िै, कतेकटा हुनकर दरबज्जा िै, चल ओही राजमे रहब, कोनो चीजक दिक्कत नै हएत। सभ पाणी ओही ठाम जीवन बिताएब।

ई सभ परजा राजाक नव परजा बनैत िलि।

आब तँ देखल जाए तँ राजा परजाके सुपै बोइले नै दइ पर तैयार होइत अिि। पहिने एक सेर मरआ नै तँ एक सेर जऽ दैत िलि। भदि दिन हर जोइत कऽ आबै िलि तँ ओ मालिकक अपन जऽनके मरआ अओर जऽ बोइन दैत िलै।

मुदा देखैत महगाइ कऽ चलैत राजाक मनमे अधिकार आबि गेल जे एतेक अन जे ओकरा देबै से ओही अन बेच कऽ हमरा अओर दु कटा खेत भऽ जाएत अओर अपन बढ़ैत परिवार देख कऽ सोचऽ लागल जे ई संसार अपना रहत मुदा अपन सान-गुमान सभ राजा बिसरि गेल, के देखैए परजाके अओर के देखैए अपन सान सौकत।

बदलैत दुनिया देख परजा सभ गामसँ शहरमे काज करैक लेल पर्सान केलक जे आब गाममे राजा अपन घर-परिवारके देखत आकि हमरा सभक मददि करता।

सभ परजा अपन गाम छोड़ि शहरमे कमाए लागल, अओर जे राजाक हरोथीमे काज करैत छल से ओ जमीन जजाक्षा सभ राजासँ क्षखबा कऽ परजा अपन नाम कऽ लेलक।

आब ने राजा ओइठाम कोनो परजा हरोऊरी खटैत अछि। कएक तँ दोकानमे एक टका सलाइ दै छै आ राजा ओइठाम भरि दिन छिन-दाउन करलापर पाच किलो छिन बोइन दै छै, से नै तँ आब गाम छोड़ि शहरेमे काज करब, बड़ि बढ़िया मन भेल तँ काज केलक, नै भेल तँ अपान चाहे दिन बैठल छी, दोसर काज करै अछि, ई सभ सोचि राजा अओर परजामे कोनो महत्व कनीक-कनीक सभ हटल जाइत अछि, लोकक मनमे आलस्यक पवेश भऽ गेल, केकरो नै केकरो से मतलब रहि गेल।

मिथिलाचलक राजा छल राजा जनक जे अपान राज्यमे खेतसँ खरिहान तक परजाके कखनो दुखी नै देख सकै छल। जे कोनो मनमे कल्पना करैत छल परजा तँ ओकरा सबहक राजा जनक पूरा करैत छल, केकरो कोनो तरहक असुविधा नै होइ, तेकर लेल तत्पर रहै छल।

एक बेर राज्यमे भीषण सुखार भऽ गेल जे दू की पाच साल तक बखा नै भेल, धरती फाटि-फाटि गेल तँ महराज जनक यज कऽ कए अपन परजाक हितक लेल भगवान इन्द्रदेवसँ पानि केलखिन जे हमरा बचाउ, हमरा परजापर दया कर , हमर परजा मरि रहल अछि,

आइ कतेक मास भऽ गेल हमर परजा सभके अन खेला, हे भगवान, हमरा अओर हमर परजापर दया कर ।

अओर एतेक सभ बात सुनै छलै, भगवान अओर भक्तमे यएह व्यवहार होइक चाही अओर यएह सत्यता अपनेबाक चाही, ओहीसँ पकृश्वा सेहो गवाही दैत अछि जे मनुषमे भगवानसँ केहन भेदभाव हेबाक चाही। सभ गदगद तँ भगवान अओर संसार सुखदमय रहत मुदा अखन तँ सभ  अपन अपन पेट भश्व गेल तँ दोसरक पेट भरलै थ्क नै तेकर श्चिन्ता के करैत अछि। पश्चने ने एतेक बी.पी.एल. छलै, अओर ने एतेक ए.पी.एल. सबहक गुजर समान होइ छलै, सभ जऽ अओर जनेरक श्चचरी खाइत छलै, भऽ गेल कश्चयो तँ केकरो एहने नीक घर रहैत छलि जे भातक मुँह देखैत छलि, अखन देखू जे गरीब अमीर एक समान खाइ-श्चबैत अछि। दाश्चा भात अओर तरकारी पेमसँ खाइत अछि।

मुना जी (उपनाम, एहि नामे मैथिलीमे लेखन), मूलनाम मनोज कुमार कर्ण, जन्म 27 जनवरी 1971 (हटाढ़ रुपौली, मधुबनी), शिक्षा: स्नातक प्रतिष्ठा, मैथिली साहित्य। वृत्ति: अभिकर्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम। पहिल बिहनि कथा 'काट' भारती मण्डनमे 1995 प्रकाशित। पहिल कथा कुकुर आ हम, 'भरि राति भोर'मे 1997मे प्रकाशित। एखन धरि कएक दर्जन बिहनि कथा, लघु कथा, कविता, गजल आ लघुकथा सम्बन्धी आलेख प्रकाशित। विशेष- मुख्यतः मैथिली बिहनि कथाके स्वतंत्र विधाक रूपे स्थापित करबाक दिशामे संघर्षरत।

मुनाजी- माझ आंगनमे कतिआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११)

अपन गप

मोन पड़ैए बर्ख १९८९ क जून मासक एकटा राति। हम आ प्रेमचंद्र पंकज शुभेन्द्र पुस्तकालय राजे ( दरभंगा) द्वारा आयोजित कविगोष्ठीसँ घुरैत गाम अबैत रही। बाटमे ओ (प्रे.पं.) गजल लिखबाक चर्चा केने छलाह आ हम हुनका गजल सुनेबाक आग्रह केने रहियन्हि। ओ गायक नै गजलगो छथि मुदा ओ गाबि कऽ सुनबैत रहलाह, आ हम एकक बाद एक आग्रह करैत गेलियन्हि। हम ओइ गाओल शेर सभसँ प्रभावित भेलौं आ गजल लिखबाक निश्चय केलौं। गाम पर आबि एकहि रातिमे लगभग सात-आठ टा गजलक प्रारूप तैयार केलौं।

सत्यता हमरा पदमे रुचि नै छल। कविता लिखि सोच जाइते नै छल। मुदा तुकान्त जोड़ैत छलौं। आब ऐठाम अहा सभ जरूर बुझि गेल हेबै जे कवितामे अतुकान्त कविता लिखि हमर सोच नै छल। आ उपरको लिखित कविगोष्ठीमे जखन हमर कविता पढ़बाक बेर आएल तँ हम कविता नै बल्कि क्षणिका पढ़ने छलौं। क्षणिका आ हाइकू हम शुरूएसँ लिखैत छी। तुकान्त जोड़बाक आदति सन पड़ि गेल छल। जकर कारण छल स्थानीय मंच संचालनक दायित्व। मंच सांस्कृतिक आ राजनैतिक दुनू छल। सांस्कृतिक कार्यक्रममे हमरा अपन गाम (हटाढ़ रुपौली) मे ई काज अढ़ाएल जाइत छल आ हम अपनो ऐमे गंभीर रूपे रुचि लै छलौं। हमर मंच संचालनमे सभ प्रकारसँ सहयोगी रहैत छलाह- श्री शैलेन्द्र आनंद, ललनजी झा नंगट्, भवनाथ भवन, प्रेमचंद्र पंकज, कुमार राहुल आदि। ऐ मंच संचालन लेल हम तुकान्त करैत छलौं आ तँए गजल लिखि रुचि जागल।

गजल श्वस र थ्य एला पर पेमचंर पंकज जी सँ एकाि बेर अपनामे चचि केलौ तँ ओ मतला, काश्फया आ रदीफक चचा केलाह, मुदा पश्चल खेप हेबाक कारणे हमर मगजसँ बहरा गेल। ओना हुनका गजल श्वखब आ हमरा सभके दू घंटीक बीच सुनेबाक कम सन बश्च गेल ि ल। तकर कारण ि ल जे दुनू गोटे वगि संगी रही आ दूनू मैथ्रिली साश्वत्यमे पश्चष ाक एकश्च सि कि ि ि रही।

शुरआतश्चसँ श्चहश्च कि ामे घनघोर र थ्य ि ल। मुदा तुकान्त आ गजलक अि तो ओइमे कमी नै एलै। आ जँ कोनो समयमे जे गजल फुरा जाइत ि ल से लीश्च डायरीमे चौपेश्च दैत ि लौ, तकरा बाद ओकर कोनो चचि नै। एकर कारण ि ल, हमरा गजलक शासि ीय पक नै बूझल ि ल। श्वल्लीमे श्चथ्रि लागनक एकटा कायक्रिममे सुन्दरम जी दारा गाओल गजल फेरसँ एक बेर हमरा डायरीमे चौपेतल पुरान गजल सबहक मोन पाश्चि देलक। आ तकरा बाद हम फेरसँ गजल श्वखबामे जुश्च गेलौ, जे आ आब ई श्चश्चश्च कि जका श्वबाि चश्च रहल अश्चि। आ एक बेर फेर हम फोन पर पेमचंर पंकज जीके श्चकि ि गजल सुनेलौ आ ओइ महँक कमी बतेबाक आगह केलौ। पंकज जी कमी बतेबाक बदलामे हमरा कहलाह जे अहा गजेन्र ठाकुर जीसँ कमी पुश्चि औन्ह, हुनका गजलक बारेमे बहुत श्चकि ि बूझल ि श्चह। ओना ओइसँ श्चकि ि श्वन पश्चने हम श्चदेह आ अनश्चन्हार आखर पर गजेन्र ठाकुर जीक आलेख देखने रही आ पभाश्चत सेहो भेल रही। मुदा हमरा श्चसाबे ओ आलेख ओइ समयमे हमर लेभलसँ बहुत उपर रहै तँए हम पंकज जीसँ सलाह मँगने रही....... मुदा खएर........। तकरा

बाद हम अपन पुरान गजल श्वना श्वक्ि काट-िटिके श्वदेहमे पकाश्वात हेबा लेल पठा देलौ, जकरा बहुत रास संशोिनिक संग श्वदेहमे पकाश्वात कएल गेलै। आ जखन हम अपने अपन गजलक संशोश्वित र प पढ़लौ तँ बहुत श्वायम अनायासे हमरा सोझा आश्व गेल।

श्वदेहमे पकाशनक पिश्वा आशीष अनश्वन्हारजी जोर दैत गजल श्वखबैत रहलाह। ओइपर मंिनि, संशोिनि करैत रहलाह। जँ हम अपन गजल यािकि संश्वम्पत र प कही तँ पेमचंर पंकज जीक गजल लेखनसँ अपत्यक र पे आ गजेन्र ठाकुर आ आशीष अनश्वन्हार जी सँ पत्यक र पे सहयोग भेटल। आ अही सहयोगक बले आइ हम अपन पचास गोट गजल आ श्वक्ि र बाइ अहा सबहक सोझा अनलौ "माझ आंगनमे कश्वाआएल ि" केर र पमे। उपरोक्त सभ गोटेके हाश्वकि आभार व्यक्त करैत पाठकक श्वापक श्वचार चाहैत ि। कोनो कमी पर श्वाबाि श्वटपणी केर स्वागत अश्वि। हँ ऐ संगहक श्वक्ि गजलमे चाश्वए टा कए शेर अश्वि जे श्वक गलत अश्वि, कायदासँ गजलमे कमसँ कम पाचटा शेर हेबाके टा चाही मुदा ऐ पकारक िश्व लेल माि हमही टा श्वम्मेदार ि आ भश्वष्यमे एकर सुिर जर र हेतै।

गजल

1

बनलै सरकारी ककरानी ममनगी नेहाल भऽ गेलै

पूफ पढ़ मे संपादक कहेबा लेल बेहाल भऽ गेलै

रंगकमिकेर जानक ठन टटए डंका सगरो

मैथिली रंगकमिकेकि ओ बुझू दलाल भऽ गेलै

माथ अंघोठया तकै पायोजक खरचा-पाक लेल

मैथिली केर नाम बेच बुझू जे मालो-माल भऽ गेलै

रंगोत्सवमे लागै सवभिाषा रंगमंचनक भीि

देखू जे अपन भाषाक नाटकक अकाल भऽ गेलै

आखर---19

2

ि र एखन िश्च तँ उफानपर अिछ

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अिछ

नञ्ज जाञ्ञ छ्कओ केखनो जाएत भञ्ञया

छ्कओ कोठा पर छ्कओ मचानपर अिछ

कोठो बलाके तँ नै बकसिथ न्ह कमला

दूनू बगलीक बान्ह कटानपर अिछ

भोर होइते मञ्ञ गलै गरद-ञसान

कोठा म िड़या दूनू भसानपर अिछ

आखर-15

3

फाटैत छलि जतए मेघ आ जमीन

पहुँचल पछुआने ओतए अभागल

बुझनुक बुझए अपनाके

जा धरि छलि अटकल नीलमे रागल

फँसि गेल अपनेसँ व्यूहमे बेचारा

नै भेलै लाठी अपने ओकरा भाजल

जतऽ शेर राज करै छलि पछुआनेसँ

बुधियार छलि ओ पछुआनेसँ माजल

अधियार जा कऽ पढ़ौलक मंि जखन

पजा शेरसँ ि ल पछुनेसँ सा ि ल

आखर---14

4

बगिलो रूपके नकल करैए आब लोक
नकलोके यथार्थ सिंजोगि राखैए आब लोक

दाम्पत्य बुझैए माि अपन स्वार्थ पूर्ति लेल
अनकामे अपनाके ब्यलगा लैए आब लोक

उँआि र हँकैए गप्प लोक कल्पनाके भावे
यथार्थ अपनाके सुनगा लैए आब लोक

जीबनक दशा-दुर्दशा तय करैए माि स्वयं
भाइ देखावामे स्वयंके हेरा लैए आब लोक

देखू पश्चिमनेसँ आरक्षित भऽके ध्यानबैए सभ

मुदा बेर पनि देखार होएऐ आब लोक

स्तरसँ उपर जीबाक भऽ गेलैए पक्षपाटी

पाइक फेरमे भष ाचारी भेलैए आब लोक

आखर---17

5

नेताक फासमे फँसल ई भारत भाए-भैय्यारी जका

देखू िटपटा रहल मा ि भरल अध्ययारी जका

लोक तँ कटैए श्वाश्वऔर महँगाइसँ मारल भऽ कऽ

भावे मुश्वत मुदा स्वार श्वाकलै ि फकश्वयारी जका

आश्वक ि उदारीकरण कमाइ आब लाखमे होइ ि

मुदा वैश्वाक पश्वश्व ि श्वामे मोल लागए हजारी जका

श्वहारक श्वरखारी बदश्व गेल सन लगैए आब

ि श्वाक घटलासँ कंपनी-माश्वाक लगै श्वहारी जका

आइ धीया-पुता घुमैए पश्चाश्कत बेरोजगार भऽ कऽ

महगाइमे आंश्वाक लाभ पाश्च बुझैए श्वदहाि जका

आखर---20

6

बुझाइ नै अछि बात जे कोन अछि पाइ ि
कटै अपनोके पाि ने कोनो सम्पदाइ ि

गनै अछि पाइ केर सख्वखन आँख्व खोख्ल
काजक बेरमे देख्वऔ लागत औंघाइ ि

मातल ि ख्वनोमे कैचाक जोगारक लेल
मंगनी बला काजके पुछिऔ तँ खौझाइ ि

सटू ख्करानी बाबूसँ घूस केर गप्प लेल
पाइ लैते अनगलि काज पूरा भऽ जाइ ि

संंत रहै ि सभ उपरसँ देखलापर

पकिला पाश्चाये तँ श्वकओ चोर कहाइ ि

आखर---16

7

कएल कोनो कुकृत्यसँ लोक नै आब ढ़ठाइए

वएह कुकर्मी सभ-सभ ठाम आब ठठाइए

लोक पबैए रोजगार तँ बुनैए नव समाज

जतऽ जा कमाइए ओतुके भऽ आब सद्धआइए

उघरल लोक सभके ि‌टा भऽ घुमैत देखब

मुदा झँपलाहा लोक जे लाजे आब ढ़द्धआइए

नीक काज केनिहार सभ झँपले रहैत अछि

नीच काज केनिहारक झंडा आब उठिआइए

आखर---18

8

आइ सगरो समाज लागै दलाल छै

पाइ लेल अपनोके करै हलाल छै

रखने रहै अर्थ मुट्ठीमे मारवाड़ी नुका

कमा कऽ सोना बेचबा लेल बेहाल छै

आर्थिक दौड़मे अर्थ मातल सन

आर्थिक उदारीकरणके कमाल छै

टका के फेकनैए सोना बुझू लोक सभ

स्वदेशी बाण्ड-नाम पाबइए बेहाल छै

खुलल पोल जखनि दलालक जखने

इंटरपोल धरि मचल बबाल छै

तखन सरेण्डर करै तस्कर सभ

कहै ि जे इ देशभक्तक सबाल ि

भक्त लेलक अछि स्वीस बैकक खाता

जोड़ि हाि कहै गलतीके मलाल ि

आखर---14

9

ई दौिए नेतबा श्वल्ली िश्व

जेना भैसी दौि मालक िश्व

खाश्चस तँ भरब जेबी ि

दूनू ाि ने कोनो कसश्व

बीत नाश्व कऽ हाि गनाबए

ि एकल नाश्वक नै असश्व

भरल पंचैती माि झुकाबै

ई जान बचाबै कोना ससश्व

बाटै िरमके दुनू मीश्च कऽ

कूश्च-चाश्च तँ जाइि घोसश्व आखर---11

10

आजुक युगक कि पुराण सुनू

जाहिसँ पेट भरए सएह गुनू

नै कर देखाउसे दूइर समय

स्वयं कोनो समस्याक समाधान चुनू

जँ लागल पसाही अनका घरमे

तकरा लेल अहा नै कपार धुनू

घर तँ बचाउ सभ्यखन अप्पन

मुदा ते दोसरा बेर नै आँखि मुनू

आखर−13

11

मा ि मँगैए आरक्ग गणतं ि क श्वहाजसँ

माश्च-पाश्न ि थ्ि देलक आब चलैए जहाजसँ

ि थ्ि भरोसा जालकेर श्वकलै ि लै ओ गाजसँ

एलेक्टीक-मशीन आश्व करैए बहार माझसँ

कश्वाके पाश्न पसीन नै श्वकलैत ि ि बैराजसँ

बर्फक बीच जीश्व आब खुश भऽ गेलौ सुराजसँ

ओतौ नेता भेल पश्चष जुटै ि ि एक अवाजसँ

मनुक्खो डरैत अथ्ि ऐ श्वंगी-मागुर जाबाजसँ

आखर---18

12

जुग बीतल गेलै लगबैत जोगारमे

मुदा पता नै की लीखल छै कपारमे

धरि करैतेलौ दोस्तीए अपना सभसँ हम तँ

तैयो छलि हत्यारा अपने भजारमे

भाइ जे काटैए गरदनि सभदिनखन

ओ जे माथ टेकैए मंदिर-मजारमे

हे एना नै चलू हाथ छोड़ि बाटपर

बहि जाएब कहियो उन्टा बयारमे

जे बुझतै ओतैत समय केर मोल

मुना ओकरे खुन ओतते बहारमे

आखर-----14

13

जे चुबै ि ठोर-आँखसँ ओकरा तािी बुझू
जँ पीतै केओ संसारमे तँ बरबादी बुझू

आब तँ एहने बआहक पपाटी बुझू
व-इन-लेशन वाली घरवाली बुझू

भाइ जेबीमे घुसल हािक की महत ि
तालसँ ताल लए तँ ओकरा ताली बुझू

राशा संग आशापर टकल ि दुया
जँ देखलहुँ भगजोगनी तँ वाली बुझू

बहुतो अछि संसानि देश-परदेशमे

मुना अछि आकम्मा तँ ओकरा मवाली बुझू

आखर-----16

14

ई लोक कहैत हो कचि मुदा एहन बात भेल ि
जाक नगरसँ गेल बहारी ओ मसोमात भेल ि

आएल सुबुद्ध अपन िमकेर बूझल महत्व
आब तँ अपनो राज्यमे कासक परात भेल ि

देखू जकरा नामपर मागल गेलै सुख-सुवि
देशमे ओ बेचारा तँ बहुत दनसँ कात भेल ि

बोआहार बन जे डुबल कतेको कंपनी देशमे
आब बुझू जे सभ अहंकारीके पकाघात भेल ि

दोसरक बले रहैए ओ बहुत कुदैत-फनैत

मुना तँए साक्षात्यो ओकर बापक खैरात भेल ि

आखर-----19

15

आब कविता आ गीत नै गजल चाही

अपहता चागुरसँ सकुशल चाही

ठोरक मुस्की बनल रखबाक लेल

नि आ जन सबहक सबल चाही

जञ्जया धि रहत पेट खाली सन

गीत संगीत नै पेटक अमल चाही

कते आश कर हुनकर मियाक

आब अपन बनाओल महल चाही

तकनीकी रपे भऽ रहल ि सबल

तँए ई भष  व्यवस्ा बदलल चाही

आखर-----14

16

िटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम
तँए बिका खाधिमे खसल गेलहुँ हम

जोगाि तँ सभ िल अधिनगीमे हमरा
जेबी िल िट तँए नै लगेलहुँ हम

आब तँ माझ आंगनमे कलाआएल िी
अपने चासँ आब बेरा गेलहुँ हम

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए
केहन नीक पेमक दुख लेलहुँ हम

बरड ाहि ालि जे ई करब ओ करब

मुदा नौकरीके फेरमे ध्मातेलहुँ हम

आखर-----15

17

सभ उमेर वर्गकेँ पेम चाही

मधुर तोँ थिक कुशल-छेम चाही

लगैबै मोनमे करेजमे आगि

तैं तोहर जौबनक टेम चाही

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ पेम चाही

लोकसोझा-सोझी नै करत बात

पीठक पाछू बकिा क्लेम चाही

नञ्ह कटतै संयमसँ जीवन

जीबा लेल ञ्जात नव गेम चाही

आखर-----12

18

केकरो अंधायाबी तँ गात बश्च कऽ

कश्चयो जँ बही तँ बसात बश्च कऽ

घर अश्चि उदाम तँ कोनो बात नै

अहा जँ झापी तँ खढ़-पात बश्च कऽ

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जश्च बरसी तँ बश्चसात बश्च कऽ

जँ रखबै भूखल तँ कोनो बात नै

जँ भरब पेट तँ खैरात बश्च कऽ

आब नै मानै ि केओ ठोरसँ ऐठा

तँए तँ सगरो जाउ लात बश्रा कऽ

आखर-----13

19

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

अहा केखनो नै कर सवारी दू नाहक एकै बेरमे

जँ करबै तँ बाबूजीक जकाँ िरमे डुबाएत ई दुनियाँ

संगतुरियाके दबेबाक पाप भरल अछि मोनमे

जानू केखनो अन्हरियामे िकछ आएत ई दुनियाँ

ऐठाम भष ्टाचारी केर नेतमे खोट अछि सदिखन

आब तँ कछुयो एकर कुसी पलटाएत ई दुनियाँ

आखर-----20

20

प्रियासँ प्रिया मिलाउ नजरिसँ काज नै चलत

जोगार बैठकी केर उठा-उठी राज नै चलत

समय दूनू गोटेक लेल अछि अन्हरिया बला

जँ मोनमे इजोत नै जागत तँ काज नै चलत

समेटि कऽ अपन बाँहिमे विहुँसैत रहू अहा

केवल जँ मूँह निहारब तैसँ काज नै चलत

अंध्याया कऽ अपन संबंकिे पूर्णविराम दिऔ

स्नेहक बीच कौमा देबै तैसँ काज नै चलत

अहा पाबि सकैअ पढ़िने ऐ समाजसँ अधिकार

दूनूक भाव-इन इलेशनसँ काज नै चलत आखर-----18

21

मूँह पर मुस्की ि लै बहानसँ

पूर भेलै इहो कमैनी बि ानसँ

टुलार तँ बुझै नेनेसँ अपनाके

दुबार नै रहलै भेला अयानसँ

अनगीक ि टलै अन्हया आब

ई भेटल नव तकनीकी जानसँ

ि रमक लेल करए काटा-काटी

देवतो दुखी अपन अपमानसँ

अनक जगह लेलक फास्टफूड

डरैए नै केओ अनक ध्यानसँ

पकृक्ष्मा बदक्ष्मा रहल कि सौसे

लोक काज करैए योग आ ध्यानसँ

आखर-----13

22

लोक भऽ लोकके दुश्मन बुझू खाली जमाना अप्पन ि

बेर पर श्चा ि नै बुझै केकरो श ि मुदा ि प्पन ि

बेर-बेगरते पएर पुजैए पा ि देखाबैए ि ूरी

तस्करीक मौका नै ि ि ए तैसँ नै बुझू वीरप्पन ि

नजश्च गरा रहैए करैए हमला अवसर ताक्क

सोझा आश्च मा ि झुकाबै ईएह ओकर बरप्पन ि

उपरका मोनसँ साफ अश्च भीतरसँ तँ सापे बुझू

जँ ओ गाएत भजनो लागत भासमे कल ि प्पन ि

आखर-----20

23

आर्थिक तकनीककेँ कयेने केओ सेर-सवा सेर अछि

पारंपरिक अर्थतंत्रमे भेनाइ सेहो अन्हेर अछि

मुदा ई परंपरे आब आमाहता करत आजुक जिनगीके

जेना नाव समुद्रमे खन तकैत किनारा क अछि

वैशीकरण केर दौड़मे सभटा भेल छिन-भिन्न

जतै देखू आँखि उठा ततै लागल कूड़ा ढ़ेर अछि

लोक तैयो तँ लगबैत सन देखाइए अंधा-दौड़

मुदा वास्तविक संस्कारे-परंपरा बेर-बेर अछि

आखर-----19

24

लिव-इन-रिलेशन लेल पेम उिार चाही

हम रही नै रही मुदा पेमी जिम्मेदार चाही

सभ तँ जिलगा लैए सेहन्ता पूर भेलापर

ओ िकनी उतारैए तँ केकरो व्यापार चाही

उदारीकरण पहुँचल हमर गाम िध

केकरो समाने तँ केकरो दोकानदार चाही

पीठपर तँ घोपैए जे ूरा बहुत आदमी

मारए सीनामे हमरा एहने भजार चाही

आखर-----17

25

सूचनाक तंि आब सूख्यात कऽ रहल अछि

जे लोक संवेदनहीन सन भऽ रहल अछि

बखा पछि लगुआ िरैए माइक मंचपर

सौसे चमचाधरीक नाच कऽ रहल अछि

आब एकरा कोन पभाव कहबै हम बाबू

पएर पकछि आहार गटा िऽ रहल अछि

पता नै कोन बेर्त मुना घुमैए सगरो नग

एम्हर तँ हेजक-हेज मजा लऽ रहल अछि

आखर-----17

26

शब्दसँ हटि शब्द-सारसँ जे काज चलाबैए लोक
अर्थकेँ अनर्थ कऽ तँ आब पसाही लगाबैए लोक

सबहक बात तँ भरि नै रखै पबै छी सभ खन
अनकर लोकके मरल कष्ट फायदा उठाबैए लोक

सभटा आब व्यवसाय जाइ छै लोक सभ्यता-संस्कृति बास्ते
नाङटोके खुजल मंचपर नचाबऽ चाहैए लोक

व्यवसाय औकाकात बेव्यवसायोमे अतृप्ताक भान होइ छै
तखन आजलो काठके छिका तापऽ चाहैए लोक

शब्दक अर्थ जान वास्ते पलखक्षा नै होइत छै

मुदा शब्द जोर्थि रचनाकार कहाबऽ चाहैए लोक

आखर-----19

27

जकरासँ लय भेलए ओ गीत बुझू

जकरासँ स्वर भेलए ओ मीत बुझू

स्नेही तँ एक्कठाम भऽ सकैए केओ

जकरासँ नजरि भेलए पीत बुझू

आधुनिकताके फेरमे बहक नै जाउ

परंपराके सदिखन अतीत बुझू

पकरिसँ राखू अपनाके बचा कऽ

छपकीक सभ बातके नै तीत बुझू

आखर-----14

28

अधि ई दुआया लगैत जोगारसँ बाचल

आठलो तँ एतऽ नै अधि व्यापारसँ बाचल

ऐठा पुरषो रहैत अधि िमे लागल

अधि केओ नै एतऽ ऐ अधिकारसँ बाचल

पसअ गेलैए सगरो गाममे फास्टफूड

आब सभ अधि तीमन-सचारसँ बाचल

सभ अपनाके पूरे काबल बुझैए ऐठा

केओ नै अधि ठक आ बुियारसँ बाचल

आखर-----16

29

थ्रषवमनसँ थ्रषपाइ बनू नै केखनो

अहा कर शुद मोन समय अथ्रि एखनो

सदा समय केर संग डेग बढ़ाउ अहा

पगश्चा केर मोकाम लगीच अथ्रि एखनो

अनीश्चा संग नैश्चाकताक पाठ नै पढ़ाउ

नेतके बदलबाक समय अथ्रि एखनो

केखनो ने पैसू यै केकरो मोनके भीतर

खाश्चसमे पैसबाक समय अथ्रि एखनो

ताकू नै मलार केकरो सुखाएल मोनमे

रंग-रभसक मोन बाचल अछि एखनो

आखर-----16

30

जीता-जिनगी श्मसान सन लगैए लोक

मरियो कऽ करीसान सन लगैए लोक

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

अपन दाव खेलि बितबैए समय सभ

हक छीनि बलबान सन लगैए लोक

देखनिहारो आब नै अछि केओ केकरो

सहारा दऽ भगवान सन लगैए लोक

लगा कऽ लगानी मठोमाठ भेल ि ी हम

घुरबैमे यजमान सन लगैए लोक

आखर-----15

31

नै जाइछ केकरो बचपन केना सम्हार

चाहे तहमे झापल अछि कोना उघार

सभ कतेक अछि माइकमे गालि सन

गालि वस्तुके अही कहू कोना उघार

दुर्गन्धि पसरने तखन ई सदगन्ध आबै

कहू दुर्गन्धि लोकक सोझा कोना उघार

तेसर कम शील केर अछि फर्क आबै

कहू केकरो अश्लीलताके कोना उघार

चाश्मम नजश्मक फेरमे डुबा रहल

नजरे कि गि तकरा कोना उघार

आखर-----15

32

हमरा तँ सुख भेटैए गजलक गातीमे

ओकरा जेना जामे गमी भेटए गातीमे

बगए-बाणासँ बुझू जे नन्हकी करबा लागै

अपन सभटा दाढ़ी ताकी नन्हकी नातीमे

दार -दरबार लगा रही आसामे मातल

हम बखानी सत्य सभटा उठल आँतीमे

अपनाके तँ दूर हटा कऽ सही रंगदारी

रंगदारक लेल ि‍र चढ़ेलौ दरातीमे

आखर-----16

33

केलक रौदी कश्चयो दाही कश्चयो

ि ालिक कश्चयो उ ाही कश्चयो

दोसरक बेगरते देल लगानी

अपना बेगरते उगाही कश्चयो

केसक श्चन ने हएत समझौता

मोकदमा कश्चयो गवाही कश्चयो

हम तँ घूर ज ेलौ गमी मासमे

श्चझाएल आश्चसँ पसाही कश्चयो

खद ारीक इशारे जुलुम करैए

अफसर तँ ि ल श्चपाही कश्चयो आखर-----13

34

उठल कमिनी तँ पेदार भऽ गेलौ

बीतल उमर आब बेकार भऽ गेलौ

पढ़बाक समय गेल रंगदारीमे

आब लेखनीक जे वफादार भऽ गेलौ

ठिआइत देखा रहल बाट सगरो

जेना लगैए सूखल सेमार भऽ गेलौ

जीवन काटब भेल बहुत मोश्किल

आब लागए जेना मँझधार भऽ गेलौ

आखर-----14

35

ि रती पर अकि ा लोक जाए चाहैए चान पर

डेराइए कुटुकचाक्षा बन्द हएत दलान पर

लोक नक्ष्ह चाहैए बेर-बेर अपन पक्ष्वतनि

आब तँए तँ क्षाभरि रहैए अपने समान पर

पदूषणसँ उकताइए बचऽ चाहैए बेमारीसँ

मुदा की ओ ओतए जा कऽ रक्ष्ह पाएत क्षा ान पर

दूरक ढ़ोल सोहाओन बुझ्झ उपर जाए चाहैए

अनचाहा ऐय्याशीसँ अबैए पुरने मकान पर

आखर-----19

36

लऽ कऽ बैसल ितीके उपहार करैए

ओकर पाइसँ ऐश सभ यार करैए

आब िएल ि संबं िलेल जवाबदारी

तँए पसारी बुझु जे उपकार करैए

लोक तकैए आब सुिवधा जनक वस्तु

तैयो गरमेबाक काज पुआर करैए

खपल जा रहल समाधानक िट-पैघ

पाइ बला गरीबक मनुहार करैए

सभ्य जा रहल अछि कक्षाआएल एतऽ

शास्त्रा बँटैके सभ काज हुाेर करैए

आखर-----15

37

करै अधि कलोल माि चढ़

अबै नै अधि केओ आगू बढ़

मानवता भऽ रहल विलीन

दै अधि उपराग कोठा चढ़

जेना गढ़ैि गहना सोनरा

पिआया सुनाबै बातो गढ़

गढ़ब तँ केहनो गढ़ाएत

मुदा सोझगर हएत मढ़

आखर-----11

38

ब्रनु पीनहुँ नशामे मातल अछि ई दुनिया

शोनिते भीजल जेना काटल अछि ई दुनिया

सभ कहै अछि दोषी एक-दोसर लोकके ते

अपने सही कहऽमे लागल अछि ई दुनिया

मंद-मंद मुस्की मुदा ठोर अछि काथ रहल

स्नेहसँ भरल मुदा फटल अछि ई दुनिया

नजरि बचौने रहैए अपने लोक आब तँ

फाटसँ फाटि आएल साटल अछि ई दुनिया

राखू अपन विचारके संजोगि कऽ सम्हरि खन

अही सन लोक लेल ठाठल अछि ई दुनिया आखर-----17

39

देखू मुसडंडा अराम करैए

लोकके जीयब हराम करैए

भश्व श्वदन करैए ओ काटा-काटी

साझेसँ मुदा राम-राम करैए

चोर-उच्चकाके ि अर डा एतए

ओ दसमंश्मला िराम करैए

सभ्य रहै ि नुकाएल जतए

असभ्य श्मनगी श्वराम करैए

आखर-----12

40

नजरि झा‍ि देहके बजार बना लैए

ककनु कबआहो केकरो भतार बना लैए

मानू नै ि‍ सामथ्‍‍य‍ बुझबाक यि‍ाि‍कि‍

ते कल्‍पनेमे उथि‍ कऽ संसार बना लैए

सत्‍य कही तँ ि‍जनगी बेकार ि‍ लोकक

गाम नै शहरमे पि‍वार बना लैए

रहै ि‍ आि‍ जखन स्‍ााि‍ि‍केर मोनमे

तखन गदहोके ओ भजार बना लैए

गुजाि‍ उमेर ि‍रैए बाि‍ समाजक

ता ि‍ि‍ तँ ि‍जनगीके पहाि‍ बना लैए आखर-----15

41

पश्चर गहना एना जे झमका थ्वए

नेह जोर एना जे भाल्म चमका थ्वए

श्चाअ ने थ्वराम कश्चयो थ्वनगीमे

जोश बैसनाहरके सेहो ि का थ्वए

चलू तँ सश्चखन समय केर संग

एना बैसू जे थ्वनगीके गमका थ्वए

संगी केहनो भेटए तँ डर नै कर

संग ि र एहन जे रमका थ्वए

कर अफसोच ओहन आदमी पर

जे सबहक जिनगीके ठमका दुए

.

आखर-----14

42

लोक तँ लजाइ िल पश्चने िट काज पर

मुदा आइ काज नीक कऽ उिए जहाज पर

जाश्चा मेटा लोक आइ रहरहाम भऽ जीबैए

तै केकरो ध्यान नै जाइ ि अनसहाज पर

बन भऽ अपने घरमे जीबैए नवका लोक

ओकर मोन कहा आब जाइ ि रेवाज पर

पश्चने मनुखमे देखाइत िल मनुक्खता

आब िक श्चकल मोन दोसरा अवाज पर

आखर-----17

43

अपन देशक ऐ रोजगारीके खसबैए सरकार

पूँजी निवेशक नामे विदेशीके बसबैए सरकार

हाट-बाजारक महत्व नै बूझै माल बुझै मूल्यवान

ि ट-ि ट व्यपारी के तँ भीतर ि सबैए सरकार

लगा पसाही देश भरिमे करबैए जन आंदोलन

पीबै बला पानियोमे कचराके भसबैए सरकार

लोकक पैसा-कौि ी केर इंतजामसँ ल ैए चुनाव

अप्पन कुसीक लेल जनताके फँसबैए सरकार

आखर-----20

44

पश्चिम केर डेसमे मेल लगैए

फीगरसँ देखिऔ फीमेल लगैए

फैशन आ चाललसँ अधि आधिनाक

तै ई पतीसँ बेसी रखेल लगैए

ई बजार भेल जाइए देहगर

तँए सभ देह केर खेल लगैए

बाहरसँ चमकन-चुनमुन देखू

भीतरसँ भारतीय रेल लगैए

आखर-----13

45

अपन माश्च-पाश्वक मोल पाश्चमे भसा गेलैए

तँए तँ आब शहरआ रंग िस जमा गेलैए

अफसर आ बबुआनी भऽ गेलैए मुटीक खेल

सभ धिया-पुता तकनीकी जान लऽ रमा गेलैए

देहके जे खूब िश्वायो कऽनै पेलक बोश्वा ऐठा

श्वाकाक पतापे ओकरे धिया-पुता कमा गेलैए

गमैया लोक आबो जोगेने अश्चि पुरखाक िती

शरहक चपेटमे आश्च नवका झमा गेलैए

आब नै लुलुआबैए लोक अपन पिसीयाके

पाइसँ पश्च सबहक घर गम-गमा गेलैए आखर-----18

46

नेनाक नेनमक्षासँ जँ कष्ट होइ ि केकरो-केकरो

मुदा जँ श्मयान करै नेनमक्षा तँ कष हेतै सगरो

बुश्द तँ जीबाक सभ लग ि राश्व तश्रि आएल बुझू

मुदा बुश्द बले मा ि जीबैत देखै ि ि केकरो-केकरो

डरैए अन्हश्वयासँ सभ तकैए बाट श्वहान केर

अन्हारसँ श्चलथ्रा कऽ उजास भेटैए केकरो-केकरो

जँ श्नयाके हे ि बिए चाही तँ हे ि श्नअ कतौ-केखनो

श्नयासँ श्नया मीश्न पबैए केखनो कऽ केकरो-केकरो

जगलोमे जँ देखब लैत अछि सपना केखनो-केखनो

सूतलमे सपनाक यादि भेटैए केकरो-केकरो

आखर-----20

47

पश्चने ताश्चक कनडेश्चए फँसेलौ अहा

पि ाश्च बम्हचय ाउपदेश देलौ अहा

श्चनगीक सभ बाट जे लगै ि मश्चन

हमर श्चनगीमे पैश्च कऽ हँसेलौ अहा

हम तँ श्चलटल रही एकसर भऽ कऽ

हमरा सन ऐ श्चकम्मासँ बन्हेलौ अहा

श्चनगी तँ बन श्चकताबक पना रहए

मुदा खोश्च एकरा सौसे तँ देखेलौ अहा

आखर-----15

48

बरड मजा जँ अबैत कि मुफ्त मालमे

मुदा दुख होइ अछि जीबैत मलालमे

सहि ने सकब समाज केर उपराग

नीक छल जे जीबैत रहितौं अकालमे

मोन ने भरैत छल अबैत वेतनसँ

आब हम अपनाके गानै छी दलालमे

अपन जिनगी आगू बढ़ेबा लेल दोस

लागल छी हम तँ दोसरक हलालमे

आखर-----15

49

केखन ि खा देत ई समान बजरआ गारंटी नै

ई केखनो हँसाएत केखनो देत कना गारंटी नै

सरकार बनाबै एहन योजना गरीबक लेल

केखन जेतैक गरीबक अस्तित्व मेटा गारंटी नै

केकरोसँ थ्ककि बाचल नै ि ऐ दुआयामे आब

बकिोसँ थ्ककि बाचल नै ि ऐ दुआयामे आब

सहलहुँ सभ दुख जे भेटल अनकासँ मुदा

अपनोसँ थ्ककि बाचल नै ि ऐ दुआयामे आब

सभ जेतै थबका खाली दामटा सही हेबाक चाही

सगरोसँ थकि बाचल नै ि ऐ दुआयामे आब

अगि ा केर नाम पर भेल बहुत राजनीश्ता

थयि ासँ थकि बाचल नै ि ऐ दुआयामे आब

50

पक्षलुक शब्द कौआ-मेना बसरल जाइए

आब बसात पबिा सौसे भहकल जाइए

नुका-चोरी सभ तँ भाग गेलै हमरो गामसँ

ई धडीयो गेम सौसे आब पसरल जाइए

पाआ चोरा कऽ राखव लेलक पाइ बला देशमे

देखू आब गरीबक कंठ लहकल जाइए

कनेकबे जगह देखाए तँ मा िचस्क गेल

जमा िस हमरे उपर अ िकल जाइए

उ ि क आँचर जखन-जखन हुनकर

से देख्ब हमरो मोन आब बहकल जाइए

रबाइ

1

जबि अहा जर श्वद्या बाती जका

गाएब तँ गाउ एना पराती जका

ताश्क कनश्वये मोन ने श्वझाउ

अहा कर जुश्व उकपाती जका

2

श्वअए श्वनेह अपन नेना जाश्व कए

हमहूँ टुलार श्वमहब अपना माश्व कए

जँ ाि बै अनेरआ सन हमरा

तँ फफश्क मरब एकसर काश्व कए

3

टूटल ि ल नेह आब तँ जोि भए गेलै

ि लै दुश्मन मुदा घ्यातचोर भए गेलै

जखने श्वाखलकै पातीमे मोनक बात

दुनूक नेहक तँ भंडाफोि भए गेलै

4

श्वला देलक गगनके माथ्व तीर

बचा लेलक जे अि निला चीर

रौपदीके बढ़ा वस ि केलक रक्ा

संसार भथ्व बेटल ि ल वएह वीर

5

उमरे वषक्ि संग बथ्ढ़ जुआइ ि

नजथ्व सोझा-सोझी भए कऽ लजाइ ि

पेमक भाव जे नै पथ्ढ़ पाबै अथ्ि

तखन बुझू जे ओ हृदैसँ कसाइ अथ्ि

6

मोन भए उठल दुश्चिन्त होहकारीसँ

उपेक्ष दशकि भागल मारामरीसँ

पायोजक तँ पनि रहल कान अपन

कता देखार भेला जश्नायारीसँ

7

जखन सभ केओ देखू नेहाल भेलै

तखन बुझू जे गोटी तँ लाल भेलै

दशकि जखने झूमि उठल मनसँ

तखने तँ संयोजक मालोमाल भेलै

8

ऐ शि्के तँ तोि लेल दम चाही

मािश्चि गुप्त नै ऐ लेल यम चाही

अहासँ श्कि नै श्चगिते एकर

एकरा शोि लेल तँ खाली हम चाही

9

जतेक चाही जी श्चअ सपनामे

राखू यिाि सिंजोश्च अपनामे

उश्चियाउ नै एकपेश्चिया बाटपर

नै तँ जाएत नापल श्चनगी नपनामे

10

ताश्क कनडेश्रीए कतए नुकेलहुँ

कहू फेर श्कए नजश्र फेश्र लेलहुँ

श्रहुँसैत बैसल ि ी सोझा अहा

आब कहू अहीँ कोना फेर एलहुँ

11

दै श्रीऐ आशीवाद लगा कऽ फानी

ि ी जोगारमे ऐखनो जे कते तानी

वाह की जमाना देखाइए हमरा

सत्य ि ै इएह मानी की नै मानी

धनेश्वर ठाकुर, पिता:-श्री सूर्यनारायण ठाकुर, माता:-श्रीमती तुलसी देवी, पती:-श्रीमती किरण देवी। गाम:-गा. वि. स. वादा ७ योगियारा, धनुषा नेपाल। हाल:- कतार; शिक्षा:- स्नातक [INTER]; जन्म:-18/4/1991; हाल:- नबोदित साहित्यिक मोबाइल पुस्तकालय कतारक कार्यकारीणी सदस्य एवम् अन्तरराष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज कतार च्यापटरक साधारण सदस्य।

नेपालक नोर मरुभूमिमे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकथा खण्ड, विहनि कथा खण्ड, कविता खण्ड)

अपन गप

साहित्य पथिमे अगाड़ि रहि भेलाक कारण रचना लिखब-पढ़ब हमर शौख अछि। विद्यार्थी जीवनसँ किछु टुटि-फुट रचना लिखैत छलौं मुदा पवासमे आबि आर बेसी विकसित भेल । कतारक मरुभूमिमे अपन देश आ परिवारसँ दूर रहल वेदनासँ मन बेपीड़ित भेलाक कारण हमरा

लेल साश्चत्य एक नव गश्चा लेलक आ कि, कश्चता, गीत गजलक माध्यमसँ अपन भोगल भोगाइ आ अपनत्वके सम्झनासभ बाहर लेबाक मौका भेटल। ऐ रेश्चास्तानमे अन्तराश्च्टय नेपाली साश्चत्य समाज कतार च्यापटर आ नबोश्चत साश्चश्चयक मोबाइल पुस्तकालय नामक दू टा संसि एवम् एकर पदाश्चिकारी लोकश्चा भरपूर सहयोग केलश्चा। संगे-संग मैश्चिलीक सजकि सभमे अब्दुल रजाक जी, बेचन महतो आ मो. असरफ राइन जीक सेहो स्नेह भेटल। श्चनका सब गोटे पश्चा हाश्चकि आभार पकट करऽ चाहब। एम्हर हमरासँ दूर रश्चतो केवल फेसबुक आ ईमेलक माध्यमसँ सदैव मागदिशनि कऽ रहल श्चदेह गुप पश्चा हाश्चकि कृतजता व्यक्त करै ि। ऐके सा ि हमर परम् पूज्य, मैश्चिलीक पैघ सष ा एवम् श्चदेह गुपक संयोजक ि गजेन्र ठाकुर जी पश्चा सादर नमन करै ि। सा ि न्यवादक पा ि श्चि श्चदेह गुप आ ऐ समूहक पदाश्चिकारी लोकश्चा। हमर रचना सभके गहनपूवकि अध्ययन कऽ सदैव सल्लाह-सुझाब देश्चाहार श्चदेह गुपक ि गजेन्र ठाकुर जी, आशीष अनश्चन्हार सर, उमेश मण्डल जी, पंकज चौ िरी, अश्चात भाइजी, शाश्चालक्मी दीदी, राजीव रंजन सर आश्च-इत्याश्चके बहुत-बहुत न्यवाद।

हमर जीवनमे पेरणाक सोत बनल दादी िमती देबसुनर देवी, पूज्य श्चता ि सूयनिारायण ठाकुर, माता तुलफी देवीके िचरणमे बारम्बार पणाम! त ा गुर ि पवन कुमार मण्डलके सत्-सत् नमन करै ि। तश्चना जीवनक हरेक मो ि पर सुख-दुखमे सा ि देश्चाहार िमपिती श्चकरणजी के स्नेह भरल अश्चावादन! आ हमर साश्चत्य लेखनक ऊजा

रहल पुरि पीढ़ीक़ाके श्रद्धलसँ िन्यवाद। एकर अछाअवक्त हमर साश्रुश्रयक श्रमनगीमे पत्यक-अपत्यक रपे सहयोग केश्रहार सम्पूर्ण श्रा गिण, आफन्ताजन, ति बन्िु-बान्िवमे बेर बेर सलाम ।- समपर्ण- बेरोजगारीके चपेटामे पश्रि पवासी जीवन श्रताबऽपर बाध्य भेल ओ िश्रक सभ जे अपन इच्िा, सपना आ यौवनाके श्रालाञली दैत, आफन्तासँ लाखो कोस दूर केवल अपन पश्रवार आ राष्ट लेल श्रन- राश्रा संघषकिऽ रहल िथि। ओइ सच्चा, श्राठुर आ ईमानदार िमजीवी सभके समश्रति ।- श्रन्देशर ठाकुर

गजल खंड

1

पान सन पातर ई ठोर अहाके

अहा ि चान्द हम चकोर अहाके

जुिन घबराउ सब नीक भऽ जेतै

अहा ि राइत हम भोर अहाके

संसारक गिन बदिल जाए मुदा

अमर रहै पेमक डोर अहाके

समय पैघ बलवान ि अपने

नै चलत ओइ आगू जोर अहाके

नै बहाउ नयनसँ नोर कखनायो

मोती सन मोल अिछ नोर अहाके (सरल वािणक आखर-१३)

2

भक्ति गजल

अहीँ ि हमर भवानी मैया हम अहाके मानै ि

करब सब ध्यन पूजा पाठ मनसँ हम ई ठानै ि

उजि ल घर बसाबू मा एना किए फटकारै ि

राशि भक्ति आनन्द नै आबै सदिखन अहा लऽ कानै ि

क्षमा करु या सजा दिअ हम तँ अहीक सन्तान ि

अजानी हम पुि अहाके ज्ञानि ने किछु जानै ि

ध्यानी लैताह दूि लैताह कही न माइ गै बाबुके

लरडू आ पेि हमहूँ बनेबै तै तँ ध्यकस सानै ि

अहीँ जननी दुख हरनी कर हमर उदार हे

शक्ति स्वरूपा जगदम्बे हम अहाके पहचानै िी

(सरल बार्णिक आखर:१९)

3

गजल

सब खुशी भेटत बस मन होबाक चाही

सरकारी नोकरी लेल नि होबाक चाही

जङ्गल उजाड़लासँ रोग सभ बढ़लै

स्वस्थ रहबाक लेल वन होबाक चाही

दानव चपेटामे ध्वसा रहल लोक एतऽ

रावन ला रामके आगमन होबाक चाही

बात बनौलासँ केवल काम कोना चलतै

घर सुदी करब तँ हवन होबाक चाही

जनताके खून चुसने नेता जी कहै छथि

चुनाबमे उपरका सदन होबाक चाही

(सरल वार्णिक आखर:१६)

4

बाल गजल

आइ श्वन भश्व सुतले ि

खश्चया उपर चढ़ले ि

माए लेलक नश्च कोरामे

तै सँ श्वन भश्व रसले ि

हम सुकना सँ की कम ि

अडेसी नेपाली पढ़ले ि

काका मूश्चा दैत बजलाह

बौआ तोरा लेल गढ़ले ि

रोशितक बाबू दूसत की

ओकरासँ हम बढ़ले ि ी

(सरल बाथाक्रि आखर:१०)

5

बाल गजल

भैया सँगे हमहूँ जेबै

दही चूरा हमहूँ खेबै

सुटबासँ झगा भेलै

ऐ ाै ा के मूँह तकेबै

मन लगा कऽ पढ़बै तँ

पुरस्कारो हमही पैबै

काश्चि स्कूलमे दौ हेतै

ओहूमे हम एक एबै

हमरो जँ भाइ हेतै तँ

गीत नाद खूब सुनेबै

(सरल बार्णिक आखर:९)

6

भक्ति गजल

हम ि ी बालक कनी ध्यान ि दअ मैया

बुद्धि आ आमुखाके जान ि दअ मैया

ि ी हम अभागल जन्मेसँ आइ ि ध

गाममे जीबाक लेल शान ि दअ मैया

आत्म ि न ि ूप आ आरती उतारब

भक्ति भरल हमर पाण ि दअ मैया

मतो ि निमे रही समीप अहाके

एहन अनूप बरदान ि दअ मैया

लाल चुनरी चढ़ा जयकार लगाबै

कोखिसँ एहन सन्तान दिअ मैया

सरल बार्णिक आखर : १४

7

गजल

भाङ आ गाजा खेने ि

तोरो ला थ्रकि लेने ि

माए देलक मुरही

ओहो झोरामे िने ि

चटनी थ्रवएबौ मीता

अल्लू सेहो पकेने ि

हरी चोरौलक ढ़ौआ

तैसँ दूर भगेने ि

चल आइ थयो लेब

भटीबाली पटेने ि ी

(सरल बार्णिक आखर: ८)

8

गजल

िरे-िरे स्नेह बढ़ाएब हम

करेजसँ भले सटाएब हम

बनु अहाके थमायब नै कखनो

थमनगी अहींपर लुटाएब हम

आँखक तारा ि अहा ऐ सजनी

िथ कऽ कखनयो नै जाएब हम

अहा ला सयखन हँसम मरब

कखनयो नै नोर बहाएब हम

पेम अहाके पर्थि अर्थि थ्यय

तइसँ नै गंगा नहाएब हम

(सरल बार्थाक्रि बहर आखर:- १२)

9

गजल

थ्यया जी एलथ्खन होलीमे

जैबै हमहूँ आब डोलीमे

नानीके देल एकटा िाली

खैबै हम ओही घकोलीमे

थ्दयर ननथ्द सेहो अथ्छ

मजाक करबै रडोलीमे

सासुके हम मनाए लेबै

जादू अथ्छ हमरा बोलीमे

पेटीमे िक बि सम्पश्चा

िरब नुका हम चोलीमे

(सरल बार्णिक बहर आखर:- १०)

10

गजल

होलिकाके फेर जरैबै एहिबेर के होलीमे

पूरी सँगे माउस खैबै एहि बेर के होलीमे

भैया के साली आएल छि दीदी के ससुरामे

चुपे हम रंग लगैबै एहि बेर के होलीमे

खराब रंग सभक लेल हाथाए होइ छि

तै तँ नीक रंग मंगेबै एहि बेर के होलीमे

खटर कका बुढ़िया दाइ सब केउ झुमतै

हँसि हँसि चोली भीजेबै एहि बेर के होलीमे

नै झगा नै झंझट कोनो हेतै ऐ समाजमे

खुशीके बरखा करेबै एहि बेरके होलीमे

(सरल वार्णिक आखर : १७)

11

गजल

माघे संकाश्चा एहू बेर आश्बाए गेल

हम बौआइत ि ी एखनो कतारमे

लाइ-मुरही खेताह भाइ ओइठाम

हम टौआइत ि ी एखनो कतारमे

झगि ा रहै भाइसँ तीलक लाइ ला

हम खौझाइत ि ी एखनो कतारमे

दू साल पश्चने श्चटने िल भाइजी

हम श्चश्चश्चआइ ि ी एखनो कतारमे

पैसाक पाि थ्नगी नरक बनल

हम कमाइत ि ी एखनो कतारमे

(सरल वार्णिक बहर- आखर १४)

12

गजल

देखब मनमानी कतेक श्वद्दन करै ि

श्वबि वा सँग कहानी कतेक श्वद्दन करै ि

समय चकमे अहूँ मुरि एब

जीवनके गुलामी कतेक श्वद्दन करै ि

मानव भऽ मानवता श्वमखू

दोसरके गुलामी कतेक श्वद्दन करै ि

मश्वन्नन नै कर श्वमथि लाक सँस्कृश्वि

बौवा-बुच्चीक ढुवानी कतेक श्वद्दन करै ि

समएमे एखनो नीक पि रोज

मानवताक त्लाश्म कतेक श्वद्न करै ि ी

## शेरो-शाइरी खंड

हमर नाम बेचिकऽ खाएबला चोर छै
हक अधिकारला लजाएबला चोर छै
अपने भाइ-बापक गर्दनि काटिकऽ
खूनक समुन्द्रमे नहाएबला चोर छै

सब ढेरया हमरे आगू पाछू ठार छै
लगै जे बालुके उचका पहाड छै
उखरलो सुनिनी नै उखरतै जेकरासँ
ओहो अपन अलगे राज ला बेहाल छै

एकके पाछू बेहाल नै बनू एना
आँसू खसाकऽ दु:खहाल नै बनू एना
खलत जरर पुन:सपनाक रानी अहाके
बेवफाक पाछू कङाल नै बनू एना

पेटभश्च खाएब कश्चन ि एतऽ

रोजगारी पाएब कश्चन ि एतऽ

नेता लोकश्च भले जे श्चक ि बाश्च लय

बेरोजगारी भगाएब कश्चन ि एतऽ

इजोश्चयाक आसमे अन्हार भेल श्चनगी

जीवनक हर सासमे पहा ि भेल श्चनगी

पास रश्चतो अहाक हम घुश्च-घुश्च मरै ि ी

लागै चार तरफसँ श्चराश भेल श्चनगी

खाएब अहूँ संगे-संग तँ

चलू लतामक पेपिर

मटीके बरसात करब तँ

चलु कतारक बसेरपर

आउ साि मीश्कि श्वकि ि योजना बनाबी

मैश्थिली दुश्मन सभके दूर भगाबी

तखने बनत भश्वष्य श्मश्थिलाके

तँ श्वकए ने अपन पदेश गमकाबी

हरवक्त याद ओकर जान मारैय

राश्ियो कऽ श्वन्दके हरान करैय

हम बौरा गेली साि ी सभ कहैय

अही कहू श्वकएक परेशान करैय

पेम श्वदवस(१४ फरबरी) क अवसरपर हृदयसँ श्वकलल ममस्पशी भावना...

नै सोचू नै घबराउ अहा

एक श्वदन हम जरर आएब

संगमे दसै श्वाहार ति

भ्यालेनटाइन सेहो मनाएब

दुश्मन कतबो दुवारपर होइतो

लाख कोसके बीच होइ ि

पीतम दूर पहािपर होइतो

घर-आङनके बीच होइ ि

आजुक श्वदन पेमक पतीक

प्यार करी से मन करैय

अहा संगक झगाि-प्यार

दुनु हमरा याद अबैय

I LOVE ....her

# I MISS ....her

चलू आब श्वाि म करी भैया

फेसबुक हटा कऽ अराम करी भैया

लजैनी जेहन लजाएब अहा

लग जतेक आएब अहा

टक लगा हम देखते रहब

घुङटा जखन उठाएब अहा

नै श्कि श्मखै ि ी बाप रौ बाप

दारए श्यबै ि ी बाप रौ बाप

कश्वता पश्मयोश्गतामे प्रि म पुरस्कार

खुशीसँ श्मबै ि ी बाप रौ बाप

अहा सभ राति भरि जागल रही

बस फेसबुकपर लागल रही

संसार बदलैसँ पहिने अपना बदलू

सपना पाबऽसँ पहिने सपना बदलू

जँ जीवित राखब खोप भीतरके चिड़िया

आकर्षक कर साि उपरका झपना बदलू

इच्छा रहितो ई जीवन बिताएब कोना

मन रहितो ई सिन्दूर लगाएब कोना

अहा ि हमर चि ला पीतम जरर

मुदा हुनका िधि अहा संग जाएब कोना

की कहू कते कहू बि बि लीला ि
मोिबला नेता सभके नडौटी ढीला ि

हे सुिनी सन बात नै कर
डरिरवास आब नै डर
बि सहलौ अत्याचार अहा
आबो तँ अधिकार लेल लि

गेल िल दार पी कका बजारमे
पािएसँ मारलक ििि िका बजारमे

अथ्रीला राज लेल रिना करै ि
बात-बातपर झगि करै ि
बेइमाने आ भष ाचारे करब तँ
नाहकमे श्यकएक रिना करै ि

आबू समीप चलू नैन लिबै
करेजसँ अपन करेज सटेबै
पेमक दीपसँ इजोर ि दुश्नाया
खुल्ला आकाशमे घर बनेबै

राश्ना अन्हश्नया अही संग काटब
दु:ख सुख सब दुनू मीश्ना बाटब
मेघ गरजै आ बुन्द बरसै कतबो
फुटल आकाशके स्नेहसँ साटब

आनन्द हेरा गेल चैन हेरा गेल

नोर बिना जे नैन हेरा गेल

मन ि ल नीकसँ राखल भेल सुखातौ

यादमे सब अमन-चैन हेरा गेल

तन ि थकत आ मन बेपीथित भऽ गेल

सास चैनके जेना पथिया उि ा कऽ लऽ गेल

काथि ि थ जे थनगी रमनगर लगैत ि ल

सब दु:खके मोटथया आइ अइठाम ि ऽ गेल

सपना स्वगकि देखा कऽ

थनगी नरकमे थारा देखायै

पेम हमरासँ कऽ कऽ

सेनुर दोसरेसँ भरा लेखायै

झमझम-झमझम पाइन

आजु पड़ै कतारमे

देह झहरै मनो खुशी

आजु लगै कतारमे

अहूँ जीबू हमहूँ जायब

सब भेलयो इन्सान छी

जीवन पथपर मीत चलू

सब भेलयो अंजान छी

स्नेहक तार टुटल सबसँ

जिनगी आब कल्पना भेल

काश छी जे अपन छल

आइ गरीबइमे सपना भेल

जनगी जनअब पहाि लगैय

भेल यया परदेसया

अपने पयरमे कुिहय लागल

भेलहुँ हम दुदुसया

स्वतन्ि देशक स्वतन्ि नागक

आजु नेशल डे अि कतारमे

एतऽ िम-िमसँ नाचै सब केउ

बि भीि अि देखल बजारमे

भौतकवादके आकार भेआहार सभ

सुपनेखा सजा कऽ सीता बना देलक

साश्चत्यमे फुती देखेश्आहार सभ

गजल चोरा कऽ कश्वता बना लेलक

राइतमे हम खबुस खाइ ि ी

सुबहमे हम कामपर जाइ ि ी

जखने बेसी ि इक जाइ ि ी

फेसबुक चला कऽ मस्त भऽ जाइ ि ी

अही ि ी जानके देवी मैया

अही ि ी भाल्य उदायनी

हम अबो ि बालक अहाके

अही हमर श्वद ादायनी

मैथिल कहैत जखन माथ झुकेलौ
भाषा बजैत जखन ओठ लरबरैलौ
हम बुझी कोना कमयोगी अहाके
जौ मैथिली गजलमे आश लगैलौ

जौ धी मैथिल तँ पोस्ट मैथिलीमे कर
सास अटकै मुदा मौतसँ नै डर
सदा रहब अमर अहा इतिहासमे
रङभूमिमे अबिवा रजाइएपर मर

अनु समितिके हक नै भेटत एतऽ
नै धिनने अधिकार भेटत एतऽ
सब धिथि स्वार्थी आ दलाल माथि
गोरतर दऽ कऽ घसीटत एतऽ

आइ फेर सपनामे अथिला देखलौ
पथिला साथि संगी सभसँ भेटलौ
आँखि खुलल तँ अपने ब़ानि पर
भावनाक लहरमे करेजसँ सटलौ

समीप अपन कने आबऽ दिअ
करेजसँ हमरा लगाबऽ दिअ
बि तपिलौ अहा एखन धरि
आबो तँ प्यास मेटाबऽ दिअ

पेममे हम शायद आब पागल भऽ जाएब
बनु उत्सव बनु मौसमके बादल भऽ जाएब

ओ जेतीह थिया घर डोलीमे सजि कऽ

हम भग्न जिनगी ला अभागल भऽ जाएब

हमर जिनगीके कोनो हिसाब नै रहल

पढ़बाक लेल कोनो किताब नै रहल

बैसल ि ी एखनो असगर एकान्तमे

किन्तु पीबाक लेल कोनो शराब नै रहल

हमर सूरति अपना आँखिमे सजा लिअ

अपन मनके फुलवारीमे हमरे बसा लिअ

राखब हि लीपर सदखनि ऐ कनिया

एक बेर बस हमरासँ माग भरा लिअ

पएरक पायल झमकैत रहै अङ्गना
चान सन चेहरा चमकैत रहै अङ्गना
अनुपम ि फूल अहा हमरा बगैचाके
युग-युगान्तर ि थ गमकैत रहै अङ्गना

सुतलमे चेहरा अहाके सपना बना अबैय
सपनामे बम्पसँ भरल रचना बना अबैय
अशाके दीप संग आराश भेल ठाढ ि हम
माहकै हवा लगै जेना साजन बना अबैय

सब केउ के आगू आबै पति
एस रोगके जसिँ मेटाबै पति
जँ चाहै ि स्पर्स आ दुरस्त पदेश

दहेज मुक्त मिथिला बनाबै पति

अहा लेल पेमक किताब रखने छी

बुझू किन के हिसाब रखने छी

अहा डालर बनू भार हमहीँ बनब नै कोनो बात

अहा सोम रस बनू दार हमही बनब नै कोनो बात

हमर मजी घर-घर चाटब

जकरा पाएब तकरा बाटब

धिया भेल धियायक हमर

तोरा कि हम नङटे नाचब

हम बूढ़ि छी तै विदेशमे आएल छी

अहा जानी छी तै घरमे नुकाएल छी

## लघुकथा खंड

## सपनाक अवसान

एक दिन रमलोचना आंगनमे सँ महेस महेस... किलोल करै छथि। तखन चौकियेपर सँ काकी कहै छथिन, बौवा एम्हरे आउ- काकीक मन बिसरा गेल आ मन खिन्न रहए। रमलोचना गामक बेटा आ महेसक संगी छला। बुढ़िया रमलोचनाके बजा कऽ महेशक खिस्सा सुनबैत छथिन।

"महेस जे तीन साल पहिने गेल छला -कतार अपन सपना पूरा करबा लेल। जेबाक बेर अत्यन्त हर्षित, माए ला घर बनाएब, पतीक लेल नीक कपड़ा, बच्चा-बुच्चीके नीक स्कूलमे पढ़ाएब आ जवान बहिनक शादी करब। हतपतमे पास्पोट बिनौलक। अपन किछुयो नै रहै विदेशमे। तैयो घरक पड़ोसी मदनके सहयोगमे हुनकर मामासँ भीसा मङौलक। पहिने कहिआए पैसामे भऽ जाएत कहितो प्लेनपर चढ़ऽसँ पहिने १ लाख नगद लेबाक जिद करऽ लागल। पैसा नै भेलाक कारणे दोबरके कागज बनबा लेलक। आब दूपि-माछ दूनू बातर भऽ गेलै महेसके। की करत? घरमे सब सदस्यके आँखिक नोर पोछैत ओ गेला कतार। मुदा हुनका सभके नै चाही एना, काम नाछिरके कइहक दिन-राति धुपमे तबूक उठाएब आ देह छिलाकऽ बस्किडंग कन्सटक्सनमे काम करब। नै खेबाक नीक व्यवस्था, नै सुतबाक। कम्पनी सेहो सप्लाइ।

घरक याद बड़ सतबै महेसके। मुदा पछाजाक अटल रहथिन महेस। कतबो दु:ख पीड़ा होइतो काम नै छोड़थिन। ओइठाम व्याज बढ़ि कऽ घर धारवी रखबाक स्थिति आबि गेलै। एतऽ पगार जहिना के तहिना।

धन-धन सोचा-सोचा कमजोर भऽ गेल बेचारा महेस। एक धन काम करैत काल करेन्ट लाग गेल हुनका। साि-संगीक सहयोगमे अस्पताल लऽ जा जान बचलखा। मुदा हाि बना काम के भऽ गेल। ऊपरसँ कम्पनी, तोरा गल्तीसँ करेन्ट लागल आ कम्पनीके समान सभ नोकसान भेल, कहैत मास सेहो काट लेलक। शरीर बना कामके भेलासँ उपचार करेबाक बदला महेसके घर पठा देलक। महेसके आँखसँ नोर बर-बर टपकैत रहल।

घर पहुँचलाक बाद ओ माएक स्थति देख बौक भऽ गेला। जेना मुँहसँ शक्ि अबाज नै नकलल। माय सेहो अन्ताम सास रोकने बस महेसक लेल। बौवा-बुच्ची बाबूक सनेसक पतीक्षामे। पती लेल सेहो शक्ि नै। हाि खाली। बड लाचार भेलखा महेसके।

शक्ि धन बाद उपराग सबसँ महेसक ियतीक बान्ह टुट गेलै। ई बान्ह बड मजबूत होइ ि आ टुटलापर सवनाश होइ ि। ईएह भेल महेसक साि। अपन जबान बहीनक ववाह दहेजक कारण नै भऽ सकल आ गामक लोगक ताना सुन-सुन ओ पागल भऽ गेला।

महेस, बहीनक सुरक्ष लऽ कऽ रक्ष करब, उदेश्य रखने हमर बेटा ऐ गरीबीक चपेटामे जनगी नरक बना लेलक। आ हम सभ दर-दर भटक रहल ि। अते कहैत बुढ़याक आँखमे नोर भरल आ जोर-जोरसँ चच्चया उठल आ धीया-पुता जका हुचक -हुचक कानऽ लागल।

भुखाएल जानवर सभ

१

आइ भोरेसँ कतारक सभ ठाम आन्ही-तूफान बसारो आ बसहाथि ततेक ने भेल जे बुझू पानिक नै मासक बरसात भेल आ एखनो तक भऽ रहल छै। हमरा बुझा पड़ैत अछि जे बुन भरि पड़ैते रहत। ओना हम दुखित नै छी आ रहने हएत की? कारण पकृतिके पराजित केनाइ असम्भव। ई आजुक हवा अकिक बेसी कष्ठि तँ नहि भए केलक। तखन छै की तँ हवा संगे आएल बाउलक कण सभ आँखिक भौंह आ पपनीमे ठोका-ठोका मजा लुटि रहल छलि। जखन कामपर आकललौ तँ हजारो सपना उड़ि कऽ लऽ गेल बसहाथ सीमरके रुइया जका अपना साथि गगनमे। तैयो हम पसन छी ई सोचि जे काथि छथि जे सपना केवल आँखिक आतामे सजाओल छलि आइ तँ कमतीमे हवाक सहारासँ अकाशमे सूर्य चन्द्रमा एवम् तारा संग भखिपोख मनोरंजन तँ लैत हेता.. खुशीसँ तँ झुमैत हेता, आ अपन सफलतापर खुशीसँ तँ नचैत हेता।

२

कतेको दिनक बाद आइ फेर सफ्तरङी आकाश देखऽमे आएल। मौसम पूरा साफ आ बुलन्द। ऊपरसँ टप-टप पानि पड़ि रहल जेना

बसन्तक आगमन भेल हुअए। मुदा मन्टुश्चयाक आँखि नोरसँ भरल। पजिमे कैद भेल सुगा जेहन िटपटा रहल। सच मानू तँ ऐठामसँ भागब जेबाक पयासमे, मुदा ई असम्भव।

मन्टुश्चया एकटा नेपाली नारी अछि जे १ साल पहिने कमेबाक लेल कतार आएल रहए। गामपर घरबला दोसर महिला संगे ववाह कऽ एकरा िछि देलाक बाद अपन एकटा बेटीके माए-बाप लग राखि दर-दर ठोकर खाइत कतार पहुँचली। एतौ ओतेक नीक काम नै मुदा एक गोट शेखके [मालिक] घरमे कामकाज भेललै। दु:ख तँ बि िलै तैयो अपन बाध्यता आ ववशता देखि दन काटऽ लागल।

मन्टुश्चया देखऽ मे पातरे-छितरे, सामला रङ, ने बेसी नमहर, ने बेसी िट, लगभग २५ बषक कि जवानी। िट-िट आँखि आ दहिना गालपर ताँलबा ततेक ने सोभै जे लोक सभ पिछि लागि जाइ। ओना काम घरक कहतो शरीरके साट-साट कम नै करै। कतेक दन तँ डाइभर लोकनि सेहो रपैयापर पस्ताव आगू बढ़ौने रहै पर ओ सभ सफल नै भेला, कारण इज्जत बेचि खाएब मन्टुश्चयाके पसन्द नै िलै।

कतारक राजिनी दोहासँ २ कलोमीटर पश्चिम नजमा जाए बला बाटमे होली डे बल्ला होटलक पिािमे मन्टुश्चया मालिकक घर ि। अपने बुढ़बा २ टा शादी कएने िछि आ एखन ५५ सालके भऽ गेला। बुढ़बाके १ बेटी आ ४ बेटा भेला कुल ५ गोट धीया-पुता

िलश्रा। जइमे जेठ बेटीक श्रवाह भेल ि, सहुदीए रहै ि कहा-दन। बाकी सभ कुमारे। खुल्ला साढ़ जका।

श्लनकर बेटा सभ ततेक ने श्चिोरा जे शुरए श्वनसँ मन्टुश्वयाक पिाि हाि ि कऽ पलि ि। अतेक श्वन तँ कोनो श्वि बश्च गेल। मुदा आजुक श्वन माश्वक दुनु मलकाश्चक संग हुमरा करबा लेल सहुदी गेल। एहने मौकाक इन्तजार िलै ओइ कौवा-श्चल सभके।

भश्व श्वन कतऽ रहै नै पता मुदा साझ पश्चते िम-िम चार भाइ आएल। पमुख गेट बन्द केलक। अपन कोठामे जा खाना देबाक लेल श्चकलोल केलक। मन्टुश्वया खाना लऽ जखने आएल ओहो गेट बन्द भऽ गेल। श्चच्चामे पान-परागक पौच, मेल्डोल [शराबक] बोतल तैयार, जेना पूवियोजना रहै। साि श्च.भी. मे थी-एक्स प्लेयर लगा काम उतेजनाक पयासमे। एकर अश्वश्वक्त एकटा कोनो गोली रहै जे जूसमे िऽ कऽ मन्टुश्वयाके श्वया देलकै। मन्टुश्वयाक सरपर कामदेव ताण्डब करऽ लागल। रडमंच रन्कैत गेल। नाटक क्लाइमेक्स तरफ बढ़ैत गेल। िरे-िरे सबके जवानीक भूत चढ़ैत गेल आ भुखाएल जानवर सभ मन्टुश्वयाके लुटैत रहल, मन्टुश्वया लुटाइत रहल, लुटाइत रहल...... बस लुटाइत रहल ।

३

आइ फेर कतेको श्वन बाद हमरा मनमे एकटा सम्झना के लहर उठल। मन अस्त-व्यस्त भऽ गेल। बचपनमे साि सभ संगे खेलैत

िली जे बालु-बालु आ चोरा-नुकी, ओ सभ आइ बहुत याद अबैत अथि, कारण ऐठाम आइ ओहने बाउल देखलौ। मुदा थकि फरक तँ अवश्य ि, एकर गनि, एकर रङ आ एकर स्वादमे। अपन थथिलाक बाउल जइपर हमर बाल्यकाल बतल, नाना पकारक खेल खेललौ, ओ कतेक पथि िल। कतेक ममस्पिशी लागए। एखनो ि थन राश्व बाउलमे मुदा ओतुका स्नेह, अभास केवल मनमे, आत्मामे आ शरीरक खूनमे मािसीथत अथि। शायद हमर दुभाल्य अिवा पारदकि फल कही, हम अथथिन रपमे अपन मातृभूथके पुकाथ रहल ि एतुका रेथस्तानमे, सामुथरक लहरमे, उँचका महलमे आ नमहरका गािमे, मुदा अस्पष, असमभव आ घनघोर अनिकार लगैत अथि अपन माथपाथ, अपन संस्कृथ। सोचैत िहम थकएक एलौ एहन उजाि, पतझि आ मरभूथमे। फेर दोसर मन कहैत िथि ऐठामसँ तोहर घर पथवार आ नून तेल चलैत ि। तो एकरा मरभूथ कोना कथ सकैत थिही? हवा, पानी, अन सभ थकि एतुका खाइत ि। अतेतऽ की पथवारके बचबाक आिर ि ई रेथस्तान, तँ तो कोना एकर अपमान कऽ सकैत ि ? हम थरतर भऽ जाइ ि। थस्तव भऽ जाइ ि।

पेम-पि

हमर पाणप्यारी नमता,

मन भश्वके माया आ स्नेह मा‍ि अहाके।

हम ऐठाम कुशल रश्च अहाक कुशलताक कामना करै ि‍ी। अहाक श्चयोगमे श्चना पाश्चाक मा‍ि आ श्चना नेहुक मास बनल हम एतऽ पश्चवारक भरण-पोषण लेल ि‍मजीश्चक टोपी लगा श्चन काश्च रहल ि‍ी।

काश्चि क फोनसँ सच्चे हमर मन बि‍ दुश्चत अश्चि। अहाक उपराग ि‍ल जे हमरा श्चसश्च गेलौ, बराबर फोन नै करै ि‍ी। अहाके हमर श्चयाले नै अश्चि। मुदा सत्य ई नै ि‍ै। श्चकएक तँ हम तँ बस शरीर ि‍ी जइके आत्मा अहा ि‍ी। जौ शास लेबऽ बला फोकसो हम ि‍ी तखन अक्सीजन तँ अहा ि‍ी। आब अही कहू जकरा श्चना हम एक पल बाश्च नै सकब ओकरासँ अलग रहबाक कल्पना कोना करब? मुदा तैयो पश्चश्चश्चश्च लोकके दोसरके सामने श्चवश कऽ दै ि‍ै। आन लग काम करब, ओहो पचण्ड गमीमे, बि‍ पैघ बात ि‍ै। घरमे बश्चाया-कुबश्चाया श्चि‍ नै खाइ ि‍लौ। मुदा एतऽ सुखल खबुस श्चबाएब लत भऽ गेल अश्चि।

नेपालमे रहैत काल श्चदेश माने स्वगि हिएत, से कल्पना करै ि‍लौ। ओतुका लोक सभ आनन्दसँ, खुशी सा‍ि जीवन श्चतबैत हेता, से भम ि‍ल। पैसा जेना गा‍िसँ श्चला कऽ लाखक लाख पठबैत अश्चि, तश्चना

बुझाइ ि ल। शायद एखन अहूँ ओहे सोचैत हएब । मुदा देखू हृदेशरी, सत्य ई नै ि । स्पगिकहल ई जगह थयोगा भासमे तथि-तथि मरऽ बला सि ान ि । एतऽ पैसाक महत्व संगे मनुष्यक खरीद-बकी होइ ि ।

दोसर थ्दस राष्ट्रमे अहा संग बताएल ओ पल सभ, स्नेहक तीत-मीठ गप-सप बढ़नीक खोता जका हमरा मानस पटलमे आब्ब कऽ आन्द तोथि दैए। कखनो-कखनो थदेश ि थि कऽ अही संग ओइ ठाम साग-पात खा दीबसँ गमएबाक इच्ि ा होइए। मुदा बगतके दु:ख, ददसँ मन तरथ्स जाइए। सच्चे नीक खाना, नीक कपि ा आ नीक गहना लेल कतेक तरथ्स गेल ि लौ। नीक खाएब आ नीक लगाएब सपना भऽ गेल ि ल।

एतऽ आब्ब पथ्वार टेबब एकटा थ्कनर थलल अथि। दाथात्व पूरा करबाक एकटा सहारा अथि। हम एतबेमे खुशी ि ी। मुदा तैयो फोन करबाक पयाप्त पैसा आ समए नै हएब, दोसरके बसमे बि द जका जोताएब, घर-पथ्वारसँ दूर रहब थ्यन्ताक थषय थीक।

एहन थषम पथ्थ्थि थ्तमे हमर सािदेब, आत्मथशास बढ़ाएब, अपनामे ियत्तीक बान्ह मजबूत राखब, अहाक कतथ्यि अथि। कारण अहाक ियत्ती आ आत्मथशासे पवासमे हमरा हौसला पदान करत।

अन्तमे समय-समयमे फोन करैत रहब से वाचाक संग एखन थराम। बाकी दोसर पि मे।

अहाक स्नेही

एकान्त राम

मरभूमी टोल, कतार

ग्रहण्श्म कि। खण्ड

## श्वपश्वायाक श्वदेश

कतेको श्वनसँ मुँह घोकचौने श्वपश्वायाके ओठपर आइ भरल मुस्कान अछि। कारण तीन मश्वनाक बाद पश्चिम श्वससँ चान्द उगल। माने कम्पनी आइ तलब देबाक लेल राजी भेल। तीन मश्वना धरि श्वश्वान बहाना बनाकऽ टारैत छल। अगला मश्वना अगला मश्वना अगला मश्वना..... । मुदा तीन मश्वना बाद कामदार सभ जब उखरल तँ कम्पनी सेहो श्ववश भऽ गेल सेलरी देबाक लेल। मुदा ओतेक सोश्वया नै रहै कम्पनीक मनेजर। लेबर सभके ठश्वक फुसला एक मश्वनाक तलब देलक आ २ महीनाक राश्वए लेलक। अन्तत: जे होइ, सभ कामदारके खुशी भेलश्व। श्वपश्वाया सेहो खुशी भेला।

सेलरी लऽ पैसा गनैत अछि तँ मात्र पाच गोट नमरी। पश्वनेसँ आएल मुस्कान श्वपश्वायाक मुहसँ श्वला गेलै। ओ श्वश्वात भऽ गेला। कारण खानाक पैसा बङालीके उधारए छलश्व। चुल्हा चौका चलाएब हेतु घरमे पठाबै पड़तश्व। ओतबे कहा महनतसँ लेल ढौआ नै बुझेता तँ ५०००० के सुइद-सुइद जोड़ि कऽ २ लाख बनाइए देतै। आब की करता? श्वपश्वाया गम्भीर सोचमे पड़ि गेला। "घर पश्ववार छोड़ि कऽ सात समुन्द्र पार एला पेटक लेल मुदा तैयो घर नै चलल आ पेटो नै चलल, धिक्कार अछि हमर मेहनत आ हमर कामके- बरबाद इत आ लड़ैत ZEKREET क trust exchange मे जा पभु मनी टान्सफर दारा पतीक नामसँ खाना पैसा सभ पठा देलक। आरो नै श्वकड़ तँ ओइ महनत छश्वाकके कजा तँ सधतै।

बहसल कथाया

-गामबाली दीदी, जनकपुर जाइ छी? रकू कथा हमहूँ जाएब। समान सभ लेबाक अछि हमरो आ आरो बहुत रास काम अछि ।

- नै यै कथाया, हम अहाके लऽ कऽ नै जाएब, अहाक सास बड नङ्गटनी अछि। हमरा बेसतथ कऽ कऽ दिऽ देत।

-दूर जो, झाटब बारहथासँ बुझ्याके। कमाइ छथि बिदेशमे हमर घरबला आ कोह कटै छि ओइ लटलहबीके। तँ ने बेजाय, २४ घण्टा हनहन पटपट कथते रहैए ।

-ओ जे कहै छथिन सेहे कथयौ ने से। थकए नै चलै छी हुनकरे जूथामे?

-यै दीदी, हम कहा पढ़ल, थाखल छथाकाहा घरक बेटी, सभ थनसँ लैस लमफा कैने, शहर बजार घुमने, चाथ घाटक पाथा पीने। मुदा ई हमरा गाइ-महीस जका बाथह कऽ घरमे रखै छथि तँ कोना रहबै। ऊपरसँ हमर पथा तँ मुटाक मुटा रपैया पठबते अछि तँ की गम हमरा? अहा छोड़ू ई बात सभ, चलू.. चलू .. जल्दी, टेन छुट जाएत।

# न्याय

स्कूल जाइ काल एकटा लिकीके ओहे गामक मुख्यियाक बेटा अपना हबसक शिकार बना लेलक। ई घटना सुनलाक बाद स्कुलमाया िाि सभ ओकरा बि थपटलक। ऐ घटनासँ हुनकर बाबूजीके अपन पगिी खसबाक भान भेलै आ अपन बेटाक करतूतपर पदा देबाक लेल पञ्चायत नै करबाक घोषणा केलक। मुख्यियाक एहन पक्षपात देखि पूरा समाज मीिंग कऽ एक आिणि केलक जे न्याय आखिर न्याय होइ ि। आ सबके साि उच्चित न्याय हएब आवश्यक ि चाहे ओ राजा हुअए या पजा। तै पञ्चायत हेबाक चाही तिा दोषीके कमि अनुसार उच्चित सजाय भेटबाक चाही। समाजक आगू मुख्यियाक कोनो बस नै चललै। ओ पञ्चायत करबाक लेल विवश भऽ गेल। दोसर दिन भोरे पञ्चायत बैसल आ उच्चित न्याय भेल।

जेहन करणी तेहन भरणी

साझक समयमे बुढ़िया अपन नवकी पुतौहके लऽ कऽ पोखरि-झाखरि जाइ छलि। तखने ओम्हरसँ रामगंजवाली अबै छली। बीचेमे बाटमे दुनुके भेटघाट भेल आ रामगंजबाली पुछलक बुढ़ियासँ -

-यै काकी, एकटा बात फेर सुनलिऐ, केनादन सच्चे?

-गे की सुनलहीय से?

-ऐ बुढ़िया निगढ़ीवाली छौड़िया नै सुनलिऐ से, कहादन दोसरो घरबला छोड़ि देलकै?

-हँ गे, सुनलियय हमहूँ। दूर बररबियाके कोन बात। बुढ़ारीमे छाढ़ारी करऽ जेतै तँ अहिना हेतै ने।

-हँ यै काकी, हे घरमे ककरो नै गुदानै छलै। अपने मनसँ जे जे मन होइ छलै से से करै छलै। घरबला बेचरा परदेशिया छाया २ साल ३ सालमे एक बेर अबै छलै आ फेर चलि जाइ छलै। मुदा ढौवा रपैया सभ एकरे नामपर पठबैत छलै। कोनो चीजक तकलीफ नै। से रंडिया दुनू बच्चोके छोड़ि कऽ सभ ढौवा लऽ कऽ ओइ चमरबा मरदबा संगे कोना उढ़रि गेलै? आ आब जखन ढौवा चूसल भऽ गेलैय तँ लात मारि कऽ भगा देलकै। नीके भेलै कुकमीके जेहने करणी तेहने भरणी। आब छीछियाइत रहो जिनगी भरि।

पश्चाशोि

नव थ्यवाश्चत सुभाषके आइ सुहागराश्च िथ्या। खान-पीन समाप्त भेलाक बाद हजारो सपना ति पेमपूणिआशा बोइकऽ पेयसी इन्तजार कऽ रहल घर थ्यस बढ़ल। एगोट पएर असोरापर आ एगोट आङनेमे िलै थ्यक थ्यातरीसँ कन्या बाजल- "कश्याक हमर पएरक चप्पल नेने आउ, हम थ्यसश्च गेलौ।" नवपतीक एहन संस्कारहीन बात सुश्च सुभाषके करेजपर ठनका खसलै मुदा दाम्पत्य जीवनक पश्चल थ्यन आ पेयसीक पिमि राश्च सोश्च जखन ओ चप्पल लऽ कऽ गेला तँ घोघ उठबैत सीना ताश्च कऽ कन्या बजली- "अहाके हम चप्पल लाबऽ लेल अढ़ेबाक पयोजन बुझश्चाऐ? अहाक बाबूजी मुँहमाङी रकम लऽ अहाके बेचलक अश्छि आ हमर बाबुजी एक-एक िूरि जमीन बेश्च हमरा लेल अहाके थ्यकनलक अश्छि। ऐ थ्यसाबे पैसासँ खरीदल दास भेलौ अहा जे आवश्यकता पिलापर खरीदार थ्यकिु करा सकैए।" ई गप्प सुश्च सुभाषक गदनि लाजसँ झुश्च गेलै आ ओ श्चारतर भऽ गेला। तखन कन्या फेर नम भऽ कहलश्च- ई हम बस अहाके महसूस करेबाक हेतु एकटा अश्चानय कएलौ। आजुक बाद एहन थ्यकिु नै करब। एखन लेल क्मापािी िी।"

कन्याक आँश्चमे अपन बाबूजीसँ लेल गेल पैसाक ज्वाला िलि। टकापर थ्यकाएबला एहन दानवरपी पश्च पश्च पश्चाशोिकि भावना िलि।

उपकारके चुपकार

हम जयनगरसँ अबै छलौ। रस्तामे देखलौ, एकटा महिला अपन ६ महिनाक बच्चाके गोदीमे लऽ कऽ कनै छलि। लगमे जा जखन देखलिऐ तँ ओ हमरे पड़ोसी मनोजक भनसिया रहए। माने हमर गामक भौजी। घर एकेठाम हेबाक कारण हम सभ एक-दोसरके बड नीक जका जनैत छलौ। हमरा देखिते ओ आरो जोड़-जोड़सँ सिसकि-सिसकि कानऽ लगली। की भेल भौजी, छोट बच्चाक लेने एना किएए भागल जाइ छी? पशक उतरमे ओ बजली- "हमरा ऐ दुनियामे कियो नै अछि। जतऽ ततऽसँ हम ठोकरे खाइ छी तै हम मरि जाए चाहै छी। हमरा छोड़ि दिअ। जत मन हएत, ततऽ चलि जाएब। ने तँ जहर माहुर खा मरि जाएब।"

एहन थाकिएल बात सुनि हम नमसँ पुछलिऐ- भौजी एना किएए बजै छी? घरमे फेर झगड़ा भेल से? तब ओ अपन दु:ख भरल कहानी बताबऽ लगली- बच्चा कानऽ लगबाक चलते खाना समएपर नै बनि सकल तइसँ हुनकर ससुर-सासु आ पतिदेव सेहो पिटलकनि आ घरसँ भगा देलकनि।

खित-खीसमे ओहिना बाजल हेता ओ सभ, चलू अहा। घर छोड़ि नै जाउ कतौ। कतेक समझौलाक बाद ओ आबऽ लेल राजी भेलनि। जखन हम अपना संगे मोटरसाइकिलपर लाबि ओकरा दूरापर उतारलौ तँ उनकर ससुर, सासु आ हुनकर पति हमरा उपर उल्टे लाठि ना

लगौलक। तोरे कारण ई मौथ्याया अतेक बहसल ि। तोरे श्वासखाएलपर एके टाङपर नचै ि। आश्च्च आश्च्च ....

तखन हम महसूस केलौ जे दोसरके इज्जत बचाएब आ अपना बेइज्जत हएब। दोसरके भलाइ करब अपन चश्वि हत्या कराएब। उपकारके चुपकार एकरे कहै ि।

विचार करु कविजी के

नमस्कार कवि जी!

नमस्कार! नमस्कार!

कि समाचार सञय बाबू?

ठीके छै अपन कहू?

हमरो नीके छै रामजीके कृपासँ

कविजी जँ नै बिसयाइ तँ एक बात पूछी?

कहऽ कहऽ की बात?

यौ काल्हि राज्यामे मुल्लानी सौगात दारा अतेक भव्य समारोह आयोजन भेल छलै। अपने किएए तमसा कऽ चलि एलौ?

ति् छोड़ू ओ बात सभ सञय जी। यौ कहू तँ हम अतेक दिनसँ कविता लिखै छी आ ओ रमलखना हमरा कविताके बारेमे पढ़ाउत? कविताक बिम्ब आ पतीकके अवगत कराओत? ओ कहै छलि जे अहाक कवितामे आरो निखार एबाक बाकी अछि। बिम्ब आ पतीकमे आरो सुधार लाबू। ओतेक पैघ साहित्यिक समारोहमे हमरा बेइज्जत-बेइज्जत कऽ कऽ छोड़ि देलक। तै हम सभा छोड़ि कऽ भागि एलौ।

हम तँ बौक भऽ गेलौ ओइ कथाजीक एहन गप्प सुनि कऽ। कहैत छथि जे कथा तँ देश आ समाजक पथप्रदर्शक होइ छै। अपना रचनासँ नया देशक निर्माण करै छै। मुदा एहन विचारधाराक कथासँ कि नया युगक निर्माण भऽ सकैए, जकरामे अपन गुण-दोष सुनबाक क्षमता नै छै। हमरा लोकनि नै फुरा रहल छल।

## कथ्वता खंड

हमर श्रथिलाि म

ऐ ि रतीपर पावन नगरी

नाम जकर अथि श्रथिलाि म

सीता संग श्रवाश्चत पाहुन

मयादा पुरषोतम राम

भश्चतभाव चार श्चस पसरल

अथि पश्चद जान श्रजान

श्चदापश्च संग वेद पुराणसँ

हमर श्रथिला बि महान

र श्च मुश्च हमर श्रथिलाके

अथि श्चश्चत जगतमे नामी

राजा जनक, सीता रामके

एक पौराणिक नीक कहानी

एहन सुन्दर मिथिला नगरीके
लङा कए बनौने ि
बम, आतंक, हत्या, विध्वंसासँ
दुनियामे चर्चा पौने ि

कतबो कमाएब ढौवा रपैया
बरकत्ता नै बनु माइ के
जकिल देशके ि िने सुख नै
कतार सउदी जाइके

बनती हमर मिथिला बचाउ
सम्मान सभ ठाम पाबू यौ

चाहे रही घर आङनमे

या विदेश कमाबू यौ

खूनक ढेला संग नवपुस्ताक पतन

सुन सुन हौ भैया सभ

आथाक थांगारी पसाही लाथा

देशभथ तबाही मथा गेलौ

जन्मदाता सभ रितीपर अवतरण

कराबऽसँ पथनेथ

अपन-अपन कोथाके सुर डाह

करऽ लगलौ

भथाष्यक कणार बच्चा

काथि थि उपमा देआहार सभ

दाम्पत्यक सुखमे थाप्त भऽ

अमी, राक्स आ नरथाशाच भऽ गेलौ

सृथ क फूल बआ सुन्दर थानगी लऽ

अनुपम ब्रम्हाण्डक अवलोकन करब

एहन पुनीत आ परम उद्देश्य

खूनक ढेला संग बेकार भऽ गेलौ

के दोषी, ककर अछि दोष

ककरा अछि होश, के अछि बेहोश

लोभी, लालची, महत्वाकांक्षी सन

मात-पितासँ मनो घबराए लगलौ

दोसर श्रेस रोगी लेल भगवान कहेबाहार

समाजसेवी नामसँ परख्यात भेबाहार

आ स्वाभिक्षि विषपान केबाहार

आला-सुइ बला सभ

भौतिकवादक चपेटामे पड़ि

परिभाष भऽ गेलौ

मच्छर आ खुनचुवा जका रस चुसऽ लगलौ

पता नै ई रावणराज कश्ह्रया िश्व चलत

लैश्क्ष्क असमानतामे गभ किश्ह्रया िश्व उजति

भगवान सबुश्च्ह देश्वि ऐ दुरात्मा सभके

कारण श्यताक आगू माझ्यो लाचार भऽ गेलौ

माने खूनक ढेला संग श्र्मनगी बेकार भऽ गेलौ

श्रीसाब श्रीमनगीक

माचमिश्रनाक उतरादमि आइ हम मृत्युके देखलौ

सुनने िलौ/ सोचने िलौ

मृत्यु अत्यन्त सुन्दर होइ ि

सरल होइ ि

मुदा यिािश्बल्कुल फरक

श्बल्कुल अलग पैलौ

भयानक आ श्बकिाल र प देश्ख

हम डरसँ पाश्न-पाश्न भऽ गेलौ

आब ऐठाम-

मृत्युक कटघरामे हम अपन

भूत, वतमान आ भश्वष्य

स्पष्ट देश्ख रहल िी

एखन िश्ब अनुमाश्नत हम

५ लाखक दार  पीने हएब

२ लाख ५० हजार ७०० क माउस खेने हएब

कतौ अपने लुटेलौ / कतौ दोसरके लुटलौ

एनामे बबाद भेल हएत हमर जमा

३ लाख ७५ हजार

आइ हम सोचै ि ी-

ऐ रकममेसँ ब्बक ि पढ़ाइमे लगौने रब्बतौ तँ

आइ हमरा पास कोनो ब्बषयक ब्बडगी रहैत

ब्बक ि पैसा स्वास्थ्यमे खचनि रब्बतौ

तँ हमर शरीर कोनो ब्बमारीक घर नै रहैत

अ िवा

ओ रपैया बचल रहैत तँ

अपने देशक कोनो नीक शहरमे

आलीशान महल बनल रहैत

मुदा दुभात्मक गप्प, एहन कि नै भेल

फलत: हम नकक्कि चकर काटि रहल छी

आ एखनो रास्ता-रास्ता भरि

सादा पनापर

कलमक नोखसँ

जिनगीक हिसाब करै छी

बस हिसाब करै छी।

नबरडी बिलाइ

देखलौ एतऽ भिन-भिन बिलाइ

कारी बिलाइ कोनो उज्जर बिलाइ

खैरल बिलाइ आ गैरल बिलाइ

अछि सब ठाम बिलाइए बिलाइ

बिलाइ नेपालक बड़ होशियार

सिंह दरबारमे पैसैत अछि

कतारक बिलाइ ठीक विपरीत

हमरा किचेनमे पैसैत अछि

देखलौ सब किछु जुठौलक बिलाइ

मोट बिलाइ कोनो पातर बिलाइ

बच्चा श्वलाइ आ बुढ़िया श्वलाइ

अखि सब ठाम श्वलाइए श्वलाइ

मोट श्वलाइ जेना नेपालक

जनताक खुन चुसने नेता

पातर श्वलाइ कतारमे जे

भटकल अनाथालयक बेटा

देखलौ सब नबरङी श्वलाइ

वैष्णव श्वलाइ-साकट श्वलाइ

घुसहा श्वलाइ आ फुसहा श्वलाइ

अखि सब ठाम श्वलाइए श्वलाइ

नवबषर्क शुभकामना

जन्मब दुर्लभ ऐ िरतीपर

मात्र-पात्र अछि जकर महान

सद्वयोसँ पथचचा पौने

अछि आयर्समाज स्थिदमान

पूवर्ज श्मनकर नाना कें मे

कुशल, जानी, गुणवान ि

इश्वहासक हर पनापर

एकसँ एक नीक नाम ि

एखनुक मैथिल पिभष भऽ

कुकमी-कुसंस्कारी भऽ रहल

आिुिनकताक दुगर्धित हवासँ

िराशायी श्वस्थिलाके कऽ रहल

एहन श्रेष्ठतम पश्चिमाञ्चलमे

अपन कतर्व्यक बोध करब

भटकि आएल, भुलल, भटकल जनके

लऽ सत्मार्गक ओर चलब

ई पुनीत कर्मयोगी सभमे

अछि हमर चरण बन्दना

सम्पूर्ण विश्व एवम् समाजमे

ऐ नववर्षक शुभकामना

हमर समाज बौरा गेल

एखनुक सबसँ पैघ सवाल

अछि सगरो बलात्कारे बलात्कार

गाममे बलात्कार, शहरमे बलात्कार

देशमे बलात्कार, विदेशमे बलात्कार

बुझू जे घोर कलयुग ि गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

अत्याचार, आतंक, मझला-हिंसा

आस्तर्दि भऽ सब केउ देखैत अछि

जनता तँ आपसमे फुटले देखब

लुटेराक िससँ सरकारो डगमगा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

सुरक्षाकमी प्रभिष भऽ जुआ खेलै

शाश्वतसेना हीनताबोधिमे दार पेलै

अशाश्वतक भूमध्यमे िरती खौझा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

कतौ फेसबुकसँ बलात्कार

ककरो स्काइपमे बलात्कार

कखनो श्वाम्पुजसँ बलात्कार

तँ कतौ टवीटरमे बलात्कार

एहन अपराि सवि ि गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

सहनशीलताक पश्चामूश्चा िनारी

मयादाक पश्चिष ाता होइ ि

माया-पेमसँ जगत फुलाबै

स्नापदशनिक रष ा होइ ि

मुदा दुभाल्म दानवक उदय भेल

सकुनी मामा संग कंसक आगमन भेल

रौपदीक चीरहरण, सीताक र पहरण

श्मन्दनीय घटना आइ फेर दोहरा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

की कहू, देखलौ घोर अनैश्माक बात

जइठाम देखू बलत्तकारे बलत्तकार

बेटीक बलत्तकार, दीदीक बलत्तकार

मौसीक बलत्तकार, थ्यउसीक बलत्तकार

बुझू जे घोर कलयुग ि ा गेल

माने हमर समाज बौरा गेल

परदेशी धिया

कोना बिसरलौ मुँहो हमर
भेलौ अहा कोना बिरान
जन्म-जन्मक वन्धन तोड़ि क' निसँ
पल भरिमे भऽ गेलौ आन

देखि सपनामे िाती फटैए
सपनामे देखि कऽ धड़ल िकैए
लोगक धिया घर आबै िधि
हमर आखिसँ नोर खसैए

जन्मेसँ हम भेलौ अभगली
बचपन थिनल सासुर पौली
बाली उमरमे भेलौ परदेसी

श्वनु थ्ययाके जीवन श्वतौली

केश फल्कौवामे तेल गमकौवा

लऽ जाइत ि लौ पान-मखान

टोकलक श्वच्चे बाट मुझौसा

अहा गामक बुढ़बा हजाम

नीक नै लागै श्वन अहाके

लौटब कश्चया अपन गाम

असगर आङन दात कटैए

श्वन अहाके ठाम-ठाम

केश अहाके श्वखि ल-श्वखि ल

चेहरा जेना लागै बबाल

लोग लगाबै ओठ लिपिस्टिक

मुदा अहाक ओहिना अछि लाल

देखि अहाके आँखि शराबी

लागए समुन्दरक पानि जेना

जनु बतौने हमरा रानी

छिपेलौ एहन जवानी कोना

छुरी जइसन नाक अहाके

हीरा जइसन दात अछि

चाल ढालपर हम फिदा छी

कोयल सन मीठ-मीठ बात अछि

मुस्कान अहाके गजब हसीना

तारीफ कतबो कम अछि

देहो जेना संगेममरि
और ओहूमे दऽम अथि

बाजल जखने पएरक पायल
केलक हमर थ्वलके घायल
नि नि नि बजल झंकार
लऽ गेल हमर चैन करार

मन करैए देखैत रहतौ
सथ्वखन अहाके पास रही
जौ लौट आएब अहा लग रानी
बि पेम करब से आस करी

िश्चक शुभकामना

िश्च पावश्न ुिमािमसँ
हएत पोखरीपर जाइ के
माि नमा कोश्च नमन
करै िी हम िश्च माइ के

सु-स्वास्ि दीघायु जीवन
पुरबश्वि सबके कामना
सम्पूणाि िदालु भक्तजनके
ईएह अश्वि शुभकामना

प्रिया अहाके यादमे

मेघ सन कारी केशपर
गोरे गोरे गाल यौ
आमक रस सन लाल ओठपर
प्रिया अहाके नाम यौ

हम दू जोड़ी संग-संग जीअब
गायब प्रेमक गुणगान यौ
मरऽसँ पहिने आ मरलाक बाद
बस रहब अहाक गुलाम यौ

हे प्राणेश्वर लौटब कहिया
करब कखन आराम यौ

घायल दिलके मलहम अहा

दिल अछि अहाक मकाम यौ

राति-राति भरि निन्द नै आबै

बड़ जोर झकझोरै याद यौ

दिन अहाके गिनगी बीतल

अहा दिल्ली, अरब, असाम यौ

नोर बहैए नयनसँ हमर

राह देखैत सौ बेर यौ

अपने भेलौ परदेशी बाबू

हम छी एतऽ बेकार यौ

बिनु पाइके मछली बुझू

फुटल अलमुनियम थारी यौ

श्वनु रोश्वतके श्वमन्दा लाश

भेल ई अहाक रपाली यौ

पेमक फल

सीसा फुटल श्वल टुटल
सकनाचुर भऽ श्वरिया गेल
डोलीमे ओ गेली श्वया घर
हा िमे दार िमा गेल

दारए हमर सा ी-संगी
श्वनु ओकर सहारा नै
कखनो ठरा कखनो प्याक
श्वनु ओकर गुजारा नै

श्वनगी अपन नरक बनेलौ
ओइ लजश्वजीक प्यारमे
मरणासनमे सास अश्वि लटकल

ओ मजा करै ससुरालमे

प्यार करब पैघ बात नै

श्वमाहब ब िका बात ि

पेमसँ ककरो जीवन सम्हरल

ककरो जीवनमे घात ि

## वेलेन्टाइन शुभकामना

बिन्दिया सब दिन चमकैत अहाके
हाथक मेहदी लाल रहए
वेलेन्टाइनक शुभ अवसरपर
जोड़ी अहाक बबाल रहए

चूड़ी अहाके खन-खन खनके
पेमीसँ बहुते प्यार भेटए
दु:ख अहाके देखि कऽ भागए
खुशी केर संसार भेटए

फूल सन ई खिलल चेहरापर
कली सन मुस्कान अछि
नै देखि अहाके पेम दिवसपर

दिल बहुत परेशान अछि

दिलसँ दिलके बात कही

बिनु कहने नै रहि सकी

हेप्पी वेलेन्टाइन डे ति

मनसँ पेमक गुनगान करी

सम्मान जन्मभूमिक

आएल नया साल देखू

लऽ कऽ एक नया उत्साह

सब मिलि मिला एक दोसरमे

करए हृदएसँ प्रेम प्रवाह

आइ कतेक महत्वक थिक दिन

एक दोसरके सब जुराबै

रहए सबदिन एहने दिन

शान्ति आ समृद्धि पाबै

मानव बीच सद्भाव देखल

बोधिवृक्ष सभ जेना हरा-भरा

मनोरम दृश्य आ अद्भुत पारीकार

लागए जेना प्यारा-प्यारा

ईर्ष्या दोष त्यागब उत्सवमे

पुन: अश्व जुश्व पश्ववार चलाएब

आमक चटनी आ दही भात

चैतक श्वन्हल बैशाखमे खाएब

िटल ई सौभाग्य हमर

जखने बढ़लौ श्वदेशक ओर

राश्ता-राश्ता भश्व श्वान्द नै आबए

भोरे आश्वसँ टपकए नोर

अपनेक दुआ आ ियतीक आिमे

काममे हम पसािन करै िी

अन्ताकरणसँ हर अवसरपर

जन्म आ कमभूश्वमक सम्मान करै िी

## जूड़ि शीतल

दु:ख अहाके देखि कऽ भागए
खुशी केर संसार भेलए
टोला टापर घर डगहरमे
अहीक जय जयकार भेलए

खूब जुराबै मात-पिता सभ
भाइ बहिनसँ प्यार भेलए
जूड़ि शीतलके शुभ अवसरपर
पाहुनके सत्कार भेलए

झूठ फुसिसँ जान छोड़ाबथि
सचके करबथि सामना
सदखनि जीवन गमगम गमकथि

ईएह नव बषक्रि शुभकामना

पवासक वेदना

हमर थ्मनगीक कोनो थ्इसाब नै रहल

पढ़बाक लेल कोनो थ्कताब नै रहल

बैसल ि ी एखनो असगरे एकान्तमे

थ्कन्तु पीबाक लेल कोनो शराब नै रहल

सपनामे ओहे चेहरा अबैए

अबैत अथ्छ ओहे ठाम आ गाम

कतबो थ्बसरऽ चाही थ्दलसँ

नै थ्बसथ्र पाबी जनकपुर िाम

ि ी मैथ्थल हम थ्मथ्थलाक बासी

दूर ि ी तैयो अपन पदेशसँ
थ्यवशताक मारल, पि तारल
पि थ्यखै ि ी अलग देशसँ

माए बाबुके चरण-बन्दना
दोस्तके हमर सलाम रहल
अन्जान-सुन्जानपर ध्यान नै देबै
माफ करब सब कहल सुनल

मन लगाबी कतबो एतऽ
थ्यउ टाङल अथ्य दूरापर
थ्यन कटै ि ी राथ्य अइ भारी
सदखथ्य जान अस्तुरापर

पेमक मलहम फोन बनल अथ्य

जीबाक माध्यम दू बात अछि

ािकल ठेस्न्नआएल आबी जौ कखनो

लागै नै केओ सािा अछि

कते कहू पवासक वेदना

श्वखैत सेहो शरम लगैए

नोर आखिसँ टपटप चुबए

कलम पकित हाि कँपैए

बस ई श्वनती नीकसँ रहब

नीकसँ राखब गाउँ समाज

एक श्वदन हमहूँ लौट कऽ आएब

जगमग करतै श्वमथिला राज

सुझा श्वाअ दू बात हमर

भला करब तँ भला भेटत
बुरा करब तँ बुरा भेटत
ई छै जगत जननीक रिती
कर्मक फल अवश्य भेटत

हे मानव नीक कर्म करि
करै छी किए व्यवसायाश्च सन
चोरीक नि नै रहत सब श्वन
करै छी किए धियाश्च सन

ऐठाम सब किछु नाशवान छै
जाश्व पति ई जग छोड़ि कS
बनु भक्तके सुख नै भेटत

रहब कते मुँह मोिथ कऽ

सुनै िी जानकी मन्दिरमे
थाटी बालु थारबै िी
अपन स्वाथि पूरा हेतु
जनताके थ्वसयबै िी

एखनो जानक ताला खोलू
आब जाउ नीक पिपर
दुदशिासँ बचौथि न मैया
आशन हएत स्वगि रिपर

हम सब मैथिल एक रही
एकजुट भऽ सािि चली

पश्चिमचान बनाबी अपन अधिलाके

इतिहासक पनापर चमकैत रही

सब कहै िथि मर -भूिम
हम कहै ी उबिर ि
रेिगस्तानमे एहन भूिम
दशिन भेनाइ दुलिभ ि

हम ी एखन कतारमे
चार िदस समुन्रसँ बेरल
िक ु अंश ि बालु पति र
कतौ अिथि महलसँ घेरल

ऐ देशमे एकटा ठाम
जमेिलया जकर नाम ि
वसोवास हमरो अिथि ओइठाम
अपनेमे ओ महान ि

नाना पकारसँ पश्चिमी सभ
ईमान्दारी अपन बचौने िै
दूर देशमे रहैतो आत्म
अपन स्वाभिमान बचौने िै

ई अछि अभि नेपाली हमर
पतिरमे कएने िथि हरा-भरा
नै घटै कहियो रोटी इनका
परिवार संग रहथि कुशल सदा

पुन: चमकतै मिथिला राज

जय मैथिल जय मिथिलावासी

कर सब मिथिला कऽ जयकार

बन्द हेतै कुशासन सबके

पुन: चमकतै मिथिला राज

सब ढेलफोड़बा नेता तेहने

लै टिकट, कुर्सी, भत्ता

पार्टी अते जे नाम याद नै

जन्मल जेना गोबर-छत्ता

के रावण के अछि कुम्भकरण

ककरा बुझी न्यायक भगवान

झोरा भरब रणनीति सबके

बस रामलीलामे बनैए राम

हाथीसन दुमूँहा दात थि

एक देखाबै दोसरसँ खाए

पीठ पाछाँ छुरा मारत

मुँहपर बाजत भाए यौ भाए

आइ पद थि घुमा लेब

बकिका बकिका गाछीमे

थकिब जखने फुफिनर बनतै

थकिएतै बारी-झारीमे

माङल भीख नै भेटतै ककरो

सभ जनता जँ अलबै आब

बन्द हेतै कुशासन सबके

पुन: चमकतै अथिला राज

आबो थ्वकए नै थ्वअस्न बाश्च कऽ

ऐ दानव सभके ािद करी

हक थ्विनब जँ पाप थ्विक तँ

थ्वकए ने एक अपराि करी

गरीबो दुश्चया चैनसँ जीअत

हेतै गाउँ समाज उदार

बन्द हेतै कुशासन सबके

पुन: चमकतै थ्वअथिला राज

भैसी हेरा गेल

आइ भोरे हम गेल छलौ

चोरआया चौरी भैसीमे

सामे मोहना, सोहना आ

बुधिनो छलि भैसीमे

बुधिना-मोहना जामुन तोड़लिक

सोहना संग आबि बटलक

हम कहलियै हमरो दे

ओ कहलक अपने तोड़ि ले

मन हमर बेचैनित भेल

तरबाक तामस मगजपर गेल

सोचलौ अनेरे हम नै जरी

कथता आखिर मन ठण्डा करी

जा कऽ बैसलौ आबि कात

लागल एक कथता हाथि

तखने आएल भैसी के याद

दौँत गेलौ डगहर कात

नै देखवते हमर मन डेरा गेल

की कहू हमर भैसी हेरा गेल

नङौश्चया सािी

हम जन्मली कुसी अम्बश्चया

ओ जन्मल इजोश्चयामे

संगे खेलली बालू-बालू

मीत लागल दुपहश्चयामे

संगे पढ़लौ संगे श्चखलौ

घुमलौ बि बि खेत पिार

कखनो तोिलौ आम आ जामुन

कखनो चोरौलौ अपने अचार

बचपन श्चतल यौवना आएल

गामक संगी दूर पिाएल

बाबू हुनकर पैघ श्चमदार

काका सेहो िल श्चकेदार

हमर बाबू ि ट किसान

गुजर करी साझ बहान

हमर पढ़ब सपना भेल

ओ पढ़ि लिखि कऽ मास्टर भेल

मन कऽ भाव उठैए जखने

लिखै ि ि ट कविता सन

नै भेटत कहियो जीवनमे

ओहन नडौबटिया बता सन

सत्यता

हम मानव छी

एक जीवन जन्मलौ संसारमे

माय/ बापक इच्छा संगे एलौ संसारमे

नाना तरहक क्रियाकलाप कएलौ

कोनो नीक काम

कोनो खराब काम

कखनो सामाजिक काम तँ

कतौ अपराधिक काम

मुदा की अपने सभके बुझल अछि?

हमहूँ एक दिन जर र मरबै

गोरहा-काठीसँ डहि-डहि जरबै

इहलीला हमर समाप्त भऽ जेतै

शरीरक संगे कुकर्म सभ जेतै

कारण हमरा पता अछि-

श्रीकए श्रीक,

पृथ्वी नाशवान ि

नाशवान रहतै

सब श्चन नै श्रीकयो अमर रहलैए

आ नै श्रीकयो रहतै

पकृश्चाक यिाि दुश्वायाक सत्यता

ईएह ि आ ईएह रहतै

मृत्यु पाित

हमर मृत्यु पाित हवा ओहने बहतै

जेहन लिैए पश्चने

दुआया ओहने रहतै

जेहन रहै पश्चने

सूर्य, चन्द्रमा

पृथ्वी, आकाश

सब अपना अपना ठाम

अपन गश्चासँ चलतै

केवल फरक हेतै ओ कण

जतऽ हेतै हमर शव

श्चकयो कनारोहट करतै

श्चकयो आँचरसँ मुँह पोितै

सर पटकतै हमर बेटा

दू ठोप कनतै हमर बेटी

हेतै श्खासहाय हमर कश्चाया

लगतै कश्चया हुनका भेटी

मुदा,

ई सभ एकटा मायाक जाल

एकटा मनक भम

केवल कश्चाक समय लेल

केवल कश्चाक श्चन लेल वा

केवल कश्चाक मश्चना लेल माि रहतै

ओ समय-

चलतै जोर-शोरसँ चचा हमर

मुँह-मुँहसँ बाट आ डगहर

श्चकयो कहतै हम नीक िलौ

श्चकयो कहतै खराब

श्चकयो देतै उपमा अमृतके

कियो कहतै डकहर शराब

ऐ लोकापवाद संग,

समयके चक चलिते रहतै

जिनगी ओ सभ कटिते रहतै

एतै पुन: कोनो नया आयाम

बिसरि जेतै सभ हमर नाम

सबके मनसँ हेरा जाएब हम

सदा-सदा लेल बिसरा जाएब हम

दैवक खेल

सपना हमर सपने रह्ङ गेल

मागक सेनुर बझ्ङए गेल

आस लागल ि ल जाङ्ङ थ्ययापर

हमरा िथ्रि कऽ चङ्झए गेल

नैन तकैय मन कनैय

हा ि क चूि ी बाट जोहैय

पएरक पायल झनङ्क झनङ्क कऽ

थ्यया थ्ययोगक गान गबैय

अपन थ्यकस्मत समयक खेल

थ्यमनगी थ्यमअब नसीब नै भेल

भरल जवानी रससँ डुबल

दैवो केहन आतुर भऽ गेल

घड़ी देखि-देखि दिन कटै छी
गनि तरेगन होइय भोर
होस ने कखनो सुधि ने कखनो
अधि राति ए छल भेल इजोर

हम अभागल छवि वा बनली
करेजक टुकड़ा लैए गेल
आस लागल छल जाएब सियापर
दुखाया छोड़ि कऽ चलि गेल

रक्षाबन्हन

भाइ-बहिनक पेम भरल छै

श्रावण ने एकरा अछि अनेक

एक दिन ला सालमे आबए

तैं तँ छै ई पर्व विशेष

थारि सजल छै लड्डू रखल छै

लाल चन्दनसँ माथ रङल छै

हर्ष-खुशीके बाढ़ि आबि गेल

हाथमे स्नेहक डोर बान्हल छै

चारु दिस गुंजए गीत

भाए-बहिनक रीत आ पीत

मा अम्बेसँ करैत पार्थना

होए भैयाके जीते जीत

नीक पि रोज यौ भैया

बढ़तै हमरो आत्मविशास

रक्षा करब देश, समाजक

रखने ि बस ईहे आस

अहा हमर आँखिक तारा

ि हम बन्न अहाक दुलार

शिक्के चङुलसँ करब

सदखनि अपन भूमि उदार

बाट जोहब हम ऐ दिनके

रहत जािथ ठोठमे पाण

रक्षाबनि जगमग करतै

भैया भ्मअत सालो साल

िश्च

मध्य राश्च सपनामे हम नेपाल गेल िलौ

िश्चमे पश्चवार संगे बि खुशी भेल िलौ

ठकुवा भुसबा आरो सब कुि लऽ गेल िलौ

फटकाके झोरा मुदा घरही श्चसश्च गेल िलौ

माय, बाबू बश्चन भाइ कश्चाया िलीह सािमे

िट-िट बातपर तैयो रश्च गेल िलौ

पसाद खाइत काल श्चान्द खुलल जखने

अपने ओिनपर कतारमे सुतल िलौ

श्चपनामे होइत सच्चे मजाक करैत सािी

ित् हम तँ बेकारमे सपनामे गेल िलौ

दिवाली

भेटब दोसर दिवालीमे

हम ऐ साल नै आबि सकलौ

मुदा आएब दोसर दिवालीमे

पूजा करब संगे लक्ष्मीके

पसाद चढ़ाएब थालीमे

रावण मारि कऽ राम एलाह

तखने भेल दिवालीक शुरुआत

दीप जराएब आरती करब

खुशी बाटब अछि पैघ बात

अपने झुमू सब केउ झुमताह

खुशी मनाउ परिवारमे

श्वसश्व सब श्वकि मन लगाबू

फटका ि ि दरबारमे

असत्यपर सत्यके पताका

तै अश्चि ई पाबश्च महान

आगामी श्वदनमे टुटे अश्वना

दुष दलके ई अश्वमान

सत्संगत सु-मागि देखाबू

मा सँ बस ईएह पानि कर

गरीबी भागै समृश्व आबै

बस ईहे अचनि कर

अन्तमे हम की कहू अहाके

ध्यान राखब ऐ पालीमे

हम ऐ साल नै आबि सकलौ

मुदा आएब दोसर दिवालीमे

पेमक अकार

की अछि पेम की एकर अकार

दैअ सब केउ अपन विचार

करैय सब केउ पेमक पूजा

पता नै ककरो के अछि दूजा

पेम बिना अन्हार अछि जिनगी

लगबै नारा बुढ़बा-नन्हकी

बच्चो जुअनका ऐमे मातल

सबके आँखिपर पटी साटल

किओ कहैय देहसँ पेम

किओ कहैय सुरतिसँ

किओ करैय जन्म-रितीसँ

किओ करैय मूरतिसँ

सब केउ अपन जमबैत अछि

आन-आन रुप बनबैत अछि

हम कहै छी मनमे अछि पेम

हम कहै छी आत्मा अछि पेम

गाउमे छलौ गाउँ टा छलि पेम

शहरमे एलौ शहर टा भेल पेम

देशमे छलौ सीमित छलि पेम

विदेशमे एलौ देशटा भेल पेम

जौ जौ जाइ छी दूर देशसँ

पेमक आयतन बढ़े विशेषसँ

रखने छी एखनो छातीमे

सचने छी मनक पाँतीमे

हमरा नजरिमे उतम अछि पेम

आ परम विशाल अछि एकर अकार

इक कहब अछि अपने सभके

दिअ सबकेउ अपन विचार

जनकपुरक रेल

जनकपुरक रेलवे स्टेसन

बनल अछि एक बज विशेषण

जीर्णअवस्थाक मरम्मत जररी

सेहो टालल दोसर सेशन।।

नेपालक एक मात्र रेल यातायात

सेहो बनल विशासघात

जनकपुरसँ खसकलल गाड़ी

पटरी छोड़िक बिचे बाट।।

बौआ पुछलखिन माय कहू

ई टेन कखनिया छिय चलत?

माए बजलखिन सुनु बौआ

कुसीक खेल जखनिया छिय चलत।।

खिच्चाखिच्च-खिच्चाखिच्च छिड़ते

स्वर्गभिऽ जाएत अपन देश

समान अवकास सभठाम हएत

नै रहत कोनो उलझन अशेष।।

रेलवे आऽक रेलक चाटि

बड पैघ समस्या छै

आवेदन हमर सम्बन्धितसँ

जल्दी ऐपर ध्यान देबै।।

अस्पतालक हाल

जनकपुरक अञ्चल अस्पताल

बनल अछि एक पैघ सवाल

समयमे जँ नै ध्यान देबै तँ

रुप ईहो लऽ लेत बिकराल ।।

फोहरमैला व्यवस्थापन देखल

ऐ संस्थाक दोसर खराबी

नै भविष्यक परवाह अछि ककरो

करए सभ अपन मनमानी।।

स्वास्थ्य विभाग पीने सभ सेवक

नै लागय मन उपकारमे

रोगी ऐ ठाम खूनसँ लतपत

मुदा ओ व्यस्त छथि अपन संसारमे।।

देशक सर्वोच्च जनशक्ति तँ

ऐ बातपर ध्यान दिरी

रोगीक लेल भगवान बनब तँ

अपन कतर्व्यिक बोि करी।।

आबो,

दु:ख, पीिा जनताक बुझब

ईहे मनमे आस अधि

समय-समयमे अस्पतालो टेबब

अटुट जनधवशास अधि।।

अपन अलग पहिचान बनेबै

अहूँ आबू हमहूँ एबै

अपन अलग पहिचान बनेबै

बड पीने ि ल खून मुझौसा

तेलचटाके तेल चटेबै।।

हेतै वापस भेट जखने

चमरा खेतमे मुँह डुबेबै

भक-भक सुझतै दुश्मया तखने

ढौसा बेङक ढौह फुलेबै।।

कुसी थि नबै सता थि नबै

स्वन-राश्मक भाता थि नबै

फटर-फटर जे करतै जखने

देहक कपा ि-लता थि नबै ।।

नै ि ि बै नै क्मा करबै

हकले चाहे जीबै मरबै

मरि जेबै तँ लेखा लेबै

जीबै तँ गङ्गा स्नान नहेबै।।

यौ भैया यौ बाबू आबू

बन्दूक देखि नै पाछू भागू

चाही जँ अधिला राज अहाके

जोरिसँ अपन डेग बढ़ाबू।।

बदलू सरगम बदलू साज

डटि कऽ कर अपन काज

चुमत सफलता कदम अहाके

गम गम करत अधिला राज।।

चान्द सुरज अछि साथि अहाके

धरतीसँ आकास धरि

प्रशासक एकटा उदाहरण पकड़ने

बैसल अभिराम सास धरि।।

चलू सभ केउ युदमे जेबै

अपन अलग पञ्चान बनेबै

चार थ्दस फहरेबै झण्डा

िटे थ्अथिला राज बनेबै ।।

गीत

राश्ता ि लै काश्रि ि श्रि

भोर भऽ गेलै

कारी पोतल इश्वाहास

इजोर भैए गेलै।

बड सतौने ि लै

तङ केने ि लै

ओहो तनाशाह मरल

सोर भैए गेलै

चलु उठी कनी

आबो जागी कनी

सबठा श्चश्वलाक

झण्डा फहराबी कनी

हम तैयारे ि ी

अहूँ तैयारे रहू

ओइ ि◌ि◌नरके

अहा खबरदार कहू

आब भेटतै सभ हक

पछ्वने खाली ि◌लै

ढेलफोरबाके एतऽ

मनमानी ि◌लै

सब एक जुट भेली

जोर भैए गेलै

राख्ना ि◌लै...........

भोर भैए...

मनक भाव

की चूक भेल हमरासँ जकर

देलौ एहन सजाए अहा

ि ी सब केउ अपने साि-साि

पर केलौ कए हमरा जुदा ।।

सपना देखब अपराि थीऐ तँ

एहन प्यास जागल कोना

बनु पवार नगी टेबब

जीवन एहन काटब कोना ।।

झुठ-फुक इलजाम लागए

ई नारी जीवन केहन

पवार प अटुट िदा होइतो

बताबी हर िन नरक लागे जेहन।।

सुआ, सोच कनी ध्यान िरी

नै जुदा कर पश्चवारसँ

ि ी सदस्य हमहूँ ऐ पश्चवारक

नै वंश्चात कर पश्चवारसँ।।

सामप्रदाियक दङा

समाजमे गेलौ फूट देखलौ

पिरवारमे देखलौ आपसी दन्द

टोला-टापर स्तब्ध मौनता

नेता सभ करे नारा बुलन्द।

िवखबाक िल हमरा सामािजक कि

जनता-जनादर्नक पीर आ व्यिा

खोजैत िलौ कोनो यािि घटना

भेटल ओतऽ लुटपाट घटना।

िाट-िाट बातक िवषय बनौने

राजनीितके अपन अजेण्डा बनौने

िमिनरपेक देशक जनता सभ

सामप्रदाियक दङाक आहान कएने।

कािि ि िव िलै सलीम चचा

आइ भऽ गेलै तलवारक िनशाना

ईद श्रीवाली एक बुझाइ जेना

लुटै ि आइ सभ ओकरे खजाना।

हमर कलम ओतै ठरा गेल

मन-मश्तिष्क दुनु घबरा गेल

देखी नतीजा नङटे नाचके

बुझु हमर मश्मि सुखा गेल ।

नै बनल कोनो नीक कश्विता

नश्चिये बनल रसगर उपन्यास

मानवता, सामाश्चिकतापर आँच आएल ि

लगै सब ओतऽ हास-पश्चिहास ।

हमर श्चावेदन पश्चिर अङा

कतेऽ नचै िी नङे -नङा ?

भश्चिष्य अहाक चौपट भऽ जाएत

ते बन्द कर साम्प्रदाश्चिक दङा ।

चेतना

स्वार्थ-स्वार्थसँ भरल संसार

छिनए सबके सब अधिकार

अपन अभिमान बचएबाक हेतु

करए लाखो अत्याचार।।

की कहू दुनियाक रीत

किछु नै समझमे आबैए

अपन झूठ शान-सौगात ला

मिथ्या दोष लगाबैए।।

मानव भऽ मानवता भुलब

ई केहन अनैतिकताक बात कहू

नैतिकताक पतन, अखण्डतामे दाग लऽ

आब कथीक परिताप कहू।।

अपील सुनू, चिन्तित इनसान

अपनहि जैसन सबके मान

स्वाभिना जँ आनगी टेबब

आश्रित बनत देश महान ।।

एक एहनो नारी

चाही उनका स्टेण्डर खाना
तीत नै श्क मीठ-मीठ  दाना
खचा किरऽ मे कश्आयो कम नै
बस देखब सकसि श्मनेमा॥

भोरे उश्ठ अबै ि ी जखने
आथ्रिक्ि सोतक अ िरपर
थ्य ाुवारेसँ चुपे श्आकलल
शोथ्यंग करऽ बजारपर॥

नया श्ठजाइनक सा ि ी चाही
अश्आनेि ी सन गहना यौ
बात श्उनकर िश्आ ि ु ि कर

थ्कक कथ्वयै हम बश्चना यै॥

नव युथ्कतसँ नव पेमी संग
पेमक नाटक थ्रीक श्चनकर काम
िसलश्वा जे श्चनका फेरामे
भऽ गेलाह ऐठाम बदनाम॥

पश्चनेक नारी एश्च श्वथ्रिलाके
सहनशील आ कतेक सुशील िलीह
आजुक नारी भौश्वाकवादमे
मैथ्रिलानीक गुण श्वसश्व गेलीह॥

थ्कक हएत हमरा श्वथ्रिलाके
नारी जौँ पि िथ्रि देताह

जीवनके दु रि होइ ि

श्वनु नारी जीवन कोना चलताह॥

आशीष अनचिन्हार

मुनाजीक गजल

मायाराम झा सरस जीक संपादनमे बर्ख १९९० मे "लालकला आ लोकवेद" नामक एकटा साझी गजल संग्रह आएल। ऐ संग्रहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आमुख अछि। पहिल आमुख संपादक जीक छन्हि आ ओ तकर शुरूआत एना करै छथि "समालोचना आ साहित्यिक इतिहास लेखनक केहेन मे तकरे कलम भँजबाक चाही जकरा ओइ साहित्यक प्रत्येक सूक्ष्म स्पंदनक अनुभूति होइ.......", अहि ठाम सरसजीक हिसाबे कोनो साहित्यिक विधा आलोचना, समीक्षा वा ओकर इतिहास लेखन वएह कऽ सकैए जे ओइ विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी तँ ई नतीजा निकलैए जे गजल

शाकि आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे गजलकार होथि। मुदा हमरा आयिलिगैए जे ने ई. १९९० सँ पहिले सरस जी ई काज केलाह आ ने १९९० सँ २००८ धरि ई काज कऽ सकलाह। २००८ के ऐ दुआरे हम मानक बखिलेलौ जे कारण २००८ मे छपनकर, मने सरस जीक, एखन धरिक अंतिम गजल संगह "शोणित आगि-शोणित पानि" एलनि मुदा ओहूमे ओ एहन काज नै कऽ सकलाह। आ बख२००८ मे गजल शाकि पर केन्द्रित हमलाग "अनचिन्हार आखर" आएल जइमे गजलक व्याकरण आ आलोचना पर पयाप्त काज भेल। आ गजल शाकिके सरस जी आ हुनक टीमसँ छुटकारा पाप्त भेल। आ जे काज १०० साल मे नै भेल से मात्र एक साल पाच मासमे गजेन्द्र ठाकुर कऽ देखेलाह आ मैथिली गजलके पहिल गजल शास्त्र देलाह। ई हमरा हिसाबे कोनो गजलकारक सीमा भऽ सकैत छलै मुदा सरस जीक दोहरा चरित्र ओही आमुखक तेसर आ चारिम पृष्ठ मे स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जतए सरस जी लिखै छथि "मैथिली साहित्यमे तँ बंगला जका गीत-साहित्यक एकटा सुदीघ परंपरा रहलैक अछि। गजल अही परंपराक नव्यतम विकास थिक, कोनो पश्चाबद आलोचकके से बुझऽ पतैक। हँ ई एकटा दीगर आ महत्वपूर्ण बात भए सकै जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एखन नव्यतम शाकि आलोचना हेतु कोनो मापदंडके नहि छन्हि। नहि छन्हि तँ तकर जोगार करथु.........." आब ई देखल जाए जे एकै आलेखमे सरस जी कोना दोहरापन देखा रहल छथि। आलेखक शुरआतमे हुनक भावना छन्हि जे जे आदमी गजल नै लीखै छथि से एकर समीक्षा वा इतिहास लेखन लेल अयोग्य

छथि मुदा फेर ओही आलेखमे ओहन आलोचकसँ गजल लेल मापदंड चाहै छथि जे कहियो गजल नहि लिखला। भऽ सकैए जे सरस जी ई आरोप अपन पूर्ववर्ती विवादास्पद गजलकार मायानंद मिश्र पर लगबैत होथि, जे कि सरस जीक हरेक आलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा ऐठाम हमरा सरस जीसँ एकटा प्रश्न जे जँ कोनो कारणवश माया जी ओ काज नै कऽ सकलाह वा जँ मायानंद जी ई कहिए देलखिन्ह जे मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरस जी) की केलखिन्ह। २००८ धरि मैथिलीमे १०-१२टा गजल संग्रह आबि चुकल छल। मुदा अपने सरस जी कहा एकौटा गजल संग्रह समीक्षा वा आलोचना केलखिन्ह। गजलक व्याकरण वा इतिहास लेखन तँ बहुत दूरक बात भऽ गेल, सरस जी कहै छथि जे गोर बीसेक बहरमे ओ गजल लिखै छथि, मुदा हुनकर संग्रहसँ स्पष्ट अछि जे बहरक सामान्यो जान हुनका नै छन्हि, आ जँ छन्हि तँ से हुनकर गजलमे गोर बीसेक छोड़ि, एकोटा बहरमे गजल लिखल नै भेटैछ। ऐ आलेखसँ दोसर बात इहो स्पष्ट अछि जे सरस जी कोनो समकालीन आलोचकके गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। जँ कदाचित् कनेकबो सरस जी आलोचक सभके मापदंड देने रहितथि न्हि तँ संभवता २००८ धरि गजल क्षेत्रमे एहन अकाल नै रहितै।

आब हम आबी विदेहक अंक ९६ (१५-३१ दिसम्बर २०११) पर जइमे श्री मुना जी द्वारा गजल पर परिचर्चा परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग पेमचंद पंकज नामक एकटा

पक्षधरभागी सेहो छलाह। पंकज जी अपन आलेखमे आन बातक संग इहो लिखैत छथि "कश्यप व्यक्तित्व एकटा राग अलाप्य रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नहि भेटि रहल छैक। एहन बात पाय: एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलके कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानैत छथि आ एकरा एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बुझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जनिकामे गजलक सूक्ष्मताके बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिके बुझबाक लेल हुनका लोकनिके स्वयं पयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भटा नहि बुझाओतनि। हँ, एतबा अवश्य, जे गजल छुच्छ झाझि खेलखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बल पर समीक्षक समालोचक लोकनिके अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त।" अर्थात पेमचंद जी सरसे जीक जका भटा नै बुझबाक पक्षमे छथि। सरस जी १९९० मे कहै छथि मुदा पंकज जी २०११ केर अंतमे मतलब २२साल बाद, सरस जी सेहो बहरमे नै लिखैत छथि पाबै छथि आ पेमचन्द्र पंकज सेहो बहरमे नै लिखैत पाबै छथि। मतलब बखत बदलैत गेलै मुदा मानसिकता नै बदलै। ओना ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे भटा बुझाबए लेल जे जान आ इच्छा शक्ति चाही से बजारमे नै बिकाइत छै। मुदा आब ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे मायानंद मिश्रक बयान आ अजानतासँ मैथिली गजलके जतेक अहित भेलै तइसँ बेसी अहित सरस जी वा पंकज जी सन अभटाकारी लोकनिसँ भेलै।

आब हमरा लोकनि आबी मुना जी प्रस्तुत हुनक पहिल गजल संग्रह पर। जँ अहा मुना जी द्वारा लिखल आमुख पढ़ब तँ नीक जका बुझा जाएत जे आखिर मैथिली गजलमे मुनाजी किएक कछुआएल रहलाह। आखिर की कारण छै जे पंकज जी अपन खास शिष्यकेँ गजल सुनबैत तँ रहलाह मुदा अपन शिष्यकेँ गजल लिखबाक लेल उत्साहित नै केलाह जखन कि हुनका बूझल छलन्हि जे मुना जी गजलमे सेहो रुचि लऽ रहल छथि। भऽ सकैए जे ई आरि-खेत बला भावनाक विषय हुअए मुदा एकर परिणाम खतरनाक भेलै। अतिम मुना जी बहुत दिन धरि गजलसँ दूर रहि गेलाह। हमरा विश्वास अछि जे जँ पंकज जी ओइ समयमे मुना जीकेँ भटा दितथि तँ आइ मुना जी गजलमे बहुत आगू रहितथि आ मानि इएह मुना जी नै बल्कि हजारो मुना जी गजलमे आगू अबितथि। मुदा एतेक भेलाक बाबजूदो हमरा खुशी ऐ बातक अछि जे मुना जी कछुआएल तँ रहलाह मुदा पछुआएल नै रहलाह। आ ई बात अहा हुनक हरेक गजल पढ़ि कऽ अनुभव कऽ सकैत छी। चाहे ई बात व्याकरणक होइ वा भाव-भंगिमाक वा शब्द संयोजनक, आइ मुना जी अपन समकालीन गजलकार ( खास कऽ अपन शिष्य वर्गासँ ) बहुत आगू छथि।

अनुक्रमानुसार आखर (गजलक संक्षिप्त परिचय, ७८ टा गजल,३२ टा रबाइ आ २ टा कता)

गजलक संक्षिप्त परिचय

गजल मने पेमिकाक आँचर सेहो होइत,गजल मने हरणीक ददभिरल आवाज सेहो होइत छैक, गजल मने पेमी-पेमीकाक गप्प सेहो होइत छैक। कहबाक तात्पर्यजे जतेक विदान ततेक परिभाषा। तखन जँ गजलक एकटा सर्वमान्य परिभाषा चुनबाक हएत तँ हमरा हिसाबे अरबी भाषा मे जे पहिल अर्थ छैक (जेना रइ छैक) आ दोसर पेमालाप होइत छैक आ हमरा हिसाबे इ दूनू अर्थ ठीक छैक। जँ पहिल अर्थ लेबै तँ जहिना रइ के छिलला सँ शुद रइ बहराइ छैक आ ओहि रइ बेसी भए जाइत छैक तहिना आखर(word) के अनुभव सँ छिलल ओहि आखर सँ भावनाक रंगबिरही महल के ठाढ़ करब गजल भेल। आ जँ दोसर अर्थ पेमालाप लेबै तँ कने सूक्ष्म रप मे जाए पडत। स्थूल रपे देखला सँ गजल समान्य पेमी-पेमिकाक बचन लागत मुदा वस्तुता गजल मे आत्मा पेमिका आ परमात्मा पेमीक रप मे अबैत अछि।

गजल मूलता अरबी शब्द छैक तँए इ बुझबामे कोनो भागठ नहि जे गजल नामक काव्य सर्वपथम अरबी भाषा कहल गेल। एखनठाम इ कहब उचित जे शाइरी केखनो लिखल नहि वरन कहल जाइत छैक। एखनठाम शाइरी मने गजल समेत सभ काव्य शैली भेल। गजलक

जन्म आ थकासके जनबासँ पश्चने अरब देशक ऐश्चहाश्चकताके जानब बेसी जररी अथि। इस्लाम मिकि जन्मसँ पश्चनेके समयके जमाना-ए-जाश्चश्चया कहल जाइत िक, जकर मतलब अथि "अन्हार युग"। अन्हार युगमे जाश्च तरहक काव्य रचल गेल ओ मूलता अपन-अपन कबीलाके पशंशा आ थपकी कबीलाक श्चदाशंसँ भरल अथि आ एश्च काव्य शैलीके कसीदा कहल जाइत िक। एश्च युगमे मुतनब्बी नामक शाइर महत्वपूणा िथि।

कसीदामे जखन पेमक पवेश भेल तखनेसँ गजलक जन्म हेबाक संभावना अथि। आ एश्च पयोगक िय इमरउल कैस (539 इ.) के जाइत िश्चह। अरबी साश्चत्य थशेषज सभके मानब िश्चह जे इमरउल कैस अन्हार युगक पश्चल शाइर िथि जे गजल कहब शुर केलथि। संगश्च-संग कैसे एहन पश्चल शाइर िथि जे अपन थयतमके खसल दयार ( दयार मने डीह ) पर काश्च कए गजल कहबाक परंपरा शुर केलथि। कैसक अलावे अरबीमे अन्तर् -श्चन-शदाह-अल-अबसी (525-615 इ.) अपन गजल-उल-अजरी मने पथि पेमक गजल लेल पश्चद भेलाह। अरबीक शाइर अहदे--उमवीक (661-749 इ. ) योगदान गजलमे सवाथिक अथि। तँए थदान लोकश्च एश्च युगके उमवी युग कहैत िथि। उमवी समयमे मका आ मदीना शाइर आ कलाकारक केन्द्र िल। जाश्च कबीला ( खानदान ) मे पैगम्बर हजरत मोहम्मदक जन्म भेलश्चह ओही कबीलामे शाइर उमर-श्चन-अबी रबीय ( 643-711 इ.)क जन्म सेहो भेलश्चह। इ. 701 जन्मल जमील बुसीन थशुद गजलगो शाइर िलाह। बुसीन वस्तुता जमीलक

पेश्वकाक नाम िल जकरा जमील अपन तखल्लुस ( उपनाम ) के रपमे पयोग करैत िलाह। आब एश्व समय िश्व गजलक श्वषय मािशारीश्वक नश्व रश्व भावनात्मक भए गेलैक। पश्वाद शाइर उमर-श्वन-कुल-सूम अत्‌गलबी अपन गजलक शुरआत पेश्वकाक देहसँ नश्व वरन जाम-ओ-मीनासँ करैत िश्वि।

इस्लामक जन्म पािश्वा अरबी शाइरीके श्वषय तँ बदलबे केलै संगश्व-संग इस्लाम जखन इरान इराक पहुँचल तँ गजल सेहो पहुँश्व गेलै। आ एश्व तरहे आब फारसीमे सेहो गजल कहनाइ शुर भेल। फारसीमे गजलगोइ नवम शताब्दीक अंतसँ शुर भेल। मुदा एश्वठाम इ कहबामे कोनो संकोच नश्व जे फारसीमे कहल गजल अरबी गजलसँ बेसी नीक, समृद, उदार आ भावनासँ पश्वपूणि अश्वि। एकर कारण इ जे अरब के तुलनामे इरान सभ्यता-संस्कृश्वाके मामलेमे बेसी श्वकश्वत िल। फारसीमे संभवता रदकी समरकन्दी पश्वल शाइर िश्वि जे गजल कहलश्वि। रदकी गजलक अलावे कसीदा, रबाइ, मनसवी आश्व सेहो कहलश्वि।

फारसीक लगभग सभ महत्वपूणि शाइर गजल कहलश्वि जेना शेख सादी, रमी, ख्वाजू श्वकरमानी, हाश्विज, श्वाराजी इत्याश्व। फारसी गजलमे कमाल ख़जन्दी महत्वपूणि हस्ताक्र िलाह। एश्व सभहँक अलावे ओश्व समयमे उ़फी, मजीरी, ताश्वाब, कलीम आ सायब सभ सेहो गजलक श्वकास अपना-अपना तरीकासँ केलश्वि। एकटा आर गप्प---- फारसी गजलमे सायबके तमसील ( मने दृष ान्त)क बादशाह मानल जाइत अश्वि, मुदा ओ स्वयं एश्व कलाके उस्ताद गनी काश्मीरीके

बुझैत छलाह। आ हुनकासँ भेट करबाक लेल भारत ( फारसी इतिहासमे हिन्दोस्तान ) सेहो आएल छलाह। फारसी गजलके संबंधमे दूटा गप्प आर । पहिल जे अमीर खुसरो " अमीर खुसरो देहलवी"क नामे भारतसँ बेसी इरानमे पसिद्द छलाह। आ दोसर गप्प जे सफवी युगमे इरान शासक सभँहक अकृपाक कारणे बहुत शाइर सभ भारत आबि बसि गेलाह। एहने कममे शाइर शैख- अली-हफी-इसफाहानी जे बनारस आबि गेलाह। सन 1765इ.मे हुनक मृत्यु भेलन्हि । आ एहने समयमे भारतक माटि पर गजल अपन गमक पसारि देलक। एहिठाम इ मोन राखब उचित जे भारतमे अमीर खुसरोके पहिल गजलगो सेहो मानल जाइत अछि। आ एहि गमकक फलस्वरूप कण मीर, गालिब जेहन शाइरके जन्म देलक। आ तकरा बाद धीरे-धीरे उर्दू शाइरीक जन्म भेल। मोहम्मद वली कुतुबशाह उर्दूकि ओ पहिल शाइर छथि जनिकर दीवान ( गजल संकलन) पकाशित भेलन्हि। कुतुबशाहक बाद जे शाइर भेलाह ओ छथि--विासी, वरही, बहरी इत्यादि। आ उर्दूकि संग-संग गजल मैथिलीक माटि पर सेहो पसरल जकर पहिल उदाहरण कविवर जीवन झाक नाटक सुन्दर-संयोगमे भेटैत अछि।

गजल कोना कहल जाइत छैक? आब एहि पश पर चली। सभसँ पहिने जे शाइरी सदिखन कहल जाइत छैक लिखल नहि । आब अहा एकरा अरबी पक्रिया मानि मूँह नहि घोकचा लेब। हिन्दु धर्मक चार वेद लिखल नहि कहल गेल छैक। आ शाइरी सेहो वेदे जका कहल जइत छैक। शाइरी विशुद्ध रूपसँ उच्चारण पर आधारित अछि।

तँए गजल कहल जाइत िक श्चाखल नश्च। आब इ कही जे गजल श्चकि शेरक संगह होइत िक ( कमसँ कम पाच आ बेसीसँ बेसी सहि )। जँ सहिसँ बेसी शेर देबाक हुअए तँ फेरसँ एकटा मतला कहू आ शेर कहैत चलू। आ एना दूगजला, तीनगजला, चौगजला होइत रहत। ओना गजलक संबंिमे इहो िआन राखब जर री जे पाचीन गजलगो गजलमे ताक (श्चषम) संख्या रखैत िलाह जेना 5, 7,9 आश्च। एकर कारण इ कहल जाइत अश्चि जे पश्चने गजलक श्चषय श्चरह युक्त पेम िल तँए जुफ्त (सम) के िश्चि ताक ( श्चषम ) के पाश्चमकता देल जाइत िलै। मुदा आिश्चाक गजलगो एश्च रश्चके तोश्चि देने िश्चि। आब इ बूझी जे शेर की श्चिक। शेर सश्चखन दू पाश्चाक होइत िक आ शाइर जे कहए चाहैत अश्चि ओ दुइये पाश्चा मे खत्म भए जेबाक चाही, अन्यिा ओ गजलक लेल उपयुक्त नश्च। आ एहन-एहन गजल जकर हरेक शेरमे अलग-अलग बात कहल गेल हो ओकरा "गैर-मुसलसल" गजल कहल जाइत िक। श्चकि गजल एहनो होइत िक जकर हरेक शेर एकै श्चषय पर रहैत िक। एश्च पकारक गजलके "मुसलसल" गजल कहल जाइत िक, मुदा "मुसलसल" गजल बेसी नीक नश्च मानल जाइत अश्चि। उदूमे पाश्चाके "श्चमसरा" कहल जाइत िक। शेरक पश्चल पाश्चाके "श्चमसरा-ए-उला" आ दोसर पाश्चाके "श्चमसरा-ए-सानी" कहल जाइत िक।

आब शेरक श्चकि उदाहरण देखू-------------------------

अला हुश्ची बे-सेहने की ि सबहीना

वला तक्की ख़मूरल अन्दरीना

अर्थ--- ऐ साकी सुन पेआला उठा कए हमरा एतेक जामे-सुबूही (जामे-सुबूही मने भोरक बचल शराबक पेआला) दे की जाहिसँ अन्दरीना ( अन्दरीना सीरीया देशक एकटा जगहक नाम अछि)मे एकौ ठोप शराब नहि बचै।

( भाषा- अरबी, शाइर- उमर-बिन-कुल-सूम अत्‌गलबी)

अगर आ तुर्के-शीराजी बदस्त आरद दिले-मारा

ब-खाले हिन्दुवश बख़शम समरकन्दो बुखारा रा

अर्थ-------- जँ ओ सुन्दर महबूब हमर करेज चोरा लेथि तँ हम हुनकर एकटा तिल पर समरकंद आ बुखारा सन-सन देश हुनका दए देबैन्ह।

( भाषा- फारसी, शाइर- हाफिज शीराजी )

उनके आ जाने से आ जाती है मुँह पर रौनक

वो समझते है कि बीमार का हाल अच्छा है

( भाषा-उर्दू, शाइर गालिब )

बाट तकैत दिन बीति जाएत बुझाइ छलै

आस तकैत जिनगी बिताएत बुझाइ छलै

( भाषा- मैथिली, शाइर गजेन्द्र ठाकुर )

लिकीके जाइत नहि होइत कि

लिका अजाइत नहि होइत कि

(भाषा-मैथिली- शाइर रोशन झा)

भागब कोनाक दूर जिनगी सँ

डरब कथिक या मृत्यु केर जिनगी सँ

(भाषा-मैथिली- शाइर पवीण चौधिरी "पतीक")

अहा संग पेम करबा पर बाजतहिम

अपटी खेतमे मरबा पर बाजतहिम

( भाषा- मैथिली, शाइर आशीष अनचिन्हार )

जँ उपरका शेर सभके देखबै तँ पता लागत जे इ सभ दुइये पाँतीके कि आ जे बात कहल गेल कि से पूरा-पूरी कि। इएह भेल शेर। गजलसँ जुडल किछु आर पारिभाषिक शब्द देल जा रहल अछि। बिना एकरा बुझने गजल नहि बुझल जा सकैए।

1) मतला------------"मतला" गजलक ओहि पहिल शेरके कहल जाइत कि जकर दूनू पाँतीमे काफिया आ रदीफ रहै। एकटा गजल उदाहरणक लेल देल जा रहल अछि।

अपन आँखिमे बसा लिअ हमरा

अपन शासमे नुका श्चाअ हमरा

जहा मश्वतो जीबाक आस रहए

ओहने ठाम तँ बजा श्चाअ हमरा

हा सटेलासँ मोन केना भरतै

अहा करेजसँ सटा श्चाअ हमरा

एश्च गजलक पश्चल शेरक पश्चल पाश्चामे काश्कया "आ"क मा अश्चि (केना से काश्कया बला खंडमे पता चलत)। आ रदीफ " श्चाअ हमरा" अश्चि। तेनाश्चते शेरक दोसरो पाश्चामे काश्कया "आ"क मा अश्चि आ रदीफ "श्चाअ हमरा"। संगश्च-संग इ शेर गजलक पश्चल शेर अश्चि, तँए इ भेल मतला। आब दोसर शेर पर आउ, मतलाक बाद इ कोनो जररी नश्च कि जे दूनू पाश्चामे काश्कया आ रदीफ हुअए। मुदा मतलाक बला शेरक बाद जे शेर कि तकर दोसर पाश्चामे काश्कया आ रदीफक रहब अश्चावायि उपरके गजलके देखू मतलाक बाद जे शेर अश्चि------

"जहा मश्वतो जीबाक आस रहए

"ओहने ठाम तँ बजा श्वाअ हमरा"

एश्वर शेरमे देखू पश्चल पाश्वामे ने रदीफ िक आ ने काश्फया , मुदा दोसर पाश्वामे काश्फया सेहो िक आ रदीफ सेहो। अन्य शेरक लेल एहने सन बुझू। ओना मतलाक बाद जे मतला आबए तँ इ शाइरक क्मता के देखबैत िक आ गजलके आर बेसी सुन्दर बनबैत िक। तएँ ओकरा हुस्ने-मतला कहल जाइत िक।ओना शाइर चाहए तँ गजल हरेक शेरके मतलाक रपमे दए सकैए।श्वना रदीफक गजल सेहो होइत िक जकरा "गैर-मुरद्फ" गजल कहल जाइत िक मुदा काश्फया रहब श्वलकुल अश्वावायि।

2) रदीफ-------------- रदीफ मतला बला शेरक दूनू पाश्वाक ओश्वर अंश्वाम श्वसस्साके कहल जाइत िक जे दूनू पाश्वामे समान रपे श्वना हेि-फेरके आबए। उपरका बला हमर शेरके देखू एश्वमे "श्वाअ हमरा" समान रपसँ दूनू पाश्वामे अश्वि अिात इ भेल रदीफ। इ रदीफ गजलक हरेक शेरक हरेक दोसर पाश्वामे (मतला बला शेरके िश्वि) अश्वावायिरपे अएबाक चाही। एकटा आर दोसर मतलाके देखू-----------------

"दूर जतेक जाएब अहा

लग ओतबे आएब अहा"

एहि शेरमे "अहा" रदीफ अछि से स्पष्ट अछि। पूरा गजलमे रदीफ एकै होइत छैक।

उपरमे रदीफक जे उदाहरण अछि ताहिके अलावा एकटा आर रदीफ होइत अछि जे काफियामे पाओल जाइत छैक। एकरा तहलीली रदीफ कहल जाइत छैक। उर्दूमे तहलीलक मतलब "नीक जका भझराएल" होइत छैक। इ उदाहरण सभसँ बेसी फरिछा कऽ हएत। मानू जे अहा कोनो गजलक मतलामे काफियाके रूपमे "चलिऔ" आ "रहिऔ" शब्दक प्रयोग केलिएऐ। आब ओनसँ दूनू शब्दके देखू। दूनूमे "औ" समान रूपसँ छैक आ "औ"के बाद जे बचै छैक से भेल "चलि" आ "रहि" ।आ "औ"सँ पहिने दूनू शब्दमे "इ"क मात्रा अछि संगहि-संग "च"के "र" संग स्वर-साम्य सेहो भए रहल छैक। तँ फेर चली तहलीली रदीफ पर । "चलिऔ" आ "रहिऔ"मे "औ" भेल तहलीली रदीफ। आब इ शाइरके मजबूरी छैक जे ओ गजलक आन-आन शेरमे काफिया लेल ओहने शब्द लेथि जकर अंतमे "औ" होइक। जेना "कहिऔ", "सुनिऔ", "बसिऔ" इत्यादि। बहुत शाइर एहन-एहन काफियामे " औ" के काफिया मानि लैत छथि से गलत। तँए शाइर "चलिऔ" आ "रहिऔ" के बाद कोनो शेरमे " हौ", "रौ" इत्यादि काफिया नहि लेल जा सकैए (मुदा जँ केओ शाइर मतलामे "चलिऔ" आ " हौ"

काफ्याके पयोग करै छथि तँ गजलक काफ्या "औ" स्वर होइत अछि आ एहन स्थितिमे "रौ" आदि काफ्या लेल लेल जा सकैए। एकर बेसी विवरण मात्रिक बला काफ्याक खंडमे भेटत )। आब मैथिलीमे तहलीली रदीफक महत्व एना लेल छैक जे मैथिलीमे विभक्ति सभके सटा कए लिखल जाइत अछि ( बहुत गोटे शब्दक अंतमे "औ" के बदलामे "यौ"के पयोग करैत छथि। तासँ एहनो स्थितिमे "यौ" तहलीली रदीफ अछि)। एकटा आर गप्प मैथिलीमे एहन शब्द जे "इकारान्त" अछि ओकर उच्चारण अलग होइत अछि मने लिखलो पढ़ने जाइए आ बाजलो पढ़ने जाइए जेना की लिखै तँ छी "माछि" मुदा बाजै छी "माइट", लिखै छी "देखि" मुदा बाजै छी "देइख" एकर आन-आन सभ उदाहरण सभ सेहो अछि। मैथिलीमे तहलीली रदीफक महत्व एना दारे सेहो अछि।तँए मैथिलीमे काफ्या निर्धारण छिआनसँ करए पड़ैत आ एकर विस्तृत विवरण काफ्या बला पकरणमे भेटत।

3) काफ्या-------------- काफ्या मने तुकान्त।आ तुकान्त मने स्वर-साम्यक तुकान्त चाहे ओ वर्णिक स्वर-साम्य हो की मात्रिक स्वर-साम्य। रदीफसँ पहिने जे तुकान्त होइत छैक तकरा काफ्या कहल जाइत छैक। आ इ रदीफे जका गजलक हरेक शेरक ( मतला बला शेरके छोड़ि) दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने अनिवार्य रूपे अएबाक चाही। काफ्या दू पकारक होइत छैक------- (क) वर्णिक स्वर-साम्य आ (ख) मात्रिक स्वर-साम्य। वर्णिक काफ्या लेल शेरक हरेक पाँतिमे रदीफसँ पहिने समान वर्ण आ तकरासँ पहिने समान स्वर-साम्य होएबाक चाही। एकटा गप्प आर बहुतो शाइर खाली रदीफक बाद

बला वर्णविन्यासमे कोनो ध्वनिके काफिया बूझि लैत छथि से गलत। काफियाक निर्धारण काफिया लेल प्रयुक्त शब्दके अंतसँ बीच वा शुरु धरि कएल जा सकैए। उदाहरण देखू---------

"दूर जतेक जाएब अहा

लग ओतबे आएब अहा"

एहि शेरक पहिल पाँतिमे रदीफ "अहा" छैक। आ रदीफसँ ठीक पहिने "जाएब" शब्द छैक | जँ अहा "जाएब" शब्द पर धियान देबै तँ पता लागत जे एहि शब्दक अंतिम वर्ण "ब" छैक मुदा एहि "ब" संग "आएब" ध्वनि सेहो छैक। तहिना दोसर पाँतिमे रदीफ "अहा"सँ पहिने "आएब" शब्द अछि। आब फेर अहा सभ "आएब" शब्दके देखू। एहिमे अंतिम वर्ण "ब" तँ छैके संगहि-संग "आएब" ध्वनि सेहो छैक।मतलब जे उपरक शेरक दूनू पाँतिमे रदीफ "अहा"सँ पहिने ब वर्ण अछि, "आएब" स्वर (ध्वनि)क संग।अर्थात "आएब" ध्वनिसँ युक्त "ब" वर्ण एहि शेरक काफिया भेल। आब एहिठाम इ मोन राखू जे जँ उपरक इ दूनू शेर कोनो गजलक मतला छैक तँ ओहि गजलक हरेक शेरक काफिया "ब" वर्णकि संग "आएब" ध्वनि होएबाक चाही। अन्यथा ओ गजल गलत भए जाएत। आब एही गजलक दोसर शेरके देखू------------------

"जँ खसब हम बाट पर

आशा अछि उठाएब अहा"

एहि शेरमे पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया मुदा दोसर पाँतिमे रदीफ सेहो छैक आ रदीफसँ पहिने शब्द " उठाएब" अछि। एहि शब्दक अंतमे "ब" वर्ण तँइ छैके संगे-संग "ब"सँ पहिने "आएब" ध्वनि सेहो छैक।एहि गजलक आन काफिया सभ अछि-------- "नहाएब", "देखाएब" आ "हटाएब"।एकटा आर दोसर उदाहरण देखू-----

"मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक

देखाउसक खातिर कंगाल बनल लोक"

एहि मतलाक शेरमे "बनल लोक" रदीफ अछि। आ रदीफसँ पहिने पहिल पाँतिमे "जाल" शब्द अछि। संगे-संग दोसर पाँतिमे "कंगाल" शब्द अछि। आब हमरा लोकनि जँ एहिमे काफिया निर्धारण करी। दूनू शब्द के नीक जका देखू। दूनू शब्दक अंतिम वर्ण "ल" अछि मुदा पहिल पाँतिमे "ल"सँ पहिने "आ" ध्वनि अछि (मा) आ दोसरो पाँतिमे "ल"सँ पहिने "आ" ध्वनि अछि (गा)।तँ एहि दूनू शब्दक मिलानके बाद हमरा लोकनि देखैत छी जे दूनूमे "ल" वर्ण समान अछि। संगे-संग वर्ण "ल" सँ पहिने "आ" स्वर अछि। तँए एहि गजलक

काफ़िया "आ" स्वरक संग "ल" वर्ण भेल। आब शाइरकेँ बाकी शेरमे काफ़ियाक रूपमे एहन शब्द चुनए पड़तन्हि जकर अंतमे "ल" वर्ण अबैत हो एवं ताहिसँ पहिने "आ" स्वर हो। एहि गजल मे प्रयुक्त भेल आन काफ़िया अछि-----दलाल,पकाल, जंजाल,देबाल | अच्छा तँ काफ़िया पर भेल एतेक मंथनिक बाद एकटा प्रश्न जे जँ कोनो गजल केर मतलामे रदीफक बाद पहिल पाँतिमे " पिाए" आ दोसर पाँतिमे "फोिए" शब्द आबि रहल हो तँ कहू जे एहिमे काफ़िया की हेतै। आ दोसर प्रश्न जे जँ कोनो शाइर " पिाए" आ "फोिए"के बाद आन शेरमे काफ़ियाक रूपमे " जाए" शब्द लेथि तँ ओ सही हेतै की गलत। एहि प्रश्न पर विचार, हम अपन विचार काफ़ियाक विवरणके बाद देब। एक बेर फेर हम अहाँ सभ के मोन पाड़ि दी जे काफ़ियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक, आ बाकी शेर मे ओकर पालन। संगहि-संग इहो मोन राखू जे जँ गजलक मतलामे काफ़िया गलत भेल हो तँ ओकरा पैघ गलती मानल जाइत छैक, मुदा जँ मतलामे सही काफ़िया छैक आ बाकी शेरमे सँ कोनो शेरमे काफ़ियाक गलत पालन भेल छैक तँ ओकरा बड़का गलती मानल जाइत छैक। काफ़िया निर्धारण करबा समयमे दूटा आर गप्प मोन राखू------

1) जँ मतलाक कोनो काफ़िया मे अनुस्वारक प्रयोग छैक तँ हरेक शेरक काफ़ियामे अनुस्वार हेबाक चाही ओहो ठीक ओही स्थान पर जाहि पर पहिल काफ़ियामे छैक। जेना मानि लिअ कोनो मतलाक पहिल पाँतिक काफ़िया "बसंत" छैक, तँ आब अहाँके ओहन शब्द काफ़ियामे देबए पड़त जकर अंतसँ दोसर वर्णपर अनुस्वार अबैत

होइक जेना की "अनंत" , "दिगंत" इत्यादि। आ एहने सन आयम चंद्रबिंदु लेल सेहो छैक। अनुस्वार बला काफियामे एकटा आर गप्प मोन राखू जे बहुत गोटे अनुस्वार बला शब्द के संयुक्ताक्षर ( मैथिलीमे पंचमाक्षर ) रूपमे सेहो लिखैत छथि। जेना की "बसंत" के बदलामे "बसन्त", "अनंत" के बदलामे "अनन्त" वा "दिगंत" के बदलामे "दिगन्त"। मुदा एहन ठाम इ मोन राखू जे एक गजलमे या तँ अहा अनुस्वार लए सकैत छी या संयुक्ताक्षर। जँ अहा एकटा काफिया अनुस्वार बला लेबै आ दोसर संयुक्ताक्षर तँ इ गलत हएत। उदाहरण लेल "बसंत" के काफिया "अनन्त" या "दिगन्त" नहि भए सकैत अछि। हँ " बसन्त" के काफिया "अनन्त" वा "दिगन्त" जरूर होइत छैक। आ से एहि दारे जे संयुक्ताक्षर बला काफिया लेल शर्त आर आयम छैक। जकर विवरण आगाँ देल जा रहल अछि।

2) आब कने संयुक्ताक्षर बला काफियाके देखी। शर्त आर विवरणसँ पहिने किछु संयुक्त शब्द सभके देखल जाए। पस्तानि, चुस्त, दुरुस्त, कस्मत । आब इ देखू जे संयुक्त वर्णअंतसँ कोन स्थान पर पड़ैत अछि। जँ इ अंतसँ तेसर आ ओकर बाद मने चारिम या पाचम स्थान पर अबैत हो तँ काफियाक आयम पहिने जका हएत। मुदा जँ इएह संयुक्त वर्णकाफिया बला शब्दक अंतसँ दोसर स्थान पर अबैत हो तँ कने ध्यान देबए पड़त। मानि लिअ जे मतलाक पहिल पाँतिमे "चुस्त" काफिया छैक। तँ आब हरेक काफियाक अंतमे "स्त" रहबाक चाही। उदाहरण लेल "चुस्त"क काफिया "मस्त" ',पस्त" , "हरस्त" आदि भए सकैए। उदाहरण रूपमे एकटा शेरके देखल जाए--------

हएत कोना गुदस्त जीबन

भेल व्यस्तासँ हरस्त जीबन

आब एहि शेरमे रदीफ "जीबन" भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया "गुदस्त" अछि, आब संयुक्ताक्षर बला नियमके हिसाबे काफिया बला शब्दमे अंतसँ दोसर वर्ण "स्त" होएबाक चाही। आब दोसर पाँतिके देखू रदीफसँ पहिने काफियाके रूपमे "हरस्त" अछि जकर अंतसँ "स्त" अछि जे नियमके मोताबिक सही अछि। एहि गजलमे आन काफिया सभ एना अछि---- "व्यस्त", "मदमस्त", "मस्त", "सस्त" आदि। संयुक्ताक्षरक इ नियम मात्र बला काफिया लेल कने अलग ढ़गसँ छैक। एकर विस्तृत विवरण मात्रा बला खंडमे भेटत।

मात्रा बला काफिया पर विचार करबासँ पहिने कनेक फेरसँ तहलीली रदीफ आ मैथिली विभक्ति पर विचार करी। कारण जे मैथिली विभक्ति मूल शब्दमे सटि जाइत छैक। आ तँए ओ केखन काफियाक रूप लेत आ केखन रदीफक से बुझनाइ परम जरूरी।

विभक्ति------

मैथिलीमे विभक्ति मुख्य समान्यता पाच गोट अछि।

कर्म--- के

करण--- एँ /सँ

अपादान-- सँ

सम्बन्ध---क

अधिकरण--मे /पर

एहिके अतिरिक्त विदान लोकनि कताक चिन्हके सुनाके रूपमे लैत छथि।इ पाचो चिन्ह मूल शब्दमे सटि जाइत छैक। आ एहि पाचोमेसँ "एँ" चिन्ह मूल शब्दक ध्वनि बदलि दैत छैक। उदाहरण लेल देखू---- "बाट" शब्दमे "एँ" चिन्ह सटने " बाटे" होइत छैक। "हाथ" शब्दमे सटने "हाथे" इत्यादि। आब कने इ विचारी जे जँ कोनो शाइर एहन शब्द, जाहिमे विभक्ति सटल होइक जँ ओकर काफिया बनेता तँ की हेतै। एहि लेल बुझि एहन शब्द ली जाहिमे विभक्ति सटल होइक। उदाहरण लेल------

मूल शब्द-------------- विभक्तिसँ सटल शब्द

हाथ------------------- हाथक /हाथे/ हाथसँ/ हाथमे/ हाथके

फूल------------------- फूलक /फूलसँ /फूले

संग------------------- संगमे /संगे

राश्ता------------------ राश्ताएँ/ राश्तासँ /राश्तामे

एश्च श्चवरणके हमरा लोकश्चा दू भागमे बाश्च सकै ि------

1) एहन मूल शब्द जे अंतसँ अकारान्त हुअए, आ

2) एहन मूल शब्द जकर अंतमे माािक पयोग होइक

1) आब जँ कोनो शाइर एहन मूल शब्द जे अकारान्त ि क आ ओश्चमे श्चभश्चक्त लागल ि क तकरा काश्चफया बनबै ि श्च तँ हुनका इ मोन राखए पतिश्चह जे बादमे आबए बला हरेक आन-आन काश्चफयामे वएह श्चभश्चक्त कोनो आन मूल शब्दमे आबै जे अकारान्त होइक संगश्च-संग स्वर-साम्य सेहो रखैत हो |

उदाहरण लेल-----

मानू जे केओ मूल "हाि" शब्दमे "क" श्चभश्चक्त जोश्च "हाि क" काश्चफया बनेलक। दोसर आन-आन काश्चफया लेल इ मोन राखू जे आबए बला ओश्च काश्चफयाक अंतमे "क" श्चभश्चक्त तँ एबै करतै, मुदा

प्रत्यय "क"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण एवं स्वर-साम्य होएबाक चाही जेना की मानू "बात" शब्दमे प्रत्यय "क" जुटला पर "बातक" शब्द बनैत अछि। आब पहिल काफिया "हाकि" आ दोसर काफिया "बातक" मिलान करू (काफियाक मिलान सदिखन शब्दक अंतसँ कएल जाइत छै)। देखू पहिल काफिया "हाकि" आ दोसर काफिया "बातक" दूनूक अंतमे प्रत्यय "क" अछि संगहि-संग प्रत्यय "क" केर बाद दूनू काफियाक शब्द "ि" आ "त" अकारान्त अछि संगहि-संग "हा" केर स्वर-साम्य "बा"सँ छै। आब फेर तेसर शब्द "पात" लिअ आ जँ ओहिमे "क" प्रत्यय जोड़बै तँ " पातक" शब्द बनतै। आब पहिल काफिया "हाकि" आ दोसर काफिया "पातक" मिलान करू । देखू अंत सँ दूनू शब्दमे "क" प्रत्यय छै आ ठीक ओहि सँ पहिने दूनू शब्द अकारान्त छै आ संगहि-संग 'हा"के स्वर-साम्य "पा"सँ छै।एनाहिते दोसर उदाहरण देखू----मूल शब्द "पात" प्रत्यय "मे" जुटला पर "पातमे" शब्द बनैत अछि। फेर दोसर शब्द "बाट" प्रत्यय "मे" जुटला पर "बाटमे"। आब फेरसँ मिलान करू--- दूनू शब्दक अंतमे प्रत्यय "मे" लागल छै । प्रत्यय "मे"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण सेहो छै संगहि-संग "पा" केर स्वर-साम्य "बा"सँ छै। किछु आर उदाहरण लिअ----- "कलमसँ"-----"पतनसँ", "बापके"-----"आबके" इत्यादि।

2) एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्रा होइक ओकर काफिया लेल ध्यान राखू जे व्यंजनक बाद ठीक वएह मात्रा स्वर-साम्यक संग एबाक चाही। उदारहरण लेल------

आँखिसँ----चाकिसँ----बाकिसँ, इत्यादि

रातिमे----जातिमे--- जातिमे, इत्यादि

घुटठीके---गुरडीके---चुटीके, इत्यादि

पाबिक--आबिक, इत्यादि

केखनो काल दूटा व्यंजन एकै संग जुड़ि जाइत छैक जेना "रात्रिएँसँ" एहन समयमे अहाके दोसरो काफिया ओहने लेबए पड़त जातिमे दूनू व्यंजन समान होइक स्वर-साम्यक संगे। उदाहरण लेल " रात्रिएँसँ" केर काफिया "मित्रिएँसँ" "हात्रिएँसँ" "बात्रिएँसँ" आदि-आदि भए सकैत अछि। व्यंजन बला काफियाक संबंधमे एकटा आर खास गप्प। कोनो एहन मूल शब्द जकर अंत कोनो एकटा खास व्यंजनसँ साम्य रखैत हो, व्यंजनसँ पहिने बला वर्ण अकारान्त वा मात्रा युक्त (जेहन स्थिति) हो संगहि-संग ओहिसँ पहिने स्वर-साम्य हो तँ ओ दूनू काफियाक रूपमे लेल जा सकैए। उदाहरण लेल एकटा व्यंजन बला शब्द "पातक" वा "बाटक" लिअ। आ आब एहन मूल शब्द ताकू जकर अंतमे "क" होइ, "क"सँ पहिने अकारान्त वर्ण होइक ( जँ अकारान्त वर्णसँ पहिने स्वर-साम्य होइ तँ आरो नीक) तँ ओ दूनू ( एकटा व्यंजन युक्त आ दोसर मूल) शब्द काफिया भए सकैत अछि।

उदाहरण लेल उपर लेल दूनू विभक्ति युक्त शब्द "पातक" आ "बाटक"के मूल शब्द "बालक" पालक" वा "चालक"सँ अलाउ। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे इ शब्द सभ काफिया लेल एकदम्म उपयुक्त अछि। तेनाहिते मात्रिा बला शब्द जाहिमे विभक्ति सटल हो आ ओहन मूल शब्द जे ओकरासँ अलैत हो एकदोसराक काफिया बनि सकैत अछि। जँ कोनो मतलाक अंत मूल शब्दसँ सटल विभक्तिसँ होइक हो तँ ओकरा बिना रदीफक गजल मानू। उदाहरण लेल----

भरोसे टा भेटल सेहो उ िरमे

लागल ि ी हम दोसरे जोगारमे

एहि गजलक आन अंशम शब्द अछि---- "अन्हारमे", अनिन्हारमे", "िरमे"। देखू एहि सभमे "र" सेहो आ "मे" सेहो ि क,मुदा तैओ एकरा बिना रदीफक गजल मानल जाएत।

आब कने मात्रिा बला काफिया पर विचार करी। मैथिली वर्णमालामे १६ गोट स्वर देखाओल गेल अछि। अ, आ, इ, ई उ, ऋ, र , लृ,( आ लृक आर एकटा दीर्घ ि प) ऊ, ए, ऐ. ओ. औ, अं एवं आ। जाहिमे "अ" तँ हरेक वर्णक (जाहिमे हलन्त् नहि लागल होइक)मे अंतमे अबिते ि क। अन्य ि ह गोट स्वर ( ऋ,र , लृ आ लृक आर एकटा दीर्घ ि प, अं एवं आ) खाली तत्सम शब्दमे अबैत ि क। बचल नऔ गोट स्वर आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ

( एकर लेख र प कमशा--ा, ेथ्ी,ु,ू,े,ै,ो एवं ौ अिछ) |संगे-संग हम मैिथलीमे रेफ बला कािफया पर सेहो िवचार करब। मतलब जे एिहठाम हम कुल दस गोट मािा पर िवचार करब। मुदा एिह दसोमे "इ", " उ" आ रेफ पर िवचार हम बादमे करब। एकर कारण जे मैिथलीमे एिह तीनूक उच्चारण कने अलग ढंगसँ होइत अिछ। तँ चली मािा बला कािफया पर। मतलामे रदीफसँ पिहने जँ वर्णमे कोनो मािा िक। तँ गजलक हरेक शेरक कािफया मे वएह मािा अएबाक चाही चाहे ओिह मािक संग बला वर्ण दोसरे िकएक ने हो। बाद-बाकी स्वर-साम्य बला िनयम उपरे जका बूझू। इएह भेल मािा बला कािफयाक िनयम। आब एकरा कने उदाहरणसँ बूझी।

देखू नोर सुखा रहल

ददि मुदा देखा रहल"

एिह शेर मे रदीफ अिछ " रहल", आ रदीफ सँ पिहने पिहल पाँती मे वर्ण "ख"क संग "आ"क मािा अिछ। तेनािहते दोसर पाँती मे रदीफ सँ पिहने वर्ण "ख"क संग "आ"क मािा अिछ। एिह गजलमे लेल गेल अन्य कािफया अिछ---"गना", िबझा", "फेका" एवं "िसखा" । जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे रदीफसँ पिहने बला वर्ण बिदलल रहल िक (खाली मतलामे एकै िक "ख" मुदा आन शेर सभमे इ "न", "झ", "क" आ फेर "ख" अिछ) मुदा मािा सभमे एकै "आ" ( "आ" केर लेख र प ेा) िक। अिात एिह गजलक कािफया भेल

"आ"क मात्रि। अन्य बचल मात्रिक लेल एहने समान क्रियम अछि आ हरेक मात्रिक एक-एकटा उदाहरण देल जा रहल अछि।

1) "एनाइ जँ अहाक सूनी हम

नहुँएसँ सपना बूनी हम"

( काफिया "ई"क मात्रि)

एहि गजलक अन्य काफिया अछि---- "चूमी", "पूरी", "बूझी", "खूनी", ,"लूटी", "सूती" आदि।

2) "जँ तोरि सप्पत तँ जानू अहा

फाक्सिए लगा मरब मानू अहा"

( काफिया "ऊ"क मात्रि)

एहि गजलमे लेल गेल अन्य काफिया --- "गानू", "आनू", बान्हू" आदि।

3) "मोन तंग करबे करतै

देह भाषा पढबे करतै"

(काफिया "ए"क मात्रा)

एहि गजलमे लेल गेल अन्य काफिया ---"खुजबे", "उठबे", "सटबे" आदि अछि।

4) "सभ दिन तँ भेट होइते रहै छी हम

तैऔ भोर आ साझक बाट जोहै छी हम"

( काफिया "ऐ"क मात्रा)

एहि गजलमे लेल गेल अन्य क्रिया ---"सोहै", "भूकै", "लूटै", "बूझै" आदि अछि।

केखनो काल "ऐ" केर उच्चारण "अइ" जका होइत अछि। जेना "सैतान" बदलामे सइतान, बैमानक बदलामे "बइमान" इत्यादि।

5) ‘‘आब हरजाइके तो बिसरि जो रे बौआ

मोन ने पाि एहन सप्पत खो रे बौआ

( क्रिया "ओ"क मािा)

एहि गजलमे लेल गेल अन्य क्रिया------ओ, खसो, पाि इत्यादि अछि।

6) " एक बेर फेर हँसिऔ कनेक

ओही नजरि सँ देखिऔ कनेक"

( काव्यक्रिया "औ"क मात्रा)

एहि गजलमे लेल गेल अन्य काव्यक्रिया ---"रहबौ", "चलबौ", "बुझबौ" आदि अछि।

**** केखनो काल "औ" केर उच्चारण "अउ" जका होइत अछि।

उम्मेद अछि जे उपर देल गेल सात पकारक मात्रा बला उदाहरणसँ काव्यक्रिया संबंधी भ्रम बेसी फरिच्छ भेल हएत। तँ आब चली "इ", "उ" आ रेफ पर। मैथिलीमे "इ" आ "उ" लेख आ उच्चारण दूनू पहिने लिखल आ कएल जाइत छैक। एकरा हम उदाहरणसँ देखाएब, तँ पहिने "इ" केर उदाहरणसँ शुरु करी। शब्द "राति" मुदा ओकर उच्चारण भेल "राइत", लिखल जाइए "गाछि" मुदा बाजल जाइए "गाइन", तेनाहिते "पानि" केर उच्चारण "पाइन" भए गेल। मैथिलीमे वर्ण "इ" तेहन उत्पात मचेलक जे बहुत आन शब्द सभ "इ" वर्णकि संग लिखल जाए लागल जेना की "जाइत", "खाइत" आदि। एकटा आर महत्वपूर्ण गप्प, मैथिलीमे "इ"कार दू रूपमे पयोग होइत अछि- पहिल रूप भेल जाहिमे मात्रिक अबैत अछि आ दोसर रूपमे "इ"कार वर्णकि रूपमे अबैत अछि। पहिल रूपक उदाहरण "राति", "जाति" सभ भेल आ दोसर रूपक उदाहरण "जाइत", खाइत" सभ भेल आब कने हमरा लोकनि काव्यक्रिया पर आबी। जँ अहा कोनो एहन शब्दक

काफ्रिया बना रहल िी। जकर अंतिम वणि "इ"कार युक्त अिि तँ अहाके आन-आन काफ्रिया लेल "इ"कार युक्त वएह वणि लेबए पति जे पहिल काफ्रियामे अिि। उदाहरण लेल जँ अहा "राति" शब्द काफ्रिया लेल लेलहुँ तँ आब अहाके दोसर काफ्रिया लेल "त" वणि "इ"कार युक्त हेबाक चाही। जेना की "पाति", "जाति", आदि। अिवा एहन शब्द होअ जकर अंतमे "त" होइक आ ताहिसँ पहिने "इ" वणिक िरपमे रहए जेना की "जाइत"। एकर मतलब जे "राति" शब्दक काफ्रिया लेल "जाति", "पाति" क संगे "जाइत", "खाइत", "नहाइत" सेहो आबि सकैत अिि। आ हमरा जनैत एहीठाम मैथिली गजल उदूि गजलसँ पूणितः अलग भए जाइत अिि। आ संगहि-संग इ विशेषता मैथिली गजलके एकटा अपन अलग ििवि बनबैत अिि। आ इ विशेषता हस्व "उ" , "ऐ’’, "औ", आ रेफ बलामे सेहो अबैत अिि।

आब कने हस्व "उ" पर िआन दी। मैथिलीमे जँ शब्दक अंतमे "उ" अबैत हो आ ठीक ओहिसँ पहिने अकारान्त वणि हो तखन "उ" केर उच्चारण पाया औ/अउ जका होइत अिि। उदाहरण लेल मिु शब्दक उच्चारण मौि/मअउि होइत अिि। आ जँ "उ"सँ पहिने आकारान्त वणि हो तखन "इ"ए जका "उ" केर उच्चारण पहिने होइत अिि। उदाहरण लेल "साि"ु केर उच्चारण "साउि", "बालु" केर उच्चारण "बाउल" इत्यादि। ओना उच्चारण लेल आनो शब्द लेल जा सकैए।

आब इ देखी जे एहेन पकारक शब्दके काव्यरूपया कोना बनतै। जँ अहा "उ" सँ पहिने अकारान्त बला वर्णसँ बनल शब्द काव्यरूपया लेल लैत छी तँ धिआन राखू जे आन-आन काव्यरूपयाक उच्चारण "कोनो वर्ण( एक वा एकसँ बेसी) + औ/अउ + अंतिम अक्षिर त वर्णि आबै। आब उपरके बला शब्द "मुँह"के लीअ। एकर उच्चारण "म + औ/अउ + ह" अछि, तँए एकर दोसर काव्यरूपया "कोनो वर्ण( एक वा एकसँ बेसी) + औ/अउ + ह" हेतै। आब जँ अहा दोसर शब्द "पौह" लेलहुँ, तँ एकर उच्चारण "प + औ/अउ + ह " अछि। अर्थात "मुँह" केर उच्चारण "पौह" केर बराबर अछि। तँए "मुँह" केर काव्यरूपया "पौह" हएत। एनाहिते आन-आन शब्द सभ काव्यरूपयाके लेल ताकल जा सकैए। आब आबी ओहन शब्दपर जकर अंत "उ" होइक आ ठीक ओहिसँ पहिने आकारान्त वर्ण होइक ( जेना की उपरमे एकर उच्चारण पद्धत देखा देल गेल अछि, तँए सोझे काव्यरूपया पर चली)। ठीक हस्व "उ" जका नियम छैक एकरो। मान्न लिअ जँ अहा "बालु" शब्द लेलहुँ, तँ मोन राखू दोसर काव्यरूपयाक उच्चारण " आकारान्त कोनो वर्ण + उ + ल" होइक जेना की "भालु" इत्यादि। संगहि-संग हस्व "इ"ए जका "चाउर" केर काव्यरूपया "चार" एवं "बालु" केर काव्यरूपया "आउल" ( owl) भए सकैत अछि। मैथिलीमे बहुत काल "उ" आ चन्द्रबिंदु एकै संग अबैत अछि। जेना " कहलहुँ" ,"सुनलहुँ", "रहलहुँ" आदि। मान्न लिअ जँ इ शब्द सभ जँ काव्यरूपयाक रूपमे आबि रहल अछि तँ एहन समयमे धिआन राखू जे काव्यरूपयामे ठीक वहए वर्ण "उ" आ चन्द्रबिंदुक संग आबए। से नहि भेला पर काव्यरूपया गलत भए जाएत। उपरमे देल तीनू शब्दके देखू । तीनू शब्दक अंत " ह" सँ

अछि ओहो "उ" आ चन्द्रबिंदुक संग। मने इ तीनू काफिया लेल उपयुक्त अछि।

आब हमरा लोकनि फेरसँ एकबेर संयुक्ताक्षर बला नियमपर चली। मात्रा बला संयुक्ताक्षर लेल पहिनेसँ कने अलग ढ़गसँ देखू। इ गप्प उदाहरणसँ बेसी फरिच्छ हएत। मानू जे मतलाक पहिल पाँतिमे काफियाक रूपमे "चुटी" शब्द लेल गेल। आब दोसर काफिया लेल मोन राखू जे "ई" मात्रा युक्त कोनो शब्द भए सकैत अछि। उदाहरण लेल "धानी", "बुच्ची" आदि "चुटी"क काफिया भए सकैत अछि। मुदा जँ मतलाक काफिया "चुटी" आ "घुटी" छैक तखन आन शेरक काफिया "धानी" या "बुच्ची" नहि भए सकैत अछि। कारण मतलाक दुनू काफियामे "ई" मात्रा युक्त वर्णक बाद आधा "ट्" क प्रयोग छैक, तएँ आन शेरक काफिया लेल ओहन शब्द ताकू जाहिमे "ई"मात्रा युक्त अक्षरके बाद आधा "ट्" अबैत हो जेना "बुटी", "कुटी" इत्यादि।

एकटा गप्प आर ओ शाइर जे अनुस्वारके बदलामे पंचमाक्षरके प्रयोग करैत छथि से ध्यान राखथि जे काफियाक निर्धारण उपरके नियमक हिसाबे होइक।

आघात बला शब्दक काफिया-------

मैथिलीमे दू प्रकारक आघात अछि मात्रिक आ बलाघात। मुदा मात्रिक आघात ओतेक महत्व नहि रखैत अछि, तँए हम एतए खाली बलाघात पर विचार करब।

मैथिलीमे कोन शब्दमे कतए आघात पड़ित तकरा देखल जाए----पहिने मात्रिक आघातके देखू।

1) दू वर्णक बला एहन शब्द जाहिमे एकौटा गुरु वर्ण नहि हो- एहन शब्दमे अंतसँ दोसर शब्द पर आघात पड़ैत छैक। जेना "घर", "बर"। एकर उच्चारण "घSर", "बSर" आदि होइत अछि। मतलब "घ" आ "ब" पर आघात पड़ल छैक। जँ एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घपर आघात पड़ैत छैक।

जेना "हाथि", "खता" आदि।मतलब "हा" आ "ता" पर आघात छैक। "हाथी" "माछी" । एहि शब्द सभमे पहिल गुरु "हा" एवं "मा" पर आघात छैक।

) तीन वर्णबला एहन शब्द जाहिमे तीनू लघु वर्ण हो---- एहन शब्दमे अंतसँ दोसर वर्णपर आघात पड़ैत छैक। जेना "तखन", अगहन" ।एहिमे "ख" आ "ह" पर आघात छैक। जँ एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घपर आघात पड़ैत छैक। जेना "ओसारा"मे "ओ" पर आघात छैक। "बतासा" मे "ता" पर आघात छैक।

3) चारि वर्णबला शब्दमे अंतसँ दोसर वर्णपर आघात पड़ैत छैक। उदाहरण लेल "अनसर" मे "स" पर आघत छैक, "अगहन" मे "ह" वर्णपर छैक। जँ चारि वर्णबला ओहन शब्द जाहिमे दीर्घ सेहो छैक तकर आघात उपरमे देल गेल आने नियम जका अछि। जेना "उच्चारण" मे च्चा पर आघात छैक।

कुल भ्मला कए एकसँ चाश्व वणा िश्विक शव्द लेल एकै रंगक श्चायम अश्वि ।

7) पाच वणा बिला शव्दमे अंतसँ तेसर वणा पिर होइत ि क चाहे ओ लघु हो की दीघा मने पाच वणमिं आघात सश्वदखन बीच बला वणा पर पि त ि क।उदाहरण लेल "देखलहक" मे अंतसँ तेसर वणा "ल" पर आघात ि क, तेनाश्वते "कमरसाश्व" मे "र" पर आघात ि क, "कनपातर" मे "पा" पर आघात ि क।

8) ि ह आ ि हसँ बेसी वणा बिला शव्दमे दू ठाम आघात पि त ि क। शव्दक अंतसँ दोसर वणा पिर आ अंतेसँ चाश्वम वणा पिर चाहे ओ लघु हो की दीघा एश्वठाम इहो मोन राखू जे शव्दक अंतसँ दोसर वणा पर पि ल आघात बेसी कठोर मुदा चाश्वम स ि ान पर पि ल आघात मन्द होइत अश्वि ।

**** श्वभश्वक्त बला शव्दमे आघात श्वा ि श्वत करबाक लेल श्वभश्वक्तके हटा कए गणना कर । जेना की "पातक" शव्दमे आघात गनणा "त" वणसिँ शुर हएत ने की अंश्वाम वणा "क" सँ। सभ श्वभश्वक्त जुटल शव्द लेल इएह मोन राखू।

आब कने आघात बला शव्दके काश्वकया देखी। एहन ठाम इ मोन राखू जे आघात बला स ि ान आ वणकि मा ि समान रहए। उदाहरण लेल "घर" आ "मजूर" दूनूमे दोसर स ि ान पर आघत ि क मुदा मा ि अलग-अलग ि क, तँए इ दूनू एकदोसराक काश्वकया नश्व बश्व सकैए।

तँ "घर" शब्दक काफिया लेल "बर", "तर", " हर", ‘‘अनसर" आदि उपयुक्त रहत । आ "मजूर" लेल "मयूर", "हजूर" आदि उपयुक्त रहत। आनो-आन आघात बला शब्दक काफिया लेल इएह नियम बूझू। एहि ठाम हम फेर मोन पाडी जे काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक आ बाकी शेरमे ओकर पालन। तँए जँ केओ मतलामे विभक्ति बला शब्दके "फूलक" आ हाकिक" काफिया लेताह तँ सही हएत आ बादबाकी शेरमे "अक" काफियाक पयोग हेतैक। मुदा जँ केओ गोटे मतलामे "फूलक" आ "अहिूलक" लेलक आ तकरा बादक शेरमे "हाकिक" पयोग करत तँ ओ बिल्कुल गलत हएत। "फूलक" आ "अहिूल" बाद आन शेर लेल काफिया "ूलक" होएबाक चाही।

आब कने "रेफ" बला काफिया पर विचार करी। रेफ "र" वर्णकि एकटा रुप अछि।जे "र्" मने आधा "र्" मानल जाइत अछि। मैथिलीमे रेफ आ ओकर पूर्ण रुप ( र वर्ण) दूनू चलैत अछि | मुदा इ जनबाक लेल जे कतए रेफक रुप रहत आ कतए "र" वर्णकि एहि लेल किछु उदाहरण देखी-------

मर्द----- मरद

बर्खा-----बरखा

बर्ख----बरख

चर्चा----चरचा

एहन चाि गोट शब्दके देखलासँ इ बुझाइत अछि जे जँ अकारान्त वर्ण पर रेफ हुअए तँ ओकरा लेल पूर्ण "र" के ल खब बेकार बुझाइत अछि कारण जे लखलो जाइत अछि "बर्ख" आ पढ़लो जाइत अछि "बर्ख"। तँए इ मोन राखू जे अकारान्त वर्णपर जँ रेफ हुअए तँ ओकरा "र" के रूपमे नहि लखल जाए। मुदा जँ कोनो वर्णमात्रायुक्त हो संगहि-संग रेफ युक्त हो तँ ओहि शब्दमे "र" वर्णक पयोग कएल जा सकैए। जेना की चर्चा के चरचा, बर्खा के बदला मे बरखा, फुर्ती केर बदलामे फुरती इत्यादि।

आब जँ अहा रेफ बला शब्दक कार्यक्रिया बना रहल ि ी तँ पहिने इ निश्चित कर जे अहा रेफक रूप लेबै या "र" वर्णक। जँ अहा रेफक रूप लेबै तँ मोन राखू जे एकर नियम "इ"कार बला कार्यक्रियाक समान हएत। हमर कहबाक मतलब जे जँ अहा मतलाक पहिल पाँतमे कार्यक्रिया "गदा" लेलहुँ आ तकरा बाद आन कार्यक्रिया बर्खा या बरखा लेलहुँ तँ बिलकुल गलत हएत। "गदा" शब्दक कार्यक्रिया लेल दोसरो शब्दक अंतसँ "द" वर्ण रेफ लागल हेबाक चाही। मुदा जँ अहा मतलाक पहिल पाँतमे कार्यक्रिया "बरखा" लेलहुँ तँ ओकर कार्यक्रिया "परदा", "गरदा", "जरदा" आदि भए सकैत अछि। तेनाहिते इ मोन राखू जे जँ रेफ शब्दके अंत िथि ( शुरूमे वा बीचमे कतौ) िक तँ संस्कृतक शब्दमे तँ रेफे रहत मुदा अदेशज खास कए अरबी-फारसी आ उर्दू बला शब्दमे "र" भए जाइत अछि। जेना की पर्वतके " परवत" नहि लखल जा सकैए मुदा शर्बतके " शरबत" जरूर

लीखि सकैत छी। एहिठाम इ मोन राखू पड़त आ शरबत दूनू एकदोसराक काफिया भए सकैए।

काफियाक संबंधमे एकटा गप्प आर- काफियामे वर्ण "र" केर उच्चारण "ड़" के बराबर मानू संगहि-संग "स", "श" आ "ष" केर उच्चारण सेहो समान मानू। जाहिठाम "ष"के उच्चारण "ख" जका हएत ततए पूर्ण "ख" काफियाके रूपमे आबि सकैत अछि। जँ "ढ" अक्षर शब्दक शुरूमे छैक त ओकर उच्चारण "ढ" जँका होइत छैक मुदा तकरा बाद ओकर उच्चारण "र्ह" जँका छैक। आ हमरा बिचारे काफियामे "ढ", "र" एवं "ड़" समान अछि। उदाहरन लेल "ठाढ़"क काफिया "बिचार", "हुराड़" आदि भए सकैत अछि। केखनो काल "ड़" केर लेख रूप "तर्" आ "क" केर लेख रूप "च्" अबैत अछि। शाइर उपरके नियमक हिसाबे एकर काफिया बनाबथि।

आब कने शुरूआत बला प्रश्न पर चली। पहिल प्रश्न छलि जे जँ कोनो मतलामे "गाछिए" आ "फोड़िए" काफिया हो तँ बाद बला शेरमे काफिया की हेतै। उत्तर स्पष्ट अछि बादबाकी शेरमे काफिया "ओड़िए" वा "ओरए" हेबाक चाही। नहि तँ गजल गलत भए जाएत। संगहि-संग दोसर प्रश्न छलि जे जँ "गाछिए" आ "फोड़िए" के बाद "जाए" हुअए तँ सही हएत की गलत। एकरो उत्तर स्पष्ट अछि---- जाए के उच्चारण "ओड़िए" वा "ओरए" सँ नहि मिलैत अछि तँए "जाए" काफिया "गाछिए" आ "फोड़िए" के बाद गलत हएत।

4) मकता------------- गजलक ओ अंम शेरके कहल जाइत िक जामे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस)के पयोग करथि। जेना एकटा उदाहरण देखू-------------

"ठक रहल अनन्हारके

कओ अहा तँ कओ हम"

एमे हम अपन उपनाम "अनन्हार"के पयोग केने थिऐक आ इ शेर गजलक अंम शेर िक तँए इ शेर भेल "मकता"। बना मकताक गजल सेहो होइत िक। मकताक संबंिमे इ िआन राखू जे शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामके पयोग करथि वा अपन उपनामके। मने दूनूमे सँ कोनो एकैटा। एकर उदाहरण हम अपने पर लैत ि। हम अपन गजलमे या तँ "आशीष"के पयोग करबै वा "अनन्हार"के। इ न जे कि गजलमे "आशीष" आ कि मे "अनन्हार"।

बहर ----

गजल सखन कोने ने कोने बहरमे होइत िक। बना बहरक गजलक कलना असंभव। जेना िन्दक आ िर लय होइत िक तेनाते बहरक आ िर अरूज वा अरूद होइत िक। अरूज वा अरूद मने शेर मे आत मा ि-कम होइत िक। अरूज वा अरूदके वर न सेहो कहल जाइत िक। बहरक चच आगा बढ़एबासँ पने एकटा

गप्प आर| एखनठाम हम उदू बिहर केर वर्णन कए रहल छी। आ मैथिली गजलमे इ बहर सभक पयोग मैथिली गजलक 100सालक इतिहासमे कतहुओ नहि भेल मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर दारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर दारा भेल अछि जकर अनुकरण पाया हरेक नव गजलकार कए रहल छथि। एहि लेखमे जतेक उदाहरण देल गेल अछि से वार्णिक बहर पर आधारित अछि। ओना एहि बहरक चर्चा हम बादमे सेहो करब। तँ पहिने उदूक बहर देखी।

अरूज वा अरूदक अविष्कार हिजरीक दोसर सदीमे खलीले इबे अहमद बसरी केने छलाह। हुनका इ विचार मकाक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक अवाज सूनि अएलन्हि। पाचीन कालमे मकाके अरूज वा अरूद सेहो कहल जाइत छलैक तँए बसरी ओहि माटि कमके अरूज वा अरूदक नाम देलथि। अरबी साहित्यमे 16 बहरक पयोग भेल। बादमे इरानमे तीन टा बहरक अविष्कार भेल। आब हम एखनठाम बहरक संक्षिप्त परिचय दए रहल छी।

अरबी साहित्यमे बहर तीन खंडमे बाटल गेल अछि 1) सालिम मने मूल बहर, 2 ) मुरकब मने मिश्रित बहर आ 3) मुदाइफ मने परिवर्तित बहर। एहि तीनूमेसँ मुदाइफ बहरके चर्चा एखन हम नहि करब कारण जखन मैथिलीमे मूल बहर पर गजल लिखले नहि गेल अछि। तँ कोन हिसाबे हम ओकरा (मुदाइफ बहरके) एतए पस्तुत कर । अरबीमे सालिम मने मूल बहर मे सात टा बहर अबैत अछि। आ मुरकबमे

बारह टा। बादमे एही बारहके उलट-फेर करैत आठ टा आर बहर बनाएल गेल। कुल मिला कए मुरकब बहर बीस टा भेल। हम अपना सुविधा लेल मुरकब बहरके दू खंडमे बाँटि देने छी। संग-संग सालिम बहरके हम "समान बहर" नाम देने छिऐक। आ मुरकब बहरक पहिल खंड (जाहिमे कुल सात टा बहर अछि) तकरा अर्धसमान बहर नाम देलिऐक आ मुरकब बहरक दोसर खंड जाहिमे तेरह टा बहर अछि तकर नाम "असमान बहर" देलिऐ। तँ आब एकर विवरण आ चर्चा देखू।।

बहरसँ पहिने रुक्नके बूझी।

संस्कृतक गण जकाँ अरबी मे सेहो होइत छै जकरा "रुक्न" कहल जाइत छै। इ रुक्न आठ पकारके होइत अछि। जकर विवरण एना अछि-------

| रुक्नक स्वरूप | मात्रा | रुक्नक नाम | मात्राक्रम |
|---|---|---|---|
| खमासी रुक्न | 5 | फऊलुन ( फ/ऊ/लुन) | ISS (I/S/S) |
| खमासी रुक्न | 5 | फाइलुन (फा/इ/लुन) | SIS (S/I/S) |
| मूल रुक्न | 7 | फाइलातुन (फा/इ/ला/तुन) | SISS ( S/I/S/S ) |

मूल रक 7 मफाईलुन (म/फा/ई/लुन) ISSS ( I/S/S/S )

मूल रक 7 मुस्तफइलुन (मुस्/तफ/इ/लुन SSIS ( S/S/I/S )

मूल रक 7 मुफाइलतुन (मु/फा/इ/ल/तुन ) ISIIS ( I/S/I/I/S )

मूल रक 7 मुतफाइलुन (मु/त/फा/इ/लुन IISIS ( I/I/S/I/S )

मूल रक 7 मफऊलातु (मफ/ऊ/ला/तु SSSI ( S/S/S/I )

****** एख्रठाम I मने 1 मने हस्न आ S मने 2 मने दीघिभेल | एख्र रक सभके इयाद रखबाक लेल गध्यातीय रपसँ एना बुझू---------

a) एकटा लघुके बाद जँ दूटा दीघि हो तँ ओकरा "फऊलुन" कहल जाइत िक।

b) एकटा लघुके बाद जँ तीनटा दीघि हो तँ ओकरा "मफाईलुन" कहल जाइत िक।

c) जँ "मफाईलुन" के उल्टा करबै तँ "मफऊलात" बश्न जाएत मने तीनटा दीघक्रि बाद एकटा लघु।

d) दूटा दीर्घक बीचमे जँ एकटा लघु रहए तखन ओकरा "फाइलुन" कहल जाइत ैक।

e) "फाइलुन" केर अंतमे जँ एकटा आर दीर्घ जोडबै तँ ओ "फाइलातुन" बअ जाएत।

f) "फाइलातुन" केर उल्टा रप "मुस्तफइलुन" होइत ैक।

g) शुरमे एकटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घतकरा बाद फेर दूटा लघु आ तकरा अंतमे एकटा दीर्घहो तँ "मुफाइलतुन" कहल जाइत ैक

h) "मुफाइलुन" केर अंतसँ तेसर या दोसर लघु हटा कए पहल लघु लग बैसा देबै तँ "मुतफाइलुन" बअ जाएत। मने शुरमे टूटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घतकरा बाद फेर एकटा लघु आ तकरा बाद अंतमे एकटा दीर्घ

एही आठो रकक हेर-फेरसँ बहर बनैत अि जकर वरण आच्या देल जा रहल अि।

1) समान धा---------ए खंडमे कुल सात गोट बहर राखल जाइत अि। जकर वरण एना अि--------

क) बहरे-हरज---------- एकर मूल धा अि "मफाईलुन" मतलब I-S-S-S (1-2-2-2) मने हस्व् -दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ इ धा शाइर

अपना सुवधानुसार पयोग कए सकैत थि। मतलब कोनो शाइर एक पाश्वामे एक बेर, वा दू बेर वा ...... कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) पयोग कए सकैत थि, मुदा मा-कम नह टुटबाक चाही।आ जँ एह ध्वा के शेर के रप मे देबै तँ एना हेतैक------

I-S-S-S

I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S + I-S-S-S + I-S-S-S

I-S-S-S + I-S-S-S + I-S-S-S + I-S-S-S........................................

तँ इ भेल बहरे-हर ज केर ढ़ाचा। एठाम फेर एक बेर गौरसँ देखू। उपरका ढ़ाचा सभमे दूनू पाश्वामे मा कम एकै कि। अ त हस्

के ओकर ह्रस्व आ दीर्घ आ मोन राखू जँ अहा बहरे-हर जमे गजल लीखब रहल छी तँ हरेक शेरक मात्रा कम इएह देबए पड़त। नहि तँ गजल बे-बहर कहाओत।

ख) बहरे-रमल------- एकर मूल ध्वनि एना अछि--- फाइलातुन मने ----- S-I-S-S,अर्थात दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ आब जँ एहि ध्वनि के शेर मे पयोग करबै तँ एना हेतैक---

S-I-S-S + S-I-S-S + S-I-S-S + S-I-S-S

S-I-S-S + S-I-S-S + S-I-S-S + S-I-S-S

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) ध्वनिके पयोग कए सकैत छथि।)

इ भेल बहरे-रमल।

ग) बहरे-कामिल----- एकर मूल ध्वनि अछि "मुतफाइलुन" मने I-I-S-I-S मने ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ शेरमे एकर ढ़ाचा एना छैक------

I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S

I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S + I-I-S-I-S

(एतऽ ठाम हम खाली चारि-चारि धरक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) धरक प्रयोग कए सकैत छथि।)

इ भेल बहरे-कामिल

घ) बहरे-मुतकारिब-------- एकर मूल धरक फऊलुन अछि मने I-S-S मने ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ। एकर ढ़ाचा देखू-------

I-S-S + I-S-S + I-S-S + I-S-S + I-S-S

I-S-S + I-S-S + I-S-S + I-S-S + I-S-S

(एतऽ ठाम हम खाली चारि-चारि धरक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) धरक प्रयोग कए सकैत छथि।)

इ भेल बहरे-मुतकारिब

ङ) बहरे-मुतदारिक--------एकर मूल धरक अछि "फाइलुन" मने S-I-S मने दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ अछि। एकर ढ़ाचा एना अछि------

S-I-S + S-I-S + S-I-S + S-I-S

S-I-S + S-I-S + S-I-S + S-I-S

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि धरणाक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) धरणाक प्रयोग कए सकैत छथि)| इ भेल बहरे-मुतदारिक।

च) बहरे-रजज------ एकर मूल धरण "मुस्तफइलुन" छैक। मने S-S-I-S मने दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढ़ाचा एना हेतैक------

S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S

S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि धरणाक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) धरणाक प्रयोग कए सकैत छथि।)

इ भेल बहरे-रजज |

छ) बहरे-वाफिर------------ एकर मूल धरण "मुफाइलतुन" छैक मने I-S-I-I-S मने ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढ़ाचा देखू------

I-S-I-I-S + I-S-I-I-S + I-S-I-I-S + I-S-I-I-S

I-S-I-I-S + I-S-I-I-S + I-S-I-I-S + I-S-I-I-S

(एहि ठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) ध्वनिक प्रयोग कए सकैत छथि।)

इ भेल बहरे-वाफिर |

2) अमिमान बहर-------- एहि खंडमे कुल सात गोट बहर अछि। एकरा हम अमिमान बहर एहि दारे कहैत छी जे एहिमे हरेक पाँतिमे कमसँ-कम अथवा यति रूपसँ दूटा ध्वनिक समान रूपमे प्रयोग करए पड़ैत छैक। आब शाइर एहि दूनू ध्वनिक एक पाँतिमे जाए बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) प्रयोग कए सकैछ ओ हुनका ऊपर निर्भर। आ एहि खंडक छोटो अन्य बहर लेल एहने सन बूझू।। एकर विवरण आगाँ देल जा रहल अछि।

क) बहरे-तवील--------- एकर मूल ध्वनि छैक " फऊलुन-मफाईलुन"। एकर ढ़ाचा देखू-------

I-S-S + I-S-S-S

I-S-S + I-S-S-S

I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S

I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S

I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S

I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S + I-S-S + I-S-S-S..........................

एक्के बहर आ एक्के खंडक बाकी अन्य िहो बहरक लेल एकटा आर बात मोन राखू जे ध्वन्यात्मा जाक्के कममे देल गेल अछि ताही कममे रहबाक चाही। जेना की बहरे-तवीलमे अहा देखलहुँ जे एकर ध्वन्यात्मा एना िक " फऊलुन-मफाईलुन" मुदा जँ अहा एकरा " मफाईलुन-फऊलुन" बला कममे रखबै तँ इ बहरे-तवील नक्के हएत।

ख) बहरे-मदीद-----------एकर मूल ध्वन्यात्मा अछि "फाइलातुन-फाइलुन"। एकर ढ़ाचा एना िक--------------------

S-I-S-S + S-I-S

ग) बहरे बसीत----- एकर मूल ध्वन्यात्मा " मुस्तफइलुन-फाइलुन" िक। एकर ढ़ाचा एना हएत----------------------------

S-S-I-S + S-I-S-S

घ) बहरे-मुजस्सम वा मुजास---------------------------- एकर मूल ध्वाश्च " मुस्तफइलुन-फाइलातुन" ि क। एकर ढ़ाचा एहन ि क-----------

S-S-I-S + S-I-S-S

ङ) बहरे- मुन्सरह----------- एकर मूल ध्वाश्च "मुस्तफइलुन-मफऊलात"। एकर ढ़ाचा ि क--------------

S-S-I-S + S-S-S-I

च) बहरे-मजश्चअ-------------- एकर मूल ध्वाश्च ि क "मफाईलुन-फाइलातुन" एकर ढ़ाचा एना ि क--------

I-S-S-S+S-I-S-S

ि) बहरे-मुक्तश्चब------- एकर मूल ध्वाश्च ि क " मफऊलात-मुस्तफइलुन"। एकर ढ़ाचा ि क-----------

S-S-S-I +S-S-I-S

3) असमान बहर--------- एश्च खंडमे कुल तेरह गोट बहर अश्चि। एकरा हम असमान बहर एश्च दारे कहैत श्चिऐक जे एश्चमे हरेक पाश्चामे कमसँ-कम अश्चावायि रपसँ तीनटा ध्वाश्चाके समान रपमे पयोग करए पिि त ि क।जाश्चमे दूटा ध्वाश्च तँ समान रहैत ि क खाली एकटा मने तेसर ध्वाश्च दोसर आश्च जाइत ि क। आब शाइर एश्च तीनू ध्वाश्चाके एक पाश्चामे जाए बेर ( बेसीसँ बेसी सोलह बेर ) पयोग कए सकश्चि

ओ हुनका ऊपर छैक। आ एकर खंडक आर अन्य बहर लेल एहने सन बूझू। एकर विवरण आगाँ देल जा रहल अछि।

क) बहरे-खफीफ------एकर मूल ध्वनि अछि "फाइलातुन-मुस्तफइलुन-फाइलातुन"| एकर ढ़ाचा अछि----------

S-I-S-S + S-S-I-S + S-I-S-S

ख) बहरे-जदीद----- एकर मूल ध्वनि अछि "फाइलातुन- फाइलातुन-मुस्तफइलुन"| एकर ढ़ाचा अछि----------

S-I-S-S + S-I-S-S + S-S-I-S

ग) बहरे-सरीअ----- एकर मूल ध्वनि अछि " मुस्तफइलुन-मुस्तफइलुन-मफऊलात" | एकर ढ़ाचा अछि-------

S-S-I-S + S-S-I-S + SISS

घ) बहरे-करीब------ एकर मूल ध्वनि अछि " मफाईलुन- मफाईलुन-फाइलातुन"| एकर ढ़ाचा अछि----

I-S-S-S + ISSS + S-I-S-S

ङ) बहरे-मुशाकिल------- एकर मूल ध्वनि अछि " फाइलातुन-मफाईलुन- मफाईलुन | एकर ढ़ाचा अछि----

S-I-S-S + I-S-S-S + I-S-S-S

च) बहरे-कलीब-------- एकर मूल ध्वाश्च ि क "फाइलातुन–फाइलातुन--- मफाईलुन" | एकर ढ़ाचा ि क---

SISS--- SISS---- ISSS

ि ) बहरे असम------- एकर मूल ध्वाश्च ि क फाइलातुन--- मफाईलुन--- फाइलातुन (SISS---- ISSS--- SISS एकर ढ़ाचा ि क

ज) बहरे कबीर----- एकर मूल ध्वाश्च ि क मफऊलातु--- मफऊलातु--- मुस्तफइलुन (SSSI--- SSSI--- SSIS एकर ढ़ाचा ि क

झ) बहरे सगीर----- एकर मूल ध्वाश्च ि क मुस्तफइलुन--- फाइलातुन---- मुस्तफइलुन(SSIS--- SISS--- SSIS एकर ढ़ाचा ि क

ि ) बहरे-सरीम----- एकर मूल ध्वाश्च ि क मफाईलुन--- फाइलातुन--- फाइलातुन | एकर ढ़ाचा ि क------- ISSS + SISS + SISS

ट) बहरे सलीम----- एकर मूल ध्वाश्च ि क --- "मुस्तफइलुन--मफऊलातु---मफऊलातु"| एकर ढ़ाचा ि क----

SSIS + SSSI + SSSI

ठ)बहरे हमीद----- एकर मूल ध्वाश्च ि क--- "मफऊलातु----मुस्तफइलुन----मफऊलातु"| एकर ढ़ाचा ि क---

SSSI + SSIS + SSSI

ड) बहरे हमीम--- एकर मूल ध्वन्नि कि-- "फाइलातुन--- मुस्तफइलुन--- मुस्तफइलुन" |एकर ढ़ाचा कि--

SISS + SSIS + SSIS

आब हमरा लोकनि इ जानी जे अरबीक एहि आठो रुकके मैथिलीमे केना बदलि सकैत छी। मैथिलीमे दू पकारक छंद पद्धति अछि----- मात्रिक आ वार्णिक |

A) मात्रिक------ एहिमे दू, तीन, चारि, पाच आ छह मात्रा खंडके जोड़ि कए अकर विन्यास कएल जाइत छैक। आ एहि अकर विन्यासके गण कहल जाइत छैक। मात्रिक छंदमे पाच टा गण होइत अछि-----

क) ण (णगण) = द्विकल मने दू मात्रिक खंड

ख) ढ ( ढगण) = त्रिकल मने तीन मात्रिक खंड

ग) ड ( डगण) = चतुष्कल मने चारि मात्रिक खंड

घ) ठ ( ठगण) = पंचकल मने पाच मात्रिक खंड

ङ) ट ( टगण) = षटकल मने छह मात्रिक खंड

एखन गणके अवधारणा मैथिलीमे एक मात्रा, सात मात्रा आ आठ मात्राक वर्णविन्यास सेहो होइत छैक। मुदा ओकरा गण नहि मानल जाइत छैक। कारण एक मात्रा अपूर्ण भेल। तेनाहिते सात वा आठ मात्रा बला विन्यास कोनो ने कोनो रूपे उपरका पाँचो गणसँ बनैत अछि। उदाहरण लेल सात मात्राक वर्णविन्यास देखू---" पछुआएल" = IISSI । आब एहिमे देखू पहिल तीन मात्रा मने ( IIS) चतुष्कलक रूप थिक आ अंतिम दूनू मात्रा मने ( SI ) द्विकलक रूप थिक। आठ मात्राक लेल एहने सन गप्प। उपरका पाँचो मात्रा विन्यासके अलग-अलग रूपे लिखल जा सकैए आ एखन हिसाबे ------

द्विकल- दू रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) घर = II

2) ओ = S

त्रिकल- तीन रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) बाजा = IS

2) अपन = III

3) आब = SI

चतुष्कल- पाँच रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) गीती = SS

2) तकरा = IIS

3) चुमान = ISI

4) फेकल = SII

5) सखुखन = IIII

पंचकल- आठ रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) लाकू = ISS

2) बालकोर = IISI

3) हौहती = SIS

4) तरेगन = ISII

5) सरउआ = IIIS

6) जागरण = SIII

7) अंगूर = SSI

8) चहटगर = IIIII

षटकल - तेरह रूप मे लिखल जाइत अछि--

1) सोहारी = SSS

2) बपखौकी = IISS

3) सुग्मियी = ISIS

4) मादकता = SIIS

5) असगरआ = IIIIS

6) भ्मताएल = ISSI

7) लालटेन = SISI

8) खटखटाह = IIISI

9) मोताब्यक = SSII

10) अग्मौगञ्ञ = IISII

11) सुरेबगर = ISIII

12) राजभवन = SIIII

13) चपलचरण = IIIIII

तँ चलू आब एञ्झ पाचो गणसँ अरबी रक बनाबी। इ अरबी रक आठ अध्रि । तँ देखू एकर भ्यायम-----

1) जँ श्चकलक (णगनक) एहन रप जाश्चमे एकसरे दीघिमने--SS (जेना-जे, गे, खो, जो आश्च) रहए आ तकरा बाद पंचकल (ठगण)क ओ रप रहए जाश्चमे पश्चल वणिलघु आ तकरा बाद दूनू दीघि(ISS) हो तँ जे रप बनत से उदूमे "फाइलातुन" कहबैत िक। एकटा उदारहरण श्चाअ " गे सुशीला" एकर मािा कम अश्च (SISS) ----आब एकरा "फाइलातुन" (SISS) सँ श्चलाउ| एकरा एना देखू------S + ISS = SISS

2) जँ पंचकल (ठगण)क ओ रप जाश्चमे पश्चने दूटा दीघिआ तकरा बाद एकटा लघु हो (SSI) तकरा श्चकल (णगन)क ओहन रपसँ जोि जाश्चमे एकसरे दीघि(S) हो। तँ ओ "मुस्तफइलुन" ( SSIS) बनत। एकरा एना देखू---------SSI + S = SSIS

3) जँ श्चिकल (ढगण)क ओहन रप जाश्चमे पश्चल लघु आ दोसर दीघि(IS) हो तकरा चतुष्कल (डगण)क ओहन रपसँ जोि जाश्चमे दूनू दीघि(SS) िक। तखन जे बनत तकरा "मफाईलुन" (ISSS) बनत मने। उदाहरण लेल---श्चाशा एलै (ISSS)। एकरा एना देखू-----IS + SS = ISSS

4) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रप जकर शुरआतमे दूटा लघु आ अंतमे एकटा दीघिहोइ मने (IIS) तकरा श्चिकल (ढगण)क ओहन रपसँ जोि जाश्चमे पश्चल लघु आ अंश्चाम दीघि मने (IS) तँ

"मुतफाइलुन" (IISIS) बनत जाएत। एकरा एना देखू-------IIS + IS = IISIS

5) जँ पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु दोसर दीर्घ आ तकरा बाद अंतमे दूनू लघु मने (ISII) हो तकरा त्रिकल (णगण)क ओहन रूपसँ जोड़ि बै जाहिमे एकटा दीर्घ होइक मने (S) तँ मफाइलतुन बनत जाएत। एकरा एना देखू------ISII + S = ISIIS

6) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जाहिमे दूनू दीर्घ हो (SS) मने तकरा त्रिकल (ढगण)क ओहन रूपसँ जाहिमे पहिल दीर्घ आ अंतमे लघु (IS) मने हो तँ "मफऊलात" (SSIS) बनत। एकरा एना देखू-----SS + IS = SSIS

7) पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ हो मने (ISS) से "फऊलुन" कहाइत अछि। एकरा एना देखू------ ISS

8) पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल दीर्घ आ तकरा बाद लघु तकरा बाद फेर दीर्घ हो मने (SIS) से "फाइलुन" कहल जाइत अछि। एकरा एना देखू------SIS

*****मात्रा गनबाक लेल मोन राखू जाहि अक्षरमे "अ", "इ", "उ", "ऋ" एवं "लृ" नुकाएल हो तकरा लघु मानू आ तकरा बाद सभके दीर्घ। संगहि संग अनुस्वार तँ दीर्घ अछि मुदा चन्द्रबिंदु लघु। संगहि-संग जँ कोनो शब्दमे संयुक्ताक्षर हुअए तँ ताहिसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ

भए जाइत ैकि चाहे ओ लघु थ्कएक ने हुअए। उदाहरण लेल-- पत्यक शब्दमे दूटा संयुक्ताक्र अथि पश्चल त्य एवं क। आब एश्चमे देखू "त्य" सँ पश्चने "प" अथि तँए ई दीघिभेल आ "क" सँ पश्चने "त्य" अथि तँए इहो दीघिभेल। मुदा इ मोन राखू "न्ह" आ "म्ह" संयुक्ताक्रसँ पश्चने बला शब्दमे लघु दीघनिश्च होइत ैकि। जेना की "कुम्हार" मे "म्ह" सँ पश्चने "कु" दीघनिश्च भेल तेनाश्चते "कन्हाइ" शब्दमे सेहो "न्ह"सँ पश्चने "क" वणदिीघनिश्च भेल। क, ि आ ज संयुक्ताक्र अथि।

B) वाथ्कि िंदमे तीन-तीन माि खंडक आठ थ्वन्यास कएल जाइत अथि। एश्च तीन-तीन खंडक गनणा "दशाक्री" पदथ्सँ कएल जाइत अथि। इ एक पकारक सूि अथि। इ सूि अथि----- "यामाताराजभानसलगा"। एश्च दसो अक्रमेसँ पश्चल आठ अक्र आठो गणक नामक पश्चल अक्र थ्ैकि। आ इ आठ गण अथि-----

य = यगण

मा = मगण

ता = तगण

रा = रगण

ज = जगण

भा = भगण

न = नगण

स = सगण

आ अंतमे दूटा अक्षर "लगा" कोनो गण नहि अछि। कारण इ जे वार्णिक छंदमे तीन-तीन मात्रा होइत छैक। मुदा "लगा" केर बाद कोनो अक्षर नहि अछि। तँए "स" के बाद कोनो गण नहि बनि सकैत अछि। आब गण बनेबाक तरीका देखू---- अहा जे गण बनबए चाहैत छी तकर पहिल अक्षर आ तकरा बादक दू अक्षर आरो लिअ। जे अक्षर क्रम आएत तकर मात्रा गणक मात्रा कहाएत। उदाहरण लेल मानू हमरा "मगण" बनेबाक अछि तँ सभसँ पहिने "मा" लिअ तकरा बादक दूशब्द अछि "तारा"। आब एकरा एकठाम लेने "मातारा" बनत। आब एकर मात्रा अछि---SSS | तँ इ भेल "मगण"। एकटा आर उदाहरण लिअ मानू हमरा जगण बनेबाक अछि तँ ज लिअ आ तकरा बाद दू शब्द अछि "भान"। तँ दूनू मिला कए "जभान" बनत मने "जगण" केर मात्रा क्रम ISIअछि। एनाहिते आठो गण बनैत अछि। आठो गणक रूप देल जा रहल अछि-----

| गणक नाम | दशाक्षरी खंड | मात्रा क्रम |
|---|---|---|
| यगण | यमाता | ISS |
| मगण | मातारा | SSS |

तगण ताराज SSI

रगण राजभा SIS

जगण जभान ISI

भगण भानस SII

नगण नसल III

सगण सलगा IIS

तँ चलू आब एहि आठो गणसँ अरबी रुक बनाबी। इ अरबी रुक आठ अछि । तँ देखू एकर नियम----

1) यगण (ISS )सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने " फाइलातुन" बनत। मने S + यमाता = SISS = फाइलातुन

( वैकल्पिक रूपे एना हुतो कए सकैत छी------- रगण मने (SIS) के बाद एकटा आर दीर्घ लगेने "फाइलातुन" बनत।मने SIS + S = SISS

2) रगण (SIS )सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने " मुस्तफइलुन " बनत। मने S + रगण = SSIS = मुस्तफइलुन

(वैकल्पिक रूपे एनाहुतो कए सकैत छी----- तगण मने (SSI) के बाद एकटा आर दीर्घ लगेने "मुस्तफइलुन" बनत। मने SSI + S = SSIS )

3) यगण (ISS )के बाद एकटा दीर्घ लगेने "मफाईलुन" बनत। मने ISS + यगण = ISSS = मफाईलुन

(वैकल्पिक रूपे एनाहुतो कए सकैत छी---- मगण मने (SSS) सँ पहिने एकटा लघु लगेने "मफाईलुन" बनत। मने I+SSS = ISSS

4) रगण (SIS) सँ पहिने दूटा लघु लगेने " मुतफाइलुन " बनत। मने II + रगण = IISIS = मुतफाइलुन

( वैकल्पिक रूपे एनाहुतो कए सकैत छी--- सगण मने (IIS) के बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने "मुतफाइलुन" बनत। मने IIS + I + S = IISIS =

5) जगण मने (ISI) के बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने "मफाइलतुन" बनत। मने ISI + I + S = ISIIS

6) मगण मने( SSS) के बाद एकटा लघु लगेने "मफऊलात" बनत। मने SSS + I = SSSI = मफऊलात

( वैकल्पिक रूपे एना हुतो कए सकैत छै----- तगण मने (SSI)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने ''मफऊलात'' बनत। मने S + SSI = SSSI

7) यगण मने ( ISS) पूरा-पूरी "फऊलुन" के बराबर अछि।

8) रगण मने ( SIS) पूरा-पूरी "फाइलुन" के बराबर अछि।

तँ दूनू पकारक छंद आ तकरा रकमे बदलनाइ हमरा लोकनि सेहो देखलहुँ। तँ आब चलू तैआर भए जाउ गजल लिखए आ पढ़ए लेल। एहि लेखक सहायतासँ खाली मैथिलीए नहि कोनो आन भाषामे सेहो सही गजल लीखल सकैत छै, खाली काफियाके नियम बदलि जेतै भाषाके हिसाबे।

मैथिलीमे बहर

उपरमे हमरा लोकनि जतेक बहर देखलहुँ तानि उपर मैथिलीमे आइ धरि गजल कहले नहि गेल। अति जीवन झासँ लए कए 2008 धरि मैथिलीमे बहर नहि छल। 2008क बाद गजेन्द्र ठाकुर उपरका बहरमे गजल तँ कहबे केलाह संगहि-संग मैथिली लेल एकटा अन्य बहर सेहो तकलाह जकर नाम देल गेल---वार्णिक बहर। एहि बहरक मतलब छैक मतलाक पहिल पाँतिमे जतेक वर्ण छैक ओहि गजलक आन हरेक शेरक पाँतिमे ओतबए वर्ण हेबाक चाही। उपरमे उदाहरण लेल हम अपन जतेक शेर देने छी ओ सभ सरल वार्णिक बहरमे अछि।तथापि एकटा उदाहरण आर-----

जहिआ धरि हमरा शास रहत

तहिआ धरि हुनक आस रहत

आब एकरा गानू। एहि दूनू पाँतिमे 13-13 वर्ण अछि। इ भेल सरल वार्णिक बहर। वर्ण कोना गानल जाए तानि लेल इ धिआन राखू-----

हलंत बला अक्षरके 0 मानू

संयुक्ताक्षरमे संयुक्त अक्षरके 1 मानू। जेना की "हरस्त" मे स्त=1 भेल।

तकरा बाद सभ अक्षरके 1 मानू चाहे ओकर मात्रा लघु हो की दीर्घ।

वार्णिक बहर दू तरहक अछि---

सरल वार्णिक बहर, आ वार्णिक

1) सरल वार्णिक बहर----- उपरका सभ उदाहरण सरल वार्णिकक अछि।

2) वार्णिक-------- एहिमे वर्णक संग-संग मात्रिक सेहो ध्यान राखए पड़ैत छैक। मने वर्णक संख्या तँ बराबरि हेबाके चाही संगहि-संग ह्रस्व के बदला ह्रस्व आ दीर्घके बदला दीर्घ हेबाके चाही। उदाहरण लेल-----

नचनी नाच नचा गेल पेम हुनकर

लगनगी बाझ बना गेल पेम हुनकर

आब एहि शेरके देखू दूनू पाँतिमे 15 वर्ण तँ छैके संगे-संग पहिल पाँतिमे जाहि ठाम जे मात्रा छैक वएह मात्रा दोसरो पाँतिमे ओही ठाम छैक। तँ इ भेल वार्णिक बहर|

आब अहाँ एतए प्रश्न कए सकैत छी जे जँ एहिमे ह्रस्व के बदला ह्रस्व आ दीर्घके बदला दीर्घ छैक तँ एकरा उर्दूक बहर किएक ने मानल जाए। मुदा एहिठाम मोन राखू खाली ह्रस्व के बदला ह्रस्व आ दीर्घके बदला दीर्घ रहने उर्दूक बहर नहि होइत छैक। जँ अहाँ एकरा मात्रा क्रम देबै तँ पता चलत जे एकर रूप एना छैक----

I+I+S+S+I+I+S+S+I+S+I+I+I+I+I

आब अहा गौरसँ देखू इ ढ़ाचा उदूक्रि कोनो बहरसँ मेल नञ्च खाइत अश्चि। तँए एञ्च शेरमे हस्त्र के श्चाच्च्चा हस्त्र आ दीघर्कि श्चाच्च्चा दीघर्कि रञ्चतो उदूक्रि बहर नञ्च मानल जाएत।

आब कने इ श्चचारी जे मैश्चिलीमे कोन बहरके पर्िनता दी। जेना की हमरा लोकश्चा जनैत र्िी "सरल वाश्चाक्रि बहर" सभसँ बेसी हल्लुक अश्चि तँए गजलगो ( शाइर) शुरआतमे एही बहर मे गजल श्चाखैत तँ नीक। तकरा बाद अभ्र्यासससँ दोसर बहर (वाश्चाक्रि बहर) पर आबश्चि आ तकरा बाद उदूर्बिला बहर पर हार्ि अजमाबश्चि। एखन मैश्चिलीमे दोसर बहर अर्िात क पारंश्चाक चरण चश्चा रहल अश्चि। अंतमे सबसँ खास गप्प गजल चाहे अहा कोनो बहर मे श्चकएक ने श्चाखब रदीफ आ काश्चफयाक श्चायम सभ लेल एकै रंग रहत।

गजलक भाषा

चूँश्चक गजलके पेमी-पेश्चाका (आत्मा-परमात्मा)क गप्प-सप्प सेहो मानल जाइत र्िक। आ गप्प-सप्प सश्चदखन गदमे होइत र्िक तँए गजल लेल गदात्मक भाषा हेबाक चाही। एञ्च स्तर पर इ संस्कृत काव्यसँ श्चबलकुल अलग अश्चि। जे गजल जतेक गदात्मक हएत ओ ओतेक बेसी नीक हएत। भाषाक संबंर्मे एकटा आर गप्प- हरेक भाषाक दूटा रप होइत र्िक पूणर्आ अपूणर्। मैश्चिलीओमे र्िक, श्चकर्ु उदाहरण देखू-------

पूर्ण रूप--------- अपूर्ण रूप

नञि---------------नै

जाहिठाम----------जैठाम

कतेक-------------कते

हेतैक-------------हेतै

गजलक संदर्भमे हमर इ अनुभव अछि जे अपूर्ण भाषा गजल लेल बेसी नीक। कारण भाषाक अपूर्ण रूप लोकमे उच्चरित होइत छैक आ गजल तँ पूरा-पूरी उच्चारण पर आधारित छैक। तँए जे तेजी अहाके "नै हेतै" वाक्य-खंडमे भेटत ततेक तेजी "नञि हेतैक" वाक्य खंडमे नञि भेटत। हम अपन गजलमे अपूर्ण रूपके प्राथमिकता देने छी। पूर्ण रूपके प्रयोग हम खाली वर्ण आ मात्रा मिलेबाक लेल करैत छी।

आब अपना गजलक मादे किछु शब्द। हम बहुत कम दिनसँ गजल लिखैत छी। आ इ वास्तविकता छैक। संगहि-संग इहो वास्तविकता छैक जे हम मृत्यु धरि गजल लिखब आ तखनो कहब जे " हम बहुत कम दिनसँ गजल लिखैत छी"।हमर मोनमे गजल पाया 2001सँ बसल अछि मुदा एकर भयंकर रूप तखन देखाएल जखन की 2008मे "अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) मैथिलीक पहिल गजलक ब्लागके रूपमे जन्म लेलक। आ एहि "अनचिन्हार

आखर"के पश्चा हम कतेक मोहासक्त ि से अहा सभ देश्वए रहल हएब।ओना एखन ि श्वक हमर सभ गजल सरल वाश्वाकि बहर पर आ िश्वत अश्वि। ओश्वमे कोनो-कोनोमे वाश्वाकि बहरक झलक सेहो भेश्वट जाएत। गलती कतेको पकारसँ होइत ैक जेना की अजानतावश,मोहवश, आलस्यवश आश्वद। बहुत संभव जे हमर आलेख आ गजलमे बहुत रास गलती होइक। आ एश्वह लेल सुि पाठकसँ माफी चाहैत ि। संगश्वह-संग जँ श्वकनको कोनो सुझाव देबाक ि श्वह ओ वयश्वक्तगत वा सावजिश्वनक रपे दए सकैत ि श्वि |समय अएला पर हम ओश्वह श्वहसाबे जर र पश्वरवतनि करबै | -समपिण श्वसरजनहारके- आशीष अनश्वचन्हार

गजल

1

मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक

देखाउसक खातिर कंगाल बनल लोक

भूखक ददि होइत कि पकाशोसँ तेज

देखू पेटक खातिर दलाल बनल लोक

वृत तँ टूटल चलल समानातर रेखा

देखू बनु कागजीक पकाल बनल लोक

सत-सत ने रहल ने रहल फूस-फूस

अपने लेल अपने जंजाल बनल लोक

उपरसँ गंगा घाट भीतर मोकामा घाट

एतए नुकाएल देबाल बनल लोक

**** वर्ण--------16*****

2

चुप्प रहत मनुख अन्दर भुकबे करतैक

अजीव तुलसी चौरा कुकुर मुतबे करतैक

जँ केकरो वीरता सीमित रहत जाए गप्प धरि

तँ दुश्मनक लात छाती पर पड़बे करतैक

धरोह आ अधिकारके अन्तर लाह बुझा आहार

आइ ने काल्हि अपटी खेतमे मरबे करतैक

बसात पर बसात दैत रहू काल्हक आशाके

नहुँए-नहुँ सही कखनो तँ जरबे करतैक

कहैत रहुओ अरोहक गजल अनचिन्हार

कखनो केओ ने केओ एकरा पढ़बे करतैक

**** वर्ण--------18*******

3

एखन लाइलाज बेमारीक की हाल हेतै
स्रोे ाचारी-चारणीक की दलालहेतै

हरेक समय बनतैए दुख आ दर्द
गरीब लेल नव पुरान की साल हेतै

नौकरी उठिआ गेलै बालु जका देशसँ
आब शकएक केओ काजमे बहाल हेतै

अहुनआ कटैत लोक डूबल नोरमे
ओ तँ नोरे पीबा मँगनी मे हलाल हेतै

ि रिज ि र पतीका कर अनथ्यन्हार

मरब तँ नीक थ्मनगी तँ जंजाल हेतै

**** वर्ण--------15********

4

मर्यादा जँ मारि भागिए तँ डर मानबाक चाही
लोक जँ नेता भए बदलबए तँ डर मानबाक चाही

बेसबा खाली देहे टा बेचैत छै कि अभिमान नहि
लोक अस्वाभिमानी हुअए तँ डर मानबाक चाही

सभके छै बूझल शेर केखनो नहि खाएत घास
जँ बीर अँहिंसक बनए तँ डर मानबाक चाही

सीमा केर रक्षा करैत जे मरथि सएह विजेता
माए बेटा जँ रण छोड़तए तँ डर मानबाक चाही

सम्मानक रक्षा करब उदेश्य अछि गजल केर

जँ ओकर उदेश्य ि◌टए तँ डर मानबाक चाही

**** वर्ण--------19*******

5

एखन र पे सभमे करार हेतै

खाए लेल मनुखे जोगार हेतै

मीथ्कआ तँ बश्न गेलै पोनोगाफी

आब सएमे सए थ्करा हेतै

बयससँ पश्चने बच्चा जबान

पंचमे बखे रश्च झमार हेतै

संबंध जश्व रहल सभ ठाम

पश्चवार गूँहक भरा हेतै

चेतह अनश्चान्हार रश्क जाह

िनेमे आदमी बेसम्हार हेतै

**** वर्ण--------12******

6

कागतक नाह चलैत रहल सुखाएल धारमे

ओ तँ घरमुहाँ आ दैए इजोरियाक अन्हारमे

नाङट समय नाङट आदमी आ नाङट व्याख्या

राति भेटतीह गली-गली कान्ह हरेक धिनारमे

दिनि भेषे रखैतछै तँ एहन सन गप्प नहि

मोश्किल कि फकफकिनाइ मनुख आ हुराधिमे

बजैत लोकके सुनबाक फुरसति कहा भेटतै

एखन ठाम सभ लागल अछि आत्म-अभिसारमे

थिकाओ कहब खतरनाक बुझाइए एतए

एकौटा अपन लोक कहा एते अनठिआन्हारमे

**** वर्ण--------18******

7

मनुख पर भुकैए कुकूर

खजानाके चोरबैए कुकूर

की मनु की आदम की ि हौआ

श्वायम बना तोि ए कुकूर

लक्ष नै बाटे-बाट पसरल

बेमतलब दौि ए कुकूर

आश्व-पाश्व-बसात बेकाजक

रंग-महलमे रहैए कुकूर

पछ्इतो जाइ पाछइतो जाइ

कुकूरेके हबकैए कुकूर

**** वर्णा--------11*******

8

आबो परबोि कर

अपने घ्वरोि कर

लोक तँ बढ़त आगा

अहा अवरोि कर

िनी बश्चा जाए िनी

एहने तँ शोि कर

बहर नै गजल नै

इ आबो तँ बोि कर

आएत अनथ्यन्हार

अहा अनुरोि कर

**** वर्ण--------8********

9

भेष हुनक भगवान सन

काज  हुनक सइतान सन

बेटा बलाके तँ पंश्चत बुझू

बेटी बला तँ जजमान सन

मँहगाइ बढ़ल ि तेना ने

कोबरो तँ झूरझमान सन

देहे श्चंदा,भावना मश्च गेलै

जग लगैए समसान सन

नञ्च बनत केओ राम मुदा

सेवक चाही हनुमान सन

**** वर्णा--------11********

10

इ दुराचार अँइक खूरक पतापे

इ भष ाचार अँइक खूरक पतापे

देखू लोक पढ़ैए जान अरोध कए

मुदा बेकार अँइक खूरक पतापे

जनबल,िनबल, आरो बल-बल

इ सरकार अँइक खूरक पतापे

इदुत-थदुत सभटा फेल की कहू

भेल अन्हार अँइक खूरक पतापे

हाि थ्चलाउ, िती लगाउ तैओ सभ

अनथ्वान्हार अँश्वक खूरक पतापे

**** वर्ण--------14******

11

मूसक आखर ब्वलाइक नाम

गाएक नोर तँ कसाइक नाम

हुनका नै हुनकर िध्वि देखू

घीअक सुगंध्वि मलाइक नाम

श्वकएक श्वाक्कके सम्मान हेतै

बापक कजा तँ पढ़ाइक नाम

आश्व मने गाश्व, गाश्व मने माश्व

खेतक उपजा बटाइक नाम

एहनो होइ ि कश्चओ-कश्चओ

पाश्वाक पेम तँ सलाइक नाम

**** वर्ण--------12******

12

जीबनमे सभके एनाश्चते घाम चलैए

केखनो अराम तँ केखनो हराम चलैए

अरिश्वाआमे देखबै केखनो अनचोके

चुिले जका तँ उन्टा हमर गाम चलैए

आब तँ तरबा बश्च जाइत ि सश्चखन

बाट पर सश्चखन जुता-खराम चलैए

रामक आदशतिँ मश्च गेल हुनके संगे

बुझू आब तँ खाली हुनक नाम चलैए

चिन्हार तँ बिलमि जाइए चिन्हारक संग

देखू अनचिन्हार मुदा अविराम चलैए

**** वर्ण--------16******

13

गोली सँ तँ डेराएल अछि मनुखसँ सइतान छथि

जानवर तँ जानवर भगवतीसँ भगवान छथि

नीकक लेल सोहर तँ खरापक लेल समदाउन

गाबए रहल गबैआ सोइरीसँ असमसान छथि

इ समालोचना केकरा कहै ि श्रह श्रकनको बूझल

पढ़ू, अछि सगरो पसरल आन्दासँ गुणगान छथि

राम नामक लूटब छथिक लूटब सकी तँ लूटू सदखन

लूटब रहल छथि दक्षिणा पंडितसँ जजमान छथि

सश्चखन पसश्च रहल पसाही सगरो कोने-कोन

घृणा-देष-तामस श्चकसमस-होलीसँ रमजान िश्च

**** वर्ण--------20*******

14

देह केराक छबि सन गोर-नार लगैए

अड़हूलक फूल सन भकरार लगैए

नोर अँहाक तँ बेली-चमेली,गेदा-गुलाब

मुदा हँसी तँ अँहाक सिंगरहार लगैए

मरनाइ तँ एकै होइ छै सभहँक लेल

लहासे सन तँ कटल कचनार लगैए

सीसोक सीस कटल,चऽहुक चऽहु टुटल

आमक नव पल्लव तँ अंगार लगैए

आम-जाम,कुम्हर-कदीमा,लताम-सरीफा

आब तँ जकरे देखू अनथ्थ्यन्हार लगैए

**** वर्णा--------16*******

15

मोन पड़िए केओ अनचिन्हार सन

साइत कही इएह ने हो प्यार सन

जे नै कमा सकए टका बेसीसँ बेसी

लोक तँ ओकरे बुझै छै बेकार सन

समय कहा कखनो खराप भेलैए

कमजोरके लगैत छै अन्हार सन

शक्ति तँ देखाएल चोके-अनचोकेमे

चोरे तँ बुझाइए पहरेदार सन

संग रहबै-िाबै तँ फरक देखू

बालु जका समस्या पहाि सन

**** वर्णा--------14*******

16

जीबनमे ददकि सनेश शेष कुशल अछि
हम नञ्ज कहब वशेष शेष कुशल अछि

अन्हरे सरकार तँ चला रहल राज-काज
की कहू, ि बौकक इ देश शेष कुशल अछि

देहे टा बदलैए आत्मा नञ्ज सूक्ष्म व्वाअ अहा
एहने सरकारक भेष शेष कुशल अछि

मुका आ ापिक उपयोगके करत आब
खाली आँखवाए लाल-टरेस शेष कुशल अछि

गजल कहब एतेक सोझ नै अनचिन्हार

हम तँ आब चलै ि बेस शेष कुशल अछि

**** वर्ण--------17*******

17

अँहा तँ असगरेमे कानब मोन पाथि कए

करेजक बाकसके घाटब मोन पाथि कए

आइ भने थ्ि िह नीक लाथि रहल अँहाके

काथि अहुथिआ काथि ताकब मोन पाथि कए

अझरा गेलैक नीक-बेजाए दोगलपनीसँ

कथिओ एकरा अँहा िटब मोन पाथि कए

अँहा जते नुका सकब नुका थिअ भथिपोख

फेर तँ अँही एकरा बाटब मोन पाथि कए

आइ जते फा बाक हुअए फाथि थ्वऔ अहा

मुदा फेर तँ इ अहीँ साटब मोन पाथि कए

**** वर्ण--------17*******

18

जँ पेम अछि तँ कहनाइ नीक

शीतल आगिमे जरनाइ नीक

घोघक रहस्य तँ एना बुझाऔ

झरकल मुँह झपनाइ नीक

लोक जहर दैए मुस्किया कए

आब तँ हँसीसँ डरनाइ नीक

दबाइ देबै तँ बढ़बे करत

पेमक दर्दकेँ सहनाइ नीक

आब जँ भेटत दुख अहूँ लग

तखन संसार ौि निश्च नीक

**** वर्णा--------12*******

19

बाजू चोर आ चुहारक लेल ताला की
अँही कहू बेइमान लेल केबाला की

लोक डुबैत अछि भाव आ अभावमे
कहू डुबबाक लेल नदी आ नाला की

लोक तँ खुश होइए तेल मालिशसँ
एहि रोगीक लेल दबाइ वा आला की

फूसे घर पर होइए दैवी पकोप
इडिंग-बिडिंग लेल ठनका-पाला की

इज्जत सुकाजसँ भेटै ि संसारमे

एश्च लेल बासन-श्चांहासन-माला की

**** वर्णा--------14*******

20

आइ-काश्चि भाि आ की भि ुएक तँ चलती िक

आइ-काश्चि चोरे की पहर एक तँ चलती िक

होइत रहल श्चापता फल आ फूल बगैचासँ

सुखाएल सन जश्चि माश्चएक तँ चलती िक

श्चाश्चआ कए जगबैत िल लोकके सश्चखन

गोली खेलक ओ श्चाशबदीएक तँ चलती िक

घोघके घोघ नै ओकरा आब दोसरे चीज बुझू

साझ-राश्चा ि िमे बहुश्चएक तँ चलती िक

कलम लेने ठाढ़ अनथ्वअन्हार चौबथ्वटआ पर

कुबाट देखबैत कुमाथ्वएकि तँ चलती िक

**** वर्ण--------18*******

21

कहू, इ की केलहुँ बैसले-बैसल अँहा

आश्चा तँ लगेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

रोटि कहीक इँटा-बालु सीमेट कहीक

महल बनेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

इन्द्र की करताह परतर अँहा संग

तंि जन्मा देलहुँ बैसले-बैसल अँहा

अगस्तस्य तँ पीने िलाह एकटा नदी

समुरो पी गेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

लाठी-भाला लेने बैसल ि ल ओ खेतमे

साढ़ ढुका देलहुँ बैसले-बैसल अँहा

**** वर्ण--------15*******

22

बाट अन्हारमे डूबल केकरा बजाउ

जगैत लोक तँ सूतल केकरा बजाउ

लेलहुँ हम सप्पत रहब एकै संग

ओ तँ मोि पर ि्टल केकरा बजाउ

राम ठकाएल तँ अल्ला ि थ्नि बौआएल

मंद्धिर-मस्जिद टूटल केकरा बजाउ

दुश्माया घालमेलक दुश्माया भमजाल

सीसी-ि ौि ी-पाइ घूमल केकरा बजाउ

चाहै लिहुँ आबथि हमर करेजमे

मुदा इ श्कस्मते र सल केकरा बजाउ

**** वर्ण--------15*******

23

गजल सुख ध्मनगीक गजल ददिध्मनगीक

रहए ठाढ़ अध्यचल गजल मदिध्मनगीक

अँहा ध्मुमालयक भाए ि ी वा कैलाशक जन्मल

बध्मा गेल आध्माक गोला गजल सदिध्मनगीक

देखएमे तँ हेतैक लाजोके लाज तेहने सन

देखाएत अंग-अंग गजल बेपदिध्मनगीक

अनध्मान्हार साकी दए रहल गजलक हाला

बनल ि कै दबाइ गजल बेददिध्मनगीक

इ तँ साफ करबे करत कोने-कोनमे जा कए

देखू कोना पसरल ि गजल गदश्मिनगीक

**** वर्ण--------18*******

24

थ्क ि दूर चलब हमहूँ जँ संग दए सकी

रंथ् देब हम तँ रंगमे जँ रंग दए सकी

अन्हारोमे चलब हम थ्बनु ठोकर खएने

हमरा चलबाक जँ कथ्को ढ़ंग दए सकी

कहबै जँ चार पर तँ चढ़बै पहाि पर

थ्क्चि ने असंभव जँ कने उमंग दए सकी

हेताह कोने-कोन मे नुकाएल कतेको राम

मरत इ रावण जँ िनुष-भंग दए सकी

हमहूँ रश्च सकै ि ी सभसँ दूर सश्वखन

जँ अपने जका भावना अपंग दए सकी

**** वर्णा--------17*******

25

हँसैत थ्भनगी कना बैसल ि

मोनमे केकरो बसा बैसल ि

नश्च होइक अन्हार कोबरमे

तँ तँए करेज जरा बैसल ि

उराहल पाश्मसँ कव्ज होइए

गंगो-जलके सा बैसल ि

भेटबे टा करत केओ ने केओ

उम्मीदे पर तँ थ्भया बैसल ि

करोटक तँ पक्षवर्ति नाम

जखन की आत्मे सुता बैसल ि

**** वर्णि--------12*******

26

अपन आँखिमे बसा लिअ हमरा

अपन शासमे नुका लिअ हमरा

जहा मरितो जीबाक आस रहए

ओहने ठाम तँ बजा लिअ हमरा

हाि सटेलासँ मोन केना भरतै

अहा करेजसँ सटा लिअ हमरा

भरि जिनगी बौआइते रहलहुँ

अपने संग तँ बैसा लिअ हमरा

जाइ ि ी मुदा जेबाक मोन नै अिथ

कोनो सप्पतसँ घुरा श्वाअ हमरा

**** वर्ण--------13*******

27

इजोतक ददि अन्हारसँ पुछिऔ

ि रिक ददि तँ श्वकनारसँ पुछिऔ

नश्चु काटल गेल हएब जशिसँ

काठक ददि तँ कमारसँ पुछिऔ

समदाउनो तँ श्वागुनि बुझाएल

कशि आक ददि किहारसँ पुछिऔ

खेतक हश्चअरी तँ नीक लगैए

इ अनाजक ददि ि रिसँ पुछिऔ

करबै की हाि आ गरा भला कए

इ ददतिँ अनध्यन्हारसँ पुधिऔ

**** वर्ण--------13*******

28

(क)

केकनैए हमरा लेल

केहँसैए हमरा लेल

सपनामे एबै आस नै

केसुतैए हमरा लेल

जँ हम चक्काए जाएब

केरहैए हमरा लेल

िश्चि ध्वअ सुतले अहा

केउठैए हमरा लेल

अनचिन्हार नाम-गाम

केअबैए हमरा लेल

**** वर्ण--------9*******

(ख)

केकनैत अछि एखनठाम हमरा लेल
केहँसैत अछि एखनठाम हमरा लेल

हुनकर सपनामे एबै अशास नञि
केसुतैत अछि एखनठाम हमरा लेल

उठनाइ खराप नञि मुदा अहूँ सोचू
केसुतैत अछि एखनठाम हमरा लेल

बसातक संग आबि गेल मनुख-गदा
केउठैत अछि एखनठाम हमरा लेल

अनध्यानहार नाम गामो तँ अनध्यानहार

केअबैत अथि एश्वठाम हमरा लेल

**** वर्ण--------15*******

29

हमरा मोनमे बैसल माि अदना साप

इ बाहर सह-सह करैत पदना साप

लगबैत रहलहुँ भएट आ सूचना तंि

देखू बढ़ैत रहल महँगी-थपदा साप

इ थ्रकनीक थ्रुजाइन ि क की सुन्दरीक

देथ्रअौ ितीमे लेपटाएल तगमा साप

हम तँ मनुसँ जन्मल रही की आदमसँ

बाजत थ्रकएक इ सेकुलर-भगवा साप

बुझाएत नै रहत पातेमे अझराएल

सुनू एनाइते तँ डसैत ि सुगबा साप

अनआन्हार रहत वा आन्हार की करबै

समय पर सभ बनै अजगरबा साप

**** वर्ण--------16*******

30

एहने अहाक पेम ि लि पाश्चि जानल हम

खाली मूहँक तँ ि मि लि पाश्चि जानल हम

आश्चि लागल ि घर मे श्चान्तिाक गप्प नश्चि कोनो

कारण अपने टेम ि लि पाश्चि जानल हम

सि ति देखश्चि ऐक श्चिकच ि के कादो मे सश्चि खन

अपने घरक हेम ि लि पाश्चि जानल हम

कोढ़ीके सुँघलकै आ बजरखसुआ चश्चि गेलै

दाइ ओ नकली भेम ि लि पाश्चि जानल हम

कानून तँ बनै ि आ टूटै ि बेर-बेर देशमे

लोके लेल नेम-टेम ि ल पा िश्च जानल हम

**** वर्ण--------18*******

31

माश्चर-पाश्चात-बसात लेल युद

देखू  िटको बात लेल युद

आदशा बिनाम आदशावादी

बुद-गािक गात लेल युद

जर-जमीन-जोर एतबा नै

देखू फेकल पात लेल युद

नून नै चटबए पि तै बेटीके

आब तँ गभपात लेल युद

तकनीकी जुगक इ व्यवसा

साझ होइते पात लेल युद

**** वर्ण--------11*******

32

पतालमे जा अकास नपैत िी

ब्रह्मआ अझा पकाश तकैत िी

कागतमे अखल कागती प्लान

घोटालासँ अकास करबैत िी

पाआ सभि गन्हाइते रहलैक

आब्रए बाअह पाआ बहबैत िी

बुभिबक देवी कुरि ी अक्त

हम एहने अकास करैत िी

थ्यान्हार नश्च अनथ्यान्हारे नीक

तँए तँ पश्चचय नुकबैत ि ी

**** वर्ण--------12*******

33

गुंगुआइत बसात चुप्प रहू

पदुराइत बसात चुप्प रहू

चार बरस तँ पसरि गेल िँआ

हे पझाइत बसात चुप्प रहू

अहाक कुंठा जधि जमेने अधि

कककआइत बसात चुप्प रहू

अहूँ पर हँसत केओ-कहुओ

छछआइत बसात चुप्प रहू

जे भेटत अनथ्थान्हारे भेटत

थ्थाथ्थाआइत बसात चुप्प रहू

**** वर्णा--------12*******

34

अहूँ तँ पिएल छिहुँ हमहूँ तँ पिएल छिहुँ

अहूँ घबराएल छिहुँ हमहूँ घबराएल छिहुँ

शायद एहने भेट छलखिन कपारमे सखि

अहूँ तँ लजाएल छिहुँ हमहूँ तँ लजाएल छिहुँ

रकलाहा बनगीक लेल सौरी बेर-बेर सौरी सजनी

अहूँ उबिआएल छिहुँ हमहूँ उबिआएल छिहुँ

शेर तँ चल गेल आब ताल देनहे की हएत कहिऔ

अहूँ सुखिआएल छिहुँ हमहूँ सुखिआएल छिहुँ

रखने गेलहुँ अनमोलन्हार करेज सटेलाक पाछाओ

अहूँ अगुताएल छिहुँ हमहूँ अगुताएल छिहुँ

**** वर्ण--------21*******

35

पकृश्वा जँ दुश्मन बनए तँ ओकरा रोकब कश्छन

काटी जँ िती पर रहए तँ ओकरा ठोकब कश्छन

लक्ष्म जँ नश्च रहत आँश्वक सीमान पर सश्वखन

जोर लगेलाक पाश्वाओ ओकरा लोकब कश्छन

संसारमे पापक घैलके एहने गश्वा ि से मानै ि

जँ नै रहबै सत्यक संग तँ ओकरा फोिब कश्छन

आब जँ अहा चाही तँ एकरा कोनो नाम दए सकै ि

केकरो करेज सँ श्वाकलल गप्पके तोिब कश्छन

बौआइत रहू मसाने गाछिए-बिरछिए सखुनखन

जँ अहा नहि बनब भूत तँ ओकरा टोकब कखन

**** वर्ण--------20*******

36

बनतै कतेक बहना देखबाक चाही

ओ बनतै कतेक सना देखबाक चाही

आब तँ भेल नूनो-सोहारी पर आफद

सुनू फटकी कतेक चना देखबाक चाही

िपिी तँ अदौसँ बथ्मते आएल अथ्मि

लुटतैके कतेक टना देखबाक चाही

घरक बोझ थ्मिथ्मिआ रहल सथ्मखन

कोम्हर हेिा गेल जुना देखबाक चाही

खेतोके पता नञ्ञ की भए गेलैक अधि

खादोक बाद मरहना देखबाक चाही

**** वर्ण---------15*******

37

बटोही केहन ि क बाट पर चश्म कए देश्खऔक

थ्यआसलक थ्यआस घाट पर चश्म कए देश्खऔक

घर मे घोघाउज केने कोनो लाभ नश्ह भेटत आब

सस्ती-महँग केहन हाट पर चश्म कए देश्खऔक

कमजोर वस्तुक ममिओना नश्ह बुझाएत अहाके

कने श्वबाि लागल टाट पर चश्म कए देश्खऔक

बुश्झए जेबै कुश्मआर आ श्मठी केर संबंि अहा तँ

कनेक कोिुआरक राट पर चश्म कए देश्खऔक

नै रहत कखनो आयो मोल अहाक गुण केर दुनियामे

अहा बिनु पैसा कं ग के हाट पर चश्मा कए देखि औक

**** वर्ण--------20*******

38

एक बेर फेर हँसाबऔ कनेक
ओही नजरिसँ देखाबऔ कनेक

बाजब पेम लेल जररी नहि
आँखि झुका चुप्प रहबऔ कनेक

हम आबि गेलहुँ अहीक लेल
हमरो लेल तँ चाबऔ कनेक

पेमक भाषा अहीके अछि पता
आब हमरो बुझाबऔ कनेक

नञ्चु रहत केओ अनथ्यान्हार

हाि बढ़ा कए देश्चवऔ कनेक

**** वर्ण--------12*******

39

अपनेसँ आगाँ लगबैत छी आ झझबैत छी

अपनेसँ पीछाँ खसैत छी आ सम्हरैत छी

आँखिमे भरल छै नोरक निलकिक

अपनेसँ जमा करैत छी आ लुटबैत छी

शात इजोरियामे अशात करेज हमर

अपनेसँ हकार दैत छी आ नोत पुरैत छी

टूटल करेजके तँ आरो टुटबाक इच्छा

अपने करेज तोड़ैत छी आ कुहरैत छी

केबूझत हमर दुख आ ददिएझठाम

थ्थ्यान्हार रश्कतहुँ अनथ्थ्यान्हार रहैत ि ी

**** वर्ण--------16*******

40

थपरक पात जँका तँ डोलैत लोक

थम्मथक रङ जँका तँ उड़ैत लोक

देखू सृष्टि तँ बनल गेल भुतहा गाछ

भोर-साझ ओझाके सहैत लोक

नोर तँ मानल गेल गंगा-जल जँका

देखू नोरेसँ थानगी छिबैत लोक

सीसा तँ मासे-मास टूटै लोहा बखरी

मुदा खने-खन भेटत टूटैत लोक

देव-दानवक डर तँ मानलो जाए

अपने डरे िल-िल मुतैत लोक

**** वर्ण--------14*******

41

देखबौ तँ केना भेलैक गाकि के कात भेने

थ्याँआ बाजब िथ्रि देलक परात भेने

अहाक दरस-परस बरड महँग अथ्रि

सक्च जैतहुँ अहाक देह मे बसात भेने

आशो राखी तँ कनेक नीके जका राखी भाइ

दाश्नाए आ तीमन ने बचै कि भात भेने

सभँहक घरमे एकटा अगती जन्माए

सरकारक श्मान टुटै ि खुरफात भेने

लाथा गेलै भरना सभँहक भाग-सोहाग

आब की हेतै आथा लग सप्पत-सात भेने

**** वर्ण--------16*******

42

भोज ने भात हर-हर गीत की कर

आब लागल भूख कहू मीत की कर

अनगी अजगुत आदमी तँ अथि

केखनो घृणा तँ केखनो पीत की कर

पेम बदलल रहल समयोसँ बेसी

केखनो आग तँ केखनो सीत की कर

मनुख के पहचानब बरड कठिन

केखनो अत्या केखनो बीत की कर

अलेलहुँ गरासँ गरा तैऔ हमरा

भेटल दुश्मन नै मनमीत की कर

**** वर्ण--------14*******

43

एकटा चान हमरा लग राश्नामे अबैए
देखू वएह कागत पर पाश्नामे अबैए

जीबाक लेल जी सकै ि अहाक श्वनु
मुदा देखू नोर बेर-बेर आँश्वमे अबैए

आँश्वसँ बेसी सपना नश्व देखबाक चाही
फुनगीक आसमे बैसल माश्वमे अबैए

श्वजाएल लाठी श्कएक केकरा लेल कहू
अपने खुटाक ब ि द जजाश्नामे अबैए

थकएक कोनो नाथकके कहबै हिशंखनी

अपने लोकक गनती हिझमे अबैए

**** वर्ण--------16*******

44

गीतक आखर-आखर ि‍रके मोन ि‍क

रीतक आखर-आखर ि‍रके मोन ि‍क

लोक अपनेसँ ‍ि‍वशासघात करैए मा‍ि

पीतक आखर-आखर ि‍रके मोन ि‍क

हा‍ि‍थ गेलासँ लाभे-लाभ हेबाक अवसर

जीतक आखर-आखर ि‍रके मोन ि‍क

न‍ि‍ह देख‍ि‍थऔक डर आ‍ि‍थक ि‍ह केर

सीतक आखर-आखर ि‍रके मोन ि‍क

कटा-छल्लाक उपजा लोक तँ नञ्झ बूझत

बीतक आखर-आखर चिरके मोन कि

**** वर्ण--------16*******

45

लोहिल मोनक खुरफात थिक संबंध
असली हाथिक नकली दात थिक संबंध

कोना बचतै आयोगक गठन कर अहा
काटल गाछिक नवका पात थिक संबंध

केकरोसँ दोस्ती तोड़ि ओतेक सहज नै
करेजमे तँ अंगदक लात थिक संबंध

हटा लिअ अपन मुँहसँ मास्क तुरंत
इ शुद्ध पाणरक्क बसात थिक संबंध

खेनु बजने बैसल रहू आ तमाशा देखू

बैसल बुझू आक शह-मात थीक सबं

**** वर्ण--------16*******

46

साओन-भादवमे तँ सुखा गेल ि र

एक ठोप पानि लेल बिका गेल ि र

पानिसँ बाढ़ि कि बाढ़िसँ पानि

देखू अपने पानिसँ दहा गेल ि र

कोना बचतै थिआसल ठोर आ कंठ

घैलके तँ देखि कए नुका गेल ि र

गप्प तँ चललै बिजली आ बान्ह पर

देखू सुनिते-सुनैत डेरा गेल ि र

करि पर तँ होइ लै रसभल्ला

देखू तँ अनचोकेमे जुआ गेल रि

**** वर्ण--------14*******

47

पूछए लागल पात नुका कए राखामे

बूझए लागल पात नुका कए राखामे

हम तँ बेशमीक हद टपि गेलहुँ

हूसए लागल पात नुका कए राखामे

नै कि पाइ जे कराओत इलाज ददक

कूदए लागल पात नुका कए राखामे

सुआद तँ लगलैक खाली शोणितक केर

चुसए लागल पात नुका कए राखामे

अनश्चान्हार स्पशक्ति रहस्य बुझलहुँ

ि बिए लागल पात नुका कए राखामे

**** वर्णा--------15*******

48

इजोत लेल अन्हेर नगरी जाइत लोक

सपनेमे तँ सपनाक भात खाइत लोक

खेत तँ आब पटाओल जाइि शोथ्यातसँ

पाश्वा महँक तेले जका तँ िताइत लोक

जकरा जतेक भेटैक सएह बि अगती

खएलाक पािश्वाओ तँ गुंगुआइत लोक

ािलकै डश्वाा तेहन ने अथ्यानबान

मोनेमे पजश्व मोनेमे पझाइत लोक

बसातक कमी तँ िक गामोक बगैचामे

आक्सीजनेक बोतलमे तँ औनाइत लोक

**** वर्ण--------16*******

49

सभहँक ठोर पर बस अहींक नाम

आब तँ चार पहर बस अहींक नाम

इ संसार तँ मरैए अहाक रूपे देखि

सुन्दरताक जहर बस अहींक नाम

आब तँ किछु नहि बचल हमरा लग

तँए सगरो उमर बस अहींक नाम

देखू मोनक उत्फाल करेजक बहाथि

आब आँखिक भमर बस अहींक नाम

नीके तँ लगैए इ दुखक गाम हमरा

आब सुखक नगर बस अछंक नाम

**** वर्ण--------15*******

50

अपने रश्क गेलहुँ अनका रोकबाक चकरमे

अपने टुश्च गेलहुँ अनका तोि बाक चकरमे

एकरा हम नसीब कहू की दूनू गोटाकश्चलान

अपने फुश्च गेलहुँ अनका फोि बाक चकरमे

करेजक एहन उत्फ़ाल नै बुझल ि ल हमरा

अपने जुश्चि गेलहुँ अनका जोि बाक चकरमे

एतेक गहीर हेतैक खाश्चि खता ि ह नश्च ि ल

अपने लुश्च गेलहुँ अनका लोढ़बाक चकरमे

श्चाखर पर पहुँच्चाते लोक बनैए अनच्चान्हार

अपने ि्श्च गेलहुँ अनका ि िबाक चकरमे

**** वर्ण--------19*******

51

हम कीनल खुशी पर नाचू कतेक

हम लोहाक कंठसँ बाजू कतेक

रहस्य बेपारक बुझबै नहुँ-नहुँ

कमजोर हाथिमे तँ तराजू कतेक

आधुनिकाको नै उतर-आधुनिकाक जुग

भावनाके बेचैत लोक चालू कतेक

ने माए ने बाप ने तँ भाए ने बहीनि

इ सार-सरहोजि-सास-साढू कतेक

मनुख तँ बिझा जाइए अनथािन्हार

इ जानबरक र प थािन्हाबू कतेक

**** वर्ण--------14*******

52

कि जखन थआहक लागल हेतैक
गरीबक बेटी तँ बरड कानल हेतैक

गोली लागल देह भेटत दसो दशामे
कुशलक खोइ तँ कतौ बान्हल हेतैक

डेगे-डेग आरा देवीक पचार-पसार
आब केना कहू जे केओ जागल हेतैक

सधि गेलै एक पोखक सुन्दर पाथ
जुग-जुगान्तरसँ नक्ष उहिल हेतैक

थिशास कर समान कम नञ्ज भेटत

देखिऔ बाटेमे बाट भजारल हेतैक

**** वर्ण--------15*******

53

कोनो सोहके केखनो नहि बिसारि राखब

मोनक गाि केखनो नहि झखारि राखब

अबते हएत माथते रास कनैत आँखि

अहा ि ि कि हँसी संगमे सम्हारि राखब

बहुते-बहैत बन्हा जाएब अहा बान्हसँ

संगमे हरदम कखनकबो जुआरि राखब

अबैत रहलाह नव-नव विकमादित्य

कन्हासँ कखनआ इ बैताल उतारि राखब

नै कानू अछैते हएत थलीफ लेने नेता

घर-दुआरि बना आँगन बहारि राखब

**** वर्ण--------16*******

54

बेमार ि मुदा बेमार नञ्छ लगैत ि
दबाइ खाइ से कञ्छओ नञ्छ चाहैत ि

हमरा अँहा नीक लगै ि सभ छ्यनसँ
मुदा पेम अग्नि से कञ्छ नञ्छ पबैत ि

छसजनि बला मुरती ि हम िरमे
भसा देल गेलहुँ मुदा नञ्छ डुबैत ि

सभ छ्यन हमरा लेल म ि ि विछाए
टेमी दगेलाक बादो नञ्छ कुहरैत ि

एकरा तँ पेम कक्षुऔ की स्पाा ि कक्षुऔ

आब तँ हुनके इसारा पर चलैत ि ी

**** वर्णा--------15*******

55

बाट टूटैत रहलैक हर समय

लक्ष्य छूटैत रहलैक हर समय

भाइ बाढ़-भूकंप आबै की नै आबै

बान्ह टूटैत रहलैक हर समय

समय सतयुग होइ की कलयुग

ओ तँ लुटैत रहलैक हर समय

भाइ धार्मिक युद होइ की आर्थिक

सेना कटैत रहलैक हर समय

बेसी तेज दौगने नै भेटत पदक

ओ तँ खसैत रहलैक हर समय

**** वर्ण--------14*******

56

बाउ कहिं विरोधाभास तँ अछि बुझाइत कि
देखू पेटक आगि तँ पानिसँ नहि मिझाइत कि

राम नाम तँ सत अछि मुदा श्मसाने धरि एक
लोक रामसँ बेसी रावणे लेल घुरिआइत कि

बम-गोली चलए लगलैक एना भए कए आब
देखू फटको टिला पर लोक चकुआइत कि

आब लोक लिखि करए लगलै खुल्लमखुल्ला
शान्ति-महल पर युद पताका फहराइत कि

जले श्मनगी थ्रिक भेटत हरेक पोिमे श्काखल

बाश्कमे तँए चार श्कस श्मनगीए देखाइत ि

**** वर्ण--------19*******

57

जँ देशमे आरो अना हेतै

तँ इ भष ाचार सुना हेतै

या तँ पुश्नास या सरकार

दुनू दलालक मुना हेतै

सत्य तँ श्राकलबे करतै

बान्हल कतबो जुना हेतै

श्वाखेतै इश्वाहास खूनसँ

गजल हमर पना हेतै

जे बदलतै अिलाहके

ओ अकासमे चना हेतै

**** वर्ण--------10*******

सोलह अगस्त 2011सँ महात्मा गाँधीक दोसर रूप अना हजारे द्वारा कएल गेल भ्रष्टाचार विरोधी अनशनके समर्थनमे श्रृखल गेल।

58

हमर मोन नञ्छ भरैए थ्अलनक बेरमे

इ तँ अनथ्अन्हार बुझैए थ्अलनक बेरमे

जेहने थ्वरह हो तेहने थ्अनेह सथ्वखन

अनथ्अन्हार मोन पि ए थ्अलनक बेरमे

इ जे देखै ि ी हमर देहक भाषा- अथ्अलाषा

आब अनथ्अन्हार कहैए थ्अलनक बेरमे

आब भगवानो जनैत ि थि न्ह मोनक बात

देखू अनथ्अन्हार अबैए थ्अलनक बेरमे

हुनक रीत हुनकर पीत हुनकर गीत

आब अनथ्अन्हार लगैए अलनक बेरमे

**** वर्ण--------19*******

59

अहा गप्प हमरा संग एखुना करैत रहू

आ एखुना मोन हमर अहा जुबैत रहू

ने तँ मोन भरतै ने करेज भरतै केकरो

हम अँहाके डूबि अहा हमरा डूबैत रहू

चलू दोस्त नहि दुश्मने बिन जाउ हमर

आ करेजसँ करेज सटारा अहा लगैत रहू

बरसतै अमरीत केर बरखा करेजमे

बस खाली अहा कनडेखिए तँ देखैत रहू

अनचिन्हार आखर पेमक पाँती गजलमे

करेज पर हाँ राखि एकरा पढ़ैत रहू

**** वर्ण--------17*******

60

सोना भेटत सस्ता महँग चाउर देखब एक दिन

लोक एखना तँ लूटत हबाउर देखब एक दिन

देशमे लोकसभा-धनिसभा बनि गेल शोकसभा

भूखल जनता तँ देतै ⟨ि⟩माउर देखब एक दिन

हुनकर ⟨ि⟩ दिशिए देखब तँ मेटा गेल आब भूख हमर

अहूँ तँ एखना करब चराउर देखब एक दिन

एकौ बेर देखब लेत हमरा अहाके संग मे सजनी

तँ लोक जरत आ बनत ⟨ा⟩उर देखब एक दिन

नोरक श्वच्छचश्व ददकि श्वालबा आ कष क चुिलाइ

एश्चना अनश्वान्हारक जिाउर देखब एक श्वन

**** वर्ण--------20*******

61

आब ददकि गीत गबैए अनचिन्हार

टूटल करेजके जोड़ि ए अनचिन्हार

नै होइए भेट-घाट हुनकासँ केखनो

सपनेमे तँ देह छूबैए अनचिन्हार

जखने सटलै ठोरसँ ठोर तखनेसँ

पेम संसारमे घुमैए अनचिन्हार

जकरआसँ हुनका देखलक अइ़कमे

सपनेमे करोट फेरैए अनचिन्हार

जते मँहगाइ ि तते आमदनी नञ्ञि

दलाल लग बेटा बेचैए अनठ्ठानहार

**** वर्ण--------15*******

62

भाइ िटे सन श्चक्षश्चआ बाश्च श्चदऔ

अहा अन्हारक जश्चि उखाश्चि श्चदऔ

जँ काज नश्चह हुअए सोझ ढ़गे तँ

सौसे भाभट अपन पसाश्च श्चदऔ

भुश्चाआ गेलै मनुखताइ मोनसँ

कुशलक खढ़ी कने उचाश्च श्चदऔ

अनश्चान्हारक मोन भीजल काठ

कने पेमक आश्चा तँ पजाश्च श्चदऔ

नीक काजके जे रोकत संसारमे

कने डारि ओकर तँ ससारसँ अलग करू औ

**** वर्ण--------13*******

63

जादू-मंतर मारि देलकै ओ जाइत-जाइत
मोन केकरो हरि लेलकै ओ जाइत-जाइत

जकरा अबिते भोर आबि गेलै ठोर पर
आँखिमे साझ आबि देलकै ओ जाइत-जाइत

हारि रिराइत छैक फूलो तोडि बासँ
कोमल मोन तोडि देलकै ओ जाइत-जाइत

उखरल छैक सुलबाइ मुदा तैओ देखू
आँकर-लोहा पचा लेलकै ओ जाइत-जाइत

अनठ्ठानहारक ठोर सटलै अनठ्ठानहारसँ

मुदा मुँह तँ घुमा लेलकै ओ जाइत-जाइत

**** वर्णा--------17*******

65

ने केकरो हीत ने तँ मुदैआ ि◌ी हम

अपने थ्घर दक लबिैआ ि◌ी हम

हमर टूटल पाथ्व्र देथ्व्र हँसू नथ्

फाटल अकासक तँ थ्वाि◌ैआ ि◌ी हम

आथ्व लेल माथ्व करब नीको-बेजाओ

पेम-घृणाक तँ नीक गबैआ ि◌ी हम

इ जररी नथ् जे जश भेटबे करत

नोत देथ्आहार तँ घरबैआ ि◌ी हम

सम्मानक हमर नै तँ केकर हेतैक

ने सेर ने सवा-सेर अढ़ैआ ि‍ी हम

**** वर्ण--------14*******

65

शब्दक बरखासँ जरैत ि ी श्कएक

पेमक चरचासँ डरैत ि ी श्कएक

हमर गजल कोनो लाल रंग नश्च

एना साढ़ जका भरतैक ि ी श्कएक

हम अँहाक दुश्मन ि ी सभश्चनुका

एहन फूश्च अहा बजैत ि ी श्कएक

कहू ने जे इ ि न महँक दू ि चाही

इ प रि जका चुकरैत ि ी श्कएक

थिबना कनने ओहो नै दूि थियआएत

तखन चुपचाप रहैत िी थिकएक

**** वर्ण--------14*******

66

कोम्हरसँ अएलै एहन फसादी रे जान
रे जान की लगलै बिका पसाही रे जान

ओ जे मोटेलै बलू से कोना मोटेलै रे जान
खेने हेतै सभटा नि सरकारी रे जान

ओ तँ काजो करैए उपरसँ लातो खाइए
होइए एहने बुद्धिबक ब्यवहारी रे जान

पश्चलैए जे लोहे जका जमैए मोमे जका
रे जान की कहबै ओहए सुतारी रे जान

हेतै कोना समाप्ति हिताले़सँ रे जान

रे जान की तोिबै कोना इ स्वहािी रे जान

**** वर्ण--------16*******

67

जहा देखलहुँ घर तहीँ ि ि खसा लेलहुँ
अँसगरेमे तँ अपन ध्मनगी बसा लेलहुँ

लोक तँ फेकैत रहल पाि र पर पाि र
तकरे बीच्च-बीच्च एकटा घर बना लेलहुँ

झोल लागल देबाल पर टागल ि` उदासी
अँहाक हँसी टाग्न हम ओकरा सजा लेलहुँ

मोनमे भूर ितीमे िह मुदा देह साबुत
अपन भावनाके दरबारमे नचा लेलहुँ

देखू संसार तँ ि१ध्रि देलक हमरा कातेमे

हम अपन देहके अपनेसँ भसा लेलहुँ

.

**** वर्ण--------17*******

68

इ गप्प जखन जश्चिआ जाइत ैक
मोन तँ अनेरे भश्चआ जाइत ैक

कण-कण जुिल पािर बश्च गेल
श्चान भेने उश्चिआ जाइत ैक

कतबो कटतै मोनक जश्चि केओ
अहाक सोहसँ हश्चआ जाइत ैक

अपनोके अनश्चन्हार बना देलासँ
अनठीओ आश्च गश्चआ जाइत ैक

लोक जखन अबैए आमने-सामने

तखने तँ बात फखुआ जाइत कि

**** वर्ण--------14*******

69

आरे श्वारथ्यत पारे श्वारथ्यत

कनही कूकूर मा ि श्वारथ्यत

बैश्म रहल इ सरकार चुना

देशक जनता ठाढ़े श्वारथ्यत

मनबैए म ुमास ि श्वाकबा

हमर भाग अखाढ़े श्वारथ्यत

देखू उठौना लागल दूनू साझ

इ बा ि मुदा ल ारे श्वारथ्यत

कतबो झपबै नँगरक्षआयाके

अलजिजी मुदा उघारि आरथत

**** वर्ण--------12*******

70

अंगूर खटा लताम ि्री जामुन लाल

इ गाि तँ मचा रहल बिका बबाल

अखबारी थ्रकास आ इ जनता उदास

आब तँ इ बश्चरा नाचए अपने ताल

देखू पाच बरख पर सुरज उगैए

रहैए बाकी समय तँ बदरी-श्चकाल

एतए लागल हाट अश्चि गमला केर

आब तँ एतए फूल तकैए कादो-िल

देखू अनथ्थान्हार तँ अनथ्थान्हारे अछि

आब थ्थान्हारो बनल अछि बिका काल

**** वर्ण--------15*******

71

इ तबीयत ठीक रहत
जँ इ रैयत ठीक रहत

खल-खल हँसती ि रती
जँ इ नीयत ठीक रहत

हेतैक नीक देशक जँ इ
जेठरैयत ठीक रहत

बेकूफ बेटा टके काबिल
जँ इ किस्मत ठीक रहत

हेबे करतैक समा ानि

जँ श्वकायत ठीक रहत

**** वर्ण---------10*******

72

चीजे जखन बेकार कि कमार की करतै
एतए लोहार की करतै सोनार की करतै

लोक जखन फँसि जाइए अपनहि जालमे
तखन शिपार की करतै देखार की करतै

बाउ जतए नि के घाटी बजैत हो ओतए
इ लचार की करतै आ इ थिआर की करतै

खेत तँ कि मुदा खेसरहर नहि एहिठाम
आब तँ इ बाढ़ि की करतै सुखाि की करतै

जखन बझ्ह जाए टीस तँ आशीष लग आउ

इ ब्यन्हार की करतै अनब्यन्हार की करतै

**** वर्ण--------17*******

73

शराबके खराप नश्च मानू सखन
एकरा कथ्नि ये जका तँ जानू सखन

भाइ बेसी पीब तँ मोन भश्च जाएत
मीत अहा ािबे-ाि आनू सखन

स्वगकि सुख भेटतै जँ देखबै एम्हरो
आरती ाथ्नि लबनी दफानू सखन

इ दुखक पहाि तँ बिकी टा हौ भाइ
संगमे तँ बोतल राश्च फानू सखन

भरल किं आशा हुनकर जौबनमे

थबै ि कआये मुदा बेकाबू सम्बखन

**** वर्ण--------15*******

74

रचना कतेक टका लगतै सपना श्वकनबाक लेल

कहू जूटल घर सरदर अँगना श्वकनबाक लेल

हम तँ मुक्त ि ी इ श्वसखनाइ-पढ़नाइ-बुझनाइसँ

रचना कतेक टका लगतै रचना श्वकनबाक लेल

सत मानू हम काज करै ि ी लोकतंि क पदश्वाए

रचना कतेक टका लगतै पटना श्वकनबाक लेल

हमरा देशमे पि काश्वता गुलाम ि ै टी.आर.पीक

रचना कतेक टका लगतै घटना श्वकनबाक लेल

देखू आब तँ भगवानो पलि थि भक्तक फेरमे

रचना कतेक टका लगतै थि ना श्कनबाक लेल

**** वर्ण--------20*******

75

कखनो सम कखनो विषम

कखनो बेसी तँ कखनो कम

होइत रहलै अकाल मृत्यु

कखनो गोली तँ कखनो बम

खेलाइत रहलै देह पर

कखनो देवी तँ कखनो जम

व्याकुल रहल हरेक दिन

कखनो टका तँ कखनो दम

ठक्क रहल अनभ्यान्हारके

कखुओ अहा तँ कखुओ हम

**** वर्ण--------11*******

76

देश चुि ामे गेल संसदमे हल्ला मच्चा रहल

कानून की भेल संसदमे हल्ला मच्चा रहल

अकाल, बाढ़, भूकंप इ सभ आबा चल गलैक

नेताक भता लेल संसदमे हल्ला मच्चा रहल

घोटाला पर घोटाला बैसल कमीशन जाचक

कमीशनक लेल संसदमे हल्ला मच्चा रहल

टूटा गेलै सपना आ मेटा गेलै आजादीक अर्ि

इ दलालक खेल संसदमे हल्ला मच्चा रहल

एकैटा लाश तँ भेटल बाट पर अनचिन्हार

ओकर जाँच भ' लेल संसदमे हल्ला मचल रहल

**** वर्ण---------18*******

सोलह अगस्त 2011सँ महात्मा गान्धीक दोसर रूप अन्ना हजारे द्वारा कएल गेल भ्रष्टाचार विरोधी अनशनके समर्थनमे लिखल गेल।

77

यि एनी ति ओनी एनी-ओनी तैिव च

यि माए ति बाप मुना-मुनी तैिव च

हमर करेज जरैए अहा गीत श्वाखै ि

यि ओ ति अच्िर पना-पनी तैिव च

देखहक इ बोगहक पोता कोना करै हइ

यि मुल्ला ति हम सुना-सुनी तैिव च

देवतो तँ जश्वि पकि हइ बचले रहू

यि मौगी ति भूत ओझा-गुनी तैिव च

बाश्वाह भँइ दूरा पर लेबै ढ़ौआ पर ढ़ौआ

यि हम ति तो, आ बना-बनी तँव च

बश्चअह अनश्चन्हार भाइ एश्च गाममे

यि साप ति ओ जहर श्चनी तँव च

**** वर्ण--------16*******

78

जँ सटतै ठोर अनथ्अन्हारसँ तँ बुझ्अौ होली कि

सख्दखन बाजए केओ प्यारसँ तँ बुझ्अौ होली कि

बेसी टोइया-टापर देब नीक नै भाइ सख्दखन

अहा थ्आकश्ज जाएब अन्हारसँ तँ बुझ्अौ होली कि

देखू केहन-केहन गमी मगजमे रहै कि बंि

मनुख जँ बथ्ज जाए गुमारसँ तँ बुझ्अौ होली कि

जहा कनही गाएक थ्आने बिान तहा सुन-मसान

काज होइ सभहँक थ्वचारसँ तँ बुझ्अौ होली कि

की दुख होइ ि चतुिक राश्वा मे नश्च बुझ्म सकबै

सुनू जँ हँसी आबए कहार सँ तँ बुझ्मऔ होली िक

**** वर्ण--------20*******

र बाइ

1

अस्मिता रखने काज सदा बिका जाएत

देह तँ जरत नाम मुदा रहि जाएत

इ जे देखा रहल समस्या केर पहाड़

ठाढ़ि लेब तँ रुइ जका उधिया जाएत

2

भेटत खुशी केकरो देखलाक बाद

केकरो ठोरसँ नाम सुनलाक बाद

कहबामे लागत बर एकै-दू मिनट

मजा भेटत आइ लव यू कहलाक बाद

3

अपन बाक्ष्मे अहाके गाक्ष्व लेब हम

नजख्रसँ करेजमे उताक्ष्व लेब हम

एक बेर हँ तँ कक्ष्ड कए देख्रऔ

सगरो बाट पर आँचर पसाक्ष्व देब हम

4

ठोरसँ ठोर सटतै तँ गीत जनमत

आँख्रसँ आँख्र भ्रलतै तँ पीत जनमत

दुश्मनीमे ध्मनगी केखनो नक्ष्ड ब्रताउ

हाि मे हाि देबै तँ मीत जनमत

5

इ जे अहाक मूँह अछि गुलाब सन

आ आँखि जे लगैए शराब सन

सगरो दुनियाया बताह भेल देखि कए

मोन हमरो लगैए बताह सन

6

हमरा जीवन मे अही केर खगता

अहा बिना पिलै करेज हमर परता

खेलाइत रहू अहा हमरा मोन मे

बनू अहा देवी हम बनब भगता

7

हमरा ठोरक थ्यआस भेल ि ी अहा

हमरा मोनक हुलास भेल ि ी अहा

हम ब्बसथ्ब ने पाएब अहा के कब्बओ

टूटल करेजक थ्यशास भेल ि ी अहा

8

ओ मोन पि ि थ्यि तँ ब्बान ने अबैए

देह होइए सुन नीको ने लगैए

चाहै ि ी हम जे ओ हमरे लग रहथ्यि

ओ तँ ओ हुनक इयादो ने अबैए

9

हुनका सँ दूर करबा पर श्वतिलोक

अकास मे भूर करबा पर श्वतिलोक

हमही मरब हुनकर पेम मे या तँ

अपटी खेत मे मरबा पर श्वतिलोक

10

एकटा हाि बढ़लै हमरा श्वस

एकटा डेग उठलै हमरा श्वस

एतेक बिका गप्प कोना कहू

एकटा नजश्व उठलै हमरा श्वस

11

र पक रौद सँ जौबन पघश्ञ जाएत

अहाक शास सँ बसातो गमश्क जाएत

अहाक चलब करबैए माश्व सगरो

ठमकब तँ मोन कने सम्हश्व जाएत

12

जश्चआ हमर थ्यआर के जानब अहा

तश्चआ ओकर तागश्च मानब अहा

आइ भने श्वता लेब राश्च सूश्च कए

काश्चि सँ आँगुर पर श्वन गानब अहा

13

सपना जखन केकरो टूटि जाइत छैक

मोनक बात मोने मे रहि जाइत छैक

विश्वास सँ बनिका लिखा कोनो ने

टूटल करेज इ बात कहि जाइत छैक

14

हुनका देखने उमकैए मोन हमर

संग मे रहने रभसैए मोन हमर

ओ जखन अबै छथि हमरा सोझा मे

सभटा झंझटि बिसरैए मोन हमर

15

माछक मे पाथा मे आथा आ बसात मे

थदन मे राथा मे साझ आ परात मे

देखाइ ि अही खाली चार थदस

केहन तागथा अथि अहाक इयाद मे

16

कहब कतेक बात अहा सँ हम सजनी

चलब कने दूर अहा संग हम सजनी

जँ पकिबै अपन हाि सँ हाि हमर

जीबैत रहब बहुत थदन ि थथ हम सजनी

17

बहुत बात रखु गेल घोलफच्चका मे

साप-मगरमचि घूमा रहल चभच्चा मे

अखांसा होइए सभ सँ नीक बुझलहुँ

राम-रज्यक कल्पना उठैए लुच्चा मे

18

देह मोन एकै अलन के बेर मे

र प-रंग एकै अलन के बेर मे

अहा भने चल जाउ दूर हमरा सँ

पेमक ददिएकै अलन के बेर मे

19

हुनका जँ देख्वतहुँ तब्र जइतहुँ हम

ओकरा पाश्वा बर मब्र जइतहुँ हम

अहा केर आँख्वक ब्राशा एहन नीक

जँ पीब्रतहुँ तँ सम्हब्र जइतहुँ हम

20

हुनका अब्रते मोन हमर हब्रआ गेल

आँख्वक बात मोन मे फब्रआ गेल

ओ केलथ्रि केहन जादू हमरा पर

हुनक इयाद अब्रते मोन भब्रआ गेल

21

हुनका लेल र प सजा लेबाक चाही

आइ जबानी के लुटा देबाक चाही

काज नश्च इजोत के हमरा-हुनका लग

इजोत लेल घोघ उठा लेबाक चाही

22

जँ खोट ने रहतै सरकारक नेत मे

अनाज उपजबे करतै हमरो खेत मे

पसारए ने पतै हाि दोसर ठाम

रहतै श्चक ि कोठी आ श्चक ि पेट मे

23

चाम जँ अहाक चाम सँ भीश्च जेतै

बूझू मरलो मुरदा जीश्च जेतै

इ पेमक आश्चा बरड कगिर आश्चा

बूझू पाकलो बास लीश्च जेतै

24

जखन हुनकर घोघ उठेलहुँ सच मानू

आँश्चखक श्चआशा सँ मतेलहुँ सच मानू

हुनक रप भमर जाल लगैए हमरा

तैओ हुनके सँ नेह लगेलहुँ सच मानू

25

एम्ह पार हम ओम्ह पार अहा बैसल ि

मुदा एक दोसराक करेज मे पैसल ि

जहा ि थ्व देखी अहीँ देखाइ ि हमरा

देखू हमरो थ्वस एना अहा थ्कएक र सल ि

26

कते थ्वन थ्नबैत रहब उिर के थ्नन्दगी

थ्नबैत रहू सथ्वखन थ्यआर के थ्नन्दगी

ने काज आएत समय पर ई ि नि-बीत

थ्बका जाएत पाइ-पाइ मे हजार के थ्नन्दगी

27

र प देखा बताह बना देलक ि ौ ि

सूतल मोन के जगा देलक ि ौ ि

की कहू ि ल ओ केहन हरजाइ

अचके मे हमरा कना देलक ि ौ ि

28

अपन करेज अपने सँ डाश्च लेब हम

पेमक महल अपने सँ ढ़ाश्च लेब हम

अहा जा सकै ि हमरा थ्मनगी सँ

असगरे कतौ थ्मनगी काश्च लेब हम

29

इ जे अहाक मूँह अछि गुलाब सन

आ आँखि लगैए अहाक शराब सन

सगरो दुनियाया बताह भेल देखि कए

मोन हमरो होइत रहैए खराब सन

30

नोर बनि आँखि मे आबि जाउ

गीत बनि ठोर पर गाबि जाउ

बढ़ि गेल दूरी संगो रहैत

के कतेक दूर पेम सँ नापि जाउ

31

हुनका देखिते बजा गेल आइ लव यू

मोन करेज पर लिखा गेल आइ लव यू

आब एकरा पेम कहू की बतहपनी

सुतली राति मे बजा गेल आइ लव यू

32

पेम मे खून सुखा नोर बनि जाएत

हुनक ठोरक हँसी भोर बनि जाएत

चिन्हार मरबे करत हुनका देखि-देखि

अनचिन्हार जीबि चितचोर बनि जाएत

कता

1

जकर अगैठीमोि एतेक सुन्दर

तकर देहक झलकोर केहन हेतैक

जकर आँखक नोर एतेक सुन्दर

तकर हँसी भरल ठोर केहन हेतैक

2

देखते हुनका करेजक गाि मजिब गेल

पेम गमकए लागल पझल गोपी जका

लगबते चोभा थानगी हमर सम्हब गेल

बआ गेलहुँ हम कृष्ण अहा गोपी जका